

कुर्आन मजीद

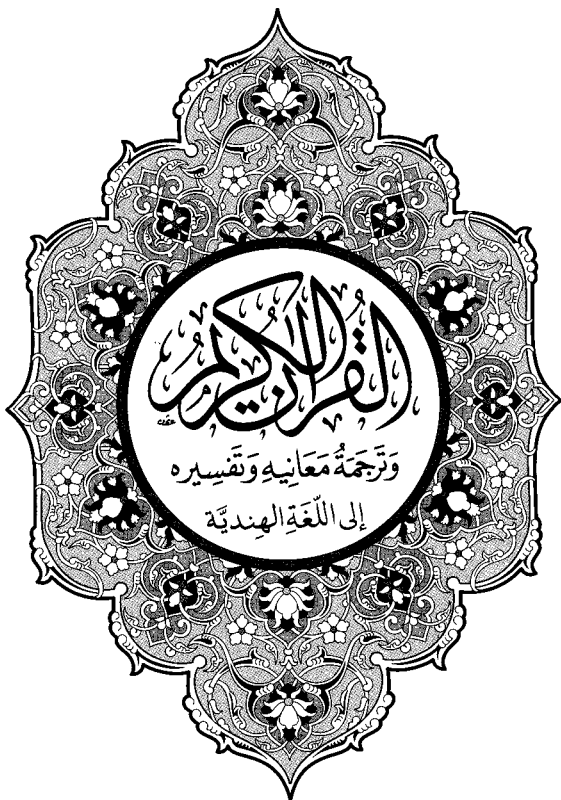
और उस के अर्थों का
हिन्दी भाषा में अनुवाद
और व्याख्या।

القرآن الكريم

وَرَجْمَةُ مَعَانِيهِ وَتَفْسِيرُهُ

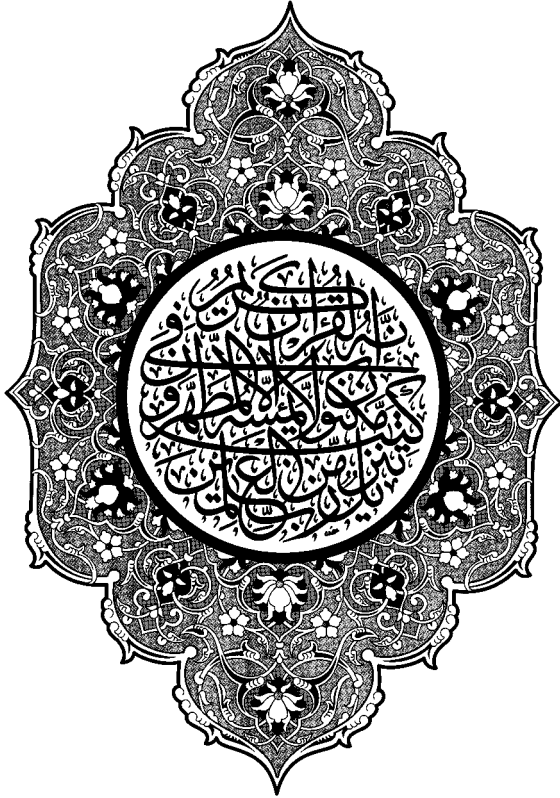
إِلَى اللُّغَةِ الْهِنْدِيَّةِ

وَقَفَّ لِلَّهِ تَعَالَى مِنْ خَادِمِ الْحَرَمَيْنِ الشَّرِيفَيْنِ
الْمَلِكِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ آلِ سُعُودٍ
وَلَا يَجُوزُ بَعْدَهُ
يُسَوِّعُ مَجَانًا



مَجْمَعُ الْمَلِكِ وَفِيهِ طَبَايعُ الْأَصْنَافِ الشَّرِيفِيَّةِ

إِنَّا نَزَّلْنَا الْقُرْآنَ بِاللُّغَةِ الْعَرَبِيَّةِ فَذَرَاهَا حَقِيقًا



इस कुरआन मजीद और उस के अर्थों का अनुवाद तथा व्याख्या के छापने का आदेश
 (सऊदी अरब के बादशाह)
 हरमैन शारीफैन सेवक किंग अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अजीज़ आल सऊद ने दिया।

فَدَرَقَ الْأَمْرَ نَيْطًا سَهْوَةً هَذَا الْمُصْحَفُ التَّوْقِيفُ وَرَجْعُهُ مَعَالِيهِ
 خَلَّاهُ الرَّبُّ بِرَحْمَتِهِ الْإِلَهِيَّةِ الْعَلِيمَةِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ
 مَلِكِ الْمَلَكَاتِ وَالْعَرَبِيِّ السُّعُودِيِّ

यह अनुवाद हरमैन शरीफ़ैन सेवक
किंग अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अज़ीज़ आल सऊद
की ओर से अल्लाह के वास्ते वक़फ़ है।
और उस का बेचना उचित नहीं है।
मुफ़्त में बांटा जाता है।



अनुवाद और व्याख्या मौलाना अज़ीज़ुल हक़ उमरी

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

مقدمة

بقلم معالي الشيخ: صالح بن عبدالعزيز بن محمد آل الشيخ
وزير الشؤون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد
المشرف العام على المجمع

الحمد لله رب العالمين، القائل في كتابه الكريم:
﴿... قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ﴾

والصلاة والسلام على أشرف الأنبياء والمرسلين، نبينا محمد، القائل:
«خيركم من تعلم القرآن وعلمه».

أما بعد:

فإنفاذاً لتوجيهات خدام الحرمين الشريفين، الملك عبدالله بن عبدالعزيز آل سعود، -حفظه الله-، بالعناية بكتاب الله، والعمل على تيسير نشره، وتوزيعه بين المسلمين، في مشارق الأرض ومغاربها، وتفسيره، وترجمة معانيه إلى مختلف لغات العالم.

وإيماناً من وزارة الشؤون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد بالمملكة العربية السعودية بأهمية ترجمة معاني القرآن الكريم إلى جميع لغات العالم المهمة تسهيلاً لفهمه على المسلمين الناطقين بغير العربية، وتحقيقاً للبلاغ المأمور به في قوله ﷺ: «بَلِّغُوا عَنِّي وَلَوْ آيَةً».

وخدمةً لإخواننا الناطقين باللغة الهندية يطيب لمجمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف بالمدينة المنورة أن يقدم للقارئ الكريم هذه الترجمة إلى اللغة الهندية التي أعدها الشيخ عزيز الحق عمري، وقام بالإشراف عليها

ومراجعتها من قبل المجمع الأستاذ الدكتور محمد الأعظمي، وقام بالتدقيق والمراجعة النهائية الدكتور سعيد أحمد حياة المشرفي.

ونحمد الله سبحانه وتعالى أن وفق لإنجاز هذا العمل العظيم الذي نرجو أن يكون خالصاً لوجهه الكريم، وأن ينفع به الناس.

إننا لنذكر أن ترجمة معاني القرآن الكريم - مهما بلغت دقتها - ستكون قاصرة عن أداء المعاني العظيمة التي يدل عليها النص القرآني المعجز، وأن المعاني التي تؤديها الترجمة إنما هي حصيلة ما بلغه علم المترجم في فهم كتاب الله الكريم، وأنه يعتريها ما يعتري عمل البشر كله من خطأ ونقص.

ومن ثم نرجو من كل قارئ لهذه الترجمة أن يوافي مجمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف بالمدينة النبوية بما قد يجده فيها من خطأ أو نقص أو زيادة للإفادة من الاستدراكات في الطبقات القادمة إن شاء الله.

والله الموفق، وهو الهادي إلى سواء السبيل، اللهم تقبل منا إنك أنت السميع العليم.

प्राक्कथन

लेख:- आदर्णीय शैख सलिह बिन अब्दुल अज़ीज़
बिन मुहम्मद आले शैख, इस्लामी कर्म, वक्फ
तथा दावत व इरशад मंत्री, एंव प्रधान निरीक्षक शाह फहद
कुर्आन प्रकाशन साहित्य, मदीना मुनव्वरह।

الحمد لله رب العالمين، القائل في كتابه الكريم:
﴿... قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ﴾

والصلاة والسلام على أشرف الأنبياء والمرسلين، نبينا محمد، القائل:
«خيركم من تعلم القرآن وعلمه».

अनुवाद: सारी प्रशंसायें अल्लाह के लिये हैं जो सारे संसारों का पालनहार है। जिस का अपनी किताब में कथन है: (तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकाश तथा खुली किताब आ गई है।)

और रहमत तथा सलाम हों उस नबी पर जो सब नबियों में श्रेष्ठ और उत्तम है। अर्थात् हमारे नबी आदर्णीय मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर। जिन का कथन है: «तुम में सब से अच्छा वह व्यक्ति है जो कुर्आन सीखता और सिखाता है।»

अल्लाह की प्रशंसा और रहमत तथा सलाम के पश्चात:

हरमैन शरीफैन सेवक: शाह अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अज़ीज़ आल सऊद (अल्लाह उन की रक्षा करे) का आदेश है कि अल्लाह की पुस्तक (कुर्आन मजीद) के प्रचार, प्रसार तथा विश्व के मुसलमानों के बीच उस के वितरण तथा विभिन्न भाषाओं में उस के अनुवाद एंव व्याख्या की व्यवस्था की जाये।

हरमैन शरीफैन सेवक की आज्ञापालन करते हुये इस्लामी कर्म एंव वक्फ तथा प्रचार प्रसार मंत्रालय विश्व की सभी महत्वपूर्ण भाषाओं में कुर्आन के अर्थों के अनुवाद और व्याख्या करने का प्रयत्न कर रहा है। इन्हीं भाषाओं में हिन्दी भाषा भी है। ताकि हिन्दी भाषक कुर्आन के भावार्थ को सरलता से समझ सकें। ताकि रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के कथन: «मेरी बात लोगों तक पहुँचाओ, चाहे वह एक ही आयत क्यों न हो।» के आदेश की पूर्ति हो सके।

इसलिये हमें इस बात से अपार हर्ष हो रहा है कि हम "शाह फ़हद कुर्आन प्रकाशन साहित्य, मदीना मुनव्वरा" की ओर से पूरे कुर्आन के अर्थों का हिन्दी भाषा में अनुवाद तथा उस की संक्षेप व्याख्या प्रस्तुत कर रहे हैं।

यह अनुवाद और व्याख्या डॉक्टर प्रो० मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आजमी के संरक्षण में, मौलाना अज़ीजुल हक़ उमरी ने तैयार किया है। और कुर्आन प्रकाशन साहित्य की ओर से इस का संशोधन डॉक्टर सईद अहमद हयात मुशर्रफ़ी ने किया है।

हम अल्लाह की प्रशंसा करते हैं कि उस ने हमें यह कार्य करने का साहस दिया। और हम आशा करते हैं कि यह कार्य मात्र अल्लाह की प्रसन्नता के लिये होगा। और लोग इस से लाभान्वित होंगे।

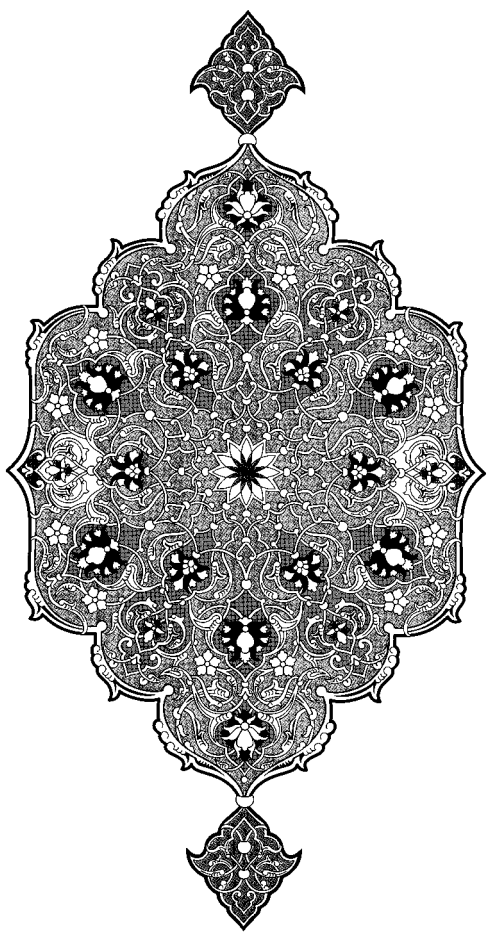
हम मानते हैं कि कुर्आन के अर्थों का कितनी ही गंभीरता से अनुवाद किया जाये पर वह उस के महान् अर्थों को वर्णित नहीं कर सकता। क्योंकि कुर्आन अपनी वर्णन शैली में भी चमत्कार है। अतः अनुवाद के द्वारा जो अर्थ दिखाई देता है वह उस का भावार्थ होता है जो अनुवादक ने कुर्आन से समझा है। जिस में हर प्रकार की त्रुटि संभव है। इसलिये प्रत्येक पाठक से अनुरोध है कि इस में वह जो भी त्रुटि पाये उस से "शाह फ़हद कुर्आन प्रकाशन साहित्य"

King Fahd Qur'an printing Complex,
Madina Munawarah, K. S. A.

को अवगत कराये ताकि आगामी प्रकाशन में उस का सुधार कर लिया जाये।

अल्लाह ही हम सब का सहायक तथा मार्गदर्शक है।

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ!



सूरह फ़ातिहा - 1



सूरह फ़ातिहा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 7 आयतें हैं।

- यह सूरह आरंभिक युग में मक्का में उतरी, जो कुर्आन की भूमिका के समान है। इसी कारण इस का नाम "सूरह फ़ातिहा" अर्थात: "आरंभिक सूरह" है। इस का चमत्कार यह है कि इस की सात आयतों में पूरे कुर्आन का सारांश रख दिया गया है। और इस में कुर्आन के मौलिक संदेश: तौहीद, परलोक तथा रिसालत के विषय को संक्षेप में समो दिया गया है। इस में अल्लाह की दया, उस के पालक तथा पूज्य होने के गुणों को वर्णित किया गया है।
- इस सूरह के अर्थों पर विचार करने से बहुत से तथ्य उजागर हो जाते हैं। और ऐसा प्रतीत होता है कि सागर को गागर में बंद कर दिया गया है।
- इस सूरह में अल्लाह के गुण-गान तथा उस से प्रार्थना करने की शिक्षा दी गई है कि अल्लाह की सराहना और प्रशंसा किन शब्दों से की जाये। इसी प्रकार इस में बंदों को न केवल बंदना की शिक्षा दी गई है बल्कि उन्हें जीवन यापन के गुण भी बताये गये हैं।
- अल्लाह ने इस से पहले बहुत से समुदायों को सुपथ दिखाया किन्तु उन्होंने ने कुपथ को अपना लिया, और इस में उसी कुपथ के अंधेरे से निकलने की दुआ है। बंदा अल्लाह से मार्ग-दर्शन के लिये दुआ करता है तो अल्लाह उस के आगे पूरा कुर्आन रख देता है कि यह सीधी राह है जिसे तू खोज रहा है। अब मेरा नाम लेकर इस राह पर चल पड़।

1. अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

2. सब प्रशंसायें अल्लाह^[1] के लिये हैं,

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

1 "अल्लाह" का अर्थ: "हकीकी पूज्य" है। जो विश्व के रचयिता विधाता के लिये विशेष है।

- जो सारे संसारों का पालनहार^[1] है।
3. जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान्^[2] है।
4. जो प्रतिकार^[3] (बदले) के दिन का मालिक है।
5. (हे अल्लाह!) हम केवल तुझी को पूजते हैं, और केवल तुझी से सहायता माँगते^[4] हैं।

الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ

مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ

إِلَّاكَ نَعْبُدُ وَإِلَيْكَ نَسْتَعِينُ

- 1 "पालनहार होने" का अर्थ यह है कि जिस ने इस विश्व की रचना कर के उस के प्रतिपालन की ऐसी विचित्र व्यवस्था की है कि सभी को अपनी आवश्यकता तथा स्थिति के अनुसार सब कुछ मिल रहा है। और विश्व का यह पूरा कार्य, सूर्य, वायु, जल, धरती सब जीवन की रक्षा एवं जीवन की प्रत्येक योग्यता की रखवाली में लगे हुए हैं, इस से सत्य पूज्य का परिचय और ज्ञान होता है।
- 2 अर्थात् वह विश्व की व्यवस्था एवं रक्षा अपनी अपार दया से कर रहा है, अतः प्रशंसा और पूजा के योग्य भी मात्र वही है।
- 3 प्रतिकार (बदले) के दिन से अभिप्राय प्रलय का दिन है। आयत का भावार्थ यह है कि सत्य धर्म प्रतिकार के नियम पर आधारित है। अर्थात् जो जैसा करेगा वैसा भरेगा। जैसे कोई जौ बोकर गेहूँ की, तथा आग में कूद कर शीतल होने की आशा नहीं कर सकता, ऐसे ही भले, बुरे कर्मों का भी अपना स्वभाविक गुण और प्रभाव होता है। फिर संसार में भी कुकर्मों का दुष्परिणाम कभी कभी देखा जाता है। परन्तु यह भी देखा जाता है कि दुराचारी, और अत्यचारी सुखी जीवन निर्वाह कर लेता है, और उसकी पकड़ इस संसार में नहीं होती, इस लिये न्याय के लिये एक दिन अवश्य होना चाहिये। और उसी का नाम "क्यामत" (प्रलय का दिन) है। "प्रतिकार के दिन का मालिक" होने का अर्थ यह है कि संसार में उस ने इन्सानों को भी अधिकार और राज्य दिये हैं। परन्तु प्रलय के दिन सब अधिकार उसी का रहेगा। और वही न्याय पूर्वक सब को उन के कर्मों का प्रतिफल देगा।
- 4 इन आयतों में प्रार्थना के रूप में मात्र अल्लाह ही की पूजा और उसी को सहायतार्थ गुहारने की शिक्षा दी गई है। इस्लाम की परिभाषा में इसी का नाम "तौहीद" (एकेश्वरवाद) है। जो सत्य धर्म का आधार है। और अल्लाह के सिवा या उस के साथ किसी अन्य देवी देवता आदि को पुकारना, उस की पूजा करना, किसी प्रत्यक्ष साधन के बिना किसी को सहायता के लिये गुहारना, क्षचवम अथवा किसी व्यक्ति और वस्तु में अल्लाह का कोई विशेष गुण मानना आदि एकेश्वरवाद (तौहीद) के विरुद्ध है जो अक्षम्य पाप है। जिस के साथ कोई पुण्य का कार्य मान्य नहीं।

6. हमें सुपथ (सीधा मार्ग) दिखा।
 7. उन का मार्ग जिन पर तू ने पुरस्कार किया^[1] उन का नहीं जिन पर तेरा प्रकोप^[2] हुआ, और न ही उन का जो कुपथ (गुमराह) हो गये।

إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ
 صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ
 وَلَا الضَّالِّينَ

- 1 इस आयत में सुपथ (सीधी राह) का चिन्ह यह बताया गया है कि यह उन की राह है जिन पर अल्लाह का पुरस्कार हुआ। उन की नहीं जो प्रकोपित हुये, और न उन की जो सत्य मार्ग से बहक गये।
 2 "प्रकोपित" से अभिप्राय वह है जो सत्य धर्म को जानते हुये, मात्र अभिमान अथवा अपने पूर्वजों की परम्परागत प्रथा के मोह में अथवा अपनी बड़ाई के जाने के भय से नहीं मानते।

"कुपथ" (गुमराह) से अभिप्रेत वह है जो सत्य धर्म के होते हुये उस से दूर हो गये और देवी देवताओं आदि में अल्लाह के विशेष गुण मान कर उन को रोग निवारण, दुःख दूर करने और सुख संतान आदि देने के लिये गुहारने लगे।

सूरह फातिहा का महत्व:

इस सूरह के अर्थों पर विचार किया जाये तो इस में और कुर्आन के शेष भागों में संक्षेप तथा विस्तार जैसा संबंध है। अर्थात् कुर्आन की सभी सूरतों में कुर्आन के जो लक्ष्य विस्तार के साथ बताये गये हैं सूरह फातिहा में उन्हीं को संक्षिप्त रूप में बताया गया है। यदि कोई मात्र इसी सूरह के अर्थों को समझ ले तो भी वह सत्य धर्म तथा अल्लाह की इबादत (पूजा) के मूल लक्ष्यों को जान सकता है। और यही पूरे कुर्आन के विवरण का निचोड़ है।

सत्य धर्म का निचोड़:

यदि सत्य धर्म पर विचार किया जाये तो उस में इन चार बातों का पाया जाना आवश्यक है:

- 1- अल्लाह के विशेष गुणों की शुद्ध कल्पना।
- 2- प्रतिफल के नियम का विश्वास। अर्थात् जिस प्रकार संसार की प्रत्येक वस्तु का एक स्वभाविक प्रभाव होता है इसी प्रकार कर्मों के भी प्रभाव और प्रतिफल होते हैं। अर्थात् सुकर्म का शुभ, और कुकर्म का अशुभ फल।
- 3- मरने के पश्चात् आखिरत में जीवन का विश्वास। कि मनुष्य का जीवन इसी संसार में समाप्त नहीं हो जाता, बल्कि इस के पश्चात् भी एक जीवन है।
- 4- कर्मों के प्रतिकार (बदले) का विश्वास।

सूरह फातिहा की शिक्षा:

सूरह फातिहा एक प्रार्थना है। यदि किसी के दिल तथा मुख से रात दिन यही दुआ निकलती हो तो ऐसी दशा में उस के विचार तथा अक़ीदे (आस्था) की क्या

स्थिति हो सकती है! वह अल्लाह की सराहना करता है, परन्तु उस की नहीं जो वर्णा, जातियों तथा धार्मिक दलों का पूज्य है। बल्कि उस की जो सम्पूर्ण विश्व का पालनहार है। इस लिये वह पूरी मानव जाति का समान रूप से प्रतिपालक तथा सब के लिये दयालु है।

फिर उस के गुणों में से दया और न्याय के गुणों ही को याद करता है, मानो अल्लाह उस के लिये सर्वथा दया और न्याय है फिर वह उसके सामने अपना सिर झुका देता है और अपने भक्त होने का इक़्रार करता है। वह कहता है: (हे अल्लाह!) मात्र तेरे ही आगे भक्ति और विनय के लिये सिर झुक सकता है। और मात्र तू ही हमारी विवशता और आवश्यकता में सहायता का सहारा है। वह अपनी पूजा तथा प्रार्थना दोनों को एक के साथ जोड़ देता है। और इस प्रकार सभी संसारिक शक्तियों और मानवी आदेशों से निश्चिन्त हो जाता है। अब किसी के द्वार पर उस का सिर नहीं झुक सकता। अब वह सब से निर्भय है। किसी के आगे अपनी विनय का हाथ नहीं फैला सकता। फिर वह अल्लाह से सीधी राह पर चलने की प्रार्थना करता है। इसी प्रकार वह वंचना और गुमराही से शरण (बचाव) की माँग करता है। मानव की विश्व व्यापी बुराई से, वर्ग तथा देश और धार्मिक दलों के भेद भाव से ताकि विभेद का कोई धब्बा भी उसके दिल में न रहे।

यही वह इन्सान है जिस के निर्माण के लिये कुर्आन आया है।

(देखिये: "उम्मुल किताब" - मौलाना अबुल कलाम आज़ाद)

इस सूरह की प्रधानता:

इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से वर्णित है कि जिब्रील फ़रिश्ता (अलैहिस्सलाम) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास थे कि आकाश से एक कड़ी आवाज़ सुनाई दी। जिब्रील ने सिर ऊपर उठाया, और कहा: यह आकाश का द्वार आज ही खोला गया है। आज से पहले यह कभी नहीं खुला। फिर उस से एक फ़रिश्ता उतरा। और कहा कि यह फ़रिश्ता धरती पर पहली बार उतरा है। फिर उस फ़रिश्ते ने सलाम किया, और कहा: आप दो "ज्योती" से प्रसन्न हो जाईये, जो आप से पहले किसी नबी को नहीं दी गई: "फ़ातिहतुल किताब" (अर्थात: सूरह फ़ातिहा), और सूरह "बक़र:" की अन्तिम आयतों। आप इन दोनों का कोई भी शब्द पढ़ेंगे तो उस में जो भी है वह आप को प्रदान किया जायेगा। (सहीह मुस्लिम, 806) और सहीह हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्हम्दु लि़ल्लाहि रब्बिल आलमीन", "सब्अ मसानी" (अर्थात सूरह फ़ातिहा), और महा कुर्आन है। जो विशेष रूप से मुझे प्रदान की गई है। (सहीह बुख़ारी, 4474)। इसी कारण हदीस में आया है कि जो सूरह फ़ातिहा न पढ़े उस की नमाज़ नहीं होती। (बुख़ारी- 756, मुस्लिम- 394)।

सूरह बकरह - 2



सूरह बकरह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 286 आयतें हैं।

- यह सूरह कुर्आन की सब से बड़ी सूरह है। इस के एक स्थान पर "बकरह" (अर्थात्: गाय) की चर्चा आई है जिस के कारण इसे यह नाम दिया गया है।
- इस की आयत 1 से 21 तक में इस पुस्तक का परिचय देते हुये यह बताया गया है कि किस प्रकार के लोग इस मार्गदर्शन को स्वीकार करेंगे, और किस प्रकार के लोग इसे स्वीकार नहीं करेंगे।
- आयत 22 से 29 तक में सर्व साधारण लोगों को अपने पालनहार की आज्ञा का पालन करने के निर्देश दिये गये हैं। और जो इस से विमुख हों उन के दुराचारी जीवन और उस के दुष्परिणाम को, और जो स्वीकार कर लें उन के सदाचारी जीवन और शुभपरिणाम को बताया गया है।
- आयत 30 से 39 तक के अन्दर प्रथम मनुष्य आदम (अलैहिस्सलाम) की उत्पत्ति, और शैतान के विरोध की चर्चा करते हुये यह बताया गया है कि मनुष्य की रचना कैसे हुई, उसे क्यों पैदा किया गया, और उस की सफलता की राह क्या है?
- आयत 40 से 123 तक, बनी इस्राईल को सम्बोधित किया गया है कि यह अन्तिम पुस्तक और अन्तिम नबी वही हैं जिन की भविष्यवाणी और उन पर ईमान लाने का वचन तुम से तुम्हारी पुस्तक तौरात में लिया गया है। इस लिये उन पर ईमान लाओ। और इस आधार पर उन का विरोध न करो कि वह तुम्हारे वंश से नहीं हैं। वह अरबों में पैदा हुये हैं, इसी के साथ उन के दुराचारों और अपराधों का वर्णन भी किया गया है।
- आयत 124 से 167 तक आदरणीय इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के काबा का निर्माण करने तथा उन के धर्म को बताया गया है जो बनी इस्राईल तथा बनी इसमाईल (अरबों) दोनों ही के परम पिता थे कि वह यहूदी, ईसाई या किसी अन्य धर्म के अनुयायी नहीं थे। उन का धर्म यही इस्लाम था। और उन्होंने ने ही काबा बनाने के समय मक्का में एक नबी भेजने की

प्रार्थना की थी जिसे अल्लाह ने पूरी किया। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धर्म पुस्तक कुर्आन के साथ भेजा।

- आयत 168 से 242 तक बहुत से धार्मिक, सामाजिक तथा परिवारिक विधान और नियम बताये गये हैं जो इस्लामी जीवन से संबन्धित हैं। और कुछ मूल आस्थाओं का भी वर्णन किया गया है जिन के कारण मनुष्य मार्गदर्शन पर स्थित रह सकता है।
- आयत 243 से 283 तक के अन्दर मार्गदर्शन केन्द्र काबा को मुशरिकों के नियंत्रण से मुक्त कराने के लिये जिहाद की प्रेरणा दी गई है, तथा ब्याज को अवैध घोषित कर के आपस के व्यवहार को उचित रखने के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 284 से 286 तक अन्तिम आयतों में उन लोगों के ईमान लाने की चर्चा की गई है जो किसी भेद-भाव के बिना अल्लाह के रसूलों पर ईमान लाये। इस लिये अल्लाह ने उन पर सीधी राह खोल दी। और उन्होंने ने ऐसी दुआयें कीं जो उन के ईमान को उजागर करती हैं।
- हदीस में है कि जिस घर में सूरह बकरः पढ़ी जाये उस से शैतान भाग जाता है। (सहीह मुस्लिम- 780)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ, लाम, मीम।
2. यह पुस्तक है, जिस में कोई संशय (संदेह) नहीं, उन को सीधी डगर दिखाने के लिये है, जो (अल्लाह से) डरते हैं।
3. जो ग़ैब (परोक्ष)^[1] पर ईमान (विश्वास) रखते हैं, तथा नमाज़ की

الْعَمَّةُ

ذَلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ فِيهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ

الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ

- 1 इस्लाम की परिभाषा में, अल्लाह, उस के फरिश्तों, उस की पुस्तकों, उस के रसूलों तथा अन्तदिवस (प्रलय) और अच्छे बुरे भाग्य पर ईमान (विश्वास) को (ईमान बिल ग़ैब) कहा गया है। (इब्ने कसीर)

स्थापना करते हैं, और जो कुछ हम ने उन्हें दिया है, उस में से दान करते हैं।

4. तथा जो आप (नबी) पर उतारी गई (पुस्तक-क़ुरआन) तथा आप से पूर्व उतारी गई (पुस्तकों^[1]) पर ईमान रखते हैं। तथा आखिरत (परलोक)^[2] पर भी विश्वास रखते हैं।

5. वही अपने पालनहार की बताई सीधी डगर पर हैं, तथा वही सफल होंगे।

6. वास्तव^[3] में जो काफ़िर (विश्वासहीन) हो गये (हे नबी!) उन्हें आप सावधान करें या न करें, वह ईमान नहीं लायेंगे।

7. अल्लाह ने उन के दिलों तथा कानों पर मुहर लगा दी है। और उन की आँखों पर पर्दे पड़े हैं। तथा उन्हीं के लिये घोर यातना है।

8. और^[4] कुछ लोग कहते हैं कि हम अल्लाह तथा आखिरत (परलोक) पर

وَمَا آتَاكُم بِمَنْ يَنْقُوتُونَ

وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلِكَ
وَبِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ

أُولَئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ٥

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَسَوَّاءٌ عَلَيْهِمْ أُنذِرْتَهُمْ
أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ٦

خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ وَعَلَىٰ
أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَيَالِيَوْمِ

1 अर्थात् तौरात, इंजील तथा अन्य आकाशीय पुस्तकों पर।

2 आखिरत पर ईमान का अर्थ है: प्रलय तथा उस के पश्चात् फिर जीवित किये जाने तथा कर्मों के हिसाब एवं स्वर्ग तथा नरक पर विश्वास करना।

3 इस से अभिप्राय वह लोग हैं, जो सत्य को जानते हुए उसे अभिमान के कारण नकार देते हैं।

4 प्रथम आयतों में अल्लाह ने ईमान वालों की स्थिति की चर्चा करने के पश्चात् दो आयतों में काफ़िरों की दशा का वर्णन किया है। और अब उन मुनाफ़िकों (दुविधावादियों) की दशा बता रहा है जो मुख से तो ईमान की बात कहते हैं लेकिन दिल से अविश्वास रखते हैं।

ईमान ले आये। जब कि वह ईमान नहीं रखते।

9. वह अल्लाह को तथा जो ईमान लाये, उन्हें धोखा देते हैं। जब कि वह स्वयं अपने आप को धोखा देते हैं, परन्तु वह इसे समझते नहीं।
10. उन के दिलों में रोग (दुविधा) है, जिसे अल्लाह ने और अधिक कर दिया। और उन के लिये झूठ बोलने के कारण दुखदायी यातना है।
11. और जब उन से कहा जाता है कि धरती में उपद्रव न करो, तो कहते हैं कि हम तो केवल सुधार करने वाले हैं।
12. सावधान! वही लोग उपद्रवी हैं, परन्तु उन्हें इस का बोध नहीं।
13. और^[1] जब उन से कहा जाता है कि जैसे और लोग ईमान लाये तुम भी ईमान लाओ, तो कहते हैं कि क्या मुखों के समान हम भी विश्वास कर लें? सावधान! वही मूर्ख हैं, परन्तु वह जानते नहीं।
14. तथा जब वह ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये, और जब अकेले में अपने शैतानों (प्रमुखों) के साथ होते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं। हम तो मात्र परिहास कर रहे हैं।

الرَّخِوْرَ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝

يُخَادِعُوْنَ اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَمَا يَخْدَعُوْنَ
اِلَّا اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝

فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا ؕ وَلَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ؕ لِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ
قَالُوْا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ۝

اِلَّا اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَا اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْا
اَنْتُمْ كَمَا اٰمَنَ السُّفَهَاءُ اِلَّا اِنَّهُمْ هُمُ
السُّفَهَاءُ وَلٰكِنْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

وَ اِذَا قَالُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوا اٰمَنَّا ۝ وَ اِذَا
خَلَوْا اِلَىٰ شَيْطٰنِهِمْ قَالُوا اِنَّا مَعَكُمْ
اِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُوْنَ ۝

1 यह दशा उन मुनाफ़िकों की है जो अपने स्वार्थ के लिये मुसलमान हो गये, परन्तु दिल से इन्कार करते रहे।

15. अल्लाह उन से परिहास कर रहा है। तथा उन्हें उन के कुकर्मों में बहकने का अवसर दे रहा है।
16. यह वे लोग हैं जिन्होंने सीधी डगर (सुपथ) के बदले गुमराही (कुपथ) खरीद ली। परन्तु उन के व्यापार में लाभ नहीं हुआ। और न उन्होंने ने सीधी डगर पाई।
17. उन^[1] की दशा उन के जैसी है, जिन्होंने अग्नि सुलगाई, और जब उन के आस-पास उजाला हो गया, तो अल्लाह ने उन का उजाला छीन लिया, तथा उन्हें ऐसे अंधेरों में छोड़ दिया जिन में उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता।
18. वह गँगे, बहरे, अंधे हैं। अतः अब वह लौटने वाले नहीं।
19. अथवा^[2] (उन की दशा) आकाश की वर्षा के समान है, जिस में अंधेरे और कड़क तथा विद्युत हो, वह कड़क के कारण मृत्यु के भय से अपने कानों में उंगलियाँ डाल लेते हैं। और अल्लाह, काफ़िरों को अपने नियंत्रण में लिये हुये हैं।
20. विद्युत उन की आँखों को उचक लेने के समीप हो जाती है, जब उन के लिये चमकती है तो उस के उजाले में चलने लगते हैं, और जब अंधेरा हो जाता है तो खड़े हो जाते हैं। और

اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُونَ ⑩

أُولَئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبِحَت
تِجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ⑪

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّا أَضَاءَتْ
مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي
ظُلُمَاتٍ لَا يُبْصِرُونَ ⑫

صُمُّوا بِكُمْ غَمٌّ فَهُمْ لَا يُرْجِعُونَ ⑬

أَوْ كَصَيْبٍ مِنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمَاتٌ وَرَعْدٌ وَبَرْقٌ
يَجْعَلُونَ أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ مِنَ الصَّوَاعِقِ
حَذَرًا مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ غَظِيبٌ بِالْكَافِرِينَ ⑭

يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ أَبْصَارَهُمْ كُلَّمَا أَضَاءَ لَهُمْ
مَشَوْا فِيهِ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑮

1 यह दशा उन की है जो संदेह तथा दुविधा में पड़े रह गये। कुछ सत्य को उन्होंने स्वीकार भी किया, फिर भी अविश्वास के अंधेरों ही में रह गये।

2 यह दूसरी उपमा भी दूसरे प्रकार के मुनाफ़िकों की दशा की है।

यदि अल्लाह चाहे तो उन के कानों को बहरा, और उन की आँखों को अंधा कर दे। निश्चय अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

21. हे लोगो! केवल अपने उस पालनहार की इबादत (वंदना) करो, जिस ने तुम्हें तथा तुम से पहले वाले लोगों को पैदा किया, इसी में तुम्हारा बचाव^[1] है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ
وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٢١﴾

22. जिस ने धरती को तुम्हारे लिये बिछौना तथा गगन को छत बनाया। और आकाश से जल बरसाया, फिर उस से तुम्हारे लिये प्रत्येक प्रकार के खाद्य पदार्थ उपजाये, अतः जानते हुये^[2] भी उस के साझी न बनाओ।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَأَنْزَلَ
مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا
لَكُمْ فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أُندَادًا وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٢﴾

23. और यदि तुम्हें उस में कुछ सदेह हो जो (अथवा कुर्आन) हम ने अपने भक्त पर उतारा है, तो उस के समान कोई सूरह ले आओ? और अपने समर्थकों को भी, जो अल्लाह के सिवा हों, बुला लो, यदि तुम सच्चे^[3] हो।

وَأِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا
بِسُورَةٍ مِّنْ مِّثْلِهِ وَادْعُوا شُهَدَاءَكُمْ الَّذِينَ
دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٣﴾

24. और यदि यह न कर सको, तथा कर भी नहीं सकोगे, तो उस अग्नि

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا فَأْزِقُوا النَّارَ الَّتِي

1 अर्थात संसार में कुकर्मों तथा परलोक की यातना से।

2 अर्थात जब यह जानते हो कि तुम्हारा उत्पत्तिकार तथा पालनहार अल्लाह के सिवा कोई नहीं, तो वंदना भी उसी एक की करो, जो उत्पत्तिकार तथा पूरे विश्व का व्यवस्थापक है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि नबी के सत्य होने का प्रमाण आप पर उतारा गया कुर्आन है। यह उन की अपनी बनाई बात नहीं है। कुर्आन ने ऐसी चुनौती अन्य आयतों में भी दी है। (देखिये: सूरह कसस, आयत: 49, इसा, आयत: 88, हूद आयत: 13, और यूनस, आयत: 38)

(नरक) से बचो, जिस का ईंधन मानव तथा पत्थर होंगे।

25. हे नबी! उन लोगों को शुभ सूचना दो, जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये कि उन के लिये ऐसे स्वर्ग है, जिन में नहरें बह रही होंगी। जब उन का कोई भी फल उन्हें दिया जायेगा तो कहेंगे: यह तो वही है जो इस से पहले हमें दिया गया। और उन्हें समरूप फल दिये जायेंगे। तथा उन के लिये उन में निर्मल पत्नियाँ होंगी, और वह उन में सदावासी होंगे।
26. अल्लाह,^[1] मच्छर अथवा उस से तुच्छ चीज से उपमा देने से नहीं लज्जाता। जो ईमान लाये वह जानते हैं कि यह उन के पालनहार की ओर से उचित है। और जो काफिर (विश्वासहीन) हो गये वह कहते हैं कि अल्लाह ने इस से उपमा दे कर क्या निश्चय किया है? अल्लाह इस से बहुतों को गुमराह (कुपथ) करता है, और बहुतों को मार्गदर्शन देता है। तथा जो अवैज्ञाकारी है, उन्हीं को कुपथ करता है।
27. जो अल्लाह से पक्का वचन करने के बाद उसे भंग कर देते हैं, तथा जिसे अल्लाह ने जोड़ने का आदेश दिया, उसे तोड़ते हैं, और धरती में उपद्रव करते हैं, यही लोग क्षति में पड़ेंगे।

وَوَدَّهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۗ وَعَدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ۝

وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رَزَقُوا قَالُوا هَذَا الَّذِي رَزَقْنَا مِنْ قَبْلُ وَأَلْوَاهِهِمْ ثَمَرَاتٍ مُتَسَاوِيَةً ۗ وَلَهُمْ فِيهَا زَوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ ۖ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِي أَنْ يَضْرِبَ مَثَلًا مَبْعُوضَةً مِمَّا قُوِّعَ أَفْعَالًا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا فَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّهُ اعْتَنَى مِنْ رَبِّهِمْ ۖ وَأَنَا الَّذِينَ كَفَرُوا أَفَيَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا ۖ يُضِلُّ بِهِ كَثِيرًا ۖ أَضَلُّ بِهِ كَثِيرًا ۖ وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلَّا الْفَاسِقِينَ ۝

الَّذِينَ يُقْضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۗ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ۝

1 जब अल्लाह ने मुनाफिकों की दो उपमा दी, तो उन्होंने कहा कि अल्लाह ऐसी तुच्छ उपमा कैसे दे सकता है? इसी पर यह आयत उतरी। (देखिये: तफ्सीर इब्ने कसीर)।

28. तुम अल्लाह का इन्कार कैसे करते हो? जब कि पहले तुम निर्जीव थे, फिर उस ने तुम को जीवन दिया, फिर तुम को मौत देगा, फिर तुम्हें (परलोक में) जीवन प्रदान करेगा, फिर तुम उसी की ओर लौटाये^[1] जाओगे?
29. वही है, जिस ने धरती में जो भी है, सब को तुम्हारे लिये उत्पन्न किया। फिर आकाश की ओर आकृष्ट हुआ, तो बराबर सात आकाश बना दिये। और वह प्रत्येक चीज़ का जानकार है।
30. और (हे नबी! याद करो) जब आपके पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं धरती में एक खलीफ़ा^[2] बनाने जा रहा हूँ वह बोले: क्या तू उस में उसे बनायेगा जो उस में उपद्रव करेगा, तथा रक्त बहायेगा? जब कि हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरे गुण और पवित्रता का गान करते हैं? (अल्लाह) ने कहा: जो मैं जानता हूँ, वह तुम नहीं जानते।
31. और उस ने आदम^[3] को सभी नाम सिखा दिये, फिर उन को फ़रिश्तों के समक्ष प्रस्तुत किया, और कहा: मुझे इन के नाम बताओ, यदि तुम सच्चे हो?
32. सब ने कहा: तू पवित्र है। हम तो उतना ही जानते हैं, जितना तू ने हमें

كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنْتُمْ أَمْوَاتًا
فَأَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ
إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ جَبِينًا مِّمَّا
اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَهُوَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

وَإِذ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ
خَلِيفَةً قَالُوا أَتَجْعَلُ فِيهَا مَنْ يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ
الدِّمَاءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ قَالَ
إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

وَعَلَّمَ آدَمَ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلَائِكَةِ
فَقَالَ أُنَبِّئُونِي بِأَسْمَاءِ هَؤُلَاءِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

قَالُوا سُبْحَانَكَ لَعَلَّمَنَا الْأَسْمَاءَ عَلَيْنَا إِيَّاكَ أَنْتَ

1 अर्थात परलोक में अपने कर्मों का फल भोगने के लिये।

2 खलीफ़ा का अर्थ है: स्थानापन्न, अर्थात ऐसा जीव जिस का वंश हो, और एक दूसरे का स्थान ग्रहण करे। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

3 आदम प्रथम मनु का नाम।

सिखाया है। वास्तव में तू अति ज्ञानी तत्वज्ञ^[1] है।

33. (अल्लाह ने) कहा: हे आदम! इन्हें इन के नाम बताओ। और आदम ने जब उन के नाम बता दिये तो (अल्लाह ने) कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि मैं आकाशों तथा धरती की क्षिप्त बातों को जानता हूँ, तथा तुम जो बोलते और मन में रखते हो, सब जानता हूँ?

34. और जब हम ने फरिश्तों से कहा: आदम को सज्दा करो तो इब्लीस के सिवा सब ने सज्दा किया, उस ने इन्कार तथा अभिमान किया, और काफ़ि़रों में से हो गया।

35. और हम ने कहा: हे आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो, तथा इस में से जिस स्थान से चाहो मनमानी खाओ, और इस वृक्ष के समीप न जाना, अन्यथा अत्याचारियों में से हो जाओगे।

36. तो शैतान ने दोनों को उस से भटका दिया, और जिस (सुख) में थे उस से उन को निकाल दिया, और हम ने कहा: तुम सब उस से उतरो, तुम एक दूसरे के शत्रु हो, और तुम्हारे लिये धरती में रहना, तथा एक निश्चित अवधि^[2] तक उपभोग्य है।

الْعَالِمِ الْحَكِيمِ ﴿١٠﴾

قَالَ يَا آدَمُ أَنْبِئْهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ فَلَمَّا أَنْبَأَهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ إِنْ أَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿١٠﴾

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَى وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٣٤﴾

وَ قُلْنَا يَا آدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٣٥﴾

كَأَزْوَاجَهُمَا الشَّيْطَانُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِ وَقُلْنَا اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٣٦﴾

1 तत्वज्ञ: अर्थात् जो भेद तथा रहस्य को जानता हो।

2 अर्थात् अपनी निश्चित आयु तक सांसारिक जीवन के संसाधन से लाभान्वित होना है।

37. फिर आदम ने अपने पालनहार से कुछ शब्द सीखे, तो उस ने उसे क्षमा कर दिया, वह बड़ा क्षमी दयावान्^[1] है।
38. हम ने कहा: इस से सब उतरो, फिर यदि तुम्हारे पास मेरा मार्गदर्शन आये तो जो मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण करेंगे, उन के लिये कोई डर नहीं होगा, और न वह उदासीन होंगे।
39. तथा जो अस्वीकार करेंगे, और हमारी आयतों को मिथ्या कहेंगे तो वही नारकी है, और वही उस में सदावासी होंगे।
40. हे बनी इसराईल^[2]! मेरे उस पुरस्कार को याद करो, जो मैं ने तुम पर किया, तथा मुझ से किया गया वचन पूरा करो, मैं तुम को अपना दिया वचन पूरा करूँगा, तथा मुझी से डरो^[3]।

فَتَلَقَىٰ آدَمُ مِن رَّبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ إِنَّهُ هُوَ
التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝

فَلَمَّا أَهبطُوا مَهَا جَعَلْنَا أُولَٰئِكَ قَومًا يَرْتَابُونَ ۝ هَٰذَا
مِمَّن نَّبَعْنَا لِمُقَامِنٍ ۝ فَلا تَخَفُوا عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَخَفُون ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

يُنَبِّئُ إِسْرَائِيلَ أَنكُم مِّنَ آلِ إِبْرَاهِيمَ ۝ أَنبَعْتُمْ
عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوا بِعَهْدِي أُوفِ بِعَهْدِكُمْ وَإِنِّي
فَارْهَبُونَ ۝

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि: आदम ने कुछ शब्द सीखे और उन के द्वारा क्षमा याचना की, तो अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया। आदम के उन शब्दों की व्याख्या भाष्यकारों ने इन शब्दों से की है: "आदम तथा हव्वा दोनों ने कहा: हे हमारे पालनहार! हम ने अपने प्राणों पर अत्याचार कर लिया, और यदि तू ने हमें क्षमा, और हम पर दया नहीं की तो हम क्षतिग्रस्तों में हो जायेंगे"। (सूरह आराफ़, आयत 23)
- 2 इसराईल आदरणीय इब्राहीम अलैहिमस्सलाम के पौत्र याकूब अलैहिस्सलाम की उपाधि है। इस लिये उन की सन्तान को बनी इसराईल कहा गया है। यहाँ उन्हें यह प्रेरणा दी जा रही है कि: कुर्आन तथा अन्तिम नबी को मान लें जिस का वचन उन की पुस्तक "तौरात" में लिया गया है। यहाँ यह ज्ञातव्य है कि: इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दो पुत्रों इसमाईल तथा इसहाक हैं। इसहाक की सन्तान से बहुत से नबी आये, परन्तु इसमाईल अलैहिस्सलाम के गोत्र से केवल अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आये।
- 3 अर्थात् वचन भंग करने से।

41. तथा उस (कुर्आन) पर ईमान लाओ जो मैं ने उतारा है, वह उस का प्रमाणकारी है, जो तुम्हारे पास^[1] है, और तुम सब से पहले इस के निवर्ती न बन जाओ, तथा मेरी आयतों को तनिक मूल्य पर न बेचो, और केवल मुझी से डरो।

42. तथा सत्य को असत्य में न मिलावो, और न सत्य को जानत हुये छुपाओ।^[2]

43. तथा नमाज़ की स्थापना करो, और ज़कात दो तथा झुकने वालों के साथ झुको (रुकू करो)।

44. क्या तुम, लोगों को सदाचार का आदेश देते हो, और अपने आप को भूल जाते हो, जब कि: तुम पुस्तक (तौरात) का अध्ययन करते हो, क्या तुम समझ नहीं रखते?^[3]

45. तथा धैर्य और नमाज़ का सहारा लो, निश्चय नमाज़ भारी है, परन्तु विनीतों पर (भारी नहीं)^[4]

وَالْمُؤْمِنِينَ أَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكْفُرُوا
أُولَئِكَ كَانُوا فِي يَدَيْكَ وَيَالَيْكَ تُمَاتًا قَلِيلًا
وَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا

وَلَا تَلْبَسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَأَنْتُمْ
تَكْفُرُونَ

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ

أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ أَنْفُسَكُمْ
وَأَنْتُمْ تَقُولُونَ الْكِبْرَىٰ أَفَلَا تَعْقِلُونَ

وَأَسْبِغُوا بِالْمَاءِ الْوَجْهَ وَالصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ
وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ

1 अर्थात धर्मपुस्तक तौरात।

2 अर्थात: अन्तिम नबी के गुणों को, जो तुम्हारी पुस्तकों में वर्णित किये गये हैं।

3 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक हदीस (कथन) में इस का दुष्परिणाम यह बताया गया है कि: प्रलय के दिन एक व्यक्ति को लाया जायेगा, और नरक में फेंक दिया जायेगा। उस की अंतड़ियाँ निकल जायेंगी, और वह उन को लेकर नरक में ऐसे फिरेगा जैसे गधा चक्की के साथ फिरता है। तो नारकी उस के पास जायेंगे तथा कहेंगे कि: तुम पर यह क्या आपदा आ पड़ी है? तुम तो हमें सदाचार का आदेश देते, तथा दुराचार से रोकते थे। वह कहेगा कि मैं तुम्हें सदाचार का आदेश देता था, परन्तु स्वयं नहीं करता था। तथा दुराचार से रोकता था और स्वयं नहीं रुकता था। (सहीह बुखारी, हदीस नं०: 3267)

4 भावार्थ यह है कि धैर्य तथा नमाज़ से अल्लाह की आज्ञा के अनुपालन तथा

46. जो समझते हैं कि: उन्हें अपने पालनहार से मिलना है, और उन्हें फिर उसी की ओर (अपने कर्मों का फल भोगने के लिये) जाना है।
47. हे बनी इस्राईल! मेरे उस पुरस्कार को याद करो, जो मैं ने तुम पर किया, और यह कि: तुम्हें संसार वासियों पर प्रधानता दी थी।
48. तथा उस दिन से डरो, जिस दिन कोई किसी के कुछ काम नहीं आयेगा, और न उस की कोई अनुशंसा (सिफारिश) मानी जायेगी, और न उस से कोई अर्थदण्ड लिया जायेगा, और न उन्हें कोई सहायता मिल सकेगी।
49. तथा (वह समय याद करो) जब हमने तुम्हें फिरऔनियों^[1] से मुक्ति दिलाई। वह तुम्हें कड़ी यातना दे रहे थे: वह तुम्हारे पुत्रों को वध कर रहे थे, तथा तुम्हारी नारियों को जीवित रहने देते थे, इस में तुम्हारे पालनहार की ओर से कड़ी परीक्षा थी।
50. तथा (याद करो) जब हम ने तुम्हारे लिये सागर को फाड़ दिया, फिर तुम्हें बचा लिया, और तुम्हारे देखते देखते फिरऔनियों को डुबो दिया।
51. तथा (याद करो) जब हम न मूसा को (तौरात प्रदान करने के लिये) चालीस

الَّذِينَ يَطْمَئِنُّونَ أَنَّهُمْ مُلْفُونَ إِلَهُهُمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿٤٦﴾

يَذِكُرُ إِسْرَائِيلَ إِذْ كُفِرَ بِعَصَى الْاَلِيِّ اَلْعَمَّتِ عَلَيْكُمْ وَاِنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾

وَالْقَوْمَ اَلْيَوْمَ اَلَا يَجِزِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَاَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَاَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَاَلَا هُمْ يُبْصَرُونَ ﴿٤٨﴾

وَ اِذْ تَحْسَبُكُمْ مِنَ اَلِ اَلْفِرْعَوْنَ اَلْيَوْمَ اَلْيَوْمَ نَكُومُكُمْ سَوْمَ الْعَذَابِ اَلْيَذُخُونَ اَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَعِجُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذُلِكُمْ بَلَاءٌ مِّنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿٤٩﴾

وَ اِذْ فَرَقْنَا بِكُمْ الْبَحْرَ فَاَنجَبْنَاكُمْ وَاَخْرَجْنَا اَلْفِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿٥٠﴾

وَ اِذْ وَعَدْنَا مُوسَى اَلْاَنْبِيَاةَ اَلَيْلَةَ اَلَّتِي اتَّخَذْتُمْ

सदाचार की भावना उत्पन्न होती है।

1 फिरऔन मिस्र के शासकों की उपाधि होती थी।

रात्री का वचन दिया, फिर उन के पीछे तुम ने बछड़े को (पूज्य) बना लिया, और तुम अत्याचारी थे।

52. फिर हम ने इस के पश्चात् तुम्हें क्षमा कर दिया, ताकि तुम कृतज्ञ बनो ।

53. तथा (याद करो) जब हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) तथा फुर्कान^[1] प्रदान किया, ताकि तुम सीधी डगर पा सको।

54. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा: तुम ने बछड़े को पूज्य बना कर अपने ऊपर अत्याचार किया है, अतः तुम अपने उत्पत्तिकार के आगे क्षमा याचना करो, वह यह कि आपस में एक दूसरे^[2] को बध करो, इसी में तुम्हारे उत्पत्तिकार के समीप तुम्हारी भलाई है, फिर उस ने तुम्हारी तौबा स्वीकार कर ली, वास्तव में वह बड़ा क्षमाशील, दयावान् है।

55. तथा (याद करो) जब तुम न मूसा से कहा: हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे, जब तक हम अल्लाह को आँखों से देख नहीं लेंगे, फिर तुम्हारे देखते देखते तुम्हें कड़क ने धर लिया (जिस से सब निर्जीव होकर गिर गये)।

56. फिर (निर्जीव होने के पश्चात्) हम ने

الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهَا وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ﴿٥٢﴾

لَمْ نَعَفْوَ عَنْكُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٣﴾

وَإِذْ أَنْبَأْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿٥٤﴾

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يُقَوْمِ إِنَّمَا ظَلَمْتُمْ أَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوبُوا إِلَى بَارِيكُمْ فَاقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ عِنْدَ بَارِيكُمْ مِنْ قِتَابٍ عَلَيْكُمْ إِنَّهُ هُوَ الْتَوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٥٥﴾

وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَى لَنْ نُؤْمِنَ بِكَ حَتَّى نَرَى اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذْنَاكُمُ الضُّعْفَةَ وَأَنْتُمْ تُنظَرُونَ ﴿٥٦﴾

لَمْ نَعَفْوَ عَنْكُمْ مِنْ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٦﴾

1 फुर्कान का अर्थ: विवेककारी है, अर्थात् जिस के द्वारा सत्योसत्य में अन्तर और विवेक किया जाये।

2 अर्थात् जिस ने बछड़े की पूजा की है, उसे, जो निर्दोष हो वह हत करे। यही दोषी के लिये क्षमा है। (इब्ने कसीर)

तुम्हें जीवित कर दिया, ताकि तुम हमारा उपकार मानो।

57. और हम ने तुम पर बादलों की छाँव^[1] की, तथा तुम पर "मन्न"^[2] और "सलवा" उतारा, तो उन स्वच्छ चीजों में से जो हम ने तुम को प्रदान की है खाओ और उन्हीं ने हम पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर ही अत्याचार कर रहे थे।
58. और (याद करो) जब हम ने कहा कि इस बस्ती^[3] में प्रवेश करो, फिर उस में से जहाँ से चाहो मनमानी खाओ। और उस के द्वार में सज्दा करते (सिर झुकाये) हुये प्रवेश करो, और क्षमा-क्षमा कहते जाओ, हम तुम्हारे पापों को क्षमा कर देंगे, तथा सुकर्मियों को अधिक प्रदान करेंगे।
59. फिर इन अत्याचारियों ने जो बात उन से कही गई थी, उसे दूसरी बात से बदल दिया। तो हम ने इन अत्याचारियों पर आकाश से उन की अवैज्ञा के कारण प्रकोप उतार दिया।
60. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति के लिये जल की प्रार्थना की तो

وَوَلَلْنَا عَنكُمُ الْعَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَمَا ظَلَمُونَا وَالْكَفْرَ كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٥٧﴾

وَإِذ قُلْنَا ادْخُلُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَأَدْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَتِكُمْ وَسَبِّحُوا الْحَمْدَ لِلَّهِ الْعَظِيمِ ﴿٥٨﴾

مَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْزًا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٥٩﴾

وَإِذ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِعَصَاكَ

- 1 अधिकांश भाष्यकारों ने इसे "तीह" के क्षेत्र से संबंधित माना है। (देखिये: तफ्सीरे कुर्तुबी)।
- 2 भाष्यकारों ने लिखा है कि: "मन्न" एक प्रकार का अति मीठा स्वादिष्ट गोंद था, जो ओस के समान रात्री के समय आकाश से गिरता था। तथा "सलवा" एक प्रकार के पक्षी थे जो संध्या के समय सेना के पास हज़ारों की संख्या में एकत्र हो जाते, जिन्हें बनी इसराईल पकड़ कर खाते थे।
- 3 साधारण भाष्यकारों ने इस बस्ती को "बैतुल मुकद्दस्" माना है।

हम ने कहा: अपनी लाठी को पत्थर पर मारो! तो उस से बारह^[1] सोते फूट पड़े और प्रत्येक परिवार ने अपने पीने के स्थान को पहचान लिया। अल्लाह का दिया खाओ और पीओ, और धरती में उपद्रव करते न फिरो।

61. तथा (याद करो) जब तुम ने कहा: हे मूसा! हम एक प्रकार का खाना सहन नहीं करेंगे, तुम अपने पालनहार से प्रार्थना करो कि हमारे लिये धरती की उपज, साग, ककड़ी, लहसुन, प्याज, दाल आदि निकाले, (मूसा ने) कहा: क्या तुम उत्तम के बदले तुच्छ माँगते हो? तो किसी नगर में उतर पड़ो, जो तुम ने माँगा है वहाँ वह मिलेगा। और उन पर अपमान तथा दरिद्रता थोप दी गई, और वह अल्लाह के प्रकोप के साथ फिरो। यह इस लिये कि वह अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़र कर रहे थे, और नबियों की अकारण हत्या कर रहे थे, यह इस लिये कि उन्होंने ने अवैज्ञा की, तथा (धर्म की) सीमा का उल्लंघन किया।

62. वस्तुतः जो ईमान लाये, तथा जो यहूदी हुये, और नसारा (ईसाई) तथा साबी, जो भी अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान लायेगा, और सत्कर्म करेगा, उन का प्रतिफल उन के पालनहार के पास है। और उन्हें

الْحَجَرِ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَا عَشَرَ عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَشْرَبَهُمْ كَلْبًا وَأَشْرَبُوا مِنْ رِزْقِ اللَّهِ وَلَا تَقْتُلُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٦٠﴾

وَأَذَقْتُمُ الْمَوْتَى لَنْ نُصْيبَ عَلَى طَعَامِهِمْ وَاحِدًا فَادْعُوا لِنَارِكُمْ نَجْرًا كِنَانِمَا تَنْبُتُ الْأَرْضُ مِنْ بَقْلِهَا وَتَوَاتِيهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصِلِهَا قَالِ أَسْتَبْدِلُونَ الَّذِي هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ إِنْ هِيَ إِلَّا حِسَابُهُمْ وَإِن لَّكُم مَّا سَأَلْتُمُ وَصُرَيْتَ عَلَيْهِمُ الدَّالَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ وَبَاءَ وَبَعْضٍ مِنَ اللَّهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يُكْفَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيَّ بِغَيْرِ الْحَقِّ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿٦١﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّالِي وَالصَّالِيْنَ مِنَ الْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

1 इसराईली वंश के बारह कबीले थे। अल्लाह ने प्रत्येक कबीले के लिये अलग-अलग सोते निकाल दिये ताकि उन के बीच पानी के लिये झगड़ा न हो। (देखिये: तफ्सीरे कुर्तबी)।

कोई डर नहीं होगा, और न ही वे उदासीन होंगे।^[1]

63. और (याद करो) जब हम ने तूर (पर्वत) को तुम्हारे ऊपर करके तुम से वचन लिया, कि जो हम ने तुम को दिया है, उसे दृढ़ता से पकड़ लो, और उस में (जो आदेश-निर्देश हैं) उन्हें याद रखो, ताकि तुम (यातना से) बच सको।
64. फिर उस के बाद तुम मुकर गये, तो यदि तुम पर अल्लाह की अनुग्रह और दया न होती, तो तुम क्षतिग्रस्तों में हो जाते।
65. और तुम उन्हें जानते ही हो जिन्होंने शनिवार के बारे में (धर्म की) सीमा का उल्लंघन किया, तो हम ने कहा कि तुम तिरिस्कृत बंदर^[2] हो जाओ।
66. फिर हम ने उसे, उस समय के तथा बाद के लोगों के लिये चेतावनी, और (अल्लाह से) डरने वालों के लिये शिक्षा बना दिया।
67. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा: अल्लाह तुम्हें एक गाय

وَأَذْخَلْنَا مَائِدًا مِّنَّا قَوْمًا وَرَعَيْنَا قَوْمَكُمْ الظُّرُوعِدًا
مَّا آتَيْنَاكُمْ يَوْمَ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُونَ

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ
عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخٰسِرِينَ

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ اللَّيْلِينَ اعْتَدُوا وَاوْمَكُمْ فِي النَّبْتِ
فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خٰسِرِينَ

فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِّلْمٰبِيْنَ يَذِيهَا وَمَا خَلَقَهَا
وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ

وَاذْ قَالِ مُوسٰى لِقَوْمِهِ اِنَّ اللّٰهَ يٰمُرُكُمْ اَنْ

- 1 इस आयत में यहूदियों के इस भ्रम का खण्डन किया गया है कि मुक्ति केवल उन्हीं के गिरोह के लिये है। आयत का भावार्थ यह है कि इन सभी धर्मों के अनुयायी अपने समय में सत्य आस्था तथा सत्कर्म के कारण मुक्ति के योग्य थे परन्तु अब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन के पश्चात् आप पर ईमान लाना तथा आप की शिक्षाओं को मानना मुक्ति के लिये अनिवार्य है।
- 2 यहूदियों के लिये यह नियम है कि वे शनिवार का आदर करें। और इस दिन कोई संसारिक कार्य न करें, तथा उपासना करें। परन्तु उन्हीं ने इस का उल्लंघन किया और उन पर यह प्रकोप आया।

वध करने का आदेश देता है। उन्होंने ने कहा: क्या तुम हम से उपहास कर रहे हो? (मूसा ने) कहा: मैं अल्लाह की शरण माँगता हूँ कि मूर्खों में हो जाऊँ।

68. वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिये निवेदन करो कि हमें बता दे कि वह गाय कैसी हो? (मूसा ने) कहा: वह (अर्थात: अल्लाह) कहता है कि वह न बूढ़ी हो, और न बछिया हो, इस के बीच आयु की हो। अतः जो आदेश तुम्हें दिया जा रहा है उसे पूरा करो।

69. वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिये निवेदन करो कि हमें उस का रंग बता दे। (मूसा ने) कहा: वह कहता है कि पीले गहरे रंग की गाय हो। जो देखने वालों को प्रसन्न कर दे।

70. वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिये निवेदन करो कि हमें बताये कि वह किस प्रकार की हो? वास्तव में हम गाय के बारे में दुविधा में पड़ गये हैं। और यदि अल्लाह ने चाहा तो हम (उस गाय का) पता लगा लेंगे।

71. मूसा बोले: वह कहता है कि वह ऐसी गाय हो जो सेवा कार्य न करती हो, न खेत (भूमि) जोतती हो, और न खेत सींचती हो, वह स्वस्थ हो, और उस में कोई धब्बा न हो। वह बोले: अब तुम ने उचित बात बताई है। फिर उन्होंने उसे वध कर दिया। जब कि वह समीप थे कि इस काम को न करें।

تَذَبُّوحًا بَقْرَةً قَالُوا أَتَتَّخِذُنَا هُزُوءًا قَال
أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ۝

قَالُوا ادْعُ لِنَارِكَ يَبِّينَ لَنَا مَا هِيَ قَال إِنَّهُ
يَقُولُ إِنَّهَا بَقْرَةٌ لَا قَارِضٌ وَلَا يَكْرُ عَوَانٌ
بَيْنَ ذَلِكَ فَاعْمَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ۝

قَالُوا ادْعُ لِنَارِكَ يَبِّينَ لَنَا مَا لَوْ هِيَ قَال
إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقْرَةٌ صَفْرَاءٌ فَاقْرَأْ لَوْ هِيَ
سَسْرُ الظَّرِيسِ ۝

قَالُوا ادْعُ لِنَارِكَ يَبِّينَ لَنَا مَا هِيَ إِنْ الْبَقْرَ
تَشَبَّهَ عَلَيْنَا وَاتَّارَانَ شَاءَ اللَّهُ لَكُمُتَدَوْنَ ۝

قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقْرَةٌ لَا ذَلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ
وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ مُسَلَّمَةٌ لَا شِيَةَ فِيهَا قَالُوا لَنْ
جِدَّتْ بِالْحَقِّ فَمَا بَعُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ۝

72. और (याद करो) जब तुम ने एक व्यक्ति की हत्या कर दी, तथा एक दूसरे पर (दोष) थोपने लगे, और अल्लाह को उसे व्यक्त करना था जिसे तुम छुपा रहे थे।
73. अतः हम ने कहा कि उस (निहत व्यक्ति के शव) को उस (गाय) के किसी भाग से मारो^[1], इसी प्रकार अल्लाह मुर्दों को जीवित करेगा। और वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम समझो।
74. फिर यह (निशानियाँ देखने) के बाद तुम्हारे दिल पत्थरों के समान या उन से भी अधिक कठोर हो गये। क्योंकि पत्थरों में कुछ ऐसे होते हैं, जिन से नहरें फूट पड़ती हैं। और कुछ फट जाते हैं और उन से पानी निकल आता है। और कुछ अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं। और अल्लाह तुम्हारे कर्तूतों से निश्चेत नहीं है।
75. क्या तुम आशा रखते हो कि (यहूदी) तुम्हारी बात मान लेंगे, जब कि उन में एक गिरोह ऐसा था जो अल्लाह की वाणी (तौरात) को सुनता था, और समझ जाने के बाद जान बूझ कर उस में परिवर्तन कर देता था?

وَإِذ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادْرَأْتُمْ فِيهَا وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٧٢﴾

فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا كَمَا كُنَّا نَأْمُرُكَ يَا أَيُّهَا اللَّهُ الْمَوْتِيُّ ﴿٧٣﴾
وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٧٤﴾

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَتَّقَى فَيَجْرِي مِنْهُ الْمَاءُ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَاللَّهُ بِعَافِي عِبَادِهِ عَلِيمٌ ﴿٧٥﴾

أَفَتَعْظَمُونَ أَنْ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَقَدْ كَانَ فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ يَحْرَفُونَهُ مِنْ بَعْدِ مَا عَقَلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾

1 भाष्यकारों ने लिखा है कि इस प्रकार निहत व्यक्ति जीवित हो गया। और उस ने अपने हत्यारे को बताया, ओर फिर मर गया। इस हत्या के कारण ही बनी इसराईल को गाय की बलि देने का आदेश दिया गया था। अगर वह चाहते तो किसी भी गाय की बलि दे देते, परन्तु उन्होंने ने टाल मटोल से काम लिया, इस लिये अल्लाह ने उस गाय के विषय में कठोर आदेश दिया।

76. तथा जब वह ईमान वालों से मिलते हैं, तो कहते हैं कि हम भी ईमान^[1] लाये, और जब एकान्त में आपस में एक दूसरे से मिलते हैं, तो कहते हैं कि तुम उन्हें वह बातें क्यों बताते हो जो अल्लाह ने तुम पर खोली^[2] है? इस लिये कि प्रलय के दिन तुम्हारे पालनहार के पास इसे तुम्हारे विरुद्ध प्रमाण बनायें, क्या तुम समझते नहीं हो?

77. क्या वह नहीं जानते कि वह जो कुछ छुपाते तथा व्यक्त करते हैं, उस सब को अल्लाह जानता है?

78. तथा उन में कुछ अनपढ़ हैं, वह पुस्तक (तौरात) का ज्ञान नहीं रखते, परन्तु निराधार कामनायें करते, तथा केवल अनुमान लगाते हैं।

79. तो विनाश है उन के लिये^[3] जो अपने हाथों से पुस्तक लिखते हैं, फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है, ताकि उस के द्वारा तनिक मूल्य खरीदें। तो विनाश है उन के अपने हाथों के लेख के कारण! और विनाश है उन की कमाई के कारण!

80. तथा उन्होंने ने कहा कि हमें नरक की अग्नि गिनती के कुछ दिनों के सिवा स्पर्श नहीं करेगी। (हे नबी!) उन से कहो कि क्या तुम ने अल्लाह से कोई वचन ले लिया है, कि अल्लाह अपना

وَإِذْ الْقَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَا
بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ قَالُوا أَتُحَدِّثُونَهُمْ بِمَا فَتَمَّ
اللَّهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاجُّوكُمْ بِهِ عِنْدَ رَبِّكُمْ أَفَلَا
تَعْقِلُونَ ①

أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا
يُعْلِنُونَ ②

وَمِنْهُمْ أُمِّيُونَ لَا يَحْتَسِبُونَ الْكِتَابَ إِلَّا آمَانِينَ
وَإِنَّهُمْ إِلَّا يَتُفَتُونَ ③

فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَتَبُوا الْكَيْدَ بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ
يَقُولُونَ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ لِيَشْتَرُوا بِهِ ثَمَنًا
قَلِيلًا قَوْلًا لَهُمْ وَمَا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ
لَهُمْ مِمَّا يَكْسِبُونَ ④

وَقَالُوا لَنْ نَمَسَّ النَّارَ إِلَّا أَيَّامًا مَعْدُودَةً قُلْ
أَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللَّهِ عَهْدًا فَلَنْ تُخْلَفُوا اللَّهُ
عَهْدًا أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ⑤

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम पर।

2 अर्थात् अन्तिम नबी के विषय में तौरात में बताई है।

3 इस में यहूदी विद्वानों के कुकर्मा को बताया गया है।

वचन भंग नहीं करेगा? बल्कि तुम अल्लाह के बारे में ऐसी बातें करते हो, जिन का तुम्हें ज्ञान नहीं।

81. क्यों^[1] नहीं, जो भी बुराई कमायेगा, तथा उस का पाप उसे घेर लेगा, तो वही नारकीय है। और वही उस में सदावासी होंगे।
82. तथा जो ईमान लायें और सत्कर्म करें, वही स्वर्गीय है। और वह उस में सदावासी होंगे।
83. और (याद करो) जब हम ने बनी इस्राईल से दृढ़ वचन लिया कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (वंदना) नहीं करोगे, तथा माता-पिता के साथ उपकार करोगे, और समीपवर्ती संबंधियों, अनाथों, दीन-दुखियों के साथ, और लोगों से भली बात बोलोगे, तथा नमाज़ की स्थापना करोगे, और ज़कात दोगे, फिर तुम में से थोड़े के सिवा सब ने मुँह फेर लिया, और तुम (अभी भी) मुँह फेरे हुए हो।
84. तथा (याद करो) जब हमने तुम से दृढ़ वचन लिया कि आपस में रक्तपात नहीं करोगे, और न अपनों को अपने घरों से निकालोगे। फिर तुम ने स्वीकार किया, और तुम उस के साक्षी हो।

بَلْ مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاطَتْ بِهِ خَطِيئَتُهُ
فَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨١﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَئِكَ
أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨٢﴾

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ لَا
تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ تَوَالِدِينَ إِحْسَانًا
وَذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ
وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَآتُوا الزَّكَاةَ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا
مِّنْكُمْ وَأَنْتُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٨٣﴾

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُونَ دِمَاءَكُمْ وَلَا
تُخْرِجُونَ أَنْفُسَكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ أَقْرَرْتُمْ
وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ﴿٨٤﴾

1 यहाँ यहूदियों के दावे का खण्डन तथा नरक और स्वर्ग में प्रवेश के नियम का वर्णन है।

85. फिर^[1] तुम वही हो, जो अपनों की हत्या कर रहे हो, तथा अपनों में से एक गिरोह को उन के घरों से निकाल रहे हो, और पाप तथा अत्याचार के साथ उन के विरुद्ध सहायता करते हो, और यदि वे बंदी होकर तुम्हारे पास आयें तो उन का अर्थदण्ड चुकाते हो, जब कि उन को निकालना ही तुम पर हARAM (अवैध) था, तो क्या तुम पुस्तक के कुछ भाग पर ईमान रखते हो, और कुछ का इन्कार करते हो? फिर तुम में से जो ऐसा करते हों, तो उन का दण्ड क्या है? इस के सिवा कि सांसारिक जीवन में अपमान तथा प्रलय के दिन अति कड़ी यातना की ओर फेरे जायें, और अल्लाह तुम्हारे कर्तूतों से निश्चेत नहीं है।

86. उन्होंने ने ही आखिरत (परलोक) के बदले संसारिक जीवन खरीद लिया, अतः उन से यातना मंद नहीं की जायेगी, और न उन की सहायता की जायेगी।

87. तथा हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की, और उस के पश्चात् निरन्तर रसूल भेजे, और हम ने मरयम के पुत्र ईसा को खुली

ثُمَّ أَنْتُمْ هَؤُلَاءِ تَقْتُلُونَ أَنْفُسَكُمْ وَتُخْرَجُونَ
فَرِيقًا مِنْكُمْ مِنْ دِيَارِهِمْ تَظَاهَرُونَ عَلَيْهِمْ
بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَإِن يَأْتُواكُمْ أَسْرَى
تُفَدُّوهُمْ وَهُمْ مُحْرَمُونَ عَلَيْهِمْ إِخْرَاجُهُمْ
أَفَتُؤْمِنُونَ بِبَعْضِ الْكِتَابِ وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ
فَمَا جَزَاءُ مَنْ يَفْعَلُ ذَلِكَ مِنْكُمْ إِلَّا خِزْيٌ فِي
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يُرَدُّونَ إِلَى أَسَدِّ
الْعَذَابِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٥٠﴾

أُولَئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ
فَلَا يَحْقُقُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ
يُنصَرُونَ ﴿٥١﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِ
بِالرُّسُلِ ذُرِّيَّتَ عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ الْبَنِيَّةِ
وَآتَيْنَاهُ بُرُوجَ الْقُدُسِ ۖ لَمَّا كَفَّلَاهُ أَكْرَمَ رَسُولٍ ﴿٥٢﴾

1 मदीने में यहूदियों के तीन कबीलों में बनी कैनुकाअ और बनी नजीर मदीने के अरब कबीले खज़रज के सहयोगी थे। और बनी कुरैजा औस कबीले के सहयोगी थे। जब इन दोनों कबीलों में युद्ध होता तो यहूदी कबीले अपने पक्ष के साथ दूसरे पक्ष के साथी यहूदी की हत्या करते। और उसे बे घर कर देते थे। और युद्ध विराम के बाद पराजित पक्ष के बंदी यहूदी का अर्थदण्ड दे कर यह कहते हुये मुक्त करा देते कि हमारी पुस्तक तौरात का यही आदेश है। इसी का वर्णन अल्लाह ने इस आयत में किया है। (तफ्सीर इब्ने कसीर)

निशानियाँ दीं, और रूहुल कुदुस^[1] द्वारा उसे समर्थन दिया, तो क्या जब भी कोई रसूल तुम्हारी अपनी मनमानी के विरुद्ध कोई बात तुम्हारे पास लेकर आया तो तुम अकड़ गये, अतः कुछ नबियों को झुठला दिया, और कुछ की हत्या करने लगे?

88. तथा उन्होंने ने कहा कि हमारे दिल तो बंद^[2] हैं। बल्कि उन के कुफ्र (इन्कार) के कारण अल्लाह ने उन्हें धिक्कार दिया है। इसी लिये उन में से बहुत थोड़े ही ईमान लाते हैं।
89. और जब उन के पास अल्लाह की ओर से एक पुस्तक (कुर्आन) आ गई, जो उन के साथ की पुस्तक का प्रमाणकारी है, जब कि: इस से पूर्व वह स्वयं काफ़िरों पर विजय की प्रार्थना कर रहे थे, तो जब उन के पास वह चीज़ आ गई जिसे वह पहचान भी गये, फिर भी उस का इन्कार कर^[3] दिया, तो

يٰۤاَيُّهَا تَهَوَّىۤ اَنْفُسُكُمْ اَسْتَكْبِرُوْكُمْ فَرِحْتُمْ
كَذٰبْتُمْ وَّوَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ۝

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌۭ بَلْ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ
بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝

وَلَمَّا جَاءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ
لِّمَا مَعَهُمْ وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَمَّا جَاءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا
بِهٖۤ فَلََعَنَهُ اللّٰهُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝

- 1 रूहुल कुदुस से अभिप्रेत: फ़रिश्ता जिब्रिल अलैहिस्सलाम हैं।
- 2 अर्थात्: नबी की बातों का हमारे दिलों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता।
- 3 आयत का भावार्थ यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस पुस्तक (कुर्आन) के साथ आने से पहले वह काफ़िरों से युद्ध करते थे, तो उन पर विजय की प्रार्थना करते और बड़ी व्याकुलता के साथ आप के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। जिस की भविष्यवाणी उन के नबियों ने की थी, और प्रार्थनायें किया करते थे कि आप शीघ्र आयें, ताकि काफ़िरों का प्रभुत्व समाप्त हो, और हमारे उत्थान के युग का शुभारंभ हो। परन्तु जब आप आ गये तो उन्होंने आप के नबी होने का इन्कार कर दिया, क्यों कि आप बनी इस्राईल में नहीं पैदा हुये, जो यहूदियों का गोत्र है। फिर भी आप इब्राहीम अलैहिस्सलाम ही के पुत्र

काफ़िरोँ पर अल्लाह की धिक्कार है।

90. अल्लाह की उतारी हुई (पुस्तक)^[1] का इन्कार कर के बुरे बदले पर इन्हों ने अपने प्राणों को बेच दिया, इस द्वेष के कारण कि अल्लाह ने अपना प्रदान (प्रकाशना) अपने जिस भक्त^[2] पर चाहा उतार दिया। अतः वह प्रकोप पर प्रकोप के अधिकारी बन गये, और ऐसे काफ़िरोँ के लिये अपमानकारी यातना है।

91. और जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह ने जो उतारा^[3] है, उस पर ईमान लाओ तो कहते हैं हम तो उसी पर ईमान रखते हैं जो हम पर उतरा है, और इस के सिवा जो कुछ है उस का इन्कार करते हैं। जब कि वह सत्य है। और उस का प्रमाणकारी है जो उन के पास है। कहो कि फिर इस से पूर्व अल्लाह के नबियों की हत्या क्यों करते थे, यदि तुम ईमान वाले थे तो?

92. तथा मूसा तुम्हारे पास खुली निशानियाँ ले कर आये। फिर तुम ने अत्याचार करते हुए बछड़े को पूज्य बना लिया।

93. फिर उस दृढ़ वचन को याद करो, जो हम ने तुम्हारे ऊपर तूर (पर्वत)

يَسْمَاً اشْتَرَوْا بِهَا أَنْفُسَهُمْ أَنْ يَكْفُرُوا بِهَا
أَنْزَلَ اللَّهُ بَعِيًّا أَنْ يُنَزَّلَ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ عَلَى
مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ قَبَاءً وَبِعْضٍ عَلَى
غَضَبٍ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ①

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ الْمُؤْمِنَاتُ أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا
نُؤْمِنُ بِهَا أَنْزَلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ بِهَا
وَرَاءَهُ وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِمَا مَعَهُمْ قُلْ
فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنْبِيَاءَ اللَّهِ مِنْ قَبْلُ إِنْ كُنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ ②

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُوسَى بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ
اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ③

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمْ

इस्माईल अलैहिस्सलाम के वंश से हैं, जैसे बनी इस्राईल उन के पुत्र इस्राईल की संतान हैं।

1 अर्थात् कुर्आन।

2 भक्त अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम को नबी बना दिया।

3 अर्थात् कुर्आन पर।

उठा कर लिया कि हम ने तुम को जो कुछ दिया है, उसे दृढ़ता से थाम^[1] लो, तथा ध्यान से सुनो। तो तुम ने कहा कि हम ने सुन लिया, और अवज्ञा की। और उन के दिलों में उन के अविश्वास के कारण बछड़ा^[2] बस गया। (हे नबी!) उन से कह दो कि यदि तुम ईमान रखते हो तो तुम्हारा ईमान तुम्हें कितनी बुरी बातों का आदेश दे रहा है।

94. तथा उन से कहो कि यदि अल्लाह के हाँ आखिरत (परलोक) का घर^[3] केवल तुम्हारे ही लिये है, दूसरों के सिवा, तो मृत्यु की कामना करो^[4], यदि तुम सत्यवादी हो।
95. तथा वह अपने कुकर्मों के कारण कदापि इस की कामना नहीं करेंगे। और अल्लाह अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है।
96. और तुम उन को अवश्य सब लोगों तथा मिश्रणवादियों से भी अधिक जीवन का लोभी पाओगे। इन में से प्रत्येक व्यक्ति हजार वर्ष आयु दिये जाने की कामना करता है, जब कि आयु दिया जाना उन्हें यातना से नहीं बचा सकेगा। और अल्लाह उन के कर्मों को देख रहा है।

الظُّورِ حُدًّا وَمَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَأَسْعَوْا
فَأَلْوَاسِيَعُنَا وَعَصَيْنَا وَأَشْرَبُوا فِي قُلُوبِهِمْ
الْعُجْلَ بِكُفْرِهِمْ قُلْ يَسْمَأِيَا مَرُكُم بِرَبِّ
إِيمَانِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

قُلْ إِنْ كَانَتْ لَكُمْ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ
خَالِصَةً يَمُنُّ دُونَ النَّاسِ فَتَمَتُّوا مَوْتًا
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

وَلَنْ يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ۝

وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَى حَيَاتِهِمْ وَمَنْ
الَّذِينَ أَشْرَكُوا يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعْتَرِفَ
سَنَةً وَمَا هُوَ بِمُرْجُوهُ مِنَ الْعَذَابِ أَنْ
يُعْتَرَفَ وَاللَّهُ بَصِيرٌ لِّمَا يَعْمَلُونَ ۝

1 थामने का अर्थ उस के आदेशों का पालन करना है।

2 अर्थात् वह बछड़े के प्रेम में मुग्ध हो गये।

3 अर्थात् स्वर्ग।

4 मृत्यु की कामना करो, ताकि शीघ्र स्वर्ग में पहुँच जाओ।

97. (हे नबी!)^[1] कह दो कि जो व्यक्ति जिब्रील का शत्रु है (तो रहे)। उस ने तो अल्लाह की अनुमति से इस संदेश (क़ुर्आन) को आप के दिल पर उतारा है, जो इस से पूर्व की सभी पुस्तकों का प्रमाणकारी तथा ईमान वालों के लिये मार्गदर्शन एवं (सफलता) का शुभ समाचार है।

98. जो अल्लाह तथा उस के फरिश्तों और उस के रसूलों और जिब्रील तथा मीकाईल का शत्रु हो, तो अल्लाह काफिरों का शत्रु है।^[2]

99. और (हे नबी!) हम ने आप पर खुली आयतें उतारी हैं, और इस का इन्कार केवल वही लोग^[3] करेंगे जो कुकर्मि हैं।

100. क्या ऐसा नहीं हुआ है कि जब कभी उन्होंने ने कोई वचन दिया तो उन के एक गिरोह ने उसे भंग कर दिया? बल्कि इन में बहुतेरे ऐसे हैं जो ईमान नहीं रखते।

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ
عَلَى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ
وَهُدًى وَبُشْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ ۝

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ
وَمِيكَائِيلَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِلْكَافِرِينَ ۝

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَمَا
يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا الْفَاسِقُونَ ۝

أَوَلَمْ نَعْلَمْ مَعَهُدَ آبَائِهِمْ إِذْ أَخَذْنَا مِنْهُمُ الْبَيْعَ
أَلَّا يَكْفُرُوا بِمَنْ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ ۚ فَمَنْ كَفَرَ
بِمَنْ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ فَأُولَئِكَ فَطَرْنَا مِنْهُمْ
إِثْمًا كَبِيرًا ۝

1 यहूदी, केवल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के अनुयायियों ही को बुरा नहीं कहते थे, वह अल्लाह के फरिश्ते जिब्रील को भी गालियाँ देते थे कि वह दया का नहीं, प्रकोप का फरिश्ता है। और कहते थे कि हमारा मित्र मीकाईल है।

2 आयत का भावार्थ यह है कि जिस ने अल्लाह के किसी रसूल -चाहे वह फरिश्ता हो या इन्सान- से बैर रखा तो वह सभी रसूलों का शत्रु तथा कुकर्मि है। (इब्ने कसीर)

3 इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि यहूदियों के विद्वान इब्ने सूरिया ने कहा: हे मुहम्मद! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप हमारे पास कोई ऐसी चीज़ नहीं लाये जिसे हम पहचानते हों। और न आप पर कोई खुली आयत उतारी गई कि हम आप का अनुसरण करें। इस पर यह आयत उतरी। (इब्ने जरीर)

101. तथा जब उन के पास अल्लाह की ओर से एक रसूल उस पुस्तक का समर्थन करते हुये जो उन के पास है, आ गया^[1] तो उन के एक समुदाय ने जिन को पुस्तक दी गई अल्लाह की पुस्तक को ऐसे पीछे डाल दिया जैसे वह कुछ जानते ही न हों।
102. तथा सुलैमान के राज्य में शैतान जो मिथ्या बातें बना रहे थे उस का अनुसरण करने लगे। जब कि सुलैमान ने कभी कुफ़ (जादू) नहीं किया, परन्तु कुफ़ तो शैतानों ने किया, जो लोगों को जादू सिखा रहे थे, तथा उन बातों का (अनुसरण करने लगे) जो बाबिल (नगर) के दो फ़रिश्तों हारूत और मारूत पर उतारी गई, और वह दोनों किसी को (जादू) नहीं सिखाते जब तक यह न कह देते कि: हम केवल एक परीक्षा हैं, अतः तू कुफ़ में न पड़। फिर भी वह उन दोनों से वह चीज सीखते जिस के द्वारा वह पति और पत्नी के बीच जुदाई डाल दें और वह अल्लाह की अनुमति बिना इस के द्वारा किसी को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते थे, परन्तु फिर भी ऐसी बातें सीखते थे जो उन के लिये हानिकारक हों, और लाभकारी न हों। और वह भली भाँति जानते थे कि जो इस का खरीदार बना परलोक में उस का कोई भाग नहीं, तथा कितना बुरा उपभोग्य है जिस

وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ بَدَّ قَوْمٌ مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَكُتِبَ اللَّهُ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ كَأَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿۱۰۱﴾

وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُوا الشَّيْطَانُ عَلَىٰ مُلْكٍ سُلَيْمٍ ۖ وَمَا كَفَرُوا سُلَيْمِينَ وَلَكِنَّ الشَّيْطَانَ كَفَرٌ وَإِعْلَمُونَ أَنَّهُ النَّاسُ السَّاجِدُونَ وَمَا أُنزِلَ عَلَى الْمَلَائِكِينَ بِأَيْلِ هَارُوتَ وَمَارُوتَ وَمَا يَعْلَمِينَ مِنْ أَحَدٍ حَتَّىٰ يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ۖ فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ الْمَرْءِ وَرَوْحِهِ وَمَا هُمْ بِضَارِّينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا يَأْذِنُ اللَّهُ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلْقٍ ثُمَّ وَكَيْسٌ مَا شَرَوْا بِهِ أَنفُسَهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿۱۰۲﴾

1 अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुर्आन के साथ आ गये।

के बदले वह अपने प्राणों का सौदा कर रहे हैं^[1], यदि वह जानते होते।

103. और यदि वह ईमान लाते, और अल्लाह से डरते, तो अल्लाह के पास इस का जो प्रतिकार (बदला) मिलता, वह उन के लिये उत्तम होता, यदि वह जानते होते।

104. हे ईमान वालो! तुम "राइना"^[2] न कहो, "उन्जुरना" कहो, और ध्यान से बात सुनो, तथा काफ़िरोँ के लिये दुखदायी यातना है।

105. अहले किताब में से जो काफ़िर हो गये, तथा जो मिश्रणवादी हो गये, यह नहीं चाहते कि तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर कोई भलाई उतारी जाये, और

وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَوَلَّوْنَ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ﴿١٠٣﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا وَقُولُوا انظُرْنَا وَاسْمَعُوا وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾

مَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الشُّرَكَائِ أَنْ يَتَزَكَّلَ عَلَيْكُمْ مِنْ خَيْرٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿١٠٥﴾

1 इस आयत का दूसरा अर्थ यह भी किया गया है कि सुलैमान ने कुफ़्र नहीं किया, परन्तु शैतानों ने कुफ़्र किया, वह मानव को जादू सिखाते थे और न दो फ़रिश्तों पर जादू उतारा गया, उन शैतानों या मानव में से हारूत तथा मारूत जादू सिखाते थे। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)। जिस ने प्रथम अनुवाद किया है उस का यह विचार है कि मानव के रूप में दो फ़रिश्तों को उन की परीक्षा के लिये भेजा गया था।
सुलैमान अलैहिस्सलाम एक नबी और राजा हुये हैं। आप दावूद अलैहिस्सलाम के पुत्र थे।

2 इब्ने अब्बास रज़ियल्लाह अन्हुमा कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सभा में यहूदी भी आ जाते थे। और मुसलमानों को आप से कोई बात समझनी होती तो "राइना" कहते। अर्थात: हम पर ध्यान दीजिये, या हमारी बात सुनिये। इब्रानी भाषा में इस का बुरा अर्थ भी निकलता था, जिस से यहूदी प्रसन्न होते थे, इस लिये मुसलमानों को आदेश दिया गया कि: इस के स्थान पर तुम "उन्जुरना" कहा करो। अर्थात हमारी ओर देखिये। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

अल्लाह जिस पर चाहे अपनी विशेष दया करता है, और अल्लाह बड़ा दानशील है।

106. हम अपनी कोई आयत निरस्त कर देते अथवा भुला देते हैं तो उस से उत्तम अथवा उस के समान लाते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह जो चाहे^[1] कर सकता है?

107. क्या तुम यह नहीं जानते कि: अकाशों तथा धरती का राज्य अल्लाह ही के लिये है, और उस के सिवा तुम्हारा कोई रक्षक और सहायक नहीं है?

108. क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से उसी प्रकार प्रश्न करो, जैसे मूसा से प्रश्न किये जाते रहे? और जो व्यक्ति ईमान की नीति को कुफ़्र से बदल लेगा तो वह सीधी डगर से विचलित हो गया।

109. अहले किताब में से बहुत से चाहते हैं कि तुम्हारे ईमान लाने के पश्चात् अपने द्वेष के कारण तुम्हें कुफ़्र की ओर फेर दें। जब कि सत्य उन के लिये उजागर हो गया, फिर भी तुम क्षमा से काम लो और जाने दो। यहाँ तक कि अल्लाह अपना निर्णय कर दे। निश्चय अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

مَا نَسْتَعْرَضُ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِبُهَا لِتَابِعِيٍّ قَدِيرًا أَوْ
مِثْلَهَا ۗ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وٰرِثٍ وَّلَا نَصِيْرٌ ۝

أَمْ تَرْيَدُونَ أَنْ نَسْأَلُوا رَسُولَكُمْ كَمَا سَأَلُوا
مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ ۗ وَمَنْ يَتَّبِعِ الْكُفْرَ
بِالْإِيمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝

وَدَكٰثِرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُوْنَكُمْ مِنْ
بَعْدِ إِيمَانِكُمْ لَقَالُوا ائْحْسَدًا مِّنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ
مِّنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۗ وَاعْتَمُوا
وَاصْفَحُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

1 इस आयत में यहूदियों के तौरात के आदेशों के निरस्त किये जाने तथा ईसा अलैहिस्सलाम और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबूव्वत के इन्कार का खण्डन किया गया है।

110. तथा तुम नमाज़ की स्थापना करो, और ज़कात दो। और जो भी भलाई अपने लिये किये रहोगे, उसे अल्लाह के यहाँ पाओगे। तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह उसे देख रहा है।

111. तथा उन्होंने ने कहा कि कोई स्वर्ग में कदापि नहीं जायेगा, जब तक यहूदी अथवा नसारा^[1] (ईसाई) न हो। यह उन की कामनायें हैं। उन से कहो कि यदि तुम सत्यवादी हो तो कोई प्रमाण प्रस्तुत करो।

112. क्यों नहीं^[2] जो भी स्वयं को अल्लाह की आज्ञा पालन के समर्पित कर देगा, तथा सदाचारी होगा तो उस के पालनहार के पास उस का प्रतिफल है। और उन पर कोई भय नहीं होगा, और न वह उदासीन होंगे।

113. तथा यहूदियों ने कहा कि ईसाईयों के पास कुछ नहीं। और ईसाईयों ने कहा कि यहूदियों के पास कुछ नहीं है। जब कि वह धर्म पुस्तक^[3] पढ़ते हैं। इसी जैसी बात उन्होंने ने भी कही, जिन के पास धर्मपुस्तक का कोई ज्ञान^[4] नहीं,

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَمَا
نَفَعْتُمْ مَالًا لَّا تَقْسِمُ لَكُمْ مِن خَيْرٍ لِّمَن حَادَّوهُ وَعِنْدَنَا لِلَّهِ
إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

وَقَالُوا لَنُيَدَّخِلَ الْجَنَّةَ الْإِيمَانَ كَانَ هُوَذَا
أَوْ تَصْرِيحِي بِتِلْكَ أَمَانَةٍ لَهُمْ قُلْ هَاتُوا
بُيُوتَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُ
أَجْرٌ عِنْدَ رَبِّهِ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ۝

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصَارَىٰ عَلَىٰ شَيْءٍ وَقَالَتِ
النَّصَارَىٰ لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلَىٰ شَيْءٍ وَهُمْ يَتَّبِعُونَ
الْكِتَابَ كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ
قَوْلِهِمْ قَالَتْ إِنَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا
كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝

- 1 अर्थात् यहूदियों ने कहा कि केवल यहूदी जायेंगे, और ईसाईयों ने कहा कि केवल ईसाई जायेंगे।
- 2 स्वर्ग में प्रवेश का साधारण नियम अर्थात् मुक्ति एकेश्वरवाद तथा सदाचार पर आधारित है, किसी जाति अथवा गिरोह पर नहीं।
- 3 अर्थात् तौरात तथा इंजील जिस में सब नबियों पर ईमान लाने का आदेश दिया गया है।
- 4 धर्म पुस्तक से अज्ञान अरब थे। जो यह कहते थे कि: (सुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास कुछ नहीं है।

यह जिस विषय में विभेद कर रहे हैं उस का निर्णय अल्लाह प्रलय के दिन उन के बीच कर देगा।

114. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा, जो अल्लाह की मस्जिदों में उस के नाम का वर्णन करने से रोके। और उन्हें उजाड़ने का प्रयत्न करे^[1], उन्हीं के लिये योग्य है कि उस में डरते हुये प्रवेश करें, उन्हीं के लिये संसार में अपमान है, और उन्हीं के लिये आखिरत (परलोक) में घोर यातना है।
115. तथा पूर्व और पश्चिम अल्लाह ही के हैं, तुम जिधर भी मुख करो^[2], उधर ही अल्लाह का मुख है। और अल्लाह विशाल अति ज्ञानी है।
116. तथा उन्हीं ने कहा^[3] कि अल्लाह ने कोई संतान बना ली। वह इस से पवित्र है। आकाशों तथा धरती में जो भी है, वह उसी का है, और सब उसी के आज्ञाकारी हैं।
117. वह आकाशों तथा धरती का अविष्कारक है। जब वह किसी बात का निर्णय कर लेता है तो उस के लिये बस यह आदेश देता है कि "हो

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَنَعَ مَسْجِدَ اللَّهِ أَنْ يُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسَعَىٰ فِي خَرَابِهَا ۗ أُولَٰئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَنْ يَتَّخِذُوا مِنَّا حُرْمَةَ اللَّهِ إِذْ أَخْرَجْتَهُم مِّنَ الْبَنَاتِ ۗ ذُرِّيًّا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١١٤﴾

وَاللَّهُ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۗ قَائِمًا مَّا تَوَلَّوْا فَنُحُوتُهُ ۗ وَجَهَ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۗ سُبْحٰنَ اللَّهِ ۗ بَلْ كُنَّا قَوْمًا فَتٰوٰتٍ ۗ وَالْأَرْضُ كُلُّهَا قٰنِتُونَ ﴿١١٦﴾

بَدِيعُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَإِذَا أَقْصَىٰ أَمْرًا ۗ قٰنِمًا يَقُوْلُ لَآ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿١١٧﴾

- 1 जैसे मक्का वासियों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के साथियों को सन् 6 हिजरी में काबा में आने से रोक दिया। या ईसाईयों ने बैतुल मुकद्दस् को ढाने में बुख्त नस्सर (राजा) की सहायता की।
- 2 अर्थात् अल्लाह के आदेशानुसार जिधर भी रुख करोगे तुम्हें अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होगी।
- 3 अर्थात् यहूद और नसारा तथा मिश्रणवादियों ने।

जा" और वह हो जाती है।

118. तथा उन्होंने ने कहा जो ज्ञान^[1] नहीं रखते कि अल्लाह हम से बात क्यों नहीं करता, या हमारे पास कोई आयत क्यों नहीं आती। इसी प्रकार की बात इन से पूर्व के लोगों ने कही थी। इन के दिल एक समान हो गये। हम ने उन के लिये निशानियाँ उजागर कर दी हैं जो विश्वास रखते हैं।

119. (हे नबी!) हम ने आप को सत्य के साथ शुभ सूचना देने तथा सावधान^[2] करने वाला बना कर भेजा है। और आप से नारकियों के विषय में प्रश्न नहीं किया जायेगा।

120. हे नबी! आप से यहूदी तथा ईसाई सहमत (प्रसन्न) नहीं होंगे, जब तक आप उन की रीति पर न चलें। कह दो कि सीधी डगर वही है जो अल्लाह ने बताई है। और यदि आप ने उन की आकांक्षाओं का अनुसरण किया, इस के पश्चात् कि आप के पास ज्ञान आ गया, तो अल्लाह (की पकड़) से आप का कोई रक्षक और सहायक नहीं होगा।

121. और हम ने जिन को पुस्तक प्रदान की है, और उसे वैसे पढ़ते हैं, जैसे

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللَّهُ
أَوْ نُنزِّلُ آيَةً كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِهِمْ مِثْلَ قَوْلِهِمْ تَشَابَهَتْ قُلُوبُهُمْ قَدْ بَيَّنَّا
الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ⑥

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا
وَلَا تُسْئَلُ عَنْ أَصْحَابِ الْجَحِيمِ ⑥

وَلَنْ تَرْضَى عَنْكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصَارَى حَتَّى تَتَّبِعَهُ
مِنْهُمْ قُلْ إِنْ هَدَى اللَّهُ هُوَ الْهُدَىٰ وَلَئِنْ
ابْتَعَتْ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ الَّذِي جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ
مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَّالِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ⑥

الَّذِينَ اتَّيَّبَهُمُ الْكِتَابَ يَتْلُونَهُ حَقَّ تِلَاوَتِهِ

1 अर्थात् अरब के मिश्रणवादियों ने।

2 अर्थात् सत्य ज्ञान के अनुपालन पर स्वर्ग की शुभ सूचना देने, तथा इन्कार पर नरक से सावधान करने के लिये। इस के पश्चात् भी कोई न माने तो आप उस के उत्तरदायी नहीं हैं।

पढना चाहिये, वही उस पर ईमान रखते हैं। और जो उसे नकारते हैं वही क्षतिग्रस्तों में से हैं।

122. हे बनी इस्राईल! मेरे उस पुरस्कार को याद करो जो तुम पर किया। और यह कि तुम्हें (अपने युग के) संसार-वासियों पर प्रधानता दी थी।

123. तथा उस दिन से डरो जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के कुछ काम नहीं आयेगा, और न उस से कोई अर्थदण्ड स्वीकार किया जायेगा, और न उसे कोई अनुशंसा (सिफारिश) लाभ पहुँचायेगी, और न उन की कोई सहायता की जायेगी।

124. और (याद करो) जब इब्राहीम की उस के पालनहार ने कुछ बातों से परीक्षा ली। और वह उस में पूरा उतरा, तो उस ने कहा कि मैं तुम्हें सब इन्सानों का इमाम (धर्मगुरु) बनाने वाला हूँ। (इब्राहीम ने) कहा: तथा मेरी सन्तान से भी। (अब्राहम ने कहा:) मेरा वचन उन के लिये नहीं जो अत्याचारी^[1] हैं।

125. और (याद करो) जब हम ने इस घर (अर्थात: काबा) को लोगों के लिये बार बार आने का केन्द्र तथा शान्ति स्थल निर्धारित कर दिया। तथा यह आदेश दे दिया कि "मकामे इब्राहीम" को नमाज़ का

أُولَئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُونَ ﴿٢٠﴾

يٰٓبَنِي إِسْرٰٓءِيلَ اذْكُرُوا بِعِمِّيٰ الَّذِيْ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ
وَإِنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢١﴾

وَأَقْوَامُ يَوْمَئِذٍ لَا يُجِزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا
يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَلَا
هُمُ يُبْصَرُونَ ﴿٢٢﴾

وَإِذِ ابْتَلٰٓ اِبْرٰٓهٖمَ رَبُّهُ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَتْهُنَّ قَالِ اِنِّيْ
جٰٓئِلِكُمُ لِلنَّٰسِ اِمٰٓا مَآ قَالُوْا وَوَسَّوْا فِرْيٰٓسًا قَالِ لَا
يَبٰٓئُكَ عَهْدِيْ الظَّٰلِمِيْنَ ﴿٢٣﴾

وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَحَابَّةً لِّلنَّٰسِ وَاَمَنَّا وَاَتَيْنٰٓهُ مِنْ
مَّقَدِّمٍ اِبْرٰٓهٖمَ مُصَلِّئًا اِلٰٓى رَبِّهِمْ وَاَسْمِعِيْٓ اَنْ طَهَّرَ
يٰٓبَنِيْٓ لِظٰلِمِيْنَ وَاَلْعٰلَمِيْنَ وَاَلْوَكْعِ الشُّجُوْرِ ﴿٢٤﴾

1 आयत में अत्याचार से अभिप्रेत केवल मानव पर अत्याचार नहीं, बल्कि सत्य को नकारना तथा शिर्क करना भी अत्याचार में सम्मिलित हैं।

स्थान^[1] बना लो। तथा इब्राहीम और इस्माईल को आदेश दिया कि मेरे घर को तवाफ़ (परिक्रमा) तथा एतिकाफ़^[2] करने वालों, और सजदा तथा रुकू करने वालों के लिये पवित्र रखो।

126. और (याद करो) जब इब्राहीम ने अपने पालनहार से प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! इस छेत्र को शान्ति का नगर बना दे। तथा इस के वासियों को जो उन में से अल्लाह और अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखे, विभिन्न प्रकार की उपज (फलों) से आजीविका प्रदान कर। (अल्लाह ने) कहा: तथा जो काफिर है उन्हें भी मैं थोड़ा लाभ दूँगा, फिर उसे नरक की यातना की ओर बाध्य कर दूँगा। और वह बहुत बुरा स्थान है।

127. और (याद करो) जब इब्राहीम और इस्माईल इस घर की नींव ऊँची कर रहे थे। तथा प्रार्थना कर रहे थे: हे हमारे पालनहार! हम से यह सेवा स्वीकार कर ले। तू ही सब कुछ सुनता और जानता है।

128. हे हमारे पालनहार! हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना। तथा हमारी संतान से एक ऐसा समुदाय बना

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا بَلَدًا آسَافًا وَرَافِقًا
أَهْلُهُ مِنَ الشَّارِعَاتِ مَنْ آمَنَ مِنْهُمْ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَأُمَتِّعُهُ قَلِيلًا ثُمَّ أَضْطَرُّوهُ إِلَىٰ عَذَابِ
النَّارِ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿۱۲۶﴾

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ رَبَّنَا
تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿۱۲۷﴾

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً
مُّسْلِمَةً لَكَ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ

1 "मकामे इब्राहीम" से तात्पर्य वह पत्थर है जिस पर खड़े हो कर उन्होंने ने काबा का निर्माण किया। जिस पर उन के पदचिन्ह आज भी सुरक्षित हैं। तथा तवाफ़ के पश्चात् वहाँ दो रकअत नमाज़ पढ़नी सुन्नत है।

2 "एतिकाफ़" का अर्थ किसी मस्जिद में एकांत में हो कर अल्लाह की इबादत करना है।

दे जो तेरा आज्ञाकारी हो। और हमें हमारे (हज्ज) की विधियाँ बता दे। तथा हमें क्षमा कर। वास्तव में तू अतिक्षमी दयावान् है।

129. हे हमारे पालनहार! उन के बीच इन्हीं में से एक रसूल भेज, जो उन्हें तेरी आयतें सुनाये, और उन्हें पुस्तक (क़ुर्आन) तथा हिक़मत (सुन्नत) की शिक्षा दे। और उन्हें शुद्ध तथा आज्ञाकारी बना दे। वास्तव में तू ही प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ^[1] है।

130. तथा कौन होगा, जो इब्राहीम के धर्म से विमुख हो जाये परन्तु वही जो स्वयं को मूर्ख बना ले? जब कि हम ने उसे संसार में चुन^[2] लिया, तथा अख़िरत (परलोक) में उस की गणना सदाचारियों में होगी।

131. तथा (याद करो) जब उस के पालनहार ने उस से कहा: मेरा आज्ञाकारी हो जा। तो उस ने तुरन्त कहा: मैं विश्व के पालनहार का आज्ञाकारी हो गया।

أَنْتَ الْغَافِرُ الرَّحِيمُ ۝

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِیْهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ یَتْلُو عَلَیْهِمُ آیَاتِکَ وَیُعَلِّمُهُمُ الْکِتَابَ وَ الْحِکْمَةَ وَیُرِیْهِمْ آیَاتِکَ أَنْتَ الْعَزِیزُ الْحَکِیمُ ۝

وَمَنْ یَغِیْبُ عَنْ مِّلَّةِ إِبْرَاهِیمَ الْأَمِّنِ سَفِیْهَةٌ نَّفْسُهُ وَ لَقَدْ أَصْطَفَیْنَاهُ فِی الدُّنْیَا وَ الْآخِرَةِ فِی الرِّحَابِ لَیْسَ الظَّالِمِینَ ۝

إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْلِمْ قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعَالَمِینَ ۝

1 यह इब्राहीम तथा इस्माईल अलैहिमस्सलाम की प्रार्थना का अन्त है। एक रसूल से अभिप्रेत: मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है। क्योंकि इसमाईल अलैहिस्सलाम की संतान में आप के सिवा कोई दूसरा रसूल नहीं हुआ। हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: मैं अपने पिता इब्राहीम की प्रार्थना, ईसा की शुभ सूचना, तथा अपनी माता का स्वप्न हूँ। आप की माता आमिना ने गर्भ अवस्था में एक स्वप्न देखा कि मुझ से एक प्रकाश निकला, जिस से शाम (देश) के भवन प्रकाशमान हो गये। (देखिये: हाकिम 2600)। इस को उन्होंने ने सहीह कहा है। और इमाम ज़हबी ने इस की पुष्टि की है।

2 अर्थात् मार्गदर्शन देने तथा नबी बनाने के लिये निर्वाचित कर लिया।

132. तथा इब्राहीम ने अपने पुत्रों को तथा याकूब ने इसी बात पर बल दिया कि: हे मेरे पुत्रो! अल्लाह ने तुम्हारे लिये यह धर्म (इस्लाम) निर्वाचित कर दिया है। अतः मरते समय तक तुम इसी पर स्थिर रहना।

133. क्या तुम याकूब के मरने के समय उपस्थित थे, जब याकूब ने अपने पुत्रों से कहा: मेरी मृत्यु के पश्चात् तुम किस की इबादत (वंदना) करोगे? उन्होंने ने कहा: हम तेरे तथा तेरे पिता इब्राहीम और इसमाईल तथा इसहाक के एक पूज्य की इबादत (वंदना) करेंगे, और उसी के आज्ञाकारी रहेंगे।

134. यह एक समुदाय था जो जा चुका। उन्होंने ने जो कर्म किये वे उन के लिये हैं। तथा जो तुम ने किये वह तुम्हारे लिये। और उन के किये का प्रश्न तुम से नहीं किया जायेगा।

135. और वह कहते हैं कि यहूदी हो जाओ अथवा ईसाई हो जाओ, तुम्हें मार्गदर्शन मिल जायेगा। आप कह दें: नहीं। हम तो एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म पर हैं, और वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।

136. (हे मुसलमानो!) तुम सब कहो कि हम अल्लाह पर ईमान लाये, तथा उस पर जो (कुरआन) हमारी ओर उतारा गया। और उस पर जो इब्राहीम, इसमाईल, इसहाक, याकूब, तथा उन की संतान की

وَوَضِيَ بِهَا إِبْرَاهِيمُ بَيْتَهُ وَيَعْقُوبُ بَيْتَهُ إِنَّ
اللَّهَ اصْطَفَى لَكُمُ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُوا إِلَّا وَأَنتُمْ
مُسْلِمُونَ ﴿١٣٢﴾

أَمَرْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ الْمَوْتَ إِذْ
قَالَ بَنِيهِ مَا تَعْبُدُونَ مِنْ بَعْدِي قَالُوا نَعْبُدُ
إِلَهَكَ وَإِلَهَ آبَائِكَ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ
إِلَهُاتِنَا وَإِلَهُاتِ آبَائِنَا إِنَّنَا لَمُسْلِمُونَ ﴿١٣٣﴾

تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلكُمْ مَا
كَسَبْتُمْ وَلَا تَمُوتُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿١٣٤﴾

وَقَالُوا كُونُوا هُودًا أَوْ نَصَارَى تَهْتَدُوا قُلْ بَلْ
مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٣٥﴾

قُولُوا الْمَثَلُ بِأَلَدِهِ وَمَا نُزِّلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ إِلَى
إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ
وَمَا أَوْتِيَ مُوسَى وَعِيسَى وَمَا أُوتِيَ النَّبِيُّونَ مِنْ
رَبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ
مُسْلِمُونَ ﴿١٣٦﴾

ओर उतारा गया। और जो मूसा तथा ईसा को दिया गया, तथा जो दूसरे नबियों को उन के पालनहार की ओर से दिया गया। हम इन में से किसी के बीच अन्तर नहीं करते, और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।

137. तो यदि वह तुम्हारे ही समान ईमान ले आयें, तो वह मार्गदर्शन पा लेंगे। और यदि विमुख हों तो वह विरोध में लीन हैं। उन के विरुद्ध तुम्हारे लिये अल्लाह बस है। और वह सब सुनने वाला और जानने वाला है।

138. तुम सब अल्लाह के रंग^[1] (स्वभाविक धर्म) को ग्रहण कर लो। और अल्लाह के रंग से अच्छा किस का रंग होगा? हम तो उसी की इबादत (वंदना) करते हैं।

139. (हे नबी!) कह दो कि: क्या तुम हम से अल्लाह के (एकत्व) होने के विषय में झगड़ते हो? जब कि वही हमारा तथा तुम्हारा पालनहार है।^[2] फिर हमारे लिये हमारा कर्म है, और तुम्हारे लिये तुम्हारा कर्म है। और हम तो बस उसी की इबादत (वंदना) करने वाले हैं।

140. हे अहले किताब! क्या तुम कहते हो

فَإِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَجْمَعِينَ وَيُطَهِّرَ كَلِمَاتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَعْلَمُونَ ۝
وَإِن كَوَّلُوا قَوْلًا أَتَيْنَاهُمُ فِي شِقَاقٍ مُّسِيئِينَ كَلِمَةً ۝
اللَّهُ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

صِبْغَةَ اللَّهِ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً ۝
وَتَحْنُ لَهُ عِيدٌ ۝

قُلْ إِنَّمَا حُجَّتْ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُخْلِصُونَ ۝

أَمْ تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ

1 इस में ईसाई धर्म की (बैटिज़्म) की परम्परा का खण्डन है। ईसाईयों ने पीले रंग का जल बना रखा था। और जब कोई ईसाई होता या उन के यहाँ कोई शिशु जन्म लेता तो उस में स्नान करा के ईसाई बनाते थे। अल्लाह के रंग से अभिप्राय एकेश्वरवाद पर आधारित स्वभाविक धर्म इस्लाम है। (तफ्सीरी कर्तुबी)

2 अर्थात् फिर वंदनीय भी केवल वही है।

कि इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक, याकूब तथा उन की संतान यहूदी या ईसाई थी? उन से कह दो कि तुम अधिक जानते हो अथवा अल्लाह? और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा। जिस के पास अल्लाह का साक्ष्य हो, और उसे छुपा दे? और अल्लाह तुम्हारे कर्तूतों से अचेत तो नहीं है^[1]।

141. यह एक समुदाय था, जो जा चुका। उन के लिये उन का कर्म है, तथा तुम्हारे लिये तुम्हारा कर्म है। तुम से उन के कर्मों के बारे में प्रश्न नहीं किया जायेगा^[2]।

142. शीघ्र ही मर्ख लोग कहेंगे कि उन को जिस किबले^[3] पर वह थे, उस से किस बात ने फेर दिया? (हे नबी!) उन्हें बता दो कि पूर्व और पश्चिम सब अल्लाह के हैं। वह जिसे चाहे सीधी राह पर लगा देता है।

143. और इसी प्रकार हम ने तुम्हें मध्यवर्ती उम्मत (समुदाय) बना दिया, ताकि तुम सब पर साक्षी^[4]

وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ كَانُوا هُودًا أَوْ نَصَارَى قُلْ
ءَأَنْتُمْ أَعْلَمُ أَمِ اللَّهُ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ
شَهَادَاتِهِ عِنْدَ اللَّهِ مِنَ اللَّهِ وَمَا اللَّهُ بِعَاقِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٠﴾

بَلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلكُمْ مِمَّا
كَسَبْتُمْ وَلَا تَسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿٢١﴾

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّيْتُمْ عَن
قِبَلِهِمُ الَّذِي كَانُوا عَلَيْهَا قُلْ لِلَّهِ الشَّرْهُ
وَالْمُغْرِبُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٢٢﴾

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا أُمَّةً وَسَطًا لِنَتْلُو مِنْهَا عَلَى النَّاسِ
وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي

1 इस में यहूदियों तथा ईसाईयों के इस दावे का खण्डन किया गया है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम आदि नबी यहूदी अथवा ईसाई थे।

2 अर्थात् तुम्हारे पूर्वजों के सदाचारों से तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा, और न उन के पापों के विषय में तुम से प्रश्न किया जायेगा, अतः अपने कर्मों पर ध्यान दो।

3 नमाज़ में मुख करने की दिशा।

4 साक्षी होने का अर्थ जैसा कि हदीस में आया है यह है कि प्रलय के दिन नूह अलैहिस्सलाम को बुलाया जायेगा और उन से प्रश्न किया जायेगा कि क्या तुम ने अपनी जाति को सदेश पहुँचाया? वह कहेंगे: हाँ। फिर उन की जाति से प्रश्न किया जायेगा, तो वह कहेंगे कि हमारे पास सावधान करने के लिये कोई नहीं

बनो, और रसूल तुम पर साक्षी हों, और हम ने वह क़िबला जिस पर तुम थे, इसी लिये बनाया था ताकि यह बात खोल दें कि कौन (अपने धर्म से) फिर जाता है। और यह बात बड़ी भारी थी, परन्तु उन के लिये नहीं जिन्हें अल्लाह ने मार्गदर्शन दे दिया है। और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमान (अर्थात् बैतुलमक़दिस की दिशा में नमाज़ पढ़ने) को व्यर्थ कर दे, [1] वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये अत्यन्त करुणामय तथा दयावान् है।

144. (हे नबी!) हम आप के मुख को बार बार आकाश की ओर फिरते देख रहे हैं। तो हम अवश्य आप को उस क़िबले (काबा) की ओर फेर देंगे जिस से आप प्रसन्न हो जायें। तो (अब) अपना मुख मस्जिदे हुराम की ओर फेर लो [2], तथा (हे मुसलमानो!) तुम भी जहाँ रहो उसी की ओर मुख किया करो। और निश्चय अहले किताब जानते हैं कि यह उन के पालनहार की ओर से

كُنْتُمْ عَلَيْهَا أَلْتَعْلَمُونَ مَنْ يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبْ
عَلَىٰ عَقْبَيْهِ وَإِنْ كَانَتْ لَكِبْرَةٌ لِّأَعْلَىٰ الدِّينِ هَدَىٰ
اللَّهُ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضَيِّعَ أِيمَانَكُمْ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ
لَرَوُوفٌ رَّحِيمٌ

قَدْ رَأَىٰ تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً
تَرْضَاهَا فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا
كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ وَإِن كَانَ الدِّينُ أُوتُوهُ الْكِبْرَىٰ
يَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ وَاللَّهُ بِعَاقِلٍ سَكِّنًا
يَعْلَمُونَ

आया। तो अल्लाह तआला नूह अलैहिस्सलाम से कहेगा कि तुम्हारा साक्षी कौन है? वह कहेंगे: मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उन की उम्मत। फिर आप की उम्मत साक्ष्य देगी कि नूह ने अल्लाह का सन्देश पहुँचाया है। और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम पर अर्थात् मुसलमानों पर साक्षी होंगे। (सहीह बुखारी, 4486)

1 अर्थात् उस का फल प्रदान करेगा।

2 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का से मदीना प्रस्थान करने के पश्चात्, बैतुलमक़दिस की ओर मुख कर के नमाज़ पढ़ते रहे। फिर आप को काबा की ओर मुख कर के नमाज़ पढ़ने का आदेश दिया गया।

सत्य है^[1], और अल्लाह उन के कर्मों से असूचित नहीं है।

145. और यदि आप अहले किताब के पास प्रत्येक प्रकार की निशानी ला दें तब भी वह आप के क़िब्ले का अनुसरण नहीं करेंगे। और न आप उन के क़िबले का अनुसरण करेंगे, और न उन में से कोई दूसरे के क़िबले का अनुसरण करेगा। और यदि ज्ञान आने के पश्चात् आप ने उन की अकांक्षाओं का अनुसरण किया तो आप अत्याचारियों में से हो जायेंगे।

146. और जिन्हें हम ने पुस्तक दी है वह आप को ऐसे ही^[2] पहचानते हैं जैसे अपने पुत्रों को पहचानते हैं। और उन का एक समुदाय जानते हुये भी सत्य को छुपा रहा है।

147. सत्य वही है जो आप के पालनहार की ओर से उतारा गया। अतः आप कदापि सन्देह करने वालों में न हों।

148. प्रत्येक के लिये एक दिशा है, जिस की ओर वह मुख कर रहा है। अतः तुम भलाईयों में अग्रसर बनो। तुम जहाँ भी रहोगे अल्लाह तुम सभी को (प्रलय के दिन) ले आयेगा। निश्चय अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

وَلَيْنَ آتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ تَاتِعُوا
قِبْلَتَكَ وَمَا أَنْتَ بِتَائِعٍ قِبْلَتَهُمْ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَائِعٍ
قِبْلَةَ بَعْضٍ وَلَيْنَ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا
جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ إِنَّكَ إِذًا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٦٠﴾

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ
وَإِنَّ فَرِيقًا مِنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٦١﴾

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿٦٢﴾

وَلِكُلِّ وُجْهَةٍ هُوَ مُوَلِّئُهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ أَيْنَ مَا
تَكُونُوا يَأْتِ بِكُلِّ جَبِيلٍ إِنْ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ﴿٦٣﴾

- 1 क्योंकि अंतिम नबी के गुणों में उन की पुस्तकों में बताया गया है कि वह क़िबला बदल देंगे।
2 आप के उन गुणों के कारण जो उन की पुस्तकों में अंतिम नबी के विषय में वर्णित किये गये हैं।

149. और आप जहाँ भी निकलें अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर फेरें निःसन्देह यह आप के पालनहार की ओर से सत्य (आदेश) है, और अल्लाह तुम्हारे कर्मों से असूचित नहीं है।

150. और आप जहाँ से भी निकलें, अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर फेरें, और (हे मुसलमानो!) तुम जहाँ भी रहो अपने मुखों को उसी की ओर फेरो, ताकि उन को तुम्हारे विरुद्ध किसी विवाद का अवसर न मिले। मगर उन लोगों के अतिरिक्त जो अत्याचार करें अतः उन से न डरो। मुझी से डरो। और ताकि मैं तुम पर अपना पुरस्कार (धर्मविधान) पूरा कर दूँ और ताकि तुम सीधी डगर पा जाओ।

151. जिस प्रकार हम ने तुम्हारे लिये तुम्हीं में से एक रसूल भेजा जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाता तथा तुम को शुद्ध आज्ञाकारी बनाता है, और तुम्हें पुस्तक (कुरआन) तथा हिकमत (सुन्नत) सिखाता है, तथा तुम्हें वह बातें सिखाता है जो तुम नहीं जानते थे।

152. अतः मुझे याद करो, ^[1] मैं तुम्हें याद करूँगा। ^[2] और मेरे आभारी रहो। और मेरे कृतघ्न न बनो।

153. हे ईमान वालो! धैर्य तथा नमाज का सहारा लो, निश्चय अल्लाह धैर्यवानों के साथ है।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَإِلَىٰ ذَٰلِكَ نَمُنُّ ۚ وَمَنْ يُضَلَّ اللَّهُ فَمَا لَهُ بَدِيلًا ۚ وَمَنْ يَحْمِلْ إِثْمَكَ فَاعْتَمِلْ ۚ وَمَنْ يَحْمِلْ إِثْمَكَ فَاعْتَمِلْ ۚ

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَإِلَىٰ ذَٰلِكَ نَمُنُّ ۚ وَمَنْ يُضَلَّ اللَّهُ فَمَا لَهُ بَدِيلًا ۚ وَمَنْ يَحْمِلْ إِثْمَكَ فَاعْتَمِلْ ۚ وَمَنْ يَحْمِلْ إِثْمَكَ فَاعْتَمِلْ ۚ

كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِنْكُمْ يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمُ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ۚ

فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُوا ۚ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ۚ

1 अर्थात् मेरी आज्ञा का अनुपालन और मेरी अराधना करो।

2 अर्थात् अपनी क्षमा और पुरस्कार द्वारा ।

154. तथा जो अल्लाह की राह में मारे जायें उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वह जीवित हैं, परन्तु तुम (उन के जीवन की दशा) नहीं समझते।
155. तथा हम अवश्य कुछ भय, भूक तथा धनों और प्राणों तथा खाद्य पदार्थों की कमी से तुम्हारी परीक्षा करेंगे, और धैर्यवानों को शुभ समाचार सुना दों।
156. जिन पर कोई आपदा आ पड़े तो कहते हैं कि हम अल्लाह के हैं, और हमें उसी के पास फिर कर जाना है।
157. इन्हीं पर उन के पालनहार की कृपायें तथा दया है, और यही सीधी राह पाने वाले हैं।
158. बेशक सफ़ा तथा मरवा पहाड़ी^[1] अल्लाह (के धर्म) की निशानियों में से हैं। अतः जो अल्लाह के घर का हज्ज या उमरह करे तो उस पर कोई दोष नहीं कि उन दोनों का फेरा लगाया और जो स्वेच्छा से भलाई करे, तो निःसन्देह अल्लाह उस का गुणग्राही अति ज्ञानी है।
159. तथा जो हमारी उतारी हुई आयतों (अन्तिम नबी के गुणों) तथा मार्गदर्शन को इस के पश्चात् कि:

وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ قُتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْواتٌ بَلْ أحياءٌ وَلَكِنْ لَّا تَشْعُرُونَ ﴿١٥٤﴾

وَلَنَبِّئُوكُمْ بِمِثْلِهِم مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصِ مِنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٥﴾

الَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿١٥٦﴾

أُولَئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ﴿١٥٧﴾

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِن شَعَائِرِ اللَّهِ فَمَنْ حَمَلِ الْبَيْتَ أَوْ اعْتَصَرَ مِنْهُمَا لَبِئْسَ مَا كَفَرَ بِهِمَا وَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٥٨﴾

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ مَا آتَنَّاكَ مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْمُنْذِرَاتِ مِن بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ أُولَئِكَ

1 यह दो पर्वत हैं जो काबा की पूर्वी दिशा में स्थित हैं। जिन के बीच सात फेरे लगाना हज्ज तथा उमरे का अनिवार्य कर्म है। जिस का आरंभ सफ़ा पर्वत से करना सुन्नत है।

हम ने पुस्तक^[1] में उसे लोगों के लिये उजागर कर दिया है, छुपाते हैं उन्हीं को अल्लाह धिक्कारता है^[2], तथा सब धिक्कारने वाले धिक्कारते हैं।

160. और जिन लोगों ने तौबा (क्षमा याचना) कर ली, और सुधार कर लिया, और उजागर कर दिया, तो मैं उन की तोबा स्वीकार कर लूँगा, तथा मैं अत्यन्त क्षमाशील दयावान् हूँ।
161. वास्तव में जो काफिर (अविश्वासी) हो गये, और इसी दशा में मरे तो वही है जिन पर अल्लाह तथा फ़रिश्तों और सब लोगों की धिक्कार है।
162. वह इस (धिक्कार) में सदावासी होंगे, उन से यातना मंद नहीं की जायेगी, और न उन को अवकाश दिया जायेगा।
163. और तुम्हारा पूज्य एक ही^[3] पूज्य है, उस अत्यन्त दयालु, दयावान के सिवा कोई पूज्य नहीं।
164. बैशक आकाशों तथा धरती की रचना में, रात तथा दिन के एक दूसरे के पीछे निरन्तर आने जाने में, उन नावों में जो मानव के लाभ के साधनों को लिये सागरों में चलती फिरती है, और वर्षा के उस पानी में जिसे अल्लाह आकाश से बरसाता

يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ الْجَوْنُ ﴿١٦٠﴾

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُّوْا أَوْلِيَّكَ
أَتُوبُ عَلَيْهِمْ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٦١﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارًا أُولَئِكَ
عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١٦٢﴾

خُلِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ
يُنظَرُونَ ﴿١٦٣﴾

وَاللَّهُمُّ إِلَهٌ وَاحِدٌ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ﴿١٦٤﴾

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ أَلْوَانِ
السَّمَاءِ وَالْأَنْفَالِكِ الَّتِي يُجْرَى فِيهَا بِنَائِمُ النَّاسِ
وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَاءٍ فَأَحْيَا بِهِ
الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَنَى فِيهَا صَوْنًا كُلِّ دَابَّةٍ
وَقَضَى رَبِّيَ الرِّيْحَ وَالشَّحَابَ الْمُسَجِّرِينَ
السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لِآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٦٥﴾

1 अर्थात् तौरात, इंजील आदि पुस्तकों में।

2 अल्लाह के धिक्कारने का अर्थ अपनी दया से दूर करना है।

3 अर्थात् जो अपने स्तित्व तथा नामों और गुणों तथा कर्मों में अकेला है।

है, फिर धरती को उस के द्वारा उस के मरण (सूखने) के पश्चात् जीवित करता है, और उस में प्रत्येक जीवों को फैलाता है, तथा वायुओं को फेरने में, और उन बादलों में जो आकाश और धरती के बीच उस की आज्ञा^[1] के अधीन रहते हैं, (इन सब चीजों में) अगणित निशानियाँ (लक्षण) हैं, उन लोगों के लिये जो समझ बूझ रखते हैं।

165. कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उस का साझी बनाते हैं, और उन से, अल्लाह से प्रेम करने जैसा प्रेम करते हैं, तथा जो ईमान लाये वह अल्लाह से सर्वाधिक प्रेम करते हैं, और क्या ही अच्छा होता यदि यह अत्याचारी यातना देखने के समय^[2] जो बात जानेंगे इसी समय^[3] जानते कि सब शक्ति तथा अधिकार अल्लाह ही को है। और अल्लाह का दण्ड भी बहुत कड़ा है (तो अल्लाह के सिवा दूसरे की पूजा अराधना नहीं करते।)

166. जब यह दशा^[4] होगी कि जिस का अनुसरण किया गया^[5] वह

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَكْفُرُ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنذَارًا
يُحْيِيهِمْ لَحَيَاتٍ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدَّ حُبًّا لِلَّهِ وَلَوْ
رَى الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ يُرُونَ الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ
لِلَّهِ جَمِيعًا وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ

إِذْ تَبَرَأَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَأَرَادُوا

- 1 अर्थात् इस विश्व की पूरी व्यवस्था इस बात का तर्क और प्रमाण है कि इस का व्यवस्थापक अल्लाह ही एकमात्र पूज्य तथा अपने गुण कर्मों में एकता है। अतः पूजा अर्चना भी उसी एक की होनी चाहिये। यही समझ बूझ का निर्णय है।
- 2 अर्थात् प्रलय के दिन।
- 3 अर्थात् संसार ही में।
- 4 अर्थात् प्रलय के दिन।
- 5 अर्थात् संसार में जिन प्रमुखों का अनुसरण किया गया।

अपने अनुयायियों से विरक्त हो जायेंगे, और उन के आपस के सभी सम्बन्ध^[1] टूट जायेंगे।

167. तथा जो अनुयायी होंगे, वह यह कामना करेंगे कि एक बार और हम संसार में जाते, तो इन से ऐसे ही विरक्त हो जाते जैसे यह हम से विरक्त हो गये। ऐसे ही अल्लाह उन के कर्मों को उन के लिये संताप बना कर दिखाएगा, और वह अग्नि से निकल नहीं सकेंगे।

168. हे लोगो! धरती में जो अनुसरण किया गया हलाल (वैध) स्वच्छ चीजें हैं उन्हें खाओ। और शैतान की बताई राहों पर न चलो^[2], वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

169. वह तुम को बुराई तथा निर्लज्जा का आदेश देता है, और यह कि अल्लाह पर उस चीज का आरोप^[3] धरो, जिसे तुम नहीं जानते हो।

170. और जब उन^[4] से कहा जाता है कि जो (कुर्आन) अल्लाह ने उतारा है, उस पर चलो, तो कहते हैं कि हम तो उसी रीति पर चलेंगे जिस पर अपने पूर्वजों को पाया है क्या यदि उन के पूर्वज कुछ न समझते रहे, तथा कुपथ पर रहे हों (तब भी वह

الْعَدَابِ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الرِّبَابِ ۝

وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ إِن لَنَا كَرَّةٌ فَمَتَّ بَرًا مِنْهُمْ
كَمَا تَبْتَدَأُ وَمَا كُنَّا بِكَ بِرَبِّهِمْ اللَّهُ أَعْمَالُهُمْ
حَسْرَتٍ عَلَيْهِمْ وَأَنَّهُمْ يَخْرِجُونَ مِنَ النَّارِ ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا وَلَا
تَتَّبِعُوا خُطُوتَ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝

إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالشُّرِّ وَالْفَحْشَاءِ وَأَن تَقُولُوا عَلَى
اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

وَإِذِ قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ
نَتَّبِعُ مَا آفَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا وَلَوْ كَانِ آبَاءُ هُمْ
لَا يَفْعَلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ۝

1 अर्थात सामीप्य, अनुसरण तथा धर्म आदि के।

2 अर्थात उस की बताई बातों को न मानो।

3 अर्थात वैध को अवैध करने आदि का।

4 अर्थात अहले किताब तथा मिश्रणवादियों से।

उन्हीं का अनुसरण करते रहेंगे?)

171. उन की दशा जो काफिर हो गये उस के समान है जो उस (पशु) को पुकारता है, जो हाँक पुकार के सिवा कुछ^[1] नहीं सुनता, यह (काफिर) बहरे, गूंगे तथा अँधे हैं। इस लिए कुछ नहीं समझते।
172. हे ईमान वालो! उन स्वच्छ चीजों में से खाओ जो हम ने तुम्हें दी हैं। तथा अल्लाह की कृतज्ञता का वर्णन करो। यदि तुम केवल उसी की इबादत (वन्दना) करते हो।
173. (अल्लाह) ने तुम पर मुर्दार^[2] तथा (बहता) रक्त और सुअर का माँस, तथा जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो उन को हराम (निषेध) कर दिया है। फिर भी जो विवश हो जाये जब कि वह नियम न तोड़ रहा हो, और आवश्यकता की सीमा का उल्लंघन न कर रहा हो तो उस पर कोई दोष नहीं। अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।^[3]
174. वास्तव में जो लोग अल्लाह की उतारी पुस्तक (की बातों) को छुपा

وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثَلِ الدَّيْبِ يُعْقِبُ بِنَآئِهِ
يَسْمَعُ الْإِدْعَاءَ وَإِن آءَصْرُكُمْ عَمَىٰ فَهُمْ
لَا يَهْتَفِلُونَ ﴿٤٩﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ
وَأَشْكُرُوا لِلَّهِ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿٥٠﴾

أَسْبَحْتُمْ عَلَىٰ كُفْرِهِمُ الْهَيْبَةَ وَالذَّمَّ وَالْحَمَّ الْخَائِرُ وَمَا
أَهْلَ بِهِ لِيُغَيِّرَ اللَّهُ فَمَن اضْطُرَّ غَيْرَ بَآءٍ وَلَا عَادٍ فَلَا
إِسْمَ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥١﴾

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ وَ

- 1 अर्थात् ध्वनि सुनता है परन्तु बात का अर्थ नहीं समझता।
- 2 जिसे धर्म विधान के अनुसार बध न किया गया हो, अधिक विवरण सूरह माइदह में आ रहा है।
- 3 अर्थात् ऐसा विवश व्यक्ति जो हलाल जीविका न पा सके उस के लिये निषेध नहीं कि वह अपनी आवश्यकतानुसार हराम चीजें खा ले। परन्तु उस पर अनिवार्य है कि वह उस की सीमा का उल्लंघन न करे और जहाँ उसे हलाल जीविका मिल जाये वहाँ हराम खाने से रुक जाये।

रहे हैं, और उस के बदले तनिक मूल्य प्राप्त कर लेते हैं, वही अपने उदर में केवल अग्नि भर रहे हैं। तथा अल्लाह उन से बात नहीं करेगा, और न उन को विशुद्ध करेगा। और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

175. यही वह लोग हैं जिन्होंने सुपथ (मार्गदर्शन) के बदले कुपथ खरीद लिया है। तथा क्षमा के बदले यातना तो नरक की अग्नि पर वह कितने सहनशील हैं?

176. इस यातना के अधिकारी वह इस लिये हुये कि अल्लाह ने पुस्तक को सत्य के साथ उतारा। और जो पुस्तक में विभेद कर बैठे। वह वास्तव में विरोध में बहुत दूर निकल गये।

177. भलाई यह नहीं है कि तुम अपने मुख को पूर्व अथवा पश्चिम की ओर फेर लो। भला कर्म तो उस का है। जो अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान लाया। तथा फरिश्तों और सब पुस्तकों तथा नबियों पर, तथा धन का मोह रखते हुये, समीपवर्तियों, अनाथों, निर्धनों, यात्रियों तथा याचकों (फकीरों) को और दास मुक्ति के लिये दिया, और नमाज़ की स्थापना की, तथा ज़कात दी, और अपने वचन को, जब भी वचन दिया, पूरा करते रहे। और निर्धनता और रोग तथा युद्ध की

يَسْتَرُونَ بِهِ تَسَاءُلًا أَوْلِيكَ مَا يَأْكُلُونَ فِي
بَطُونِهِمْ إِلَّا النَّارَ وَلَا يَكْفِيهِمْ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا
يُرِيدُهُمْ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

أَوْلِيكَ الَّذِينَ اسْتَرُوا الصَّلَاةَ بِالْهَدْيِ
وَالْعَذَابِ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ۝

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ سَأَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ
الَّذِينَ احْتَمَفُوا فِي الْكِتَابِ لَفِي شِقَاقٍ بَوِيدٍ ۝

لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُولُوا وَجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ
وَالْمَغْرِبِ وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالرَّسُولِ ۚ وَإِنِ الْمَالُ
عَلَىٰ حَيْثُ ۖ ذَوَى الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ
وَابْنِ السَّبِيلِ ۚ وَالسَّائِلِينَ ۖ فِي الرِّقَابِ
وَأَقَامَ الصَّلَاةَ ۚ وَإِنِ الزُّكُوتَ ۚ وَالْمُؤْمِنُونَ يَعْهَدُ لَهُمْ
إِذَا عَاهَدُوا ۚ وَأَوَّضَحُوا الصِّدْقَ فِي الْبِئْسَاءِ
وَالضَّرَّاءِ ۚ وَحِينَ الْبَأْسِ ۚ أُولَئِكَ الَّذِينَ
صَدَقُوا ۚ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۝

स्थिति में धैर्यवान रहे। यही लोग सच्चे हैं, तथा यही (अल्लाह से) डरते^[1] हैं।

178. हे ईमान वालो! तुम पर निहत व्यक्तियों के बारे में किसास (बराबरी का बदला) अनिवार्य^[2] कर दिया गया है। स्वतंत्र का बदला स्वतंत्र से लिया जायेगा, तथा दास का दास से, और नारी का नारी से, और जिस अपराधी के लिये उस के भाई की ओर से कुछ क्षमा कर^[3] दिया जाये, तो उसे सामान्य नियम का अनुसरण (अनुपालन) करना चाहिये। निहत व्यक्ति के वारिस को भलाई के साथ दियत (अर्थदण्ड) चुका देना चाहिये। यह तुम्हारे पालनहार की ओर से सुविधा तथा

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلِ وَالْحَرْبِ وَالْعَبْدِ وَالْأَنْثَىٰ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلِ وَالْحَرْبِ وَالْعَبْدِ وَالْأَنْثَىٰ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلِ وَالْحَرْبِ وَالْعَبْدِ وَالْأَنْثَىٰ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلِ وَالْحَرْبِ وَالْعَبْدِ وَالْأَنْثَىٰ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلِ وَالْحَرْبِ وَالْعَبْدِ وَالْأَنْثَىٰ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلِ وَالْحَرْبِ وَالْعَبْدِ وَالْأَنْثَىٰ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلِ وَالْحَرْبِ وَالْعَبْدِ وَالْأَنْثَىٰ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلِ وَالْحَرْبِ وَالْعَبْدِ وَالْأَنْثَىٰ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلِ وَالْحَرْبِ وَالْعَبْدِ وَالْأَنْثَىٰ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلِ وَالْحَرْبِ وَالْعَبْدِ وَالْأَنْثَىٰ

- 1 इस आयत का भावार्थ यह है कि नमाज़ में किल्ले की ओर मुख करना अनिवार्य है, फिर भी सत्धर्म इतना ही नहीं कि धर्म की किसी एक बात को अपना लिया जाये। सत्धर्म तो सत्य आस्था, सत्कर्म और पूरे जीवन को अल्लाह की आज्ञा के अधीन कर देने का नाम है।
- 2 अर्थात् यह नहीं हो सकता कि निहत की प्रधानता अथवा उच्च वंश का होने के कारण कई व्यक्ति मार दिये जायें, जैसा कि इस्लाम से पूर्व जाहिलियत की रीति थी कि एक के बदले कई को ही नहीं, यदि निर्बल कबीला हो तो, पूरे कबीले ही को मार दिया जाता था। इस्लाम ने यह नियम बना दिया कि स्वतंत्र तथा दास और नर नारी सब मानवता में बराबर हैं। अतः बदले में केवल उसी को मारा जाये जो अपराधी है। वह स्वतंत्र हो या दास, नर हो या नारी। (सक्षिप्त, इब्ने कसीर)
- 3 क्षमा दो प्रकार से हो सकता है: एक तो यह कि निहत के लोग अपराधी को क्षमा कर दें। दूसरा यह कि किसास को क्षमा कर के दियत (अर्थदण्ड) लेना स्वीकार कर लें। इसी स्थिति में कहा गया है कि नियमानुसार दियत (अर्थदण्ड) चुका दे।

दया है। इस पर भी जो अत्याचार^[1] करे तो उस के लिये दुःखदायी यातना है।

179. और हे समझ वालो! तुम्हारे लिये किसास (के नियम में) जीवन है, ताकि तुम रक्तपात से बचो।^[2]

180. और जब तुम में से किसी के निधन का समय हो, और वह धन छोड़ रहा हो तो उस पर माता पिता और समीपवर्तियों के लिये साधारण नियमानुसार वसिय्यत (उत्तरदान) करना अनिवार्य कर दिया गया है। यह आज्ञाकारियों के लिये सुनिश्चित^[3] है।

181. फिर जिस ने वसिय्यत सुनने के पश्चात् उसे बदल दिया तो उस का पाप उन पर है जो उसे बदलेंगे। और अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।

وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَوةٌ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٧٩﴾

كُتِبَ عَلَيْكُمُ إِذَا أَحْضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتَ أَنْ تَرِّكُوا خَيْرًا ۗ لِلْوَصِيَّةِ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ ۗ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ﴿١٨٠﴾

فَمَنْ بَدَّلَهُ بَعْدَ مَا سَمِعَهُ فَأَنَّمَا أَيْمَانُهُ عَلَى الَّذِينَ يَبْدُلُونَهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٨١﴾

1 अर्थात् क्षमा कर देने या दियत लेने के पश्चात् भी अपराधी को मार डाले तो उसे किसास में हत किया जायेगा।

2 क्योंकि इस नियम के कारण कोई किसी को हत करने का साहस नहीं करेगा। इस लिये इस के कारण समाज शान्तिमय हो जायेगा। अर्थात् एक किसास से लोगों के जीवन की रक्षा होगी। जैसा कि उन देशों में जहाँ किसास का नियम है देखा जा सकता है। कुर्आन इसी ओर संकेत करते हुये कहता है कि किसास नियम के अन्दर वास्तव में जीवन है।

3 यह वसिय्यत (मीरास) की आयत उतरने से पहले अनिवार्य थी, जिसे (मीरास) की आयत से निरस्त कर दिया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है कि अल्लाह ने प्रत्येक अधिकारी को उस का अधिकार दे दिया है, अतः अब वारिस के लिये कोई वसिय्यत नहीं है। फिर जो वारिस न हो तो उसे भी तिहाई धन से अधिक की वसिय्यत उचित नहीं है। (सहीह बुखारी-4577, सुनन अबू दावूद-2870, इब्ने माजा-2210)

182. फिर जिसे डर हो कि वसियत करने वाले ने पक्षपात या अत्याचार किया है, फिर उस ने उन के बीच सुधार करा दिया तो उस पर कोई पाप नहीं। निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील तथा दयावान् है।

183. हे ईमान वालो! तुम पर रोज़े^[1] उसी प्रकार अनिवार्य कर दिये गये हैं, जैसे तुम से पूर्व लोगों पर अनिवार्य किये गये, ताकि तुम अल्लाह से डरो।

184. वह गिनती के कुछ दिन हैं। फिर यदि तुम में से कोई रोगी, अथवा यात्रा पर हो तो यह गिनती दूसरे दिनों से पूरी करो। और जो उस (रोज़े) को सहन न कर सके^[2] वह फिद्या (प्रायश्चित) दे। जो एक निर्धन को खाना खिलाना है। और जो स्वेच्छा भलाई करे वह उस के लिये अच्छी बात है। और यदि तुम समझो तो तुम्हारे लिये रोज़ा रखना ही अच्छा है।

185. रमज़ान का महीना वह है, जिस में कुर्आन उतारा गया, जो सब मानव के लिये मार्गदर्शन है। तथा मार्गदर्शन और सत्योसत्य के बीच

فَمَنْ خَافَ مِنْ مُؤْمِنٍ جَنَفًا أَوْ أَثْمًا فَاصْطَلِهِ
بِيَدَيْهِمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ ذَرِيمٌ ﴿١٨٢﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الضِّيَاعُ كَمَا
كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٨٣﴾

أَيَّامًا مَعْدُودَاتٍ فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ عَلَى
سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ وَعَلَى الَّذِينَ
يُطِيقُونَ فَدْيَةَ طَعَامٍ مِّسْكِينٍ مَّن تَطَوَّعَ
خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ وَأَن تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِن
كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٤﴾

شَهْرَ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى
لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَى وَالْفُرْقَانِ فَمَن
شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ وَمَن كَانَ مَرِيضًا

1 रोज़े को अर्बी भाषा में "सौम" कहा जाता है, जिस का अर्थ: रुकना तथा त्याग देना है। इस्लाम में रोज़ा सन् दो हिजरी में अनिवार्य किया गया। जिस का अर्थ है प्रत्युष (भोर) से सूर्यास्त तक रोज़े की नीति से खाने पीने तथा संभोग आदी चीज़ों से रुक जाना।

2 अर्थात् अधिक बुढ़ापे अथवा ऐसे रोग के कारण जिस से आरोग्य होने की आशा न हो तो प्रत्येक रोज़े के बदले एक निर्धन को खाना खिला दिया करें।

अन्तर करने के खुले प्रमाण रखता है। अतः जो व्यक्ति इस महीने में उपस्थित^[1] हो तो वह उस का रोज़ा रखे, फिर यदि तुम में से कोई रोगी^[2] अथवा यात्रा^[3] पर हो, तो उसे दूसरे दिनों से गिनती पूरी करनी चाहिये। अल्लाह तुम्हारे लिये सुविधा चाहता है, तंगी (असुविधा) नहीं चाहता। और चाहता है कि तुम गिनती पूरी करो, तथा इस बात पर अल्लाह की महिमा का वर्णन करो कि उस ने तुम्हें मार्गदर्शन दिया, इस प्रकार तुम उस के कृतज्ञ^[4] बन सको।

186. (हे नबी!) जब मेरे भक्त मेरे विषय में आप से प्रश्न करें, तो उन्हें बता दें कि निश्चय मैं समीप हूँ। मैं प्रार्थी की प्रार्थना का उत्तर देता हूँ। अतः उन्हें भी चाहिये कि मेरे आज्ञाकारी बनें, तथा मुझ पर ईमान (विश्वास) रखें, ताकि वह सीधी राह पायें।

187. तुम्हारे लिये रोज़े की रात में अपनी स्त्रियों से सहवास हलाल (उचित) कर दिया गया है। वह तुम्हारा वस्त्र^[5] है, तथा तुम उन का वस्त्र हो। अल्लाह को ज्ञान हो गया कि

أَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ
الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَيَتْلُو الْأَعْدَاءَ وَ
لِتُكْبِرُوا لِلَّهِ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ٢٠

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ
دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا
بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ٢٠

أَجَلَ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَقَاتِ إِلَىٰ
نِسَائِكُمْ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٌ
لَّهُنَّ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَلِفُونَ
أَلْفَافًا وَلَٰكِن لَّا تَشْعُرُونَ فَتَابَ عَلَيْكُمْ
وَإِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ٢٠

- 1 अर्थात् अपने नगर में उपस्थित हो।
- 2 अर्थात् रोग के कारण रोज़े न रख सकता हो।
- 3 अर्थात् इतनी दूर की यात्रा पर हो जिस में रोज़ा न रखने की अनुमति हो।
- 4 इस आयत में रोज़े की दशा तथा गिनती पूरी करने पर प्रार्थना करने की प्रेरणा दी गयी है।
- 5 इस से पति पत्नी के जीवन साथी, तथा एक की दूसरे के लिये आवश्यकता को दर्शाया गया है।

तुम अपना उपभोग^[1] कर रहे थे। उस ने तुम्हारी तौबा (क्षमा याचना) स्वीकार कर ली, तथा तुम्हें क्षमा कर दिया। अब उन से (रात्रि में) सहवास करो, और अल्लाह के (अपने भाग्य में) लिखे की खोज करो, और (रात्रि में) खाओ तथा पीओ, यहाँ तक कि भोर की सफ़ेद धारी, रात की काली धारी से उजागर हो^[2] जाये फिर रोज़े को रात्रि (सुर्यास्त) तक पूरा करो, और उन से सहवास न करो, जब मस्जिदों में ऐतिकाफ़ (एकान्तवास) में रहो। यह अल्लाह की सीमायें हैं, इन के समीप भी न जाओ। इसी प्रकार अल्लाह लोगों के लिये अपनी आयतों को उजागर करता है, ताकि वह (उन के उल्लंघन) से बचें।

188. तथा आपस में एक दूसरे का धन अवैध रूप से न खाओ, और न अधिकारियों के पास उसे इस धेय से ले जाओ कि लोगों के धन का कोई भाग जान बूझ कर पाप^[3] द्वारा खा जाओ।

189. (हे नबी!) लोग आप से चन्द्रमा के (घटने बढ़ने) के विषय में प्रश्न

وَابْتَغُوا مِمَّا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَيْثُ يَبْسُغَنَّ لَكُمْ يَخِيظُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْظِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ثُمَّ أَتُوا الصِّيَامَ إِلَى الْكَافِرِ
وَلَا تُبَاشِرُوا هُنَّ وَأَنْتُمْ عَاكِفُونَ فِي الْمَسْجِدِ
تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرُبُوهَا كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٥٥﴾

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ
وَتَذُنُّوا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ لِيَأْكُلُوا فَرِيضَةً
مِنْ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ﴿٥٦﴾

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَهْلِ قُلْ هِيَ مَوَاقِيْتُ

1 अर्थात् पत्नी से सहवास कर रहे थे।

2 इस्लाम के आरंभिक युग में रात्री में सो जाने के पश्चात् रमज़ान में खाने पीने तथा स्त्री से सहवास की अनुमति नहीं थी। इस आयत में इन सब की अनुमति दी गयी है।

3 इस आयत में यह संकेत है कि यदि कोई व्यक्ति दूसरों के स्वत्व और धन से तथा अवैध धन उपार्जन से स्वयं को रोक न सकता हो इबादत का कोई लाभ नहीं।

करते हैं? कह दें: इस से लोगों को तिथियों के निर्धारण तथा हज्ज के समय का ज्ञान होता है। और यह कोई भलाई नहीं है कि घरों में उन के पीछे से प्रवेश करो, परन्तु भलाई तो अल्लाह की अवैज्ञा से बचना है। और घरों में उन के द्वारों से आओ, तथा अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम^[1] सफल हो जाओ।

190. तथा तुम अल्लाह की राह में, उन से युद्ध करो जो तुम से युद्ध करते हैं। और अत्याचार न करो, अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।
191. और उन को हत करो, जहाँ पाओ, और उन्हें निकालो, जहाँ से उन्होंने तुम को निकाला है, इस लिये कि फितना^[2] (उपद्रव) हत करने से भी बुरा है। और उन से मस्जिदे हराम के पास युद्ध न करो, जब तक वह तुम से वहाँ युद्ध न^[3] करें। परन्तु यदि वह तुम से युद्ध करें तो उन की हत्या करो, यही काफिरों का बदला है।
192. फिर यदि वह (आक्रमण करने से) रुक जायें तो अल्लाह अति क्षमी, दयावान् है।

لِلنَّاسِ وَالْحَجَّةِ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا
الْبُيُوتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْبِرَّ مِنَ
الْإِثْقَىٰ وَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا
وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٩٠﴾

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ
يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ
لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿١٩١﴾

وَأَقْتُلُواهُمْ حَيْثُ وَقَفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُمْ
حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ
وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّىٰ
يُفْتَلُوا بِكُمْ فِيهِ فَإِنْ فَتِلُواكُمْ
فَأَقْتُلُواهُمْ كَمَا كَانَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ﴿١٩٢﴾

فَإِنْ انْتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٩٣﴾

- 1 इस्लाम से पूर्व अरब में यह प्रथा थी कि जब हज्ज का एहराम बाँध लेते तो अपने घरों में द्वार से प्रवेश न कर के पीछे से प्रवेश करते थे। इस अंधविश्वास के खण्डन के लिये यह आयत उतरी कि भलाई इन रीतियों में नहीं बल्कि अल्लाह से डरने और उस के आदेशों के उल्लंघन से बचने में है।
- 2 अर्थात् अधर्म, मिश्रणवाद और सत्धर्म इस्लाम से रोकना।
- 3 अर्थात् स्वयं युद्ध का आरंभ न करो।

193. तथा उन से युद्ध करो, यहाँ तक कि फितना न रह जाये, और धर्म केवल अल्लाह के लिये रह जाये, फिर यदि वह रुक जायें, तो अत्याचारियों के अतिरिक्त किसी और पर अत्याचार नहीं करना चाहिये।

194. सम्मानित^[1] मास, सम्मानित मास के बदले है। और सम्मानित विषयों में बराबरी है, अतः जो तुम पर अतिक्रमण (अत्याचार) करें तो तुम भी उन पर उसी के समान (अतिक्रमण) करो। तथा अल्लाह के आज्ञाकारी रहो, और जान लो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है।

195. तथा अल्लाह की राह (जिहाद) में धन खर्च करो, और अपने आप को विनाश में न डालो, तथा उपकार करो, निश्चय अल्लाह उपकारियों से प्रेम करता है।

196. तथा हज्ज और उमरा अल्लाह के लिये पूरा करो, और यदि रोक दिये जाओ^[2] तो जो कुर्बानी सुलभ हो (कर दो), और अपने सिर न मुँडाओ, जब तक कि कुर्बानी अपने स्थान पर न पहुँच^[3] जाये, यदि तुम

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ
الدِّينُ لِلَّهِ فَإِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ
عَلَى الظَّالِمِينَ ۝

الشَّهْرُ الْحَرَامَ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمَاتِ
قِصَاصٌ مِّمَّنْ اَعْتَدَى عَلَيْكُمْ فَاَعْتَدُوا
عَلَيْهِمْ مِمَّا اَعْتَدَى اللَّهُ
وَاعْتَدُوا اِنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝

وَأَنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تَقْتُلُوا
أَنْفُسَكُمْ ۝ وَأَحْسِنُوا ۝ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ
الْمُحْسِنِينَ ۝

وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ فَإِنِ
اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ
الْهَدْيِ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ
حَتَّى يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحَلَّهُ فَمَن
كَانَ مِنكُمْ مَرِيضًا أَوْ بِهِ
آدَى مِّن رَّأْسِهِ فَعِدْيَةٌ
مِّن صِبَاغٍ أَوْ صَدَاقَةٌ
أَوْ سُكٌّ فَإِذَا آمَنْتُمْ
فَمِن تَمَتُّعٍ بِالْعُمْرَةِ إِلَى

1 सम्मानित मासों से अभिप्रेत चार अर्बी महीने: जुलकादह, जुलहिज्जह, मुहर्रम तथा रजब है। इब्राहीम अलैहिस्सलाम के युग से इन मासों का आदर सम्मान होता आ रहा है। आयत का अर्थ यह है कि कोई सम्मानित स्थान अथवा युग में अतिक्रमण करे तो उसे बराबरी का बदला दिया जाये।

2 अर्थात् शत्रु अथवा रोग के कारण।

3 अर्थात् कुरबानी न कर लो।

में कोई व्यक्ति रोगी हो, या उस के सिर में कोई पीड़ा हो (और सिर मुँडा ले) तो उस के बदले में रोजा रखना या दान^[1] देना अथवा कुर्बानी देना है, और जब तुम निर्भय (शान्त) रहो तो जो उमरे से हज्ज तक लाभान्वित^[2] हो वह जो कुर्बानी सुलभ हो उसे करे। और जिसे उपलब्ध न हो तो वह तीन रोज़े हज्ज के दिनों में रखे, और सात जब रखे जब तुम (घर) वापस आओ। यह पूरे दस हुये। यह उस के लिये है जो मस्जिद हाराम का निवासी न हो। और अल्लाह से डरो, तथा जान लो कि अल्लाह की यातना बहुत कड़ी है।

197. हज्ज के महीने प्रसिद्ध हैं, तो जो व्यक्ति इन में हज्ज का निश्चय कर ले तो (हज्ज के बीच) काम वासना तथा अवैज्ञा और झगड़े की बातें न करे, तथा तुम जो भी अच्छे कर्म करोगे तो उस का ज्ञान अल्लाह को हो जायेगा, और अपने लिये पाथेय बना लो, उत्तम पाथेय अल्लाह की आज्ञाकारिता है, तथा हे समझ वालो! मुझी से डरो।

الْحَجَّهِ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ
فَصِيَامًا فَلَذَلِكَ أَيُّهَا رُفِي الْحَجَّهِ وَسَبْعَةً إِذَا رَجَعْتُمْ
تِلْكَ عَشْرَةٌ كَامِلَةٌ ذَلِكَ لِمَنْ لَمْ يَكُنْ أَهْلُهُ
حَاضِرِي السَّجْدِ الْحَرَامِ وَتَقْوَى اللَّهِ وَاعْلَمُوا أَنَّ
اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٦﴾

الْحَجَّهِ أَشْهُرٌ مَعْلُومَاتٌ فَمَنْ قَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ
فَلَا رَمَتْ وَلَا فُسُوقٌ وَلَا جِدَالٌ فِي الْحَجَّهِ وَمَا تَعَلَّمُوا
مِنْ حَيْرٍ يَعْلَمُهُ اللَّهُ وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ
التَّقْوَى وَاتَّقُوا يَا أُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٦﴾

- 1 जो तीन रोज़े अथवा तीन निर्धनों को खिलाना या एक बकरे की कुरबानी देना है (तफ्सीरे कुर्तुबी)
- 2 लाभान्वित होने का अर्थ यह है कि उमरे का एहराम बाँधे, और उस के कार्यक्रम पूरे कर के एहराम खोल दे, और जो चीज़ें एहराम की स्थिति में अवैध थीं, उन से लाभान्वित हों। फिर हज्ज के समय उस का एहराम बाँधे, इसे (हज्ज तमत्तुअ) कहा जाता है। (तफ्सीरे कुर्तुबी)

198. तथा तुम पर कोई दोष^[1] नहीं कि अपने पालनहार के अनुग्रह की खोज करो, तो फिर जब तुम अरफ़ात^[2] से चलो, तो मशअरे हराम (मुज़दलिफ़ह) के पास अल्लाह का स्मरण करो जिस प्रकार अल्लाह ने तुम्हें बताया है। यद्यपि इस से पहले तुम कुपथों में थे।

199. फिर तुम^[3] भी वहीं से फिरो जहाँ से लोग फिरते हैं। तथा अल्लाह से क्षमा माँगो। निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील, दयावान् है।

200. और जब तुम अपने (हज्ज के) मनासिक (कर्म) पूरे कर लो तो जिस प्रकार पहले अपने पूर्वजों की चर्चा करते रहे, उसी प्रकार बल्कि उस से भी अधिक अल्लाह का स्मरण^[4] करो। उन में से कुछ ऐसे हैं जो यह कहते हैं कि: हे हमारे पालनहार! (हमें जो देना है) संसार ही में दे दो। अतः ऐसे व्यक्ति के लिये परलोक में कोई भाग नहीं है।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِمَّنْ تَبْتَغُونَ. قَدْ أَفْضَلْتُمْ مِنْ عَرَفَاتٍ قَدْ ذُكِرُوا
اللَّهُ عِنْدَ النَّشْعِ الْحَرَامِ وَأَذْكَرُوا كَمَا هَذَا عَلَيْكُمْ وَإِنْ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلِهِ لَمَنِ الصَّالِينَ ۝

ثُمَّ أَيْضًا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ
وَأَسْتَغْفِرُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَحِيمٌ ۝

قَدْ أَفْضَلْتُمْ مِمَّا سَأَلْتُمْ قَدْ ذُكِرُوا
اللَّهُ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ وَأَسَدُ ذِكْرَائِمِنَ
النَّاسِ مَنْ يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا
وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۝

1 अर्थात् व्यापार करने में कोई दोष नहीं है।

2 अरफ़ात उस स्थान का नाम है जिस में हाजी 9 ज़िलहिज्जह को विराम करते, तथा सूर्यास्त के पश्चात् वहाँ से वापिस होते हैं।

3 यह आदेश कुरैश के उन लोगों को दिया गया है जो मुज़दलिफ़ह ही से वापिस चले आते थे। और अरफ़ात नहीं जाते थे। (तफ्सीरे कुर्तुबी)

4 जाहिलियत में अरबों की यह रीति थी कि हज्ज पूरा करने के पश्चात् अपने पूर्वजों के कर्मों की चर्चा कर के उन पर गर्व किया करते थे। तथा इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस का अर्थ यह किया है कि जिस प्रकार शिशु अपने माता पिता को गुहारता, पुकारता है उसी प्रकार तुम अल्लाह को गुहारो और पुकारो। (तफ्सीरे कुर्तुबी)

201. तथा उन में से कुछ ऐसे हैं जो यह कहते हैं कि: हमारे पालनहार! हमें संसार की भलाई दे, तथा परलोक में भी भलाई दे, और हमें नरक की यातना से सुरक्षित रख।

202. इन्हीं को इन की कमाई के कारण भाग मिलेगा, और अल्लाह शीघ्र हिसाब चुकाने वाला है।

203. तथा इन गिनती^[1] के कुछ दिनों में अल्लाह को स्मरण (याद) करो, फिर जो कोई व्यक्ति शीघ्रता से दो ही दिन में (मिना से) चल^[2] दे, तो उस पर कोई दोष नहीं, और जो विलम्ब^[3] करे, तो उस पर भी कोई दोष नहीं, उस व्यक्ति के लिये जो अल्लाह से डरा, तथा तुम अल्लाह से डरते रहो और यह समझ लो कि तुम उसी के पास प्रलय के दिन एकत्र किये जाओगे।

204. हे नबी! लोगों^[4] में ऐसा व्यक्ति भी है जिस की बात आप को संसारिक विषय में भाती है, तथा जो कुछ उस के दिल में है, वह उस पर अल्लाह को साक्षी बनाता है, जब कि वह बड़ा झगड़ालू है।

وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ رَبَّنَا إِنَّا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةٌ وَقَدْ آتَيْنَاكَ الثَّوَابَ

أُولَئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِمَّا كَسَبُوا وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ

وَأَذْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ مَعْدُودَاتٍ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ وَمَنْ تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ لِمَنِ اتَّقَىٰ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَعَلِمُوا أَنَّهُ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُحِبُّكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيُشْهَدُ اللَّهُ عَلَىٰ مَا فِي قَلْبِهِ وَهُوَ أَلَدُّ الْإِطْمَارِ

1 गिनती के कुछ दिनों से अभिप्रेत जुलहिज्जह मास की 11, 12, और 13 तारीखें हैं। जिन को (अय्यामे तशरीक) कहते हैं।

2 अर्थात् 12 जुलहिज्जह को ही सूर्यास्त के पहले कँकरी मारने के पश्चात् चल दे।

3 विलम्ब करे, अर्थात् मिना में रात बिताये। और तेरह जुलहिज्जह को कँकरी मारे, फिर मिना से निकल जाये।

4 अर्थात् मुनाफ़िकों (दुविधा वादियों) में।

205. तथा जब वह आप के पास से जाता है तो धरती में उपद्रव मचाने का प्रयास करता है, और खेती तथा पशुओं का विनाश करता है। और अल्लाह उपद्रव से प्रेम नहीं करता।
206. तथा जब उस से कहा जाता है कि अल्लाह से डर, तो अभिमान उसे पाप पर उभार देता है। अतः उस के (दण्ड) के लिये नरक काफी है। और वह बहुत बुरा बिछोना है।
207. तथा लोगों में ऐसा व्यक्ति भी है जो अल्लाह की प्रसन्नता की खोज में अपना प्राण बेच^[1] देता है। और अल्लाह अपने भक्तों के लिये अति करुणामय है।
208. हे ईमान वालो! तुम सर्वथा इस्लाम में प्रवेश^[2] कर जाओ, और शैतान की राहों पर मत चलो, निश्चय वह तुम्हारा खुला शत्रु है।
209. फिर यदि तुम खुले तर्कों (दलीलों)^[3] के आने के पश्चात् विचलित हो गये, तो जान लो कि अल्लाह प्रभुत्वशाली तथा तत्वज्ञ^[4] है।
210. क्या (इन खुले तर्कों के आ जाने के पश्चात्) वह इस की प्रतिक्षा कर रहे हैं कि उन के समक्ष अल्लाह

وَأَذَاتُوا لِي سَعَى فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ وَاللَّهُ لَا يُجِيبُ الْفَاسِدَ ۝

وَأَذَاتُوا لِي لَهٗ أَتَى اللَّهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ فَحَسْبُهُ جَهَنَّمُ وَلَيْسَ الْإِنْسَانُ بِأَشْكُرًا ۝

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَبْغِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝

فَإِن رَّكِبْتُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْكُمُ الْبَيِّنَاتُ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلْمٍ مِّنَ الْعَمَامِ وَالْمَلِكِ وَتُفْصَىٰ

1 अर्थात् उस की राह में और उस की आज्ञा के अनुपालन द्वारा।

2 अर्थात् इस्लाम के पूरे संविधान का अनुपालन करो।

3 खुले तर्कों से अभिप्राय कुरआन और सुन्नत है।

4 अर्थात् तथ्य को जानता और प्रत्येक वस्तु को उस के उचित स्थान पर रखता है।

बादलों के छत्र में आ जाये, तथा फरिश्ते भी, और निर्णय ही कर दिया जाये? और सभी विषय अल्लाह ही की ओर फेरे^[1] जायेंगे।

211. बनी इस्राईल से पूछो कि हम ने उन्हें कितनी खुली निशानियाँ दी? इस पर भी जिस ने अल्लाह की अनुकम्पा को, उस के अपने पास आ जाने के पश्चात् बदल दिया, तो अल्लाह की यातना भी बहुत कड़ी है।
212. काफ़ि़रों के लिये संसारिक जीवन शोभनीय (मनोहर) बना दिया गया है। तथा जो ईमान लाये यह उन का उपहास^[2] करते हैं, और प्रलय के दिन अल्लाह के आज्ञाकारी उन से उच्च स्थान^[3] पर रहेंगे। तथा अल्लाह जिसे चाहे अगणित आजीविका प्रदान करता है।
213. (आरंभ में) सभी मानव एक ही (स्वाभाविक) सत्धर्म पर थे। (फिर विभेद हुआ)। तो अल्लाह ने नबियों को शुभ समाचार सुनाने,^[4] और

الْأَمْرُ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ

سَلِّ بِنِي إِسْرَائِيلَ كَمَا آتَيْنَهُمْ مِنْ آيَاتِي
بَيِّنَاتٍ وَمَنْ يُّبَدِّلِ نِعْمَةَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ
مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

رَبِّينَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَيَسْحَرُونَ مِنَ
الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ اتَّقَوْا فَوَقَّهْمُ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً فَبَعَثَ اللَّهُ
النَّبِيِّنَ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ وَأَنْزَلَ مَعَهُمُ
الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِي مَا

- 1 अर्थात् सब निर्णय परलोक में वही करेगा।
- 2 अर्थात् उन की निर्धनता तथा दरिद्रता के कारण।
- 3 आयत का भावार्थ यह है कि काफ़िर संसारिक धन धान्य ही को महत्व देते हैं। जब कि परलोक की सफलता जो सत्धर्म और सत्कर्म पर आधारित है वही सब से बड़ी सफलता है।
- 4 आयत 213 का सारांश यह है कि सभी मानव आरंभिक युग में स्वाभाविक जीवन व्यतीत कर रहे थे। फिर आपस में विभेद हुआ तो अत्याचार और उपद्रव होने लगा। तब अल्लाह की ओर से नबी आने लगे ताकि सब को एक सत्धर्म पर कर दें। और आकाशीय पुस्तकें भी इसी लिये अवतरित हुईं कि विभेद में निर्णय

(अवैज्ञा) से सचेत करने के लिये भेजा, और उन पर सत्य के साथ पुस्तक उतारी, ताकि वह जिन बातों पर विभेद कर रहे हैं, उन का निर्णय कर दें, और आप की दुराग्रह से उन्होंने ने ही विभेद किया, जिन को (विभेद निवारण के लिये) यह पुस्तक दी गयी, तो जो ईमान लाये अल्लाह ने उस विभेद में उन्हें अपनी अनुमति से सत्पथ दर्शा दिया। और अल्लाह जिसे चाहे सत्पथ दर्शा देता है।

اٰخْتَلَفُوْا فِيْهِ وَمَا اٰخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ
اَوْثُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ بَعِيًّا
بِيْنَهُمْ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِلَيْهَا اٰخْتَلَفُوْا
فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِ اللّٰهِ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاءُ
اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٦٣﴾

214. क्या तुम ने समझ रखा है कि यूँ ही स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे, हालाँकि अभी तक तुम्हारी वह दशा नहीं हुई जो तुम से पूर्व के ईमान वालों की हुई? उन्हें तंगियों तथा आपदाओं ने घेर लिया, और वह झँझोड़ दिये गये, यहाँ तक कि रसूल और जो उस पर ईमान लाये गुहारने लगे कि अल्लाह की सहायता कब आयेगी? (उस समय कहा गया:) सुन लो! अल्लाह की सहायता समीप^[1] है।

اٰرْحَمِيْنَهُمْ اَنْ يَّخْلُوْا الْجَنَّةَ وَكَيْتٰبًا يَّزَكُّهُمْ
مِّمَّا لَمْ يَكْفُرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمْ
الْبَيِّنَاتُ وَالصّٰغِرَاتُ وَالصّٰغِرَاتُ يَقُوْلُ
الرّٰسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهُ مَتٰى تَصُرَّ
اللّٰهُ الْاَرَآئِكُمْ تَصُرَ اللّٰهُ قَرِيْبًا ﴿٦٤﴾

215. हे नबी! वह आप से प्रश्न करते हैं कि कैसे व्यय (खर्च) करें? उन से कहो

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَا اَنْفَقْتُمْ مِنْ

कर के सब को एक मूल सत्धर्म पर लायें। परन्तु लोगों की दुराग्रह और आपसी द्वेष विभेद का कारण बने रहे। अन्यथा सत्धर्म (इस्लाम) जो एकता का आधार है वह अब भी सुरक्षित है। और जो व्यक्ति चाहेगा तो अल्लाह उस के लिये यह सत्य दर्शा देगा। परन्तु यह स्वयं उस की इच्छा पर आधारित है।

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि ईमान के लिये इतना ही बस नहीं कि ईमान को स्वीकार कर लिया तथा स्वर्गीय हो गये। इस के लिये यह भी आवश्यक है कि उन सभी परीक्षाओं में स्थिर रहो जो तुम से पूर्व सत्य के अनुयायियों के सामने आयीं, और तुम पर भी आयेंगी।

कि जो भी धन तुम खर्च करो, अपने माता पिता, समीपवर्तियों, अनाथों, निर्धनों तथा यात्रियों (को दो)। तथा जो भी भलाई तुम करते हो, उसे अल्लाह भली भाँति जानता है।

216. हे ईमान वालो! तुम पर युद्ध करना अनिवार्य कर दिया गया है, और वह तुम्हें अप्रिय है, हो सकता है कि कोई चीज़ तुम्हें अप्रिय हो, और वही तुम्हारे लिये अच्छी हो, और इसी प्रकार सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हें प्रिय हो, और वह तुम्हारे लिये बुरी हो। अल्लाह जानता है और तुम नहीं^[1] जानते।

217. हे नबी! वह^[2] आप से प्रश्न करते हैं कि सम्मानित मास में युद्ध करना कैसा है? तो आप उन से कह दें कि उस में युद्ध करना घोर पाप है, परन्तु अल्लाह की राह से रोकना और उस का इन्कार करना, तथा मस्जिदे हराम से रोकना, और उस के निवासियों को उस से निकालना, अल्लाह के समीप उस से भी घोर पाप है। तथा फितना (सत्धर्म) से विचलाना हत्या से भी भारी है। और वह तो तुम से युद्ध करते ही जायेंगे, यहाँ तक कि उन के बस

خَيْرٌ قَدِمُوا الدِّينَ وَالْأَقْرَبِينَ وَالْيَتَامَى
وَالْمَسْكِينِ وَالَّذِينَ السَّبِيلِ وَمَا تَفَعَّلُوا مِنْ خَيْرٍ
فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ۝

كُنِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهُ لَكُمْ وَعَسَى أَنْ
تَكُونُوا سِينًا وَمَوْجِبًا لِكُرْهِ لَكُمْ وَعَسَى أَنْ يَكُنَّ
سِينًا وَمَوْجِبًا لَكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا
تَعْلَمُونَ ۝

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الشُّهُرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيهَا قُلْ
قِتَالٌ فِيهَا كَبِيرٌ وَصَدٌّ عَنِ سَبِيلِ اللَّهِ وَكُفْرٌ بِهِ
وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْأَخْرَاجُ أَهْلُهُ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ
اللَّهِ وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ وَلَا تَزَالُ
يُقَاتِلُونَكُمْ حَتَّى يَرُدُّوكُمْ عَنْ دِينِكُمْ
إِنْ يَسْتَطَاعُوا وَمَنْ يَرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ
فَسَيْدٌ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولَئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ
هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

1 आयत का भावार्थ यह है कि युद्ध ऐसी चीज़ नहीं जो तुम्हें प्रिय हो। परन्तु जब ऐसी स्थिति आ जाये कि शत्रु इस लिये आक्रमण और अत्याचार करने लगे कि लोगों ने अपने पूर्वजों की आस्था परम्परा त्याग कर सत्य को अपना लिया है, जैसा कि इस्लाम के आरंभिक युग में हुआ, तो सत्धर्म की रक्षा के लिये युद्ध करना अनिवार्य हो जाता है।

2 अर्थात् मिश्रणवादी।

में हो तो तुम्हें तुम्हारे धर्म से फेर दें, और तुम में से जो व्यक्ति अपने धर्म (इस्लाम) से फिर जायेगा, फिर कुफ़्र पर ही उस की मौत होगी, तो ऐसों का किया कराया, संसार तथा परलोक में व्यर्थ हो जायेगा। तथा वही नारकी है। और वह उस में सदावासी होंगे।

218. (इस के विपरीत) जो लोग ईमान लाये, और उन्होंने हिजरत^[1] की, तथा अल्लाह की राह में जिहाद किया, तो वास्तव में वही अल्लाह की दया की आशा रखते हैं। तथा अल्लाह अति क्षमाशील और बहुत दयालु है।
219. हे नबी! वह आप से मदिरा और जूआ के विषय में प्रश्न करते हैं। आप बता दें कि इन दोनों में बड़ा पाप है। तथा लोगों का कुछ लाभ भी है। परन्तु उन का पाप उन के लाभ से अधिक^[2] बड़ा है। तथा वह आप से प्रश्न करते हैं कि अल्लाह की राह में क्या खर्च करें? उन से कह दो कि जो अपनी आवश्यकता से अधिक हो। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये आयतों (धर्मदिशों) को उजागर करता है। ताकि तुम सोच विचार करो।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَآلِهِمْ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢١٨﴾

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ قُلْ فِيهِمَا
إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَإِثْمُهُمَا كَبِيرٌ
مِّنْ تَفْعِهِمَا وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَ
قُلِ الْعَفْوَ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ
لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١٩﴾

1 हिजरत का अर्थ है: अल्लाह के लिये स्वदेश त्याग देना।

2 अर्थात् अपने लोक परलोक के लाभ के विषय में विचार करो और जिस में अधिक हानि हो उसे त्याग दो। यद्यपि उस में थोड़ा लाभ ही क्यों न हो यह मदिरा और जूआ से सम्बन्धित प्रथम आदेश है। आगामी सूरह निसा आयत 43 तथा सूरह माइदह आयत 90 में इन के विषय में अन्तिम आदेश आ रहा है।

220. और वह आप से अनार्थों के विषय में प्रश्न करते हैं। तो उन से कह दो कि जिस बात में उन का सुधार हो वही सब से अच्छी है। यदि तुम उन से मिल कर रहो तो वह तुम्हारे भाई ही हैं, और अल्लाह जानता है कि कौन सुधारने और कौन बिगाड़ने वाला है। और यदि अल्लाह चाहता तो तुम पर सख्ती^[1] कर देता। वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वज्ञ है।

221. तथा मुशिरक^[2] स्त्रियों से तुम विवाह न करो, जब तक वह ईमान न लायें, और ईमान वाली दासी मुशिरक स्त्री से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हारे मन को भा रही हो, और अपनी स्त्रियों का विवाह मुशिरकों से न करो जब तक वह ईमान न लायें। और ईमान वाला दास मुशिरक से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हें भा रहा हो। वह तुम्हें अग्नि की ओर बुलाते हैं तथा अल्लाह स्वर्ग और क्षमा की ओर बुला रहा है। और सभी मानव के लिये अपनी आयतें (आदेश) उजागर कर रहा है ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

222. तथा वह आप से मासिक धर्म के

فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَىٰ قُلْ
إِصْلَاحُهُمْ خَيْرٌ وَإِنْ تُخَالِطُوهُمْ فَامْحُوا
وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ وَلَوْ سَاءَ اللَّهُ
لَكَانَتْكُمْ أَرْكَانُ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ ۝

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا وَلَئِمَّةٌ مُّؤْمِنَةٌ
خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ وَلَا تُنْكِحُوا
الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ
مِّنْ مُّشْرِكٍ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى
النَّارِ وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى الْحَيٰةِ وَالْمَغْفِرَةِ
يَأْذِنُهُ وَيَسْتَبِينَ إِلَيْهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُونَ ۝

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ النَّجْوَىٰ قُلْ هُوَ آذَىٰ

1 उन का खाना पीना अलग करने का आदेश दे कर।

2 इस्लाम के विरोधियों से युद्ध ने यह प्रश्न उभार दिया कि उन से विवाह उचित है या नहीं? उस पर कहा जा रहा है कि उन से विवाह सम्बन्ध अवैध है, और इस का कारण भी बता दिया गया है कि वह तुम्हें सत्य से फेरना चाहते हैं। उन के साथ तुम्हारा विवाहिक सम्बन्ध कभी सफलता का कारण नहीं हो सकता।

विषय में प्रश्न करते हैं, तो कह दें कि वह मलीनता है। और उन के समीप भी न^[1] जाओ जब तक पवित्र न हो जायें। फिर जब वह भली भाँति स्वच्छ^[2] हो जायें तो उन के पास उसी प्रकार जाओ जैसे अल्लाह ने तुम्हें आदेश^[3] दिया है। निश्चय अल्लाह तौबा करने वालों तथा पवित्र रहने वालों से प्रेम करता है।

فَاعْتَرِضُوا لِلنِّسَاءِ فِي الْمَحْضِ وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّى يَطْهُرْنَ ۖ إِذَا أَطْهُرْنَ فَأَتْوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ﴿۲۰﴾

223. तुम्हारी पत्नियाँ तुम्हारे लिये खेतियाँ^[4] हैं। तुम्हें अनुमति है कि जैसे चाहो अपनी खेतियों में जाओ। परन्तु भविष्य के लिये भी सत्कर्म करो। तथा अल्लाह से डरते रहो। और विश्वास रखो कि तुम्हें उस से मिलना है। और ईमान वालों को शुभ सूचना सुना दो।

نِسَاءُكُمْ حَرْثٌ لَكُمْ فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنْ شِئْتُمْ ۚ وَقَدْ مُمُؤَالَانْفُسِكُمْ وَأَتَقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ مُلْقُونَ ۚ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿۲۰﴾

224. तथा अल्लाह के नाम पर अपनी शपथों को उपकार तथा सदाचार और लोगों में मिलाप कराने के लिये रोक^[5] न बनाओ। और अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।

وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِأَيْمَانِكُمْ أَنْ تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا ۚ وَتُصَلُّوا وَتُحِلُّوا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿۲۱﴾

225. अल्लाह तुम्हारी निरर्थक शपथों पर तुम्हें नहीं पकड़ेगा, परन्तु जो शपथ

لَا يُؤْخَذُ بِهَا بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ

1 अर्थात् संभोग करने के लिये।

2 मासिक धर्म बन्द होने के पश्चात् स्नान कर के स्वच्छ हो जायें।

3 अर्थात् जिस स्थान को अल्लाह ने उचित किया है, वहीं संभोग करो।

4 अर्थात् संतान उत्पन्न करने का स्थान और इस में यह संकेत भी है कि भग के सिवा अन्य स्थान में संभोग हराम (अनुचित) है।

5 अर्थात् सदाचार और पुण्य न करने की शपथ लेना अनुचित है।

अपने दिलों के संकल्प से लोगे,
उन पर पकड़ेगा, और अल्लाह अति
क्षमाशील सहनशील है।

226. तथा जो लोग अपनी पत्नियों से
संभोग न करने की शपथ लेते हों,
वह चार महीने प्रतीक्षा करें। फिर^[1]
यदि अपनी शपथ से इस (बीच)
फिर जायें तो अल्लाह अति क्षमाशील
दयावान् है।
227. और यदि उन्होंने तलाक़ का संकल्प
ले लिया हो तो निःसन्देह अल्लाह सब
कुछ सुनता और जानता है।
228. तथा जिन स्त्रियों को तलाक़ दी गयी
हो वह तीन बार रजवती होने तक
अपने आप को विवाह से रोकी रखें।
उन के लिये हलाल (वैध) नहीं है
कि अल्लाह ने जो उन के गर्भाशयों
में पैदा किया^[2] है, उसे छुपायें। यदि
वह अल्लाह तथा आखिरत (परलोक)
पर ईमान रखती हों। तथा उन के
पति इस अवधि में अपनी पत्नियों
को लौटा लेने के अधिकारी^[3] हैं
यदि वह मिलाप^[4] चाहते हों। तथा

يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبْتُمْ فُلُوْا بِكُمْ وَاللّٰهُ عَفُوٌّ
حَلِيْمٌ

لِّذٰلِكَ يَنْوِيْلُوْنَ مِنْ نِّسَابِهِمْ تَرَئُوْنَ اَرْبَعَةَ
اَشْهُرٍ ۗ اِنْ قَاءُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَفُوٌّ رَّحِيْمٌ

وَ اِنْ عَزَمُوْا الطَّلٰقَ فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ

وَالْمَطْلَقَاتُ يَرْتَضْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوْبٍ ۗ وَلَا
يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ يَّكْتُنَّ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْ اَرْحَامِهِنَّ
اِنْ كُنَّ يُوْمِنْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ وَيُعَلِّمُنَّ
اَحْقَ بَرَدِهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادَ وَاَصْلَاحًا
وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ
وَاللِّزْجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ

- 1 यदि पत्नी से संबंध न रखने की शपथ ली जाये जिसे अर्बी में "ईला" के नाम से जाना जाता है तो उस का यह नियम है कि चार महीने प्रतीक्षा की जायेगी। यदि इस बीच पति ने फिर संबंध स्थापित कर लिया तो उसे शपथ का कफ़ारह (प्रायश्चित्त) देना होगा। अन्यथा चार महीने पूरे हो जाने पर न्यायालय उसे शपथ से फिरने या तलाक़ देने के लिये बाध्य करेगा।
- 2 अर्थात् मासिक धर्म अथवा गर्भ को।
- 3 यह बताया गया है कि पति तलाक़ के पश्चात् पत्नी को लौटाना चाहे तो उसे इस का अधिकार है। क्यों कि विवाह का मूल लक्ष्य मिलाप है, अलगाव नहीं।
- 4 हानि पहुँचाने अथवा दुःख देने के लिये नहीं।

सामान्य नियमानुसार स्त्रियों^[1] के लिये वैसे ही अधिकार हैं जैसे पुरुषों का उन के ऊपर है। फिर भी पुरुषों को स्त्रियों पर एक प्रधानता प्राप्त है। और अल्लाह अति प्रभुत्वशील तत्त्वज्ञ है।

229. तलाक़ दो बार है। फिर नियमानुसार स्त्री को रोक लिया जाये या भली

الطَّلَاقُ مَرَّتَيْنِ، وَإِذَا مَسَّكَ بُعْرُوفٌ أَوْ

1 यहाँ यह ज्ञातव्य है कि जब इस्लाम आया तो संसार यह जानता ही न था कि स्त्रियों के भी कुछ अधिकार हो सकते हैं। स्त्री को संतान उत्पन्न करने का एक साधन समझा जाता था, और उन की मुक्ति इसी में थी कि वह पुरुषों की सेवा करें, प्राचीन धर्मानुसार स्त्री को पुरुष की सम्पत्ति समझा जाता था। पुरुष तथा स्त्री समान नहीं थे। स्त्री में मानव आत्मा के स्थान पर एक दूसरी आत्मा होती थी, रूमी विधान में भी स्त्री का स्थान पुरुष से बहुत नीचा था। जब कभी मानव शब्द बोला जाता तो उस से संबोधित पुरुष होता था। स्त्री पुरुष के साथ खड़ी नहीं हो सकती थी।

कुछ अमानवीय विचारों में जन्म से पाप का सारा बोझ स्त्री पर डाल दिया जाता। आदम के पाप का कारण हवा हुई। इस लिये पाप का पहला बीज स्त्री के हाथों पड़ा। और वही शैतान का साधन बनी। अब सदा स्त्री में पाप की प्रेरणा उभरती रहेगी, धार्मिक विषय में भी स्त्री पुरुष के समान न हो सकी।

परन्तु इस्लाम ने केवल स्त्रियों के अधिकार का विचार ही नहीं दिया बल्कि खुला एलान कर दिया कि जैसे पुरुषों के अधिकार हैं उसी प्रकार स्त्रियों के भी पुरुषों पर अधिकार हैं।

कुरआन ने इन चार शब्दों में स्त्री को वह सब कुछ दे दिया है जो उस का अधिकार था। और जो उसे कभी नहीं मिला था। इन शब्दों द्वारा उस के सम्मान और समता की घोषणा कर दी। दाम्पत्य जीवन तथा सामाजिकता की कोई ऐसी बात नहीं जो इन चार शब्दों में न आ गई हो। यद्यपि आगे यह भी कहा गया है कि पुरुषों के लिये स्त्रियों पर एक विशेष प्रधानता है। ऐसा क्यों है? इस का कारण हमें अगामी सूरह "निसा" में मिल जाता है कि यह इस लिये है कि पुरुष अपना धन स्त्रियों पर खर्च करते हैं। अर्थात् परिवारिक जीवन की व्यवस्था के लिये कोई व्यवस्थापक अवश्य होना चाहिये। और इस का भार पुरुषों पर रखा गया है। यही उन की प्रधानता तथा विशेषता है। जो केवल एक भार है इस से पुरुष की जन्म से कोई प्रधानता सिद्ध नहीं होती। यह केवल एक परिवारिक व्यवस्था के कारण हुआ है।

भाँति विदा कर दिया जाये। और तुम्हारे लिये यह हलाल (वैध) नहीं है कि उन्हें जो कुछ तुम ने दिया है उस में से कुछ वापिस लो। फिर यदि तुम्हें यह भय^[1] हो कि पति पत्नी अल्लाह की निर्धारित सीमाओं को स्थापित न रख सकेंगे तो उन दोनों पर कोई दोष नहीं कि पत्नी अपने पति को कुछ देकर मुक्ति^[2] करा ले। यह अल्लाह की सीमायें हैं इन का उल्लंघन न करो। और जो अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करेंगे वही अत्याचारी हैं।

230. फिर यदि उसे (तीसरी बार) तलाक़ दे दी तो वह स्त्री उस के लिये हलाल (वैध) नहीं होगी, जब तक दूसरे पति से विवाह न कर ले। अब यदि दूसरा पति (संभोग के पश्चात्) उसे तलाक़ दे दे तब प्रथम पति से (निर्धारित अवधि पूरी कर के) फिर विवाह कर सकती है, यदि वह दोनों समझते हों कि अल्लाह की सीमाओं को स्थापित रख^[3] सकेंगे। और यह

تَسْرِيحُ رِبَا حَسَانٍ وَلَا يَجِلُّ لَكُمْ أَنْ
تَأْخُذُوا وَمِمَّا أَنْتُمْ مُهْتَمُونَ شَيْئًا إِلَّا أَنْ يُخَافَا
الْأَيْقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ فَإِنْ خِفْتُمْ الْإِيقِيمَا
حُدُودَ اللَّهِ فَلَا حُنَاقَ عَلَيْهِمَا فِيمَا افْتَدَتْ
بِهِ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَمْتَدُوا بِهَا وَمَنْ
يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٣٠﴾

فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدِ حَتَّى
تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا حُنَاقَ
عَلَيْهِمَا أَنْ يَتَرَاجَعَا إِنْ طَلَّقَا أَنْ يُقِيمَا
حُدُودَ اللَّهِ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ يُبَيِّنُهَا
لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٢٣٠﴾

1 अर्थात् पति के संरक्षकों को।

2 पत्नी के अपने पति को कुछ दे कर विवाह बंधन से मुक्त करा लेने को इस्लाम की परिभाषा में "खुलअ" कहा जाता है। इस्लाम ने जैसे पुरुषों को तलाक़ का अधिकार दिया है उसी प्रकार स्त्रियों को भी "खुलअ" ले लेने का अधिकार दिया है। अर्थात् वह अपने पति से तलाक़ माँग सकती है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि प्रथम पति ने तीन तलाक़ दे दी हों तो निर्धारित अवधि में भी उसे पत्नी को लौटाने का अवसर नहीं दिया जायेगा। तथा पत्नी को यह अधिकार होगा कि निर्धारित अवधि पूरी कर के किसी दूसरे पति से धर्मविधान के अनुसार सहीह विवाह कर ले, फिर यदि दूसरा पति उसे सम्भोग

अल्लाह की सीमायें हैं, जिन्हें उन लोगों के लिये उजागर कर रहा है जो ज्ञान रखते हों।

231. और यदि स्त्रियों को (एक या दो) तलाक़ दे दो और उन की निर्धारित अवधि (इद्दत) पूरी होने लगे तो नियमानुसार उसे रोक लो, अथवा नियमानुसार विदा कर दो। उन्हें हानि पहुँचाने के लिये न रोको, ताकि उन पर अत्याचार करो, और जो कोई ऐसा करेगा तो वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करेगा। तथा अल्लाह की आयतों (आदेशों) को उपहास न बनाओ। और अपने ऊपर अल्लाह के उपकार तथा उस पुस्तक (क़ुर्आन) तथा हिक्मत (सुन्नत) को याद करो जिसे उस ने तुम पर उतारा है। और उस के द्वारा तुम को शिक्षा दे रहा है। तथा अल्लाह से डरो, और विश्वास रखो कि अल्लाह सब कुछ जानता है।^[1]

232. और जब तुम अपनी पत्नियों को (तीन से कम) तलाक़ दो, और वह अपनी निश्चित अवधि (इद्दत) पूरी

وَإِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ
فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ سَرِّحُوهُنَّ
بِمَعْرُوفٍ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ ضِرَارًا
لِّتَعْتَدُوا وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ
نَفْسَهُ وَلَا تَتَّخِذُوا آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا
وَأذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمَا أَنْزَلَ
عَلَيْكُمْ مِنَ الْكِتَابِ وَالْحِكْمَةَ يَعِظُكُمْ بِهَا
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمٌ ۝

وَإِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ
فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا

के पश्चात् तलाक़ दे, या उस का देहान्त हो जाये तो प्रथम पति से निर्धारित अवधि पूरी करने के पश्चात् नये महर के साथ नया विवाह कर सकती है। लेकिन यह उस समय है जब दोनों यह समझते हों कि वे अल्लाह के आदेशों का पालन कर सकेंगे।

- 1 आयत का अर्थ यह है कि पत्नी को पत्नी के रूप में रखो, और उन के अधिकार दो। अन्यथा तलाक़ दे कर उन की राह खोल दो। जाहिलिय्यत के युग के समान अँधेरे में न रखो। इस विषय में भी नैतिकता एवं संयम के आदर्श बनो और क़ुर्आन तथा सुन्नत के आदेशों का अनुपालन करो।

कर लें, तो (स्त्रियों के संरक्षको!) उन्हें अपने पतियों से विवाह करने से न रोको, जब कि सामान्य नियमानुसार वह आपस में विवाह करने पर सहमत हों, यह तुम में से उसे निर्देश दिया जा रहा है जो अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान (विश्वास) रखता है, यही तुम्हारे लिये अधिक स्वच्छ तथा पवित्र है। और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते।

233. और मातायें अपने बच्चों को पूरे दो वर्ष दूध पिलायें, और पिता को नियमानुसार उन्हें खाना कपड़ा देना है, किसी पर उस की सकत से अधिक भार नहीं डाला जायेगा, न माता को उस के बच्चे के कारण हानि पहुँचाई जाये, और न पिता को उस के बच्चे के कारण। और इसी प्रकार उस (पिता) के वारिस (उत्तराधिकारी) पर (खाना कपड़ा देने का) भार है। फिर यदि दोनों आपस की सहमति तथा परामर्श से (दो वर्ष से पहले) दूध छुड़ाना चाहें तो दोनों पर कोई दोष नहीं। और यदि (तुम्हारा विचार किसी अन्य स्त्री से) दूध पिलवाने का हो तो इस में भी तुम पर कोई दोष नहीं, जब कि जो कुछ नियमानुसार उसे देना है उस को चुका दिया हो, तथा अल्लाह से डरते रहो। और जान लो कि तुम जो कुछ करते हो उसे

تَرَاضًا وَبَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوفِ ذَلِكَ يُؤْخَذُ مِنْ يَدَيْهِ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَ لَكُمْ لَكُمْ وَأَظْهَرُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٣٣﴾

وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يُبْرِئَهُ الرِّضَاعَةَ وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ إِلَّا وُسْعَهَا أَلِفًا وَالْوَالِدُ الْكَافِرُ وَالْمَوْلُودُ لَهُ يَكْفُرُ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذَلِكَ فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا وَإِنْ أَرَدْتُمْ أَنْ تَسْرِعُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذْ سَأَلْتُمُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٣٣﴾

अल्लाह देख रहा^[1] है।

234. और तुम में से जो मर जायें और अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ जायें तो वह स्वयं को चार महीने दस दिन रोके रखें^[2] फिर जब उन की अवधि पूरी हो जाये तो वह सामान्य नियमानुसार अपने विषय में जो भी करें उस में तुम पर कोई दोष^[3] नहीं। तथा अल्लाह तुम्हारे कर्मों से सूचित है।

235. इस अवधि में यदि तुम (उन) स्त्रियों को विवाह का संकेत दो अथवा अपने मन में छुपाये रखो तो तुम पर कोई दोष नहीं। अल्लाह जानता है कि उन का विचार तुम्हारे मन में आयेगा, परन्तु उन्हें गुप्त रूप से विवाह का वचन न दो। परन्तु यह कि नियमानुसार^[4] कोई बात कहो। तथा विवाह के बंधन का निश्चय उस समय तक न करो जब तक

وَالَّذِينَ يُوَفُّونَ مِنْكُمْ وَيَدْرُونَ أَنَّ أَوْلِيَاءَهُمْ لَكُنَّ
بِأَنْفُسِهِمْ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا ۖ فَاذْأَبْلَغْنَ
أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ
بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاللَّهُ يَبْصُرُ مَا تَعْمَلُونَ ۝٢٣٤

وَالْحَبَائِرَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَضْتُمْ بِهِ مِنْ خُطْبَةِ
النِّسَاءِ أَوْ الْكِنَانِ ۖ فِي أَنْفُسِكُمْ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ
سَتَدْرُوهُنَّ وَلَكِنْ لَوْلَا إِعْدُوهُنَّ سِرًّا إِلَّا أَنْ
تَقُولُوا قَوْلَ الْمَعْرُوفِ ۖ وَلَا تَعْرُضُوا عَقْدَةَ النِّكَاحِ
حَتَّى يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ ۗ وَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
يَعْلَمُ مَا فِي أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوا ۗ وَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
عَفُورٌ رَحِيمٌ ۝٢٣٥

- 1 तलाक की स्थिति में यदि माँ की गोद में बच्चा हो तो यह आदेश दिया गया है कि माँ ही बच्चे को दूध पिलाये और दूध पिलाने तक उस का खर्च पिता पर है। और दूध पिलाने की अवधि दो वर्ष है। साथ ही दो मूल नियम भी बताये गये हैं कि न तो माँ को बच्चे के कारण हानि पहुँचाई जाये और न पिता को। और किसी पर उस की शक्ति से अधिक खर्च का भार न डाला जाये।
- 2 उस की निश्चित अवधि चार महीने दस दिन है। वह तुरंत दूसरा विवाह नहीं कर सकती, और न इस से अधिक पति का सोग मनाये। जैसा कि जाहिलियत में होता था कि पत्नी को एक वर्ष तक पति का सोग मनाना पड़ता था।
- 3 यदि स्त्री निश्चित अवधि के पश्चात् दूसरा विवाह करना चाहे, तो उसे रोका न जाये।
- 4 विवाह के विषय में जो बात की जाये वह खुली तथा नियमानुसार हो, गुप्त नहीं।

निर्धारित अवधि पूरी न हो जाये^[1], तथा जान लो कि जो कुछ तुम्हारे मन में है उसे अल्लाह जानता है। अतः उस से डरते रहो और जान लो कि अल्लाह क्षमाशील, सहनशील है।

236. और तुम पर कोई दोष नहीं यदि तुम स्त्रियों को संभोग करने तथा महर (विवाह उपहार) निर्धारित करने से पहले तलाक़ दे दो। (इस स्थिति में) उन्हें कुछ दो। नियमानुसार धनी पर अपनी शक्ति के अनुसार तथा निर्धन पर अपनी शक्ति के अनुसार देना है। यह उपकारियों पर आवश्यक है।

237. और यदि तुम उन को उन से संभोग करने से पहले तलाक़ दो इस स्थिति में कि तुम ने उन के लिये महर (विवाह उपहार) निर्धारित किया है तो निर्धारित महर का आधा देना अनिवार्य है। यह और बात है कि वह क्षमा कर दें। अथवा वह क्षमा कर दें जिन के हाथ में विवाह का बंधन^[2] है। और क्षमा कर देना संयम से अधिक समीप है। और

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَقْتُمْ النِّسَاءَ مَا لَمْ
تَمْسُوهُنَّ أَوْ تَفْرِصُوهُنَّ فَرِيضَةً وَمَعُوهُنَّ
عَلَى الْمَوْسِمِ قَدْرُهُ وَعَلَى الْمُفْتَرِ قَدْرُهُ مَتَاعًا
بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ ٢٣٦

وَإِنْ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ وَقَدْ
قَرَضْتُمُوهُنَّ فَرِيضَةً فَنِصْفُ مَا قَرَضْتُمُوهُنَّ
أَنْ يُعْفُونَ أَوْ يُعْفُوا الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ عَقْدَةٌ
الْبَيْتِ وَأَنْ تُعْفُوا أَقْرَبَ لِلتَّقْوَى وَلَا تَسْأَلُوا
الْقَضْلَ بَيْنَكُمْ إِنْ أَلَّفَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ٢٣٧

- 1 जब तक अवधि पूरी न हो विवाह की बात तथा वचन नहीं होना चाहिये।
- 2 अर्थात् पति अपनी ओर से अधिक अर्थात् पूरा महर दे तो यह प्रधानता की बात होगी। इन दो आयतों में यह नियम बताया गया है कि यदि विवाह के पश्चात् पति और पत्नी में कोई सम्बंध स्थापित हुआ हो, तो इस स्थिति में यदि महर निर्धारित न किया गया हो तो पति अपनी शक्ति अनुसार जो भी दे सकता हो, उसे अवश्य दे। और यदि महर निर्धारित हो तो इस स्थिति में आधा महर पत्नी को देना अनिवार्य है। और यदि पुरुष इस से अधिक दे सके तो संयम तथा प्रधानता की बात होगी।

आपस में उपकार को न भूलो। तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह सब देख रहा है।

238. नमाज़ों का, विशेष रूप से माध्यमिक नमाज़ (अस्र) का ध्यान रखो।^[1] तथा अल्लाह के लिये विनय पूर्वक खड़े रहो।

حَافِظُوا عَنِ الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ
وَقَوْمُوا بِاللَّهِ قَتِيئِينَ ﴿٢٣٨﴾

239. और यदि तुम्हें भय^[2] हो तो पैदल या सवार (जैसे संभव हो) नमाज़ पढ़ो, फिर जब निश्चित हो जाओ तो अल्लाह ने तुम्हें जैसे सिखाया है, जिसे पहले तुम नहीं जानते थे, वैसे अल्लाह को याद करो।

فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ رُكْبَانًا فَإِذَا أَمِنْتُمْ فَأَدْكُوا
اللَّهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿٢٣٩﴾

240. और जो तुम में से मर जायें, तथा पत्नियाँ छोड़ जायें, वह अपनी पत्नियों के लिये एक वर्ष तक उन को खर्च देने, तथा (घर से) न निकालने की वसियत कर जायें तो यदि वह स्वयं निकल जायें^[3] तथा सामान्य नियमानुसार अपने विषय में कुछ भी करें, तो तुम पर कोई दोष नहीं। अल्लाह प्रभावशाली तत्त्वज्ञ है।

وَالَّذِينَ يَبُوءُونَ مِنْكُمْ وَيَدْرُونَ أَرْوَاجَهُمْ
وَصِيئَةً لِأَرْوَاجِهِمْ مَتَاعًا إِلَى الْأَحْوَالِ غَيْرِ
إِحْرَارٍ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا
فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوفٍ وَاللَّهُ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ﴿٢٤٠﴾

241. तथा जिन स्त्रियों को तलाक़ दी गयी हो, तो उन्हें भी उचित रूप से सामग्री मिलनी चाहिये, यह आज्ञाकारियों पर आवश्यक है।

وَالْمُطَلَّقَاتُ مَتَاعٌ بِمَا مَعْرُوفٍ حَقَاقِلِ
الْمُتَّقِينَ ﴿٢٤١﴾

1 अस्र की नमाज़ पर ध्यान रखने के लिये इस कारण बल दिया गया है कि व्यवसाय में लीन रहने का समय होता है।

2 अर्थात् शत्रु आदि का।

3 अर्थात् एक वर्ष पूरा होने से पहले। क्योंकि उन की निश्चित अवधि चार महीनो और दस दिन ही निर्धारित है।

242. इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों को उजागर कर देता है ताकि तुम समझो।
243. क्या आप ने उन की दशा पर विचार नहीं किया जो अपने घरों से मौत के भय से निकल गये^[1], जब कि उन की संख्या हज़ारों में थी, तो अल्लाह ने उन से कहा कि मर जाओ, फिर उन्हें जीवित कर दिया। वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये बड़ा उपकारी है, परन्तु अधिकांश लोग कृतज्ञयता नहीं करते^[2]।
244. और तुम अल्लाह (के धर्म के समर्थन) के लिये युद्ध करो, और जान लो कि अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।
245. कौन है, जो अल्लाह को अच्छा उधार^[3] देता है, ताकि अल्लाह उसे उस के लिये कई गुना अधिक कर दे? और अल्लाह ही थोड़ा और अधिक करता है, और उसी की ओर तुम सब फेरे जावोगे।
246. हे नबी! क्या आप ने बनी इस्राईल के प्रमुखों के विषय पर विचार नहीं किया, जो मूसा के बाद सामने आया? जब उस ने अपने नबी से कहा: हमारे लिये एक राजा बना दो।

كَذَلِكَ يبينُ اللهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢٤٢﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ فَقَالَ لَهُمُ اللهُ مُوتُوا ثُمَّ أَحْيَاهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٢٤٣﴾

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ سَبِيغٌ عَلَيْهِمْ ﴿٢٤٤﴾

مَنْ ذَا الَّذِي يُقرضُ اللهُ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضْعِفُهُ لَهُ أضعافًا كثيرةً وَاللهُ يَقْبِضُ وَيَبْسُطُ وَإِلَيْهِ تُرجعون ﴿٢٤٥﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلَإِ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنْ بَعْدِ مُوسَى إِذْ قَالُوا لِلَّذِي لَهُمُ بَعَثْنَا مَلَكًا فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ كُنْتُمْ عَلَيْهِمْ الْقِتَالِ أَنْ تَقَاتِلُوا قَالُوا وَآلَانَا أَنْ نَقَاتِلَ فِي

- 1 इस में बनी इस्राईल के एक गिरोह की ओर संकेत किया गया है।
- 2 आयत का भावार्थ यह है कि जो लोग मौत से डरते हों, वह जीवन में सफल नहीं हो सकते, तथा जीवन और मौत अल्लाह के हाथ में है।
- 3 अर्थात् जिहाद के लिये धन खर्च करना अल्लाह को उधार देना है।

हम अल्लाह की राह में युद्ध करेंगे, (नबी ने) कहा: ऐसा तो नहीं होगा कि तुम्हें युद्ध का आदेश दे दिया जाये तो अवैज्ञा कर जाओ? उन्हीं ने कहा: ऐसा नहीं हो सकता कि हम अल्लाह की राह में युद्ध न करें। जब कि हम अपने घरों और अपने पुत्रों से निकाल दिये गये हैं। परन्तु जब उन्हें युद्ध का अदेश दे दिया गया तो उन में से थोड़े के सिवा सब फिर गये। और अल्लाह अत्याचारियों को भली भाँति जानता है।

247. तथा उन के नबी ने कहा: अल्लाह ने "तालूत" को तुम्हारा राजा बना दिया है। वह कहने लगे: "तालूत" हमारा राजा कैसे हो सकता है? हम उस से अधिक राज्य का अधिकार रखते हैं, वह तो बड़ा धनी भी नहीं है। (नबी ने) कहा: अल्लाह ने उसे तुम पर निर्वाचित किया है, और उसे अधिक ज्ञान तथा शारिरिक बल प्रदान किया है। और अल्लाह जिसे चाहे अपना राज्य प्रदान करे तथा अल्लाह ही विशाल, अति ज्ञानी^[1] है।

248. तथा उन के नबी ने उन से कहा: उस के राज्य का लक्षण यह है कि वह ताबूत तुम्हारे पास आयेगा, जिस में तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे लिये संतोष तथा मुसा और हारून के छोड़े हुये

سَيَّبِلَ اللَّهُ وَكَذَّأُحْرَجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَأَبْنَايَنَا
فَلَمَّا كَتَبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالَ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ۝

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ
مَلِكًا قَالُوا أَنَّى يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ
أَعْقَبُ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِنَ الْمَالِ
قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَا كِبْرَةً فِي
الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ وَاللَّهُ يُؤْتِي مَلَكُهُ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ
وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ
التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِّنْ رَبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ
الْمُوسَىٰ وَالْهَارُونَ وَحَمَلُهُ السُّلَيْمَانَةُ إِنَّ فِي
ذَلِكَ لَآيَةً لِّكُلِّ مَنَّتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

- 1 अर्थात उसी के अधिकार में सब कुछ है। और कौन राज्य की क्षमता रखता है? उसे भी वही जानता है।

अवशेष हैं, उसे फरिश्ते उठाये हुये होंगे। निश्चय यदि तुम ईमान वाले हो तो इस में तुम्हारे लिये बड़ी निशानी^[1] (लक्षण) है।

249. फिर जब तालूत सेना ले कर चला, तो उस ने कहा: निश्चय अल्लाह एक नहर द्वारा तुम्हारी परीक्षा लेने वाला है। तो जो उस में से पीयेगा वह मेरा साथ नहीं देगा, और जो उसे नहीं चखेगा, वह मेरा साथ देगा, परन्तु जो अपने हाथ से चूल्हू भर पी ले (तो कोई दोष नहीं। तो थोड़े के सिवा सब ने उस में से पी लिया। फिर जब उस (तालूत) ने और जो उस के साथ ईमान लाये, उस (नहर) को पार किया, तो कहा आज हम में (शत्रु) जालूत और उस की सेना से युद्ध करने की शक्ति नहीं। (परन्तु) जो समझ रहे थे कि उन्हें अल्लाह से मिलना है उन्होंने कहा: बहुत से छोटे दल अल्लाह की अनुमति से भारी दलों पर विजय प्राप्त कर चुके हैं। और अल्लाह सहनशीलों के साथ है।

250. और जब वह जालूत और उस की सेना के सम्मुख हुये तो प्रार्थना की, हे हमारे पालनहार! हम को धैर्य प्रदान कर। तथा हमारे चरणों को (रणक्षेत्र में) स्थिर कर दे। और काफिरों पर हमारी सहायता कर।

251. तो उन्होंने ने अल्लाह की अनुमति से

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُمْ بِنَهَرٍ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَنْ لَمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ اعْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ فَلَمَّا جَاوَزَهُ وَالدَّيْنِ امْتُوا مَعَهُ قَالُوا الْكَيْفَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلَاقُوا اللَّهَ كَرِهَ مِنْ فِتْنَةٍ قَلِيلًا وَعَلَيْتُمْ وَمَنْ كَثِيرًا يَا ذُنَّ اللَّهُ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٢٤٩﴾

وَلَمَّا بَرَزُوا لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ هَذَا وَقَاتِلْنَا لَهُم بِقُوَّتِكَ وَارْحَمْنَا إِنَّهُمْ قَوْمُ الْكَافِرِينَ ﴿٢٥٠﴾

فَهَزَمُوهُمْ بِإِذْنِ اللَّهِ وَقَتَلَ دَاوُدُ جَالُوتَ وَآلَهُ

1 अर्थात् अल्लाह की ओर से तालूत को निर्वाचित किये जाने की।

उन्हें पराजित कर दिया, और दावूद ने जालूत का बध कर दिया। तथा अल्लाह ने उस (दावूद)^[1] को राज्य और हिक्मत (नुबूवत) प्रदान की, तथा उसे जो ज्ञान चाहा दिया, और यदि अल्लाह कुछ लोगों की कुछ लोगों द्वारा रक्षा न करता तो धरती की व्यवस्था बिगड़ जाती, परन्तु संसार वासियों पर अल्लाह बड़ा दयाशील है।

252. (हे नबी!) यह अल्लाह की आयतें हैं, जो हम आप को सुना रहे हैं, तथा वास्तव में आप रसूलों में से हैं।

253. वह रसूल हैं। उन को हम ने एक दूसरे पर प्रधानता दी है। उन में से कुछ ने अल्लाह से बात की। और कुछ को कई श्रेणियाँ ऊँचा किया। तथा मर्यम के पुत्र ईसा को खुली निशानियाँ दीं। और रूहुलकुदुस^[2] द्वारा उसे समर्थन दिया। और यदि अल्लाह चाहता तो इन रसूलों के पश्चात् खुली निशानियाँ आ जाने पर लोग आपस में न लड़ते, परन्तु उन्होंने विभेद किया, तो उन में से कोई ईमान लाया, और किसी ने कुफ़्र किया। और यदि अल्लाह चाहता तो

اللَّهُ الْمَلِكُ وَالْحَكِيمُ وَعَلَّمَهُ مَا يَشَاءُ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَفَسَدَتِ الْأَرْضُ وَلَكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ تَنْزَلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۗ وَأَنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ وَمَنْ يَرْجُ مِنْ كَلِمِ اللَّهِ وَرَفَعَهُ بَعْضَهُمْ دَرَجَاتٍ وَأَنبَيَانًا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبِكْرَتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ ۗ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَقْتُلَ الَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ مَنْ بَعْدَ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَلَكِنْ اخْتَلَفُوا فِيهِمْ مَنْ آمَنَ وَوَجَّهْتُمْ مَنْ كَفَرُوا ۗ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَقْتَلْتُمُ ۗ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ۝

1 दावूद अलैहिस्सलाम तालूत की सेना में एक सैनिक थे, जिन को अल्लाह ने राज्य देने के साथ नबी भी बनाया। उन्हीं के पुत्र सुलैमान अलैहिस्सलाम थे। दावूद अलैहिस्सलाम को अल्लाह ने धर्मपुस्तक ज़बूर प्रदान की। सूरह साद में उन की कथा आ रही है।

2 "रूहुलकुदुस" का शाब्दिक अर्थ: पवित्रात्मा है। और इस से अभिप्रेत एक फरिश्ता है, जिस का नाम "जिब्रिल" अलैहिस्सलाम है।

वह नहीं लड़ते, परन्तु अल्लाह जो चाहता है करता है।

254. हे ईमान वालो! हम ने तुम्हें जो कुछ दिया है उस में से दान करो, उस दिन (अर्थात प्रलय) के आने से पहले, जिस में कोई सौदा नहीं होगा, और न कोई मैत्री, तथा न कोई अनुशांसा (सिफारिश) काम आयेगी, तथा काफ़िर लोग^[1] ही अत्याचारी^[2] हैं।

255. अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित^[3] तथा नित्य स्थाई है, उसे ऊँघ तथा निद्रा नहीं आती। आकाश और धरती में जो कुछ है, सब उसी का^[4] है। कौन है जो उस के पास उस की अनुमति के बिना अनुशांसा (सिफारिश) कर सके? जो कुछ उन के समक्ष और जो कुछ उन से ओझल है सब को जानता है। वह उस के ज्ञान में से वही जान सकते हैं जिसे वह चाहे। उस की कुर्सी आकाश तथा धरती को समोये हुये हैं। उन दोनों की रक्षा उसे नहीं थकाती। वही सर्वोच्च^[5] महान् है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْعَلُونَ لِكُلِّ ذُنُوبٍ آلَةً وَلَا تَعْلَمُونَ أَنَّهَا إِلَهُاتُكُمْ فَذُنُوبِكُمْ آلَتُهُمْ وَأَلَهُاتُهُمْ وَكَانَ اللَّهُ غَافِلًا عَنِ الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٥٤﴾

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ لَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ﴿٢٥٥﴾

- 1 अर्थात जो इस तथ्य को नहीं मानते वही स्वयं को हानि पहुँचा रहे हैं।
- 2 आयत का भावार्थ यह है कि परलोक की मुक्ति ईमान और सदाचार पर निर्भर है, न वहाँ मुक्ति का सौदा होगा न मैत्री और सिफारिश काम आयेगी।
- 3 अर्थात स्वयंभू, अनन्त है।
- 4 अर्थात जो स्वयं स्थित तथा सब उस की सहायता से स्थित हैं।
- 5 यह कुर्आन की सर्वमहान् आयत है। और इस का नाम "आयतुलकुर्सी" है। हदीस में इस की बड़ी प्रधानता बताई गई है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

256. धर्म में बल प्रयोग नहीं। सुपथ कुपथ से अलग हो चुका है। अतः अब जो तागूत (अर्थात् अल्लाह के सिवा पूज्यों) को नकार दे, तथा अल्लाह पर ईमान लाये तो उस ने दृढ़ कड़ा (सहारा) पकड़ लिया जो कभी खण्डित नहीं हो सकता। तथा अल्लाह सब कुछ सुनता जानता^[1] है।

257. अल्लाह उन का सहायक है जो ईमान लाये। वह उन को अंधेरी से निकालता है। और प्रकाश में लाता है। और जो काफ़िर (विश्वासहीन) है। उन के सहायक तागूत (उन के मिथ्या पूज्य) हैं जो उन्हें प्रकाश से अंधेरी की ओर ले जाते हैं। यही नारकी है, जो उस में सदावासी होंगे।

258. हे नबी! क्या आप ने उस व्यक्ति की दशा पर विचार नहीं किया, जिस ने इब्राहीम से उस के पालनहार के विषय में विवाद किया, इसलिये कि अल्लाह ने उसे राज्य दिया था? जब इब्राहीम ने कहा: मेरा पालनहार वह है जो जीवित करता तथा मारता है तो उस ने कहा: मैं भी जीवित^[2] करता

لَا أُرَاكَ فِي الدِّينِ قَدَّاتِيكَ الرَّشِدَ مِنَ الْعَيْ
فَمَنْ يَكْفُرُ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنُ بِإِلَهِهِ فَقَدْ
اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انْفِصَامَ لَهَا وَاللَّهُ
سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥٦﴾

اللَّهُ وَرَبُّ الدِّينِ أَمْثَلُ خَيْرٌ لَهُمْ مِنَ الظَّالِمِ
إِلَى النُّورِ وَالدِّينَ كَفَرُوا وَأُولَئِكَ هُمُ الطَّاغُوتِ
يُخْرِجُونَهُمْ مِنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ أُولَئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٥٧﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِي حَاجَّ إِبْرَاهِيمَ فِي رَبِّهِ أَنْ
أَشْهَ اللَّهُ الْمَلِكَ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّيَ الَّذِي
يُرْسِي وَيُيَمِّتُ قَالَ آتَا أُمَّي وَأُمِّيتُ قَالَ
إِبْرَاهِيمُ فَإِنَّ اللَّهَ يَأْتِي بِالسَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ
قَائِلَةً بِهَا مِنْ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِي كَفَرَ وَاللَّهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٢٥٨﴾

1 आयत का भावार्थ यह है कि धर्म तथा आस्था के विषय में बल प्रयोग की अनुमति नहीं, धर्म दिल की आस्था और विश्वास की चीज़ है। जो शिक्षा दिक्षा से पैदा हो सकता है, न कि बल प्रयोग और दबाव से। इस में यह संकेत भी है कि इस्लाम में जिहाद अत्याचार को रोकने तथा सत्धर्म की रक्षा के लिये है न कि धर्म के प्रसार के लिये। धर्म के प्रसार का साधन एक ही है, और वह प्रचार है, सत्य प्रकाश है। यदि अंधकार हो तो केवल प्रकाश की आवश्यकता है। फिर प्रकाश जिस ओर फिरेगा तो अंधकार स्वयं दूर हो जायेगा।

2 अर्थात् जिसे चाहूँ मार दूँ, और जिसे चाहूँ क्षमा कर दूँ। इस आयत में अल्लाह

तथा मारता हूँ। इब्राहीम ने कहा: अल्लाह सूर्य को पूर्व से लाता है, तू उसे पश्चिम से ला दे! (यह सुन कर) काफ़िर चकित रह गया। और अल्लाह अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

259. अथवा उस व्यक्ति के प्रकार जो एक ऐसी नगरी से गुजरा जो अपनी छतों सहित ध्वस्त पड़ी थी? उस ने कहा: अल्लाह इस के ध्वस्त हो जाने के पश्चात इसे कैसे जीवित (आबाद) करेगा? फिर अल्लाह ने उसे सौ वर्ष तक मौत दे दी। फिर उसे जीवित किया। और कहा: तुम कितनी अवधि तक मुर्दे पड़े रहे? उस ने कहा: एक दिन अथवा दिन के कुछ क्षण। (अल्लाह ने) कहा: बल्कि तुम सौ वर्ष तक पड़े रहे। अपने खाने पीने को देखो कि तनिक परिवर्तन नहीं हुआ है। तथा अपने गधे की ओर देखो, ताकि हम तुम्हें लोगों के लिये एक निशानी (चिन्ह) बना दें। तथा (गधे की) स्थियों को देखो कि हम उसे कैसे खड़ा करते हैं। और उन पर कैसे माँस चढ़ाते हैं। इस प्रकार जब उस के समक्ष बातें उजागर हो गयीं, तो वह^[1] पुकार उठा कि मुझे ज्ञान (प्रत्यक्ष) हो गया कि अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

أَوْ كَالَّذِي مَوَّعَلَى قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّى يُهْدِيهِ اللَّهُ بَعْدَ مَوْتِهَا قَالَتْ إِنَّ اللَّهَ مَاتَهُ اللَّهُ مَاتَهُ اللَّهُ ثُمَّ بَعَثَهُ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالَ بَلْ لَبِثْتَ مِائَةً عَامٍ فَانظُرْ إِلَى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ كَمْ تَسْتَكِنُ بِهِ فَانظُرْ إِلَى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ آيَةً لِلنَّاسِ وَانظُرْ إِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوهَا الْحَمَاءَ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿۲۵۹﴾

के विद्य व्यवस्थापक होने का प्रमाणिकरण है। और इस के पश्चात् की आयत में उस के मुर्दे को जीवित करने की शक्ति का प्रमाणिकरण है।

- 1 इस व्यक्ति के विषय में भाष्यकारों ने विभेद किया है। परन्तु सम्भवतः वह व्यक्ति (उजैर) थे। और नगरी (बैतुल मक्दिस) थी। जिसे बुख्त नस्सर राजा ने आक्रमण कर के उजाड़ दिया था। (तफ्सीर इब्ने कसीर)

260. तथा (याद करो) जब इब्राहीम ने कहा: हे मेरे पालनहार! मुझे दिखा दे कि तू मुर्द को कैसे जीवित कर देता है? कहा: क्या तुम ईमान नहीं लाये? उस ने कहा: क्यों नहीं? परन्तु ताकि मेरे दिल को संतोष हो जाये। अल्लाह ने कहा: चार पक्षी ले आओ। और उन को अपने से परचा लो। (फिर उन को बध कर के) उन का एक एक अंश (भाग) पर्वत पर रख दो। फिर उन को पुकारो। वह तुम्हारे पास दौड़े चले आयेंगे। और यह जान ले कि अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

261. जो अल्लाह की राह में अपने धनों को दान करते हैं, उस की दशा, उस एक दाने जैसी है जिस ने सात बालियाँ उगाई हों। (उस की) प्रत्येक बाली में सौ दाने हों। और अल्लाह जिसे चाहे और भी अधिक देता है। तथा अल्लाह विशाल^[1] ज्ञानी है।

262. जो अपना धन अल्लाह की राह में दान करते हैं, फिर दान करने के पश्चात् उपकार नहीं जताते, और न (जिसे दिया हो) दुःख देते हैं उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास उन का प्रतिकार (बदला) है, और उन पर कोई डर नहीं होगा, और न ही वह उदासीन^[2] होंगे।

263. भली बात बोलना तथा क्षमा, उस दान से उत्तम है जिस के पश्चात्

وَاذْ قَالِ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَىٰ
قَالَ أَوْ لَمْ تُؤْمِنْ قَالَ بَلَىٰ وَلَكِنَّ لِيَبْطِئَنَّ قَلْبِي
قَالَ فَخَذْنَا مِنْ الظُّلُمَةِ لِمَنَ الْيَكُفِّرُ ثُمَّ
اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ
يَأْتِيَنَّكَ سَعْيًا وَاعْلَمَنَّ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٦٠﴾

مَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَتَتْ سَبْعَ سَاكِبٍ فِي كُلِّ سَبْتَةٍ
مِائَةِ حَبَّةٍ وَاللَّهُ يُضْعِفُ لِمَن يَشَاءُ وَاللَّهُ
وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦١﴾

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ
لَا يُتَّبِعُونَ مَا أَنْفَقُوا مَنًّا وَلَا أَذَىٰ لَهُمْ أَجْرُهُمْ
عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٦٢﴾

قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِنْ صَدَقَةٍ يَتَّبِعُهَا

1 अर्थात् उस का प्रदान विशाल है, और उस के योग्य को जानता है।

2 अर्थात् संसार में दान न करने पर कोई संताप होगा।

दुख दिया जाये। तथा अल्लाह निस्पृह सहनशील है।

264. हे ईमान वालो! उस व्यक्ति के समान उपकार जता कर तथा दुख दे कर, अपने दानों को व्यर्थ न करो जो लोगों को दिखाने के लिये दान करता है, और अल्लाह तथा अन्तिम दिन (परलोक) पर ईमान नहीं रखता। उस का उदाहरण उस चटेल पत्थर जैसा है जिस पर मिट्टी पड़ी हो, और उस पर घोर वर्षा हो जाये, और उस (पत्थर) को चटेल छोड़ दे। वह अपनी कमाई का कुछ भी न पा सके, और अल्लाह काफ़िरो को सीधी डगर नहीं दिखाता।

265. तथा उन की उपमा जो अपना धन अल्लाह की प्रसन्नता की इच्छा में अपने मन की स्थिरता के साथ दान करते हैं, उस बाग़ (उद्यान) जैसी है, जो पृथ्वी तल के किसी ऊँचे भाग पर हो, उस पर घोर वर्षा हुई, तो दुगना फल लाया, और यदि घोर वर्षा नहीं हुई, तो (उस के लिये) फुहार ही बस¹ हो, तथा तुम जो कुछ कर रहे हो उसे अल्लाह देख रहा है।

266. क्या तुम में से कोई चाहेगा कि उस के खजूर तथा अँगूरों के बाग़ हों,

أَذَىٰ وَاللَّهُ عَنِّي حَلِيمٌ ﴿٢٦٤﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَبْطُلُوا صَدَقَتِكُمْ بِالَّذِينَ
وَالَّذِي كَالَّذِي يُبْفِقُ مَالَهُ رِثَاءَ النَّاسِ وَلَا
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ
عَلَيْهِ تَرَابٌ فَأَصَابَهُ وَابِلٌ فَتَرَكَ صَلْدًا لَا يَصِيدُونَ
عَلَىٰ شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الْكَافِرِينَ ﴿٢٦٥﴾

وَمَثَلِ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمُ ابْتِغَاءَ
مَرْضَاتِ اللَّهِ وَتَشْيِئَاتٍ مِنْ أَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ
جَنَّةٍ لِرَبِّئِهَا وَابِلٌ فَاتَتْهَا كَلْحًا
ضَعْفَيْنِ فَإِنْ لَمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ وَاللَّهُ
بِأَعْمَالِكُمْ بَصِيرٌ ﴿٢٦٦﴾

يَوَدُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِّنْ جَنَّةٍ

1 यहाँ से अल्लाह की प्रसन्नता के लिये जिहाद तथा दीन, दुखियों की सहायता के लिये धन दान करने की विभिन्न रूप से प्रेरणा दी जा रही है। भावार्थ यह है कि यदि निःस्वार्थता से थोड़ा दान भी किया जाये, तो शुभ होता है, जैसे वर्षा की फुहारें भी एक बाग़ (उद्यान) को हरा भरा कर देती हैं।

जिन में नहरें बह रही हों, उन में उस के लिये प्रत्येक प्रकार के फल हों, तथा वह बूढ़ा हो गया हो, और उस के निर्बल बच्चे हों, फिर वह बगोल के आघात से जिस में आग हो, झुलस जाये।^[1] इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये आयतों को उजागर करता है, ताकि तुम सोच विचार करो।

وَأَعْنَابٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَةٌ ضُعْفَاءُ فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٦٨﴾

267. हे ईमान वालो! उन स्वच्छ चीजों में से जो तुम ने कमाई है, तथा उन चीजों में से जो हम ने तुम्हारे लिये धरती से उपजाई है, दान करो। तथा उस में से उस चीज़ को दान करने का निश्चय न करो जिसे तुम स्वयं न ले सको, परन्तु यह कि अंदेखी कर जाओ। तथा जान लो कि अल्लाह निःस्पृह प्रशंसित है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَلَا تَيَمَسُوا الْبَخِيلِينَ مِنْهُ تَنْفِقُونَ وَلَسْتُمْ بِأَخِيذِيهِ إِلَّا أَنْ تُغْنُوا فِيهِ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ﴿٦٧﴾

268. शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है, तथा निर्लज्जा की प्रेरणा देता है, तथा अल्लाह तुम को अपनी क्षमा और अधिक देने का वचन देता है, तथा अल्लाह विशाल ज्ञानी है।

الشَّيْطَانُ يُعِدُّكُمْ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَاءِ وَاللَّهُ يُعِدُّكُمْ مَغْفِرَةً كَثِيرَةً وَفَضْلًا وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٦٨﴾

269. वह जिसे चाहे प्रबोध (धर्म की समझ) प्रदान करता है, और जिसे प्रबोध प्रदान कर दिया गया, उसे

يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا وَمَا

1 अर्थात् यही दशा प्रलय के दिन काफिर की होगी। उस के पास फल पाने के लिये कोई कर्म नहीं होगा। और न कर्म का अवसर होगा। तथा जैसे उस के निर्बल बच्चे उस के काम नहीं आ सके, उसी प्रकार उस श का दिखावे का दान भी काम नहीं आयेगा, वह अपनी आवश्यकता के समय अपने कर्मों के फल से वंचित कर दिया जायेगा। जैसे इस व्यक्ति ने अपने बुढ़ापे तथा बच्चों की निर्बलता के समय अपना बाग खो दिया।

बड़ा कल्याण मिल गया, और समझ वाले ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।

270. तथा तुम जो भी दान करो, अथवा मनौती^[1] मानो, अल्लाह उसे जानता है, तथा अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।

271. यदि तुम खुले दान करो, तो वह भी अच्छा है, तथा यदि छुपा कर करो और कंगालों को दो तो वह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा^[2] है। यह तुम से तुम्हारे पापों को दूर कर देगा। तथा तुम जो कुछ कर रहे हो उस से अल्लाह सूचित है।

272. उन को सीधी डगर पर लगा देना आप का दायित्व नहीं, परन्तु अल्लाह जिसे चाहे सीधी डगर पर लगा देता है। तथा तुम जो भी दान देते हो तो अपने लाभ के लिये देते हो, तथा तुम अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये ही देते हो, तथा तुम जो भी दान दोगे, तुम्हें उस का भरपूर प्रतिफल (बदला) दिया जायेगा, और तुम पर अत्याचार^[3] नहीं किया जायेगा।

273. दान उन निर्धनों (कंगालों) के लिये है जो अल्लाह की राह में ऐसे घिर

يَذْكُرُوا الْأُولَى الْأَلْبَابِ ۝

وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ نَفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُمْ مِنْ
شَدْرٍ قَانَ اللَّهُ يَعْلَمُهُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ
مِنْ أَنْصَارٍ ۝

إِنْ تُبَدُّو الصَّدَقَاتِ فَيَعْتَاهِي وَإِنْ
تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ
لَكُمْ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِنْ سَيِّئَاتِكُمْ وَاللَّهُ
بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهُ يَهْدِي
مَنْ يَشَاءُ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ
فَلَا تُنْفِسْكُمْ وَمَا تُنْفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ
وَجْهِ اللَّهِ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُؤْتِ إِلَيْكُمْ
وَأَنْتُمْ لَا تظَلَمُونَ ۝

لِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ أَحْصَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ

1 अर्थात् अल्लाह की विशेष रूप से इबादत (वन्दना) करने का संकल्प ले। (तफ्सीरे कुर्तुबी)

2 आयत का भावार्थ यह है कि दिखावे के दान से रोकने का यह अर्थ नहीं है कि: छुपा कर ही दान दिया जाये, बल्कि उस का अर्थ केवल यह है कि निःस्वार्थ दान जैसे भी दिया जाये, उस का प्रतिफल मिलेगा।

3 अर्थात् उस के प्रतिफल में कोई कमी न की जायेगी।

गये हों कि धरती में दौड़ भाग न कर^[1] सकते हों, उन्हें अज्ञान लोग न माँगने के कारण धनी समझते हैं, वह लोगों के पीछे पड़ कर नहीं माँगते। तुम उन्हें उन के लक्षणों से पहचान लोगे। तथा जो भी धन तुम दान करोगे, निस्सन्देह अल्लाह उसे भली भाँति जानने वाला है।

274. जो लोग अपना धन रात दिन, खुले छुपे दान करते हैं तो उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास, उन का प्रतिफल (बदला) है। और उन को कोई डर नहीं होगा। और न वह उदासीन होंगे।

275. जो लोग व्याज खाते हैं ऐसे उठेंगे जैसे वह उठता है जिसे शैतान ने छू कर उन्मत्त कर दिया हो। उन की यह दशा इस कारण होगी कि उन्हीं ने कहा कि व्यापार भी तो व्याज ही जैसा है, जब कि अल्लाह ने व्यापार को हलाल (वैध), तथा व्याज को हराम (अवैध) कर दिया^[2] है। अब

لَا يَسْتَطِيعُونَ صَرْبًا فِي الْأَرْضِ يَحْسَبُهُمُ
الْجَاهِلُ أَعْيَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ تَعْرِفُهُمْ
بِسِينَتِهِمْ لَا يَسْأَلُونَ النَّاسَ الْحَاقَاتِ وَمَا
تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِاللَّيْلِ
وَالنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ
عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا يَخَوْفُ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ﴿٢٧٤﴾

الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا أَلَّا يَفُومُوا إِلَّا كَمَا
يَقُومُ الَّذِينَ يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَسِّ
ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَا وَأَحَلَّ
اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا فَمَنْ جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ
مِّنْ رَبِّهِ فَانْتَهَى فَلَهُ مَا سَلَفَ وَأَمْرُهُ إِلَى اللَّهِ
وَمَنْ عَادَ فَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ ﴿٢٧٥﴾

- 1 इस से सांकेतिक वह मुहाजिर हैं जो मक्का से मदीना हिज्रत कर गये। जिस के कारण उन का सारा सामान मक्का में छूट गया। और अब उन के पास कुछ भी नहीं बचा। परन्तु वह लोगों के सामने हाथ फैला कर भीख नहीं माँगते।
- 2 इस्लाम मानव में परस्पर प्रेम तथा सहानुभूति उत्पन्न करना चाहता है, इसी कारण उस ने दान करने का निर्देश दिया है कि एक मानव दूसरे की आवश्यकता पूर्ति करे। तथा उस की आवश्यकता को अपनी आवश्यकता समझे। परन्तु व्याज खाने की मांसिकता सर्वथा इस के विपरीत है। व्याज भक्षी किसी की आवश्यकता को देखता है तो उस के भीतर उस की सहायता की भावना उत्पन्न नहीं होती। वह उस की विवशता से अपना स्वार्थ पूरा करता तथा उस की आवश्यकता को अपने धनी होने का साधन बनाता है। और क्रमशः एक निर्दयी हिंसक पशु बन

जिस के पास उस के पालनहार की ओर से निर्देश आ गया, और इस कारण उस से रुक गया, तो जो कुछ पहले लिया वह उसी का हो गया। तथा उस का मुआमला अल्लाह के हवाले है, और जो फिर वही करें तो वही नारकी है, जो उस में सदावासी होंगे।

276. अल्लाह व्याज को मिटाता है, और दानों को बढ़ाता है। और अल्लाह किसी कृतघ्न घोर पापी से प्रेम नहीं करता।
277. वास्तव में जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये, तथा नमाज़ की स्थापना करते रहे, और ज़कात देते रहे तो उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास उन का प्रतिफल है, और उन्हें कोई डर नहीं होगा और न उदासीन होंगे।
278. हे ईमान वालो! अल्लाह से डरो, और जो व्याज शेष रह गया है उसे छोड़ दो, यदि तुम ईमान रखने वाले हो तो।
279. और यदि तुम ने ऐसा नहीं किया, तो अल्लाह तथा उस के रसूल से युद्ध के लिये तैयार हो जाओ। और यदि तुम तौबा (क्षमा याचना) कर लो तो तुम्हारे लिये तुम्हारा मूल धन है।

يَمْحَقُ اللَّهُ الرِّبَا وَيُزِيلُ الصَّدَاقَاتِ وَاللَّهُ
لِكُلِّ ظَالِمٍ لَعْنَةٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَقَامُوا
الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ
رَبِّهِمْ ۖ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا مَا بَقِيَ
مِنَ الرِّبَا إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِّنَ اللَّهِ
وَرَسُولِهِ وَإِن تُبْتِغُوا فَكُمُ رُءُوسُ أَمْوَالِكُمْ
لَا تَطْلُمُونَ وَلَا تَظْلَمُونَ ۝

कर रह जाता है, इस के सिवा व्याज की रीति धन को सीमित करती है, जब कि इस्लाम धन को फैलाना चाहता है, इस के लिये व्याज को मिटाना, तथा दान की भावना का उत्थान चाहता है। यदि दान की भावना का पूर्णतः उत्थान हो जाये तो कोई व्यक्ति दीन तथा निर्धन रह ही नहीं सकता।

न तुम अत्याचार करो^[1], न तुम पर अत्याचार किया जाये।

280. और यदि तुम्हारा ऋणी असुविधा में हो तो उसे सुविधा तक अवसर दो। और अगर क्षमा कर दो (अर्थात दान कर दो) तो यह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा है, यदि तुम समझो तो।
281. तथा उस दिन से डरो जिस में तुम अल्लाह की ओर फेरे जाओगे, फिर प्रत्येक प्राणी को उस की कमाई का भरपूर प्रतिकार दिया जायेगा, तथा किसी पर अत्याचार न होगा।
282. हे ईमान वालो! जब तुम आपस में किसी निश्चित अबाध तक के लिये उधार लेन देन करो, तो उसे लिख लिया करो, तुम्हारे बीच न्याय के साथ कोई लेखक लिखे, जिसे अल्लाह ने लिखने की योग्यता दी है। वह लिखने से इन्कार न करो। तथा वह लिखवाये जिस पर उधार है। और अपने पालनहार अल्लाह से डरो और उस में से कुछ कम न करो। यदि जिस पर उधार है वह निर्बाध अथवा निर्बल हो, अथवा लिखवा न सकता हो तो उस का संरक्षक न्याय के साथ लिखवाये। तथा अपने में से दो पुरुषों को साक्षी (गवाह) बना लो। यदि दो पुरुष न हों तो एक पुरुष तथा दो स्त्रियों को उन साक्षियों में से जिन को साक्षी बनाना पसन्द करो। ताकि दोनों

وَإِنْ كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ ۚ وَأَنْتُمْ قَوَّاهٍ ۗ لَكُمْ أَنْ تَكْتُمُوا عَمَلَكُمْ ۖ

وَأَنْتُمْ أَيُّومًا تَرْجِعُونَ ۚ فِيهِ إِلَى اللَّهِ تَوَكَّلُوا ۚ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۗ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَكَاتَبْتُمْ بَيْنَكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوا وَلْيَكْتُب بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ وَلَا يَأْب كَاتِبٌ أَنْ يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللَّهُ فَلْيَكْتُبْ وَلْيُمْلِلِ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَمِمْهُ اللَّهُ رَبُّهُ وَلَا يَبْسُ مِنْهُ شَيْئًا فَإِنْ كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْطِيعُ أَنْ يُبَيِّنَ فُلْيُمْلِلْ وَلْيُتِمَّ بِالْعَدْلِ ۚ وَأَسْتَشْهِدُ الشَّاهِدَيْنِ مِنْ رِجَالِكُمْ فَإِنْ لَمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَامْرَأَتَانِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشَّاهِدَاتِ ۚ وَلَا تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا فَتُذَكِّرَ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَىٰ وَلَا يَأْبُ الشَّاهِدُ إِذَا أَمَّا ذُعُوهَا وَلَا سَهْمُوهَا أَنْ تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَىٰ أَجَلٍ ۚ ذَلِكُمْ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنَىٰ أَلَّا تَرْتَابُوا ۚ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوهَا ۚ وَأَشْهِدُوا إِذَا تَبَايَعْتُمْ ۚ وَلَا

1 अर्थात मूल धन से अधिक लो।

(स्त्रियों) में से एक भूल जाये तो दूसरी याद दिला दे। तथा जब साक्षी बुलाये जायें तो इन्कार न करें। तथा विषय छोटा हो या बड़ा उस की अवधि सहित लिखवाने में आलस्य न करो, यह अल्लाह के समीप अधिक न्याय है। तथा साक्ष्य के लिये अधिक सहायका और इस से अधिक समीप है कि संदेह न करो। परन्तु यदि तुम व्यापारिक लेन देन हाथों हाथ (नगद करते हो) तो तुम पर कोई दोष नहीं कि उसे न लिखो। तथा जब आपस में लेन देन करो तो साक्षी बना लो। और लेखक तथा साक्षी को हानि न पहुँचाई जाये। और यदि ऐसा करोगे तो तुम्हारी अवैज्ञा ही होगी, तथा अल्लाह से डरो। और अल्लाह तुम्हें सिखा रहा है। और निःसन्देह अल्लाह सब कुछ जानता है।

283. और यदि तुम यात्रा में रहो, तथा लिखने के लिये किसी को न पाओ तो धरोहर रख दो। और यदि तुम में परस्पर एक दूसरे पर भरोसा हो (तो धरोहर की भी आवश्यकता नहीं) जिस पर अमानत (उधार) है, वह उसे चुका दे। तथा अल्लाह (अपने पालनहार) से डरे, और साक्ष्य को न छुपाओ, और जो उसे छुपायेगा तो उस का दिल पापी है, तथा तुम जो करते हो अल्लाह सब जानता है।

284. आकाशों तथा धरती में जो कुछ है सब अल्लाह का है। और जो तुम्हारे मन में है उसे बोलो अथवा मन

يُضَارُ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ وَإِنْ تَفَعَّلُوا فَإِنَّهُ
مُسْتَوْقٌ بِكُمْ وَأَتَقُوا اللَّهَ وَيَعْلَمُ اللَّهُ
وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٨٣﴾

وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَى سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا فَرِهْنَ
مَقْبُوضَةً فَإِنْ أَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي
أُؤْتِنَ أَمَانَتَهُ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا تَكْتُمُوا
الشَّهَادَةَ وَمَنْ يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ أِثْمٌ قَبْلَهُ وَاللَّهُ
بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨٤﴾

بِاللَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَإِنْ سُبِدُوْا
فِيْ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تَخَفُوْا يُحَاسِبْكُمْ بِهٖ ۗ اَللّٰهُ

ही में रखो अल्लाह तुम से उस का हिसाब लेगा। फिर जिसे चाहे क्षमा कर देगा। और जिसे चाहे दण्ड देगा। और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

285. रसूल उस चीज़ पर ईमान लाया जो उस के लिये अल्लाह की ओर से उतारी गई। तथा सब ईमान वाले उस पर ईमान लाये। वह सब अल्लाह तथा उस के फ़रिश्तों और उस की सब पुस्तकों एवं रसूलों पर ईमान लाये। (वह कहते हैं:) हम उस के रसूलों में से किसी के बीच अन्तर नहीं करते। हम ने सुना, और हम आज्ञाकारी हो गये। हे हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे, और हमें तेरे ही पास^[1] आना है।

286. अल्लाह किसी प्राणी पर उस की सकत से अधिक (दायित्व का) भार नहीं रखता। जो सदाचार करेगा उस का लाभ उसी को मिलेगा, और जो दुराचार करेगा उस की हानि भी उसी को होगी। हे हमारे पालनहार! यदि हम भूल चूक जायें तो हमें न पकड़ा हे हमारे पालनहार! हमारे ऊपर इतना बोझ न डाल जितना हम से पहले के लोगों पर डाला गया। हे हमारे पालनहार! हमारे पापों की अनदेखी कर दे, और हमें क्षमा कर दे, तथा हम पर दया कर, तू ही हमारा स्वामी है, तथा काफ़िरों के विरुद्ध हमारी सहायता कर।

فَيَغْفِرْ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبْ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٩٠﴾

أَمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ
وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ
وَرُسُلِهِ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ وَقَالُوا
سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ
الْمَصِيرُ ﴿٩١﴾

لَا يَكْتَلِفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ
وَعَلَيْهَا مَا كَسَبَتْ رَبًّا لَا تُؤْخَذُ بِكَارٍ
تُسَيِّئًا أَوْ أخطَاءًا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إصْرًا
كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا
تَحْمِلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ عَنَّا
وَاعْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا إِنَّكَ أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا
عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٩١﴾

1 इस आयत में सत्वधर्म इस्लाम की आस्था तथा कर्म का सारांश बताया गया है।

सूरह आले इमरान - 3



सूरह आले इमरान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 200 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 33 में आले इमरान (इमरान की संतान) का वर्णन हुआ है जो ईसा (अलैहिस्सलाम) की माँ मर्यम (अलैहिस्सलाम) के पिता का नाम है। इस लिये इस का नाम ((आले इमरान)) रखा गया है।
- इस की आरंभिक आयत 9 तक तौहीद (अद्वैतवाद) को प्रस्तुत करते हुये यह बताया गया है कि कुर्आन अल्लाह की वाणी है इस लिये सभी धार्मिक विवाद में यही निर्णयकारी है।
- आयत 10 से 32 तक अहले किताब तथा दूसरों को चेतावनी दी गई है कि यदि उन्होंने ने कुर्आन के मार्गदर्शन को जिस का नाम इस्लाम है नहीं माना तो यह अल्लाह से कुफ़्र होगा जिस का दण्ड सदैव के लिये नरक होगा। और उन्होंने ने धर्म का जो वस्त्र धारण कर रखा है प्रलय के दिन उस की वास्तविकता खुल जायेगी और वह अपमानित हो कर रह जायेंगे।
- आयत 33 से 63 तक में मर्यम (अलैहिस्सलाम) तथा ईसा (अलैहिस्सलाम) से संबन्धित तथ्यों को उजागर किया गया जो उन निर्मूल विचारों का खण्डन करते हैं जिन्हें ईसाईयों ने धर्म में मिला लिया है और इस संदर्भ में ज़करिय्या (अलैहिस्सलाम) तथा यहया (अलैहिस्सलाम) का भी वर्णन हुआ है।
- आयत 64 से 101 तक अहले किताब ईसाईयों के कुपथ और उन के नैतिक तथा धार्मिक पतन का वर्णन करते हुये मुसलमानों को उन से बचने के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 102 से 120 तक मुसलमानों को इस्लाम पर स्थित रहने तथा कुर्आन पाक को दृढ़ता से थामे रहने और अपने भीतर एक ऐसा गिरोह बनाने के निर्देश दिये गये हैं जो धार्मिक सुधार तथा सत्य का प्रचार करे और इसी के साथ अहले किताब के उपद्रव से सावधान रहने पर बल दिया गया है।
- आयत 121 से 189 तक उहुद के युद्ध की स्थितियों की समीक्षा की गई है। तथा उन कमज़ोरियों की ओर संकेत किया गया है जो उस समय उजागर हुईं।
- आयत 190 से अन्त तक इस का वर्णन है कि ईमान कोई अन्ध विश्वास

नहीं, यह समझ बूझ तथा स्वभाव की आवाज़ है। और जब मनुष्य इसे दिल से स्वीकार कर लेता है तो उस का संबन्ध अल्लाह से हो जाता और उस की यह प्रार्थना होती है कि उस का अन्त शुभ हो। उस समय उस का पालनहार उसे शुभपरिणाम की शुभसूचना सुनाता है कि उस ने सत्धर्म का पालन करने में जो योगदान दिये हैं वह उसे उन का भरपूर सुफल प्रदान करेगा। फिर अन्त में सत्य की राह में संघर्ष करने और सत्य तथा असत्य के संघर्ष में स्थित रहने के निर्देश दिये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़, लाम, मीमा।
2. अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित नित्य स्थायी है।
3. उसी ने आप पर सत्य के साथ पुस्तक (कुर्आन) उतारी है, जो इस से पहले की पुस्तकों के लिये प्रमाणकारी है, और उसी ने तौरात तथा इंजील उतारी है।
4. इस से पूर्व लोगों के मार्गदर्शन के लिये, और फुर्कान उतारा है^[1], तथा जिन्होंने अल्लाह की आयतों को अस्वीकार किया, उन्हीं के लिये कड़ी यातना है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली, बदला लेने वाला है।
5. निस्संदेह अल्लाह से आकाशों तथा धरती की कोई चीज़ छुपी नहीं है।

الْقُرْآنِ

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۝

نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنزَلَ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ۝

مَنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَأَنزَلَ الْفُرْقَانَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۝ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ۝

إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۝

1 अर्थात् तौरात और इंजील अपने समय में लोगों के लिये मार्गदर्शन थीं। परन्तु फुर्कान (कुर्आन) उतरने के पश्चात् अब वह मार्गदर्शन केवल कुर्आन पाक में है।

6. वही तुम्हारा रूप आकार गर्भाषियों में जैसे चाहता है, बनाता है, कोई पूज्य नहीं, परन्तु वही प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।
7. उसी ने आप पर^[1] यह पुस्तक (कुर्आन) उतारी है जिस में कुछ आयतें मुहकम^[2] (सुदृढ़) हैं जो पुस्तक का मूल आधार हैं, तथा कुछ दूसरी मुतशाबिह^[3] (संदिग्ध) हैं। तो जिन के दिलों में कुटिलता है वह उपद्रव की खोज तथा मनमानी अर्थ करने के लिये संदिग्ध के पीछे पड़ जाते हैं। जब कि उन का वास्तविक अर्थ अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। तथा जो ज्ञान में पक्के हैं वह कहते हैं कि सब हमारे पालनहार के पास से है, और बुद्धिमान लोग ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।

8. (तथा कहते हैं): हे हमारे पालनहार!

هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ
مُحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ فَأَمَّا
الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ رِيبٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ
مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ وَمَا
يَعْلَمُونَ تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللَّهُ وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ
يَقُولُونَ امْتَابِهِ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا وَمَا يَذَّكَّرُ
إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ۝

رَبَّنَا اكْشِرْ عَلَيْنَا قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने मानव का रूप आकार बनाने और उसकी आर्थिक आवश्यकता की व्यवस्था करने के समान, उस की आत्मिक आवश्यकता के लिये कुर्आन उतारा है, जो अल्लाह की प्रकाशना तथा मार्गदर्शन और फुर्कान है। जिस के द्वारा सत्योसत्य में विवेक (अन्तर) कर के सत्य को स्वीकार करे।
- 2 मुहकम (सुदृढ़) से अभिप्राय वह आयतें हैं जिन के अर्थ स्थिर, खुले हुये हैं। जैसे एकेध्वरवाद, रिसालत तथा आदेशों और निषेधों एवं हलाल (वैध) और हराम (अवैध) से सम्बन्धित आयतें, यही पुस्तक का मूल आधार हैं।
- 3 मुतशाबिह (संदिग्ध) से अभिप्राय वह आयतें हैं जिन में उन तथ्यों की ओर संकेत किया गया है जो हमारी ज्ञानेन्द्रियों में नहीं आ सकते, जैसे मौत के पश्चात् जीवन, तथा परलोक की बातें, इन आयतों के विषय में अल्लाह ने हमें जो जानकारी दी है हम उन पर विश्वास करते हैं, क्यों कि इनका विस्तार विवरण हमारी बुद्धि से बाहर है, परन्तु जिन के श दिलों में खोट है वह इन की वास्तविकता जानने के पीछे पड़ जाते हैं जो उन की शक्ति से बाहर है।

- हमारे दिलों को हमें मार्गदर्शन देने के पश्चात् कुटिल न कर, तथा हमें अपनी दया प्रदान कर। वास्तव में तू बहुत बड़ा दाता है।
9. हे हमारे पालनहार! तू उस दिन सब को एकत्र करने वाला है जिस में कोई संदेह नहीं, निस्संदेह अल्लाह अपने निर्धारित समय का विरुद्ध नहीं करता।
10. निश्चय जो काफिर हो गये उन के धन तथा उन की संतान अल्लाह (की यातना) से (बचाने में) उन के कुछ काम नहीं आयेगी, तथा वही अग्नि के ईंधन बनेंगे।
11. जैसे फिरौनियों तथा उन के पहले के लोगों की दशा हुई, उन्हीं ने हमारी निशानियों को मिथ्या कहा, तो अल्लाह ने उन के पापों के कारण उन को धर लिया। तथा अल्लाह कड़ा दण्ड देने वाला है।
12. हे नबी! काफिरों से कह दो कि तुम शीघ्र ही परास्त कर दिये जाओगे, तथा नरक की ओर एकत्रित किये जाओगे, और वह बहुत बुरा ठिकाना^[1] है।
13. वास्तव में तुम्हारे लिये उन दो दलों में जो (बद्र में) सम्मुख हो गये, एक निशानी थी। एक अल्लाह की राह में युद्ध कर रहा था, तथा दूसरा काफिर था, वह अपनी आँखों से देख रहे थे कि यह (मुसलमान) तो दुगने लग

كُنَّا لَكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَكِيلُ ۝

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْوَعْدَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ نُغْنِي عَنْهُمْ آمْوَالَهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ سَيِّئًا وَأُولَئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ ۝

كَذَّابٌ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَآخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا سَتُغْلَبُونَ وَتُحْمَرُونَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْيَهَادُ ۝

فَدَاكَ لَكُمْ آيَةٌ فِي فِتْنَتَيْنِ التَّمَّازِئَةُ تَمَّازِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالْأُخْرَىٰ كَافِرَةٌ تَرَوْهُمْ مُتَمَلِّكُهُمْ رَأَىٰ الْعَيْنُ وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ بَصَرَهُ مَنْ يَشَأْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۝

1 इस में काफिरों की मुसलमानों के हाथों पराजय की भविष्यवाणी है।

रहे हैं। तथा अल्लाह अपनी सहायता द्वारा जिसे चाहे समर्थन देता है। निःसंदेह इस में समझ बूझ वालों के लिये बड़ी शिक्षा^[1] है।

14. लोगों के लिये उन के मन को मोहने वाली चीजें, जैसे स्त्रियाँ, संतान, सोने चाँदी के ढेर, निशान लगे घोड़े, पशुओं तथा खेती, शोभनीय बना दी गई हैं। यह सब संसारिक जीवन के उपभोग्य हैं। और उत्तम आवास अल्लाह के पास है।

15. (हे नबी!) कह दो: क्या मैं तुम्हें इस से उत्तम चीज़ बता दूँ? उन के लिये जो डरें। उन के पालनहार के पास ऐसे स्वर्ग हैं। जिन में नहरें बह रही हैं। वह उन में सदावासी होंगे। और निर्मल पत्नियाँ होंगी, तथा अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होगी। और अल्लाह अपने भक्तों को देख रहा है।

16. जो (यह) प्रार्थना करते हैं कि हमारे पालनहार! हम ईमान लाये, अतः हमारे पापों को क्षमा कर दे, और हमें नरक की यातना से बचा।

17. जो सहनशील हैं, सत्यवादी हैं, आज्ञाकारी हैं, दानशील तथा भोरों में अल्लाह से क्षमा याचना करने वाले हैं।

18. अल्लाह साक्षी है जो न्याय के साथ कायम है, कि उस के सिवा कोई

رُبِّينَ لِلنَّاسِ حُبَّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ
وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُتَنَطَّرَةِ مِنَ الذَّهَبِ
وَالْفِضَّةِ وَالنَّخِيلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ
ذَلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ
الْمَبَآئِ ۝

قُلْ أَوْبَيْتُكُمْ مَعَكُمْ مِمَّنْ ذُكِّرُوا لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِنْدَ
رَبِّهِمْ حَبِطَتْ أَجْرُي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
وَأَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ
بَصِيرٌ ۝ بِالْعِبَادِ ۝

الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا آتِنَا مِنَّا فَاغْفِرْ لَنَا
ذُنُوبَنَا وَتَنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

الضَّالِّينَ وَالضَّالِّينَ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقِينَ
وَالْمُتَّقِينَ وَالْمُسْتَعْفِرِينَ بِالْأَسْحَارِ ۝

شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ وَالْوَلِيُّ

1 अर्थात् इस बात की कि विजय अल्लाह के समर्थन से प्राप्त होती है, सेना की संख्या से नहीं।

पूज्य नहीं है, इसी प्रकार फरिश्ते और ज्ञानी लोग भी (साक्षी हैं) कि उस के सिवा कोई पूज्य नहीं। वह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

19. निस्संदेह (वास्तविक) धर्म अल्लाह के पास इस्लाम ही है, और अहले किताब ने जो विभेद किया तो अपने पास ज्ञान आने के पश्चात् आपस में द्वेष के कारण किया। तथा जो अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़्र (अस्वीकार) करेगा, तो निश्चय अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।
20. फिर यदि वह आप से विवाद करें तो कह दें कि मैं स्वयं तथा जिस ने मेरा अनुसरण किया अल्लाह के आज्ञाकारी हो गये। तथा अहले किताब, और उम्मियों (अर्थात् जिन के पास किताब नहीं आई) से कहो कि क्या तुम भी आज्ञाकारी हो गये? यदि वह आज्ञाकारी हो गये तो मार्गदर्शन पा गये। और यदि विमुख हो गये तो आप का दायित्व (संदेश) पहुँचा^[1] देना है। तथा अल्लाह भक्तों को देख रहा है।
21. जो लोग अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़्र करते हों, तथा नबियों को अवैध बध करते हों, तथा उन लोगों का बध करते हों जो न्याय का आदेश देते हैं तो उन्हें दुःखदायी यातना^[2] की शुभ सूचना सुना दो।

الْعُلَمَاءُ قَائِمًا يَا لِقِطْطِ لَآئِلَةَ الْاَهُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ۝

اِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ وَمَا اخْتَلَفَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوْا الْكِتٰبَ الْاٰمِنَ بَعْدَ مَا جَآءَهُمُ
الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ وَمَنْ يَكْفُرْ يٰۤاَيُّهَا اللّٰهُ فَاِنَّ
اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝

فَاِنْ حَآجِبُوْكَ فَقُلْ اَسَلَمْتُ وَجْهِيْ لِلّٰهِ وَمَنْ
اتَّبَعَنِيْ فَقُلْ لِلَّذِيْنَ اُوْتُوْا الْكِتٰبَ
وَالْاٰمِنِيْنَ اَسَلَمْتُ فَاِنْ اَسَلَمُوْا فَقَدْ
اهْتَسَبُوْا وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ مِنَ اللّٰهِ
بِصٰدِقٍ يٰۤاَلْعٰبَادِ ۝

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ يٰۤاَيُّهَا اللّٰهُ وَيَقْتُلُوْنَ
النَّبِيْنَ يَغْرِحُوْنَ وَيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ
يَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُمْ
بِعَذٰبٍ اَلِيْمٍ ۝

1 अर्थात् उन से वाद विवाद करना व्यर्थ है।

2 इस में यहूद की आस्थिक तथा कर्मिक कुपथा की ओर संकेत है।

22. यही हैं जिन के कर्म संसार तथा परलोक में अकारथ गये, और उन का कोई सहायक नहीं होगा।
23. हे नबी! क्या आप ने उन की^[1] दशा नहीं देखी जिन को पुस्तक का कुछ भाग दिया गया? वह अल्लाह की पुस्तक की ओर बुलाये जा रहे हैं, ताकि उन के बीच निर्णय^[2] करे तो उन का एक गिरोह मुँह फेर रहा है। और वह हैं ही मुँह फेरने वाले।
24. उन की यह दशा इस लिये है कि उन्होंने ने कहा कि नरक की अग्नि हमें गिनती के कुछ दिन ही छूरेगी, तथा उन को अपने धर्म में उन की मिथ्या बनाई हुई बातों ने धोखे में डाल रखा है।
25. तो उन की क्या दशा होगी, जब हम उन को उस दिन एकत्र करेंगे, जिस (के आने) में कोई संदेह नहीं, तथा प्रत्येक प्राणी को उस के किये का भरपूर प्रतिफल दिया जायेगा, और किसी के साथ कोई अत्याचार नहीं किया जायेगा।?
26. हे (नबी)! कहो: हे अल्लाह! राज्य के^[3] अधिपति (स्वामी)! तू जिसे चाहे राज्य

أُولَئِكَ الَّذِينَ حَيَّطْتَ أَعْمَالَهُمْ فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ مُصَوِّرِينَ ۝

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِنَ الْكِتَابِ
يُدْعَوْنَ إِلَى كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ
فِرْقَيْنَ مِنْهُمْ وَمَهُمْ مُّعْرِضُونَ ۝

ذَلِكَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝ تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا
مَعْدُودَةً وَرَبُّهُمْ فِي رَيْبِهِمْ مَا كَانُوا يَفْقَهُونَ ۝

فَكَيْفَ إِذَا جُمِعْتَهُمْ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ وَوُعِدَتْ
كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝

قُلِ اللَّهُمَّ لَكَ الْمُلْكُ نَوْمًا الْمُلْكُ مَنْ تَشَاءُ

1 इस से अभिप्राय यहूदी विद्वान हैं।

2 अर्थात् विभेद का निर्णय कर दे। इस आयत में अल्लाह की पुस्तक से अभिप्राय: तौरात और इंजील हैं। और अर्थ यह है कि जब उन्हें उन की पुस्तकों की ओर बुलाया जाता है कि अपनी पुस्तकों ही को निर्णायक मान लो, तथा बताओ कि उन में अंतिम नबी पर ईमान लाने का आदेश दिया गया है या नहीं? तो वह कतरा जाते हैं, जैसे कि उन्हें कोई ज्ञान ही न हो।

3 अल्लाह की अपार शक्ति का वर्णन।

दे, और जिस से चाहे राज्य छीन ले, तथा जिसे चाहे सम्मान दे, और जिसे चाहे अपमान दे। तेरे ही हाथ में भलाई है। निःसंदेह तू जो चाहे कर सकता है।

27. तू रात को दिन में प्रविष्ट कर देता है, तथा दिन को रात में प्रविष्ट कर^[1] देता है। और जीव को निर्जीव से निकालता है। तथा निर्जीव को जीव से निकालता है, और जिसे चाहे अगणित आजीविका प्रदान करता है।

28. मुमिनों को चाहिये कि वह ईमान वालों के विरुद्ध काफिरों को अपना सहायक मित्र न बनायें। और जो ऐसा करेगा उस का अल्लाह से कोई संबंध नहीं। परन्तु उन से बचने के लिये^[2] और अल्लाह तुम्हें स्वयं अपने से डरा रहा है। और अल्लाह ही की ओर जाना है।

29. हे नबी! कह दो कि जो तुम्हारे मन में है उसे मन ही में रखो या व्यक्त करो अल्लाह उसे जानता है। तथा जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह सब को जानता है। और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

30. जिस दिन प्रत्येक प्राणी ने जो सुकर्म किया है, उसे उपस्थित पायेगा, तथा जिस ने कुकर्म किया है वह कामना करेगा कि उस के तथा उस के कुकर्माँ के बीच बड़ी दूरी होती।

وَتَنْزِيلِ الْمَلَكِ وَمَنْ نَشَاءُ وَنُعَظُّ مَنْ نَشَاءُ وَنُنذِرُ
مَنْ نَشَاءُ لِيُبَيِّنَ لَكَ الْخَبْرَ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٠﴾

تُولِيهِ الْيَلْبُوتَ فِي الْبَهَارِ وَتُولِيهِ الْبَهَارَ فِي الْيَلْبُوتِ
وَخُجْرَةَ الْحَيِّ مِنَ الْمَيِّتِ وَخُجْرَةَ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ
وَيَرْزُقُ مَنْ نَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣١﴾

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ
دُونِ الْمُؤْمِنِينَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَلَيْسَ
مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ إِلَّا أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُ تُقَاتُوا
وَيُحَدِّثْكُمْ اللَّهُ نَفْسَهُ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿٣٢﴾

قُلْ إِنْ تَحْفَظُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ يُبْدُوهُ
يَعْلَمُهُ اللَّهُ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٣﴾

يَوْمَ يَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُحْضَرًا وَمَا
عَمِلَتْ مِنْ سُوءٍ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ أَمَدًا
بَعِيدًا أَوْ يَحْذَرُكُمْ اللَّهُ نَفْسَهُ وَاللَّهُ رَءُوفٌ
بِالْعِبَادِ ﴿٣٤﴾

1 इस में रात्रि-दिवस के परिवर्तन की ओर संकेत है।

2 अर्थात् संधि मित्र बना सकते हो।

तथा अल्लाह तुम्हें स्वयं से डराता^[1] है। और अल्लाह अपने भक्तों के लिये अति करुणामय है।

31. हे नबी! कह दो: यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तुम से प्रेम^[2] करेगा। तथा तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
32. हे नबी! कह दो: अल्लाह और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करो। फिर भी यदि वह विमुख हों तो निस्संदेह अल्लाह काफ़िरों से प्रेम नहीं करता।
33. वस्तुतः अल्लाह ने आदम, नूह, इब्राहीम की संतान तथा इमरान की संतान को संसार वासियों में चुन लिया था।
34. यह एक दूसरे की संतान है, और अल्लाह सब सुनता और जानता है।
35. जब इमरान की पत्नी^[3] ने कहा: हे मेरे पालनहार! जो मेरे गर्भ में है, मैं ने तेरे^[4] लिये उसे मुक्त करने की मनौती मान ली है। तू इसे मुझ से स्वीकार कर ले। वास्तव में तू ही सब कुछ सुनता और जानता है।

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٣١﴾

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَإِنْ كُنتُمْ كَافِرِينَ ۗ لَيَحِبُّ الْكَافِرِينَ ﴿٣٢﴾

إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَابْنَ إِبْرَاهِيمَ ۗ وَالْعِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٣٣﴾

ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٤﴾

إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَدَارِكُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي عَجْرًا مَتَّبِعْ لِي مَا إِنِّي خَشِيتُ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٥﴾

1 अर्थात् अपनी अवैज्ञा से ।

2 इस में यह संकेत है कि जो अल्लाह से प्रेम का दावा करता हो, और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का अनुसरण न करता हो तो वह अल्लाह का प्रेमी नहीं हो सकता।

3 अर्थात् मर्यम की माँ।

4 अर्थात् बैतुल मक़दिस की सेवा के लिये।

36. फिर जब उस ने बालिका जनी तो (संताप से) कहा: मेरे पालनहार! मुझे तो बालिका हो गई, हालाँकि जो उस ने जना उस का अल्लाह को भली भाँति ज्ञान था-और नर, नारी के समान नहीं होता-, और मैं ने उस का नाम मर्यम रखा है। और मैं उसे तथा उस की संतान को धिक्कारे हुये शैतान से तेरी शरण में देती हूँ।^[1]

فَلَمَّا وَصَعَهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَصَعْتُهَا إِنْتِ وَاللَّهُ
أَعْلَمُ بِمَا وَصَعْتَ ۖ وَلَيْسَ الذَّكَورَ إِلَّا نَتْنِي وَإِنِّي
سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ
الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ۝

37. तो तेरे पालनहार ने उसे भली भाँति स्वीकार कर लिया। तथा उस का अच्छा प्रतिपालन किया। और ज़करिय्या को उस का संरक्षक बनाया। ज़करिय्या जब भी उस के मेहराब (उपासना कोष्ठ) में जाता तो उस के पास कुछ खाद्य पदार्थ पाता वह कहता कि हे मर्यम! यह कहाँ से (आया) है? वह कहती: यह अल्लाह के पास से (आया) है। वास्तव में अल्लाह जिसे चाहता है अगणित जीविका प्रदान करता है।

فَمَقَّهَا رَبُّهَا يَقْبُولُ حَسَنٍ وَأَنْجَبَهَا نَبَاتًا حَسَنًا
وَوَكَّلَهَا ذَكَرِيَّا كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ
وَجَدَ عِنْدَ هَارِزٍ قَائِمًا لِيُرِيحَ نَفْسَهُ لَكَ هَذَا
قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

38. तब ज़करिय्या ने अपने पालनहार से प्रार्थना की हे मेरे पालनहार! मुझे अपनी ओर से सदाचारी संतान प्रदान कर। निस्संदेह तू प्रार्थना सुनने वाला है।

هَذَا لَكَ دَعَا ذَكَرِيَّا رَبَّهُ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِنْ
لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ۝

39. तो फ़रिश्तों ने उसे पुकारा- जब वह मेहराब में खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था- कि: अल्लाह तुझे "यह्या" की शुभ:

فَنَادَتْهُ الْمَلَكُةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ
أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيحْيَى مُصَدِّقًا لِكَلِمَةٍ مِنَ اللَّهِ

1 हदीस में है कि जब कोई शिशु जन्म लेता है, तो शैतान उसे स्पर्श करता है जिस के कारण वह चीख कर रोता है, परन्तु मर्यम और उस के पुत्र को स्पर्श नहीं किया है। (सही बुखारी भ 4548)

सूचना दे रहा है, जो अल्लाह के शब्द (इंसा) का पुष्टि करने वाला, प्रमुख तथा संयमी और सदाचारियों में से एक नबी होगा।

40. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मेरे कोई पुत्र कहाँ से होगा, जब कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मेरी पत्नी बाँझ^[1] है? उस ने कहा: अल्लाह इसी प्रकार जो चाहता है कर देता है।
41. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मेरे लिये कोई लक्षण बना दे। उस ने कहा: तेरा लक्षण यह होगा कि तीन दिन तक लोगों से बात नहीं कर सकेगा। परन्तु संकेत से। तथा अपने पालनहार का बहुत स्मरण करता रहा और संध्या, प्रातः उस की पवित्रता का वर्णन कर।
42. और (याद करो) जब फ़रिश्तों ने मर्यम से कहा: हे मर्यम! तुझे अल्लाह ने चुन लिया, तथा पवित्रता प्रदान की, और संसार की स्त्रियों पर तुझे चुन लिया।
43. हे मर्यम! अपने पालनहार की अज्ञाकारी रहो। और सज्दा करो तथा रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करती रहो।
44. यह ग़ैब (परोक्ष) की सूचनायें हैं। जिन्हें हम आप की ओर प्रकाशना कर रहे हैं। और आप उन के पास उपस्थित न थे जब वह अपनी

وَسَيِّدًا أَوْ حَصُورًا وَنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝

قَالَ رَبِّ اُنۡلِ يَكُوْنُ لِيْ غُلَمًا وَّكَذٰلِكَ بَلَّغۡنِي الْاٰیٰتِ
وَاَمۡرًا نَّيَۡٔا قُوۡرٍ ۙ قَالَ كَذٰلِكَ اَللّٰهُ يَفۡعَلُ
مَا يَشَآءُ ۝

قَالَ رَبِّ اجۡعَلۡ لِيْ اٰیَةً ۙ قَالَ اِنَّكَ اَلَا تَكۡلِمُ
النَّاسَ ثَلَاثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا مَرۡمًا وَاذۡكُرۡ رَبَّكَ كَثِيۡرًا
وَسَبِّحۡ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاِلَّا تَذَكَّرُ ۝

وَاذۡ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرۡيَمُ اِنَّ اللّٰهَ
اصۡطَفٰكِ وَطَهَّرَكِ وَاَصۡطَفٰكِ عَلٰٓى نِسَآءِ
الْعٰلَمِيْنَ ۝

يٰمَرۡيَمُ اقۡنِیۡ لِرَبِّكِ وَاَسۡجُدِي وَاِرۡكَعِيۡ مَعِ
الرّٰكِعِيْنَ ۝

ذٰلِكَ مِّنۡ اٰنۡبَآءِ الْغَیۡبِ نُوۡحِیۡهِ اِلَیۡكَ وَمَا كُنۡتَ
لَدَیۡهِمۡ اذۡ یَقُوۡنُ اَقۡلَامُهُمۡ اَیۡهُمۡ یَكۡفُلُ مَرۡیَمَ
وَمَا كُنۡتَ لَدَیۡهِمۡ اذۡ یَخۡصِمُوۡنَ ۝

1 यह प्रश्न ज़करिय्या ने प्रसन्न हो कर आश्चर्य से किया।

लेखनियों^[1] फेंक रहे थे कि कौन मर्यम का अभिरक्षण करेगा। और न उन के पास उपस्थित थे जब वह झगड़ रहे थे।

45. जब फरिश्तों ने कहा: हे मर्यम! अल्लाह तुझे अपने एक शब्द^[2] की शुभ सूचना दे रहा है। जिस का नाम मसीह ईसा पुत्र मर्यम होगा। वह लोक-परलोक में प्रमुख, तथा (मेरे) समीपवर्तियों में होगा।

46. वह लोगों से गोद में तथा अघेड़ आयु में बातें करेगा, और सदाचारियों में होगा।

47. मर्यम ने (आश्चर्य से) कहा: मेरे पालनहार! मुझे पुत्र कहाँ से होगा, मुझे तो किसी पुरुष ने हाथ भी नहीं लगाया है? उस ने^[3] कहा: इसी प्रकार अल्लाह जो चाहता है उत्पन्न कर देता है। जब वह किसी काम के करने का निर्णय कर लेता है तो उस के लिये कहता है कि: "हो जा" तो वह हो जाता है।

48. और अल्लाह उस को पुस्तक तथा प्रबोध और तौरात तथा इंजील की शिक्षा देगा।

49. और फिर वह बनी इस्राईल का एक रसूल होगा कि मैं तुम्हारे पालनहार

إِذْ قَالَتِ الْمَلِكَةُ لَیْمَةُ اِنَّا اللّٰهُ بِبَرِّكِ كَلِمَةٌ مِّنْهُ
اِنَّهُ الْمَسِيحُ عِیْسَى ابْنُ مَرْیَمَ وَجِیْهَانِ
الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِیْنَ ۝

وَيَكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمُهَيْدِ وَكَهْلًا وَمِنَ الصّٰلِحِیْنَ ۝

قَالَتْ رَبِّ اِنِّیْ یَکُوْنُ لِیْ وِلْدًا وَاَلَمْ یَسْسُرْ لِیْ بِبَرِّ
قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ یَخْلُقُ مَا یَشَآءُ ۚ اِذَا قَضٰی اَمْرًا
فَاِنَّمَا یَقُوْلُ لَهٗ اِنِّیْ فِیْکُوْنُ ۝

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰتَ وَالْاِنْجِیْلَ ۝

وَرَسُوْلًا اِلٰی بَنِيْ اِسْرٰٓءِیْلَ ۙ اِنِّیْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْبَیِّنٰتِ

1 अर्थात् यह निर्णय करने के लिये कि: मर्यम का संरक्षक कौन हो?

2 अर्थात् वह अल्लाह के शब्द "कुन" से पैदा होगा। जिस का अर्थ है "हो जा"।

3 अर्थात् फरिश्ते ने।

की ओर से निशानी लाया हूँ। मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से पक्षी के आकार के समान बनाऊँगा, फिर उस में फूँक दूँगा तो वह अल्लाह की अनुमति से पक्षी बन जायेगा। और अल्लाह की अनुमति से जन्म से अंधे तथा कोढ़ी को स्वस्थ कर दूँगा। और मुर्दे को जीवित कर दूँगा। तथा जो कुछ तुम खाते तथा अपने घरों में संचित करते हो उसे तुम्हें बता दूँगा। निस्संदेह इस में तुम्हारे लिये बड़ी निशानियाँ हैं, यदि तुम ईमान वाले हो।

50. तथा मैं उस की सिद्धि करने वाला हूँ जो मुझ से पहले की है "तौरात"। तुम्हारे लिये कुछ चीजों को हलाल (वैध) करने वाला हूँ, जो तुम पर हराम (अवैध) की गयी हैं। तथा मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की निशानी ले कर आया हूँ। अतः तुम अल्लाह से डरो, और मेरे अज्ञाकारी हो जाओ।

51. वास्तव में अल्लाह मेरा और तुम सब का पालनहार है, अतः उसी की इबादत (वन्दना) करो। यही सीधी डगर है।

52. तथा जब ईसा ने उन से कुफ़्र का संवेदन किया तो कहा: अल्लाह के धर्म की सहायता में कौन मेरा साथ देगा? तो हवारियों (सहचरों) ने कहा: हम अल्लाह के सहायक हैं। हम अल्लाह पर ईमान लाये, तुम इस के साक्षी रहो कि हम मुस्लिम (अज्ञाकारी) हैं।

مَنْ يُرِيدْ أَنْ يَخْلُقْ لَكُمْ مِنَ الطَّيْرِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَانْفَعْ بِهِ فَيَكُونَ طَيْرًا يُادِنُ اللَّهَ وَأُتْرَى الْأَكْمَةَ وَالْأَبْرَصَ وَأُجْحَى السُّوْتَى بِإِذْنِ اللَّهِ وَأُتْرَى أَيْدِيكُمْ بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَدَّخِرُونَ فِي بُيُوتِكُمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّكُمْ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٥٠﴾

وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ وَلَا جِبَلٍ لَّكُمْ بَعْضُ الَّذِي حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجَدْنٰكُمْ بِآيَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا عِبَادَ اللَّهِ ﴿٥١﴾

إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٥٢﴾

فَلَمَّا أَحَسَّ عَيْسَىٰ مِنْهُمْ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ حَسَنَ أَنْصَارُ اللَّهِ أُمَّتًا بِاللَّهِ وَأَشْهَدُ بِأَنَّكَ مُسْلِمُونَ ﴿٥٣﴾

53. हे हमारे पालनहार! जो कुछ तू ने उतारा है, हम उस पर ईमान लाये, तथा तेरे रसूल का अनुसरण किया, अतः हमें भी साक्षियों में अंकित कर ले।
54. तथा उन्होंने ने षड्यंत्र^[1] रचा, और हम ने भी षड्यंत्र रचा। तथा अल्लाह षड्यंत्र रचने वालों में सब से अच्छा है।
55. जब अल्लाह ने कहा: हे ईसा! मैं तुझे पूर्णतः लेने वाला तथा अपनी ओर उठाने वाला हूँ। तथा तुझे काफ़ि़रों से पवित्र (मुक्त) करने वाला हूँ। तथा तेरे अनुयायियों को प्रलय के दिन तक काफ़ि़रों के ऊपर^[2] करने वाला हूँ। फिर तुम्हारा लौटना मेरी ही ओर है। तो मैं तुम्हारे बीच उस विषय में निर्णय कर दूँगा जिस में तुम विभेद कर रहे हो।
56. फिर जो काफ़ि़र हो गये, उन्हें लोक परलोक में कड़ी यातना दूँगा, तथा उन का कोई सहायक न होगा।
57. तथा जो ईमान लाये, और सदाचार किये तो उन्हें उन का भरपूर प्रतिफल दूँगा। तथा अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।
58. हे नबी! यह हमारी आयतें और

رَبَّنَا آمَنَّا بِمَا نَزَّلَتْ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا
مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿٥٣﴾

وَمَكْرُؤًا وَّمَكْرَأَ اللَّهِ وَاللَّهُ خَيْرٌ الْبَكْرِينَ ﴿٥٤﴾

إِذْ قَالَ اللَّهُ لِيَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ إِنِّي مُتَوَقِّئُكَ وَرَافِعُكَ إِلَى
وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَوَاجِعُ الَّذِينَ
اتَّبَعُواكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ
ثُمَّ إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ
تَخْتَلِفُونَ ﴿٥٥﴾

فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَأَعْدِدْ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَأْتَهُمُ مِنَ النَّارِ ﴿٥٦﴾

وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيَرْوِيهِمْ
أَجْرُهُمْ وَاللَّهُ لَرِيبُؤُا لَظَلِيمِينَ ﴿٥٧﴾

ذَلِكَ نُنزِّلُوهَ عَلَيْكَ مِنَ الْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ ﴿٥٨﴾

1 अर्थात ईसा (अलैहिस्सलाम) को हत् करने का तो अल्लाह ने उन्हें विफल कर दिया। (देखिये: सूरह निसा, आयत 157)।

2 अर्थात यहूदियों तथा मुशिरकों के ऊपर।

तत्वज्ञयता की शिक्षा है जो हम तुम्हें सुना रहे हैं।

59. वस्तुतः अल्लाह के पास ईसा की मिसाल ऐसी ही है, ^[1] जैसे आदम की। उसे (अर्थात् आदम को) मिट्टी से उत्पन्न किया, फिर उस से कहा: "हो जा" तो वह हो गया।
60. यह आप के पालनहार की ओर से सत्य^[2] है, अतः आप संदेह करने वालों में न हों।
61. फिर आप के पास ज्ञान आ जाने के पश्चात् कोई आप से ईसा के विषय में विवाद करे, तो कहो कि आओ हम अपने पुत्रों तथा तुम्हारे पुत्रों, और अपनी स्त्रियों तथा तुम्हारी स्त्रियों को बुलाते हैं, और स्वयं को भी, फिर अल्लाह से सविनय प्रार्थना करें, कि अल्लाह की धिक्कार मिथ्यावादियों पर^[3] हो।
62. वास्तव में यही सत्य वर्णन है, तथा अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं। निश्चय अल्लाह ही प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَنْ لَنْ فَيَكُونُ ﴿٥٩﴾

أَحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿٦٠﴾

فَمَنْ حَاجَكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْهَلْ فَفَجَعَلْنَا لَعْنَةَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ ﴿٦١﴾

إِنَّ هَذَا هُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا اللَّهُ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٢﴾

- 1 अर्थात् जैसे प्रथम पुरुष आदम (अलैहिस्सलाम) को बिना माता-पिता के उत्पन्न किया, उसी प्रकार ईसा (अलैहिस्सलाम) को बिना पिता के उत्पन्न कर दिया, अतः वह भी मानव पुरुष है।
- 2 अर्थात् ईसा अलैहिस्सलाम का मानव पुरुष होना। अतः आप उन के विषय में किसी संदेह में न पड़ें।
- 3 अल्लाह से यह प्रार्थना करें कि वह हम में से मिथ्यावादियों को अपनी दया से दूर कर दे।

63. फिर भी यदि वह मुँह^[1] फेरें, तो निस्संदेह अल्लाह उपद्रवियों को भली भाँति जानता है।
64. हे नबी! कहो कि हे अहले किताब! एक ऐसी बात की ओर आ जाओ जो हमारे तथा तुम्हारे बीच समान रूप से मान्य है। कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (वन्दना) न करें, और किसी को उस का साझी न बनायें, तथा हम में से कोई एक दूसरे को अल्लाह के सिवा पालनहार न बनाये। फिर यदि वह विमुख हों तो आप कह दें कि तुम साक्षी रहो कि हम (अल्लाह के)^[2] अज्ञाकारी हैं।
65. हे अहले किताब! तुम इब्राहीम के बारे में विवाद^[3] क्यों करते हो, जब कि तौरात तथा इंजील इब्राहीम के पश्चात् उतारी गई है? क्या तुम समझ नहीं रखते?
66. और फिर तुम्हीं ने उस विषय में विवाद किया जिस का तुम को कुछ ज्ञान^[4] था, तो उस विषय में क्यों विवाद कर रहे हो जिस का तुम्हें

قَالَ تَوَلَّوْا قَانَ اللَّهُ عَلَيْهِ بِالْمُفْسِدِينَ ۝

مَنْ يَأْهَلِ الْكُذِبِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ
بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ
شَيْئًا وَلَا لِكُلٍِّّ بَعْضًا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ
اللَّهِ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ۝

يَأْهَلِ الْكُذِبِ لِمَ تَحْجُونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا
أَنْزَلْنَا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ إِلَّا مِنْ بَعْدِهَا
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

هَذَا أَنْتُمْ هَلْ لَكُمْ حَاجَةٌ مِنْ فِيمَا لَكُمْ
بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ
بِهِ عِلْمٌ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝

- 1 अर्थात् सत्य को जानने की इस विधि को स्वीकार न करें।
- 2 इस आयत में ईसा अलैहिस्सलाम से संबंधित विवाद के निवारण के लिये एक दूसरी विधि बताई गई है।
- 3 अर्थात् यह क्यों कहते हो कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम हमारे धर्म पर थे। तौरात और इंजील तो उन के सहस्रों वर्ष के पश्चात् अवतरित हुई। तो वह इन धर्मों पर कैसे हो सकते हैं।
- 4 अर्थात् अपने धर्म के विषय में।

- कोई ज्ञान^[1] नहीं? तथा अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते।
67. इब्राहीम न यहूदी था, न नसरानी (ईसाई)। परन्तु वह एकेध्वरवादी, मुस्लिम "आज्ञाकारी" था। तथा वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।
68. वास्तव में इब्राहीम से सब से अधिक समीप तो वह लोग हैं जिन्होंने उस का अनुसरण किया, तथा यह नबी^[2], और जो ईमान लाये। और अल्लाह ईमान वालों का संरक्षकभूमित्र है।
69. अहले किताब में से एक गिरोह की कामना है कि तुम्हें कुपथ कर दे। जब कि वह स्वयं को कुपथ कर रहा है, परन्तु वह समझते नहीं हैं।
70. हे अहले किताब! तुम अल्लाह की आयतों^[3] के साथ कुफ्र क्यों कर रहे हो, जब कि: तुम साक्षी^[4] हो? के विषय में।
71. हे अहले किताब! क्यों सत्य को असत्य के साथ मिलाकर संदिग्ध कर देते हो, और सत्य को छुपाते हो, जब कि तुम जानते हो।
72. अहले किताब के एक समुदाय ने कहा: कि दिन के आरंभ में उस पर ईमान ले आओ जो ईमान वालों पर

مَا كَانَ إِبْرَاهِيمَ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلَكِنْ كَانَ حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَكَلْبَيْنِ اتَّبَعُوهُ وَهَذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَدَّتْ طَّائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يُضِلُّوكُمْ عَنْ آلِهَتِكُمْ إِذَآ تَكْفُرُونَ ۝

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأَنْتُمْ شَاهِدُونَ ۝

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَتْلُونَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

وَقَالَتْ طَّائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ الْمُنَادِي أُنزِلْ عَلَی الدِّينِ أَمْرًا وَجْهَ النَّهَارِ وَالْعُرُوءَ وَالْآخِرَةَ

1 अर्थात इब्राहीम अलैहिस्सलाम के धर्म के बारे में।

2 अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के अनुयायी।

3 जो तुम्हारी किताब में अंतिम नबी से संबन्धित हैं।

4 अर्थात उन अयतों के सत्य होने के साक्षी हो।

उतारा गया है, और उस के अन्त (अर्थात: संध्या समय) कुफ़र कर दो, संभवतः वह फिर^[1] जायें।

73. और केवल उसी की मानो जो तुम्हारे (धर्म) का अनुसरण करे। (हे नबी!) कह दो कि मार्गदर्शन तो वही है जो अल्लाह का मार्गदर्शन है। (और यह भी न मानो कि) जो (धर्म) तुम को दिया गया है वैसा किसी और को दिया जायेगा, अथवा वह तुम से तुम्हारे पालनहार के पास विवाद कर सकेंगे। आप कह दें कि प्रदान अल्लाह के हाथ में है, वह जिसे चाहे देता है। और अल्लाह विशाल ज्ञानी है।

74. वह जिसे चाहे अपनी दया के साथ विशेष कर देता है, तथा अल्लाह बड़ा दानशील है।

75. तथा अहले किताब में वह भी है जिस के पास चाँदी-सोने का ढेर धरोहर रख दो तो उसे तुम्हें चुका देगा। तथा उन में वह भी है कि: जिस के पास एक दीनार^[2] भी धरोहर रख दो, तो वह तुम्हें नहीं चुकायेगा, परन्तु जब सदा उस के सिर पर सवार रहो। यह (बात) इस लिये है कि उन्हीं ने कहा कि उम्मियों के बारे में हम पर कोई

لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٣٠﴾

وَلَا تُؤْمِنُوا إِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِينَكُمْ قُلْ إِنَّ الْهُدَىٰ هُدَىٰ اللَّهِ أَنْ يُؤْتَىٰ أَحَدٌ مِّثْلَ مَا أُوتِيْتُمْ أَوْ يُجَازَىٰكُمْ عَنْدَ رَبِّكُمْ قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٣١﴾

يَخْتَصُ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٣٢﴾

وَمِنَ أَهْلِ الْكِتَابِ مَنْ إِنْ تَأْمَنَهُ بِقِنطَارٍ يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَنْ إِنْ تَأْمَنَهُ بِدِينَارٍ لَا يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمَّتْ عَلَيْهِ قَائِمًا ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأُمِّيِّينَ سَبِيلٌ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٣٣﴾

1 अर्थात मुसलमान इस्लाम से फिर जायें।

2 दीनार- सोने के सिक्के को कहा जाता है।

दोष^[1] नहीं। तथा अल्लाह पर जानते हुये झूठ बोलते हैं।

76. क्यों नहीं, जिस ने अपना वचन पूरा किया और (अल्लाह से) डरा तो वास्तव में अल्लाह डरने वालों से प्रेम करता है।

77. निस्संदेह जो अल्लाह के^[2] वचन तथा अपनी शपथों के बदले तनिक मूल्य खरीदते हैं, उन्हीं का अखिरत (परलोक) में कोई भाग नहीं। न प्रलय के दिन अल्लाह उन से बात करेगा, और न उन की ओर देखेगा, और न उन्हें पवित्र करेगा। तथा उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

78. और बैशक उन में से एक गिरोह^[3] ऐसा है जो अपनी जुबानों को किताब पढ़ते समय मरोड़ते हैं ताकि तुम उसे पुस्तक में से समझो जब कि वह पुस्तक में से नहीं है। और कहते हैं कि वह अल्लाह के पास से है जब कि वह अल्लाह के पास से नहीं है। और अल्लाह पर जानते हुये झूठ बोलते हैं।

79. किसी पुरुष जिस के लिये अल्लाह ने पुस्तक, निर्णयशक्ति और नुबुव्वत दी हो उस के लिये योग्य नहीं कि लोगों

بَلَىٰ مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ وَاتَّقَىٰ فَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَفِي خَلَاقٍ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ وَلَا يَكْلَهُمُ اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلْوُنَ أَلْسِنَتَهُم بِالْكِتَابِ لِتَحْسَبُوهُ مِنَ الْكِتَابِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝

مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنَّبُوءَةَ تَلْوًا يَقُولُ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا

1 अर्थात् उन के धन का अपभोग करने पर कोई पाप नहीं। क्यों कि: यहूदियों ने अपने अतिरिक्त सब का धन हलाल समझ रखा था। और दूसरों को वह "उम्मी" कहा करते थे। अर्थात् वह लोग जिन के पास कोई आसमानी किताब नहीं है।

2 अल्लाह के वचन से अभिप्राय वह वचन है, जो उन से धर्म पुस्तकों द्वारा लिया गया है।

3 इस से अभिप्राय यहूदी विद्वान हैं। और पुस्तक से अभिप्राय तौरात है।

से कहे कि अल्लाह को छोड़ कर मेरे दास बन जाओ।^[1] अपितु (वह तो यही कहेगा कि) तुम अल्लाह वाले बन जाओ। इस कारण कि तुम पुस्तक की शिक्षा देते हो। तथा इस कारण कि उस का अध्ययन स्वयं भी करते रहते हो।

80. तथा वह तुम्हें कभी आदेश नहीं देगा कि फ़रिश्तों तथा नबियों को अपना पालनहार^[2] (पूज्य) बना लो, क्या तुम को कुफ़्र करने का आदेश देगा, जब कि तुम अल्लाह के अज्ञाकारी हो?

81. तथा (याद करो) जब अल्लाह ने नबियों से वचन लिया कि जब भी मैं तुम्हें कोई पुस्तक और प्रबोध (तत्त्वदर्शिता) दूँ, फिर तुम्हारे पास कोई रसूल उसे प्रमाणित करते हूये आये, जो तुम्हारे पास है, तो तुम अवश्य उस पर ईमान लाना। और उस का समर्थन करना। (अल्लाह) ने कहा: क्या तुम ने स्वीकार किया, तथा इस पर मेरे वचन का भार उठाया? तो सब ने कहा: हम ने स्वीकार कर लिया। अल्लाह ने कहा तुम साक्षी रहो। और मैं भी तुम्हारे^[3] साथ साक्षियों में हूँ।

لِي مَنْ دُونَ اللَّهِ وَلَكِنْ كُونُوا رَبَّيْنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُونَ الْكِتَابَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُونَ ۝

وَلَا يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلَائِكَةَ وَالنَّبِيِّينَ أَرْبَابًا أَيَأْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ لَمَا آتَيْنَاكُمْ مِنْ كِتَابٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَكَتَبْتُمْ لَهُ قَوْلًا مَأْمُورًا وَالْأَقْرَبُونَ ۝

1 भावार्थ यह है कि जब नबी के लिये योग्य नहीं कि: लोगों से कहे कि मेरी इबादत करो तो किसी अन्य के लिये कैसे योग्य हो सकता है?

2 जैसे अपने पालनहार के आगे झुकते हो, उसी प्रकार उन के आगे भी झुको।

3 भावार्थ यह है कि: जब आगामी नबियों को ईमान लाना आवश्यक है, तो उन के अनुयायियों को भी ईमान लाना आवश्यक होगा। अतः अंतिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लह अलैहि, व सल्लम) पर ईमान लाना सभी के लिये अनिवार्य है।

82. फिर जिस ने इस के^[1] पश्चात् मुँह फेर लिया, तो वही अवैज्ञाकारी है।

83. तो क्या वह अल्लाह के धर्म (इस्लाम) के सिवा (कोई दूसरा धर्म) खोज रहे हैं? जब कि जो आकाशों तथा धरती में है, स्वेच्छा तथा अनिच्छा उसी के आज्ञाकारी^[2] हैं, तथा सब उसी की ओर फेरे^[3] जायेंगे।

84. (हे नबी!) आप कहें कि हम अल्लाह पर तथा जो हम पर उतारा गया, और जो इब्राहीम और इस्माईल तथा इस्हाक़ और याकूब एवं (उन की) संतानों पर उतारा गया, तथा जो मूसा, ईसा, तथा अन्य नबियों को उन के पालनहार की ओर से प्रदान किया गया है (उन पर) ईमान लाये। हम उन (नबियों) में किसी के बीच कोई अंतर नहीं^[4] करते और हम उसी (अल्लाह) के आज्ञाकारी हैं।

85. और जो भी इस्लाम के सिवा (किसी और धर्म) को चाहेगा तो उसे उस से कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा और वह परलोक में क्षतिग्रस्तों में होगा।

فَمَنْ تَوَلَّى بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الْفٰسِقُونَ ﴿٣٠﴾

أَفَعَيِّرُونَ اللَّهَ يَبْعُونَ وَ لَهُ أَسْكُنُ مَنْ فِي
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَآلِيَهُ
يُرْجَعُونَ ﴿٣١﴾

كُلُّ امْتٰنًا لِلّٰهِ وَمَا اُنزِلَ عَلَيْنَا وَمَا اُنزِلَ عَلٰى
اِبْرٰهِيْمَ وَاسْمٰعِيْلَ وَاسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ
وَالْاَسْبٰطِ وَمَا اَوْقَىٰ مُوسٰى وَعِيسٰى وَالتِّيْتُوْنِ مِنْ
رَبِّهِمْ لَا نَفَرًا بَيْنَ اَحَدِهِمْ مِّنْ وَّعٰنٍ لَّهٗ
مُسْلِمُونَ ﴿٣٢﴾

وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ
فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٣٣﴾

1 अर्थात् इस वचन और प्रण के पश्चात्।

2 अर्थात् उसी की आज्ञा तथा व्यवस्था के अधीन हैं। फिर तुम्हें इस स्वभाविक धर्म से इन्कार क्यों है?

3 अर्थात् प्रलय के दिन अपने कर्मों के प्रतिफल के लिये।

4 अर्थात् मूल धर्म अल्लाह की आज्ञाकारिता है, और अल्लाह की पुस्तकों तथा उस के नबियों के बीच अंतर करना, किसी को मानना और किसी को न मानना अल्लाह पर ईमान और उस की आज्ञाकारिता के विपरीत है।

86. अल्लाह ऐसी जाति को कैसे मार्गदर्शन देगा जो अपने ईमान के पश्चात् काफिर हो गये, और साक्षी रहे कि यह रसूल सत्य है, तथा उन के पास खुले तर्क आ गये?? और अल्लाह अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ قَوْمًا كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ
وَشَهِدُوا أَنَّ الرُّسُولَ حَقٌّ وَجَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

87. इन्हीं का प्रतिकार (बदला) यह है कि उन पर अल्लाह तथा फरिश्तों और सब लोगों की धिक्कार होगी।

أُولَئِكَ جَزَاءُهُمْ أَنْ عَلَيهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ
وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۝

88. वह उस में सदावासी होंगे, उन से यातना कम नहीं की जायेगी, और न उन्हें अवकाश दिया जायेगा।

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ
يُنظَرُونَ ۝

89. परन्तु जिन्होंने ने इस के पश्चात् तौबः (क्षमा याचना) कर ली, तथा सुधार कर लिया, तो निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا
فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

90. वास्तव में जो अपने ईमान लाने के पश्चात् काफिर हो गये, फिर कुफ़्र में बढ़ते गये तो उन की तौबः (क्षमा याचना) कदापि^[1] स्वीकार नहीं की जायेगी, तथा वही कुपथ हैं।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ اذَّادُوا
كُفْرًا لَنْ نَقْبَلَ تَوْبَتَهُمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الضَّالُّونَ ۝

91. निश्चय जो काफिर हो गये, तथा काफिर रहते हुये मर गये तो उन से धरती भर सोना भी स्वीकार नहीं किया जायेगा, यद्यपि उस के द्वारा अर्थदण्ड दे। उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है। और उन का कोई सहायक न होगा।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارًا فَلَنْ
يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِمْ مِلُّ الْأَرْضِ ذَهَبًا
وَلَوْ ائْتَدَى بِهِ أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۝

1 अर्थात् यदि मौत के समय क्षमा याचना करें।

92. तुम पुण्य^[1] नहीं पा सकोगे, जब तक उस में से दान न करो जिस से मोह रखते हो, तथा तुम जो भी दान करोगे, वास्तव में अल्लाह उसे भली भाँति जानता है।

93. प्रत्येक खाद्य पदार्थ बनी इस्राईल के लिये हलाल (वैध) थे, परन्तु जिसे इसराईल^[2] ने अपने ऊपर हराम (अवैध) कर लिया, इस से पहले कि तौरात उतारी जाये। (हे नबी!) कहो कि तौरात लाओ तथा उसे पढ़ो, यदि तुम सत्यवादी हो।

94. फिर इस के पश्चात् जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगायें, तो वही वास्तव में अत्याचारी हैं।

95. उन से कह दो, अल्लाह सच्चा है, अतः तुम एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म पर चलो, तथा वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।

96. निस्संदेह पहला घर जो मानव के

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا حُبَبْتُمْ
وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ۝

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حَلَالًا لِيَوْمِ إِسْرَائِيلَ إِلَّا مَا
حَرَّمَ إِسْرَائِيلُ عَلَى نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُنَزَّلَ
التَّوْرَةُ قُلْ فَأْتُوا بِالتَّوْرَةِ فَاتْلُوهَا إِنْ
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

مَنْ أَفْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكِبْرَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ
فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

قُلْ صَدَقَ اللَّهُ فَاتَّبِعُوا مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا
كَانَ مِنَ الشِّرْكِ كَافًا ۝

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَارَكًا

1 अर्थात् पुण्य का फल स्वर्ग।

2 जब कुर्आन ने यह कहा कि यहूद पर बहुत से स्वच्छ खाद्य पदार्थ उन के अत्याचार के कारण अवैध कर दिये गये। (देखिये सूरह निसा आयत 160, सूरह अनुआम आयत 146)। अन्यथा यह सभी इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के युग में वैध थे। तो यहूद ने इसे झुठलाया तथा कहने लगे कि यह सब तो इब्राहीम अलैहिस्सलाम के युग ही से अवैध चले आ रहे हैं। इसी पर यह आयतें श उतरी। कि तौरात से इस का प्रमाण प्रस्तुत करो कि यह इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के युग ही से अवैध है। यह और बात है कि इसराईल ने कुछ चीजों जैसे ऊँट का मांस रोग अथवा मनौती के कारण अपने लिये स्वयं अवैध कर लिया था। यहाँ यह याद रखें कि इस्लाम में किसी उचित चीज़ को अनुचित करने की अनुमति किसी को नहीं है। (देखिये: शौकानी।)

लिये (अल्लाह की वन्दना का केन्द्र) बनाया गया, वह वही है जो मक्का में है, जो शुभ तथा संसार वासियों के लिये मार्गदर्शन है।

97. उस में खुली निशानियाँ हैं (जिन में) मक़ामे^[1] इब्राहीम है, तथा जो कोई उस (की सीमा) में प्रवेश कर गया तो वह शांत (सुरक्षित) हो गया। तथा अल्लाह के लिये लोगों पर इस घर का हज्ज अनिवार्य है, जो उस तक राह पा सकता हों। तथा जो कुफ़्र करेगा, तो अल्लाह संसार वासियों से निस्पृह है।

98. (हे नबी!) आप कह दें कि हे अहले किताब! यह क्या है कि तुम अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़्र कर रहे हो, जब कि अल्लाह तुम्हारे कर्मों का साक्षी है?

99. हे अहले किताब! किस लिये लोगों को जो ईमान लाना चाहें, अल्लाह की राह से रोक रहे हो, उसे उलझाना चाहते हो जब कि तुम साक्षी^[2] हो, और अल्लाह तुम्हारे कर्मों से असूचित नहीं है!

100. हे ईमान वालो! यदि तुम अहले किताब के किसी गिरोह की बात मानोगे तो वह तुम्हारे ईमान के पश्चात् फिर तुम्हें काफ़िर बना देंगे।

101. तथा तुम कुफ़्र कैसे करोगे जब कि

وَهْدَىٰ لِلْعَالَمِينَ ﴿٣١﴾

فِيهِ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ مِّمَّا مَرَّبَّاهُمْ وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ
أَمِنًا وَلَوْلَا عَلَى النَّاسِ حِجْرٌ الْبَيِّنَاتِ مِنْ اسْتِطَاعَ
إِلَيْهِ سَبِيلًا وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَفِيْرٌ
عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿٣٢﴾

قُلْ يَا هَلْ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ
شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا تَعْمَلُونَ ﴿٣٣﴾

قُلْ يَا هَلْ الْكِتَابِ لِمَ تَصُدُّونَ عَنِ اللَّهِ مَنْ
أَمِنَ تَبِعُونَهَا عِوَجًا وَأَنْتُمْ شُهَدَاءُ وَمَا اللَّهُ
بِعَاقِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٣٤﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَطِيعُوا فَرِيْقًا مِنَ الَّذِينَ
أُوْتُوا الْكِتَابَ يَرُدُّوكُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ كُفْرًا ﴿٣٥﴾

وَكَيْفَ تَكْفُرُونَ وَأَنْتُمْ تُسَلِّ عَلَيْكُمْ إِلَهُاتُ اللَّهِ

1 अर्थात् वह पत्थर जिस पर खड़े हो कर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने काबा का निर्माण किया जिस पर उन के पैरों के निशान आज तक हैं।

2 अर्थात् इस्लाम के सत्धर्म होने को जानते हों।

तुम्हारे सामने अल्लाह की आयतें पढ़ी जा रही हैं, और तुम में उस के रसूल^[1] मौजूद हैं? और जिस ने अल्लाह को^[2] थाम लिया तो उसे सुपथ दिखा दिया गया।

102. हे ईमान वालो! अल्लाह से ऐसे डरो जो वास्तव में उस से डरना हो, तथा तुम्हारी मौत इस्लाम पर रहते हुये ही आनी चाहिये।

103. तथा अल्लाह की रस्सी^[3] को सब मिल कर दृढ़ता से पकड़ लो, और विभेद में न पड़ो। तथा अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को याद करो जब तुम एक दूसरे के शत्रु थे, तो तुम्हारे दिलों को जोड़ दिया, और तुम उस के पुरस्कार के कारण भाई भाई हो गये। तथा तुम अग्नि के गड़हे के किनारे पर थे, तो तुम्हें उस से निकाल दिया, इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों को उजागर करता है, ताकि तुम मार्गदर्शन पा जाओ।

104. तथा तुम में एक समुदाय ऐसा अवश्य होना चाहिये जो भली बातों^[4] की ओर बुलाये, तथा भलाई का आदेश देता रहे, और

وَفِيكُمْ رَسُولٌ مِّنْ يَّعْتَصِمُ بِاللَّهِ فَتَدَّ هُدًى إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿١٠٢﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تَقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُوا مِن الْإِلْهِ وَأَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ﴿١٠٣﴾

وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنْتُمْ أَعْدَاءً فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا وَكُنْتُمْ عَلَىٰ شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُم مِّنْهَا كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠٤﴾

وَلَتَكُنَّ مِمَّنْكَ أُمَّةٌ يُدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٤﴾

1 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

2 अर्थात् अल्लाह का आज्ञाकारी हो गया।

3 अल्लाह की रस्सी से अभिप्राय कूर्आन और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सुन्नत है। यही दोनों मुसलमानों की एकता और परस्पर प्रेम का सूत्र है।

4 अर्थात् धर्मानुसार बातों का।

बुराई^[1] से रोकता रहे, और वही सफल होंगे।

105. तथा उन^[2] के समान न हो जाओ, जो खुली निशानियाँ आने के पश्चात् विभेद तथा आपसी विरोध में पड़ गये, और उन्हीं के लिये घोर यातना है।
106. जिस दिन बहुत से मुख उजले, तथा बहुत से मुख काले होंगे। फिर जिन के मुख काले होंगे (उन से कहा जायेगा): क्या तुम ने अपने ईमान के पश्चात् कुफ़र कर लिया था? तो अपने कुफ़र करने का दण्ड चखो।
107. तथा जिन के मुख उजले होंगे वह अल्लाह की दया (स्वर्ग) में रहेंगे। वह उस में सदावासी होंगे।
108. यह अल्लाह की आयतें हैं, जो हम आप को हक्क के साथ सुना रहे हैं, तथा अल्लाह संसार वासियों पर अत्याचार नहीं करना चाहता।
109. तथा अल्लाह ही का है जो आकाशों में और जो धरती में है। तथा अल्लाह ही की ओर सब विषय फेरे जायेंगे।
110. तुम सब से अच्छी उम्मत हो, जिसे सब लोगों के लिये उत्पन्न किया गया है कि तुम भलाई का आदेश देते हो, तथा बुराई से रोकते हो, और अल्लाह पर ईमान (विश्वास)

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَقَرَّوْا وَاتَّخَذُوا مِنْ بَعْدِ
مَآجَاءِ هُمُ الْبَيْتِ وَأُولَئِكَ أَمْ عَذَابٍ عَظِيمٍ ۝

يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ فَأَمَّا الَّذِينَ
اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَكْفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ
فَدُونُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝

وَأَمَّا الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ هُمْ
فِيهَا خَالِدُونَ ۝

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ تَنْتَلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ وَمَا
اللَّهُ يُرِيدُ لِيُخَلِّمَ لِلْغَالِبِينَ ۝

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَآلِ اللَّهِ
شُرَكَاءُ الْاُمُورِ ۝

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ
بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُونَ
بِاللَّهِ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ
مِنْهُمْ الْمُؤْمِنُونَ وَالَّذِينَ اتَّقَوْا ۝

1 अर्थात् धर्म विरोधी बातों से।

2 अर्थात् अहले किताब (यहूदी व ईसाई)।

रखते^[1] हों। और यदि अहले किताब ईमान लाते तो उन के लिये अच्छा होता। उन में कुछ ईमान वाले हैं, और अधिकतर अवैज्ञाकारी हैं।

111. वह तुम को सताने के सिवा कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। और यदि तुम से युद्ध करोगे तो वह तुम को पीठ दिखा देंगे। फिर सहायता नहीं दिये जायेंगे।

112. इन (यहूदियों) पर जहाँ भी रहें, अपमान थोप दिया गया, (यह और बात है कि) अल्लाह की शरण^[2] अथवा लोगों की शरण में हो^[3], यह अल्लाह के प्रकोप के अधिकारी हो गये, तथा उन पर दरिद्रता थोप दी गयी। यह इस कारण हुआ कि वह अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़र कर रहे थे और नबियों का अवैध बध कर रहे थे। यह इस कारण कि उन्होंने ने अवैज्ञा की, और (धर्म की) सीमा का उल्लंघन कर रहे थे।

113. वह सभी समान नहीं हैं, अहले

لَنْ يُضِرُّوكُمْ إِلَّا أَذَىٰ وَإِنْ يُقَاتِلُوكُمْ يُؤْلُوكُمْ
الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَتَّخِذُونَ

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذَّلِيلَةُ أَيْنَ مَا ثَقَفُوا مِنَ الْأَعْرَابِ
مِنَ اللَّهِ وَحَبِطَ مِنَ النَّاسِ وَيَأْمُرُ بِغَضَبٍ مِنَ
اللَّهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ
كَانُوا كَافِرُونَ يَا أَيُّهَا اللَّهُ وَيَقْتُلُونَ الْأَنْبِيَاءَ
بِغَيْرِ حَقٍّ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا
يَعْتَدُونَ ۝

لِيَسُوْا سَوَاءً مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أُمَّةٌ قَائِمَةٌ

1 इस आयत में मुसलमानों को संबोधित किया गया है, तथा उन्हें उम्मत कहा गया है। किसी जाति अथवा वर्ग और वर्ण के नाम से संबोधित नहीं किया गया है। और इस में यह संकेत है कि मुसलमान उन का नाम है जो सत्धर्म के अनुयायी हों। तथा उन के अस्तित्व का लक्ष्य यह बताया गया है कि वह सम्पूर्ण मानव विश्व को सत्धर्म इस्लाम की ओर बुलायें जो सर्व मानव जाति का धर्म है। किसी विशेष जाति और क्षेत्र अथवा देश का धर्म नहीं है।

2 दूसरा बचाव का तरीका यह है कि किसी गैर मुस्लिम शक्ति की उन्हें सहायता प्राप्त हो जाये।

3 अल्लाह की शरण से अभिप्राय इस्लाम धर्म है।

किताब में एक (सत्य पर) स्थित उम्मत^[1] भी है, जो अल्लाह की आयतों रातों में पढ़ते हैं, तथा सज्दा करते रहते हैं।

114. अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखते हैं, तथा भलाई का अदेश देते, और बुराई से रोकते हैं, तथा भलाईयों में अग्रसर रहते हैं, और यही सदाचारियों में हैं।

115. वह जो भी भलाई करेंगे, उस की उपेक्षा(अनादर) नहीं किया जायेगा और अल्लाह आज्ञाकारियों को भली भाँति जानता है।

116. (परन्तु) जो काफिर^[2] हो गये, उन के धन और उन की संतान अल्लाह (की यातना) से उन्हें तनिक भी बचा नहीं सकेगी, तथा वही नारकी हैं, वही उस में सदावासी होंगे।

117. जो दान वह इस संसारिक जीवन में करतें हैं वह उस वायु के समान है जिस में पाला हो, जो किसी कौम की खेती को लग जाये जिन्होंने ने अपने ऊपर अत्याचार^[3] किया हो, और उस का नाश कर दो तथा अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया परन्तु वह

يَتْلُونَ آيَاتِ اللَّهِ أَنْاءَ اللَّيْلِ وَهُمْ
يَسْجُدُونَ ۝

يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَأْمُرُونَ
بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُونَ
فِي الْخَيْرَاتِ وَأُولَئِكَ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝

وَمَا يَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُكْفَرُوا
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِي عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا
أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ سَيِّئًا وَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ
هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

مَثَلُ مَا يُنْفِقُونَ فِي هَذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ
رِيحٍ وَبِهَا صَاعٌ صَابَتْ حَرَتْ قَوْمٍ ظَلَمُوا
أَنْفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَكِنْ
أَنْفُسُهُمْ يَظْلِمُونَ ۝

1 अर्थात जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर ईमान लाये। जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) आदि।

2 अर्थात अल्लाह की अयतों (कुर्आन) को नकार दिया।

3 अवैज्ञा तथा अस्वीकार करते रहे थे। इस में यह संकेत है कि अल्लाह पर ईमान के बिना दानों का प्रतिफल परलोक में नहीं मिलेगा।

स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

118. हे ईमान वालो! अपनों के सिवा किसी को अपना भेदी न बनाओ, [1] वह तुम्हारा बिगाड़ने में तनिक भी नहीं चकेंगे, उन को वही बात भाती है जिस से तुम्हें दुःख हो। उन के मुखों से शत्रुता खुल चुकी है, तथा जो उन के दिल छुपा रहे हैं वह इस से बढ़कर है, हम ने तुम्हारे लिये आयतों का वर्णन कर दिया है, यदि तुम समझो।

119. सावधान! तुम ही वह हो कि उन से प्रेम करते हो, तथा वह तुम से प्रेम नहीं करते। और तुम सभी पुस्तकों पर ईमान रखते हो, तथा वह जब तुम से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये। और जब अकेले होते हैं तो क्रोध से तुम पर उँगलियों की पोरें चबाते हैं। कह दो कि अपने क्रोध से मर जाओ, निस्संदेह अल्लाह सीनों की बातें जानता है।

120. यदि तुम्हारा कुछ भला हो तो उन्हें बुरा लगता है। और यदि तुम्हारा कुछ बुरा हो जाये तो उस से प्रसन्न हो जाते हैं। तथा यदि तुम सहन करते रहे, और आज्ञाकारी रहे, तो उन का छल तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचायेगा। उन के सभी कर्म अल्लाह के घेरे में हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا بِيَدَيْكُمْ دُؤُوبَكُمْ وَلَا يَأْتِيَكُمُ خَبْرٌ إِلَّا دُوْدًا وَمَا عَرَبْتُمْ قَدْ بَدَاتِ الْبَغْضَاءَ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ إِلَّا كِبْرًا قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٨﴾

هَآأَنْتُمْ أَوْلَاءُ يُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ يَا لِكَيْتَبِ كَلِمَةٍ إِذَ الْقَوْمِ قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا عَضُّوا عَلَيْكُمُ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ قُلْ مُؤْتُوا بِعَيْظِكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١١٩﴾

إِنْ تَسْتَسْكِمُوا حَسَنَةً سَأَوْهُمْ وَإِنْ تُبْغِبُوا سَيِّئَةً يَفْرِحُوا بِهَا وَإِنْ تُصِرُّوا وَتَكْتُمُوا لَا يَصُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ سَيِّئًا إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿١٢٠﴾

1 अर्थात् वह गैर मुस्लिम जिन पर तुम को विश्वास नहीं की वह तुम्हारे लिये किसी प्रकार की अच्छी भावना रखते हों।

121. तथा (हे नबी!) वह समय याद करो जब आप प्रातः अपने घर से निकले, ईमान वालों को युद्ध^[1] के स्थानों पर नियुक्त कर रहे थे, तथा अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

وَأذْعَدَّوَتٍ مِنْ أَهْلِكَ تَتَّبِعُوا الْمُؤْمِنِينَ
مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٠﴾

122. तथा (याद करो) जब तुम में से दो गिरोहों^[2] ने कायरता दिखाने का विचार किया, और अल्लाह उन का रक्षक था। तथा ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये।

إِذْ هَمَّتْ كَلْفَاتَيْنِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلَا وَاللَّهُ
وَلِيَهُمَا وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾

123. अल्लाह बद्र में तुम्हारी सहायता कर चुका है, जब कि तुम निर्बल थे।

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنْتُمْ إِذَٰلِكَ تَأْتَفُونَ اللَّهَ

1 साधारण भाष्यकारों ने इसे उहुद के युद्ध से संबंधित माना है। जो बद्र के युद्ध के पश्चात् सन् 3 हिजरी में हुआ। जिस में कुरैश ने बद्र की पराजय का बदला लेने के लिये तीन हजार की सेना के साथ उहुद पर्वत के समीप पड़ाव डाल दिया। जब आप को इस की सूचना मिली तो मुसलमानों से परामर्श किया। अधिकांश की राय हुई कि मदीना नगर से बाहर निकल कर युद्ध किया जाये। और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक हजार मुसलमानों को लेकर निकले। जिस में से अब्दुल्लाह बिन उबय्य मुनाफिकों का मुख्या अपने तीन सौ साथियों के साथ वापिस हो गया। आप ने रणक्षेत्र में अपने पीछे से शत्रु के आक्रमण से बचाव के लिये 70 धनुर्धरों को नियुक्त कर दिया। और उन का सेनापति अब्दुल्लाह बिन जुबैर को बना दिया। तथा यह आदेश दिया कि कदापि इस स्थान को न छोड़ना। युद्ध आरंभ होते ही कुरैश पराजित हो कर भाग खड़े हुये। यह देख कर धनुर्धरों में से अधिकांश ने अपना स्थान छोड़ दिया। कुरैश के सेनापति खालिद पुत्र वलीद ने अपने सवारों के साथ फिर कर धनुर्धरों के स्थान पर आक्रमण कर दिया। फिर अकस्मात् मुसलमानों पर पीछे से आक्रमण कर के उन की विजय को पराजय में बदल दिया। जिस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी आघात पहुँचा। (तफ्सीर इब्ने कसीर।)

2 अर्थात् दो कबीले बनू सलमा तथा बनू हारिसा ने भी अब्दुल्लाह बिन उबय्य के साथ वापिस हो जाना चाहा। (सहीह बुखारी हदीस 4558)

अतः अल्लाह से डरते रहो, ताकि उस के कृतज्ञ रहो।

124. (हे नबी! वह समय भी याद करें) जब आप ईमान वालों से कह रहे थे: क्या तुम्हारे लिये यह बस नहीं है कि अल्लाह तुम्हें (आकाश से) उतारे हुये तीन हज़ार फ़रिश्तों द्वारा समर्थन दे?

125. क्यों^[1] नहीं? यदि तुम सहन करोगे, तथा आज्ञाकारी रहोगे, और वह (शत्रु) तुम्हारे पास अपनी इसी उत्तेजना के साथ आ गये, तो तुम्हारा पालनहार तुम्हें (तीन नहीं) पाँच हज़ार चिन्ह^[2] लगे फ़रिश्तों द्वारा समर्थन देगा।

126. और अल्लाह ने इस को तुम्हारे लिये केवल शुभ सूचना बनाया है। और ताकि तुम्हारे दिलों को संतोष हो जाये, और समर्थन तो केवल अल्लाह ही के पास से है, जो प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

127. ताकि^[3] वह काफ़िरों का एक भाग काट दे, अथवा उन को अपमानित कर दे। फिर वह असफल वापिस हो जायें।

لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٣﴾

إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَنْ يَكْفِيَكُمْ أَنْ يُمَدَّكُمْ
رَبُّكُمْ بِثَلَاثَةِ آفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُنَزَّلِينَ ﴿٣﴾

بَلَىٰ إِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُم مِّن فَوْرِهِمْ
هَذَا يُمَدِّدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ آفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ
مُسَوِّبِينَ ﴿٣﴾

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُمْ
بِهِ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿٣﴾

لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَأَوْ يَكْبِتَهُمْ
فَيَقْبَلُوا خَاسِرِينَ ﴿٣﴾

1 अर्थात इतना समर्थन बहुत है।

2 अर्थात उन पर तथा उन के घोड़ों पर चिन्ह लगे होंगे।

3 अर्थात अल्लाह तुम्हें फ़रिश्तों द्वारा समर्थन इस लिये देगा ताकि काफ़िरों का कुछ बल तोड़ दे, और उन्हें निष्फल वापिस कर दे।

128. हे नबी! इस^[1] विषय में आप को कोई अधिकार नहीं, अल्लाह चाहे तो उन की क्षमा याचना स्वीकार^[2] करे, या दण्ड^[3] दे, क्योंकि वह अत्याचारी हैं।

129. अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह जिसे चाहे क्षमा करे, और जिसे चाहे दण्ड दे तथा अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

130. हे ईमान वालो! कई कई गुणा कर के ब्याज^[4] न खाओ। तथा अल्लाह से डरो, ताकि सफल हो जाओ।

131. तथा उस अग्नि से बचो जो काफिरों के लिये तैयार की गयी है।

132. तथा अल्लाह और रसूल के आज्ञाकारी रहो, ताकि तुम पर दया की जाये।

133. और अपने पालनहार की क्षमा और उस स्वर्ग की ओर अग्रसर हो जाओ,

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ
أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ ﴿٣٠﴾

وَاللَّهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣١﴾

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا لَا تَاْكُلُوْا الرِّبٰوَا
اَضْعَافًا مُّضَاعَفَةً ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ﴿٣٢﴾

وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْ أُعِدَّتْ لِلْكَٰفِرِيْنَ ﴿٣٣﴾

وَاطِيعُوْا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٣٤﴾

وَسَارِعُوْا اِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا

1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़ज़ की नमाज़ में रुकूअ के पश्चात् यह प्रार्थना करते थे कि हे अल्लाह! अमुक को अपनी दया से दूर कर दे। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी - 4559)

2 अर्थात् उन्हें मार्गदर्शन दे।

3 यदि काफिर ही रह जायें।

4 उहुद की पराजय का कारण धन का लोभ बना था। इस लिये यहाँ ब्याज से सावधान किया जा रहा है, जो धन के लोभ का अति भयावह साधन है। तथा आज्ञाकारिता की प्रेरणा दी जा रही है। कई कई गुणा व्याज न खाने का अर्थ यह नहीं कि इस प्रकार व्याज न खाओ, बल्कि व्याज अधिक हो या थोड़ी सर्वथा हराम (वर्जित) है। यहाँ जाहिलिय्यत के युग में व्याज की जो रीति थी, उस का वर्णन किया गया है। जैसा कि आधुनिक युग में व्याज पर व्याज लेने की रीति है।

जिस की चौड़ाई आकाशों तथा धरती के बराबर है, आज्ञाकारियों के लिये तैयार की गयी है।

134. जो सुविधा तथा असुविधा की दशा में दान करते रहते हैं, तथा क्रोध पी जाते, और लोगों के दोष क्षमा कर दिया करते हैं। और अल्लाह सदाचारियों से प्रेम करता है।
135. और जब कभी वह कोई बड़ा पाप कर जायें, अथवा अपने ऊपर अत्याचार कर लें, तो अल्लाह को याद करतें हैं, फिर अपने पापों के लिये क्षमा माँगते हैं। तथा अल्लाह के सिवा कौन है, जो पापों को क्षमा करे? और अपने किये पर जान बूझ कर अड़े नहीं रहते।
136. इन्हीं का प्रतिफल (बदला) उनके पालनहार की क्षमा तथा ऐसी स्वर्ग है जिन में नहरें प्रवाहित हैं, जिन में वह सदावासी होंगे, तो क्या ही अच्छा है सत्कर्मियों का यह प्रतिफल?
137. तुम से पहले भी इसी प्रकार हो चुका^[1] है। तुम धरती में फिरी और देखो कि झुठलाने वालों का परिणाम कैसा रहा?
138. यह (कुरआन) लोगों के लिये एक वर्णन तथा मार्ग दर्शन, और एक शिक्षा है (अल्लाह से) डरने वालों के लिये।

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَعْدَتُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٤﴾

الَّذِينَ يَتَّقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالْكُظُمِينِ
الْعَبْثِ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ وَاللَّهُ يُحِبُّ
الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣٥﴾

وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ
ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ وَمَنْ يَغْفِرُ
الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلَى
مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٣٦﴾

أُولَئِكَ جَزَاءُ هُمْ مَغْفِرَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ
وَجَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ
فِيهَا وَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ﴿١٣٧﴾

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ فَسِيرُوا فِي
الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُكذِّبِينَ ﴿١٣٨﴾

هَذَا بَيَانٌ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ
لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٩﴾

1 उहुद की पराजय पर मुसलमानों को दिलासा दी जा रही है जिस में उन के 70 व्यक्ति मारे गये। (तफ्सीर इब्ने कसीर)

139. (इस पराजय से) तुम निर्बल तथा उदासीन न बनो। और तुम ही सर्वोच्च रहोगे, यदि तुम ईमान वाले हो।

وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنْتُمْ الْأَعْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

140. यदि तुम्हें कोई घाव लगा है, तो कौम (शत्रु)^[1] को भी इसी के समान घाव लग चुका है। तथा उन दिनों को हम लोगों के बीच फेरते रहते^[2] हैं। और ताकि अल्लाह उन को जान ले^[3] जो ईमान लाये, और तुम में से साक्षी बनाये। और अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

إِنْ يَمَسُّكُمْ فَوْرٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ فَوْرٌ مِثْلُهُ وَتِلْكَ آيَاتُ الْمُرْسَلِ وَالْمُؤْمِنِينَ النَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَاءَ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۝

141. तथा ताकि अल्लाह उन्हें शुद्ध कर दे, जो ईमान लाये हैं, और काफ़िरों का नाश कर दे।

وَلِيَخْصَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَمْحَقَ الْكُفْرَانَ ۝

142. क्या तुम ने समझ रखा है कि स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे? जब कि अल्लाह ने (परीक्षा कर के) उन्हें नहीं जाना है जिन्होंने तुम में से जिहाद किया है, और न सहनशीलों को जाना है?

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الظَّالِمِينَ ۝

143. तथा तुम मौत की कामना कर^[4] रहे थे इस से पूर्व कि उस का सामना करो, तो अब तुम ने उसे आँखों से देख लिया है, और देख रहे हो।

وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَأَيْتُمُوهُ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ۝

1 इस में कुरैश की बद्र में पराजय और उन के 70 व्यक्तियों के मारे जाने की ओर संकेत है।

2 अर्थात कभी किसी की जीत होती है, कभी किसी की।

3 अर्थात अच्छे बुरे में विवेक (अन्तर) कर दे।

4 अर्थात अल्लाह की राह में शहीद हो जाने की।

144. मुहम्मद केवल एक रसूल हैं, इस से पहले बहुत से रसूल हो चुके हैं, तो क्या यदि वह मर गये अथवा मार दिये गये, तो तुम अपनी एड़ियों के बल^[1] फिर जाओगे? तथा जो अपनी एड़ियों के बल फिर जायेगा, तो वह अल्लाह को कुछ हानि नहीं पहुँचा सकेगा, और अल्लाह शीघ्र ही कृतज्ञों को प्रतिफल प्रदान करेगा।

145. कोई प्राणी ऐसा नहीं जो अल्लाह की अनुमति के बिना मर जाये, उस का अंकित निर्धारित समय है, और जो संसारिक प्रतिफल चाहेगा, हम उसे उस में से कुछ देंगे, तथा जो परलोक का प्रतिफल चाहेगा हम उसे उस में से देंगे। और हम कृतज्ञों को शीघ्र ही प्रतिफल देंगे।

146. कितने ही नबी थे जिन के साथ होकर बहुत से अल्लाह वालों ने युद्ध किया, तो वह अल्लाह की राह में आई आपदा पर न आलसी हुये, न निर्बल बने और न (शत्रु से) दबे। तथा अल्लाह धैर्यवानों से प्रेम करता है।

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ
الرُّسُلُ أَفَلَا يَنْتَبِهُونَ أَوْ قَتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَى
أَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَى عَقْبَيْهِ فَلَنْ
يُضَارَّ اللَّهُ شَيْئًا وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ ۝

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تَمُوتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَكِتَابًا
مُّؤْتَلَكًا وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا
وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الْآخِرَةِ نُؤْتِهِ مِنْهَا
وَسَيَجْزِي الشَّاكِرِينَ ۝

وَكَايِنٍ مِّنْ نَّبِيِّ قُتِلَ مَعَهُ رَبِّيُونَ
كَثِيرٌ فَمَا وَهَنُوا لِمَا أَصَابَهُمْ فِي سَبِيلِ
اللَّهِ وَمَا ضَعُفُوا وَمَا اسْتَكَانُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ
الطَّابِعِينَ ۝

1 अर्थात् इस्लाम से फिर जावोगे भावार्थ यह है कि सत्धर्म इस्लाम स्थायी है नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के न रहने से समाप्त नहीं हो जायेगा। उहुद में जब किसी विरोधी ने यह बात उड़ाई कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मार दिये गये तो यह सुन कर बहुत से मुसलमान हताश हो गये। कुछ ने कहा कि अब लड़ने से क्या लाभ? तथा मुनाफिकों ने कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) नबी होते तो मार नहीं खाते। इस आयत में यह संकेत है कि दूसरे नबियों के समान आप को भी एक दिन संसार से जाना है। तो क्या तुम उन्हीं के लिये इस्लाम को मानते हो, और आप नहीं रहेंगे तो इस्लाम नहीं रहेगा?

147. तथा उन का कथन बस यही था कि उन्होंने ने कहा: हे हमारे पालनहार! हमारे लिये हमारे पापों को क्षमा कर दे, तथा हमारे विषय में हमारी अति को, और हमारे पैरों को दृढ़ कर दे, और काफ़िर जाति के विरुद्ध हमारी सहायता कर।

148. तो अल्लाह ने उन को संसारिक प्रतिफल तथा आखिरत (परलोक) का अच्छा प्रतिफल प्रदान कर दिया, तथा अल्लाह सुकर्मियों से प्रेम करता है।

149. हे ईमान वालो! यदि तुम काफ़िरों की बात मानोगे तो वह तुम्हें तुम्हारी एड़ियों के बल फेर देंगे, और तुम फिर से क्षति में पड़ जाओगे।

150. बल्कि अल्लाह तुम्हारा रक्षक है तथा वह सब से अच्छा सहायक है।

151. शीघ्र ही हम काफ़िरों के दिलों में तुम्हारा भय डाल देंगे, इस कारण कि उन्होंने ने अल्लाह का साझी उसे बना लिया है, जिस का कोई तर्क (प्रमाण) अल्लाह ने नहीं उतारा है, और इन का आवास नरक है, और वह क्या ही बुरा आवास है?

152. तथा अल्लाह ने तुम से अपना वचन सच कर दिखाया है, जब तुम उस की अनुमति से उन को काट^[1] रहे थे, यहाँ तक कि जब तुम ने

وَمَا كَانَ قَوْلُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

قَالَتْ لَهُمُ اللَّهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحَسُنَ ثَوَابَ الْآخِرَةِ ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَطِيعُوا الَّذِينَ كَفَرُوا وَيُرِدُّوكُمْ عَلَى أَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خِسِرِينَ ۝

بَلِ اللَّهُ مَوْلَاكُمْ ۖ وَهُوَ خَيْرُ النَّاصِرِينَ ۝

سَنُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَالرُّعُوبَ يَمَآءَ ۖ اشْرَكُوا بِإِلَهِهِمْ وَإِلَهُهُمُ اللَّهُ ۚ وَمَا لَهُمْ بِهِ سُلْطَانًا ۚ وَمَا لَهُمْ مِنَ النَّارِ وَبِئْسَ مَثْوَى الظَّالِمِينَ ۝

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللَّهُ وَعْدًا إِذْ تَحُسُّوهُمُ بِأَدْبِهِ ۚ حَتَّى إِذْ أَفْشَلْتُمْ وَتَوَارَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِمَّنْ بَعْدَ مَا أَرْسَلَكُمْ مَأ

1 अर्थात् उहद के आरंभिक क्षणों में।

कायरता दिखायी, तथा (रसूल के) आदेश^[1] में विभेद कर लिया और अवैज्ञा की, इस के पश्चात् कि तुम्हें वह (विजय) दिखा दी, जिसे तुम चाहते थे, तुम में से कुछ संसार चाहते हैं, तथा कुछ लोग परलोक चाहते हैं। फिर तुम्हें उन से फेर दिया, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले, और तुम्हें क्षमा कर दिया, तथा अल्लाह ईमान वालों के लिये दानशील है।

153. (और याद करो) जब तुम चढ़े (भागें) जा रहे थे, और किसी की ओर मुड़ कर नहीं देख रहे थे, और रसूल तुम्हें तुम्हारे पीछे से पुकार^[2] रहे थे, तो (अल्लाह ने) तुम्हें शोक के बदले शोक दे दिया, ताकि जो तुम से खो गया और जो दुख तुम्हें पहुँचा उस पर उदासीन न हो, तथा अल्लाह उस से सूचित है, जो तुम कर रहे हो।

154. फिर तुम पर शोक के पश्चात् शान्ति (ऊँघ) उतार दी जो तुम्हारे एक गिरोह^[3] को आने लगी, और

تُحِبُّونَ مِنْكُمْ مَنْ يُرِيدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَنْ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۗ ثُمَّ صَرَفْنَا عَنْهُمْ غَيْبَاتِنَا لِيُنَبِّئَكُمْ ۗ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۗ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۝

إِذْ تَصْعَدُونَ وَلَا تَلَوْنَ عَلَى أَحَدٍ
وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي أَخْرَابِكُمْ فَأَتَابَكُمْ
عَنَّا بَعْضًا لِكَيْ لَا تَحْزَنُوا عَلَى مَا فَاتَكُمْ
وَلَا مَا أَصَابَكُمْ ۗ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا
تَعْمَلُونَ ۝

ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِ الْغَمِّ أَمْنًا نِعَاسًا يُغَشِّي
طَائِفَةً مِّنْكُمْ وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنفُسُهُمْ

- 1 अर्थात् कुछ धनुर्धरों ने आप के आदेश का पालन नहीं किया, और परिहार का धन संचित करने के लिये अपना स्थान त्याग दिया, जो पराजय का कारण बन गया। और शत्रु को उस दिशा से आक्रमण करने का अवसर मिल गया।
- 2 बराअ बिन आज़िब कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उहुद के दिन अब्दुल्लाह बिन जुबैर को पैदल सेना पर रखा। और वह पराजित हो कर आ गये, इसी के बारे में यह आयत है। उस समय नबी के साथ बारह व्यक्ति ही रह गये। (सहीह बुखारी -4561)
- 3 अबु तलहा रज़ियल्लाह अन्हु ने कहा: हम उहुद में ऊँघने लगे। मेरी तलवार मेरे हाथ से गिरने लगती और मैं पकड़ लेता, फिर गिरने लगती और पकड़ लेता।

एक गिरोह को अपनी^[1] पड़ी हुई थी। वह अल्लाह के बारे में असत्य जाहिलिय्यत की सोच सोच रहे थे। वह कह रहे थे कि क्या हमारा भी कुछ अधिकार है? (हे नबी!) कह दें कि सब अधिकार अल्लाह को है। वह अपने मनो में जो छुपा रहे थे आप को नहीं बता रहे थे। वह कह रहे थे कि यदि हमारा कुछ भी अधिकार होता, तो यहाँ मारे नहीं जाते, आप कह दें: यदि तुम अपने घरों में रहते, तब भी जिन के (भाग्य में) मारा जाना लिखा है, वह अपने निहत होने के स्थानों की ओर निकल आते। और ताकि अल्लाह, जो तुम्हारे दिलों में है उस की परीक्षा ले। तथा जो तुम्हारे दिलों में है उसे शुद्ध कर दे। और अल्लाह दिलों के भेदों से अवगत है।

155. वस्तुतः तुम में से जिन्होंने दो गिरोहों के सम्मुख होने के दिन मुँह फेर दिया, शैतान ने उन को उन के कुछ कुकर्मों के कारण फिसला दिया। तथा अल्लाह ने उन को क्षमा कर दिया है। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील सहनशील है।

156. हे ईमान वालो! उन के समान न हो जाओ जो काफिर हो गये, तथा अपने भाईयों से- जब यात्रा में हों, अथवा युद्ध में- कहा कि यदि वह हमारे पास होते तो न मरते और

يُظُنُّونَ بِاللَّهِ عِبْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ يَقُولُونَ
هَلْ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلَّهِ
يُخْفُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ مَا لَا يُبْدُونَ لَكَ يَقُولُونَ لَوْ
كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ نَأْتَيْنَا هَهُنَا قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي
بُيُوتِكُمْ لَبُرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَى
مَضَاجِعِهِمْ وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ
وَلِيُبَيِّنَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ
الصُّدُورِ ﴿١٥٥﴾

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ إِنَّمَا
اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا وَلَقَدْ عَفَا
اللَّهُ عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٥٦﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا كَالَّذِينَ كَفَرُوا
وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا ضَرَبُوا فِي الْأَرْضِ أَوْ كَانُوا
غُرُبَىٰ أَوْ كَانُوا إِعْنَذًا مِمَّا تَوَلَّوْا وَقَاتِلُوا لِئَلَّا يَجْعَلَ
اللَّهُ ذَلِكَ حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ وَاللَّهُ يُجِبِّي

(सहीह बुखारी -4562)

1 यह मुनाफिक लोग थे।

न मारे जाते, ताकि अल्लाह उन के दिलों में इसे संताप बना दे। और अल्लाह ही जीवित करता तथा मौत देता है, और अल्लाह जो तुम कर रहे हो उसे देख रहा है।

157. यदि तुम अल्लाह की राह में मार दिये जाओ अथवा मर जाओ, तो अल्लाह की क्षमा उस से उत्तम है जो लोग एकत्र कर रहे हैं।
158. तथा यदि तुम मर गये अथवा मार दिये गये, तो अल्लाह ही के पास एकत्र किये जाओगे।
159. अल्लाह की दया के कारण ही आप उन के^[1] लिये कोमल (सुशील) हो गये, और यदि आप अक्खड़ तथा कड़े दिल के होते, तो वह आप के पास से बिखर जाते। अतः उन्हें क्षमा कर दो, और उन के लिये क्षमा की प्रार्थना करो, तथा उन से भी मुआमले में परामर्श करो, फिर जब कोई दृढ़ संकल्प ले लो तो अल्लाह पर भरोसा करो। निस्संदेह अल्लाह भरोसा रखने वालों से प्रेम करता है।
160. यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे तो तुम पर कोई प्रभुत्व नहीं पा सकता। तथा यदि तुम्हारी सहायता न करे, तो फिर कौन है जो उस के पश्चात् तुम्हारी सहायता कर सके? अतः ईमान वालों को अल्लाह

وَيُؤَيِّتُ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

وَلَيْنَ قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مِتُّمْ مَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ۝

وَلَيْنَ مِّمَّتُمْ أَوْ قُتِلْتُمْ إِلَى اللَّهِ تُحْشَرُونَ ۝

فِيهَا رَحْمَةٌ مِّنَ اللَّهِ لَئِن لَّمْ يَكُن لَّهُمْ وَلَوْ كُنْتَ وَقَطًّا
غَلِيظَ الْقَلْبِ لَا نَفَعُوا مِنْ حَوْلِكَ فَاعْفُ
عَنَّهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ فَإِذَا
عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ
الْمُتَوَكِّلِينَ ۝

إِنْ يَنْصُرْكُمُ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ وَإِنْ يَخْذَلْكُمْ فَبِئْسَ
ذَ الَّذِي يَنْصُرْكُمْ مِنْ بَعْدِهِ وَعَلَى اللَّهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

1 अर्थात् अपने साथियों के लिये, जो उहद में रणक्षेत्र से भाग गये।

ही पर भरोसा करना चाहिये।

161. किसी नबी के लिये योग्य नहीं कि अपभोग^[1] करे। और जो अपभोग करेगा, प्रलय के दिन उसे लायेगा फिर प्रत्येक प्राणी को उस की कमाई का भरपूर प्रतिकार (बदला) दिया जायेगा, तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

162. तो क्या जिस ने अल्लाह की प्रसन्नता का अनुसरण किया हो उस के समान हो जायेगा जो अल्लाह का क्रोध^[2] लेकर फिरा, और उस का आवास नरक है?

163. अल्लाह के पास उन की श्रेणियाँ हैं, तथा अल्लाह उसे देख^[3] रहा है जो वह कर रहे हैं।

164. अल्लाह ने ईमान वालों पर उपकार किया है कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा, जो उन के सामने उस (अल्लाह) की आयतें सुनाता है, और उन्हें शुद्ध करता है तथा उन्हें पुस्तक (क़ुर्आन) और हिकमत (सुन्नत) की शिक्षा देता है, यद्यपि

وَمَا كَانَ لِنَبِيِّ أَنْ يُغْلَبَ وَمَنْ يُغْلَبْ يَأْتِ بِمَا
عَلَّ بِرُؤْمِ الْقِيَمَةِ تَمْ تُوَقُّ كُلُّ نَفْسٍ تَأْسَبَتْ
وَهُمْ لَا يظْلَمُونَ ﴿١٦١﴾

أَقَمِنَ النَّبِيُّ رِضْوَانِ اللَّهِ كَمَنْ بَاءَ بِسَخَطِ مِنَ
اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٦٢﴾

هُمُ دَرَجَاتٍ عِنْدَ اللَّهِ وَاللَّهُ بِصِيرٍ بِمَا
يَعْمَلُونَ ﴿١٦٣﴾

لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا
مِّنْ أَنفُسِهِمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ
وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِن
قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿١٦٤﴾

1 उहुद के दिन जो अपना स्थान छोड़ कर इस विचार से आ गये कि यदि हम न पहुँचे तो दूसरे लोग ग़नीमत का सब धन ले जायेंगे, उन्हें यह चेतावनी दी जा रही है कि तुम ने कैसे सोच लिया कि इस धन में से तुम्हारा भाग नहीं मिलेगा, क्या तुम्हें नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की अमानत पर भरोसा नहीं है? सुन लो! नबी से किसी प्रकार का अपभोग असम्भव है। यह घोर पाप है जो कोई नबी कभी नहीं कर सकता।

2 अर्थात् पापों में लीन रहा।

3 अर्थात् लोगों के कर्मों के अनुसार उन की अलग अलग श्रेणियाँ हैं।

वह इस से पहले खुले कुपथ में थे।

165. तथा जब तुम को एक दुःख पहुँचा^[1] जब कि इस के दुगना तुम ने पहुँचाया^[2], तो तुम ने कह दिया कि यह कहाँ से आ गया? (हे नबी!) कह दो: यह तुम्हारे पास से^[3] आया। वास्तव में अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
166. तथा जो भी आपदा दो गिरोहों के सम्मुख होने के दिन तुम पर आई, तो वह अल्लाह की अनुमति से, और ताकि वह ईमान वालों को जान ले।
167. और ताकि उन को जान ले, जो मुनाफ़िक हैं। और उन से कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में युद्ध करो, अथवा रक्षा करो, तो उन्होंने ने कहा कि यदि हम युद्ध होना जानते तो अवश्य तुम्हारा साथ देते। वह उस दिन ईमान से अधिक कुफ़्र के समीप थे, वह अपने मुखों से ऐसी बात बोल रहे थे जो उन के दिलों में नहीं थी। तथा अल्लाह जिसे वह छुपा रहे थे, अधिक जानता था।
168. इन्होंने ने ही अपने भाईयों से कहा, और (स्वयं घरों में) आसीन रह गये: यदि वह हमारी बात मानते, तो मारे नहीं जाते! (हे नबी!) कह

أَوَّلَمَا أَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُمْ مِثْلَهَا
فَلْتُمْ أَيْ هَذَا قَوْلُ مُؤْمِنٍ عِنْدَ أَنْفُسِكُمْ إِنَّ
اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٦٥﴾

وَمَا أَصَابَكُمْ يَوْمَ التَّقَى الْجَمْعَيْنِ فَيَاذَنَ اللَّهُ
وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٦٦﴾

وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ تَأَفَّوْا وَأَقْبَلُوا فِي الْآيَاتِ
سَبِيلَ اللَّهِ أَوْ أَذْفَعُوا قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كُنَّا
أَوْ لَتُبْعِنَا كَمَا تُبْعِنُوا الْيَوْمَ لَكُنَّا أَقْرَبُ مِنْهُمْ
لِلْإِيمَانِ يَفْقَهُونَ بِأَفْوَاهِهِمْ تَالَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ
وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ ﴿١٦٧﴾

الَّذِينَ قَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوا أَلَا طَاعُوا مَا
قِيلَ لَهُمْ قَدْ أَدْرَأْنَا عَنْ أَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ﴿١٦٨﴾

1 अर्थात उहुद के दिन।

2 अर्थात बद्र के दिन।

3 अर्थात तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेश का विरोध करने के कारण आया, जो धनुर्धरों को दिया गया था।

दो: फिर तो मौत से^[1] अपनी रक्षा कर लो, यदि तुम सच्चे हो।

169. जो अल्लाह की राह में मार दिये गये तो तुम उन को मरा हुआ न समझो, बल्कि वह जीवित है,^[2] अपने पालनहार के पास जीविका दिये जा रहे हैं।

170. तथा उस से प्रसन्न है जो अल्लाह ने उन्हें अपनी दया से प्रदान किया है, और उन के लिये प्रसन्न (हर्षित) हो रहे हैं जो उन से मिले नहीं, उन के पीछे^[3] रह गये हैं कि उन्हें कोई डर नहीं होगा, और न वह उदासीन होंगे।

171. वह अल्लाह के पुरस्कार और प्रदान के कारण प्रसन्न हो रहे हैं। तथा इस पर कि अल्लाह ईमान वालों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।

172. जिन्होंने अल्लाह और रसूल की पुकार को स्वीकार^[4] किया, इस के

وَأَخْتَصَبَنَّ الَّذِينَ قَاتَلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَالًا بَيْتًا
أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿١٦٩﴾

فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَيَسْتَبْشِرُونَ
بِالَّذِينَ لَهُمْ لِحْظًا مِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٧٠﴾

يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةِ اللَّهِ وَفَضْلِهِ وَأَنَّ اللَّهَ
لَيُضِيعَ أَمْرَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٧١﴾

الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِقَوْلِ الرَّسُولِ مِنْ بَعْدِ مَا

1 अर्थात अपने उपाय से सदाजीवी हो जाओ।

2 शहीदों का जीवन कैसा होता है? हदीस में है कि उन की आत्मायें हरे पक्षियों के भीतर रख दी जाती हैं और वह स्वर्ग में चुगते तथा आनन्द लेते फिरते हैं। (सहीह मुस्लिम- हदीस -1887)

3 अर्थात उन मुजाहिदीन के लिये जो अभी संसार में जीवित रह गये हैं।

4 जब काफ़िर उहुद से मक्का वापिस हुये तो मदीने से 30 मील दूर "रौहाअ" से फिर मदीने वापिस आने का निश्चय किया। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सूचना मिली तो सेना लेकर "हमराउल असद" तक पहुँचे जिसे सुन कर वह भाग गये। इधर मुसलमान सफल वापिस आये। इस आयत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों की सराहना की गई है जिन्होंने उहुद में घाव खाने के पश्चात् भी नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का साथ दिया। यह आयतें इसी से संबंधित हैं।

पश्चात् कि उन्हें आघात पहुँचा, उन में से उन के लिये जिन्होंने ने सुकर्म किया तथा (अल्लाह से) डरे, महा प्रतिफल है।

173. यह वह लोग हैं, जिन से लोगों ने कहा कि तुम्हारे लिये लोगों (शत्रु) ने (वापिस आने का) संकल्प^[1] लिया है। अतः उन से डरो, तो इस ने उन के ईमान को और अधिक कर दिया, और उन्होंने ने कहा: हमें अल्लाह बस है, और वह अच्छा काम बनाने वाला है।
174. तथा अल्लाह के अनुग्रह एवं दया के साथ^[2] वापिस हुये। उन्हें कोई दुःख नहीं पहुँचा। तथा अल्लाह की प्रसन्नता पर चले, और अल्लाह बड़ा दयाशील है।
175. वह शैतान है, जो तुम्हें अपने सहयोगियों से डरा रहा है, तो उन^[3] से न डरो, तथा मुझी से डरो यदि तुम ईमान वाले हो।
176. हे नबी! आप को वह काफिर उदासीन न करें, जो कुफ्र में अग्रसर हैं, वह अल्लाह को कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। अल्लाह चाहता है कि आखिरत (परलोक) में

أَصَابَهُمُ الْفُرْقَةُ الَّذِينَ أَحْسَنُوا مِنْهُمْ وَاتَّقُوا أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝

الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ۝

فَاتَقَلَّبُوا مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ مِنَ اللَّهِ وَفَضَّلَهُمْ لِمُحَمَّدٍ ۝ سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ وَضَوَانَ اللَّهِ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ ۝

إِنَّمَا ذَلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَاءَهُ ۝ فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُوا إِيَّانَا إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

وَلَا يَحْزَنُكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَنْ يَضُرُّوكَ اللَّهُ سَبِيحًا يُرِيدُ اللَّهُ لِيَجْعَلَ لَهُمْ حِطَّافٍ الرَّحْمَةِ وَأَنْهُمْ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمٌ ۝

- 1 अर्थात् शत्रु ने मक्का जाते हुये राह में सोचा कि मुसलमानों के परास्त हो जाने पर यह अच्छा अवसर था कि मदीने पर आक्रमण कर के उन का उन्मूलन कर दिया जाये, तथा वापिस आने का निश्चय किया। (तफ्सीरे कुर्तुबी)।
- 2 अर्थात् "हमराउल असद" से मदीना वापिस हुये।
- 3 अर्थात् मिश्रणवादियों से।

उन का कोई भाग न बनाये, तथा
उन्हीं के लिये घोर यातना है।

177. वस्तुतः जिन्होंने ने ईमान के बदले
कुफ़्र ख़रीद लिया, वह अल्लाह को
कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे, तथा
उन्हीं के लिये दुखदायी यातना है।

178. जो काफिर हो गये, वह कदापि
यह न समझें कि हमारा उन को
अव्सर^[1] देना उन के लिये अच्छा
है, वास्तव में हम उन्हें इस लिये
अव्सर दे रहे हैं कि उन के पाप^[2]
अधिक हो जायें, तथा उन्हीं के लिये
अपमानकारी यातना है।

179. अल्लाह ऐसा नहीं है कि ईमान वालों
को उसी (दशा) पर छोड़ दे, जिस
पर तुम हो, जब तक बुरे को अच्छे
से अलग न कर दे, और अल्लाह ऐसा
(भी) नहीं है कि तुम्हें ग़ैब (परोक्ष)
से^[3] सूचित कर दे, और परन्तु
अल्लाह अपने रसूलों में से (परोक्ष पर
अवगत करने के लिये) जिसे चाहे
चुन लेता है। तथा यदि तुम ईमान
लाओ, और अल्लाह से डरते रहो, तो
तुम्हारे लिये बड़ा प्रतिफल है।

إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرُوا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَنْ يَضُرُوا اللَّهَ
شَيْئًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٧﴾

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا نُطِيعُ لَهُمْ حَيْثُ
لَا نُقِيبُهُمْ إِلَيْنَا لِنَلِمَهُمْ لَئِن لَّمْ يَلِدُوا ذُرِّيَّتَهُمْ
عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿١٧٨﴾

مَا كَانَ اللَّهُ لِيُذَيِّدَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ
حَتَّىٰ يَبَيِّنَ الْحُجُجَ مِنَ الظُّلُمَاتِ وَمَا كَانَ اللَّهُ
لِيُظْلِعَكُمْ عَلَى الظُّلُمَاتِ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِي مَنْ
رُئِيَ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ قَائِمًا بِاللهِ وَرُسُلِهِ وَإِنْ
تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٩﴾

1 अर्थात् उन्हें संसारिक सुख सुविधा देना। भावार्थ यह है कि इस संसार में अल्लाह, सत्योसत्य, न्याय तथा अत्याचार सब के लिये अवसर देता है। परन्तु इस से धोखा नहीं खाना चाहिये, यह देखना चाहिये कि परलोक की सफलता किस में है। सत्य ही स्थायी है तथा असत्य को ध्वस्त हो जाना है।

2 यह स्वभाविक नियम है कि पाप करने से पापाचारी में पाप करने की भावना अधिक हो जाती है।

3 अर्थात् तुम्हें बता दे कि कौन ईमान वाला और कौन दुविधावादी है।

180. वह लोग कदापि यह न समझें जो उस में कृपण (कंजूसी) करते हैं, जो अल्लाह ने उन को अपनी दया से प्रदान किया^[1] है कि वह उन के लिये अच्छा है, बल्कि वह उन के लिये बुरा है, जिस में उन्होंने ने कृपण किया है। प्रलय के दिन उसे उन के गले का हार^[2] बना दिया जायेगा। और आकाशों तथा धरती की मीरास (उत्तराधिकार) अल्लाह के^[3] लिये है। तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उस से सूचित है।

181. अल्लाह ने उन की बात सुन ली है जिन्होंने कहा कि अल्लाह निर्धन और हम धनी^[4] है, उन्होंने ने जो कुछ कहा है हम उसे लिख लेंगे, और उन के नबियों की अवैध हत्या करने को भी, तथा कहेंगे कि दहन की यातना चखो।

182. यह तुम्हारे? कर्तूतों का दुष्परिणाम है, तथा वास्तव में अल्लाह बंदों के लिये तनिक भी अत्याचारी नहीं है।

183. जिन्होंने ने कहा: अल्लाह ने हम से वचन लिया है कि किसी रसूल का

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخُلُونَ بِمَا أَنزَلَهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخُلُوا بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ وَاللَّهُ وَمِيرَاثُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوا وَقَتْلَهُمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۚ وَنَقُولُ ذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ۝

ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ آيَاتِكُمْ وَإِنَّ اللَّهَ لَيَسِّرُ لِمَن يَشَاءُ السُّبُلَ ۝

الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ عَهْدُ الْإِنْسَانِ الْأَتُّومِ

1 अर्थात् धन धान्य की ज़कात नहीं देते।

2 सहीह बुख़ारी में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: जिसे अल्लाह ने धन दिया है, और वह उस की ज़कात नहीं देता तो प्रलय के दिन उस का धन गंजा सर्प बना दिया जायेगा, जो उस के गले का हार बन जायेगा। और उसे अपने जबड़ों से पकड़ लेगा, तथा कहेगा कि मैं तुम्हारा कोष हूँ, मैं तुम्हारा धन हूँ। (सहीह बुख़ारी: 4565)

3 अर्थात् प्रलय के दिन वही अकेला सब का स्वामी होगा।

4 यह बात यहूदियों ने कही थी। (देखिये: सूरह बकरह आयत: 254)

विश्वास न करें, जब तक हमारे समक्ष ऐसी बलि न दें जिसे अग्नि खा^[1] जाये। (हे नबी!) आप कह दें कि मुझ से पूर्व बहुत से रसूल खुली निशानियाँ और वह चीज़ लाये जो तुम ने कही। तो तुम ने उन की हत्या क्यों कर दी, यदि तुम सच्चे हो तो?

184. फिर यदि इन्होंने^[2] आप को झुठला दिया तो आप से पहले भी बहुत से रसूल झुठलाये गये हैं, जो खुली निशानियाँ तथा (आकाशीय) ग्रंथ और प्रकाशक पुस्तकें लाये।^[3]

185. प्रत्येक प्राणी को मौत का स्वाद चखना है। और तुम्हें तुम्हारे (कर्माँ का) प्रलय के दिन भरपूर प्रतिफल दिया जायेगा तो (उस दिन) जो व्यक्ति नरक से बचा लिया गया तथा स्वर्ग में प्रवेश पा गया^[4], तो वह सफल हो गया। तथा संसारिक जीवन धोखे की पूंजी के सिवा कुछ नहीं है।

186. (हे ईमान वालो!) तुम्हारे धनों तथा प्राणों में तुम्हारी परीक्षा अवश्य ली जायेगी। और तुम उन से अवश्य बहुत सी दुःखद बातें सुनोगे जो तुम

لِرَسُولٍ حَتَّىٰ يَأْتِيَنَا بَرِيَانٌ تَأْكُلُهُ النَّارُ
قُلْ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّن قَبْلِ يَأْتِيَنَا
تَلْمِذَةٌ فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ٥

قُلْ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّن قَبْلِكَ
جَاءُوا بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ٥

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ وَإِنَّمَا تُوَفَّقُونَ
جُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَمَنْ زُحِرَ عَنْ
النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ وَمَا
الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ٥

لَتَسْبُكُونَ فِي أَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ
وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ
قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا أَذَىٰ كَثِيرًا

1 अर्थात आकाश से अग्नि आकर जला दे, जो उस के स्वीकार्य होने का लक्षण है।

2 अर्थात यहूद आदि ने।

3 प्रकाशक जो सत्य को उजागर कर दे।

4 अर्थात सत्य आस्था और सत्कर्मों के द्वारा इस्लाम के नियमों का पालन कर के।

से पूर्व पुस्तक दिये गये। तथा उन से जो मिश्रणवादी^[1] हैं। तथा यदि तुम ने सहन किया, और (अल्लाह से) डरते रहे तो यह बड़े साहस की बात होगी।

187. तथा (हे नबी!) याद करो जब अल्लाह ने उन से दृढ़ वचन लिया था जो पुस्तक^[2] दिये गये कि तुम अवश्य इसे लोगों के लिये उजागर करते रहोगे और उसे छुपावोगे नहीं। तो उन्होंने ने इस (वचन) को अपने पीछे डाल दिया (भंग कर दिया) और उस के बदले तनिक मूल्य खरीद^[3] लिया। तो वह कितनी बुरी चीज़ खरीद रहे हैं?!
188. (हे नबी!) जो^[4] अपने कर्तूतों पर प्रसन्न हो रहे हैं और चाहते हैं कि उन कर्मों के लिये सराहे जायें जो उन्हीं ने नहीं किये। आप उन्हें कदापि न समझें कि यातना से बचे रहेंगे। तथा उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

وَإِنْ تَصِيبُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ ذَلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۝

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُونَهُ فَنَبَذُوهُ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَيَسَّ مَا يَشْتَرُونَ ۝

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا أُوتُوا وَيُحِبُّونَ أَنْ يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا وَلَا يَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِنَ الْعَذَابِ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

- 1 मिश्रणवादी अर्थात् मूर्तियों के पुजारी, जो पूजा अर्चना तथा अल्लाह के विशेष गुणों में अन्य को उस का साझी बनाते हैं।
- 2 जो पुस्तक दिये गये, अर्थात्: यहूद और नसारा (ईसाई) जिन को तौरात तथा इंजील दी गयी।
- 3 अर्थात् तुच्छ संसारिक लाभ के लिये सत्य का सौदा करने लगे।
- 4 अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि कुछ द्विधावादी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में आप युद्ध के लिये निकलते तो आप का साथ नहीं देते थे। और इस पर प्रसन्न होते थे और जब आप वापिस आते तो बहाने बनाते और शपथ लेते थे। और जो नहीं किया है उस की सराहना चाहते थे। इसी पर यह आयत उतरती। (सहीह बुखारी -4567)

189. तथा आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही का है। तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
190. वस्तुतः आकाशों तथा धरती की रचना, और रात्री तथा दिवस के एक के पश्चात् एक आते जाते रहने में मतिमानों के लिये बहुत सी निशानियाँ (लक्षण)^[1] हैं।
191. जो खड़े, बैठे तथा सोये (प्रत्येक स्थिति में) अल्लाह की याद करते, तथा आकाशों और धरती की रचना में विचार करते रहते हैं। (कहते हैं:) हे हमारे पालनहार! तू ने इसे^[2] व्यर्थ नहीं रचा है। हमें अग्नि के दण्ड से बचा ले।
192. हे हमारे पालनहार! तू ने जिसे नरक में झोंक दिया, तो उसे अपमानित कर दिया, और अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।
193. हे हमारे पालनहार! हम ने एक^[3] पुकारने वाले को ईमान के लिये पुकारते हुये सुना, कि अपने पालनहार पर ईमान लाओ, तो हम ईमान ले आये, हे हमारे पालनहार! हमारे पाप क्षमा कर दे, तथा हमारी बुराईयों को अन देखी

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاللّٰهُ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ
الْيَوْمِ وَاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ اٰيٰتٍ لِّاُولِي الْاَبْصٰرِ ۝

الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ اللّٰهَ قِيَمًا وَّقَعُوْدًا وَّعَلٰى
جُوهِيْهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا
سُبْحٰنَكَ قِيَمًا عَدَابِ النَّارِ ۝

رَبَّنَا اِنَّكَ مِنْ تَدْخِيْلِ النَّارِ فَقَدْ اَخْرَجْتَهُ
وَاللّٰظِلِّيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ۝

رَبَّنَا اِنَّا سَمِعْنَا مُتَدٰرِيًا يَنْتَادِي
لِلْاِيْمٰنِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا رَبَّنَا
فَاغْضِبْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكْفِرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا
وَتَوَقَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ۝

1 अर्थात् अल्लाह के राज्य, स्वामित्व तथा एकमात्र पूज्य होने के।

2 अर्थात् यह विचित्र रचना तथा व्यवस्था अकारण नहीं तथा आवश्यक है कि इस जीवन के पश्चात् भी कोई जीवन हो। जिस में इस जीवन के कर्मों के परिणाम सामने आयें।

3 अर्थात् अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को।

कर दे, तथा हमारी मौत पुनीतों
(सदाचारियों) के साथ हो।

194. हे हमारे पालनहार! हम को, तू ने
अपने रसूलों द्वारा जो वचन दिया
है, हमें वह प्रदान कर, तथा प्रलय
के दिन हमें अपमानित न कर,
वास्तव में तू वचन विरोधी नहीं है।

195. तो उन के पालनहार ने उन की
(प्रार्थना) सुन ली, (तथा कहा कि):
निस्संदेह मैं किसी कार्यकर्ता के कार्य
को व्यर्थ नहीं करता^[1], नर हो
अथवा नारी। तो जिन्होंने ने हिजरत
(प्रस्थान) की, तथा अपने घरों से
निकाले गये, और मेरी राह में सताये
गये और युद्ध किया, तथा मारे गये,
तो हम अवश्य उन के दोषों को
क्षमा कर देंगे। तथा उन्हें ऐसे स्वर्गों
में प्रवेश देंगे जिन में नहरें बह रही
हैं। यह अल्लाह के पास से उन का
प्रतिफल होगा। और अल्लाह ही के
पास अच्छा प्रतिफल है।

196. हे नबी! नगरों में काफिरों का
(सुख सुविधा के साथ) फिरना आप
को धोखे में न डाल दे।

197. यह तनिक लाभ^[2] है, फिर उन का
स्थान नरक है। और वह क्या ही
बुरा आवास है!

رَبَّنَا وَإِنَّا تَائِبُونَ وَعَدْتَنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا نَحْزِنَا يَوْمَ
الْقِيَامَةِ إِنَّكَ لَأَخْلِفُ الْميعَادَ ۝

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ
مِّنْكُمْ مِّمَّنْ ذَكَرْتُ وَأَمْثَلِي بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ
فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِنْ ديارِهِمْ وَأُؤْتُوا
فِي سَبِيلِي وَقُتِلُوا أَوْ فُتِلُوا أَلَا يَكْفُرَنَّ عَنْهُمْ
سَيِّئَاتِهِمْ وَلَآ ذُنُوبُهُمْ جُنُوبٌ يُجْرَىٰ مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ كُتِبَ لَهُمْ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَأَلَّهُ عِنْدَهُ
حُسْنُ التَّوَابِ ۝

لَا يَغُرُّكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ۝

مَتَاعٌ قَلِيلٌ لِّتَسْتَمُوا لَهُمْ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ
الْمِهَادُ ۝

1 अर्थात अल्लाह का यह नियम है कि वह सत्कर्म अकारथ नहीं करता, उस का प्रतिफल अवश्य देता है।

2 अर्थात सामयिक संसारिक आनन्द है।

198. परन्तु जो अपने पालनहार से डरे तो उन के लिये ऐसे स्वर्ग हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। जिन में वह सदावासी होंगे। यह अल्लाह के पास से अतिथि सत्कार होगा। तथा जो अल्लाह के पास है पुनीतों के लिये उत्तम है।

199. और निःसंदेह अहले किताब (अर्थात् यहूद और ईसाई) में से कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं। और तुम्हारी ओर जो उतारा गया है उस पर भी अल्लाह से डरे रहते हैं। और उस की आयतों को थोड़ी थोड़ी कीमतों पर बेचते भी नहीं।^[1] उन का बदला उन के रब के पास है। निःसंदेह अल्लाह जल्दी ही हिसाब लेने वाला है।

200. हे ईमान वालो! तुम धैर्य रखो।^[2] और एक दूसरे को थामे रखो। और जिहाद के लिये तैयार रहो। और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम अपने उद्देश्य को पहुँचो।

لِئِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِمَنْ يَرْتَدَّ

وَأَنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ وَمِمَّا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ خُبْرٌ مِمَّا لَمْ يَسْتُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ شَيْئًا قَلِيلًا ۗ أُولَٰئِكَ لَمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

- 1 अर्थात् यह यहूदियों और ईसाईयों का दूसरा समुदाय है जो अल्लाह पर और उस की किताबों पर सहीह प्रकार से ईमान रखता था। और सत्य को स्वीकार करता था। तथा इस्लाम और रसूल तथा मुसलमानों के विपरीत साजिशें नहीं करता था। और चन्द टकों के कारण अल्लाह के आदेशों में हेर फेर नहीं करता था।
- 2 अर्थात् अल्लाह और उस के रसूल की फरमाँ बरदारी कर के और अपनी मनमानी छोड़ कर धैर्य करो। और यदि शत्रु से लड़ाई हो जाये तो उस में सामने आने वाली परेशानियों पर डटे रहना बहुत बड़ा धैर्य है। इसी प्रकार शत्रु के बारे में सदेव चोकन्ना रहना भी बहुत बड़े साहस का काम है। इसी लिये हदीस में आया है कि अल्लाह के रास्ते में एक दिन मोरचे बन्द रहना इस दुनिया और उस की तमाम चीजों से उत्तम है। (सहीह बुखारी)

सूरह निसा - 4



यह सूरह मद्नी है, इस में 176 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे मनुष्यों! अपने^[1] उस पालनहार से डरो, जिस ने तुम को एक जीव (आदम) से उत्पन्न किया, तथा उसी से उस की पत्नी (हव्वा) को उत्पन्न किया, और उन दोनों से बहुत से नर नारी फैला दिये। उस अल्लाह से डरो जिस के द्वारा तुम एक दूसरे से (अधिकार) माँगते हो, तथा रक्त संबंधों को तोड़ने से डरो, निस्संदेह अल्लाह तुम्हारा निरीक्षक है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالرَّحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا

2. तथा (हे संरक्षको!) अनार्यों को उन

وَالْوَالِدَاتُ لِأَمْوَالِهِمْ وَلَا تَتَّبِعُوا الْوَأْيَيْنِ

- 1 यहाँ से सामाजिक व्यवस्था का नियम बताया गया है कि विश्व के सभी नर नारी एक ही माता पिता से उत्पन्न किये गये हैं। इस लिये सब समान हैं। और सब के साथ अच्छा व्यवहार तथा भाई चारे की भावना रखनी चाहिये। और सब के अधिकार की रक्षा करनी चाहिये। यह उस अल्लाह का आदेश है जो तुम्हारे मूल का उत्पत्तिकार है। और जिस के नाम से तुम एक दूसरे से अपना अधिकार माँगते हो कि अल्लाह के लिये मेरी सहायता करो। फिर इस साधारण संबंध के सिवा गर्भाशयिक अर्थात् समीपवर्ती परिवारिक संबंध भी हैं जिसे जोड़ने पर अधिक बल दिया गया है। एक हदीस में है कि संबंध भंगी स्वर्ग में नहीं जायेगा। (सहीह बुखारी - 5984, मुस्लिम- 2555) इस आयत के पश्चात् कई आयतों में इन्हीं अल्लाह के निर्धारित किये मानव अधिकारों का वर्णन किया जा रहा है।

के धन चुका दो, और (उन की) अच्छी चीज़ से (अपनी) बुरी चीज़ न बदलो, और उन के धन अपने धनों में मिला कर न खाओ, निस्संदेह वह बहुत बड़ा पाप है।

3. और यदि तुम डरो कि अनाथ (बालिकाओं) के विषय^[1] में न्याय नहीं कर सकोगे तो नारियों में से जो भी तुम्हें भायें, दो से, तीन से चार तक से विवाह कर लो। और यदि डरो कि न्याय नहीं करोगे तो एक ही से करो, अथवा जो तुम्हारे स्वामित्व^[2] में हों उसी पर बस करो। यह अधिक समीप है कि अन्याय न करो।
4. तथा स्त्रियों को उन के महर (विवाह उपहार) सप्रसन्नता से चुका दो। फिर यदि वह उस में से कुछ तुम्हें अपनी इच्छा से दे दें तो प्रसन्न हो कर खाओ।
5. तथा अपने धन जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिये जीवन स्थापन का साधन बनाया है अज्ञानों को न^[3] दो। हाँ, उस में से

بِالْيَتِيمِ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ إِلَىٰ أَمْوَالِكُمْ
إِنَّهُ كَانَ حُوبًا كَبِيرًا ۝

وَلَنْ خِفْتُمْ إِلَّا تَنْسَوُا فِي الْيَسْتَبَىٰ
فَأَنْتُمْ حَوَامِلُ مَا ظَلَمَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ
مَشْنَىٰ وَتِلْكَ وَرُبْعٌ ۚ وَإِنْ خِفْتُمْ إِلَّا تَعْدِلُوا
فَوَاحِدَةٌ أَوْ مَمْلُوكَةٌ ۚ أَيَّمَاكُمُ ذَلِكُمُ آدَنَىٰ
الْأَعْوَابِ ۝

وَأْتُوا النِّسَاءَ صَدُقَاتِهِنَّ نِحْلَةً ۚ فَإِنْ طِبْنَ
لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِنْهُنَّ فَكُلُوهُنَّ حَبِيبًا
مَّرِيئًا ۝

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَاءَ أَمْوَالَكُمُ الَّتِي جَعَلَ
اللَّهُ لَكُمْ قِيَامًا وَارزُقُوهُمْ فِيهَا وَاكْسُوهُمْ

1 अरब में इस्लाम से पूर्व अनाथ बालिका का संरक्षक यदि उस के खुजूर का बाग़ हो तो उस पर अधिकार रखने के लिये उस से विवाह कर लेता था। और उस में उसे कोई रुचि नहीं होती थी। इसी पर यह आयत उतरती। (सहीह बुखारी हदीस नं०, 4573)

2 अर्थात् युद्ध में बंदी बनाई गई दासी।

3 अर्थात् धन, जीवन स्थापन का साधन है। इस लिये जब तक अनाथ चतुर तथा व्यस्क न हो जायें और अपने लाभ की रक्षा न कर सकें उस समय तक उन का धन उन के नियंत्रण में न दो।

उन्हें खाना, कपड़ा दो, और उन से भली बात बोलो।

6. तथा अनाथों की परीक्षा लेते रहो यहाँ तक कि वह विवाह की आयु को पहुँच जायें। तो यदि तुम उन में सुधार देखो तो उन का धन उन को समर्पित कर दो। और उसे अपव्यय तथा शीघ्रता से इस लिये न खाओ कि वह बड़े हो जायेंगे। और जो धनी हो तो वह बचे, तथा जो निर्धन हो तो वह नियमानुसार खा ले। तथा जब तुम उन का धन उन के हवाले करो तो उन पर साक्षी बना लो। और अल्लाह हिसाब लेने के लिये काफी है।

7. और पुरुषों के लिये उस में से भाग है जो माता पिता तथा समीपवर्तियों ने छोड़ा हा, तथा स्त्रियों के लिये उस में से भाग है जो माता पिता तथा समीपवर्तियों ने छोड़ा हो, वह थोड़ा हो अथवा अधिक, सब के भाग^[1] निर्धारित है।

8. और जब मीरास विभाजन के समय

وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝

وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ فَإِنْ
 اسْتَمْتُمْ مِنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوا إِلَيْهِمْ
 أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا وَبِدَارًا
 أَنْ يَكْبَرُوا وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا
 فَلْيَسْتَعْفِفْ ۖ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ
 بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ
 فَأَشْهَدُوا عَلَيْهِمْ ۚ وَكفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ۝

لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ
 وَالْأَقْرَبُونَ ۚ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا
 تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ
 أَوْ كَثُرَ ۚ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ۝

وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَىٰ

- 1 इस्लाम से पहले साधारणतः यह विचार था कि पुत्रियों का धन और संपत्ति की विरासत (उत्तराधिकार) में कोई भाग नहीं। इस में इस कुरीति का निवारण किया गया और यह नियम बना दिया गया कि अधिकार में पुत्र और पुत्री दोनों समान हैं। यह इस्लाम ही की विशेषता है जो संसार के किसी धर्म अथवा विधान में नहीं पाई जाती। इस्लाम ही ने सर्वप्रथम नारी के साथ न्याय किया, और उसे पुरुषों के बराबर अधिकार दिया है।

समीपवर्ती^[1], तथा अनाथ और निर्धन उपस्थित हों तो उन्हें भी थोड़ा बहुत दे दो, तथा उन से भली बात बोलो।

9. और उन लोगों को डरना चाहिये, जो यदि अपने पीछे निर्बल संतान छोड़ जायें, और उन के नाश होने का भय हो, अतः उन्हें चाहिये कि अल्लाह से डरें, और सीधी बात बोलें।
10. जो लोग अनाथों का धन अत्याचार से खाते हैं वह अपने पेटों में आग भरते हैं, और शीघ्र ही नरक की अग्नि में प्रवेश करेंगे।
11. अल्लाह तुम्हारी संतान के संबंध में तुम्हें आदेश देता है कि पुत्र का भाग दो पुत्रियों के बराबर है। और यदि पुत्रियाँ दो^[2] से अधिक हों तो उन के लिये छोड़े हुये धन का दो तिहाई (भाग) है। और यदि एक ही हो तो उस के लिये आधा है। और उस के माता पिता के लिये, दोनों में से प्रत्येक के लिये उस में से छठा भाग है जो छोड़ा हो, यदि उस के कोई संतान^[3] हो। और यदि उस के कोई संतान (पुत्र या पुत्री) न हों और उस का वारिस उस का पिता हो,

وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ فَأَرْضُوا لَهُمْ مِمَّنْ لَكُمْ مَالٌ فَآوُوا إِلَيْهِمْ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ فَأَرْضُوا لَهُمْ مِمَّنْ لَكُمْ مَالٌ فَآوُوا إِلَيْهِمْ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ فَأَرْضُوا لَهُمْ مِمَّنْ لَكُمْ مَالٌ فَآوُوا إِلَيْهِمْ

وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ فَأَرْضُوا لَهُمْ مِمَّنْ لَكُمْ مَالٌ فَآوُوا إِلَيْهِمْ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ فَأَرْضُوا لَهُمْ مِمَّنْ لَكُمْ مَالٌ فَآوُوا إِلَيْهِمْ

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا وَسَيَصْلُونَ سَعِيرًا ۝

يُؤْتِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمُ الذَّكَرَ مِثْلَ الْوِثْقِ وَالْأُنثَىٰ مِثْلَ النُّعْتِ فَإِنْ كُنْتُمْ فَاقِينَ فَالْوِثْقُ مِثْلُ ثَمَرَاتِ نَخْلٍ بَنِيٍّ إِذَا تَمَرَّتْ مِنْ جَنْبِهَا وَوِثْقَانِ كَالثَّقَلَيْنِ مِنَ الْأَثْقَالِ وَالثَّقَلَيْنِ مِنَ الْأَثْقَالِ وَإِنْ كُنْتُمْ غَابِقِينَ فَلِلْأُنثَىٰ مِثْلُ مَا لِلذَّكَرِ وَكَذَلِكَ أَتَى الَّذِينَ لَمْ يَكُنْ لَهُمْ بَنُونَ وَلِلَّذِينَ كَانَتْ لَهُمْ نِسَاءٌ مِنْ دُونِ أَوْلَادِهِمْ لِأَنْتُمْ نِسَاءٌ فَمِثْلُ مَا لِلذَّكَرِ وَكَذَلِكَ أَتَى الَّذِينَ لَمْ يَكُنْ لَهُمْ بَنُونَ وَلِلَّذِينَ كَانَتْ لَهُمْ نِسَاءٌ مِنْ دُونِ أَوْلَادِهِمْ لِأَنْتُمْ نِسَاءٌ فَمِثْلُ مَا لِلذَّكَرِ وَكَذَلِكَ أَتَى الَّذِينَ لَمْ يَكُنْ لَهُمْ بَنُونَ

- 1 इन से अभिप्राय वह समीपवर्ती है जिन का मीरास में निर्धारित भाग न हो। जैसे अनाथ, पौत्र तथा पौत्री आदि। (सहीह बुखारी- 4576)
- 2 अर्थात् केवल पुत्रियाँ हों, तो दो हों अथवा दो से अधिक हों।
- 3 अर्थात् न पुत्र हो और न पुत्री।

तो उस की माता का तिहाई (भाग)^[1] है, (और शेष पिता का)। फिर यदि (माता पिता के सिवा) उस के एक से अधिक भाई अथवा बहनें हों तो उस की माता के लिये छठा भाग है जो वसियत^[2] तथा कर्ज चुकाने के पश्चात् होगा। तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिताओं और पुत्रों में से कौन तुम्हारे लिये अधिक लाभदायक है। वास्तव में अल्लाह अति बड़ा तथा गुणी, ज्ञानी तत्वज्ञ है।

12. और तुम्हारे लिये उस का आधा है जो तुम्हारी पत्नियाँ छोड़ जायें, यदि उन के कोई संतान (पुत्र या पुत्री) न हो। फिर यदि उन की कोई संतान हो तो तुम्हारे लिये उस का चौथाई है जो वह छोड़ गई हों, वसियत (उत्तरदान) या ऋण चुकाने के पश्चात् और (पत्नियों) के लिये उस का चौथाई है जो (माल आदि) तुम ने छोड़ा हो, यदि तुम्हारे कोई संतान (पुत्र या पुत्री) न हो। फिर यदि तुम्हारे कोई संतान हो तो उन के लिये उस का आठवा^[3] (भाग)

وَلَكُمْ يَصُفُّ مَا تَرَكُوا زَوْجَاتِكُمْ إِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُنَّ
وَلَكِنَّ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمْ الرُّبْعُ مِمَّا تَرَكْنَ
مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِينَ بِهَا أَوْ دِينَ وَاللَّهُ الرَّبُّ
مِمَّا تَرَكْتُمْ إِنْ لَمْ يَكُنْ لَكُمْ وَلَدٌ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ
وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّلُثُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ
يُوصُونَ بِهَا أَوْ دِينَ وَلَنْ كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كَلِمَةً
أَوْ امْرَأَةً وَلَا آخَرَ أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِمَّا
السُّبْحِ إِنْ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي
الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصَى بِهَا أَوْ دِينَ غَيْرِ
مُضَارَّةٍ وَصِيَّةٍ مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ ٥

- 1 और शेष पिता का होगा। भाई, बहनों को कुछ नहीं मिलेगा।
2 वसियत का अर्थ उत्तरदान है, जो एक तिहाई या उस से कम होना चाहिये परन्तु वारिस के लिये उत्तरदान नहीं है। (देखिये: त्रिमिज़ी- 975) पहले ऋण चुकाया जायेगा, फिर वसियत पूरी की जायेगी, फिर माँ का छठा भाग दिया जायेगा।
3 यहाँ यह बात विचारणीय है कि जब इस्लाम में पुत्र पुत्री तथा नर नारी बराबर है, तो फिर पुत्री को पुत्र के आधा, तथा पत्नी को पति के आधा भाग क्यों

है, जो तुम ने छोड़ा है, वसियत (उत्तरदान) जो तुम ने किया हो पूरा करने अथवा ऋण चुकाने के पश्चात् और यदि किसी ऐसे पुरुष या स्त्री का वारिस होने की बात हो जो (कलाला)^[1] हो, तथा (दूसरी माता से) उस का भाई अथवा बहन हो तो उन में से प्रत्येक के लिये छठा (भाग) है। फिर यदि (माँ जाये) (भाई या बहनें) इस से अधिक हों तो वह सब तिहाई (भाग) में (बराबर के) साझी होंगे। यह सब वसियत (उत्तरदान) तथा ऋण चुकाने के पश्चात् होगा। और किसी को हानि नहीं पहुँचाई जायेगी। यह अल्लाह की ओर से वसियत है। और अल्लाह ज्ञानी तथा हिक्मत वाला है।

दिया गया है? इस का कारण यह है कि पुत्री जब युवती और विवाहित हो जाती है, तो उसे अपने पति से महर (विवाह उपहार) मिलता है, और उस के तथा उस की संतान के यदि हो, तो भरण पोषण का भार उस के पति पर होता है। इस के विपरीत पुत्र युवक होता है तो विवाह करने पर अपनी पत्नी को महर (विवाह उपहार) देने के साथ ही उस का तथा अपनी संतान के भरण पोषण का भार भी उसी पर होता है। इसी लिये पुत्र को पुत्री के भाग का दुगना दिया जाता है, जो न्यायोचित है।

1 कलाल: वह पुरुष अथवा स्त्री है जिस के न पिता हो और न पुत्र-पुत्री। अब इस के वारिस तीन प्रकार के हो सकते हैं:

1. सगे भाई बहन।

2. पिता एक तथा माताएँ अलग हों।

3. माता एक तथा पिता अलग हों। यहाँ इसी प्रकार का आदेश वर्णित किया गया है। ऋण चुकाने के पश्चात् बिना कोई हानि पहुँचाये, यह अल्लाह की ओर से आदेश है, तथा अल्लाह अति ज्ञानी सहनशील है।

13. यह अल्लाह की (निर्धारित) सीमायें हैं, और जो अल्लाह तथा उस के रसूल का आज्ञाकारी रहेगा तो उसे ऐसे स्वर्गों में प्रवेश देगा जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। जिन में वह सदावासी होंगे। तथा यही बड़ी सफलता है।

14. और जो अल्लाह तथा उस के रसूल की अवज्ञा तथा उस की सीमाओं का उल्लंघन करेगा तो उस को नरक में प्रवेश देगा। जिस में वह सदावासी होगा। और उसी के लिये अपमानकारी यातना है।

15. तथा तुम्हारी स्त्रियों में से जो व्याभिचार कर जायें तो उन पर अपनों में से चार साक्षी लाओ। फिर यदि वह साक्ष्य (गवाही) दें तो उन्हें घरों में बन्द कर दो यहाँ तक कि उन को मौत आ जाये अथवा अल्लाह उन के लिये कोई अन्य^[1] राह बना दे।

16. और तुम में से जो दो व्यक्ति ऐसा करें तो दोनों को दुख पहुँचाओ। यहाँ तक कि वह तौबा (क्षमा याचना) कर लें और अपना सुधार कर लें। तो उन को छोड़ दो। निश्चय अल्लाह बड़ा क्षमाशील दयावान् है।

تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٣﴾

وَمَنْ يُعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ
يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ
مُهِينٌ ﴿١٤﴾

وَالَّذِي يَأْتِيَنَّكَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِسَائِكُمْ
فَأَسْتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةٌ مِنْكُمْ
شَاهِدًا وَقَامِسُكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ حَتَّى
يَتَوَفَّوهُنَّ الْمَوْتُ أَوْ يَجْعَلَ اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيلًا ﴿١٥﴾

وَالَّذِينَ يَأْتِيَنَّاهُمْ مِنْكُمْ فَادُّوهُمْ
وَإِنْ تَابَا وَأَصْلَحَا فَأَعْرِضُوا عَنْهُمَا
إِنَّ اللَّهَ كَانَ تَوَّابًا
تَّحِبُّمًا ﴿١٦﴾

1 यह आदेश इस्लाम के आरंभिक युग व्यभिचार का साम्यिक दण्ड था इस का स्थायी दण्ड सूरह नूर आयत 2 में आ रहा है। जिस के उतरने पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: अल्लाह ने जो वचन दिया था उसे पूरा कर दिया। उसे मुझ से सीख लो।

17. अल्लाह के पास उन्हीं की तौब: (क्षमा याचना) स्वीकार है, जो अन जाने में बुराई कर जाते हैं, फिर शीघ्र ही क्षमा याचना कर लेते हैं, तो अल्लाह उन की तौब: (क्षमायाचना) स्वीकार कर लेता है, तथा अल्लाह बड़ा ज्ञानी गुणी है।

18. और उन की तौब: (क्षमा याचना) स्वीकार्य नहीं, जो बुराईयाँ करते रहते हैं, यहाँ तक कि जब उन में से किसी की मौत का समय आ जाता है, तो कहता है, अब मैं ने तौब: कर ली, और न ही उन की जो काफिर रहते हुये मर जाते हैं, इन्हीं के लिये हम ने दुखःदायी यातना तैयार कर रखी है।

19. हे ईमान वालो! तुम्हारे लिये हलाल (वैध) नहीं है कि बलपूर्वक स्त्रियों के वारिस बन जाओ।^[1] तथा उन्हें इस लिये न रोको कि उन्हें जो दिया हो उस में से कुछ मार लो। परन्तु यह कि खुली बुराई कर जायें। तथा उन के साथ उचित^[2] व्यवहार से रहो। फिर यदि वह तुम्हें अप्रिय लगे तो संभव है कि तुम किसी चीज़ को अप्रिय समझो, और अल्लाह ने उस में

إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِنْ قَرِيبٍ فَأُولَئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ⑩

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ حَتَّى إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي تُبْتُ النَّاسَ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كَفَارًا أُولَئِكَ أَخَعَدُ تَأْلَمَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ⑩

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرْتَدُّوا النِّسَاءَ كَرِهًا وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ لِيَتَذَكَّرْنَ مِنْكُمْ بَعْضَ مَا أَنْبَأْتُمُوهُنَّ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّكُمْ بِفَاحِشَةٍ مُّبِينَةٍ وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ فَمَسَى أَنْ تَكْرَهُوا سَيِّئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا ⑩

- 1 हदीस में है कि जब कोई मर जाता तो उस के वारिस उस की पत्नी पर भी अधिकार कर लेते थे इसी को रोकने के लिये यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी - 4579)
- 2 हदीस में है कि पूरा ईमान उस में है जो सुशील हो। और भला वह है जो अपनी पत्नियों के लिये भला हो। (त्रिमिज़ी- 1162)

बड़ी भलाई^[1] रख दी हो।

20. और यदि तुम किसी पत्नी के स्थान पर किसी दूसरी पत्नी से विवाह करना चाहो और तुम ने उन में से एक को (सोने चाँदी का) ढेर भी (महर में) दिया हो तो उस में से कुछ न लो। क्या तुम चाहते हो कि उसे आरोप लगा कर तथा खुले पाप द्वारा ले लो?

21. तथा तुम उसे ले भी कैसे सकते हो, जब कि तुम एक दूसरे से मिलन कर चुके हो। तथा उन्होंने तुम से (विवाह के समय) दृढ़ वचन लिया है।

22. और उन स्त्रियों से विवाह^[2] न करो जिन से तुम्हारे पिताओं ने विवाह किया हो, परन्तु जो पहले हो चुका।^[3] वास्तव में यह निर्लज्जा की तथा अप्रिय बात और बुरी रीति थी।

23. तुम पर^[4] हराम (अवैध) कर दी

وَأَنَّ أَرْوَاحَهُمْ فِي بُحُورٍ مَّكَانَ رُؤُوسِهِمْ وَأَنَّ يَدَهُمْ
إِخْتِطَافُهُمْ وَقَطَارًا أَفَلَا تَأْخُذُ وَآمِنَةٌ سَيِّئًا
تَأْخُذُونَ وَنَهَىٰ بَعْضَهُنَّ أَنْ تَأْتِيَ بَعْضَهُنَّ

وَكَيْفَ تَأْخُذُونَ وَنَهَىٰ وَقَدْ أَغْضَىٰ بَعْضُكُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ
وَأَخَذَ مِنْكُمْ يَمِينًا وَأَعْلَىٰ

وَأَنَّكُمْ إِذَا كُنْتُمْ فِي الْبَيْتِ الْأَمَّا قَدْ سَلَفَ
إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَمَقْتًا وَسَاءَ سَبِيلًا

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ وَعَوَّالَتُكُمْ

1 अर्थात् पत्नी किसी कारण न भाये तो तुरन्त तलाक़ न दे दो बल्कि धैर्य से काम लो।

2 जैसा कि इस्लाम से पहले लोग किया करते थे। और हो सकता है कि आज भी संसार के किसी कोने में ऐसा होता हो। परन्तु यदि भोग करने से पहले बाप ने तलाक़ दे दी हो तो उस स्त्री से विवाह किया जा सकता है।

3 अर्थात् इस आदेश के आने से पहले जो कुछ हो गया अल्लाह उसे क्षमा करने वाला है।

4 दादियाँ तथा नानियाँ भी इसी में आती हैं। इसी प्रकार पुत्रियों में अपनी संतान की नीचे तक की पुत्रियाँ, और बहनों में सगी हों या पिता अथवा माता से हों,

गई है: तुम्हारी मातायें, तथा तुम्हारी पुत्रियाँ, और तुम्हारी बहनें, और तुम्हारी फूफियाँ, और तुम्हारी मौसियाँ और भतीजियाँ, और भाँजियाँ, तथा तुम्हारी वह मातायें जिन्होंने ने तुम्हें दूध पिलाया हो, तथा दूध पीने से संबंधित बहनें, और तुम्हारी पत्नियों की मातायें, तथा तुम्हारी पत्नियों की पुत्रियाँ जिन का पालन पोषण तुम्हारी गोद में हुआ हो, जिन पत्नियों से तुम ने संभोग किया हो, और यदि उन से संभोग न किया हो तो तुम पर कोई दोष नहीं। तथा तुम्हारे सगे पुत्रों की पत्नियाँ, और यह^[1] कि तुम दो बहनों को एकत्र करो, परन्तु जो हो चुका। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

24. तथा उन स्त्रियों से (विवाह वर्जित है) जो दूसरों के निकाह में हों।

وَحَلَائِكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأُمَّهِنَّ الَّتِي
أَرْضَعْتَكُمْ وَأَخَوَاتِكُمْ مِنَ الرِّضَاعَةِ وَأُمَّهَتْ
بِسَائِكُمْ وَرَبَائِبُكُمُ الَّتِي فِي حُجُورِكُمْ مِنْ سَائِكُمْ
الَّتِي دَخَلْتُمْ بِهِنَّ وَإِنْ كُنْتُمْ تَوَدُّونَ إِدْخَالَتُمْ بِهِنَّ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ وَحَلَائِلُ أَبْنَائِكُمُ الَّذِينَ مِنْ
أَصْلَابِكُمْ وَأَنْ تَتَّخِذُوا مِنَ الْأَمَاقِدِ
سَلَفًا إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا مَلَكَتْ

फूफियों में पिता तथा दादाओं की बहनें, और मौसियों में माताओं तथा नानियों की बहनें, तथा भतीजी और भाँजी में उन की संतान भी आती है। हदीस में है कि दूध से वह सभी रिश्ते हराम हो जाते हैं जो गोत्र से हराम होते हैं। (सहीह बुखारी- 5099 मुस्लिम- 1444)।

पत्नी की पुत्री जो दूसरे पति से हो उसी समय हराम (वर्जित) होगी जब उस की माता से संभोग किया हो, केवल विवाह कर लेने से हराम नहीं होगी। जैसे दो बहनों को निकाह में एकत्र करना वर्जित है उसी प्रकार किसी स्त्री के साथ उस की फूफी अथवा मौसी को भी एकत्र करना हदीस से वर्जित है। (देखिये: सहीह बुखारी-5109-सहीह मुस्लिम-1408)

1 अर्थात् जाहिलियत के युग में।

परन्तु तुम्हारी दासियाँ^[1] जो (युद्ध में) तुम्हारे हाथ आई हों। (यह) तुम पर अल्लाह ने लिख दिया^[2] है। और इन के सिवा (स्त्रियाँ) तुम्हारे लिये हलाल (उचित) कर दी गयी हैं। (प्रतिबंध यह है कि) अपने धनों द्वारा व्यभिचार से सुरक्षित रहने के लिये विवाह करो। फिर उन में से जिस से लाभ उठाओ उन्हें उन का महर (विवाह उपहार) अवश्य चुका दो। तथा महर (विवाह उपहार) निर्धारित करने के पश्चात् (यदि) आपस की सहमति से (कोई कमी या अधिकता कर लो) तो तुम पर कोई दोष नहीं। निःसंदेह अल्लाह अति ज्ञानी तत्त्वज्ञ है।

25. और जो व्यक्ति तुम में से स्वतंत्र ईमान वालियों से विवाह करने की सक्त न रखे तो वह अपने हाथों में आई हुई अपनी ईमान वाली दासियों से (विवाह कर ले)। तथा अल्लाह तुम्हारे ईमान को अधिक जानता है। तुम आपस में एक ही हो।^[3] अतः

إِنَّمَا لَكُمْ بِرَبِّ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَاجِلٌ لَكُمْ مَّا وَرَاءَ
ذَلِكَ أَنْ تَتَّبِعُوا بِأَمْوَالِكُمْ مُحْصِينَ عَنِ
مُسْفِحِينَ فَمَا اسْتَعْمَرْتُمْ بِهِ مِنْهُنَّ فَآتُوهُنَّ
أُجُورَهُنَّ فَرِيضَةً وَأَلْجَانًا عَلَيْكُمْ فِيمَا تَرَاوَعْتُمْ
بِهِ مِنْ بَعْدِ الْفَرِيضَةِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا

وَمَنْ لَمْ يَسْطِرْ وَمَنْ لَمْ يَطُولْ أَنْ يَكُنْ مِنَ الْمُحْصَنَاتِ
الْيَوْمِيَّةِ فَمَنْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِنْ فَتَيَاتِكُمْ
الْيَوْمِيَّةِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِكُمْ بَعْضُكُمْ مِنْ
بَعْضٍ فَاتَّخِذُوهُنَّ بِأَذْنِ أَهْلِهِنَّ وَالنَّوْهَنْ
أُجُورَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ مُحْصَنَاتٍ غَيْرٍ مُسْفِحَاتٍ وَلَا
مُتَّحِدَاتٍ أَخْدَانٍ فَإِذَا أَحْصَيْتُمْ قَانَ أَتَيْنَ

- 1 दासी वह स्त्री जो युद्ध में बन्दी बनाई गई हो। उस से एक बार मासिक धर्म आने के पश्चात् सम्भोग करना उचित है, और उसे मुक्त कर के उस से विवाह कर लेने का बड़ा पुण्य है। (इब्ने कसीर)
- 2 अर्थात् तुम्हारे लिये नियम बना दिया है।
- 3 तुम आपस में एक ही हो, अर्थात् मानवता में बराबर हो। ज्ञातव्य है कि इस्लाम से पहले दासिता की परम्परा पूरे विश्व में फैली हुई थी। बलवान जातियाँ निर्बलों को दास बना कर उन के साथ हिंसक व्यवहार करती थीं। कुरआन ने दासिता को केवल युद्ध के बंदियों में सीमित कर दिया। और उन्हें भी अर्थदण्ड ले कर अथवा उपकार कर के मुक्त करने की प्रेरणा दी। फिर उन के साथ अच्छे व्यवहार पर बल दिया। तथा ऐसे आदेश और नियम बना दिए कि दासिता,

तुम उन के स्वामियों की अनुमति से उन (दासियों) से विवाह कर लो, और उन्हें नियमानुसार उन के महरें (विवाह उपहार) चुका दो, वह सती हों, व्याभिचारिणी न हों, न गुप्त प्रेमी बना रखी हों। फिर जब वह विवाहित हो जायें तो यदि व्याभिचार कर जायें, तो उन पर उस का आधा^[1] दण्ड है, जो स्वतंत्र स्त्रियों पर है। यह (दासी से विवाह) उस के लिये है, जो तुम में से व्याभिचार से डरता हो। और सहन करो तो यह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा है। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

26. अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे लिये उजागर कर दे, तथा तुम को भी उन की नितियों की राह दर्शा दे जो तुम से पहले थे। और तुम्हारी क्षमा याचना स्वीकार करे। तथा अल्लाह अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।

27. और अल्लाह चाहता है कि तुम पर दया करे। तथा जो लोग आकांक्षाओं के पीछे पड़े हुये हैं वह चाहते हैं कि तुम बहुत अधिक झुक^[2] जाओ।

يَفْأَحْشَاءُ فَعَلَيْهِنَّ رِضْفٌ مَّا عَلَى الْمُحْصَنَاتِ مِنَ
الْعَدْلِ ذَلِكَ لِيَنْحَسِبُوا أَنَّ تَصِيرُوا
خَرَائِمَ وَاللَّهُ عَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

يُرِيدُ اللَّهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سَبِيلَ الذِّكْرِ وَمَنْ
فَعَلَكُمْ وَيَتُوبْ عَلَيْكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

وَاللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيدُ الَّذِينَ
يَتَّبِعُونَ الشَّهْوَاتِ أَنْ يُبَيِّلُوا مَيَاطِعَهُمْ ۝

दासिता नहीं रह गई। यहाँ इसी बात पर बल दिया गया है कि दासियों से विवाह कर लेने में कोई दोष नहीं। इसलिये मानवता में सब बराबर है, और प्रधानता का मापदण्ड ईमान तथा सत्कर्म हैं।

1 अर्थात् पचास कोड़े।

2 अर्थात् सत्धर्म से कतरा जाओ।

28. अल्लाह तुम्हारा (बोझ) हल्का करना^[1] चाहता है। तथा मानव निर्बल पैदा किया गया है।

يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُخَفِّفَ عَنْكُمْ وِجْرَانَ الْإِنْسَانِ
صَاحِبًا ۝

29. हे ईमान वालो! आपस में एक दूसरे का धन अवैध रूप से न खाओ, परन्तु यह कि: लेन देन तुम्हारी आपस की स्वीकृति से (धर्मविधानानुसार) हो। और आत्महत्या^[2] न करो, वास्तव में अल्लाह तुम्हारे लिये अति दयावान् है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ
بِالْبِطْلِ طِيلًا إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ
مِنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ
رَحِيمًا ۝

30. और जो अतिक्रमण तथा अत्याचार से ऐसा करेगा, समीप है कि: हम उसे अग्नि में झोंक देंगे, और यह अल्लाह के लिये सरल है।

وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ عُدْوَانًا وَظُلْمًا فَسَوْفَ نُصَلِّيهِ
نَارًا وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝

31. तथा यदि तुम उन महा पापों से बचते रहे, जिन से तुम्हें रोका जा रहा है, तो हम तुम्हारे लिये तुम्हारे दोषों को क्षमा कर देंगे। और तुम्हें सम्मानित स्थान में प्रवेश देंगे।

إِنْ تَجْتَنِبُوا كِبْرًا مِمَّا نُهَيْتُمْ عَنْهُ تَقَرُّ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ
وَأَنْتُمْ تَخْلُقُونَ ۝

32. तथा उस की कामना न करो, जिस के द्वारा अल्लाह ने तुम को एक दूसरे पर श्रेष्ठता दी है। पुरुषों के लिये उस का भाग है जो उन्होंने कमाया^[3],

وَلَا تَسْتَمْتُوا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ
لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِمَّا كَسَبُوا وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ
مِمَّا كَسَبْنَ وَسَعَلُوا اللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ

1 अर्थात् अपने धर्मविधान द्वारा।

2 इस का अर्थ यह भी किया गया है कि: अवैध कर्मों द्वारा अपना विनाश न करो, तथा यह भी कि: आपस में रक्तपात न करो, और यह तीनों ही अर्थ सहीह हैं। (तफ्सीरे कुर्तबी)

3 कुरआन उतरने से पहले संसार का यह साधारण विध्वव्यापी विचार था कि: नारी का कोई स्थायी अस्तित्व नहीं है। उसे केवल पुरुषों की सेवा और काम वासना की पूर्ति के लिये बनाया गया है। कुरआन इस विचार के विरुद्ध यह कहता है कि अल्लाह ने मानव को नर तथा नारी दो लिंगों में विभाजित कर दिया है। और

और स्त्रियों के लिए उस का भाग है जो उन्होंने कमाया है। तथा अल्लाह से उस के अधिक की प्रार्थना करते रहो, निस्संदेह अल्लाह सब कुछ जानता है।

33. और हम ने प्रत्येक के लिये वारिस (उत्तराधिकारी) बना दिये हैं उस में से जो माता पिता तथा समीपवर्तियों ने छोड़ा हो। तथा जिन से तुम ने समझौता^[1] किया हो उन्हें उन का भाग दो। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक चीज़ से सूचित है।

34. पुरुष स्त्रियों के व्यवस्थापक^[2] है, इस कारण कि अल्लाह ने उन में से एक को दूसरे पर प्रधानता दी है। तथा इस कारण कि उन्होंने ने अपने धनों में से (उन पर) खर्च किया है। अतः सदाचारी स्त्रियाँ वह हैं जो आज्ञाकारी तथा उनकी अनुपस्थिति में अल्लाह की रक्षा में उन के अधिकारों की रक्षा

بِجَلِّ شَأْنِي عَلَيْهِمَا ۝

وَلِكُلِّ جَعَلْنَا مَوَالِيَّ وَمَنْزِلَةَ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبُونَ
وَالَّذِينَ عَقَدْتَ أَيْمَانَهُمْ فَاَنْتُمْ بِصِيْبِهِمْ رَانَ اللّٰهُ
كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝

الرِّجَالُ قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ
بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ وَبِمَا أَنْفَقُوا مِنْ أَمْوَالِهِمْ
فَالظَّالِمَاتُ يُنْفِقْنَ الْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ
وَالَّذِي تَخَافُونَ سُوءَ رُؤُسِهِنَّ فَوَطِّئُوهُنَّ وَأَهُرَّوهُنَّ
فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوهُنَّ فَإِنْ أَكْفَيْتُمْ فَلَا
تَبْغُوا عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيمًا
كَبِيرًا ۝

दोनों ही समान रूप से अपना अपना अस्तित्व, अपने अपने कर्तव्य तथा कर्म रखते हैं। और जैसे आर्थिक कार्यालय के लिये एक लिंग की आवश्यकता है वैसे ही दूसरे की भी है। मानव के सामाजिक जीवन के लिये यह दोनों एक दूसरे के सहायक हैं।

- 1 यह संधिभ मीरास इस्लाम के आरंभिक युग में थी, जिसे (मवारीस की आयत) से निरस्त कर दिया गया। (इब्ने कसीर)
- 2 आयत का भावार्थ यह है कि परिवारिक जीवन के प्रबंध के लिये एक प्रबंधक होना आवश्यक है। और इस प्रबंध तथा व्यवस्था का भार पुरुष पर रखा गया है। जो कोई विशेषता नहीं, बल्कि एक भार है। इस का यह अर्थ नहीं कि जन्म से पुरुष की स्त्री पर कोई विशेषता है। प्रथम आयत में यह आदेश दिया गया है कि यदि पत्नी पति की अनुगामी न हो तो वह उसे समझाये। परन्तु यदि दोष पुरुष का हो तो दोनों के बीच मध्यस्थता द्वारा संधि कराने की प्रेरणा दी गयी है।

करती हों। और तुम्हें जिन की अवज्ञा का डर हो तो उन्हें समझाओ। और शयनागारों (सोने के स्थानों) में उन से अलग हो जाओ। तथा उनको मारो। फिर यदि वह तुम्हारी बात मानें तो उन पर अत्याचार का बहाना न खोजो। और अल्लाह सब से ऊपर, सब से बड़ा है।

35. और यदि तुम^[1] को दोनों के बीच वियोग का डर हो तो एक मध्यस्थ उस (पति) के घराने से तथा एक मध्यस्थ उस (पत्नी) के घराने से नियुक्त करो, यदि वह दोनों संधि कराना चाहेंगे तो अल्लाह उन दोनों^[2] के बीच संधि करा देगा। वास्तव में अल्लाह अति ज्ञानी सर्वसूचित है।

36. तथा अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, और किसी चीज़ को उस का साझी न बनाओ। तथा माता पिता, समीपवर्तियों और अनाथों एवं निर्धनों तथा समीप और दूर के पड़ोसी, यात्रा के साथी तथा यात्री और अपने दास दासियों के साथ उपकार करो। निःसंदेह अल्लाह उस से प्रेम नहीं करता जो अभिमानी अहंकारी^[3] हो।

37. और जो स्वयं कृपण (कंजूसी) करते हैं, तथा दूसरों को भी कृपण (कंजूसी) का आदेश देते हैं, और उसे

وَأَنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَأَبْعَثُوا حَكَمًا
مِّنْ أَهْلِهِ وَحَكَمًا مِّنْ أَهْلِهَا إِنْ يُرِيدَا
إِصْلَاحًا يُوَفِّقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا
خَبِيرًا ۝

وَأَعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا
وَيَالِ الَّذِينَ إِحْسَانًا وَّيَذَى الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ
وَالْمَسْكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ
وَالصَّاحِبِ بِالْجَنبِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ
أَيْمَانُكُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا
فَخُورًا ۝

الَّذِينَ يَخْلَوْنَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ
وَيَكْتُمُونَ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ

- 1 इस में पति पत्नी के संरक्षकों को संबोधित किया गया है।
2 अर्थात् पति पत्नी में।
3 अर्थात् डींगें मारता तथा इतराता हो।

छुपाते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपनी दया से प्रदान किया है। और हम ने कृतघ्नों के लिये अपमानकारी यातना तैयार कर रखी है।

38. तथा जो लोग अपना धन लोगों को दिखाने के लिए दान करते हैं, और अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान नहीं रखते। तथा शैतान जिस का साथी हो, तो वह बहुत बुरा साथी^[1] है।

39. और उन का क्या बिगड़ जाता, यदि वह अल्लाह तथा अन्तिम दिन (परलोक) पर ईमान (विश्वास) रखते, और अल्लाह ने जो उन्हें दिया है उस में से दान करते? और अल्लाह उन्हें भली भाँति जानता है।

40. अल्लाह कण भर भी किसी पर अत्याचार नहीं करता, यदि कुछ भलाई (किसी ने) की हो, तो (अल्लाह) उसे अधिक कर देता है, तथा अपने पास से बड़ा प्रतिफल प्रदान करता है।

41. तो क्या दशा होगी जब हम प्रत्येक उम्मत (समुदाय) से एक साक्षी लायेंगे, और (हे नबी!) आप को

وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ۝

وَالَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ رَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَنْ يَكُنِ الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا فَسَاءَ قَرِينًا ۝

وَمَا ذَا عَلَيْهِمْ لَوْ آمَنُوا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللَّهُ وَكَانَ اللَّهُ بِعَمَلِهِمْ عَلِيمًا ۝

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظِلُّهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ وَإِنْ تَكَ حَسَنَةً يَظْعَفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَدُنْهُ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

كَفَيْتَ إِذَا جُنْتَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ تَمْرٍ أَوْ سَهْلًا ۝

1 आयत 36 से 38 तक साधारण सहानुभूति और उपकार का आदेश दिया गया है कि: अल्लाह ने जो धन धान्य तुम को दिया उस से मानव की सहायता और सेवा करो। जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान रखता हो उस का हाथ अल्लाह की राह में दान करने से कभी नहीं रुक सकता। फिर भी दान करो तो अल्लाह के लिये करो, दिखावे और नाम के लिये न करो। जो नाम के लिये दान करता है वह अल्लाह तथा आखिरत पर सच्चा ईमान (विश्वास) नहीं रखता।

उन पर साक्षी लायेंगे।^[1]

42. उस दिन जो काफिर तथा रसूल के अवैज्ञाकारी हो गये यह कामना करेंगे कि उन के सहित भूमि बराबर^[2] कर दी जाये। और वे अल्लाह से कोई बात छुपा नहीं सकेंगे।

43. हे ईमान वालो! तुम जब नशे^[3] में रहो तो नमाज़ के समीप न जाओ। जब तक जो कुछ बोलो उसे न समझो। और न जनाबत^[4] की स्थिति में (मस्जिदों के समीप जाओ) परन्तु रास्ता पार करते हुये। और यदि तुम रोगी हो अथवा यात्रा में रहो, या स्त्रियों से सहवास कर लो, फिर जल न पाओ, तो पवित्र मिट्टी से तयम्मूम^[5] कर लो। उसे अपने मुखों तथा हाथों पर फेर लो। वास्तव में अल्लाह अति क्षान्त (सहिष्णु) क्षमाशील है।

44. क्या आप ने उनकी दशा नहीं देखी

يَوْمَئِذٍ يَكْفُرُونَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصَوُا الرَّسُولَ
لَوْ شَاءُوا لَمَلَأُوا بِرِجَالِهِمُ الْأَرْضَ وَإِذْ يَسْتَمِعُونَ اللَّهَ
حَدِيثًا

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا الصَّلَاةَ وَأَنتُمْ
سُكْرَىٰ حَتَّىٰ تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ وَلَا جُنُبًا
إِلَّا عَلَىٰ بَرٍّ سَبِيلٍ حَتَّىٰ تَغْتَسِلُوا وَإِن كُنْتُمْ
مَّرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدًا مِنْكُمْ مِنَ
الْمَاءِ فَلَمْ يَجِدْ وَمَا
فَتَيْتُمْ أَصْغَبًا أُطْبِقًا فَاْمْسَحُوا
بُيُوتِهِمْ وَأَيْدِيَهُمْ إِن لِّلَّهِ كَانَ عَفْوٌ غَفُورًا

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أَوْتُوا ضِعْبًا مِنَ الْكِتَابِ

1 आयत का भावार्थ यह है कि प्रलय के दिन अल्लाह प्रत्येक समुदाय के रसूल को उन के कर्म का साक्षी बनायेगा। इस प्रकार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी अपने समुदाय पर साक्षी बनायेगा। तथा सब रसूलों पर कि उन्होंने ने अपने पालनहार का संदेश पहुँचाया है। (इब्ने कसीर)

2 अर्थात् भूमि में घँस जायें, और उन के ऊपर से भूमि बराबर हो जाये। या वह भी मिट्टी हो जायें।

3 यह आदेश इस्लाम के आरंभिक युग का है जब मदिरा को वर्जित नहीं किया गया था। (इब्ने कसीर)

4 जनाबत का अर्थ वीर्यपात के कारण मलिन तथा अपवित्र होना है।

5 अर्थात् यदि जल का अभाव हो, अथवा रोग के कारण जल प्रयोग हानिकारक हो तो वुजू तथा स्नान के स्थान पर तयम्मूम कर लो।

जिन्हें पुस्तक^[1] का कुछ भाग दिया गया? वह कुपथ खरीद रहे हैं, तथा चाहते हैं कि तुम भी सुपथ से विचलित हो जाओ।

45. तथा अल्लाह तुम्हारे शत्रुओं से भली भाँति अवगत है। और (तुम्हारे लिये) अल्लाह की रक्षा काफी है। तथा अल्लाह की सहायता काफी है।

46. (हे नबी!) यहूदियों में से कुछ लोग ऐसे हैं जो शब्दों को उन के (वास्तविक) स्थानों से फेरते हैं। और (आप से) कहते हैं कि हम ने सुन लिया, तथा (आप की) अवज्ञा की, और आप सुनिये, आप सुनाये न जायें, तथा अपनी जुबानें मोड़ कर "राइना" कहते और सत्धर्म में व्यंग करते हैं, और यदि वह "हम ने सुन लिया तथा आज्ञाकारी हो गये", और "हमें देखिये" कहते, तो उन के लिये अधिक अच्छी तथा सही बात होती। परन्तु अल्लाह ने उन के कुफ़्र के कारण उन्हें धिक्कार दिया है। अतः उन में से थोड़े ही ईमान लायेंगे।

47. हे अहले किताब! उस (कुर्आन) पर ईमान लाओ जिसे हम ने उन का प्रमाणकारी बना कर उतारा है जो (पुस्तकें) तुम्हारे साथ हैं। इस से पहले कि हम चेहरे बिगाड़ कर पीछे फेर दें

يَسْتَرْزُونَ الصَّلَاةَ وَيُرِيدُونَ أَنْ تَتَّبِعُوا
السَّبِيلَ ۝

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ وَكَفَى بِاللَّهِ وَلِيًّا وَكَفَى
بِاللَّهِ نَصِيرًا ۝

مِنَ الَّذِينَ هَادُوا وَيَحِرِفُونَ الْكَلِمَ عَن
مَوَاضِعِهِ وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا
وَأَسْمَعُ غَيْرُ مَسْمَعٍ وَرَاعَيْنَا لِيَّا بِأَلْسِنَتِهِمْ
وَطَعْنَا فِي الدِّينِ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا
وَاطَعْنَا وَأَسْمَعُ وَأَنْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ
وَاقْوَمُوا وَلَكِنْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ
فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آدُوا الْكِتَابَ أَمَّا بِنَاؤُنَا
مُصَدِّقًا لِمَا مَعَكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ نَطَّيْسَ
وُجُوهاً فَزَرْدُهَا عَلَىٰ أَدْبَارِهَا أَوْلَعْنَاهُمْ لِمَا الْعَنَّا
أَضْحَبَ السَّبِيحَ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ۝

1 अर्थात् अहले किताब की जिन को तौरात का ज्ञान दिया गया। भावार्थ यह है कि उन की दशा से शिक्षा ग्रहण करो। उन्हीं के समान सत्य से विचलित न हो जाओ।

अथवा उन्हें ऐसे ही धिक्कार^[1] दें जैसे शनिवार वालों को धिक्कार दिया। और अल्लाह का आदेश पूरा हो कर रहा।

48. निःसदेह अल्लाह यह नहीं क्षमा करेगा कि उस का साझी बनाया जाये^[2], और उस के सिवा जिसे चाहे क्षमा कर देगा। और जो अल्लाह का साझी बनाता है तो उस ने महापाप गढ़ लिया।
49. क्या आप ने उन्हें नहीं देखा जो अपने आप पवित्र बन रहे हैं? बल्कि अल्लाह जिसे चाहे पवित्र करता है। और (लोगों पर) कण बराबर अत्याचार नहीं किया जायेगा।
50. देखो यह लोग कैसे अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगा रहे^[3] हैं! उन के खुले पाप के लिये यही बहुत है।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا ۝

الَّذِينَ يَزُكُّونَ الْآلِدِينَ يُزُكُّونَ أَنْفُسَهُمْ بَلِ اللَّهُ يُزَكِّي مَن يَشَاءُ وَلَا يُظْلَمُونَ قَدِيلًا ۝

أَنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَكَفَىٰ بِهِ إِثْمًا مُّبِينًا ۝

- 1 मदीने के यहूदियों का यह दुर्भाग्य था कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिलते, तो द्विअर्थक तथा संदिग्ध शब्द बोल कर दिल की भड़ास निकालते, उसी पर उन्हें यह चेतावनी दी जा रही है। शनिवार वाले, अर्थात् जिन को शनिवार के दिन शिकार से रोका गया था। और जब वे नहीं माने तो उन्हें बन्दर बना दिया गया।
- 2 अर्थात् पूजा, अराधना तथा अल्लाह के विशेष गुण-कर्माँ में किसी वस्तु अथवा व्यक्ति को साझी बनाना घोर अक्षम्य पाप है, जो सत्धर्म के मूलाधार एकेश्वरवाद के विरुद्ध, और अल्लाह पर मिथ्या आरोप है। यहूदियों ने अपने धर्माचार्यों तथा पादरियों के विषय में यह अंधविश्वास बना लिया कि: उन की बात को धर्म समझ कर उन्हीं का अनुपालन कर रहे थे। और मूल पुस्तकों को त्याग दिया था, कुर्आन इसी को शिर्क कहता है, वह कहता है कि: सभी पाप क्षमा किये जा सकते हैं परन्तु शिर्क के लिये क्षमा नहीं, क्योंकि: इस से मूलधर्म की नींव ही हिल जाती है। और मार्गदर्शन का केन्द्र ही बदल जाता है।
- 3 अर्थात् अल्लाह का नियम तो यह है कि: पवित्रता, ईमान तथा सत्कर्म पर निर्भर है, और यह कहते हैं कि: यहूदियत पर है।

51. हे नबी! क्या आप ने उन की दशा नहीं देखी जिन को पुस्तक का कुछ भाग दिया गया? वह मुर्तियों तथा शैतानों की इबादत (वन्दना) करते हैं। और काफ़िरों^[1] के बारे में कहते हैं कि यह ईमान वालों से अधिक सीधी डगर पर है।

52. और जिसे अल्लाह धिक्कार दे तो आप उस का कदापि कोई सहायक नहीं पायेंगे।

53. क्या उन के पास राज्य का कोई भाग है, इस लिए लोगों को (उस में से) तनिक भी नहीं देंगे?

54. बल्कि वह लोगों^[2] से उस अनुग्रह पर विद्वेष कर रहे हैं जो अल्लाह ने उन को प्रदान किया है। तो हम ने (पहले भी) इब्राहीम के घराने को पुस्तक तथा हिक्मत (तत्वदर्शिता) दी है।

55. फिर उन में से कोई ईमान लाया, और कोई उस से विमुख हो गया। (तो उस के लिए) नरक की भड़कती अग्नि बहुत है।

56. वास्तव में जिन लोगों ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र (अविश्वास) किया, हम उन्हें नरक में झोंक देंगे।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِنَ الْكِتَابِ
يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ وَيَقُولُونَ
لِلَّذِينَ كَفَرُوا أَهْلُ آيَاتِهِ أَهْدَىٰ مِنَ الَّذِينَ
آمَنُوا سَبِيلًا ۝

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ وَمَنْ يَلْعَنِ اللَّهُ
فَلَنْ يَجِدَ لَهُ سَعِيرًا ۝

أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِنَ الْمَالِ فَإِذَآ الْأُيُوتُونَ
النَّاسَ فَيَقْبُرُوا ۝

أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَىٰ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ
مِّنْ فَضْلِهِ ۚ فَقَدْ آتَيْنَا آلَ إِبْرَاهِيمَ
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَاهُمْ مُلْكًا عَظِيمًا ۝

فَمِنْهُمْ مَنْ آمَنَ بِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ صَدَّعْتَهُ
وَكَفَىٰ بِهِمْ سَعِيرًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَإِلَّا يَتَنَسَوْنَ فَنُصَلِّبُهُمْ
نَارًا كَلْبًا نَّصَبَتْ جُلُودَهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ
وَنُفُورًا ۝

1 अर्थात मक्का के मुर्ति के पूजारियों के बारे में मदीना के यहूदियों की यह दशा थी कि वह सदैव मुर्ति पूजा के विरोधी रहे। और उस का अपमान करते रहे। परन्तु अब मुसलमानों के विरोध में उन की प्रशंसा करते तथा कहते कि मुर्ति पूजकों का आचरण स्वभाव अधिक अच्छा है।

2 अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों पर कि अल्लाह ने आप को नबी बना दिया तथा मुसलमानों को ईमान दे दिया।

जब जब उन की खालें पकेंगी हम उन की खालें दूसरी बदल देंगे, ताकि वह यातना चखें, निःसंदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

57. और जो लोग ईमान लाये, तथा सदाचार किये तो हम उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रवेश देंगे जिन में नहरें प्रवाहित हैं। जिन में वह सदावासी होंगे, उन के लिए उन में निर्मल पत्नियाँ होंगी और हम उन को घनी छाओं में रखेंगे।

58. अल्लाह^[1] तुम्हें आदेश देता है कि धरोहर उन के स्वामियों को चुका दो, और जब लोगों के बीच निर्णय करो तो न्याय के साथ निर्णय करो। अल्लाह तुम्हें अच्छी बात का निर्देश दे रहा है। निःसंदेह अल्लाह सब कुछ सुनने, देखने वाला है।

59. हे ईमान वालो! अल्लाह की आज्ञा का अनुपालन करो, और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करो, तथा अपने शासकों की आज्ञापालन करो, फिर यदि किसी बात में तुम आपस में विवाद (विभेद) कर लो, तो उसे अल्लाह और रसूल की ओर फेर दो, यदि तुम अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखते हो। यह (तुम्हारे लिये) अच्छा^[2] और इस का

الْعَدَابَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا لَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا ظِلٌّ كَثِيرٌ ۝

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ أَنْ تَعْلَمُوا بِالْعَدْلِ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اطِيعُوا اللَّهَ وَاطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنْكُمْ فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۝

1 यहाँ से ईमान वालों को संबोधित किया जा रहा है कि सामाजिक जीवन की व्यवस्था के लिए मूल नियम यह है कि जिस का जो भी अधिकार हो उसे स्वीकार किया जाये और दिया जाये। इसी प्रकार कोई भी निर्णय बिना पक्षपात के न्याय के साथ किया जाये, किसी प्रकार कोई अन्याय नहीं होना चाहिये।

2 अर्थात् किसी के विचार और राय को मानने से। क्योंकि कुर्आन और नबी

परिणाम अच्छा है।

60. (हे नबी!) क्या आप ने उन (द्विधावादियों) को नहीं जाना, जिन का यह दावा है कि वह जो कुछ आप पर अवतरित हुआ है तथा जो कुछ आप से पूर्व अवतरित हुआ है, उस पर ईमान रखते हैं, तथा चाहते हैं कि अपने विवाद का निर्णय विद्रोही के पास ले जायें, जब कि उन्हें आदेश दिया गया है कि उसे अस्वीकार कर दें! और शैतान चाहता है कि उन्हें सत्धर्म से बहुत दूर^[1] कर दे।
61. तथा जब उन से कहा जाता है कि उस की ओर आओ जो (कुआन) अल्लाह ने उतारा है तथा रसूल की (सुन्नत की) ओर तो आप मुनाफ़िकों (द्विधावादियों) को देखते हैं कि वह आप से मुँह फेर रहे हैं।
62. फिर यदि उन के अपने ही कर्तूतों के कारण उन पर कोई आपदा आ पड़े, तो फिर आप के पास आकर शपथ लेते हैं कि हम ने^[2] तो केवल भलाई

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا
أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَنْ
يَتَّخِذُوا كَمَثَلِ الْفَخَّافُونَ وَقَدْ أُمِرُوا أَنْ
يَكْفُرُوا بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ
صَلَاةَ بَعْضِهَا ۝

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَإِلَىٰ
الرَّسُولِ رَأَيْتُ الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنْكَ
صُدُودًا ۝

فَكَيْفَ إِذَا أَصَابَتْهُمُ مُصِيبَةٌ يُنَبِّئُكَ أَنَّ
أَيُّدِيَهُمْ ثُمَّ جَاءُواكَ يَخْلِفُونَ رَبَّكَ إِنْ أَرَدْنَا
إِلَّا أَحْسَانًا وَتَوْفِيقًا ۝

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत ही धर्मदिशों की शिलाधार है।

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि जो धर्म विधान कुआन तथा सुन्नत के सिवा किसी अन्य विधान से अपना निर्णय चाहते हों उन का ईमान का दावा मिथ्या है।
- 2 आयत का भावार्थ यह है कि मुनाफ़िक ईमान का दावा तो करते थे, परन्तु अपने विवाद चुकाने के लिये इस्लाम के विरोधियों के पास जाते, फिर जब कभी उन की दो रंगी पकड़ी जाती तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आकर मिथ्या शपथ लेते। और यह कहते कि हम केवल विवाद सुलझाने के लिये उन के पास चले गये थे। (इन्ने कसीर)

तथा (दोनों पक्ष में) मेल कराना चाहा था।

63. यही वह लोग हैं जिन के दिलों के भीतर की बातें अल्लाह जानता है। अतः आप उन को क्षमा कर दें, तथा उन्हें उपदेश दें, और उन से ऐसी प्रभावी बात बोलें जो उन के दिलों में उतर जाये।
64. और हम ने जो भी रसूल भेजा वह इस लिये ताकि अल्लाह की अनुमति से उस की आज्ञा का पालन किया जाये। और जब उन लोगों ने अपने ऊपर अत्याचार किया तो यदि वह आप के पास आते, फिर अल्लाह से क्षमा याचना करते, तथा उन के लिये रसूल क्षमा की प्रार्थना करते तो अल्लाह को अति क्षमाशील दयावान् पाते।
65. तो आप के पालनहार की शपथ! वह कभी ईमान वाले नहीं हो सकते, जब तक अपने आपस के विवाद में आप को निर्णायक न बनायें^[1], फिर आप जो निर्णय कर दें उस से अपने दिलों में तनिक भी संकीर्णता (तंगी) का अनुभव न करें, और पूर्णतः स्वीकार कर लें।
66. और यदि हम उन्हें^[2] आदेश देते कि स्वयं को बध करो, तथा अपने घरों से निकल जाओ तो इन में से थोड़े के सिवा कोई ऐसा नहीं करता। और

أُولَئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ
فَأَعْرَضَ عَنْهُمْ وَعَظَّمَهُمْ وَقُلْ لَهُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ
قَوْلًا بَيِّنًا ۝

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رُسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ
اللَّهِ وَلَوْ أَنْتُمْ إِنْ ظَلَمْتُمْ أَنْفُسَكُمْ جَاءَ وَكَلٌ
فَأَسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۖ وَاللَّهُ وَاسْتَغْفِرُ لَهُمْ الرَّسُولُ
لَوْجَدُ وَاللَّهُ تَوَّابٌ رَحِيمٌ ۝

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكُمْ فِيمَا
شَجَرْتُمْ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِمَّا
قَضَيْتُمْ وَيَسْلَمُوكُمْ أَسْلِيمًا ۝

وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنْ اقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ أَوْ
اخْرُجُوا مِنْ دِيَارِكُمْ مَا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ
مِنْهُمْ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ

1 यह आदेश आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन में था। तथा आप के निधन के पश्चात अब आप की सुन्नत से निर्णय लेना है।

2 अर्थात् जो दूसरों से निर्णय कराते हैं।

यदि उन्हें जो निर्देश दिया जाता है वह उस का पालन करते तो उन के लिये अच्छा और अधिक स्थिरता का कारण होता।

67. और हम उन को अपने पास से बहुत बड़ा प्रतिफल देते।
68. तथा हम उन्हें सीधी डगर दर्शा देते।
69. तथा जो अल्लाह और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करेंगे तो वही (स्वर्ग में) उन के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया है, अर्थात् नबियों तथा सत्यवादियों, शहीदों और सदाचारियों के साथ। और वह क्या ही अच्छे साथी है?
70. यह प्रदान अल्लाह की ओर से है, और अल्लाह का ज्ञान बहुत^[1] है।
71. हे ईमान वालो! अपने (शत्रु से) बचाव के साधन तय्यार रखो, फिर गिरोहों में अथवा एक साथ निकल पड़ो।
72. और तुम में कोई ऐसा व्यक्ति^[2] भी है जो तुम से अवश्य पीछे रह जायेगा, और यदि तुम पर (युद्ध में) कोई आपदा आ पड़े तो कहेगा: अल्लाह ने मुझ पर उपकार किया कि मैं उनके साथ उपस्थित न था।
73. और यदि तुम पर अल्लाह की दया हो

خَيْرَ إِلَهُمْ وَأَشَدَّ تَثِيئًا ۝

وَإِذْ الْأَلْيَةُ لَهُمْ مِّنْ لَّدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ۝

وَلَهْدَيْنَاهُمْ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۝

وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ وَحَسُنَ أُولَئِكَ رَفِيقًا ۝

ذَلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ وَكَفَى بِاللَّهِ عِلْمًا ۝

يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا وَاحِدًا وَاحِدًا لَّهُمْ قَائِلٌ وَوَأَنْفِرُوا جَيْعًا ۝

وَأَنْ مِّنكُمْ لَمَنْ لَّيَّبِطَنَّ ۚ فَإِنْ أَصَابَكُمْ مُصِيبَةٌ قَالُوا نَدَّأَعَمَّ اللَّهُ عَلَىٰ أَدْمُكُمْ أَنْ مَعَكُمْ شَهِيدًا ۝

وَلَيْنِ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللَّهِ لَيَعُولُنَّ كَانَ لَكُمْ

1 अर्थात् अपनी दया तथा प्रदान के योग्य को जानने के लिये।

2 यहाँ युद्ध से संबंधित अब्दुल्लाह बिन उबय्य जैसे मुनाफ़िकों (द्विधावादियों) की दशा का वर्णन किया जा रहा है। (इब्ने कसीर)

जाये, तो वह अवश्य यह कामना करेगा कि काश! मैं भी उन के साथ होता, तो बड़ी सफलता प्राप्त कर लेता! मानो उस के और तुम्हारे मध्य कोई मित्रता ही न थी।

74. तो चाहिये कि अल्लाह की राह^[1] में वह लोग युद्ध करें जो आखिरत (परलोक) के बदले संसारिक जीवन बेच चुके हैं। और जो अल्लाह की राह में युद्ध करेगा, तो वह मारा जाये अथवा विजयी हो जाये तो हम उसे बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे।

75. और तुम्हें क्या हो गया है कि अल्लाह की राह में युद्ध नहीं करते, जब कि कितने ही निर्बल पुरुष तथा स्त्रियाँ और बच्चे हैं, जो गुहार रहे हैं कि हे हमारे पालनहार! हमें इस नगर^[2] से निकाल दे, जिस के निवासी अत्याचारी हैं। और हमारे लिये अपनी ओर से कोई रक्षक बना दे, और हमारे लिये अपनी ओर से कोई सहायक बना दे।

76. जो लोग ईमान लाये वह अल्लाह की राह में युद्ध करते हैं। और जो काफिर है वह उपद्रव के लिये युद्ध करते हैं। तो

تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ يَأْتِيَنِي كُنْتُ مَعَهُمْ
فَأَفُوزَ فَوْزًا عَظِيمًا ۝

فَلْيَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يَشْرُونَ الْحَيَاةَ
الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ وَمَنْ يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
فَيَقْتُلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيَهُ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

وَمَا لَكُمْ لَأَنْتُمْ تَلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ
وَالْوِلْدَانَ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا
مِنْ هَذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا وَاجْعَلْ
لَنَا مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ
لَدُنْكَ نَصِيرًا ۝

الَّذِينَ آمَنُوا يَقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الظَّالِمِينَ

1 अल्लाह के धर्म को ऊँचा करने, और उस की रक्षा के लिये। किसी स्वार्थ अथवा किसी देश और संसारिक धन धान्य की प्राप्ति के लिये नहीं।

2 अर्थात् मक्का नगर से। यहाँ इस तथ्य को उजागर कर दिया गया है कि कुर्आन ने युद्ध का आदेश इस लिये नहीं दिया है कि दूसरों पर अत्याचार किया जाये। बल्कि नृशंसितों तथा निर्बलों की सहायता के लिये दिया है। इसी लिये वह बार बार कहता है कि "अल्लाह की राह में युद्ध करो" अपने स्वार्थ और मनोकांक्षाओं के लिये नहीं। न्याय तथा सत्य की स्थापना और सुरक्षा के लिये युद्ध करो।

शैतान के साथियों से युद्ध करो। निःसंदेह शैतान की चाल निर्बल होती है।

77. (हे नबी!) क्या आप ने उन की नहीं देखी, जिस से कहा गया कि अपने हाथों को (युद्ध से) रोके रखो, तथा नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो? और जब उन पर युद्ध करना लिख दिया गया तो उन में से एक गिरोह लोगों से ऐसे डर रहा है जैसे अल्लाह से डर रहा हो। या उस से भी अधिक। तथा वह कहते हैं कि हे हमारे पालनहार! हम को युद्ध करने का आदेश क्यों दे दिया, क्यों न हमें थोड़े दिनों का और अवसर दिया? आप कह दें कि संसारिक सुख बहुत थोड़ा है, तथा परलोक उस के लिये अधिक अच्छा है जो अल्लाह^[1] से डरा, और उन पर कण भर भी अत्याचार नहीं किया जायेगा।

78. तुम जहाँ भी रहो, तुम्हें मौत आ पकड़ेगी, यद्यपि दृढ़ दुर्गा में क्यों न रहो। तथा उन को यदि कोई सुख पहुँचता है तो कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है। और यदि कोई आपदा आ पड़े तो कहते हैं कि यह आपके कारण है। (हे नबी!) उन से कह दो कि सब अल्लाह की ओर से है। इन लोगों को क्या हो गया कि कोई बात समझने के समीप भी नहीं^[2] होते?

فَقَاتِلُوا أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا ۝

الَّذِينَ يَدْعُونَ إِلَى الْبِرِّ وَالْإِيمَانِ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ فَتَنَّا كَبُتْ عَلَيْهِمْ
الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَجْتُمِعُونَ النَّاسَ
كَخَشِيَةِ اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشِيَةً وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ
كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَىٰ أَجَلٍ
قَرِيبٍ قُلْ مَتَاءُ الدُّمَيِّقِينَ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ
اتَّقَىٰ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ۝

إِنَّ مَا تَعْلَمُونَ أَيْدِيَكُمْ مَوْتٌ وَلَوْ كُنْتُمْ
فِي بُرُوجٍ مُّشِيدَةٍ وَإِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَقُولُوا
هَذِهِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ
يَقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِكَ قُلْ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ
فَمَالِ هَؤُلَاءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا ۝

1 अर्थात् परलोक का सुख उस के लिये है जिस ने अल्लाह के आदेशों का पालन किया।

2 भावार्थ यह है कि जब मुसलमानों को कोई हानि हो जाती तो मुनाफ़िक़

79. (वास्तविकता तो यह है कि) तुम को जो सुख पहुँचता है वह अल्लाह की ओर से होता है। तथा जो हानि पहुँचती है वह स्वयं (तुम्हारे कुकर्मों के) कारण होती है। और हम ने आप को सब मानव का रसूल (संदेशवाहक) बना कर भेजा^[1] है। और (आपके रसूल होने के लिये) अल्लाह का साक्ष्य बहुत है।

80. जिस ने रसूल की आज्ञा का अनुपालन किया (वास्तव में) उस ने अल्लाह की आज्ञा का पालन किया है। तथा जिस ने मुँह फेर लिया तो (हे नबी!) हम ने आप को उन का प्रहरी (रक्षक) बना कर नहीं भेजा^[2] है।

81. तथा वह (आपके सामने कहते हैं कि हम आज्ञाकारी हैं, और जब आप के पास से जाते हैं तो इन में से कुछ लोग रात में आप की बात के

مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ وَمَا أَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنَ نَفْسِكَ وَأَرْسَلْنَا لِلنَّاسِ رَسُولًا وَكُنْتُمْ عَلَىٰ بِلَالِهِ شَاهِدِينَ ۝

مَنْ يُطِيعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ وَمَنْ تَوَلَّىٰ فَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۝

وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَرُوا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي تَقُولُ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّنُونَ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعُكِّلْ عَلَى اللَّهِ وَعَكِلِ

(द्विधावादी) तथा यहूदी कहते: यह सब नबी सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम के कारण हुआ। कुर्आन कहता है कि सब कुछ अल्लाह की ओर से होता है। अर्थात् उस ने प्रत्येक दशा तथा परिणाम के लिए कुछ नियम बना दिये हैं। और जो कुछ भी होता है वह उन्हीं दशाओं का परिणाम होता है। अतः तुम्हारी यह बातें जो कह रहे हो, बड़ी अज्ञानता की बातें हैं।

1 इस का भावार्थ यह है कि तुम्हें जो कुछ हानि होती है तो वह तुम्हारे कुकर्मों का दुष्परिणाम होता है। इस का आरोप दूसरे पर न धरो। इस्लाम के नबी तो अल्लाह के रसूल हैं। और रसूल का काम यही है कि संदेश पहुँचा दें, और तुम्हारा कर्तव्य है कि उन के सभी आदेशों का अनुपालन करो। फिर यदि तुम अवैज्ञा करो, और उस का दुष्परिणाम सामने आये, तो दोष तुम्हारा है, न कि इस्लाम के नबी का।

2 अर्थात् आप का कर्तव्य अल्लाह का संदेश पहुँचाना है, उन के कर्मों तथा उन्हें सीधी डगर पर लगा देने का दायित्व आप पर नहीं।

विरुद्ध परामर्श करते हैं और वह जो परामर्श कर रहे हैं उसे अल्लाह लिख रहा है। अतः आप उन पर ध्यान न दें। और अल्लाह पर भरोसा करें, तथा अल्लाह पर भरोसा काफी है।

82. तो क्या वह कुर्आन (के अर्थों) पर सोच विचार नहीं करते? यदि वह अल्लाह के सिवा दूसरे की ओर से होता तो उस में बहुत सी प्रतिकूल (बे मेल) बातें पाते?^[1]

83. और जब उन के पास शान्ति या भय की कोई सूचना आती है तो उसे फैला देते हैं। और यदि वह उसे अल्लाह के रसूल तथा अपने अधिकारियों की ओर फेर देते तो जो बात की तह तक पहुँचते हैं वे उस की वास्तविकता जान लेते। और यदि तुम पर अल्लाह की अनुकम्पा तथा दया न होती तो तुम में थोड़े के सिवा सब शैतान के पीछे लग^[2] जाते।

84. तो (हे नबी!) आप अल्लाह की राह में युद्ध करें। केवल आप पर यह भार डाला जा रहा है, तथा ईमान वालों को (इस की) प्रेरणा दें। संभव है कि अल्लाह काफ़ि़रों का बल (तोड़ दे)। और अल्लाह का बल और उस का दण्ड सब से कड़ा है।

بِاللّٰهِ وَكَوَيْلًا

اَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْفُرَانَ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ
اللّٰهِ لَوْجَدُوا فِيْهِ اٰخِثًا كَثِيْرًا ۝

وَاِذَا جَاءَهُمْ اَمْرٌ مِنَ الْاٰمِنِ اَوْ اَتَوْهُمْ اَدَاغُوْا بِهِ
وَلَوْ رُدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَاِلَى اَوْلِيَ الْاَمْرِ مِنْهُمْ
لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْبِطُوْنَهُ مِنْهُمْ وَلَوْ اَنَّ فِضْلَ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتَهُ لَرَبَعْتُمْ الشَّيْطٰنَ الْاَقْبَلِيْنَ ۝

فَقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا تُكَلِّفُ الْاَنْفُسَ كَ
وَخَرِيْضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يُّكَلِّفَ بَاسًا
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاسًا وَاَسَدُّ تَنْكِيْلًا ۝

1 अर्थात जो व्यक्ति कुर्आन में विचार करेगा, उस पर यह तथ्य खुल जायेगा कि कुर्आन अल्लाह की वाणी है।

2 इस आयत द्वारा यह निर्देश दिया जा रहा है कि जब भी साधारण शान्ति या भय की कोई सूचना मिले तो उसे अधिकारियों तथा शासकों तक पहुँचा दिया जाये।

85. जो अच्छी अनुशंसा (सिफारिश) करेगा उसे उस का भाग (प्रतिफल) मिलेगा। तथा जो बुरी अनुशंसा (सिफारिश) करेगा तो उसे भी उस का भाग (कुफल)^[1] मिलेगा। और अल्लाह प्रत्येक चीज़ का निरीक्षक है।

مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِنْهَا
وَمَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُنْ لَهُ كِفْلٌ مِنْهَا وَكَانَ
اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُبِينًا ۝

86. और जब तुम से सलाम किया जाये, तो उस से अच्छा उत्तर दो, अथवा उसी को दुहरा दो। निःसंदेह अल्लाह प्रत्येक विषय का हिसाब लेने वाला है।

وَإِذَا حُيِّتُمْ بِتَحِيَّاتٍ فَجَازُوا بِهَا حَسَنًا
أَوْ رُدُّوهَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا ۝

87. अल्लाह के सिवा कोई बंदनीय (पूज्य) नहीं, वह अवश्य तुम्हें प्रलय के दिन एकत्र करेगा, इस में कोई संदेह नहीं। तथा बात कहने में अल्लाह से अधिक सच्चा कौन हो सकता है?

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لِيَجْمَعَكُمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ
لَا رَيْبَ فِيهِ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا ۝

88. तुम्हें क्या हुआ है कि मुनाफिकों (द्विधावादियों) के बारे में दो पक्ष^[2] बन गये हो। जब कि अल्लाह ने उन के कुकर्मा के कारण उन्हें औंधा कर दिया है। क्या तुम उसे सुपथ दर्शा देना चाहते हो जिसे अल्लाह ने कुपथ कर दिया हो? और जिसे अल्लाह कुपथ

فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ فِتْنَةً وَاللَّهُ أَرَاهُمْ
بِمَا كَسَبُوا أَسْوَأَ الَّذِي أُنْتَبِهُوا إِنَّ تَهْدُوا مَنْ أَضَلَّ
اللَّهُ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ۝

1 आयत का भावार्थ यह है कि अच्छाई तथा बुराई में किसी की सहायता करने का भी पुण्य और पाप मिलता है।

2 मक्का वासियों में कुछ अपने स्वार्थ के लिये मौखिक मुसलमान हो गये थे, और जब युद्ध आरंभ हुआ तो उन के बारे में मुसलमानों में दो विचार हो गये। कुछ उन्हें अपना मित्र और कुछ उन्हें अपना शत्रु समझ रहे थे। अल्लाह ने यहाँ बता दिया कि वह लोग मुनाफिक (द्विधावादी) हैं। जब तक मक्का से हिजरत कर के मदीना में न आ जायें, और शत्रु ही के साथ रह जायें, तो उन्हें भी शत्रु समझा जायेगा। यह वह मुनाफिक नहीं हैं जिन की चर्चा पहले की गयी है। यह मक्का के विशेष मुनाफिक हैं, जिन से युद्ध की स्थिति में कोई मित्रता की जा सकती थी, और न ही उन से कोई संबंध रखा जा सकता था।

कर दे तो तुम उस के लिये कोई राह नहीं पा सकते।

89. (हे ईमान वालो!) वे तो यह कामना करते हैं कि उन्हीं के समान तुम भी काफिर हो जाओ, तथा उन के बराबर हो जाओ। अतः उन में से किसी को मित्र न बनाओ, जब तक अल्लाह की राह में हिजरत न करें। और यदि वह इस से विमुख हों तो उन्हें जहाँ पाओ बध करो और उन में से किसी को मित्र न बनाओ, और न सहायक बनाओ।

90. परन्तु इन में से जो किसी ऐसी कौम से जा मिलें जिन के और तुम्हारे बीच संधि हो, अथवा ऐसे लोग हों जो तुम्हारे पास इस स्थिति में आयें कि उन के दिल इस से संकुचित हो रहे हों कि वह तुम से युद्ध करें, अथवा (तुम्हारे साथ) अपनी जाति से युद्ध करें। और यदि अल्लाह चाहता तो उन को तुम पर सामर्थ्य दे देता, फिर वह तुम से युद्ध करते, तो यदि वह तुम से बिलग रह गये और तुम से युद्ध नहीं किया, और तुम से संधि कर ली, तो उन के विरुद्ध अल्लाह ने तुम्हारे लिये कोई (युद्ध करने की) राह नहीं बनाई^[1] है।

91. तथा तुम को कुछ ऐसे दूसरे लोग भी

وَذُوَالْوَتَنِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَتَلَّوُنُونَ سَوَاءً
فَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ أَوْلِيَاءَ مَعَهُمْ يَهَاجِرُونَ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَحَدُّهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ
حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ وَرِثَا
وَلَا نَصِيرًا ۝

إِلَّا الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَى قَوْمِ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ
مِيثَاقٌ أَوْ جَاءُوكُمْ حَصْرَتٍ صَدُورُهُمْ أَنْ
يُقَاتِلُوكُمْ أَوْ يُقَاتِلُوا قَوْمَهُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
لَسَطَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَاتَلُوكُمْ وَإِنْ اعْتَرَفُوكُمْ فَلَمْ
يُقَاتِلُوكُمْ وَالْقَوْلُ الْيَكْمُ السَّلَامُ فَمَا جَعَلَ
اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا ۝

سَيَجِدُونَ الْآخَرِينَ يُرِيدُونَ أَنْ يَأْمَنُوكُمْ

- 1 अर्थात् इस्लाम में युद्ध का आदेश उन के विरुद्ध दिया गया है जो इस्लाम के विरुद्ध युद्ध कर रहे हों। अन्यथा उन से युद्ध करने का कोई कारण नहीं रह जाता क्योंकि मूल चीज़ शान्ति तथा संधि है, युद्ध और हत्या नहीं।

मिलेंगे जो तुम्हारी ओर से भी शान्त रहना चाहते हैं, और अपनी जाति की ओर से भी शान्त रहना (चाहते हैं)। फिर जब भी उपद्रव की ओर फेर दिये जायें, तो उस में औंधे हो कर गिर जाते हैं। तो यदि वह तुम से बिलग न रहें और तुम से संधि न करें, तथा अपना हाथ न रोकें तो उन्हें पकड़ो, और जहाँ पाओ बध करो। हम ने उन के विरुद्ध तुम्हारे लिये खुला तर्क बना दिया है।

92. किसी ईमान वाले के लिये वैध नहीं है कि वह किसी ईमान वाले की हत्या कर दे, परन्तु चूक^[1] से। तथा जो किसी ईमान वाले की चूक से हत्या कर दे तो उसे एक ईमान वाला दास मुक्त करना है, और उस के घर वालों को दियत (अर्थदण्ड)^[2] दे, परन्तु यह कि वह दान (क्षमा) कर दें। फिर यदि वह (निहत) उस जाति में से हो जो तुम्हारी शत्रु है,

وَيَا مَنُوا قَوْمَهُمْ كَمَا دُرُوا إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكَسُوا
فِيهَا فَإِن كُم يَعْتَرِلُونُكُمْ وَيُقْمُوا إِلَيْكُمْ
السَّلَامَ وَيَقْمُوا إِلَيْكُمْ فَحَدُّهُمْ
وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ يَقْتُلُونَهُمْ وَأُولِيكُمْ جَعَلْنَا
لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ﴿٥﴾

وَإِن كَانَ يُؤْمِنُ أَن يَقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا غَطًّا وَمَنْ قَتَلَ
مُؤْمِنًا خَطًّا فَكَفِّرْ بِرَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَدِيَةَ مُسْلِمَةٍ إِلَى
أَهْلِهَا إِلَّا أَن يَتَّخِذُوا أَن كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوِّكُمْ
وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَكَفِّرْ بِرَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَإِن كَانَ مِنْ قَوْمٍ
بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم بَيْتَانٌ فَدِيَةَ مُسْلِمَةٍ إِلَى أَهْلِهَا وَكَفِّرْ
بِرَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَبِيَا مَرْشَهْرِينَ
مَّتَابِعِينَ تَوْبَةً مِنَ اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٥﴾

1 अर्थात् निशाना चूक कर उसे लग जाये।

2 यह अर्थदण्ड सौ ऊँट अथवा उन का मूल्य है। आयत का भावार्थ यह है कि जिन की हत्या करने का आदेश दिया गया है वह केवल इस लिये दिया गया है कि उन्होंने ने इस्लाम तथा मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध आरंभ कर दिया है। अन्यथा यदि युद्ध की स्थिति न हो तो हत्या एक महापाप है। और किसी मुसलमान के लिये कदापि यह वैध नहीं कि किसी मुसलमान की, या जिस से समझौता हो, उस की जान बूझ कर हत्या कर दे। संधि मित्र से अभिप्राय वह सभी गैर मुस्लिम हैं जिन से मुसलमानों का युद्ध न हो, संधि तथा संविदा हो। फिर यदि चूक से किसी ने किसी की हत्या कर दी तो उस का यह आदेश है जो इस आयत में बताया गया है। यह ज्ञातव्य है कि कुर्आन ने केवल दो ही स्थिति में हत्या को उचित किया है: युद्ध की स्थिति में, अथवा नियमानुसार किसी अपराधी की हत्या की जाये। जैसे हत्यारे को हत्या के बदले हत किया जाये।

और वह (निहत) ईमान वाला है तो एक ईमान वाला दास मुक्त करना है। और यदि ऐसी कौम से हो जिस के और तुम्हारे बीच संधि है तो उस के घर वालों को अर्थदण्ड देना, तथा एक ईमान वाला दास (भी) मुक्त करना है, और जो दास न पाये तो उसे निरंतर दो महीने रोज़ा रखना है। अल्लाह की ओर से (उस के पाप की) यही क्षमा है। और अल्लाह अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।

93. और जो किसी ईमान वाले की हत्या जान बूझ कर कर दे तो उस का कुफल (बदला) नरक है। जिस में वह सदावासी होगा, और उस पर अल्लाह का प्रकोप तथा धिक्कार है। और उस ने उस के लिये घोर यातना तैयार कर रखी है।

94. हे ईमान वालो! जब तुम अल्लाह की राह में (जिहाद के लिये) निकलो तो भली भाँति परख^[1] लो, और कोई तुम को सलाम^[2] करे तो यह न कहो कि तुम ईमान वाले नहीं हो। क्या तुम संसारिक जीवन का उपकरण चाहते हो? और अल्लाह के पास बहुत से परिहार (शत्रुधन) हैं। तुम भी पहले ऐसे^[3] ही थे, तो अल्लाह ने तुम

وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مَتَعِدًا فِجْرًا ذُوَّ جِهَتِهِمْ خَالِدًا فِيهَا
وَعَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا ﴿٩٣﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْفَى إِلَيْكُمْ السَّلَامَ لَسْتَ مُؤْمِنًا
تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَوَسَّادَ اللَّهُ مَعَارِمَهُ
كَثِيرَةً كَذَلِكَ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْكُمْ
فَتَبَيَّنُوا إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿٩٤﴾

1 अर्थात् यह कि वह शत्रु है या मित्र है।

2 सलाम करना मुसलमान होने का एक लक्षण है।

3 अर्थात् इस्लाम के शब्द के सिवा तुम्हारे पास इस्लाम का कोई चिन्ह नहीं था। इब्ने अब्बास रज़ियल्लाह अन्हु कहते हैं कि रात के समय एक व्यक्ति यात्रा कर रहा था। जब उस से कुछ मुसलमान मिले तो उस ने अस्सलामु अलैकुम कहा।

पर उपकार किया। अतः भली भाँति परख लिया करो, निःसंदेह अल्लाह उस से सूचित है जो तुम कर रहे हो।

95. ईमान वालों में जो अकारण अपने घरों में रह जाते हैं, और जो अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों के द्वारा जिहाद करते हैं, दोनों बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह ने उन को जो अपने धनों तथा प्राणों के द्वारा जिहाद करते हैं, उन पर जो घरों में रह जाते हैं, पद में प्रधानता दी है। और प्रत्येक को अल्लाह ने भलाई का वचन दिया है। और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को उन पर जो घरों में बैठे रह जाने वाले हैं, बड़े प्रतिफल में भी प्रधानता दी है।

96. अल्लाह की ओर से कई (उच्च) श्रेणियाँ हैं तथा क्षमा और दया हैं। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

97. निःसंदेह वह लोग जिन के प्राण फ़रिश्ते निकालते हैं, इस दशा में कि वह अपने ऊपर (कुफ़्र के देश में रह कर) अत्याचार करने वाले हों, तो उन से कहते हैं: तुम किस चीज़ में थे? वह कहते हैं कि हम धरती में विवश थे। तब फ़रिश्ते कहते हैं: क्या अल्लाह की धरती विस्तृत नहीं थी कि

لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرَ أُولِي الصَّرِيحِ
وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ
فَقَالَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى
الْقَاعِدِينَ دَرَجَةً ۗ وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ وَفَضَّلَ
اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَاعِدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۖ

دَرَجَاتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً ۗ وَرَحْمَةً ۗ وَكَانَ
اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۖ

إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّيْنَاهُم مَّا كَانُوا فِي
أَنْفُسِهِمْ قَالُوا فِيمَ كُنَّا قَالُوا كُنَّا
مُسْتَضْعَفِينَ فِي الْأَرْضِ قَالُوا كَمْ لَكَ
أَرْضُ اللَّهِ وَأَسِعَتْ فَنَهَايْمُ فِيهَا قَالُوا لَيْلَكِ
مَا وَلَهُمْ جَهَنَّمُ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۖ

फिर भी एक मुसलमान ने उसे झूठा समझ कर मार दिया। इसी पर यह आयत उतरी। जब नबी सल्लल्लहू अलैहि व सल्लम को इस का पता चला तो आप बहुत नाराज़ हुये। (इब्ने कसीर)

उस में हिजरत कर^[1] जाते? तो इन्हीं का आवास नरक है। और वह क्या ही बुरा स्थान है!

98. परन्तु जो पुरुष और स्त्रियाँ तथा बच्चे ऐसे विवश हों कि कोई उपाय न रख सकें, और न (हिजरत की) कोई राह पाते हों।

99. तो आशा है कि अल्लाह उन को क्षमा कर देगा। निःसंदेह अल्लाह अति ज्ञान्त क्षमाशील है।

100. तथा जो कोई अल्लाह की राह में हिजरत करेगा तो वह धरती में बहुत से निवास स्थान तथा विस्तार पायेगा। और जो अपने घर से अल्लाह और उस के रसूल की ओर निकल गया, फिर उसे (राह में ही) मौत ने पकड़ लिया तो उस का प्रतिफल अल्लाह के पास निश्चित हो

إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ
وَالْوِلْدَانَ لَيْسَ عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ وَلَا
يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ۝

فَأُولَئِكَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَعْفُو عَنْهُمْ
وَكَانَ اللَّهُ عَفُوًّا غَفُورًا ۝

وَمَنْ يُهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي
الْأَرْضِ مُرْعَبًا كَثِيرًا وَسَعَةً وَمَنْ
يَخْرُجْ مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ
تَوَيْدًا رَكَّةً أَوْ مَوْتًا فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى
اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

1 जब सत्य के विरोधियों के अत्याचार से विवश हो कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीने हिजरत (प्रस्थान) कर गये, तो अरब में दो प्रकार के देश हो गये। मदीना दारुल हिजरत (प्रवास गृह) था। जिस में मुसलमान हिजरत कर के एकत्र हो गये। तथा दारुल हर्ब। अर्थात् वह क्षेत्र जो शत्रुओं के नियंत्रण में था। और जिस का केन्द्र मक्का था। यहाँ जो मुसलमान थे वह अपनी आस्था तथा धार्मिक कर्म से वंचित थे। उन्हें शत्रु का अत्याचार सहना पड़ता था। इस लिये उन्हें यह आदेश दिया गया था कि मदीने हिजरत कर जायें। और यदि वह शक्ति रखते हुये हिजरत नहीं करेंगे तो अपने इस आलस्य के लिए उत्तर दायी होंगे। इस के पश्चात् आगामी आयत में उन की चर्चा की जा रही है जो हिजरत करने से विवश थे। मक्का से मदीना हिजरत करने का यह आदेश मक्का की विजय सन् 8 हिज्री के पश्चात् निरस्त कर दिया गया। इब्ने अब्बास रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में कुछ मुसलमान काफ़िरों की संख्या बढ़ाने के लिये उन के साथ हो जाते थे। और तीर या तलवार लगाने से मारे जाते थे, उन्हीं के बारे में यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी, 4596)

गया। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

101. और जब तुम धरती में यात्रा करो तो नमाज़^[1] क़स्र (संक्षिप्त) करने में तुम पर कोई दोष नहीं, यदि तुम्हें डर हो कि काफ़िर तुम्हें सतारेंगे। वास्तव में काफ़िर तुम्हारे खुले शत्रु हैं।

102. तथा (हे नबी!) जब आप (रणक्षेत्र में) उपस्थित हों, और उन के लिये नमाज़ की स्थापना करें तो उन का एक गिरोह आप के साथ खड़ा हो जाये, और अपने अस्त्र शस्त्र लिये रहे। और जब वह सजदा कर लें, तो तुम्हारे पीछे हो जायें, तथा दूसरा गिरोह आये जिस ने नमाज़ नहीं पढ़ी है, और आप के साथ नमाज़ पढ़ें। और अपने अस्त्र शस्त्र लिये रहें। काफ़िर चाहते हैं कि तुम अपने शस्त्रों से निश्चेत हो जाओ तो तुम पर यकायक धावा बोल दें। और तुम पर कोई दोष नहीं, यदि वर्षा के कारण तुम्हें दुःख हो अथवा तुम रोगी रहो कि अपने शस्त्र^[2] उतार दो। तथा अपने बचाव का

وَإِذَا صَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ ۚ إِنَّ خِفَتُمْ أَنْ يُفْتِتَكُمْ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَإِنَّ الْكُفْرَانَ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِينًا ۝

وَإِذَا كُنْتُمْ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَاةَ فَلْتَقُمْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا أَسْلِحَتَهُمْ ۗ فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا مِنْ وَرَائِكُمْ وَلْتَأْتِ طَائِفَةٌ أُخْرَىٰ لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا أِحْذًا مِنْهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ ۗ وَذَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ تَغْفُلُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيلُونَ عَلَيْكُمْ مَيْلَةً وَاحِدَةً ۗ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ أَذًى مِنْ مَطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَنْ تَضَعُوا أَسْلِحَتَكُمْ وَخُذُوا حِذْرَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا ۝

- 1 क़स्र का अर्थ चार रकअत वाली नमाज़ को दो रकअत पढ़ना है। यह अनुमति प्रत्येक यात्रा के लिये है शत्रु का भय हो, या न हो।
- 2 इस का नाम (सलातुल खौफ़) अर्थात् भय के समय की नमाज़ है। जब रणक्षेत्र में प्रत्येक समय भय लगा रहे, तो उस की विधि यह है कि सेना के दो भाग कर लें। एक भाग को नमाज़ पढ़ायें, तथा दूसरा शत्रु के सम्मुख खड़ा रहे, फिर दूसरा आये और नमाज़ पढ़ें। इस प्रकार प्रत्येक गिरोह की एक रकअत और इमाम की दो रकअत होंगी। हदीसों में इस की और भी विधियाँ आई हैं। और यह युद्ध की स्थितियों पर निर्भर है।

ध्यान रखो। निःसंदेह अल्लाह ने काफ़िरों के लिये अपमान कारी यातना तय्यार कर रखी है।

103. फिर जब तुम नमाज़ पूरी कर लो, तो खड़े, बैठे, लेटे प्रत्येक स्थिति में अल्लाह का स्मरण करो। और जब तुम शान्त हो जाओ तो पूरी नमाज़ पढ़ो। निःसंदेह नमाज़ ईमान वालों पर निर्धारित समय पर अनिवार्य की गई है।

104. तथा तुम (शत्रु) जाति का पीछा करने में शिथिल न बनो, यदि तुम्हें दुख पहुँचा है, तो तुम्हारे समान उन्हें भी दुख पहुँचा है। तथा तुम अल्लाह से जो आशा^[1] रखते हो, वह आशा वह नहीं रखते। तथा अल्लाह अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।

105. (हे नबी!) हम ने आप की ओर इस पुस्तक (कुर्आन) को सत्य के साथ उतारा है, ताकि आप लोगों के बीच उस के अनुसार निर्णय करें, जो अल्लाह ने आप को बताया है, और विद्वांसघातियों के पक्षधर न^[2] बनें।

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ فَادْكُرُوا اللَّهَ قِيَمًا
وَقَعُودًا وَعَلَىٰ جُجُوبِكُمْ فَإِذَا اطْمَأَنَّكُمْ
فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى
الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَّوْقُوتًا ﴿١٠٣﴾

وَلَا تَهْمُوا فِي ابْتِغَاءِ الْقَوْمِ إِنْ تَوَلَّوْا
تَالْمُؤْنِ فَإِنَّهُمْ يَأْتُونَ كَمَا تَأْتُونَ
وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ وَكَانَ اللَّهُ
عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٠٤﴾

إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ
بِمَا أَرْسَلَ اللَّهُ ۖ وَلَا تَكُنْ لِلظَّالِمِينَ حَصِيمًا ﴿١٠٥﴾

1 अर्थात प्रतिफल तथा सहायता और समर्थन की।

2 यहाँ से अर्थात आयत 105 से 113 तक, के विषय में भाष्यकारों ने लिखा है कि एक व्यक्ति ने एक अन्सारी की कवच (ज़िरह) चुरा ली। और जब देखा कि उस का भेद खुल जायेगा तो उस का आरोप एक यहूदी पर लगा दिया। और उस के कबीले के लोग भी उस के पक्षधर हो गये। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये, और कहा कि आप इसे निर्दोष घोषित कर दें। और उन की बातों के कारण समीप था कि आप उसे निर्दोष घोषित कर के यहूदी को अपराधी बना देते कि आप को सावधान करने के लिये यह आयतें उतरीं। (इब्ने जरीर) इन आयतों का साधारण भावार्थ यह है कि मुसलमान न्यायधीश को चाहिये कि किसी पक्ष

106. तथा अल्लाह से क्षमा याचना करते रहें, निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है ।
107. और उन का पक्ष न लें, जो स्वयं अपने साथ विश्वासघात करते हों, निःसंदेह अल्लाह विश्वासघाती, पापी से प्रेम नहीं करता।^[1]
108. वह (अपने करतूत) लोगों से छुपा सकते हैं। तथा अल्लाह से नहीं छुपा सकते। और वह उन के साथ होता है, जब वह रात में उस बात का परामर्श करते हैं, जिस से वह प्रसन्न नहीं^[2] होता। तथा अल्लाह उसे घेरे हुये है जो वह कर रहे हैं।
109. सुनो! तुम्हीं वह हो कि संसारिक जीवन में उन की ओर से झगड़ लियो तो प्रलय के दिन उन की ओर से कौन अल्लाह से झगड़ेगा, और कौन उन का अभिभाषक (प्रतिनिधि) होगा?
110. जो व्यक्ति कोई कुकर्म करेगा, अथवा अपने ऊपर अत्याचार करेगा, और फिर अल्लाह से क्षमा याचना करेगा, तो वह उसे अति क्षमी दयावान् पाएगा ।

وَأَسْتَغْفِرِ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

وَلَا يُجَادِلُ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَالُونَ أَنفُسَهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ حَوًّا أَنَا أَرْحَمًا ۝

يَسْتَخْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُونَ مِنَ اللَّهِ وَهُمْ لَهُمْ آذَانٌ مَّا كَانُوا يَظُنُّونَ ۝ وَالْقَوْلُ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطًا ۝

هَآأَنُكُمْ هُوَ لَآءِ جَادَ لَكُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَمَن يُجَادِلُ اللَّهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَم مَّن يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكَذٰلِكَ ۝

وَمَن يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

का इस लिये पक्षपात न करे कि वह मुसलमान है। और दूसरा मुसलमान नहीं है, बल्कि उसे हर हाल में निष्पक्ष हो कर न्याय करना चाहिए।

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि न्यायधीश को ऐसी बात नहीं करनी चाहिये, जिस में किसी का पक्षपात हो।
- 2 आयत का भावार्थ यह है कि मुसलमानों को अपना सहधर्मी अथवा अपनी जाति या परिवार का होने के कारण किसी अपराधी का पक्षपात नहीं करना चाहिये। क्योंकि संसार न जाने, परन्तु अल्लाह तो जानता है कि कौन अपराधी है, कौन नहीं।

111. और जो व्यक्ति कोई पाप करता है तो अपने ऊपर करता^[1] है। तथा अल्लाह अति ज्ञानी तत्त्वज्ञ है।

112. और जो व्यक्ति कोई चूक अथवा पाप स्वयं करे, और फिर किसी निर्दोष पर उस का आरोप लगा दे तो उस ने मिथ्या दोषारोपण तथा खुले पाप का^[2] बोझ अपने ऊपर लाद लिया।

113. और (हे नबी!) यदि आप पर अल्लाह की दया तथा कृपा न होती तो उन के एक गिरोह ने संकल्प ले लिया था कि आप को कुपथ कर दें, और वह स्वयं को ही कुपथ कर^[3] रहे थे। तथा वह आप को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते। क्यों कि अल्लाह ने आप पर पुस्तक (कुर्आन) तथा हिक्मत (सुन्नत) उतारी है। और आप को उस का ज्ञान दे दिया है जिसे आप नहीं जानते थे। तथा यह आप पर अल्लाह की बड़ी दया है।

114. उन के अधिकांश सरगोशी में कोई भलाई नहीं होती, परन्तु जो दान अथवा सदाचार या लोगों में सुधार कराने का आदेश दे। और जो कोई ऐसे कर्म अल्लाह की प्रसन्नता के

وَمَنْ يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُهُ عَلَى نَفْسِهِ
وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

وَمَنْ يَكْسِبْ خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهِ بَرِيئًا
فَقَدْ أَحْمَلَ ظُهُمًا فَإِنَّهَا كِثْرٌ مِمَّا يُثْمَرُونَ ۝

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ لَهَمَّتْ
كَلِمَاتُكَ مِنْهُمْ أَنْ يَضْلُوكَ وَمَا يَضِلُّونَ إِلَّا
أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَصُدُّونَكَ مِنْ شَيْءٍ وَأَنْزَلَ اللَّهُ
عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ
كَانَ تَعْلَمُ وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ۝

لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّنْ نَّجْوَاهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ
بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ أَصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ
وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ
فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

- 1 भावार्थ यह है कि जो अपराध करता है उस के अपराध का दुष्परिणाम उसी के ऊपर है। अतः तुम यह न सोचो कि अपराधी के अपने सहधर्मी अथवा संबंधी होने के कारण, उस का अपराध सिद्ध हो गया, तो हम पर भी धब्बा लग जायेगा।
- 2 अर्थात् स्वयं पाप कर के दूसरे पर आरोप लगाना दुहरा पाप है।
- 3 कि आप निर्दोष को अपराधी समझ लें।

लिये करेगा तो हम उसे बहुत भारी प्रतिफल प्रदान करेंगे।

115. तथा जो व्यक्ति अपने ऊपर मार्गदर्शन उजागर हो जाने के^[1] पश्चात् रसूल का विरोध करे, और ईमान वालों की राह के सिवा (दूसरी राह) का अनुसरण करे तो हम उसे वहीं फेर^[2] देंगे जिधर फिरा है। और उसे नरक में झोंक देंगे तथा वह बुरा निवास स्थान है।

116. निःसंदेह अल्लाह इसे क्षमा^[3] नहीं करेगा कि उस का साझी बनाया जाये, और इस के सिवा जिसे चाहेगा क्षमा कर देगा। तथा जो अल्लाह का साझी बनाता है वह कुपथ में बहुत दूर चला गया।

117. वह (मिश्रणवादी) अल्लाह के सिवा देवियों को ही पुकारते हैं। और धिक्कारे हुये शैतान को पुकारते हैं।

118. अल्लाह ने जिसे धिक्कार दिया है। और उस (शैतान) ने कहा था कि मैं तेरे भक्तों से एक निश्चित भाग ले कर रहूँगा।

119. और उन्हें अवश्य बहकाऊँगा, तथा

وَمَنْ يُتَابِقِ الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصَلِّهِ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۝

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ۝

إِنْ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا إِنشَاءً وَإِنْ يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَرِيدًا ۝

لَعَنَهُ اللَّهُ وَقَالَ لَا أُخَذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَفْرُوضًا ۝

وَأُضِلَّهُمْ وَلَا تَتَّبِعُهُمْ وَلَا مَرْتَبَهُمْ

- 1 ईमान वालों से अभिप्राय नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा (साथी) हैं।
2 विद्वानों ने लिखा है कि यह आयत भी उसी मुनाफिक से संबंधित है। क्योंकि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस के विरुद्ध दण्ड का निर्णय कर दिया तो वह भाग कर मक्का के मिश्रणवादियों से मिल गया। (तफ्सीरे कुर्तुबी)। फिर भी इस आयत का आदेश साधारण है।
3 अर्थात् शिर्क (मिश्रणवाद) अक्षम्य पाप है।

कामनायें दिलाऊँगा, और आदेश दूँगा कि वह पशुओं के कान चीर दें। तथा उन्हें आदेश दूँगा, तो वे अवश्य अल्लाह की संरचना में परिवर्तन^[1] कर देंगे। तथा जो शैतान को अल्लाह के सिवा सहायक बनायेगा तो वह खुली क्षति में पड़ गया।

فَلْيَبْتَئِكُنَّ آذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَا مِرْيَةَ
فَلْيَعْيِرُنَّ خَلْقَ اللَّهِ وَمَنْ يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ
وَلِيًّا مَنْ دُونَ اللَّهِ فَقَدْ خَسِرَ خَسْرًا مُّبِينًا ۝

120. वह उन को वचन देता, तथा कामनाओं में उलझाता है। और उन को जो वचन देता है वह धोखे के सिवा कुछ नहीं है।

يَعِدُّهُمْ وَيُؤْتِيهِمْ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ
إِلَّا غُرُورًا ۝

121. उन्हीं का निवास स्थान नरक है। और वह उस से भागने की कोई राह नहीं पायेंगे।

أُولَئِكَ مَا لَهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا
مَجِيضًا ۝

122. तथा जो लोग ईमान लाये, और सत्कर्म किये, हम उन को ऐसे स्वर्गों में प्रवेश देंगे जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। वे उस में सदावासी होंगे। यह अल्लाह का सत्य वचन है। और अल्लाह से अधिक सत्य कथन किस का हो सकता है?

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا وَعِنْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَمَنْ
أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا ۝

123. (यह प्रतिफल) तुम्हारी कामनाओं तथा अहले किताब की कामनाओं पर निर्भर नहीं। जो कोई भी दुष्कर्म करेगा तो वह उस का कुफल पायेगा, तथा अल्लाह के सिवा अपना कोई रक्षक और सहायक नहीं पायेगा।

لَيْسَ بِأَمَانِيكُمْ وَلَا مَأْنِي أَهْلِ الْكِتَابِ
مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْرِي بِهِ وَلَا يَجِدْ لَهُ مِنْ
دُونِ اللَّهِ وَليًّا وَلَا نَصِيرًا ۝

1 इस के बहुत से अर्थ हो सकते हैं, जैसे गोदना, गुदवाना, स्त्री का पुरुष का आचरण और स्वभाव बनाना, इसी प्रकार पुरुष का स्त्री का आचरण, तथा रूप धारण करना आदि।

124. तथा जो सत्कर्म करेगा, वह नर हो अथवा नारी, और ईमान भी^[1] रखता होगा, तो वही लोग स्वर्ग में प्रवेश पायेंगे, और तनिक भी अत्याचार नहीं किये जायेंगे।

125. तथा उस व्यक्ति से अच्छा किस का धर्म हो सकता है जिस ने स्वयं को अल्लाह के लिये झुका दिया, और वह एकेध्वरवादी भी हो। और एकेध्वरवादी इब्राहीम के धर्म का अनुसरण कर रहा हो? और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना विशुद्ध मित्र बना लिया।

126. तथा अल्लाह ही का है, जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, और अल्लाह प्रत्येक चीज़ को अपने नियंत्रण में लिये हुये है।

127. (हे नबी!) वह स्त्रियों के बारे में आप से धमदिश पूछ रहे हैं। आप कह दें कि अल्लाह उन के बारे में तुम्हें आदेश देता है, और वह आदेश भी है जो इस से पूर्व पुस्तक (कुर्आन) में तुम्हें उन अनाथ स्त्रियों के बारे में सुनाये गये हैं, जिन के निर्धारित अधिकार तुम नहीं देते,

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِنْ ذَكَرٍ أُولَٰئِكَ
وَهُمْ مُؤْمِنُونَ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا
يُظَلَمُونَ نَقِيرًا ﴿١٢٤﴾

وَمَنْ أَحْسَنُ دِينًا مِمَّنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ
وَهُوَ مُخْسِنٌ وَأَتَىٰ بَعْدَ مِلَّةِ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا
وَاتَّخَذَ اللَّهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلًا ﴿١٢٥﴾

وَاللَّهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَكَانَ
اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطًا ﴿١٢٦﴾

وَيَسْأَلُونَكَ فِي النِّسَاءِ قُلِ اللَّهُ يُؤْتِيكُمْ
فِيهِنَّ أَوْ مَا يَحِلُّ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ فِي يَتِمِّي
النِّسَاءِ السَّيِّئَاتِ لَأَتُوْنَ نَهْنَهُنَّ مَا كَتَبَ لَهُنَّ
وَتَرَعَبْنَ أَنْ تَنكِحُوهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ
مِنَ الْوِلْدَانِ وَأَنْ تَقُوْمُوا لِلْيَتَامَىٰ بِالْقِسْطِ
وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِهِ عَلِيمًا ﴿١٢٧﴾

1 अर्थात् सत्कर्म का प्रतिफल सत्य आस्था और ईमान पर आधारित है कि अल्लाह तथा उस के सब नबियों पर ईमान लाया जाये। तथा हदीसों से विद्वित होता है कि एक बार मुसलमानों और अहले किताब के बीच विवाद हो गया। यहूदियों ने कहा कि हमारा धर्म सब से अच्छा है। मुक्ति केवल हमारे ही धर्म में है। मुसलमानों ने कहा: हमारा धर्म सब से अच्छा तथा अंतिम धर्म है। उसी पर यह आयत उतरी। (इब्ने जरीर)

और उन से विवाह करने की रुचि रखते हो, तथा उन बच्चों के बारे में भी जो निर्बल हैं। तथा (यह भी आदेश देता है कि) अनाथों के लिये न्याय पर स्थित रहो।^[1] तथा तुम जो भी भलाई करते हो अल्लाह उसे भली भाँति जानता है।

128. और यदि किसी स्त्री को अपने पति से दुर्व्यवहार अथवा विमुख होने की शंका हो, तो उन दोनों पर कोई दोष नहीं कि आपस में कोई संधि कर लें, और संधि कर लेना ही अच्छा^[2] है। और लोभ तो सभी में होता है। और यदि तुम एक दूसरे के साथ उपकार करो और (अल्लाह से) डरते रहो तो निःसंदेह तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह उस से सूचित है।

129. ओर यदि तुम अपनी पत्नियों के बीच न्याय करना चाहो, तो भी ऐसा कदापि नहीं कर^[3] सकोगे। अतः एक ही की ओर पूर्णतः झुक^[4]

وَإِنِ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُورًا أَوْ
إِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا
صُلْحًا وَالصُّلْحُ خَيْرٌ وَأُحْضِرَتِ الْأَنْفُسُ
الشُّرَّ وَإِنْ تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا
تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿١٢٨﴾

وَلَنْ تَسْتَطِيعُوا أَنْ تَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ
حَرَّصْتُمْ فَلَا تَبْتَئِلُوا كَلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوهَا
كَالْمَعْلُوقَةِ وَإِنْ تَصْلِحُوا وَتَتَّقُوا إِنَّ اللَّهَ كَانَ

- 1 इस्लाम से पहले यदि अनाथ स्त्री सुन्दर होती तो उस का संरक्षक यदि उस का विवाह उस से हो सकता हो, तो उस से विवाह कर लेता परन्तु उसे महर (विवाह उपहार) नहीं देता। और यदि सुन्दर न हो तो दूसरे से उसे विवाह नहीं करने देता था। ताकि उस का धन उसी के पास रह जाये। इसी प्रकार अनाथ बच्चों के साथ भी अत्याचार और अन्याय किया जाता था, जिन से रोकने के लिये यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर)
- 2 अर्थ यह है कि स्त्री, पुरुष की इच्छा और रुचि पर ध्यान दे। तो यह संधि की रीति अलगाव से अच्छी है।
- 3 क्यों कि यह स्वभाविक है कि मन का आकर्षण किसी एक की ओर होगा।
- 4 अर्थात् जिस में उसके पति की रुचि न हो, और न व्यवहारिक रूप से बिना

न जाओ, और (शेष को) बीच में लटकी हुई न छोड़ दो। और यदि (अपने व्यवहार में) सुधार^[1] रखो और अल्लाह से डरते रहो तो निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

130. और यदि दोनों अलग हो जायें तो अल्लाह प्रत्येक को अपनी दया से (दूसरे से) निश्चिंत^[2] कर देगा। और अल्लाह बड़ा उदार तत्वज्ञ है।
131. तथा अल्लाह ही का है, जो आकाशों तथा धरती में है। और हम ने तुम से पूर्व अहले किताब को तथा तुम को आदेश दिया है कि अल्लाह से डरते रहो। और यदि तुम कुफ़्र (अवैज्ञा) करोगे तो निस्संदेह जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह अल्लाह ही का है। तथा अल्लाह निस्पृह^[3] प्रशंसित है।
132. तथा अल्लाह ही का है जो आकाशों तथा धरती में है। और अल्लाह काम बनाने के लिये बस है।
133. और वह चाहे तो, हे लोगो! तुम्हें ले जाये^[4] और तुम्हारे स्थान पर

عَفُورًا رَّحِيمًا

وَلَنْ يَتَعَفَّرَ قَائِعِينَ اللَّهُ كَلَّامِينَ سَعَتِهِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ وَّاسِعًا حَكِيمًا ۝

وَاللَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنْ اتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَإِن تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَنِيًّا حَمِيدًا ۝

وَاللَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝

إِن يَشَاءُ يُدْبِرْكُمْ أَيُّهَا النَّاسُ وَيَأْتِ

पति के हो।

- 1 अर्थात् सब के साथ व्यवहार तथा सहवास संबंध में बराबरी करो।
- 2 अर्थात् यदि निभाव न हो सके तो विवाह बंधन में रहना आवश्यक नहीं। दोनों अलग हों जायें, अल्लाह दोनों के लिये पति तथा पत्नी की व्यवस्था बना देगा।
- 3 अर्थात् उस की अवैज्ञा से तुम्हारा ही बिगड़ेगा।
- 4 अर्थात् तुम्हारी अवैज्ञा के कारण तुम्हें ध्वस्त कर दे। और दूसरे आज्ञाकारियों

दूसरों को ला दे। तथा अल्लाह ऐसा कर सकता है।

134. जो संसारिक प्रतिकार (बदला) चाहता हो तो अल्लाह के पास संसार तथा परलोक दोनों का प्रतिकार (बदला) है। तथा अल्लाह सब की बात सुनता और सब के कर्म देख रहा है।

135. हे ईमान वालो! न्याय के साथ खड़े रह कर अल्लाह के लिये साक्षी (गवाह) बन जाओ। यद्यपि साक्ष्य (गवाही) तुम्हारे अपने अथवा माता पिता और समीपवर्तियों के विरुद्ध हो, यदि कोई धनी अथवा निर्धन हो तो अल्लाह तुम से अधिक उन दोनों का हितैषी है। अतः अपनी मनोकांक्षा के लिये न्याय से न फिरो। और यदि तुम बात घुमा फिरा कर करोगे, अथवा साक्ष्य देने से कतराओगे, तो निःसंदेह अल्लाह उस से सूचित है जो तुम करते हो।

136. हे ईमान वालो! अल्लाह तथा उस के रसूल, और उस पुस्तक (कुरआन) पर जो उस ने अपने रसूल पर उतारी है, तथा उन पुस्तकों पर जो इस से पहले उतारी हैं, ईमान लाओ। और जो अल्लाह तथा उस के फरिश्तों, उस की पुस्तकों और अन्त दिवस (प्रलय) को अस्वीकार करेगा, तो वह कुपथ में बहुत दूर जा पड़ा।

137. निःसंदेह जो ईमान लाये, फिर

को पैदा कर दे।

يَا خَيْرِينَ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى ذَلِكَ قَدِيرًا ۝

مَنْ كَانَ يُرِيدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ مِمَّا كَانَ اللَّهُ سَمِيعًا
بَصِيرًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا قَوْمِيْنَ يَا قَسِطٍ
شُهَدَاءَ اللَّهِ لَوَعَلَىٰ أَنفُسِكُمْ أَوَالِدِيْنَ
وَالْأَقْرَبِيْنَ إِنْ كُنَّ غَنِيًّا أَوْ فَقِيرًا فَاللَّهُ أَوْلَىٰ
بِهِمَا فَخَلَاتِمْ مَعَ الْهُوَىٰ إِنْ تَعَدَّوْهُ وَإِنْ تَلَوْا
أَوْ تَعْرَضُوا وَإِنِ الْكَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَيْرًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالْكِتَابِ
الَّذِي نَزَّلَ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ مِنْ
قَبْلُ وَمَنْ يَكْفُرْ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ

काफिर हो गये, फिर ईमान लाये, फिर काफिर हो गये, फिर कुफ्र में बढ़ते ही चले गये तो अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा नहीं करेगा और न उन्हें सीधी डगर दिखायेगा।

138. (हे नबी!) आप मुनाफ़िकों (द्विधावादियों) को शुभ सूचना सुना दें कि उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

139. जो ईमान वालों को छोड़ कर, काफिरों को अपना सहायक मित्र बनाते हैं, क्या वह उन के पास मान सम्मान चाहते हैं? तो निःसंदेह सब मान सम्मान अल्लाह ही के लिये^[1] है।

140. और उस (अल्लाह) ने तुम्हारे लिए अपनी पुस्तक (क़ुरआन) में यह आदेश उतार^[2] दिया है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों को अस्वीकार किया जा रहा है, तथा उन का उपहास किया जा रहा है, तो उन के साथ न बेठो, यहाँ तक कि वह दूसरी बात में लग जायें। निःसंदेह तुम उस समय उन्हीं के समान हो जाओगे। निश्चय अल्लाह मुनाफ़िकों (द्विधावादियों) तथा काफिरों सब को नरक में एकत्र करने वाला है।

141. जो तुम्हारी प्रतीक्षा में रहा करते हैं, यदि तुम्हें अल्लाह की सहायता से विजय प्राप्त हो, तो कहते हैं: क्या

أَزَادُوا كُفْرًا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ يَغْفِرْ لَهُمْ وَلَا لَهُمْ فِيهِمْ
سَبِيلًا ۝

يَخْرُجُ الْمُنَافِقِينَ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا

الَّذِينَ يَتَّخِذُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ
الْمُؤْمِنِينَ ابْتِغَاءَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَإِنَّ الْعِزَّةَ
لِلَّهِ جَمِيعًا ۝

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ آيَاتَ
اللَّهِ يَكْفُرُ بِهَا وَيَسْتَهْزِئُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا مَعَهُمْ
حَتَّىٰ يَتَوَضَّؤُوا فِي حَدِيثِ غَيْرَةٍ إِنَّكُمْ إِذَا
مَثَلْتُمْ إِذَٰنَ اللَّهِ جَاوِعَ الْمُنَافِقِينَ
وَالْكَافِرِينَ فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا ۝

الَّذِينَ يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ فِتْنَةٌ مِنْ
اللَّهِ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ مَعَكُمْ ۖ وَلَنْ كَانَ لِلْكَافِرِينَ

1 अर्थात् अल्लाह के अधिकार में है, काफ़िरों के नहीं।

2 अर्थात् सूरह अनआम आयत नम्बर 68 में।

हम तुम्हारे साथ न थे? और यदि उन (काफिरों) का पल्ला भारी रहे, तो कहते हैं कि क्या हम तुम पर छा नहीं गये थे, और तुम्हें ईमान वालों से बचा रहे थे? तो अल्लाह ही प्रलय के दिन तुम्हारे बीच निर्णय करेगा। और अल्लाह काफिरों के लिये ईमान वालों पर कदापि कोई राह नहीं बनायेगा।^[1]

صَيْبٌ قَالُوا أَلَمْ نَسْتَحِذْكُمْ وَعَسْتَعْمَدُوا
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ قَالَهُ بِكُمْ بِبَيْتِكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَوْلَا
يَجْعَلُ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا

142. वास्तव में मुनाफ़िक् (द्विधावादी) अल्लाह को धोखा दे रहे हैं, जब कि: वही उन्हें धोखे में डाल रहा^[2] है, और जब वह नमाज़ के लिये खड़े होते हैं, तो आलसी होकर खड़े होते हैं, वह लोगों को दिखाते हैं, और अल्लाह का स्मरण थोड़ा ही करते हैं।

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ
وَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا كَسَالَى يُرَاءُونَ
النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا

143. वह इस के बीच द्विधा में पड़े हुये हैं, न इधर न उधर। तथा जिसे अल्लाह कुपथ कर दे, तो आप उस के लिये कोई राह नहीं पा सकेंगे।

مُذَبِّبِينَ بَيْنَ ذَلِكَ ۚ كَذَلِكَ هُوَ آتٍ وَلَا إِلَى
هُوَ آتٍ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَكُنْ حَيْدَهُ سَبِيلًا

144. हे ईमान वालो! ईमान वालों को

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْكَافِرِينَ

1 अर्थात् द्विधावादी काफिरों की कितनी ही सहायता करें, उन की ईमान वालों पर स्थायी विजय नहीं होगी। यहाँ से द्विधावादियों के आचरण और स्वभाव की चर्चा की जा रही है।

2 अर्थात् उन्हें अवसर दे रहा है, जिसे वह अपनी सफलता समझते हैं। आयत 139 से यहाँ तक मुनाफ़िक् के कर्म और आचरण से संबंधित जो बातें बताई गई हैं वह चार हैं:

1- वह मुसलमानों की सफलता पर विश्वास नहीं रखते।

2- मुसलमानों को सफलता मिले तो उनके साथ हो जाते हैं, और काफिरों को मिले तो उन के साथ।

3- नमाज़ मन से नहीं बल्कि केवल दिखाने के लिये पढ़ते हैं।

4- वह ईमान और कुफ़र के बीच द्विधा में रहते हैं।

छोड़ कर काफ़िरों को सहायक मित्र न बनाओ। क्या तुम अपने विरुद्ध अल्लाह के लिये खुला तर्क बनाना चाहते हो?

145. निश्चय मुनाफ़िक् (द्विधावादी) नरक की सब से नीची श्रेणी में होंगे। और आप उन का कोई सहायक नहीं पायेंगे।

146. परन्तु जिन्हों ने क्षमा याचना कर ली, तथा अपना सुधार कर लिया, और अल्लाह को सुदृढ़ पकड़ लिया, तथा अपने धर्म को विशुद्ध कर लिया, तो वह लोग ईमान वालों के साथ होंगे। और अल्लाह ईमान वालों को बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेगा।

147. अल्लाह को क्या पड़ी है कि तुम्हें यातना दे, यदि तुम कृतज्ञ रहो, तथा ईमान रखो। और अल्लाह^[1] बड़ा गुणग्राही अति ज्ञानी है।

148. अल्लाह को अपशब्द (बुरी बात) की चर्चा नहीं भाती, परन्तु जिस पर अत्याचार किया गया^[2] हो। और अल्लाह सब सुनता और जानता है।

149. यदि तुम कोई भली बात खुल कर

أُولَئِكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ أَرِيبٌ أَنْ
تَجْعَلُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا مُبِينًا ⑥

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرَكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ
وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيرًا ⑥

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا بِاللَّهِ
وَآخِضُوا إِلَيْهِمْ يَوْمَ اللَّهِ فَأُولَئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ
وَسَوْفَ يُؤْتِي اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ⑥

مَا يَفْعَلُ اللَّهُ بِكُمْ إِذَا شَكَرْتُمْ
وَأَمَّنْتُمْ وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ⑥

لَا يُحِبُّ اللَّهُ الْجَهْرَ بِالسُّوِّءِ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا
مَنْ ظَلَمَ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا عَلِيمًا ⑥

إِنْ تُبَدَّوْا وَآخِرُكُمْ سُوءًا أَوْ تَعْفَوْا عَنْ سُوءٍ فَإِنَّ

1 इस आयत में यह संकेत है कि अल्लाह, कुफल और सुफल मानव कर्म के परिणाम स्वरूप देता है। जो उसके निर्धारित किये हुये नियम का परिणाम होता है। जिस प्रकार संसार की प्रत्येक चीज़ का एक प्रभाव होता है, ऐसे ही मानव के प्रत्येक कर्म का भी एक प्रभाव होता है।

2 आयत में कहा गया है कि किसी व्यक्ति में कोई बुराई हो तो उस की चर्चा न करते फिरो। परन्तु उत्पीड़ित व्यक्ति अत्याचारी के अत्याचार की चर्चा कर सकता है।

करो अथवा उसे गुप्त करो या किसी बुराई को क्षमा कर दो, तो निःसंदेह अल्लाह अति क्षमी सर्व शक्तिशाली है।

150. जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों के साथ कुफ़्र (अविश्वास) करते हैं, और चाहते हैं कि अल्लाह तथा उस के रसूलों के बीच अन्तर करें, तथा कहते हैं कि हम कुछ पर ईमान रखते हैं, तथा कुछ के साथ कुफ़्र करते हैं, और इस के बीच राह^[1] बनाना चाहते हैं।

151. वही शुद्ध काफिर है, और हम ने काफिरों के लिये अपमानकारी यातना तय्यार कर रखी है।

152. तथा जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाये, और उन में से किसी के बीच अंतर नहीं किया, तो उन्हीं को हम उन का प्रतिफल प्रदान करेंगे, तथा अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

153. हे नबी! आप से अहले किताब माँग करते हैं कि आप उन पर आकाश से कोई पुस्तक उतार दें, तो इन्होंने मुसा से इस से भी बड़ी माँग की थी। उन्हीं ने कहा कि हमें अल्लाह को प्रत्यक्ष^[2] दिखा दो, तो इन के

اللَّهُ كَانَ عَفُوًّا ذَمِيمًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ أَنْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيَقُولُونَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَنُكْفِرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ أَنْ يَتَّخِذُوا بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ۝

أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ حَقًّا وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ۝

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَمْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ أُولَٰئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيهِمْ أَجْرَهُمُ وَكَانَ اللَّهُ عَفُوًّا رَحِيمًا ۝

يَسْأَلُكَ أَهْلُ الْكِتَابِ أَنْ تَنزِلَ عَلَيْهِمْ كِتَابًا مِنَ السَّمَاءِ فَقَدْ سَأَلُوا مُوسَىَٰ الْكَبِيرَ مِنْ ذَلِكَ فَقَالُوا إِنَّا نَرَى اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْهُمُ الضُّعْفَةُ يُظْلِمُهُمْ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَعَفَوْنَا عَنْ ذَلِكَ وَإِنَّا لَمُوسَىٰ

1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस है कि सब नबी भाई हैं उन के बाप एक और मायें अलग-अलग हैं। सब का धर्म एक है, और हमारे बीच कोई नबी नहीं है। (सहीह बुखारी - 3443)

2 अर्थात आँखों से दिखा दो।

سُلْطَانًا مُّبِينًا ۝

अत्याचारों के कारण इन्हें बिजली ने धर लिया, फिर इन्होंने खुली निशानियाँ आने के पश्चात् बछड़े को पुज्य बना लिया, फिर हम ने इसे भी क्षमा कर दिया, और हम ने मूसा को खुला प्रभुत्व प्रदान किया।

154. और हम ने (उन से वचन लेने के लिये) उन के ऊपर तूर (पर्वत) उठा दिया, तथा हम ने उन से कहा: द्वार में सज्दा करते हुये प्रवेश करो, तथा हम ने उन से कहा कि शनिवार^[1] के विषय में अति न करो। और हम ने उन से दृढ़ वचन लिया।

155. तो उन के अपना वचन भंग करने, तथा उन के अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़र करने, और उन के नबियों को अवैध बध करने, तथा उन के यह कहने के कारण कि हमारे दिल बंद हैं। (ऐसी बात नहीं है) बल्कि अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी है। अतः इन में से थोड़े ही ईमान लायेंगे।

156. तथा उन के कुफ़र और मर्यम पर घोर आरोप लगाने के कारण।

157. तथा उन के (गर्व से) कहने के कारण कि हम ने अल्लाह के रसूल, मर्यम के पुत्र: ईसा मसीह को बध कर दिया, जब कि (वास्तव में) उसे बध नहीं किया। और न सलीब (फाँसी) दी, परन्तु उन के

وَرَفَعْنَا قَوْقَاهُمُ الطُّورَ بَيْنَهُمْ وَقُلْنَا لَهُمْ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوا فِي السَّبْتِ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا ۝

فَمَا نَقِضَهُمْ مِيثَاقَهُمْ وَكَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَقَتَلُوا الْأَنْبِيَاءَ بَغْيًا وَكَفَرُوا فَكَلَّمْنَا نَحْنُ بِلُطَيْفِ اللَّهِ عَلَيْهِمْ كَيْفًا هُمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

وَكَفَرُوا بِهِمْ وَقَوْلُهُمْ عَلَى مَرْيَمَ هَتَّاءَ عَظِيمًا ۝

وَقَوْلُهُمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عَلَيْهِمْ إِلَّا آيَاتُ الظَّنِّ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا ۝

लिये (इसे) संदिग्ध कर दिया गया। और निःसंदेह जिन लोगों ने इस में विभेद किया वह भी शंका में पड़े हुये हैं। और उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं, केवल अनुमान के पीछे पड़े हुये हैं। और निश्चय उसे उन्होंने बध नहीं किया है।

158. बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी ओर (आकाश) में उठा लिया है, तथा अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

159. और सभी अहले किताब उस (ईसा) के मरण से पहले उस पर अवश्य ईमान^[1] लायेंगे, और प्रलय के दिन वह उन के विरुद्ध साक्षी^[2] होगा।

160. यहूदियों के (इन्हीं) अत्याचार के कारण हम ने उन पर स्वच्छ खाद्य पदार्थों को हराम (वर्जित) कर दिया जो उन के लिये हलाल (वैध) थे। तथा उन के बहुधा अल्लाह की राह से रोकने के कारण।

161. तथा उन के ब्याज लेने के कारण जब कि उन्हें उस से रोका गया था, और उन के लोगों का धन अवैध रूप से खाने के कारण, तथा

كَيْلَ رَزَقَهُ اللَّهُ الْيَتِيمَ وَكَانَ اللَّهُ غَوِيًّا حَكِيمًا ۝

وَأَنَّ مِنَ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِمْ
وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ سَهْبًا ۝

فِي ظُلْمٍ مِنَ الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبَاتٍ
أُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا ۝

وَأَخَذْنَا مِنْهُمُ الرِّبَا وَقَدْ نُهُوا عَنْهُ وَأَكْلَامِ أَمْوَالِ
النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا
أَلِيمًا ۝

1 अर्थात् प्रलय के समीप ईसा अलैहिस्साम के आकाश से उतरने पर उस समय के सभी अहले किताब उन पर ईमान लायेंगे, और वह उस समय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुयायी होंगे। सलीब तोड़ देंगे, और सुअरों को मार डालेंगे, तथा इस्लाम के नियमानुसार निर्णय और शासन करेंगे। (सहीह बुखारी- 2222, 3449, मुस्लिम- 155, 156)

2 अर्थात् ईसा अलैहिस्सलाम प्रलय के दिन ईसाइयों के बारे में साक्षी होंगे। (देखिये: सूरह माइदा, आयत 117)

हम ने उन में से काफ़ि़रों के लिये दुःखदायी यातना तय्यार कर रखी है।

162. परन्तु जो उन में से ज्ञान में पक्के हैं, तथा वह ईमान वाले जो आप की ओर उतारी गयी (पुस्तक कुर्आन) तथा आप से पूर्व उतारी गयी (पुस्तक) पर ईमान रखते हैं, और जो नमाज़ की स्थापना करने वाले, तथा ज़कात देने वाले, और अल्लाह तथा अन्तिम दिन पर ईमान रखने वाले हैं, उन्हीं को हम बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे।
163. (हे नबी!) हम ने आप की ओर वैसे ही वही भेजी है, जैसे नूह और उस के पश्चात् के नबियों के पास भेजी, और इब्राहीम तथा इस्माइल और इस्हाक तथा याकूब और उस की संतान, तथा ईसा और अय्यूब, तथा यूनस और हारून तथा सुलैमान के पास वही भेजी, और हम ने दावूद को ज़बूर प्रदान [1] की थी।
164. कुछ रसूल तो ऐसे हैं जिन की चर्चा हम इस से पहले आप से कर चुके हैं। और कुछ की चर्चा आप से नहीं की है, और अल्लाह ने मूसा से वास्तव में बात की।

لَكِنَ الرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيمِينَ الصَّلَاةَ وَالْمُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أُولَئِكَ سَنُؤْتِيهِمْ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَى نُوحٍ وَالنَّبِيِّينَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَوْحَيْنَا إِلَى إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْإِسْحَابِ وَعِيسَى وَإِيُوبَ وَيُوسُفَ وَهَارُونَ وَسُلَيْمَانَ وَآتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا ۝

وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنَاهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَى تَكْلِيمًا ۝

1 वही का अर्थ: संकेत करना, दिल में कोई बात डाल देना, गुप्त रूप से कोई बात कहना तथा संदेश भेजना है। हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु ने प्रश्न किया: अल्लाह के रसूल आप पर वही कैसे आती है? आप ने कहा: कभी निरन्तर घंटी की ध्वनि जैसे आती है जो मेरे लिये बहुत भारी होती है। और यह दशा दूर होने पर मुझे सब बात याद रहती है। और कभी फ़रिश्ता मनुष्य के रूप में आकर मुझ से बात करता है तो मैं उसे याद कर लेता हूँ। (सहीह बुख़ारी - 2, मुस्लिम- 2333)

165. यह सभी रसूल शुभ सूचना सुनाने वाले और डराने वाले थे, ताकि इन रसूलों के (आगमन के) पश्चात् लोगों के लिये अल्लाह पर कोई तर्क न रह^[1] जाये। और अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

166. (हे नबी!) (आप को यहूदी आदि नबी न मानें) परन्तु अल्लाह उस (कुरआन) के द्वारा जिसे आप पर उतारा है, साक्ष्य (गवाही) देता है कि (आप नबी हैं)। उस ने इसे अपने ज्ञान के साथ उतारा है, तथा फरिश्ते साक्ष्य देते हैं, और अल्लाह का साक्ष्य ही बहुत है।

167. वास्तव में जिन्होंने ने कुफ़ किया और अल्लाह की राह^[2] से रोका वह सुपथ से बहुत दूर जा पड़े।

168. निःसंदेह जो काफ़िर हो गये, और अत्याचार करते रह गये, तो अल्लाह ऐसा नहीं है कि उन्हें क्षमा कर दे, तथा न उन्हें कोई राह दिखायेगा।

169. परन्तु नरक की राह, जिस में वह सदावासी होंगे, और यह अल्लाह के लिये सरल है।

170. हे लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से रसूल सत्य

رُسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ
عَلَى اللَّهِ حُجْبَةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا
حَكِيمًا ۝

لَئِنِ اللَّهُ يَشْهَدُ بِمَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ أَنْزَلَهُ بِعِلْمِهِ
وَالْمَلَكُ يُشْهَدُونَ وَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
فَدَا صَلُّوا ضَلَالًا لَبِيعًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيُغْفِرَ
لَهُمْ وَلَا لِيُهْدِيَهُمْ سَبِيلًا ۝

إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا وَكَانَ ذَلِكَ
عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الرَّسُولُ بِالْحَقِّ مِنْ

1 अर्थात् कोई अल्लाह के सामने यह न कह सके कि हमें मार्गदर्शन देने के लिये कोई नहीं आया।

2 अर्थात् इस्लाम से रोका।

ले कर^[1] आ गये हैं। अतः उन पर ईमान लाओ, यही तुम्हारे लिये अच्छा है, तथा यदि कुफ़ करोगे, तो अल्लाह ही का है, जो आकाशों तथा धरती में है, और अल्लाह बड़ा ज्ञानी गुणी है।

171. हे अहले किताब (ईसाइयो!) अपने धर्म में अधिकता न^[2] करो, और अल्लाह पर केवल सत्य ही बोलो। मसीह मर्यम का पुत्र केवल अल्लाह का रसूल और उस का शब्द है, जिसे मर्यम की ओर डाल दिया, तथा उस की ओर से एक आत्मा^[3] है, अतः अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ, और यह न कहो कि (अल्लाह) तीन हैं, इस से रुक जाओ, यही तुम्हारे लिये अच्छा है, इस के सिवा कुछ नहीं कि अल्लाह ही अकेला पूज्य है, वह इस से पवित्र है कि उस का कोई पुत्र हो,

رَبِّكُمْ فَأَمِنُوا خَيْرًا لَّكُمْ وَإِن تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ وَلَا تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلِمَةٌ أُلْقِيَهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِنْهُ فَآمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَا تَقُولُوا ثَلَاثَةٌ إِنَّهُمْ أَحْسَنُ لَكُمْ إِنَّمَا اللَّهُ إِلَهُ وَاحِدٌ سُبْحَانَهُ أَنْ يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَكفى بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝

- 1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस्लाम धर्म लेकर आ गये। यहाँ पर यह बात विचारणीय है कि कूर्आन ने किसी जाति अथवा देशवासी को संबोधित नहीं किया है। वह कहता है कि आप पूरे मानव विश्व के नबी हैं। तथा इस्लाम और कूर्आन पूरे मानव विश्व के लिये सत्धर्म है जो उस अल्लाह का भेजा हुआ सत्धर्म है जिस की आज्ञा के आधीन यह पूरा विश्व है। अतः तुम भी उस की आज्ञा के आधीन हो जाओ।
- 2 अर्थात् ईसा अलैहिस्सलाम को रसूल से पूज्य न बनाओ, और यह न कहो कि वह अल्लाह का पुत्र है, और अल्लाह तीन हैं: पिता और पुत्र तथा पवित्रात्मा।
- 3 अर्थात् ईसा अल्लाह का एक भक्त है, जिसे अपने शब्द (कुन्) अर्थात् "हो जा" से उत्पन्न किया है। इस शब्द के साथ उस ने फ़रिश्ते जिबरील को मर्यम के पास भेजा, और उस ने उस में अल्लाह की अनुमति से यह शब्द फूँक दिया, और ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुये। (इब्ने कसीर)

आकाशों तथा धरती में जो कुछ है उसी का है, और अल्लाह काम बनाने के^[1] लिये बहुत है।

172. मसीह कदापि अल्लाह का दास होने को अपमान नहीं समझता, और न (अल्लाह के) समीपवर्ती फरिश्ते, तथा जो व्यक्ति उस की (वंदना को) अपमान समझेगा, तथा अभिमान करेगा, तो उन सभी को वह अपने पास एकत्र करेगा।

173. फिर जो लोग ईमान लाये, तथा सत्यकर्म किये, तो उन्हें उन का भरपूर प्रतिफल देगा, और उन्हें अपनी दया से अधिक भी देगा।^[2] परन्तु जिन्होंने ने (वंदना को) अपमान समझा, और अभिमान किया, तो उन्हें दुःखदायी यातना देगा। तथा अल्लाह के सिवा वह कोई रक्षक और सहायक नहीं पायेंगे।

174. हे लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुला प्रमाण^[3] आ गया है। और हम ने तुम्हारी ओर खुली वही^[4] उतार दी है।

175. तो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाये, तथा इस (कुरआन को) दृढ़ता से

لَنْ يَسْتَنْكِفَ الْمَسِيحُ أَنْ يَكُونَ عَبْدًا لِلَّهِ وَلَا الْمَلَائِكَةُ الْمُفَرَّقُونَ وَمَنْ يَسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمُ إِلَيْهِ جَمِيعًا ۝

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۗ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنكَفُوا وَاسْتَكْبَرُوا فَيَعَدُّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۗ وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝

يَأْتِيهِمُ الْبَاسُ قَدْ جَاءَ كُمْ بُرْهَانٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا مُبِينًا ۝

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَآخِذُوا بِحَبْلِهِ

1 अर्थात् उसे क्या आवश्यकता है कि किसी को संसार में अपना पुत्र बना कर भेजे।

2 यहाँ (अधिक) से अभिप्रायः स्वर्ग में अल्लाह का दर्शन है। (सहीह मुस्लिमः 181 त्रिमिज़ीः 2552)

3 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमा।

4 अर्थात् कुरआन शरीफ़। (इब्ने जरीर)

पकड़ लिया वह उन्हीं को अपनी दया तथा अनुग्रह से (स्वर्ग) में प्रवेश देगा। और उन्हें अपनी ओर सीधी राह दिखा देगा।

176. (हे नबी!) वह आप से कलाला के विषय में आदेश चाहते हैं। तो आप कह दें कि वह कलाला के विषय में तुम्हें आदेश दे रहा है कि यदि कोई ऐसा पुरुष मर जाये जिस के संतान न हो, (और न पिता और दादा) और उस के एक बहन हो, तो उस के लिये उस के छोड़े हुये धन का आधा है। और वह (पुरुष) उस के पूरे (धन का) वारिस होगा यदि उस (बहन) के कोई संतान न हो, (और न पिता और दादा हो)। और यदि उस की दो बहनें हों (अथवा अधिक) तो उन्हें छोड़े हुये धन का दो तिहाई मिलेगा। और यदि भाई बहन दोनों हों तो नर (भाई) को दो नारियों (बहनों) के बराबर^[1] भाग मिलेगा। अल्लाह तुम्हारे लिये (आदेश) उजागर कर रहा है ताकि तुम कुपथ न हो जाओ, तथा अल्लाह सब कुछ जानता है।

سَيِّدًا خَلُومًا فِي رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضِيلًا
وَيَهْدِي لَهُمْ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۝

يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ إِنَّ
أَمْوَالَهُمْ لَبَيْنَ يَدَيْكُمْ وَأَنَّ كَلِمَ تَوَلَّىٰ أُوٰلِيهَا
رِضْفٌ مَّا تَرَكَ وَهُوَ يَرِيئُهَا إِنْ كَرِهَ لَهَا وَلَدًا
فَإِنْ كَانَتْ اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثَّلَاثُونَ مِمَّا تَرَكَ وَإِنْ
كَانَتْ إِحْوَةً رَّجَالًا وَنِسَاءً فَلِلَّذَكَرِ مِثْلُ حَظِّ
الْأُنثَيَيْنِ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ أَن تَضِلُّوا وَاللَّهُ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

1 कलाला की मीरास का नियम आयत नं० 12 में आ चुका। जो उस के तीन प्रकार में से एक के लिये था। अब यहाँ शेष दो प्रकारों का आदेश बताया जा रहा है। अर्थात् यदि कलाला के सगे भाई बहन हों अथवा अल्लाती (जो एक पिता तथा कई माता से हों) तो उन के लिये यह आदेश है।

सूरह माइदा - 5



सूरह माइदा के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मद्नी है, इस में 120 आयतें हैं

- इस सूरह में शरीअत (धर्म विधान) के पुरे होने की घोषणा के साथ इस के आदेशों तथा नियमों के पालन और धार्मिक नियमों को लागू करने पर बल दिया गया है। यह चूँकि धार्मिक विधान के पुरे होने का समय था इस लिये व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन से संबंधित धार्मिक आदेशों को बताने के साथ मुसलमानों को अल्लाह की प्रतिज्ञा पर अस्थित रहने पर बल दिया गया है। और इस संदर्भ में मुसलमानों को सावधान किया गया है कि वह यहूदियों तथा ईसाईयों की नीति न अपनायें जिन्होंने वचन भंग कर दिया और धर्म विधान को नाश कर दिया और उस की सीमा से निकल भागे और धर्म में नई-नई बातें पैदा कर लीं। चूँकि कुर्आन की शैली मार्ग दर्शन तथा प्रशिक्षण की है इस लिये इन सभी बातों को मिला जुला कर वर्णित किया गया है ताकि मनो में धार्मिक नियमों के पालन की भावना पैदा हो जाये। इस में यहूदियों तथा ईसाईयों को अन्तिम सीमा तक झंझोड़ा गया है और मुसलमानों का मार्ग उजागर किया गया है।
- इस में प्रतिबंधों तथा अल्लाह से किये वचन के पालन और न्याय की नीति अपनाने पर बल दिया गया है।
- इस में धर्म के वह आदेश बताये गये हैं जो वैध तथा अवैध से संबंधित हैं।
- इस में प्रलय के दिन नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के गवाही देने की बात कही गई है। और ईसा (अलैहिस्सलाम) का उदाहरण दिया गया है।
- इस में यहूदियों तथा ईसाईयों आदि को अरबी नबी पर ईमान लाने का आमंत्रण दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हे वह लोगो जो ईमान लाये हो! प्रतिबंधों का पूर्ण रूप^[1] से पालन करो, तुम्हारे लिये सब पशु हलाल (वैध) कर दिये गये, परन्तु जिन का आदेश तुम्हें सुनाया जायेगा, सिवाये इस के कि तुम एहराम^[2] की स्थिति में अपने लिये शिकार को हलाल (वैध) न कर लो, वैशक अल्लाह जो आदेश चाहता है, देता है।
2. हे ईमान वालो! अल्लाह की निशानियों^[3] (चिन्हों) का अनादर न करो, और न सम्मानित मासों^[4] का, और न (हज्ज की) कुर्बानी का, न उन में से जिन के गले में पट्टे पड़े हों, और न उन का जो अपने पालनहार की अनुग्रह और उस की प्रसन्नता की खोज में सम्मानित घर (काबा) की ओर जा रहे हों, और जब एहराम खोल दो, तो शिकार कर सकते हो, तथा तुम्हें किसी गिरोह की शत्रुता इस बात पर न उभार दे कि अत्याचार करने लगे, क्यों कि उन्होंने ने मस्जिदे-हराम से तुम्हें रोक दिया था, सदाचार तथा संयम में एक दूसरे की सहायता

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْفُوا بِالْعُقُودِ ۗ أُحِلَّتْ
لَكُمْ بَهِيمَةُ الْأَنْعَامِ إِلَّا مَيْتَةً عَلَيْهِمْ ذِكْرٌ يَهِئَلُ
الصَّيْدُ وَأَنْتُمْ حُرْمٌ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيدُ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْلُوا شَعَائِرَ اللَّهِ وَلَا
الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَائِدَ وَلَا آيَاتِ
الْبَيْتِ الْحَرَامِ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّن رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا
وَإِذْ أَحَلَّلْتُمْ فَاصْطَادُوا ۗ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ
أَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ أَنْ تَعْتَدُوا ۗ
وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۗ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى
الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ
شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

1 यह प्रतिबंध धार्मिक आदेशों से संबंधित हों अथवा आपस के हों।

2 अर्थात् जब हज्ज अथवा उमरे का एहराम बाँधे रहो।

3 अल्लाह की बंदना के लिये निर्धारित चिन्हों का।

4 अर्थात् जुलकादा, जुलहिज्जा, मुहर्रम तथा रजब के मासों में युद्ध न करो।

करो, तथा पाप और अत्याचार में एक दूसरे की सहायता न करो। और अल्लाह से डरते रहो। निस्सदेह अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

3. तुम पर मुर्दार^[1] हराम (अवैध) कर दिया गया है, तथा (बहता हुआ) रक्त और सूअर का मांस, तथा जिस पर अल्लाह से अन्य का नाम पुकारा गया हो, तथा जो श्वास रोध और आघात के कारण, तथा गिर कर और दूसरे के सींग मारने से मरा हो, तथा जिसे हिंसक पशु ने खा लिया हो, परन्तु इन में^[2] से जिसे तुम वध (ज़िब्ह) कर लो, और जिसे थान पर बध किया गया हो, और यह कि पांसे द्वारा अपना भाग्य निकालो, यह सब आदेश उल्लंघन के कार्य हैं। आज काफिर तुम्हारे धर्म से निराश^[3] हो गये हैं। अतः उन से न डरो, मुझी से डरो। आज^[4] मैं ने तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिये परिपूर्ण कर दिया है। तथा तुम पर अपना पुरस्कार पूरा

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالْدَّمُ وَحُمُّ الْخِنْزِيرِ وَمَا
أُهْلِكَ لِحَيْثُ اللَّهِ بِهِ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوذَةُ
وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَا أَكَلَ السَّبْعُ إِلَّا
مَا ذَكَرْتُمْ وَمَا ذُكِرَ عَلَى التُّصِيبِ وَإِنْ تَسْتَقْسِمُوا
بِالَّذِكْرِ ذَلِكُمْ فُسُقٌ الْيَوْمَ يَكْفُرُ الْكُفْرُ
مِنْ دِينِكُمْ فَلَا تَحْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ
لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتَمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ
الْإِسْلَامَ دِينًا فَمَنِ اضْطُرَّ فِي مَخْصَصَةٍ غَيْرِ
مُحَرَّمَةٍ لِإِتْمِاقٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٥٠﴾

- 1 मुर्दार से अभिप्राय वह पशु है, जिसे धर्म के नियमानुसार वध (ज़िब्ह) न किया गया हो।
2 अर्थात् जीवित मिल जाये और उसे नियमानुसार वध (ज़िब्ह) कर दो।
3 अर्थात् इस से कि तुम फिर से मूर्तियों के पुजारी हो जाओगे।
4 सूरह बकरह आयत नं० 28 में कहा गया कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने यह प्रार्थना की थी कि "इन में से एक आज्ञाकारी समुदाय बना दे"। फिर आयत 150 में अल्लाह ने कहा कि "अल्लाह चाहता है कि तुम पर अपना पुरस्कार पूरा कर दे"। और यहाँ कहा कि आज अपना पुरस्कार पूरा कर दिया। यह आयत हज्जतुल वदाअ में अरफ़ा के दिन अरफ़ात में उतरी। (सहीह बुखारी-4606) जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अंतिम हज्ज था, जिस के लगभग तीन महीने बाद आप संसार से चले गये।

कर दिया, और तुम्हारे लिये इस्लाम को धर्म स्वरूप स्वीकार कर लिया। फिर जो भूक से आतुर हो जाये जब कि उस का झुकाव पाप के लिये न हो, (प्राण रक्षा के लिये खा ले) तो निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

4. वे आप से प्रश्न करते हैं कि उन के लिये क्या हलाल (वैध) किया गया? आप कह दें कि सभी स्वच्छ पवित्र चीजें तुम्हारे लिये हलाल (वैध) कर दी गयी हैं। और उन शिकारी जानवरों का शिकार जिन को तुम ने उस ज्ञान द्वारा जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है, उस में से कुछ सिखा कर सधाया हो। तो जो, (शिकार) वह तुम पर रोक दें उस में से खाओ, और उस पर अल्लाह का नाम^[1] लो। तथा अल्लाह से डरते रहो। निःसंदेह अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

5. आज सब स्वच्छ खाद्य तुम्हारे लिये हलाल (वैध) कर दिये गये हैं। और ईमान वाली सतवन्ती स्त्रियाँ, तथा उन में से सतवन्ती स्त्रियाँ जो तुम से पहले पुस्तक दिये गये हैं। जब कि उन को उन का महर (विवाह

يَسْئَلُونَكَ مَاذَا أَحَلَّ لَهُمْ قُلْ أَحَلَّ لَهُمُ كُلُّ الشَّيْءِ وَمَا
عَلَيْكُمْ مِنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِينَ تُعَلِّمُونَهُنَّ وَمَا عَلَيْكُمْ
اللَّهُ فَخْرًا وَمِمَّا أَسْلَمْنَا عَلَيْكُمْ وَأَدْرَأُوا السَّمَاءَ اللَّهُ
عَلَيْهِمْ وَالْقَوْمَ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ٥

الْيَوْمَ أَحَلَّ لَكُمْ الْكَلْبَاطُ وَطَعَامُ الَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتَابَ حَلَّ لَكُمْ وَطَعَامُكُمْ حَلَّ لَهُمْ وَالْمُحْصَنَاتُ
مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
مِنْ قَبْلِكُمْ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ الْجُورْهُنَّ مَحْصَنَاتٍ غَيْرِ
مُسْفِحِينَ وَلَا تَنْكِحُوا الْمُحْصَنَاتِ وَالْمَنْ يَكْفُرْ

1 अर्थात् सधाये हुये कुत्ते और बाज़-शिकरे आदि का शिकार, उस के शिकार के उचित होने के लिये निम्नलिखित दो बातें आवश्यक हैं:

1. उसे बिस्मिल्लाह कह कर छोड़ा गया हो। इसी प्रकार शिकार जीवित हो तो बिस्मिल्लाह कर के वध किया जाये।
2. उस ने शिकार में से कुछ खाया न हो। (बुखारी: 5478, मु० 1930)

उपहार) चुका दिया हो, विवाह में लाने के लिये, व्याभिचार के लिये नहीं, और न प्रेमिका बनाने के लिये। और जो ईमान को नकार देगा, उस का सत्कर्म व्यर्थ हो जायेगा, तथा परलोक में वह विनाशों में होगा।

بِإِيمَانٍ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ
الْخَسِرِينَ ۝

6. हे ईमान वालो! जब नमाज़ के लिये खड़े हो तो (पहले) अपने मुँह तथा हाथों को कुहनियों तक धो लो, और अपने सिरों का मसह^[1] कर लो, तथा अपने पावों टखनों तक (धो लो) और यदि जनाबत^[2] की स्थिति में हो तो (स्नान कर के) पवित्र हो जाओ। तथा यदि रोगी अथवा यात्रा में हो अथवा तुम में से कोई शौच से आये, अथवा तुम ने स्त्रियों को स्पर्श किया हो और तुम जल न पाओ तो शुद्ध धूल से तयम्मूम कर लो, और उस से अपने मुखों तथा हाथों का मसह^[3] कर लो। अल्लाह तुम्हारे लिये कोई संकीर्णता (तंगी) नहीं चाहता। परन्तु तुम्हें पवित्र करना चाहता है, और ताकि तुम पर अपना पुरस्कार पूरा कर दे, और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ
فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ
وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ وَإِن
كُنْتُمْ جُنُودًا فَأَطْهَرُوا وَإِن كُنْتُمْ مَرْضَى
أَوْ عَلَى سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ
أَوْ لَسْتُمْ بِالنِّسَاءِ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا
صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ
مِنْهُ مَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرَجٍ
وَلَكِنْ يُرِيدُ لِيُطَهَّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهُ
عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

7. तथा अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार

وَأَذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الَّذِي

1 मसह का अर्थ है, दोनों हाथ भिगो कर सिर पर फेरना।

2 जनाबत से अभिप्राय वह मलिनता है जो स्वप्न दोष तथा स्त्री संभोग से होती है। यही आदेश मासिक धर्म तथा प्रसव का भी है।

3 हदीस में है कि एक यात्रा में आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का हार खो गया, जिस के लिये बैदा के स्थान पर रुकना पड़ा। भोर की नमाज़ के वुजू के लिये पानी नहीं मिल सका और यह आयत उतरी। (देखिये: सहीह बुखारी- 4607) मसह का अर्थ हाथ फेरना है। तयम्मूम के लिये देखिये सूरह निसा, आयत 43।)

और उस दृढ़ वचन को याद करो जो तुम से लिया है। जब तुम ने कहा: हम ने सुन लिया और आज्ञाकारी हो गये। तथा अल्लाह से डरते रहो। निःसंदेह अल्लाह दिलों के भेदों को भली भाँति जानने वाला है।

8. हे ईमान वालो! अल्लाह के लिये खड़े रहने वाले, न्याय के साथ साक्ष्य देने वाले रहो, तथा किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस पर न उभार दे कि न्याय न करो। वह (अर्थात: सब के साथ न्याय) अल्लाह से डरने के अधिक समीप^[1] है। निःसंदेह तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से भली भाँति सूचित है।
9. जो लोग ईमान लाये, तथा सत्कर्म किये तो उन से अल्लाह का वचन है कि उन के लिये क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है।
10. तथा जो काफिर रहे, और हमारी आयतों को मिथ्या कहा, तो वही लोग नारकी है।
11. हे ईमान वालो! उस समय को याद करो जब एक गिरोह ने तुम्हारी ओर हाथ बढ़ाना^[2] चाहा, तो अल्लाह ने

وَأَثَقَكُمْ بِهِ ۖ وَإِذْ تُلَذِّمْتُمْ سِمَعًا وَأَطَعْتُمْ ۖ
وَأَتَقُوا اللَّهَ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ لِلَّهِ
شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ ۚ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ
قَوْمٍ عَلَىٰ أَلَّا تَعْدِلُوا ۗ إِعْدِلُوا ۗ هُوَ أَقْرَبُ
لِلْقَوَّامِينَ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۗ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا
تَعْمَلُونَ ۝

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَانُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ
عَلَيْكُمْ ۖ إِذْ هَمَّ قَوْمٌ أَنْ يَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ

1 हदीस में वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: जो न्याय करते हैं वह अल्लाह के पास नूर (प्रकाश) के मंच पर उस के दायें ओर रहेंगे, - और उस के दोनों हाथ दायें हैं- जो अपने आदेश तथा अपने परिजनों और जो उन के अधिकार में हो, में न्याय करते हैं। (सहीह मुस्लिम - 1827)

2 अर्थात तुम पर आक्रमण करने का निश्चय किया तो अल्लाह ने उन के आक्रमण से तुम्हारी रक्षा की। इस आयत से सम्बन्धित बुखारी में सहीह हदीस आती है कि

उन के हाथों को तुम से रोक दिया, तथा अल्लाह से डरते रहो, और ईमान वालों को अल्लाह ही पर निर्भर करना चाहिये।

أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَتَّقُوا اللَّهَ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ⑥

12. तथा अल्लाह ने बनी इस्राईल से (भी) दृढ़ वचन लिया था, और उन में बारह प्रमुख नियुक्त कर दिये थे, तथा अल्लाह ने कहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, यदि तुम नमाज़ की स्थापना करते, और ज़कात देते रहे, तथा मेरे रसूलों पर ईमान (विश्वास) रखते, और उन को समर्थन देते रहे, तथा अल्लाह को उत्तम ऋण देते रहे, तो मैं अवश्य तुम को तुम्हारे पाप क्षमा कर दूँगा, और तुम्हें ऐसे स्वर्गों में प्रवेश दूँगा जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। और तुम में से जो इस के पश्चात् भी कुफ़्र (अविश्वास) करेगा वह सुपथ^[1] से विचलित हो गया।

وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا وَقَالَ اللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْ لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَاةَ وَآتَيْتُمُ الزَّكَاةَ وَآمَنْتُمْ بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَلَأُدْخِلَنَّكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ⑥

13. तो उन के अपना वचन भंग करने के कारण, हम ने उन को धिक्कार दिया, और उन के दिलों को कड़ा कर दिया, वह अल्लाह की बातों को उन

فِيمَا نَقَضْتُمْ مِنْهُمُ مِيثَاقَهُمْ لَعْنَهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَاسِيَةً يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ وَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ ⑥

एक युद्ध में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एकान्त में एक पेड़ के नीचे विश्राम कर रहे थे कि एक व्यक्ति आया और आप की तलवार खींच कर कहा तुम को अब मुझ से कौन बचायेगा? आप ने कहा: अल्लाह! यह सुनते ही तलवार उस के हाथ से गिर गई और आप ने उसे क्षमा कर दिया। (सहीह बुखारी- 4139)

- 1 अल्लाह को ऋण देने का अर्थ उस के लिये दान करना है। इस आयत में ईमान वालों को सावधान किया गया है कि तुम अहले किताब: यहूद और नसारा जैसे न हो जाना जो अल्लाह के वचन को भंग कर के उस की धिक्कार के अधिकारी बन गये। (इब्ने कसीर)

के वास्तविक स्थानों से फेर देते^[1] हैं, तथा जिस बात का उन को निर्देश दिया गया था, उसे भुला दिया, और (अब) आप बराबर उन के किसी न किसी विश्वासघात से सूचित होते रहेंगे, परन्तु उन में बहुत थोड़े के सिवा जो ऐसा नहीं करते, अतः आप उन्हें क्षमा कर दें, और उन को जाने दें, निस्संदेह अल्लाह उपकारियों से प्रेम करता है।

14. तथा जिन्होंने ने कहा कि हम नसारा (ईसाई) हैं, हम ने उन से (भी) दृढ़ वचन लिया था, तो उन्हें जिस बात का निर्देश दिया गया था, उसे भुला दिया, तो प्रलय के दिन तक के लिये हम ने उन के बीच शत्रुता तथा पारस्परिक (आपसी) विद्वेष भड़का दिया, और शीघ्र ही अल्लाह जो कुछ वह करते रहे हैं, उन्हें^[2] बता देगा।

وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلَى خَائِبَةٍ مِنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٠﴾

وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرَى أَخَذْنَا مِنْهُمُ مِيثَاقَهُمْ فَمَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ فَأَعْرَبْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْعَعُونَ ﴿٥٠﴾

- 1 सही हदीस में आया है कि कुछ यहूदी, रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक नर और नारी को लाये जिन्होंने ने व्यभिचार किया था, आप ने कहा: तुम तौरात में क्या पाते हो? उन्होंने ने कहा: उन का अपमान करें और कोड़े मारें। अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा: तुम झुठे हो। बल्कि उस में (रज्म) करने का आदेश है। तौरात लाओ। वह तौरात लाये तो एक ने रज्म की आयत पर हाथ रख दिया और आगे-पीछे पढ़ दिया। अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा: हाथ उठाओ। उस ने हाथ उठाया तो उस में रज्म की आयत थी। (सहीह बुखारी - 3559, सहीह मुस्लिम - 1699)
- 2 आयत का अर्थ यह है कि जब ईसाइयों ने वचन भंग कर दिया तो उन में कई परस्पर विरोधी समप्रदाय हो गये, जैसे याकूबिय्यः, नसतूरियः आरयूसियः और सभी एक दूसरे के शत्रु हो गये। तथा इस समय आर्थिक और राजनितिक सम्प्रदायों में विभाजित हो कर आपस में रक्तपात कर रहे हैं। इस में भी मुसलमानों को सावधान किया गया है कि कुर्आन के अर्थों में परिवर्तन कर के ईसाइयों के समान सम्प्रदायों में विभाजित न होना।

15. हे अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे रसूल आगये हैं^[1], जो तुम्हारे लिये उन बहुत सी बातों को उजागर कर रहे हैं, जिन्हें तुम छुपा रहे थे, और बहुत सी बातों को छोड़ भी रहे हैं, अब तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकाश तथा खुली पुस्तक (कुर्आन) आ गई है।

بِأَمَلِ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا
يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِمَّا كُنْتُمْ تُخْفُونَ مِنَ
الْكِتَابِ وَيَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ قَدْ
جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ
مُبِينٌ ﴿١٥﴾

16. जिस के द्वारा अल्लाह उन्हें शान्ति का मार्ग दिखा रहा है, जो उस की प्रसन्नता पर चलते हों, उन्हें अपनी अनुमति से अंधेरों से निकाल कर प्रकाश की ओर ले जाता है, और उन्हें सुपथ दिखाता है।

يَهْدِي بِهِ اللَّهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ
سُبُلَ السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ
إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ وَيَهْدِيَهُمْ إِلَى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيمٍ ﴿١٦﴾

17. निश्चय वह काफिर^[2] हो गये, जिन्होंने कहा कि मर्यम का पुत्र मसीह ही अल्लाह है। (हे नबी!) उन से कह दो कि यदि अल्लाह मर्यम के पुत्र और उस की माता तथा जो भी धरती में है, सब का विनाश कर देना चाहे, तो किसी में शक्ति है कि वह उसे रोक दे? तथा आकाशों और धरती और जो भी इन के बीच है, सब अल्लाह ही का राज्य है, वह जो चाहे उत्पन्न करता है, तथा वह जो चाहे कर सकता है।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ
الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ مِنَ
اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ أَنْ يُسَلِّطَ الْمَسِيحَ ابْنَ
مَرْيَمَ وَآمَنَهُ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا لِلَّهِ
مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ﴿١٧﴾

18. तथा यहूदी और ईसाइयों ने कहा कि हम अल्लाह के पुत्र तथा प्रियवर हैं। आप पूछें कि फिर वह तुम्हें

وَقَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى نَحْنُ أَبْنَاءُ اللَّهِ
وَأَحِبَّاؤُهُ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوبِكُمْ بَلْ أَنْتُمْ

- 1 अर्थात् मुहम्मद सल्लाहु अलैहि वसल्लमा तथा प्रकाश से अभिप्राय कुर्आन पाक है।
2 इस आयत में ईसा अलैहिस्सलाम के अल्लाह होने की मिथ्या आस्था का खण्डन किया जा रहा है।

तुम्हारे पापों का दण्ड क्यों देता है? बल्कि तुम भी वैसे ही मानव पुरुष हो जैसे दूसरे हैं, जिन की उत्पत्ति उस ने की है। वह जिसे चाहे क्षमा कर दे और जिसे चाहे दण्ड दे। तथा आकाशों और धरती तथा जो उन दोनों के बीच है, अल्लाह ही का राज्य (अधिपत्य)^[1] है, और उसी की ओर सब को जाना है।

19. हे अहले किताब! तुम्हारे पास रसूलों के आने का क्रम बंद होने के पश्चात् हमारे रसूल आ गये^[2] हैं, वह तुम्हारे लिये (सत्य को) उजागर कर रहे हैं, ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई शुभ सूचना सुनाने वाला तथा सावधान करने वाला (नबी) नहीं आया, तो तुम्हारे पास शुभ सूचना सुनाने तथा सावधान करने वाला आ गया है। तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

20. तथा याद करो, जब मूसा ने अपनी जाति से कहा: हे मेरी जाति! अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को याद करो कि उस ने तुम में नबी और शासक बनाये, तथा तुम्हें वह कुछ दिया जो संसार वासियों में किसी को नहीं दिया।

بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَيَلَهُ مَلِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَاللَّهُ الْمُبْدِيُ ۝

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلَى فَهْمٍ مِّنَ الرَّسُولِ أَنْ تَقُولُوا مَا جَاءَنَا مِن بَشِيرٍ وَلَا نَذِيرٍ ۚ قَدْ جَاءَكُمْ بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ ۚ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ لِقَوْمِهِ أَذْكُرُونَ تَعْبَادَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِيكُمْ أَنْبِيَاءَ وَجَعَلَكُمْ مُلُوكًا وَاللَّهُمَّ مَا لَمْ يُؤْتِ أَحَدًا مِّنَ الْعَالَمِينَ ۝

1 इस आयत में ईसाइयों तथा यहूदियों के इस भ्रम का खण्डन किया जा रहा है कि वह अल्लाह के प्रियवर हैं, इस लिये जो भी करें, उन के लिये मुक्ति ही मुक्ति है।

2 अंतिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, ईसा अलैहिस्सलाम के छः सौ वर्ष पश्चात् 610- ई० में नबी हुये। आप के और ईसा अलैहिस्सलाम के बीच कोई नबी नहीं आया।

21. हे मेरी जाति! उस पवित्र धरती (बैतुल मक़दिस) में प्रवेश कर जाओ, जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिख दिया है, और पीछे न फिरो, अन्यथा असफल हो जाओगे।
22. उन्हीं ने कहा: हे मूसा! उस में बड़े बलवान लोग हैं, और हम उस में कदापि प्रवेश नहीं करेंगे, जब तक वह उस से निकल न जायें, तभी हम उस में प्रवेश कर सकते हैं।
23. उन में से दो व्यक्तियों ने जो (अल्लाह से) डरते थे, जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया, कहा कि: उन पर द्वार से प्रवेश कर जाओ, तुम जब उस में प्रवेश कर जाओगे, तो निश्चय तुम प्रभुत्वशाली होगे। तथा अल्लाह ही पर भरोसा करो यदि तुम ईमान वाले हो।
24. वह बोले: हे मूसा! हम उस में कदापि प्रवेश न करेंगे, जब तक वह उस में (उपस्थित) रहेंगे, अतः तुम और तुम्हारा पालनहार जाये, फिर तुम दोनों युद्ध करो, हम यहीं बैठे रहेंगे।
25. (यह दशा देख कर) मूसा ने कहा: हे मेरे पालनहार! मैं अपने और अपने भाई के सिवा किसी पर कोई अधिकार नहीं रखता। अतः तू हमारे तथा अवैज्ञाकारी जाति के बीच निर्णय कर दे।
26. अल्लाह ने कहा: वह (धरती) उन पर चालीस वर्ष के लिये हराम (वर्जित)

يَوْمٍ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمَقْدَسَةَ الَّتِي كَتَبَ
اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا
خِيسِرِينَ ﴿٢١﴾

قَالُوا يَبُوسَىٰ إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَابِرِينَ ۗ وَإِن
تَدْخُلُهَا حَتَّىٰ تَخْرُجُوا مِنْهَا ۖ إِن تَخْرُجُوا مِنْهَا
فَإِنَّا دَاخِلُونَ ﴿٢٢﴾

قَالَ رَجُلَانِ مِنَ الَّذِينَ يَخْفَوْنَ أَنَّ اللَّهَ
عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۖ فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ
فَأِنَّكُمْ عَلَيْهِمْ ۗ وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا ۖ إِنَّ
كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٢٣﴾

قَالُوا يَبُوسَىٰ إِنَّا لَنَدْخُلُهَا أَبَدًا ۖ إِنَّا دَامُوا فِيهَا
فَاذْهَبْ ۖ أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هَاهُنَا
قَاعِدُونَ ﴿٢٤﴾

قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي
فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٥﴾

قَالَ فَإِنَّهَا مُحْرَمَةٌ ۗ عَلَيْهِمْ الدِّعْيَيْنِ سِتَّةَ ۗ

कर दी गई। वह धरती में फिरते रहेंगे, अतः तुम अवैज्ञाकारी जाति पर तरस न खाओ।^[1]

27. तथा उन को आदम के दो पुत्रों का सहीह समाचार^[2] सुना दो, जब दोनों ने एक उपायन (कुर्बानी) प्रस्तुत की, तो एक से स्वीकार की गई तथा दूसरे से स्वीकार नहीं की गई। उस (दूसरे) ने कहा: मैं अवश्य तेरी हत्या कर दूंगा। उस (प्रथम)ने कहा: अल्लाह आज्ञाकारियों ही से स्वीकार करता है।

28. यदि तुम मेरी हत्या करने के लिये मेरी ओर हाथ बढ़ाओगे^[3], तो भी मैं तुम्हारी ओर तुम्हारी हत्या करने के लिये हाथ बढ़ाने वाला नहीं हूँ। मैं विश्व के पालनहार अल्लाह से डरता हूँ।

29. मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी (हत्या के) पाप और अपने पाप के साथ फिरो, तो नारकी हो जाओगे, और यही अत्याचारियों का प्रतिकार (बदला) है।

يَتَّبِعُونَ فِي الْأَرْضِ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ
الْفَاسِقِينَ ۝

وَأَنْتَ عَلَيْهِمْ نَبَأُ ابْنَىٰ آدَمَ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَّبَا
قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ
الْآخَرَ قَالَ لَأَفْتُنْكَ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ
الْمُتَّقِينَ ۝

لَئِن بَسَطْتَ إِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسٍ
بِيَدِي إِلَيْكَ لِأَفْتُنْكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ
الْعَالَمِينَ ۝

إِنِّي أُرِيدُ أَنْ تَبُوَ يَا شَيْءِي وَإِنَّكَ فَتَكُونُ
مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ وَذَلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ۝

1 इन आयतों का भावार्थ यह है कि जब मूसा अलैहिस्सलाम बनी इसराईल को ले कर मिस्र से निकले, तो अल्लाह ने उन्हें बैतुल मक्दिस में प्रवेश कर जाने का आदेश दिया, जिस पर अमालिका जाति का अधिकार था। और वही उस के शासक थे, परन्तु बनी इसराईल ने जो कायर हो गये थे, अमालिका से युद्ध करने का साहस नहीं किया। और इस आदेश का विरोध किया, जिस के परिणाम स्वरूप उसी क्षेत्र में 40 वर्ष तक फिरते रहे। और जब 40 वर्ष बीत गये, और एक नया वंश जो साहसी था पैदा हो गया तो उस ने उस धरती पर अधिकार कर लिया। (इब्ने कसीर)

2 भाष्यकारों ने इन दोनों के नाम काबील और हाबील बताये हैं।

3 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: जो भी प्राणी अत्याचार से मारा जाये तो आदम के प्रथम पुत्र पर उन के खून का भाग होता है क्योंकि उसी ने प्रथम हत्या की रीति बनाई है। (सहीह बुखारी: 6867, मुस्लिम: 1677)

30. अंततः उस ने स्वयं को अपने भाई की हत्या पर तय्यार कर लिया, और विनाशों में हो गया।

فَطَوَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٣٠﴾

31. फिर अल्लाह ने एक कौआ भेजा, जो भूमि कुरेद रहा था, ताकि उसे दिखायें कि अपने भाई के शव को कैसे छुपाये, उस ने कहा: मुझ पर खेद है! क्या मैं इस कौआ जैसा भी न हो सका कि अपने भाई का शव छुपा सकूँ, फिर बड़ा लज्जित हुआ।

فَبَعَثَ اللَّهُ غُرَابًا يَبْحِثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ كَيْفَ يُورِثُ سَوْءَةَ أَخِيهِ قَالَ يُورِثُنِي أَخَعِزَّتْ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَذَا الْغُرَابِ فَأُورِثُ سَوْءَةَ أَخِي فَأَصْبَحَ مِنَ النَّادِمِينَ ﴿٣١﴾

32. इसी कारण हम ने बनी इसराईल पर लिख दिया^[1] कि जिस ने भी किसी प्राणी की हत्या की किसी प्राणी का खून करने अथवा धरती में विद्रोह के बिना तो समझो उस ने पुरे मनुष्यों की हत्या^[2] कर दी। और जिस ने जीवित रखा एक प्राणी को तो वास्तव में उस ने जीवित रखा सभी मनुष्यों को। तथा उन के पास हमारे रसूल खुली निशानियाँ लाये, फिर भी उन में से अधिकांश धरती में विद्रोह करने वाले हैं।

مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ كَتَبْنَا عَلَى بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنَّهُ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ بَعَدَ ذَلِكَ فِي الْأَرْضِ لَمُسْرِفُونَ ﴿٣٢﴾

33. जो लोग^[3] अल्लाह और उस के रसूल से युद्ध करते हों, तथा धरती में उपद्रव करते फिर रहे हों, उन का दण्ड यह है कि उन की हत्या

إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأرجُلُهُمْ مِنْ

1 अर्थात् नियम बना दिया, इस्लाम में भी यही नियम और आदेश है।

2 क्यों कि सभी प्राण, प्राण होने में बराबर हैं।

3 इस आयत में देश द्रोहियों तथा तस्करों को दण्ड देने का नियम तथा आदेश बताया जा रहा है। तथा अल्लाह और उस के रसूल के आदेशों के उल्लंघन को उन के विरुद्ध युद्ध कहा गया है। (अधिक विवरण के लिये देखिये: सहीह बुखारी, हदीस- 4610)

की जाये, तथा उन्हें फाँसी दी जाये, अथवा उन के हाथ पाँव विपरीत दिशाओं से काट दिये जायें, अथवा उन्हें देश निकाला दे दिया जाये। यह उन के लिये संसार में अपमान है, तथा परलोक में उन के लिये इस से बड़ा दण्ड है।

34. परन्तु जो तौबा (क्षमा याचना) कर लें, इस से पहले कि तुम उन्हें अपने नियंत्रण में लाओ, तो तुम जान लो कि अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
35. हे ईमान वालो! अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरते रहो, और उस की ओर वसीला^[1] खोजो, तथा उस की राह में जिहाद करो, ताकि तुम सफल हो जाओ।
36. जो लोग काफिर हैं, यद्यपि धरती के सभी (धन धान्य) उन के अधिकार (स्वामित्व) में आ जायें और उसी के समान और भी हो, ताकि वे, यह सब प्रलय के दिन की यातना से अर्थ दण्ड स्वरूप देकर मुक्त हो जायें, तो भी उन से स्वीकार नहीं किया जायेगा, और उन्हें दुखदायी यातना होगी।
37. वह चाहेंगे कि नरक से निकल जायें, जब कि वह उस से निकल नहीं

خِلَافٍ أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ذَلِكَ لَهُمْ
خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ
عَظِيمٌ ۝

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَقْدُرُوا
عَلَيْهِمْ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا
إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَالْوَأَن لَّهُمْ مَا فِي
الْأَرْضِ حَيْبَعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ
عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقْبَلُ مِنْهُمْ وَعَلَيْهِمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

يُرِيدُونَ أَنْ يُخْرِجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ

1 (वसीला) का अर्थ है: अल्लाह की आज्ञा का पालन करने और उस की अवैज्ञा से बचने तथा ऐसे कर्मों के करने का जिन से वह प्रसन्न हो। वसीला हदीस में स्वर्ग के उस सर्वोच्च स्थान को भी कहा गया है जो स्वर्ग में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि , व सल्लम) को मिलेगा जिस का नाम ((मकामे महमूद)) है। इसी लिये आप ने कहा: जो अज्ञान के पश्चात् मेरे लिये वसीला की दुआ करेगा वह मेरी सिफारिश के योग्य होगा। (बुखारी- 4719) पीरों और फकीरों आदि की समाधियों को वसीला समझना निर्मूल और शिर्क है।

सकेंगे, और उन्हीं के लिये स्थायी यातना है।

يُخْرِجُونَ مِنْهَا وَأَكْهَمَ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٦٠﴾

38. चोर, पुरुष और स्त्री दोनों के हाथ काट दो, उन के करतूत के बदले, जो अल्लाह की ओर से शिक्षाप्रद दण्ड है^[1] और अल्लाह प्रभावशाली गुणी है।

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا جِزَاءً بِمَا كَسَبَا تَكَالُفًا مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦١﴾

39. फिर जो अपने अत्याचार (चोरी) के पश्चात् तौब: (क्षमा याचना) कर ले, और अपने को सुधार ले, तो अल्लाह उस की तौब: स्वीकार कर लेगा^[2], निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

فَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٦٢﴾

1 यहाँ पर चोरी के विषय में इस्लाम का धर्म विधान वर्णित किया जा रहा है कि यदि चौथाई दीनार अथवा उस के मूल्य के सामान की चोरी की जाये, तो चोर का सीधा हाथ कलाई से काट दो। इस के लिये स्थान तथा समय के और भी प्रतिबंध हैं। शिक्षाप्रद दण्ड होने का अर्थ यह है कि दूसरे इस से शिक्षा ग्रहण करें, ताकि पूरा देश और समाज चोरी के अपराध से स्वच्छ और पवित्र हो जाये। तथा यह ऐतिहासिक सत्य है कि इस घोर दण्ड के कारण, इस्लाम के चौदह सौ वर्षों में जिन्हें यह दण्ड दिया गया है, वह बहुत कम हैं। क्योंकि यह सज़ा ही ऐसी है कि जहाँ भी इस को लागू किया जायेगा वहाँ चोर और डाकू बहुत कुछ सोच समझ कर ही आगे क़दम बढ़ायेंगे। जिस के फलस्वरूप पूरा समाज अमन और चैन का गह्वारा बन जायेगा। इस के विपरीत संसार के आधुनिक विधानों ने अपराधियों को सुधारने तथा उन्हें सभ्य बनाने का जो नियम बनाया है, उस ने अपराधियों में अपराध का साहस बढ़ा दिया है। अतः यह मानना पड़ेगा कि इस्लाम का यह दण्ड चोरी जैसे अपराध को रोकने में अब तक सब से अधिक सफल सिद्ध हुआ है। और यह दण्ड मानवता के मान और उस के अधिकार के विपरीत नहीं है। क्योंकि जिस व्यक्ति ने अपना माल अपने खून पसीना, परिश्रम तथा अपने हाथों की शक्ति से कमाया है तो यदि कोई चोर आ कर उस को उचकना चाहे तो उस की सज़ा यही होनी चाहिये कि उस का वह हाथ ही काट दिया जाये जिस से वह अन्य का माल हड़प करना चाह रहा है।

2 अर्थात् उसे परलोक में दण्ड नहीं देगा, परन्तु न्यायालय चोरी सिद्ध होने पर उसे चोरी का दण्ड देगा। (तफ्सीरे क़ुर्तबी)

40. क्या तुम जानते नहीं कि अल्लाह ही के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्या वह जिसे चाहे क्षमा कर दे, और जिसे चाहे दण्ड दे, तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

41. हे नबी! वह आप को उदासीन न करें, जो कूफ़र में तीव्रगामी हैं, उन में से जिन्होंने कहा कि हम ईमान लाये, जब कि उन के दिल ईमान नहीं लाये और उन में से जो यहूदी हैं, जिन की दशा यह है कि मिथ्या बातें सुनने के लिये कान लगाये रहते हैं, तथा दूसरों के लिये जो आप के पास नहीं आये कान लगाये रहते हैं, वह शब्दों को उन के निश्चित स्थानों के पश्चात् वास्तविक अर्थों से फेर देते हैं। वह कहते हैं कि यदि तुम को यही आदेश दिया जाये (जो हम ने बताया है) तो मान लो, और यदि वह न दिये जाओ, तो उस से बचो। (हे नबी!) जिसे अल्लाह अपनी परीक्षा में डालना चाहे, आप उसे अल्लाह से बचाने के लिये कुछ नहीं कर सकते। यही वह है जिन के दिलों को अल्लाह ने पवित्र करना नहीं चाहा। उन्हीं के लिये संसार में अपमान है, और उन्हीं के लिये परलोक में घोर^[1] यातना है।

لَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
كَلِيمٌ قَدِيرٌ ۝

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ
فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِينَ قَالُوا آمَنَّا بِأَقْوَابِهِمْ
وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوبُهُمْ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا
سَمِعُوا لِلْكَذِبِ سَمْعُونَ لِقَوْمٍ آخِرِينَ
لَمْ يَأْتُوكَ يَحْرِفُونَ الْكَلِمَ مِنْ بَعْدِ
مَوَاضِعِهِ يَقُولُونَ إِنْ أُوتِينَاهُ هَذَا فَخَدُوهُ
وَإِنْ لَمْ تُؤْتُوهُ فَاخْتَدُوا وَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ
فِتْنَتَهُ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا
أُولَئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يُطَهِّرَ
قُلُوبَهُمْ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۝ وَلَهُمْ فِي
الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

1 मदीना के यहूदी विद्वान, मुनाफ़िकों (द्विधावादियों) को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भेजते कि आप की बातें सुनें और उन को सूचित करें। तथा अपने विवाद आपके पास ले जायें और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कोई निर्णय करें तो हमारे आदेशानुसार हो तो स्वीकार करें अन्यथा स्वीकार न करें। जब कि तौरात की आयतों में इन के आदेश थे, फिर भी वे उन में परिवर्तन कर के उन का अर्थ कुछ का कुछ बना देते थे। (देखिये व्याख्या आयत- 13)

42. वह मिथ्या बातें सुनने वाले अवैध भक्षी हैं। अतः यदि वह आप के पास आयें, तो आप उन के बीच निर्णय कर दें, अथवा उन से मुँह फेर लें (आप को अधिकार है)। और यदि आप उन से मुँह फेर लें, तो वे आप को कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। और यदि निर्णय करें, तो न्याय के साथ निर्णय करें। निस्संदेह अल्लाह न्यायकारियों से प्रेम करता है।

43. और वह आप को निर्णयकारी कैसे बना सकते हैं, जब कि उन के पास तौरात (पुस्तक) मौजूद है, जिस में अल्लाह का आदेश है। फिर इस के पश्चात् उस से मुँह फेर रहे हैं? वास्तव में वह ईमान वाले हैं ही^[1] नहीं।

44. निःसंदेह हम ने ही तौरात उतारी जिस में मार्गदर्शन तथा प्रकाश है, जिस के अनुसार वह नबी निर्णय करते रहे जो आज्ञाकारी थे,^[2] उन के लिये जो यहूदी थे। तथा धर्माचारी और विद्वान लोग। क्योंकि वह अल्लाह की पुस्तक के रक्षक बनाये गये थे, और उस के (सत्य होने के) साक्षी थे। अतः तुम (भी) लोगों से न डरो, मुझी से डरो, और मेरी आयतों के बदले तनिक मूल्य न खरीदो, और जो अल्लाह की उतारी (पुस्तक

سَمِعُونَ لِلْكَذِبِ أَكْثُونَ لِلسَّحْتِ فَإِنْ جَاءُوكَ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرَضْ عَنْهُمْ وَإِنْ تُعْرَضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَضُرُّوكَ شَيْئًا وَإِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُم بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ﴿٤٢﴾

وَكَيْفَ يَحْكُمُونَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرَةُ فِيهَا حُكْمُ اللَّهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَمَا أُولَئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٣﴾

إِنَّا أَنْزَلْنَا التَّوْرَةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا مِنَ الَّذِينَ هَادُوا وَالرَّبَّانِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوا مِنْ كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ وَلَا تَتَّبِعُوا بِلَئِي تَتَّبِعُوا قَلِيلًا وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ ﴿٤٤﴾

1 क्यों कि वह न तो आप को नबी मानते, और न आप का निर्णय मानते, तथा न तौरात का आदेश मानते हैं।

2 इस्लाम में भी यही नियम है और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दाँत तोड़ने पर यही निर्णय दिया था। (सहीह बुखारी: 4611)

- के) अनुसार निर्णय न करें, तो वही काफ़िर है।
45. और हम ने उन (यहूदियों) पर उस (तौरात) में लिख दिया कि प्राण के बदले प्राण है, तथा आँख के बदले आँख, और नाक के बदले नाक, तथा कान के बदले कान, और दाँत के बदले दाँत, तथा सभी आघातों में बराबरी का बदला है। फिर जो कोई बदला लेने को दान (क्षमा) कर दे, तो वह उस के लिये (उस के पापों का) प्रायश्चित्त हो जायेगा, तथा जो अल्लाह की उतारी (पुस्तक के) अनुसार निर्णय न करें, तो वही अत्याचारी है।
46. फिर हम ने उन (नबियों) के पश्चात् मर्यम के पुत्र ईसा को भेजा, उसे सच बताने वाला जो उस के सामने तौरात थी। तथा उसे इंजील प्रदान की, जिस में मार्गदर्शन तथा प्रकाश है। उसे सच बताने वाली जो उस के आगे तौरात थी तथा अल्लाह से डरने वालों के लिये सर्वथा मार्गदर्शन तथा शिक्षा थी।
47. और इंजील के अनुयायी भी उसी से निर्णय करें, जो अल्लाह ने उस में उतारा है, और जो उस से निर्णय न करें, जिसे अल्लाह ने उतारा है, तो वही अधर्मी है।
48. और (हे नबी!) हम ने आप की ओर सत्य पर आधारित पुस्तक (कुर्आन)

وَكُتِبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَنْ التَّنَفُّسَ بِالتَّنَفُّسِ
وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ وَالْأُذُنَ
بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصًا
فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ وَمَنْ
لَمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ
الظَّالِمُونَ ۝

وَقَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ وَأَتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ
فِيهِ هُدًى وَنُورٌ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ
التَّوْرَةِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ۝

وَلِيَحْكُمُوا هَلِ الْإِنجِيلُ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِيهِ وَمَنْ
لَمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝

وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ

उतार दी, जो अपने पूर्व की पुस्तकों को सच बताने वाली तथा संरक्षक^[1] है, अतः आप लोगों का निर्णय उसी से करें, जो अल्लाह ने उतारा है, तथा उन की मन मानी पर उस सत्य से विमुख हो कर न चलें, जो आप के पास आया है। हम ने तुम में से प्रत्येक के लिये एक धर्म विधान तथा एक कार्य प्रणाली बना दिया^[2] था, और यदि अल्लाह चाहता तो तुम्हें एक ही समुदाय बना देता, परन्तु उस ने जो कुछ दिया है, उस में तुम्हारी परीक्षा लेना चाहता है। अतः भलाईयों में एक दूसरे से अग्रसर होने का प्रयास करो^[3], अल्लाह ही की ओर तुम सब को लोट कर जाना है। फिर वह तुम्हें बता देगा, जिन बातों में तुम विभेद करते रहे।

يَدِيهِ مِنَ الْكِتَابِ وَمَهِيْمًا عَلَيْهِ فَاَحْكُمْ بَيْنَهُمْ
بِمَا نَزَّلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاءَهُمْ عَمَّا جَاءَكَ
وَمِنَ الْحَقِّ لِكُلِّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَا جَا
وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَلَكِنْ لِيَبْلُوَكُمْ
فِي مَا اَنْشَأَكُمْ فَاَسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُمْ
جَمِيعًا وَاُولَئِكَ هُمُ الْمُتَخَلِّفُونَ ۝

- 1 संरक्षक होने का अर्थ यह है कि कुर्आन अपने पूर्व की धर्म पुस्तकों का केवल पुष्टिकर ही नहीं, कसोटि (परख) भी है। अतः आदि पुस्तकों में जो भी बात कुर्आन के विरुद्ध होगी वह सत्य नहीं परिवर्तित होगी, सत्य वही होगी जो अल्लाह की अन्तिम किताब कुर्आन पाक के अनुकूल हो।
- 2 यहाँ यह प्रश्न उठता है कि जब तौरात तथा इंजील और कुर्आन सब एक ही सत्य लाये हैं, तो फिर इन के धर्म विधानों तथा कार्य प्रणाली में अन्तर क्यों है? कुर्आन उस का उत्तर देता है कि एक चीज़ मूल धर्म है, अर्थात् एकेश्वरवाद तथा सत्कर्म का नियम, और दूसरी चीज़ धर्म विधान तथा कार्य प्रणाली है, जिस के अनुसार जीवन व्यतीत किया जाये, तो मूल धर्म तो एक ही है, परन्तु समय और स्थितियों के अनुसार कार्य प्रणाली में अन्तर होता रहा है, क्यों कि प्रत्येक युग की स्थितियाँ एक समान नहीं थीं, और यह मूल धर्म का अन्तर नहीं, कार्य प्रणाली का अन्तर हुआ। अतः अब समय तथा स्थितियाँ बदल जाने के पश्चात् कुर्आन जो धर्म विधान तथा कार्य प्रणाली प्रस्तुत कर रहा है वही सत्धर्म है।
- 3 अर्थात् कुर्आन के आदेशों का पालन करने में।

49. तथा (हे नबी!) आप उन का निर्णय उसी से करें, जो अल्लाह ने उतारा है, और उन की मन मानी पर न चलें तथा उन से सावधान रहें कि आप को जो अल्लाह ने आप की ओर उतारा है, उस में से कुछ से फेर न दें। फिर यदि वह मुँह फेरें, तो जान लें कि अल्लाह चाहता है कि उन के कुछ पापों के कारण उन्हें दण्ड दे। वास्तव में बहुत से लोग उल्लंघनकारी हैं।

50. तो क्या वह जाहिलिय्यत (अंधकार युग) का निर्णय चाहते हैं? और अल्लाह से अच्छा निर्णय किस का हो सकता है, उन के लिये जो विश्वास रखते हैं?

51. हे ईमान वालो! तुम यहूदी तथा ईसाईयों को अपना मित्र न बनाओ, वह एक दूसरे के मित्र हैं, और जो कोई तुम में से उन को मित्र बनायेगा, वह उन्हीं में होगा। तथा अल्लाह अत्याचारियों को सीधी राह नहीं दिखाता।

52. फिर (हे नबी!) आप देखेंगे कि जिन के दिलों में (द्विधा का) रोग है, वह उन्हीं में दौड़े जा रहे हैं, वह कहते हैं कि हम डरते हैं कि हम किसी आपदा के कुचक्र में न आ जायें, तो दूर नहीं कि अल्लाह तुम्हें विजय प्रदान करेगा, अथवा उस के पास से कोई बात हो जायेगी, तो वह लोग उस बात पर जो उन्हीं ने अपने मनों में छुपा रखी है, लज्जित होंगे।

53. तथा (उस समय) ईमान वाले कहेंगे।

وَأَن أٰحْكُمَ بَيْنَهُمْ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ أَن يَفْتِنُوكَ عَنْ بَعْضِ مَا أَنزَلَ اللَّهُ إِلَيْكَ فَإِن تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا أَنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذَيِّبَهُمْ بَعْضُ ذُنُوبِهِمْ وَإِن كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُونَ ﴿٥٠﴾

أَحْكُمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْعُونَ وَمَن أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُؤْتُونَ ﴿٥١﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ أَوْلِيَاءَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَمَن يَتَّوَلَّهُمْ مِّنكُمْ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٢﴾

فَتَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ يُسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَىٰ أَن تُصِيبَنَا دَآئِرَةٌ فَعَسَى اللَّهُ أَن يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهِ فَيُصِيبِحُوا عَلَىٰ مَا أَسْرَوْا فِي أَنفُسِهِمْ نَدِيمِينَ ﴿٥٣﴾

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا هَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمُوا بِاللَّهِ

क्या यही वह है, जो अल्लाह की बड़ी गंभीर शपथें ले कर कहा करते थे कि वह तुम्हारे साथ है? इन के कर्म अकारथ गये और अंततः वह असफल हो गये।

54. हे ईमान वालो! तुम में से जो अपने धर्म से फिर जायेगा, तो अल्लाह ऐसे लोगों को पैदा कर देगा, जिन से वह प्रेम करेगा, और वह उस से प्रेम करेंगे। वह ईमान वालों के लिये कोमल तथा काफिरों के लिये कड़े^[1] होंगे। अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, किसी निन्दा करने वाले की निन्दा से नहीं डरेंगे। यह अल्लाह की दया है, जिसे चाहे प्रदान करता है, और अल्लाह (की दया) विशाल है और वह अति ज्ञानी है।

55. तुम्हारे सहायक केवल अल्लाह और उस के रसूल तथा वह है, जो ईमान लाये, जो नमाज़ की स्थापना करते तथा ज़कात देते हैं, और अल्लाह के आगे झुकने वाले हैं।

56. तथा जो अल्लाह और उस के रसूल तथा ईमान वालों को सहायक बनायेगा, तो निश्चय अल्लाह का दल ही छा कर रहेगा।

57. हे ईमान वालो! उन को जिन्होंने तुम्हारे धर्म को उपहास तथा खेल

جَهْدًا يَمَانِهِمْ لَتَهْمُ لَمَعَكُمْ حِطَّتْ أَعْيَالُهُمْ
فَأَصْبَحُوا خَيْرِينَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدَّ مِنكُمْ عَن دِينِهِ
سَوْفَ يَأْتِي اللَّهَ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ أَذِلَّةٌ
عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعْرَافًا عَلَى الْكَافِرِينَ يُجَاهِدُونَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَائِمٍ ذَلِكَ
فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ
يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ
رُكُوعُونَ ۝

وَمَنْ يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا فَإِنَّ
حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ اتَّخَذُوا

1 कड़े होने का अर्थ यह है कि वह युद्ध तथा अपने धर्म की रक्षा के समय उन के दबाव में नहीं आयेंगे, न जिहाद की निन्दा उन्हें अपने धर्म की रक्षा से रोक सकेगी।

बना रखा है उन में से जो तुम से पहले पुस्तक दिये गये हैं, तथा काफ़िरो को सहायक (मित्र) न बनाओ, और अल्लाह से डरते रहो, यदि तुम वास्तव में ईमान वाले हो।

58. और जब तुम नमाज़ के लिये पुकारते हो, तो वे उस का उपहास करते तथा खेल बनाते हैं, इस लिये कि वह समझ नहीं रखते।

59. (हे नबी!) आप कह दें कि हे अहले किताब! इस के सिवा हमारा दोष क्या है, जिस का तुम बदला लेना चाहते हो, कि हम अल्लाह पर तथा जो हमारी ओर उतारा गया और जो हम से पूर्व उतारा गया उस पर ईमान लाये हैं, और इस लिये कि तुम में अधिकतर उल्लंघनकारी हैं।

60. आप उन से कह दें कि क्या मैं तुम्हें बता दूँ, जिन का प्रतिफल (बदला) अल्लाह के पास इस से भी बुरा है? वह हैं जिन को अल्लाह ने धिक्कार दिया और उन पर उस का प्रकोप हुआ, तथा उन में से बंदर और सूअर बना दिये गये, तथा तागूत (असुर- धर्म विरोधी शक्तियों) को पूजने लगे। इन्हीं का स्थान सब से बुरा है, तथा सर्वाधि कुपथ हैं।

61. जब वह^[1] तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये, जब

دِينِكُمْ هُرُورًا ۖ وَالْبِغْيَاءُ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكَفَّارُ أَوْلِيَاءُ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ
إِنَّ كُفْرَكُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوا هُرُورًا
وَالْبِغْيَاءُ ذَلِكُمْ يَأْتِيهِمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۝

قُلْ يَا هَلْ الْكِتَابَ هَلْ تَنْفَعُونَ مِنَّا إِلَّا أَنْ أَمَّنَّا
بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلُ
وَأَنَّ الْكُفْرَ لَمِيقُونَ ۝

قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ بِشَرِّينَ ذَلِكَ مَثُوبَةٌ عِنْدَ اللَّهِ
مَنْ لَعَنَهُ اللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمْ
الْقِرَادَةَ وَالْمُتَنَزِّيرِ وَعَبَدَ الطَّاغُوتِ ۗ وَلِكُلِّ
شَرٍّ مَكَانًا ۗ وَأَصْلُ عَنْ سُوءِ السَّبِيلِ ۝

وَإِذَا جَاءُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا وَقَدْ دَخَلُوا بِالْكَفْرِ

1 इस में द्विविधावादियों का दूराचार बताया गया है।

कि वह कुफ़्र लिये हुये आये और उसी के साथ वापिस हुये, तथा अल्लाह उसे भली भांति जानता है, जिस को वह छुपा रहे हैं।

62. तथा आप उन में से बहुतों को देखेंगे कि पाप तथा अत्याचार और अपने अवैध खाने में दौड़ रहे हैं, वह बड़ा कुकर्म कर रहे हैं।
63. उन को उन के धर्माचारी तथा विद्वान पाप की बात करने तथा अवैध खाने से क्यों नहीं रोकते? वह बहुत बुरी रीति बना रहे हैं?
64. तथा यहूदियों ने कहा कि अल्लाह के हाथ बँधे^[1] हुये हैं, उन्हीं के हाथ बँधे हुये हैं। और वह अपने इस कथन के कारण धिक्कार दिये गये हैं, बल्कि उस के दोनों हाथ खुले हुये हैं, वह जैसे चाहे व्यय (खर्च) करता है, और इन में से अधिकतर को जो (कुर्आन) आप के पालनहार की ओर से आप पर उतारा गया है, उल्लंघन तथा कुफ़्र (अविश्वास) में अधिक कर देगा, और हम ने उन के बीच प्रलय के दिन तक के लिये शत्रुता तथा बैर डाल दिया है। जब कभी वह युद्ध की अग्नि सुलगाते हैं, तो अल्लाह उसे बुझा^[2] देता है। वह धरती में उपद्रव

وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا إِلَيْهِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا يَكْتُمُونَ ﴿٦٢﴾

وَرَبِّي كَثِيرًا مِنْهُمْ يُسَارِعُونَ فِي الْآثِمِ وَالْعُدْوَانِ وَأَكْلِهِمُ السَّحْتِ لَئِنْ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٣﴾

لَوْلَا يَنْهَاهُمُ الرَّبِّيُّونَ وَالْأَعْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْآثِمِ وَأَكْلِهِمُ السَّحْتِ لَئِنْ مَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿٦٤﴾

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلُعِنُوا بِمَا قَالُوا الْبَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ يُنفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ مَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ مِنَ تَرِكٍ غَضًّا أَنْزَلْنَا وَأَنْزَلْنَا الْقُرْآنَ وَالْفِتْنَةَ لِيَذَّبَهُمُ الْعُتَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ كُلَّمَا أَوْقَدُوا نَارًا لِلْعَرْبِ أَطْفَأَهَا اللَّهُ وَسِعُونَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٦٥﴾

- 1 अरबी मुहावरे में हाथ बंधे का अर्थ है कंजूस होना, और दान-दक्षिणा से हाथ रोकना। (देखिये: सूरह आले इमरान, आयत- 181)
- 2 अर्थात् उन के षडयंत्र को सफल नहीं होने देता बल्कि उस का कुफल उन्हीं को भोगना पड़ता है। जैसा कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के समय में विभिन्न दशाओं में हुआ।

का प्रयास करते हैं, और अल्लाह विद्रोहियों से प्रेम नहीं करता।

65. और यदि अहले किताब ईमान लाते, तथा अल्लाह से डरते, तो हम अवश्य उन के दोषों को क्षमा कर देते, और उन्हें सुख के स्वर्गों में प्रवेश देते।

66. तथा यदि वह स्थापित^[1] रखते तौरात और इंजील को, और जो भी उन की ओर उतारा गया है, उन के पालनहार की ओर से, तो अवश्य उन को अपने ऊपर (आकाश) से, तथा पैरों के नीचे (धरती) से^[2] जीविका मिलती, उन में एक संतुलित समुदाय भी है। और उन में से बहुत से कुकर्म कर रहे हैं।

67. हे रसूल!^[3] जो कुछ आप पर आप के पालनहार की ओर से उतारा गया है उसे (सब को) पहुँचा दें, और यदि ऐसा नहीं किया, तो आप ने उस का उपदेश नहीं पहुँचाया। और अल्लाह (विरोधियों से) आप की रक्षा करेगा^[4], निश्चय अल्लाह,

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكُنَّا عَنْهُمْ سَبِيحِينَ ۝ وَلَا تَجِدُ أُمَّةً مُّسِدَةً مَّا يُعْمَلُونَ ۝

وَلَوْ أَنَّهُمْ أَقَامُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِمْ مِنْ رَبِّهِمْ لَأَكْفُرُوا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمَنْ يَعْصِ أَوْحَاءَهُمْ وَسِعَتْ كُمَّهُمْ أَصْحَابُ الْمَقْصِدِ وَأَلْئِنَّ مِنْهُمْ لَشَارِكًا وَمَنْ يَسَاء مَا يَجْعَلُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ ۚ وَإِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَمَا بَكَغَتْ رَسُولُكَ وَاللَّهُ يَعْلَمُ ۚ وَمَنْ يَتَّبِعِ النَّاسَ إِذَا قَالَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْفَوْمُ الْكَافِرِينَ ۝

1 अर्थात् उन के आदेशों का पालन करते और उसे अपना जीवन विधान बनाते।

2 अर्थात् आकाश की वर्षा तथा धरती की उपज में अधिकता होती।

3 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमा।

4 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के नबी होने के पश्चात् आप पर विरोधियों ने कई बार प्राण घातक आक्रमण का प्रयास किया। जब आप ने मक्का में सफा पर्वत से एकेश्वरवाद का उपदेश दिया तो आप के चचा अबू लहब ने आप पर पत्थर चलाये। फिर उसी युग में आप काबा के पास नमाज़ पढ़ रहे थे कि अबू जहल ने आप की गरदन रौदने का प्रयास किया, किन्तु आप के रक्षक फ़रिश्तों को देख कर भागा। और जब कुरैश ने यह योजना बनाई कि

काफ़िरों को मार्गदर्शन नहीं देता।

68. (हे नबी!) आप कह दें कि हे अहल किताब! तुम किसी धर्म पर नहीं हो, जब तक तौरात तथा इंजील और उस (कुर्आन) की स्थापना^[1] न करो, जो तुम्हारी ओर तुम्हारे पालनहार की ओर से उतारा गया है, तथा उन में से अधिकतर को जो (कुर्आन) आप पर आप के पालनहार की ओर से उतारा गया है, अवश्य उल्लंघन तथा कुफ़्र (अविश्वास) में अधिक

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَسْتُمْ عَلَى شَيْءٍ حَتَّى تُقِيمُوا
التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ
وَكَيْفَ يَدِينُ كَثِيرٌ مِنْهُمْ تَأْتِيهِمْ مِنَ رَبِّكَ
طُعْيَانًا مَغْرُورًا ۚ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

आप को बध कर दिया जाये और प्रत्येक कबीले का एक युवक आप के द्वार पर तलवार लेकर खड़ा रहे और आप निकलें तो सब एक साथ प्रहार कर दें, तब भी आप उन के बीच से निकल गये। और किसी ने देखा भी नहीं। फिर आप ने अपने साथी अबू बक्र के साथ हिजरत के समय सौर पर्वत की गुफा में शरण ली। और काफ़िर गुफा के मुंह तक आप की खोज में आ पहुँचे। उन्हें आप के साथी ने देखा, किन्तु वे आप को नहीं देख सके। और जब वहाँ से मदीना चले तो सुराका नामी एक व्यक्ति ने कुरैश के पुरस्कार के लोभ में आ कर आप का पीछा किया। किन्तु उस के घोड़े के अगले पैर भूमी में धंस गये। उस ने आप को गुहारा, आप ने दुआ कर दी, और उस का घोड़ा निकल गया। उस ने ऐसा प्रयास तीन बार किया फिर भी असफल रहा। आप ने उस को क्षमा कर दिया। और यह देख कर वह मुसलमान हो गया। आप ने फरमाया कि एक दिन तुम अपने हाथ में ईरान के राजा के कंगन पहनोगे। और उमर बिन खत्ताब के युग में यह बात सच साबित हुई। मदीने में भी यहूदियों के कबीले बनू नजीर ने छत के ऊपर से आप पर भारी पत्थर गिराने का प्रयास किया जिस से अल्लाह ने आप को सूचित कर दिया। खैबर की एक यहूदी स्त्री ने आप को विष मिला के बकरी का माँस खिलाया। परन्तु आप पर उस का कोई बड़ा प्रभाव नहीं हुआ। जब कि आप का एक साथी उसे खा कर मर गया। एक युद्ध यात्रा में आप अकेले एक वृक्ष के नीचे सो गये, एक व्यक्ति आया, और आप की तलवार ले कर कहा: मुझ से आप को कौन बचायेगा? आप ने कहा: अल्लाह! यह सुन कर वह काँपने लगा, और उस के हाथ से तलवार गिर गई और आप ने उसे क्षमा कर दिया। इन सब घटनाओं से यह सिद्ध हो जाता है कि अल्लाह ने आप की रक्षा करने का जो वचन आप को दिया, उस को पूरा कर दिया।

1 अर्थात् उन के आदेशों का पालन न करो।

कर देगा, अतः आप काफिरों (के अविश्वास) पर दुखी न हों।

69. वास्तव में जो ईमान लाये, तथा जो यहूदी हुये, और साबी, तथा ईसाई, जो भी अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान लायेगा, तथा सत्कर्म करेगा, तो उन्हीं के लिये कोई डर नहीं, और न वह उदासीन^[1] होंगे।
70. हम ने बनी इस्राईल से दृढ़ वचन लिया, तथा उन के पास बहुत से रसूल भेजे, (परन्तु) जब कभी कोई रसूल उन की अपनी आकांक्षाओं के विरुद्ध कुछ लाया, तो एक गिरोह को उन्हीं ने झुठला दिया, तथा एक गिरोह को बध करते रहे।
71. तथा वह समझे कि कोई परीक्षा न होगी, इस लिये अंधे बहरे हो गये, फिर अल्लाह ने उन को क्षमा कर दिया, फिर भी उन में से अधिकतर अंधे और बहरे हो गये, तथा वह जो कुछ कर रहे हैं, अल्लाह उसे देख रहा है।
72. निश्चय वह काफिर हो गये, जिन्हों

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِغِينَ
وَالنَّصَارَى مِنَ الْمَنِّ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَلَى
صَالِحَاتِهِمْ فَلَا ذُو عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٩﴾

لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَرَسُولُنَا أَن نَّسُبَ اللَّهَ
وَنَحْنُ كَانُوا اشْقَاتٍ فَوَقَّافِئَهُمْ فَمَا يَكَفِّرُونَ
عَن ذُنُوبِهِمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٧٠﴾

وَحَسِبُوا أَن لَّكُنَّ فِتْنَةً يَّعْمَهُمْ وَصَمُّوا ثُمَّ تَابَ
اللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَمُّوا كَثِيرًا وَرَمَى اللَّهُ
بَصِيرَتَهُمْ أَن يَّعْمَلُونَ ﴿٧١﴾

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ

1 आयत का भावार्थ यह है कि इस्लाम से पहले यहूदी, ईसाई तथा साबी जिन्हों ने अपने धर्म को पकड़ रखा है, और उस में किसी प्रकार का हेर-फेर नहीं किया, अल्लाह तथा आखिरत पर ईमान रखा और सदाचार किये उन को कोई भय और चिन्ता नहीं होनी चाहिये। इसी प्रकार की आयत सूरह बकरह (62) में भी आई है जिस के विषय में आता है कि कुछ लोगों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से प्रश्न किया कि उन लोगों का क्या होगा जो अपने धर्म पर स्थित थे और मर गये? इसी पर यह आयत उतरी। परन्तु अब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आप के लाये धर्म पर ईमान लाना अनिवार्य है इस के बिना मोक्ष नहीं मिल सकता।

ने कहा कि अल्लाह,^[1] मर्यम का पुत्र मसीह ही है। जब कि मसीह ने कहा था: हे बनी इसराईल! उस अल्लाह की इबादत (वंदना) करो जो मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है, वास्तव में जिस ने अल्लाह का साझी बना लिया उस पर अल्लाह ने स्वर्ग को हराम (वर्जित) कर दिया। और उस का निवास स्थान नरक है। तथा अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।

وَقَالَ الْمَسِيحُ بَنِي إِسْرَائِيلَ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَزَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ جُزَاءً وَمَأْوَاهُ النَّارُ وَاللَّاطِلِينَ مِنْ أَصْحَابِ ۞

73. निश्चय वह भी काफिर हो गये, जिन्होंने ने कहा कि अल्लाह तीन का तीसरा है, जब कि कोई पूज्य नहीं है, परन्तु वही अकेला पूज्य है, और यदि वह जो कुछ कहते हैं, उस से नहीं रुके, तो उन में से काफिरों को दुखदायी यातना होगी।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَلَاثَةٌ وَوَمَنْ لِلَّهِ الْأَلْهَاءُ وَاحِدٌ وَإِنْ لَمْ يَتَّبِعُوا عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۞

74. वह अल्लाह से तौब: तथा क्षमा याचना क्यों नहीं करते, जब कि अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है?

أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لَهُ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۞

75. मर्यम का पुत्र मसीह इस के सिवा कुछ नहीं कि वह एक रसूल है, उस से पहले भी बहुत से रसूल हो चुके हैं, उस की माँ सच्ची थी, दोनों भोजन करते थे, आप देखें कि हम कैसे उन के लिये निशानियाँ (एकेश्वरवाद के लक्षण) उजागर

مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَأُمُّهُ صِدْقَةٌ كَمَا نَزَّلْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْأَعْرَابِ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ انظُرْ أَنَّى يُؤْفَكُونَ ۞

1 आयत का भावार्थ यह है कि ईसाइयों को भी मूल धर्म एकेश्वरवाद और सदाचार की शिक्षा दी गयी थी। परन्तु वह भी उस से फिर गये, तथा ईसा को स्वयं अल्लाह अथवा अल्लाह का अंश बना दिया, और पिता पुत्र और पवित्रात्मा तीन के योग को एक प्रभु मानने लगे।

कर रहें हैं, फिर देखिये कि वह कहाँ बहके^[1] जा रहे हैं।

76. आप उन से कह दें कि क्या तुम अल्लाह के सिवा उस की इबादत (वन्दना) कर रहे हो, जो तुम्हें कोई हानि और लाभ नहीं पहुँचा सकता? तथा अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

77. (हे नबी!) कह दो कि हे अहले किताब! अपने धर्म में अवैध अति न करो^[2], तथा उन की अभिलाषाओं पर न चलो, जो तुम से पहले कुपथ हो^[3] चुके, और बहुतों को कुपथ कर गये, और संमार्ग से विचलित हो गये।

78. बनी इस्राईल में से जो काफिर हो गये, वह दावूद तथा मर्यम के पुत्र ईसा की जुबान पर धिक्कार दिये^[4] गये, यह इस कारण कि उन्होंने ने अवैज्ञा की, तथा (धर्म की सीमा का) उल्लंघन कर रहे थे।

79. वह एक दूसरे को किसी बुराई से, जो वे करते, रोकते नहीं थे, निश्चय

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَكُمْ ضُرًّا
وَلَا فَعْلًا، وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْتَوُوا فِي دِينِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ
وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوا مِن قَبْلُ
وَأَضَلُّوا كَثِيرًا وَضَلُّوا عَن سَوَاءِ السَّبِيلِ ۝

لَعْنُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَى
إِسْرَائِيلَ دَاوُدَ وَيَسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا
وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ۝

كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَن مُّنْكَرٍ فَعَلُوهُ لَبِئْسَ

1 आयत का भावार्थ यह है कि ईसाइयों को भी मूल धर्म एकेश्वरवाद और सदाचार की शिक्षा दी गयी थी, परन्तु वह भी उस से फिर गये, तथा ईसा (अलैहिस्सलाम) को स्वयं अल्लाह अथवा अल्लाह का अंश बना दिया, और पिता पुत्र और पवित्रात्मा तीन के योग को एक प्रभु मानने लगे।

2 (अति न करो): अर्थात् ईसा अलैहिस्सलाम को प्रभु अथवा प्रभु का पुत्र न बनाओ।

3 इन से अभिप्राय वह हो सकते हैं, जो नबियों को स्वयं प्रभु अथवा प्रभु का अंश मानते हैं।

4 अर्थात् धर्म पुस्तक ज़बूर तथा इंजील में इन के धिक्कृत होने की सूचना दी गयी है। (इब्ने कसीर)

वह बड़ी बुराई कर रहे थे।^[1]

80. आप उन में से अधिकतर को देखेंगे कि काफ़ि़रों को अपना मित्र बना रहे हैं। जो कर्म उन्होंने ने अपने लिये आगे भेजा है बहुत बुरा है कि अल्लाह उन पर क्रुद्ध हो गया तथा यातना में वही सदावासी होंगे।

81. और यदि वह अल्लाह पर, तथा नबी पर, और जो उन पर उतारा गया, उस पर ईमान लाते, तो उन को मित्र न बनाते^[2], परन्तु उन में अधिकतर उल्लंघनकारी हैं।

82. (हे नबी!) आप उन का जो ईमान लाये है, सब से कड़ा शत्रु: यहूदियों तथा मिश्रणवादियों को पायेंगे। और जो ईमान लाये है उन के सब से अधिक समीप आप उन्हें पायेंगे, जो अपने को ईसाई कहते हैं। यह बात इस लिये है कि उन में उपासक तथा सन्यासी हैं, और वह अभिमान^[3] नहीं करते।

83. तथा जब वह (ईसाई) उस (कुर्आन) को सुनते हैं, जो रसूल पर उतरा है, तो आप देखते हैं कि उन की आखें

مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ④

تَرَىٰ كَثِيرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيْسَ
بِأَعْيُنِنَا لَهُمْ آفَئِهِمْ ۖ سَخَطَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ
وَفِي الْعَذَابِ لَهُمْ خُلْدٌ ۖ ④

وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالنَّبِيِّ وَمَا أُنزِلَ
إِلَيْهِمْ مَا اتَّخَذُوا لَهُمْ وُءَالِيَاءَ ۚ وَلَكِنَّ
كَثِيرًا مِّنْهُمْ فَسِقُونَ ④

لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا
الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُمْ
مُؤَدَّةً لِلَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا
نُصْرَىٰ ذَٰلِكَ ۖ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَسِيْبِينَ
وَهُمْ بَنَاءٌ وَأَنْهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ④

وَإِذْ أَسْمِعُوا مَا أُنزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَىٰ
أَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مَنَاعِرُ فَوَامِنَ

1 इस आयत में उन पर धिक्कार का कारण बताया गया है।

2 भावार्थ यह है कि यदि यहूदी, मसा अलैहिस्सलाम को अपना नबी, और तौरात को अल्लाह की किताब मानते हैं, जैसा कि उन का दावा है तो वे मुसलमानों के शत्रु और काफ़ि़रों को मित्र नहीं बनाते। कुर्आन का यह सच आज भी देखा जा सकता है।

3 अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि यह आयत हब्शा के राजा नजाशी और उस के साथियों के बारे में उतरी, जो कुर्आन सुन कर रोने लगे, और मुसलमान हो गये। (इब्ने जरीर)

आँसू से उबल रही हैं, उस सत्य के कारण जिसे उन्होंने ने पहचान लिया है। वे कहते हैं: हे हमारे पालनहार! हम ईमान ले आये, अतः हमें (सत्य) के साक्षियों में लिख^[1] ले।

84. (तथा कहते हैं): क्या कारण है कि हम अल्लाह पर तथा इस सत्य (क़ुर्आन) पर ईमान (विश्वास) न करें? और हम आशा रखते हैं कि हमारा पालनहार हमें सदाचारियों में सम्मिलित कर देगा।

85. तो अल्लाह ने उन के यह कहने के कारण उन्हें ऐसे स्वर्ग प्रदान कर दिये, जिन में नहरें प्रवाहित हैं, वह उन में सदावासी होंगे। तथा यही सत्कर्मियों का प्रतिफल (बदला) है।

86. तथा जो काफ़िर हो गये, और हमारी आयतों को झुठला दिया, तो वही नारकी है।

87. हे ईमान वलो! उन स्वच्छ पवित्र चीज़ों को जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल (वैध) की हैं, हराम (अवैध)^[2] न करो, और सीमा का उल्लंघन न करो। निस्संदेह अल्लाह उल्लंघनकारियों^[3]

الْحَقُّ يَقُولُونَ رَبَّنَا مَا فَكَّرْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَمَآ جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَكُفِّرُوا
أَنْ يُدْخِلَنَا رَبَّنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

فَأَنبَأَهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا وَجَدْتُمُ مَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْرِمُوا طَيِّبَاتِ مَا
أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ
الْمُعْتَدِينَ ۝

1 जब जाफर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हब्शा के राजा नजाशी को सूरह मरयम की आरंभिक आयतें सुनाईं तो वह और उस के पादरी रोने लगे। (सीरत इब्ने हिशाम-1|359)

2 अर्थात् किसी भी खाद्य अथवा वस्तु को वैध अथवा अवैध करने का अधिकार केवल अल्लाह को है।

3 यहाँ से वर्णन क्रम, फिर आदेशों तथा निषेधों की ओर फिर रहा है। अन्य धर्मों के अनुयायियों ने सन्यास को अल्लाह के सामिप्य का साधन समझ लिया

से प्रेम नहीं करता।

88. तथा उस में से खाओ जो हलाल (वैध) स्वच्छ चीज़ अल्लाह ने तुम्हें प्रदान की है। तथा अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरते रहो, यदि तुम उसी पर ईमान (विश्वास) रखते हो।
89. अल्लाह तुम्हें तुम्हारी व्यर्थ शपथों^[1] पर नहीं पकड़ता, परन्तु जो शपथ जान बूझ कर ली हो, उस पर पकड़ता है, तो उस का^[2] प्रायश्चित्त दस निर्धनों को भोजन कराना है, उस माध्यमिक भोजन में से जो तुम अपने परिवार को खिलाते हो, अथवा उन्हें वस्त्र दो, अथवा एक दास मुक्त करो, और जिसे यह सब उपलब्ध न हो, तो तीन दिन रोज़ा रखना है। यह तुम्हारी शपथों का प्रायश्चित्त है, जब तुम शपथ लो। तथा अपनी शपथों की रक्षा करो, इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों (आदेशों) का वर्णन करता है, ताकि तुम उस का उपकार मानो।
90. हे ईमान वालो! निस्सदेह^[3] मदिरा,

وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا وَاتَّقُوا اللَّهَ
الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿٥٨﴾

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِالْغَوَا فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ
يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَدْتُمُ الْاَيْمَانَ فَكَفَّارَتُهُ
إِطْعَامُ عَشْرَةِ مَسْكِينٍ مِنْ أَوْسَطِ مَا نَطَعْتُمْ
أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَخْرِيرُ رَقَبَةٍ فَمَنْ لَمْ
يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ ذَلِكَ كَفَّارَةُ أَيْمَانِكُمْ
إِذَا حَلَفْتُمْ وَاحْفَظُوا أَيْمَانَكُمْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ
اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٩﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْبَيْسُ وَالْأَنْصَابُ

था, और ईसाइयों ने सन्यास की रीति बना ली थी और अपने ऊपर संसारिक उचित स्वाद तथा सुख को अवैध कर लिया था। इस लिये यहाँ सावधान किया जा रहा है कि यह कोई अच्छाई नहीं, बल्कि धर्म सीमा का उल्लंघन है।

- 1 व्यर्थ: अर्थात् बिना निश्चय के। जैसे कोई बात बात पर बोलता है: (नहीं, अल्लाह की शपथ!) अथवा: (हाँ, अल्लाह की शपथ!) (बुखारी- 4613)
- 2 अर्थात् यदि शपथ तोड़ दे, तो यह प्रायश्चित्त है।
- 3 शराब के निषेध के विषय में पहले सूरह बकरा आयत 219, और सूरह निसा आयत 43 में दो आदेश आ चुके हैं। और यह अन्तिम आदेश है, जिस में शराब

जुआ तथा देवस्थान^[1] और पाँसे^[2] शैतानी मलिन कर्म हैं, अतः इन से दूर रहो, ताकि तुम सफल हो जाओ।

91. शैतान तो यही चाहता है कि शराब (मदिरा) तथा जूए द्वारा तुम्हारे बीच बैर तथा द्वेष डाल दे, और तुम्हें अल्लाह की याद तथा नमाज़ से रोक दे, तो क्या तुम रुकोगे या नहीं?
92. तथा अल्लाह के आज्ञाकारी रहो, और उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो, तथा (उन की अवैज्ञा से) सावधान रहो और यदि तुम विमुख हुये, तो जान लो कि हमारे रसूल पर केवल खुला उपदेश पहुँचा देना है।
93. उन पर जो ईमान लाये तथा सदाचार करते रहे, उस में कोई दोष नहीं, जो (निषेधाज्ञा से पहले) खा लिया, जब वह अल्लाह से डरते रहे, तथा ईमान पर स्थिर रह गये, और सत्कर्म करते रहे, फिर डरते और सत्कर्म करते रहे, फिर (रोके गये तो) अल्लाह से डरे और सदाचार करते रहे, तो अल्लाह सदाचारियों से प्रेम करता^[3] है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ فَاجْتَبُواهُ
عَلَّكُمْ تَقَارُونَ ①

إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ
وَالْبَغْضَاءَ فِي الْحَمْرِ وَالْمَيْمِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ
وَعَنِ الصَّلَاةِ فَهَلْ أَنْتُمْ مُنْذَرُونَ ②

وَاطِيعُوا اللَّهَ وَاطِيعُوا الرَّسُولَ وَاحْذَرُوا فَإِن تَوَلَّيْتُمْ
فَاعْلَمُوا أَنَّمَا عَلَى رَسُولِنَا الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ③

لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ
فِيهَا طَعِمُوا إِذَا مَا اتَّقَوْا وَآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ثُمَّ اتَّقَوْا
وَآمَنُوا اتَّقَوْا وَأَحْسِنُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ④

को सदैव के लिये वर्जित कर दिया गया है।

- 1 देव स्थान: अर्थात् वह वेदियाँ जिन पर देवी देवताओं के नाम पर पशुओं की बलि दी जाती है। आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह के सिवा किसी अन्य के नाम से बलि दिया हुआ पशु अथवा प्रसाद अवैध है।
- 2 पाँसे: यह तीन तीर होते थे, जिन से वह कोई काम करने के समय यह निर्णय लेते थे कि उसे करें या न करें। उन में एक पर "करो", और दूसरे पर "मत करो" और तीसरे पर "शून्य" लिखा होता था। जूवे में लाटी और रेश इत्यादि भी शामिल हैं।
- 3 आयत का भावार्थ यह है कि जिन्होंने ने वर्जित चीजों का निषेधाज्ञा से पहले प्रयोग

94. हे ईमान वालो! अल्लाह कुछ शिकार द्वारा जिन तक तुम्हारे हाथ तथा भाले पहुँचेंगे, अवश्य तुम्हारी परीक्षा लेगा, ताकि यह जान ले कि तुम में से कौन उस से बिन देखे डरता है? फिर इस (आदेश) के पश्चात् जिस ने (इस का) उल्लंघन किया, तो उसी के लिये दुःखदायी यातना है।

95. हे ईमान वालो! शिकार न करो^[1], जब तुम एहराम की स्थिति में रहो, तथा तुम में से जो कोई जान बूझ कर ऐसा कर जाये, तो पालतू पशु से शिकार किये पशु जैसा बदला (प्रतिकार) है, जिस का निर्णय तुम में से दो न्यायकारी व्यक्ति करेंगे, जो काबा तक हद्द (उपहार स्वरूप) भेजा जाये। अथवा^[2] प्रायश्चित्त है, जो कुछ निर्धनों का खाना है, अथवा उस के बराबर रोजे रखना है। ताकि अपने किये का दुष्परिणाम चखे। इस आदेश से पूर्व जो हुआ, अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया, और जो फिर करेगा, अल्लाह उस से बदला लेगा, और अल्लाह

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا الْيَهُودُ لَكُمْ مِنَ اللَّهِ بَشَىٌٰ مِنَ الصَّبِيءِ
تَنَالَهُ أَيْدِيكُمْ وَرِمَاكُم لِيَعْلَمَ اللَّهُ مِنْ بَيِّنَاتِهِ
بِالْعَبِيءِ فَمَنْ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَلِكَ فَكَهُ عَذَابِ
الْيَوْمِ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتْلُوا الصِّبْيَ وَأَنْتُمْ حُرٌّ وَمَنْ
قَتَلَهُ مِنْكُمْ مُتَعَدًّا فَجَزَاءٌ مِثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ
يَحْكُمُ بِهِ ذَوَا عَدْلٍ مِنْكُمْ هُدًى لِّلْبَلِغِ الْكَعْبَةِ أَوْ
كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسْكِينٍ أَوْ عَدْلٌ ذَلِكُمْ صِيَامًا
لِيَذُوقَ وَبَالَ أَمْرِ عَفَا اللَّهُ عَنْ سَلْفٍ وَمَنْ عَادَ
فَيَنْتَقِمِ اللَّهُ مِنْهُ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو نِقَامٍ ۝

किया, फिर जब भी उन को अवैध किया गया तो उन से रुक गये, उन पर कोई दोष नहीं। सहीह हदीस में है कि जब शराब वर्जित की गयी तो कुछ लोगों ने कहा कि कुछ लोग इस स्थिति में मारे गये कि वह शराब पिये हुये थे, उसी पर यह आयत उतरी। (बुखारी-4620)। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: जो भी नशा लाये वह मदिरा और अवैध है। (सहीह बुखारी-2003)। और इस्लाम में उस का दण्ड अस्सी कोड़े है। (बुखारी- 6779)

1 इस से अभिप्राय थल का शिकार है।

2 अर्थात् यदि शिकार के पशु के समान पालतू पशु न हो, तो उस का मूल्य हरम के निर्धनों को खाने के लिये भेजा जाये अथवा उस के मूल्य से जितने निर्धनों को खिलाया जा सकता हो उतने ब्रत रखे।

प्रभुत्वशाली बदला लेने वाला है।

96. तथा तुम्हारे लिये जल का शिकार और उस का खाद्य^[1] हलाल (वैध) कर दिया गया है, तुम्हारे तथा यात्रियों के लाभ के लिये, तथा तुम पर थल का शिकार जब तक एहराम की स्थिति में रहो, हराम (अवैध) कर दिया गया है, और अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरते रहो, जिस की ओर तुम सभी एकत्र किये जाओगे।

97. अल्लाह ने आदरणीय घर काबा को लोगों के लिये (शान्ति तथा एकता की) स्थापना का साधन बना दिया है, तथा आदरणीय मासों^[2] और (हज्ज) की कुर्बानी तथा कुर्बानी के पशुओं को जिन्हें पट्टे पहनाये गये हों, यह इस लिये किया गया ताकि तुम्हें ज्ञान हो जाये कि अल्लाह जो कुछ आकाशों और जो कुछ धरती में है सब को जानता है। तथा निस्संदेह अल्लाह प्रत्येक विषय का ज्ञानी है।

98. तुम जान लो कि अल्लाह कड़ा दण्ड देने वाला है, और यह कि अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् (भी) है।

99. अल्लाह के रसूल का दायित्व इस के सिवा कुछ नहीं कि उपदेश पहुँचा दे और अल्लाह जो तुम बोलते और जो

أَحَلَّ لَكُمْ صَيْدَ الْبَحْرِ وَطَعَامَهُ مَتَاعًا لَكُمْ
وَالسِّيَاحَةَ وَالْحُرْمَ عَلَيْكُمْ صَيْدَ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا
وَأَتَقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٩٦﴾

جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَمًا لِلنَّاسِ
وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ ذَلِكَ لِيَتَعْلَمُوا
أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٩٧﴾

إِعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ
عَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٩٨﴾

مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ
وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٩٩﴾

1 अर्थात् जो बिना शिकार किये हाथ आये, जैसे मरी हुई मछली। अर्थात् जल का शिकार एहराम की स्थिति में तथा साधारण अवस्था में उचित है।

2 आदरणीय मासों से अभिप्रेत: जुलकादा जुलहिज्जा तथा मुहर्रम और रजब के महीने हैं।

मन में रखते हो, सब जानता है।

100. (हे नबी!) कह दो कि मलिन तथा पवित्र समान नहीं हो सकते। यद्यपि मलिन की अधिकता तुम्हें भा रही हो। तो हे मतिमानों! अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरो, ताकि तुम सफल हो जाओ।^[1]

101. हे ईमान वालो! ऐसी बहुत सी चीजों के विषय में प्रश्न न करो, जो यदि तुम्हें बता दी जायें, तो तुम्हें बुरा लग जायें तथा यदि तुम उन के विषय में जब कि कुआन उतर रहा है, प्रश्न करोगे, तो वह तुम्हारे लिये खोल दी जायेंगी, अल्लाह ने तुम्हें क्षमा कर दिया। और अल्लाह अति क्षमाशील सहनशील^[2] है।

102. ऐसे ही प्रश्न एक समुदाय ने तुम से पहले^[3] किये, फिर इस के कारण वह काफिर हो गये।

قُلْ لَا يَسْتَوِي الْغَيْبُ وَالطَّيْبُ وَلَوْ أَحْبَبَكَ
كَثْرَةُ الْغَيْبِ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَنَ أَشْيَاءَ آتَانِ
نُبْدَ لَكُمْ تَسْأَلُوهُ وَإِن تَسْأَلُوا عَنْهَا حِينَ يُنزَلُ
الْقُرْآنُ تَبَدَّلَ لَكُمْ عَمَّا نَزَّلْنَا بِهَا وَأَلَّهُ غَفُورٌ
حَلِيمٌ ۝

فَدَسَّأَلَهَا قَوْمٌ مِّن قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا
بِهَا كَافِرِينَ ۝

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने जिसे रोक दिया है, वही मलिन और जिस की अनुमति दी है, वही पवित्र है। अतः मलिन में रुची न रखो, और किसी चीज़ की कमी और अधिकता को न देखो, उस के लाभ और हानि को देखो।
- 2 इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि कुछ लोग नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से उपहास के लिये प्रश्न किया करते थे। कोई प्रश्न करता कि मेरा पिता कौन है? किसी की ऊँटनी खो गयी हो तो आप से प्रश्न करता कि मेरी ऊँटनी कहाँ है? इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी-4622)
- 3 अर्थात् अपने रसूलों से। आयत का भावार्थ यह है कि धर्म के विषय में कुरेद न करो। जो करना है, अल्लाह ने बता दिया है, और जो नहीं बताया है, उसे क्षमा कर दिया है, अतः अपने मन से प्रश्न न करो, अन्यथा धर्म में सुविधा की जगह असुविधा पैदा होगी, और प्रतिबंध अधिक हो जायेंगे, तो फिर तुम उन का पालन न कर सकोगे।

103. अल्लाह ने बहीरा और साइबा तथा वसीला और हाम कुछ नहीं बनाया^[1] है, परन्तु जो काफिर हो गये, वह अल्लाह पर झूठ घड़ रहे हैं, और उन में अधिकतर निर्बाध हैं।

مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنْ بَحِيرَةٍ وَلَا سَيْبَةٍ وَلَا وِصِيلَةٍ وَلَا كَاهِلٍ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَقْتُرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَالْكَثْرُ لَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٥٠﴾

104. और जब उन से कहा जाता है कि उस की ओर आओ जो अल्लाह ने उतारा है, तथा रसूल की ओर (आओ) तो कहते हैं: हम को वही बस है, जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है, क्या उन के पूर्वज कुछ न जानते रहे हों और न संमार्ग पर रहे हों?

وَإِذْ أَقِيلَ لَهُمْ نَعَاؤُا إِلَى مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ قَالُوا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوْ لَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿٥١﴾

105. हे ईमान वालो! तुम अपनी चिन्ता करो, तुम्हें वे हानि नहीं पहुँचा सकेंगे जो कुपथ हो गये, जब तुम सुपथ पर रहो! अल्लाह की ओर तुम सब को (परलोक में) फिर कर

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ لَا تَضُرُّوهُمِنْ شَيْءٍ إِذَا هَتَدْتُمْ إِلَى اللَّهِ فَرِحْتُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٢﴾

- 1 अरब के मिश्रणवादी देवी देवता के नाम पर कुछ पशुओं को छोड़ देते थे, और उन्हें पवित्र समझते थे, यहाँ उन्हीं की चर्चा की गयी है।
 बहीरा- वह ऊँटनी जिस को, उस का कान चीर कर देवताओं के लिये मुक्त कर दिया जाता था, और उस का दूध कोई नहीं दूह सकता था।
 साइबा- वह पशु जिसे देवताओं के नाम पर मुक्त कर देते थे, जिस पर न कोई बोझ लाद सकता था, न सवार हो सकता था।
 वसीला- वह ऊँटनी जिस का पहला तथा दूसरा बच्चा मादा हो, ऐसी ऊँटनी को भी देवताओं के नाम पर मुक्त कर देते थे।
 हाम- नर जिस के वीर्य से दस बच्चे हो जायें, उन्हें भी देवताओं के नाम पर साँड बना कर मुक्त कर दिया जाता था।
 भावार्थ यह है कि: यह अनर्गल चीजें हैं! अल्लाह ने इन का आदेश नहीं दिया है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मैं ने नरक को देखा कि उस की ज्वाला एक दूसरे को तोड़ रही है। और अमर बिन लुहय्य को देखा कि वह अपनी आँतें खींच रहा है। उसी ने सब से पहले साइबा बनाया था। (बुखारी- 4624)

जाना है, फिर वह तुम्हें तुम्हारे^[1] कर्मों से सूचित कर देगा।

106. हे इमान वालो! यदि किसी के मरण का समय हो, तो वसियत^[2] के समय तुम में से दो न्यायकारियों को अथवा तुम्हारे सिवा दो दूसरों को गवाह बनाये, यदि तुम धरती में यात्रा कर रहे हो, और तुम्हें मरण की आपदा आ पहुँचे और उन दोनों को नमाज के बाद रोक लो, फिर वह दोनों अल्लाह की शपथ लें, यदि तुम्हें उन पर संदेह हो। वह यह कहें कि हम गवाही के द्वारा कोई मूल्य नहीं खरीदते, यद्यपि वह समीपवर्ती क्यों न हों, और न हम अल्लाह की गवाही को छुपाते हैं, यदि हम ऐसा करें तो पापियों में हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةٌ بَيْنَكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدُكُمْ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَيْنِ ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنكُمْ أَوْ آخَرَيْنِ مَن غَيْرِكُمْ إِنْ أَنْتُمْ صَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَاصْبِرْ بَيْنَكُمْ مَصِيبَةُ الْمَوْتِ يَحْسَبُوهَا مِنْ بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيَقْسِمْنَ بِاللَّهِ إِنْ رُتِبْتُمْ لَّا نَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّا إِذًا لَّ مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٦﴾

107. फिर यदि ज्ञान हो जाये कि वह दोनों (साक्षी) किसी पाप के अधिकारी हुये हैं, तो उन दोनों के स्थान पर दो दूसरे गवाह खड़े हो जायें, उन में से जिन का अधिकार पहले दोनों ने दबाया है, और वह दोनों शपथ लें कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से अधिक सहीह है, और हम ने कोई अत्याचार नहीं किया है। यदि किया है, तो

وَإِنْ عُرِضَ عَلَىٰ أُمَّةٍ أَسْتَفْتَىٰ أَشْرَافًا آخَرِينَ يَقُومُونَ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوْلِيَانِ فَيَقْسِمْنَ بِاللَّهِ لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَا إِذًا لَّ مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٧﴾

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि यदि लोग कुपथ हो जायें, तो उन का कुपथ होना तुम्हारे लिये तर्क (दलील) नहीं हो सकता कि जब सभी कुपथ हो रहे हैं तो हम अकेले क्या करें? प्रत्येक व्यक्ति पर स्वयं अपना दायित्व है, दूसरों का दायित्व उस पर नहीं, अतः पूरा संसार कुपथ हो जाये तब भी तुम सत्य पर स्थित रहो।
- 2 वसियत का अर्थ है: उत्तरदान, मरणासन्न आदेश।

(निस्संदेह) हम अत्याचारी हैं।

108. इस प्रकार अधिक आशा है कि वह सही गवाही देंगे, अथवा इस बात से डरेंगे कि उन की शपथों को दूसरी शपथों के पश्चात् न माना जाये, तथा अल्लाह से डरते रहो, और (उस का आदेश) सुनो, और अल्लाह उल्लंघनकारियों को सीधी राह नहीं^[1] दिखाता।

109. जिस दिन अल्लाह सब रसूलों को एकत्र करेगा, फिर उन से कहेगा कि तुम्हें (तुम्हारी जातियों की ओर से) क्या उत्तर दिया गया? वह कहेंगे कि हमें इस का कोई ज्ञान^[2] नहीं। निस्संदेह तू ही सब छुपे तथ्यों का ज्ञानी है।

110. तथा याद करो, जब अल्लाह ने कहा: हे मर्यम के पुत्र ईसा! अपने ऊपर तथा अपनी माता पर मेरे पुरस्कार को याद कर, जब मैं ने पवित्रात्मा (जिब्रिल) द्वारा तुझे समर्थन दिया, तू गहवारे (गोद) में तथा बड़ी आयु में लोगों से बातें कर रहा था, तथा तुझे पुस्तक और प्रबोध तथा तौरात

ذٰلِكَ اٰذَنِي اَنْ يَّاتُوْا بِالشَّهَادَةِ عَلٰى وَجْهِهَا
اَوْ يَخَافُوْنَ اَنْ تُرَدَّ اِيْمَانُ بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَاَتَقُوْا اللّٰهَ
وَاسْمَعُوْا وَاَللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَا اٰجِبْتُمْ قَالُوْا
لَا عِلْمَ لَنَا اِنَّكَ اَنْتَ عَلٰمُ الْغُيُوْبِ ۝

اِذْ قَالَ اللّٰهُ لِيَّعْسٰى ابْنِ مَرْيَمَ اِذْ كُرِيْعِمْنِيْ عَلَيْكَ
وَعَلٰى وَالِدَتِكَ اِذْ اَتَيْتُكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ
تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَاِذْ عَلَّمْتِكَ الْكِتٰبَ
وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْانْجِيْلَ وَاِذْ خَلَقْتَ مِنْ
التُّرَابِ الْبَشَرَةَ كَهَيْئَةِ الطَّلْحِ يٰاٰذَنِي فَتَنفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ
طَيْرًا يٰاٰذَنِي وَتُبْرِئُ الْاَكْمَةَ وَاَلْبُرَصَ يٰاٰذَنِي

- 1 आयत 106 से 108 तक में वसियत तथा उस के साक्ष्य का नियम बताया जा रहा है कि दो विश्वस्त व्यक्तियों को साक्षी बनाया जाये, और यदि मुसलमान न मिलें तो ग़ैर मुस्लिम भी साक्षी हो सकते हैं। साक्षियों को शपथ के साथ साक्ष्य देना चाहिये। विवाद की दशा में दोनों पक्ष अपने अपने साक्षी लायें। जो इन्कार करे उस पर शपथ है।
- 2 अर्थात् हम नहीं जानते कि उन के मन में क्या था, और हमारे बाद उन का कर्म क्या रहा?

और इंजील की शिक्षा दी, जब तू मेरी अनुमति से मिट्टी से पक्षी का रूप बनाता, और उस में फूँकता, तो वह मेरी अनुमति से वास्तव में पक्षी बन जाता था। और तू जन्म से अंधे तथा कोढ़ी को मेरी अनुमति से स्वस्थ कर देता था, और जब तू मुर्दा को मेरी अनुमति से जीवित कर देता था, और मैं ने बनी इस्राईल से तुझे बचाया था, जब तू उन के पास खुली निशानियाँ लाया, तो उन में से काफ़िरों ने कहा कि यह तो खुले जादू के सिवा कुछ नहीं है।

111. तथा याद कर, जब मैं ने तेरे हवारियों के दिलों में यह बात डाल दी कि मुझ पर तथा मेरे रसूल (ईसा) पर ईमान लाओ, तो सब ने कहा कि हम ईमान लाये, और तू साक्षी रह कि हम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।

112. जब हवारियों ने कहा: हे मर्यम के पुत्र ईसा! क्या तेरा पालनहार यह कर सकता है कि हम पर आकाश से थाल (दस्तर ख्वान) उतार दे। उस (ईसा) ने कहा: तुम अल्लाह से डरो, यदि तुम वास्तव में ईमान वाले हो।

113. उन्होंने ने कहा: हम चाहते हैं कि उस में से खायें, और हमारे दिलों को संतोष हो जाये, तथा हमें विश्वास हो जाये कि तू ने हमें जो कुछ बताया है सचच है, और हम उस के साक्षियों में से हो जायें।

وَأَذْخُرُجُ الْمَوْتَى بِإِذْنِي وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ بِإِذْنِي إِذْ جَنَّمَهُمْ بِالْبَيْتِ فَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَنْهُمْ إِبْرَاهِيمُ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّشْرَبٌ ۝

وَإِذْ أُوحِيَتْ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا بِي وَبِرَسُولِي قَالُوا آمَنَّا وَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ۝

إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يُعِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنَزِّلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

قَالُوا أُرِيدُ أَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَنَطْمِئِنَّ قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ ۝

114. मर्यम के पुत्र ईसा ने प्रार्थना की: हे अल्लाह हमारे पालनहार! हम पर आकाश से एक थाल उतार दे, जो हमारे तथा हमारे पश्चात् के लोगों के लिये उत्सव (का दिन) बन जाये, तथा तेरी ओर से एक चिन्ह (निशानी)। तथा हमें जीविका प्रदान कर, तू उत्तम जीविका प्रदाता है।
115. अल्लाह ने कहा मैं तुम पर उसे उतारने वाला हूँ, फिर उस के पश्चात् भी जो कुफ़्र (अविश्वास) करेगा, तो मैं निश्चय उसे दण्ड दूँगा, ऐसा दण्ड^[1] कि संसार वासियों में से किसी को वैसा दण्ड नहीं दूँगा।
116. तथा जब अल्लाह (प्रलय के दिन) कहेगा: हे मर्यम के पुत्र ईसा! क्या तुम ने लोगों से कहा था कि अल्लाह को छोड़ कर मुझे तथा मेरी माता को पूज्य (अराध्य) बना लो? वह कहेगा: तू पवित्र है, मुझ से यह कैसे हो सकता है कि ऐसी बात कहूँ जिस का मुझे कोई अधिकार नहीं? यदि मैं ने कहा होगा, तो तुझे अवश्य उस का ज्ञान हुआ होगा। तू मेरे मन की बात जानता है, और मैं तेरे मन की बात नहीं जानता। वास्तव में तू ही परोक्ष (ग़ैब) का अति ज्ञानी है।
117. मैं ने तो उन से केवल वही कहा था, जिस का तू ने आदेश दिया था

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً
مِنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً
مِّنكَ وَأَرْزُقْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّزُقِينَ ۝

قَالَ اللَّهُ إِنِّي مُرْسِلُهَا عَلَيْكَ مَغْنَمًا كَثِيرَةً مِّنْكَ
فَإِنِّي آتِيكَ بِعَذَابٍ مُّؤَلَّمٍ لِّأُولِي الْعُقُبِ ۝

وَلَوْ قَالَ اللَّهُ لِيُعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَنْتَ قُلْتِ لِلنَّاسِ
اتَّخِذُونِي وَإِيمَى الْهَيْمِينَ مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا
يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحِجَابٍ إِنَّ كُنْتُ قَائِلَةً
فَقَدْ عَلِمْتَهُ تَعَلَّمَ مَائِدًا تَفْسِيرًا وَإِلَّا عَلَّمَهُ مَائِدًا
تَفْسِيرًا إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۝

قَالَتْ لَهُمْ أَلَمْ آرَئِي بِهِ إِنْ عَبْدٌ وَاللَّهِ رَبِّي

1 अधिकतर भाष्यकारों ने लिखा है, कि वह थाल आकाश से उतरा। (इब्ने कसीर)

कि अल्लाह की इबादत करो, जो मेरा पालनहार तथा तुम सभी का पालनहार है। मैं उन की दशा जानता था जब तक उन में था और जब तू ने मेरा समय पूरा कर दिया^[1], तो तू ही उन को जानता था। और तू प्रत्येक वस्तु से सूचित है।

118. यदि तू उन्हें दण्ड दे, तो वह तेरे दास (बन्दे) हैं, और यदि तू उन्हें क्षमा कर दे, तो वास्तव में तू ही प्रभावशाली गुणी है।
119. अल्लाह कहेगा: यह वह दिन है, जिस में सचचों को उन का सच्च ही लाभ देगा। उन्हीं के लिये ऐसे स्वर्ग हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वह उन में नित्य सदावासी होंगे, अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया तथा वह अल्लाह से प्रसन्न हो गये और यही सब से बड़ी सफलता है।
120. आकाशों तथा धरती और उन में जो कुछ है, सब का राज्य अल्लाह ही का^[2] है, तथा वह जो चाहे कर सकता है।

وَرَبُّكُمْ وَكَذَلِكَ عَلَّمْتُمُ الشَّهِيدَ إِذْ آدَمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتُ أَنْتَ الرَّؤُوفَ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

إِنْ نَعَدْتَهُمْ وَأَنْتَ عِبَادُكَ وَإِن تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

قَالَ اللَّهُ هَذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

لِلَّهِ الْمُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

- 1 और मुझे आकाश पर उठा लिया, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा, जब प्रलय के दिन कुछ लोग बायें से धर लिये जायेंगे तो मैं भी यही कहूँगा। (बुखारी- 4626)
- 2 आयत 116 से अब तक की आयतों का सारांश यह है कि अल्लाह ने पहले अपने वह पुरस्कार याद दिलाये जो ईसा अलैहिस्सलाम पर किये। फिर कहा कि सत्य की शिक्षाओं के होते तेरे अनुयायियों ने क्यों तुझे तथा तेरी माता को पूज्य बना लिया? इस पर ईसा अलैहिस्सलाम कहेंगे कि मैं इस से नर्दोष हूँ। अभिप्राय यह है कि सभी नबियों ने एकेश्वरवाद तथा सत्कर्म की शिक्षा दी। परन्तु उन के अनुयायियों ने उन्हीं को पूज्य बना लिया। इसलिये इस का भार अनुयायियों और वे जिस की पूजा कर रहे हैं उन पर है। वह स्वयं इस से निर्दोष हैं।

सूरह अन्नाम - 6



सूरह अन्नाम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 165 आयते हैं

- अन्नाम का अर्थ: चौपाये होता है। इस सूरह में कुछ चौपायों के वैध तथा अवैध होने के संबंध में अरब वासियों के भ्रम का खण्डन किया गया है। और इसी लिये इस सूरह का नाम (अन्नाम) रखा गया है।
- इस में शिर्क का खण्डन किया गया है। और एकेश्वर का आमंत्रण दिया गया है।
- इस में आखिरत (परलोक) के प्रति आस्था का प्रचार है। तथा इस कुविचार का खण्डन है कि जो कुछ है यही संसारिक जीवन है।
- इस में उन नैतिक नियमों को बताया गया है जिन पर इस्लामी समाज की स्थापना होती है और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरुद्ध आपत्तियों का उत्तर दिया गया है।
- आकाशों तथा धरती और स्वयं मनुष्य में अल्लाह के एक होने की निशानियों पर ध्यान दिलाया गया है।
- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा मुसलमानों को दिलासा दी गई है।
- इस्लाम के विरोधियों को उन की अचेतना पर सावधान किया गया है।
- अन्त में कहा गया है कि लोगों ने अलग-अलग धर्म बना लिये हैं जिन का सत्धर्म से कोई संबंध नहीं। और प्रत्येक अपने कर्म का उत्तरदायी है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है, जिस ने आकाशों तथा धरती को बनाया तथा अंधेरे और उजाला

أَحْمَدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
وَجَعَلَ الظُّلُمَاتِ وَالنُّورَ ثُمَّ الَّذِينَ كَفَرُوا

बनाया, फिर भी जो काफ़िर हो गये, वह (दूसरों को) अपने पालनहार के बराबर समझते^[1] हैं।

2. वही है जिस ने तुम्हें मिट्टी से उत्पन्न^[2] किया फिर (तुम्हारे जीवन की) अवधि निर्धारित कर दी, और एक निर्धारित अवधि (प्रलय का समय) उस के पास^[3] है, फिर भी तुम संदेह करते हो।

3. वही अल्लाह पूज्य है आकाशों तथा धरती में। वह तुम्हारे भेदों तथा खुली बातों को जानता है। तथा तुम जो भी करते हो उस को जानता है।

4. और उन के पास उन के पालनहार की आयतों (निशानियों) में से कोई आयत (निशानी) नहीं आई, जिस से उन्होंने ने मुँह फेर न^[4] लिये हों।

5. उन्होंने ने सत्य को झुठला दिया है, जब भी उन के पास आया। तो शीघ्र ही उन के पास उस के समाचार आ जायेंगे^[5] जिस का उपहास कर रहें हैं।

6. क्या वह नहीं जानते कि उन से पहले हम ने कितनी जातियों का नाश कर

بِرَبِّهِمْ يَعِدُّونَ ۝

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ طِينٍ ثُمَّ قَضَىٰ أَجَلَكُمْ وَأَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَ اللَّهِ أَنْتُمْ مِنْتَهُونَ ۝

وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ يُعَلِّمُكُمْ بِرَبِّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ ۝

وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنَ الْيَوْمِ مِنَ الْبُرُوجِ إِلَّا كَالْوَاعِثِ الْمُرْعُوبِينَ ۝

فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَسَوْفَ يَا تُبَّتُّهُمُ أَبْنَاؤُا مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا هَلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ مَكَّنَّاهُمْ

1 अर्थात् वह अंधेरो और प्रकाश में विवेक (अन्तर) नहीं करते, और रचित को रचयिता का स्थान देते हैं।

2 अर्थात् तुम्हारे पिता आदम अलैहिस्सलाम को।

3 दो अवधि एक जीवन और कर्म के लिये, तथा दूसरी कर्मों के फल के लिये।

4 अर्थात् मिश्रणवादियों के पास।

5 अर्थात् उस के तथ्य का ज्ञान हो जायेगा। यह आयत मक्का में उस समय उतरी जब मुसलमान विवश थे, परन्तु बद्र के युद्ध के बाद यह भविष्य वाणी पूरी होने लगी और अन्ततः मिश्रणवादी परास्त हो गये।

दिया जिन्हें हम ने धरती में ऐसी शक्ति और अधिकार दिया था जो अधिकार और शक्ति तुम्हें नहीं दिये हैं। और हम ने उन पर धारा प्रवाह वर्षा की, और उन की धरती में नहरें प्रवाहित कर दी, फिर हम ने उन के पापों के कारण उन्हें नाश कर दिया,^[1] और उन के पश्चात् दूसरी जातियों को पैदा कर दिया।

7. (हे नबी!) यदि हम आप पर कागज़ में लिखी हुई कोई पुस्तक उतार^[2] दें, फिर वह उसे अपने हाथों से छूये, तब भी जो काफिर हैं, कह देंगे कि यह तो केवल खुला हुआ जादू है।
8. तथा उन्होंने ने कहा:^[3] इस (नबी) पर कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा^[4] गया? और यदि हम कोई फ़रिश्ता उतार देते, तो निर्णय ही कर दिया जाता, फिर उन्हें अक्सर नहीं दिया जाता।^[5]
9. और यदि हम किसी फ़रिश्ते को नबी बनाते, तो उसे किसी पुरुष ही के में बनाते,^[6] और उन को उसी संदेह में

فِي الْأَرْضِ مَالٌ مَّكُونٌ لَكُمْ وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِمْ
مِدْرَارًا وَجَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِيًا مِنْ تَحْتِهِمْ
فَأَهْلَكْنَاهُمْ يَوْمَهُمْ وَأَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَوْمًا
آخَرِينَ ①

وَأَنْزَلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قُرْطَابٍ فَلَمَسُوهُ
بِأَيْدِيهِمْ لَقَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ هَذَا إِلَّا
سِحْرٌ مُبِينٌ ①

وَقَالُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ وَلَوْ أَنْزَلْنَا مَلَكَ
لَقُضِيَ الْأَمْرُ لَوْلَا يُبْطَرُونَ ①

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ مَلَكَ لَجَعَلْنَاهُ رَجُلًا وَلَلَبَسْنَا
عَلَيْهِمْ مَا يَلْبَسُونَ ①

- 1 अर्थात् अल्लाह का यह नियम है कि पापियों को कुछ अक्सर देता है, और अन्ततः उन का विनाश कर देता है।
- 2 इस में इन काफ़िरों के दुराग्रह की दशा का वर्णन है।
- 3 जैसा कि वह माँग करते हैं। (देखिये: सूरह बनी इस्राईल, आयत: 93)
- 4 अर्थात् अपने वास्तविक रूप में जब कि जिब्रिल(अलैहिस्सलाम) मनुष्य के रूप में आया करते थे।
- 5 अर्थात् मानने या न मानने का।
- 6 क्योंकि फ़रिश्ते को आँखों से उस के स्वभाविक रूप में देखना मानव के बस में नहीं है। और यदि फ़रिश्ते को रसूल बना कर मनुष्य के रूप में भेजा जाता

डाल देते जो संदेह (अब) कर रहे हैं।

10. हे नबी! आप से पहले भी रसूलों के साथ उपहास किया गया, तो जिन्होंने उन से उपहास किया, उन को उन के उपहास के (दुष्परिणाम ने) घेर लिया।

وَلَقَدْ اسْتَهْزَىٰ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ
بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِءُونَ ۝

11. (हे नबी!) उन से कहो कि धरती में फिरो, फिर देखो कि झुठलाने वालों का दुष्परिणाम क्या^[1] हुआ?

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انظروا كيف كان
عاقبة المكثرين ۝

12. (हे नबी!) उन से पूछिये कि जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह किस का है? कहो: अल्लाह का है, उस ने अपने ऊपर दया को अनिवार्य कर^[2] लिया है, वह तुम्हें अवश्य प्रलय के दिन एकत्र^[3] करेगा जिस में कोई संदेह नहीं, जिन्होंने ने अपने आप को क्षति में डाल लिया वही ईमान नहीं ला रहे हैं।

قُلْ لِمَن مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ قُلْ لِلّٰهِ
كَتَبَ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ لِيَجْعَلَ كُمْ اٰلِ يَوْمِ
الْقِيٰمَةِ لَارِيبَ فِيْهِ الْاٰلِیْنَ خٰسِرُوْا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

तब भी यह कहते यह तो मनुष्य हैं। यह रसूल कैसे हो सकता है?

- 1 अर्थात् मक्का से शाम तक आद, समूद तथा लूत (अलैहिस्सलाम) की बस्तियों के अवशेष पड़े हुये हैं, वहाँ जाओ और उन के दुष्परिणामों से शिक्षा लो।
- 2 अर्थात् पूरे विश्व की व्यवस्था उस की दया का प्रमाण है। तथा अपनी दया के कारण ही विश्व में दण्ड नहीं दे रहा है। हदीस में है कि जब अल्लाह ने उत्पत्ति कर ली तो एक लेख लिखा जो उस के पास उस के अर्श (सिंहासन) के ऊपर है: ((निश्चय मेरी दया मेरे क्रोध से बढ़ कर है।)) (सहीह बुखारी- 3194, मुस्लिम-2751) दूसरी हदीस में है कि अल्लाह के पास सौ दया हैं। उस में से एक को जिन्नों, इन्सानों तथा पशुओं और कीड़ों-मकोड़ों के लिये उतारा है। जिस से वह आपस में प्रेम तथा दया करते हैं तथा निन्दावे दया अपने पास रख ली है। जिन से प्रलय के दिन अपने बंदों (भक्तों) पर दया करेगा। (सहीह बुखारी- 6000, सहीह मुस्लिम-2752)
- 3 अर्थात् कर्मों का फल देने के लिये।

13. तथा उसी का^[1] है, जो कुछ रात और दिन में बस रहा है, और वह सब कुछ सुनता जानता है।
14. (हे नबी!) उन से कहो कि क्या मैं उस अल्लाह के सिवा (किसी) को सहायक बना लूँ, जो आकाशों तथा धरती का बनाने वाला है, वह सब को खिलाता है और उसे कोई नहीं खिलाता? आप कहिये कि मुझे तो यही आदेश दिया गया है कि प्रथम आज्ञाकारी हो जाऊँ तथा कदापि मुश्रिकों में से न बनूँ।
15. आप कह दें कि मैं डरता हूँ यदि अपने पालनहार की अवज्ञा करूँ तो एक घोर दिन^[2] की यातना से।
16. तथा जिस से उस (यातना) को उस दिन फेर दिया गया, तो अल्लाह ने उस पर दया कर दी, और यही खुली सफलता है।
17. यदि अल्लाह तुम्हें कोई हानि पहुँचाये, तो उस के सिवा कोई नहीं जो उसे दूर कर दे और यदि तुम्हें कोई लाभ पहुँचाये, तो वही जो चाहे कर सकता है।
18. तथा वही है, जो अपने सेवकों पर

وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي الْبَيْتِ وَاللَّهُمَّ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

قُلْ أَعْبُدُوا اللَّهَ أَعْبُدُوا إِلَهًا قَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعَمُهُمْ وَلَا يَطْعَمُهُمْ قُلْ إِنْ أُمِرْتُ أَنْ أُكْفِرَ بِمَا كُنْتُ أَكْفُرُ مِنْكُمْ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

قُلْ إِنْ أَخَافُ أَنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝

مَنْ يُضِرِّفْ عَنِّي يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ وَذَلِكَ الْقَوْلُ الْمُبِينُ ۝

وَأَنْ يَمْسَسَكَ اللَّهُ بَصُرًا فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَأَنْ يَمْسَسَكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۝

- 1 अर्थात् उसी के अधिकार में तथा उसी के आधीन है।
- 2 इन आयतों का भावार्थ यह है कि जब अल्लाह ही ने इस विश्व की उत्पत्ति की है, वही अपनी दया से इस की व्यवस्था कर रहा है, और सब को जीविका प्रदान कर रहा है, तो फिर तुम्हारा स्वभाविक कर्म भी यही होना चाहिये कि उसी एक की वंदना करो। यह तो बड़े कुपथ की बात होगी कि उस से मुँह फेर कर दूसरों की पूजा अराधना करो और उन के आगे झुको।

पूरा अधिकार रखता है तथा वह बड़ा ज्ञानी सर्वसूचित है।

19. हे नबी! इन (मुश्रिकों) से पूछो कि किस की गवाही सब से बढ़ कर है? आप कह दें कि अल्लाह मेरे तथा तुम्हारे बीच गवाह^[1] है। तथा मेरी ओर यह कुर्आन वही (प्रकाशना) द्वारा भेजा गया है, ताकि मैं तुम्हें सावधान करूँ^[2] तथा उसे जिस तक यह पहुँचे। क्या वास्तव में तुम यह साक्ष्य (गवाही) दे सकते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य भी हैं? आप कह दें कि मैं तो इस की गवाही नहीं दे सकता। आप कह दें कि वह तो केवल एक ही पूज्य है, तथा वास्तव में मैं तुम्हारे शिर्क से विरक्त हूँ।

قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً قُلْ اللَّهُ سَهِيماً بَيْنِي
وَبَيْنَكُمْ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَذَا الْقُرْآنُ لِأُنذِرَكُمْ بِهِ
وَمَنْ بَلَغَ أَبَيْتَكُمْ لَنَشْهَدَنَّ أَنْ مَعَ اللَّهِ إِلَهَةٌ
أُخْرَى قُلْ أَكْأَشْهَدُ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَهُ الْوَاحِدُ وَالَّذِي
بِرَأْيٍ مِمَّا تَشْتَرُونَ ⑥

20. जिन लोगों को हम ने पुस्तक^[3] प्रदान की है, वह आप को उसी प्रकार पहचानते हैं, जैसे अपने पुत्रों को पहचानते^[4] हैं, परन्तु जिन्होंने स्वयं को क्षति में डाल रखा है, वही ईमान नहीं ला रहे हैं।

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ
أَبْنَاءَهُمُ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ⑥

21. तथा उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठा आरोप लगाये^[5], अथवा उस की आयतों को

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ
بِآيَاتِهِ إِنَّهُ لَا يُغْنِيهِ الظُّلُمُونَ ⑥

1 अर्थात् मेरे नबी होने का साक्षी अल्लाह तथा उस का मुझ पर उतारा हुआ कुर्आन है।

2 अर्थात् अल्लाह की अवैज्ञा के दुष्परिणाम से।

3 अर्थात् तौरात तथा इंजील आदि।

4 अर्थात् आप के उन गुणों द्वारा जो उन की पुस्तकों में वर्णित हैं।

5 अर्थात् अल्लाह का साक्षी बनाये।

झूठलाये? निस्संदेह अत्याचारी सफल नहीं होंगे।

22. जिस दिन हम सब को एकत्र करेंगे, तो जिन्होंने शिर्क किया है, उन से कहेंगे कि तुम्हारे वह साझी कहाँ गये जिन्हें तुम (पूज्य) समझ रहे थे?
23. फिर नहीं होगा उन का उपद्रव इस के सिवा कि: वह कहेंगे कि अल्लाह की शपथ! हम मुशरिक थे ही नहीं।
24. देखो कि कैसे अपने ऊपर ही झूठ बोल गये और उन से वह (मिथ्या पूज्य) जो बना रहे थे खो गये!
25. और उन (मुशिरकों) में से कुछ आप की बात ध्यान से सुनते हैं, और (वास्तव में) हम ने उन के दिलों पर पर्दे (आवरण) डाल रखे हैं कि बात न समझें^[1], और उन के कान भारी कर दिये हैं, यदि वह (सत्य के) प्रत्येक लक्षण देख लें, तब भी उस पर ईमान नहीं लायेंगे यहाँ तक कि जब वह आप के पास आ कर झगड़ते हैं, जो काफिर हैं तो वह कहते हैं कि यह तो पूर्वजों की कथायें हैं।
26. वह उसे^[2] (सुनने से) दूसरों को रोकते हैं, तथा स्वयं भी दूर रहते हैं। और वह अपना ही विनाश कर रहे हैं। परन्तु समझते नहीं हैं।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا
أَيْنَ شُرَكَاءُكُمْ الَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ⑥

ثُمَّ لَمْ تَكُنْ مِنَّا وَإِنْتَهُمُ إِلَّا أَنْ قَالُوا وَاللَّهِ رَبُّنَا مَا كُنَّا
مُشْرِكِينَ ⑦

أَنْظُرْ كَيْفَ كَذَّبُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَصَلَّٰ عَنْهُمْ مَا
كَانُوا يَفْعَلُونَ ⑧

وَمِنْهُمْ مَن يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ
أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَلَا يَرْوُكُوا
أَيْدِيَهُمْ لِيُرُواهَا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوكَ يُجَادِلُونَكَ
يَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ
الْأَوَّلِينَ ⑨

وَهُمْ يَزِيدُونَ عَنْهُ وَيَسْتُونَ عَنْهُ وَإِنْ يُهْلِكُونَ
إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَيَلْبَسُونَ ⑩

1 न समझने तथा न सुनने का अर्थ यह है कि उस से प्रभावित नहीं होते क्यों कि कुफ़्र तथा निफ़ाक़ के कारण सत्य से प्रभावित होने की क्षमता खो जाती है।

2 अर्थात् कुर्आन सुनने से।

27. तथा (हे नबी!) यदि आप उन्हें उस समय देखेंगे, जब वह नरक के समीप खड़े किये जायेंगे, तो वह कामना कर रहे होंगे कि ऐसा होता कि हम संसार की ओर फेर दिये जाते और अपने पालनहार की आयतों को नहीं झूठलाते, और हम ईमान वालों में हो जाते।

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وَقَعُوا عَلَى النَّارِ فَعَالُوا بِالْبَيِّنَاتِ كَرُودًا وَلَا تَكْدِيبَ ۚ بآيَاتِ رَبِّنَا وَتَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

28. बल्कि उन के लिये वह बात खुल जायेगी, जिसे वह इस से पहले छुपा रहे थे^[1], और यदि संसार में फेर दिये जायें, तो फिर वही करेंगे जिस से रोके गये थे। वास्तव में वह हैं ही झूठे।

بَلْ بَدَأَهُمْ مَا كَانُوا يُحْفُونَ مِنْ قَبْلُ وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝

29. तथा उन्होंने ने कहा कि: जीवन बस हमारा संसारिक जीवन है और हमें फिर जीवित होना^[2] नहीं है।

وَقَالُوا إِنَّا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ۝

30. तथा यदि आप उन्हें उस समय देखेंगे जब वह (प्रलय के दिन) अपने पालनहार के समक्ष खड़े किये जायेंगे, उस समय अल्लाह उन से कहेगा: क्या यह (जीवन) सत्य नहीं? वह कहेंगे: क्यों नहीं, हमारे पालनहार की शपथ!? इस पर अल्लाह कहेगा: तो अब अपने कुफ़र करने की यातना चखो।

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وَقَعُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ قَالَ أَيْسَ هَذَا يَا حُوقَ قَالَ الْوَالِئِ وَيَرْبِنَا قَالَ قَدْ وَقَعُوا الْعَذَابَ ۚ يَمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝

31. निश्चय वह क्षति में पड़ गये, जिन्होंने

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ حَتَّىٰ إِذَا

1 अर्थात् जिस तथ्य को वह शपथ लेकर छुपा रहे थे कि हम मिश्रणवादी नहीं थे, उस समय खुल जायेगा। अथवा आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पहचानते हुये भी यह बात जो छुपा रहे थे, वह खुल जायेगी। अथवा द्विधावादियों के दिल का वह रोग खुल जायेगा, जिसे वह संसार में छुपा रहे थे। (तफसीर इब्ने कसीर)

2 अर्थात् हम मरने के पश्चात् परलोक में कर्मों का फल भोगने के लिये जीवित नहीं किये जायेंगे।

ने अल्लाह से मिलने को झुठला दिया, यहाँ तक कि जब प्रलय अचानक उन पर आ जायेगी तो कहेंगे: हाय! इस विषय में हम से बड़ी चूक हुई और वह अपने पापों का बोझ अपनी पीठों पर उठाये होंगे। तो कैसा बुरा बोझ है जिसे वह उठा रहे हैं।

32. तथा संसारिक जीवन एक खेल और मनोरंजन^[1] है। तथा परलोक का घर ही उत्तम^[2] है, उन के लिये जो अल्लाह से डरते हों, तो क्या तुम समझत^[3] नहीं हो?

33. (हे नबी!) हम जानते हैं कि उन की बातें आप को उदासीन कर देती हैं, तो वास्तव में वह आप को नहीं झुठलाते, परन्तु यह अत्याचारी अल्लाह की आयतों को नकारते हैं।

34. और आप से पहले भी बहुत से रसूल झुठलाये गये। तो इसे उन्हीं ने सहन किया, और उन्हें दुःख दिया गया, यहाँ तक कि हमारी सहायता आ गयी। तथा अल्लाह की बातों को कोई बदल नहीं^[4] सकता, और आप के

جَاءَتْهُمْ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا لِمَ نَحْنُ بِمَنَّا عَلَىٰ مَا
كُنَّا نَفِيهَا ۗ وَهُمْ يَعْمَلُونَ ۗ أَوَآرَاهُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ
الْأَسْمَاءُ مَا يَزِيدُونَ ۝

وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَعِبٌ وَلَهُمْ وَلِلَّذِينَ آتَىٰهُمُ
خَيْرٌ لِلَّذِينَ يُتَّقُونَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُ لَيَحْزَنُكَ الَّذِي يَقُولُونَ فَإِنَّهُمْ
لَا يَكَذِبُونَ ۗ وَلَكِنَّ الظَّالِمِينَ بِآيَاتِ اللَّهِ
يَجْحَدُونَ ۝

وَلَقَدْ كَذَّبْتَ رَسُولٌ مِّن قَبْلِكَ فَصَبْرًا وَعَلَىٰ مَا
كُنَّا بِأَوْأَوْ وَأَوْوَاحِي أَنَّهُمْ نَصَرْنَا ۗ
وَلَا مَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ وَلَقَدْ جَاءَكَ مِنْ
تَبَائِي الْمُرْسَلِينَ ۝

1 अर्थात् साम्यिक और आस्थायी है।

2 अर्थात् स्थायी है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि यदि कर्मों के फल के लिये कोई दूसरा जीवन न हो तो, संसारिक जीवन एक मनोरंजन और खेल से अधिक कुछ नहीं रह जायेगा। तो क्या यह संसारिक व्यवस्था इसी लिये की गयी है कि कुछ दिनों खेलो और फिर समाप्त हो जाये? यह बात तो समझ बूझ का निर्णय नहीं हो सकती। अतः एक दूसरे जीवन का होना ही समझ बूझ का निर्णय है।

4 अर्थात् अल्लाह के निर्धारित नियम को, कि पहले वह परीक्षा में डालता है, फिर

पास रसूलों के समाचार आ चुके हैं।

35. और यदि आप को उन की विमुखता भारी लग रही है, तो यदि आप से हो सके, तो धरती में कोई सुरंग खोज लें, अथवा आकाश में कोई सीढ़ी लगा लें, फिर उन के पास कोई निशानी (चमत्कार) ला दें, और यदि अल्लाह चाहे तो इन्हें मार्गदर्शन पर एकत्र कर दे। अतः आप कदापि अज्ञानों में न हों।
36. आप की बात वही स्वीकार करेंगे, जो सुनते हों, परन्तु जो मुर्दे हैं उन्हें तो अल्लाह^[1] ही जीवित करेगा, फिर उसी की ओर फेरे जायेंगे।
37. तथा उन्होंने ने कहा कि: नबी पर उस के पालनहार की ओर से कोई चमत्कार क्यों नहीं उतारा गया? आप कह दें कि अल्लाह इस का सामर्थ्य रखता है, परन्तु अधिकतर लोग अज्ञान हैं।
38. धरती में विचरते जीव तथा अपने दो पंखों से उड़ते पक्षी तुम्हारी जैसी जातियाँ हैं, हम ने पुस्तक^[2] में कुछ

وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْجَاهِلِينَ ۝
فَلَا تَتَّبِعُوا الْاَعْرَاضَ ۝ وَلَا تَتَّبِعُوا
اَنْ تَكْتَفِي نَفَقَاتِي الْاَرْضِ اَوْ سُلْمَاتِي السَّمَاءِ
فَتَأْتِيَهُمْ بِالْاَيَةِ وَاَوْشَكَ اللهُ لِيَجْمَعَهُمْ عَلَى الْهُدَى

اِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِي يَسْمَعُونَ وَالْمَوْتَى يَبْعَثُهُمُ اللهُ
تَمَّ اَلَيْهَ يَرْجِعُونَ ۝

وَقَالُوا الْاَوْلَا يُرْسَلُ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّن رَّبِّهِ قُلْ اِنَّ لَللّٰهِ
قَادِرًا عَلٰى اَنْ يُرْسِلَ اٰيَةً وَّلٰكِنْ اَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا ظَيْرٍ يُطَيَّرُ
بِحَنَاحِيهِ اِلَّا اَمْرًا مِّثْلَكُمْ مَا فَكَّرْنَا فِي الْكِتَابِ مِنْ

सहायता करता है।

- 1 अर्थात् प्रलय के दिन उन की समाधियों से। आयत का भावार्थ यह है कि आप के सदुपदेश को वही स्वीकार करेंगे जिन की अन्तरात्मा जीवित हो। परन्तु जिन के दिल निर्जीव हैं तो यदि आप धरती अथवा आकाश से लाकर उन्हें कोई चमत्कार भी दिखा दें तब भी वह उन के लिये व्यर्थ होगा। यह सत्य को स्वीकार करने की योग्यता ही खो चुके हैं।
- 2 पुस्तक का अर्थ ((लौहे महफूज़)) है जिस में सारे संसार का भाग्य लिखा हुआ है।

कमी नहीं की^[1] है, फिर वह अपने पालनहार की ओर ही एकत्र किये^[2] जायेंगे।

39. तथा जिन्होंने ने हमारी निशानियों को झुठला दिया, वह गूँगे, बहरे, अंधेरों में हैं। जिसे अल्लाह चाहता है कुपथ करता है, और जिसे चाहता है सीधी राह पर लगा देता है।

40. (हे नबी!) उन से कहो कि यदि तुम पर अल्लाह का प्रकोप आ जाये अथवा तुम पर प्रलय आ जाये, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे, यदि तुम सच्चे हो?

41. बल्कि तुम उसी को पुकारते हो, तो वह दूर करता है उस को जिस के लिये तुम पुकारते हो, यदि वह चाहे, और तुम उसे भूल जाते हो, जिसे साझी^[3] बनाते हो।

42. और आप से पहले भी समुदायों की

سَعَىٰ تَمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَحْسِرُونَ ﴿٦٠﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا هُمْ وَرَبُّكَ فِي الظُّلُمَاتِ مَنْ
يَشَاءُ اللَّهُ يُضِلُّهُ وَمَنْ يَشَاءُ يُصِغِرْهُ عَلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيمٍ ﴿٦١﴾

قُلْ اَرَادْتُمْ لِي اتَّخُذَ الْاَلِهَةَ وَاللّٰهُ اَتَّخُذُ
السَّاعَةَ اَعْيَبَ اللّٰهُ تَدْعُونَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦٢﴾

بَلْ اِلٰهًا لَا تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ اِلٰهِيْنَ
سَاءَ مَا تَحْكُمُوْنَ ﴿٦٣﴾

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا اِلٰى اَمْمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبِاسِ

1 इन आयतों का भावार्थ यह है कि यदि तुम निशानियों और चमत्कार की माँग करते हो. तो यह पूरे विश्व में जो जीव और पक्षी हैं, जिन के जीवन साधनों की व्यवस्था अल्लाह ने की है, और सब के भाग्य में जो लिख दिया है, वह पूरा हो रहा है। क्या तुम्हारे लिये अल्लाह के अस्तित्व और गुणों के प्रतीक नहीं हैं? यदि तुम ज्ञान तथा समझ से काम लो, तो यह विश्व की व्यवस्था ही ऐसा लक्षण और प्रमाण है कि जिस के पश्चात् किसी अन्य चमत्कार की आवश्यकता नहीं रह जाती।

2 अर्थ यह है सब जीवों के प्राण मरने के पश्चात् उसी के पास एकत्रित हो जाते हैं क्यों कि वही सब का उत्पत्तिकार है।

3 इस आयत का भावार्थ यह है कि किसी घोर आपदा के समय तुम्हारा अल्लाह ही को गुहारना स्वयं तुम्हारी ओर से उस के अकेले पूज्य होने का प्रमाण और स्वीकार है।

ओर हम ने रसूल भेजे, तो हम ने उन्हें आपदाओं और दुखों में डाला^[1], ताकि वह विनय करें।

43. तो जब उन पर हमारी यातना आई, तो वह हमारे समक्ष झुक क्यों नहीं गये? परन्तु उन के दिल और भी कड़े हो गये, तथा शैतान ने उन के लिये उन के कुकर्मों को सुन्दर बना^[2] दिया।
44. तो जब उन्होंने ने उसे भुला दिया जो याद दिलाये गये थे, तो हम ने उन पर प्रत्येक (सुख सुविधा) के द्वार खोल दिये। यहाँ तक कि जब जो कुछ वह दिये गये उस से प्रफुल्ल हो गये, तो हम ने उन्हें अचानक घेर लिया, और वह निराश हो कर रह गये।
45. तो उन की जड़ काट दी गई जिन्होंने ने अत्याचार किया, और सब प्रशंसा अल्लाह ही के लिये है। जो पूरे विश्व का पालनहार है।
46. (हे नबी!) आप कहें कि क्या तुम ने इस पर भी विचार किया कि यदि अल्लाह तुम्हारे सुनने तथा देखने की शक्ति छीन ले, और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे, तो अल्लाह के सिवा कौन है जो तुम्हें इसे वापस दिला सके? देखो, हम कैसे बार बार आयतें^[3] प्रस्तुत कर रहे हैं। फिर भी

وَالضَّرَاءَ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُونَ ﴿٦٠﴾

فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا وَلَكِنْ قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦١﴾

فَلَمَّا نَسُوا مَا آذَرُوا بِهِ فَتَعَنَّا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّى إِذَا فُرِحُوا بِهَا أُوتُوا إِحْذَاهُمْ بَغْتَةً فَإِذَا هُمْ مُبْلِسُونَ ﴿٦٢﴾

فَقَطَّعَ دَائِرَ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٣﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتمَ عَلَى قُلُوبِكُمْ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِهِ أَنْظَرُ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِمَنْ يَصُدُّونَ ﴿٦٤﴾

1 अर्थात् ताकि अल्लाह से विनय करें, और उस के सामने झुक जायें।

2 आयत का अर्थ यह है कि जब कुकर्मों के कारण दिल कड़े हो जाते हैं, तो कोई भी बात उन्हें सुधार के लिये तय्यार नहीं कर सकती।

3 अर्थात् इस बात की निशानियाँ की अल्लाह ही पूज्य है, और दूसरे सभी पूज्य

वह मुँह^[1] फेर रहे हैं।

47. आप कहें कि कभी तुम ने इस बात पर विचार किया कि यदि तुम पर अल्लाह की यातना अचानक या खुल कर आ जाये, तो अत्याचारियों (मुशरिकों) के सिवा किस का विनाश होगा?
48. और हम रसूलों को इसी लिये भेजते हैं कि वह (आज्ञाकारियों को) शुभ सुचना दें। तथा (अवैज्ञाकारियों को) डरायें। तो जो ईमान लाये तथा अपने कर्म सुधार लिये, उन के लिये कोई भय नहीं, और न वह उदासीन होंगे।
49. और जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुठलाया, उन्हें अपनी अवैज्ञा के कारण यातना अवश्य मिलेगी।
50. (हे नबी!) आप कह दें कि मेरे पास अल्लाह का कोष नहीं है, और न मैं परोक्ष का ज्ञान रखता हूँ, तथा न मैं यह कहता कि मैं कोई फरिश्ता हूँ। मैं तो केवल उसी पर चल रहा हूँ जो मेरी ओर वही (प्रकाशना) की जा रही है। आप कहें कि क्या अन्धा^[2] तथा आँख वाला बराबर हो जायेंगे? क्या तुम सोच विचार नहीं करते?
51. और इस (वही द्वारा) उन को सचेत करो, जो इस बात से डरते हों कि

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ بَعْتَهُ
أَوْجَهْرَةً هَلْ يُهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

وَأَنْزِلُ الْمُرْسَلِينَ الْأَمْبِثِينَ وَمُنذِرِينَ
فَمَنْ آمَنَ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ۝

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا يَسْتَهْمُ الْعَذَابُ
بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝

قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ
الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنْ أَمْلَأُكُمْ مِنَ الْأَمْثَالِ
يُوحَىٰ إِلَيَّ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ
أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ۝

وَأَنْذِرْ بِهِ الَّذِينَ يَتْلُونَ أَنْ يُحْشَرُوا إِلَىٰ

मिथ्या हैं। (इब्ने कसीर)

1 अर्थात सत्य से।

2 अन्धा से अभिप्रायः सत्य से विचलित है। इस आयत में कहा गया है कि नबी, मानव पुरुष से अधिक और कुछ नहीं होता। वह सत्य का अनुयायी तथा उसी का प्रचारक होता है।

वे अपने पालनहार के पास (प्रलय के दिन) एकत्र किये जायेंगे, इस दशा में कि अल्लाह के सिवा कोई सहायक तथा अनुशंसक (सिफारशी) न होगा, संभवतः वह आज्ञाकारी हो जायें।

رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِنْ دُونِهِ وَّلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٦﴾

52. (हे नबी!) आप उन्हें अपने से दूर न करें जो अपने पालनहार की वंदना प्रातः संध्या करते उस की प्रसन्नता की चाह में लगे रहते हैं। उन के हिसाब का कोई भार आप पर नहीं है और न आप के हिसाब का कोई भार उन पर^[1] है, अतः यदि आप उन्हें दूर करेंगे, तो अत्याचारियों में हो जायेंगे।

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاوَةِ وَالْعِيسَىٰ يَرْيُدُونَ وَجْهَهُ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونَ مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٦﴾

53. और इसी प्रकार^[2] हम ने कुछ लोगों की परीक्षा कुछ लोगों द्वारा की है, ताकि वह कहें कि क्या यही हैं जिन पर हमारे बीच से अल्लाह ने उपकार किया^[3] है? तो क्या अल्लाह कृतज्ञों को भली भाँति जानता नहीं है?

وَكَذَلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لِيَقُولُوا أَهَؤُلَاءِ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنْ بَيْنِنَا أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِالشَّاكِرِينَ ﴿٦﴾

54. तथा (हे नबी!) जब आप के पास वह लोग आयें, जो हमारी आयतों (कूर्आन) पर ईमान लाये हैं तो आप कहें कि तुम^[4] पर सलाम (शान्ति)

وَلِذَا جَاءَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَوْمَئِذٍ بِآيَاتِنَا أَفَعَلَ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ أَنَّهُ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوءًا إِبْهَالًا ثُمَّ تَابَ مِنْ بَعْدِ ۚ

1 अर्थात् न आप उन के कर्मों के उत्तरदायी हैं, न वे आप के कर्मों को रिवायतों से विद्वित होता है कि मक्का के कुछ धनी मिश्रणवादियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि हम आप की बातें सुनना चाहते हैं। किन्तु आप के पास नीच लोग रहते हैं, जिन के साथ हम नहीं बैठ सकते। इसी पर यह आयत उतरती। (इब्ने कसीर)। हदीस में है कि अल्लाह, तुम्हारे रूप और वस्त्र नहीं देखता किन्तु तुम्हारे दिलों और कर्मों को देखता है। (सहीह मुस्लिम- 2564)

2 अर्थात् धनी और निर्धन बना कर।

3 अर्थात् मार्ग दर्शन प्रदान किया।

4 अर्थात् उन के सलाम का उत्तर दें, और उन का आदर सम्मान करें।

हैं। अल्लाह ने अपने ऊपर दया अनिवार्य कर ली है कि तुम में से जो भी अज्ञानता के कारण कोई कुकर्म कर लेगा, फिर उस के पश्चात् तौबा (क्षमा याचना) कर लेगा, और अपना सुधार कर लेगा तो निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

55. और इसी प्रकार हम आयतों का वर्णन करते हैं, और इस के लिये ताकि अपराधियों का पथ उजागर हो जाये (और सत्यवादियों का पथ संदिग्ध न हो।)

56. (हे नबी!) आप (मुश्रिकों से) कह दें कि मुझे रोक दिया गया है कि मैं उन की वंदना करूँ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो। उन से कह दो कि मैं तुम्हारी आकांक्षाओं पर नहीं चल सकता। मैं ने ऐसा किया तो मैं सत्य से कुपथ हो गया, और मैं सुपथों में से नहीं रह जाऊँगा।

57. आप कह दें कि मैं अपने पालनहार के खुले तर्क पर स्थित^[1] हूँ। और तुम ने उसे झुठला दिया है। जिस (निर्णय) के लिये तुम शीघ्रता करते हो, वह मेरे पास नहीं। निर्णय तो केवल अल्लाह के अधिकार में है। वह सत्य को वर्णित कर रहा है। और वह सर्वोत्तम निर्णयकारी है।

وَأَصْلَحَ قَوْلُهُمْ وَعَفُوًّا رَحِيمٌ ﴿٥٥﴾

وَكَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ الْآيَاتِ وَلِتَسْتَبِينَ سَبِيلَ
الْمُجْرِمِينَ ﴿٥٦﴾

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ
دُونِ اللَّهِ قُلْ لَا أَشْبِهُهُمُ أَهْوَاءَهُمْ قَدْ ضَلَلْتُ إِذَا
وَمَا أَنَا مِنَ الْهَادِيِينَ ﴿٥٧﴾

قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّي وَكَذَّبْتُمْ بِهِ مَا
عِنْدِي مَا اسْتَعْجَلُونَ بِهِ إِنْ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ
يَقْضُ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ الْفَاضِلِينَ ﴿٥٨﴾

1 अर्थात् सत्धर्म पर जो वही द्वारा मुझ पर उतारा गया है। आयत का भावार्थ यह है कि वही (प्रकाशना) की राह ही सत्य और विश्वास तथा ज्ञान की राह है। और जो उसे नहीं मानते उन के पास शंका और अनुमान के सिवा कुछ नहीं।

58. आप कह दें कि जिस (निर्णय) के लिये तुम शीघ्रता कर रहे हो, मेरे अधिकार में होता तो हमारे और तुम्हारे बीच निर्णय हो गया होता। तथा अल्लाह अत्यचारियों^[1] को भलि भाँति जानता है।
59. और उसी (अल्लाह) के पास ग़ैब (परोक्ष) की कुंजियाँ^[2] हैं। उन्हें केवल वही जानता है। तथा जो कुछ थल और जल में है, वह सब का ज्ञान रखता है। और कोई पत्ता नहीं गिरता परन्तु उसे वह जानता है। और न कोई अब्र जो धरती के अंधेरों में हो, और न कोई आर्द्र (भीगा) और शुष्क (सखा) है परन्तु वह एक खुली पुस्तक में है।
60. वही है जो रात्रि में तुम्हारी आत्माओं को ग्रहण कर लेता है, तथा दिन में जो कुछ किया है उसे जानता है। फिर तुम्हें उस (दिन) में जगा देता है, ताकि निर्धारित अवधि पूरी हो जाये^[3]। फिर तुम्हें उसी की ओर प्रत्यागत (वापस) होना है। फिर वह तुम्हें तुम्हारे कर्मों से सूचित कर देगा।
61. तथा वही है, जो अपने सेवकों पर पूरा अधिकार रखता है, और तुम पर

قُلْ لَوْ أَنَّ عِنْدِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لَفُضِيَ
الْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ وَبَيْنَكُمْ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ﴿٥٨﴾

وَعِنْدَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ يُعَلِّمُ مَا يَشَاءُ
الْبَرِّ وَالْبُرِّ وَالسَّمُوتِ وَرِيقَةِ الْأَرْضِ لَهَا وَالْحَبِّ فِي
ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ وَاللَّطِيبِ وَالرَّايِسِ الْإِنْفِ كِتَابٍ
تُحْمِينِ ﴿٥٩﴾

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم
بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِقَاضِي أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ
يَرْجِعُكُمْ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٦٠﴾

وَهُوَ الْعَلِيمُ فَوقَ عِبَادِهِ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً

1 अर्थात् निर्णय का अधिकार अल्लाह को है, जो उस के निर्धारित समय पर हो जायेगा।

2 सहीह हदीस में है कि ग़ैब की कुंजियाँ पाँच हैं: अल्लाह ही के पास प्रलय का ज्ञान है। और वही वर्षा करता है। और जो गर्भाशयों में है उस को वही जानता है। तथा कोई जीव नहीं जानता कि वह कल क्या कमायेगा। और न ही यह जानता है कि वह किस भूमि में मरेगा। (सहीह बुखारी- 4627)

3 अर्थात् संसारिक जीवन की निर्धारित अवधि।

रक्षकों^[1] को भेजता है। यहाँ तक कि जब तुम में से किसी के मरण का समय आ जाता है तो हमारे फरिश्ते उस का प्राण ग्रहण कर लेते हैं और वह तनिक भी आलस्य नहीं करते।

62. फिर सब अल्लाह, अपने वास्तविक स्वामी की ओर वापिस लाये जाते हैं। सावधान! उसी को निर्णय करने का अधिकार है। और वह अति शीघ्र हिसाब लेने वाला है।
63. हे नबी! उन से पूछिये कि थल तथा जल के अंधेरों में तुम्हें कौन बचाता है, जिसे तुम विनय पूर्वक और धीरे धीरे पुकारते हो कि यदि उस ने हमें बचा दिया, तो हम अवश्य कृतज्ञों में हो जायेंगे?
64. आप कह दें कि अल्लाह ही उस से तथा प्रत्येक आपदा से तुम्हें बचाता है। फिर भी तुम उस का साझी बनाते हो।
65. आप उन से कह दें कि वह इस का सामर्थ्य रखता है कि वह कोई यातना तुम्हारे ऊपर (आकाश) से भेज दे। अथवा तुम्हारे पैरों के नीचे (धरती) से, या तुम्हें सम्प्रदायों में कर के एक को दूसरे के आक्रमण^[2] का स्वाद चखा दे। देखिये कि हम किस प्रकार

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفِرُّونَ ﴿٦٢﴾

ثُمَّ رُدُّوْا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ ۗ أَلَا لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحَاسِبِينَ ﴿٦٣﴾

قُلْ مَنْ يُنَجِّيَكُم مِّن ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً لَّئِن أَنجَيْنَا مِنْ هَذِهِ لَنُكَوِّنَنَّ مِنَ الشُّكْرِيِّنَ ﴿٦٤﴾

قُلْ لِلَّهِ يَجْعَلُكُمْ مِمَّنْهَا وَمِنْ كُلِّ فَرْقٍ مُّشْرِكُونَ ﴿٦٥﴾

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّن فَوْقِكُمْ أَوْ مِّن تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَلْبَسَكُمْ لُطُفًا مِّن دُونِ ذَلِكَ بَعْضُ أُنظُرْ كَيْفَ تُصَدِّقُونَ ۗ أَلَا يَتْلُو لَعْنَهُمْ لِيَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾

1 अर्थात् फरिश्तों को तुम्हारे कर्म लिखने के लिये।

2 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपनी उम्मत के लिये तीन दुआएँ कीं: मेरी उम्मत का विनाश डूब कर न हो। साधारण आकाल से न हो। और आपस के संघर्ष से न हो। तो पहली दो दुआ स्वीकार हुईं और तीसरी से आप को रोक दिया गया। (बुखारी- 2216)

आयतों का वर्णन कर रहे हैं कि संभवतः वह समझ जायें।

66. और (हे नबी!) आप की जाति ने इस (कुर्आन) को झुठला दिया, जब कि वह सत्य है। और आप कह दें कि मैं तुम पर अधिकारी नहीं^[1] हूँ।
67. प्रत्येक सुचना के पूरे होने का एक निश्चित समय है, और शीघ्र ही तुम जान लोगे।
68. और जब आप उन लोगों को देखें जो हमारी आयतों में दोष निकालते हों तो उन से विमुख हो जायें, यहाँ तक कि वह किसी दूसरी बात में लग जायें। और यदि आप को शैतान भुला दे तो याद आ जाने के पश्चात् अत्याचारी लोगों के साथ न बैठें।
69. तथा उन^[2] के हिसाब में से कुछ का भार उन पर नहीं है जो अल्लाह से डरते हों, परन्तु याद दिला^[3] देना उन का कर्तव्य है, ताकि वह भी डरने लगें।
70. तथा आप उन्हें छोड़ें जिन्होंने अपने धर्म को क्रीड़ा और खेल बना लिया है। और संसारिक जीवन ने उन्हें धोखे में डाल रखा है। और इस (कुर्आन) द्वारा उन्हें शिक्षा दें। ताकि कोई प्राणी अपने कर्तूतों के कारण बंधक

وَكَذَّابٍ بِهِ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ قُلْ لَسْتُ عَلَيْكُمْ بِمُكَيِّدٍ ۝

لِكُلِّ نَبِيٍّ مُّسْتَقَرٌّ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝

وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ وَإِمَّا يُنسِبِيكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرِ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَلَكِنْ ذِكْرِي لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝

وَذَرِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لُغُوبًا وَهُوَ غُرُوبُ الْعَيْبَةِ الدُّنْيَا وَذِكْرِيهَا أَنْ تَبْسُلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيٌّ وَلَا سَفِيحَةٌ وَإِنْ تَعْدِلْ كُلُّ عَدْلٍ لَأُنْزِلُ مِنْهَا آيَاتٍ لَكَ الَّذِينَ أَيْسَلُوا بِمَا كَسَبُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِنْ حَبِيمٍ

1 कि तुम्हें बलपूर्वक मनवाऊँ। मेरा दायित्व केवल तुम को अल्लाह का आदेश पहुँचा देना है।

2 अर्थात् जो अल्लाह की आयतों में दोष निकालते हैं।

3 अर्थात् समझा देना।

न बन जाये, जिस का अल्लाह के सिवा कोई सहायक और अभिस्तावक (सिफारशी) न होगा। और यदि वह सब कुछ बदले में दें तो भी उन से नहीं लिया जायेगा।^[1] यही लोग अपने कर्तुओं के कारण बंधक होंगे। उन के लिये उन के कुफ़ (अविश्वास) के कारण खौलता पेय तथा दुःखदायी यातना होगी।

71. हे नबी! उन से कहिये कि क्या हम अल्लाह के सिवा उन की वंदना करें जो हमें कोई लाभ और हानि नहीं पहुँचा सकते? और हम एडियों के बल फिर जायें, इस के पश्चात जब हमें अल्लाह ने मार्गदर्शन दे दिया है, उस के समान जिसे शैतानों ने धरती में बहका दिया हो, वह आश्चर्य चकित हो, उस के साथी उस को पुकार रहे हों कि सीधी राह की ओर हमारे पास आ जाओ?^[2] आप कह दें कि मार्गदर्शन तो वास्तव में वही है जो अल्लाह का मार्ग दर्शन है। और हमें तो यही आदेश दिया गया कि हम विश्व के पालनहार के आज्ञाकारी हो जायें।

72. और नमाज़ की स्थापना करें, और उस से डरते रहें। तथा वही है जिस के पास तुम एकत्रित किये जाओगे।

وَعَذَابُ الْيَوْمِ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٦﴾

قُلْ أَنتُمْ حُومِرٌ دُونَ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَرُدُّوْا عَلٰٓىٰٓ اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰٓنَا اللّٰهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيْطٰٓنِيْنَ فِي الْاَرْضِ حٰٓيْرٰٓن لَهٗٓ اَصْحٰٓبٌ يَّدْعُوْنَہٗ اِلٰی الْهُدٰٓى اٰتَيْنَا قُلُوبًا رَّٓنْ هٰٓذِي الْاَلٰهُ هُوَ الْهُدٰٓى وَاْمْرًا نُّسَلِّمُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦﴾

وَأَنْ أَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَآتُوا الزَّكٰوةَ وَهُوَ الَّذِي اٰتٰٓى الْيَوْمَ مَثْرُوْنَ ﴿٦﴾

- 1 संसारिक दण्ड से बचाव के लिये तीन साधनों से काम लिया जाता है: मैत्री, सिफारिश और अर्थदण्ड। परन्तु अल्लाह के हाँ ऐसे साधन किसी काम नहीं आयेंगे। वहाँ केवल ईमान और सत्कर्म ही काम आयेंगे।
- 2 इस में कुफ़ और ईमान का उदाहरण दिया गया है कि ईमान की राह निश्चित है। और अविश्वास की राह अनिश्चित तथा अनेक है।

73. और वही है, जिस ने आकाशों तथा धरती की रचना सत्य के साथ की^[1] है। और जिस दिन वह कहेगा कि "हो जा" तो वह (प्रलय) हो जायेगी। उस का कथन सत्य है। और जिस दिन नरसिंघा में फूँक दिया जायेगा उस दिन उसी का राज्य होगा। वह परोक्ष तथा^[2] प्रत्यक्ष का ज्ञानी है। और वही गुणी सर्वसूचित है।

74. तथा जब इब्राहीम ने अपने पिता आजर से कहा: क्या आप मूर्तियों को पूज्य बनाते हैं? मैं आप को तथा आप की जाति को खुले कुपथ में देख रहा हूँ।

75. और इब्राहीम को इसी प्रकार हम आकाशों तथा धरती के राज्य की व्यवस्था दिखाते रहे, और ताकि वह विश्वासियों में हो जाये।

76. तो जब उस पर रात छा गयी, तो उस ने एक तारा देखा। कहा: यह मेरा पालनहार है। फिर जब वह डूब गया, तो कहा मैं डूबने वालों से प्रेम नहीं करता।

77. फिर जब उस ने चाँद को चमकते देखा तो कहा: यह मेरा पालनहार है। फिर जब वह डूब गया तो कहा: यदि मुझे मेरे पालनहार ने मार्गदर्शन नहीं दिया तो मैं अवश्य कुपथों में से हो जाऊँगा।

78. फिर जब (प्रातः) सूर्य को चमकते

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ
وَيَوْمَ يَقُولُ كُن فَيَكُونُ ۚ قَوْلُهُ الْحَقُّ وَلَهُ
الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ عِلْمُ الْغَيْبِ
وَاللَّهُ بَادِعٌ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْحَكِيمُ ﴿٧٣﴾

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ إِذْ رَاكَ أَتَيْتَنِي بِأَصْنَامًا
الِهَةً ۖ إِنِّي أَخَافُكَ وَأَخَافُ فِي صَلَاتِ مُبِينٍ ﴿٧٤﴾

وَكَذَلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَلِيَكُونَ مِنَ الْمُؤْتَمِنِينَ ﴿٧٥﴾

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَى الْكَوْكَبَ ۖ قَالَ هَذَا رَبِّي ۖ
فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَأَحِبُّ الْأَفْلَاقِينَ ﴿٧٦﴾

فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِعًا قَالَ هَذَا رَبِّي ۖ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ
لَئِنْ كُنْتُ هَادِيًا لِرَبِّي لَأَكُونَنَّ مِنَ الْقَوْمِ
الضَّالِّينَ ﴿٧٧﴾

فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِعَةً قَالَ هَذَا رَبِّي ۖ هَذَا الْكَبِيرُ ۖ فَلَمَّا

1 अर्थात विश्व की व्यवस्था यह बता रही है कि इस का कोई रचयिता है।

2 जिन चीजों को हम अपनी पाँच ज्ञान इन्द्रियों से जान लेते हैं वह हमारे लिये प्रत्यक्ष है, और जिन का ज्ञान नहीं कर सकते वह परोक्ष है।

देखा तो कहा यह मेरा पालनहार है। यह सब से बड़ा है। फिर जब वह भी डूब गया तो उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! निःसंदेह मैं उस से विरक्त हूँ जिसे तुम (अल्लाह का) साझी बनाते हो।

79. मैं ने तो अपना मुख एकाग्र हो कर उस की ओर कर लिया है जिस ने आकाशों तथा धरती की रचना की है। और मैं मुशिरकों में से नहीं^[1] हूँ।

80. और जब उस की जाति ने उस से वाद झगड़ा किया तो उस ने कहा क्या तुम अल्लाह के विषय में मुझे से झगड़ रहे हो, जब कि उस ने मुझे सुपथ दिखा दिया है। तथा मैं उस से नहीं डरता हूँ जिसे तुम साझी बनाते हो। परन्तु मेरा पालनहार कुछ चाहे (तभी वह मुझे हानि पहुँचा सकता है) मेरा पालनहार प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान में समोये हुये है। तो क्या तुम शिक्षा नहीं लेते?

81. और मैं उन से कैसे डरूँ जिन को तुम ने उस का साझी बना लिया है, जब तुम उस चीज़ को उस का साझी बनाने से नहीं डरते जिस का अल्लाह

أَقَلَّتْ قَالَ يَقَوْمِ إِنِّي بَرَأَيْتُ وَمَا أَشْرِكُونَ ۝

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

وَحَاتِبَةٌ قَوْمُهُ قَالَ أُمَّا حَاجِبِي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدَانِ وَلَا أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا أَن يُشَاءَ رَبِّي سَيِّئًا ۖ وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ۝

وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُمْ بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْإِيمَانِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

1 इब्राहीम अलैहिस्सलाम उस युग में नबी हुये जब बाबिल तथा नेनवा के निवासी आकाशीय ग्रहों की पूजा कर रहे थे। परन्तु इबराहीम अलैहिस्सलाम पर अल्लाह ने सत्य की राह खोल दी। उन्होंने इन आकाशीय ग्रहों पर विचार किया तथा उन को निकलते और फिर डूबते देख कर यह निर्णय लिया कि यह किसी की रचना तथा उस के अधीन हैं। और इन का रचयिता कोई और है। अतः रचित तथा रचना कभी पूज्य नहीं हो सकती, पूज्य वही हो सकता है जो इन सब का रचयिता तथा व्यवस्थापक है।

ने तुम पर कोई तर्क (प्रमाण) नहीं उतारा है? तो दोनों पक्षों में कौन अधिक शान्त रहने का अधिकारी है, यदि तुम कुछ ज्ञान रखते हो?

82. जो लोग ईमान लाये, और अपने ईमान को अत्याचार (शिकर्क) से लिप्त नहीं^[1] किया, उन्हीं के लिये शान्ति है, तथा वही मार्ग दर्शन पर है।

83. यह हमारा तर्क था, जो हम ने इब्राहीम को उस की जाति के विरुद्ध प्रदान किया, हम जिस के पदों^[2] को चाहते हैं ऊँचा कर देते हैं। वास्तव में आप का पालनहार गुणी तथा ज्ञानी है।

84. और हम ने इब्राहीम को (पुत्र) इसहाक तथा (पौत्र) याकूब प्रदान किये। प्रत्येक को हम ने मार्गदर्शन दिया। और उस से पहले हम ने नूह को मार्गदर्शन दिया। और इब्राहीम की संतति में से दावूद तथा सुलैमान और अय्यूब तथा यूसुफ़ और मूसा तथा हारून को। और इसी प्रकार हम सदाचारियों को प्रतिफल प्रदान करते हैं।

85. तथा ज़करिय्या और यहया तथा ईसा और इलयास को। यह सभी

الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُمْ مُهْتَدُونَ ﴿٨٢﴾

وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مِّنْ لَّدُنَّا إِنَّ رَبَّكَ خَلِيمٌ ﴿٨٣﴾

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا هَدَيْنَا مِن قَبْلُ وَمِن ذُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَارُونَ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٤﴾

وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِيلَاسَ كُلٌّ مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿٨٥﴾

1 हदीस में है कि जब यह आयत उतरी तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों ने कहा: हम में कौन है जिस ने अत्याचार न किया हो? उस समय यह आयत उतरी। जिस का अर्थ यह है कि निश्चय शिकर्क (मिश्रणवाद) ही सब से बड़ा अत्याचार है। (सहीह बुखारी-4629)

2 एक व्यक्ति नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आया और कहा: हे सर्वोत्तम पुरुष! आप ने कहा: वह (सर्वोत्तम पुरुष) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) हैं। (सहीह मुस्लिम- 2369)

सदाचारियों में से थे।

86. तथा इस्माईल और यसज़ तथा यूनस और लूत को। प्रत्येक को हम ने संसार वासियों पर प्रधानता दी।
87. तथा उन के पूर्वजों और उन की संतति तथा उन के भाईयों को और हम ने इन सब को निर्वाचित कर लिया। और उन्हें सुपथ दिखा दिया था।
88. यही अल्लाह का मार्गदर्शन है जिस के द्वारा अपने भक्तों में से जिसे चाहे सुपथ दर्शा देता है। और यदि वह शिर्क करते, तो उन का सब किया धरा व्यर्थ हो जाता।^[1]
89. (हे नबी!) यही वह लोग हैं जिन्हें हम ने पुस्तक तथा निर्णय शक्ति एवं नुबूवत प्रदान की। फिर यदि यह (मुश्रिक) इन बातों को नहीं मानते तो हम ने इसे कुछ ऐसे लोगों को सौंप दिया है जो इसका इन्कार नहीं करते।
90. (हे नबी!) यही वह लोग हैं जिन को अल्लाह ने सुपथ दर्शा दिया, तो आप भी उन्हीं के मार्गदर्शन पर चलें तथा कह दें कि मैं इस (कार्य)^[2] पर तुम से कोई प्रतिदान नहीं माँगता। यह सब संसार वासियों के लिये एक शिक्षा के सिवा कुछ नहीं है।

وَأَسْبَعِيلَ وَالْيَسَعَ وَيُونُسَ وَلُوطًا وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٥٦﴾

وَمِنْ آبَائِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَأَخْوَانِهِمْ وَأَجْبَبْنَا لَهُمْ وَهَدَيْنَاهُمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٧﴾

ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۗ وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَعمَلُونَ ﴿٥٨﴾

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَ وَالنَّبُوءَةَ ۖ وَإِنْ يَكْفُرْ بِهَا هَؤُلَاءُ فَقَدْ وَكَلْنَا بِهَا قَوْمًا لَيَسُوًّا بِهَا بِكْفَارِهِمْ ﴿٥٩﴾

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ فَبِهِدَاهُمْ أَقْتَدُوا ۖ قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٦٠﴾

1 इन आयतों में 18 नबियों की चर्चा करने के पश्चात् यह कहा है कि यदि यह सब भी मिश्रण करते तो इन के सत्कर्म व्यर्थ हो जाते। जिस से अभिप्राय शिर्क (मिश्रणवाद) की गंभीरता से सावधान करना है।

2 अर्थात् इस्लाम का उपदेश देने पर

91. तथा उन्होंने ने अल्लाह का सम्मान जैसे करना चाहिये नहीं किया। जब उन्होंने ने कहा कि अल्लाह ने किसी पुरुष पर कुछ नहीं उतारा, उन से पूछिये कि वह पुस्तक जिसे मूसा लाये, जो लोगों के लिये प्रकाश तथा मार्गदर्शन है, किस ने उतारी है जिसे तुम पन्नों में कर के रखते हो? जिस में से तुम कुछ को लोगों के लिये बयान करते हो और बहुत कुछ छुपा रहे हो। तथा तुम को उस का ज्ञान दिया गया, जिस का तुम को और तुम्हारे पूर्वजों को ज्ञान न था? आप कह दें कि अल्लाह ने। फिर उन्हें उन के विवादों में खेलते हुये छोड़ दें।

92. तथा यह (कुर्आन) एक पुस्तक है जिसे हम ने (तौरात के समान) उतारा है। जो शुभ, अपने से पूर्व (की पुस्तकों) को सच्च बताने वाली है, तथा ताकि आप «उम्मुल कुरा» (मक्का नगर) तथा उस के चतुर्दिक के निवासियों को सचेत^[1] करें। तथा जो परलोक के प्रति विश्वास रखते हैं वही इस पर ईमान लाते हैं। और वही अपनी नमाज़ों का पालन करते^[2] हैं।

93. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़े और कहे

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَى بَشَرٍ مِّن شَيْءٍ قُلْ مَنْ أَنْزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ بِهِ مُوسَى نُورًا وَهُدًى لِّلنَّاسِ لِيَجْزُوَنَّهُ قُرْآنًا لِّسَانًا تُبَدِّلُهَا وَتُخْفُونَ كَثِيرًا وَعَلِمْتُمْ نَاسًا تَعْلَمُونَ أَنْتُمْ وَلَا آبَاؤُكُمْ قُلِ اللَّهُ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ ①

وَهَذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ بِرَبِّكَ مُصَدِّقٌ لِّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَى وَمَنْ حَوْلَهَا وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَهُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ②

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ

1 अर्थात् पूरे मानव संसार को अल्लाह की अवैज्ञा के दुष्परिणाम से सावधान करें। इस में यह संकेत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूरे मानव संसार के पथ प्रदर्शक तथा कुर्आन सब के लिये मार्गदर्शन है। और आप केवल किसी एक जाति या क्षेत्र अथवा देश के नबी नहीं हैं।

2 अर्थात् नमाज़ उस के निर्धारित समय पर बराबर पढ़ते हैं।

कि मेरी ओर प्रकाशना (वह्नी) की गई है, जब कि उस की ओर वह्नी (प्रकाशना) नहीं की गयी।? तथा जो यह कहे कि अल्लाह ने जो उतारा है उस के समान मैं भी उतार दूँगा? और (हे नबी!) आप यदि ऐसे अत्याचारी को मरण की घोर दशा में देखते जब की फरिश्ते उन की ओर हाथ बढ़ाये (कहते हैं): अपने प्राण निकालो! आज तुम्हें इस कारण अपमानकारी यातना दी जायेगी जो अल्लाह पर झूठ बोलते और उस की आयतों (को मानने) से अभिमान कर रहे थे।

94. तथा (अल्लाह) कहेगा: तुम मेरे सामने उसी प्रकार अकेले आ गये जैसे तुम्हें प्रथम बार हम ने पैदा किया था। तथा हम ने जो कुछ दिया था, अपने पीछे (संसार ही में) छोड़ आये। और आज हम तुम्हारे साथ तुम्हारे अभिस्तावकों (सिफारशियों) को नहीं देख रहे हैं? जिन के बारे में तुम्हारा भ्रम था कि तुम्हारे कामों में वह (अल्लाह के) साझी हैं। निश्चय तुम्हारे बीच के संबंध भंग हो गये हैं, और तुम्हारा सब भ्रम खो गया है।

95. वास्तव में अल्लाह ही अब्र तथा गुठली को (धरती के भीतर) फाड़ने वाला है। वह निर्जीव से जीवित को निकालता है, तथा जीवित से निर्जीव को निकालने वाला। वही अल्लाह (सत्य पूज्य) है। फिर तुम कहाँ बहके जा रहे हो?

أَوْحَىٰ إِلَيْنَا وَلَمْ يُوحِ إِلَيْنَا شَيْءٌ وَمَنْ قَالَ سَأُنزِلُ
مِثْلَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ فِي مُغَمَّبَاتِ
الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُوا أَيْدِيهِمْ أَعْرِجُوا أَنْفُسَكُمْ
الْيَوْمَ عُذْرَتٌ لَّكُم مِّنَ اللَّهِ إِنَّكُمْ تَقُولُونَ عَلَى
اللَّهِ عِبْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ ﴿٩٤﴾

وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا فُرَادَىٰ كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ
وَتَرَكْتُمُ قَآئِحًا لِّأَنْفُسِكُمْ وَأَمْ تَرَىٰ مَعَكُمْ
شُفَعَاءَ لَوْ أَنِ الَّذِينَ رَعِمْنَا أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَاءَ لَقَدْ
تَقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَصَلَّ عَنْكُمْ مَا كُنْتُمْ
تَرْعَمُونَ ﴿٩٥﴾

إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ يُجْعِلُ الْحَيَّ مِنَ
الْمَيِّتِ وَيُجْعِلُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ذَلِكُمْ اللَّهُ فَالِقُ
تَوَفِّكُونَ ﴿٩٥﴾

96. वह प्रभात का तड़काने वाला, और उसी ने सुख के लिये रात्रि बनाई तथा सूर्य और चाँद हिसाब के लिये बनाया। यह प्रभावी गुणी का निर्धारित किया हुआ अंकन (माप)^[1] है।

97. उसी ने तुम्हारे लिये तारे बनाये हैं, ताकि उन की सहायता से थल तथा जल के अंधकारों में रास्ता पाओ। हम ने (अपनी दया के) लक्षणों का उन के लिये विवरण दे दिया है जो लोग ज्ञान रखते हैं।

98. वही है जिस ने तुम्हें एक जीव से पैदा किया। फिर तुम्हारे लिये (संसार में) रहने का स्थान है। और एक समर्पण (मरण) का स्थान है। हम ने उन्हें अपनी आयतों (लक्षणों) का विवरण दे दिया जो समझ बूझ रखते हैं।

99. वही है जिस ने आकाश से जल की वर्षा की, फिर हम ने उस से प्रत्येक प्रकार की उपज निकाल दी। फिर उस से हरियाली निकाल दी। फिर उस से तह पर तह दाने निकालते हैं। तथा खजूर के गाभ से गुच्छे झुके हुये। और अँगूरों तथा जैतून और अनार के बाग समरूप तथा स्वाद में अलग-अलग। उस के फल को देखो जब फल लाता है, तथा उस के पकने को। निःसंदेह इन में उन लोगों के लिये बड़ी निशानियाँ

قَالِقِ الْإِصْبَارِ وَجَعَلَ الْيَلَّ سَكَنًا وَالشَّمْسِ
وَالْقَمَرِ حِسَابًا ذَلِكَ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ①

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي
ظُلُمَاتِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ قَدْ فَضَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ
يَعْلَمُونَ ①

وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ فَمَسْكَنًا
وَمَسْتَوْدِعًا قَدْ فَضَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَفْقَهُونَ ①

وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ
نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُخْرَجُ مِنْهُ حَبًّا
مَّتَرَاكِبًا وَمِنْ النَّخْلِ مِنَ الطَّعَلِ وَتَمْرًا وَزَيْتُونًا
وَالزَّيْتُونَ وَالرَّيْحَانَ مُسْتَبِيحًا وَعَدِيرٍ مُسْتَبِيحًا
وَأَنْظُرُوا إِلَى شَيْءٍ إِذَا أَنْزَرَ وَيَعْلَمُونَ ①

1 जिस में एक पल की भी कमी अथवा अधिकता नहीं होती।

(लक्षण)^[1] हैं जो ईमान लाते हैं।

100. और उन्होंने ने जिन्नों को अल्लाह का साझी बना दिया। जब कि अल्लाह ही ने उन की उत्पत्ति की है। और बिना ज्ञान के उस के लिये पुत्र तथा पुत्रियाँ गढ़ लीं। वह पवित्र तथा उच्च है उन बातों से जो वह लोग कह रहे हैं।
101. वह आकाशों तथा धरती का अविष्कारक है, उस के संतान कहाँ से हो सकती है, जब कि उस की पत्नी ही नहीं है? तथा उसी ने प्रत्येक वस्तु को पैदा किया है। और वह प्रत्येक वस्तु को भली भाँति जानता है।
102. वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, उस के अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं। वह प्रत्येक वस्तु का उत्पत्तिकार है। अतः उस की इबादत (वंदना) करो। तथा वही प्रत्येक चीज़ का अभिरक्षक है।
103. उस का आँख इद्राक नहीं कर सकती,^[2] जब कि वह सब कुछ देख रहा है। वह अत्यंत सूक्ष्मदर्शी और सब चीज़ों से अवगत है।

وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهُ بَنِينَ وَبَدَاتٍ يُعَارِعُ سِعَتَهُ وَلَعَلَّ عَلَافٍ مُّشْرِكُونَ ۝

بَدِيْعُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَتَىٰ يَكُوْنُ لَهُ وَكْدٌ
وَأَلَمْ يَكُنْ لَهُ صَاحِبَةٌ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

ذِكْرُ اللَّهِ ذِكْرُكُمْ آلَ اللَّهِ إِلَهُكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ
وَأَعْبَادُهُ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيْلٌ ۝

لَا تَدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ
وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۝

- 1 अर्थात् अल्लाह के पालनहार होने की निशानियाँ। आयत का भावार्थ यह है कि जब अल्लाह ने तुम्हारे आर्थिक जीवन के साधन बनाये हैं तो फिर तुम्हारे आत्मिक जीवन के सुधार के लिये भी प्रकाशना और पुस्तक द्वारा तुम्हारे मार्गदर्शन की व्यवस्था की है तो तुम्हें उस पर आश्चर्य क्यों है, तथा इसे अस्वीकार क्यों करते हो?
- 2 अर्थात् इस संसार में उसे कोई नहीं देख सकता।

104. तुम्हारे पास निशानियाँ आ चुकी हैं तो जिस ने समझ बूझ से काम लिया उस का लाभ उसी के लिये है। और जो अन्धा हो गया तो उस की हानि उसी पर है। और मैं तुम पर संरक्षक^[1] नहीं हूँ।

فَدَجَاءَكُمْ بِصَافِرٍ مِنْ رَبِّكُمْ مَنْ أَنْصَرَ
فَلَنْفِئَهُ وَمَنْ عَيَّى فَعَلَيْهَا وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ
بِحَفِيفٍ ۝

105. और इसी प्रकार हम अनेक शैलियों में आयतों का वर्णन कर रहे हैं। और ताकि वह (काफिर) कहें कि आप ने पढ^[2] लिया है। और ताकि हम उन लोगों के लिये (तर्कों को) उजागर कर दें जो ज्ञान रखते हैं।

وَكَذَلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِيُقْوُوا ۚ وَدَرَسَتْ
وَلِيُنَبِّئَهُ لِقَوْمٍ يُعْلَمُونَ ۝

106. आप उस पर चलें जो आप पर आप के पालनहार की ओर से वह्यी (प्रकाशना) की जा रही है। उस के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है। और मुश्रिकों की बातों पर ध्यान न दें।

إِنِّيَعْمَ مَا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ مِنَ رَبِّكَ ۚ إِنَّ اللَّهَ إِلَّا هُوَ
وَاعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ۝

107. और यदि अल्लाह चाहता तो वह लोग साझी न बनाते। और हम ने आप को उन पर निरीक्षक नहीं बनाया है। तथा न आप उन पर^[3] अभिकारी है।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكُوا وَمَا جَعَلْنَاكَ
عَلَيْهِمْ حَفِيفًا ۚ وَمَا آتَيْنَاهُمْ بِيُوسُفٍ ۝

108. और (हे ईमान वालो!) उन्हें बुरा न कहो जिन (मूर्तियों) को वह अल्लाह के सिवा पुकारते हैं। अन्यथा वह लोग अज्ञानता के कारण अति

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَيَسُبُّوا
اللَّهَ عَدْوًا وَعَدُوًّا لِعِلْمِهِ ۚ كَذَلِكَ زَيَّنَّا لِلْجِنِّ أُمَّةً
عَمَلُهُمْ شَبِيهًا لِمَنْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ فَرِحُوا مِنْهُمْ فَوَيْلٌ لَهُمْ

1 अर्थात् नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सन्धर्म के प्रचारक हैं।

2 अर्थात् काफिर यह कहें कि आप ने यह अहले किताब से सीख लिया है और इसे अस्वीकार कर दें। (इब्ने कसीर)

3 आयत का भावार्थ यह है कि नबी का यह कर्तव्य नहीं कि वह सब को सीधी राह दिखा दे। उस का कर्तव्य केवल अल्लाह का संदेश पहुँचा देना है।

كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٠﴾

कर के अल्लाह को बुरा कहेंगे। इसी प्रकार हम ने प्रत्येक समुदाय के लिये उन के कर्म को सुशोभित बना दिया है। फिर उन के पालनहार की ओर ही उन्हें जाना है। तो उन्हें बता देगा जो वे करते रहे।

109. और उन (मुश्रिकों) ने बल पूर्वक शपथें लीं कि यदि हमारे पास कोई आयत (निशानी) आ जाये तो उस पर वह अवश्य ईमान लायेंगे। आप कह दें: आयतें (निशानियाँ) तो अल्लाह ही के पास हैं। और (हे ईमान वालो!) तुम्हें क्या पता कि वह निशानियाँ जब आ जायेंगी तो वह ईमान^[1] नहीं लायेंगे।
110. और हम उन के दिलों और आँखों को ऐसे ही फेर^[2] देंगे जैसे वह पहली बार इस (कुरआन) पर ईमान नहीं लाये। और हम उन्हें उन के

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِن جَاءَتْهُمْ آيَةٌ
لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا قُلْنَا إِنَّمَا الْأَيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ وَمَا
يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٦١﴾

وَنَقَلَبُ أَعْيُنَهُمْ وَانْبَصَارُهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا
بِهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ وَنَدَّاهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُونَ ﴿٦٢﴾

- 1 मक्का के मुश्रिकों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि यदि सफ़ा (पर्वत) सोने का हो जाये तो वह ईमान लायेंगे। कुछ मुसलमानों ने भी सोचा कि यदि ऐसा हो जाये तो संभव है कि वह ईमान ले आयें। इसी पर यह आयत उतरती। (इब्ने कसीर)
- 2 अर्थात् कोई चमत्कार आ जाने के पश्चात् भी ईमान नहीं लायेंगे, क्यों कि अल्लाह, जिसे सुपथ दर्शाना चाहता है, वह सत्य को सुनते ही उसे स्वीकार कर लेता है। किन्तु जिस ने सत्य के विरोध ही को अपना आचरण-स्वभाव बना लिया हो तो वह चमत्कार देख कर भी कोई बहाना बना लेता है। और ईमान नहीं लाता। जैसे इस से पहले नबियों के साथ हो चुका है। और स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बहुत सी निशानियाँ दिखाईं फिर भी ये मुश्रिक ईमान नहीं लाये। जैसे आप ने मक्का वासियों की माँग पर चाँद के दो भाग कर दिये। जिन दोनों के बीच लोगों ने हिरा (पर्वत) को देखा। (परन्तु वे फिर भी ईमान नहीं लाये।) (सहीह बुखारी- 3637, मुस्लिम- 2802)

कुकर्मों में बहकते छोड़ देंगे।

111. और यदि हम इन की ओर (आकाश से) फ़रिश्ते उतार देते और इन से मुद्दे बात करते और इन के समक्ष प्रत्येक वस्तु एकत्र कर देते, तब भी यह ईमान नहीं लाते परन्तु जिसे अल्लाह (मार्गदर्शन देना) चाहता। और इन में से अधिकतर (तथ्य से) अज्ञान हैं।
112. और (हे नबी!) इसी प्रकार हम ने मनुष्यों तथा जिनों में से प्रत्येक नबी का शत्रु बना दिया जो धोका देने के लिये एक दूसरे को शोभनीय बात सुझाते रहते हैं। और यदि आप का पालनहार चाहता तो ऐसा नहीं करते। तो आप उन्हें छोड़ दें, और उन की घड़ी हुई बातों को।
113. (वह ऐसा इस लिये करते हैं) ताकि उस की ओर उन लोगों के दिल झुक जायें जो परलोक पर विश्वास नहीं रखते। और ताकि वह उस से प्रसन्न हो जायें और ताकि वह भी वही कुकर्म करने लगें जो कुकर्म वह लोग कर रहे हैं।
114. (हे नबी!) उन से कहो कि क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी दूसरे न्यायकारी की खोज करूँ, जब कि उसी ने तुम्हारी ओर यह खुली पुस्तक (क़ुरआन) उतारी^[1] है? तथा जिन को हम ने पुस्तक^[2] प्रदान की है वह जानते हैं

وَلَوْ أَنزَلْنَا نَزْلًا لَّهُمُ الْمَلِئِكَةَ وَكَلَّمَهُم
الْمَوْئِي وَحَسَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَا كَانُوا
لِيُؤْمِنُوا إِلَّا أَنْ يَمْسَأَ اللَّهُ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ
يَجْهَلُونَ ۝

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَاطِئِينَ
الْإِنْسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ
زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ
فَقَدْ رُهِمَ وَمَا يُفْتَرُونَ ۝

وَلِتَصْغَىٰ إِلَيْهِ أَفْئِدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِالْآخِرَةِ وَلِيُقَسِّمُوا مَا هُمْ
مُقْتَرِفُونَ ۝

أَفَعْبُرَ اللَّهُ أَجْتَبَىٰ حَكَمًا وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ
إِلَيْكُمْ الْكِتَابَ مُفَصَّلًا وَالَّذِينَ اتَّيَبَهُمُ الْكِتَابَ
يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنَزَّلٌ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ وَلَا
يَكُونُونَ مِنَ الْمُنْزِينَ ۝

1 अर्थात इस में निर्णय के नियमों का विवरण है।

2 अर्थात जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर जिब्रिल प्रथम बह्यी लाये और

कि यह (कुर्आन) आप के पालनहार की ओर से सत्य के साथ उतारा है। अतः आप सदेह करने वालों में न हों।

115. आप के पालनहार की बात सत्य तथा न्याय की है, कोई उस की बात (नियम) बदल नहीं सकता और वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।
116. और (हे नबी!) यदि आप संसार के अधिकतर लोगों की बात मानेंगे तो वह आप को अल्लाह के मार्ग से बहका देंगे। वह केवल अनुमान पर चलत^[1] हैं, और आँकलन करते हैं।
117. वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है कि कौन उस की राह से बहकता है। तथा वही उन्हें भी जानता है जो सुपथ पर हैं।
118. तो उन पशुवों में से जिस पर बध करते समय अल्लाह का नाम लिया गया हो खाओ,^[2] यदि तुम उस

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا لَا مُبَدِّلَ
لِكَلِمَاتِهِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

وَأَنْ تَطْعَمَ أَكْثَرُ مَنْ فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ إِنْ تَكْفِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ
إِلَّا خَيْرٌ صَوْنٌ ۝

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَنْ يَضِلُّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ
أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝

فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ بِآيَاتِهِ
مُؤْمِنِينَ ۝

आप ने मक्का के ईसाई विद्वान वर्का बिन नौफल को बताया तो उस ने कहा कि यह वही फरिश्ता है जिसे अल्लाह ने मूसा (अलैहिस्सलाम) पर उतारा था। (बुखारी -3, मुस्लिम-160) इसी प्रकार मदीना के यहूदी विद्वान अब्दुल्लाह बिन सलाम ने भी नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को माना और इस्लाम लाये।

1 आयत का भावार्थ यह है कि सत्योसत्य का निर्णय उस के अनुयायियों की संख्या से नहीं। सत्य के मूल नियमों से ही किया जा सकता है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मेरी उम्मत के 72 सम्प्रदाय नरक में जायेंगे। और एक स्वर्ग में जायेगा। और वह, वह होगा जो मेरे और मेरे साथियों के पथ पर होगा। (तिर्मिजी- 263)

2 इस का अर्थ यह है कि बध करते समय जिस जानवर पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो, बल्कि देवी-देवता तथा पीर-फ़कीर के नाम पर बलि दिया गया

की आयतों (आदेशों) पर ईमान (विश्वास) रखते हों।

119. और तुम्हारे उस में से न खाने का क्या कारण है जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया^[1] हो, जब कि उस ने तुम्हारे लिये स्पष्ट कर दिया है जिसे तुम पर हराम (अवैध) किया है? परन्तु जिस (वर्जित) के (खाने के लिये) विवश कर दिये जाओ^[2], और वास्तव में बहुत से लोग अपनी मनमानी के लिये लोगों को अपनी अज्ञानता के कारण बहकाते हैं। निश्चय आप का पालनहार उल्लंघनकारियों को भली भाँति जानता है।

120. (हे लोगो!) खुले तथा छुपे पाप छोड़ दो। जो लोग पाप कमाते हैं वे अपने कुकर्मों का प्रतिकार (बदला) दिये जायेंगे।

121. तथा उस में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो। वास्तव में उसे खाना (अल्लाह की) अवैज्ञा है। निःसंदेह शैतान अपने सहायकों के मनो में संशय डालते रहते हैं, ताकि वह तुम से विवाद

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ
فَصَّلَ لَكُمْ مَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ
إِلَيْهِ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْيَبُسُوتِ يَأْكُلُونَهُمْ بِغَيْرِ
عِلْمٍ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَبِرِينَ ﴿١١٩﴾

وَذُرُوا ظَاهِرَ الْأَثْمِ وَبَاطِنَهُ إِنَّ الَّذِينَ
يَكْسِبُونَ الْأَثْمَ سَجِزُونَ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿١٢٠﴾

وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ
لَفِسْقٌ وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَٰهِمْ
لِيُجَادِلُوكُمْ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُكْسِرُونَ ﴿١٢١﴾

हो तो वह तुम्हारे लिये वर्जित है। (इब्ने कसीर)

1 अर्थात् उन पशुओं को खाने में कोई हरज नहीं जो मुसलमानों की दुकानों पर मिलते हैं क्योंकि कोई मुसलमान अल्लाह का नाम लिये बिना बध नहीं करता। और यदि शंका हो तो खाते समय ((बिस्मिल्लाह)) कह ले। जैसा कि हदीस शरीफ में आया है। (देखिये: बुखारी- 5507)

2 अर्थात् उस वर्जित को प्राण रक्षा के लिये खाना उचित है।

करें।^[1] और यदि तुम ने उन की बात मान ली तो निश्चय तुम मुशरिक हो।

122. तो क्या जो निर्जीव रहा हो फिर हम ने उसे जीवन प्रदान किया हो तथा उस के लिये प्रकाश बना दिया हो जिस के उजाले में वह लोगों के बीच चल रहा हो, उस जैसा हो सकता है जो अंधेरों में हो उस से निकल न रहा हो?^[2] इसी प्रकार काफिरों के लिये उन के कुकर्म सुन्दर बना दिये गये हैं।

أَوْ مَن كَانَ مَيِّتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا
يَشِيءُ بِهِ فِي النَّاسِ كَمَن مَّمَّلَهُ فِي الظُّلُمَاتِ
لَيْسَ بِخَارِجٍ مِنْهَا كَذَلِكَ نُزِيلُ الْكِتَابَ عَلَى مَن
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦﴾

123. और इसी प्रकार हम ने प्रत्येक बस्ती में उस के बड़े अपराधियों को लगा दिया ताकि उस में षडयंत्र रचें तथा वह अपने ही विरुद्ध षडयंत्र रचते^[3] हैं परन्तु समझते नहीं हैं।

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكْبَرًا مُّجْرِمِيهَا
لِيَسْكَرُوا فِيهَا وَمَا يَمْلِكُونَ إِلَّا يَأْتِيهِمْ
وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٧﴾

124. और जब उन के पास कोई निशानी आती है तो कहते हैं कि हम उसे कदापि नहीं मानेंगे, जब तक उसी के समान हमें भी प्रदान न किया जाये जो अल्लाह के रसूलों को प्रदान किया गया है। अल्लाह ही अधिक जानता है कि अपना

وَإِذَا جَاءَهُمْ آيَةٌ قَالَ أُولَئِكَ نُونٌ حَتَّى نُوْتِي
مِثْلَ مَا أُوتِيَ رَسُولُ اللَّهِ ﷻ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ
رِسَالَتَهُ مَبِصُوبِ الَّذِينَ أَجْرُمُوا صَاعًا عِنْدَ
اللَّهِ وَعَدَّابٌ شَدِيدٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٨﴾

- 1 अर्थात् यह कहें कि जिसे अल्लाह ने मारा हो, उसे नहीं खाते। और जिसे तुम ने बध किया हो उसे खाते हो? (इब्ने कसीर)
- 2 इस आयत में ईमान की उपमा जीवन से तथा ज्ञान की प्रकाश से, और अविश्वास की मरण तथा अज्ञानता की उपमा अंधकारों से दी गयी है।
- 3 भावार्थ यह है कि जब किसी नगर में कोई सत्य का प्रचारक खड़ा होता है तो वहाँ के प्रमुखों को यह भय होता है कि हमारा अधिकार समाप्त हो जायेगा। इस लिये वह सत्य के विरोधी बन जाते हैं। और उस के विरुद्ध षडयंत्र रचने लगते हैं। मक्का के प्रमुखों ने भी यही नीति अपना रखी थी।

संदेश पहुँचाने का काम किस से लो। जो अपराधी है शीघ्र ही अल्लाह के पास उन्हें अपमान तथा कड़ी यातना उस षडयंत्र के बदले मिलेगी जो वे कर रहे हैं।

125. तो जिसे अल्लाह मार्ग दिखाना चाहता है, उस का सीना (वक्ष) इस्लाम के लिये खोल देता है और जिसे कुपथ करना चाहता है उस का सीना संकीर्ण (तंग) कर देता है। जैसे वह बड़ी कठिनाई से आकाश पर चढ़ रहा^[1] हो। इसी प्रकार अल्लाह उन पर यातना भेज देता है जो ईमान नहीं लाते।

126. और यही (इस्लाम) आप के पालनहार की सीधी राह है। हम ने उन लोगों के लिये आयतों को खोल दिया है जो शिक्षा ग्रहण करते हों।

127. उन्हीं के लिये आप के पालनहार के पास शान्ति का घर (स्वर्ग) है। और वही उन के सुकर्मों के कारण उन का सहायक होगा।

128. तथा (हे नबी!) याद करो जब वह सब को एकत्र कर के (कहेगा): हे जिब्रों के गिरोह! तुम ने बहुत से मनुष्यों को कुपथ कर दिया और मानव में से उन के मित्र कहेंगे कि

فَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ
لِلْإِسْلَامِ وَمَنْ يُرِدْ أَنْ يُضِلَّهُ يَجْعَلْ صَدْرَهُ
ضَيِّقًا حَرَجًا كَأَنَّمَا يَصْعَدُ فِي السَّمَاءِ كَذَلِكَ
يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

وَهَذَا صِرَاطٌ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا قَدْ فَضَّلْنَا
الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ۝

لَهُمْ دَارُ السَّلَامِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَيُسِّرُهُمْ
بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

وَيَوْمَ يُعْشِرُهُمْ جَبِيئًا يَعْشِرُ الرِّجْسَ الَّذِي
اسْتَكْبَرْتُمْ مِنَ الْإِنْسِ وَقَالَ أَوْلِيَاءُهُمْ مِنَ
الْإِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَبِعْنَا بَعْضًا مِمَّنْ بَعْضًا أَجَلْنَا
الَّذِي أَجَلْتُمْ لَنَا قَالُوا مَا مَثُورُكُمْ

1 अर्थात् उसे इस्लाम का मार्ग एक कठिन चढ़ाई लगता है जिस के विचार ही से उस का सीना तंग हो जाता है और श्वास रोध होने लगात है।

हे हमारे पालनहार! हम एक दूसरे से लाभावित होते रहे,^[1] और वह समय आ पहुँचा जो तू ने हमारे लिये निर्धारित किया था। (अल्लाह) कहेगा: तुम सब का आवास नरक है जिस में सदावासी रहोगे। परन्तु जिसे अल्लाह (बचाना) चाहे। वास्तव में आप का पालनहार गुणी सर्व ज्ञानी है।

129. और इसी प्रकार हम अत्याचारियों को उन के कुकर्मा के कारण एक दूसरे का सहायक बना देते हैं।

130. (तथा कहेगा:) हे जिन्नों तथा मनुष्यों के (मुश्रिक) समुदाय! क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आये^[2], जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाते और तुम्हें तुम्हारे इस दिन (के आने) से सावधान करते? वह कहेंगे: हम स्वयं अपने ही विरुद्ध गवाह हैं। तथा उन्हें संसारिक जीवन ने धोखे में रखा था। और अपने ही विरुद्ध गवाह हो गये

خَلِدِينَ فِيهَا أَلَا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ
عَلِيمٌ ﴿٦٠﴾

وَكَذَلِكَ نُوَلِّي بَعْضَ الظَّالِمِينَ بَعْضًا مِمَّا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٦١﴾

يَمَعَشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ
مِّنكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمُ آيَاتِي
وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَذَا قَالُوا
شَهِدْنَا عَلَىٰ أَنفُسِنَا وَغَرَّبْنَاهُمْ نَجِيبَةً
الذُّنُوبِ وَأَعْلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا
كٰفِرِينَ ﴿٦٢﴾

1 इस का भावार्थ यह है कि जिन्नों ने लोगों को संशय और धोखे में रख कर कुपथ किया, और लोगों ने उन्हें अल्लाह का साझी बनाया और उन के नाम पर बलि देते और चढ़ावे चढ़ाते रहे और ओझाई तथा जादू तंत्र द्वारा लोगों को धोखा दे कर अपना उल्लू सीधा करते रहे।

2 कुर्आन की अनेक आयतों से यह विद्वित होता है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिन्नों के भी नबी थे जैसा कि सूरह जिन्न आयत 1, 2 में उन के कुर्आन सुनने और ईमान लाने का वर्णन है। ऐसे ही सूरह अहकाफ़ में है कि जिन्नों ने कहा: हम ने ऐसी पुस्तक सुनी जो मूसा के पश्चात् उतरी है। इसी प्रकार वह सुलैमान के आधीन थे। परन्तु कुर्आन और हदीस से जिन्नों में नबी होने का कोई संकेत नहीं मिलता। एक विचार यह भी है कि जिन्न आदम (अलैहिस्सलाम) से पहले के हैं इसलिये हो सकता है पहले उन में भी नबी आये हों।

कि वास्तव में वही काफ़िर थे।

131. (हे नबी!) यह (नबियों को भेजना) इस लिये हुआ कि आप का पालनहार ऐसा नहीं है कि अत्याचार से बस्तियों का विनाश कर दे, [1] जब कि उस के निवासी (सत्य से) अचेत रहे हों।
132. प्रत्येक के लिये उस के कर्मानुसार पद हैं। और आप का पालनहार लोगों के कर्मों से अचेत नहीं है।
133. तथा आप का पालनहार निस्पृह दयाशील है। वह चाहे तो तुम्हें ले जाये और तुम्हारे स्थान पर दूसरों को ले आये। जैसे तुम लोगों को दूसरे लोगों की संतति से पैदा किया है।
134. तुम्हें जिस (प्रलय) का वचन दिया जा रहा है उसे अवश्य आना है। और तुम (अल्लाह को) विवश नहीं कर सकते।
135. आप कह दें: हे मेरी जाति के लोगो! (यदि तुम नहीं मानते) तो अपनी दशा पर कर्म करते रहो। मैं भी कर्म कर रहा हूँ। शीघ्र ही तुम्हें यह ज्ञान हो जायेगा कि किस का अन्त (परिणाम) [2] अच्छा है। निःसंदेह

ذَلِكَ أَنْ لَمْ يَكُنْ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ
وَأَهْلَهَا غُفْلُونَ ﴿١٣١﴾

وَلِكُلِّ دَرَجَاتٍ مِّمَّا عَمِلُوا وَمَا رَبُّكَ
بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٢﴾

وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۚ إِنْ يَشَاءُ يُدْهِبْكُمْ
وَيَسْتَخْلِفْ مِنْ بَعْدِكُمْ مَا يَشَاءُ كَمَا أَنْشَأَكُمُ
مِّنْ ذُرِّيَّةٍ قَوْمِ الْغَوِينَ ﴿١٣٣﴾

إِنَّ مَا تُوعَدُونَ لَآتٍ وَمَا أَنْتُمْ
بِمُعْجِزِينَ ﴿١٣٤﴾

قُلْ يَقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ ۚ إِنِّي عَاطِلٌ
فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَنْ تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ
إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿١٣٥﴾

1 अर्थात् संसार की कोई बस्ती ऐसी नहीं है जिस में संमार्ग दर्शाने के लिये नबी न आये हों। अल्लाह का यह नियम नहीं है कि किसी जाति को बह्यी द्वारा मार्गदर्शन से वंचित रखे और फिर उस का नाश कर दे। यह अल्लाह के न्याय के बिल्कुल प्रतिकूल है।

2 इस आयत में काफ़िरों को सचेत किया गया है कि यदि सत्य को नहीं मानते तो

अत्याचारी सफल नहीं होंगे।

136. तथा उन लोगों ने उस खेती और पशुओं में जिन्हें अल्लाह ने पैदा किया है। उस का एक भाग निश्चित कर दिया, फिर अपने विचार से कहते हैं: यह अल्लाह का है और यह उन (देवताओं) का है जिन को उन्होंने (अल्लाह का) साझी बनाया है। फिर जो उन के बनाये हुये साझियों का है वह तो अल्लाह को नहीं पहुँचता परन्तु जो अल्लाह का है वह उन के साझियों^[1] को पहुँचता है। वह क्या ही बुरा निर्णय करते हैं!

137. और इसी प्रकार बहुत से मुश्रिकों के लिये अपनी संतान के बध करने को उन के बनाये हुये साझियों ने सुशोभित बना दिया है, ताकि उन का विनाश कर दें और ताकि उन के धर्म को उन पर संदिग्ध कर दें। और यदि अल्लाह चाहता तो वह यह (कुकर्म) नहीं करते। अतः आप उन्हें छोड़^[2] दें तथा उन की बनाई हुई बातों को।

138. तथा वे कहते हैं कि यह पशु और

وَجَعَلُوا لِلَّهِ مِمَّا ذَرَأَ مِنَ الْحَرْثِ
وَالْأَنْعَامِ نَصِيبًا فَقَالُوا هَذَا لِلَّهِ
يَرْعِيهِمْ وَهَذَا لِلشُّرَكَائِنَا فَمَا كَانَ
لِشُّرَكَائِهِمْ فَلَا يَصِلُ إِلَى اللَّهِ وَمَا كَانَ
لِلَّهِ فَهُوَ يَصِلُ إِلَى شُرَكَائِهِمْ سَاءَ مَا
يَحْكُمُونَ ۝

وَكَذَلِكَ زَيْنَ لِكَثِيرٍ مِنَ الْمُشْرِكِينَ
قَتَلَ أَوْلَادِهِمْ شُرَكَائِهِمْ لِيَرُدُّوهُمْ
وَلِيَلْبَسُوا عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
مَا فَعَلُوا فَمَا يَفْعَلُونَ ۝

وَقَالُوا هَذِهِ أَنْعَامٌ وَحَرْثٌ حِجْرًا

जो कर रहे हो वही करो तुम्हें जल्द ही इस के परिणाम का पता चल जायेगा।

- 1 इस आयत में अरब के मुश्रिकों की कुछ धार्मिक परम्पराओं का खण्डन किया गया है कि सब कुछ तो अल्लाह पैदा करता है और यह उस में से अपने देवताओं का भाग बनाते हैं। फिर अल्लाह का जो भाग है उसे देवताओं को दे देते हैं। परन्तु देवताओं के भाग में से अल्लाह के लिये व्यय करने को तैयार नहीं होते।
- 2 अरब के कुछ मुश्रिक अपनी पुत्रियों को जन्म लेते ही जीवित गाड़ दिया करते थे।

खेत वर्जित है, इसे वही खा सकता है, जिसे हम अपने विचार से खिलाना चाहें। फिर कुछ पशु हैं, जिन की पीठ हराम^[1] (वर्जित) है, और कुछ पशु हैं, जिन पर (बध करते समय) अल्लाह का नाम नहीं लेते, अल्लाह पर आरोप लगाने के कारण, अल्लाह उन्हें उन के आरोप लगाने का बदला अवश्य देगा।

139. तथा उन्होंने ने कहा कि जो इस पशुओं के गर्भों में है वह हमारे पुरुषों के लिये विशेष है, और हमारी पत्नियों के लिये वर्जित है। और यदि मुर्दा हो तो सभी उस में साझी हो सकते^[2] हैं। अल्लाह उन के विशेष करने का कुफल उन्हें अवश्य देगा, वास्तव में वह तत्वज्ञ अति ज्ञानी है।

140. वास्तव में वह क्षति में पड़ गये जिन्होंने ने मूर्खता से किसी ज्ञान के बिना अपनी संतान को बध किया और उस जीविका को जो अल्लाह ने उन्हें प्रदान कि अल्लाह पर आरोप लगा कर, अवैध बना लिया, वह बहक गये और सीधी राह पर नहीं आ सके।

يَطْعَمَهَا إِلَّا مَنْ نَشَاءُ بِيَزَعِيهِمْ وَأَنْعَامٌ
حُرِّمَتْ طُحُورُهَا وَأَنْعَامٌ لَا يَذْكُرُونَ
اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءً عَلَيْهِ سَيَجْزِيهِمْ بِمَا
كَانُوا يَفْعُرُونَ ﴿١٣٩﴾

وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ
لِّذُنُوبِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَىٰ أَزْوَاجِنَا وَإِنْ يَكُنْ
نَيْبَتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ سَيَجْزِيهِمْ وَصْفُهُمْ
إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٤٠﴾

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا
بَغْيِ عِلْمٍ وَحَرَمُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ افْتِرَاءً
عَلَى اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٤٠﴾

1 अर्थात उन पर सवारी करना तथा बोझ लादना अवैध है। (देखिये: सूरह माइदा-103)।

2 अर्थात बधित पशु के गर्भ से बच्चा निकल जाता और जीवित होता तो उसे केवल पुरुष खा सकते थे। और मुर्दा होता तो सभी (स्त्री-पुरुष) खा सकते थे। (देखिये: सूरह नहल 16: 58-59)। सूरह अनग्राम-151, तथा सूरह इस्रा-31)। जैसा कि आधुनिक सभ्य समाज में «सुखी परिवार» के लिये अनेक प्रकार से किया जा रहा है।

141. अल्लाह वही है जिस ने बेलों वाले तथा बिना बेलों वाले बाग़ पैदा किये। तथा खजूर और खेत जिन से विभिन्न प्रकार की पैदावार होती है और जैतून तथा अनार समरूप तथा स्वाद में विभिन्न, इस का फल खाओ जब फले, और फल तोड़ने के समय कुछ दान करो, तथा अपव्यय^[1] (बेजा खर्च) न करो। निःसंदेह अल्लाह बेजा खर्च करने वालों से प्रेम नहीं करता।

142. तथा चौपायों में कुछ सवारी और बोझ लादने योग्य^[2] हैं। और कुछ धरती से लगे^[3] हुये, तुम उन में से खाओ जो अल्लाह ने तुम्हें जीविका प्रदान की है। और शैतान के पदचिन्हों पर न चलो। वास्तव में वह तुम्हारा खुला शत्रु^[4] है।

143. आठ पशु आपस में जोड़े हैं: भेड़ में से दो, तथा बकरी में से दो। आप उन से पूछिये कि क्या अल्लाह ने दोनों के नर हराम (वर्जित) किये

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ جَدَّتِ مَعْرُوشَاتٍ وَعَظِيرَ
مَعْرُوشَاتٍ وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا أَكْلُهُ
وَالرَّيْسُونَ وَالرَّيْمَانَ مُتَشَابِهًا وَغَيْرَ
مُتَشَابِهٍ كُلُّوا مِنْ ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا
حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا
يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ۝

وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولَةٌ وَذُنُبًا كَلْبَاءُ وَإِنَّمَا
رَزَقَكُمْ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوبَ الشَّيْطَانِ
إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝

ثَمَرِيَّةَ أَزْوَاجٍ مِنَ الضَّأْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ
الْمَعْزِ اثْنَيْنِ كُلٌّ أَالَتِكُورَيْنِ حَوْمَامٍ
الْأَثْنَيْنِ أَمَا اسْتَمَلْتُمْ عَلَيْهِ أَرْحَامَ

1 अर्थात् इस प्रकार उन्होंने पशुओं में विभिन्न रूप बना लिये थे। जिन को चाहते अल्लाह के लिये विशेष कर देते और जिसे चाहते अपने देवी देवता के लिये विशेष कर देते। यहाँ इन्हीं अन्ध विश्वासियों का खण्डन किया जा रहा है। दान करो अथवा खाओ परन्तु अपव्यय न करो। क्योंकि यह शैतान का काम है, सब में संतुलन होना चाहिये।

2 जैसे ऊँट और बैल आदि।

3 जैसे बकरी और भेड़ आदि।

4 अल्लाह ने चौपायों को केवल सवारी और खाने के लिये बनाया है, देवी-देवताओं के नाम चढ़ाने के लिये नहीं। अब यदि कोई ऐसा करता है तो वह शैतान का बन्दा है और शैतान के बनाये मार्ग पर चलता है जिस से यहाँ मना किया जा रहा है।

हैं, अथवा दोनों की मादा, अथवा दोनों के गर्भ में जो बच्चे हों? मुझे ज्ञान के साथ बताओ, यदि तुम सच्चे हो।

144. और ऊँट में से दो, तथा गाय में से दो। आप पूछिये कि क्या अल्लाह ने दोनों के नर हराम (वर्जित) किये हैं, अथवा दोनों की मादा, अथवा दोनों के गर्भ में जो बच्चे हों? क्या तुम उपस्थित थे जब अल्लाह ने तुम्हें इस का आदेश दिया था, तो बताओ? उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो बिना ज्ञान के अल्लाह पर झूठ घड़े? निश्चय अल्लाह अत्याचारियों को संमार्ग नहीं दिखाता।

145. (हे नबी!) आप कह दें कि उस में जो मेरी ओर वह्यी (प्रकाशना) की गयी है इन^[1] में से खाने वालों पर कोई चीज़ वर्जित नहीं है, सिवाये उस के जो मरा हुआ हो^[2] अथवा बहा हुआ रक्त हो या सूअर का मांस हो। क्योंकि वह अशुद्ध है, अथवा अवैध हो जिसे अल्लाह के सिवा दूसरे के नाम पर बध किया गया हो। परन्तु जो विवश हो जाये (तो वह खा सकता है) यदि वह द्रोही तथा सीमा लाँघने वाला न हो। तो वास्तव में आप का पालनहार

الْأُنثَىٰ يُؤْتِيٰنِ بِعُلْمٍ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٦٠﴾

وَمِنَ الْأِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ قُلْ
أَلَذَّكَّرِينَ حَوْمَ أَمِ الْأُنثَىٰ إِنْ كُنْتُمْ
عَلَيْهِ رَاحِمًا الْأُنثَىٰ إِنْ كُنْتُمْ شَاهِدِينَ
وَضَعِكُمْ اللَّهُ يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ
اللَّهُ كَذَّابٌ لِلْجِبِلِّ النَّاسِ يَغَيِّرُ عُلْمَهُ إِنْ
يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٦١﴾

قُلْ لَا أُجِدُ فِي مَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَى
طَاعَةٍ يُطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ دَمًا
مَسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خنزيرٍ فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ
فِسْقًا أَهْلًا لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ فَمَنْ اضْطَرَّ غَيْرَ بَاطِلٍ
وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ عَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٦٢﴾

1 जो तुम ने वर्जित किया है।

2 अर्थात् धर्म विधान अनुसार बध न किया गया हो।

अति क्षमी दयावान्^[1] है।

146. तथा हम ने यहूदियों पर नखधारी^[2] जीव हराम कर दिये थे और गाय तथा बकरी में से उन पर दोनों की चर्बियाँ हराम (वर्जित) कर दी^[3] थी। परन्तु जो दोनों की पीठों या आंतों से लगी हों, अथवा जो किसी हड्डी से मिली हुई हो। यह हम ने उन की अवज्ञा के कारण उन्हें^[4] प्रतिकार (बदला) दिया था। तथा निश्चय हम सच्चे हैं।

147. फिर (हे नबी!) यदि यह लोग आप को झुठलायें तो कह दें कि तुम्हारा पालनहार विशाल दयाकारी है तथा उस की यातना को अपराधियों से फेरा नहीं जा सकेगा।

148. मिश्रणवादी अवश्य कहेंगे: यदि अल्लाह चाहता तो हम तथा हमारे पूर्वज (अल्लाह का) साझी न बनाते, और न कुछ हराम (वर्जित) करते। इसी प्रकार इन से पूर्व के लोगों ने (रसूलों को) झुठलाया था, यहाँ तक

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي ظُفْرٍ
وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شَحُومَهُمَا إِلَّا
مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوْ حَوَايَا أَوْ مَا
اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ذَلِكَ جَزَيْنَهُمْ بِبَعْضِهِمْ
وَأَكْأَصْدِقُونَ ۝

فَإِنْ كَذَّبُوا فَقُلْ رَبِّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ
وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ۝

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا
وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَمْنَا مِنْ شَيْءٍ كَذَلِكَ كَذَبَ
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا قُلْ
هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا إِنْ
تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنَّ أَنْتُمْ لِالْمُضِلُّونَ ۝

- 1 अर्थात् कोई भूक से विवश हो जाये तो अपनी प्राण रक्षा के लिये इन प्रतिबंधों के साथ हराम खा ले तो अल्लाह उसे क्षमा कर देगा।
- 2 अर्थात् जिन की उँगलियाँ फटी हुई न हों जैसे ऊँट, शतुरमुर्ग, तथा बत्तख इत्यादि। (इब्ने कसीर)
- 3 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: यहूदियों पर अल्लाह की धिक्कार हो! जब चर्बियाँ वर्जित की गईं तो उन्हें पिघला कर उन का मुल्य खा गये। (बुखारी - 2236)
- 4 देखिये: सूरह आले इमरान, आयत: 93 तथा सूरह निसा आयत: 160।

कि हमारी यातना का स्वाद चख लिया। (हे नबी!) उन से पूछिये कि क्या तुम्हारे पास (इस विषय में) कोई ज्ञान है, जिसे तुम हमारे समक्ष प्रस्तुत कर सको? तुम तो केवल अनुमान पर चलते हो, और केवल आंकलन कर रहे हो।

149. (हे नबी!) आप कह दें कि पूर्ण तर्क अल्लाह ही का है। तो यदि वह चाहता तो तुम सब को सुपथ दिखा देता^[1]।

150. आप कहिये कि अपने साक्षियों (गवाहों) को लाओ^[2], जो साक्ष्य दें कि अल्लाह ने इसे हराम (अवैध) कर दिया है। फिर यदि वह साक्ष्य (गवाही) दें तब भी आप उन के साथ हो कर इसे न मानें, तथा उन की मनमानी पर न चलें, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठला दिया, और परलोक पर ईमान (विश्वास) नहीं रखते, तथा दूसरों को अपने पालनहार के बराबर करते हैं।

151. आप उन से कहें कि आओ मैं तुम्हें (आयतें) पढ़ कर सुना दूँ कि तुम पर तुम्हारे पालनहार ने क्या हराम

قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ۝

قُلْ هَلْ سَأَلْتُمْ لِكُفْرِ الدِّينِ يَشْهَدُونَ أَنْ اللَّهُ حَرَّمَ هَذَا إِنْ شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدُوا مَعَهُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ يَرْبُّوهُمْ يُعَدِلُونَ ۝

قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبِّيَ عَلَيَّكُمْ إِلَّا تَشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَلَا

- 1 परन्तु उस ने इसे लोगों को समझ बूझ दे कर प्रत्येक दशा का एक परिणाम निर्धारित कर दिया है। और सत्योसत्य दोनों की राहें खोल दी हैं। अब जो व्यक्ति जो राह चाहे अपना ले। और अब यह कहना अज्ञानता की बात है कि यदि अल्लाह चाहता तो हम संमार्ग पर होते।
- 2 हदीस में है कि सब से बड़ा पाप: अल्लाह का साझी बनाना तथा माता-पिता के साथ बुरा व्यवहार और झूठी शपथ लेना है। (तिर्मिज़ी -3020, यह हदीस हसन है।)

(अवैध) किया है? वह यह है कि किसी चीज़ को उस का साझी न बनाओ। और माता- पिता के साथ उपकार करो। और अपनी संतानों को निर्धनता के भय से बध न करो। हम तुम्हें जीविका देते हैं और उन्हें भी देंगे और निर्लज्जा की बातों के समीप भी न जाओ, खुली हों अथवा छुपी, और जिस प्राण को अल्लाह ने हराम (अवैध) कर दिया है उसे बध न करो परन्तु उचित कारण^[1] से। अल्लाह ने तुम्हें इस का आदेश दिया है ताकि इसे समझो।

152. और अनाथ के धन के समीप न जाओ परन्तु ऐसे ढंग से जो उचित हो। यहाँ तक कि वह अपनी युवा अवस्था को पहुँच जाये। तथा नाप - तौल न्याय के साथ पूरा करो। हम किसी प्राण पर उस की सकत से अधिक भार नहीं रखते और जब बोलो तो न्याय करो, यद्यपि समीपवर्ती ही क्यों न हो। और अल्लाह का वचन पूरा करो, उस ने तुम्हें इस का आदेश दिया है, संभवतः तुम शिक्षा ग्रहण करो।

153. तथा (उस ने बताया है कि) यह

تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ مِنْ إِمْلَاقٍ لَعَنَّكُمْ تَتَزَوَّجُكُمْ
وَأَيْتَاهُمْ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا
وَمَا بَطَّنَ ۖ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا
بِالْحَقِّ ذَلِكُمْ وَصَّكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ
أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۖ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ
وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۖ لَا تَكْفُرُوا بِنَفْسِكُمْ إِلَّا سَعْمًا ۖ
وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدُوا ۖ وَأَلْوَكَانَ ذَا فَرْسٍ ۖ وَبِعَهْدِ
اللَّهِ أَوْفُوا ذَلِكُمْ وَصَّكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝

وَأَنَّ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ فَالْبُغْوُ وَلَا تَتَّبِعُوا

- 1 सहीह हदीस में है कि किसी मुसलमान का खून तीन कारणों के सिवा अवैध है:
1. किसी ने विवाहित हो कर व्यभिचार किया हो।
 2. किसी मुसलमान को जान बूझ कर अवैध मार डाला हो।
 3. इस्लाम से फिर गया हो और अल्लाह तथा उस के रसूल से युद्ध करने लगे। (सहीह मुस्लिम, हदीस-1676)

(इस्लाम ही) अल्लाह की सीधी राह^[1] है। अतः इसी पर चलो और दूसरी राहों पर न चलो अन्यथा वह तुम्हें उस की राह से दूर कर के तित्तर बित्तर कर देंगे। यही है जिस का आदेश उस ने तुम्हें दिया है, ताकि तुम उस के आज्ञाकारी रहो।

السُّبُلَ تَفْتَرُونَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ذَلِكُمْ وَرُسُلُهُ لَكُمْ تَتَقُونَ ﴿٦﴾

154. फिर हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की थी उस पर पुरस्कार पूरा करने के लिये जो सदाचारी हो, तथा प्रत्येक वस्तु के विवरण के लिये, तथा यह मार्गदर्शन और दया थी, ताकि वह अपने पालनहार से मिलने पर ईमान लायें।

ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّعَالَمِهِمْ يُلْقَاهُ رِيبَهُمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾

155. तथा (उसी प्रकार) यह पुस्तक (कुर्आन) हम ने अवतरित की है, यह बड़ा शुभकारी है। अतः इस पर चलो^[2] और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम पर दया की जाये।

وَهَذَا كِتَابُنَا أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكًا فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٦﴾

156. ताकि (हे अरब वासियो!) तुम यह न कहो कि हम से पूर्व दो सुमदाय (यहूद तथा ईसाई) पर पुस्तक उतारी गयी और हम उन के पढ़ने-पढ़ाने से अनजान रह गये।

أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَنْزَلَ الْكِتَابَ عَلَى طَائِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغَفْلِينَ ﴿٦﴾

157. या यह न कहो कि यदि हम पर

أَوْ تَقُولُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْنَا الْكِتَابُ لَكُنَّا أَهْدَىٰ

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने एक लकीर बनाई, और कहा: यह अल्लाह की राह है। फिर दायें बायें कई लकीरें खींची और कहा: इन पर शैतान है जो इन की ओर बुलाता है और यही आयत पढ़ी। (मुसन्द अहमद-431)

2 अर्थात अब अहले किताब सहित पूरे संसार वासियों के लिये प्रलय तक इसी कुर्आन का अनुसरण ही अल्लाह की दया का साधन है।

पुस्तक उतारी जाती तो निश्चय हम उन से अधिक सीधी राह पर होते, तो अब तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से एक खुला तर्क आ गया, मार्ग दर्शन तथा दया आ गई। फिर उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को मिथ्या कह दे, और उन से कतरा जाये? और जो लोग हमारी आयतों से कतराते हैं हम उन के कतराने के बदले उन्हें कड़ी यातना देंगे।

158. क्या वह लोग इसी बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन के पास फ़रिश्ते आ जायें, या स्वयं उन का पालनहार आ जाये या आप के पालनहार की कोई आयत (निशानी) आ जाये?^[1] जिस दिन आप के पालनहार की कोई निशानी आ जायेगी तो किसी प्राणी को उस का ईमान लाभ नहीं देगा जो पहले ईमान न लाया हो, या अपने ईमान की स्थिति में कोई सत्कर्म न किया हो। आप कह

وَمِنْهُمْ مَّنْ قَدَّ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ
وَهَدَىٰ وَرَحْمَةً ۖ فَمَن أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ
بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا سَجِرَى الَّذِينَ
يَصْدِفُونَ ۚ عَنِ الْيَتِيمَ سَاءَ الْعَدَابُ بِمَا كَانُوا
يَصْدِفُونَ ﴿٥٨﴾

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ
أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ
رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيْمَانُهَا لَوَ تَكُنْ أَمَّتْ مِن قَبْلُ
أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا قُلْ انظُرُوا أَنَا
مُنظَرُونَ ﴿٥٨﴾

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि इन सभी तर्कों के प्रस्तुत किये जाने पर भी यदि यह ईमान नहीं लाते तो क्या उस समय ईमान लायेंगे जब फ़रिश्ते उन के प्राण निकालने आयेंगे? या प्रलय के दिन जब अल्लाह इन का निर्णय करने आयेगा? या जब प्रलय की कुछ निशानियाँ आ जायेंगी? जैसे सूर्य का पश्चिम से निकल आना। सहीह बुखारी की हदीस है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि प्रलय उस समय तक नहीं आयेंगी जब तक कि सूर्य पश्चिम से नहीं निकलेगा। और जब निकलेगा तो जो देखेंगे सभी ईमान ले आयेंगे। और यह वह समय होगा कि किसी प्राणी को उस का ईमान लाभ नहीं देगा। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (सहीह बुखारी, हदीस-4636)

दें कि तुम प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

159. जिन लोगों ने अपने धर्म में विभेद किया और कई समुदाय हो गये, (हे नबी!) आप का उन से कोई सम्बन्ध नहीं, उन का निर्णय अल्लाह को करना है, फिर वह उन्हें बतायेगा कि वह क्या कर रहे थे।
160. जो (प्रलय के दिन) एक सत्कर्म ले कर (अल्लाह से) मिलेगा, उसे उस के दस गुना प्रतिफल मिलेगा। और जो कुकर्म लायेगा तो उस को उसी के बराबर कुफल दिया जायेगा, तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।
161. (हे नबी!) आप कह दें कि मेरे पालनहार ने निश्चय मुझे सीधी राह (सुपथ) दिखा दी है। वही सीधा धर्म जो एकेश्वरवादी इब्राहीम का धर्म था, और वह मुश्रिकों में से न था।
162. आप कह दें कि निश्चय मेरी नमाज़ और मेरी कुर्बानी तथा मेरा जीवन-मरण संसार के पालनहार अल्लाह के लिये है।
163. जिस का कोई साझी नहीं तथा मुझे इसी का आदेश दिया गया है और मैं प्रथम मुसलमानों में से हूँ।
164. आप उन से कह दें कि क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी ओर पालनहार की खोज करूँ? जब कि वह (अल्लाह) प्रत्येक चीज़ का पालनहार है। तथा

إِنَّ الَّذِينَ فَتَقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شَيْعًا لَسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿١٥٩﴾

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦٠﴾

قُلْ إِنِّي هَدَيْتُ رَبِّي إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ وَدِينًا قِيمًا مِثْلَ آبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَوَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٦١﴾

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٢﴾

لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٦٣﴾

قُلْ أَغْفِرُ لِلَّهِ الْبَغْيَ رَبَّنَا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ وَلَا أَكْسِبُ كُلَّ نَفْسٍ الظَّالِمَاتِ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَى ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تَرْجَعُونَ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿١٦٤﴾

कोई प्राणी कोई भी कुकर्म करेगा,
तो उस का भार उसी पर होगा।
और कोई किसी दूसरे का बोझ नहीं
उठायेगा। फिर (अन्ततः) तुम्हें अपने
पालनहार के पास ही जाना है। तो
जिन बातों में तुम विभेद कर रहे हो
वह तुम्हें बता देगा।

165. वही है जिस ने तुम्हें धरती में
अधिकार दिया है और तुम में से कुछ
को (धन शक्ति में) दूसरे से कई
श्रेणियाँ ऊँचा किया है। ताकि उस में
तुम्हारी परीक्षा^[1] ले जो तुम्हें दिया
है। वास्तव में आप का पालनहार
शीघ्र ही दण्ड देने वाला^[2] है और
वास्तव में वह अति क्षमी दयावान् है।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلْقَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ
فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ فِي مَا أُنزِلْتُمْ أَنَّ رَبَّكُمْ
سَرِيعُ الْعِقَابِ وَأَنَّكُمْ لَعَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: कौबा के रब्ब की शपथ! वह क्षति में पड़ गया। अबूज़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: कौन? आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: (धनी)। परन्तु जो दान करता रहता है। (सहीह बुख़ारी-6638, सही मुस्लिम-990)

2 अर्थात् अवैज्ञाकारियों को।

सूरह आराफ़ - 7



सूरह आराफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 206 आयतें हैं।

इस में «आराफ़» की चर्चा है इस लिये इस का नाम सूरह आराफ़ है।

- इस में अल्लाह के भेजे हुये नबी का अनुसरण करने पर बल दिया गया है, जिस में डराने तथा सावधान करने की भाषा अपनाई गई है।
- इस में आदम (अलैहिस्सलाम) को शैतान के धोखा देने का वर्णन किया गया है ताकि मनुष्य उस से सावधान रहे।
- इस में यह बताया गया है कि अगले नबियों की जातियाँ नबियों के विरोध का दुष्परिणाम देख चुकी है, फिर अहले किताब को संबोधित किया गया है और एक जगह पूरे संसार वासियों को संबोधित किया गया है।
- इस में बताया गया है कि सभी नबियों ने एक अल्लाह की वंदना की, और उसी की ओर बुलाया और सब का मूल धर्म एक है।
- इस में यह भी बताया गया है कि ईमान लाने के पश्चात् निफ़ाक़ (द्विधा) का क्या दुष्परिणाम होता है और वचन तोड़ने का अन्त क्या होता है।
- सूरह के अन्त में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के साथियों को उपदेश देने के कुछ गुण बताये गये हैं और विरोधियों की बातों को सहन करने तथा उत्तोजित हो कर ऐसा कार्य करने से रोका गया है जो इस्लाम के लिये हानिकारक हों।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़, लाम, मीम, साद।
2. यह पुस्तक है, जो आप की ओर उतारी गई है। अतः (हे नबी!) आप के मन में इस से कोई संकोच न

النَّبِيِّ

كِتَابٍ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِي صَدْرِكَ حَرَجٌ
مِّنْهُ لِتُنذِرَ بِهِ وَذُرَى الْمُؤْمِنِينَ

हो, ताकि आप इस के द्वारा सावधान करें^[1], और ईमान वालों के लिये उपदेश है।

3. (हे लोगो!) जो तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर उतारा गया है उस पर चलो, और उस के सिवा दूसरे सहायकों के पीछे न चलो। तुम बहुत थोड़ी शिक्षा लेते हो।
4. तथा बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने ध्वस्त कर दिया है, उन पर हमारा प्रकोप अकस्मात् रात्रि में आया या जब वह दोपहर के समय आराम कर रहे थे।
5. और जब उन पर हमारा प्रकोप आ पड़ा तो उन की पुकार यही थी कि वास्तव में हम ही अत्याचारी^[2] थे।
6. तो हम उन से अवश्य प्रश्न करेंगे जिन के पास रसूलों को भेजा गया तथा रसूलों से भी अवश्य^[3] प्रश्न करेंगे।
7. फिर हम अपने ज्ञान से उन के समक्ष वास्तविकता का वर्णन कर देंगे। तथा हम अनुपस्थित नहीं थे।
8. तथा उस (प्रलय के) दिन (कर्माँ

إِسْمَعُوا مَا أَنزَلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا
مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ۝

وَكَمْ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا فَجَاءَهَا بَأْسُنَا بَيِّنًا
أَوْ هُمْ قَائِلُونَ ۝

فَمَا كَانَ دَعْوَاهُمْ إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا إِلَّا أَنْ قَالُوا إِنَّا
كُنَّا ظَالِمِينَ ۝

فَلَنَسْأَلَنَّ الَّذِينَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ وَلَنَسْأَلَنَّ
الرُّسُلَ الَّذِينَ أُرْسِلُوا عَلَيْهِمْ ۝

فَلَنَقْضَنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمِهِ وَمَا كُنَّا غَائِبِينَ ۝

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ ۝ فَمَنْ تَقَلَّتْ مَوَازِينُهُ

1 अर्थात् अल्लाह के इन्कार तथा उस के दुष्परिणाम से।

2 अर्थात् अपनी हठधर्मी को उस समय स्वीकार किया।

3 अर्थात् प्रलय के दिन उन समुदायों से प्रश्न किया जायेगा कि तुम्हारे पास रसूल आये या नहीं? वह उत्तर देंगे: आये थे। परन्तु हम ही अत्याचारी थे। हम ने उन की एक न सुनी। फिर रसूलों से प्रश्न किया जायेगा कि उन्होंने अल्लाह का संदेश पहुँचाया या नहीं? तो वह कहेंगे: अवश्य हम ने तेरा संदेश पहुँचा दिया।

की) तौल न्याय के साथ होगी।
फिर जिस के पलड़े भारी होंगे वही
सफल होंगे।

9. और जिन के पलड़े हलके होंगे तो
वही स्वयं को क्षति में डाल लिये
होंगे। क्यों कि वह हमारी आयतों के
साथ अत्याचार करते^[1] रहे।
10. तथा हम ने तुम्हें धरती में अधिकार
दिया और उस में तुम्हारे लिये जीवन
के संसाधन बनाये। तुम थोड़े ही
कृतज्ञ होते हो।
11. और हम ने ही तुम्हें पैदा
किया^[2], फिर तुम्हारा रूप बनाया,
फिर हम ने फ़रिश्तों से कहा कि
आदम को सज्दा करो तो इब्लीस के
सिवा सब ने सज्दा किया। वह सज्दा
करने वालों में से न हुआ।
12. अल्लाह ने उस से कहा: किस बात ने
तुझे सज्दा करने से रोक दिया जब
कि मैं ने तुझे आदेश दिया था? उस
ने कहा: मैं उस से उत्तम हूँ। मेरी
रचना तू ने अग्नि से की, और उस
की मिट्टी से।
13. तो अल्लाह ने कहा: इस (स्वर्ग) से
उतर जा। तेरे लिये यह योग्य नहीं
कि इस में घमंड करो। तू निकल जा।
वास्तव में तू अपमानितों में है।

قَالَ لَكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا
أَنفُسَهُمْ بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَظْلِمُونَ ۝

وَلَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا
مَعَايِشَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝

وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ
اسْجُدْوا لِلْآدَمِ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ لَهُ كِبْرٌ مِّنَ
السَّاعِدِينَ ۝

قَالَ مِمَّنَّعَكَ إِلَّا لَسَجْدًا إِذْ أَمَرْتُكَ قَالَ أَنَا خَيْرٌ
مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ ۝

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا قَائِلًا لَّيْسَ لَكَ أَنْ تَتَكَبَّرَ فِيهَا
فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصَّغِيرِينَ ۝

1 भावार्थ यह है कि यह अल्लाह का नियम है कि प्रत्येक व्यक्ति तथा समुदाय को
उन के कर्मानुसार फल मिलेगा। और कर्मों की तौल के लिये अल्लाह ने नाप
निर्धारित कर दी है।

2 अर्थात् मूल पुरुष आदम को अस्तित्व दिया।

14. उस ने कहा: मुझे उस दिन तक के लिये अवसर दे दो जब लोग फिर जीवित किये जायेंगे।
15. अल्लाह ने कहा: तुझे अवसर दिया जा रहा है।
16. उस ने कहा: तो जिस प्रकार तू ने मुझे कुपथ किया है मैं भी तेरी सीधी राह पर इन की घात में लगा रहूँगा।
17. फिर उन के पास उन के आगे और पीछे तथा दायें और बायें से आऊँगा।^[1] और तू उन में से अधिकतर को (अपना) कृतज्ञ नहीं पायेगा।^[2]
18. अल्लाह ने कहा: यहाँ से अपमानित धिक्कारा हुआ निकल जा। जो भी उन में से तेरी राह चलेगा तो मैं तुम सभी से नरक को अवश्य भर दूँगा।
19. और हे आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो और जहाँ से चाहो खाओ। और इस वृक्ष के समीप न जाना अन्यथा अत्याचारियों में हो जाओगे।
20. तो शैतान ने दोनों को संशय में डाल दिया, ताकि दोनों के लिये उन के गुप्तांगों को खोल दे जो उन से छुपाये गये थे। और कहा: तुम्हारे पालनहार ने तुम दोनों को इस वृक्ष से केवल इसलिये रोक दिया है कि तुम दोनों फरिश्ते अथवा सदावासी हो जाओगे।

قَالَ أَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٤﴾

قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ﴿١٥﴾

قَالَ فَمَا كُفِّرْتَنِي لَا تَعْدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿١٦﴾

ثُمَّ لَآتِيَنَّهُمْ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ ﴿١٧﴾

قَالَ الْحَزَنُ مِنْهُمَا مَذْمُومًا مَدْحُورًا لَمَنْ يَتَّبِعْ مِنْهُمُ الْكَاذِبِينَ ﴿١٨﴾

وَيَا آدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٩﴾

فَوَسَّسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِبَيْدِي لَهَا مَا وُورِيَ عَذْمًا مِنْ سَوْآتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهَاكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ إِلَّا أَنْ تَكُونَا مَلَائِكَةً أَوْ تَكُونَا مِنَ الْخَالِدِينَ ﴿٢٠﴾

1 अर्थात प्रत्येक दिशा से घेरूँगा और कुपथ कहूँगा।

2 शैतान ने अपना विचार सच्च कर दिखाया और अधिकतर लोग उस के जाल में फंस कर शिर्क जैसे महा पाप में पड़ गये। (देखिये सूरह सबा आयत-20)

21. तथा दोनों के लिये शपथ दी कि वास्तव में मैं तुम दोनों का हितैषी हूँ
22. तो उन दोनों को धोखे से रिझा लिया। फिर जब दोनों ने उस वृक्ष का स्वाद लिया तो उन के लिये उन के गुप्तांग खुल गये और वे उन पर स्वर्ग के पत्ते चिपकाने लगे। और उन्हें उन के पालनहार ने आवाज़ दी: क्या मैं ने तुम्हें इस वृक्ष से नहीं रोका था। और तुम दोनों से नहीं कहा था कि शैतान तुम्हारा खुला शत्रू है?
23. दोनों ने कहा: हे हमारे पालनहार! हम ने अपने ऊपर अत्याचार कर लिया और यदि तू हमें क्षमा तथा हम पर दया नहीं करेगा तो हम अवश्य ही नाश हो^[1] जायेंगे।
24. उस ने कहा: तुम सब उतरो, तुम एक दूसरे के शत्रू हो। और तुम्हारे लिये धरती में रहना और एक निर्धारित समय तक जीवन का साधन है।
25. तथा कहा: तुम उसी में जीवित रहोगे और उसी में मरोगे और उसी से (फिर) निकाले जाओगे।
26. हे आदम के पुत्रो! हम ने तुम पर ऐसा वस्त्र उतार दिया है जो तुम्हारे गुप्तांगों को छुपाता, तथा शोभा है। और अल्लाह की आज्ञाकारिता का वस्त्र ही सर्वोत्तम है। यह अल्लाह

وَقَاسَمَهُمَا إِنِّي لَكُمَا لِنَاصِحٍ ۝

فَدَلَّهُمَا ابْغُرُورًا فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَكُمَا سَوَاتِمُكُمْ
وَطَفِقَا يَخْصِفْنَ عَلَيْهُمَا مِنْ وَرَقِ الْجَنَّةِ وَوَادَعَهُمَا
الْمَآءُ أَنَّهُمَا عَن تِلْكَ الشَّجَرَةِ وَأَقُلُّ لَكُمَا إِنَّ الشَّيْطَانَ
لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝

قَالَ رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنفُسَنَا وَإِن لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا
لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝

قَالَ اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي
الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ۝

قَالَ فِيهَا تَحْبِبُونَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ وَمِمَّا تَخْرُجُونَ ۝

يٰۤاٰدَمُ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ لِبَاسًا لِّيُوَفِّيَ سَوَاتِمَكُمْ
وَرِيْشًا وَّلِبَاسُ التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ذٰلِكَ مِنْ اٰتِ
اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝

1 अर्थात आदम तथा हव्वा ने अपने पाप के लिये अल्लाह से क्षमा माँग ली। शैतान के समान अभिमान नहीं किया।

की आयतों में से एक है, ताकि वह शिक्षा लें।^[1]

27. हे आदम के पुत्रो! ऐसा न हो कि शैतान तुम्हें बहका दे जैसे तुम्हारे माता-पिता को स्वर्ग से निकाल दिया, उन के वस्त्र उतरवा दिये ताकि उन्हें उन के गुप्तांग दिखा दे। वास्तव में वह तथा उस की जाति तुम्हें ऐसे स्थान से देखती है जहाँ से तुम उन्हें नहीं देख सकते। वास्तव में हम ने शैतानों को उन का सहायक बना दिया है जो ईमान नहीं रखते।
28. तथा जब वह (मुशरिक) कोई निर्लज्जा का काम करते हैं तो कहते हैं कि इसी (रीति) पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है। तथा अल्लाह ने हमें इस का आदेश दिया है। (हे नबी!) आप उन से कह दें कि अल्लाह कभी निर्लज्जा का आदेश नहीं देता। क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात का आरोप धरते हो जिसे तुम नहीं जानते?
29. आप उन से कह दें कि मेरे पालनहार ने न्याय का आदेश दिया है। (और वह यह है कि) प्रत्येक मस्जिद में नमाज़ के समय अपना ध्यान सीधे उसी की ओर करो^[2] और उस के लिये धर्म को विशुद्ध कर के उसी को पुकारो। जिस

يَبْنِي أَدَمَ لَا يَفْتِنَكُمْ الشَّيْطَانُ كَمَا أَخْرَجَ آدَمَ مِنْ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا مِنَ السَّمِيعَاتِ إِنَّهُ يَرِيكُمْ هُوَ وَقَبِيلُهُ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ إِنَّا جَعَلْنَا الشَّيْطَانَ أَوْلِيَاءَ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٧﴾

وَإِذَا فَعَلُوا فَالِحَةً قَالُوا وَجَدْنَا عَلَيْهَا آيَاتِنَا وَاللَّهُ أَمْرًا بِهَا قُلْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾

قُلْ أَمْرِي بِالْقِسْطِ وَأَقِيمُوا وُجُوهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ ﴿٢٩﴾

1 तथा उस के आज्ञाकारी एवं कृतज्ञ बनें।

2 इस आयत में सत्य धर्म के निम्नलिखित तीन मूल नियम बताये गये हैं: कर्म में संतुलन, वंदना में अल्लाह की ओर ध्यान, तथा धर्म में विशुद्धता तथा एक अल्लाह की वंदना करना।

प्रकार उस ने तुम्हें पहले पैदा किया है उसी प्रकार (प्रलय में) फिर जीवित कर दिये जाओगे।

30. एक समुदाय को उस ने सुपथ दिखा दिया और दूसरा समुदाय कुपथ पर स्थित रह गया। वास्तव में इन लोगों ने अल्लाह के सिवा शैतानों को सहायक बना लिया, फिर भी वह समझते हैं कि वास्तव में वही सुपथ पर है।

31. हे आदम के पुत्रो! प्रत्येक मस्जिद के पास (नमाज़ के समय) अपनी शोभा धारण करो^[1], तथा खाओ और पीओ और बेजा खर्च न करो। वस्तुतः वह बेजा खर्च करने वालों से प्रेम नहीं करता।

32. (हे नबी!) इन (मिश्रणवादियों) से कहिये कि किस ने अल्लाह की उस शोभा को हराम (वर्जित) किया है^[2] जिसे उस ने अपने सेवकों के लिये निकाला है? तथा स्वच्छ जीविकाओं को? आप कह दें: यह संसारिक जीवन में उन के लिये (उचित) है, जो ईमान लाये तथा प्रलय के दिन (उन्हीं के लिये) विशेष^[3] है। इसी प्रकार हम

فَرِيقًا هَدَىٰ وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَالَةُ
إِنَّهُمْ اتَّخَذُوا الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِ
اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ أَنََّّهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٣٠﴾

يٰۤاٰدَمُ خُذْ زِينَتَكَ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلْ وَكُلُوْا
وَأَشْرُوا وَلَا تُسْرِفُوْا اِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللّٰهِ الَّتِي اُخْرِجَ لِعِبَادِهِ وَالطَّيِّبَاتِ
مِنَ الرِّزْقِ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كَذٰلِكَ نَقُصُّ لَكَ الْاٰيٰتِ
الَّتِيْ لِقَوْمٍ يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٢﴾

- 1 कुरैश नग्न होकर काँबा की परिक्रमा करते थे। इसी पर यह आयत उतरी।
- 2 इस आयत में सन्यास का खण्डन किया गया है कि जीवन के सुखों तथा शोभावों से लाभान्वित होना धर्म के विरुद्ध नहीं है। इन सब से लाभान्वित होने में ही अल्लाह की प्रसन्नता है। नग्न रहना तथा संसारिक सुखों से वंचित हो जाना सत्धर्म नहीं है। धर्म की यह शिक्षा है कि अपनी शोभावों से सुसज्जित हो कर अल्लाह की वंदना और उपासना करो।
- 3 एक बार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से

अपनी आयतों का सविस्तार वर्णन उन के लिये करते हैं जो ज्ञान रखते हों।

33. (हे नबी!) आप कह दें कि मेरे पालनहार ने तो केवल खुले तथा छुपे कुकर्मों और पाप तथा अवैध विद्रोह को ही हराम (वर्जित) किया है, तथा इस बात को कि तुम उसे अल्लाह का साझी बनाओ जिस का कोई तर्क उस ने नहीं उतारा है तथा अल्लाह पर ऐसी बात बोलो जिसे तुम नहीं जानते।
34. प्रत्येक समुदाय का^[1] एक निर्धारित समय है, फिर जब वह समय आ जायेगा तो क्षण भर देर या सवेर नहीं होगी।
35. हे आदम के पुत्रो! जब तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आ जायें जो तुम्हें मेरी आयतें सुना रहे हों तो जो डरेगा और अपना सुधार कर लेगा तो उस के लिये कोई डर नहीं होगा, और न वह^[2] उदासीन होंगे।
36. और जो हमारी आयतें झुठलायेंगे और उन से घमंड करेंगे वही नारकी होंगे। और वही उस में सदावासी होंगे।
37. फिर उस से बड़ा अत्याचारी कौन

قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ
وَالرِّبَاَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ تُشْرِكُوا بِاللَّهِ مَا لَهُ
يُزِيلُ بِهِ سُلْطَانًا وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٣﴾

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ وَإِذَا أَجَلَ أَجْلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ
سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٣٤﴾

يَا بَنِي آدَمَ إِنَّا يَا تَبِيئَكُمْ رَسُولٌ مُبَشِّرٌ لِقِصُومٍ عَلَيْكُمْ
الَّذِينَ قَبِلُوا مِنْ آتِنَا فَلَا خَوْفَ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ﴿٣٥﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِالْآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا أُولَئِكَ
أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٦﴾

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ

कहा: क्या तुम प्रसन्न नहीं हो कि संसार काफ़िरों के लिये हो और परलोक हमारे लिये? (बुखारी- 2468 , मुस्लिम- 1479)

1 अर्थात् काफ़िर समुदाय की यातना के लिये।

2 इस आयत में मानव जाति के मार्गदर्शन के लिये समय समय पर रसूलों के आने के बारे में सूचित किया गया है और बताया जा रहा है कि अब इसी नियमानुसार अंतिम रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आ गये हैं। अतः उन की बात मान लो, अन्यथा इस का परिणाम स्वयं तुम्हारे सामने आ जायेगा।

है जो अल्लाह पर मिथ्या बातें बनाये अथवा उस की आयतों को मिथ्या कहे? उन को उन के भाग्य में लिखा भाग मिल जायेगा। यहाँ तक कि जिस समय हमारे फ़रिश्ते उन का प्राण निकालने के लिये आयेंगे तो उन से कहेंगे कि वह कहाँ है जिन को तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे? वह कहेंगे कि वह तो हम से खो गये, तथा अपने ही विरुद्ध साक्षी (गवाह) बन जायेंगे कि वस्तुतः वह काफ़िर थे।

بِأَلِيهِمْ أُولَئِكَ يَتْلُوهُمْ ذَمِّبُهُمْ مِنَ الْكُذِبِ
حَتَّى إِذَا جَاءَهُمْ رَسُولُنَا يُكْوِفُونَهُمْ قَالُوا
أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالُوا
صَلُّوا عَلَيْنَا وَشَهِدُوا عَلَيْنَا فَمِنْ كَانُوا
كَفِرِينَ ۝

38. अल्लाह का आदेश होगा कि तुम भी प्रवेश कर जाओ उन समुदायों में जो तुम से पहले के जिनों और मनुष्यों में से नरक में हैं। जब भी कोई समुदाय (नरक में) प्रवेश करेगा तो अपने समान दूसरे समुदाय को धिक्कार करेगा, यहाँ तक कि जब उस में सब एकत्र हो जायेंगे तो उन का पिछला अपने पहले के लिये कहेगा: हे हमारे पालनहार इन्होंने ही हमें कुपथ किया है। अतः इन्हें दुगनी यातना दे। वह (अल्लाह) कहेगा तुम में से प्रत्येक के लिये दुगनी यातना है, परन्तु तुम्हें ज्ञान नहीं।

قَالَ ادْخُلُوا فِي آيَةِ امْرِئِكُمْ وَقَدْ خَلَّتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِنَ الْجِنِّ
وَالْإِنْسِ فِي النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَعَنَتْ آخِثَهَا
حَتَّى إِذَا دُفِنُوا فِيهَا جَمِيعًا قَالَتْ أُحْرُهُمْ
لَوْلَا نُهُم رَبَّنَا هَؤُلَاءِ أَصَلُّوا فَاذْرِهِمْ عَدَابًا ضَعْفًا
مِنَ النَّارِ قَالَ لِكُلِّ ضَعْفٌ وَلَكِنْ أَتَعْلَمُونَ ۝

39. तथा उन का पहला समुदाय अपने दूसरे समुदाय से कहेगा: (यदि हम दौषी थे) तो हम पर तुम्हारी कोई प्रधानता नहीं^[1] हुई, तो तुम अपने

وَقَالَتْ أُولَهُمْ لَاحِرُهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْهَا
مِنْ فَضْلٍ فذُو الْعَدَابِ بِمَا كُنْتُمْ
تَكْسِبُونَ ۝

1 और हम और तुम यातना में बराबर हैं। आयत में इस तथ्य की ओर संकेत है कि कोई समुदाय कुपथ होता है तो वह स्वयं कुपथ नहीं होता, वह दूसरों को भी अपने कुचरित्र से कुपथ करता है अतः सभी दुगनी यातना के अधिकारी हूयें।

कुकर्माँ की यातना का स्वाद लो

40. वास्तव में जिन्हों ने हमारी आयतों को झूठला दिया और उन से अभिमान किया उन के लिये आकाश के द्वार नहीं खोले जायेंगे और न वह स्वर्ग में प्रवेश करेंगे, जब तक^[1] ऊँट सूई के नाके से पार न हो जाये। और हम इसी प्रकार अपराधियों को बदला देते हैं।
41. उन्हीं के लिये नरक का बिछौना और उन के ऊपर से ओढ़ना होगा। और इसी प्रकार हम अत्याचारियों को प्रतिकार (बदला^[2]) देते हैं।
42. और जो ईमान लाये और सत्कर्म किये, और हम किसी पर उस की सकत से (अधिक) भार नहीं रखते। वही स्वर्गी है और वही उस में सदावासी होंगे।
43. तथा उन के दिलों में जो द्वेष होगा उसे हम निकाल देंगे।^[3] उन (स्वर्गी में) नहरें बहती होंगी तथा वह कहेंगे कि उस अल्लाह की प्रशंसा है जिस ने हमें इस की राह दिखाई और यदि अल्लाह हमें मार्गदर्शन न देता तो हमें मार्गदर्शन न मिलता। हमारे पालनहार के रसूल सत्य ले कर आये, तथा उन्हें पुकारा जायेगा कि

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا
نَخْفَعُ لَهُمُ آيَاتِ السَّمَاءِ وَلَا يَذُوقُونَ الْجَنَّةَ
حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي
الْمُجْرِمِينَ ۝

لَهُمْ مِنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۚ وَكَذَٰلِكَ
نَجْزِي الظَّالِمِينَ ۝

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا
إِلَّا وُسْعَهَا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ ۝

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غَيْلٍ فَتَجَرَّبُوا
تَحِيْمًا ۚ وَاللَّهُ وَكَأَلَىٰ الْحَمْدِ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا
لِهَٰذَا ۖ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنَّ هَدَانَا اللَّهُ ۖ لَقَدْ
جَاءَتْ رُسُلٌ رَبِّنَا بِالْحَقِّ وَوَدُّوا أَنْ تَكْفُرَ الْجِنَّةُ
أُورِثَتْ مُوَاهِبًا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

1 अर्थात् उन का स्वर्ग में प्रवेश असंभव होगा।

2 अर्थात् उन के कुकर्माँ तथा अत्याचारों का।

3 स्वर्गियों को सब प्रकार के सुख, सुविधा के साथ यह भी बड़ी नेमत मिलेगी कि उन के दिलों का बैर निकाल दिया जायेगा, ताकि स्वर्ग में मित्र बन कर रहें। क्योंकि आपस के बैर से सब सुख किरकिरा हो जाता है।

इस स्वर्ग के अधिकारी तुम अपने सत्कर्मों के कारण हुये हो।

44. तथा स्वर्गवासी नरकवासियों को पुकारेंगे कि हम को हमारे पालनहार ने जो वचन दिया था उसे हम ने सच्च पाया, तो क्या तुम्हारे पालनहार ने तुम्हें जो वचन दिया था उसे तुम ने सच्च पाया? वह कहेंगे कि हाँ। फिर उन के बीच एक पुकारने वाला पुकारेगा कि अल्लाह की धिक्कार है उन अत्याचारियों पर
45. जो लोगों को अल्लाह की राह (सत्धर्म) से रोकते तथा उसे टेढ़ा करना चाहते थे। और वही परलोक के प्रति अविश्वास नहीं रखते थे।
46. और दोनों (नरक तथा स्वर्ग) के बीच एक पर्दा होगा और कुछ लोग आराफ़^[1] (ऊँचाईयों) पर होंगे। जो प्रत्येक को उन के लक्षणों से पहचानेंगे और स्वर्गवासियों को पुकार कर उन्हें सलाम करेंगे। और उन्होंने उस में प्रवेश नहीं किया होगा, परन्तु उस की आशा रखते होंगे।
47. और जब उन की आँखें नरक वासियों की ओर फिरेंगी तो कहेंगे: हे हमारे पालनहार! हमें अत्याचारियों में सम्मिलित न करना।
48. फिर आराफ़ (ऊँचाईयों) के लोग

وَأَذَىٰ أَصْحَابِ الْجَنَّةِ أَصْحَابِ النَّارِ أَنْ قَدَّ
وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبَّنَا حَقًّا فَأَقْبَلُ وَجِدْتُمْ مَا وَعَدَ
رَبَّكُمْ حَقًّا إِنَّا لَأُوْنِعْمُ فَاذَنْ مُؤْذِنٌ لَّيُبَيِّنَهُمْ أَنْ
لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿٤٤﴾

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنِ اللَّهِ وَيَبِغُونَهَا
عُوجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ كَفُورُونَ ﴿٤٥﴾

وَيَبَيِّنُهُمَا جِبَالٌ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ
كُلَّ لَيْسَةٍ لَهُمْ وَأَذَىٰ أَصْحَابِ الْجَنَّةِ أَنْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ
لَوْ بَدَّ خَلُوهَا وَهُمْ يُظْعَمُونَ ﴿٤٦﴾

وَأَذَىٰ صِرْفَةٌ أَبْصَارُهُمْ تَلْقَاءُ أَصْحَابِ النَّارِ لَأَقَالُوا
رَبَّنَا لَأَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤٧﴾

وَأَذَىٰ أَصْحَابِ الْأَعْرَافِ رِجَالًا يَعْرِفُونَهُمْ

1 आराफ़ नरक तथा स्वर्ग के मध्य एक दीवार है जिस पर वह लोग रहेंगे जिन के सुकर्म और कुकर्म बराबर होंगे। और वह अल्लाह की दया से स्वर्ग में प्रवेश की आशा रखते होंगे। (इब्ने कसीर)

कुछ लोगों को उन के लक्षणों से पहचान जायेंगे^[1], उन से कहेंगे कि तुम्हारे जत्थे और तुम्हारा घमंड तुम्हारे किसी काम नहीं आया।

49. (और स्वर्गवासियों की ओर संकेत करेंगे कि) क्या यही वह लोग नहीं हैं जिन के सम्बंध में तुम शपथ ले कर कह रहे थे कि अल्लाह इन्हें अपनी दया में से कुछ नहीं देगा? (आज उन से कहा जा रहा है कि) स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ, न तुम पर किसी प्रकार का भय है और न तुम उदासीन होगे।

50. तथा नरकवासी स्वर्गवासियों को पुकारेंगे कि हम पर तनिक पानी डाल दो, अथवा जो अल्लाह ने तुम्हें प्रदान किया है उस में से कुछ दे दो। वह कहेंगे कि अल्लाह ने यह दोनों (आज) काफ़िरों के लिये हराम (वर्जित) कर दिया है।

51. (उस का निर्णय है कि) जिन्होंने ने अपने धर्म को तमाशा और खेल बना लिया था, तथा जिन्हें संसारिक जीवन ने धोखे में डाल रखा था, तो आज हम उन्हें ऐसे ही भुला देंगे जिस प्रकार उन्होंने आज के दिन के आने को भुला दिया था^[2] और इस लिये भी कि वह

يَسْتَكْبِرُونَ ۖ قَالُوا مَا آخِضَ عَنْكُمْ جِجَعَكُمْ وَمَا كُنْتُمْ
تَسْتَكْبِرُونَ ۝

أَهْلُوا آيَةَ الَّذِينَ أَنْشَأُوا لِبَنِي آلِهِمُ اللَّهُ بَرَحْمَةً
أَدْخَلُوا الْجَنَّةَ لَا يَخُوفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا أَنَّهُمْ يُخْزَوْنَ ۝

وَتَأَذَى أَصْحَابِ النَّارِ أَصْحَابِ الْجَنَّةِ أَنْ يَفِيضُوا
عَلَيْهِمْ مِنَ الْمَاءِ أَوْ مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ
حَرَمَهَا عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ هُجُوعًا وَرِجَالًا وَمَغْرَبَةً
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا قَالُوا لَيْسَ بِهَذَا نَسَبُكُمْ كَمَا نَسَبَ الْبِقَاعُ يُورِثُكُمْ
هَذَا وَمَا كُنْتُمْ بِبَنِي آلِهِمْ تَجِدُونَ ۝

- 1 जिन को संसार में पहचानते थे और याद दिलायेंगे कि जिस पर तुम्हें घमंड था आज तुम्हारे काम नहीं आया।
2 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: प्रलय के दिन अल्लाह ऐसे बंदों से कहेगा: क्या मैं ने तुम्हें बीबी-बच्चे नहीं दिये, आदर-मान नहीं दिया? क्या ऊँट-

हमारी आयतों का इन्कार करते रहे।

52. जब कि हम ने उन के लिये एक ऐसी पुस्तक दी जिसे हम ने ज्ञान के आधार पर सविस्तार वर्णित कर दिया है जो मार्गदर्शन तथा दया है उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।

53. (फिर) क्या वह इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि इस का परिणाम सामने आ जाये? जिस दिन इस का परिणाम आ जायेगा तो वही जो इस से पहले इसे भूले हुये थे कहेंगे कि हमारे पालनहार के रसूल सच्च ले कर आये थे, (परन्तु हम ने नहीं माना) तो क्या हमारे लिये कोई अनुशंसक (सिफारशी) है, जो हमारी अनुशंसा (सिफारिश) करे? अथवा हम संसार में फेर दिये जायें तो जो कर्म हम करते रहे उन के विपरीत कर्म करेंगे! उन्होंने ने स्वयं को क्षति में डाल दिया, तथा उन से जो मिथ्या बातें बना रहे थे खो गईं।

54. तुम्हारा पालनहार वही अल्लाह है जिस ने आकाशों तथा धरती को छः दिनों में बनाया^[1], फिर अर्श

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ بَيِّنَاتٌ فَصَلَّاهُ عَلَىٰ عِلْمِهِ هُدًى
وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُ يَوْمَ يَأْتِي تَأْوِيلَهُ
يَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَبْلُ قَدْ جَاءَ رُسُلٌ
رَّبِّنَا بِالْحَقِّ فَهَلْ لَنَا مِن شُفَعَاءَ فَيَشْفَعُوا لَنَا
أَوْ نَزِدُّنَا عَمَلٍ غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ قَدْ خَسِرُوا
أَنفُسَهُمْ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْرَهُونَ ۝

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يَعْلَمُ الْبَيْتَ

घोड़े तेरे आधीन नहीं किये, क्या तू मुख्या बन कर चुंगी नहीं लेता था? वह कहेगा: हे अल्लाह सब सहीह है। अल्लाह प्रश्न करेगा: क्या मुझे से मिलने की आशा रखता था? वह कहेगा: नहीं। अल्लाह कहेगा जैसे तू मुझे भूला रहा, आज मैं तुझे भूल जाता हूँ। (सहीह मुस्लिम- 2968)

1 यह छः दिन शनिवार, रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, और बृहस्पतिवार हैं। पहले दो दिन में धरती को, फिर आकाश को बनाया, फिर आकाश को दो दिन में बराबर किया, फिर धरती को फैलाया और उस में पर्वत, पानी और

(सिंहासन) पर स्थित हो गया। वह रात्री से दिन को ढक देता है, दिन उस के पीछे दौड़ता हुआ आ जाता है, सूर्य तथा चाँद और तारे उस की आज्ञा के अधीन हैं। सुन लो! वही उत्पत्तिकार है, और वही शासक^[1] है। वही अल्लाह अति शुभ, संसार का पालनहार है।

55. तुम अपने (उसी) पालनहार को रोते हुये तथा धीरे-धीरे पुकारो। निःसंदेह वह सीमा पार करने वालों से प्रेम नहीं करता।

56. तथा धरती में उस के सुधार के पश्चात्^[2] उपद्रव न करो, और उसी से डरते हुये, तथा आशा रखते हुये^[3] प्रार्थना करो। वास्तव में अल्लाह की दया सदाचारियों के समीप है।

57. और वही है जो अपनी दया (वर्षा) से पहले वायुओं को (वर्षा) की शुभ सूचना देने के लिये भेजता है। और जब वह भारी बादलों को लिये उड़ती है तो हम उसे किसी निर्जीव धरती को (जीवित) करने के लिये पहुँचा देते हैं, फिर उस से जल वर्षा कर के उस के द्वारा प्रत्येक प्रकार के फल उपजा देते हैं। इसी प्रकार हम

الَّتِي يَطْلُبُهَا حَبِيبَاتُ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ وَالنُّجُومِ
مَسْحَرَاتٍ يَا مَرْيَمُ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذُنُوبِكِ إِنَّ اللَّهَ
رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٥٥﴾

ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُ لَا يُحِبُّ
الْمُعْتَدِينَ ﴿٥٦﴾

وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ
خَوْفًا وَطَمَعًا إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ
الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٧﴾

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ بُشْرًا لِّبَيْنِ يَدَيْ
رَحْمَتِهِ حَتَّىٰ إِذَا أَقَلَّتْ سَحَابًا نِّفَاحًا سَفَعْنَا
لَهُ مَلَكًا مِّمَّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ
مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ كَذَلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾

उपज की व्यवस्था दो दिन में की। इस प्रकार यह कुल छः दिन हुये। (देखिये: सूरह सज्दा, आयत- 9, 10)

- 1 अर्थात् इस विश्व की व्यवस्था का अधिकार उस के सिवा किसी को नहीं है।
- 2 अर्थात् सत्धर्म और रसूलों द्वारा सुधार किये जाने के पश्चात्।
- 3 अर्थात् पापाचार से डरते और उस की दया की आशा रखते हुये।

मुर्दाँ को जीवित करते हैं, ताकि तुम शिक्षा ग्रहण कर सको।

58. और स्वच्छ भूमि अपनी उपज अल्लाह की अनुमति से भरपूर देती है। तथा खराब भूमि की उपज थोड़ी ही होती है। इसी प्रकार हम अपनी^[1] आयतें (निशानियाँ) उन के लिये दुहराते हैं जो शुक अदा करते हैं।

وَالْبَلَدِ الطَّيِّبِ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ
وَالَّذِي خَبثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا كَذِبًا كَذَلِكَ
نُصِرْتُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُشْكُرُونَ ﴿٥٨﴾

59. हम ने नूह^[2] को उस की जाति की ओर (अपना संदेश पहुँचाने के लिये) भेजा था, तो उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! (केवल) अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। मैं तुम पर एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ لِقَوْمِهِ
اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ إِنِّي أَخَافُ
عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥٩﴾

60. उस की जाति के प्रमुखों ने कहा: हमें ﴿٥٩﴾ قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرُكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मुझे अल्लाह ने जिस मार्ग दर्शन और ज्ञान के साथ भेजा है वह उस वर्षा के समान है जो किसी भूमि में हूई। तो उस का कुछ भाग अच्छा था जिस ने पानी लिया और उस से बहुत सी घास और चारा उगाया। और कुछ कड़ा था जिस ने पानी रोक लिया तो लोगों को लाभ हुआ और उस से पिया और सींचा। और कुछ चिकना था, जिस ने न पानी रोका न घास उपजाई। तो यही उस की दशा है जिस ने अल्लाह के धर्म को समझा और उसे सीखा तथा सिखाया। और उस की जिस ने उस पर ध्यान ही नहीं दिया और न अल्लाह के मार्गदर्शन को स्वीकार किया जिस के साथ मुझे भेजा गया है। (सहीह बुखारी-79)

2 बताया जाता है कि नूह (अलैहिस्सलाम) प्रथम मनु आदम (अलैहिस्सलाम) के दसवें वंश में थे। उन से कुछ पहले तक लोग इस्लाम पर चले आ रहे थे। फिर अपने धर्म से फिर गये और अपने पुनीत पूर्वजों की मूर्तियाँ बना कर पूजने लगे। तब अल्लाह ने नूह को भेजा। किन्तु कुछ के सिवा किसी ने उन की बात नहीं मानी। अन्ततः सब डुबो दिये गये। फिर नूह के तीन पुत्रों से मानव वंश चला इसी लिये उन को दूसरा आदम भी कहा जाता है। (देखिये सूरह नूह, आयतः 71)

लगता है कि तुम खुले कुपथ में पड़ गये हो।

61. उस ने कहा: हे मेरी जाति! मैं किसी कुपथ में नहीं हूँ। परन्तु मैं विश्व के पालनहार का रसूल हूँ।

62. तुम्हें अपने पालनहार का संदेश पहुँचा रहा हूँ। और तुम्हारा भला चाहता हूँ, और अल्लाह की ओर से उन चीजों का ज्ञान रखता हूँ जिन का ज्ञान तुम्हें नहीं है।

63. क्या तुम्हें इस पर आश्चर्य हो रहा है कि तुम्हारे पालनहार की शिक्षा तुम्हीं में से एक पुरुष द्वारा तुम्हारे पास आ गई है, ताकि वह तुम्हें सावधान करे, और ताकि तुम आज्ञाकारी बनो और अल्लाह की दया के योग्य हो जाओ??

64. फिर भी उन्होंने उस को झुठला दिया। तो हम ने उसे और जो नौका में उस के साथ थे उन को बचा लिया। और उन्हें डुबो दिया जो हमारी आयतों को झुठला चुके थे। वास्तव में वह (समझ बूझ के) अंधे थे।

65. (और इसी प्रकार) आद^[1] की ओर उन के भाई हूद को (भेजा)। उस ने कहा: हे मेरी जाति! अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तो क्या तुम (उस की अवैज्ञा से) नहीं डरते?

قَالَ يَقَوْمِ لَيْسَ بِي ضَلَالَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝

أَلَيْعَلَّكُمْ رُسُلٌ رَّبِّي وَأَنْصُرُكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

أَوْ عَجِبْتُمْ أَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَى رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَأَعْلَمَكُمْ شُرُوحًا مِّن رَّبِّكُمْ ۝

فَكَذَّبُوهُ فَأَجْعَلُهُمُ الَّذِينَ مَعَهُ فِي الْقُلُوبِ وَأَعْرَفْنَا الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِالَّذِينَ آمَنُوا قَوْمًا عَمِينَ ۝

وَاللَّيْلِ عَادَ أَخَاهُمْ هُودًا قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِن إِلَهٍ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝

1 नूह की जाति के पश्चात् अरब में आद जाति का उत्थान हुआ। जिस का निवास स्थान अहकाफ का क्षेत्र था। जो हिजाज़ तथा यमामा के बीच स्थित है। उन की आबादियाँ उमान से हज़रमौत और ईराक तक फैली हुई थीं।

66. (इस पर) उस की जाति में से उन प्रमुखों ने कहा जो काफ़िर हो गये कि हमें ऐसा लग रहा है कि तुम ना समझ हो गये हो। और वास्तव में हम तुम्हें झुठों में समझ रहे हैं।
67. उस ने कहा: हे मेरी जाति! मुझ में कोई ना समझी की बात नहीं है परन्तु मैं तो संसार के पालनहार का रसूल (संदेशवाहक) हूँ।
68. मैं तुम्हें अपने पालनहार का संदेश पहुँचा रहा हूँ और वास्तव में मैं तुम्हारा भरोसा करने योग्य शिक्षक हूँ।
69. क्या तुम्हें इस पर आश्चर्य हो रहा है कि तुम्हारे पालनहार की शिक्षा तुम्हीं में से एक पुरुष द्वारा तुम्हारे पास आ गई है ताकि वह तुम्हें सावधान करे?। तथा याद करो कि अल्लाह ने नह की जाति के पश्चात् तुम्हें धरती में अधिकार दिया है, और तुम्हें अधिक शारीरिक बल दिया है। अतः अल्लाह के पुरस्कारों को याद^[1] करो। संभवतः तुम सफल हो जाओगे।
70. उन्होंने ने कहा: क्या तुम हमारे पास इस लिये आये हो कि हम केवल एक ही अल्लाह की इबादत (वंदना) करें और उन्हें छोड़ दें जिन की पूजा हमारे पूर्वज करते आ रहे हैं? तो वह बात हमारे पास ला दो जिस से हमें डरा रहे हो, यदि तुम सच्चे हो?
71. उस ने कहा: तुम पर तुम्हारे

قَالَ الْمَلَائِكَةُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٦٦﴾

قَالَ يَقَوْمِ لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٧﴾

أَبْلَغُكُمْ رَسُولًا لِّي بِي وَآتَاكُمْ نَاصِحَةً أَمِينًا ﴿٦٨﴾

أَوَعَجِبْتُمْ أَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَى رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَأَذُنُّوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن بَعْدِ قَوْمِ نُوحٍ وَزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَضْطَةً فَمَا ذَكُرُوا أَنَّىٰ أَلَّهُ لَكُمْ وَعَالِمُونَ ﴿٦٩﴾

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَدْرَعَا كَمَا نَعْبُدُ آبَاءَنَا وَنَحْنُ بِقَاتِلَيْهِمْ مُّتَعِدُونَ إِنَّا لَنَرُّوكَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٧٠﴾

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ رِجْسٌ

1 अर्थात् उस के आज्ञाकारी तथा कृतज्ञ बनो।

पालनहार का प्रकोप और क्रोध आ पड़ा है। क्या तुम मुझ से कुछ (मूर्तियों के) नामों के विषय में विवाद कर रहे हो जिन का तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने (पूज्य) नाम रख दिया है। जिस का कोई तर्क (प्रमाण) अल्लाह ने नहीं उतारा है? तो तुम (प्रकोप की) प्रतीक्षा करो और तुम्हारे साथ मैं भी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

72. फिर हम ने उसे और उस के साथियों को बचा लिया। तथा उन की जड़ काट दी जिन्होंने हमारी आयतों (आदेशों) को झुठला दिया था। और वह ईमान लाने वाले नहीं थे।

73. और (इसी प्रकार) समूद^[1] (जाति) के पास उन के भाई सालेह को भेजा। उस ने कहा: हे मेरी जाति! अल्लाह की (वन्दना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुला प्रमाण (चमत्कार) आ गया है। यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिये एक चमत्कार^[2] है। अतः इसे अल्लाह की धरती में चरने के लिये छोड़ दो और इसे बुरे विचार से हाथ न लगाना, अन्यथा तुम्हें दुःखदायी यातना घेर लेगी।

وَعَصَبٌ أَمْعَادٌ لَوْ لَوْنِي فِي أَسْمَاءٍ سَمَّيْتُوهَا
أَنْتُمْ وَأَبَاؤُكُمْ مَا نَزَّلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ
فَأَنْتَظِرُونَ وَإِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ۝

فَأَجْمِنُوا وَالَّذِينَ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا
وَقَطَعْنَا دَائِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَمَا كَانُوا
مُؤْمِنِينَ ۝

وَالِى سَمُودَ أَخَاهُمْ صٰلِحًا قَالَ يَقَوْمِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِنَ اللّٰهِ عِيْرَةٌ قَدْ
جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ هٰذِهِ نٰقَةٌ
اللّٰهُ لَكُمْ اٰيَةٌ فَذَرُوهَا تٰكُلْ فِيْ اَرْضِ
اللّٰهِ وَلَا تَمْسُوْهَا سُوْءًا فَيَاْخُذَكُمْ عَذٰبٌ
اَلِيْمٌ ۝

1 समूद जाति अरब के उस क्षेत्र में रहती थी जो हिजाज़ तथा शाम के बीच «वादिये-कुर» तक चला गया है। जिस को आज ((अल उला)) कहते हैं। इसी को दूसरे स्थान पर «अलहिज़्र» भी कहा गया है।

2 समूद जाति ने अपने नबी सालेह अलैहिस्सलाम से यह माँग की थी कि: पर्वत से एक ऊँटनी निकाल दें। और सालेह अलैहिस्सलाम की प्रार्थना से अल्लाह ने उन की यह माँग पूरी कर दी। (इब्ने कसीर)

74. तथा याद करो कि अल्लाह ने आद जाति के ध्वस्त किये जाने के पश्चात् तुम्हें धरती में अधिकार दिया है और तुम्हें धरती में बसाया है, तुम उस के मैदानों में भवन बनाते हो और पर्वतों को तराश कर घर बनाते हो। अतः अल्लाह के उपकारों को याद करो और धरती में उपद्रव करते न फिरो।

وَأَذْكُرُوا لَإِذْ جَعَلْنَاكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ آدَمَ
وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِنْ
سُهُولِهَا قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ الْجِبَالَ بُيُوتًا
فَادْكُرُوا الْآيَةَ اللَّهُ وَلَا تَعْتَوُوا فِي الْأَرْضِ
مُفْسِدِينَ ۝

75. उस की जाति के घमंडी प्रमुखों ने उन निर्बलों से कहा जो उन में से ईमान लाये थे: क्या तुम विश्वास रखते हो कि सालेह अपने पालनहार का भेजा हुआ है? उन्होंने ने कहा: निश्चय जिस (सदेश) के साथ वह भेजा गया है हम उस पर ईमान (विश्वास) रखते हैं।

قَالَ الْمَلَائِكَةُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ
لِلَّذِينَ اسْتَضَعُوا مِنَ الْبَنِي إِسْمٰءِيلَ
أَنْ يَطِيعُوا رَسُولَ رَبِّهِمْ قَالُوا إِنْ كُنَّا
أُرْسِلَ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝

76. (तो इस पर) घमंडियों^[1] ने कहा: हम तो जिस का तुम ने विश्वास किया है उसे नहीं मानते।

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِي
إِٰمَنَّا بِهِ كَافِرُونَ ۝

77. फिर उन्होंने ने ऊँटनी को बध कर दिया और अपने पालनहार के आदेश का उल्लंघन किया और कहा: हे सालेह! तू हमें जिस (यातना) की धमकी दे रहा था उसे ला दे, यदि तू वास्तव में रसूलों में से है।

فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ
وَقَالُوا لِطِغْيَالِهِمْ ائْتِنَا بِمَا وَعَدْنَاكَ إِنْ
كُنْتَ مِنَ الْرُّسُلِينَ ۝

78. तो उन्हें भूकम्प ने पकड़ लिया। फिर जब भोर हुई तो वे अपने घरों में औंधे पड़े हुये थे।

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ
جُثَمِينَ ۝

79. तो सालेह ने उन से मँह फेर लिया और

فَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ

1 अर्थात् अपने संसारिक सुखों के कारण अपने बड़े होने का गर्व था।

कहा: हे मेरी जाति! मैं ने तुम्हें अपने पालनहार के उपदेश पहुँचा दिये थे और मैं ने तुम्हारा भला चाहा। परन्तु तुम उपकारियों से प्रेम नहीं करते।

80. और हम ने लूत^[1] को भेजा। जब उस ने अपनी जाति से कहा: क्या तुम ऐसी निर्लज्जा का काम कर रहे हो जो तुम से पहले संसारवासियों में से किसी ने नहीं किया है?
81. तुम स्त्रियों को छोड़ कर कामवासना की पूर्ति के लिये पुरुषों के पास जाते हो? बल्कि तुम सीमा लांघने वाली जाति^[2] हो।
82. और उस की जाति का उत्तर बस यह था कि इन को अपनी बस्ती से निकाल दो। यह लोग अपने में बड़े पवित्र बन रहे हैं।
83. हम ने उसे और उस के परिवार को उस की पत्नी के सिवा बचा लिया, वह पीछे रह जाने वाली थी।
84. और हम ने उन पर (पत्थरों) की वर्षा कर दी। तो देखो कि अपराधियों का परिणाम कैसा रहा?

رِسَالَةٌ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلَكِنْ لَا تُحِبُّونَ
التَّصْحِيحِينَ ﴿٨٠﴾

وَلَوْطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ
مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿٨١﴾

إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِنْ دُونِ
النِّسَاءِ طَبِيلٌ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُتَعَبُونَ ﴿٨٢﴾

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا
أَخْرِجُوهُمْ مِنْ قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أَنَاسٌ
يَتَطَهَّرُونَ ﴿٨٣﴾

فَأَنبِئْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ
الْغَابِرِينَ ﴿٨٤﴾

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٨٥﴾

- 1 लूत अलैहिस्सलाम इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे थे। और वह जिस जाति के मार्गदर्शन के लिये भेजे गये थे वह उस क्षेत्र में रहती थी जहाँ अब «मृत सागर» स्थित है। उस का नाम भाष्यकारों ने सदूम बताया है।
- 2 लूत अलैहिस्सलाम की जाति ने निर्लज्जा और बालमैथुन की कुरीति बनाई थी जो मनुष्य के स्वभाव के विरुद्ध था। आज रिसर्च से पता चला कि यह विभिन्न प्रकार के रोगों का कारण है जिस में विशेष कर «एड्स» के रोगों का वर्णन करते हैं। परन्तु आज पश्चिम देश दुबारा उस अंधकार युग की ओर जा रहे हैं। और इसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता का नाम दे रखा है।

85. तथा मद्यन^[1] की ओर हम ने उस के भाई शुऐब को रसूल बना कर भेजा। उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है। तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार का खुला तर्क (प्रमाण) आ गया है। अतः नाप और तौल पुरी करो और लोगों की चीज़ों में कमी न करो। तथा धरती में उस के सुधार के पश्चात् उपद्रव न करो। यही तुम्हारे लिये उत्तम है, यदि तुम ईमान वाले हो।

86. तथा प्रत्येक मार्ग पर लोगों को धमकाने के लिये न बैठो और उन्हें अल्लाह की राह से न रोको जो उस पर ईमान लाये^[2] हैं। और उसे टेढ़ा न बनाओ, तथा उस समय को याद करो जब तुम थोड़े थे, तो तुम्हें अल्लाह ने अधिक कर दिया। तथा देखो कि उपद्रवियों का परिणाम क्या हुआ?

87. और यदि तुम्हारा एक समुदाय उस पर ईमान लाया है जिस के साथ मैं

وَاللّٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يَقَوْمِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِنَ الْاِلٰهِ غَيْرُهُ قَدْ
جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ قَاَوْمُوا الْكَيْلَ
وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَاءَهُمْ
وَلَا تَقْسِدُوا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اَصْلَاحِهَا
ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝

وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ
وَتَصَدُّونَ عَنِ سَبِيلِ اللّٰهِ مَن اٰمَنَ بِهٖ
وَتَبِعُوْنَهَا عِوَجًا وَاذْكُرُوْا اِذْ كُنْتُمْ
قَلِيْلًا فَكَتَرْتُمْ وَاَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ۝

وَإِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ اٰمَنُوْا

1 मद्यन् एक कबीले का नाम था। और उसी के नाम पर एक नगर बस गया जो हिजाज़ के उत्तर-पश्चिम तथा फ़लस्तीन के दक्षिण में लाल सागर और अक़बा खाड़ी के किनारे पर रहता था। यह लोग व्यापार करते थे प्राचीन व्यापार राजपथ, लाल सागर के किनारे यमन से मक्का तथा यंबुअ होते हुये सीरिया तक जाता था।

2 जैसे मक्का वाले मक्का के बाहर से आने वालों को कुर्आन सुनने से रोका करते थे। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जादूगर कह कर आप के पास जाने से रोकते थे। परन्तु उन की एक न चली, और कुर्आन लोगों के दिलों में उतरता और इस्लाम फैलता गया। इस से पता चलता है कि नबियों की शिक्षाओं के साथ उन की जातियों ने एक जैसा व्यवहार किया।

भेजा गया हूँ और दूसरा ईमान नहीं लाया है तो तुम धैर्य रखो, यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच निर्णय कर दे। और वह उत्तम न्याय करने वाला है।

88. उस की जाति के प्रमुखों ने जिन्हें घमंड था कहा कि हे शुऐब! हम तुम को तथा जो तुम्हारे साथ ईमान लाये हैं अपने नगर से अवश्य निकाल देंगे। अथवा तुम सब को हमारे धर्म में अवश्य वापिस आना होगा। (शुऐब) ने कहा: क्या यदि हम उसे दिल से न मानें तो?

89. हम ने अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाया है, यदि तुम्हारे धर्म में इस के पश्चात् वापिस आ गये, जब कि हमें अल्लाह ने उस से मुक्त कर दिया है। और हमारे लिये संभव नहीं कि उस में फिर आ जायें, परन्तु यह कि हमारा पालनहार चाहता हो। हमारा पालनहार प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान में समोये हुये है, अल्लाह ही पर हमारा भरोसा है। हे हमारे पालनहार! हमारे और हमारी जाति के बीच न्याय के साथ निर्णय कर दे। और तू ही उत्तम निर्णयकारी है।

90. तथा उस की जाति के काफ़िर प्रमुखों ने कहा कि यदि तुम लोग शुऐब का अनुसरण करोगे तो वस्तुतः तुम लोगों का उस समय नाश हो जायेगा।

91. तो उन्हें भूकम्प ने पकड़ लिया फिर भोर हुई तो वे अपने घरों में औंधे पड़े हुये थे।

يَا ذِي الْقُرْبَىٰ أُرْسِلْتُ بِهِ وَطَائِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا
فَأَصْبِرْ وَاحْتِسِبْ اللَّهَ بَيْنَنَا وَهُوَ
خَيْرُ الْحَكِيمِينَ ۝

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ
لَنُخْرِجَنَّكَ لَشُعَيْبًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِنَ
قَوْمِنَا آلَتْ قَوْمُونَ فِي كَيْفَاتِنَا قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كَرِيمِينَ ۝

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا بَلْ أَنْتَ فِي مَكْرَمَةٍ بَعْدًا
إِذْ جَعَلْنَا اللَّهَ مِنْهَا وَمَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَعْبُدَ مِنْهَا إِلَّا
أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا
عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا افْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا
يَا حَقِّقٍ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ۝

وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لِيَنَّ اللَّهُ
شُعَيْبًا لَأَكْفُرَنَّ ۝

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ
جُثِينَ ۝

92. जिन्होंने शुऐब को झुठलाया (उन की यह दशा हुई कि) मानो कभी उस नगर में बसे ही नहीं थे।
93. तो शुऐब उन से विमुख हो गया, तथा कहा: हे मेरी जाति! मैं ने तुम्हें अपने पालनहार के संदेश पहुँचा दिये, तथा तुम्हारा हितकारी रहा। तो काफ़िर जाति (के विनाश) पर कैसे शोक करूँ?
94. तथा हम ने जब किसी नगरी में कोई नबी भेजा, तो उस के निवासियों को आपदा, तथा दुःख में ग्रस्त कर दिया कि संभवतः वह विन्ती करें।^[1]
95. फिर हम ने आपदा को सुख सुविधा से बदल दिया, यहाँ तक कि जब वह सुखी हो गये, और उन्होंने ने कहा कि हमारे पूर्वजों को भी दुःख तथा सुख पहुँचता रहा है, तो अकस्मात् हम ने उन्हें पकड़ लिया, और वह समझ नहीं सके।
96. और यदि इन नगरों के वासी ईमान लाते, और कुकर्मों से बचे रहते, तो हम उन पर आकाशों तथा धरती की सम्पन्नता के द्वार खोल देते।

الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا يَمِينُوا فِيهَا الَّذِينَ
كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا هُمُ الْخٰسِرِينَ ۝

فَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰ قَوْمِ لَقَدْ اٰتٰتْكُمْ رِسٰلٰتِ
رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ فَكَيْفَ اٰلٰتِىَ عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ۝

وَمَا اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا اَخَذْنَا اَهْلَهَا
بِالْبِئْسَاءِ وَالظُّلْمِ اَلْعَظِيْمِ يَفْرَحُوْنَ ۝

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّىٰ عَفَوْا
وَقَالُوْا اٰدَمٰسَ اٰبَاؤَنَا الْقَرٰءَةُ وَالسَّيِّئَةُ مَا كُنَّا نَمُرُّ
بِعَثٰةٍ وَهُمْ لَا يَتَذَكَّرُوْنَ ۝

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا فَفَتَحْنَا
عَلَيْهِمْ بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِن
كَذَّبُوْا فَاَخَذْنَا هُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝

1 आयत का भावार्थ यह है कि सभी नबी अपनी जाति में पैदा हुये। सब अकेले धर्म का प्रचार करने के लिये आये। और सब का उपदेश एक था कि अल्लाह की वंदना करो उस के सिवा कोई पूज्य नहीं। सब ने सत्कर्म की प्रेरणा दी, और कुकर्म के दुष्परिणाम से सावधान किया। सब का साथ निर्धनों तथा निर्बलों ने दिया। प्रमुखाँ और बड़ों ने उन का विरोध किया। नबियों का विरोध भी उन्हें धमकी तथा दुःख दे कर किया गया। और सब का परिणाम भी एक प्रकार हुआ, अर्थात् उन को अल्लाह की यातना ने घेर लिया। और यही सदा इस संसार में अल्लाह का नियम रहा है।

परन्तु उन्होंने ने झुठला दिया। अतः हम ने उन के कर्तूतों के कारण उन्हें (यातना में) घेर लिया।

97. तो क्या नगर वासी इस बात से निश्चिन्त हो गये हैं कि उन पर हमारी यातना रातों रात आ जाये, और वह पड़े सो रहे हों?
98. अथवा नगरवासी निश्चिन्त हो गये हैं कि हमारी यातना उन पर दिन के समय आ पड़े, और वह खेल रहे हों?
99. तो क्या वह अल्लाह के गुप्त उपाय से निश्चिन्त हो गये हैं? तो (याद रखो!) अल्लाह के गुप्त उपाय से नाश होने वाली जाति ही निश्चिन्त होती है।
100. तो क्या उन को शिक्षा नहीं मिली जो धरती के वारिस होते हैं उस के अगले वासियों के पश्चात? कि यदि हम चाहें, तो उन के पापों के बदले उन्हें आपदा में ग्रस्त कर दें, और उन के दिलों पर मुहर लगा दें, फिर वह कोई बात ही न सुन सकें?
101. (हे नबी!) यह वह नगर है जिन की कथा हम आप को सुना रहे हैं। इन सब के पास उन के रसूल खुले तर्क (प्रमाण) लाये, तो वह ऐसे न थे कि उस (सत्य) पर विश्वास कर लें जिस को वे इस से पूर्व झुठला^[1] चुके थे। इसी प्रकार अल्लाह काफिरों

أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا
بَيِّنَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿٩٧﴾

أَوَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا
وَهُمْ يَلْعَبُونَ ﴿٩٨﴾

أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ؟ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا
الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٩٩﴾

أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ
أَهْلِهَا أَنْ لَوْ نَشَاءُ أَصْبَهُم بِذُنُوبِهِمْ
وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَلَمْ يُؤْمِنُوا ﴿١٠٠﴾

بَلَدِكَ الْقُرَىٰ نَفِثُ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِهَا وَلَقَدْ
جَاءَهُمْ رَسُولُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا
بِمَا كَذَّبُوا مِنْ قَبْلُ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ
قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ﴿١٠١﴾

1 अर्थात् सत्य का प्रमाण आने से पहले झुठला दिया था उस के पश्चात् भी अपनी हठधर्मी से उसी पर अड़े रहे।

के दिलों पर मुहर लगाता है।

102. और हम ने उन में अधिकतर को वचन पर स्थित नहीं पाया।^[1] तथा हम ने उन में अधिकतर को अवज्ञाकारी पाया।

103. फिर हम ने इन रसूलों के पश्चात् मूसा को अपनी आयतों (चमत्कारों) के साथ फिरऔन^[2] और उस के प्रमुखों के पास भेजा, तो उन्होंने ने भी हमारी आयतों के साथ अन्याय किया, तो देखो कि उपद्रवियों का क्या परिणाम हुआ?

104. तथा मूसा ने कहा: हे फिरऔन! मैं वास्तव में विश्व के पालनहार का रसूल (संदेश वाहक) हूँ।

105. मेरे लिये यही योग्य है कि अल्लाह के विषय में सत्य के अतिरिक्त कोई बात न करूँ। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुला प्रमाण लाया हूँ। इस लिये मेरे साथ बनी इस्राईल^[3] को जाने दे।

وَمَا وَجَدْنَا نَا إِلَّا كَثْرًا مِنْهُمْ مِنْ عَهْدِ وَإِنَّا
وَجَدْنَا نَا إِلَّا كَثْرًا مِنْهُمْ لَفَٰسِقِينَ ﴿١٠٢﴾

ثُمَّ بَعَدْنَا مَنْ بَعَدَهُمْ مُّوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ
فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَظَلَمُوا بِهَا ۗ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٠٣﴾

وَقَالَ مُّوسَىٰ يُفِرْعَوْنُ إِنِّي رَسُولٌ مِنْ رَبِّ
الْعَالَمِينَ ﴿١٠٤﴾

حَقِيقٌ عَلَىٰ أَنْ لَا أَقُولَ عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ ۗ قَدْ
جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَاتٍ مِنْ رَبِّكُمْ فَأَرْسِلْ مَعِيَ بَنِي
إِسْرَائِيلَ ﴿١٠٥﴾

- 1 इस से उस प्रण (वचन) की ओर संकेत है, जो अल्लाह ने सब से «आदि काल» में लिया था कि क्या मैं तुम्हारा पालनहार (पूज्य) नहीं हूँ? तो सब ने इसे स्वीकार किया था। (देखिये: सूरह आराफ़, आयत, 172)
- 2 मिस्र के शासकों की उपाधि फिरऔन होती थी। यह ईसा पूर्व डेढ़ हजार वर्ष की बात है। उन का राज्य शाम से लीबिया तथा हब्शा तक था। फिरऔन अपने को सब से बड़ा पूज्य मानता था और लोग भी उस की पूजा करते थे। उस की ओर अल्लाह ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को एक अल्लाह की इबादत का संदेश देकर भेजा कि पूज्य तो केवल अल्लाह है उस के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं।
- 3 बनी इस्राईल यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के युग में मिस्र आये थे। तथा चार सौ वर्ष का युग बड़े आदर के साथ व्यतीत किया। फिर उन के कुकर्मा के कारण फिरऔन

106. उस ने कहा: यदि तुम कोई प्रमाण (चमत्कार) लाये हो तो उसे प्रस्तुत करो यदि तुम सच्चे हो।
107. फिर मूसा ने अपनी लाठी फेंकी, तो अकस्मात् वह एक अजगर बन गई।
108. और अपना हाथ (जैब से) निकाला तो वह देखने वालों के लिये चमक रहा था।
109. फिरऔन की जाति के प्रमुखों ने कहा: वास्तव में यह बड़ा दक्ष जादूगर है।
110. वह तुम्हें तुम्हारे देश से निकालना चाहता है। तो अब क्या आदेश दे रहे हो?
111. सब ने कहा: उस को और उस के भाई (हारून) को अभी छोड़ दो, और नगरों में एकत्र करने के लिये हरकारे भेजो।
112. जो प्रत्येक दक्ष जादूगरों को तुम्हारे पास लायें।
113. और जादूगर फिरऔन के पास आ गये। उन्होंने ने कहा: हमें निश्चय पुरस्कार मिलेगा, यदि हम ही विजयी हो गये तो?
114. फिरऔन ने कहा: हाँ। और तुम मेरे समीपवर्तियों में से भी हो जाओगे।

قَالَ إِنَّ كُنْتُمْ جِئْتُمْ بِآيَةٍ فَلَا تَحْبِرُونَنَا بِهَا إِن كُنْتُمْ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٠٦﴾

فَأَلْفَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿١٠٧﴾

وَنَزَعِيْدًا فَإِذَا هِيَ بِيضًا لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾

قَالَ الْمَلَأِيْنُ قَوْمُ فِرْعَوْنَ إِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ عَلِيْمٌ ﴿١٠٩﴾

يُرِيْدَانَا نَحْبِرْكُمْ مِنْ أَدْبَابِكُمْ فَمَاذَا تَأْمُرُوْنَ ﴿١١٠﴾

قَالُوا الرَّجِيْعَةُ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿١١١﴾

يَأْتُوْكَ بِكُلِّ سِحْرٍ عَلِيْمٍ ﴿١١٢﴾

وَجَاءَ السّحْرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْا إِنَّ لَنَا لَأَكْبَرَٰٓءَ إِن كُنَّا عَنَّا الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٣﴾

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُفْرَقِيْنَ ﴿١١٤﴾

और उस की जाति ने उन को अपना दास बना लिया। जिस के कारण मूसा (अलैहिस्सलाम) ने बनी इस्राईल को मुक्त करने की माँग की। (इब्ने कसीर)

115. जादूगरों ने कहा: हे मूसा! तुम (पहले) फेंकोगे, या हमें फेंकना होगा?
116. मूसा ने कहा: तुम्हीं फेंको। तो उन्हीं ने जब (रस्सियाँ) फेंकी, तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया, और उन्हें भयभीत कर दिया। और बहुत बड़ा जादू कर दिखाया।
117. तो हम ने मूसा को वही की, कि अपनी लाठी फेंको। और वह अकस्मात् झूठे इन्द्रजाल को निगलने लगी।
118. अतः सत्य सिद्ध हो गया, और उन का बनाया मंत्र-तंत्र व्यर्थ हो कर^[1] रह गया।
119. अन्ततः वह पराजित कर दिये गये, और तुच्छ तथा अपमानित हो कर रह गये।
120. तथा सभी जादूगर (मूसा का सत्य) देख कर सज्दे में गिर गये।
121. उन्हीं ने कहा: हम विश्व के पालनहार पर ईमान लाये।
122. जो मूसा तथा हारून का पालनहार है।
123. फिरऔन ने कहा: इस से पहले कि मैं तुम्हें अनुमति दूँ तुम उस पर ईमान ले आये? वास्तव में यह षड्यंत्र है जिसे तुम ने नगर में रचा है, ताकि उस के निवासियों को उस से निकाल दो! तो शीघ्र ही तुम्हें इस

قَالُوا يَوْمَئِذٍ إِمَّا أَنْ تُلْقَىٰ وَإِمَّا أَنْ نَكُونَ مَعَنَ
الْمُلْقِينَ ۝

قَالَ الْقَوْمُ أَكَلْنَا الْقَوَاعِيسَ وَاعْتَيْنَا النَّاسِ
وَأَسْرَهُمْ هُمْ وَجَاءُوا بِسِحْرٍ عَظِيمٍ ۝

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ ألقِ عَصَاكَ فَإِذَا هِيَ
تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ۝

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

فَعَلَبُوا هَذَاكَ وَأَتَقَبُوا ضَعْفِينَ ۝

وَألقى السحرة سيجدين ۝

قَالُوا الْمَكَايِيبِ الْعَالَمِينَ ۝

رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝

قَالَ فِرْعَوْنُ امْنُتُمْ بِهِ قَبْلَ أَنْ أَدْنَىٰ لَكُمْ إِنَّ
هَذَا الْمَكْرُ مَكْرُؤٌ فِي الْمَدِينَةِ لِيُخْرِجُوا مِنْهَا
أَهْلَهَا فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝

1 कूर्आन ने अब से तेरह सौ वर्ष पहले यह घोषणा कर दी थी कि जादू तथा मंत्र-तंत्र निर्मूल हैं।

(के परिणाम) का ज्ञान हो जायेगा।

124. मैं अवश्य तुम्हारे हाथ तथा पाँव विपरीत दिशाओं से काट दूँगा, फिर तुम सभी को फाँसी पर लटका दूँगा।
125. उन्होंने ने कहा: हमें अपने पालनहार ही की ओर प्रत्येक दशा में जाना है।
126. तू हम से इसी बात का तो बदला ले रहा है कि हमारे पास हमारे पालनहार की आयतें (निशानियाँ) आ गई? तो हम उन पर ईमान ला चुके हैं। हे हमारे पालनहार! हम पर धैर्य (की धारा) उँडेल दे! और हमें इस दशा में (संसार से) उठा कि तेरे आज्ञाकारी रहें।
127. और फिरऔन की जाति के प्रमुखों ने (उस से) कहा: क्या तुम मूसा और उस की जाति को छोड़ दोगे कि देश में विद्रोह करें, तथा तुम को और तुम्हारे पूज्यों^[1] को छोड़ दें? उस ने कहा: हम उन के पुत्रों को बध कर देंगे, और उन की स्त्रियों को जीवित रहने देंगे, हम उन पर दबाव रखते हैं।
128. मूसा ने अपनी जाति से कहा: अल्लाह से सहायता माँगो, और सहन करो, वास्तव में धरती अल्लाह की है, वह

لَأَقْطَعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ ثُمَّ
لَأَصْلِبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ۝

قَالُوا إِنَّا إِلَى رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ۝

وَمَا تَنْقُمُ مِنَّا إِلَّا أَنْ أَمْنَا بِآيَاتِ رَبِّنَا مَا
جَاءَنَا رَبَّنَا فَفَرِّغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَقْنَا
مُسْلِمِينَ ۝

وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ أَتَدْرُسِي
وَقَوْمَهُ الْيَفْسُذُ فِي الْأَرْضِ وَيَدْرُكُ
وَالهَاتِكَ قَالَ سَقَتِلَ آبَاءَهُمْ وَنَسْتَجِي
نِسَاءَهُمْ وَإِنَّا فَوْقَهُمْ فَاهِرُونَ ۝

قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ وَاصْبِرُوا
إِنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا مَنْ يَشَاءُ مِنْ

1 कुछ भाष्यकारों ने लिखा है कि मिस्री अनेक देवताओं की पूजा करते थे। जिन में सब से बड़ा देवता: सूर्य था। जिसे «रूअ», कहते थे। और राजा को उसी का अवतार मानते थे, और उस की पूजा, और उस के लिये सज्दा करते थे जिस प्रकार अल्लाह के लिये सज्दा किया जाता है।

अपने भक्तों में से जिसे चाहे उस का वारिस (उत्तराधिकारी) बना देता है। और अन्त उन्हीं के लिये है जो आज्ञाकारी हों।

129. उन्हीं ने कहा: हम तुम्हारे आने से पहले भी सताये गये और तुम्हारे आने के पश्चात् भी (सताये जा रहे हैं)! मूसा ने कहा: समीप है कि तुम्हारा पालनहार तुम्हारे शत्रु का विनाश कर दे, और तुम्हें देश में अधिकारी बना दे। फिर देखे कि तुम्हारे कर्म कैसे होते हैं।

130. और हम ने फिरौन की जाति को अकालों तथा उपज की कमी में ग्रस्त कर दिया ताकि वह सावधान हो जायें।

131. तो जब उन पर सम्पन्नता आती तो कहते कि हम इस के योग्य हैं। और जब अकाल पड़ता, तो मूसा और उस के साथियों से बुरा सगुन लेते। सुन लो! उन का बुरा सगुन तो अल्लाह के पास^[1] था, परन्तु अधिकतर लोग इस का ज्ञान नहीं रखते।

132. और उन्हीं ने कहा: तू हम पर जादू करने के लिये कोई भी आयत (चमत्कार) ले आये तो हम तेरा विश्वास करने वाले नहीं हैं।

عِبَادِهِ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٣٠﴾

قَالُوا أَوْزَيْنَا مِنْ قَبْلُ أَنْ تَأْتِينَا وَمِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا قَالَ عَلَىٰ رَبِّكُمْ أَنْ يُهْلِكَ عَدُوُّكُمْ وَسَيَتَعْلَفُ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ قَيْظٌ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿٣١﴾

وَلَقَدْ أَخَذْنَا آلَ فِرْعَوْنَ بِالْسَيْبِينَ وَنَقِضَ مِنَ الثَّمَرَاتِ لَعْنَهُمْ يَدُوكُمْ ﴿٣٢﴾

فَإِذَا جَاءَهُمْ الْحَسَنَةُ قَالُوا لِنَاهِدُهَا وَإِنْ أَصَابَتْهُمْ سَيِّئَةٌ يَطَّيَّرُوا بِمُوسَىٰ وَمَنْ مَعَهُ أَلَّا إِنَّمَا طَلَيْهِمْ عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنْ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٣﴾

وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهِ مِنْ آيَةٍ لِنَسْحَرَنَّ بِهَا فَتَمَنَّوْا لَكَ يَهُودِيْنَ ﴿٣٤﴾

1 अर्थात् अल्लाह ने प्रत्येक दशा के लिये एक नियम बना दिया है जिस के अनुसार कर्मों के परिणाम सामने आते हैं चाहे वह अशुभ हों या न हों सब अल्लाह के निर्धारित नियमअनुसार होते हैं।

133. अन्ततः हम ने उन पर तूफ़ान (उग्र वर्षा) तथा टिड्डी दल और जुअँ एवं मेढक और रक्त की वर्षा भेजी। अलग अलग निशानियाँ, फिर भी उन्होंने ने अभिमान किया, और वह थी ही अपराधी जाति।

134. और जब उन पर यातना आ पड़ी तो उन्होंने ने कहा: हे मूसा! तू अपने पालनहार से उस वचन के कारण जो उस ने तुझे दिया है, हमारे लिये प्रार्थना कर। यदि तू ने (अपनी प्रार्थना से) हम से यातना दूर कर दी तो हम अवश्य तेरा विश्वास कर लेंगे, और बनी इस्राईल को तेरे साथ जाने की अनुमति दे देंगे।

135. फिर जब हम ने एक विशेष समय तक के लिये उन से यातना दूर कर दी जिस तक उन्हें पहुँचना था, तो अकस्मात् वह वचन भंग करने लगे।

136. अन्ततः हम ने उन से बदला लिया और उन्हें सागर में डुबो दिया इस कारण कि उन्होंने ने हमारी आयतों (निशानियों) को झूठला दिया और उन से निश्चेत हो गये थे। उन के धैर्य रखने के कारण, तथा हम ने उसे ध्वस्त कर दिया जो फिरऔन और उस की जाति कलाकारी कर रही थी, और जो बेलै छप्परों पर चढ़ा रही थी।^[1]

137. और हम ने उस जाति (बनी

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ
وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ الْبَيْتِ مُفَصَّلَاتٍ فَاسْتَكْبَرُوا
وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ۝

وَلَمَّا وَفَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا لِمُوسَى اذُرْنَا
رَبِّكَ بِمَا عٰهَدَ عِنْدَكَ لَئِن كُنْتُمْ عٰمِلًا
الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ بِكَ وَلَنَرِيَنَّ مَعَكَ بَنِي
إِسْرَائِيلَ ۝

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الرِّجْزَ إِلَىٰ آجَلٍ هُم
بِلُغْوِهِ إِذْ هُمْ يَنْتَكِبُونَ ۝

فَأَنْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ يَوْمًا
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَمَّاهُمْ غَافِلِينَ ۝

وَأَوْرَشْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضَعُونَ

1 अर्थात: उन के ऊँचे ऊँचे भवन, तथा सुन्दर बाग बगीचे।

इस्राईल) को जो निर्वल समझे जा रहे थे धरती (शाम देश) के पश्चिमों तथा पूर्वी का जिस में हम ने बरकत दी थी अधिकारी बना दिया। और (इस प्रकार हे नबी!) आप के पालनहार का शुभ वचन बनी इस्राईल के लिये पूरा हो गया, उन के धैर्य रखने के कारण, तथा हम ने उसे ध्वस्त कर दिया जो फिरऔन और उस की जाति कलाकारी कर रही थी, और जो बेलै छप्परोँ पर चढ़ा रहे थे।^[1]

138. और बनी इस्राईल को हम ने सागर पार करा दिया, तो वह एक जाति के पास से हो कर गये जो अपनी मूर्तियों की पूजा कर रही थी, उन्हीं ने कहा: हे मूसा! हमारे लिये वैसा ही एक पूज्य बना दीजिये जैसे उन के पूज्य हैं। मूसा ने कहा: वास्तव में तुम अज्ञान जाति हो।

139. यह लोग जिस रीति में हैं उसे नाश हो जाना है, और वह जो कुछ कर रहे हैं सर्वथा असत्य है।

140. मूसा ने कहा: क्या मैं अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिये कोई दूसरा पूज्य निर्धारित करूँ जब कि उस ने तुम्हें सारे संसारों के वासियों पर प्रधानता दी है?

141. तथा उस समय को याद करो, जब हम ने तुम्हें फिरऔन की जाति से बचाया। वह तुम्हें घोर यातना दे रहे

مَشَارِقِ الْأَرْضِ وَمَغَارِبِهَا الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا
وَتَبَّتْ كَيْدُ رَبِّكَ الحَسْبَىٰ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ ۖ
بِمَا صَبَرُوا وَدَمَرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ
وَقَوْمَهُ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿١٣٨﴾

وَجَوْرًا يَبْنِي إِسْرَائِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَوْا عَلَىٰ قَوْمٍ
يَعْلَمُونَ عَلَىٰ أَصْنَامٍ لَهُمْ قَالُوا يَا مَوْسَىٰ اجْعَلْ
لَنَا آلِهَةً كَمَا آلِهَةُكُمْ قَالُوا أَتَمَّ قَوْمٌ
يَعْبُدُونَ ﴿١٣٩﴾

إِنَّ هَؤُلَاءِ مُتَّبِعُوا مَا هُمْ فِيهِ وَيَطِلُوا مَا كَانُوا
يَعْبُدُونَ ﴿١٤٠﴾

قَالَ اغْتَرِبْ إِلَيْهِ ائْتِيكُمْ إِلَهًا وَهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى
الْعَالَمِينَ ﴿١٤١﴾

وَإِذْ أَنْجَيْنَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءًا
العَذَابِ يَقْتُلُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ

1 अर्थात: उन के ऊँचे ऊँचे भवन, तथा सुन्दर बाग बगीचे।

थे। तुम्हारे पुत्रों को बध कर रहे थे, और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रख रहे थे। और इस में तुम्हारे पालनहार की ओर से भारी परीक्षा थी।

142. और हम ने मूसा को तीस रातों का वचन^[1] दिया। और उस की पूर्ति दस रातों से कर दी। तो तेरे पालनहार की निर्धारित अवधि चालीस रात पूरी हो गयी। तथा मूसा ने अपने भाई हारून से कहा: तुम मेरी जाति में मेरा प्रतिनिधि रहना तथा सुधार करते रहना, और उपद्रवकारियों की नीति न अपनाना।

143. और जब मूसा हमारे निर्धारित समय पर आ गया, और उस के पालनहार ने उस से बात की, तो उस ने कहा: हे मेरे पालनहार! मेरे लिये अपने आप को दिखा दे ताकि मैं तेरा दर्शन कर लूँ। अल्लाह ने कहा: तू मेरा दर्शन नहीं कर सकेगा। परन्तु इस पर्वत की ओर देखा। यदि वह अपने स्थान पर स्थिर रह गया तो तू मेरा दर्शन कर सकेगा। फिर जब उस का पालनहार पर्वत की ओर प्रकाशित हुआ तो उसे चूर-चूर कर दिया। और मूसा निश्चेत हो कर गिर गया। और जब चेतना में आया, तो उस ने कहा: तू पवित्र है! मैं तुझ से क्षमा माँगता हूँ। तथा मैं सर्व

نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿٥٠﴾

وَوَعَدْنَا مُوسَى ثَلَاثِينَ لَيْلَةً وَأَتَمَمْنَاهَا
بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيقَاتُ رَبِّهِ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً
وَقَالَ مُوسَى لِأَخِيهِ هَارُونَ اخْلُفْنِي فِي
قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ
الْمُفْسِدِينَ ﴿٥١﴾

وَلَمَّا جَاءَ مُوسَى لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ قَالَ رَبِّ
أَرِنِي أَنْظُرَ إِلَيْكَ قَالَ لَنْ نَرَاكَ وَلَكِن نُنظُرُ
إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ تَرَانِي
فَلَمَّا تَجَلَّى رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ
مُوسَى صَعِقًا فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ سُبْحَانَكَ تُبْتُ
إِلَيْكَ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٢﴾

1 अर्थात् तूर पर्वत पर आकर अल्लाह की इबादत करने और धर्मविधान प्रदान करने के लिये।

प्रथम^[1] ईमान लाने वालों में से हूँ

144. अल्लाह ने कहा: हे मूसा! मैं ने तुझे लोगों पर प्रधानता दे कर अपने संदेशों तथा अपने वार्तालाप द्वारा निर्वाचित कर लिया है। अतः जो कुछ तुझे प्रदान किया है उसे ग्रहण कर ले, और कृतज्ञों में हो जा।

145. और हम ने उस के लिये तख्तियों पर (धर्म के) प्रत्येक विषय के लिये निर्देश और प्रत्येक बात का विवरण लिख दिया। (तथा कहा कि) इसे दृढ़ता से पकड़ लो, और अपनी जाति को आदेश दो कि उस के उत्तम निर्देशों का पालन करें। और मैं तुम्हें अवज्ञाकारियों का घर दिखा दूँगा।

146. मैं उन्हें^[2] अपनी आयतों (निशानियों) से फेर^[3] दूँगा जो धरती में अवैध अभिमान करते हैं। और यदि वह प्रत्येक आयत (निशानी) देख लें तब भी उस पर ईमान नहीं लायेंगे। और यदि वह सुपथ देखेंगे तो उसे नहीं अपनायेंगे। और यदि कुपथ देख लें तो उसे अपना लेंगे। यह इस कारण कि

قَالَ يٰمُوسَىٰ اِنِّى اصْطَفَيْتَكَ عَلَى النَّاسِ
بِرِسَالَتِى وَاٰتٰىنِى ۗ فَخُذْ مَا آتٰىتَكَ وَكُنْ
مِنَ الشَّاكِرِيْنَ ۝

وَكَتَبْنَا لَهُ فِى الْاَلْوَامِرِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً
وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۗ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَاْمُرْ
قَوْمَكَ بِاِخْتِاٰءِهَا وَاٰصْحِبْهَا سَاوِرِيْكُمْ ۗ دَارَ
الْقٰسِيْنَ ۝

سَاوِرُوْا عَنَ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ فِى
الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ يَّرُوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا
يُؤْمِنُوْا بِهَا ۗ وَاَنْ يَّرُوْا سَبِيْلَ الشُّكْرِ لَّا يَكْفُرُوْا
سَبِيْلًا ۗ وَاَنْ يَّرُوْا سَبِيْلَ النِّعْمِ يَتَّخِذُوْهُ
سَبِيْلًا ۗ ذٰلِكَ يَآءِهُمْ كَذٰبًا وَاِيْتَيْنَا وَاكٰنُوْا
عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝

- 1 इस से प्रत्यक्ष हुआ कि कोई व्यक्ति इस संसार में रहते हुये अल्लाह को नहीं देख सकता और जो ऐसा कहते हैं वह शैतान के बहकावे में हैं। परन्तु सहीह हदीस से सिद्ध होता है कि आखिरत में ईमान वाले अल्लाह का दर्शन करेंगे।
- 2 अर्थात तुम्हें उन पर विजय दूँगा जो अवैज्ञाकारी हैं, जैसे उस समय की अमालिका इत्यादि जातियों पर।
- 3 अर्थात जो जान बूझ कर अवैज्ञा करेगा अल्लाह का नियम यही है कि वह तर्कों तथा प्रकाशों से प्रभावित होने की योग्यता खो देगा। इस का यह अर्थ नहीं कि अल्लाह किसी को अकारण कुपथ पर बाध्य कर देता है।

उन्होंने ने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया, और उन से निश्चेत रहे।

147. और जिन लोगों ने हमारी आयतों, तथा परलोक (में हम से) मिलने को झुठला दिया, उन्हीं के कर्म व्यर्थ हो गये, और उन्हें उसी का बदला मिलेगा, जो कुकर्म वह कर रहे थे।
148. और मूसा की जाति ने उस के (पर्वत पर जाने के) पश्चात् अपने आभूषणों से एक बछड़े की मूर्ति बना ली, जिस से गाय के डकारने के समान ध्वनि निकलती थी। क्या उन्होंने ने यह नहीं सोचा कि न तो वह उन से बात^[1] करता है और न किसी प्रकार का मार्गदर्शन देता है? उन्होंने ने उसे बना लिया, तथा वे अत्याचारी थे।
149. और जब वह (अपने किये पर) लज्जित हुये और समझ गये कि वह कुपथ हो गये हैं, तो कहने लगे: यदि हमारे पालनहार ने हम पर दया नहीं की, और हमें क्षमा नहीं किया, तो हम अवश्य विनाशों में हो जायेंगे।
150. और जब मूसा अपनी जाति की ओर क्रोध तथा दुःख से भरा हुआ वापिस आया तो उस ने कहा: तुम ने मेरे

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بآيَاتِنَا وَلِقَاءَ الْآخِرَةِ
حَسَبْتُمْ أَعْمَالَهُمْ هَلْ يَجْرُونَ إِلَّا مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿١٤٧﴾

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَىٰ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ حُلِيِّهِمْ
عِجْلًا جَسَدًا آلَهُ خَوَارِثًا مَرَرُوا الْكَلْبَ لَا
يَكْتَلِبُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا اتَّخَذُوا
وَكَانُوا ظَالِمِينَ ﴿١٤٨﴾

وَلَمَّا سَقَطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ قَدْ
ضَلُّوا الْفِتْرَةَ الْوَالِدِينَ لَمْ يَحْصِنُوا رَبَّنَا وَغَفِرْنَا
لَنَاقُوتِنَ مِنَ الْخَسِيرِينَ ﴿١٤٩﴾

وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا
قَالَ بِسْمِ اللَّهِ خَلَفْتُمُونِي مِنْ بَعْدِي فَأَعْبَأْتُمْ أَمْرَ

1 अर्थात् उस से एक ही प्रकार की ध्वनि क्यों निकलती है। बाबिल और मिस्र में भी प्राचीन युग में गाय-बैल की पूजा हो रही थी। और यदि बाबिल की सभ्यता को प्राचीन मान लिया जाये तो यह विचार दूसरे देशों में वही से फैला होगा।

पश्चात् मेरा बहुत बुरा प्रतिनिधित्व किया। क्या तुम अपने पालनहार की आज्ञा से पहले ही जल्दी कर^[1] गये। तथा उस ने लेख तख्तियाँ डाल दी, तथा अपने भाई (हारून) का सिर पकड़ के अपनी ओर खींचने लगा। उस ने कहा: हे मेरे माँ जाये भाई! लोगों ने मुझे निर्बल समझ लिया तथा समीप था कि वे मुझे मार डालें। अतः तू शत्रुओं को मुझे पर हँसने का अवसर न दे। मुझे अत्याचारियों का साथी न बना।

رَبِّكَ وَالْقَى الْأَوَامِرَ وَأَخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ
إِلَيْهِ قَالَ إِنَّ أَمْرًا إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضَعُّوْنِي
وَكَادُوا يَفْتُلُونَنِي فَلَا تُشْمِتْ بِنِي الرَّدَّاءَ وَلَا
تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

151. मूसा ने कहा:^[2] हे मेरे पालनहार! मुझे तथा मेरे भाई को क्षमा कर दे। और हमें अपनी दया में प्रवेश दे। और तू ही सब दयाकारियों से अधिक दयाशील है।

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِإِخِي وَأَدْخِلْنَا فِي رَحْمَتِكَ
وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝

152. जिन लोगों ने बछड़े को पूज्य बनाया उन पर उन के पालनहार का प्रकोप आयेगा और वे संसारिक जीवन में अपमानित होंगे। और इसी प्रकार हम झूठ घड़ने वालों को दण्ड देते हैं।

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سِينًا لَهُمْ عَذَابٌ مِّن
رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَكَذَلِكَ نَجْزِي
الْمُفْتَرِينَ ۝

153. और जिन लोगों ने दुष्कर्म किया, फिर उस के पश्चात् क्षमा माँग ली, और ईमान लाये, तो वास्तव में तेरा पालनहार अति क्षमाशील दयावान् है।

وَالَّذِينَ يَعْلَمُوا السَّيِّئَاتِ لَمْ تَأْتُوا مِنْ بَعْدِهَا
وَأَسْأَلُكُمْ أَنْ تَبْعُوا مِنْ بَعْدِهَا الْعَفْوَ رَحِيمٌ ۝

154. फिर जब मूसा का क्रोध शान्त हो गया तो उस ने लेख तख्तियाँ उठा

وَلَبَّاسَكَتَ عَنْ مُوسَى الْغَضَبِ أَخَذَ الْأَوَامِرَ

1 अर्थात् मेरे आने की प्रतीक्षा नहीं की।

2 अर्थात् जब यह सिद्ध हो गया कि मेरा भाई निर्दोष है।

ली, और उस के लिखे आदेशों में मार्गदर्शन तथा दया थी उन लोगों के लिये जो अपने पालनहार से ही डरते हों।

155. और मूसा ने हमारे निर्धारित^[1] समय के लिये अपनी जाति के सत्तर व्यक्तियों को चुन लिया। और जब उन्हें भूकम्प ने घेर^[2] लिया तो मूसा ने कहा: हे मेरे पालनहार! यदि तू चाहता तो इन सब का इस से पहले ही विनाश कर देता, और मेरा भी। क्या तू हमारा उस कुकर्म के कारण नाश कर देगा जो हम में से कुछ निर्बोध कर गये? यह^[3] तेरी ओर से केवल एक परीक्षा थी। तू जिसे चाहे उस के द्वारा कुपथ कर दे, और जिसे चाहे सुपथ दर्शा दे। तू ही हमारा संरक्षक है, अतः हमारे पापों को क्षमा कर दे। और हम पर दया कर, तू सर्वोत्तम क्षमावान् है।

156. और हमारे लिये इस संसार में भलाई लिख दे तथा परलोक में भी, हम तेरी ओर लौट आये। उस (अल्लाह) ने कहा: मैं अपनी यातना जिसे चाहता हूँ देता हूँ। और मेरी दया प्रत्येक चीज़ को समोये हुये

وَفِي سَخَّرَهَا هُدًى وَرَحْمَةً لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ
يَهْتَبُونَ ﴿٣٧﴾

وَاخْتَارَ مُوسَىٰ قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا رَّابِعَاتِنَا
فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّحْمَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُمْ
مِّن قَبْلِ وَآيَاتِي أَتَاهُمْ لِنِجَاتِنَا لَعَلَّ الشُّكَّاهُ مِمَّا إِنْ
هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا مَن تَشَاءُ وَتَهْدِي مَن
تَشَاءُ إِنَّكَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ
الْغَافِرِينَ ﴿٣٨﴾

وَكَتَبْنَا لَنَافِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي
الْآخِرَةِ إِنَّا هُدًى تَأْتِيكَ ۗ قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ
بِهِ مَن أَشَاءُ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ
فَسَاكِنِيهَا الَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ
وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٩﴾

- 1 अल्लाह ने मूसा अलैहिस्सलाम को आदेश दिया था कि वह तूर पर्वत के पास बछड़े की पूजा से क्षमा याचना के लिये कुछ लोगों को लायें। (इब्ने कसीर)
- 2 जब वह उस स्थान पर पहुँचे तो उन्होंने यह माँग की कि हम को हमारी आँखों से अल्लाह को दिखा दे। अन्यथा हम तेरा विश्वास नहीं करेंगे। उस समय उन पर भूकम्प आया। (इब्ने कसीर)
- 3 अर्थात् बछड़े की पूजा।

है। मैं उसे उन लोगों के लिये लिख दूँगा जो अवैज्ञा से बचेंगे, तथा ज़कात देंगे, और जो हमारी आयतों पर ईमान लायेंगे।

157. जो उस रसूल का अनुसरण करेंगे जो उम्मी नबी^[1] है, जिन (के आगमन) का उल्लेख वह अपने पास तौरात तथा इंजील में पाते हैं। जो सदाचार का आदेश देंगे, और दुराचार से रोकेंगे। और उन के लिये स्वच्छ चीजों को हलाल (वैध) तथा मलीन चीजों को हराम (अवैध) करेंगे। और उन से उन के बोझ उतार देंगे, तथा उन बंधनों को खोल देंगे जिन में वे जकड़े हुये होंगे। अतः जो लोग आप पर ईमान लाये और आप का समर्थन किया और आप की सहायता की, तथा उस प्रकाश (कुर्आन) का अनुसरण किया जो आप के साथ उतारा गया, तो वही सफल होंगे।

أَلَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ
الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْنُوزًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرَةِ
وَإِنْجِيلٍ يَأْمُرُهُم بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ
الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ
الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ
الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ أَكَلَّذِينَ اتَّبَعُوا النَّبِيَّ
الَّذِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ أَثْقَالٌ وَعَفَا رُؤُوسَهُمْ
وَأَنْشَبُوا النَّبِيَّ الَّذِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ أَثْقَالٌ
وَأَنْشَبُوا النَّبِيَّ الَّذِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ أَثْقَالٌ

158. (हे नबी!) आप लोगों से कह दें कि

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ

1 अर्थात् बनी इस्राईल से नहीं। इस से अभिप्राय अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है, जिन के आगमन की भविष्यवाणी तौरात, इंजील तथा दूसरे धर्म शास्त्रों में पाई जाती है। यहाँ पर आप की तीन विशेषताओं की चर्चा की गयी है:

1. आप सदाचार का आदेश देंगे तथा दुराचार से रोकेंगे।
2. स्वच्छ चीजों के प्रयोग को उचित तथा मलीन चीजों के प्रयोग को अनुचित घोषित करेंगे।
3. अहले किताब जिन कड़े धार्मिक नियमों के बोझ तले दबे हुये थे उन्हें उन से मुक्त करेंगे। और सरल इस्लामी धर्मविधान प्रस्तुत करेंगे, और उन के आगमन के पश्चात् लोक-परलोक की सफलता आप ही के धर्मविधान के अनुसरण में सीमित होगी।

हे मानव जाति के लोगो! मैं तुम सभी की ओर उस अल्लाह का रसूल हूँ जिस के लिये आकाश तथा धरती का राज्य है। कोई वंदनीय (पूज्य) नहीं है, परन्तु वही, जो जीवन देता तथा मारता है। अतः अल्लाह पर ईमान लाओ, और उस के उस उम्मी नबी पर जो अल्लाह पर और उस की सभी (आदि) पुस्तकों पर ईमान रखते हैं। और उन का अनुसरण करो, ताकि तुम मार्ग दर्शन पा जाओ।^[1]

159. और मूसा की जाति में एक गिरोह ऐसा भी है जो सत्य पर स्थित है, और उसी के अनुसार निर्णय (न्याय) करता है।

160. और^[2] हम ने मूसा की जाति के बारह घरानों को बारह समुदायों में विभक्त कर दिया। और हम ने मूसा की ओर वह्यी भेजी, जब उस की जाति ने उस से जल माँगा कि अपनी लाठी इस पत्थर पर मारो,

جَمِيعًا إِلَيْنِي لَهُ مَلِكُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۚ لَأَلَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ فَأَمِنُوا
بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ الْبَرِّ الرَّحِيمِ ۚ الَّذِي يَوْمِنُ
بِاللَّهِ وَكَلِمَاتِهِ ۚ وَالشَّعْوَةَ لَكُمْ تَهْتَدُونَ ۝

وَمِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ أُمَّةٌ يَهْتَدُونَ بِالْحَقِّ وَإِلَيْهِ
يَعْدِلُونَ ۝

وَقَطَعْنَاهُمْ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا
وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ إِذِ اسْتَسْقَمَهُ قَوْمَهُ ۚ أَنْ
أَضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ فَانفَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا
عَشْرَةَ عَيْنًا ۚ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَشْرِبَهُمْ
وَوَلَّكْنَا عَلَيْهِمُ الْقَوْمَ ۚ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ

1 इस आयत का भावार्थ यह है कि इस्लाम के नबी किसी विशेष जाति तथा देश के नबी नहीं हैं, प्रलय तक के लिये पूरी मानव जाति के नबी हैं। यह सब को एक अल्लाह की वंदना कराने के लिये आये हैं, जिस के सिवा कोई पूज्य नहीं। आप का चिन्ह अल्लाह पर तथा सब प्राचीन पुस्तकों और नवियों पर ईमान है। आप का अनुसरण करने का अर्थ यह है कि अब उसी प्रकार अल्लाह की पूजा-अराधना करो जैसे आप ने की और बताई है। और आप के लाये हुये धर्म विधान का पालन करो।

2 इस से अभिप्राय वह लोग हैं जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के लाये हुये धर्म पर कायम थे और आने वाले नबी की प्रतीक्षा कर रहे थे और जब वह आये तो तुरन्त आप पर ईमान लाये, जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम इत्यादि।

तो उस से बारह स्रोत उबल पड़े, तथा प्रत्येक समुदाय ने अपने पीने का स्थान जान लिया। और उन पर बादलों की छाँव की, और उन पर मन्ब तथा सल्वा उतारा। (हम ने कहा): इन स्वच्छ चीज़ों में से जो हम ने तुम्हें प्रदान की है, खाओ। और हम ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वह स्वयं (अवैज्ञा कर के) अपने प्राणों पर अत्याचार कर रहे थे।

الْمَنِّ وَالسَّلْوَىٰ كُلُّوْا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا
رَزَقْنَاكُمْ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلَكِنْ كَانُوْا
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٩﴾

161. और जब उन (बनी इस्राईल) से कहा गया कि इस नगर (बैतुल मक़दिस) में बस जाओ, और उस में से जहाँ इच्छा हो खाओ, और कहो कि हमें क्षमा कर दे, तथा द्वार में सज्दा करते हुये प्रवेश करो, हम तुम्हारे लिये तुम्हारे दोषों को क्षमा कर देंगे, और सत्कर्मियों को और अधिक देंगे।

وَاذْقِلْ لَهُمْ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ
وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوْا
حِطَّةٌ وَّادْخُلُوْا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ
خَطِيْئَتِكُمْ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٠﴾

162. तो उन में से अत्याचारियों ने उस बात को दूसरी बात से^[1] बदल दिया जो उन से कही गयी थी। तो हम ने उन पर आकाश से प्रकोप उतार दिया। क्यों कि वह अत्याचार कर रहे थे।

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ
الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ
رِجْرًا مِنَ السَّمَآءِ يَمَآ كَانُوْا
يَظْلِمُوْنَ ﴿١١﴾

163. तथा (हे नबी!) इन से उस नगरी के सम्बंध में प्रश्न करो जो समुद्र (लाल सागर) के समीप थी, जब उस के निवासी सब्त (शनिवार) के

وَسَلَّمُوْهُ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ
حَاضِرَةً الْبَحْرِ اِذْ يَعُدُّوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ
تَأْتِيْهِمْ حِيَتًا لَهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا

1 और चूतड़ों के बल खिसकते और यह कहते हुये प्रवेश किया कि गेहूँ मिले। (सहीह बुख़ारी- 4641)

दिन के विषय में आज्ञा का उल्लंघन^[1] कर रहे थे, जब उन के पास उन की मछलियाँ उन के सब्त के दिन पानी के ऊपर तैर कर आ जाती थीं और सब्त का दिन न हो तो नहीं आती थीं। इसी प्रकार उन की अवैज्ञा के कारण हम उन की परीक्षा ले रहे थे।

164. तथा जब उन में से एक समुदाय ने कहा कि तुम उन्हें क्यों समझा रहे हो जिन्हें अल्लाह (उन की अवज्ञा के कारण) ध्वस्त करने अथवा कड़ा दण्ड देने वाला है? उन्होंने कहा: तुम्हारे पालनहार के समक्ष क्षम्य होने के लिये, और इस आशा में कि वह आज्ञाकारी हो जायें।^[2]

165. फिर जब उन्होंने जो कुछ उन्हें स्मरण कराया गया, उसे भुला दिया तो हम ने उन लोगों को बचा लिया, जो उन को बुराई से रोक रहे थे, और हम ने अत्याचारियों को कड़ी यातना में उन की अवैज्ञा के कारण घेर लिया।

166. फिर जब उन्होंने ने उस का उल्लंघन किया जिस से वे रोके गये थे, तो हम ने उन से कहा कि तुच्छ बंदर

وَيَوْمَ لَا يُسْئَلُونَ لَأَن آتَيْتَهُمْ كَذَلِكَ
بِأَنَّهُمْ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٤﴾

وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ يَعْطُونَ قَوْمًا لِلَّهِ
مُلْكَهُمْ أَوْ مَعَدَّ بِهِمْ عَذَابًا شَدِيدًا قَالُوا
مَعَدَّ الرَّقَابُ إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٦٥﴾

فَلَمَّا سَأَوْا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَجَبْنَا الَّذِينَ يَبْهَمُونَ عَنِ
السُّؤَالِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا بِعَدَابِ بَيْتِهِمْ
بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٦﴾

فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا
قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿١٦٦﴾

1 क्योंकि कि उन के लिये यह आदेश था कि शनिवार को मछलियों का शिकार नहीं करेंगे। अधिकांश भाष्यकारों ने उस नगरी का नाम ईला (ईलात) बताया है जो कुलजुम सागर के किनारे पर आबाद थी।

2 आयत में यह संकेत है कि बुराई को रोकने से निराश नहीं होना चाहिये, क्योंकि हो सकता है कि किसी के दिल में बात लग ही जाये, और यदि न भी लगे तो अपना कर्तव्य पूरा हो जायेगा।

हो जाओ।

167. और याद करो जब आप के पालनहार ने घोषणा कर दी कि वह प्रलय के दिन तक उन (यहूदियों) पर उन्हें प्रभुत्व देता रहेगा जो उन को घोर यातना देते रहेंगे^[1] निःसंदेह आप का पालनहार शीघ्र दण्ड देने वाला है, और वह अति क्षमाशील दयावान् (भी) है।

168. और हम ने उन्हें धरती में कई सम्प्रदायों में विभक्त कर दिया, उन में कुछ सदाचारी थे, और कुछ इस के विपरीत थे। हम ने अच्छाईयों तथा बुराईयों दोनों के द्वारा उन की परीक्षा ली, ताकि वह (कुकर्माँ से) रुक जायें।

169. फिर उन के पीछे कुछ ऐसे लोगों ने उन की जगह ली जो पुस्तक के उत्तराधिकारी हो कर भी तुच्छ संसार का लाभ समेटने लगे। और कहने लगे कि हमें क्षमा कर दिया जायेगा। और यदि उसी के समान उन्हें लाभ हाथ आ जाये तो उसे भी ले लेंगे। क्या उन से पुस्तक का दृढ़ वचन नहीं लिया गया है कि अल्लाह पर सच्च ही बोलेंगे, जब कि पुस्तक में जो कुछ है उस का

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لِيُبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ إِلَى يَوْمِ
الْقِيَامَةِ مَنْ يَسُومُهُمْ سُوءَ الْعَذَابِ إِنَّ رَبَّكَ
لَسَرِيعُ الْعِقَابِ ۖ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٦٧﴾

وَوَضَعْنَاهُمْ فِي الْأَرْضِ أُمَّمًا مِنْهُمْ الْمُضِلُّونَ
وَمِنْهُمْ دُونَ ذَلِكَ وَبَلَّوْنَهُمْ بِالْحَسَنَاتِ
وَالسَّيِّئَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٦٨﴾

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَذَّبُوا الْقِطْعَ بِأَخْدَانِهِمْ
عَرَضَ هَذَا الْأَدْنَى وَيَقُولُونَ سَيُغْفَرُ لَنَا وَإِنْ
يَأْتِيهِمْ عَرَضٌ مِثْلَهُ يَأْخُذُوهُ أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ
بِثَبَاتِ الْقِطْعِ أَنْ لَا يَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ
وَدَرَسُوا نَاجِيَةً وَاللَّارُ الْأَخْزَرَةُ خَيْرٌ لِلَّذِينَ يُتَّقُونَ
أَلَّا يَقُولُونَ ﴿١٦٩﴾

1 यह चेतावनी बनी इस्राईल को बहुत पहले से दी जा रही थी। ईसा (अलैहिस्सलाम) से पूर्व आने वाले नबियों ने बनी इस्राईल को डराया कि अल्लाह की अवैज्ञा से बचो। और स्वयं ईसा ने भी उन को डराया परन्तु वह अपनी अवैज्ञा पर बाकी रहे जिस के कारण अल्लाह की यातना ने उन्हें घेर लिया और कई बार बैतुल मक़्दिस को उजाड़ा गया, और तौरात जलाई गई।

अध्ययन कर चुके हैं? और परलोक का घर (स्वर्ग) उत्तम है उन के लिये जो अल्लाह से डरते हों। तो क्या वह इतना भी नहीं^[1] समझते?

170. और जो लोग पुस्तक को दृढ़ता से पकड़ते, और नमाज़ की स्थापना करते हैं तो वास्तव में हम सत्कर्मियों का प्रतिफल अकारत् नहीं करते।

171. और जब हम ने उन के ऊपर पर्वत को इस प्रकार छा दिया जैसे वह कोई छतरी हो, और उन्हें विश्वास हो गया कि वह उन पर गिर पड़ेगा, (तथा यह आदेश दिया कि) जो (पुस्तक) हम ने तुम्हें प्रदान की है उसे दृढ़ता से थाम लो, तथा उस में जो कुछ है उसे याद रखो, ताकि तुम आज्ञाकारी हो जाओ।

172. तथा (वह समय याद करो) जब आप के पालनहार ने आदम के पुत्रों की पीठों से उन की संतति को निकाला, और उन को स्वयं उन पर साक्षी (गवाह) बनाया: क्या मैं तुम्हारा पालनहार नहीं हूँ? सब ने कहा: क्यों नहीं? हम (इस के) साक्षी^[2] हैं। ताकि प्रलय के दिन यह न कहो कि हम तो इस से असूचित थे।

وَالَّذِينَ يُتَّبِعُونَ بِالْكِتَابِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ إِنَّا لَا نُنْفِئُهُمْ أَجْرَ الْمُصَلِّينَ ۝

وَإِذْ تَنْقَضَا الْجِبَالَ عَنْهُمْ كَالْكَطَاةِ وَظَلَمْنَا أَعْيُنَهُمْ
وَاقْرَأْ لَهُمْ هُدًى وَآمَنَّا بِعَيْتِكُمْ بِقُرْآنٍ وَادْكُرُوا مَا
فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنْ بُنَيِّ آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ
ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَلَسْتُ
بِرَبِّكُمْ قَالُوا بَلَىٰ شَهِدْنَا أَنَّا نَحْنُ أَوْلَىٰ بِالْغَيْمَةِ
إِنَّا كُنَّا عَنْ هَذَا غَافِلِينَ ۝

1 इस आयत में यहूदी विद्वानों की दुर्दशा बताई गयी है कि वह तुच्छ संसारिक लाभ के लिये धर्म में परिवर्तन कर देते थे और अवैध को वैध बना लेते थे। फिर भी उन्हें यह गर्व था कि अल्लाह उन्हें अवश्य क्षमा कर देगा।

2 यह उस समय की बात है जब आदम अलैहिस्सलाम की उत्पत्ति के पश्चात् उन की सभी संतान को जो प्रलय तक होगी, उन की आत्माओं से अल्लाह ने अपने पालनहार होने की गवाही ली थी। (इब्ने कसीर)

173. अथवा यह कहो कि हम से पूर्व हमारे पूर्वजों ने शिर्क (मिश्रण) किया और हम उन के पश्चात् उन की संतान थे तो क्या तू गुमराहों के कर्म के कारण हमारा विनाश^[1] करेगा?

174. और इसी प्रकार हम आयतों को खोल खोल कर बयान करते हैं ताकि लोग (सत्य की ओर) लौट जायें।

175. और उन्हें उस की दशा पढ़ कर सुनायें जिसे हम ने अपनी आयतों (का ज्ञान) दिया, तो वह उस (के खोल से) निकल गया। फिर शैतान उस के पीछे लग गया और वह कुपथों में हो गया।

176. और यदि हम चाहते तो उन (आयतों) द्वारा उस का पद ऊँचा कर देते, परन्तु वह माया मोह में पड़ गया, और अपनी मनमानी करने लगा। तो उस की दशा उस कुत्ते के समान हो गयी जिसे हाँको तब भी जीभ निकाले हाँपता रहे और छोड़ दो तब भी जीभ निकाले हाँपता है। यही उपमा है उन लोगों की जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं। तो आप यह कथायें उन को सुना दें, संभवतः वह सोच विचार करें।

177. उन की उपमा कितनी बुरी है

أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً
مِنْ بَعْدِهِمْ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبِطِلُونَ ﴿٣٠﴾

وَكَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ الْأَيَاتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٣١﴾

وَإِثْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ الَّذِينَ اتَّيَبْنَا فَآسَلْتَهُمْ
مِنْهَا فَاتَّبَعَهُ السَّيِّئُ فَكَانَ مِنَ الْعَوْرِينَ ﴿٣٢﴾

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهُ بِهَا وَلَئِنَّكَ أَخْلَدْتَهُ
إِلَى الْأَرْضِ وَإِنَّمَا هُوَ فِيئْتَاهُ كَمَا مَثَلُ الْكَلْبِ إِذَا
تَحِيلَ عَلَيْهِ يَلْهَثُ أَوْ تَتْرُكُهُ يَلْهَثُ ذَلِكَ
مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
فَاقْصِصْ الْقِصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٣٣﴾

سَاءَ مَثَلًا لِقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا

1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह के अस्तित्व तथा एकेश्वरवाद की आस्था सभी मानव का स्वभाविक धर्म है। कोई यह नहीं कह सकता की मैं अपने पूर्वजों की गुमराही से गुमराह हो गया। यह स्वभाविक आन्तरिक आवाज़ है जो कभी दब नहीं सकती।

जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठला दिया! और वे अपने ही ऊपर अत्याचार^[1] कर रहे थे।

178. जिसे अल्लाह सुपथ कर दे वही सीधी राह पा सकता है। और जिसे कुपथ कर दे^[2] तो वही लोग असफल हैं।

179. और बहुत से जिन्न और मानव को हम ने नरक के लिये पैदा किया है। उन के पास दिल हैं जिन से सोच विचार नहीं करते, तथा उन की आँखें हैं जिन से^[3] देखते नहीं, और कान हैं जिन से सुनते नहीं। वे पशुओं के समान हैं बल्कि उन से भी अधिक कुपथ हैं, यही लोग अचेतना में पड़े हुये हैं।

180. और अल्लाह ही के शुभ नाम हैं, अतः उसे उन्हीं के द्वारा पुकारो। और उन्हें छोड़ दो जो उस के नामों

وَأَنفُسُهُمْ كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿٢٠﴾

مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدَىٰ وَمَنْ يُضِلِّ
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٢١﴾

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالإِنسِ لَهُمْ
قُلُوبٌ لَا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَا يُبْصِرُونَ
بِهَا وَلَهُمْ أذَانٌ لَا يَسْمَعُونَ بِهَا أُولَٰئِكَ
كَالْأَعْمَىٰ بَلْ هُمْ صَامِتُونَ أُولَٰئِكَ مُتَعَلِّمُونَ ﴿٢٢﴾

وَاللَّهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا وَذُرُوا الَّذِينَ
يُلْحَدُونَ فِي الْأَسْمَاءِ سَيَئِرُونَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٣﴾

1 भाष्यकारों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग और प्राचीन युग के कई ऐसे व्यक्तियों का नाम लिया है जिन का यह उदाहरण हो सकता है। परन्तु आयत का भावार्थ बस इतना है कि प्रत्येक व्यक्ति जिस में यह अवगुण पाये जाते हों उस की दशा यही होती है, जिस की जीभ से माया मोह के कारण राल टपकती रहती है, और उस की लोभाग्नि कभी नहीं बुझती।

2 कुर्आन ने बार बार इस तथ्य को दुहराया है कि मार्गदर्शन के लिये सोच विचार की आवश्यकता है। और जो लोग अल्लाह की दी हुई विचार शक्ति से काम नहीं लेते वही सीधी राह नहीं पाते। यही अल्लाह के सुपथ और कुपथ करने का अर्थ है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि सत्य को प्राप्त करने के दो ही साधन हैं: ध्यान और ज्ञान। ध्यान यह है कि अल्लाह की दी हुयी विचार शक्ति से काम लिया जाये। और ज्ञान यह है कि इस विश्व की व्यवस्था को देखा जाये और नबियों द्वारा प्रस्तुत किये हुये सत्य को सुना जाये, और जो इन दोनों से वंचित हो वह अन्धा बहरा है।

में परिवर्तन^[1] करते हैं, उन्हें शीघ्र ही उन के कुकर्मों का कुफल दे दिया जायेगा।

181. और उन में से जिन्हें हम ने पैदा किया है, एक समुदाय ऐसा (भी) है, जो सत्य का मार्ग दर्शाता तथा उसी के अनुसार (लोगों के बीच) न्याय करता है।

وَمِمَّنْ خَلَقْنَا أُمَّةً يَهْتَدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ﴿٥٦﴾

182. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठला दिया, हम उन्हें क्रमशः (विनाश तक) ऐसे पहुँचायेंगे कि उन्हें इस का ज्ञान नहीं होगा।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُم مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٧﴾

183. और उन्हें अवसर देंगे, निश्चय मेरा उपाय बड़ा सुदृढ़ है।

وَأَمْلَأُ لَهُمْ أَكْوَافًا يُدْرِكُوا مَبِئَاتِنَا ﴿٥٨﴾

184. और क्या उन्होंने यह नहीं सोचा कि उन का साथी^[2] तनिक भी पागल नहीं है? वह तो केवल खुले रूप से सचेत करने वाला है।

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا مَا بِصَاحِبِهِمْ مِنْ حَيْثُ إِنَّهُمُ آلٌ لِّبَنِي إِدْرِيسَ ﴿٥٩﴾

185. क्या उन्होंने ने आकाशों तथा धरती के राज्य को और जो कुछ अल्लाह ने पैदा किया है, उसे नहीं देखा?^[3] और (यह भी नहीं सोचा कि) हो सकता है कि उन का (निर्धारित) समय समीप आ गया हो? तो फिर

أَوَلَمْ يَنْظُرُوا إِلَىٰ مَلَكُوتِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ وَأَنْ عَسَىٰ أَنْ يَكُونَ قَدِيرًا ﴿٦٠﴾

1 अर्थात् उस के गौणिक नामों से अपनी मूर्तियों को पुकारते हैं। जैसे अज़ीज़ से «उज़्ज़ा», और इलाह से «लात» इत्यादि।

2 साथी से अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है, जिन को नबी होने से पहले वही लोग "अमीन" कहते थे।

3 अर्थात् यदि यह विचार करें, तो इस पूरे विश्व की व्यवस्था और उस का एक एक कण अल्लाह के अस्तित्व और उस के गुणों का प्रमाण है। और उसी ने मानव जीवन की व्यवस्था के लिये नबियों को भेजा है।

इस (कुआन) के पश्चात् वह किस बात पर ईमान लायेंगे?

186. जिसे अल्लाह कुपथ कर दे उस का कोई पथदर्शक नहीं। और उन्हें उन के कुकर्मा में बहकते हुये छोड़ देता है।
187. (हे नबी!) वे आप से प्रलय के विषय में प्रश्न करते हैं कि वह कब आयेगी? कह दो कि उस का ज्ञान तो मेरे पालनहार के पास है, उसे उस के समय पर वही प्रकाशित कर देगा। वह आकाशों तथा धरती में भारी होगी, तुम पर अकस्मात आ जायेगी। वह आप से ऐसे प्रश्न कर रहे हैं जैसे कि आप उसी की खोज में लगे हुये हों। आप कह दें कि उस का ज्ञान अल्लाह ही को है। परन्तु^[1] अधिकांश लोग इस (तथ्य) को नहीं जानते।
188. आप कह दें कि मुझे तो अपने लाभ और हानि का अधिकार नहीं परन्तु जो अल्लाह चाहे (वही होता है)। और यदि मैं ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान रखता तो मैं बहुत सा लाभ प्राप्त कर लेता। मैं तो केवल उन लोगों को सावधान करने तथा शुभसूचना देने वाला हूँ जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।
189. वही (अल्लाह) है जिस ने तुम्हारी उत्पत्ति एक जीव^[2] से की, और

مَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٨٦﴾

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسِمُهَا قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي لَا يُعَلِّمُهَا لَهُ سَاءُ الْأَعْيُنُ وَقَلِّبْتُ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَأَنبَأَنَّكُمْ الْبَغْتَةَ بِسْأَلِكُمْ كَأَنَّكُمُ حَفِيٌّ عَنْهَا قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٧﴾

قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَآ شَاءَ اللَّهُ وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبِ لَسْتَكَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوءُ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٨﴾

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ

1 मक्का के मिश्रणवादी आप से उपहास स्वरूप प्रश्न करते थे, कि यदि प्रलय होना सत्य है, तो बताओ वह कब होगी?

2 अर्थात् आदम अलैहिससलाम से।

उसी से उस का जोड़ा बनाया, ताकि उस से उसे संतोष मिले। फिर जब किसी^[1] ने उस (अपनी स्त्री) से सहवास किया तो उस (स्त्री) को हल्का सा गर्भ हो गया। जिस के साथ वह चलती फिरती रही, फिर जब बोझल हो गयी तो दोनों (पति-पत्नी) ने अपने पालनहार से प्रार्थना की: यदि तू हमें एक अच्छा बच्चा प्रदान करेगा तो हम अवश्य तेरे कृतज्ञ (आभारी) होंगे।

190. और जब उन दोनों को (अल्लाह ने) एक स्वस्थ बच्चा प्रदान कर दिया तो अल्लाह ने जो प्रदान किया उस में दूसरों को उस का साझी बनाने लगे। तो अल्लाह इन की शिकर^[2] की बातों से बहुत ऊँचा है।

191. क्या वह अल्लाह का साझी उन्हें बनाते हैं जो कुछ पैदा नहीं कर सकते, और वह स्वयं पैदा किये हुये हैं?

192. तथा न उन की सहायता कर सकते हैं, और न स्वयं अपनी सहायता कर सकते हैं।?

193. और यदि तुम उन्हें सीधी राह की ओर बुलाओ तो तुम्हारे पीछे नहीं चल सकते। तुम्हारे लिये बराबर है चाहे

وَمَا هَذَا وَجْهَ الْيَسْكَرِ الْإِنْبَاءِ فَلَمَّا تَعَشَّيْنَاهَا حَمَلَتْ
حَمْلًا خَفِيفًا فَمَرَّتْ بِهِ فَلَمَّا أَثْقَلَتْ دَعَوُا اللَّهَ
رَبَّهُمَا لِئِنْ أُنزِلْنَا صَالِحًا لِنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٩٠﴾

فَلَمَّا أَنْ هُمَا صَالِحَانِ جَعَلَالَهُ مُرْكَزًا فِيمَا أَنْهَمَا
فَتَعَلَى اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٩١﴾

أَيُّشْرُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلِقُونَ ﴿٩٢﴾

وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَا أَنفُسَهُمْ
يُنصُرُونَ ﴿٩٣﴾

وَإِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَى لِأَيْبَعُوهُمْ سِوَاءَ
عَلَيْكُمْ أَدْعُوهُمْ أَمْ أَنْ تَدْعُوا صَائِرِينَ ﴿٩٤﴾

1 अर्थात् जब मानव जाति के किसी पुरुष ने स्त्री के साथ सहवास किया।

2 इन आयतों में यह बताया गया है कि मिश्रणवादी स्वस्थ बच्चे अथवा किसी भी आवश्यकता या आपदा निवारण के लिये अल्लाह ही से प्रार्थना करते हैं। और जब स्वस्थ सुन्दर बच्चा पैदा हो जाता है तो देवी देवताओं, और पीरों के नाम चढ़ावे चढ़ाने लगते हैं। और इसे उन्हीं की दया समझते हैं।

उन्हें पुकारो अथवा तुम चुप रहो।

194. वास्तव में अल्लाह के सिवा जिन को तुम पुकारते हो वे तुम्हारे जैसे ही (अल्लाह के) दास हैं। अतः तुम उन से प्रार्थना करो फिर वह तुम्हारी प्रार्थना का उत्तर दें, यदि उन के बारे में तुम्हारे विचार सत्य हैं।

195. क्या इन (पत्थर की मूर्तियों) के पाँव हैं जिन से चलती हों? अथवा उन के हाथ हैं जिन से पकड़ती हों? या उन के आँखें हैं जिन से देखती हों? अथवा कान हैं जिन से सुनती हों? आप कह दें कि अपने साझियों को पुकार लो, फिर मेरे विरुद्ध उपाय कर लो, और मुझे कोई अवसर न दो।

196. वास्तव में मेरा संरक्षक अल्लाह है। जिस ने यह पुस्तक (कुरआन) उतारी है। और वही सदाचारियों की रक्षा करता है।

197. और जिन को अल्लाह के सिवा तुम पुकारते हो वह न तो तुम्हारी सहायता कर सकते हैं, और न स्वयं अपनी ही सहायता कर सकते हैं।

198. और यदि तुम उन्हें सीधी राह की ओर बुलाओ तो वह सुन नहीं सकते। और (हे नबी!) आप उन्हें देखेंगे कि वे आप की ओर देख रहे हैं, जब कि वास्तव में वह कुछ नहीं देखते।

199. (हे नबी!) आप क्षमा से काम लें, और सदाचार का आदेश दें। तथा

إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ
أَمْثَلَكُمْ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِنْ
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ
يَدَاؤُا أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ
أَذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا قُلْ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ
كَيْدُونَ فَلَا تَنْظُرُونَ ۝

إِنَّ وِلَى اللَّهِ الَّذِي تَزُكَّرُ الْكِتَابُ وَهُوَ يَتَوَلَّى
الضَّالِّينَ ۝

وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ
نَصْرَكُمْ وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَبْضُرُونَ ۝

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَى لَا يَمْعُرُوا وَتَرَاهُمْ
يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ۝

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعِضْ عَنِ الْجِهَلِينَ ۝

अज्ञानियों की ओर ध्यान^[1] न दें।

200. और यदि शैतान आप को उकसाये तो अल्लाह से शरण माँगिये। निःसंदेह वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

201. वास्तव में जो आज्ञाकारी होते हैं यदि शैतान की ओर से उन्हें कोई बुरा विचार आ भी जाये तो तत्काल चौंक पड़ते हैं और फिर अकस्मात् उन को सूझ आ जाती है।

202. और जो शैतानों के भाई हैं वे उन को कुपथ में खींचते जाते हैं, फिर (उन्हें कुपथ करने में) तनिक भी कमी (आलस्य) नहीं करते।

203. और जब आप इन (मिश्रणवादियों) के पास कोई निशानी न लायेंगे तो कहेंगे कि क्यों (अपनी ओर से) नहीं बना ली? आप कह दें कि मैं केवल उसी का अनुसरण करता हूँ जो मेरे पालनहार के पास से मेरी ओर वहयी की जाती है। यह सूझ की बातें हैं तुम्हारे पालनहार की ओर से, (प्रमाण) हैं, तथा मार्गदर्शन और दया है, उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हों।

204. और जब कुर्आन पढ़ा जाये तो उसे ध्यानपूर्वक सुनो, तथा मौन साध लो। शायद कि तुम पर दया^[2] की जाये।

وَمَا يَزَعْنَكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْعٌ قَاسِتٍ
يَأْتِيهِ سَبْعٌ عَلَيْهِ

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذْ مَسَّهُمْ طَافٌ مِّنَ
الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُمْ مُبْصِرُونَ

وَإِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوهُمْ فِي الْغِيْظِ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ

وَإِذَا أَلَمْ تَأْتِهِمْ بآيَةٍ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا قُلْ
إِنَّمَا اتَّبَعْتُ مَا يَأْتِيَنِي مِنَ رَبِّي هَذَا بَصَائِرُ
مِّنْ رَبِّيْكُمْ وَهَدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ

وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ

1 हदीस में है कि अल्लाह ने इसे लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करने के बारे में उतारा है। (देखिये: सहीह बुखारी- 4643)

2 यह कुर्आन की एक विशेषता है कि जब भी उसे पढ़ा जाये तो मुसलमान पर

205. और (हे नबी!) अपने पालनहार का स्मरण विनय पूर्वक तथा डरते हुये और धीमे स्वर में प्रातः तथा संध्या करते रहो। और उन में न हो जाओ जो अचेत रहते हैं।

وَأَذْكُرُّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً
وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ
وَالْأَصَالِ وَلَا تَكُنْ مِنَ الْغَافِلِينَ ۝

206. वास्तव में जो (फ़रिश्ते) आप के पालनहार के समीप हैं वह उस की इबादत (वंदना) से अभिमान नहीं करते। और उस की पवित्रता वर्णन करते रहते हैं, और उसी को सज्दा^[1] करते हैं।

إِنَّ الَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ
عِبَادَتِهِ وَسِبْخُونَهُ وَكُلُّهُمْ سَاجِدُونَ ۝

अनिवार्य है कि वह ध्यान लगा कर अल्लाह का कलाम सुने। हो सकता है कि उस पर अल्लाह की दया हो जाये। काफ़िर कहते थे कि जब कुर्आन पढ़ा जाये तो सुनो नहीं, बल्कि शोर गुल करो। (देखिये: सूरह हा, मीम सज्दा-26)

1 इस आयत के पढ़ने तथा सुनने वाले को चाहिये कि सज्दा तिलावत करें।

सूरह अन्फ़ाल - 8



सूरह अन्फ़ाल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 75 आयतें हैं।

- यह सूरह सन् 2 हिजरी में बद्र के युद्ध के पश्चात् उतरी। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को जब काफ़िरों ने मारने की योजना बनाई और आप मदीना हिज़रत कर गये तो उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उबय्य को पत्र लिखा और यह धमकी दी कि आप उन को मदीना से निकाल दें अन्यथा वह मदीना पर अक्रमण कर देंगे। अब मुसलमानों के लिये यही उपाय था कि शाम के व्यापारिक मार्ग से अपने विरोधियों को रोक दिया जाये। सन् 2 हिजरी में मक्के का एक बड़ा काफ़िला शाम से मक्का वापिस हो रहा था। जब वह मदीना के पास पहुँचा तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने साथियों के साथ उस की ताक में निकले। मुसलमानों के भय से काफ़िले का मुख्या अबू सुफ़्यान ने एक व्यक्ति को मक्का भेज दिया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने साथियों के साथ तुम्हारे काफ़िले की ताक में हैं। यह सुनते ही एक हज़ार की सेना निकल पड़ी। अबू सुफ़्यान दूसरी राह से बच निकला। परन्तु मक्का की सेना ने यह सोचा कि मुसलमानों को सदा के लिये कुचल दिया जाये। और इस प्रकार मुसलमानों से बद्र के क्षेत्र में सामना हुआ तथा दोनों के बीच यह प्रथम ऐतिहासिक संघर्ष हुआ जिस में मक्का के काफ़िरों के बड़े बड़े 70 व्यक्ति मारे गये और इतने ही बंदी बना लिये गये।
- यह इस्लाम का प्रथम ऐतिहासिक युद्ध था जिस में सत्य की विजय हुई। इस लिये इस में युद्ध से संबंधित कई नैतिक शिक्षायें दी गई हैं। जैसे यह की जिहाद धर्म की रक्षा के लिये होना चाहिये, धन के लोभ, तथा किसी पर अत्याचार के लिये नहीं।
- विजय होने पर अल्लाह का आभारी होना चाहिये। क्यों कि विजय उसी की सहायता से होती है। अपनी वीरता पर गर्व नहीं होना चाहिये।
- जो ग़ैर मुस्लिम अत्याचार न करें उन पर आक्रमण नहीं करना चाहिये। और जिन से संधि हो उन पर धोखा दे कर नहीं आक्रमण करना चाहिये और न ही उन के विरुद्ध किसी की सहायता करनी चाहिये।

- शत्रु से जो सामान (गनीमत) मिले उसे अल्लाह का माल समझना चाहिये और उस के नियमानुसार उस का पाँचवाँ भाग निर्धनों और अनाथों की सहायता के लिये खर्च करना चाहिये जो अनिवार्य है।
- इस में युद्ध के बंदियों को भी शिक्षा प्रद शैली में संबोधित किया गया है।
- इस सूरह से इस्लामी जिहाद की वास्तविकता की जानकारी होती है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे नबी! आप से (आप के साथी) युद्ध में प्राप्त धन के विषय में प्रश्न कर रहे हैं। कह दें कि युद्ध में प्राप्त धन अल्लाह और रसूल के हैं। अतः अल्लाह से डरो और आपस में सुधार रखो, तथा अल्लाह और उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो^[1] यदि तुम ईमान वाले हो।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ
وَالرَّسُولِ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوا ذَاتَ بَيْنِكُمْ
وَاطِيعُوا اللّٰهَ وَرَسُولَهُ اِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ①

2. वास्तव में ईमान वाले वही हैं कि जब अल्लाह का वर्णन किया जाये तो उन के दिल काँप उठते हैं। और जब उन के समक्ष उस की आयतें पढ़ी जायें तो उन का ईमान अधिक हो जाता है। और वह अपने पालनहार

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَّتْ
عُلُوْبُهُمْ وَاِذَا اُنۢبِئَتْ عَلَيْهِمُ الْاٰيَةُ زَادَتْهُمْ
اِيْمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ②

1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तेरह वर्ष तक मक्का के मिश्रणवादियों के अत्याचार सहन किये। फिर मदीना हिजरत कर गये। परन्तु वहाँ भी मक्कावासियों ने आप को चैन नहीं लेने दिया। और निरन्तर आक्रमण आरंभ कर दिये। ऐसी दशा में आप भी अपनी रक्षा के लिये वीरता के साथ अपने 313 साथियों को लेकर बद्र के रणक्षेत्र में पहुँचे। जिस में मिश्रणवादियों की पराजय हुई। और कुछ सामान भी मुसलमानों के हाथ आया। जिसे इस्लामी परिभाषा में "माले गनीमत" कहा जाता है। और उसी के विषय में प्रश्न का उत्तर इस आयत में दिया गया है। यह प्रथम युद्ध हिजरत के दूसरे वर्ष हुआ।

पर ही भरोसा रखते हों।

3. जो नमाज़ की स्थापना करते हैं, तथा हम ने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है उस में से दान करते हैं।
4. वही सच्चे ईमान वाले हैं। उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास श्रेणियाँ तथा क्षमा और उत्तम जीविका है।
5. जिस प्रकार^[1] आप को आप के पालनहार ने आप के घर (मदीना) से (मिश्रणवादियों से युद्ध के लिये सत्य के साथ) निकाला। जब कि ईमान वालों का एक समुदाय इस से अप्रसन्न था।
6. वह आप से सच्च (युद्ध) के बारे में झगड़ रहे थे जब कि वह उजागर हो गया था (कि युद्ध होना है) जैसे वह मौत की ओर हाँके जा रहे हों, और वे उसे देख रहे हों।
7. तथा (वह समय याद करो) जब अल्लाह तुम्हें वचन दे रहा था कि दो गिरोहों में से एक तुम्हारे हाथ आयेगा। और तुम चाहते थे कि निर्बल गिरोह तुम्हारे हाथ लगे।^[2] परन्तु अल्लाह चाहता था कि अपने वचन द्वारा सत्य को सिद्ध कर दे,

الَّذِينَ يُعِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۝

أُولَئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ دَرَجَاتٌ
عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝

كَمَا أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِن بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ
رِيفَاءَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكُرْهُونَ ۝

يَجَادُونَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَأَنَّمَا يُسَاقُونَ
إِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۝

وَأَذِيعِدْكُمْ اللَّهُ إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ أَنَّهُمَا
لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشُّوْكَةِ يُكُونُ
لَكُمْ وَرُبُّبِدَا اللَّهُ أَنْ يُحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمَةٍ وَيَقْطَعُ
دَابِرَ الْكَافِرِينَ ۝

- 1 अर्थात् यह युद्ध के माल का विषय भी उसी प्रकार है, कि अल्लाह ने उसे अपना और अपने रसूल का भाग बना दिया। जिस प्रकार अपने आदेश से आप को युद्ध के लिये निकाला।
- 2 इस में निर्बल गिरोह व्यापारिक काफ़िले को कहा गया है। अर्थात् कुरैश मक्का का व्यापारिक काफ़िला जो सीरिया की ओर से आ रहा था, या उन की सेना जो मक्का से आ रही थी।

और काफ़िरों की जड़ काट दे।

8. इस प्रकार सत्य को सत्य, और असत्य को असत्य कर दे। यद्यपि अपराधियों को बुरा लगे।
9. जब तुम अपने पालनहार को (बद्र के युद्ध के समय) गुहार रहे थे। तो उस ने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली। (और कहा:) मैं तुम्हारी सहायता के लिये लगातार एक हज़ार फ़रिश्ते भेज रहा^[1] हूँ।
10. और अल्लाह ने यह इस लिये बता दिया ताकि (तुम्हारे लिये) शुभ सूचना हो और ताकि तुम्हारे दिलों को संतोष हो जाये। अन्यथा सहायता तो अल्लाह ही की ओर से होती है। वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।
11. और वह समय याद करो जब अल्लाह अपनी ओर से शान्ति के लिये तुम पर ऊँघ डाल रहा था। और तुम पर आकाश से जल बरसा रहा था, ताकि तुम्हें स्वच्छ कर दे। और तुम से शैतान की मलीनता दूर कर दे। और तुम्हारे दिलों को साहस दे, और

يُحْيِي الْحَيَّ وَيُطْلِبُ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ۝

إِذْ تَسْتَعِينُونَ رَبُّكُمْ فَأَسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُمْ
بِالْغَيْبِ مِنَ الْمَلَكِ الْمُرِيدِ ۝

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ الْإِنشِرَىٰ وَلَيُظْمِرُنَّ بِهِ قُلُوبُكُمْ وَمَا
النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

إِذْ يُخَوِّتُكُمُ النَّعَاسَ أَمَنَةً مِنْهُ وَيُنزِلُ عَلَيْكُمْ
مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لِيُطَهِّرَكُمْ بِهِ وَيُذْهِبَ
عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَى قُلُوبِكُمْ
وَيُؤَيِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ۝

- 1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने बद्र के दिन कहा: यह घोड़े की लगाम थामे और हथियार लगाये जिब्रील (अलैहिस्सलाम) आये हुये हैं। (देखिये: सहीह बुखारी- 3995)

इसी प्रकार एक मुसलमान एक मुश्रिक का पीछा कर रहा था कि अपने ऊपर से घुड़सवार की आवाज़ सुनी: हैजूम (घोड़े का नाम) आगे बढ़ा फिर देखा कि मुश्रिक उस के सामने चित गिरा हुआ है। उस की नाक और चेहरे पर कोड़े की मार का निशान है। फिर उस ने यह बात नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बतायी। तो आप ने कहा: सच्च है। यह तीसरे आकाश की सहायता है। (देखिये: सहीह मुस्लिम- 1763)

(तुम्हारे) पाँव जमा^[1] दे।

12. (हे नबी!) यह वह समय था जब आप का पालनहार फ़रिश्तों को संकेत कर रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम ईमान वालों को स्थिर रखो, मैं काफ़िरों के दिलों में भय डाल दूँगा। तो (हे मुसलमानो!) तुम उन की गरदनों पर तथा पोर पोर पर आघात पहुँचाओ।
13. यह इस लिये कि उन्होंने अल्लाह और उस के रसूल का विरोध किया। तथा जो अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करेगा तो निश्चय अल्लाह उसे कड़ी यातना देने वाला है।
14. यह है (तुम्हारी यातना), तो इस का स्वाद चखो। और (जान लो कि) काफ़िरों के लिये नरक की यातना (भी) है।
15. हे ईमान वालो! जब काफ़िरों की सेना से भिड़ो तो उन्हें पीठ न दिखाओ।
16. और जो कोई उस दिन अपनी पीठ दिखायेगा, परन्तु फिर कर आक्रमण करने अथवा (अपने) किसी गिरोह से मिलने के लिये, तो वह अल्लाह के

إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنْ مَعَكُمْ فَتَاهُوا
الَّذِينَ آمَنُوا سَالِقِينَ فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا
الرُّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ الرِّعَابِ وَاضْرِبُوا
مِنْهُم مَّوْءِدَ كُلِّ بَنَانٍ ۝

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَمَنْ
يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ۝

ذَلِكَ فَذُو قُوَّةٍ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا الْقِتْمَانُ الَّذِينَ كَفَرُوا
رَضًا فَلَا تُوقُوا لَهُمُ الْإِدْبَارَ ۝

وَمَنْ يُؤَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبرًا إِلَّا مَتَحَرِّقًا لِقِتَالِ
أَوْ مُتَحَرِّقًا إِلَى بَيْتَةٍ فَقَدْ بَاءَ بِغَضَبٍ مِنَ
اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝

1 बद्र के युद्ध के समय मुसलमानों की संख्या मात्र 313 थी। और सिवाये एक व्यक्ति के किसी के पास घोड़ा न था। मुसलमान डरे सहमे थे। जल के स्थान पर पहले ही शत्रु ने अधिकार कर लिया था। भूमि रेतीली थी जिस में पाँव धँस जाते थे। और शत्रु सवार थे। और उन की संख्या भी तीन गुणा थी। ऐसी दशा में अल्लाह ने मुसलमानों पर निद्रा उतार कर उन्हें निश्चन्त कर दिया और वर्षा करके पानी की व्यवस्था कर दी। जिस से भूमि भी कड़ी हो गई। और अपनी असफलता का भय जो शैतानी संशय था वह भी दूर हो गया।

प्रकोप में घिर जायेगा। और उस का स्थान नरक है। और वह बहुत ही बुरा स्थान है।

17. अतः (रणक्षेत्र में) उन्हें बध तुम ने नहीं किया परन्तु अल्लाह ने उन को बध किया। और हे नबी! आप ने नहीं फेंका जब फेंका, परन्तु अल्लाह ने फेंका। और (यह इस लिये हुआ) ताकि अल्लाह इस के द्वारा इमान वालों की एक उत्तम परीक्षा ले। वास्तव में अल्लाह सब कुछ सुनने और जानने^[1] वाला है।

18. यह सब तुम्हारे लिये हो गया। और अल्लाह काफिरों की चालों को निर्बल करने वाला है।

19. यदि तुम^[2] निर्णय चाहते हो तो तुम्हारे सामने निर्णय आ गया है। और यदि तुम रुक जाओ तो तुम्हारे लिये उत्तम है। और यदि फिर पहले जैसा करोगे तो हम भी वैसा ही करेंगे। और तुम्हारा जत्था तुम्हारे कुछ काम नहीं आयेगा, यद्यपि अधिक हो। और निश्चय अल्लाह ईमान वालों के साथ है।

20. हे ईमान वालो! अल्लाह के आज्ञाकारी

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ وَلَئِذَا لَمْ يَأْتِ الْبُرُوقَ لَمْ يَسْمَعْهَا مِنَ الْمَوْمِنِينَ مِنْهُ بِكَلِمَةٍ حَسَنًا إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٧﴾

ذِكْرِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مُوهِنُ كَيْدِ الْكَافِرِينَ ﴿١٨﴾

إِنْ تَسْتَفِئُوا فَتَدْجُوا جَاءَكُمْ الْقَوْمُ وَإِنْ تَدَّهَوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ وَإِنْ تَعُودُوا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَىٰ الْعَاثِرِينَ ﴿١٩﴾ وَعَنْكُمْ فَمَنْكُمْ سَيِّئًا وَلَوْ كَرِهْتُمْ وَإِنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٠﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ

1 आयत का भावार्थ यह है कि शत्रु पर विजय तुम्हारी शक्ति से नहीं हुई। इसी प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रण क्षेत्र में कंकरियाँ लेकर शत्रु की सेना की ओर फेंकी जो प्रत्येक शत्रु की आँख में पड़ गई। और वहीं से उन की पराजय का आरंभ हुआ तो उस धूल को शत्रु की आँखों तक अल्लाह ही ने पहुँचाया था। (इब्ने कसीर)

2 आयत में मक्का के काफिरों को संबोधित किया गया है जो कहते थे कि यदि तुम सच्चे हो तो इस का निर्णय कब होगा? (देखिये: सूरह सजदा, आयत-28)

- रहो तथा उस के रसूल को और उस से मुँह न फेरो जब कि तुम सुन रहे हो।
21. तथा उन के समान^[1] न हो जाओ जिन्होंने कहा कि हम ने सुन लिया जब कि वास्तव में वह सुनते नहीं थे।
22. वास्तव में अल्लाह के हाँ सब से बुरे पशु वह (मानव) है जो बहरे गूँगे हों, जो कुछ समझते न हों।
23. और यदि अल्लाह उन में कुछ भी भलाई जानता तो उन्हें सुना देता। और यदि उन्हें सुना भी दे तो भी वह मुँह फेर लेंगे। और वह विमुख हैं ही।
24. हे ईमान वालो! अल्लाह और उस के रसूल की पुकार को सुनो, जब तुम्हें उस की ओर बुलाये जो तुम्हारी^[2] (आत्मा) को जीवन प्रदान करे। और जान लो कि अल्लाह मानव और उस के दिल के बीच आड़े^[3] आ जाता है। और निस्संदेह तुम उसी के पास (अपने कर्मफल के लिये) एकत्र किये जाओगे।
25. तथा उस आपदा से डरो जो तुम में से अत्याचारियों पर ही विशेष रूप से नहीं आयेगी। और विश्वास रखो^[4] कि अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

وَلَا تَوَلَّوْا عُنْتَهُ وَأَنْتُمْ تَسْمَعُونَ ۝

وَلَا تَوَلَّوْا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝

إِنْ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الضُّمُّ الْبُكْمُ
الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ۝

وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَأَسْمَعَهُمْ
وَلَوْ سَمِعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَهُمْ مَعْرُضُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ
وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ
وَأَنَّهُ إِلَيْهِ يُحْشَرُونَ ۝

وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَا تُصِيبُ الَّذِينَ ظَلَمُوا
مِنْكُمْ خَاصَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ۝

1 इस में संकेत अहले किताब की ओर है।

2 इस से अभिप्रेत कुर्आन तथा इस्लाम है। (इब्ने कसीर)

3 अर्थात् जो अल्लाह, और उस के रसूल की बात नहीं मानता, तो अल्लाह उसे मार्गदर्शन भी नहीं देता।

4 इस आयत का भावार्थ यह है कि अपने समाज में बुराईयों को न पनपने दो। अन्यथा जो आपदा आयेगी वह सर्वसाधारण पर आयेगी। (इब्ने कसीर)

26. तथा वह समय याद करो, जब तुम (मक्का में) बहुत थोड़े निर्बल समझे जाते थे। तुम डर रहे थे कि लोग तुम्हें उचक न लें। तो अल्लाह ने तुम्हें (मदीना में) शरण दी। और अपनी सहायता द्वारा तुम्हे समर्थन दिया। और तुम्हें स्वच्छ जीविका प्रदान की, ताकि तुम कृतज्ञ रहो।

27. हे ईमान वालो! अल्लाह तथा उस के रसूल के साथ विश्वासघात न करो। और न अपनी अमानतों (कर्तव्य) के साथ विश्वासघात^[1] करो, जानते हुये।

28. तथा जान लो कि तुम्हारा धन और तुम्हारी संतान एक परीक्षा है। तथा यह कि अल्लाह के पास बड़ा प्रतिफल है।

29. हे ईमान वालो! यदि तुम अल्लाह से डरोगे तो तुम्हारे लिये विवेक^[2] बना देगा। तथा तुम से तुम्हारी बुराईयाँ दूर कर देगा। और तुम्हें क्षमा कर देगा, और अल्लाह बड़ा दयाशील है।

30. तथा (हे नबी! वह समय याद करो) जब (मक्का में) काफिर आप के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे थे, ताकि आप को कैद कर लें। अथवा आप को वध कर दें, अथवा देश निकाला दे दें। तथा वे षड्यंत्र रच रहे थे,

وَأَذْكُرُوا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ
تَخَافُونَ أَنْ يَخَذَفَكُمْ النَّاسُ فَأَوْكُمْ
وَأَيْنَكُمْ بِنَصْرِهِ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ﴿٢٦﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ
وَتَخُونُوا أَمْنَتَكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾

وَأَعْلَمُوا أَنَّهَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ
وَ أَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ
فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ
وَ اللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾

وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ
يَسْفِكُوا دِمَاكَ وَيَخْرُجُواكَ وَيَمَكُرُوا بِاللَّهِ
وَ اللَّهُ خَيْرُ الْمَكْرُورِينَ ﴿٣٠﴾

1 अर्थात् अल्लाह तथा उस के रसूल के लिये जो तुम्हारा दायित्व और कर्तव्य है उसे पूरा करो। (इब्ने कसीर)

2 विवेक का अर्थ है: सत्य और असत्य के बीच अन्तर करने की शक्ति। कुछ ने फुर्कान का अर्थ निर्णय लिया है अर्थात् अल्लाह तुम्हारे और तुम्हारे विरोधियों के बीच निर्णय कर देगा।

और अल्लाह अपनी उपाय कर रहा था। और अल्लाह का उपाय^[1] सब से उत्तम है।

31. और जब उन को हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो कहते हैं: हम ने (इसे) सुन लिया है। यदि हम चाहें तो इसी (कुरआन) जैसी बातें कह दें। यह तो वही प्राचीन लोगों की कथायें हैं।
32. तथा (याद करो) जब उन्होंने ने कहा: हे अल्लाह! यदि यह^[2] तेरी ओर से सत्य है तो हम पर आकाश से पत्थरों की वर्षा कर दे, अथवा हम पर दुःखदायी यातना ला दे।
33. और अल्लाह उन्हें यातना नहीं दे सकता था जब तक आप उन के बीच थे, और न उन्हें यातना देने वाला है जब तक कि वह क्षमा याचना कर रहे हों।
34. और (अब) उन पर क्यों न यातना उतारे जब कि वह सम्मानित मस्जिद (काँबा) से रोक रहे हैं, जब कि वह उस के संरक्षक नहीं हैं। उस के संरक्षक तो केवल अल्लाह के आज्ञकारी हैं, परन्तु अधिकांश लोग (इसे) नहीं जानते।
35. और अल्लाह के घर (काँबा) के पास

وَأَذَاتُ عَلَىٰ عَلَيْهِمُ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ
نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَذَا إِنْ هَذَا إِلَّا
أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝

وَأَذَاتُ قَالَ اللَّهُ إِنْ كَانَ هَذَا هُوَ الْحَقُّ مِنْ
عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَابًا مِنَ السَّمَاءِ
أَوْ ائْتِنَا بِعَذَابٍ آلِيمٍ ۝

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ وَمَا كَانَ
اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ۝

وَمَا لَهُمْ آلَ يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ إِنْ
أَوْلِيَآؤُهُ إِلَّا الْمُتَّقُونَ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا
يَعْلَمُونَ ۝

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً

- 1 अर्थात् उन की सभी योजनाओं को असफल कर के आप को सुरक्षित मदीना पहुँचा दिया।
- 2 अर्थात् कुरआन। यह बात कुरैश के मुख्या अबू जहल ने कही थी जिस पर आगे की आयत उतरी। (सहीह बुखारी- 4648)

इन की नमाज़ इस के सिवा क्या थी कि सीटियाँ और तालियाँ बजायें? तो अब^[1] अपने कुफ़र (अस्वीकार) के बदले में यातना का स्वाद चखो।

36. जो काफ़िर हो गये वह अपना धन इस लिये खर्च करते हैं कि अल्लाह की राह से रोक दें। तो वे अपना धन खर्च करते रहेंगे फिर (वह समय आयेगा कि) वह उन के लिये पछतावे का कारण हो जायेगा। फिर पराजित होंगे। तथा जो काफ़िर हो गये वे नरक की ओर हाँक दिये जायेंगे।

37. ताकि अल्लाह, मलीन को पवित्र से अलग कर दे। तथा मलीनों को एक दूसरे से मिला दे। फिर सब का ढेर बना दे, और उन्हें नरक में फेंक दे, यही क्षतिग्रस्त है।

38. (हे नबी!) इन काफ़िरों से कह दो: यदि वह रुक^[2] गये तो जो कुछ हो गया है वह उन से क्षमा कर दिया जायेगा। और यदि पहले जैसा ही करेंगे तो अगली जातियों की दुर्गत हो चुकी है।

39. हे ईमान वालो! उन से उस समय तक युद्ध करो कि^[3] फित्ना

وَتَصَدِيْقَةٌ فَاذُو الْعَادَابِ بِمَا كُنتُمْ
تَكْفُرُوْنَ ۝

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ
لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَسِيْفُوْنَهَا شَمًّا
تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً كُمْ يَكْفُرُوْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِلٰى جِهَتِهِمْ يُحْسِرُوْنَ ۝

لِيَسِيْرَ اللّٰهُ النّٰحِيْثَ مِنَ الطّٰيْبِ وَيَجْعَلَ
النّٰحِيْثَ بَعْضُهُ عَلَى بَعْضٍ فَيَرْكَبُهُ جَمِيْعًا
فَيَجْعَلُهُ فِيْ جَهَنَّمَ اَوْ لِيَكُ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِنَّ يَدْتُهُمْ اِغْمَارًا لَّهُمْ مَّا قَدْ
سَلَفُوْا ۚ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ
الْاَوَّلِيْنَ ۝

وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةً وَيَكُوْنَ

1 अर्थात बद्र में पराजय की यातना।

2 अर्थात ईमान लाये।

3 इब्ने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने कहा: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मुशरिकों से उस समय युद्ध कर रहे थे जब मुसलमान कम थे। और उन्हें अपने धर्म के कारण सताया, मारा और बंदी बना लिया जाता था। (सहीह बुखारी - 4650, 4651)

(अत्याचार तथा उपद्रव) समाप्त हो जाये, और धर्म पूरा अल्लाह के लिये हो जाये तो यदि वह (अत्याचार से) रुक जायें तो अल्लाह उन के कर्मों को देख रहा है।

40. और यदि वह मुँह फेरें तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा रक्षक है। और वह क्या ही अच्छा संरक्षक तथा क्या ही अच्छा सहायक है?

41. और जान^[1] लो कि तुम्हें जो कुछ गनीमत में मिला है तो उस का पाँचवाँ भाग अल्लाह तथा रसूल और (आप के) समीपवर्तियों तथा अनाथों और निर्धनों तथा यात्रियों के लिये है। यदि तुम अल्लाह पर तथा उस (सहायता) पर ईमान रखते हो जो हम ने अपने भक्त पर निर्णय^[2] के दिन उतारी जिस दिन

الَّذِينَ كَفَرُوا بِاللَّهِ فَأَنذَرْتَهُمْ وَإِنَّا نَلْمُهُمْ فَاتَّخَذُوا آلَاءَ اللَّهِ بَدَلًا
يَعْبُدُونَ بَصِيرًا ۝

وَإِن تَوَلَّوْا فَاَعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ
يَعْمَلُ الْبَدِيْءُ ۝

وَاعْلَمُوْا اَنَّكُمْ اَعْنَبْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ اللّٰهَ
خُبْرَهُ وَالرَّسُوْلَ وَاٰلِى الْغُرُبٰى وَالْيَتٰمٰى
وَالْمَسْكِيْنَ وَاٰلِى السَّبِيْلِ اِن كُنْتُمْ اٰمِنْتُمْ
بِاللّٰهِ وَمَا اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقٰنِ يَوْمَ
التَّقِيْ الْجَمْعِيْنَ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

1 इस में गनीमत (युद्ध में मिले सामान) के वितरण का नियम बताया गया है: कि उस के पाँच भाग करके चार भाग मुजाहिदों को दिये जायें। पैदल को एक भाग तथा सवार को तीन भाग। फिर पाँचवाँ भाग अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये था जिसे आप अपने परिवार और समीप वर्तियों तथा अनाथों और निर्धनों की सहायता के लिये खर्च करते थे। इस प्रकार इस्लाम ने अनाथों तथा निर्धनों की सहायता पर सदा ध्यान दिया है। और गनीमत में उन्हें भी भाग दिया है यह इस्लाम की वह विशेषता है जो किसी धर्म में नहीं मिलेगी।

2 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर। निर्णय के दिन से अभिप्राय बद्र के युद्ध का दिन है जो सत्य और असत्य के बीच निर्णय का दिन था। जिस में काफिरों के बड़े बड़े प्रमुख और धवीर मारे गये जिन के शव बद्र के एक कूवें में फेंक दिये गये। फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कुवें के किनारे खड़े हुये और उन्हें उन के नामों से पुकारने लगे कि क्या तुम प्रसन्न होते कि अल्लाह और उस के रसूल को मानते? हम ने अपने पालनहार का वचन सच्च पाया तो क्या तुम ने भी सच्च पाया? उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: क्या आप ऐसे शरीरों से बात कर रहे हैं जिन में प्राण नहीं? आप ने कहा: मेरी बात

दो सेनाएँ भिड़ गईं और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

42. तथा उस समय को याद करो जब तुम (रणक्षेत्र में) इधर के किनारे तथा वह (शत्रु) उधर के किनारे पर थे, और काफ़िला तुम से नीचे था। और यदि तुम आपस में (युद्ध का) निश्चय करते तो निश्चित समय से अवश्य कतरा जाते। परन्तु अल्लाह ने (दोनों को भिड़ा दिया) ताकि जो होना था उस का निर्णय कर दे। ताकि जो मरे तो वह खुले प्रमाण के पश्चात् मरे। और जो जीवित रहे तो वह खुले प्रमाण के साथ जीवित रहे। और वस्तुतः अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

43. तथा (हे नबी! वह समय याद करें) जब आप को (अल्लाह) आप के सपने^[1] में उन्हें (शत्रु को) थोड़ा दिखा रहा था। और यदि उन्हें आप को अधिक दिखा देता तो तुम साहस खो देते। और इस (युद्ध के) विषय में आपस में झगड़ने लगते। परन्तु अल्लाह ने तुम्हें बचा दिया। वास्तव में वह सीनों (अन्तरात्मा) की बातों से भली भाँती अवगत है।

44. तथा (याद करो उस समय को) जब अल्लाह उन (शत्रु) को

إِذْ أَنْتُمْ بِالْعُدُوِّ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدُوِّ
الْقُصْوَى وَالرُّكُوبَ اسْفَلَ مِنْكُمْ وَلَوْ
تَوَاعَدْتُمْ لِالْحُلْفَةِ فِي الْمَيْعَدِ وَلَكِنْ
لِيَقْضَى اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا لِيَهْلِكَ مَنْ
هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَيَحْيَى مَنْ حَيَّ عَنْ بَيِّنَةٍ
وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ

إِذْ يُرِيكُمُ اللَّهُ فِي مَنَامِكُمْ قَلِيلًا وَلَوْ
أَرَاكُمْ كَثِيرًا أَلْقَيْتُكُمْ وَيَسْتَأْذِنُ فِي
الْأُمُورِ وَالْكَفَى اللَّهُ سَمْعًا إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ
الصُّدُورِ

وَإِذْ يُرِيكُمُ اللَّهُ إِذْ تَقِفُونَ فِي آعِينِكُمْ قَلِيلًا

तुम उन से अधिक नहीं सुन रहे हो। (सहीह बुखारी- 3976)

- 1 इस में उस स्वप्न की ओर संकेत है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को युद्ध से पहले दिखाया गया था।

लड़ाई के समय तुम्हारी आँखों में तुम्हारे लिये थोड़ा कर के दिखा रहा था, और उन की आँखों में तुम्हें थोड़ा कर के दिखा रहा था, ताकि जो होना था, अल्लाह उस का निर्णय कर दे। और सभी कर्म अल्लाह ही की ओर फेरे^[1] जाते हैं।

وَيَقُولُ لَكُمْ فِي أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ

45. हे ईमान वालो! जब (आक्रमण कारियों) के किसी गिरोह से भिड़ो तो जम जाओ। तथा अल्लाह को बहुत याद करो, ताकि तुम सफल रहो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٤٥﴾

46. तथा अल्लाह और उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो, और आपस में विवाद न करो, अन्यथा तुम कमजोर हो जाओगे, और तुम्हारी हवा उखड़ जायेगी। तथा धैर्य से काम लो, वास्तव में अल्लाह धैर्यवानों के साथ है।

وَاطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ وَاصْبِرُوا إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٤٦﴾

47. और उन^[2] के समान न हो जाओ जो अपने घरों से इतराते हुये तथा लोगों को दिखाते हुये निकलो और वह अल्लाह की राह (इस्लाम) से लोगों को रोकते हैं। और अल्लाह उन के कर्मों को (अपने ज्ञान के) घेरे में लिये हुये है।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ يَبْتَغُونَ أَوْرَاقَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ عَجِيزٌ ﴿٤٧﴾

48. जब शैतान^[3] ने उन के लिये उन के कुकर्मों को शोभनीय बना दिया था। और उस (शैतान) ने कहा: आज तुम पर कोई प्रभुत्व नहीं पा सकता, और

وَإِذْ زَيْنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَابَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمْ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَكُمْ ۖ فَلَمَّا اتَرَآتِ الْفِئَتَيْنِ نَكَصَ عَلَى عَقْبَيْهِ وَقَالَ

1 अर्थात सब का निर्णय वही करता है।

2 इस से अभिप्राय मक्का की सेना है जिसको अबू जहल लाया था।

3 बद्र के युद्ध में शैतान भी अपनी सेना के साथ सुराका बिन मालिक के रूप में आया था। परन्तु जब फ़रिश्तों को देखा तो भाग गया। (इब्ने कसीर)

- मैं तुम्हारा सहायक हूँ। फिर जब दोनों सेनायें सम्मुख हो गई, तो अपनी एड़ियों के बल फिर गया। और कह दिया कि मैं तुम से अलग हूँ। मैं जो देख रहा हूँ तुम नहीं देखते। वास्तव में मैं अल्लाह से डर रहा हूँ। और अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।
49. तथा (वह समय भी याद करो), जब मुनाफ़िक तथा जिन के दिलों में रोग है, वे कह रहे थे कि इन (मुसलमानों) को इन के धर्म ने धोखा दिया है। तथा जो अल्लाह पर निर्भर करे तो वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।
50. और क्या ही अच्छा होता यदि आप उस दशा को देखते जब फ़रिश्ते (बधित) काफ़िरों के प्राण निकाल रहे थे तो उन के मुखों और उन की पीठों पर मार रहे थे। तथा (कह रहे थे कि) दहन की यातना^[1] चखो।
51. यही तुम्हारे कर्तूतों का प्रतिफल है। और अल्लाह अपने भक्तों पर अत्याचार करने वाला नहीं है।
52. इन की दशा भी फिर औनियों तथा उन के जैसी हुई जिन्होंने इन से

إِنِّي بَرِيءٌ مِّنكُمْ إِنِّي أَرَى مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ
اللَّهَ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

إِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ
مَّرَضٌ غَرَّهُمْ أَذْرَابُهُمْ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ
فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

وَلَوْ تَرَى إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا الْمَلَائِكَةُ
يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ وَذُوقُوا
عَذَابَ الْحَرِيقِ ۝

ذَلِكَ بِمَا قَاتَلْتُمُونِمْ وَإِنَّ اللَّهَ لَيْسَ
بِظَالِمٍ لِّلْعَبِيدِ ۝

كَذَٰلِكَ أَلِفٌ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ كَفَرُوا

1 बद्र के युद्ध में काफ़िरों के कई प्रमुख मारे गये। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध से पहले बता दिया कि अमुक इस स्थान पर मारा जायेगा तथा अमुक इस स्थान पर। और युद्ध समाप्त होने पर उन का शव उन्हीं स्थानों पर मिला तनिक भी इधर-उधर नहीं हुआ। (बुखारी- 4480)
ऐसे ही आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध के समय कहा कि सारे जत्थे पराजित हो जायेंगे और पीठ दिखा देंगे। और उसी समय शत्रु पराजित होने लगे। (बुखारी-4875)

पहले अल्लाह की आयतों को नकार दिया, तो अल्लाह ने उन के पापों के बदले उन्हें पकड़ लिया। वास्तव में अल्लाह बड़ा शक्तिशाली कड़ी यातना देने वाला है।

يَأْتِي اللَّهُ فَاخَذَ هُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

53. अल्लाह का यह नियम है कि वह उस पुरस्कार में परिवर्तन करने वाला नहीं है जो किसी जाति पर किया हो, जब तक वह स्वयं अपनी दशा में परिवर्तन न कर लें। और वास्तव में अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرَ النِّعْمَةَ أَنْتُمْ عَلَىٰ قَوْلٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرَ أَمْرًا بِأَنْفُسِهِمْ وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

54. इन की दशा फिरौनियों तथा उन लोगों जैसी हुई जो इन से पहले थे, उन्होंने ने अल्लाह की आयतों को झूठला दिया, तो हम ने उन्हें उन के पापों के कारण ध्वस्त कर दिया। तथा फिरौनियों को डुबो दिया। और वह सभी अत्याचारी^[1] थे।

كَذَٰلِكَ يَأْتِي رَبُّهُمْ فَأَهْلِكُهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَأَغْرَقْنَا آلَ فِرْعَوْنَ وَكُلًّا كَانُوا ظَالِمِينَ ۝

55. वास्तव में सब से बुरे जीव अल्लाह के पास वह हैं जो काफिर हो गये, और ईमान नहीं लाते।

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

56. यह वे^[2] लोग हैं जिन से आप ने संधि की। फिर वह प्रत्येक अवसर पर अपना वचन भंग कर देते हैं। और (अल्लाह से) नहीं डरते।

الَّذِينَ عَاهَدْتَ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي كُلِّ مَرَّةٍ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ۝

1 इस आयत में तथा आयत नं० 52 में व्यक्तियों तथा जातियों के उत्थान और पतन का विधान बताया गया है कि वह स्वयं अपने कर्मों से अपना जीवन बनाती या अपना विनाश करती हैं।

2 इस में मदीना के यहूदियों की ओर संकेत है। जिन से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संधि थी। फिर भी वे मुसलमानों के विरोध में गतिशील थे और बद्र के तुरन्त बाद ही कुरैश को बदले के लिये भड़काने लगे थे।

57. तो यदि ऐसे (वचनभंगी) आप को रणक्षेत्र में मिल जायें तो उन को शिक्षाप्रद दण्ड दें, ताकि जो उन के पीछे है वह शिक्षा ग्रहण करें।
58. और यदि आप को किसी जाति से विश्वासघात (संधि भंग करने) का भय हो तो बराबरी के आधार पर संधि तोड़^[1] दें। क्यों कि अल्लाह विश्वासघातियों से प्रेम नहीं करता।
59. जो काफ़िर हो गये वे कदापि यह न समझें कि हम से आगे हो जायेंगे। निश्चय वह (हमें) विवश नहीं कर सकेंगे।
60. तथा तुम से जितनी हो सके उन के लिये शक्ति तथा सीमा रक्षा के लिये घोड़े तय्यार रखो। जिस से अल्लाह के शत्रुओं तथा अपने शत्रुओं को और इन के सिवा दूसरों को डराओ^[2]। जिन को तुम नहीं जानते, उन्हें अल्लाह ही जानता है। और अल्लाह की राह में तुम जो भी व्यय (खर्च) करोगे तो तुम्हें पूरा मिलेगा। और तुम पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।
61. और यदि वह (शत्रु) संधि की ओर झुकें तो आप भी उस के लिये झुक जायें। और अल्लाह पर भरोसा करें। निश्चय वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

فَأَمَّا تَتَقَفُّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَمُرِّدِيهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ
لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿٥٧﴾

وَأَمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَأْيُذِّنْهُمْ
عَلَىٰ سَوَاءٍ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِبِينَ ﴿٥٨﴾

وَلَا يَحْسِبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا آلَهُمْ
لَا يُعْجِزُونَ ﴿٥٩﴾

وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ
رِبَاطِ الْغَيْلِ تُرْهَبُونَ بِهِ وَعَدُّوا لَهُمْ وَعَدُّكُمْ
وَأَخْرَجُوا مِنْ دُونِهِمْ لَعَلَّكُمْ تَهْتَمُونَ اللَّهُ
يَعْلَمُ مَا تَتَّقُونَ وَمَا تَفْتَنُوا مِنْ شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
يُوفَىٰ الْيَتِيمَ وَأَنْتُمْ لَا تظَلُمُونَ ﴿٦٠﴾

وَإِنْ جَنَحُوا لِلسَّلَامِ فَاجْتَنِحْ لَهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَىٰ
اللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦١﴾

- 1 अर्थात् उन्हें पहले सूचित कर दो कि अब हमारे तुम्हारे बीच संधि नहीं है।
- 2 ताकि वह तुम पर आक्रमण करने का साहस न करें, और आक्रमण करें तो अपनी रक्षा करो।

62. और यदि वह (संधि कर के) आप को धोखा देना चाहेंगे तो अल्लाह आप के लिये काफी है। वही है जिस ने अपनी सहायता तथा ईमान वालों के द्वारा आप को समर्थन दिया है।

وَأَنْ يُرِيدُوا أَنْ يُخَدَّعُواكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ هُوَ الَّذِي آتَاكَ بِبَصِيرَةٍ وَالْمُؤْمِنِينَ ۝

63. और उन के दिलों को जोड़ दिया। और यदि आप धरती में जो कुछ है सब व्यय (खर्च) कर देते तो भी उन के दिलों को नहीं जोड़ सकते थे। वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ (निपुण) है।

وَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ لَوْ فَتَقْتَ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَا أَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ أَلَّفَ بَيْنَهُمْ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

64. हे नबी! आप के लिये तथा आप के ईमान वाले साथियों के लिये अल्लाह काफी है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبَكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

65. हे नबी! ईमान वालों को युद्ध की प्रेरणा दो।^[1] यदि तुम में से बीस धैर्यवान होंगे तो दो सौ पर विजय प्राप्त कर लेंगे। और यदि तुम में से सौ होंगे तो उन काफिरों के एक हजार पर विजय प्राप्त कर लेंगे। इस लिये कि वह समझ बूझ नहीं रखते।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عِشْرُونَ صَابِرُونَ يَغْلِبُوا مِائَتِينَ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ يَغْلِبُوا أَلْفًا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَإِن يَأْتِهِمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۝

66. अब अल्लाह ने तुम्हारा बोझ हल्का कर दिया, और जान लिया कि तुम में कुछ निर्बलता है, तो यदि तुम में से सौ सहनशील हों तो वे दो सौ पर विजय प्राप्त कर लेंगे। और यदि तुम में से एक हजार हों तो अल्लाह की अनुमति से दो हजार पर

إِن لَّنْ خَفَّفَ اللَّهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا فَإِن يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ صَابِرَةٌ يَغْلِبُوا أَمَانَتِينَ ۝ وَإِن يَكُنْ مِنْكُمْ أَلْفٌ يَغْلِبُوا أَلْفَيْنِ بِإِذْنِ اللَّهِ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝

1 इस लिये कि काफिर मैदान में आ गये हैं और आप से युद्ध करना चाहते हैं। ऐसी दशा में जिहाद अनिवार्य हो जाता है ताकि शत्रु के आक्रमण से बचा जाये।

प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगे। और अल्लाह सहनशीलों के साथ है।^[1]

67. किसी नबी के लिये यह उचित न था कि उस के पास बंदी हों, जब तक कि धरती (रण क्षेत्र) में अच्छी प्रकार रक्तपात न कर दे। तुम संसारिक लाभ चाहते हो, और अल्लाह (तुम्हारे लिये) आखिरत (परलोक) चाहता है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।
68. यदि इस के बारे में पहले से अल्लाह का लेख (निर्णय) न होता, तो जो (अर्थ दण्ड) तुम ने लिया^[2] है, उस के लेने में तुम्हें बड़ी यातना दी जाती।
69. तो उस ग़नीमत में से^[3] खाओ, वह हलाल (उचित) स्वच्छ है। तथा अल्लाह के आज्ञाकारी रहो। वास्तव में अल्लाह अति क्षमा करने वाला दयावान् है।
70. हे नबी! जो तुम्हारे हाथों में बंदी है, उन से कह दो कि यदि अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में कोई भलाई देखी तो तुम को उस से उत्तम चीज़ (ईमान) प्रदान करेगा जो (अर्थदण्ड) तुम से लिया गया है, और तुम्हें क्षमा कर देगा।

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَىٰ حَتَّىٰ يُمْتَحِنَ
فِي الْأَرْضِ يُرِيدُ وَنَ عَرَضَ الدُّنْيَا وَاللَّهُ يُرِيدُ
الْآخِرَةَ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٧﴾

لَوْلَا كِتَابٌ مِّنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا
أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٦٨﴾

فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ
اللَّهَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٩﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُلْ لِمَنْ فِي أَيْدِيكُمْ مِنَ الْأَسْرَىٰ إِنْ
يَعْلَمِ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا فَرَأَىٰ خَيْرًا مِّمَّا أَخَذَ
مِنْكُمْ وَيُعْفِيَكُمْ وَاللَّهُ عَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٧٠﴾

- 1 अर्थात् उन का सहायक है जो दुःख तथा सुख प्रत्येक दशा में उस के नियमों का पालन करते हैं।
- 2 यह आयत बद्र के बंदियों के बारे में उतरी। जब अल्लाह के किसी आदेश के बिना आपस के परामर्श से उन से अर्थदण्ड ले लिया गया। (इब्ने कसीर)
- 3 आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मेरी एक विशेषता यह भी है कि मेरे लिये ग़नीमत उचित कर दी गई जो मुझ से पहले किसी नबी के लिये उचित नहीं थी। (बुखारी- 335 मुस्लिम- 521)

और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

71. और यदि वह आप के साथ विश्वासघात करना चाहेंगे तो इस से पूर्व वे अल्लाह के साथ विश्वासघात कर चुके हैं। इसी लिये अल्लाह ने उन को (आप के) वश में किया है। तथा अल्लाह अति ज्ञानी उपाय जानने वाला है।

72. निःसंदेह जो ईमान लाये, तथा हिजरत (प्रस्थान) कर गये, और अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों से जिहाद किया, तथा जिन लोगों ने उन को शरण दिया तथा सहायता की, वही एक दूसरे के सहायक हैं। और जो ईमान नहीं लाये और न हिजरत (प्रस्थान) की, उन से तुम्हारी सहायता का कोई संबन्ध नहीं, यहाँ तक कि हिजरत करके आ जायें। और यदि वह धर्म के बारे में तुम से सहायता माँगें, तो तुम पर उन की सहायता करना आवश्यक है। परन्तु किसी ऐसी जाति के विरुद्ध नहीं जिन के और तुम्हारे बीच संधि हो, तथा तुम जो कुछ कर रहे हो उसे अल्लाह देख रहा है।

73. और काफिर एक दूसरे के समर्थक हैं। और यदि तुम ऐसा न करोगे तो धरती में उपद्रव तथा बड़ा बिगाड़ उत्पन्न हो जायेगा।

74. तथा जो ईमान लाये, और हिजरत कर गये, और अल्लाह की राह में संघर्ष किया, और जिन लोगों ने

وَأَنْ يُرِيدُوا إِخِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ
فَأَمَّا كُنْ مِنْهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ
وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ أَوْوُوا وَتَصَرَّوْا
أُولَئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَالَّذِينَ آمَنُوا
وَلَمْ يَهَاجَرُوا مَا لَهُمْ مِنْ وَلَايَتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ
حَتَّى يَهَاجَرُوا وَإِنْ اسْتَضَرُّوهُمْ فِي الدِّينِ
فَعَلَيْكُمْ النَّصْرُ إِلَّا عَلَى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ
عِيثَانٌ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَبَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ أَتَقْنَعُوهُ
تَلْنُ فِتْنَةً فِي الْأَرْضِ وَقَسَادًا كَبِيرٌ ۝

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ أَوْوُوا وَتَصَرَّوْا أُولَئِكَ هُمْ

(उन को) शरण दी, और (उन की) सहायता की, वही सच्चे ईमान वाले हैं। उन्हीं के लिये क्षमा तथा उन्हीं के लिये उत्तम जीविका है।

75. तथा जो लोग इन के पश्चात् ईमान लाये और हिजरत कर गये, और तुम्हारे साथ मिल कर संघर्ष किया, वही तुम्हारे अपने हैं। और वही परिवारिक समीपवर्ती अल्लाह के लेख (आदेश) में अधिक समीप^[1] हैं। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक चीज़ का अति ज्ञानी है।

الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٧٥﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا مِن بَعْدُ وَهَاجَرُوا وَجْهَهُدُوا
مَعَكُمْ فَأُولَئِكَ مِنكُمْ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ
أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٧٥﴾

1 अर्थात् मीरास में उन को प्राथमिकता प्राप्त है।

सूरह तौबा - 9



सूरह तौबा के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मदनी है, इस में 129 आयतें हैं।

इस सुरह में तौबा की शुभ सूचना तथा वचन भंगी काफ़ि़रों से विरक्त होने की घोषणा है। इसलिये इस का नाम सूरह तौबा और बराआ (विरक्ति) दोनों है।

- यह सन् (8-9) हिज्री के बीच मक्का की विजय के पश्चात् नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर समय-समय से उतरी। और सन् (9) हिज्री में जब आप ने अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) को हज्ज का अमीर बना कर भेजा तो इस की आरंभिक आयतें उतरीं। और यह एलान किया गया कि काफ़ि़रों से संधि तोड़ दी गई और अहले किताब से संबंधित इस्लामी शासन की नीति बताते हुये उन्हें सावधान किया गया।
- इस में इस्लामी वर्ष और महीने का पालन करने का निर्देश दिया गया।
- तबूक के युद्ध के लिये मुसलमानों को उभारा गया तथा मुनाफ़ि़कों की निन्दा की गई जो जिहाद से जी चुराते थे।
- यह बताया गया कि ज़कात किन को दी जाये। और ईमान वालों को सफल होने की शुभ सूचना दी गई।
- मुनाफ़ि़कों के साथ जिहाद करने का आदेश दिया गया। और उन्हें सुधर जाने और अल्लाह तथा रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की आज्ञा का पालन करने को कहा गया अन्यथा वह अपने ईमान के दावे में झूठे हैं।
- नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सच्चे साथियों को शुभ सूचना देने के साथ ग्रामीण वासियों को उन के निफ़ाक़ पर धमकी दी गई।
- जिहाद से जी चुराने वालों के झूठ को उजागर किया गया और ईमान वालों के दोष क्षमा करने का एलान किया गया।
- मुनाफ़ि़कों के मस्जिद बना कर षड्यंत्र रचने का भंडा फोड़ने के साथ मुश्रि़कों के लिये क्षमा की प्रार्थना करने से रोक दिया गया। और मदीना के आस-पास के ग्रामिणों को नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये जान दे देने तथा धर्म के समझने के निर्देश दिये गये।

- ईमान वालों को जिहाद का निर्देश और मुनाफ़िकों को अन्तिम चेतावनी दी गई।
- अन्त में कहा गया कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम्हारी केवल भलाई चाहते हैं। इसलिये यदि तुम उन का आदर करोगे तो तुम्हारा ही भला होगा।

1. अल्लाह तथा उस के रसूल की ओर से संधि मुक्त होने की घोषणा है उन मिश्रणवादियों के लिये जिन से तुम ने संधि (समझौता) किया^[1] था।
2. तो (हे काफ़िरो!) तुम धरती में चार महीने (स्वतंत्र हो कर) फिरो। तथा जान लो कि तुम अल्लाह को विवश नहीं कर सकोगे। और निश्चय अल्लाह, काफ़िरो को अपमानित करने वाला है।
3. तथा अल्लाह और उस के रसूल की ओर से सार्वजनिक सूचना है, महा हज्ज^[2] के दिन कि अल्लाह मिश्रणवादियों से अलग है। तथा उस का रसूल भी। फिर यदि तुम तौबा (क्षमा याचना) कर लो तो वह तुम्हारे लिये उत्तम है। और यदि तुम ने मुँह फेरा तो जान लो कि

بَرَاءَةٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ

فَسِيحُوا فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَلِمُوا أَنَّهُمْ يُغَيَّرُ
مُحْزَى اللَّهِ وَأَنَّ اللَّهَ مُغْزِي الْكَافِرِينَ

وَأَذَانٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ
الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ وَرَسُولُهُ
فَإِنْ بُدِئْتُمْ فَهُوَ حَرِيكُمْ وَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا
أَنَّكُمْ عَدُوٌّ لِلَّهِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
بِعَذَابِ اللَّهِ

- 1 यह सूरह सन् 9 हिजरी में उतरी। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना पहुँचे तो आप ने अनेक जातियों से समझौता किया था। परन्तु सभी ने समय समय से समझौते का उल्लंघन किया। लेकिन आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बराबर उस का पालन करते रहे। और अब यह घोषणा कर दी गई कि मिश्रणवादियों से कोई समझौता नहीं रहेगा।
- 2 यह एलान ज़िल हिज्जा सन् (10) हिजरी को मिना में किया गया। कि अब काफ़िरो से कोई संधि नहीं रहेगी। इस वर्ष के बाद कोई मुशर्रिक हज्ज नहीं करेगा और न कोई काँबा का नंगा तवाफ़ करेगा। (बुखारी- 4655)

तुम अल्लाह को विवश करने वाले नहीं हो। और आप उन्हें जो काफ़िर हो गये दुःखदायी यातना का शुभ समाचार सुना दें।

4. सिवाय उन मुश्रिकों के जिन से तुम ने संधि की, फिर उन्होंने तुम्हारे साथ कोई कमी नहीं की, और न तुम्हारे विरुद्ध किसी की सहायता की, तो उन से उन की संधि उन की अवधि तक पूरी करो। निश्चय अल्लाह आज्ञाकारियों से प्रेम करता है।

5. अतः जब सम्मानित महीने बीत जायें तो मिश्रणवादियों का बध करो उन्हें जहाँ पाओ, और उन्हें पकड़ो, और घेरो^[1], और उन की घात में रहो। फिर यदि वह तौबा कर लें और नमाज़ की स्थापना करें तथा ज़कात दें तो उन्हें छोड़ दो। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

6. और यदि मुश्रिकों में से कोई तुम से शरण माँगे तो उसे शरण दो यहाँ तक कि अल्लाह की बातें सुन ले। फिर उसे पहुँचा दो उस के शान्ति के स्थान तक। यह इसलिये कि वह ज्ञान नहीं रखते।

7. इन मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) की कोई संधि अल्लाह और उस के रसूल के पास कैसे हो सकती है? उन के सिवाय जिन से तुम ने सम्मानित मस्जिद (काँबा) के पास संधि

إِلَّا الَّذِينَ عٰهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوكُمْ شَيْئًا وَلَمْ يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتَيْتُمُوهُمْ عٰهَدًا هُمْ إِلَىٰ مَدَّتِهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝

فَإِذَا اسْلَخَ الْأَشْهُرَ الْحُرُمَ فَاتُّبُوا لِلْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُواهُمْ وَأَحْصُوا وَهُمْ وَأَقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصِدٍ إِن تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

وَإِنْ أَحَدٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ كَلِمَةَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ ۝

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عٰهَدٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عٰهَدْتُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ فَمَا اسْتَقَامُوا لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝

1 यह आदेश मक्का के मुश्रिकों के बारे में दिया गया है, जो इस्लाम के विरोधी थे और मुसलमानों पर आक्रमण कर रहे थे।

- की^[1] थी। तो जब तक वह तुम्हारे लिये सीधे रहें तो तुम भी उन के लिये सीधे रहो। वास्तव में अल्लाह आज्ञाकारियों से प्रेम करता है।
8. और उन की संधि कैसे रह सकती है जब कि वह यदि तुम पर अधिकार पा जायें तो किसी संधि और किसी वचन का पालन नहीं करेंगे। वे तुम्हें अपने मुखों से प्रसन्न करते हैं, जब कि उन के दिल इन्कार करते हैं। और उन में अधिकांश वचनभंगी हैं।
9. उन्होंने अल्लाह की आयतों के बदले तनिक मूल्य खरीद लिया^[2], और (लोगों को) अल्लाह की राह (इस्लाम) से रोक दिया। वास्तव में वे बड़ा कुकर्म कर रहे हैं।
10. वह किसी ईमान वाले के बारे में किसी संधि और वचन का पालन नहीं करते। और वही उल्लंघनकारी हैं।
11. तो यदि वह (शिरक से) तौबा कर लें और नमाज़ की स्थापना करें, और ज़कात दें तो तुम्हारे धर्म-बंधु हैं। और हम उन लोगों के लिये आयतों का वर्णन कर रहे हैं जो ज्ञान रखते हों।
12. तो यदि वह अपनी शपथें अपना वचन देने के पश्चात् तोड़ दें, और तुम्हारे धर्म की निन्दा करें तो कुफ़्र

كَيْفَ وَإِنْ يَظْهَرُ عَلَيْكُمْ لَا يَرْفُقُوا فِيكُمْ إِلَّا
وَلَا ذِمَّةَ يُرْضَوْنَكُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَى
قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَاسِقُونَ ۝

اِشْتَرَوْا بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدَّوْا عَنْ
سَبِيلِهِ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

لَا يَرْفُقُونَ فِي مَوْمِنٍ إِلَّا وَلَا ذِمَّةَ وَأُولَئِكَ
هُمُ الْمُعْتَدُونَ ۝

فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ
وَأَخْوَانَكُمْ فِي الدِّينِ وَنُقِصِلُ الْآيَاتِ
لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

وَإِنْ نَكَثُوا آيَاتِنَا هُمْ مِنْ بَعْدِ
عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا

1 इस से अभिप्रेत हुदैबिया की संधि है जो सन् (6) हिजरी में हुई। जिसे काफ़िरों ने तोड़ दिया। और यही सन् (8) हिजरी में मक्का की विजय का कारण बना।

2 अर्थात् संसारिक स्वार्थ के लिये सत्धर्म ईस्लाम को नहीं माना।

के प्रमुखों से युद्ध करो। क्योंकि उन की शपथों का कोई विश्वास नहीं, ताकि वह (अत्याचार से) रुक जायें।

أَيُّمَةَ الْكُفْرِ إِنَّمَا لَهُمْ
لَكُمْ يَنْتَهُونَ ⑩

13. तुम उन लोगों से युद्ध क्यों नहीं करते जिन्होंने अपने वचन भंग कर दिये? तथा रसूल को निकालने का निश्चय किया? और उन्होंने ही युद्ध का आरंभ किया है। क्या तुम उन से डरते हो? तो अल्लाह अधिक योग्य है कि तुम उस से डरो, यदि तुम ईमान^[1] वाले हो।

الْأَيْمَانَ كُفْرًا
وَهُمْ بِدَائِهِمْ
أُولَئِكَ أَتَخْشَوْنَ
إِنَّ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ⑩

14. उन से युद्ध करो, उन्हें अल्लाह तुम्हारे हाथों दण्ड देगा। और उन्हें अपमानित करेगा, और उन के विरुद्ध तुम्हारी सहायता करेगा। और ईमान वालों के दिलों का सब दुःख दूर कर देगा।

فَاتَّخِذُوهُمْ
وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ
وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ
وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ ⑩

15. और उन के दिलों की जलन दूर कर देगा, और जिस पर चाहेगा दया कर देगा। और अल्लाह अति ज्ञानी नीतिज्ञ है।

وَيَذِيبُ عَنْهُمْ
يَسْأَلُ وَاللَّهُ
عَلِيمٌ حَكِيمٌ ⑩

16. क्या तुम ने समझा है कि यूँ ही छोड़ दिये जाओगे, जब कि (परीक्षा लेकर) अल्लाह ने उन्हें नहीं जाना है जिस ने तुम में से जिहाद किया? तथा अल्लाह और उस के रसूल और ईमान वालों के सिवाय किसी को भेदी मित्र नहीं बनाया। और अल्लाह उस से सूचित है जो तुम कर रहे हो।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوا
جَهْدًا وَأَمِنْكُمْ
رَسُولُهُ وَاللَّهُ
تَعَالَى ⑩

17. मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) के लिये

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْمُرُوا مَسْجِدَ اللَّهِ

1 आयत नं० 7 से लेकर 13 तक यह बताया गया है कि शत्रु ने निरन्तर संधि को तोड़ा है। और तुम्हें युद्ध के लिये बाध्य कर दिया है। अब उन के अत्याचार और आक्रमण को रोकने का यही उपाय रह गया है कि उन से युद्ध किया जाये।

योग्य नहीं है कि वह अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें, जब कि वह स्वयं अपने विरुद्ध कुफ्र (अधर्म) के साक्षी हैं। इन्हीं के कर्म व्यर्थ हो गये, और नरक में वही सदावासी होंगे।

18. वास्तव में अल्लाह की मस्जिदों को वही आबाद करता है जो अल्लाह पर और अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान लाया, तथा नमाज़ की स्थापना की, और ज़कात दी, और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरा। तो आशा है कि वही सीधी राह चलेंगे।

19. क्या तुम हाजियों को पानी पिलाने और सम्मानित मस्जिद (काँबा) की सेवा को उस के (ईमान के) बराबर समझते हो जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाया, तथा अल्लाह की राह में जिहाद किया? अल्लाह के समीप दोनों बराबर नहीं हैं। तथा अल्लाह अत्याचारियों को सुपथ नहीं दिखाता।

20. जो लोग ईमान लाये तथा हिजरत कर गये, और अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों से जिहाद किया, अल्लाह के यहाँ उन का बहुत बड़ा पद है। और वही सफल होने वाले हैं।

21. उन को उन का पालनहार शुभ सूचना देता है अपनी दया और प्रसन्नता की तथा ऐसे स्वर्गों की जिन में स्थायी सुख के साधन हैं।

22. जिन में वह सदावासी होंगे। वास्तव में अल्लाह के यहाँ (सत्कर्मियों के

شَهِدِينَ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ
أَعْمَالُهُمْ فِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ ﴿٩٠﴾

إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسْجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ
فَعَسَىٰ أُولَٰئِكَ أَنْ يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ﴿٩١﴾

أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ كِبْرًا مِّنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَجَهَدَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَوُونَ عِنْدَ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا
يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٩٢﴾

الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ أَكْبَرُ دَرَجَةً
عِنْدَ اللَّهِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٩٣﴾

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُم بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَجَنَّتِ
لَهُمْ فِيهَا نِعْمٌ مَّقِيمَةٌ ﴿٩٤﴾

خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٩٥﴾

लिये) बड़ा प्रतिफल है।

23. हे ईमान वालो! अपने बापों और भाईयों को अपना सहायक न बनाओ, यदि वह ईमान की अपेक्षा कुफ़ से प्रेम करें। और तुम में से जो उन को सहायक बनायेंगे तो वही अत्याचारी होंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا آبَاءَكُمْ
وَإِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَاءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى
الْإِيمَانِ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَوَيْلٌ لَّكَ هُمْ
الظَّالِمُونَ ﴿٨﴾

24. हे नबी! कह दो कि यदि तुम्हारे बाप और तुम्हारे पुत्र तथा तुम्हारे भाई और तुम्हारी पत्नियाँ तथा तुम्हारा परिवार और तुम्हारा धन जो तुम ने कमाया है, और जिस व्यापार के मंद हो जाने का तुम्हें भय है, तथा वह घर जिन से मोह रखते हो, तुम्हें अल्लाह तथा उस के रसूल और अल्लाह की राह में जिहाद करने से अधिक प्रिय है तो प्रतिक्षा करो, यहाँ तक कि अल्लाह का निर्णय आ जाये और अल्लाह उल्लंघनकारियों को सुपथ नहीं दिखाता।

قُلْ إِن كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ
وَآزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ
بِقَاتَرْتُمْ شَوْهَاتُهَا
وَتِجَارَةٌ تَتَّخِذُونَ كَسَادَهَا
وَمَسْكِنٌ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُمْ
مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ
وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرْتَمُونَ حَتَّى
يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرٍ
يَأْمُرُ بِهِ اللَّهُ لِيَهْدِيَ الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٩﴾

25. अल्लाह बहुत से स्थानों पर तथा हुनैन^[1] के दिन तुम्हारी सहायता कर चुका है, जब तुम को तुम्हारी अधिक्ता पर गर्व था, तो वह तुम्हारे कुछ काम न आई, तथा तुम पर

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ
وَيَوْمَ حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كُرُوسُكُمْ
فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَصَافَتْ
عَلَيْكُمْ الْأَرْضُ
بِمَا رَجَبْتُمْ لَكُمْ وَلَيْسَ لَكُمْ مُدْرِكُونَ ﴿١٠﴾

- 1 «हुनैन» मक्का तथा ताइफ़ के बीच एक वादी है। वहीं पर यह युद्ध सन् 8 हिज्री में मक्का की विजय के पश्चात् हुआ। आप को मक्का में यह सूचना मिली कि हवाज़िन और सक्कीफ़ कबीले मक्का पर आक्रमण करने की तय्यारियाँ कर रहे हैं। जिस पर आप बारह हज़ार की सेना लेकर निकले। जब कि शत्रु की संख्या केवल चार हज़ार थी। फिर भी उन्होंने ने अपने तीरों से मुसलमानों का मुँह फेर दिया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के कुछ साथी रणक्षेत्र में रह गये, अन्ततः फिर इस्लामी सेना ने व्यवस्थित हो कर विजय प्राप्त की। (इब्ने कसीर)

धरती अपने विस्तार के होते संकीर्ण (तंग) हो गई, फिर तुम पीठ दिखा कर भागो।

26. फिर अल्लाह ने अपने रसूल और ईमान वालों पर शान्ति उतारी। तथा ऐसी सेनायें उतारीं जिन्हें तुम ने नहीं देखा^[1], और काफ़िरो को यातना दी। और यही काफ़िरो का प्रतिकार (बदला) है।
27. फिर अल्लाह इस के पश्चात् जिसे चाहे क्षमा कर दे^[2] और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
28. हे ईमान वालो! मुशरिक (मिश्रणवादी) मलीन हैं। अतः इस वर्ष^[3] के पश्चात् वह सम्मानित मस्जिद (का'बा) के समीप भी न आयें। और यदि तुम्हें निर्धनता का भय^[4] हो तो अल्लाह तुम्हें अपनी दया से धनी कर देगा, यदि वह चाहे। वास्तव में अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।
29. (हे ईमान वालो!) उन से युद्ध करो जो न तो अल्लाह पर (सत्य) ईमान लाते और न अन्तिम दिन (प्रलय) पर। और न जिसे अल्लाह और उस के

ثُمَّ أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزَلَ جُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا وَعَذَابَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَذَلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ﴿٢٦﴾

ثُمَّ يُؤْتِي اللَّهُ مَن يَشَاءُ مَالَهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٧﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نجسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عِلْمِهِمْ هَذَا ۖ وَإِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيكُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٢٨﴾

قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ
وَرَسُولُهُ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ

- 1 अर्थात् फरिश्ते भी उतारे गये जो मुसलमानों के साथ मिल कर काफ़िरो से जिहाद कर रहे थे। जिन के कारण मुसलमान विजयी हुये और काफ़िरो को बन्दी बना लिया गया जिन को बाद में मुक्त कर दिया गया।
- 2 अर्थात् उस के सत्धर्म इस्लाम को स्वीकार कर लेने के कारण।
- 3 अर्थात् सन् 9 हिजरी के पश्चात्।
- 4 अर्थात् उन से व्यापार न करने के कारण। अपवित्र होने का अर्थ शिर्क के कारण मन की मलीनता है। (इब्ने कसीर)

रसूल ने हराम (वर्जित) किया है उसे हराम (वर्जित) समझते हैं, न सत्धर्म को अपना धर्म बनाते, उन में से जो पुस्तक दिये गये हैं यहाँ तक कि वह अपने हाथ से जिज़्या^[1] दें और वह अपमानित हो कर रहें।

الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حَتَّى يُعْطُوا
الْجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ مُنْكَرُونَ ﴿٥٠﴾

30. तथा यहूद ने कहा कि उज़ैर अल्लाह का पुत्र है। और नसारा (ईसाईयों) ने कहा कि मसीह अल्लाह का पुत्र है। यह उन के अपने मुँह की बातें हैं। वह उन के जैसी बातें कर रहे हैं जो इन से पहले काफिर हो गये। उन पर अल्लाह की मार! वह कहाँ बहके जा रहे हैं?

وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرٌ ابْنُ اللَّهِ وَقَالَتِ
النَّصَارَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللَّهِ ذَلِكَ قَوْلُهُمْ
يَأْفِكُوا لَهُمْ يُضَاهِئُونَ قَوْلَ الَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ قَاتَلَهُمُ اللَّهُ أَنْ
يُؤْفَكُونَ ﴿٥٠﴾

31. उन्होंने ने अपने विद्वानों और धर्माचारियों (संतों) को अल्लाह के सिवा पूज्य^[2] बना लिया। तथा मरयम के पुत्र मसीह को, जब कि उन्हें जो आदेश दिया गया था, इस के सिवा कुछ न था कि एक अल्लाह की इबादत (वंदना) करें। कोई पूज्य नहीं है परन्तु वही। वह उस से पवित्र है जिसे उस का साझी बना रहे हैं।

اتَّخَذُوا أَحْبَابَهُمُ وَرُءَسَاءَهُمْ أَرْبَابًا
مِن دُونِ اللَّهِ وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ
وَمَا أُمْرُوا إِلَّا لِعِبَادَتِهِ وَاللَّهُ وَاحِدٌ لَا
إِلَهَ إِلَّا هُوَ سُبْحَانَهُ عَمَّا
يُشْرِكُونَ ﴿٥١﴾

32. वे चाहते हैं कि अल्लाह के प्रकाश को अपनी फूँकों से बुझा^[3] दें और अल्लाह

يُرِيدُونَ أَنْ يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ

1 जिज़्या अर्थात् रक्षा करा जो उस रक्षा का बदला है जो इस्लामी देश में बसे हुये अहले किताब से इसलिये लिया जाता है ताकि वह यह सोचें कि अल्लाह के लिये ज़कात न देने और गुमराही पर अड़े रहने का मूल्य चुकाना कितना बड़ा दुर्भाग्य है जिस में वह फँसे हुये हैं।

2 हदीस में है कि उन के बनाये हुये वैध तथा अवैध को मानना ही उन को पूज्य बनाना है। (तिर्मिज़ी - 2471- यह सहीह हदीस है।)

3 आयत का अर्थ यह है कि यहूदी, ईसाई तथा काफिर स्वयं तो कुपथ हैं ही वह

अपने प्रकाश को पूरा किये बिना नहीं रहेगा, यद्यपि काफ़िरों को बुरा लगे।

33. उसी ने अपने रसूल^[1] को मार्गदर्शन तथा सत्धर्म (इस्लाम) के साथ भेजा है ताकी उसे प्रत्येक धर्म पर प्रभुत्व प्रदान कर दे^[2], यद्यपि मिश्रणवादियों को बुरा लगे।

34. हे ईमान वालो! बहुत से (अहले किताब के) विद्वान तथा धर्माचारी (संत) लोगों का धन अवैध खाते हैं। और (उन्हें) अल्लाह की राह से रोकते हैं, तथा जो सोना-चाँदी एकत्र कर के रखते हैं और उसे अल्लाह की राह में दान नहीं करते, उन्हें दुःखदायी यातना की शुभसूचना सुना दें।

35. जिस (प्रलय के) दिन उसे नरक की अग्नि में तपाया जायेगा, फिर उस से उन के माथों तथा पार्श्वों (पहलू) और पीठों को दागा जायेगा (और कहा जायेगा) यही है, जिसे तुम एकत्र कर रहे थे, तो (अब) अपने संचित किये धनों का स्वाद चखो।

36. वास्तव में महीनों की संख्या बारह महीने है अल्लाह के लेख में जिस दिन से उसने आकाशों तथा धरती

وَيَأْتِي اللَّهَ إِلَّا أَنْ يَتَّخِذَ تَوَرُّكًا وَلَكُورَةً
الْكُفْرُونَ ۝

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ
الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَكُورَةً
الْمُشْرِكُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْأَحْبَارِ
وَالرُّهْبَانِ لِيَآكُلُونَ أَمْوَالَ النَّاسِ
بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ
وَالَّذِينَ يَكْتُمُونَ الذَّهَبَ وَالفِضَّةَ وَلَا
يُفْقَهُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ
أَلِيمٍ ۝

يَوْمَ يُحْمَىٰ عَلَيْهَا فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَتَكَلَّىٰ بِهَا
جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وظُهُورُهُمْ هَذَا مَا
كَنْزْتُمْ لِأَنفُسِكُمْ فَذُوقُوا مَا كَنْزْتُمْ تَكْلِفُونَ ۝

إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِنْدَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ
شَهْرًا فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ

सत्धर्म इस्लाम से रोकने के लिये भी धोखा-धड़ी से काम लेते हैं जिस में वह कदापि सफल नहीं होंगे।

1 रसूल से अभिप्रेत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है।

2 इस का सब से बड़ा प्रमाण यह है कि इस समय पूरे संसार में मुसलमानों की संख्या लगभग दो अरब है। और अब भी इस्लाम पूरी दुनिया में तेज़ी से फैलता जा रहा है।

की रचना की है। उन में से चार हुराम (सम्मानित)^[1] महीने हैं। यही सीधा धर्म है। अतः अपने प्राणों पर अत्याचार^[2] न करो तथा मिश्रणवादियों से सब मिलकर युद्ध करो। जैसे वह तुम से मिल कर युद्ध करते हैं, और विश्वास रखो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है।

37. नसी^[3] (महीनों को आगे पीछे करना) कुफ्र (अधर्म) में अधिकता है। इस से काफिर कुपथ किये जाते हैं। एक ही महीने को एक वर्ष हलाल (वैध) कर देते हैं, तथा उसी को दूसरे वर्ष हुराम (अवैध) कर देते हैं। ताकि अल्लाह ने सम्मानित महीनों की जो गिनती निश्चित कर दी है उसे अपनी गिनती के अनुसार करके अवैध महीनों को वैध कर लें। उन के लिये उन के कुकर्म सुन्दर बना दिये गये हैं। और अल्लाह काफिरों को सुपथ नहीं दर्शाता।

38. हे ईमान वालो! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुम से कहा जाये कि अल्लाह की राह में निकलो तो धरती के बोझ बन जाते हो, क्या तुम आखिरत

وَالْأَرْضُ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرْمٌ ذَلِكَ
الَّذِينَ الْقِيَمَةُ فَلَا تَظْلِمُوا فِيهِنَّ
أَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ كَافَّةً
كَمَا يُقَاتِلُونَكُمْ كَافَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝

إِنَّمَا النَّسِيءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ
الَّذِينَ كَفَرُوا يُجْرِمُونَ عَمَّا وَعَدُوا
لِيَوْمِ أَطُوعُوا عِدَّةً مَا حَرَّمَ اللَّهُ فَيُحِلُّوا مَا حَرَّمَ
اللَّهُ زُرِين لَّهُمْ سُوءٌ أَعْمَالِهِمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمْ انْفِرُوا
فِي سَبِيلِ اللَّهِ إِنَّا قُلْنَا إِلَى الْأَرْضِ أَرْضِينَكُمْ
بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ فَمَا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

- 1 जिन में युद्ध निषेध है। और वह जुलकादा, जुल हिज्जा, मुहर्रम तथा रजब के अर्बी महीने हैं। (बुखारी- 4662)
- 2 अर्थात् इन में युद्ध तथा रक्तपात न करो, इन का आदर करो।
- 3 इस्लाम से पहले मक्का के मिश्रणवादी अपने स्वार्थ के लिये सम्मानित महीनों साधारणतः मुहर्रम के महीने को सफर के महीने से बदल कर युद्ध कर लेते थे। इसी प्रकार प्रत्येक तीन वर्ष पर एक महीना अधिक कर लिया जाता था ताकि चाँद का वर्ष सूर्य के वर्ष के अनुसार रहे। कुर्आन ने इस कुरीति का खण्डन किया है, और इसे अधर्म कहा है। (इब्ने कसीर)

فِي الْآخِرَةِ الْأَقِيلُ ﴿٩﴾

(परलोक) की अपेक्षा संसारिक जीवन से प्रसन्न हो गये हो? जब कि परलोक की अपेक्षा संसारिक जीवन के लाभ बहुत थोड़े हैं।^[1]

1 यह आयतें तबूक के युद्ध से संबन्धित हैं। तबूक मदीने और शाम के बीच एक स्थान का नाम है। जो मदीने से 610 कि॰मी॰ दूर है।

सन् 9 हिजरी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह सूचना मिली कि रोम के राजा कैसर ने मदीने पर आक्रमण करने का आदेश दिया है। यह मुसलमानों के लिये अरब से बाहर एक बड़ी शक्ति से युद्ध करने का प्रथम अवसर था। अतः आप ने तय्यारी और कूच का एलान कर दिया। यह बड़ा भीषण समय था, इस लिये मुसलमानों को प्रेरणा दी जा रही है कि इस युद्ध के लिये निकलें।

तबूक का युद्ध मक्का की विजय के पश्चात् ऐसे समाचार मिलने लगे कि रोम का राजा कैसर मुसलमानों पर आक्रमण करने की तय्यारी कर रहा है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब यह सुना तो आप ने भी मुसलमानों को तय्यारी का आदेश दे दिया। उस समय स्थिति बड़ी गंभीर थी। मदीना में अकाल था। कड़ी धूप तथा खजूरों के पकने का समय था। सवारी तथा यात्रा के संसाधन की कमी थी। मदीना के मुनाफ़िक अबू आमिर राहिब के द्वारा ग़स्सान के ईसाई राजा और कैसर से मिले हुये थे। उन्होंने मदीना के पास अपने षड्यंत्र के लिये एक मस्जिद भी बना ली थी। और चाहते थे कि मुसलमान पराजित हो जायें। वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों का उपहास करते थे। और तबूक की यात्रा के बीच आप पर प्राण घातक आक्रमण भी किया। और बहुत से द्विधावादियों ने आप का साथ भी नहीं दिया और झूठे बहाने बना लिये। रजब सन् 9 हिजरी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीस हज़ार मुसलमानों के साथ निकले। इन में दस हज़ार सवार थे। तबूक पहुँच कर पता लगा कि कैसर और उस के सहयोगियों ने साहस खो दिया है। क्योंकि इस से पहले मूता के रण में तीन हज़ार मुसलमानों ने एक लाख ईसाईयों का मुकाबला किया था। इसलिये कैसर तीस हज़ार की सेना से भिड़ने का साहस न कर सका। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तबूक में बीस दिन रह कर रोमियों के आधीन इस क्षेत्र के राज्यों को अपने आधीन बनाया। जिस से इस्लामी राज्य की सीमायें रोमी राज्य की सीमा तक पहुँच गईं। जब आप मदीना पहुँचे तो द्विधावादियों ने झूठे बहाने बना कर क्षमा मांग ली। तीन मुसलमान जो आप के साथ आलस्य के कारण नहीं जा सके थे और अपना दोष स्वीकार कर लिया था आप ने उन का सामाजिक बहिष्कार कर दिया। किन्तु अल्लाह ने उन तीनों को भी उन के सत्य के कारण क्षमा कर दिया। आप ने उस मस्जिद को भी गिराने का आदेश दिया जिसे मुनाफ़िकों ने अपने षड्यंत्र का केन्द्र बनाया था।

39. यदि तुम नहीं निकलोगे, तो तुम्हें अल्लाह दुःखदायी यातना देगा, तथा तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को लायेगा। और तुम उसे कोई हानि नहीं पहुँचा सकोगे। और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

40. यदि तुम उस (नबी) की सहायता नहीं करोगे तो अल्लाह ने उस की सहायता उस समय^[1] की है जब काफ़िरों ने उसे (मक्का से) निकाल दिया। वह दो में दूसरे थे। जब दोनों गुफा में थे, जब वह अपने साथी से कह रहे थे: उदासीन न हो, निश्चय अल्लाह हमारे साथ है।^[2] तो अल्लाह ने अपनी ओर से शान्ति उतार दी, और आप को ऐसी सेना से समर्थन दिया जिसे तुम ने नहीं देखा। और काफ़िरों की बात नीची कर दी। और अल्लाह की बात ही ऊँची रही। और अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

41. हल्के^[3] होकर और बोझल (जैसे हो)

1 यह उस अवसर की चर्चा है जब मक्का के मिश्रणवादियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बंध कर देने का निर्णय किया। उसी रात आप मक्का से निकल कर सौर पर्वत नामक गुफा में तीन दिन तक छुपे रहे। फिर मदीना पहुँचे। उस समय गुफा में केवल आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु आप के साथ थे।

2 हदीस में है कि अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा कि मैं गुफा में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ था। और मैं ने मुश्रिकों के पैर देख लिये। और आप से कहा: यदि इन में से कोई अपना पैर उठा दे तो हमें देख लेगा। आप ने कहा: उन दो के बारे में तुम्हारा क्या विचार है जिन का तीसरा अल्लाह है। (सहीह बुखारी- 4663)

3 संसाधन हो या न हो।

إِلَّا تَنْفَرُوا يَعِدَّ بِكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَيَسْتَبِيدُ
قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٩﴾

إِلَّا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرْنَا اللَّهَ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ
كَفَرُوا ثَانِيًا إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ
يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا
فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ
لَمْ يَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَى وَكَلِمَةُ
اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٠﴾

إِنْفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَالْحَايِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ

निकल पड़ो। और अपने धनों तथा प्राणों से अल्लाह की राह में जिहाद करो। यही तुम्हारे लिये उत्तम है, यदि तुम ज्ञान रखते हो।

42. (हे नबी!) यदि लाभ समीप और यात्रा सरल होती तो यह (मुनाफ़िक) अवश्य आप के साथ हो जाता परन्तु उन को मार्ग दूर लगा, और (अब) अल्लाह की शपथ लेंगे कि यदि हम निकल सकते, तो अवश्य तुम्हारे साथ निकल पड़ते, वह अपना विनाश स्वयं कर रहे हैं। और अल्लाह जानता है कि वे वास्तव में झूठे हैं।
43. (हे नबी!) अल्लाह आप को क्षमा करे! आप ने उन्हें अनुमति क्यों दे दी? यहाँ तक कि आप के लिये जो सच्चे हैं उजागर हो जाते, और झूठों को जान लेते!?
44. आप से (पीछे रह जाने की) अनुमति वह नहीं माँग रहे हैं जो अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखते हों कि अपने धनों तथा प्राणों से जिहाद करेंगे। और अल्लाह आज्ञाकारियों को भली भाँती जानता है।
45. आप से अनुमति वही माँग रहे हैं जो अल्लाह तथा अन्तिम दिवस (परलोक) पर ईमान नहीं रखते, और अपने संदेह में पड़े हुये हैं।
46. यदि वे निकलना चाहते तो अवश्य उस के लिये कुछ तय्यारी करते। परन्तु अल्लाह को उन का जाना

وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٩﴾

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا
لَآتَيْنَكُمُوهَا وَلَكِنْ بَعَدَتْ عَلَيْهِمُ الشَّقَقَةُ
وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا الْخُرُوجَ
مَعَكُمْ لَنُفَلِّهُنَّ أَنْفُسَهُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٩﴾

عَفَا اللَّهُ عَنْكَ لِمَ أَذِنَتْ لَهُمْ حَتَّى
يَتَّبِعِينَ لَكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَعَلَّمَ
الْكَذِبِينَ ﴿٩﴾

لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ
وَأَنْفُسِهِمْ وَاللَّهُ عَلَيْهِمُ الْإِتْمَانُ ﴿٩﴾

إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَاتَّبَعُوا قُلُوبُهُمْ فَمَهْمُ
رَبِّهِمْ يَتَرَدَّدُونَ ﴿٩﴾

وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً
وَلَكِنْ كَرِهَ اللَّهُ انبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ

अप्रिय था, अतः उन्हें आलसी बना दिया। तथा कह दिया गया कि बैठने वालों के साथ बैठे रहो।

47. और यदि वह तुम में निकलते तो तुम में बिगाड़ ही अधिक करते। और तुम्हारे बीच उपद्रव के लिये दौड़ धूप करते। और तुम में वह भी हैं जो उन की बातों पर ध्यान देते हैं। और अल्लाह अत्याचारियों को भली भाँती जानता है।
48. (हे नबी!) वह इस से पहले भी उपद्रव का प्रयास कर चुके हैं, तथा आप के लिये बातों में हेर फेर कर चुके हैं। यहाँ तक कि सत्य आ गया, और अल्लाह का आदेश प्रभुत्वशाली हो गया, और यह बात उन्हें अप्रिय है।
49. उन में से कोई ऐसा भी है जो कहता है: आप मुझे अनुमति दे दें। और परीक्षा में न डालें। सुन लो! परीक्षा में तो यह पहले ही से पड़े हुए हैं। और वास्तव में नरक काफिरों को घेरी हुयी है।
50. (हे नबी!) यदि आप का कुछ भला होता है तो उन (द्विविधावादियों) को बुरा लगता है। और यदि आप पर कोई आपदा आ पड़े तो कहते हैं: हम ने पहले ही अपनी सावधानी बरत ली थी। और प्रसन्न होकर फिर जाते हैं।
51. आप कह दें: हमें कदापि कोई आपदा नहीं पहुँचेगी परन्तु वही जो अल्लाह ने हमारे भाग्य में लिख दी है। वही हमारा सहायक है। और अल्लाह ही पर

وَقِيلَ اقْعُدُوا مَعَ الْقَاعِدِينَ ﴿٥٠﴾

لَوْ خَرَجُوا فِيكُمْ مَا زَادُوكُمْ إِلَّا
خَبَالًا وَلَا أَوْصَعُوا خَلْقَكُمْ
يَبْغُونَكُمْ الْفِتْنَةَ وَفِيكُمْ
سَمْعُونَ لَهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٥١﴾

لَقَدْ ابْتَدَعُوا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبَكِ
الْأُمُورَ حَتَّى جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ
وَهُمْ كَرِهُونَ ﴿٥٢﴾

وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ اضْحَنِي لِي وَلَا تَقْبِئِي
أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا وَإِنْ جَهَنَّمُ
كَمَا حِيطَةٌ يَا كَافِرِينَ ﴿٥٣﴾

إِنْ تُصِيبَكَ حَسَنَةٌ فَسُئِرُهُمْ وَإِنْ تُصِيبَكَ
مُصِيبَةٌ يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا أَمْرًا مِنْ
قَبْلُ وَتَوَلَّوْا وَهُمْ قَرِحُونَ ﴿٥٤﴾

كُلُّ لَنْ يُصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا هُوَ
مَوْلَانَا وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُونَ ﴿٥٥﴾

ईमान वालों को निर्भर रहना चाहिये।

52. आप उन से कह दें कि तुम हमारे बारे में जिस की प्रतीक्षा कर रहे हो वह यही है कि हमें दो^[1] भलाईयों में से एक मिल जाये। और हम तुम्हारे बारे में इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि अल्लाह तुम्हें अपने पास से यातना देता है या हमारे हाथों से। तो तुम प्रतीक्षा करो। हम भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं।

53. आप (मुनाफ़िकों से) कह दें कि तुम स्वेच्छा दान करो अथवा अनिच्छा, तुम से कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा। क्यों कि तुम अवज्ञाकारी हो।

54. और उन के दानों के स्वीकार न किये जाने का कारण इस के सिवाय कुछ नहीं है कि उन्होंने ने अल्लाह और उसके रसूल के साथ क़ुफ़्र किया है। और वह नमाज़ के लिये आलसी होकर आते हैं, तथा दान भी करते हैं तो अनिच्छा करते हैं।

55. अतः आप को उन के धन तथा उनकी संतान चकित न करो। अल्लाह तो यह चाहता है कि उन्हें इन के द्वारा संसारिक जीवन में यातना दे, और उन के प्राण इस दशा में निकलें कि वह काफ़िर हों।

56. वह (मुनाफ़िक) अल्लाह की शपथ लेकर कहते हैं कि वह तुम में से है,

قُلْ هَلْ تَرْتَضُونَ بِنَاءَ الْإِحْدَى
الضُّعْفَيْنِ وَعَنْ تَرْتَضُ بِكُمْ أَنْ
يُصِيبَكُمُ اللَّهُ بِعَذَابٍ مِنْ عِنْدِهِ أَوْ
بِأَيِّدِنَا فَتَرْتَضُوا إِنَّا مَعَكُمْ مُتَرْتَضُونَ ۝

قُلْ أَنْفِقُوا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَنْ يَتَقَبَّلَ مِنْكُمْ
إِلاَّ كَيْفَ كُنْتُمْ قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝

وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَتُهُمْ إِلاَّ
أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِإِذْنِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَلَا يَأْتُونَ
الصَّلَاةَ إِلاَّ وَهُمْ كَسَالٌ وَلَا يَفْقَهُونَ إِلاَّ
وَهُمْ كَرِهُونَ ۝

فَلَا تُغْنِيكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ
لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَرْهَقَ
أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ۝

وَيَجْلِفُونَ بِاللَّهِ إِثْمَكُمْ لَيْسَ لَكُمْ وَمَاهُمْ مِنْكُمْ

1 दो भलाईयों से अभिप्रायः विजय या अल्लाह की राह में शहीद होना है। (इब्ने कसीर)

जब कि वह तुम में से नहीं है, परन्तु भयभीत लोग हैं।

57. यदि वह कोई शरणगार अथवा गुफा या प्रवेश स्थान पा जायें तो उस की ओर भागते हुये फिर जायेंगे।

58. (हे नबी!) उन (मुनाफ़िकों) में से कुछ ज़कात के वितरण में आप पर आक्षेप करते हैं। फिर यदि उन्हें उस में से कुछ दे दिया जाये तो प्रसन्न हो जाते हैं, और यदि न दिया जाये तो तुरन्त अप्रसन्न हो जाते हैं।

59. और क्या ही अच्छा होता यदि वह उस से प्रसन्न हो जाते जो उन्हें अल्लाह और उस के रसूल ने दिया है। तथा कहते कि हमारे लिये अल्लाह काफी है। हमें अपने अनुग्रह से (बहुत कुछ) प्रदान करेगा, तथा उस के रसूल भी, हम तो उसी की ओर रुचि रखते हैं।

60. ज़कात (दिय, दान) केवल फ़कीरों^[1], मिस्कीनों और कार्य-कर्ताओ^[2] के लिये, तथा उन के लिये जिन के दिलों को जोड़ा जा रहा है^[3] और दास मुक्ति, तथा ऋणियों (की सहायता) के लिये, और अल्लाह की

وَلَا تَهُمُّ قَوْمٌ يَفْرَهُونَ ۝

لَوْ يَدُونَ مَلَجًا أَوْ مَغْرَبًا أَوْ مُدَاخَلًا
لَوَالِيئِهِ وَهُمْ يَجْمَعُونَ ۝

وَمَنْهُمْ مَن تَبْلِغُكَ فِي الصَّدَقَاتِ فَمَا
أَعْطُوا مِنْهَا رِضًا وَإِن لَّمْ يُعْطُوا مِنْهَا آدَاءً
هُمْ يَسْتَعْطُونَ ۝

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آلَتَهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ
وَقَالُوا أَحْسَبَنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ
وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رَاغِبُونَ ۝

إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسْكِينِ وَالْعَمِلِينَ
عَلَيْهَا وَالْمُؤَكَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ
وَالْغَرَمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ فَرِيضَةً
مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

1 कुर्आन ने यहाँ फ़कीर और मिस्कीन के शब्दों का प्रयोग किया है। फ़कीर का अर्थ है जिस के पास कुछ न हो। परन्तु मिस्कीन वह है जिस के पास कुछ धन हो मगर उस की आवश्यकता की पूर्ति न होती हो।

2 जो ज़कात के काम में लगे हों।

3 इस से अभिप्राय वह है जो नये नये इस्लाम लाये हों। तो उन के लिये भी ज़कात है। या जो इस्लाम में रुचि रखते हों, और इस्लाम के सहायक हों।

राह में तथा यात्रियों के लिये है।
अल्लाह की ओर से अनिवार्य (देय) है।^[1]
और अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

61. तथा उन(मुनाफ़िकों) में से कुछ नबी को दुःख देते हैं, और कहते हैं कि वह बड़े सुनवा^[2] हैं। आप कह दें कि वह तुम्हारी भलाई के लिये ऐसे हैं। वह अल्लाह पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों की बात का विश्वास करते हैं, और उन के लिये दया है जो तुम में से ईमान लाये हैं। और जो अल्लाह के रसूल को दुःख देते हैं उन के लिये दुःखदायी यातना है।

62. वह तुम्हारे समक्ष अल्लाह की शपथ

وَمِنْهُمْ الَّذِينَ يُؤَدُّونَ النَّبِيَّ وَيَقُولُونَ
هُوَ آذُنٌ قُلُّ أَدُنٌ خَيْرٌ لَّكُمْ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
وَيُؤْمِنُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ وَرَحْمَةً لِّلَّذِينَ
آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ يُؤَدُّونَ رَسُولَ اللَّهِ
لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠﴾

يَخْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ لِيَرْضَوْكُمْ وَاللَّهُ

- 1 संसार में कोई धर्म ऐसा नहीं है जिस ने दीन दुःखियों की सहायता और सेवा की प्रेरणा न दी हो। और उसे इबादत (वंदना) का अनिवार्य अंश न कहा हो। परन्तु इस्लाम की यह विशेषता है कि उस ने प्रत्येक धनी मुसलमान पर एक विशेष कर-निर्धारित कर दिया है जो उस पर अपनी पूरी आय का हिसाब करके प्रत्येक वर्ष देना अनिवार्य है। फिर उसे इतना महत्व दिया है कि कर्माँ में नमाज़ के पश्चात् उसी का स्थान है। और कूर्आन में दोनों कर्माँ की चर्चा एक साथ करके यह स्पष्ट कर दिया गया है कि किसी समुदाय में इस्लामी जीवन के सब से पहले यही दो लक्षण है। नमाज़ तथा ज़कात, यदि इस्लाम में ज़कात के नियम का पालन किया जाये तो समाज में कोई गरीब नहीं रह जायेगा। और धनवानों तथा निर्धनों के बीच प्रेम की ऐसी भावना पैदा हो जायेगी कि पुरा समाज सुखी और शान्तिमय बन जायेगा। ब्याज का भी निवारण हो जायेगा। तथा धन कुछ हाथों में सीमित नहीं रह कर उस का लाभ पूरे समाज को मिलेगा। फिर इस्लाम ने इस का नियम निर्धारित किया है। जिस का पूरा विवरण हदीसों में मिलेगा और यह भी निश्चित कर दिया कि ज़कात का धन किन को दिया जायेगा, और इस आयत में उन्हीं की चर्चा की गई है, जो यह हैं:

- 1- फ़कीर, 2- मिस्कीन, 3- ज़कात के कार्यकर्ता, 4- नये मुसलमान, 5- दास-दासी, 6- ऋणी, 7- धर्म के रक्षक, 8- और यात्री। अल्लाह की राह से अभिप्राय वह लोग हैं जो धर्म की रक्षा के लिये काम कर रहे हैं।

- 2 अर्थात् जो कहो मान लेते हैं।

लेते हैं, ताकि तुम्हें प्रसन्न कर लें। जब कि अल्लाह और उस के रसूल इस के अधिक योग्य हैं कि उन्हें प्रसन्न करें, यदि वह वास्तव में ईमान वाले हैं।

وَرَسُولُهُ أَحَقُّ أَنْ يُرْضَوْهُ إِنْ كَانُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٥٠﴾

63. क्या वह नहीं जानते कि जो अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करता है उस के लिये नरक की अग्नि है? जिस में वह सदावासी होंगे? और यह बहुत बड़ा अपमान है।

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّهُ مَن يُحَادِدِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَأَنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا ذَلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيمُ ﴿٥١﴾

64. मुनाफ़िक़ (द्विधावादी) इस से डरते हैं कि उन^[1] पर कोई ऐसी सूरह न उतार दी जाये जो उन्हें इन के दिलों की दशा बता दे। आप कह दें कि हँसी उड़ा लो। निश्चय अल्लाह उसे खोल कर रहेगा जिस से तुम डर रहे हो।

يَحْذَرُ الْمُنَافِقُونَ أَنْ تُنزَلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ قُلِ اسْتَهِزُّوْا إِنَّا اللَّهُ مُخْرِجُ مَا تَحْذَرُونَ ﴿٥٢﴾

65. और यदि आप^[2] उन से प्रश्न करें तो वे अवश्य कह देंगे कि हम तो यूँ ही बातें तथा उपहास कर रहे थे। आप कहिये कि क्या अल्लाह तथा उस की आयतों और उस के रसूल के ही साथ उपहास कर रहे थे?

وَلَيْن سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ قُلْ يَا آلله وَإِيَّتِهِ وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ كَسْتَهْزِءُونَ ﴿٥٣﴾

66. तुम बहाने न बनाओ, तुम ने अपने ईमान के पश्चात् कुफ़ किया है। यदि हम तुम्हारे एक गिरोह को क्षमा कर दें तो भी एक गिरोह को अवश्य यातना देंगे। क्यों कि वही अपराधी है।

لَا تَعْتَدُوا وَقَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ إِنْ نَعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآئِفَةً يَأْتِيهِمْ كَانُوا يَجْرِمُونَ ﴿٥٤﴾

67. मुनाफ़िक़ पुरुष तथा स्त्रियाँ सब

الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ بَعْضُهُمْ مِّنْ بَعْضٍ

1 ईमान वालों पर।

2 तबूक की यात्रा के बीच मुनाफ़िक़ लोग, नबी तथा इस्लाम के विरुद्ध बहुत सी दुःखदायी बात कर रहे थे।

एक-दूसरे जैसे हैं। वह बुराई का आदेश देते तथा भलाई से रोकते हैं। और अपने हाथ बंद किये रहते^[1] हैं। वे अल्लाह को भूल गये, तो अल्लाह ने भी उन्हें भुला^[2] दिया। वास्तव में मुनाफ़िक ही भ्रष्टाचारी हैं।

68. अल्लाह ने मुनाफ़िक़ पुरुषों तथा स्त्रियों और काफ़िरों को नरक की अग्नि का वचन दिया है। जिस में वे सदावासी होंगे। वही उन को प्रयाप्त है। और अल्लाह ने उन्हें धिक्कार दिया है। और उन्हीं के लिये स्थायी यातना है।

69. इन की दशा वही हुई जो इन से पहले के लोगों की हुई। वह बल में इन से कड़े और धन तथा संतान में इन से अधिक थे। तो उन्हीं ने अपने (संसारिक) भाग का आनन्द लिया, अतः तुम भी अपने भाग का आनन्द लो, जैसे तुम से पूर्व के लोगों ने आनन्द लिया। और तुम भी उलझते हो जैसे वह उलझते रहे, उन्हीं के कर्म लोक तथा परलोक में व्यर्थ गये, और वही क्षति में हैं।

70. क्या इन को उन के समाचार नहीं पहुँचे जो इन से पहले थे: नूह की जाति तथा आद और समूद तथा इब्राहीम की जाति के और मद्यन^[3] के वासियों

يَأْمُرُونَ بِالْمُتَّكِرِ وَيَرْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ
وَيَقْبِضُونَ أَيْدِيَهُمْ نَسُوا اللَّهَ فَنَسِيَهُمْ إِنَّ
الْمُتَّفِقِينَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٥٥﴾

وَعَدَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ
جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا هِيَ حَسْبُهُمْ وَلَعَنَهُمُ
اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٥٦﴾

كَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً
وَأكْفَرُ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا فَاسْتَمْتَعُوا بِمَالِهِمْ
فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِمَالِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِكُمْ بِحُلَاةِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِينَ
خَاضُوا أُولَئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٥٧﴾

أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوحٍ
وَإِدْرَاقِ قَوْمِ إِبْرَاهِيمَ وَأَصْحَابِ
مَدْيَنَ وَاللُّؤْلُكِيَّاتِ أَنَّهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ

1 अर्थात् दान नहीं करते।

2 अल्लाह के भुला देने का अर्थ है: उन पर दया न करना।

3 मद्यन के वासी शुऐब अलैहिस्सलाम की जाति थे।

के, और उन बस्तियों के जो पलट दी^[1] गईं उन के पास उन के रसूल खुली निशानियाँ लाये, और ऐसा नहीं हो सकता था कि अल्लाह उन पर अत्याचार करता, परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार^[2] कर रहे थे।

71. तथा ईमान वाले पुरुष और स्त्रियाँ एक-दूसरे के सहायक हैं। वे भलाई का आदेश देते तथा बुराई से रोकते हैं, और नमाज़ की स्थापना करते तथा ज़कात देते हैं। और अल्लाह तथा उस के रसूल की आज्ञा का पालन करते हैं। इन्हीं पर अल्लाह दया करेगा, वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।

72. अल्लाह ने ईमान वाले पुरुषों तथा ईमान वाली स्त्रियों को ऐसे स्वर्गों का वचन दिया है जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। वह उस में सदावासी होंगे, और स्थाई स्वर्गों में पवित्र आवासों का। और अल्लाह की प्रसन्नता इन सब से बड़ा प्रदान होगी, वही बहुत बड़ी सफलता है।

73. हे नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िकों से जिहाद करो, और उन पर सख्ती करो, उन का आवास नरक है। और वह बहुत बुरा स्थान है।

74. वह अल्लाह की शपथ लेते हैं कि उन्हीं

فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ⑩

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ⑩

وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَمَسْكِنٌ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ وَرْضْوَانٍ مِنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ⑩

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفْرَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ⑩

يَخْلِفُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا وَلَقَدْ قَالُوا كَلْبَةَ الْكُفْرِ

1 इस से अभिप्राय लूत अलैहिस्सलाम की जाति है। (इब्ने कसीर)

2 अपने रसूलों को अस्वीकार कर के।

ने यह^[1] बात नहीं कही। जब कि वास्तव में उन्होंने कुफ़्र की बात कही^[2] है। और इस्लाम ले आने के पश्चात् काफ़िर हो गए हैं। और उन्होंने ऐसी बात का निश्चय किया था जो वे कर नहीं सके। और उन को यही बात बुरी लगी कि अल्लाह और उस के रसूल ने उन को अपने अनुग्रह से धनी^[3] कर दिया। अब यदि वह क्षमायाचना कर लें तो उन के लिये उत्तम है। और यदि विमुख हों तो अल्लाह उन्हें दुःखदायी यातना लोक तथा प्रलोक में देगा। और उन का धरती में कोई संरक्षक और सहायक न होगा।

75. उन में से कुछ ने अल्लाह को वचन दिया था कि यदि वह अपनी दया से हमें (धन-धान्य) प्रदान करेगा तो हम अवश्य दान करेंगे, और सुकर्मियों में हो जायेंगे।

76. फिर जब अल्लाह ने अपनी दया से उन्हें प्रदान कर दिया तो उस से कंजूसी कर गये, और वचन से विमुख हो कर फिर गये।

77. तो इस का परिणाम यह हुआ कि उन

وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَهُمْ يُبَالِغُونَ
وَمَا تَقْبَلُوا إِلَّا أَنْ أُخْتَبِرَهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ مِنْ
قَضِيئِهِ ۚ فَإِنْ يَتُوبُوا لَكَ عَمْدًا لَهُمْ ۖ وَإِنْ
يَتُوبُوا يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ عَذَابًا أَلِيمًا فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِي الْأَرْضِ مِنْ دُولٍ وَلَا
نَصِيرٍ ۝

وَمِنْهُمْ مَن عَاهَدَ اللَّهُ لَئِنْ أُتُوا مِنْ قَضِيئِهِ
لَنَنْتَهِنَ ۚ وَلَكِنْ كَانُوا مِنَ الضَّالِّينَ ۝

فَلَمَّا تَلَّاتِ السُّمُومُ مِنْ قَضِيئِهِمُ بَخِلُوا بِهِ وَتَوَلَّوْا وَهُمْ
مُعْرِضُونَ ۝

فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِي قُلُوبِهِمْ إِلَى يَوْمِ يَلْقَوْنَهُ

- 1 अर्थात् ऐसी बात जो रसूल और मुसलमानों को बुरी लगे।
- 2 यह उन बातों की ओर संकेत है जो द्विधावादियों ने तबूक की मुहिम के समय की थी। उन की ऐसी बातों के विवरण के लिये (देखिये: सूरह मुनाफ़िकून, आयत: 7-8)
- 3 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मदीना आने से पहले मदीने का कोई महत्व न था। आर्थिक दशा भी अच्छी नहीं थी। जो कुछ था यहूदियों के अधिकार में था। वह ब्याज भक्षी थे, शराब का व्यापार करते थे, और अस्त्र-शस्त्र बनाते थे। आप के आगमन के पश्चात् आर्थिक दशा सुधर गई, और व्यवसायिक उन्नति हुई।

के दिलों में द्विधा का रोग उस दिन तक के लिये हो गया कि यह अल्लाह से मिलें। क्यों कि उन्होंने ने उस वचन को भंग कर दिया जो अल्लाह से किया था, और इस लिये कि वे झूठ बोलते रहे।

78. क्या उन्हें इस का ज्ञान नहीं हुआ कि अल्लाह उन के भेद की बातें तथा सुनगुन को भी जानता है? और वह सभी भेदों का अति ज्ञानी है।

79. जिन की दशा यह है कि वह ईमान वालों में से स्वेच्छा दान करने वालों पर दानों के विषय में आक्षेप करते हैं तथा उन को जो अपने परिश्रम ही से कुछ पाते (और दान करते हैं) यह (मुनाफिक) उन से उपहास करते हैं, अल्लाह उन से उपहास करता^[1] है। और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

80. (हे नबी!) आप उन के लिये क्षमा याचना करें अथवा न करें, यदि आप उन के लिये सत्तर बार भी क्षमायाचना करें तो भी अल्लाह उन्हें क्षमा नहीं करेगा, इस कारण कि उन्हीं ने अल्लाह और उस के रसूल के साथ कुफ़र कर दिया। और अल्लाह अवैज्ञाकारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَللّٰهُ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ ۝

اَلَمْ يَعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلٰمُ الْغُيُوْبِ ۝

اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوْعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِي الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يُجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ذٰلِكَ يَاۤاَيُّهَا كَفَرًا وَاِيۤلٰهَ وَاَسْوٰلَهُ وَاَللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الضّٰلِّيْنَ ۝

1 अर्थात् उन के उपहास का कुफल दे रहा है। अबू मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि जब हमें दान देने का आदेश दिया गया तो हम कमाने के लिये बोझ लादने लगे ताकि हम दान कर सकें और अबू अकील (रज़ियल्लाहु अन्हु) आधा साअ (सवा किलो) लाये और एक व्यक्ति उन से अधिक लेकर आया। तो मुनाफिकों ने कहा: अल्लाह को उस के (थोड़े से) दान की ज़रूरत नहीं। और यह दिखावे के लिये (अधिक) लाया है। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी- 4668)

81. वे प्रसन्न^[1] हुये जो पीछे कर दिये गये, अपने बैठे रहने के कारण अल्लाह के रसूल के पीछे। और उन्हें बुरा लगा कि जिहाद करें अपने धनों तथा प्राणों से अल्लाह की राह में, और उन्होंने ने कहा कि गर्मी में न निकलो। आप कह दें कि नरक की अग्नि गर्मी में इस से भीषण है, यदि वह समझते (तो ऐसी बात न करते)।
82. तो उन्हें चाहिये कि हँसें कम, और रोयें अधिका जो कुछ वे कर रहे हैं उस का बदला यही है।
83. तो (हे नबी!) यदि आप को अल्लाह इन (द्विधावादियों) के किसी गिराह के पास (तबूक से) वापस लाये, और वह आप से (किसी दूसरे युद्ध में) निकलने की अनुमति मांगें तो आप कह दें कि तुम मेरे साथ कभी न निकलोगे, और न मेरे साथ किसी शत्रु से युद्ध कर सकोगे। तुम प्रथम बार बैठे रहने पर प्रसन्न थे तो अब भी पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो।
84. (हे नबी!) आप उन में से कोई मर जाये तो उस के जनाजे की नमाज़ कभी न पढ़ें, और न उस की समाधि (कब्र) पर खड़े हों। क्योंकि उन्होंने ने अल्लाह और उस के रसूल के साथ कुफ़्र किया है, और अवज्ञाकारी रहते हुये मरे^[2] हैं।

فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِمْ خَلْفَ رَسُولِ اللَّهِ وَكَرِهُوا
أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَقَالُوا لَإِن تَفَرُّوا فِي الْحَرْبِ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ حَرًّا
لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ ۝

فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا كَثِيرًا ۖ جَزَاءُ بِمَا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

فَإِنْ تَوَجَّعَكَ اللَّهُ إِلَى طَرَفٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَأْذِنُوا
لِلْخُرُوجِ ۖ فَتَلَّنْ نَعْرُوجُوا مَعِيَ أَبَدًا وَلَنْ
تُعَانِقُوا مَعِيَ عَدُوَّكُمْ ۚ صِبْغَةً بِالْقَعُودِ أَوْ
مَرْقَةً فَاتَّعَدُوا مَعَ الْخَالِفِينَ ۝

وَلَا تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّتَى أَبَدًا ۖ وَلَا تُقُمْ
عَلَى قَبْرِهٖ ۚ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَمَأْوَا
هُمُ النَّارُ ۝

1 अर्थात् मुनाफ़िक् जो मदीना में रह गये और तबूक की यात्रा में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नहीं गये।

2 सहीह हदीस में है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मुनाफ़िक्

85. आप को उन के धन तथा उनकी संतान चकित न करे, अल्लाह तो चाहता है कि इन के द्वारा उन्हें संसार में यातना दे, और उन के प्राण इस दशा में निकलें कि वह काफिर हों।
86. तथा जब कोई सूरह उतारी गई कि अल्लाह पर ईमान लाओ, तथा उस के रसूल के साथ जिहाद करो तो आप से उन (मुनाफिकों) में से समाई वालों ने अनुमति ली। और कहा कि आप हमें छोड़ दें। हम बैठने वालों के साथ रहेंगे।
87. तथा प्रसन्न हो गये कि स्त्रियों के साथ रहें, और उन के दिलों पर मुहर लगा दी गई। अतः वह नहीं समझते।
88. परन्तु रसूल ने और जो आप के साथ ईमान लाये, अपने धनों और प्राणों से जिहाद किया, और उन्हीं के लिये भलाईयाँ हैं, और वही सफल होने वाले हैं।
89. अल्लाह ने उन के लिये ऐसे स्वर्ग तय्यार कर दिये हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वह उस में सदावासी होंगे, और यही बड़ी सफलता है।
90. और देहातियों में से कुछ बहाना करने वाले आये, ताकि आप उन्हें अनुमति दें। तथा वह बैठे रह गये जिन्होंने अल्लाह और उस के रसूल से

وَلَا تُحِبُّكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ بِمَا فِي الدُّنْيَا وَتَرْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿٨٥﴾

وَإِذْ أَنْزَلْنَا سُورَةَ الْاٰمۡنَاۤیۡلِ اللّٰهُ وَجَّهَدُوۡا مَعۡ رَسُوۡلِہٖۤ اَسۡتَازِنَاۡتَکَۢ اُولُوۡا الطَّلُوۡبِ مِنْہُمْ وَقَالُوۡا ذَرٰنَا نَکُنۡ مَعَ الْمُتَعٰدِلِیۡنَ ﴿٨٦﴾

رَضُوۡا بِاَنَّ یَکُوۡنُوۡا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰی قُلُوۡبِہِمْ فَہُمْ لَا یَفْقہُوۡنَ ﴿٨٧﴾

لَکِنَ الرَّسُوۡلُ وَالَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا مَعَهُ جَہَدُوۡا بِاَمْوَالِہِمْ وَاَنْفُسِہِمْ وَاُولٰٓئِکَ لَہُمُ الْخَیۡرٰتُ وَاُولٰٓئِکَ ہُمُ الْمُفۡلِحُوۡنَ ﴿٨٨﴾

اَعَدَّ اللّٰهُ لَہُمۡ جَنَّٰتٍ یَّجۡرِیۡ مِنْ تَحۡتِہَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیۡنَ فِیۡہَا ذٰلِکَ الْفَوۡزُ الْعَظِیۡمُ ﴿٨٩﴾

وَجَآءَ الْمُعٰذِرُوۡنَ مِنَ الْاَعۡرَابِ لِیُوۡدِّنَ لَہُمۡ وَوَعَدَ الَّذِیۡنَ کَذَبُوۡا اللّٰهَ وَرَسُوۡلَہٗ سَیُصِیۡبُ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا مِنْہُمۡ عَذَابٌ اَلِیۡمٌ ﴿٩٠﴾

के मुख्या अब्दुल्लाह बिन उबय्य का जनाज़ा पढ़ा तो यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी - 4672)

झूठ बोला। तो इन में से काफ़िरों को दुःखदायी यातना पहुँचेगी।

91. निर्बलों तथा रोगियों और उन पर जो इतना नहीं पाते कि (तय्यारी के लिये) व्यय कर सकें कोई दोष नहीं, जब अल्लाह और उस के रसूल के भक्त हों, तो उन पर (दोषारोपण) की कोई राह नहीं।
92. और उन पर जो आप के पास जब आयें कि आप उन के लिये सवारी की व्यवस्था कर दें, और आप कहें कि, मेरे पास इतना नहीं कि तुम्हारे लिये सवारी की व्यवस्था करूँ, तो वह इस दशा में वापिस हुये कि शोक के कारण उन की आँखें आँसू बहा रही^[1] थीं।
93. दोष केवल उन पर है जो आप से अनुमति माँगते हैं जब कि वह धनी हैं। और वे इस से प्रसन्न हो गये कि स्त्रियों के साथ रह जायेंगे। और अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी, इस लिये वह कुछ नहीं जानते।
94. वह तुम से बहाने बनायेंगे, जब तुम उन के पास (तबूक से) वापिस आओगे। आप कह दें कि बहाने न बनाओ, हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे। अल्लाह ने हमें तुम्हारी दशा बता दी है। तथा भविष्य में भी अल्लाह

لَيْسَ عَلَى الضَّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَى وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يَنْفِقُونَ حَرَجًا إِذَا نَصَحُوا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ سَبِيلٍ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٩١﴾

وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا آتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَأَجِدُ مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا وَعَيْنُهُمْ يُقَيِّضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا مَا يَنْفِقُونَ ﴿٩٢﴾

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْنِيَاءُ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٩٣﴾

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذْ رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ قُلْ لَا تَعْتَذِرُونَ لِي مِنْ قَلْبِكُمْ فَذُنُوبَكُمْ اللَّهُ مِنْ خِيبَارِكُمْ وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْوِ الْعَرْشِ وَالشَّهَادَةِ يَخْتَلِفُ أَلْوَانُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٤﴾

1 यह विभिन्न कबीलों के लोग थे। जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुये कि आप हमारे लिये सवारी का प्रबंध कर दें। हम भी आप के साथ तबूक के जिहाद में जायेंगे। परन्तु आप सवारी का कोई प्रबंध न कर सके और वह रोते हुये वापिस हो गये। (इब्ने कसीर)

और उस के रसूल तुम्हारा कर्म देखेंगे। फिर तुम परोक्ष और प्रत्यक्ष के ज्ञानी (अल्लाह) की ओर फेरे जाओगे। फिर वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या कर रहे थे।

95. वह तुम से अल्लाह की शपथ खायेंगे, जब तुम उन की ओर वापिस आओगे ताकि तुम उन से विमुख हो जाओ। तो तुम उन से विमुख हो जाओ। वास्तव में वह मलीन हैं। और उन का आवास नरक है उस के बदले जो वह करते रहे।

سَيَخْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ لَعْرُؤًا عَنْهُمْ فَاَعْرُضُوا عَنْهُمْ إِنَّهُمْ رَجِسٌ وَمَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ هِيَ زُجْرًا لِّمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩٥﴾

96. वह तुम्हारे लिये शपथ खायेंगे, ताकि तुम उन से प्रसन्न हो जाओ, तो यदि तुम उन से प्रसन्न हो गये, तब भी अल्लाह उल्लंघनकारी लोगों से प्रसन्न नहीं होगा।

يَخْلِفُونَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَىٰ عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٩٦﴾

97. देहाती^[1] अविश्वास तथा द्विधा में अधिक कड़े और अधिक योग्य है कि: उस (धर्म) की सीमाओं को न जानें, जिसे अल्लाह ने उतारा है। और अल्लाह सर्वज्ञ तत्त्वज्ञ है।

الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوا حُدُودَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٩٧﴾

98. देहातियों में कुछ ऐसे भी हैं जो अपने दिये हुए दान को अर्थदण्ड समझते हैं और तुम पर काल चक्र की प्रतीक्षा करते हैं। उन्हीं पर काल कुचक्र आ पड़ा है। और अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَيَتَرَبَّصُّ بِكُمْ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَكْتُمُونَ ﴿٩٨﴾

99. और देहातियों में कुछ ऐसे भी हैं जो

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ

1 इस से अभिप्राय मदीना के आस पास के कबीले हैं।

अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान (विश्वास) रखते हैं, और अपने दिये हुये दान को अल्लाह की समीप्ता तथा रसूल के आशीर्वादों का साधन समझते हैं। सुन लो! यह वास्तव में उन के लिये समीप्य का साधन है। शीघ्र ही अल्लाह उन्हें अपनी दया में प्रवेश देगा, वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

100. तथा प्रथम अग्रसर मुहाजिरीन^[1] और अनसारी, और जिन लोगों ने सुकर्म के साथ उन का अनुसरण किया अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया। और वे उस से प्रसन्न हो गये। तथा उस ने उन के लिये ऐसे स्वर्ग तय्यार किये हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वह उस में सदावासी होंगे, वही बड़ी सफलता है।
101. और जो तुम्हारे आस पास ग्रामीण हैं उन में से कुछ मुनाफिक (द्विधावादी) हैं। और कुछ मदीना में हैं जो (अपने) निफाक में अभ्यस्त (निपुण) हैं। आप उन्हें नहीं जानते, उन्हें हम जानते हैं। हम उन्हें दो बार^[2] यातना देंगे। फिर घोर यातना की ओर फेर दिये जायेंगे।

الْآخِرُ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرْبًا عِنْدَ اللَّهِ
وَصَلَوَاتِ الرَّسُولِ أَكْرَاهًا قُرْبَةً لَهُمْ
سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ
رَّحِيمٌ ﴿١٠٠﴾

وَالشَّيْقُونَ الْأَوْلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ
وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ
وَرَضُوا عَنْهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٠١﴾

وَمِمَّنْ حَوْلَكُم مِّنَ الْأَعْرَابِ مُنْفِقُونَ أَوْ مِن
أَهْلِ الْمَدِينَةِ مَرَدُوا عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ
نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ
إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ﴿١٠٢﴾

- 1 प्रथम अग्रसर मुहाजिरीन उन को कहा गया है जो मक्का से हिजरत करके हुदैबिया की संधि सन् 6 से पहले मदीना आ गये थे। और प्रथम अग्रसर अनुसार मदीना के वह मुसलमान हैं जो मुहाजिरीन के सहायक बने और हुदैबिया में उपस्थित थे। (इब्ने कसीर)
- 2 संसार में तथा कब्र में फिर परलोक की घोर यातना होगी। (इब्ने कसीर)

102. और कुछ दूसरे भी हैं जिन्होंने अपने पापों को स्वीकार कर लिया है। उन्होंने कुछ सुकर्म और कुछ दूसरे कुकर्म को मिश्रित कर लिया है। आशा है कि: अल्लाह उन्हें क्षमा कर देगा। वास्तव में अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

وَالَّذِينَ آخَرُوا سُبْحَانَ اللَّهِ أَنْ يُتُوبَ عَلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٠٢﴾

103. हे नबी! आप उन के धनों से दान लें, और उस के द्वारा उन (के धनों) को पवित्र और उन (के मनों) को शुद्ध करें। और उन्हें आशीर्वाद दें। वास्तव में आप का आशीर्वाद उन के लये संतोष का कारण है। और अल्लाह सब सुनने जानने वाला है।

خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَيُزَكِّيهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ لَهُمْ وَاللَّهُ سَمِيمٌ عَلَيْهِمْ ﴿١٠٣﴾

104. क्या वह नहीं जानते कि अल्लाह ही अपने भक्तों की क्षमा स्वीकार करता तथा (उन के) दानों को अंगीकार करता है? और वास्तव में अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾

105. और (हे नबी!) उन से कहो कि कर्म करते जाओ। अल्लाह तथा उस के रसूल और ईमान वाले तुम्हारा कर्म देखेंगे। (फिर) उस (अल्लाह) की ओर फेरे जाओगे जो परोक्ष तथा प्रत्यक्ष (छुपे तथा खुले) का ज्ञानी है। तो वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते रहे।

وَقُلْ أَعْمَلُوا فَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ وَسَتُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٥﴾

106. और (इन के सिवाय) कुछ दूसरे भी हैं जो अल्लाह के आदेश के लिये विलंबित^[1] हैं। वह उन्हें दण्ड दे,

وَالَّذِينَ آخَرُوا سُبْحَانَ اللَّهِ إِنْ آتَىٰ بِهُمْ وَآمَنَ يَتُوبُ عَلَيْهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٠٦﴾

1 अर्थात् अपने विषय में अल्लाह के निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह तीन व्यक्ति

अथवा उन को क्षमा कर दे तो
अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

107. तथा (द्विधावादियों में) वह भी है जिन्होंने ने एक मस्जिद^[1] बनाई, इस लिये कि (इस्लाम को) हानि पहुँचायें, तथा कुफ़र करें, और ईमान वालों में विभेद उत्पन्न करें, तथा उस का घात-स्थल बनाने के लिये जो इस से पूर्व अल्लाह और उस के रसूल से युद्ध कर^[2] चुका है। और वह अवश्य शपथ लेंगे कि हमारा संकल्प भलाई के सिवा और कुछ न था। तथा अल्लाह साक्ष्य देता है कि वह निश्चय मिथ्यावादी है।

108. (हे नबी!) आप उस में कभी खड़े

थे, जिन्होंने ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तबूक से वापिस आने पर यह कहा कि वह अपने आलस्य के कारण आप का साथ नहीं दे सके। आप ने उन से कहा कि अल्लाह के आदेश की प्रतीक्षा करो। और आगामी आयत 117 में उन के बारे में आदेश आ रहा है।

- 1 इस्लामी इतिहास में यह «मस्जिदे ज़िरार» के नाम से याद की जाती है। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना आये तो आप के आदेश से "कुबा" नाम के स्थान में एक मस्जिद बनाई गई। जो इस्लामी युग की प्रथम मस्जिद है। कुछ मुनाफ़िकों ने उसी के पास एक नई मस्जिद का शनिर्माण किया। और जब आप तबूक के लिये निकल रहे थे तो आप से कहा कि आप एक दिन उस में नमाज़ पढ़ा दें। आप ने कहा कि: यात्रा से वापसी पर देखा जायेगा। और जब वापिस मदीना के समीप पहुँचे तो यह आयत उतरी, और आप के आदेश से उसे ध्वस्त कर दिया गया। (इब्ने कसीर)
- 2 इस से अभिप्रेत अबू आमिर राहिब है। जिस ने कुछ लोगों से कहा कि एक मस्जिद बनाओ और जितनी शक्ति और अस्त्र-शस्त्र हो सके तय्यार कर लो। मैं रोम के राजा कैसर के पास जा रहा हूँ। रोमियों की सेना लाऊँगा, और मुहम्मद तथा उस के साथियों को मदीना से निकाल दूँगा। (इब्ने कसीर)

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَكُفْرًا
وَتَفْرِيحًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَلِضَادِّ الْبَنِي
حَارَبَ اللَّهُ وَّرَسُولَهُ مِنْ قَبْلُ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ
أَرَدْنَا إِلَّا آلَ الْمُسْتَكِينِ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ
لَكَاذِبُونَ ﴿١٠٧﴾

لَا تَقُومُوا فِيهِ أَبَدًا لَمَسْجِدًا أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَى مِنْ

न हों। वास्तव में वह मस्जिद^[1] जिस का शिलान्यास प्रथम दिन से अल्लाह के भय पर किया गया है वह अधिक योग्य है कि आप उस में (नमाज़ के लिये) खड़े हों। उस में ऐसे लोग हैं, जो स्वच्छता से प्रेम^[2] करते हैं, और अल्लाह स्वच्छ रहने वालों से प्रेम करता है।

أَوَّلَ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ فَبِذَلِكَ يُجْزَوْنَ أَنْ يُنَظَّهُرُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَهِّرِينَ ۝

109. तो क्या जिस ने अपने निर्माण का शिलान्यास अल्लाह के भय और प्रसन्नता के आधार पर किया हो, वह उत्तम है, अथवा जिस ने उस का शिलान्यास एक खाई के गिरते हुये किनारे पर किया हो, जो उस के साथ नरक की अग्नि में गिर पड़ा? और अल्लाह अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

أَقَمْنَا بُنْيَانَهُ عَلَى تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَنْ آسَسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ شَفَا حَرْفٍ مَّارٍ فَأَنْهَارِيهِ فِي نَارٍ جَهَنَّمَ ۖ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

110. यह निर्माण जो उन्होंने किया बराबर उन के दिलों में एक संदेह बना रहेगा। परन्तु यह कि उन के दिलों को खण्ड खण्ड कर दिया जाये, और अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

111. निःसन्देह अल्लाह ने ईमान वालों के प्राणों तथा उन के धनों को इस के बदले खरीद लिया है कि उन के लिये स्वर्ग है। वह अल्लाह की राह में युद्ध करते हैं, वह मारते तथा मरते हैं। यह अल्लाह पर सत्य वचन

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنْ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ وَعَدَا عَلَيْهِمْ حَقٌّ فِي التَّوْبَةِ وَالْإِحْسِيلِ وَالْقُرْآنِ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ فَاسْتَبْشِرُوا

1 इस मस्जिद से अभिप्राय कुबा की मस्जिद है। तथा मस्जिद नबवी शरीफ भी इसी में आती है। (इब्ने कसीर)

2 अर्थात् शुद्धता के लिये जल का प्रयोग करते हैं।

है, तौरात तथा इंजील और कुर्आन में और अल्लाह से बढ़ कर अपना वचन पूरा करने वाला कौन हो सकता है? अतः अपने इस सौदे पर प्रसन्न हो जाओ जो तुम ने किया। और यही बड़ी सफलता है।

112. जो क्षमा याचना करने, वंदना करने तथा अल्लाह की स्तुति करने वाले, रोज़ा रखने तथा रुकुअ और सजदा करने वाले भलाई का आदेश देने और बुराई से रोकने वाले, तथा अल्लाह की सीमाओं की रक्षा करने वाले हैं। और (हे नबी!) आप ऐसे ईमान वालों को शुभ सूचना सुना दें।

113. किसी नबी तथा^[1] उन के लिये जो ईमान लाये हों योग्य नहीं है कि मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) के लिये क्षमा की प्रार्थना करें। यद्यपि वह उन के समीपवर्ती हों, जब यह उजागर हो गया कि वास्तव में वह नारकी^[2] है।

114. और इब्राहीम का अपने बाप के लिये क्षमा की प्रार्थना करना केवल इस लिये हुआ कि उस ने

يَبِيْعَكُمْ الَّذِي بَايَعْتُمْ يَوْمَ فَؤُادٍ ۗ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْرُ الْعَظِيْمُ ۝

الْمُؤْمِنُونَ الْعَبِيدُونَ الْحَمْدُونَ السَّائِحُونَ
الرُّكْعُونَ السُّجِدُونَ الْأَمْرُونَ بِالْمَعْرُوفِ
وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَفِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا
لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَىٰ مِنْ
بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيْمِ ۝

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيْمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَن
مَّوْعِدَةٍ وَعَدَّهَا أَيَّاهُ فَكَلَّمَآبَتَيْنِ لَهُ آتَهُ

1 हदीस में है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चाचा अबू तालिब के निधन का समय आया तो आप उस के पास गये। और कहा: चाचा! «ला इलाहा इल्लल्लाह» पढ़ लो। मैं अल्लाह के पास तुम्हारे लिये इस को प्रमाण बना लूंगा। उस समय अबू जहल और अब्दुल्लाह बिन अबु उमय्या ने कहा: क्या तुम अब्दुल मुत्तलिब के धर्म से फिर जाओगे? (अतः वह काफिर ही मरा।) तब आप ने कहा: मैं तुम्हारे लिये क्षमा की प्रार्थना करता रहूंगा, जब तक उस से रोक न दिया जाऊँ। और इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी- 4675)

2 देखिये: सूरह माइदा, आयत: 72, तथा सूरह निसा, आयत: 48, 116।

उस को इस का वचन दिया^[1] था। और जब उस के लिये उजागर हो गया कि वह अल्लाह का शत्रु है तो उस से विरक्त हो गया। वास्तव में इब्राहीम बड़ा कोमल हृदय सहनशील था।

115. अल्लाह ऐसा नहीं है कि किसी जाति को मार्गदर्शन देने के पश्चात् कुपथ कर दे, जब तक उन के लिये जिस से बचना चाहिये उसे उजागर न कर दे। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु को भली भाँति जानने वाला है।
116. वास्तव में अल्लाह ही है, जिस के अधिकार में आकाशों तथा धरती का राज्य है। वही जीवन देता तथा मारता है। और तुम्हारे लिये उस के सिवा कोई संरक्षक और सहायक नहीं है।
117. अल्लाह ने नबी तथा मुहाजिरीन और अन्सार पर दया की, जिन्होंने तंगी के समय आप का साथ दिया, इस के पश्चात् कि उन में से कुछ लोगों के दिल कुटिल होने लगे थे। फिर उन पर दया की। निश्चय वह उन के लिये अति करुणामय दयावान् है।
118. तथा उन तीनों^[2] पर जिन का मामला विलंबित कर दिया गया था,

عَدُوِّ اللَّهِ تَبَرَّأْنَا إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ﴿١١٥﴾

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَا يَتَّقُونَ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١٦﴾

إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُعْجِزُ وَيُمَيِّتُ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ قَوْلٍ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١١٧﴾

لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبَ فَرِيقٍ مِنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ إِنَّهُ بِهِمْ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ ﴿١١٨﴾

وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خُلِفُوا حَتَّى إِذَا ضَاقَتْ

1 देखिये: सूरह मुत्तहिना, आयत: 4।

2 यह वही तीन हैं जिन की चर्चा आयत नं० 106 में आ चुकी है। इन के नाम थे 1-काब बिन मालिक, 2- हिलाल बिन उमय्या, 3- मुरारह बिन रबीआ (सहीह बुखारी - 4677)

जब उन पर धरती अपने विस्तार के होते सिकुड़ गई, और उन पर उन के प्राण संकीर्ण^[1] हो गये, और उन्हें विश्वास था कि अल्लाह के सिवा उन के लिये कोई शरणागार नहीं परन्तु उसी की ओर। फिर उन पर दया की, ताकि तौबा (क्षमा याचना) कर लें। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

119. हे ईमान वालो! अल्लाह से डरो तथा सच्चों के साथ हो जाओ।

120. मदीना के वासियों तथा उन के आस पास के देहातियों के लिये उचित नहीं था कि अल्लाह के रसूल से पीछे रह जायें, और अपने प्राणों को आप के प्राण से प्रिय समझें। यह इस लिये कि उन्हें अल्लाह की राह में कोई प्यास और थकान तथा भूक नहीं पहुँचती है, और न वह किसी ऐसे स्थान को रोंदते हैं जो काफ़िरों को अप्रिय हो, या किसी शत्रु से वह कोई सफलता प्राप्त नहीं करते हैं परन्तु उन के लिये एक सत्कर्म लिख दिया जाता है। वास्तव में अल्लाह सत्कर्मियों का फल व्यर्थ नहीं करता।

121. और वह (अल्लाह की राह में) थोड़ा या अधिक जो भी व्यय करते हैं, और कोई घाटी पार करते हैं तो उस को उन के लिये लिख दिया जाता है,

عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاءَتْ عَلَيْهِمْ
أَنفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَن لَّمْ يَلْمَأْجَمَنَّ اللَّهُ إِلَّا إِلَيْهِ
ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ
الرَّحِيمُ ﴿١١٩﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ
الضَّالِّينَ ﴿١٢٠﴾

مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِنَ
الْأَعْرَابِ أَنْ يَتَخَفُوا عَن رَسُولِ اللَّهِ وَلَا
يَرْغَبُوا بِأَنفُسِهِمْ عَن نَّفْسِهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ
لَا يُضِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَلَا نَصَبٌ وَلَا عِبْءٌ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطِئُونَ مَوِطِئًا يَغِيظُ الْكُفَّارَ
وَلَا يَنَالُونَ مِنَ عَدُوِّهِمْ إِلَّا الْكَيْبَ لَهُمْ بِهِ
عَمَلٌ صَالِحٌ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢١﴾

وَلَا يُفْقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً
وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا إِلَّا الْكَيْبَ لَهُمْ يَجْزِيهِمْ
اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٢﴾

1 क्योंकि उन का सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया था।

ताकि वह उन्हें उस से उत्तम प्रतिफल प्रदान करे जो वह कर रहे थे।

122. ईमान वालों के लिये उचित नहीं कि सब एक साथ निकल पड़ें। तो क्यों नहीं प्रत्येक समुदाय से एक गिरोह निकलता, ताकि धर्म में बोध ग्रहण करें। और ताकि अपनी जाति को सावधान करे, जब उन की ओर वापिस आये, संभवतः वह (कुकर्माँ से) बचें।^[1]

123. हे ईमान वालो! अपने आस-पास के काफिरों से युद्ध करो^[2], और चाहिये कि वह तुम में कूटिलता पायें, तथा विश्वास रखो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है।

124. और जब (कुर्आन की) कोई आयत उतारी जाती है तो इन (द्विधावादियों में) से कुछ कहते हैं कि तुम में से किस का ईमान (विश्वास) इस ने अधिक किया?^[3] तो वास्तव में जो ईमान रखते हैं उन का विश्वास अवश्य अधिक कर दिया, और वह इस पर प्रसन्न हो रहे हैं।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا كَآفَّةً فَلَوْلَا فَتَرْنَا مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةً لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿١٢٢﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُمْ مِنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا فِيكُمْ غِلظَةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٢٣﴾

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُمْ مَّن يَقُولُ أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَذِهِ إِيمَانًا فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فزَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿١٢٤﴾

- 1 इस आयत में यह संकेत है कि धार्मिक शिक्षा की एक साधारण व्यवस्था होनी चाहिये। और यह नहीं हो सकता कि सब धार्मिक शिक्षा ग्रहण करने के लिये निकल पड़ें। इस के लिये प्रत्येक समुदाय से कुछ लोग जा कर धर्म की शिक्षा ग्रहण करें। फिर दूसरों को धर्म की बातें बतायें। कुर्आन के इसी संकेत ने मुसलमानों में शिक्षा ग्रहण करने की ऐसी भावना उत्पन्न कर दी कि एक शताब्दी के भीतर उन्होंने शिक्षा ग्रहण करने की ऐसी व्यवस्था बना दी जिस का उदाहरण संसार के इतिहास में नहीं मिलता।
- 2 जो शत्रु इस्लामी केन्द्र के समीप के क्षेत्रों में हों पहले उन से अपनी रक्षा करो।
- 3 अर्थात् उपहास करते हैं।

125. परन्तु जिन के दिलों में (द्विधा) का रोग है तो उस ने उन की गन्दगी ओर अधिक बढ़ा दी। और वह काफिर रहते हुये ही मर गये।

126. क्या वह नहीं देखते कि उन की परीक्षा प्रत्येक वर्ष एक बार अथवा दो बार ली जाती^[1] है? फिर भी वह तौबा (क्षमा याचना) नहीं करते, और न शिक्षा ग्रहण करते हैं!?

127. और जब कोई सूरह उतारी जाये, तो वह एक दूसरे की ओर देखते हैं कि तुम्हें कोई देख तो नहीं रहा है? फिर मुँह फेर कर चल देते हैं। अल्लाह ने उन के दिलों को (ईमान से) ^[2] फेर दिया है। इस कारण कि वह समझ बूझ नहीं रखते।

128. (हे ईमान वालो!) तुम्हारे पास तुम्हीं में से अल्लाह का एक रसूल आ गया है। उस को वह बात भारी लगती है जिस से तुम्हें दुःख हो। वह तुम्हारी सफलता की लालसा रखते हैं। और ईमान वालों के लिये करुणामय दयावान् हैं।

129. (हे नबी!) फिर भी यदि वह आप से मुँह फेरते हों तो उन से कह दो कि मेरे लिये अल्लाह (का सहारा) बस है। उस के अतिरिक्त कोई हकीकी पूज्य नहीं। और वही महा सिंहासन का मालिक (स्वामी) है।

وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ
فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا
وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿١٢٥﴾

أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ
مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ
يَذَكَّرُونَ ﴿١٢٦﴾

وَإِذْ آمَأُتِزَّتْ سُورَةٌ لَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ
هَلْ يَرَاكُمْ مِنْ أَحَدٍ ثُمَّ انصَرَفُوا صَرَفَ
اللَّهُ قُلُوبَهُمْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٢٧﴾

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ
عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ
رَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿١٢٨﴾

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ
الْعَظِيمِ ﴿١٢٩﴾

1 अर्थात् उन पर आपदा आती है तथा अपमानित किये जाते हैं। (इब्ने कसीर)

2 इस से अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है।

सूरह यूनुस - 10



यह सूरह मक्की है, इस में 109 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़, लाम, रा। यह तत्वज्ञता से परिपूर्ण पुस्तक (कुर्आन) की आयतें हैं।
2. क्या मानव के लिये आश्चर्य की बात है कि हम ने उन्हीं में से एक पुरुष पर^[1] प्रकाशना भेजी है कि आप मानवगण को सावधान कर दें। और जो ईमान लायें उन्हें शुभ सूचना सुना दें कि उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास सत्य सम्मान है? तो काफ़िरों ने कह दिया कि यह खुला जादूगर है।
3. वास्तव में तुम्हारा पालनहार वही अल्लाह है जिस नें आकाशों तथा धरती को छः दिनों में उत्पन्न किया, फिर अर्श (राज सिंहासन) पर स्थिर हो गया। वही विश्व की व्यवस्था कर रहा है। कोई उस के पास अनुशंसा (सिफ़ारिश) नहीं कर सकता, परन्तु उस की अनुमति के पश्चात्। वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, अतः

الرَّسْمِ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ

أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا إِلَى رَجُلٍ مِّنْهُمْ أَنْ
أُنذِرَ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنَّ لَهُمْ قَدَمَ
صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ قَالَ الْكَافِرُونَ إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ
مُّبِينٌ

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي
سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ
مَنْ مِّنْ شَفِيعٍ إِلَّا مِنْ بَعْدِ إِذْنِهِ ذَلِكَ اللَّهُ رَبَّكُمْ
فَاعْبُدُوهُ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ

1 सत्य सम्मान से अभिप्रेत स्वर्ग है। अर्थात् उन के सत्कर्मों का फल उन्हें अल्लाह की ओर से मिलेगा।

उसी की इबादत (वंदना)^[1] करो।
क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?

4. उसी की ओर तुम सब को लौटना है। यह अल्लाह का सत्य वचन है। वही उत्पत्ति का आरंभ करता है। फिर वही पुनः उत्पन्न करेगा ताकि उन्हें न्याय के साथ प्रतिफल प्रदान^[2] करे। जो ईमान लाये और सदाचार किये, और जो काफिर हो गये उन के लिये खौलता पेय तथा दुःखदायी यातना है। उस अविश्वास के बदले जो कर रहे थे।
5. उसी ने सूर्य को ज्योति तथा चाँद को प्रकाश बनाया है। और उस (चाँद) के गंतव्य स्थान निर्धारित कर दिये, ताकि तुम वर्षों की गिनती तथा हिसाब का ज्ञान कर लो। इन की उत्पत्ति अल्लाह ने नहीं की है परन्तु सत्य के साथ। वह उन लोगों के लिये निशानियों (लक्षणों) का वर्णन कर रहा है, जो ज्ञान रखते हों।
6. निःसंदेह रात्रि तथा दिवस के एक दूसरे के पीछे आने में, और जो कुछ अल्लाह ने आकाशों तथा धरती में उत्पन्न किया है उन लोगों के लिये निशानियाँ हैं जो अल्लाह से डरते हों।
7. वास्तव में जो लोग (प्रलय के दिन)

إِلَيْهِ مَرْجِعُهُمْ جَمِيعًا وَعَدَّ اللَّهُ حَقًّا أَنَّهُ يَبْدَأُ
الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ سَرَابٌ مِّنْ
حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ يَمَّا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝

هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسُ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَرَهُ
مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ مَا خَلَقَ
اللَّهُ ذَلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَّقُونَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيَاةِ

- 1 भावार्थ यह है कि जब विश्व की व्यवस्था वही अकेला कर रहा है तो पूज्य भी वही अकेला होना चाहिये।
- 2 भावार्थ यह है कि यह दूसरा परलोक का जीवन इस लिये आवश्यक है कि कर्मों के फल का नियम यह चाहता है कि जब एक जीवन कर्म के लिये है तो दूसरा कर्मों के प्रतिफल के लिये होना चाहिये।

हम से मिलने की आशा नहीं रखते और संसारिक जीवन से प्रसन्न हैं तथा उसी से संतुष्ट हैं, तथा जो हमारी निशानियों से असावधान हैं।

8. उन्हीं का आवास नरक है, उस के कारण जो वह करते रहे।
9. वास्तव में जो ईमान लाये और सुकर्म किये उन का पालनहार उन के ईमान के कारण उन्हें (स्वर्ग की) राह दर्शा देगा, जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। वह सुख के स्वर्गों में होंगे।
10. उन की पुकार उस (स्वर्ग) में यह होगी: "हे अल्लाह! तू पवित्र है।" और एक दूसरे को उस में उन का आशीर्वाद यह होगा: "तुम पर शान्ति हो।" और उन की प्रार्थना का अन्त यह होगा: "सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है जो सम्पूर्ण विश्व का पालनहार है।"
11. और यदि अल्लाह लोगों को तुरन्त बुराई का (बदला) दे देता, जैसे वह तुरन्त (संसारिक) भलाई चाहते हैं तो उन का समय कभी पूरा हो चुका होता। अतः जो (मरने के पश्चात्) हम से मिलने की आशा नहीं रखते हम उन्हें उन के कुकर्मों में बहकते हुये^[1] छोड़ देते हैं।
12. और जब मानव को कोई दुःख पहुँचता

الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آيَاتِنَا غَافِلُونَ ﴿١٠﴾

أُولَئِكَ مَا لَهُمْ مِنَ النَّارِ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١١﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِإِيمَانِهِمْ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿١٢﴾

دَعْوَاهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ وَأَلْخَرُوا دَعْوَاهُمْ أَنْ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٣﴾

وَلَوْ يَعْجَلُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهمْ بِالْخَيْرِ لَفَضَّلْنَا لَهُمْ أَجْلَهُمْ فَذَرْنَا الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٤﴾

وَإِذْ أَمْسَأَسَ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنَّةٍ

1 आयत का अर्थ यह है कि अल्लाह के दुष्कर्मों का दण्ड देने का नियम यह नहीं है कि तुरन्त संसार ही में उस का कुफल दे दिया जाये। परन्तु दुष्कर्मों को यहाँ अवसर दिया जाता है अन्यथा उन का समय कभी का पूरा हो चुका होता।

है, तो हमें लेटे या बैठे या खड़े हो कर पुकारता है। फिर जब हम उस का दुःख दूर कर देते हैं, तो ऐसे चल देता है जैसे कभी हम को किसी दुःख के समय पुकारा ही न हो। इसी प्रकार उल्लंघनकारियों के लिये उन के कर्तूत शोभित बना दिये गये हैं।

13. और तुम से पहले हम कई जातियों को ध्वस्त कर चुके हैं, जब उन्होंने ने अत्याचार किये, और उन के पास उन के रसूल खुले तर्क (प्रमाण) लाये, परन्तु वह ऐसे नहीं थे कि: ईमान लाते, इसी प्रकार हम अपराधियों को बदला देते हैं।

14. फिर हम ने धरती में उन के पश्चात् तुम्हें उन का स्थान दिया, ताकि हम देखें कि: तुम्हारे कर्म कैसे होते हैं?

15. और (हे नबी!) जब हमारी खुली आयतें उन्हें सुनायी जाती हैं तो जो हम से मिलने की आशा नहीं रखते वे कहते हैं कि इस के सिवा कोई दूसरा कुर्आन लाओ, या इस में परिवर्तन कर दो। उन से कह दो कि मेरे बस में यह नहीं है कि अपनी ओर से इस में परिवर्तन कर दूँ। मैं तो बस उस प्रकाशना का अनुयायी हूँ जो मेरी ओर की जाती है। मैं यदि अपने पालनहार की अवैज्ञा करूँ तो मैं एक घोर दिन की यातना से डरता हूँ।

16. आप कह दें: यदि अब्बाह चाहता तो मैं कुर्आन तुम्हें सुनाता ही नहीं, और

أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا ۖ إِنَّا كُنَّا نَعْنَاهُ ضَرْهًا
مَرَّكَانَ ۖ لَمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ ضَرْهٍ مَّسَّةٍ ۚ كَذَلِكَ
رُزِينَ لِلْمُتَشْرِفِينَ ۖ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ مِن قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا ۖ
وَجَاءَهُمْ رَسُولُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا
لِيُؤْمِنُوا ۚ كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ۝

ثُمَّ جَعَلْنَاكَ خَلِيفَ فِي الْأَرْضِ مِن بَعْدِهِمْ
لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ۝

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ
لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا إِنَّا بُرْهَانٌ ۖ غَيْرِ هَذَا ۖ أَوْ
بَدَّلَهُ ۖ كُلُّ مَا يَكُونُ لِي أَن أُبَدَّلَهُ ۖ مِنْ تَلْقَائِي
نَفْسِي ۖ إِنِّي أَخِيفُ الْإِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا ۖ إِنِّي أَخِيفُ
إِن عَصَيْتَ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝

قُلْ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُمْ عَلَيْهِمْ قُرْآنًا وَلَا أَدْرِكُهُمْ

न वह तुम्हें इस से सूचित करता। फिर मैं इस से पहले तुम्हारे बीच एक आयु व्यतीत कर चुका हूँ। तो क्या तुम समझ बूझ नहीं रखते हो? [1]

يَهْدِيكُمْ سَبِيلَكُمْ وَيُعَلِّمُكُمْ عَمْرًا مِّنْ قَبْلِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٠﴾

17. फिर उस से अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाये, अथवा उस की आयतों को मिथ्या कहे? वास्तव में ऐसे अपराधी सफल नहीं होते।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْمُبْرِمُونَ ﴿١٠﴾

18. और वह अल्लाह के सिवा उस की इबादत (वन्दना) करते हैं जो न तो उन्हें कोई हानि पहुँचा सकते हैं और न लाभ। और कहते हैं कि यह अल्लाह के यहाँ हमारे अभिस्तावक (सिफारशी) हैं आप कहिये: क्या तुम अल्लाह को ऐसी बात की सूचना दे रहे हो जिस के होने को न वह आकाशों में जानता है, और न धरती में? वह पवित्र और उच्च है उस शिर्क (मिश्रणवाद) से जो वे कर रहे हैं।

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ وَيَعْمَلُونَ هُمُوزًا شَفَعًا وَأُنَائِدًا اللَّهُ قُلْ أَتَدْعُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ سُبْحٰنَهُ وَتَعَلَّىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٠﴾

19. लोग एक ही धर्म (इस्लाम) पर थे, फिर उन्होंने ने विभेद [2] किया। और

وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً

1 आयत का भावार्थ यह है कि यदि तुम एक इसी बात पर विचार करो कि मैं तुम्हारे लिये कोई अपरिचित अज्ञात नहीं हूँ। मैं तुम्हीं में से हूँ। यही मक्का में पैदा हुआ, और चालीस वर्ष की आयु तुम्हारे बीच व्यतीत की। मेरा पूरा जीवन चरित्र तुम्हारे सामने है, इस अवधि में तुम ने सत्य और अमानत के विरुद्ध मुझ में कोई बात नहीं देखी तो अब चालीस वर्ष के पश्चात यह कैसे हो सकता है कि अल्लाह पर यह मिथ्या आरोप लगा दूँ कि उस ने यह कुर्आन मुझ पर उतारा है? मेरा पवित्र जीवन स्वयं इस बात का प्रमाण है कि यह कुर्आन अल्लाह की वाणी है। और मैं उस का नबी हूँ। और उसी की अनुमति से यह कुर्आन तुम्हें सुना रहा हूँ।

2 अतः कुछ शिर्क करने और देवी देवताओं को पूजने लगे। (इब्ने कसीर)

यदि आप के पालनहार की ओर से पहले ही से एक बात निश्चित न^[1] होती, तो उन के बीच उस का (संसार ही में) निर्णय कर दिया जाता जिस में वह विभेद कर रहे हैं।

20. और वह यह भी कहते हैं कि आप पर कोई आयत (चमत्कार) क्यों नहीं उतारा गया?^[2] आप कह दें कि परोक्ष की बातें तो अल्लाह के अधिकार में हैं। अतः तुम प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ।^[3]

21. और जब हम, लोगों को दुःख पहुँचने के पश्चात् दया (का स्वाद) चखाते हैं तो तुरन्त हमारी आयतों (निशानियों) के बारे में षडयंत्र रचने लगते हैं। आप कह दें कि अल्लाह का उपाय अधिक तीव्र है। हमारे फरिश्ते तुम्हारी चालें लिख रहे हैं।

22. वही है जो जल तथा थल में तुम्हें फिराता है। फिर जब तुम नौकाओं में होते हो, और उन को ले कर अनुकूल वायु के कारण चलती है, और वह उस से प्रसन्न होते हैं, तो अकस्मात् प्रचण्ड वायु का झोंका आ जाता है, और प्रत्येक स्थान से उन्हें लहरें मारने लगती हैं, और समझते

فَاخْتَلَفُوا لَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ
لَقَضَىٰ بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٠﴾

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ
رَبِّهِ فَقَدْ لَئِمْنَا بِالْغَيْبِ لَهُ فَانظُرُوا
إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿١١﴾

وَإِذْ آذَنَّا النَّاسَ رَحْمَةً مِنْ بَعْدِ خُرُوجِ مَسْئَلِهِمْ
إِذْ أَلَّهُمْ تَكْوِينًا وَإِنَّا عَلَى اللَّهِ أَسْرَعُ تَكَوُّرًا إِنَّ رُسُلَنَا
يَكْتُبُونَ مَا تَكُونُونَ ﴿١٢﴾

هُوَ الَّذِي يُسَبِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ حَتَّىٰ إِذَا كُنْتُمْ فِي
الْفُلِّ وَجَرْتُمْ يَمَّهُمْ لَبِثْتُمْ فِي حَوَائِجِهِمْ
جَاءَتْهُمْ رَحْمَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَجَاءَهُمُ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ
مَكَانٍ وَذُكِّرُوا إِلَهُكُمْ فَجَازَمُوا بِرَبِّهِمْ فَدَعَوْا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ
الْذِينَ هُمْ يُؤْمِنُونَ إِنَّ جُنُودَنَا مِنْ هَذِهِ لَمَكُونُونَ مِنَ
الشَّاكِرِينَ ﴿١٣﴾

1 कि संसार में लोगों को कर्म करने का अवसर दिया जाये।

2 जैसे कि सफ़ा पर्वत सोने का हो जाता। अथवा मक्का के पर्वतों के स्थान पर उद्यान हो जाते। (इब्ने कसीर)

3 अर्थात् अल्लाह के आदेश की।

हैं कि उन्हें घेर लिया गया तो अल्लाह से उस के लिये धर्म को विशुद्ध कर के^[1] प्रार्थना करते हैं कि यदि तू ने हमें बचा लिया तो हम अवश्य तेरे कृतज्ञ बन कर रहेंगे।

23. फिर जब उन्हें बचा लेता है तो अकस्मात् धरती में अवैध विद्रोह करने लगते हैं। हे लोगो! तुम्हारा विद्रोह तुम्हारे ही विरुद्ध पड़ रहा है। यह संसारिक जीवन के कुछ लाभ^[2] हैं। फिर तुम्हें हमारी ओर फिर कर आना है। तब हम तुम्हें बता देंगे कि तुम क्या कर रहे थे?

24. संसारिक जीवन तो ऐसा ही है जैसे हम ने आकाश से जल बरसाया, जिस से धरती की उपज घनी हो गयी, जिस में से लोग और पशु खाते हैं। फिर जब वह समय आया कि धरती ने अपनी शोभा पूरी कर ली और सुसज्जित हो गयी, और उस के स्वामी ने समझा कि वह उस से लाभावित होने पर सामर्थ्य रखते हैं, तो अकस्मात् रात या दिन में हमारा आदेश आ गया, और हम ने उसे इस प्रकार काट कर रख दिया,

فَلَمَّا أَنْجَبَهُمْ إِذَا هُمْ يَبْعُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ
يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَعَيْتُمْ عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ مَتَاعَ الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ﴿٢٣﴾

إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَا أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ
فَلَنَحْتَلِكُمْ بِهِ نَبَاتٌ الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ
وَالْأَنْعَامُ حَتَّىٰ إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ
وَطَّنَ أَهْلَهَا أَنَّهُمْ قَبِيلُونَ عَلَيْهِمُ آيَاتُنَا مَرَاتًا
لَيْلًا وَأَنْهَارًا فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا كَأَن لَّمْ
تَعْنُ بِهَا الْأُمْسُ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ
يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾

1 और सब देवी देवताओं को भूल जाते हैं।

2 भावार्थ यह है कि जब तक संसारिक जीवन के संसाधन का कोई सहारा होता है तो लोग अल्लाह को भुले रहते हैं। और जब यह सहारा नहीं होता तो उन का अन्तर्ज्ञान उभरता है। और वह अल्लाह को पुकारने लगते हैं। और जब दुःख दूर हो जाता है तो फिर वही दशा हो जाती है। इस्लाम यह शिक्षा देता है कि सदा सुख दुःख में उसे याद करते रहो।

जैसे कि कल वहाँ थी^[1] ही नहीं। इसी प्रकार हम आयतों का वर्णन खोल-खोल कर, करते हैं, ताकि लोग मनन चिंतन करें।

25. और अल्लाह तुम्हें शान्ति के घर (स्वर्ग) की ओर बुला रहा है। और जिसे चाहता है सीधी डगर दर्शा देता है।

وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَىٰ دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ
إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٢٥﴾

26. जिन लोगों ने भलाई की, उन के लिये भलाई ही होगी, और उस से भी अधिक।^[2]

لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ وَلَا يَرْهَقُ
وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ
فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٦﴾

27. और जिन लोगों ने बुराईयाँ की तो बुराई का बदला उसी जैसा होगा। तथा उन पर अपमान छाया होगा। और उन के लिये अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा। उन के मुखों पर ऐसे कालिमा छायी होगी जैसे अंधेरी रात के काले पर्दे उन पर पड़े हुये हों। वही नारकी होंगे। और वही उस में सदावासी होंगे।

وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ يَبْتَغِيهَا
وَتَرَهُمْ فِيهَا ذُلٌّ مِّمَّا لَهُمُ مِنَ اللَّهِ مِنْ غَاصِقِمْ كَأَنَّمَا
أَغْشَيْتْ وَجُوهَهُمْ قُطْعًا مِّنَ اللَّيْلِ مُظْلِمًا أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٧﴾

28. जिस दिन हम उन सब को एकत्र करेंगे फिर उन से कहेंगे जिन्होंने साझी बनाया है, कि अपने स्थान पर रुके रहो, और तुम्हारे (बनाये हुये) साझी भी। फिर हम उन के बीच अलगाव कर देंगे। और उन के साझी कहेंगे: तुम तो हमारी वंदना ही नहीं करते थे।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَبِعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا
مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاءُكُمْ فَرَلْنَا بِئْسَ جُوعًا
وَقَالَ شُرَكَاءُهُمْ مَا كُنْتُمْ إِلَّا نَاعِبُونَ ﴿٢٨﴾

1 अर्थात् संसारिक आनंद और सुख वर्षा की उपज के समान सामयिक और अस्थायी है।

2 अधिकांश भाष्यकारों ने, «अधिक» का भावार्थ: "आखिरत में अल्लाह का दर्शन" और «भलाई» का: "स्वर्ग" किया है। (इब्ने कसीर)

29. हमारे और तुम्हारे बीच अल्लाह का साक्ष्य बस है, कि तुम्हारी वंदना से हम असूचित थे।

فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِن كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغْفِيلِينَ ﴿۱۰﴾

30. वहीं प्रत्येक व्यक्ति उसे परख लेगा जो पहले किया है। और वह (निर्णय के लिये) अपने सत्य स्वामी की ओर फेर दिये जायेंगे। और जो मिथ्या बातें बना रहे थे उन से खो जायेंगी।

هٰذَا لِكَيْ تَبْلُغُوا كُلَّ نَفْسٍ مَّا سَأَلْتُمْ وَرُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿۱۱﴾

31. (हे नबी!) उन से पूछें कि तुम्हें कौन आकाश तथा धरती^[1] से जीविका प्रदान करता है? सुनने तथा देखने की शक्तियाँ किस के अधिकार में हैं? कौन निर्जीव से जीव को तथा जीव को निर्जीव से निकालता है? वह कौन है जो विश्व की व्यवस्था कर रहा है? वह कह देंगे कि अल्लाह।^[2] फिर कहो कि क्या तुम (सत्य के विरोध से) डरते नहीं हो?

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمْ مَنْ يَبْلُغُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدِيرُ الْأُمُورَ فَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ أَقْلًا تَقُونُ ﴿۱۲﴾

32. तो वही अल्लाह तुम्हारा सत्य पालनहार है, फिर सत्य के पश्चात कुपथ (असत्य) के सिवा क्या रह गया? फिर तुम किधर फिराये जा रहे हो?

فَذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ فَمَاذَا بَدَدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالَةَ فَأَنَّى تُصْرَفُونَ ﴿۱۳﴾

33. इस प्रकार आप के पालनहार की बातें अवज्ञाकारियों पर सत्य सिद्ध हो गयीं कि वह ईमान नहीं लायेंगे।

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَاسْقُوا آلَهُم لَأَيُّومُونَ ﴿۱۴﴾

34. आप उन से कहिये: क्या तुम्हारे साक्षियों में कोई है, जो उत्पत्ति का

قُلْ هَلْ مِنْ شَرِكِكُمْ مَن يَبْدُوُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ

1 आकाश की वर्षा तथा धरती की उपज से।

2 जब यह स्वीकार करते हो कि विश्व की व्यवस्था अल्लाह ही कर रहा है तो पूजा अराधना भी उसी की होनी चाहिये।

आरंभ करता फिर उसे दुहराता हो?
आप कह दें अल्लाह उत्पत्ति का आरंभ करता, फिर उसे दुहराता है। फिर तुम कहाँ बहके जा रहे हो?

35. आप कहिये: क्या तुम्हारे साझियों में कोई संमार्ग दर्शाता है? तो क्या जो संमार्ग दर्शाता हो वह अधिक योग्य है कि उस का अनुपालन किया जाये अथवा वह जो स्वयं संमार्ग पर न हो, परन्तु यह कि उसे संमार्ग दर्शा दिया जाये? तो तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा निर्णय कर रहे हो?

36. और उन (मिश्रणवादियों) में अधिकांश अनुमान का अनुसरण करते हैं। और सत्य को जानने में अनुमान कुछ काम नहीं दे सकता। वास्तव में अल्लाह जो कुछ वे कर रहे हैं भली भाँति जानता है।

37. और यह कुर्आन ऐसा नहीं है कि अल्लाह के सिवा अपने मन से बना लिया जाये, परन्तु उन की पुष्टि है जो इस से पहले (पुस्तकें) उतरी हैं। और यह पुस्तक (कुर्आन) विवरण^[1] है। इस में कोई संदेह नहीं कि यह सम्पूर्ण विश्व के पालनहार की ओर से है।

38. क्या वह कहते हैं कि इस (कुर्आन) को उस (नबी) ने स्वयं बना लिया है? आप कह दें: इसी के समान एक सूरह ला दो। और अल्लाह के सिवा

قُلْ اللَّهُ بِيَدِهِ الْخَلْقُ ثُمَّ يُعِيدُهُ فَأَنْتُمْ تُؤْكَلُونَ ﴿١٠﴾

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ قُلْ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ أَقْبَنُ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يُدَبِّمَهُمْ أَتَنْتُمْ بِهِدْيَ الْإِنْسَانِ يَهْدِي مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿١١﴾

وَمَا يَتَّبِعُهُمُ الْكُفْرَانُ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ يَكْفُرُ ﴿١٢﴾

وَمَا كَانَ هَذَا الْقُرْآنُ أَنْ يَتْلَوْنَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ نَصَدِّقُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَنَتَّبِعُ الْكِتَابَ الْأَدْبَابِ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٣﴾

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِمُورَةٍ مِثْلِهِ وَادْعُوا مَنِ اسْتَلْعَمْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٤﴾

1 अर्थात् अल्लाह की पुस्तकों में जो शिक्षा दी गयी है उस का कुर्आन में सविस्तार वर्णन है।

जिसे (अपनी सहायता के लिये) बुला सकते हो बुला लो, यदि तुम सत्यवादी हो।

39. बल्कि उन्होंने ने उस (कुर्आन) को झुठला दिया जो उन के ज्ञान के घेरे में नहीं^[1] आया, और न उस का परिणाम उन के सामने आया। इसी प्रकार उन्होंने भी झुठलाया था, जो इन से पहले थे। तो देखो कि अत्याचारियों का क्या परिणाम हुआ?

40. और उन में से कुछ ऐसे हैं जो इस (कुर्आन) पर ईमान लाते हैं और कुछ ईमान नहीं लाते। और आप का पालनहार उपद्रवकारियों को अधिक जानता है।

41. और यदि वे आप को झुठलायें तो आप कह दें: मेरे लिये मेरा कर्म है और तुम्हारे लिये तुम्हारा कर्म। तुम उस से निर्दोष हो जो मैं करता हूँ तथा मैं उस से निर्दोष हूँ जो तुम करते हो।

42. इन में से कुछ लोग आप की ओर कान लगाते हैं। तो क्या आप बहरों^[2] को सुना सकते हैं, यद्यपि वह कुछ भी न समझ सकते हों?

43. और उन में से कुछ ऐसे हैं जो आप की ओर तकते हैं तो क्या आप अन्धे को राह दिखा देंगे? यद्यपि उन्हें कुछ

بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِهِ لَعَلَّهَا يُفْسِدُ لَهُمْ
تَأْوِيلَهُ كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَانظُرْ
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۝

وَمِنْهُمْ مَّن يُّؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَّن لَّا يُؤْمِنُ بِهِ
وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ ۝

وَإِن كَذَّبُوكَ فَقُلْ إِنِّي عَلَىٰ لَكُمْ بِعَمَلِكُمْ أَنتُمْ
بِرَبِّكُم مِّمَّا عَمِلْتُمْ وَأَنَا بِرَبِّي مِمَّا
تَعْمَلُونَ ۝

وَمِنْهُمْ مَّن يَسْمَعُونَ لَكَ إِن تَأْتِي السَّمْعُ
الْقَامُ وَأَلْوَانًا لَا يَعْقِلُونَ ۝

وَمِنْهُمْ مَّن يَنْظُرُ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُمَْىٰ
أَلَوْ كَانُوا إِلَّا لَبِصْرًا ۝

1 अर्थात् बिना सोचे समझे इसे झुठलाने के लिये तैयार हो गये।

2 अर्थात् जो दिल और अन्तर्ज्ञान के बहरे हैं।

सूझता न हो?

44. वास्तव में अल्लाह, लोगों पर अत्याचार नहीं करता, परन्तु लोग स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करते हैं।^[1]
45. और जिस दिन अल्लाह उन्हें एकत्र करेगा तो उन्हें लगेगा कि वह (संसार में) दिन के केवल कुछ क्षण रहे। वह आपस में परिचित होंगे। वास्तव में वह क्षतिग्रस्त हो गये जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठला दिया, और वह सीधी डगर पाने वाले न होंगे।
46. और यदि हम आप को उस (यातना) में से कुछ दिखा दें जिस का वचन उन्हें दे रहे हैं अथवा (उस से पहले) आप का समय पूरा कर दें तो भी उन्हें हमारे पास ही फिर कर आना है। फिर अल्लाह उस पर साक्षी है जो वे कर रहे हैं।
47. और प्रत्येक समुदाय के लिये एक रसूल है। फिर जब उन का रसूल आ गया तो (हमारा नियम यह है कि) उन के बीच न्याय के साथ निर्णय कर दिया जाता है, और उन पर अत्याचार नहीं किया जाता।
48. और वह कहते हैं कि हम पर यातना का वचन कब पूरा होगा, यदि तुम सत्यवादी हो?
49. आप कह दें कि मैं स्वयं अपने लाभ

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَكِنَّ النَّاسَ
أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١٠﴾

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ كَمَا نَمْ يُكْتَبُ إِلَّا سَاعَةً مِنَ النَّهَارِ
يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ
اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١١﴾

وَأَمَّا نُورُكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ تَوَفَّيْنَاكَ
فَالْيَوْمَ نَجْعَلُكَ لِمَ اللَّهُ شَهِيدًا عَلَى مَا يَفْعَلُونَ ﴿١٢﴾

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَسُولٌ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قَضَىٰ بَيْنَهُمْ
بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٣﴾

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٤﴾

قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي مَعْرًا وَلَا لِنَفْعَالِ إِلَّا أَمْرًا اللَّهُ

1 भावार्थ यह है कि लोग अल्लाह की दी हुयी समझ-बूझ से काम न ले कर सत्य और वास्तविकता के ज्ञान की अर्हता खो देते हैं।

तथा हानि का अधिकार नहीं रखता। वही होता है जो अल्लाह चाहता है। प्रत्येक समुदाय का एक समय निर्धारित है। तथा जब उन का समय आ जायेगा तो न एक क्षण पीछे रह सकते हैं, और न आगे बढ़ सकते हैं।

50. (हे नबी!) कह दो कि तुम बताओ यदि अल्लाह की यातना तुम पर रात अथवा दिन में आ जाये (तो तुम क्या कर सकते हो?) ऐसी क्या बात है कि अपराधि उस के लिये जल्दी मचा रहे हैं?

51. क्या जब वह आ जायेगी उस समय तुम उसे मानोगे? अब जब कि उस के शीघ्र आने की मांग कर रहे थे।

52. फिर अत्याचारियों से कहा जायेगा कि सदा की यातना चखो। तुम्हें उसी का प्रतिकार (बदला) दिया जा रहा है जो तुम (संसार में) कमा रहे थे।

53. और वह आप से पूछते हैं कि क्या यह बात वास्तव में सत्य है? आप कह दें कि मेरे पालनहार की शपथ! यह वास्तव में सत्य है। और तुम अल्लाह को विवश नहीं कर सकते।

54. और यदि प्रत्येक व्यक्ति के पास जिस ने अत्याचार किया है, जो कुछ धरती में है सब आ जाये, तो वह अवश्य उसे अर्थदण्ड के रूप में देने को तय्यार हो जायेगा। और जब वह उस यातना को देखेंगे तो दिल ही दिल में पछतायेंगे। और उन के बीच न्याय के

لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِرُونَ ﴿٥٠﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيِّنَاتٍ أَوْ تَارًا مَاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٥١﴾

أَكْمُرُ إِذَا مَا وَقَعَ مِنْكُمْ بِهِ الشَّنْ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٥٢﴾

ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْغُلِيِّ هَلْ تُجْرُونَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٥٣﴾

وَيَسْتَنْبِئُونَكَ أَحَقُّ هُوَ قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ أَحَقُّ وَأَنْتُمْ بِمُجْرِمِينَ ﴿٥٤﴾

وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ وَأَسْرُوا النَّفْسَ لِنَارٍ أَوْ الْعَذَابِ وَفِيهِمْ يَبْغِمُونَ ﴿٥٥﴾

साथ निर्णय कर दिया जायेगा, और उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

55. सुनो! अल्लाह ही का है वह जो कुछ आकाशों तथा धरती में है। सुनो! उस का वचन सत्य है। परन्तु अधिकतर लोग इसे नहीं जानते।

56. वही जीवन देता तथा वही मारता है। और उसी की ओर तुम सब लौटाये जाओगे।^[1]

57. हे लोगो!^[2] तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से शिक्षा (कुरआन) आ गयी है, जो अन्तरात्मा के सब रोगों का उपचार (स्वास्थ्य कर) तथा मार्ग दर्शन और दया है उन के लिये जो विश्वास रखते हों।

58. आप कह दें कि यह (कुरआन) अल्लाह का अनुग्रह और उस की दया है। अतः लोगों को इस से प्रसन्न हो जाना चाहिये। और यह उस (धन-धान्य) से उत्तम है जो लोग एकत्र कर रहे हैं।

59. (हे नबी!) उन से कहो: क्या तुम ने इस पर विचार किया है कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये जो जीविका उतारी है, तुम ने उस में से कुछ को हराम (अवैध) बना दिया है, और कुछ को

الْإِنِّ إِلَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْإِنِّ وَعَدَّ
اللَّهُ حَقًّا وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾

هُوَ الْحَيُّ وَيُحْيِي وَيُمِيتُ وَالإِلَهُ تَرْجَعُونَ ﴿٥٦﴾

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَنِفَاءٌ
لِمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾

قُلْ يَفْضَلِ اللَّهُ وَبِرَحْمَتِهِ فَيُدْخِلُكَ قَلْبُكَ حَقًّا
هُوَ خَيْرٌ مِمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٥٨﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِنْ رِزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِنْهُ
حَرَامًا وَحَلَالًا قُلْ اللَّهُ إِذْ بَدَأَكُمْ لَكُمْ عَلَى اللَّهِ
تَقَرُّونَ ﴿٥٩﴾

1 प्रलय के दिन अपने कर्मों का फल भोगने के लिये।

2 इस में कुरआन के चार गुणों का वर्णन किया गया है:

1. यह सत्य शिक्षा है।
2. द्विधा के सभी रोगों के लिये स्वास्थ्यकर है।
3. संमार्ग दर्शाता है।
4. ईमान वालों के लिये दया का उपदेश है।

हलाल (वैध)। तो कहो कि क्या अल्लाह ने तुम को इस की अनुमति दी है? अथवा तुम अल्लाह पर आरोप लगा रहे^[1] हो?

60. और जो लोग अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगा रहे हैं उन्होंने ने प्रलय के दिन को क्या समझ रखा है? वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये दयाशील^[2] है। परन्तु उन में अधिकतर कृतज्ञ नहीं होते।

61. (हे नबी!) आप जिस दशा में हों, और कुआन में से जो कुछ भी सुनाते हों, तथा तुम लोग भी कोई कर्म नहीं करते हो, परन्तु हम तुम्हें देखते रहते हैं, जब तुम उसे करते हो। और आप के पालनहार से धरती में कण भर भी कोई चीज़ छुपी नहीं रहती और न आकाश में न इस से कोई छोटी न बड़ी, परन्तु वह खुली पुस्तक में अंकित है।

62. सुनो! जो अल्लाह के मित्र हैं, न उन्हें कोई भय होगा, और न वह उदासीन होंगे।

63. जो ईमान लाये, तथा अल्लाह से डरते रहे।

64. उन्हीं के लिये संसारिक जीवन में

وَمَا ظُنُّوا أَن يَفْتُرُوا عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ
الْكَثِيرَ هُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦٠﴾

وَمَا تَكُونُ فِي سُنَّانٍ وَمَا تَنْتَلُوا مِنْهُ مِنْ قُرْآنٍ
وَلَا تَعْبَلُونَ مِنْ حِجْلِ الْأَلْبَتَّاعِ عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ
يُفِيضُونَ فِيهِ وَمَا يَعْرَبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ
مَسْقَالٍ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْفَرٍ
مِنْ ذَلِكَ وَلَا الْكَبِيرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٦١﴾

إِلَّا إِنْ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾

لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ﴿٦٤﴾

1 आयत का भावार्थ यह है कि किसी चीज़ को वर्जित करने का अधिकार केवल अल्लाह को है। अपने विचार से किसी चीज़ को अवैध करना अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाना है।

2 इसी लिये प्रलय तक का अवसर दिया है।

शुभ सूचना है, तथा परलोक में भी अल्लाह की बातों में कोई परिवर्तन नहीं, यही बड़ी सफलता है।

65. तथा (हे नबी!) आप को उन (काफ़िरों) की बात उदासीन न करे। वास्तव में सभी प्रभुत्व अल्लाह ही के लिये है। और वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

66. सुनो! वास्तव में अल्लाह ही के अधिकार में है जो आकाशों में तथा धरती में है। और जो अल्लाह के सिवा दूसरे साझियों को पुकारते हैं वह केवल अनुमान के पीछे लगे हुये हैं। और वे केवल आँकलन कर रहे हैं।

67. वही है जिस ने तुम्हारे लिये रात बनाई है ताकि उस में सुख पाओ। और दिन बनाया, ताकि उस के प्रकाश में देखो। निःसंदेह इस में (अल्लाह के व्यवस्थापक होने की) उन के लिये बड़ी निशानियाँ हैं जो (सत्य को) सुनते हों।

68. और उन्होंने ने कह दिया कि अल्लाह ने कोई पुत्र बना लिया है। वह पवित्र है! वह निस्पृह है। वही स्वामी है उस का जो आकाशों में तथा धरती में है। क्या तुम्हारे पास इस का कोई प्रमाण है? क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात कह रहे हो जिस का तुम ज्ञान नहीं रखते?

69. (हे नबी!) आप कह दें: जो अल्लाह पर मिथ्या बातें बनाते हैं वह सफल नहीं होंगे।

لَا تَدْرِي لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ذَٰلِكَ هُوَ الْقَوُّوْرُ الْعَظِيْمُ ۝

وَلَا يَحِزُّنُكَ قَوْلُهُمْ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيْعًا ۝
هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

اَلَا اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ
وَمَا يَكْتُمِبُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
شُرَكَاءُ اِنَّ يَتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنَّهُمْ اِلَّا
يَخْرُصُوْنَ ۝

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْيَلْمَ لِسْتَكُوْا فِيْهِ
وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يَسْمَعُوْنَ ۝

قَالُوْا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهُ هُوَ الْعَزِيْزُ
مَلِكُ السَّمٰوٰتِ وَمَلِكُ الْاَرْضِ اِنَّ عِنْدَنَا
مَنْ سُلْطٰنٌ بِهٰذَا اَتَقُوْا لِلّٰهِ
مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلٰى اللّٰهِ
الْكُذِبَ لَا يَفْعَلُوْنَ ۝

70. उन के लिये संसार ही का कुछ आनन्द है, फिर हमारी ओर ही आना है। फिर हम उन्हें उन के कुफ़्र (अविश्वास) करते रहने के कारण घोर यातना चखायेंगे।

71. आप उन्हें नूह की कथा सुनायें, जब उस ने अपनी जाति से कहा: हे मेरी जाति! यदि मेरा तुम्हारे बीच रहना और तुम्हें अल्लाह की आयतों (निशानियों) द्वारा मेरा शिक्षा देना तुम पर भारी हो तो अल्लाह ही पर मैं ने भरोसा किया है। तुम मेरे विरुद्ध जो करना चाहो उसे निश्चित कर लो और अपने साझियों (देवी-देवताओं) को भी बुला लो। फिर तुम्हारी योजना तुम पर तनिक भी छुपी न रह जाये, फिर जो करना हो उसे कर जाओ और मुझे कोई अवसर न दो।

72. फिर यदि तुम ने मुख फेरा तो मैं ने तुम से किसी पारिश्रमिक की माँग नहीं की है। मेरा पारिश्रमिक तो अल्लाह के सिवा किसी के पास नहीं है। और मुझे आदेश दिया गया है कि आज्ञाकारियों में रहूँ।

73. फिर भी उन्होंने उसे झुठला दिया, तो हम ने उसे और जो नाव में उस के साथ (सवार) थे बचा लिया और उन्हीं को उन का उत्तराधिकारी बना दिया। और उन्हें जलमग्न कर दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठला दिया। अतः देख लो कि उन का परिणाम क्या हुआ जो सचेत किये गये थे।

مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ
نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا
يَكْفُرُونَ ۝

وَأْتَى عَلَيْهِمْ نَبَأُ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يَتُومِنُونَ
كَانَ كَذِبًا عَلَيْكُمْ مَقَامِي وَتَذَكَّرِي بِآيَاتِ اللَّهِ فَعَلَى
اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ
لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَّيَّ
وَلَا تَنْظُرُونَ ۝

فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِي إِلَّا
عَلَى اللَّهِ وَأُمِرْتُ أَنْ أكونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝

فَكَذَّبُوهُ فَجَبَّيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ
وَجَعَلْنَاهُمْ خَلْفَةً وَأَعْرَفْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا
بِآيَاتِنَا فَأَنْظَرْنَاهُمْ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُتَذَكِّرِينَ ۝

74. फिर हम ने उस (नूह) के पश्चात बहुत से रसूलों को उन की जाति के पास भेजा, वह उन के पास खुली निशानियाँ (तर्क) लाये तो वह ऐसे न थे कि जिसे पहले झुठला दिया था उस पर ईमान लाते, इसी प्रकार हम उल्लंघनकारियों के दिलों पर मुहर^[1] लगा देते हैं।

75. फिर हम ने उन के पश्चात मूसा और हारून को फिरऔन और उस के प्रमुखों के पास भेजा। तो उन्होंने अभिमान किया। और वह थे ही अपराधीगण।

76. फिर जब उन के पास हमारी ओर से सत्य आ गया तो उन्होंने ने कह दिया कि वास्तव में यह तो खुला जादू है।

77. मूसा ने कहा: क्या तुम सत्य को जब तुम्हारे पास आ गया तो जादू कहने लगे? क्या यह जादू है? जब कि जादूगर (तांत्रिक) सफल नहीं होते।

78. उन्होंने ने कहा: क्या तुम इसलिये हमारे पास आये हो ताकि हमें उस (प्रथा) से फेर दो, जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है। और देश (मिस्र) में तुम दोनों की महिमा स्थापित हो जाये? हम तुम दोनों का विश्वास करने वाले नहीं हैं।

79. और फिरऔन ने कहा: (देश में) जितने दक्ष जादूगर हैं उन्हें मेरे पास लाओ।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ
بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِهَا كَذَّبُوا بِهَا مِنْ
قَبْلِ كَذَلِكَ نَطْمَعُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْمُتَعَدِّينَ ﴿٧٤﴾

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِم مُّوسَىٰ وَهَارُونَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ
وَمَلَائِكَةٍ بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿٧٥﴾

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا إِنَّ هَذَا سِحْرٌ
مُبِينٌ ﴿٧٦﴾

قَالَ مُوسَىٰ أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ أَسِحْرٌ هَذَا
وَلَا يُفْعَلُ السَّحِرُونَ ﴿٧٧﴾

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَلْفِتْنَا عَمَّاءَ وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا
وَكَانُوا لَكُمُ الْكِبْرِيَاءَ فِي الْأَرْضِ وَمَا نَحْنُ لَكُمُ
بِعُومِينَ ﴿٧٨﴾

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُونِي بِرِجْلِ سَاحِرٍ عَلِيِّ ﴿٧٩﴾

1 अर्थात् जो बिना सोचे समझे सत्य को नकार देते हैं उन के सत्य को स्वीकार करने की स्वभाविक योग्यता खो जाती है।

80. फिर जब जादूगर आ गये तो मूसा ने कहा: जो कुछ तुम्हें फेंकना है उसे फेंक दो।
81. और जब उन्होंने फेंक दिया तो मूसा ने कहा: तुम जो कुछ लाये हो वह जादू है निश्चय अल्लाह उसे अभिव्यर्थ कर देगा। वास्तव में अल्लाह उपद्रवकारियों के कर्म को नहीं सुधारता।
82. और अल्लाह सत्य को अपने आदेशों के अनुसार सत्य कर दिखायेगा। यद्यपि अपराधियों को बुरा लगे।
83. तो मूसा पर उस की जाति के कुछ नवयुवकों के सिवा कोई ईमान नहीं लाया। फिरऔन और अपने प्रमुखों के भय से कि उन्हें किसी यातना में न डाल दे। और वास्तव में फिरऔन का धरती में बड़ा प्रभुत्व था, और वह वस्तुतः उल्लंघनकारियों में था।
84. और मूसा ने (अपनी जाति बनी इस्राईल से) कहा: हे मेरी जाति! जब तुम अल्लाह पर ईमान लाये हो तो उसी पर निर्भर रहो, यदि तुम आज्ञाकारी हो।
85. तो उन्होंने ने कहा: हम ने अल्लाह ही पर भरोसा किया है। हे हमारे पालनहार! हमें अत्याचारियों के लिये परीक्षा का साधन न बना।
86. और अपनी दया से हमें काफिरों से बचा ले।
87. और हम ने मूसा तथा उस के भाई

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُوسَى الْقَوْمَ إِنَّمَا أَنتُم مُّقْتُلُونَ ﴿٨٠﴾

فَلَمَّا الْقَوْمَ قَالَ مُوسَى مَا جِئْتُمْ بِهِ السِّحْرُ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ إِنَّ اللَّهَ لَا يُصَلِّحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ ﴿٨١﴾

وَيُخَيِّطُ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ﴿٨٢﴾

فَمَا آمَنَ لِمُوسَى إِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِنْ قَوْمِهِ عَلَى خَوْفٍ مِنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمْ أَنْ يَفْتِنَهُمْ وَإِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّ لِمَنْ يَشْرِكُونَ ﴿٨٣﴾

وَقَالَ مُوسَى يَا قَوْمِ إِن كُنتُمْ آمَنْتُمْ بِاللَّهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا وَإِن كُنتُمْ تُسَلِّبُونَ ﴿٨٤﴾

فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٨٥﴾

وَجَنَّتْ بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾

وَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى وَأَخِيهِ أَنْ تَبِعَا الْقَوْمَ مَكًّا

(हारून) की ओर प्रकाशना भेजी, कि अपनी जाति के लिये मिस्र में कुछ घर बनाओ। और अपने घरों को क़िब्ला^[1] बना लो। तथा नमाज़ की स्थापना करो। और ईमान वालों को शुभ सूचना दो।

88. और मूसा ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! तू ने फिरऔन और उस के प्रमुखों को संसारिक जीवन में शोभा तथा धन-धान्य प्रदान किया है। तो मेरे पालनहार! क्या इस लिये कि वह तेरी राह से विचलित करते रहें? हे मेरे पालनहार! उन के धनों को निरस्त कर दे, और उन के दिल कड़े कर दे कि वह ईमान न लायें जब तक दुःखदायी यातना न देख लें।

89. अल्लाह ने कहा: तुम दोनों की प्रार्थना स्वीकार कर ली गयी। तो तुम दोनों अडिग रहो, और उन की राह का अनुसरण न करो जो ज्ञान नहीं रखते।

90. और हम ने बनी इस्राईल को सागर पार करा दिया तो फिरऔन और उस की सेना ने उन का पीछा किया, अत्याचार तथा शत्रुता के ध्येय से। यहाँ तक कि जब वह जलमग्न होने लगा तो बोला: मैं ईमान ले आया, और मान लिया कि उस के सिवा कोई पूज्य नहीं है जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाये हैं, और मैं आज्ञाकारियों में हूँ।

يُؤْمِرُ بِبُيُوتِهِمْ لِئَاجْعَلُوا بِيُوتِهِمْ قِبْلَةً وَأَقِيمُوا
الصَّلَاةَ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠﴾

وَقَالَ مُوسَى رَبَّنَا إِنَّكَ آتَيْتَ فِرْعَوْنَ
وَمَلَائِكَتَهُ زِينَةً وَأَمْوَالًا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا رَبَّنَا
لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِكَ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَى أَمْوَالِهِمْ
وَاشْدُدْ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّى يَرَوُا
الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٨٨﴾

قَالَ قَدْ أُجِيبَتِ دَعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيمَا وَلَا
تَتَّبِعِينَ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٨٩﴾

وَجُورًا يَبْغِي السِّرَّ إِلَى السِّرِّ أَلَيْسَ الْغُرُفَاتُ لَكُمْ فِرْعَوْنَ
وَجُنُودَهُ بَعْثًا وَعَدُوًّا حَتَّى إِذَا دُرِكَهُ الْقَرْقُ قَالَ
أَمِنْتُ أَنَّهُ لَإِلَهِ إِلَّا الَّذِي آمَنْتُ بِهِ بَنُو
إِسْرَائِيلَ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٩٠﴾

1 «क़िब्ला» उस दिशा को कहा जाता है जिस की ओर मुख कर के नमाज़ पढ़ी जाती है।

91. (अल्लाह ने कहा) अब? जब कि इस से पूर्व अवैज्ञा करता रहा, और उपद्रवियों में से था?

92. तो आज हम तेरे शव को बचा लेंगे ताकि तू उन के लिये जो तेरे पश्चात होंगे, एक (शिक्षाप्रद) निशानी^[1] बने। और वास्तव में बहुत से लोग हमारी निशानियों से अचेत रहते हैं।

93. और हम ने बनी इस्राईल को अच्छा निवास स्थान^[2] दिया, और स्वच्छ जीविका प्रदान की। फिर उन्होंने परस्पर विभेद उस समय किया जब उन के पास ज्ञान आ गया। निश्चय अल्लाह उन के बीच प्रलय के दिन उस का निर्णय कर देगा जिस में वह विभेद कर रहे थे।

94. फिर यदि आप को उस में कुछ संदेह^[3] हो, जो हम ने आप की ओर उतारा है तो उन से पूछ लें जो आप के पहले से पुस्तक (तौरात) पढ़ते हैं। आप के पास आप के पालनहार की ओर से सत्य आ गया है। अतः आप कदापि संदेह करने वालों में न हों।

95. और आप कदापि उन में से न हों जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठला

الَّذِينَ وَقَدَّحَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ
الْمُفْسِدِينَ ﴿٩١﴾

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَنْ خَلَقَكَ آيَةً
وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ النَّاسِ عَنْ آيَاتِنَا لَغٰفِلُونَ ﴿٩٢﴾

وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ مَبْوَأًا صَدِيقًا
وَرَزَقْنَاهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ فَمَا اخْتَفَوْا حَتَّى
جَاءَهُمُ الْعَذَابُ إِنَّ رَبَّكَ يُفِضُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٩٣﴾

فَإِنْ كُنْتَ فِي شَكٍّ مِّمَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ مَقَالٍ
الَّذِينَ يَقْرَأُونَ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكَ لَقَدْ
جَاءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿٩٤﴾

وَلَا تَكُونَ مِنَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ

1 बताया जाता है कि: 1898 ई० में इस फिरऔन का मम्मी किया हुआ शव मिल गया है जो काहिरा के विचित्रालय में रखा हुआ है।

2 इस से अभिप्राय मिस्र और शाम के नगर हैं।

3 आयत में संबोधित नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किया गया है। परन्तु वास्तव में उन को संबोधित किया गया है जिन को कुछ संदेह था। यह अरबी की एक भाषा शैली है।

- दिया, अन्यथा क्षतिग्रस्तों में हो जायेंगे।
96. (हे नबी!) जिन पर आप के पालनहार का आदेश सिद्ध हो गया है, वह ईमान नहीं लायेंगे।
97. यद्यपि उन के पास सभी निशानियाँ आ जायें, जब तक दुःखदायी यातना नहीं देख लेंगे।
98. फिर ऐसा क्यों नहीं हुआ कि कोई बस्ती ईमान^[1] लाये फिर उस का ईमान उसे लाभ पहुँचाये, यूनस की जाति के सिवा, जब वह ईमान लाये तो हम ने उन से संसारिक जीवन में अपमानकारी यातना दूर कर^[2] दी, और उन्हें एक निश्चित अवधि तक लाभान्वित होने का अवसर दे दिया।
99. और यदि आप का पालनहार चाहता तो जो भी धरती में है सब ईमान ले आते तो क्या आप लोगों को बाध्य करेंगे यहाँ तक कि ईमान ले आयें?^[3]
100. किसी प्राणी के लिये यह संभव नहीं है कि अल्लाह की अनुमति^[4]

فَتَكُونُ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿١٠﴾

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَاتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾

وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّىٰ بَرُوا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿١٢﴾

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ آمَنَتْ فَنَفَعَهَا آيَاتُنَا إِلَّا يَوْمَ يُؤْمَسُّ لِمَا كَانُوا كُفَرُوا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيَانِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَنُكَتُهُمْ إِلَىٰ حَيْثُ ﴿١٣﴾

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَأَمَنَّ مِنَ فِي الْأَرْضِ كُلَّ جَمْعًا ۚ أَقَابَتْ نَكَرُهُ النَّاسَ حَتَّىٰ يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿١٤﴾

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُوَمِّنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَيَجْعَلُ

1 अर्थात् यातना का लक्षण देखने के पश्चात्।

2 यूनस अलैहिस्सलाम का युग ईसा मसीह से आठ सौ वर्ष पहले बताया जाता है। भाष्यकारों ने लिखा है कि वह यातना की सूचना दे कर अल्लाह की अनुमति के बिना अपने नगर नीनवा से निकल गये। इस लिये जब यातना के लक्षण नागरिकों ने देखे और अल्लाह से क्षमायाचना करने लगे तो उन से यातना दूर कर दी गयी। (इब्ने कसीर)

3 इस आयत में यह बताया गया है कि सत्धर्म और ईमान ऐसा विषय है जिस में बल का प्रयोग नहीं किया जा सकता। यह अनहोनी बात है कि किसी को बलपूर्वक मुसलमान बना लिया जाये। (देखिये: सूरह बकरा, आयत-256)।

4 अर्थात् उस के स्वभाविक नियम के अनुसार जो सोच-विचार से काम लेता है

के बिना ईमान लाये, और वह मलीनता उन पर डाल देता है, जो बुद्धि का प्रयोग नहीं करते।

101. (हे नबी!) उन से कहो कि उसे देखो जो आकाशों तथा धरती में है। और निशानियाँ तथा चेतावनियाँ उन्हें क्या लाभ दे सकती है जो ईमान (विश्वास) न रखते हों?
102. तो क्या वह इस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन पर वैसे ही (बुरे) दिन आयें जैसे उन से पहले लोगों पर आ चुके हैं? आप कहिये: फिर तो तुम प्रतीक्षा करो। मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में हूँ।
103. फिर हम अपने रसूलों को और जो ईमान लाये, बचा लेते हैं। इसी प्रकार हम ने अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है कि ईमान वालों को बचा लेते हैं।
104. आप कह दें: हे लोगो! यदि तुम मेरे धर्म के बारे में किसी संदेह में हो तो मैं उस की इबादत (वन्दना) कभी नहीं करूँगा जिस की इबादत (वन्दना) अल्लाह के सिवा तुम करते हो। परन्तु मैं उस अल्लाह की इबादत (वन्दना) करता हूँ जो तुम्हें मौत देता है। और मुझे आदेश दिया गया है कि ईमान वालों में रहूँ।
105. और यह कि अपने मुख को धर्म के लिये सीधा रखो एकेश्वरवादी हो कर। और कदापि मिश्रणवादियों में न रहो।

الرَّجَسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠﴾

قُلْ أَنْظُرُوا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا تُعْبٰرِ
الْاٰيٰتِ وَالنَّدٰرِ عِن قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠﴾

فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَقُوْا مِنْ
قَبْلِهِمْ قُلْ فَانْتَظِرُوْا اِلٰى مَعٰكُم مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿١٠﴾

تَمَّ شَيْءٌ رُّسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُنَّا لَكَ حٰقًّا
عَلَيْنَا نَجْمِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠﴾

قُلْ يَاۡٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ
فَلَا اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ
اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَاْمُرْتُ اَنْ اَكُوْنَ
مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠﴾

وَ اَنْ اَقِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيفًا وَّلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠﴾

वही ईमान लाता है।

106. और अल्लाह के सिवा उसे न पुकारो जो आप को न लाभ पहुँचा सकता है और न हानि पहुँचा सकता है। फिर यदि आप ऐसा करेंगे तो अत्याचारियों में हो जायेंगे।

107. और यदि अल्लाह आप को कोई दुख पहुँचाना चाहे तो उस के सिवा कोई उसे दूर करने वाला नहीं। और यदि आप को कोई भलाई पहुँचाना चाहे तो कोई उस की भलाई को रोकने वाला नहीं। वह अपनी दया अपने भक्तों में से जिस पर चाहे करता है, तथा वह क्षमाशील दयावान् है।

108. (हे नबी!) कह दो कि हे लोगो! तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे पास सत्य आ गया^[1] है। अब जो सीधी डगर अपनाता हो तो उसी के लिये लाभदायक है। और जो कुपथ हो जाये तो उस का कुपथ उसी के लिये नाशकारी है। और मैं तुम पर अधिकारी नहीं हूँ^[2]।

109. आप उसी का अनुसरण करें जो आप की ओर प्रकाशना की जा रही है। और धैर्य से काम लें, यहाँ तक कि अल्लाह निर्णय कर दे। और वह सर्वोत्तम निर्णैता है।

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذَا مِنْ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٦﴾

وَأَنْ يَسْئَلَكَ اللَّهُ بَعْضَ أَعْمَالِكُمْ كَمَا يَفْعَلُ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا مِنْكُمْ وَلَا يَضُرُّكَ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذَا مِنْ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٧﴾

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ فَخُذُوا حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ الْبُيُوتُ مِنَ اللَّهِ وَمَنْ صَفَحَ صَاحِبُهَا بِهَا وَنَسَىٰ مَا آتَاهَا اللَّهُ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِمُحْسِنٍ ﴿١٠٨﴾

وَاصْبِرْ مَا يُوْحَىٰ إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ ۗ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿١٠٩﴾

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुआन ले कर आ गये हैं।

2 अर्थात् मेरा कर्तव्य यही है कि तुम्हें बलपूर्वक सीधी डगर पर कर दूँ।

सूरह हूद - 11



यह सूरह मक्की है, इस में 123 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़, लाम, रा। यह पुस्तक है जिस की आयतें सुदृढ़ की गयीं, फिर सविस्तार वर्णित की गयी हैं उस की ओर से जो तत्वज्ञ सर्वसूचित है।
2. कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (वन्दना) न करो। वास्तव में, मैं उस की ओर से तुम को सचेत करने वाला तथा शुभसूचना देने वाला हूँ।
3. और यह कि अपने पालनहार से क्षमा याचना करो, फिर उसी की ओर ध्यान मग्न हो जाओ। वह तुम्हें एक निर्धारित अवधि तक अच्छा लाभ पहुँचायेगा। और प्रत्येक श्रेष्ठ को उस की श्रेष्ठता प्रदान करेगा। और यदि तुम मुँह फेरोगे तो मैं तुम पर एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।
4. अल्लाह ही की ओर तुम सब को पलटना है, और वह जो चाहे कर सकता है।
5. सुनो! यह लोग अपने सीनों को

الرَّحْمَنِ أَحْكَمَتْ آيَاتُهُ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَدُنِّكَ حَكِيمٍ
حَيِّرٍ

أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَذْتُ مِنَ الَّذِينَ نَسُوا عَهْدِي

وَأَنْ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُغْفِرْ لَهُمْ مَتَاعًا
حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى وَيُؤْتِ كُلَّ ذِي فَضْلٍ
فَضْلَهُ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ
يَوْمٍ كَبِيرٍ

إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

إِلَّا أَنَّهُمْ يَتَّبِعُونَ صُدُورَهُمْ لَيْسَتْ خَفُوفًا أَمِنَةً الْوَاحِينَ

मोड़ते हैं, ताकि उस^[1] से छुप जायें सुनो! जिस समय वे अपने कपड़ों से स्वयं को ढाँपते हैं, तब भी वह (अल्लाह) उन के छुपे को जानता है। तथा उन के खुले को भी। वास्तव में वह उसे भी भली भाँति जानने वाला^[2] है जो सीनों में (भेद) है।

6. और धरती में कोई चलने वाला नहीं है परन्तु उस की जीविका अल्लाह के ऊपर है। तथा वह उस के स्थायी स्थान तथा सौपने के स्थान को जानता है। सब कुछ एक खुली पुस्तक में अंकित है।^[3]

7. और वही है, जिस ने आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति छः दिनों में की। उस समय उस का सिंहासन जल पर था, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुम में किस का कर्म सब से उत्तम है। और (हे नबी!) यदि आप उन से कहें कि वास्तव में तुम सभी मरण के पश्चात् पुनः जीवित किये जाओगे तो जो काफ़िर हो गये अवश्य कह देंगे कि यह तो केवल खुला जादू है।

8. और यदि हम उन से यातना में किसी विशेष अवधि तक देर कर दें तो

يَسْتَفْتُونَ نِبْيَاهُمْ يَعْلَمُونَ مَا يُسْأَلُونَ وَمَا يُلْقُونَ
إِنَّهُ عَلَيْهِمْ كِتَابٌ الصُّدُورِ ①

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ
رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا كُلٌّ
فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ①

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ
أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ
أَحْسَنُ عَمَلًا وَلَكِنْ قُلْتُمْ إِنَّكُمْ مَعْبُودُونَ مِنْ
بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا
إِلَّا كِبْرُؤُنِي ①

وَلَكِنْ آخِرُ نَاعَتِهِمُ الْعَذَابُ إِلَىٰ أُمَّةٍ مَّعْدُودَةٍ ①

1 अर्थात् अल्लाह से।

2 आयत का भावार्थ यह है कि मिश्रणवादी अपने दिलों में कुफ़र को यह समझ कर छुपाते हैं कि अल्लाह उसे नहीं जानेगा। जब कि वह उन के खुले छुपे और उन के दिलों के भेदों तक को जानता है।

3 अर्थात्: अल्लाह, प्रत्येक व्यक्ति की जीवन मरण आदि की सब दशाओं से अवगत है।

अवश्य कहेंगे कि उसे क्या चीज़ रोक रही है? सुन लो! वह जिस दिन उन पर आ जायेगी तो उन से फिरगी नहीं। और उन्हें वह (यातना) घेर लेगी जिस की वह हँसी उड़ा रहे थे।

لَيَقُولَنَّ مَا بَغْبَسَ الْآلَايَوْمَ يَا تَهُم لَيْسَ مَصْرُوفًا
عَنَّهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿١٠﴾

9. और यदि हम मनुष्य को अपनी कुछ दया चखा दें, फिर उस को उस से छीन लें, तो हताशा कृतघ्न हो जाता है।

وَلَيَنْ أَدْفُنَا الْإِنْسَانَ مِتَارِصَةً ثُمَّ نَرْعَاهَا
وَمِنَّا إِنَّهُ لَيَحْسِبُنَا لُغُورًا ﴿١١﴾

10. और यदि हम उसे सुख चखा दें, दुःख के पश्चात् जो उसे पहुँचा हो तो अवश्य कहेगा कि मेरा सब दुःख दूर हो गया। वास्तव में वह प्रफुल्ल हो कर अकड़ने लगता है।^[1]

وَلَيَنْ أَدْفُنَا نَعْمَاءً بَعْدَ صَرَاءٍ مَتَّتُهُ لَيَقُولَنَّ
ذَهَبَ السَّيِّئَاتُ عَنِّي إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُورًا ﴿١٢﴾

11. परन्तु जिन्होंने धैर्य धारण किया और सुकर्म किये, तो उन के लिये क्षमा और बड़ा प्रतिफल है।

إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَئِكَ
لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿١٣﴾

12. तो (हे नबी!) संभवतः आप उस में कुछ को जो आप की ओर प्रकाशना की जा रही है, त्याग देने वाले है और इस के कारण आप का दिल सिकुड़ रहा है कि वह कहते हैं कि इस पर कोई कोष क्यों नहीं उतारा गया, या उस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों आया?? आप केवल सचेत करने वाले हैं। और अल्लाह ही प्रत्येक चीज़ पर रक्षक है।

فَلَعَلَّكَ تَارِكًا بَعْضَ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ
وَضَائِقُ بِهِ صَدْرُكَ أَنْ يَقُولُوا لَوْلَا أُنزِلَ
عَلَيْهِ كُتُبٌ وَجَاءَ مَعَهُ مَلَكَ إِنَّمَا أَنْتَ
نَذِيرٌ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٤﴾

13. क्या वह कहते हैं कि उस ने इस (कूर्आन) को स्वयं बना लिया है?

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأَنذَرْتُكُمْ سُورَةَ مِثْلِهِ

1 इस में मनुष्य की स्वभाविक दशा की ओर संकेत है।

आप कह दें कि इसी के समान दस सूरतें बना लाओ^[1], और अल्लाह के सिवा जिसे हो सके बुला लो, यदि तुम लोग सच्चे हो।

14. फिर यदि वह उत्तर न दें तो विश्वास कर लो कि उसे (कुर्आन को) अल्लाह के ज्ञान के साथ ही उतारा गया है। और यह कि कोई वंदनीय (पूज्य) नहीं है, परन्तु वही। तो क्या तुम मुस्लिम होते हो?
15. जो व्यक्ति संसारिक जीवन तथा उस की शोभा चाहता हो, हम उन के कर्मों का (फल) उसी में चुका देंगे। और उन के लिये (संसार में) कोई कमी नहीं की जायेगी।
16. यही वह लोग हैं जिन का परलोक में अग्नि के सिवा कोई भाग नहीं होगा। और उन्होंने जो कुछ किया वह व्यर्थ हो जायेगा, और वे जो कुछ कर रहे हैं असत्य सिद्ध होने वाला है।
17. तो क्या जो अपने पालनहार की ओर से स्पष्ट प्रमाण^[2] रखता हो, और

مُفَارِقَاتٍ وَأَدْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٤﴾

فَأَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ فَأَعْلَمُوا أَنَّهُمْ أَنْزَلُوا بِعِلْمِ اللَّهِ
وَأَنَّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ﴿١٥﴾

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزَيَّنَّا لَهَا لُذُنَّافِيهِمْ
أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٦﴾

أُولَئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ
وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبِطُلَّ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿١٧﴾

أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ يَدَيْهِ ظُهُورُهُ مِنَ الْحَمِيَّةِ وَيَسْمُكُ يَدَيْهِ
وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ

1 अल्लाह का यह चैलन्ज है कि अगर तुम को शंका है कि यह कुर्आन मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने स्वयं बना लिया है तो तुम इस जैसी दस सूरतें ही बना कर दिखा दो। और यह चैलन्ज प्रलय तक के लिये है। और कोई दस तो क्या इस जैसी एक सूरह भी नहीं ला सकता। (देखिये: सूरह यूनस, आयत: 38, तथा सूरह बकरा, आयत: 23)

2 अर्थात् जो अपने अस्तित्व तथा विश्व की रचना और व्यवस्था पर विचार कर के यह जानता था कि इस का स्वामी तथा शासक केवल अल्लाह ही है, उस के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं हो सकता।

उस के साथ ही एक गवाह (साक्षी)^[1] भी उस की ओर से आ गया हो, और इस के पहले मूसा की पुस्तक मार्ग दर्शक तथा दया बन कर आ चुकी हो, ऐसे लोग तो इस(कुर्आन) पर ईमान रखते हैं। और संप्रदायों में से जो इसे अस्वीकार करेगा तो नरक ही उस का वचन स्थान है। अतः आप इस के बारे में किसी संदेह में न पड़ें। वास्तव में यह आप के पालनहार की ओर से सत्य है। परन्तु अधिकतर लोग ईमान (विश्वास) नहीं रखते।

18. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्यारोपण करे? वही लोग अपने पालनहार के समक्ष लाये जायेंगे, और साक्षी (फरिश्ते) कहेंगे कि इन्होंने ही अपने पालनहार पर झूठ बोले। सुनो! अत्याचारियों पर अल्लाह की धिक्कार है।
19. वही लोग अल्लाह की राह से रोक रहे हैं, और उसे टेढ़ा बनाना चाहते हैं। वही परलोक को न मानने वाले हैं।
20. वह लोग धरती में विवश करने वाले नहीं थे। और न उन का अल्लाह के सिवा कोई सहायक था। उन के लिये दुगनी यातना होगी। वह न सुन सकते थे, न देख सकते थे।
21. उन्होंने ने ही स्वयं अपना विनाश कर लिया, और उन से वह बात खो गयी जो वे बना रहे थे।

مِنهُ وَمِنْ قَبْلِهِ كَيْتُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ قَالُوا لِمَوْعِدُهُ فَلَا تَأْتِكُ فِي مَرِيضَةٍ مِّمَّنْهُ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ وَلَكِنَّ الْأَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٨﴾

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أُولَٰئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَّبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ آلَاءَ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٩﴾

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿٢٠﴾

أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءٍ يُضْعِفُ لَهُمْ الْعَذَابَ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ ﴿٢١﴾

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٢﴾

1 अर्थात नबी और कुर्आन।

22. यह आवश्यक है कि परलोक में यही सर्वाधिक विनाश में होंगे।
23. वास्तव में जो ईमान लाये, और सदाचार किये तथा अपने पालनहार की ओर आकर्षित हुये, वही स्वर्गीय हैं। और वह उस में सदैव रहेंगे।
24. दोनों समुदाय की दशा ऐसी है जैसे एक अन्धा और बहरा हो, और दूसरा देखने और सुनने वाला हो। तो क्या दोनों की दशा समान हो सकती है? क्या तुम (इस अन्तर को) नहीं समझते? ^[1]
25. और हम ने नूह को उस की जाति की ओर रसूल बना कर भेजा। उन्होंने कहा वास्तव में, मैं तुम्हारे लिये खुले रूप से सावधान करने वाला हूँ।
26. कि इबादत (वन्दना) केवल अल्लाह ही की करो। मैं तुम्हारे ऊपर दुःख दायी दिन की यातना से डरता हूँ।
27. तो उन प्रमुखों ने जो उन की जाति में से काफिर हो गये, कहा: हम तो तुझे अपने ही जैसा मानव पुरुष देख रहे हैं। और हम देख रहे हैं कि तुम्हारा अनुसरण केवल वही लोग कर रहे हैं जो हम में नीचे हैं। वह भी बिना सोचे-समझे। और हम अपने ऊपर तुम्हारी कोई प्रधानता भी नहीं देखते, बल्कि हम तुम्हें झूठा समझते हैं।

لَا جُرْمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٢٢﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحٰتِ وَآخَبْتُوٓا۟ إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ ﴿٢٣﴾

مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا ۚ أَفَلَا تَنظُرُونَ ﴿٢٤﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٥﴾

أَنْ لَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمِ الْيَوْمِ ﴿٢٦﴾

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا تَأْتِكُ الْآبِشْرَ ۖ أَمْ تَأْتِكُمْ أَسْمَٰكُ الْإِلَٰهِ الَّذِينَ هُمْ أَرَادُوا لَنَا بِأَدَى الرَّأْيِ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ ۚ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِينَ ﴿٢٧﴾

1 कि दोनो का परिणाम एक नहीं हो सकता। एक को नरक में और दूसरे को स्वर्ग में जाना है। (देखिये: सूरह, हश्म आयत: 20)

28. उस (अथात् नूह) ने कहा: हे मेरी जाति के लोगों! तुम ने इस बात पर विचार किया कि यदि मैं अपने पालनहार की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और मुझे उस ने अपने पास से एक दया^[1] प्रदान की हो, फिर वह तुम्हें सुझायी न दे, तो क्या हम उसे तुम से चिपका^[2] दें, जब कि तुम उसे नहीं चाहते?

قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيْتَةٍ مِنْ رَبِّي وَأَنْتُمْ رُصَمَاءُ مِنْ عِنْدِي فَعَمِيتَ عَلَيْكُمْ أَنْزَلْنَا مُكُوهَا وَإِنْتُمْ لَهَا كَاهُونَ ۝

29. और हे मेरी जाति के लोगों! मैं इस (सत्य के प्रचार) पर तुम से कोई धन नहीं माँगता। मेरा बदला तो अल्लाह के ऊपर है। और मैं उन्हें (अपने यहाँ से) धुतकार नहीं सकता जो ईमान लाये हैं, निश्चय वे अपने पालनहार से मिलने वाले हैं, परन्तु मैं देख रहा हूँ कि तुम जाहिलों जैसी बातें कर रहे हो।

وَيَقُولُوا لَأَسْأَلَنَّكُمْ عَلَيْهِ مَا لَأَنْ أَجْرِي الْأَعْلَىٰ
اللَّهُ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّهُمْ مُثَقَّفُوا وَرَأَوْهُمْ
وَالَّذِينَ آرَأَكُمْ قَوْمًا تَبْهَتُونَ ۝

30. और हे मेरी जाति के लोगों! कौन अल्लाह की पकड़ से^[3] मुझे बचायेगा, यदि मैं उन को अपने पास से धुतकार दूँ? क्या तुम सोचते नहीं हो?

وَيَقَوْمٍ مَنْ يَبْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ طَرَدْتُمْ أَفْلا
تَذَكَّرُونَ ۝

31. और मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के कोषागार (खज़ाने) हैं। और न मैं गुप्त बातों का ज्ञान रखता हूँ। और यह भी नहीं कहता कि मैं फ़रिश्ता हूँ। और यह भी नहीं कहता कि जिन को तुम्हारी

وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ
الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ إِنِّي مَلَكٌ وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ
تَزَادِي أَعْيُنُكُمْ لَنْ يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا اللَّهُ أَعْلَمُ
بِمَا أَنْفُسُهُمْ رَبِّي إِذَا لَيْسَ الظَّالِمِينَ ۝

1 अर्थात् नबूवत और मार्गदर्शन।

2 अर्थात् में बलपूर्वक तुम्हें सत्य नहीं मनवा सकता।

3 अर्थात् अल्लाह की पकड़ से, जिस के पास ईमान और कर्म की प्रधानता है, धन-धान्य की नहीं।

आँखें घृणा से देखती हैं अल्लाह उन्हें कोई भलाई नहीं देगा। अल्लाह अधिक जानता है जो कुछ उन के दिलों में है। यदि मैं ऐसा कहूँ तो निश्चय अत्याचारियों में हो जाऊँगा।

32. उन्होंने ने कहा: हे नूह! तू ने हम से झगड़ा किया और बहुत झगड़ लिया, अब वह (यातना) ला दो जिस की धमकी हमें देते हो यदि तुम सच्च बोलने वालों में हो।

33. उस ने कहा: उसे तो तुम्हारे पास अल्लाह ही लायेगा, यदि वह चाहेगा। और तुम (उसे) विवश करने वाले नहीं हो।

34. और मेरी शुभ चिन्ता तुम्हें कोई लाभ नहीं पहुँचा सकती यदि मैं तुम्हारा हित चाहूँ जब कि अल्लाह तुम्हें कुपथ करना चाहता हो। और तुम उसी की ओर लोटाये जाओगे।

35. क्या वह कहते हैं कि उस ने यह बात स्वयं बना ली है? तुम कहो कि यदि मैं ने इसे स्वयं बना लिया है, तो मेरा अपराध मुझी पर है, और मैं निर्दोष हूँ उस अपराध से जो तुम कर रहे हो।

36. और नूह की ओर वही (प्रकाशना) की गयी कि तुम्हारी जाति में से ईमान नहीं लायेंगे, उन के सिवा जो ईमान ला चुके हैं। अतः उस से दुखी न बनो जो वह कर रहे हैं।

37. और हमारी आँखों के सामने हमारी

قَالُوا يَوْمَئِذٍ تَدَّ جَادِلْنَا فَكُذِّبْنَا فَنَدَىٰ نَارًا فَلَئِمَّا
بِمَا تَعْبُدُونَ أَن كُنْتُمْ مِنَ الضَّالِّينَ ﴿٣٢﴾

قَالَ إِنَّمَا أَنذَرْتُكُمُ بِاللَّهِ إِنَّ سَاءَ مَا تَنْتَهُمُ
بِمُعْجِزِينَ ﴿٣٣﴾

وَلَا يَنْفَعُكُمْ نَصِيحِي إِن أَرَدْتُ أَنْ أَنْصَحَ لَكُمْ إِن
كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يُغْوِيَكُمْ هُوَ ذَاكُمْ وَاللَّهُ
سَرِيعٌ ﴿٣٤﴾

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ إِن افْتَرَيْتُهُ فَعَلَ
إِجْرَائِي وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ﴿٣٥﴾

وَأُدْعَىٰ إِلَىٰ نُوحٍ إِنَّهُ لَمِنَ الْمُؤْمِنِينَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا
مَنْ قَدَّ امْنَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

وَأَسْمِعُ الْفُلَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَاَوْحِيَنَّآ إِلَىٰ عَالِي الْبَيْتِ

वह्नी के अनुसार एक नाव बनाओ, और मुझ से उन के बारे में कुछ^[1] न कहना जिन्होंने अत्याचार किये हैं। वास्तव में वे डूबने वाले हैं।

38. और वह नाव बनाने लगा, और जब भी उस की जाति के प्रमुख उस के पास से गुज़रते, तो उस की हँसी उड़ाने नूह ने कहा: यदि तुम हमारी हँसी उड़ाने हो तो हम भी ऐसे ही (एक दिन) तुम्हारी हँसी उड़ायेंगे।

39. फिर तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा कि किस पर अपमान कारी यातना आयेगी। और स्थाई दुःख किस पर उतरेगा?

40. यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आ गया, और तन्नूर उबलने लगा तो हम ने (नूह से) कहा: उस में प्रत्येक प्रकार के जीवों के दो जोड़े रख लो। और अपने परिजनों को, उन के सिवा जिन के बारे में पहले बता दिया गया है, और जो ईमान लाये हैं। और उस के साथ थोड़े ही ईमान लाये थे।

41. और उस (नूह) ने कहा: इस में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम ही से इस का चलना तथा इसे रुकना है। वास्तव में मेरा पालनहार बड़ा क्षमाशील दयावान् है।

42. और वह उन्हें लिये पर्वत जैसी ऊँची लहरों में चलती रही। और नूह ने अपने पुत्र को पुकारा, जब कि वह उन से अलग था: हे मेरे पुत्र! मेरे साथ सवार

فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّهُمْ مُّعْرَفُونَ ﴿٣٨﴾

وَيَصْنَعُ الْفُلَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأَ مِنْ قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ قَالَ إِنْ تَسْخَرُوا مِنَّا فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ ﴿٣٩﴾

هُنَّوْفَ تَعْمَلُونَ مِمَّنْ قَبْلِهِ عَذَابٌ يُجْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقْتَدِرٌ ﴿٤٠﴾

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُورُ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ وَمَا آمَنَ مَعَهُ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٤١﴾

وَقَالَ الْكَلْبُ لَوْ لَوِيتُ بِاسْمِ اللَّهِ جَرَّهَا وَمُسْتَهْمًا إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٤٢﴾

وَهُوَ يَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ وَتَنَادَى نُوحٌ ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يَا بُنَيَّ ارْكَبْ مَعَنَا وَلَا تَكُنْ مَعَ الْكَافِرِينَ ﴿٤٣﴾

1 अर्थात् प्रार्थना और सिफ़ारिश न करना।

हो जा, और काफिरों के साथ न रहा

43. उस ने कहा: मैं किसी पर्वत की ओर शरण ले लूँगा, जो मुझे जल से बचा लेगा। नूह ने कहा: आज अल्लाह के आदेश (यातना) से कोई बचाने वाला नहीं, परन्तु जिस पर वह (अल्लाह) दया कर दे। और दोनों के बीच एक लहर आड़े आ गयी और वह डूबने वालों में हो गया।

44. और कहा गया: हे धरती! अपना जल निगल जा। और हे आकाश! तू थम जा। और जल उतर गया, और आदेश पूरा कर दिया गया, और नाव "जूदी"^[1] पर ठहर गई। और कहा गया कि अत्याचारियों के लिये (अल्लाह की दया से) दूरी है।

45. तथा नूह ने अपने पालनहार से प्रार्थना की, और कहा: मेरे पालनहार! मेरा पुत्र मेरे परिजनों में से है। निश्चय तेरा वचन सत्य है, तथा तू ही सब से अच्छा निर्णय करने वाला है।

46. उस (अल्लाह) ने उत्तर दिया: वह तेरा परिजन नहीं। (क्योंकि) वह कुकर्मि है। अतः मुझ से उस चीज़ का प्रश्न न करो जिस का तुझे कोई ज्ञान नहीं। मैं तुझे बताता हूँ कि अज्ञानों में न हो जा।

47. नूह ने कहा: मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण चाहता हूँ कि मैं तुझ से

قَالَ سَأُوۡبَىٰٓٓ إِلَىٰ جَبَلٍ يَّعۡصِمُنِي مِنَ الْمَآءِ ۖ قَالَ لَهَا۟ صَمَ الْيَوۡمِ ۚ وَمِنۡ أَمۡرِ اللّٰهِ الْاٰمَنُ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُنۡغَرِقِيۡنَ ۝

وَقِيۡلَ يَاۡرۡضُ اٰبۡلِغِيۡ مَآءَكَ وِوَسِيۡمَآءِ الْاَفۡلَاحِ
وَوَحۡشِ الْمَآءِ ۚ وَفَضَى الْاَمۡرُ ۚ وَاسۡتَوۡتَ عَلٰى
الۡجُوۡدِيِّ ۚ وَقِيۡلَ بَعۡدَ الْاَلۡقَمِ الْظَّالِمِيۡنَ ۝

وَنَادَى نُوۡحٌ رَبَّهُ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ اِبۡنِيۡمِنۡ
اَهۡلِيۡ وَاِنَّ وَعَدَكَ الْحَقُّ ۚ وَاَنْتَ اَحۡكَمُ
الۡحٰكِمِيۡنَ ۝

قَالَ يٰۡنُوۡحُ اِنَّهُ لَيْسَ مِنْ اَهۡلِكَ اِنَّهُ عَمَلٌ غَيۡرُ
صَالِحٍ ۚ وَلَا تَسۡئَلُنۡ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلۡمٌ اِنَّۡ
اَعۡظَمَ اَنْ تَكُوۡنَ مِنَ الْجٰهِلِيۡنَ ۝

قَالَ رَبِّ اِنِّيۡ اَعُوۡذُ بِكَ اَنْ اَسۡئَلَكَ مَا لَيْسَ لِيۡ

1 "जूदी" एक पर्वत का नाम है जो कुर्दिस्तान में "इब्ने उमर" द्वीप के उत्तर-पुर्व और स्थित है। और आज भी जूदी के नाम से ही प्रसिद्ध है।

ऐसी चीज़ की मांग करूँ जिस (की वास्तविकता) का मुझे कोई ज्ञान नहीं है।^[1] और यदि तू ने मुझे क्षमा नहीं किया और मुझ पर दया न की तो मैं क्षतिग्रस्तों में हो जाऊँगा।

يٰٓهٗ عٰلَمُوۡرِ الْغٰیْبِۙ وَاَلَا تَعۡفُوۡنَ لِيۙ وَتُرۡحَمٰنِۙ اَکۡرَمُ الرَّحۡمٰنِۙ
 ۝۱۱

48. कहा गया कि हे नूह! उतर जा हमारी ओर से रक्षा और सम्पन्नता के साथ अपने ऊपर तथा तेरे साथ के समुदायों के ऊपर। और कुछ समुदाय ऐसे हैं जिन को हम संसारिक जीवन सामग्री प्रदान करेंगे, फिर उन्हें हमारी दुःखदायी यातना पहुँचेगी।

تَبٰیۡلُۙ يٰۤاٰمُرُۙ اٰهۡبِطۡۙ بِسَلٰمٍۙ مِّنَّاۙ وَبَرَکٰتِۙ عَلَیۡکَۙ
 وَعَلٰیۙ اٰسَرِۙ مِمَّنۙ مَّعَکَۙ وَاَمۡرٍۙ سَنَسۡتَعۡیۡبُهُمۡۙ ثُمَّۙ
 یَسۡتَهۡمُۙ مِمَّاۙ عٰدَاۙبِۙ الۡیَومِۙ ۝۱۲

49. यह ग़ैब की बातें हैं जिन्हें (हे नबी!) हम आप की ओर प्रकाशना (वह्नी) कर रहे हैं। इस से पूर्व न तो आप इन्हें जानते थे और न आप की जाति। अतः आप सहन करें। वास्तव में अच्छा परिणाम आज्ञाकारियों के लिये है।

تِلۡکَۙ مِنْۙ اٰتِیَآءِۙ الْغٰیۡبِۙ نُوۡحِیۡۙ اِلَیۡکَۙ مَاۙ کُنۡتَۙ
 تَعۡلَمُهَاۙ اَنْتَۙ وَلَاۙ قَوْمَکَۙ مِنْۙ قَبۡلِۙ هٰذَاۙ اَفَاصۡبِرُۙ
 اِنَّۙ الْعَاقِبَةَۙ لِلۡمُتَّقِیۡنَۙ ۝۱۳

50. और "आद" (जाति) की ओर उन के भाई हूद को भेजा उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगों! अल्लाह की इबादत (वंदना) करो। उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है। तुम इस के सिवा कुछ नहीं हो कि झूठी बातें घड़ने वाले हो।^[2]

وَالِیۙ عَادٍۙ اِخَاهُمۡۙ هُوۡدٌۙ اَقَالَۙ یَقُوۡمُۙ اَعۡبُدُوۡاۙ اللّٰهَۙ
 مَاۙ لَکُمۡۙ مِنْۙ الٰهِۙ غَیۡرَکَۙ اِنَّۙ اَنْتُمْۙ لَۤاۙ مُفۡتَرُوۡنَۙ ۝۱۴

51. हे मेरी जाति के लोगो! मैं तुम से इस पर कोई बदला नहीं चाहता।

یَقُوۡمُۙ لَاۙ اَسۡئَلُکُمۡۙ عَلَیۡهِۙ اَجۡرًاۙ اِنَّۙ اَجۡرِیۙ الَّاۙ عَلٰی

1 अर्थात् जब नूह (अलैहिस्सलाम) को बता दिया गया कि तुम्हारा पुत्र ईमान वालों में से नहीं है इस लिये वह अल्लाह के अज़ाब से बच नहीं सकता तो नूह तुरन्त अल्लाह से क्षमा माँगने लगे।

2 अर्थात् अल्लाह के सिवा तुम ने जो पूज्य बना रखे है वह तुम्हारे मन घड़त पूज्य है।

मेरा पारिश्रमिक बदला उसी (अल्लाह) पर है जिस ने मुझे पैदा किया है। तो क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते।^[1]

52. हे मेरी जाति के लोगो! अपने पालनहार से क्षमा माँगो। फिर उस की ओर ध्यानमग्न हो जाओ। वह आकाश से तुम पर धारा प्रवाह वर्षा करेगा। और तुम्हारी शक्ति में अधिक शक्ति प्रदान करेगा। और अपराधी हो कर मुँह न फेरो।
53. उन्होंने ने कहा: हे हूद! तुम हमारे पास कोई स्पष्ट (खुला) प्रमाण नहीं लाये। तथा हम तुम्हारी बात के कारण अपने पूज्यों को त्यागने वाले नहीं है, और न हम तुम्हारा विश्वास करने वाले हैं।
54. हम तो यही कहेंगे कि तुझे हमारे किसी देवता ने बुराई के साथ पकड़ लिया है। हूद ने कहा: मैं अल्लाह को (गवाह) बनाता हूँ, और तुम भी साक्षी रहो कि मैं उस शिक (मिश्रणवाद) से विरक्त हूँ जो तुम कर रहे हो।
55. उस (अल्लाह) के सिवा। तुम सब मिल कर मेरे विरुद्ध षडयंत्र रच लो, फिर

الَّذِينَ فَطَرْنِي أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٥٠﴾

وَلَقَوْمٌ اسْتَعْفُوا رَبَّهُمْ ثُمَّ نُوِيَ إِلَيْهِمْ يُرْسِلُ
السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا وَيَزِدُّكُمْ قُوَّةً إِلَى
قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَكَّلُوا مُجْرِمِينَ ﴿٥١﴾

قَالُوا يَا هُوَذَا مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ
بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ
بِعُومِينَ ﴿٥٢﴾

إِنْ تَقُولُ إِلَّا اعْتَرَاكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوءٍ قَالَ إِنِّي
أَشْهَدُ بِاللَّهِ وَاللَّهُ هَدَانِي وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٥٣﴾

مَنْ دُونِهِ فَكَيْدُونِي كَمَا تُمَلِكُونَ لَا تَنْظُرُونَ ﴿٥٤﴾

1 अर्थात् यदि तुम समझ रखते तो अवश्य सोचते कि एक व्यक्ति अपने किसी संसारिक स्वार्थ के बिना क्यों हमें रातो दिन उपदेश दे रहा है और सारे दुख झेल रहा है। उस के पास कोई ऐसी बात अवश्य होगी जिस के लिये अपनी जान जोखिम में डाल रहा है।

मुझे कुछ भी अवसर न दो।^[1]

56. वास्तव में, मैं ने अल्लाह पर जो मेरा पालनहार और तुम्हारा पालनहार है, भरोसा किया है। कोई चलने वाला जीव ऐसा नहीं जो उस के अधिकार में न हो, वास्तव में मेरा पालनहार सीधी राह^[2] पर है।

57. फिर यदि तुम विमुख रह गये तो मैं ने तुम्हें वह उपदेश पहुँचा दिया है जिस के साथ मुझे भेजा गया है। और मेरा पालनहार तुम्हारा स्थान तुम्हारे सिवा किसी^[3] और जाति को दे देगा। और तुम उसे कुछ हानि नहीं पहुँचा सकोगे, वास्तव में मेरा पालनहार प्रत्येक चीज़ का रक्षक है।

58. और जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हम ने हूद को और उन को जो उस के साथ ईमान लाये अपनी दया से बचा लिया, और हम ने उन को घोर यातना से बचा लिया।

59. वही (जाति) "आद" है, जिस ने अपने पालनहार की आयतों (निशानियों) का इन्कार किया, और उस के रसूलों की बात नहीं मानी, और प्रत्येक सच्च के विरोधी के पीछे चलते रहे।

إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا
هُوَ أَخَذَ بِنَاصِيَتَيْهَا إِنَّ رَبِّي عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَوِيٍّ ﴿٥٦﴾

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَقْنَاكُمْ مَا أَرْسَلْنَا بِهِ إِلَيْكُمْ
وَسَيَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا
إِنَّ رَبِّي عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿٥٧﴾

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ
بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَنَجَّيْنَاهُمْ مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٨﴾

وَتِلْكَ عَادُ جَدُّوآبَالَيْتِ رَبِّهِمْ وَعَصَاوَأَرْسَلَهُ
وَاتَّبَعُوا أَمْرًا كُلَّ جَبَّارِعَيْنِيذٍ ﴿٥٩﴾

- 1 अर्थात् तुम और तुम्हारे सब देवी-देवता मिल कर भी मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। क्योंकि मेरा भरोसा जिस अल्लाह पर है पूरा संसार उस के नियंत्रण में है उस के आगे किसी की शक्ति नहीं कि किसी का कुछ बिगाड़ सके।
- 2 अर्थात् उस की राह अत्याचार की राह नहीं हो सकती कि तुम दुराचारी और कुपथ में रह कर सफल रहो और मैं सदाचारी रह कर हानि में पड़ूँ।
- 3 अर्थात् तुम्हें ध्वस्त निरस्त कर देगा।

60. और इस संसार में धिक्कार उन के साथ लगा दी गई। तथा प्रलय के दिन भी लगी रहेगी। सुनो! आद ने अपने पालनहार को अस्वीकार कर दिया। सुनो! हूद की जाति: आद के लिये दूरी^[1] हो!

61. और समूद^[2] की ओर उन के भाई सालेह को भेजा। उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की इबादत (वंदना) करो उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है। उसी ने तुम को धरती से उत्पन्न किया, और तुम को उस में बसा दिया, अतः उस से क्षमा माँगो और उसी की ओर ध्यानमग्न हो जाओ, वास्तव में मेरा पालनहार समीप है (और दुआयें) स्वीकार करने वाला है।^[3]

62. उन्होंने ने कहा: हे सालेह! हमारे बीच इस से पहले तुझ से बड़ी आशा थी, क्या तू हमें इस बात से रोक रहा है कि हम उस की पूजा करें जिस की पूजा हमारे बाप दादा करते रहे? तू जिस चीज़ (एकेश्वरवाद) की ओर बुला रहा है, वास्तव में उस के बारे में हमें संदेह है, जिस में हमें द्विधा है।

63. उस (सालेह) ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! तुम ने विचार किया कि

وَأْتِيعُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا الْعَنَةَ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ
الْآرَانَ عَادًا كَفَرًا وَارْتَمَوْا الْآبِعَادَ قَوْمَ هُودٍ

وَأَلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ
مَا لَكُمْ مِنَ اللَّهِ عِيبًا هُوَ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ
وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوا لَهُمْ يَوْمَ تُنْفَخُ
الْأَسْفُلُ إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ مُجِيبٌ

قَالُوا الصَّلَاةُ قَدْ كُنْتَ فِينَا مَرْحُومًا قَبْلَ هَذَا أَتَنْهَانَا
أَنْ نَعْبُدَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّ الْإِنْفُسَ لَشَكَّ فِيهَا
تَدْعُونَنَا إِلَى رُبِّ سِوَى

قَالَ يَقَوْمِ ارْتَابْتُمْ إِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّي

1 अर्थात् अल्लाह की दया से दूरी। इस का प्रयोग धिक्कार और विनाश के अर्थ में होता है।

2 यह जाति तबूक और मदीना के बीच "अल-हिज्र" में आबाद थी।

3 देखिये: सूरह बकरा, आयत: 186।

यदि मैं अपने पालनहार की ओर से एक स्पष्ट खुले प्रमाण पर हूँ, और उस ने मुझे अपनी दया प्रदान की हो, तो कौन है जो अल्लाह के मुक़ाबले में मेरी सहायता करेगा, यदि मैं उस की अवैज्ञा करूँ? तुम मुझे घाटे में डालने के सिवा कुछ नहीं दे सकते।

64. और हे मेरी जाति के लोगो! यह अल्लाह^[1] की ऊँटनी तुम्हारे लिये एक निशानी है तो इसे छोड़ दो, अल्लाह की धरती में चरती फिरे। और उसे कोई दुःख न पहुँचाओ, अन्यथा तुम्हें तुरन्त यातना पकड़ लेगी।
65. तो उन्होंने उसे मार डाला। तब सालेह ने कहा: तुम अपने नगर में तीन दिन और आनन्द ले लो। यह वचन झूठा नहीं है।
66. फिर जब हमारा आदेश आ गया तो हम ने सालेह को और जो लोग उस के साथ ईमान लाये अपनी दया से और उस दिन के अपमान से बचा लिया। वास्तव में आप का पालनहार ही शक्तिशाली प्रभुत्वशाली है।
67. और अत्याचारियों को कड़ी ध्वनि ने पकड़ लिया, और अपने घरों में औधे पड़े रह गये।

وَاتَّبَعْنِي مِنهُ رِجْمَةً فَمَنْ يَبْصُرُنِي مِنَ الْغَايِبِ
عَصِيْبَةً فَمَا تُزِيدُنِي إِلاَّ عَذَابًا مُّهِينًا ۝

وَيَقُولُ هَذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةٌ فَمَنْ أَكْفَرُ
أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَتَّبِعُوا سُبُوًّا فَيَأْخُذْكُمْ عَذَابٌ
قَرِيبٌ ۝

فَقَعَرُوهَا فَأَقَالَ سَمْعَوِيُّ ذَا رِكْمٍ تِلْكَ آيَاتُ ذَٰلِكَ
وَعَذَابٌ غَيْرُ مُكْتَسَبٍ ۝

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا صَالِحًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ
بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَمِن خِزْيِ يَوْمِئِذٍ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ
الْعَزِيزُ ۝

وَآخُذَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ فَأَصْحَوْا فِي دِيَارِهِمْ
جُنُودًا ۝

1 उसे अल्लाह की ऊँटनी इस लिये कहा गया है कि उसे अल्लाह ने उन के लिये एक पर्वत से निकाला था। क्योंकि उन्होंने ने इस की माँग की थी कि यदि पर्वत से ऊँटनी निकलेगी तो हम ईमान लायेंगे। (तफ्सीर कुरुबी)

68. जैसे वह वहाँ कभी बसे ही नहीं थे। सावधान! समूद ने अपने पालनहार को अस्वीकार कर दिया। सुन लो, समूद के लिये दूरी हो।
69. और हमारे फरिश्ते इब्राहीम के पास शुभसूचना ले कर आये। उन्होंने सलाम किया तो उस ने उत्तर में सलाम किया। फिर देर न हुई कि वह एक भुना हुआ बछड़ा^[1] ले आये।
70. फिर जब देखा कि उन के हाथ उस की ओर नहीं बढ़ते तो उन की ओर से संशय में पड़ गया। और उन से दिल में भय का अनुभव किया। उन्होंने कहा: भय न करो। हम लूत^[2] की जाति की ओर भेजे गये हैं।
71. और उस (इब्राहीम) की पत्नी खड़ी हो कर सुन रही थी। तो वह हँस पड़ी^[3], तो उसे हम ने इसहाक (के जन्म) की शुभ सूचना^[4] दी। और इसहाक के पश्चात् याकूब की।
72. वह बोली: हाय मेरा दुर्भाग्य! क्या मेरी संतान होगी, जब कि मैं बुढ़िया हूँ, और मेरा यह पति भी बूढ़ा है? वास्तव में यह बड़े आश्चर्य की बात है।
73. फरिश्तों ने कहा: क्या तू अल्लाह के

كَانُوا يَتَّبِعُونَ فِيهَا آلَ إِبْرَاهِيمَ النَّبِيِّ الْقَائِلِ إِنَّكُمْ أَقْرَبُ إِلَيْهِمْ
أَلَّا يَتَّبِعُوا فِيهَا آلَ إِبْرَاهِيمَ ۝

وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَى قَالُوا سَلَامًا
قَالَ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بَلَغْتُ أَنْ جَاءَ بَعْضُ عِजْبِي ۝

فَلَمَّا رَأَى أَنَّهُ يُؤْمِرُ بِاللَّيْلِ يَكْرَهُهُمُ وَأَوْجَسَ
مِنْهُمْ خِيفَةً قَالُوا لَا تَحْزَنْ إِنَّا أَرْسَلْنَا آلَ قَوْمٍ
لُوطًا ۝

وَأَمْرَأَتُهُ قَائِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَتَبَسَّ بِهِنَّ يَا إِسْحَاقَ
وَصِنِّ وَرَأَى إِسْحَاقُ يَعْقُوبَ ۝

قَالَتْ يَوْمَئِذٍ ابْنِ آدَمَ إِنِّي أَلِدُ وَأَنَا عَجُوزٌ وَهَذَا بَعْضٌ
مَا كُنْتُمْ تَدْعُونَ هَذَا الشَّيْءُ عَجِيبٌ ۝

قَالُوا اتَّعَجِبِينَ مِنَ أَمْرِ اللَّهِ رَحِمْتُ اللَّهُ وَبَرَكَّتْهُ

1 अर्थात् अतिथि सत्कार के लिये।

2 लूत अलैहिस्सलाम को भाष्यकारों ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम का भतीजा बताया है, जिन को अल्लाह ने सदूम की ओर नबी बना कर भेजा।

3 कि भय की कोई बात नहीं है।

4 फरिश्तों द्वारा।

आदेश से आश्चर्य करती है? हे घर वालों! तुम सब पर अल्लाह की दया तथा सम्पन्नता है, निःसंदेह वह अति प्रशंसित श्रेष्ठ है।

عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ إِنَّهُ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ ۝

74. फिर जब इब्राहीम से भय दूर हो गया और उसे शुभ सूचना मिल गयी तो वह लूत की जाति के बारे में हम से आग्रह करने लगा।^[1]

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَى
مَّجِدًا لَّنَا فِي قَوْمِ لُوطٍ ۝

75. वास्तव में इब्राहीम बड़ा सहनशील, कोमल हृदय तथा अल्लाह की ओर ध्यानमग्न रहने वाला था।

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَرَأِيفًا أَوَّاهٌ مُنِيبٌ ۝

76. (फरिश्तों ने कहा): हे इब्राहीम! इस बात को छोड़ो, वास्तव में तेरे पालनहार का आदेश^[2] आ गया है, तथा उन पर ऐसी यातना आने वाली है जो टलने वाली नहीं है।

يَا إِبْرَاهِيمُ اعْرِضْ عَنْ هَذَا إِنَّهُ قَدْ جَاءَ أَمْرٌ
رَّبِّكَ وَالنَّهْمُ إِلَيْهِمْ وَعَدَابٌ عَزِيمٌ ۝

77. और जब हमारे फरिश्ते लूत के पास आये तो उन का आना उसे बुरा लगा। और उन के कारण व्याकुल हो गया। और कहा: यह तो बड़ी विपत्ता का^[3] दिन है।

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِئِمًا بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ
دَرْعًا وَقَالَ هَذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ ۝

78. और उस की जाति के लोग दोड़ते हुये उस के पास आ गये। और इस

وَجَاءَهُ قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا

1 अर्थात् प्रार्थना करने लगा कि लूत की जाति को अभी संभलने का और अवसर दिया जाये हो सकता है वह ईमान लायें।

2 अर्थात् यातना का आदेश।

3 फरिश्ते सुन्दर किशोरों के रूप में आये थे। और लूत अलैहिस्सलाम की जाति का आचरण यह था कि वह बालमैथुन में रुचि रखती थी। इसलिये उन्होंने उन को पकड़ने की कोशिश की। इसीलिये इन अतिथियों के आने पर लूत अलैहिस्सलाम व्याकुल हो गये थे।

से पूर्व वह कुकर्म^[1] किया करते थे। लूत ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! यह मेरी^[2] पुत्रियाँ हैं, वह तुम्हारे लिये अधिक पवित्र हैं, अतः अल्लाह से डरो, और मेरे अतिथियों के बारे में मुझे अपमानित न करो। क्या तुम में कोई भला मनुष्य नहीं है।

79. उन लोगों ने कहा: तुम तो जानते ही हो कि हमारा तेरी पुत्रियों में कोई अधिकार नहीं^[3] तथा वास्तव में तुम जानते हो कि हम क्या चाहते हैं।

80. उस (लूत) ने कहा: काश मेरे पास बल होता! या कोई दृढ़ सहारा होता जिस की शरण लेता!

81. फ़रिश्तों ने कहा: हे लूत! हम तेरे पालनहार के भेजे हुये (फ़रिश्ते) हैं। वह कदापि तुझ तक नहीं पहुँच सकेंगे, जब कुछ रात रह जाये तो अपने परिवार के साथ निकल जा, और तुम में से कोई फिर कर न देखे। परन्तु तेरी पत्नी (साथ नहीं जायेगी)। उस पर भी वही बीतने वाला है जो उन पर बीतेगा। उन की यातना का निर्धारित समय प्रातः काल है। क्या प्रातः काल समीप नहीं है?

82. फिर जब हमारा आदेश आ गया तो हम ने उस बस्ती को तहस नहस

يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ قَالَ يَقَوْمِ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي هُنَّ
أَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تَخْزُونِ فِي حَيْثُ بِي
أَكَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَشِيدٌ ۝

قَالُوا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِي بَنَاتِكَ مِنْ حَيْثُ
وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُو مَا نُزِّلُ ۝

قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِيَوْمِ قَوْمِي أُدْوَىٰ إِلَىٰ رُكْبِنِ
شَدِيدٍ ۝

قَالُوا يَا لَيْلُوطُ إِنَّا رَمَلْنَاكَ لَن يَصِلُوا إِلَيْكَ
فَأَسِرْ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ الْبَيْلِ وَلَا يَلْتَمِسُ
مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا أُمَّرَاتَكَ إِنَّهُ مُصِيبُهُمَا مَا
أَصَابَكُمْ إِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ أَلَيْسَ
الصُّبْحُ بِقَرِيبٍ ۝

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَلَىٰ آسَافِهَا وَأَمَّطَرْنَا

1 अर्थात् बालमैथुन। (तफ़सीरे कुर्तुबी)

2 अर्थात् बस्ती की स्त्रियाँ। क्यों कि जाति का नबी उन के पिता के समान होता है। (तफ़सीरे कुर्तुबी)

3 अर्थात् हमें स्त्रियों में कोई रुचि नहीं है।

कर दिया। और उन पर पकी हुई कंकरियों की बारिश कर दी।

83. जो तेरे पालनहार के यहाँ चिन्ह लगायी हुयी थीं। और वह^[1] (बस्ती) अत्याचारियों^[2] से कोई दूर नहीं है।

84. और मदन की ओर उन के भाई शुऐब को भेजा। उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की इबादत (वंदना) करो। उस के सिवा कोई तुम्हारा पूज्य नहीं है। और नाप तौल में कमी न करो।^[3] मैं तुम्हें सम्पन्न देख रहा हूँ। इसलिये मुझे डर है कि तुम्हें कहीं यातना न घेर ले।

85. हे मेरी जाति के लोगो! नाप तौल न्यायपूर्वक पूरा करो, और लोगों को उन की चीजें कम न दो, तथा धरती में उपद्रव फैलाते न फिरो।

86. अल्लाह की दी हुई बचत तुम्हारे लिये अच्छी है, यदि तुम ईमान वाले हो। और मैं तुम पर कोई रक्षक नहीं हूँ।

87. उन्होंने ने कहा: हे शुऐब! क्या तेरी नमाज़ (इबादत) तुझे आदेश दे रही है कि हम उसे त्याग दें जिस की पूजा हमारे बाप दादा करते रहे? अथवा अपने धनों में जो चाहें करें?

عَلَيْهَا حِجَارَةٌ مِّن سِجِّيلٍ مُّتَمَّوِدٌ ۝

مُسَوَّمَةٌ عِنْدَ رَبِّكَ وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ
بِبَعِيْدٍ ۝

وَالَّذِي مَدَّ يَدَيْهِ إِلَىٰ آخَاهُمْ سُعَيْبًا قَالَ يُقَوْمُ اعْبُدُوا
اللَّهَ مَا لَكُمْ مِّنَ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ وَلَا تَنْقُضُوا
الْحَيْكَالَ وَالْهَيْزَانَ إِنِّي أَرَاكُمْ بِخَيْرٍ وَإِنِّي
أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّجِيبٍ ۝

وَيَقَوْمٍ أَوْفُوا بِالْحَيْكَالَ وَالْهَيْزَانَ بِالْقِسْطِ
وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْتُوا فِي
الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝

بَقِيَّتُ اللَّهِ خَيْرٌ لِّكُم مِّنْكُمْ مَّا مَنِعَتْكُمْ
عَلَيْكُمْ بِحَفِيبٍ ۝

قَالُوا يَشْعَبُ أَبْصَلُوكَ تَأْمُرُكَ أَنْ نَتْرَكَ
مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّا لَفَعَلْنَا فَمَا نَنْتَوُا
إِنَّكَ لَأَنْتَ الْحَكِيمُ الرَّشِيدُ ۝

1 अर्थात् सदूम, जो समूद की बस्ती थी।

2 अर्थात् आज भी जो उन की नीति पर चल रहे हैं उन पर ऐसी ही यातना आ सकती है।

3 शुऐब की जाति में शिर्क (मिश्रणवाद) के सिवा नाप तौल में कमी करने का रोग भी था।

वास्तव में तू बड़ा ही सहनशील तथा भला व्यक्ति है!

88. शुऐब ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! तुम बताओ यदि मैं अपने पालनहार की ओर से प्रत्यक्ष प्रमाण पर हूँ, और उस ने मुझे अच्छी जीविका प्रदान की हो (तो कैसे तुम्हारा साथ दूँ?) मैं नहीं चाहता कि उस के विरुद्ध करूँ, जिस से तुम्हें रोक रहा हूँ। मैं जहाँ तक हो सके सुधार ही चाहता हूँ। और यह जो कुछ करना चाहता हूँ, अब्नाह के योगदान पर निर्भर करता है। मैं ने उसी पर भरोसा किया है, और उसी की ओर ध्यानमग्न रहता हूँ।

89. हे मेरी जाति के लोगो! तुम्हें मेरा विरोध इस बात पर न उभार दे कि तुम पर वही यातना आ पड़े जो नूह की जाति या हूद की जाति अथवा सालेह की जाति पर आई। और लूत की जाति तुम से कुछ दूर नहीं है।

90. और अपने पालनहार से क्षमा माँगो, फिर उसी की ओर ध्यानमग्न हो जाओ। वास्तव में मेरा पालनहार अति क्षमाशील तथा प्रेम करने वाला है।

91. उन्हीं ने कहा: हे शुऐब! तुम्हारी बहुत सी बात हम नहीं समझते। और हम तुम्हें अपने बीच निर्बल देख रहे हैं। और यदि भाई बन्धु न होते तो हम तुम को पथराव कर के मार डालते। और तुम हम पर कोई भारी तो नहीं हो।

قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي
وَرَزَقْنِي مِنهُ رِزْقًا حَسَنًا وَمَا أُرِيدُ أَنْ
أُخَالِفَكُمُ إِلَىٰ مَا أَنهَكُمُ عَنْهُ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا
الْإِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ وَمَا تَوْفِيقِي
إِلَّا بِاللَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۝

وَيَقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِي أَنْ يُصِيبَكُمْ مِثْلُ
مَا أَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ أَوْ قَوْمَ هُودٍ أَوْ قَوْمَ صَالِحٍ
وَمَا قَوْمٌ لَّوِطٌ مِّنكُمْ بِبَعِيدٍ ۝

وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَأَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ آلِهِ إِذْ قَالَ رَبِّي رَحِيمٌ
وَدُودٌ ۝

قَالُوا يَسْئِبُ مَا نَفَقَهُ كَثِيرًا مِّمَّا تَقُولُ وَإِنَّا
لَنَرَاكَ فِينَا ضَعِيفًا وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنَاكَ
وَإِنَّا عَلَيْنَا بِعَرِيضٍ ۝

92. शुऐब ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! क्या मेरे भाई बन्धु तुम पर अल्लाह से अधिक भारी हैं? कि तुम ने उसे पीठ पीछे डाल दिया है? ^[1] निश्चय मेरा पालनहार उसे (अपने ज्ञान के) घेरे में लिये हुये है जो तुम कर रहे हो।

قَالَ يَوْمَ ارْهَقَىٰ اَعْرَاسُكُمْ مِنَ اللّٰهِ
وَاتَّخَذَ نَوْمَهُ وَاَرَاءَكُمْ ظَهْرًا اِنَّ رَبِّي بِمَا
تَعْمَلُونَ غَاطٍ ۝

93. और हे मेरी जाति के लोगो! तुम अपने स्थान पर काम करो, मैं (अपने स्थान पर) काम कर रहा हूँ। तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा कि किस पर ऐसी यातना आयेगी जो उसे अपमानित कर दे। तथा कौन झूठा है? तुम प्रतीक्षा करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वाला हूँ।

وَيَقُوْرُ اَعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ سَوْفَ
تَعْمَلُوْنَ مِنْ يَّاتِيْهِ عَذَابٌ يُّٰخِزِيْهِ وَمَنْ هُوَ
كَادِبٌ وَّارْتَقِبُوْا اِنِّىْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ۝

94. और जब हमारा आदेश आ गया, तो हमने शुऐब को, और जो उस के साथ ईमान लाये थे, अपनी दया से बचा लिया। और अत्याचारियों को कड़ी ध्वनी ने पकड़ लिया। फिर वे अपने घरों में औंधे मुँह पड़े रह गये।

وَلَمَّا جَاءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
الصَّيْغَةَ وَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جُثَمِيْنَ ۝

95. जैसे वह कभी उन में बसे ही न रहे हों। सुन लो! मद्यन वाले भी वैसे ही दूर फेंक दिये गये जैसे समूद दूर फेंक दिये गये।

كَانَ لَمْ يَغْتَوِ اِيْهَا اِلَّا بَعْدَ الْمَدِيْنِ كَمَا
بَعَدَتْ نَبُوْدٌ ۝

96. और हम ने मूसा को अपनी निशानियों (चमत्कार), तथा खुले तर्क के साथ भेजा।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوسٰى بِآيٰتِنَا وَاَسْلَطْنَا
مُؤَيِّنًا ۝

1 अर्थात तुम मेरे भाई बन्धु के भय से मेरे विरुद्ध कुछ करने से रुक गये तो क्या वह तुम्हारे विचार में अल्लाह से अधिक प्रभाव रखते हैं?

97. फ़िरऔन और उस के प्रमुखों की ओर। तो उन्होंने ने फ़िरऔन की आज्ञा का अनुसरण (पालन) किया। जब कि फ़िरऔन की आज्ञा सुधरी हुई न थी।
98. वह प्रलय के दिन अपनी जाति के आगे चलेगा, और उन को नरक में उतारेगा और वह क्या ही बुरा उतरने का स्थान है?
99. और वे धिक्कार के पीछे लगा दिये गये इस संसार में भी और प्रलय के दिन भी। कैसा बुरा पुरस्कार है जो उन्हें दिया जायेगा?
100. हे नबी! यह उन बस्तियों के समाचार हैं जिन का वर्णन हम आप से कर रहे हैं। उन में से कुछ निर्जन खड़ी और कुछ उजड़ चुकी हैं।
101. और हम ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु उन्होंने स्वयं अपने ऊपर अत्याचार किया। तो उन के वे पूज्य जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पुकार रहे थे, उन के कुछ काम नहीं आये, जब आप के पालनहार का आदेश आ गया, और उन्होंने ने उन को हानि पहुँचाने के सिवा और कुछ नहीं किया।^[1]
102. और इसी प्रकार तेरे पालनहार की पकड़ होती है, जब वह किसी अत्याचार करने वालों की, बस्ती को

إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَأَتَوْهُم بِأَمْرٍ
فِرْعَوْنَ وَمَأْمُورٍ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ۝

يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأَوْدَدَهُمُ النَّارُ
وَبِئْسَ الْوَرْدُ الْمَوْرُودُ ۝

وَأَشْرَعُوا فِي هَذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يُنْسَى
الرِّقْدُ الْمَرْفُودُ ۝

ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْقُرَى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْهَا قَائِمٌ
وَحَصِيدٌ ۝

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَمَا أَغْنَتْ
عَنَّهُمُ آلِهَتُهُمُ الَّتِي يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
مِنْ شَيْءٍ لَمَّا جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ
تَتَّبِعُ ۝

وَكَذَلِكَ لَكَ أَخَذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَى وَهِيَ
ظَالِمَةٌ إِنَّ أَخَذًا أَلِيمٌ شَدِيدٌ ۝

1 अर्थात् यह जातियाँ अपने देवी-देवता की पूजा इसलिये करती थी कि वह उन्हें लाभ पहुँचायेंगे। किन्तु उन की पूजा ही उन पर अधिक यातना का कारण बन गई।

पकड़ता है। निश्चय उस की पकड़ दुःखदायी और कड़ी होती^[1] है।

103. निश्चय इस में एक निशानी है, उस के लिये जो परलोक की यातना से डरे। वह ऐसा दिन होगा जिस के लिये सभी लोग एकत्रित होंगे, तथा उस दिन सब उपस्थित होंगे।
104. और हम उसे केवल एक निर्धारित अवधि के लिये देर कर रहे हैं।
105. जब वह दिन आ जायेगा तो अल्लाह की अनुमति बिना कोई प्राणी बात नहीं करेगा, फिर उन में से कुछ आभागे होंगे और कुछ भाग्यवान होंगे।
106. फिर जो भाग्यहीन होंगे, वही नरक में होंगे, उन्हीं की उस में चीख और पुकार होगी।
107. वे उस में सदावासी होंगे, जब तक आकाश तथा धरती अवस्थित हैं। परन्तु यह कि आप का पालनहार कुछ और चाहे। वास्तव में आप का पालनहार जो चाहे कर देने वाला है।
108. और जो भाग्यवान हैं, वह स्वर्ग ही में सदैव रहेंगे, जब तक आकाश तथा धरती स्थित हैं। परन्तु आप का पालनहार कुछ और चाहे, यह प्रदान है अनवरत (निरन्तर)।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لآيَةً لِّمَن خَافَ عَذَابَ الْآخِرَةِ ۖ
ذَلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوعٌ لَّهُ النَّاسُ وَذَلِكَ يَوْمٌ
مَّشْهُودٌ ۝

وَمَا تُؤَخِّرُهُ إِلَّا لِأَجَلٍ مُّعَدُّودٍ ۝

يَوْمَ يَأْتُ لَا تَكَلُمُونَ نَفْسٌ إِلَّا بِإِذْنِهِ فِيمَهُمْ
شَقِيقٌ وَسُوءٌ ۝

فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُوا فِى النَّارِ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ
وَشَهيقٌ ۝

خَلِيدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ ۖ
إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ إِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ۝

وَأَمَّا الَّذِينَ سُودُوا فِى الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا
مَا دَامَتِ السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ
عَطَاءٌ غَيْرٌ مُّجَدُّودٍ ۝

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि अल्लाह अत्याचारी को अवसर देता है, यहाँ तक कि जब उसे पकड़ता है तो उस से बचता नहीं, और आप ने फिर यही आयत पढ़ी। (सहीह बुखारी, हदीस नं०: 4686)

109. अतः (हे नबी!) आप उस के बारे में किसी संदेह में न हों जिसे वे पूजते हैं। वे उसी प्रकार पूजते हैं जैसे इस से पहले इन के बाप दादा पूजते^[1] रहे हैं। वस्तुतः हम उन्हें उन का बिना किसी कमी के पूरा भाग देने वाले हैं।

110. और हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की। तो उस में विभेद किया गया। और यदि आप के पालनहार ने पहले से एक बात^[2] निश्चित न की होती तो उन के बीच निर्णय कर दिया गया होता, और वास्तव में वे^[3] उस के बारे में संदेह और शंका में हैं।

111. और प्रत्येक को आप का पालनहार अवश्य उन के कर्मों का पूरा बदला देगा। क्योंकि वह उन के कर्मों से सूचित है।

112. अतः (हे नबी!) जैसे आप को आदेश दिया गया है, उस पर सुदृढ़ रहिये। और वह भी जो आप के साथ तौबा (क्षमा याचना) कर के हो लिये हैं। और सीमा का उल्लंघन न^[4] करो क्योंकि वह (अल्लाह)

فَلَا تَكُ فِي مَرْبِيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هَؤُلَاءِ
مَا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا يَعْبُدُ آبَاءَهُمْ مِنْ قَبْلُ
وَإِنَّا لَنُوفِّوهُمْ نَصِيْبَهُمْ خَيْرَ مَنْقُوصٍ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ ذُرِّيَّتَهُ
كَلِمَةً سَمِعَتْ مِنْ لَدُنكَ كَفْصًا بَيْنَهُمْ وَإِنَّهُمْ
لِغِي سَائِكٍ مِنْهُ مَرْيِبٌ ۝

وَإِنَّ كُلًّا لَمَّا لَئِيْفٌ بَيْنَهُمْ رَبُّكَ أَعْمَالُهُمْ إِنَّهُ بِمَا
يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

فَأَسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ
وَلَا تَطْغَوْا إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

1 अर्थात् इन की पूजा निर्मूल और बाप-दादा की परम्परा पर आधारित है, जिस का सत्य से कोई संबन्ध नहीं है।

2 अर्थात् यह कि संसार में प्रत्येक को अपनी इच्छानुसार कर्म करने का अवसर दिया जायेगा।

3 अर्थात् मिश्रणवादी कुर्आन के विषय में।

4 अर्थात् धर्मादेश की सीमा का।

तुम्हारे कर्मों को देख रहा है।

113. और अत्याचारियों की ओर न झुक पड़ो। अन्यथा तुम्हें भी अग्नि स्पर्श कर लेगी। और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई सहायक नहीं, फिर तुम्हारी सहायता नहीं की जायेगी।

114. तथा आप नमाज़ की स्थापना करें, दिन के सीरों पर और कुछ रात बीतने^[1] पर। वास्तव में सदाचार दुराचारों को दूर कर देते^[2] हैं। यह एक शिक्षा है, शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिये।

115. तथा आप धैर्य से काम लें, क्योंकि अल्लाह सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।

116. तो तुम से पहले युगों में ऐसे सदाचारी क्यों नहीं हुये जो धरती में उपद्रव करने से रोकते? परन्तु ऐसा बहुत थोड़े युगों में हुआ, जिन्हें हम ने बचा दिया, और अत्याचारी उस स्वाद के पीछे पड़े रहे, जो धन-धान्य दिये गये थे। और वह अपराधि बन कर रहे।

وَلَا تَرْكَبُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن أَوْلِيَاءَ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ﴿١١٣﴾

وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي النَّهَارِ وَرُكْعَاتِ اللَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُدْهِبُنَ السَّيِّئَاتِ ذَلِكَ ذِكْرِي لِلذَّكِرِينَ ﴿١١٤﴾

وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضَيِّعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٥﴾

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِن قَبْلِكُمْ أُولُو بَعِيثٍ يَتَهَوَّنَ عَنِ النَّاسِ فِي الْأَرْضِ الْآفِلِيكِم مِّنْ أَعْيُنِنَا وَمَهُمُ وَاتَّبَعَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أُتْرِفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿١١٦﴾

1 नमाज़ के समय के सविस्तार विवरण के लिये देखिये: सूरह बनी इस्राईल, आयत: 78, सूरह ताहा, आयत: 130, तथा सूरह रूम, आयत: 17-18।

2 हदीस में आता है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: यदि किसी के द्वार पर एक नहर जारी हो जिस में वह पाँच बार स्नान करता हो तो क्या उस के शरीर पर कुछ मैल रह जायेगा? इसी प्रकार पाँचों नमाज़ों से अल्लाह भूल-चक को दूर (क्षमा) कर देता है। (बुखारी: 528, मुस्लिम: 667) किन्तु बड़े बड़े पाप जैसे शिक, हत्या इत्यादि, बिना तौबा के क्षमा नहीं किये जाते।

117. और आप का पालनहार ऐसा नहीं है कि बस्तियों को अत्याचार से ध्वस्त कर दे, जब कि उन के वासी सुधारक हों।
118. और यदि आप का पालनहार चाहता तो सब लोगों को एक समुदाय बना देता। और वह सदा विचार विरोधी रहेंगे।
119. परन्तु जिस पर आप का पालनहार दया कर दे, और इसी के लिये उन्हें पैदा किया है।^[1] और आप के पालनहार की बात पूरी हो गयी कि मैं नरक को सब जिन्नों तथा मानवों से अवश्य भर दूँगा।^[2]
120. और (हे नबी!) यह नबियों की सब कथाएँ हम आप को सुना रहे हैं, जिन के द्वारा आप के दिल को सुदृढ़ कर दें, और इस विषय में आप के पास सत्य आ गया। और ईमान वालों के लिये एक शिक्षा और चेतावनी है।
121. और (हे नबी!) आप उन से कह दें, जो ईमान नहीं लाते कि तुम अपने स्थान पर काम करते रहो। हम अपने स्थान पर काम करते हैं।
122. तथा तुम प्रतीक्षा^[3] करो, हम भी

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلِهَا
مُصْلِحُونَ ﴿۱۱۷﴾

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً
وَلَا يَرْوُونَ الْخَلَائِفَةَ ﴿۱۱۸﴾

إِلَّا مَن تَحَرَّ رَّبُّكَ ۖ وَإِلَّا ذَٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۖ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ
رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ
أَجْمَعِينَ ﴿۱۱۹﴾

وَكَلَّا تَقْضُ عَلَيْكَ مِنَ الْأَنْبَاءِ الرَّسُلَ مَا نَتَّبَعْتَ بِهٖ
فُؤَادَكَ ۖ وَجَاءَكَ فِي هَٰذِهِ الْحَقُّ ۖ وَمَوْعِظَةٌ ۖ وَذِكْرٌ
لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿۱۲۰﴾

وَقُلْ لِّلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ أَعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ
إِنَّا عَامِلُونَ ﴿۱۲۱﴾

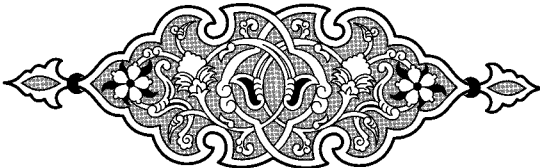
وَأَنْتُمْ طَرِيدُونَ ۖ إِنَّا مُنْتَظِرُونَ ﴿۱۲۲﴾

- 1 अर्थात् एक ही सत्धर्म पर सब को कर देता। परन्तु उस ने प्रत्येक को अपने विचार की स्वतंत्रता दी है कि जिस धर्म या विचार को चाहे अपनाये ताकि प्रलय के दिन सत्धर्म को ग्रहण न करने पर उन्हें यातना का स्वाद चखाया जाये।
- 2 क्योंकि इस स्वतंत्रता का ग़लत प्रयोग कर के अधिकतर लोग सत्धर्म को छोड़ बैठें।
- 3 अर्थात् अपने परिणाम की।

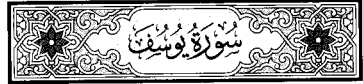
प्रतीक्षा करने वाले हैं।

123. अल्लाह ही के अधिकार में आकाशों तथा धरती की छिपी हुई चीजों का ज्ञान है, और प्रत्येक विषय उसी की ओर लौटाये जाते हैं। अतः आप उसी की इबादत (वंदना) करें, और उसी पर निर्भर रहें। आप का पालनहार उस से अचेत नहीं है जो तुम कर रहे हो।

وَاللَّهُ غَيْبُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْبَاطِنِ يُرْجِعُ الْأَمْرَ
 كُلَّهُ فَأَعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا
 تَعْمَلُونَ ﴿١٢٣﴾



सूरह यूसुफ़ - 12



सूरह यूसुफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 111 आयतें हैं।

- इस में नबी यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) की पूरी कथा का वर्णन किया गया है। इस के द्वारा यह संकेत किया गया है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिन को मक्का में कुरैश ने जान से मार देने अथवा देश से निकाल देने की योजना बनायी है वह ऐसे ही निष्फल हो जायेंगे जैसे यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के भाईयों की सारी योजना निष्फल हो गई। और एक दिन ऐसा भी आया कि सब भाई उन के आगे हाथ फैलाये खड़े थे और कुरआन की यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई।
- आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मदीना हिज्रत कर गये। फिर सन् (8) हिज्री में आप ने मक्का को विजय किया तो आप के विरोधि कुरैश आप के आगे उसी प्रकार विवश खड़े थे जैसे यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के भाई उन के आगे हाथ फैलाये कह रहे थे की आप हमे दान कीजिये, अल्लाह दानशीलों को अच्छा बदला देता है। और जैसे यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) ने अपने भाईयों को क्षमा कर दिया वैसे ही आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने भी कहा: जाओ, तुम पर कोई दोष नहीं, अल्लाह तुम्हें क्षमा करे वह सर्वोत्तम दयावान् है। आप उन के अत्याचार का बदला ले सकते थे किन्तु जब आप ने उन से पूछा कि तुम्हारा विचार क्या है कि मैं तुम्हारे साथ क्या करूँगा?? तो उन के यह कहने पर कि आप सज्जन भाई तथा सज्जन भाई के पुत्र हैं, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मैं तुम से वही कहता हूँ जो यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) ने अपने भाईयों से कहा था कि आज तुम पर कोई दोष नहीं, जाओ तुम सभी स्वतंत्र हो।

हदीस में है कि सज्जन के सज्जन पुत्र के सज्जन पुत्र, यूसुफ़ पुत्र याकूब पुत्र इसहाक़ पुत्र इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) हैं। (देखिये: सहीह बुखारी, हदीस नं०: 3382)

एक दूसरी हदीस में आया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि यदि मैं उतने दिन बंदी रहता जितने दिन यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) बंदी रहे तो जो व्यक्ति उन को बुलाने आया था मैं उस

के साथ चला जाता।

(देखिये: सहीह बुखारी: हदीस नं: 3372, और सहीह मुस्लिम: हदीस नं: 2370)

याद रहे कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस कथन से अभिप्राय यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के सहन की सराहना करना है।

- इस सूरह में यह शिक्षा है कि जो अल्लाह चाहे वही होता है। विरोधियों के चाहने से कुछ नहीं होता, इस में नव युवको के लिये अपनी मर्यादा की रक्षा के लिये भी एक शिक्षा है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

- 1 अलिफ़, लाम, रा। यह खुली पुस्तक की आयतें हैं।
2. हम ने इस कुर्आन को अर्बी में उतारा है, ताकि तुम समझो।^[1]
3. (हे नबी!) हम बहुत अच्छी शैली में आप की ओर इस कुर्आन की वही द्वारा आप से इस कथा का वर्णन कर रहे हैं। अन्यथा आप (भी) इस से पूर्व (इस से) असूचित थे।
4. जब यूसुफ़ ने अपने पिता से कहा: हे मेरे पिता! मैं ने स्वप्न देखा है कि ग्यारह सितारे, सूर्य तथा चाँद मुझे सज्दा कर रहे हैं।
5. उस ने कहा: हे मेरे पुत्र! अपना स्वप्न

الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَا أَوْحَيْنَا
إِلَيْكَ هَذَا الْقُرْءَانَ ۖ وَإِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهِ
لَمِنَ الْغَافِلِينَ ۝

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ
عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي
سَاجِدِينَ ۝

قَالَ يَبْنَیْ لَأَنْقَضُ رُبِّيَاكَ عَلَى رِجْلَيْكَ

- 1 क्यों कि कुर्आन के प्रथम सम्बोधित अरब लोग थे फिर उन के द्वारा दूसरे साधारण मनुष्यों को संबोधित किया गया है तो यदि प्रथम संबोधित ही कुर्आन नहीं समझ सकते तो दूसरों को कैसे समझ सकते थे?

- अपने भाईयों को न बताना^[1] अन्यथा वह तेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचेंगे। वास्तव में शैतान मानव को खुला शत्रु है।
6. और ऐसा ही होगा, तेरा पालनहार तुझे चुन लेगा, तथा तुझे बातों का अर्थ सिखायेगा और तुझ पर और याकूब के घराने पर अपना पुरस्कार पूरा करेगा^[2] जैसे इस से पहले तेरे पूर्वजों इब्राहीम और इसहाक पर पूरा किया। वास्तव में तेरा पालनहार बड़ा ज्ञानी तथा गुणी है।
7. वास्तव में यूसुफ़ और उस के भाईयों (की कथा) में पृछने वालों के^[3] लिये कई निशानियाँ हैं।
8. जब उन (भाईयों) ने कहा: यूसुफ़ और उस का भाई हमारे पिता को हम से अधिक प्रिय हैं। जब कि हम एक गिरोह हैं। वास्तव में हमारे पिता खुली गुमराही में हैं।
9. यूसुफ़ को बध कर दो, या उसे किसी धरती में फेंक दो। इस से तुम्हारे पिता का ध्यान केवल तुम्हारी तरफ़ हो जायेगा। और इस के

فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنْسَانِ
عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝

وَكَذَلِكَ يَجْتَبِيكَ رُؤْيَاكَ مِنْ
تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُرِيْتُمُهَا عَلَيْكَ وَعَلَىٰ آلِ
يَعْقُوبَ كَمَا أَتَتْهَا عَلَىٰ أَبِي يُونُسَ مِنْ قَبْلُ
إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ إِنَّ رُؤْيَاكَ عَلَيْهِمْ حَكِيمٌ ۝

لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٍ لِلْمُتَسَاءِلِينَ ۝

إِذْ قَالَ الْيُوسُفُ لِأَخُوهُ أَحَبُّ إِلَيَّ إِنَّمَا أَنَا
بَشَرٌ مِثْلُكُمْ وَأَخُوهُ أَكْبَرُ مِنْكُمْ وَاللَّهُ يَخْتَارُ
مَنْ يُشَاءُ إِنَّ رَبَّنَا عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ غَافِقٌ ۝

إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَجْمَعِينَ
وَيُطَهِّرَ تَزَكَّىٰ ۝

- 1 यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के दूसरी माँओं से दस भाई थे। और एक सगा भाई था। याकूब अलैहिस्सलाम यह जानते थे कि सौतीले भाई, यूसुफ़ से ईर्ष्या करते हैं। इसलिये उन को सावधान कर दिया कि अपना स्वप्न उन्हें न बतायें।
- 2 यहाँ पुरस्कार से अभिप्राय नबी बनाना है। (तफ़सीरे कुर्तुबी)
- 3 यह प्रश्न यहूदियों ने मक्का वासियों के माध्यम से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किया था, कि वह कौनसे नबी हैं जो शाम में रहते थे, और जब उन का पुत्र मिस्र निकल गया तो उस पर रोते-रोते अन्धे हो गये?? इस पर यह पूरी सूरह उतरी। (तफ़सीरे कुर्तुबी)

पश्चात् पवित्र बन जाओ।

10. उन में से एक ने कहा: यूसुफ़ को बध न करो, उसे किसी अंधे कुएं में डाल दो, उसे कोई काफ़िला निकाल ले जायेगा, यदि कुछ करने वाले हो।
11. उन्होंने ने कहा: हे हमारे पिता! क्या बात है कि यूसुफ़ के विषय में आप हम पर भरोसा नहीं करते? जब कि हम उस के शुभचिन्तक हैं।
12. उसे कल हमारे साथ (वन में) भेज दें। वह खाये पिये और खेले कूदे। और हम उस के रक्षक (प्रहरी) हैं।
13. उस (पिता) ने कहा। मुझे बड़ी चिन्ता इस बात की है कि तुम उसे ले जाओ। और मैं डरता हूँ कि उसे भेड़िया न खा जाये। और तुम उस से असावधान रह जाओ।
14. सब (भाईयों) ने कहा: यदि उसे भेड़िया खा गया, जब कि हम एक गिरोह हैं, तो वास्तव में हम बड़े विनाश में हैं।
15. फिर जब वे उसे ले गये, और निश्चय किया कि उसे अंधे कुएं में डाल दें, और हम ने उस (यूसुफ़) की ओर वही की कि तुम अवश्य इन को उन का कर्म बताओगे, और वह कुछ जानते न होंगे।
16. और वह संध्या को रोते हुये अपने पिता के पास आये।
17. सब ने कहा: हे पिता! हम आपस में

قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ لَا تَصْنَعُوا يَوْسُفَ وَالْقَوْسَىٰ فِي غَيْبَتِ الْبَيْتِ يَلْتَوِظُهُ بَعْضُ السَّيَّارِ لَئِنْ كُنْتُمْ فَاعِلِينَ ۝

قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ يُوسُفَ وَإِنَّا لَهُ لَنَصْحُونَ ۝

أَرْسَلَهُ مَعَنَا خَدًا يَتَوَقَّعُ وَيَلْعَبُ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝

قَالَ إِنِّي أَكْبُرُ نَبِيًّا أَنْ تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غَافِلُونَ ۝

قَالُوا لَئِنْ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا إِذًا الْخَائِرُونَ ۝

فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَاجْمَعُوا أَنْ يَجْعَلُوهُ فِي غَيْبَتِ الْبَيْتِ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِأَمْرِهِمْ هَذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

وَجَاءَهُمْ عِشَاءً يَبْكُونَ ۝

قَالُوا يَا أَبَانَا إِنَّا ذُهَبْنَا سَبِيحًا وَرَكْنَا يَوْسُفَ

- दौड़ करने लगे। और यूसुफ को अपने सामान के पास छोड़ दिया। और उसे भेड़िया खा गया। और आप तो हमारा विश्वास करने वाले नहीं हैं, यद्यपि हम सच्च ही क्यों न बोल रहे हों।
18. और वह यूसुफ के कुर्ते पर झूठा रक्त^[1] लगा कर लाया। उस ने कहा: बल्कि तुम्हारे मन ने तुम्हारे लिये एक सुन्दर बात बना ली है! तो अब धैर्य धारण करना ही उत्तम है। और उस के संबन्ध में जो बात तुम बना रहे हो अल्लाह ही से सहायता माँगनी है।
19. और एक काफिला आया। उस ने अपने पानी भरने वाले को भेजा, उस ने अपना डोल डाला, तो पुकारा: शुभ हो! यह तो एक बालक है। और उसे व्यापारिक सामग्री समझ कर छुपा लिया। और अल्लाह भली भाँति जानने वाला था जो वे कर रहे थे।
20. और उसे तनिक मूल्य कुछ गिनती के दरहमों में बेच दिया। और वे उस के बारे में कुछ अधिक की इच्छा नहीं रखते थे।
21. और मिस्र के जिस व्यक्ति ने उसे खरीदा, उस ने अपनी पत्नी से कहा: उस को आदर-मान से रखो। संभव है यह हमें लाभ पहुँचाये, अथवा हम उसे अपना पुत्र बना लें। इस प्रकार उस को हम ने स्थान दिया। और ताकि उसे बातों का अर्थ सिखायें।

عِنْدَمَا مَتَاعَنَا فَأَكَلَهُ الدَّيْبُ وَمَا أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ
لَنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ ۝

وَجَاءَهُ عَلَى قَمِيصِهِ بِدَمٍ كَذِبٍ قَالَ بَلْ
سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْراً فَصَبْرٌ جَمِيلٌ وَاللَّهُ
الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ ۝

وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَسْأَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَى دَلْوَةً
قَالَ يَا بَشْرِ هَذَا أَتَعْلَمُ مَا أَسْرُوكُمْ بِضَاعَةٌ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ۝

وَأَسْرُوكُمْ بِبَيْنِ دَرَاهِمٍ مَعْدُودَةٍ وَكَانُوا
فِيهِ مِنَ الرَّاهِبِينَ ۝

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي
مَثْوَاهُ عَلَيَّ أَنْ يَبْعُنَا أَوْ تُبْعِنَا وَلَا نَكُنْ
وَكذلك ملكة يوسف في الأرض ولنعلمه
من تأويل الأحاديث والله غائب على أمره
ولكن أكثر الناس لا يعلمون ۝

1 भाष्यकारों ने लिखा है कि वे बकरी के बच्चे का रक्त लगा कर लाये थे।

और अल्लाह अपना आदेश पूरा कर के रहता है। परन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं हैं।

22. और जब वह जवानी को पहुँचा, तो हम ने उसे निर्णय करने की शक्ति तथा ज्ञान प्रदान किया। और इसी प्रकार हम सदाचारियों को प्रतिफल (बदला) देते हैं।

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٢٢﴾

23. और वह जिस स्त्री^[1] के घर में था, उस ने उस के मन को रिझाया, और द्वार बन्द कर लिये, और बोली: "आ जाओ"। उस ने कहा: अल्लाह की शरण! वह मेरा स्वामी है। उस ने मुझे अच्छा स्थान दिया है। वास्तव में अत्याचारी सफल नहीं होते।

وَرَاوَدَتْهُ الْكَافِيَةُ بِبَيْتِهَا عَنْ نَفْسِهِ وَعَلَقَتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْت لَكَ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنُ مَنَازِلَ إِنَّهُ لَا يُغْنِيهِ الظَّالِمُونَ ﴿٢٣﴾

24. और उस स्त्री ने उस की इच्छा की। और वह (यूसुफ़) भी उस की इच्छा करते, यदि अपने पालनहार का प्रमाण न देख लेते^[2] इस प्रकार हम ने (उसे सावधान) किया ताकि उस से बुराई तथा निर्लज्जा को दूर कर दें। वास्तव में वह हमारे शुद्ध भक्तों में था।

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنَّ رَأْيَهَا ن رَّبِّهِ كَذَلِكَ لَتَصَوَّرَ عَنْهُ الشَّيْطَانُ وَالْفَحْشَاءَ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُتَّخِصِينَ ﴿٢٤﴾

25. और दोनों द्वार की ओर दोड़े। और उस स्त्री ने उस का कुर्ता पीछे से फाड़ दिया। और दोनों ने उस के

وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ مِنْ دُبُرٍ وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ قَالَتْ مَا جَزَاءُ مَنْ

1 अभिप्रेत मिश्र के राजा (अज़ीज़) की पत्नी है।

2 यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) कोई फ़रिश्ता नहीं एक मनुष्य थे। इस लिये बुराई का इरादा कर सकते थे किन्तु उसी समय उन के दिल में यह बात आई कि मैं पाप कर के अल्लाह की पकड़ से बच नहीं सकूँगा। इस प्रकार अल्लाह ने उन्हें बुराई से बचा लिया, जो यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) की बहुत बड़ी प्रधानता है।

पति को द्वार के पास पाया। उस (स्त्री) ने कहा: जिस ने तेरी पत्नी के साथ बुराई का निश्चय किया, उस का दण्ड इस के सिवा क्या है कि उसे बंदी बना दिया जाये अथवा उसे दुःखदायी यातना (दी जाये)?

26. उस ने कहा: इसी ने मुझे रिझाना चाहा था। और उस स्त्री के घराने से एक साक्षी ने साक्ष्य दिया कि यदि उस का कुर्ता आगे से फाड़ा गया है तो वह सच्ची है, तथा वह झूठा है।
27. और यदि उस का कुर्ता पीछे से फाड़ा गया है तो वह झूठी और वह (यूसुफ) सच्चा है।
28. फिर जब उस (पति) ने देखा कि उस का कुर्ता पीछे से फाड़ा गया है तो कहा: वास्तव में यह तुम स्त्रियों की चालें हैं और तुम्हारी चालें बड़ी घोर होती हैं।
29. हे यूसुफ! तुम इस बात को जाने दो। और (हे स्त्री!) तू अपने पाप की क्षमा माँग, वास्तव में तू पापियों में से है।
30. नगर की कुछ स्त्रियों ने कहा: अज़ीज़ (प्रमुख अधिकारी) की पत्नी अपने दास को रिझा रही है। उसे प्रेम ने मुग्ध कर दिया है। हमारे विचार में वह खुली गुमराही में है।
31. फिर जब उस ने उन स्त्रियों की मक्कारी की बात सुनी तो उन्हें बुला भेजा। और उन के (आतिथ्य) के लिये गाव तकिये लगवाये और प्रत्येक स्त्री को एक छुरी

أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءَ الْإِلَاحِ أَنْ يُسَجِّنَ أَوْ عَذَابٍ
أَلِيمٌ ﴿٢٦﴾

قَالَ هِيَ رَاوَدَتْهُ عَنِ نَفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ
مِّنْ أَهْلِهَا إِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ
فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾

وَإِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَّابَتْ
وَهُوَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢٨﴾

فَلَمَّا رَأَى قَمِيصَهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِنْ
كَيْدِكُنَّ إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ ﴿٢٩﴾

يُوسُفُ أَعْرَضَ عَنِ هَذَا وَاسْتَغْفِرَ لِي
لِيَذُنَّكَ إِنَّكَ كُنْتِ مِنَ الْخَاطِئِينَ ﴿٣٠﴾

وَقَالَ ذُنُوبُهُ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ
شُرَاوِدٌ فَتَسَاءَلْنَ عَنْ نَفْسِهِ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا
إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣١﴾

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ
لَهُنَّ مَمْنَكًا وَأَتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سَبِيلًا
وَقَالَتِ امْخُرْجِي عَلَيْنَ مَا رَأَيْنَا الْكَبْرَةَ وَكُفَّعْنَ

दे दी।^[1] उस ने (यूसुफ से) कहा: इन के समक्ष "निकल आ"। फिर जब उन स्त्रियों ने उसे देखा तो चकित (दंग) हो कर अपने हाथ काट बैठीं, तथा पुकार उठीं: अल्लाह पवित्र है! यह मनुष्य नहीं, यह तो कोई सम्मानित फरिश्ता है।

أَيَّدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَذَا بَشَرًا إِنْ هَذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ﴿١٠﴾

32. उस ने कहा: यही वह है, जिस के बारे में तुम ने मेरी निन्दा की है। वास्तव में मैं ने ही उसे रिझाया था। मगर वह बच निकला। और यदि वह मेरी बात न मानेगा तो अवश्य बंदी बना दिया जायेगा, और अपमानितों में हो जायेगा।

قَالَتْ فَذَلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّنِي فِيهِ وَلَقَدْ رَاودْنَاهُ عَنْ نَفْسِهِ فَوَسَّعْنَا لَهُمْ وَكَيْنَ كَمْ يَفْعَلُ مَا امْرَأَةٌ لَيْسَجْتَنَ وَلِيَكُونَا مِنَ الضَّالِّينَ ﴿١١﴾

33. यूसुफ़ ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! मुझे कैद उस से अधिक प्रिय है जिस की ओर यह औरतें मुझे बुला रही हैं। और यदि तू ने मुझ से इन के छल को दूर नहीं किया तो मैं उन की ओर झुक पड़ूँगा। और अज्ञानों में से हो जाऊँगा।

قَالَ رَبِّ الرَّجُلَانِ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ مَائِدَةِ عُونَتِي إِلَيْهِمْ وَالْأَلْتَصَّرَفَ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُنُ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿١٢﴾

34. तो उस के पालनहार ने उस की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। और उस से उन के छल को दूर कर दिया। वास्तव में वह बड़ा सुनने जानने वाला है।

فَأَسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٣﴾

35. फिर उन लोगों^[2] ने उचित समझा, इस के पश्चात् कि निशानियाँ देख^[3] लीं, कि उस (यूसुफ़) को एक अवधि तक के लिये बंदी बना दें।

ثُمَّ بَدَأَ هُوَ مِنْ بَعْدِ مَا رَأَى الْآيَاتِ لَيْسَجْتَنَهُ حَتَّىٰ حَبْرِينَ ﴿١٤﴾

- 1 ताकि अतिथि स्त्रियाँ उस से फलों को काट कर खायें जो उन के लिये रखे गये थे।
- 2 अर्थात् अज़ीज़ (मिस्र देश का शासक) और उस के साथियों ने।
- 3 अर्थात् यूसुफ़ के निर्दोष होने की निशानियाँ।

36. और उस के साथ कैद में दो युवकों ने प्रवेश किया। उन में से एक ने कहा: मैं ने स्वप्न देखा है कि शराब निचोड़ रहा हूँ। और दूसरे ने कहा: मैं ने स्वप्न देखा है कि अपने सिर के उपर रोटी उठाये हुये हूँ, जिस में से पक्षी खा रहे हैं। हमें इस का अर्थ (स्वप्नफल) बता दो। हम देख रहे हैं कि तुम सदाचारियों में से हो।

37. यूसुफ़ ने कहा: तुम्हारे पास तुम्हारा वह भोजन नहीं आयेगा जो तुम दोनों को दिया जाता है परन्तु मैं तुम दोनों को उस का अर्थ (फल) बता दूँगा। यह उन बातों में से है जो मेरे पालनहार ने मुझे सिखायी हैं। मैं नें उस जाति का धर्म तज दिया है जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखती। और वही परलोक को नकारने वाले हैं।

38. और अपने पूर्वजों इब्राहीम तथा इस्हाक़ और याकूब के धर्म का अनुसरण किया है। हमारे लिये वैध नहीं कि किसी चीज़ को अल्लाह का साझी बनायें। यह अल्लाह की दया है हम पर और लोगों पर। परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञ नहीं होते।^[1]

39. हे मेरे कैद के दोनों साथियो! क्या विभिन्न पूज्य उत्तम है, या एक प्रभुत्वशाली अल्लाह??

40. तुम अल्लाह के सिवा जिस की इबादत (वंदना) करते हो वह केवल नाम है,

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيْنِ قَالَ أَحَدُهُمَا إِنِّي أَرَانِي أَعْصِرُ خَمْرًا وَقَالَ الْآخَرُ إِنِّي أَرَانِي أُحْمَلُ فَوْقَ رَأْسِي خُبْرًا تَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ نَبْتُهَا بِئْسَ الْوَيْلُ إِذَا تَرَكْتَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ۝

قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقِينَ إِلَّا بِنَاءِكُمَا بِنَاؤُهُ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمَا ذَلِكُمَا مِمَّا عَلَيْكُمْ رَبِّكَ إِنِّي تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ۝

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِي آلِ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ مَا كَانَ لَنَا أَنْ نُشْرِكَ بِاللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ذَلِكَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۝

يُصَاحِبِي السِّجْنِ أَرْبَابٌ مُتَفَرِّقُونَ خَيْرًا أَمِ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝

مَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا أَسْمَاءُ سَبَّيْتُمُوهَا

1 अर्थात तौहीद और नबियों के धर्म को नहीं मानते जो अल्लाह का उपकार है।

जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिये हैं अल्लाह ने उन का कोई प्रमाण नहीं उतारा है। शासन तो केवल अल्लाह का है। उस ने आदेश दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत (वंदना) न करो। यही सीधा धर्म है। परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते हैं।

41. हे मेरे कैद के दोनों साथियो! रहा तुम में से एक तो वह अपने स्वामी को शराब पिलायेगा। तथा दूसरा, तो उस को फाँसी दी जायेगी, और पक्षी उस के सिर में से खायेंगे। उस का निर्णय कर दिया गया है जिस के संबन्ध में तुम दोनों प्रश्न कर रहे थे।

42. और उस से कहा जिसे समझा कि वह उन दोनों में से मुक्त होने वाला है: मेरी चर्चा अपने स्वामी के पास कर देना। तो शैतान ने उसे अपने स्वामी के पास उस की चर्चा करने को भुला दिया। अतः वह (यूसुफ़) कई वर्ष कैद में रह गया।

43. और (एक दिन) राजा ने कहा: मैं सात मोटी गायों को सपने में देखता हूँ जिन को सात दुबली गायें खा रही हैं। और सात हरी बालियाँ हैं और दूसरी सात सूखी हैं। हे प्रमुखो! मुझे मेरे स्वप्न के संबन्ध में बताओ, यदि तुम स्वप्न फल बता सकते हो?

44. सब ने कहा: यह तो उलझे स्वप्न की बातें हैं। और हम ऐसे स्वप्नों का अर्थ (फल) नहीं जानते।

أَنْتُمْ وَأَبَاؤُكُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ
إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ أَمَرَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ
ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيُّمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ۝

يَصَاحِبِي السِّجْنِ أَمَا أَحَدَكُمَا فَيَسْقِي رَبَّهُ
خَمْرًا وَأَمَّا الْآخَرُ فَيُصَلِّبُ فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ
مِنْ رَأْسِهِ فَتُضَيِّقُ الْأَمْرَ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِيَنِ ۝

وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِي
عِنْدَ رَبِّكَ فَأَنْسَاهُ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ فَلَبِثَ
فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِينَ ۝

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَى سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ
يَأْكُلْنَ سَبْعَ عِجَافٍ وَسَبْعَ سُودَاتٍ خُضْرٍ
وَأَخْرَيْسَاتٍ يَأْكُلْنَ الْهَلَالَاتُ فِي رُءُوسِ
إِن كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُونَ ۝

قَالُوا أَضْغَاتٌ أَحْلَامٍ وَمَا عَنِ بِنَاؤِيلِ الْأَحْلَامِ
بِغَلْبِينَ ۝

45. और उस ने कहा जो दोनों में से मुक्त हुआ था, और उसे एक अवधि के पश्चात् बात याद आयी: मैं तुम्हें इस का फल (अर्थ) बता दूँगा, तुम मुझे भेज^[1] दो।

46. हे यूसुफ! हे सत्यवादी! हमें सात मोटी गायों के बारे में बताओ, जिन को सात दुबली गायें खा रही हैं। और सात हरी बालियाँ हैं, और सात सूखी, ताकि लोगों के पास वापिस जाऊँ, और ताकि वह जान^[2] लें।

47. यूसुफ ने कहा: तुम सात वर्ष निरन्तर खेती करते रहोगे। तो जो कुछ काटो उसे उस की बाली में छोड़ दो, परन्तु थोड़ा जिसे खाओगे। (उसे बालों से निकाल लो।)

48. फिर इस के पश्चात् सात कड़े (आकाल के) वर्ष होंगे। जो उसे खा जायेंगे जो तुम ने उन के लिये पहले से रखा है, परन्तु उस में से थोड़ा जिसे तुम सुरक्षित रखोगे।

49. फिर इस के पश्चात् एक ऐसा वर्ष आयेगा जिस में लोगों पर जल बरसाया जायेगा, तथा उसी में (रस) निचोड़ेंगे।

50. और राजा ने कहा: उसे मेरे पास लाओ। और जब यूसुफ के पास भेजा हुआ आया, तो आप ने उस से कहा कि अपने स्वामी के पास वापिस

وَقَالَ الَّذِي بِجَانِبِهَا وَادَّكَرَ بَعْدَ آيَاتِنَا أَنبِئْتُمْ بِأُيُوبَ وَأَنبِئُوهُ فَأَرْسَلْنَاوَهُٓ

يُوسُفَ أَيُّهَا الصَّادِقُ افْتِنَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعُ عِجَافٍ وَسَبْعٍ سَبَّالَاتٍ خُضْرٍ وَأُخْرَىٰ يُسَبِّتُ لَعَلَّيْ أَرْجِعَ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ

قَالَ زُرْعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَابًّا فَمَا أَحْصَدْتُمْ فَنَدْرُوهَ فِي سَنِيَّتِهِ الْأُولَىٰ إِلَّا مِمَّا تَأْكُلُونَ

تَمَّيَّاتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ سَبْعَ شِدَادٍ يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا تَحْصُونَ

تَمَّيَّاتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصُرُونَ

وَقَالَ الْمَلِكُ الْيَاقُوبُ رَبِّهِ قَلْبًا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَسْأَلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الَّتِي قَطَعْنَ آيِدِيَهُنَّ إِنِّي رَبِّي بِالْبَدَاهِنَ عَلَيْهِ

1 अर्थात् कैद खाने में यूसुफ अलैहिस्सलाम के पास।

2 अर्थात् आप की प्रतिष्ठा और ज्ञान को।

जाओ^[1], और उस से पूछो कि उन स्त्रियों की क्या दशा है जिन्होंने ने अपने हाथ काट लिये थे? वास्तव में मेरा पालनहार उन स्त्रियों के छल से भलि-भाति अवगत है।

51. (राजा) ने उन स्त्रियों से पूछा: तुम्हारा क्या अनुभव है, उस समय का जब तुम ने यूसुफ़ के मन को रिझाया? सब ने कहा: अल्लाह पवित्र है! उस पर हम ने कोई बुराई का प्रभाव नहीं जाना। तब अज़ीज़ की पत्नी बोल उठी: अब सत्य उजागर हो गया, वास्तव में मैं ने ही उस के मन को रिझाया था, और निःसंदेह वह सत्वादियों में है।^[2]

قَالَ مَا خَطْبُكُمْ إِذْ رَأَوْتُنَّ يُوسُفَ عَنْ نَفْسِهِ
ثُمَّ حَاسَسْتُمُوهُ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوءٍ قَالَتِ
امْرَأَتُ الْعَزِيزِ إِنَّهُ لَفَصْحٌ الْحَقُّ أَنَا رَأَوْتُهُ عَنْ
نَفْسِهِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝

52. यह (यूसुफ़) ने इस लिये किया, ताकि उसे (अज़ीज़ को) विश्वास हो जाये कि मैं ने गुप्त रूप से उस के साथ विश्वास घात नहीं किया। और वस्तुतः अल्लाह विश्वास घातियों से प्रेम नहीं करता।

ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنْ لَّمْ اَخْنَهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ
لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْعٰلِيْنَ ۝

53. और मैं अपने मन को निर्दोष नहीं कहता, मन तो बुराई पर उभारता है। परन्तु जिस पर मेरा पालनहार दया कर दे। मेरा पालनहार अति

وَمَا اَبْرِيْ نَفْسِيْ اِنَّ النَّفْسَ لَمّٰرَةٌ
بِالسُّوءِ اَلَا مَرَجِعُ رَبِّيْ اِنْ رَبِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

1 यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) को बंदी बनाये जाने से अधिक उस का कारण जानने की चिन्ता थी। वह चाहते थे कि कैद से निकलने से पहले यह सिद्ध होना चाहिये कि मैं निर्दोष था।

2 यह कुर्आन पाक का बड़ा उपकार है कि उस ने रसूलों तथा नबियों पर लगाये गये बहुत से आरोपों का निवारण (खण्डन) कर दिया है। जिसे अहले किताब (यहूदी तथा ईसाई) ने यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के विषय में बहुत सी निर्मूल बातें घड़ ली थीं जिन को कुर्आन ने आकर साफ़ कर दिया।

क्षमाशील तथा दयावान् है।

54. राजा ने कहा: उसे मेरे पास लाओ, उसे मैं अपने लिये विशेष कर लूँ और जब उस (यूसुफ़) से बात की, तो कहा: वस्तुतः तू आज हमारे पास आदरणीय भरोसा करने योग्य है।
55. उस (यूसुफ़) ने कहा: मुझे देश का कोषाधिकारी बना दीजिये। वास्तव में मैं रखवाला बड़ा जानी हूँ।
56. और इस प्रकार हम ने यूसुफ़ को उस धरती (देश) में अधिकार दिया, वह उस में जहाँ चाहे रहे। हम अपनी दया जिसे चाहें प्रदान करते हैं, और सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करते।
57. और निश्चय परलोक का प्रतिफल उन लोगों के लिये उत्तम है, जो ईमान लाये, और अल्लाह से डरते रहे।
58. और यूसुफ़ के भाई आये^[1], तथा उस के पास उपस्थित हुये, और उस ने उन्हें पहचान लिया, तथा वह उस से अपरिचित रह गये।
59. और जब उन का सामान तय्यार कर दिया तो कहा: अपने सौतीले भाई^[2] को लाना। क्या तुम नहीं देखते कि मैं पूरा माप देता हूँ, तथा उत्तम अतिथि सत्कार करने वाला हूँ?

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ اَسْتَحْلِصُهُ لِنَفْسِي فَلَمَّا كَلِمَةً قَالَ اِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ اَمِينٌ ﴿٥٤﴾

قَالَ اجْعَلْنِي عَلَى خَزَائِنِ الْاَرْضِ اِنِّي حَفِيظٌ عَلَيْهِ ﴿٥٥﴾

وَكُنَّا لَكَ مَلَكًا لِيُؤَسِّفَ فِي الْاَرْضِ يَدُوكَ وَمَا هِيَ حَيْثُ يَشَاءُ نُنْصِيبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَشَاءُ وَلَا نُضِيعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾

وَلَا جَزَاءَ الْاِحْوَةَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٧﴾

وَجَاءَ اِخْوَةَ يُوسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفُوْهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنْكَرُوْنَ ﴿٥٨﴾

وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِاَخِي لَكُمْ مِنْ اَيِّكُمْ الْاَتْرُونَ اِنِّي اُوْفِي الْكَيْلَ وَاَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ﴿٥٩﴾

1 अर्थात् अकाल के युग में अब लेने के लिये फ़िलस्तीन से मिस्र आये थे।

2 जो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का सगा भाई बिन्यामीन था।

60. फिर यदि तुम उसे मेरे पास नहीं लाये तो मेरे यहाँ तुम्हारे लिये कोई माप नहीं, और न तुम मेरे समीप होगे।
61. वह बोले: हम उस के पिता को इस की प्रेरणा देंगे, और हम अवश्य ऐसा करने वाले हैं।
62. और यूसुफ़ ने अपने सेवकों को आदेश दिया: उन का मूलधन^[1] उन की बोरियों में रख दो, संभवतः वह उसे पहचान लें जब अपने परिजनों में जायें और संभवतः वापिस आयें।
63. फिर जब अपने पिता के पास लौट कर गये तो कहा: हमारे पिता! हम से भविष्य में (अन्न) रोक दिया गया है। अतः हमारे साथ हमारे भाई को भेजें कि हम सब अन्न (गन्ना) लायें, और हम उस के रक्षक हैं।
64. उस (पिता) ने कहा: क्या मैं उस के लिये तुम पर ऐसे ही विश्वास कर लूँ जैसे इस के पहले उस के भाई (यूसुफ़) के बारे में विश्वास कर चुका हूँ? तो अल्लाह ही उत्तम रक्षक और वही सर्वाधिक दयावान् है।
65. और जब उन्होंने ने अपना सामान खोला, तो पाया कि उन का मूलधन उन्हें फेर दिया गया है, उन्होंने ने कहा: हे हमारे पिता! हमें और क्या चाहिये? यह हमारा धन हमें फेर दिया गया है? हम अपने घराने के

فَإِنْ لَمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِي
وَلَا تَقْرَبُونِ ①

قَالُوا سُبْحَانَ رَبِّنَا أَلَا أَنَا وَالْغَالُونَ ②

وَقَالَ لِفِتْيَانِهِ اجْعَلُوا بِضَاعَتَهُمْ فِي رُحَالِهِمْ
لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ③

فَلَمَّا رَجَعُوا إِلَىٰ أَبِيهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مُنِعَ مِنَّا
الْكَيْلُ فَأَرْسِلْ مَعَنَا خَاتَنًا لِّتَكْتَلَ وَآتَاةُ
لِحِفْظُونِ ④

قَالَ هَلْ آمَنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا آمَنْتُكُمْ عَلَىٰ أَخِيهِ
مِنْ قَبْلُ قَالُوا فَاللَّهُ خَيْرٌ حَفِظْنَا وَهُوَ أَرْحَمُ
الرَّحِيمِينَ ⑤

وَلَمَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِضَاعَتَهُمْ زُدَّتْ
إِلَيْهِمْ قَالُوا يَا بَاكًا مَا نَبِغِي هَذِهِ بِضَاعَتَنَا
رُدَّتْ إِلَيْنَا وَنَبِغِي أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَنَا وَنَزِدُّ
كَيْلَ بَعِيرٍ ذَلِكُ كَيْلُ يَسِيرٍ ⑥

1 अर्थात जिस धन से अन्न खरीदा है।

लिये गल्ले (अन्न) लायेंगे, और एक ऊँट का बोझ अधिक लायेंगे^[1], यह माप (अन्न) बहुत थोड़ा है।

66. उस (पिता) ने कहा: मैं कदापि उसे तुम्हारे साथ नहीं भेजूंगा, यहाँ तक कि अल्लाह के नाम पर मुझे दृढ़ वचन दो कि उसे मेरे पास अवश्य लाओगे, परन्तु यह कि तुम को घेर लिया^[2] जाये और जब उन्होंने ने अपना दृढ़ वचन दिया तो कहा, अल्लाह ही तुम्हारी बात (वचन) का निरीक्षक है।

67. और (जब वह जाने लगे) तो उस (पिता) ने कहा: हे मेरे पुत्रों! तुम एक द्वार से (मिस्र में) प्रवेश न करना, बल्कि विभिन्न द्वारों से प्रवेश करना। और मैं तुम्हें किसी चीज़ से नहीं बचा सकता जो अल्लाह की ओर से हो। और आदेश तो अल्लाह का चलता है, मैं ने उसी पर भरोसा किया, तथा उसी पर भरोसा करने वालों को भरोसा करना चाहिये।

68. और जब उन्होंने (मिस्र में) प्रवेश किया जैसे उन के पिता ने आदेश दिया था तो ऐसा नहीं हुआ कि वह उन्हें अल्लाह से कुछ बचा सके। परन्तु यह याकूब के दिल में एक विचार उत्पन्न हुआ, जिसे उस ने पूरा कर लिया^[3] और वास्तव में वह उस का

قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتَّى تُؤْتُونَنِي مَوْثِقًا
مِنَ اللَّهِ لَأْتِيَنِي بِهِ إِلَّا أَنْ يُحَاطَبَكُمْ فَلَمَّا
أَتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَى النَّفْسِ وَيَكِلُ

وَقَالَ يَبْنَئِي لَأَتَدْخُلُوْا مِنْ بَابٍ وَاحِدٍ
وَأَدْخُلُوْا مِنْ أَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ وَمَا أُغْنِي
عَنكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا
لِلَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝

وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُم مَّا كَانَ
يَغْنِي عَنْهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةٌ فِي
نَفْسِ يَعْقُوبَ قَضَاهُ وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ لِّمَا عَٰتَنَاهُ
وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

- 1 अर्थात् अपने भाई बिन्यामीन का जो उन की दूसरी माँ से था।
- 2 अर्थात् विवश कर दिये जाओ।
- 3 अर्थात् एक अपना उपाय था।

ज्ञानी था जो ज्ञान हम ने उसे दिया था। परन्तु अधिकांश लोग इस (की वास्तविकता) का ज्ञान नहीं रखते।

69. और जब वे यूसुफ के पास पहुँचे तो उस ने अपने भाई को अपनी शरण में ले लिया। (और उस से) कहा: मैं तेरा भाई (यूसुफ) हूँ। अतः उस से उदासीन न हो जो (दुर्व्यवहार) वह करते आ रहे हैं।

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَىٰ إِلَيْهِ أَخَاهُ قَالَ
إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٥٩﴾

70. फिर जब उस (यूसुफ) ने उन का सामान तय्यार करा दिया तो प्याला अपने भाई के सामान में रख दिया। फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा: हे काफिले वालो! तुम लोग तो चोर हो।

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِي رَحْلِ
أَخِيهِ ثُمَّ أَدْنَىٰ أُمَّهُمُ اللَّيْلِ لِيُظَاهِرَهُمْ
فِي السَّرِيرِ ﴿٦٠﴾

71. उन्होंने फिर कर कहा: तुम क्या खो रहे हो?

قَالُوا وَقَدْ وَقَفُوا عَلَيْهُمْ فَمَا ذَلَّلْتُمُوهُنَّ لِيُظَاهِرُوا
فِي السَّرِيرِ ﴿٦١﴾

72. उन (कर्मचारियों) ने कहा: हमें राजा का प्याला नहीं मिल रहा है। और जो उसे ला दे उस के लिये एक ऊँट का बोझ है और मैं उस का प्रतिभू^[1] हूँ।

قَالُوا وَقَدْ وَقَفُوا عَلَيْهُمْ فَمَا ذَلَّلْتُمُوهُنَّ لِيُظَاهِرُوا
فِي السَّرِيرِ ﴿٦١﴾

73. उन्होंने ने कहा: तुम जानते हो कि हम इस देश में उपद्रव करने नहीं आये हैं, और न हम चोर ही हैं।

قَالُوا إِنَّا كُنَّا سَارِقِينَ ﴿٦٢﴾

74. उन लोगों ने कहा। तो यदि तुम झूठे निकले तो उस का दण्ड क्या होगा?^[2]

قَالُوا إِنَّمَا جَزَاءُ ذُنُوبِهِمْ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٣﴾

75. उन्होंने ने कहा: उस का दण्ड वही होगा जिस के सामान में पाया जाये,

قَالُوا إِنَّمَا جَزَاءُ ذُنُوبِهِمْ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٣﴾

1 अर्थात् एक ऊँट के बोझ बराबर पुरस्कार देने का भार मुझ पर है।

2 अर्थात् चोर का।

वही उस का दण्ड होगा। इसी प्रकार हम अत्याचारियों को दण्ड देते हैं।^[1]

76. फिर उस ने खोज का आरंभ उस (यूसुफ़) के भाई की बोरी से पहले उन की बोरियों से किया। फिर उस को उस (बिन्यामीन) की बोरी से निकाल लिया। इस प्रकार हम ने यूसुफ़ के लिये उपाय^[2] किया। वह राजा के नियमानुसार अपने भाई को नहीं रख सकता था, परन्तु यह कि अल्लाह चाहता। हम जिस का चाहें मान सम्मान ऊँचा कर देते हैं। और वह प्रत्येक ज्ञानी से ऊपर एक बड़ा ज्ञानी^[3] है।

77. उन भाईयों ने कहा: यदि उस ने चोरी की है तो उस का एक भाई भी इस से पहले चोरी कर चुका है। तो यूसुफ़ ने यह बात अपने दिल में छुपा ली। और उसे उन के लिये प्रकट नहीं किया। (यूसुफ़ ने) कहा: सब से बुरा स्थान तुम्हारा है। और अल्लाह उसे अधिक जानता है जो तुम कह रहे हो।

78. उन्होंने ने कहा: हे अज़ीज़!^[4] उस

- 1 अर्थात् याकूब अलैहिस्सलाम के धर्म विधान में चोर को दास बना लेने का नियम था। (तफ्सीरे कुर्तुबी)
- 2 अपने भाई बिन्यामीन को रोक लेने की विधि बना दी।
- 3 अर्थात् अल्लाह से बड़ा कोई ज्ञानी नहीं हो सकता। इसलिये किसी को अपने ज्ञान पर गर्व नहीं होना चाहिये।
- 4 यहाँ पर «अज़ीज़» का प्रयोग यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के लिये किया गया है। क्योंकि उन्हीं के पास सरकार के अधिकतर अधिकार थे।

كَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿١٢﴾

فَبَدَأَ بِأَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَاءِ آخِيهِ ثُمَّ
اسْتَعْرَجَهَا مِنْ وِعَاءِ آخِيهِ كَذَلِكَ كِدْنَا
لِيُوسُفَ مَا كَانَ لِيَأْخُذَ أَخَاهُ فِي دِينِ
الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ تَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَنْ تَشَاءُ
وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ﴿١٣﴾

قَالُوا إِنْ يَسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَهُ مِنْ قَبْلِهِ
فَأَسْرَهَا يُّوسُفُ فِي نَفْسِهِ وَلَمْ يُبَيِّهَا لَهُمْ
قَالَ أَنْ تُمْ سُرُّكُمْ إِنَّا وَاللَّهِ أَعْلَمُ بِمَا تَصِفُونَ ﴿١٤﴾

قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا كَبِيرًا

का पिता बहुत बूढ़ा है। अतः हम में से किसी एक को उस के स्थान पर ले लो। वास्तव में हम आप को परोपकारी देख रहे हैं।

فَخَذَّأَحَدَنَا مَكَانَهُ إِنَّا نَعْتَرِكَ مِنَ
الْمُحْسِنِينَ ۝

79. उस (यूसुफ) ने कहा: अल्लाह की शरण कि हम (किसी अन्य को) पकड़ लें, परन्तु उसी को (पकड़ेंगे) जिस के पास अपना सामान पाया है। (यदि ऐसा न करें) तो हम वास्तव में अत्याचारी होंगे।

قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَنْ نَأْخُذَ إِلَّا مَنْ وَجَدْنَا
مَتَاعِنَا عِنْدَهُ إِنَّا إِذًا لَظَالِمُونَ ۝

80. फिर जब उस से निराश हो गये तो एकान्त में हो कर परामर्श करने लगे। उन के बड़े ने कहा: क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिता ने तुम से अल्लाह को साक्षी बना कर दृढ़ वचन लिया था? और इस से पहले जो अपराध तुम ने यूसुफ के बारे में किया है? तो मैं इस धरती (मिस्र) से नहीं जाऊँगा जब तक मुझे मेरे पिता अनुमति न दे दें। अथवा अल्लाह मेरे लिये निर्णय न कर दे। और वही सब से अच्छा निर्णय करने वाला है।

فَلَمَّا اسْتَيْسَسُوا مِنْهُ خَلَصُوا نَجِيًّا قَالَ
كَبِيرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ آبَاءَكُمْ قَدْ أَخَذُوا
عَلَيْكُمْ مَوَافِقًا مِنَ اللَّهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا قَوَّمْتَهُ
بِئْسَ يَوْسُفٌ فَكُنْ أَبْرَحَ الْأَرْضِ حَتَّى يَأْذَنَ لِي
إِنِّي أَوْحِيكُمْ اللَّهُ لِي وَهُوَ خَيْرُ الْحَكِيمِينَ ۝

81. तुम अपने पिता की ओर लौट जाओ, और कहो कि हे हमारे पिता! आप के पुत्र ने चोरी की, और हम ने वही साक्ष्य दिया जिसे हम ने^[1] जाना, और हम ग़ैब के रखवाले नहीं^[2] थे।

ارْجِعُوا إِلَىٰ آبَائِكُمْ فَقُولُوا يَا أَبَانَا إِنَّ ابْنَكَ
سَرَقَ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلَّمْنَا وَمَا كُنَّا
لِلْغَيْبِ حَافِظِينَ ۝

82. आप उस बस्ती वालों से पूछ लें,

وَسَأَلِ الْقَرْيَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا وَالْعَيْرَ الَّتِي

1 अर्थात् राजा का प्याला उस के सामान से निकलते देखा।

2 अर्थात् आप को उस के वापिस लाने का वचन देते समय यह नहीं जानते थे कि वह चोरी करेगा। (तफ्सीरी कुरुबी)

जिस में हम थे, और उस काफ़िले से जिस में हम आये हैं, और वास्तव में हम सच्चे हैं।

83. उस (पिता) ने कहा: ऐसा नहीं, बल्कि तुम्हारे दिलों ने एक बात बना ली है तो इस लिये अब सहन करना ही उत्तम है, संभव है कि अल्लाह उन सब को मेरे पास वापिस ला दे, वास्तव में वही जानने वाला तत्वदर्शी है।

84. और उन से मुँह फेर लिया, और कहा: हाय यूसुफ! और उस की दोनों आंखें शोक के कारण (रोते-रोते) सफ़ेद हो गयीं, और उस का दिल शोक से भर गया।

85. उन (पुत्रों) ने कहा: अल्लाह की शपथ! आप बराबर यूसुफ़ को याद करते रहेंगे यहाँ तक कि (शोक से) घुल जायें, या अपना विनाश कर लें।

86. उस ने कहा: मैं अपनी आपदा तथा शोक की शिकायत अल्लाह के सिवा किसी से नहीं करता। और अल्लाह की ओर से वह बात जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

87. हे मेरे पुत्रो! जाओ, और यूसुफ़ और उस के भाई का पता लगाओ। और अल्लाह की दया से निराश न हो। वास्तव में अल्लाह की दया से वही निराश होते हैं जो काफ़िर हैं।

88. फिर जब उस (यूसुफ़) के पास (मिस्र में) गये तो कहा: हे अज़ीज़! हम

أَقْبَلْنَا فِيهَا وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿۱۰﴾

قَالَ بَلْ سَأَلْتُمْ لِكُمْ أَنْفُسَكُمْ أَمْرًا قَصَبًا
حَبِيلًا طَعَسَى اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَبِيلًا
إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿۱۱﴾

وَوَسَّوْا لَهُمْ وَقَالَ يَا سَفَى عَلَى يُونُسَ
وَأَبْصُتْ عَيْنَهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيمٌ ﴿۱۲﴾

قَالُوا تَاللَّهِ تَفْتَوَانَا بَدْرُ يُونُسَ حَتَّى تَكُونَ
حَرَصًا أَوْ تَكُونُ مِنَ الْهَالِكِينَ ﴿۱۳﴾

قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوا بَثْنِي وَحُزْنِي إِلَى اللَّهِ وَأَعْلَمُ
مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿۱۴﴾

يَبْنَىٰ أَذْهُبُوا فَتَحَسَّسُوا مِنْ يُونُسَ وَأَجْبِهِ
وَلَا تَأْتِيَهُمْ مِنْ رَوْحِ اللَّهِ إِنَّهُ لَا يَأْتِيَنَّ مِنْ
رَوْحِ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمَ الْكَافِرُونَ ﴿۱۵﴾

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا

पर और हमारे घराने पर आपदा (अकाल) आ पड़ी है। और हम थोड़ा धन (मूल्य) लाये हैं, अतः हमें (अन्न का) पूरा माप दें, और हम पर दान करें। वास्तव में अल्लाह दानशीलों को प्रतिफल प्रदान करता है।

وَأَهْلَنَا الضَّرَّ وَجِئْنَا بِضَاعَةٍ مُرْجَاةٍ فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ ⑩

89. उस (यूसुफ़) ने कहा: क्या तुम जानते हो कि तुम ने यूसुफ़ तथा उस के भाई के साथ क्या कुछ किया है, जब तुम अज्ञान थे?

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَا فَعَلْتُمْ بِيُوسُفَ وَأَخِيهِ إِذْ أَنْتُمْ جَاهِلُونَ ⑩

90. उन्होंने ने कहा: क्या आप यूसुफ़ हैं? यूसुफ़ ने कहा: मैं यूसुफ हूँ और यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हम पर उपकार किया है। वास्तव में जो (अल्लाह से) डरता तथा सहन करता है तो अल्लाह सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।

قَالُوا إِنْ أَنْتَ إِلَّا كَذِبٌ يُوسُفُ قَالَ أَنَا يُوسُفُ وَهَذَا أَخِي قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا إِنَّهُ مَنْ يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ⑪

91. उन्होंने कहा: अल्लाह की शपथ! उस ने आप को हम पर श्रेष्ठता प्रदान की है। वास्तव में हम दोषी थे।

قَالُوا تَأْتِيكَ اللَّهُ لَقَدْ اشْرَكَ اللَّهُ عَلَيْنَا وَإِنَّ كَيْدَ الْخَاطِبِينَ ⑪

92. यूसुफ़ ने कहा: आज तुम पर कोई दोष नहीं, अल्लाह तुम्हें क्षमा कर दे! वही सर्वाधिक दयावान् है।

قَالَ لَا تَثْرِبَ عَلَيْكُمْ أَيُّومَ يُغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ⑫

93. मेरा यह कुर्ता ले जाओ, और मेरे पिता के मुख पर डाल दो, वह देखने लगेंगे। और अपने पूरे घराने को (मिस्र) ले आओ।

إِذْ هُمْ يُقِيمُونَ هَذَا قَالُوا عَلَيَّ وَعَجِبْ أَبِي يَأْتِ بَصِيرًا وَأَتُونِي يَا هَلِكُمْ أَجْمَعِينَ ⑬

94. और जब काफ़िले ने प्रस्थान किया, तो उन के पिता ने कहा: मुझे यूसुफ़ की सुगन्ध आ रही है, यदि तुम मुझे

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ لَوْلَا أَلَّا نَشْفِدُونَ ⑭

बहका हुआ बूढ़ा न समझो।

95. उन लोगों^[1] ने कहा: अल्लाह की शपथ! आप तो अपनी पुरानी सनक में पड़े हुये हैं।
96. फिर जब शुभ-सूचक आ गया, तो उस ने वह (कुत्ता) उन के मुख पर डाल दिया। और वह तुरंत देखने लगे। याकूब ने कहा: क्यों मैं ने तुम से नहीं कहा था कि वास्तव में अल्लाह की ओर से जो कुछ मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते।
97. सब (भाईयों) ने कहा: हे हमारे पिता! हमारे लिये हमारे पापों की क्षमा मांगिये, वास्तव में हम ही दोषी थे।
98. याकूब ने कहा: मैं तुम्हारे लिये अपने पालनहार से क्षमा की प्रार्थना करूँगा, वास्तव में वह अति क्षमी दयावान् है।
99. फिर जब वह यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उस ने अपने माता-पिता को अपनी शरण में ले लिया। और कहा: नगर (मिस्र) में प्रवेश कर जाओ, यदि अल्लाह ने चाहा तो शान्ति से रहोगे।
100. तथा अपने माता-पिता को उठा कर सिंहासन पर बिठा लिया। और सब उस के समक्ष सज्दे में गिर गये।^[2] और यूसुफ़ ने कहा:

قَالُوا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِي ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ۝

فَلَمَّا اَنَّ جَاءَ الْبَشِيْرَ الْفُتٰى عَلٰى وَّجْهِهِ فَاَرْتَدَّ
بَصِيْرًا ۝ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّيْ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ
مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

قَالُوا يَا اَبَانَا اَسْتَغْفِرُ لَنَا ذُنُوْبَنَا اِنَّكَ لَكَا
خَطِيْبٍ ۝

قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ اِنَّهُ هُوَ الْغَفُوْرُ
الرَّحِيْمُ ۝

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اَوٰى الْبِيْتِ اَبُوَيْهِ
وَقَالَ ادْخُلُوْا مَعِيَ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ الْمِيْنِيْنَ ۝

وَرَفَعَ اَبُوَيْهِ عَلٰى الْعَرْشِ وَخَوَّذَهُ لَهٗ سَجْدًا ۝
وَقَالَ يَا بَيْتُ هٰذَا اَنَا وَاٰوِيْلُ رَبِّيْ اَيُّ مِنْ قَبْلُ قَدْ
جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا وَّقَدْ اَحْسَنَ فِيْ اِذْ اٰخَرَجْنِيْ

1 याकूब अलैहिस्सलाम के परिजनों ने जो फिलस्तीन में उन के पास थे।

2 जब यूसुफ़ की यह प्रतिष्ठा देखी तो सब भाई तथा माता-पिता उन के सम्मान के लिये सज्दे में गिर गये। जो अब इस्लाम में निरस्त कर दिया गया है। यही

हे मेरे पिता! यही मेरे स्वप्न का अर्थ है जो मैं ने पहले देखा था। मेरे पालनहार ने उसे सच्च कर दिया है, तथा मेरे साथ उपकार किया, जब उस ने मुझे कारावास से निकाला, और आप लोगों को गाँवों से मेरे पास (नगर में) ले आया, इस के पश्चात् कि शैतान ने मेरे तथा मेरे भाईयों के बीच विरोध डाल दिया। वास्तव में मेरा पालनहार जिस के लिये चाहे उस के लिये उत्तम उपाय करने वाला है। निश्चय वही अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।

101. हे मेरे पालनहार! तू ने मुझे राज्य प्रदान किया, तथा मुझे स्वप्नों का अर्थ सिखाया। हे आकाशों तथा धरती के उत्पत्तिकार! तू लोक तथा परलोक में मेरा रक्षक है। तू मेरा अन्त इस्लाम पर कर, और मुझे सदाचारियों में मिला दे।

102. (हे नबी!) यह (कथा) परोक्ष के समाचारों में से है, जिस की वही हम आप की ओर कर रहे हैं। और आप उन (भाईयों) के पास नहीं थे, जब वह आपस की सहमति से षड्यंत्र रचते रहे।

103. और अधिकांश लोग आप कितनी ही लालसा करें, ईमान लाने वाले नहीं हैं।

مِنَ السَّجِينِ وَجَاءَ بِكُمْ مِنَ الْبَدْوِ وَمَن بُعِدَ
أَن تَزْعُمَ الشَّيْطَانُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي إِنَّ
رَبِّي لَطِيفٌ لِّمَا يَشَاءُ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝

رَبِّ قَدْ آتَيْتَنِي مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِي مِنْ
تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
أَنْتَ وَرَبِّي فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ أَنْتَ بِنِعْمَتِي مُسْلِمًا
وَالْحَقِّنِي يَا ضَلِيجِينَ ۝

ذَلِكَ مِنْ آيَاتِ الْعَجِيبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ وَمَا كُنْتَ
لَدَيْهِمْ إِذْ اجْتَمَعُوا لَهُمْ وَهُمْ يُصَلُّونَ ۝

وَمَا أَكْثَرَ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ ۝

उस स्वप्न का फल था जिस में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने ग्यारह सितारों, सूर्य तथा चाँद को अपने लिये सज्दा करते देखा था।

104. और आप इस (धर्मप्रचार) पर उन से कोई पारिश्रमिक (बदला) नहीं माँगते। यह (क़ुर्आन) तो विश्ववासियों के लिये (केवल) एक शिक्षा है।

105. तथा आकाशों और धरती में बहुत सी निशानियाँ (लक्षण^[1]) हैं जिन पर से लोग गुज़रते रहते हैं, और उन पर ध्यान नहीं देते।^[2]

106. और उन में से अधिकतर अल्लाह को मानते हैं परन्तु (साथ ही) मुश्रिक (मिश्रणवादी)^[3] भी हैं।

107. तो क्या वह निर्भय हो गये हैं कि उन पर अल्लाह की यातना छा जाये, अथवा उन पर प्रलय अकस्मात आ जाये, और वह अचेत रह जायें?

108. (हे नबी!) आप कह दें यही मेरी डगर है, मैं अल्लाह की ओर बुला रहा हूँ। मैं पूरे विश्वास और सत्य पर हूँ, और जिस ने मेरा अनुसरण किया। तथा अल्लाह पवित्र है, और मैं मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) में से नहीं हूँ।

وَمَا سَأَلْتَهُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنَّهُ هُوَ الْاَذْكُرُ
لِلْعَالَمِينَ ﴿١٠٤﴾

وَكَايِنُ مِنْ اِيْتٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
يُبْرٰوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ ﴿١٠٥﴾

وَمَا يُوْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاِلٰهِهِمْ مُشْرِكُوْنَ ﴿١٠٦﴾

اَفَاْمُؤْمِنًا اَنْ تَاْتِيَهُمْ عَاقِبَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ
تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٠٧﴾

قُلْ هٰذِهِ سَبِيْلِيْ اَدْعُوْا اِلَى اللّٰهِ تَعَالٰى بِصِرٰتٍ
اَنَا مِنَ اتَّبَعِيْ وَبِسْمِ اللّٰهِ وَمَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٨﴾

1 अर्थात् सहस्रों वर्ष की यह कथा इस विवरण के साथ वही द्वारा ही संभव है, जो आप के अल्लाह के नबी होने तथा क़ुर्आन के अल्लाह की वाणी होने का स्पष्ट प्रमाण है।

2 अर्थात् विश्व की प्रत्येक चीज़ अल्लाह के अस्तित्व और उस की शक्ति और सद्गुणों की परिचायक है, मात्र सोच विचार की आवश्यकता है।

3 अर्थात् अल्लाह के अस्तित्व और गुणों का विश्वास रखते हैं, फिर भी पूजा-अर्चना अन्य की करते हैं।

109. और हम ने आप से पहले मानव^[1] पुरुषों ही को नबी बनाकर भेजा जिन की ओर प्रकाशना भेजते रहे, नगर वासियों में से, क्या वे धरती में चले फिरे नहीं, ताकि देखते कि उन का परिणाम क्या हुआ जो इन से पहले थे? और निश्चय आखिरत (परलोक) का घर (स्वर्ग) उन के लिये उत्तम है, जो अल्लाह से डरे, तो क्या तुम समझते नहीं हो।

110. (इस से पहले भी रसूलों के साथ यही हुआ)। यहाँ तक कि जब रसूल निराश हो गये, और लोगों को विश्वास हो गया कि उन से झूठ बोला गया है, तो उन के लिये हमारी सहायता आ गई, फिर हम जिसे चाहते हैं बचा लेते हैं, और हमारी यातना अपराधियों से फेरी नहीं जाती।

111. इन कथाओं में बुद्धिमानों के लिये बड़ी शिक्षा है, यह (कुर्आन) ऐसी बातों का संग्रह नहीं है, जिसे स्वयं

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُوْحِي إِلَيْهِمْ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَكِنَّ الْأَخْصِرَ خَيْرٌ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَفَلَا يَعْقِلُونَ ﴿۱۰۹﴾

حَتَّىٰ إِذِ اسْتَيْسَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِّبُوا جَاءَهُمْ نَصْرُنَا فَنُفِخَ مِنْ شَأْنِهِمْ لَئِنْ رَدُّوْنَا بِأَسْنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿۱۱۰﴾

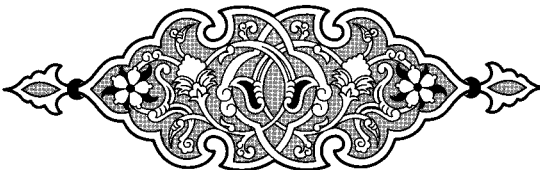
لَقَدْ كَانَ فِي قَصصِهِمْ عِبْرَةً لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۗ مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَكِنْ تَصْدِيقَ

1 कुर्आन की अनेक आयतों में आप को यह बात मिलेगी कि रसूलों का अस्वीकार उन की जातियों ने दो ही कारण से किया:

एक तो यह कि उन के एकेश्वरवाद की शिक्षा उन के बाप-दादा की परम्परा के विरुद्ध थी, इसलिये सत्य को जानते हुये भी उन्होंने उस का विरोध किया। दूसरा यह कि उन के दिल में यह बात नहीं उतरी कि कोई मानव पुरुष अल्लाह का रसूल कैसे हो सकता है? रसूल तो किसी फ़रिश्ते को होना चाहिये। फिर यदि रसूलों को किसी जाति ने स्वीकार भी किया तो कुछ युगों के पश्चात् उसे ईश्वर अथवा ईश्वर का पुत्र बनाकर एकेश्वरवाद को आघात पहुँचाया और शिर्क (मिश्रणवाद) का द्वार खोल दिया। इसीलिये कुर्आन ने इन दोनों कुविचारों का बार बार खण्डन किया है।

बना लिया जाता हो, परन्तु इस से पहले की पुस्तकों की सिद्धि और प्रत्येक वस्तु का विवरण (ब्योरा) है। तथा मार्ग दर्शन और दया है उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हों।

الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ
وَهَدَىٰ وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝



सूरह रअद - 13



सूरह रअद के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 43 आयतें हैं।

- «रअद» का अर्थ: बादल की गरज है। इस सूरह की आयत नं० (13) में बताया गया है कि वह अल्लाह की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का गान करती है। इसी से इस का नाम रअद रखा गया है।
- इस सूरह में यह बताया गया है कि इस पुस्तक (कुर्आन पाक) का अल्लाह की ओर से उतरना सच्च है तथा उन लक्षणों की ओर ध्यान दिलाया गया है जिन से परलोक का विश्वास होता है तथा विरोधियों को चेतावनी दी गई है।
- तौहीद (ऐकेश्वरवाद) के विषय तथा सत्य और असत्य के अलग अलग परिणाम को बताया गया है। और सत्य के अनुयायियों के गुण और परलोक में उन का परिणाम तथा विरोधियों के दुष्परिणाम को प्रस्तुत किया गया है।
- विरोधियों को चेतावनी दी गई, तथा ईमान वालों को शुभ सूचना सुनाई गई है।
- और अन्त में रिसालत (दूतत्व) के विरोधियों को सावधान करने साथ आज्ञाकारियों के अच्छे अन्त को प्रस्तुत किया गया है ताकि विरोधियों को अल्लाह से भय की प्रेरणा मिले।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़, लाम, मीम, रा। यह इस पुस्तक (कुर्आन) की आयतें हैं। और (हे नबी!) जो आप पर आप के पालनहार की ओर से उतारा गया है सर्वथा सत्य है। परन्तु अधिकतर लोग

الَّتِي نُنزِّلُ عَلَيْكَ مِنَ السَّمَاءِ الْكُتُبَ وَالذِّكْرَ الَّذِي أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ مِنَ
رَبِّكَ الْحَقُّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ

ईमान (विश्वास) नहीं रखते।

2. अल्लाह वही है जिस ने आकाशों को ऐसे सहारों के बिना ऊँचा किया है जिन्हें तुम देख सको। फिर अर्श (सिंहासन) पर स्थिर हो गया, तथा सूर्य और चाँद को नियम बद्ध किया। सब एक निर्धारित अवधि के लिये चल रहे हैं। वही इस विश्व की व्यवस्था कर रहा है, वह निशानियों का विवरण (ब्योरा) दे रहा है ताकि तुम अपने पालनहार से मिलने का विश्वास करो।
3. तथा वही है जिस ने धरती को फैलाया। और उस में पर्वत तथा नहरें बनायीं, और प्रत्येक फलों के दो प्रकार बनाये। वह रात्रि से दिन को छुपा देता है। वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो सोच विचार करते हैं।
4. और धरती में आपस में मिले हुये कई खण्ड हैं, और उद्यान (बाग) हैं अँगूरों के तथा खेती और खजूर के वृक्ष हैं। कुछ एकहरे और कुछ दोहरे, सब एक ही जल से सींचे जाते हैं, और हम कुछ को स्वाद में कुछ से अधिक कर देते हैं, वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं, उन लोगों के लिये जो सूझ-बूझ रखते हैं।
5. तथा यदि आप आश्चर्य करते हैं तो आश्चर्य करने योग्य उन का यह^[1]

اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ أَسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ وَسَوَّاهُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلًّا يَجْرِى لِأَجَلٍ مُّسَمًّى يُدَبِّرُ الْأَرْضَ بِفَضْلِ الْعِلْمِ لَعَلَّكُمْ يَلْقَآءَ رَبَّكُمْ تَوَّابُونَ ﴿۱﴾

وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَمِنْ كُلِّ الْجِبَالِ جَعَلَ فِيهَا زَوَاجِرًا مُّتَنِينَ يُغْشَىٰ اللَّيْلَ اللَّيْلَ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿۲﴾

وَ فِي الْأَرْضِ قَطْعٌ مُّجْتَرِبَةٌ وَ جَعَلْنَا مِنْ غَنَابٍ وَ زُرْعَةٍ وَ نَخِيلٍ صُنُونًا وَ عَيْرٍ صُنُونًا يُسْقَىٰ بِمَاءٍ وَاحِدٍ وَ لَفَضْلٍ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الْأَرْضِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿۳﴾

وَ إِنَّ تَعْجِبَ تَعْجِبٌ قَوْلُهُمْ إِذَا انْشَارُوا عَائِنًا

1 क्योंकि वह जानते हैं कि बीज धरती में सड़कर मिल जाता है, फिर उस से

कथन है कि जब हम मिट्टी हो जायेंगे, तो क्या वास्तव में हम नई उत्पत्ति में होंगे? उन्होंने ने ही अपने पालनहार के साथ कुफ़्र किया है, तथा उन्हीं के गलों में तौक पड़े होंगे, और वही नरक वाले हैं, जिस में वह सदा रहेंगे।

6. और वह आप से बुराई (यातना) की जल्दी मचा रह है भलाई से पहले। जब कि इन से पहले यातनाएँ आ चुकी हैं, और वास्तव में आप का पालनहार लोगों को उन के अत्याचार पर क्षमा करने वाला है। तथा निश्चय आप का पालनहार कड़ी यातना देने वाला (भी) है।
7. तथा जो काफ़िर हो गये वह कहते हैं कि आप पर आप के पालनहार की ओर से कोई आयत (चमत्कार) क्यों नहीं उतारा^[1] गया। आप केवल सावधान करने वाले तथा प्रत्येक जाति को सीधी राह दिखाने वाले हैं।
8. अल्लाह ही जानता है जो प्रत्येक स्त्री के गर्भ में है, तथा गर्भाशय जो कम और अधिक^[2] करते हैं, प्रत्येक चीज़ की

لَقَدْ خَلَقْنَا جَدِيدًا أُولَئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِرَبِّهِمْ وَأُولَئِكَ أَكْثَرُ فِي أَعْيُنِهِمْ وَأُولَئِكَ
أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ①

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ
خَلَقْتَ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثَلَةَ وَإِنَّ رَبَّكَ لَدَاؤُ
مَعْفِرٌ لِلنَّاسِ عَلَى ظُلْمِهِمْ وَإِنَّ رَبَّكَ
لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ①

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ
رَبِّهِ لَأَمَّا أَنْتَ مُنذِرٌ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ①

اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثَىٰ وَمَا تَغِيصُ
الْأَرْحَامُ وَمَا تَرْزَأُؤُا وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِحَقِّقَاتٍ ①

पौधा उगता है।

1. जिस से स्पष्ट हो जाता कि आप अल्लाह के रसूल हैं।
2. इब्ने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: ग़ैब (परोक्ष) की तालिकायें पाँच हैं। जिन को केवल अल्लाह ही जानता है: कल की बात अल्लाह ही जानता है, और गर्भाशय जो कमी करते हैं उसे अल्लाह ही जानता है। वर्षा कब होगी उसे अल्लाह ही जानता है। और कोई प्राणी नहीं जानता कि वह किस धरती पर मरेगा। और न अल्लाह के सिवा कोई यह जानता

- उस के यहाँ एक निश्चित मात्रा है।
9. वह सब छुपे और खुले प्रत्यक्ष को जानने वाला बड़ा महान् सर्वोच्च है।
10. (उस के लिये) बराबर है तुम में से जो बात चुपके बोले, और जो पुकार कर बोले। तथा कोई रात के अँधेरे में छुपा हो या दिन के उजाले में चल रहा हो।
11. उस (अल्लाह) के रखवाले (फ़रिश्ते) हैं। उस के आगे तथा पीछे, जो अल्लाह के आदेश से उस की रक्षा कर रहे हैं। वास्तव में अल्लाह किसी जाति की दशा नहीं बदलता जब तक वह स्वयं अपनी दशा न बदल ले। तथा जब अल्लाह किसी जाति के साथ बुराई का निश्चय कर ले तो उसे फेरा नहीं जा सकता, और न उन का उस (अल्लाह) के सिवा कोई सहायक है।
12. वही है जो विद्युत को तुम्हें भय तथा आशा^[1] बना कर दिखाता है। और भारी बादलों को पैदा करता है।
13. और कड़क, अल्लाह की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करती है, और फ़रिश्ते उस के भय से काँपते हैं। वह बिजलियाँ भेजता है, फिर जिस पर चाहता है गिरा देता है। तथा वह अल्लाह के बारे में विवाद करते हैं, जब कि उस का

عَلِيمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرِ الْمَتَعَالِ ①

سَوَاءٌ أَمَرْتُمْ مِنْ أَمْرِ الْقَوْلِ وَمَنْ جَهَرْتُمْ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ②

لَهُ مُعَقِّدَاتٌ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ يَحْفَظُونَهَا مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُعَذِّبُ مَا يَقُولُ وَحَتَّى يُعَذِّبُوا مَا يَأْتِيهِمْ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءًا فَلَا مَرَدَ لَهُ وَمَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَالٍ ③

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنزِلُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ④

وَسِيمِ الرَّعْدِ بِحَمْدِهِ وَالْمَلَايِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَنْ يَشَاءُ وَهُمْ يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ وَهُوَ شَدِيدُ الْبَحَالِ ⑤

है कि प्रलय कब आयेगी। (सहीह बुखारी-4697)

1 अर्थात् वर्षा होने की आशा।

उपाय बड़ा प्रबल है।^[1]

14. उसी (अल्लाह) को पुकारना सत्य है, और जो उस के सिवा दूसरों को पुकारते हैं, वह उन की प्रार्थना कुछ नहीं सुनते। जैसे कोई अपनी दोनों हथेलियाँ जल की ओर फैलाया हुआ हो, ताकि उस के मुँह में पहुँच जाये, जब कि वह उस तक पहुँचने वाला नहीं। और काफिरों की पुकार व्यर्थ (निष्फल) ही है।
15. और अल्लाह ही को सज्दा करता है, चाहे या न चाहे, वह जो आकाशों तथा धरती में है, और उन की परछाईयाँ^[2] भी प्रातः और संध्या^[3]।
16. उन से पुछो: आकाशों तथा धरती का पालनहार कौन है? कह दो: अल्लाह है। कहो कि क्या तुम ने अल्लाह के सिवा उन्हें सहायक बना लिया है जो अपने लिये किसी लाभ का अधिकार नहीं रखते, और न किसी हानि का? उन से कहो: क्या अन्धा और देखने वाला बराबर होता है, या अंधेरे और प्रकाश बराबर होते हैं?^[4] अथवा उन्होंने अल्लाह का साझी बना लिया

لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُمْ بِشَيْءٍ إِلَّا كَالْإِسْطِ كَفِيءٍ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَهُ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهِ وَمَا دَعَا الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝

وَيَلَّهُ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلَالُهُم بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ۝

قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلْ اللَّهُ قُلْ أَتَأْتَدُّنَ تَمَمِينَ دُونَهُ أَوْ لِيَاءُ لِمَلِكُونَ لَأَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَى وَالْبَصِيرَةُ أَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمَاتُ وَالنُّورُ أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا كَخَلْقِهِ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ قُلْ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝

1 अर्थात जैसे कोई प्यासा पानी की ओर हाथ फैला कर प्रार्थना करे कि मेरे मुँह में आ जा तो न पानी में सुनने की शक्ति है न उस के मुँह तक पहुँचने की। ऐसे ही काफिर, अल्लाह के सिवा जिन को पुकारते हैं न उन में सुनने की शक्ति है और न वह उन की सहायता करने का सामर्थ्य रखते हैं।

2 अर्थात सब उस के स्वभाविक नियम के आधीन हैं।

3 यहाँ सज्दा करना चाहिये।

4 अंधेरे से अभिप्राय कुफ़्र के अंधेरे, तथा प्राकश से अभिप्राय ईमान का प्राकश है।

है ऐसों को जिन्होंने अल्लाह के उत्पत्ति करने के समान उत्पत्ति की है, अतः उत्पत्ति का विषय उन पर उलझ गया है? आप कह दें कि अल्लाह ही प्रत्येक चीज़ का उत्पत्ति करने वाला है,^[1] और वही अकेला प्रभुत्वशाली है।

17. उस ने आकाश से जल बरसाया, जिस से वादियाँ (उपत्यकाएँ) अपनी समाई के अनुसार बह पड़ीं। फिर (जल की) धारा के ऊपर झाग आ गया। और जिस चीज़ को वे आभूषण अथवा समान बनाने के लिये अग्नि में तपाते हैं, उस में भी ऐसा ही झाग होता है। इसी प्रकार अल्लाह सत्य तथा असत्य का उदाहरण देता है, फिर जो झाग है वह सुख कर ध्वस्त हो जाता है, और जो चीज़ लोगों को लाभ पहुँचाती है, वह धरती में रह जाती है। इसी प्रकार अल्लाह उदाहरण देता^[2] है।

18. जिन लोगों ने अपने पालनहार की बात मान ली, उन्हीं के लिये भलाई है। और जिन्होंने नहीं मानी, तो यदि

أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ
بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا أَرَابِيًّا
وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حُلْيَةٍ
أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِثْلَهُ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ
الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۚ فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ
جُفَاءً ۖ وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ
فِي الْأَرْضِ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ۝

الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ الْخَيْرُ وَالَّذِينَ لَمْ
يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُمْ فَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِثْلَهُ

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि जिस ने इस विश्व की प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति की है। वही वास्तविक पूज्य है। और जो स्वयं उत्पत्ति हो वह पूज्य नहीं हो सकता। इस तथ्य को कुर्आन पाक की और भी कई आयतों में प्रस्तुत किया गया है।
- 2 इस उदाहरण में सत्य और असत्य के बीच संघर्ष को दिखाया गया है कि वही द्वारा जो सत्य उतारा गया है वह वर्षा के समान है। और जो उस से लाभ प्राप्त करते हैं वह नालों के समान हैं। और सत्य के विरोधी सैलाब के झाग के समान हैं जो कुछ देर के लिये उभरता है फिर विलय हो जाता है। दूसरे उदाहरण में सत्य को सोने और चाँदी के समान बताया गया है जिसे पिघलाने से मैल उभरता है फिर मैल उड़ता है। इसी प्रकार असत्य विलय हो जाता है। और केवल सत्य रह जाता है।

जो कुछ धरती में है, सब उन का हो जाये, और उस के साथ उस के समान और भी, तो वह उसे (अल्लाह के दण्ड से बचने के लिये) अर्थदण्ड के रूप में दे देंगे। उन्हीं से कड़ा हिसाब लिया जायेगा, तथा उन का स्थान नरक है। और वह बुरा रहने का स्थान है।

مَعَهُ لَافْتَدَّوَابِهِۦٓ ۖ وَلِيكَ لَكُمْ سُوءُ الْحِسَابِ ۗ
وَمَا أُولَٰئِكَ بِجَاهِلِينَ بِمَا يَصِفُونَ ۗ

19. तो क्या जो जानता है कि आप के पालनहार की ओर से जो (कुर्आन) आप पर उतारा गया है सत्य है, उस के समान है, जो अन्धा है? वास्तव में बुद्धिमान लोग ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।

أَفَمَن يَعْلَمُ أَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۗ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ۗ

20. जो अल्लाह से किया वचन^[1] पूरा करते हैं, और वचन भंग नहीं करते।

الَّذِينَ يُؤْتُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ ۖ وَلَا يَتَّقُونَ الْبَيْتَاتِ ۗ

21. और उन (संबंधों) को जोड़ते हैं, जिन के जोड़ने का अल्लाह ने आदेश दिया है, और अपने पालनहार से डरते हैं, तथा बुरे हिसाब से डरते हैं।

وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا آمَرَ اللَّهُ بِهِ ۖ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۖ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ۗ

22. तथा जिन लोगों ने अपने पालनहार की प्रसन्नता के लिये धैर्य से काम लिया, और नमाज़ की स्थापना की, तथा हम ने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है उस में से छुपे और खुले तरीके से दान करते रहे, तो वही हैं, जिन के लिये परलोक का घर (स्वर्ग) है।

وَالَّذِينَ صَبَرُوا ۖ وَالْبَيْعَاءَ ۖ وَجِبَهُ رَبَّهُمْ ۖ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۖ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَدْرُسُونَ ۖ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةِ ۗ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ۗ

23. ऐसे स्थायी स्वर्ग जिन में वे और उन के बाप दादा तथा उनकी पत्नियों और संतान में से जो सदाचारी हों प्रवेश करेंगे, तथा फरिश्ते उन के

جَاءتْ عَذْرَىٰٓ يَقْدُحُوْنَهَا ۖ وَمَنْ صَلَمَ مِنْ آبَائِهِمْ ۖ وَأَزْوَاجِهِمْ ۖ وَذُرِّيَّتِهِمْ ۖ وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ ۗ

- पास प्रत्येक द्वार से (स्वागत के लिये) प्रवेश करेंगे।
24. (वे कहेंगे): तुम पर शान्ति हो, उस धैर्य के कारण जो तुम ने किया, तो क्या ही अच्छा है, यह परलोक का घर!
25. और जो लोग अल्लाह से किये वचन को उसे सुदृढ़ करने के पश्चात् भंग कर देते हैं, और अल्लाह ने जिस संबन्ध को जोड़ने का आदेश दिया^[1] है उसे तोड़ते हैं, और धरती में उपद्रव फैलाते हैं। वही हैं जिन के लिये धिक्कार है, और जिन के लिये बुरा आवास है।
26. और अल्लाह जिसे चाहे उसे जीविका फैला कर देता है, और जिसे चाहे नाप कर देता है। और वह (काफिर) संसारिक जीवन में मग्न है, तथा संसारिक जीवन परलोक की अपेक्षा तनिक लाभ के सामान के सिवा कुछ भी नहीं है।
27. और जो काफिर हो गये, वह कहते हैं: इस पर इस के पालनहार की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गयी? (हे नबी!) आप कह दें कि वास्तव में अल्लाह जिसे चाहे कुपथ करता है, और अपनी ओर उसी को राह दिखाता है जो उस की ओर ध्यानमग्न हों।

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٤﴾

وَالَّذِينَ يَبْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَهْتَدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾

أَلَمْ يَسْطُرُوا لِرَبِّهِمْ نَيْشًا وَيَقْدِرُوا فَوْحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ أَرَادَ ﴿٢٧﴾

1 हदीस में आया है कि जो व्यक्ति यह चाहता हो कि उस की जीविका अधिक, और आयु लम्बी हो तो वह अपने संबंधों के जोड़े। (सहीह बुखारी, 2067, सहीह मुस्लिम, 2557)

28. (अर्थात् वह) लोग जो ईमान लाये, तथा जिन के दिल अल्लाह के स्मरण से संतुष्ट होते हैं। सुन लो! अल्लाह के स्मरण ही से दिलों को संतोष होता है।

الَّذِينَ آمَنُوا وَظَنُّوا أَنَّهُم يُبَدِّلُ اللَّهُ كُفْرَهُمْ بَدَلًا وَأَنَّهُمْ كَانُوا فِي اللَّهِ يَتَوَكَّلُونَ
تَطْمِئِنُّ الْقُلُوبُ ۝

29. जो लोग ईमान लाये और सदाचार किये, उन के लिये आनन्द^[1], और उत्तम ठिकाना है।

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَىٰ لَهُمْ وَحَسَنَ مَا بِهِ

30. इसी प्रकार हम ने आप को एक समुदाय में जिस से पहले बहुत से समुदाय गुजर चुके हैं, रसूल बना कर भेजा है, ताकि आप उन को वह संदेश सुनायें जो हम ने आप की ओर वही द्वारा भेजा है, और वह अत्यंत कृपाशील को अस्वीकार करते हैं? आप कह दें: वही मेरा पालनहार है, कोई पूज्य नहीं परन्तु वही। मैंने उसी पर भरोसा किया है और उसी की ओर मुझे जाना है।

كَذَلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي آتَةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَا آيَاتٌ لِّتَمَازُ عَلَىٰ مَن آذَىٰ أَوْ حِينًا لِّبَيْتِكُمْ لِيُؤْمِنُوا بِالْمُؤْمِنِينَ
فَلْهُم بِرِزْقِ اللَّهِ أُولِي الْأُلْسَانِ ۝ تَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَبِالْحَقِّ يُنَادِي النَّبِيُّ ۝

31. यदि कोई ऐसा कुर्आन होता जिस से पर्वत खिसका^[2] दिये जाते, या धरती खण्ड-खण्ड कर दी जाती, या इस के द्वारा मुर्दा से बात की जाती (तो भी वह ईमान नहीं लाते)। बात

وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِعَتْ بِهِ الْأَرْضُ
أَو خَلِمَ بِهِ الْمُؤْتَمِرِينَ مِنْ بِلَدِهِ الْأَرْضِ جَمِيعًا أَفَلَا يَكْفُرُونَ
الَّذِينَ آمَنُوا أَن لَّدَيْسَاءُ اللَّهِ لَهْدَى النَّاسِ جَمِيعًا
وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا مُصِيبِيهِمْ بِمَا صَعَوْا قَارِعَةً

1 यहाँ "तूबा" शब्द प्रयुक्त हुआ है। इस का शाब्दिक अर्थ: सुख और सम्पन्नता है। कुछ भाष्यकारों ने इसे स्वर्ग का एक वृक्ष बताया है जिस का साया बड़ा आनन्ददायक होगा।

2 मक्का के काफिर आप से यह माँग करते थे कि यदि आप नबी हैं तो हमारे बाप दादा को जीवित कर दें। ताकि हम उन से बात करें। या मक्का के पर्वतों को खिसका दें। कुछ मुसलमानों के दिलों में भी यह इच्छा हुई कि ऐसा हो जाता है तो संभव है कि वह ईमान ले आयें। उसी पर यह आयत उतरी। (देखिये: फत्हुल बयान, भाष्य सूरह रअद)

यह है कि सब अधिकार अल्लाह ही को हैं, तो क्या जो ईमान लाये हैं, वह निराश नहीं हुये कि यदि अल्लाह चाहता तो सब लोगों को सीधी राह पर कर देता! और काफिरों को उन के कर्तूत के कारण बराबर आपदा पहुँचती रहेगी अथवा उन के घर के समीप उतरती रहेगी यहाँ तक कि अल्लाह का वचन^[1] आ जाये, और अल्लाह, वचन का विरुद्ध नहीं करता।

32. और आप से पहले भी बहुत से रसूलों का परिहास किया गया है, तो हम ने काफिरों को अवसर दिया। फिर उन्हें धर लिया, तो मेरी यातना कैसी रही?

33. तो क्या जो प्रत्येक प्राणी के कर्तूत से अवगत है, और उन्होंने ने (उस) अल्लाह का साझी बना लिया है, आप कहिये कि उन के नाम बताओ। या तुम उसे उस चीज़ से सूचित कर रहे हो जिसे वह धरती में नहीं जानता, या ओछी बात^[2] करते हो? बल्कि काफिरों के लिये उन के छल सुशोभित बना दिये गये हैं। और सीधी राह से रोक दिये गये हैं, और जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो उस को कोई राह दिखाने वाला नहीं।

34. उन्हीं के लिये यातना है संसारिक जीवन में। और निःसंदेह परलोक की यातना अधिक कड़ी है। और उन को

أَوْعَلُّ قَرِيْبًا مِّن دَارِهِمْ حَتَّىٰ يَأْتِيَ وَعْدَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَكَنُحَيْفٌ مَّبِيعَادٌ ﴿١٣﴾

وَلَقَدْ آسَفْنَاهُ مِنْ قَبْلِكَ فَانْتَلَيْتَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا أَنْتُمْ أَخْدَانُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿١٤﴾

أَلَمْ نَسْأَلِكُمْ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَجَعَلْنَا لِكُلِّ شَرِكَاكُمْ سُلُوكًا مَّمْنُونًا مَّا لَا يَعْلَمُونَ فِي الْأَرْضِ أَمْ يُظَاهِرُونَ الْقَوْلَ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا مَكْرَهُمْ وَصَدَّوْا عَنِ السَّبِيْلِ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿١٥﴾

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا وَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَقُّ وَمَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿١٦﴾

1 वचन से अभिप्राय प्रलय के आने का वचन है।

2 अर्थात् निर्मूल और निराधार।

अल्लाह से कोई बचाने वाला नहीं।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وَعَدَ الْمُتَّقُونَ نَجْوَىٰ مِنْ حَتْمِهَا
الَّذِينَ أَكَلُوا مِنْهَا وَأَمَّا تِلْكَ عُقْبَى الَّذِينَ
اتَّقَوْا وَعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ ۝

35. उस स्वर्ग का उदाहरण जिस का वचन आज्ञाकारियों को दिया गया है उस में नहरें बहती हैं, उस के फल सतत हैं, और उस की छाया। यह उन का परिणाम है जो अल्लाह से डरे, और काफिरों का परिणाम नरक है।

وَالَّذِينَ اتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِمَا آتَوْا
إِلَيْكَ وَمِنَ الْكُذَّابِ مَنْ يُكْرَهُ بَعْضُهُمْ
أَمْرًا أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ بِهِ إِلَيْهِ
أَدْعُوا ۝ وَاللَّهُ مَابٍ ۝

36. (हे नबी!) जिन को हम ने पुस्तक दी है वह उस (कुर्आन) से प्रसन्न हो रहे हैं^[1] जो आप की ओर उतारा गया है। और सम्प्रदायों में कुछ ऐसे भी हैं, जो नहीं मानते।^[2] आप कह दें कि मुझे आदेश दिया गया है कि अल्लाह की इबादत (वंदना) करूँ, और उस का साझी न बनाऊँ। मैं उसी की ओर बुलाता हूँ, और उसी की ओर मुझे जाना है।^[3]

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا وَلَئِنْ اتَّبَعْتَ
أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ
اللَّهِ مِنْ وَّالِيٍّ وَلَا وَاقٍ ۝

37. और इसी प्रकार हम ने इस को अर्बी आदेश के रूप में उतारा है^[4] और यदि आप उन की आकांक्षाओं का अनुसरण करेंगे, इसके पश्चात् कि आप के पास ज्ञान आ गया, तो अल्लाह से आप का कोई सहायक और रक्षक न होगा।

1 अर्थात् वह यहूदी, ईसाई और मूर्तिपूजक जो इस्लाम लाये।

2 अर्थात् जो अब तक मुसलमान नहीं हुये।

3 अर्थात् कोई ईमान लाये या न लाये, मैं तो कदापि किसी को उस का साझी नहीं बना सकता।

4 ताकि वह बहाना न करें कि हम कुर्आन को समझ नहीं सके, इसलिये कि सारे नबियों पर जो पुस्तकें उतरीं वह उन्हीं की भाषाओं में थीं।

38. और हम ने आप से पहले बहुत से रसूलों को भेजा है, और उन की पत्नियाँ तथा बाल-बच्चे^[1] बनाये। किसी रसूल के बस में नहीं है कि अल्लाह की अनुमति बिना कोई निशानी ला दे और हर वचन के लिये एक निर्धारित समय है।^[2]
39. वह जो (आदेश) चाहे मिटा देता है और जो चाहे शेष (साबित) रखता है। उसी के पास मूल^[3] पुस्तक है।
40. और (हे नबी!) यदि हम आप को उस में से कुछ दिखा दें जिस की धमकी हम ने उन (काफ़िरों) को दी है, अथवा आप को (पहले ही) मौत दे दें, तो आप का काम उपदेश पहुँचा देना है। और हिसाब लेना हमारा काम है।
41. क्या वे नहीं देखते कि हम धरती को उस के किनारों से कम करते^[4] जा रहे हैं। और अल्लाह ही आदेश देता है कोई उस के आदेश का प्रत्यालोचन करने वाला नहीं, और वह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।
42. तथा उस से पहले (भी) लोगों ने रसूलों के साथ षडयंत्र रचा, और षडयंत्र (को निष्फल करने) का सब

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ
أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ
بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ لِكُلِّ كِتَابٍ ۝

يَسْأَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ وَيُشِيدُ ۝ وَعِنْدَهُ أُمُّ الْكِتَابِ ۝

وَأَنْ مَّا نُرِيدُكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ
نَتَوَقَّعُكَ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاءُ وَعَلَيْنَا
الْحِسَابُ ۝

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا
وَاللَّهُ يَحْكُمُ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْكُمْ وَهُوَ سَرِيعُ
الْحِسَابِ ۝

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَبَدَّلَ اللَّهُ
حَبِيبًا يَعْزِمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ وَسِعَ اللَّهُ

1 अर्थात वह मनुष्य थे, नूर या फ़रिश्ते नहीं।

2 अर्थात अल्लाह का वादा अपने समय पर पूरा हो कर रहेगा उस में देर- सवेर नहीं होगी।

3 अर्थात (लौहे महफूज़) जिस में सब कुछ अंकित है।

4 अर्थात मुसलमानों की विजय द्वारा काफ़िरों के देश में कमी करते जा रहे हैं।

अधिकार तो अल्लाह को है, वह जो कुछ प्रत्येक प्राणी करता है, उसे जानता है। और काफ़िरों को शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा कि परलोक का घर किस के लिये है?

43. (हे नबी!) जो काफ़िर हो गये, वे कहते हैं कि आप अल्लाह के भेजे हुये नहीं हैं। आप कह दें: मेरे तथा तुम्हारे बीच अल्लाह की गवाही तथा उन की गवाही जिन्हें किताब का ज्ञान दिया गया काफी है।^[1]

الْكَفْرَ لِمَنْ عُقِبَى الدَّارِ ۝

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مُرْسَلًا قُلْ كَفَىٰ
بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِنْدَ اللَّهِ
الْكِتَابُ ۝

1 अर्थात् उन अहले किताब (यहूदी और ईसाई) की जिन को अपनी पुस्तकों से नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आने की शुभसूचना का ज्ञान हुआ तो वह इस्लाम ले आये। जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम तथा नजाशी (हब्शा देश का राजा), और तमीम दारी इत्यादि और आप के रसूल होने की गवाही देते हैं।

सूरह इब्राहीम - 14



सूरह इब्राहीम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 52 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत नं० 35 में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की दुआ का वर्णन है। इसी लिये इस का यह नाम है।
- इस में रसूल तथा कुर्आन के भेजने का कारण बताया गया है। और नबियों के कुछ एतिहास प्रस्तुत किये गये हैं। जिन से रसूलों के विरोधियों के दुष्परिणाम सामने आते हैं। और परलोक में भी उस दण्ड की झलक दिखायी गई है जिस से रोयें खड़े हो जाते हैं।
- इस में बताया गया है कि ईमान वाले कैसे सफल होंगे, तथा काफ़ि़रों को अल्लाह के उपकार का आभारी न होने पर सावधान करने के साथ ही ईमान वालों को अल्लाह का कृतज्ञ होने की नीति बतायी गयी है।
- इस में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) कि उस एतिहासिक प्रार्थना का वर्णन है जो उन्होंने ने अपनी संतति को शिर्क से सुरक्षित रखने के लिये की थी। किन्तु आज उन की संतान जो कुछ कर रही है वह उन की दुआ के सर्वथा विपरीत है।
- और अन्त में प्रलय और उस की यातना का भ्याव चित्रण किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़, लाम, रा।, यह (कुर्आन) एक पुस्तक है, जिसे हम ने आप की ओर अवतरित किया है, ताकि आप लोगों को अंधेरों से निकाल कर प्रकाश की ओर लायें, उन के पालनहार की अनुमति से, उस की राह की ओर जो बड़ा प्रबल सराहा हुआ है।

الرَّسْمِ الَّذِي أَنْزَلْنَاهُ عَلَيْكَ يُخْرِجُ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَى صِرَاطٍ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ

2. अल्लाह की ओर। जिस के अधिकार में आकाश और धरती का सब कुछ है। तथा काफ़िरो के लिये कड़ी यातना के कारण विनाश है।
3. जो संसारिक जीवन को परलोक पर प्रधानता देते हैं, और अल्लाह की डगर (इस्लाम) से रोकते हैं, और उसे कुटिल बनाना चाहते हैं, वही कुपथ में दूर निकल गये हैं।
4. और हम ने किसी (भी) रसूल को उस की जाति की भाषा ही में भेजा, ताकि वह उन के लिये बात उजागर कर दे। फिर अल्लाह जिसे चाहता है कुपथ करता है और जिसे चाहता है सुपथ दर्शा देता है। और वही प्रभुत्वशाली और हिक्मत वाला है।
5. और हम ने मूसा को अपनी आयतों (चमत्कारों) के साथ भेजा, ताकि अपनी जाति को अन्धेरो से निकाल कर प्रकाश की ओर लायें। और उन्हें अल्लाह के दिनों (पुरस्कार और यातना) का स्मरण कराओ। वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं, प्रत्येक अति सहनशील कृतज्ञ के लिये।
6. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा: अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को याद करो, जब उस ने तुम को फ़िरओनियों से मुक्त किया, जो तुम को घोर यातना दे रहे थे। और तुम्हारे पुत्रों को बध कर रहे थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित

اللَّهُ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَوَيْلٌ
لِّلْكَٰفِرِيْنَ مِنْ عَذٰبِ رَبِّهِمْ

لِلَّذِيْنَ يَسْتَحْبِبُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ
وَيَصُدُّوْنَ عَنِ سَبِيْلِ اللَّهِ وَيَجْوَهِرُهَا عَوْجًا
أُولَٰئِكَ فِي ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ ۝

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسٰنٍ قَوْمِهِ لِيُبَيِّنَ
لَهُمْ فَيَضِلُّ اللَّهُ مِنْ يَشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَشَآءُ
وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ اَنْ اَخْرِجَ قَوْمَكَ
مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَ التُّوْحٰدِ وَذَكَرَهُمْ بِآيٰتِهِ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبّٰرٍ شٰكُوْرٍ ۝

وَإِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللَّهِ
عَلَيْكُمْ اِذْ اَخْرَجَكُمْ مِنَ اِل فِرْعَوْنَ
يَسُوْمُوْكُمْ سُوْءَ الْعَذٰبِ وَيَدْبَحُوْنَ
اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلٰءٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝

रहने देते^[1] थे, और इस में तुम्हारे पालनहार की ओर से एक महान् परीक्षा थी।

7. तथा (याद करो) जब तुम्हारे पालनहार ने घोसणा कर दी कि यदि तुम कृतज्ञ बनोगे तो तुम्हें और अधिक दूंगा। तथा यदि अकृतज्ञ रहोगे तो वास्तव में मेरी यातना बहुत कड़ी है।
8. और मूसा ने कहा: यदि तुम और सभी लोग जो धरती में हैं कुफ़र करें, तो भी अल्लाह निरीह तथा^[2] सराहा हुआ है।
9. क्या तुम्हारे पास उन का समाचार नहीं आया, जो तुम से पहले थे: नूह तथा आद और समूद की जाति का और जो उन के पश्चात् हुये जिन को अल्लाह ही जानता है? उन के पास उन के रसूल प्रत्यक्ष प्रमाण लाये, तो उन्होंने ने अपने हाथ अपने मुखों में दे^[3] लिये, और कह दिया कि हम उस संदेश को नहीं मानते, जिस के साथ तुम भेजे गये हो। और वास्तव में उस के बारे में संदेह में हैं, जिस की ओर हमें बुला रहे हो (तथा) द्विधा में हैं।

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ
وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ۝

وَقَالَ مُوسَىٰ إِنَّ تَكْفُرًا أَنْتُمْ وَمَنْ فِي
الْأَرْضِ جَمِيعًا فَأِنَّ اللَّهَ لَعَنُوكُمْ حَمِيدٌ ۝

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُؤُا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمُ نُوحٍ
وَإِدْرِيذُ وَسُودَةُ وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ أَلا
يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ جَاءَهُمْ رَسُولُهُمْ
بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا أَيْدِيَهُمْ فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا
إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِمَّا
تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ مُرِيدِينَ ۝

1. ताकि उन के पुरुषों की अधिक संख्या से अपने राज्य के लिये भय न हो। और उन की स्त्रियों का अपमान करें।
2. हदीस में आया है कि अल्लाह तआला फरमाता है: हे मेरे बंदो! यदि तुम्हारे अगले-पिछले तथा सब मनुष्य और जिन संसार के सब से बुरे मनुष्य के बराबर हो जायें तो भी मेरे राज्य में कोई कमी नहीं आयेगी। (सहीह मुस्लिम, 2577)
3. यह ऐसी ही भाषा शैली है, जिसे हम अपनी भाषा में बोलते हैं कि कानों पर हाथ रख लिया, और दाँतों से उंगली दबा ली।

10. उन के रसूलों ने कहा: क्या उस अल्लाह के बारे में संदेह है, जो आकाशों तथा धरती का रचयिता है। वह तुम्हें बुला^[1] रहा है ताकि तुम्हारे पाप क्षमा कर दे, और तुम्हें एक निर्धारित^[2] अवधि तक अवसर दे। उन्होंने ने कहा: तुम तो हमारे ही जैसे एक मानव पुरुष हो, तुम चाहते हो कि हमें उस से रोक दो, जिस की पूजा हमारे बाप-दादा कर रहे थे। तुम हमारे पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण लाओ।

قَالَتْ رُسُلُهُمْ أِنِّي لِلّٰهِ شَاكِرٌ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ
ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ اِلٰى اَجَلٍ مُّسَمًّى قَالُوْا
اِنَّ اَنْتُمْ اِلَّا اَنْسَابٌ مِّثْلُنَا نَرْتَدِدُوْنَ اَنْ
تَصَدَّقُوْنَا وَعَمَا كَانَ يَعْْبُدُ الْاَبَاؤُنَا
فَاَنْتُمْ نٰسِطُوْنَ مُشْرِكِيْنَ ۝۱۰

11. उन से उन के रसूलों ने कहा: हम तुम्हारे जैसे मानव-पुरुष ही हैं, परन्तु अल्लाह अपने भक्तों में से जिस पर चाहे उपकार करता है, और हमारे बस में नहीं है कि अल्लाह की अनुमति के बिना कोई प्रमाण ला दें। और अल्लाह ही पर ईमान वालों को भरोसा करना चाहिये।

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنَّ مَعَكُمْ الْاَبَشْرَ مِثْلَكُمْ وَلٰكِن
اللّٰهُ يَخْتَارُ عَلٰى مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَاَمَّا كَانَ لَنَا
اِنَّ تَابِيْعَكُمْ يُّسَلِّطُوْنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ وَعَلٰى اللّٰهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝۱۱

12. और क्या कारण है कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, जब कि उस ने हमें हमारी राहें दर्शा दी हैं? और हम अवश्य उस दुःख को सहन करेंगे, जो तुम हमें दोगे, और अल्लाह ही पर भरोसा करने वालों को निर्भर रहना चाहिये।

وَمَا لَنَا اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلٰى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰٓا نَسٰبِنَا
وَلَنْصَبِرَنَّ عَلٰى مَا اٰذَيْتُمُوْنَا وَعَلٰى اللّٰهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝۱۲

13. और काफिरों ने अपने रसूलों से कहा: हम अवश्य तुम्हें अपने देश से निकाल देंगे, अथवा तुम्हें हमारे पंथ में आना

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رُسُلُهُمْ اَلْنَحْرِجَنَّكُمْ مِّنْ
اَرْضِنَاۗ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِىْ مِلْكِنَاۗ فَاَوْحٰى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ

1 अपनी आज्ञा पालन की ओर।

2 अर्थात् मरण तक संसारिक यातना से सुरक्षित रखे। (कुर्तबी)

होगा। तो उन के पालनहार ने उन की ओर वही की, कि हम अवश्य अत्याचारियों का विनाश कर देंगे।

14. और तुम्हें उन के पश्चात् धरती में बसा देंगे, यह उस के लिये है, जो मेरे महिमा से खड़े^[1] होने से डरा, तथा मेरी चेतावनी से डरा।

15. और उन (रसूलों) ने विजय की प्रार्थना की, तो सभी उद्दंड विरोधी असफल हो गये।

16. उस के आगे नरक है और उसे पीप का पानी पिलाया जायेगा।

17. वह उसे थोड़ा-थोड़ा गले से उतारेगा, मगर उतार नहीं पायेगा। और उस के पास प्रत्येक स्थान से मौत आयेगी जब कि वह मरेगा नहीं। और उस के आगे भीषण यातना होगी।

18. जिन लोगों ने अपने पालनहार के साथ कुफ़्र किया उन के कर्म उस राख के समान हैं, जिसे आँधी के दिन की प्रचण्ड वायु ने उड़ा दिया हो। यह लोग अपने किये में से कुछ भी नहीं पा सकेंगे, यही (सत्य सँ) दूर का कुपथ है।

19. क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह ही ने आकाशों तथा धरती की रचना सत्य के साथ की है, यदि वह चाहे तो तुम्हें ले जाये, और नयी उत्पत्ति ला दे।

20. और वह अल्लाह पर कठिन नहीं है।

لَهُمُ الْمَكَانُ الْعَالِيْنَ

وَأَنْتُمْ كُنْتُمْ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ذَلِكُمْ لِمَنْ خَافَ
مَقَامِي وَخَافَ عِبِيدِي

وَأَسْفَهَوْا وَأَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ

مِّنْ وَرَائِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِنْ مَّاءٍ صَدِيدٍ

يَجْعَلُهُمْ وَلَا يَكْفُرُهُمْ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ
مَكَانٍ وَمَا هُمْ بِمُعِيذِينَ وَمِنْ وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ

مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ
الزَّبْحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ لَّا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا عَلَىٰ
شَيْءٍ ذَلِكَ هُوَ الصَّلُّ الْبَعِيدُ

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ
إِنْ يُشَاءِ لِيُهَيِّبَكُمْ وَيَأْتِي بِخَلْقٍ جَدِيدٍ

وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ

1 अर्थात् संसार में मेरी महिमा का विचार कर के सदाचार किया।

21. और सब अल्लाह के सामने खुल कर^[1] आ जायेंगे, तो निर्बल लोग उन से कहेंगे जो बड़े बन रहे थे कि हम तुम्हारे अनुयायी थे, तो क्या तुम अल्लाह की यातना से बचाने के लिये हमारे कुछ काम आ सकोगे? वे कहेंगे: यदि अल्लाह ने हमें मार्ग दर्शन दिया होता, तो हम अवश्य तुम्हें मार्ग दर्शन दिखा देते। अब तो समान है, चाहे हम अधीर हों, या धैर्य से काम लें, हमारे बचने का कोई उपाय नहीं है।

22. और शैतान कहेगा, जब निर्णय कर दिया^[2] जायेगा: वास्तव में अल्लाह ने तुम्हें सत्य वचन दिया था, और मैं ने तुम्हें वचन दिया तो अपना वचन भंग कर दिया, और मेरा तुम पर कोई दबाव नहीं था, परन्तु यह कि मैं ने तुम को (अपनी ओर) बुलाया, और तुम ने मेरी बात स्वीकार कर ली। अतः मेरी निन्दा न करो, स्वयं अपनी निन्दा करो, न मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ, और न तुम मेरी सहायता कर सकते हो। वास्तव में मैं ने उसे अस्वीकार कर दिया, जो इस से पहले^[3] तुम ने मुझे अल्लाह का साझी बनाया था। निस्संदेह अत्याचारियों के लिये दुःख दायी यातना है।

23. और जो ईमान लाये, और सदाचार

1 अर्थात् प्रलय के दिन अपनी समाधियों से निकल कर।

2 स्वर्ग और नरक के योग्य का निर्णय कर दिया जायेगा।

3 संसार में।

وَبَرُّوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۚ قَالَ الضّعْفُوْا الَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْا ۗ اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا ۗ هَلْ اَنْتُمْ مُّقْتَدُوْنَ
عَنَّا ۗ مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۗ قَالَ الْاُوْهَدٰنَا
اللّٰهُ لَهْدٰۤيْنٰكُمْ سَوَآءٌ عَلَيْنَا ۗ اَجْرِعْنَا ۗ اَمْ صَبْرُنَا
مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْبٍ ۙ

وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا اَفْضَى الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَّكُمْ
وَعَدَّ الْحَقُّ ۗ وَعَدْتُكُمْ مَا خَلْفْتُكُمْ ۗ وَمَا كَانَ لِيْ
عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاَسْتَجِبْتُمْ
لِيْ ۗ فَلَا تَلْمُزُوْنِيْ ۗ وَلَوْ مَوَّآ اَنْفُسَكُمْ ۗ مَا اَنَا
بِمُبْصِرٍ ۗ كُمْ وَمَا اَنْتُمْ بِمُبْصِرِيْنَ ۗ اِنِّيْ نَكَرْتُ بِمَا
اَنْشَرْتُمْ ۗ مِنْ قَبْلِ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ

وَادْخُلِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنَّٰتٍ

करते रहे, उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रवेश दिया जायेगा जिन में नहरें बहती होंगी। वह अपने पालनहार की अनुमति से उस में सदा रहने वाले होंगे, और उस में उन का स्वागत यह होगा: तुम पर शान्ति हो।

24. (हे नबी!) क्या आप नहीं जानते कि अल्लाह ने कलिमा तय्येबा^[1] (पवित्र शब्द) का उदाहरण एक पवित्र वृक्ष से दिया है, जिस की जड़ (भूमि में) सुदृढ़ स्थित है, और उस की शाखा आकाश में है?
25. वह अपने पालनहार की अनुमति से प्रत्येक समय फल दे रहा है। और अल्लाह लोगों को उदाहरण दे रहा है, ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।
26. और बुरी^[2] बात का उदाहरण एक बुरे वृक्ष जैसा है, जिसे धरती के ऊपर से उखाड़ दिया गया हो, जिस के लिये कोई स्थिरता नहीं है।

تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا يَأْتُونَ
رَبَّهُمْ بِحَبِيبَةٍ فِيهَا سَلَامٌ ﴿١٠﴾

الَّتِي تَرْكَبُ فَرْبَ اللَّهِ مِثْلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً
كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ﴿١١﴾

تُؤْتِي الْأَكْمَامَ كُلَّ حِينٍ يَأْتُونَ بِهَا وَيَضْرِبُ اللَّهُ
الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿١٢﴾

وَمِثْلَ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ لُدَّتْ
مِنْ فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ﴿١٣﴾

- 1 (कलिमा तय्येबा) से अभिप्रत "ला इलाहा इल्लल्लाह" है। जो इस्लाम का धर्म सूत्र है। इस का अर्थ यह है कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं है। और यही एकेश्वरवाद का मूलाधार है। अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास थे कि आप ने कहा: मुझे ऐसा वृक्ष बताओ जो मुसलमान के समान होता है। जिस का पत्ता नहीं गिरता, तथा प्रत्येक समय अपना फल दिया करता है? इब्ने उमर ने कहा: मेरे मन में यह बात आयी कि वह खजूर का वृक्ष है। और अबू बक्र तथा उमर को देखा कि बोल नहीं रहे हैं इसलिये मैं ने भी बोलना अच्छा नहीं समझा। जब वे कुछ नहीं बोले, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: वह खजूर का वृक्ष है। (संक्षिप्त अनुवाद के साथ, सहीह बुखारी: 4698, सहीह मुस्लिम: 2811)
- 2 अर्थात् शिर्क तथा मिश्रणवाद की बात।

27. अल्लाह ईमान वालों को स्थिर^[1] कथन के सहारे लोक तथा परलोक में स्थिरता प्रदान करता है, तथा अत्याचारियों को कुपथ कर देता है, और अल्लाह जो चाहता है, करता है।
28. क्या आप ने उन्हें^[2] नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह के अनुग्रह को कुफ़्र से बदल दिया, और अपनी जाति को विनाश के घर में उतार दिया।
29. (अर्थात) नरक में, जिस में वह झोंके जायेंगे। और वह रहने का बुरा स्थान है।
30. और उन्होंने ने अल्लाह के साझी बना लिये, ताकि उस की राह (सत्धर्म) से कुपथ कर दें। आप कह दें कि तनिक आनन्द ले लो, फिर तुम्हें नरक की ओर ही जाना है।
31. (हे नबी!) मेरे उन भक्तों से कह दो, जो ईमान लाये हैं, कि नमाज़ की स्थापना करें और उस में से जो हम ने प्रदान किया है, छुपे और खुले तरीके से दान करें, उस दिन के आने से पहले जिस में न कोई क्रय-विक्रय

يَتَّبِعْتُ اللَّهَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ وَبِضَلِّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ
وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ﴿٢٧﴾

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ تُكْفٰرًا وَّكَلٰهُوا
قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾

جَهَنَّمَ يَصَلُّوْنَهَا وَيَسُّ الْقَارِ ﴿٢٩﴾

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ اٰنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِهِ قُلْ
تَسْبَعُوْا اِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾

قُلْ لِعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَعَلٰنِيَةً مِّنْ
قَبْلِ اَنْ يَّآئِيْ يَوْمَ لَا يَسْعٰ فِیْهِ وَاكْحَلٌ ﴿٣١﴾

- 1 स्थित तथा दृढ़ कथन से अभिप्रेत "ला इलाहा इल्लल्लाह" है। (कुर्तुबी) बराअ बिन आजिब रजिअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि आप ने कहा: मुसलमान से जब कब्र में प्रश्न किया जाता है, तो वह «ला इलाहा इल्लल्लाह, मुहम्मदुर रसूलुल्लाह» की गवाही देता है। अर्थात अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं। और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं। इसी के बारे में यह आयत है। (सहीह बुख़ारी: 4699)
- 2 अर्थात: मक्का के मुशर्रिक, जिन्होंने ने आप का विरोध किया। (देखिये: सहीह बुख़ारी: 4700)

होगा, और न कोई मैत्री।

32. और अल्लाह वही है, जिस ने तुम्हारे लिये आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति की, और आकाश से जल बरसाया फिर उस से तुम्हारी जीविका के लिये अनेक प्रकार के फल निकाले। और नौका को तुम्हारे वश में किया, ताकि सागर में उस के आदेश से चले, और नदियों को तुम्हारे लिये वशवर्ती किया।
33. तथा तुम्हारे लिये सूर्य और चाँद को काम में लगाया जो दोनों निरन्तर चल रहे हैं। और तुम्हारे लिये रात्रि और दिवस को वश में^[1] कर दिया।
34. और तुम्हें उस सब में से कुछ दिया, जो तुम ने माँगा^[2] और यदि तुम अल्लाह के पुरस्कारों की गणना करना चाहो, तो भी नहीं कर सकते। वास्तव में मनुष्य बड़ा अत्याचारी कृतघ्न (ना शुकरा) है।
35. तथा (याद करो) जब इब्राहीम ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! इस नगर (मक्का) को शान्ति का नगर बना दे, और मुझे तथा मेरे पुत्रों को मूर्ति पूजा से बचा ले।
36. मेरे पालनहार! इन मूर्तियों ने बहुत से लोगों को कुपथ किया है, अतः जो

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ
السَّمَرَاتِ رِزْقًا لَكُمْ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفَلَكَ لِتَجْرِيَ فِي
الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْإِنهَارَ

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَائِبَيْنِ وَسَخَّرَ
لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ

وَاللَّهُ مِنْ كُلِّ مَسْأَلَةٍ شَكُورٌ وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَتَ
اللَّهِ لَا تُحْصُونَهَا إِنَّ الْإِنسَانَ لَكَفُورٌ مُكَذِّبٌ

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا الْبَلَدَ
أَمِنًا وَاجْعَلْ بَيْتِي وَبَيْتَ أَبِيكَ الْأَصْنَامَ

رَبِّ إِنَّهُنَّ أَضْلَلْنَ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ

- 1 वश में करने का अर्थ यह है कि अल्लाह ने इन के ऐसे नियम बना दिये हैं, जिन के कारण यह मानव के लिये लाभदायक हो सकें।
- 2 अर्थात् तुम्हारी प्रत्येक प्राकृतिक माँग पूरी की, और तुम्हारे जीवन की आवश्यकता के सभी संसाधनों की व्यवस्था कर दी।

मेरा अनुयायी हो, वही मेरा है। और जो मेरी अवैज्ञा करे, तो वास्तव में तू अति क्षमाशील दयावान् है।

فَمَنْ تَبِعَنِي فَإِنَّهُ مِنِّي وَمَنْ عَصَانِي
فَأَنَّكَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿۱۰﴾

37. हमारे पालनहार! मैं ने अपनी कुछ संतान मरुस्थल की एक वादी (उपत्यका) में तेरे सम्मानित घर (काबा) के पास बसा दी है, ताकि वह नमाज़ की स्थापना करे। अतः लोगों के दिलों को उन की ओर आकर्षित कर दे, और उन्हें जीविका प्रदान कर, ताकि वह कृतज्ञ हों।

رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيْرِ
ذِي زُرْعَةٍ عِنْدَ أَيْمَتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا
لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ فَاجْعَلْ أَكْثِدًا مِنَ
النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَارِثًا لَهُمْ مِنَ
الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ﴿۱۱﴾

38. हमारे पालनहार! तू जानता है, जो हम छुपाते और जो व्यक्त करते हैं। और अल्लाह से कुछ छुपा नहीं रहता, धरती में और न आकाशों में।

رَبَّنَا إِنَّا أَتَيْنَكَ تَعْلَمُ مَا نَخْفَىٰ وَمَا نَعْلُنُ
وَمَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ
وَلَا فِي السَّمَاءِ ﴿۱۲﴾

39. सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है, जिस ने मुझे बुढ़ापे में (दो पुत्र) इस्माईल और इस्हाक प्रदान किये। वास्तव में मेरा पालनहार प्रार्थना अवश्य सुनने वाला है।

أَحْمَدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ
وَإِسْحَاقَ إِنَّ رَبِّي لَسَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿۱۳﴾

40. मेरे पालनहार! मुझे नमाज़ की स्थापना करने वाला बना दे, तथा मेरी संतान को। हे मेरे पालनहार! और मेरी प्रार्थना स्वीकार कर।

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي
رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ﴿۱۴﴾

41. हे हमारे पालनहार! मुझे क्षमा कर दे, तथा मेरे माता-पिता और ईमान वालों को, जिस दिन हिसाब लिया जायेगा।

رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ
يَوْمَ يُقُومُ الْحِسَابُ ﴿۱۵﴾

42. और तुम कदापि अल्लाह को उस से अचेत न समझो जो अत्याचारी कर

وَلَا تَحْصِبَنَّ اللَّهُ عَافِيَ الْأَعْمَاءِ يَعْمَلُ

रहे हैं। वह तो उन्हें उस^[1] दिन के लिये टाल रहा है, जिस दिन आँखें खुली रह जायेंगी।

43. वह दौड़ते हुये अपने सिर ऊपर किये हुये होंगे, उन की आँखें उन की ओर नहीं फिरेंगी, और उन के दिल गिरे^[2] हुये होंगे।

44. (हे नबी!) आप लोगों को उस दिन से डरा दें, जब उन पर यातना आ जायेगी। तो अत्याचारी कहेंगे: हमारे पालनहार! हमें कुछ समय तक अवसर दे, हम तेरी बात (आमंत्रण) स्वीकार कर लेंगे, और रसूलों का अनुसरण करेंगे, क्या तुम वही नहीं हो जो इस से पहले शपथ ले रहे थे कि हमारा पतन होना ही नहीं है?

45. जब कि तुम उन्हीं की बस्तियों में बसे हो, जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किया, और तुम्हारे लिये उजागर हो गया है कि हम ने उन के साथ क्या किया? और हम ने तुम्हें बहुत से उदाहरण भी दिये हैं।

46. और उन्हीं ने अपना षड्यंत्र रच लिया तथा उन का षड्यंत्र अल्लाह के पास^[3] है। और उन का षड्यंत्र ऐसा नहीं था कि उस से पर्वत टल जाये।

الظالمون ه انما يؤخروهم ليومٍ تتحصى فيه الابصار ﴿١٤﴾

مُهطِعِينَ مُقْنِعِي رُؤُوسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ وَأَفْئِدَتُهُمْ هَوَاءٌ ﴿١٥﴾

وَأَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا آخِرْنَا إِلَىٰ آجَلٍ قَرِيبٍ يُجِيبُ دَعْوَتَكَ وَتَتَّبِعُ الرَّسُولَ ۖ أَوَلَمْ تَكُنُوا أَقْسَمْتُمْ مِّن قَبْلِ الْمَوْتِ مَن زَوَّالٍ ﴿١٦﴾

وَسَكَنْتُمْ فِي مَسَاكِينِ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ وَبِئْسَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْآمَثَالَ ﴿١٧﴾

وَقَدْ نَكَرُوا مَا كَرَّمَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ مَكْرُهُمْ وَإِن كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿١٨﴾

1 अर्थात् प्रलय के दिन के लिये।

2 यहाँ अर्बी भाषा का शब्द "हवाअ" प्रयुक्त हुआ है। जिस का एक अर्थ 'शून्य (खाली)', अर्थात् भय के कारण उसे अपनी सुध न होगी।

3 अर्थात् अल्लाह उस को निष्फल करना जानता है।

47. अतः कदापि यह न समझें कि अल्लाह अपने रसूलों से किया वचन भंग करने वाला है, वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली बदला लेने वाला है।
48. जिस दिन यह धरती दूसरी धरती से, तथा आकाश बदल दिये जायेंगे, और सब अल्लाह के समक्ष^[1] उपस्थित होंगे, जो अकेला प्रभुत्वशाली है।
49. और आप उस दिन अपराधियों को जंजीरों में जकड़े हुये देखेंगे।
50. उन के वस्त्र तारकोल के होंगे, और उन के मुखों पर अग्नि छायी होगी।
51. ताकि अल्लाह प्रत्येक प्राणी को उस के किये का बदला दे। निःसंदेह अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।
52. यह मनुष्यों के लिये एक संदेश है, और ताकि इस के द्वारा उन को सावधान किया जाये। और ताकि वे जान लें कि वही एक सत्य पूज्य है और ताकि मतिमान लोग शिक्षा ग्रहण करें।

فَلَا تَحْسَبَنَّ لِلَّهِ خُلُوفَ عَدِيَّةٍ رَسُولُهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ
ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤٧﴾

يَوْمَ تَبْدُلُ الْأَرْضَ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمَواتِ
وَيُرَدُّ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٤٨﴾

وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُّقْرَنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ﴿٤٩﴾

سَرَابِهِمْ مِنْ قَطْرَانٍ وَتَعْتَشَى وُجُوهُهُمْ النَّارِ ﴿٥٠﴾

لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ
الْحِسَابِ ﴿٥١﴾

هَذَا بَلَاغٌ لِلنَّاسِ وَلِيُنذِرُوا بِهِ وَيُبَيِّنُوا الْآيَاتِ
الَّهِ الْوَاحِدِ وَالْيَتِيزِ الْوَاحِدِ ﴿٥٢﴾

1 अर्थात अपनी कब्रों (समाधियों) से निकल कर।

सूरह हिज्र - 15



सूरह हिज्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 99 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत नं० 80-87 में हिज्र के वासी: ((समूद जाति)) के अपने रसूलों के झुठलाने के कारण विनाश की चर्चा की गई है। इसलिये इस का नाम ((सूरह हिज्र)) है।
- इस की आयत 1 में कुर्आन की विशेषता का वर्णन है। तथा 2-15 में रिसालत के विरोधियों के संदेहों को दूर किया गया है। फिर आयत 16 से 25 तक में उन निशानियों की ओर संकेत किया गया है जिन पर विचार करने से वही तथा रिसालत और हश्र से संबंधित संदेहों का निवारण हो जाता है।
- आयत 26-44 में इब्लीस के कुपथ हो जाने का वर्णन है जो मनुष्य को कुपथ करने के लिये वही तथा रिसालत के बारे में संदेह पैदा कर के उसे सत्य से दूर रखना चाहता है जिस का परिणाम नरक है। तथा आयत 45 से 48 तक उन के अच्छे परिणाम को बताया गया है जो उस की बात में नहीं आये और अल्लाह से डरते तथा शिर्क और उस की अवैज्ञा से बचते रहे।
- आयत 49-84 में नबियों के इतिहास से यह बताया गया है कि अल्लाह के सदाचारी भक्तों पर उस की दया होती है और दूराचारियों पर यातना के कोड़े बरसते हैं।
- आयत 85-99 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा सदाचारियों के लिये दिलासा का सामान भी है और यह निर्देश भी है कि जो माया मोह में मग्न हैं उन के आर्थिक धन की ओर लालसा से न देखें बल्कि उस बड़े धन का आदर करें जो कुर्आन के रूप में उन्हें प्रदान किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़, लाम, रा। वह इस पुस्तक, तथा खुले कुर्आन की आयतें हैं।
2. (एक समय आयेगा), जब काफिर यह कामना करेंगे कि क्या ही अच्छा होता यदि वे मुसलमान^[1] होते?
3. (हे नबी!) आप उन्हें छोड़ दें, वह खाते, तथा आनन्द लेते रहें, और उन्हें आशा निश्चेत किये रहे, फिर शीघ्र ही वह जान लेंगे।^[2]
4. और हम ने जिस बस्ती को भी ध्वस्त किया उस के लिये एक निश्चित अवधि अंत थी।
5. कोई जाति न अपनी निश्चित् अवधि से आगे जा सकती है, और न पीछे रह सकती।
6. तथा उन (काफ़िरों) ने कहा: हे वह व्यक्ति जिस पर यह शिक्षा (कुर्आन) उतारा गया है! वास्तव में तू पागल है।
7. क्यों हमारे पास फ़रिश्तों को नहीं लाता यदि तू सच्चों में से है?

الرَّحْمٰنُ تِلْكَ اَيُّ الْكِتٰبِ وَقُرٰنٍ
مُّسِيْنٍ ۝

رُبَّمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا
مُسْلِمِيْنَ ۝

ذَرَهُمْ يَأْكُلُوْا وَيَمْتَعُوْا وَيُلٰهِيْهِمُ الْاَمَلُ
فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝

وَمَا اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتٰبٌ
مَّعْلُوْمٌ ۝

مَا تَسِيْبُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاخِرُوْنَ ۝

وَقَالُوْا يَا اَيُّهَا الَّذِيْ نَزَّلَ عَلَيْهِ الدُّرُۡرٰتُ
كَيْفَ تَكُوْنُ ۝

لَوْ مَا تَاْتَيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝

1. ऐसा उस समय होगा जब फ़रिश्ते उन की आत्मा निकालने आयेंगे, और उन को उन का नरक का स्थान दिखा देंगे। और क्यामत के दिन तो ऐसी दूर्दशा होगी कि धूल हो जाने की कामना करेंगे। (देखिये: सूरह नबा, आयत: 40)

2. अपने दुष्परिणाम का।

8. जब कि हम फ़रिश्तों को सत्य (निर्णय) के साथ ही^[1] उतारते हैं, और उन्हें उस समय कोई अवसर नहीं दिया जाता।
9. वास्तव में हम ने ही यह शिक्षा (कुर्आन) उतारी है, और हम ही उस के रक्षक^[2] हैं।
10. और हम ने आप से पहले भी प्राचीन (विगत) जातियों में रसूल भेजे।
11. और उन के पास जो भी रसूल आया, परन्तु वह उस के साथ परिहास करते रहे।

مَا نُنزِّلُ الْمَلَائِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذًا مُنظَرِينَ ۝

إِنَّا نَحْنُ نُرَكِّمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَاللَّهُ لَاحْفَظُونَ ۝

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي شِبَعِ الْأَوَّلِينَ ۝

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

1 अर्थात् यातनाओं के निर्णय के साथ।

2 यह इतिहासिक सत्य है। इस विश्व के धर्म ग्रंथों में कुर्आन ही एक ऐसा धर्म ग्रंथ है जिस में उस के अवतरित होने के समय से अब तक एक अक्षर तो क्या एक मात्रा का भी परिवर्तन नहीं हुआ। और न हो सकता है। यह विशेषता इस विश्व के किसी भी धर्म ग्रंथ को प्राप्त नहीं है। तौरात हो अथवा इंजील या इस विश्व के अन्य धर्म शास्त्र हों, सब में इतने परिवर्तन किये गये हैं कि सत्य मूल धर्म की पहचान असम्भव हो गयी है।

इसी प्रकार इस (कुर्आन) की व्याख्या जिसे हदीस कहा जाता है वह भी सुरक्षित है। और उस का पालन किये बिना किसी का जीवन इस्लामी नहीं हो सकता। क्योंकि कुर्आन का आदेश है कि रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम्हें जो दें उस को ले लो। और जिस से रोक दें उस से रुक जाओ। (देखिये: सूरह हश्त्र आयत नं: 7)

कुर्आन कहता है कि हे नबी! अल्लाह ने आप पर कुर्आन इस लिये उतारा है कि आप लोगों के लिये उस की व्याख्या कर दें। (सूरह नहल, आयत नं: 44) जिस व्याख्या से नमाज़, व्रत आदि इस्लामी अनिवार्य कर्तव्यों की विधि का ज्ञान होता है। इसी लिये उस को सुरक्षित किया गया है। और हम हदीस के एक-एक रावी के जन्म और मौत का समय और उस की पूरी दशा को जानते हैं। और यह भी जानते हैं कि वह विश्वासनीय है या नहीं। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि इस संसार में इस्लाम के सिवा कोई धर्म ऐसा नहीं है जिस की मूल पुस्तकें तथा उस के नबी की सारी बातें सुरक्षित हों।

12. इसी प्रकार हम इसे^[1] अपराधियों के दिलों में पुरो देते हैं।
13. वे उस पर ईमान नहीं लाते, और प्रथम जातियों से यही रीति चली आ रही है।
14. और यदि हम उन पर आकाश का कोई द्वार खोल देते, फिर वह उस में चढ़ने लगते।
15. तब भी वह यही कहते कि हमारी आँखें धोखा खा रही हैं, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है।
16. हम ने आकाश में राशि चक्र बनाये हैं, और उसे देखने वालों के लिये सुसिज्जत किया है।
17. और उसे प्रत्येक धिक्कारे हुये शैतान से सुरक्षित किया है।
18. परन्तु जो (शैतान) चोरी से सुनना चाहे, तो एक खुली ज्वाला उस का पीछा करती^[2] है।
19. और हम ने धरती को फैलाया, और उस में पर्वत बना दिये, और उस में हम ने प्रत्येक उचित चीजें उगायीं।
20. और हम ने उस में तुम्हारे लिये जीवन के संसाधन बना दिये, तथा उन के लिये जिन के जीविका दाता तुम नहीं हो।

كَذَلِكَ نَسُكِّرُ قُلُوبَ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٢﴾

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةَ الْأُولَى ﴿١٣﴾

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ﴿١٤﴾

لَقَالُوا إِنَّمَا سَكَّرْنَا أَبْصَارَنَا بِعَنُقُومٍ مَّسْعُورُونَ ﴿١٥﴾

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ ﴿١٦﴾

وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ﴿١٧﴾

إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ وَاتَّبَعَهُ شَهَابٌ مُّبِينٌ ﴿١٨﴾

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَالْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ
وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْرُونَ ﴿١٩﴾

وَجَعَلْنَا لِكُلِّ فِيهَا مَعَالِشَ وَمَنْ أَسْمَأُ لَهُ
بِرْزَقِينَ ﴿٢٠﴾

- 1 अर्थात् रसूलों के साथ परिहास को, अर्थात् उसे इस का दण्ड देंगे।
- 2 शैतान चोरी से फ़रिश्तों की बात सुनने का प्रयास करते हैं। तो ज्वलंत उल्का उन्हें मारता है। अधिक विवरण के लिये देखिये: (सूरह मुल्क, आयत नं०: 5)

21. और कोई चीज़ ऐसी नहीं है, जिस के कोष हमारे पास न हों, और हम उसे एक निश्चित मात्रा ही में उतारते हैं।
22. और हम ने जलभरी वायुओं को भेजा, फिर आकाश से जल बरसाया, और उसे तुम्हें पिलाया, तथा तुम उस के कोषाधिकारी नहीं हो।
23. तथा हम ही जीवन देते, तथा मारते हैं, और हम ही सब के उत्तराधिकारी हैं।
24. तथा तुम में से विगत लोगों को जानते हैं और भविष्य के लोगों को भी जानते हैं।
25. और वास्तव में आप का पालनहार ही उन्हें एकत्र करेगा^[1], निश्चय वह सब गुण और सब कुछ जानने वाला है।
26. और हम ने मनुष्य को सड़े हुये कीचड़ के सूखे गारे से बनाया।
27. और इस से पहले जिन्नों को हम ने अग्नि की ज्वाला से पैदा किया।
28. और (याद करो) जब आप के पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा: मैं एक मनुष्य उत्पन्न करने वाला हूँ, सड़े हुये कीचड़ के सूखे गारे से।
29. तो जब मैं उसे पूरा बना दूँ, और उस में अपनी आत्मा फूँक दूँ, तो उस के लिये सज्दे में गिर जाना।^[2]

وَأَنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خِزْيَانُهُ وَمَا نُنزِلُهُ إِلَّا بِإِقْدَارٍ مَعْلُومٍ ﴿٢١﴾

وَأَرْسَلْنَا الرِّيحَ لَوَاقِحَ فَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَاسْقَيْنَاكُمُوهُ وَمَا أَنْتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ﴿٢٢﴾

وَأَنَّا لَمَعْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ﴿٢٣﴾

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْتِدِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ﴿٢٤﴾

وَأَنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْضُرُهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥﴾

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ﴿٢٦﴾

وَالْجِبَّانَ خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ تَارِ السَّمُومِ ﴿٢٧﴾

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ﴿٢٨﴾

فَإِذْ أَسَوَّيْتَهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي فَقَعْوَاهُ سُجِدِينَ ﴿٢٩﴾

1 अर्थात् प्रलय के दिन हिसाब के लिये।

2 फरिश्तों के लिये आदम का सजदा अल्लाह के आदेश से उन की परिक्षा के लिये था किन्तु इस्लाम में मनुष्य के लिये किसी मनुष्य या वस्तु को सजदा करना

30. अतः उन सब फ़रिश्तों ने सज्दा किया।
31. इब्लीस के सिवा। उस ने सज्दा करने वालों का साथ देने से इन्कार कर दिया।
32. अल्लाह ने पूछा: हे इब्लीस! तुझे क्या हुआ कि सज्दा करने वालों का साथ नहीं दिया?
33. उस ने कहा: मैं ऐसा नहीं हूँ कि एक मनुष्य को सज्दा करूँ, जिसे तू ने सड़ें हुये कीचड़ के सूखे गारे से पैदा किया है।
34. अल्लाह ने कहा: यहाँ से निकल जा, वास्तव में तू धिक्कारा हुआ है।
35. और तुझ पर धिक्कार है प्रतिकार (प्रलय) के दिन तक।
36. (इब्लीस) ने कहा^[1]: मेरे पालनहार! तो फिर मुझे उस दिन तक अवसर दे, जब सभी पुनः जीवित किये जायेंगे।
37. अल्लाह ने कहा: तुझे अवसर दे दिया गया है।
38. विद्वित समय के दिन तक के लिये।
39. वह बोला: मेरे पालनहार! तेरे मुझ को कुपथ कर देने के कारण, मैं अवश्य उन के लिये धरती में (तेरी अवज्ञा को) मनोरम बना दूँगा, और

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهَا إِسْمَاعِيلَ
إِلَّا إِبْلِيسَ ابْنِ آدَمَ يَكُونُ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٣٠﴾

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ الْاَتَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٣١﴾

قَالَ لَوْ اَنَّ لِيَ سِجْدًا لِمَنْ خَلَقْتَهُ مِنْ صَاصِلٍ
مِّنْ حَمِئٍ مَّسْنُونٍ ﴿٣٢﴾

قَالَ فَاحْرَبْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٣٣﴾

وَإِنَّ عَلَيْكَ الْعَذَابَ إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ﴿٣٤﴾

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٣٥﴾

قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ﴿٣٦﴾

إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿٣٧﴾

قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي
الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٨﴾

शिकर्क और अक्षम्य पाप है। (सूरह, हा, मीम, सज्दा: आयत नं: 37)

- 1 अर्थात फ़रिश्ते परिक्षा में सफल हुये और इब्लीस असफल रहा। क्यों कि उस ने आदेश का पालन न कर के अपनी मनमानी की। इसी प्रकार वह भी है जो अल्लाह की बात न मान कर मनमानी करते है।

- उन सभी को कुपथ कर दूंगा।
40. उन में से तेरे शुद्ध भक्तों के सिवा।
41. अल्लाह ने कहा: यही मुझ तक (पहुँचने की) सीधी राह है।
42. वस्तुतः मेरे भक्तों पर तेरा कोई अधिकार नहीं^[1] चलेगा, सिवाये उस के जो कुपथों में से तेरा अनुसरण करे।
43. और वास्तव में उन सब के लिये नरक का वचन है।
44. उस (नरक) के सात द्वार हैं, और उन में से प्रत्येक द्वार के लिये एक विभाजित भाग^[2] है।
45. वास्तव में आज्ञाकारी लोग स्वर्गों तथा स्रोतों में होंगे।
46. (उन से कहा जायेगा) इस में प्रवेश कर जाओ, शान्ति के साथ निर्भय हो कर।
47. और हम निकाल देंगे उन के दिलों में जो कुछ बैर होगा। वे भाई भाई होकर एक दूसरे के सम्मुख तख्तों के ऊपर रहेंगे।
48. न उस में उन्हें कोई थकान होगी और न वहाँ से निकाले जायेंगे।
49. (हे नबी!) आप मेरे भक्तों को

الْأَعْبَادَ مِنْهُمْ الْمُخْلِصِينَ ﴿٤٠﴾

قَالَ هَذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَنٌ
إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿٤٢﴾

وَأَنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ
مَّقْسُومٌ ﴿٤٤﴾

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾

أَدْخُلُوهَا بِسَلَامٍ أَوْيِينَ ﴿٤٦﴾

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَى
سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿٤٧﴾

لَا يَسْأَلُهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا
بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾

يَبْنِي عِبَادِي إِنِّي أَنَا الْعَفْوُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾

1 अर्थात् जो बन्दे कुर्आन तथा हदीस (नबी का तरीका) का ज्ञान रखेंगे उन पर शैतान का प्रभाव नहीं होगा। और जो इन दोनों के ज्ञान से जाहिल होंगे वही उस के झाँसे में आयेंगे। किन्तु जो तौबा कर लें तो उन को क्षमा कर दिया जायेगा।

2 अर्थात् इबलीस के अनुयायी अपने कुकर्मों के अनुसार नरक के द्वार में प्रवेश करेंगे।

सूचित कर दें कि वास्तव में, मैं बड़ा क्षमाशील दयावान्^[1] हूँ।

50. और मेरी यातना ही दुःखदायी यातना है।

وَأَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ ﴿٥٠﴾

51. और आप उन्हें इब्राहीम के अतिथियों के बारे में सूचित कर दें।

وَيَذُرُّهُمْ عَنْ صَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ ﴿٥١﴾

52. जब वह इब्राहीम के पास आये तो सलाम किया। उस ने कहा: वास्तव में हम तुम से डर रहे हैं।

اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلَامًا قَالِ اِنَّآ اِمْنٰكُمْ وَجَلُوْنَ ﴿٥٢﴾

53. उन्होंने ने कहा: डरो नहीं, हम तुम्हें एक ज्ञानी बालक की शुभसूचना दे रहे हैं।

قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّآ نَبْرُكُ بِعِلْمِ عَلِيْمٍ ﴿٥٣﴾

54. उस ने कहा: क्या तुम ने मुझे इस बुढ़ापे में शुभ सूचना दी है, तुम मुझे यह शुभ सूचना कैसे दे रहे हो?

قَالَ اَبَشْرُكُمْ وَاِنِّيْ عَلٰٓمٌ لِّمَا يَكْتُمُوْنَ ﴿٥٤﴾

55. उन्होंने ने कहा: हम ने तुम्हें सत्य शुभ सूचना दी है, अतः तुम निराश न हो।

قَالُوْا بَشِّرْنَا بِاَلْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِنَ الْفٰرِطِيْنَ ﴿٥٥﴾

56. (इब्राहीम) ने कहा: अपने पालनहार की दया से निराश केवल कुपथ लोग ही हुआ करते हैं।

قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿٥٦﴾

57. उस ने कहा: हे अल्लाह के भेजे हुये फरिश्तो! तुम्हारा अभियान क्या है?

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اِيْهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٧﴾

58. उन्होंने ने उत्तर दिया कि हम एक अपराधी जाति के पास भेजे गये हैं।

قَالُوْا اِنَّا اُرْسِلْنَا اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٥٨﴾

59. लूट के घराने के सिवा, उन सभी को हम बचाने वाले हैं।

اِلَّا اِلَ لُوْطٍ اِنَّا لَنَجُوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٩﴾

1 हदीस में है कि अल्लाह ने सौ दया पैदा की, निम्ननावे अपने पास रख लीं। और एक को पूरे संसार के लिये भेज दिया। तो यदि काफिर उस की पूरी दया जान जाये तो स्वर्ग से निराश नहीं होगा। और ईमान वाला उस की पूरी यातना जान जाये तो नरक से निर्भय नहीं होगा। (सहीह बुखारी: 6469)

60. परन्तु लूत की पत्नी के लिये हम ने निर्णय किया है कि वह पीछे रह जाने वालों में होगी।

الْأَمْرَاتَهُ قَدَرْنَا لِمَا لَمِنَ الْغَیْبِیْنَ ۝

61. फिर जब लूत के घर भेजे हुये (फरिश्ते) आये।

فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ لِّلْمُرْسَلِیْنَ ۝

62. तो लूत ने कहा: तुम (मेरे लिये) अपरिचित हो।

قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّتَّكِرُونَ ۝

63. उन्होंने ने कहा: डरो नहीं, बल्कि हम तुम्हारे पास वह (यातना) लाये हैं, जिस के बारे में वह संदेह कर रहे थे।

قَالُوا بَلْ جُنُكُ بِمَا كَانُوا فِیهِ یَسْتُرُونَ ۝

64. हम तुम्हारे पास सत्य लाये हैं, और वास्तव में हम सत्यवादी हैं।

وَاصْبِرْ لِرِیَاحِ الْحَقِّ وَإِنَّا لَاصْدِقُونَ ۝

65. अतः कुछ रात रह जाये तो अपने घराने को लेकर निकल जाओ, और तुम उन के पीछे रहो, और तुम में से कोई फिर कर न देखे। तथा चले जाओ, जहाँ आदेश दिया जा रहा है।

فَأَسْرِبْ أَهْلَكَ بِقِطْعٍ مِّنَ اللَّیْلِ وَاصْبِرْ أَدْبَارَهُمْ
وَلَا یَلْتَمِزْ مِنْكُمْ أَحَدٌ وَامْضُوا حَیْثُ
تُؤْمَرُونَ ۝

66. और हम ने लूत को निर्णय सुना दिया कि भोर होते ही इन का उन्मूलन कर दिया जायेगा।

وَقَضَيْنَا لِلَّیْلِ ذَٰلِكَ الرُّمُوزَ دَٰرِبَهُمْ لَآءَ مَقْطُوعٍ
مُّصْبِحِیْنَ ۝

67. और नगरवासी प्रसन्न हो कर आ गये।^[1]

وَجَاءَ أَهْلُ الْمَدِیْنَةِ یَسْتَبْشِرُونَ ۝

68. लूत ने कहा: यह मेरे अतिथी हैं, अतः मेरा अपमान न करो।

قَالَ إِنَّ هَٰؤُلَاءَ صَیْفِیْ فَلَا تَفْضَحُوْا ۝

69. तथा अल्लाह से डरो, और मेरा अनादर न करो।

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزَوْنَ ۝

70. उन्होंने ने कहा: क्या हम ने तुम्हें विश्व

قَالُوا أَوَلَمْ نُنْهَکْ عَنِ الْعُلَیْبِیْنَ ۝

1 अर्थात् जब फरिश्तों को नवयुवकों के रूप में देखा तो लूत अलैहिस्सलाम के यहाँ आ गये ताकि उन के साथ अशलील कर्म करें।

वासियों से नहीं रोका^[1] था?

71. लूत ने कहा: यह मेरी पुत्रियाँ हैं यदि तुम कुछ करने वाले^[2] हो।

72. हे नबी! आप की आयु की शपथ!^[3] वास्तव में वे अपने उन्माद में बहक रहे थे।

73. अन्ततः सूर्योदय के समय उन्हें एक कड़ी ध्वनि ने पकड़ लिया।

74. फिर हम ने उस बस्ती के ऊपरी भाग को नीचे कर दिया, और उन पर कंकरीले पत्थर बरसा दिये।

75. वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं प्रतिभाशालियों^[4] के लिये।

76. और वह (बस्ती) साधारण^[5] मार्ग पर स्थित है।

77. निःसंदेह इस में बड़ी निशानी है, ईमान वालों के लिये।

78. और वास्तव में (ऐयका) के^[6] वासी अत्याचारी थे।

قَالَ هَؤُلَاءِ ابْنَاتِي إِن كُنْتُمْ مُعْلِينَ ۝

لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ۝

فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً
مِّن سِجِّيلٍ ۝

إِن فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّمَن تَوَسَّيْتُمْ ۝

وَأَنَّهَا سَبِيلٌ مُّبِينٌ ۝

إِن فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّمَن يُؤْمِنُ ۝

وَإِن كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَطَالِبِينَ ۝

1 सब के समर्थक न बनो।

2 अर्थात् इन से विवाह कर लो, और अपनी कामवासना पूरी करो, और कुकर्म न करो।

3 अल्लाह के सिवा किसी मनुष्य के लिये उचित नहीं है कि वह अल्लाह के सिवा किसी और चीज़ की शपथ ले।

4 अर्थात् जो लक्षणों से तथ्य को समझ जाते हैं।

5 अर्थात् जो साधारण मार्ग हिज़ाज़ (मक्का) से शाम को जाता है। यह शिक्षाप्रद बस्ती उसी मार्ग में आती है, जिस से तुम गुज़रते हुये शाम जाते हो।

6 इस से अभिप्रेत शुऐब अलैहिस्सलाम की जाति है, ऐयका का अर्थ वन तथा झाड़ी है।

79. तो हम ने उन से बदला ले लिया, और वह दोनों^[1] ही साधारण मार्ग पर हैं।
80. और हिज्र के^[2] लोगों ने रसूलों को झुठलाया।
81. और उन्हें हम ने अपनी आयतें (निशानियाँ) दीं, तो वह उन से विमुख ही रहे।
82. वे शिलाकारी कर के पर्वतों से घर बनाते, और निर्भय होकर रहते थे।
83. अन्ततः उन्हें कड़ी ध्वनि ने भोर के समय पकड़ लिया।
84. और उन की कमाई उन के कुछ काम न आयी।
85. और हम ने आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उन दोनों के बीच है, सत्य के आधार पर ही उत्पन्न किया है, और निश्चय प्रलय आनी है। अतः (हे नबी!) आप (उन को) भली भाँति क्षमा कर दें।
86. वास्तव में आप का पालनहार ही सब का स्रष्टा सर्वज्ञ है।
87. तथा (हे नबी!) हम ने आप को सात ऐसी आयतें जो बार बार दुहराई जाती हैं, और महा कुर्आन^[3] प्रदान किया है।

فَاتَّعَمْنَا مِنْهُمُ وَارْتَمَى بِمَا فِي مِثْقَالِ ذَرَّةٍ ۝

وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْمُنَافِقِينَ ۝

وَآتَيْنَاهُمُ الْيَتِيمَاتِ فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝

وَكَانُوا يُنَجِّثُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا
أَمْزِنِينَ ۝

فَلَمَّا نَسُوا مَا فِي الْأَنْفُسِ لَخِئْتُمْ
فَلَمَّا نَسُوا مَا فِي الْأَنْفُسِ لَخِئْتُمْ ۝

فَمَا آغْنَىٰ عَنْهُمْ مَالُهُمْ مَا كَانُوا يُكْسِبُونَ ۝

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
إِلَّا بِالْحَقِّ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ فَاصْفِرِ الصَّفْعَ
الْعَظِيمَ ۝

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِنَ الْمَثَلِ وَالْقُرْآنَ
الْعَظِيمَ ۝

1 अर्थात् मदन्यन और ऐयका का क्षेत्र भी हिज्राज से फिलस्तीन और सीरिया जाते हुये, राह में पड़ता है।

2 हिज्र समूद जाति की बस्ती थी जो सालेह (अलैहिस्सलाम) की जाति थी, यह बस्ती मदीना और तबूक के बीच स्थित थी।

3 अबु हुदैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का

88. और आप उस की ओर न देखें, जो संसारिक लाभ का संसाधन हम ने उन में से विभिन्न प्रकार के लोगों को दे रखा है, और न उन पर शोक करें, और ईमान वालों के लिये सुशील रहें।
89. और कह दें कि मैं प्रत्यक्ष (खुली) चेतावनी^[1] देने वाला हूँ।
90. जैसे हम ने खण्डन कारियों^[2] पर (यातना) उतारी।
91. जिन्होंने ने कुर्आन को खण्ड खण्ड कर दिया।^[3]
92. तो शपथ है आप के पालनहार की। हम उन से अवश्य पूछेंगे।
93. तुम क्या करते रहे?
94. अतः आप को जो आदेश दिया जा

لَا تَسُدُّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ
أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَخَفِضْ
جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٠﴾

وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ﴿٥١﴾

كَمَا أَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِبِينَ ﴿٥٢﴾

الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ﴿٥٣﴾

فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٤﴾

عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٥٥﴾

فَأَصْدَعْ بِمَأْتُمِمْ وَأَعْرُضْ عَنِ الْمُبْرِكِينَ ﴿٥٦﴾

कथन है कि उम्मुल कुर्आन (सूरह फ़ातिहा) ही वह सात आयतें हैं जो दुहराई जाती हैं, तथा महा कुर्आन है। (सहीह बुखारी- 4704)

एक दूसरी हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्हम्दु लिब्ल्लाहि रब्बिल आलमीन्" ही वह सात आयतें हैं जो बार बार दुहराई जाती हैं, और महा कुर्आन है, जो मुझे प्रदान किया गया है। (संक्षिप्त अनुवाद, सहीह बुखारी- 4702)। यही कारण है कि इस के पढ़े बिना नमाज़ नहीं होती। (देखिये: सहीह बुखारी: 756, मुस्लिम: 394)

- 1 अर्थात् अवैज्ञा पर यातना की।
- 2 खण्डन कारियों से अभिप्राय: यहूद और ईसाई हैं। जिन्होंने ने अपनी पुस्तकों तौरात तथा इंजील को खण्ड खण्ड कर दिया। अर्थात् उन के कुछ भाग पर ईमान लाये और कुछ को नकार दिया। (सहीह बुखारी- 4705-4706)
- 3 इसी प्रकार इन्होंने ने भी कुर्आन के कुछ भाग को मान लिया और कुछ का अगलों की कहानियाँ बताकर इन्कार कर दिया। तो ऐसे सभी लोगों से प्रलय के दिन पूछ होगी कि मेरी पुस्तकों के साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया?

रहा है, उसे खोल कर सुना दें और मुशरिकों (मिश्रणवादियों) की चिन्ता न करें।

95. हम आप के लिये परिहास करने वालों को काफी हैं।
96. जो अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य बना लेते हैं, तो उन्हें शीघ्र ज्ञान हो जायेगा।
97. और हम जानते हैं कि उन की बातों से आप का दिल संकुचित हो रहा है।
98. अतः आप अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करें, तथा सज्दा करने वालों में रहें।
99. और अपने पालनहार की इबादत (वंदना) करते रहें, यहाँ तक कि आप के पास विश्वास आ जाये।^[1]

إِنَّا كَفَيْتَكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ﴿٩٥﴾

الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ يَخْتَفُونَ
يَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ﴿٩٧﴾

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ ﴿٩٨﴾

وَأَعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ﴿٩٩﴾

1 अर्थात् मरण का समय जिस का विश्वास सभी को है। (कुर्तुबी)

सूरह नहल - 16



सूरह नहल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 128 आयतें हैं।

- नहल का अर्थ मधु मक्खी है। जिस में अल्लाह के पालनहार होने की निशानी है। इस सूरह की आयत 68 से यह नाम लिया गया है।
- इस में शिर्क का खण्डन तथा तौहीद के सत्य होने को प्रमाणित किया गया है। और नबी को न मानने पर दुष्परिणाम की चेतावनी दी गई है।
- विरोधियों के संदेह दूर कर के अल्लाह के उपकारों की चर्चा की गई है और प्रलय के दिन मुश्रिकों तथा काफ़िरों की दुर दशा को बताया गया है।
- बंदो का अधिकार देने तथा बुराईयों से बचने और पवित्र जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी गई है।
- शैतान के संशय से शरण माँगने का निर्देश दिया गया है और मक्कावासियों के लिये एक कृतघ्न बस्ती का उदाहरण देकर उन्हें कृतज्ञ होने का निर्देश दिया गया है।
- यह निर्देश दिया गया है कि शिर्क के कारण अल्लाह की वैध की हुई चीज़ों को वर्जित न करो और इबराहीम (अलैहिस्सलाम) के बारे में बताया गया है कि वह एकेश्वरवादी और कृतज्ञ थे, और मुश्रिक नहीं थे।
- यह बताया गया है कि सब्त (शनिवार) मनाने का आदेश केवल यहूद को उन के विभेद करने के कारण दिया गया था।
- और अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा ईमान वालों को कुछ निर्देश दिये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह का आदेश आ गया है। अतः
(हे काफ़िरो!) उस के शीघ्र आने की

أَيُّ أَمْرٍ اللَّهُ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ سُبْحٰنَهُ

- माँग न करो। वह (अल्लाह) पवित्र तथा उस शिर्क (मिश्रणवाद) से ऊँचा है, जो वह कर रहे हैं।
2. वह फरिश्तों को वही के साथ अपने आदेश से अपने जिस भक्त पर चाहता है उतारता है, कि (लोगो को) सावधान करो, कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है अतः मुझ से ही डरो।
 3. उस ने आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति सत्य के साथ की है, वह उन के शिर्क से बहुत ऊँचा है।
 4. उस ने मनुष्य की उत्पत्ति वीर्य से की फिर वह अकस्मात् खुला झगड़ालू बन गया।
 5. तथा चौपायों की उत्पत्ति की, जिन में तुम्हारे लिये गमी^[1] और बहुत से लाभ हैं, और उन में से कुछ को खाते हो।
 6. तथा उन में तुम्हारे लिये एक शोभा है, जिस समय संध्या को चरा कर लाते हो और जब प्रातः चराने ले जाते हो।
 7. और वह तुम्हारे बोझों को उन नगरों तक लाद कर ले जाते हैं, जिन तक तुम बिना कड़े परिश्रम के नहीं पहुँच सकते। वास्तव में तुम्हारा पालनहार अति करुणामय दयावान् है।
 8. तथा घोड़े, और खच्चर तथा गधे पैदा किये, ताकि उन पर सवारी करो। और शोभा (बनें)। और ऐसी चीज़ों की उत्पत्ति करेगा, जिन्हें

وَتَعْلَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ①

يُنزِلُ الْمَلَائِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ
مِنْ عِبَادِهِ أَنْ أَنْذِرُوا أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا
فَاتَّقُونِ ①

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ تَعْلَىٰ عَمَّا
يُشْرِكُونَ ①

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ حَصِيمٌ
مُؤْتِنٌ ①

وَالْأَنْعَامَ خَلَقَهَا لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ وَمَنَافِعُ
وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ①

وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرِيحُونَ وَحِينَ
تَسْرَحُونَ ①

وَتَحْمِيلٌ أَنْتُمْ كَالْبَكَاةِ تَكُونُونَ لِلْبَعْثِ
إِلَّا بِشِقِّ الْأَنْفُسِ إِنَّ رَبَّكُمْ لَرؤُوفٌ رَّحِيمٌ ①

وَالْحَيْلَ وَالْمَعَالِ وَالْجَمِيرَ لِتَرْكَبُوهَا
وَزِينَةً وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ①

1 अर्थात् उन की ऊन तथा खाल से गर्म वस्त्र बनाते हो।

(अभी) तुम नहीं जानते हो।^[1]

9. और अल्लाह पर, सीधी राह बताना है, और उन में से कुछ^[2] टेढ़े हैं। तथा यदि अल्लाह चाहता तो तुम सभी को सीधी राह दिखा देता।
10. वही है, जिस ने आकाश से जल बरसाया, जिस में से कुछ तुम पीते हो, तथा कुछ से वृक्ष उपजते हैं, जिस में तुम (पशुओं को) चराते हो।
11. और तुम्हारे लिये उस से खेती उपजाता है, और जैतून तथा खजूर और अंगूर और प्रत्येक प्रकार के फल। वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी है, उन लोगों के लिये जो सोच-विचार करते हैं।
12. और उस ने तुम्हारे लिये रात्रि तथा दिवस को सेवा में लगा रखा है। तथा सूर्य और चाँद को, और सितारे उस के आदेश के आधीन हैं। वास्तव में इस में कई निशानियाँ (लक्षण) हैं, उन लोगों के लिये जो समझ-बूझ रखते हैं।
13. तथा जो तुम्हारे लिये धरती में विभिन्न रंगों की चीजें उत्पन्न की हैं वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (लक्षण) है उन लोगों के लिये जो शिक्षा ग्रहण करते हैं।

وَعَلَى اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَصَهْمًا جَائِرًا وَنَوْشَاءً
لَهْدًا لَكُمْ أَجْمَعِينَ ۝

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لَكُمْ مِنْهُ
شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ۝

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ
وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝

وَسَخَّرَ لَكُمْ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
وَالنَّجْمُومُ مَسْخُورَاتٌ بَأْمَرِهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

وَمَا ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانًا
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَذَكَّرُونَ ۝

1 अर्थात् सवारी के साधन इत्यादि। और आज हम उन में से बहुत सी चीजों को अपनी आँखों से देख रहे हैं जिन की ओर अल्लाह ने आज से चौदह सौ वर्ष पहले इस आयत के अन्दर संकेत किया था। जैसे: कार, रेल और विमान आदि...।

2 अर्थात् जो इस्लाम के विरुद्ध हैं।

14. और वही है जिस ने सागर को वश में कर रखा है, ताकि तुम उस से ताजा^[1] मांस खाओ, और उस से अलंकार^[2] निकालो जिसे पहनते हो, तथा तुम नौकाओं को देखते हो कि सागर में (जल को) फाड़ती हुई चलती हैं, और इस लिये ताकि तुम उस (अल्लाह) के अनुग्रह^[3] की खोज करो, और ताकि कृतज्ञ बनो।

15. और उस ने धरती में पर्वत गाड़ दिये, ताकि तुम को लेकर डोलने न लगे, तथा नदियाँ और राहें, ताकि तुम राह पाओ।

16. तथा बहुत से चिन्ह (बना दिये) और वे सितारों से (भी) राह^[4] पाते हैं।

17. तो क्या जो उत्पत्ति करता है, उस के समान है, जो उत्पत्ति नहीं करता? क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते^[5]?

18. और यदि तुम अल्लाह के पुरस्कारों की गणना करना चाहो तो कभी नहीं कर सकते। वास्तव में अल्लाह बड़ा क्षमा तथा दया करने वाला है।

19. तथा अल्लाह जानता है, जो तुम छुपाते हो, और जो तुम व्यक्त करते हो।

20. और जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारते

وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لَنَا كُلَّوَامِنَهُ
لِحِمَاظِرْيَا وَسَخَّرَ لَنَا مِنْهُ حَمِيَّةً
نَلْبَسُوهَا وَتَرَى الْفُلَّكَ مَوَآخِرَ فِيهِ
وَلِنَبْتَغُوا مِنْ قَضَاهِ وَآلَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ﴿١٦﴾

وَالَّذِي فِي الْأَرْضِ رَوَاسِي أَنْ تَبِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَارٌ
وَسُبُلٌ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٧﴾

وَعَلَّمَتِ وَيَا الْبَيْتِمْ هُمْ يَهْتَدُونَ ﴿١٨﴾

أَفَلَنْ يَخْلُقَ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿١٩﴾

وَأَنْ تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا إِنَّ اللَّهَ
لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٠﴾

وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسْرُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿٢١﴾

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ

1 अर्थात् मछलियाँ।

2 अलंकार अर्थात् मोती और मूँगा निकालो।

3 अर्थात् सागरों में व्यापारिक यात्रा कर के अपनी जीविका की खोज करो।

4 अर्थात् रात्रि में।

5 और उस की उत्पत्ति को उस का साझी और पूज्य बनाते हो।

हैं, वे किसी चीज़ की उत्पत्ति नहीं कर सकते। जब कि वह स्वयं उत्पन्न किये जाते हैं।

21. वे निर्जीव प्राणहीन हैं, और (यह भी) नहीं जानते कि कब पुनः जीवित किये जायेंगे।

أَمْ أَمْثَلُ غَيْرِ أَحْيَاءٍ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿١٦﴾

22. तुम्हारा पूज्य बस एक है, फिर जो लोग परलोक पर ईमान नहीं लाते उन के दिल निवर्ती (विरोधी) हैं, और वे अभिमानी हैं।

الْحُكْمُ لِلَّهِ وَالْحَدُّ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِالْآخِرَةِ فُلُوبُهُمْ مُنْكَرَةٌ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ﴿١٧﴾

23. जो कुछ वे छुपाते तथा व्यक्त करते हैं निश्चय अल्लाह उसे जानता है। वास्तव में वह अभिमानियों से प्रेम नहीं करता।

لَا حَرَمَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسْرُونَ وَمَا يُعْلِنُونَ
إِنَّهُ لَكَبِيرُ الْمُنْكَرِينَ ﴿١٨﴾

24. और जब उन से पूछा जाये कि तुम्हारे पालनहार ने क्या उतारा है? [1] तो कहते हैं कि पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوا
أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٩﴾

25. ताकि वे अपने (पापों का) पूरा बोझ प्रलय के दिन उठायें, तथा कुछ उन लोगों का बोझ (भी) जिन्हें बिना ज्ञान के कुपथ कर रहे थे, सावधान! वे कितना बुरा बोझ उठायेंगे!

لِيَحْمِلُوا أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ
وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّوهُمْ بَغَيْرِ عِلْمٍ
الْإِسَاءِ مَا يَزِيلُونَ ﴿٢٠﴾

26. इन से पहले के लोग भी षड्यंत्र रचते रहे, तो अल्लाह ने उन के षड्यंत्र के भवन का उन्मूलन कर दिया, फिर ऊपर से उन पर छत गिर पड़ी, और उन पर ऐसी दिशा

فَدَمَكْنَا الَّذِينَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَأَتَى اللَّهَ
بُنْيَانَهُمْ مِنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ
مِنْ فَوْقِهِمْ وَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ
لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢١﴾

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर। तो यह जानते हुये कि अल्लाह ने कुर्आन उतारा है झूठ बोलते हैं और स्वयं को तथा दूसरों को धोखा देते हैं।

से यातना आ गई, जिसे वे सोच भी नहीं रहे थे।

27. फिर प्रलय के दिन उन्हें अपमानित करेगा, और कहेगा कि मेरे वह साझी कहाँ हैं, जिन के लिये तुम झगड़ रहे थे? वे कहेंगे: जिन्हें ज्ञान दिया गया है कि वास्तव में आज अपमान तथा बुराई (यातना) काफ़िरों के लिये है।

28. जिन के प्राण फ़रिश्ते निकालते हैं, इस दशा में कि वे अपने ऊपर अत्याचार करने वाले हैं, तो वह आज्ञाकारी बन जाते^[1] हैं, (कहते हैं कि) हम कोई बुराई (शिरक) नहीं कर रहे थे। क्यों नहीं? वास्तव में अल्लाह तुम्हारे कर्मों से भली भाँति अवगत है।

29. तो नरक के द्वारों में प्रवेश कर जाओ, उस में सदावासी रहोगे, अतः क्या ही बुरा है अभिमानियों का निवास स्थान!

30. और उन से पूछा गया जो अपने पालनहार से डरे कि तुम्हारे पालनहार ने क्या उतारा है? तो उन्होंने कहा: अच्छी चीज़ उतारी है। उन के लिये जिन्होंने इस लोक में सदाचार किये बड़ी भलाई है। और वास्तव में परलोक का घर (स्वर्ग) अति उत्तम है। और आज्ञाकारियों का आवास कितना अच्छा है!

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُخْزِبُهُمْ وَيَقُولُ بَيْنَ شُرَكَائِي الَّذِينَ كَفَرُوا إِنِّي سَأَلْتُهُمْ قَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ إِنَّ الْيَوْمَ وَالسُّوءَ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٢٧﴾

الَّذِينَ تَتَوَفَّوهُمْ الْمَلَكُ طَالِيَ أُنْفُسِهِمْ قَالُوا السَّلَامَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوءٍ بَلِ إِنَّ اللَّهَ عَلَيْهِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾

فَادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا فليس من مؤمن المتكبرين ﴿٢٩﴾

وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا مَاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوا خَيْرًا لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٠﴾

1 अर्थात् मरण के समय अल्लाह को मान लेते हैं।

31. सदा रहने के स्वर्ग जिस में प्रवेश करेंगे, जिन में नहरें बहती होंगी, उन के लिये उस में जो चाहेंगे (मिलेगा)। इसी प्रकार अल्लाह आज्ञाकारियों को प्रतिफल (बदला) देता है।
32. जिन के प्राण फ़रिश्ते इस दशा में निकालते हैं कि वे स्वच्छ-पवित्र हैं, तो कहते हैं: "तुम पर शान्ति हो।" तुम अपने सुकर्मों के बदले स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ।
33. क्या वे इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन के पास फ़रिश्ते^[1] आ जायें, अथवा आप के पालनहार का आदेश^[2] आ पहुँचे? ऐसे ही उन से पूर्व के लोगों ने किया, और अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।
34. तो उन के कुकर्मों की बुराईयाँ^[3] उन पर आ पड़ी, और उन्हें उसी (यातना) ने घेर लिया जिस का वे परिहास कर रहे थे।
35. और कहा जिन लोगों ने शिर्क (मिश्रणवाद) किया: यदि अल्लाह चाहता तो हम उस के सिवा किसी चीज़ की इबादत (वंदना) न करते न हम, और न हमारे बाप-दादा। और न उस के आदेश के बिना किसी चीज़ को हराम (वर्जित) करते। ऐसे

جَدَّتْ عَدْنٌ يَدْخُلُونَهَا حَيْرَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ كَذَلِكَ يَجْزِي اللَّهُ
الْمُتَّقِينَ ﴿٣١﴾

الَّذِينَ تَتَوَفَّوهُمْ الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ يَقُولُونَ سَلَامٌ
عَلَيْكُمْ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٢﴾

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يُأْتِي
أَمْرًا مِنْكَ كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا
ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٣٣﴾

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَاحْتَقَ بِهِمْ
مَا كَانُوا بِآيِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٣٤﴾

وَقَالَ الَّذِينَ يَنْشُرُكُوا الْوُشَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا
مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ نَحْنُ وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَزَمْنَا
مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِهِمْ فَهَلْ عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْبَيِّنُ ﴿٣٥﴾

1 अर्थात् प्राण निकालने के लिये।

2 अर्थात् अल्लाह की यातना या प्रलय।

3 अर्थात् दुष्परिणाम।

ही इन से पूर्व वाले लोगों ने किया। तो रसूलों पर केवल खुले रूप से उपदेश पहुँचा देना है।

36. और हम ने प्रत्येक समुदाय में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत (वन्दना) करो, और तागूत (असुर-अल्लाह के सिवा पूज्यों) से बचो, तो उन में से कुछ को अल्लाह ने सुपथ दिखा दिया और कुछ पर कुपथ सिद्ध हो गया। तो धरती में चलो-फिरो, फिर देखो कि झूठलाने वालों का अन्त कैसा रहा?
37. (हे नबी!) आप ऐसे लोगों को सुपथ दिखाने पर लोलुप हों, तो भी अल्लाह उसे सुपथ नहीं दिखायेगा जिसे कुपथ कर दे। और न उन का कोई सहायक होगा।
38. और उन (काफिरों) ने अल्लाह की भरपूर शपथ ली कि अल्लाह उसे पुनः जीवित नहीं करेगा जो मर जाता है। क्यों नहीं? यह तो अल्लाह का अपने ऊपर सत्य वचन है, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।
39. (ऐसा करना इस लिये आवश्यक है) ताकि अल्लाह उस तथ्य को उजागर कर दे जिस में¹ वे विभेद कर रहे थे, और ताकि काफिर जान लें कि वही झूठे थे।

وَلَقَدْ بَعَدْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنْ أَعْبُدُوا
اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ فَمِنْهُمْ مَنْ هَدَى اللَّهُ
وَمِنْهُمْ مَنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ فَبُذِرُوا فِي
الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكذِّبِينَ ۝

إِنْ تَخِضْ عَلَى هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ
يُضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۝

وَاقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَنْ
يَمُوتُ بَدَلٍ وَعَدَّ عَلَيْهِمْ حَقًّا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

لِيَسَبِّحَنَّهُمُ الَّذِي خَلَقَهُمْ فِيهِ وَلِيَعْلَمَهُ
الَّذِينَ كَفَرُوا وَاللَّهُ كَانُوا كَذِّبِينَ ۝

1 अर्थात पूनरोज्जीन आदि के विषय में।

40. हमारा कथन, जब हम किसी चीज़ को अस्तित्व प्रदान करने का निश्चय करें, तो इस के सिवा कुछ नहीं होता कि उसे आदेश दें कि "हो जा", और वह हो जाती है।

إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَنْ نَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤٠﴾

41. तथा जो लोग अल्लाह के लिये हिज्रत (प्रस्थान) कर गये अत्याचार सहने के पश्चात्, तो हम उन्हें संसार में अच्छा निवास-स्थान देंगे, और परलोक का प्रतिफल तो बहुत बड़ा है, यदि वह^[1] जानते।

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا إِلَى اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا لَنُؤْتِيَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَلَآ أَجْرَ لَآخِرَةً أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

42. जिन लोगों ने धैर्य धारण किया, तथा अपने पालनहार पर ही वे भरोसा करते हैं।

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٤٢﴾

43. और (हे नबी!) हम ने आप से पहले जो भी रसूल भेजे, वे सभी मानव-पुरुष थे। जिन की ओर हम वही (प्रकाशना) करते रहे। तो तुम ज्ञानियों से पूछ लो, यदि (स्वयं) नहीं^[2] जानते।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُوْحِيَ إِلَيْهِمْ فَسَلُوا أَهْلَ الدِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٤٣﴾

44. प्रत्यक्ष (खुले) प्रमाणों तथा पुस्तकों के साथ (उन्हें भेजा) और आप की ओर यह शिक्षा (क़ुरआन) अवतरित की, ताकि आप उसे सर्वमानव के लिये उजागर कर दें जो कुछ उन

بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ الْكَلِيمَ ﴿٤٤﴾
لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٤﴾

1 इन से अभिप्रेत नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वह अनुयायी हैं, जिन को मक्का के मुश्रिकों ने अत्याचार कर के निकाल दिया। और हब्शा और फिर मदीने हिज्रत कर गये।

2 मक्का के मुश्रिकों ने कहा कि यदि अल्लाह को कोई रसूल भेजना होता तो किसी फ़रिश्ते को भेजता। उसी पर यह आयत उतरी। ज्ञानियों से अभिप्राय वह अहले किताब हैं जिन्हें आकाशीय पुस्तकों का ज्ञान हो।

की ओर उतारा गया है ताकि वह सोच-विचार करें।

45. तो क्या वे निर्भय हो गये हैं, जिन्होंने बुरे षडयंत्र रचे हैं, कि अल्लाह उन्हें धरती में धंसा दे? अथवा उन पर यातना ऐसी दिशा से आ जाये जिसे वह सोचते भी न हों?
46. या उन्हें चलते-फिरते पकड़ ले, तो वह (अल्लाह को) विवश करने वाले नहीं हैं।
47. अथवा उन्हें भय की दशा में पकड़^[1] ले? निश्चय तुम्हारा पालनहार अति करुणामय दयावान् है।
48. क्या अल्लाह की उत्पन्न की हुयी किसी चीज़ को उन्होंने नहीं देखा? जिस की छाया दायें तथा बायें झुकती है, अल्लाह को सज्दा करते हुये? और वे सर्व विनयशील हैं।
49. तथा अल्लाह ही को सज्दा करते हैं जो आकाशों में तथा धरती में चर (जीव) तथा फ़रिश्ते हैं, और वह अहंकार नहीं करते।
50. वे^[2] अपने पालनहार से डरते हैं जो उन के ऊपर है, और वही करते हैं जो आदेश दिये जाते हैं।
51. और अल्लाह ने कहा: दो पूज्य न बनाओ, वही अकेला पूज्य है। अतः तुम मुझी से डरो।

أَقَامِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا الصَّيَاتِ أَنْ يُخَصِّفَ اللَّهُ
يَوْمَ الْأَرْضِ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ
لَا يَشْعُرُونَ ﴿٤٥﴾

أَوْ يَأْخُذُهُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٤٦﴾

أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَى تَعْوِفٍ وَإِنَّ رَبَّهُمُ لَرؤُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٤٧﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى مَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ يُتَفَقَّهُوْا
ظِلُّهُ عَنِ الشِّمَالِ وَالشَّمَالِ سُجَّدًا لِلَّهِ وَهُمْ
ذُخْرُونَ ﴿٤٨﴾

وَلِلَّهِ سُجَّدٌ مِمَّا فِي السَّمَوَاتِ وَمِمَّا فِي الْأَرْضِ مِنْ
دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةِ وَهُمْ لَا يُسْتَكْبَرُونَ ﴿٤٩﴾

يَخَافُونَ رَبَّهُمْ مِنْ تَوْفِيقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٥٠﴾

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا لِلَّهِ إِلَهَيْنِ إِنَّمَا هُوَ إِلَهُ
وَاحِدٌ فَآيَاتِي فَارْهَبُونِ ﴿٥١﴾

1 अर्थात् जब कि पहले से उन्हें आपदा का भय हो।

2 अर्थात् फ़रिश्ते।

52. और उसी का है, जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, और उसी की वंदना स्थायी है, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा दूसरे से डरते हो?
53. तुम्हें जो भी सुख-सुविधा प्राप्त है वह अल्लाह ही की ओर से है। फिर जब तुम्हें दुःख पहुँचता है, तो उसी को पुकारते हो।
54. फिर जब तुम से दुःख दूर कर देता है तो तुम्हारा एक समुदाय अपने पालनहार का साझी बनाने लगता है।
55. ताकि हम ने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है, उस के प्रति कृतघ्न हों तो आनन्द ले लो, तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा।
56. और वे जिन को जानते^[1] तक नहीं उन का एक भाग उस में से बनाते हैं जो जीविका हम ने उन्हें दी है। तो अल्लाह की शपथ! तुम से अवश्य पूछा जायेगा उस के विषय में जो तुम झूठी बातें बना रहे थे?
57. और वह अल्लाह के लिये पुत्रियाँ बनाते^[2] है, वह पवित्र है! और उन के लिये वह^[3] है, जो वे स्वयं चाहते हों!?

وَلَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ
وَاصْبِرْ اَفْعَبْرَاللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ﴿٥٢﴾

وَمَا لَكُمْ مِّنْ تَعٰوٰةٍ فِیْنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضَّرُّ
فَالِیْهِ تَجْعَلُوْنَ ﴿٥٣﴾

ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضَّرْعَكُمْ اِذَا فَرِحَ مِنْكُمْ بِرِزْقِهِ
یُتْرَكُوْنَ ﴿٥٤﴾

لِیَكْفُرُوا بِمَا آتٰیْنَهُمْ فَتَمَتَّعُوْا فَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾

وَيَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا یَعْلَمُوْنَ نَصِیْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ
ثَالِثًا لِّسَلْطَنَ عَمَّا لَكُمْ تَفَرَّوْنَ ﴿٥٦﴾

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهُ وَهُمْ لَا یَشْعُرُوْنَ ﴿٥٧﴾

1 अर्थात अपने देवी देवताओं की वास्तविकता को नहीं जानते।

2 अरब के मुशरिकों के पूज्यों में देवताओं से अधिक देवियाँ थीं। जिन के संबन्ध में उन का विचार था कि ये अल्लाह की पुत्रियाँ हैं। इसी प्रकार फ़रिश्तों को भी वे अल्लाह की पुत्रियाँ कहते थे, जिस का यहाँ खण्डन किया गया है।

3 अर्थात पुत्र।

58. और जब उन में से किसी को पुत्री (के जन्म) की शुभसूचना दी जाये, तो उस का मुख काला हो जाता है, और वह शोक पूर्ण हो जाता है।

59. और लोगों से छुपा फिरता है उस बुरी सूचना के कारण जो उसे दी गयी है। (सोचता है कि) क्या^[1] उसे अपमान के साथ रोक ले, अथवा भूमि में गाड़ दे? देखो! वह कितना बुरा निर्णय करते हैं।

60. उन्हीं के लिये जो आखिरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते अवगुण हैं, और अल्लाह के लिये सदगुण हैं। तथा वह प्रभुत्वशाली तत्वदर्शी हैं।

61. और यदि अल्लाह, लोगों को उन के अत्याचार^[2] पर (तत्क्षण) धरने लगे, तो धरती में किसी जीव को न छोड़े। परन्तु वह एक निर्धारित अवधि तक निलम्बित करता^[3] है, और जब उन की अवधि आ जायेगी, तो एक क्षण न पीछे होंगे न पहले।

62. वह अल्लाह के लिये उसे^[4] बनाते हैं, जिसे स्वयं अप्रिय समझते हैं। तथा उन की जूबानें झूठ बोलती हैं कि उन्हीं के लिये भलाई है। निश्चय

وَأَذَابٌ لِّأُولَئِكَ أَجْرُكَ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ
وَهُوَ كَبِيرٌ

يَوَارَى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوءِ مَا بُشِّرَبِهِ إِذْ يَسْلُكُ عَلَى
هُنَّ آمِنِينَ فِي الْأَسَاءِ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٥٩﴾

لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ وَلِلَّهِ
الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٠﴾

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِم مَّا أَتَرُوا عَلَيْهَا مِنْ
دَابَّةٍ وَلَكِنْ يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى فَإِذَا جَاءَ
أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً
وَلَا يَسْتَقْدِرُونَ ﴿٦١﴾

وَيَحْكُمُونَ لِلَّهِ الْكَلِمَ الْكُبْرَىٰ وَصِفُ الْبَيْتِ الْكَلْبِ
أَنَّ لَهُمُ السَّنَىٰ لِجَرَمِ أَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَأَنَّهُمْ
مُفْرَطُونَ ﴿٦٢﴾

1 अर्थात् जीवित रहने दे। इस्लाम से पूर्व अरब समाज के कुछ कबीलों में पुत्रियों के जन्म को लज्जा की चीज़ समझा जाता था। जिस का चित्रण इस आयत में किया गया है।

2 अर्थात् शिर्क और पापाचारों पर।

3 अर्थात् अवसर देता है।

4 अर्थात् पुत्रियाँ।

उन्हीं के लिये नरक है, और वही सब से पहले (नरक में) झोंके जायेंगे।

63. अल्लाह की शपथ! (हे नबी!) आप से पहले हम ने बहुत से समुदायों की ओर रसूल भेजे। तो उन के लिये शैतान ने उन के कुकर्माँ को सुसिज्जत बना दिया। अतः वही आज उन का सहायक है, और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

ثَالِقَةً لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَوَجَدْنَا
لَهُمُ الشَّيْطَانَ أَعْمَالَ لَهُمْ فَهُمْ وَلِيُّهُمْ الْيَوْمَ وَلَا نَمُ
عَذَابُ الْيَوْمِ ﴿٦٣﴾

64. और हम ने आप पर यह पुस्तक (क़ुर्आन) इसी लिये उतारी है ताकि आप उन के लिये उसे उजागर कर दें जिस में वह विभेद कर रहे हैं, तथा मार्ग दर्शन और दया है उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।

وَمَا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا تِبْيَانًا لِّهُم
الَّذِي اٰخْتَلَفُوا فِيهِ وَهُدًى وَرَحْمَةً
لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٦٤﴾

65. और अल्लाह ने ही आकाश से जल बरसाया, फिर उस ने निर्जीव धरती को जीवित कर दिया। निश्चय इस में उन लोगों के लिये एक निशानी है जो सुनते हैं।

وَاللّٰهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ
مَوْتِهَا إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٦٥﴾

66. तथा वास्तव में तुम्हारे लिये पशुओं में एक शिक्षा है। हम तुम्हें उस से जो उस के भीतर है गोबर तथा रक्त के बीच से शुद्ध दूध पिलाते हैं। जो पीने वालों के लिये रुचिकर होता है।

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً لِّتُنذِرُوا مِمَّا فِي بُطُونِهِمْ مِنْ
بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ لِّبَنَاءٍ خَالِصًا سَائِمًا لِلشَّارِبِينَ ﴿٦٦﴾

67. तथा खजूरों और अँगूरों के फलों से जिस से तुम मदिरा बना लेते हो तथा उत्तम जीविका भी, वास्तव में इस में एक निशानी (लक्षण) है उन लोगों के लिये जो समझ-बूझ रखते हैं।

وَمِنْ ذُرِّيَّتِ النَّخْلِ وَالْأَعْنَابِ تَخْتَدُّونَ مِنْهُ سَكْرًا
وَرِزْقًا حَسَنًا إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٦٧﴾

68. और हम ने मधुमक्खी को प्रेरणा दी कि पर्वतों में घर (छत्ते) बना तथा वृक्षों में, और लोगों की बनायी छतों में।
69. फिर प्रत्येक फलों का रस चूस, और अपने पालनहार की सरल राहों पर चलती रहा। उस के भीतर से एक पेय निकलता है, जो विभिन्न रंगों का होता है, जिस में लोगों के लिये आरोग्य है। वास्तव में इस में एक निशानी (लक्षण) है उन लोगों के लिये जो सोच-विचार करते हैं।
70. और अल्लाह ही ने तुम्हारी उत्पत्ति की है, फिर तुम्हें मौत देता है। और तुम में से कुछ को अबोध आयु तक पहुँचा दिया जाता है, ताकि जानने के पश्चात् कुछ न जाने। वास्तव में अल्लाह सर्वज्ञ सर्व सामर्थ्यवान^[1] है।
71. और अल्लाह ने तुम में से कुछ को कुछ पर जीविका में प्रधानता दी है, तो जिन्हें प्रधानता दी गयी है वे अपनी जीविका अपने दासों की ओर फेरने वाले नहीं कि वह उस में बराबर हो जायें तो क्या वह अल्लाह के उपकारों को नहीं मानत है?^[2]
72. और अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हीं में से पत्नियाँ बनायीं। और तुम्हारे लिये

وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ
بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا تَرْتَوِينَ ﴿١٦﴾

ثُمَّ عَلَّمْنِي مِنْ كُلِّ شَجَرٍ فَاسْلُكِي سُبُلَ رَبِّكِ ذُلَالًا
يَخْرُجُ مِنْ بَطُونِهِنَّ مَاءٌ مَخْلُوفٌ فَأُوغِقُ فِيهِ
شَعِيرَاتُ النَّعْلِ لِأَنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْتَبِرُونَ ﴿١٧﴾

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَكَّفُكُمْ وَمِنْكُمْ مَنْ يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْذَلِ
الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ
قَدِيرٌ ﴿١٨﴾

وَاللَّهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ فَمَا
الَّذِينَ فَضَّلُوا بَرَأُوا مِنْ رَبِّهِمْ عَلَىٰ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ
فِيهِ سَوَاءٌ أَلَّا يَتَّبِعُوا اللَّهَ يَجْحَدُونَ ﴿١٩﴾

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَجَعَلَ

1 अर्थात् वह पुनः जीवित भी कर सकता है।

2 आयत का भावार्थ यह है कि जब वह स्वयं अपने दासों को अपने बराबर करने के लिये तय्यार नहीं है तो फिर अल्लाह की उत्पत्ति और उस के दासों को कैसे पूजा-अर्चना में उस के बराबर करते हैं? क्या यह अल्लाह के उपकारों का इन्कार नहीं है?

तुम्हारी पत्नियों से पुत्र तथा पौत्र बनाये। और तुम्हें स्वच्छ चीजों से जीविका प्रदान की। तो क्या वे असत्य पर विश्वास रखते हैं, और अल्लाह के पुरस्कारों के प्रति अविश्वास रखते हैं?

73. और अल्लाह के सिवा उन की बंदना करते हैं। जो उन के लिये आकाशों तथा धरती से कुछ भी जीविका देने का अधिकार नहीं रखते, और न इस का सामर्थ्य रखते हैं।
74. और अल्लाह के लिये उदाहरण न दो। वास्तव में अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते।^[1]
75. अल्लाह ने एक उदाहरण^[2] दिया है: एक पराधीन दास है, जो किसी चीज़ का अधिकार नहीं रखता, और दूसरा (स्वाधीन) व्यक्ति है, जिसे हम न अपनी ओर से उत्तम जीविका प्रदान की है। और वह उस में से छुपे और खुले व्यय करता है। क्या वह दोनों समान हो जायेंगे? सब प्रशंसा अल्लाह^[3] के लिये है। बल्कि अधिकतर लोग (यह बात) नहीं जानते।
76. तथा अल्लाह ने दो व्यक्तियों का उदाहरण दिया है। दोनों में से एक गूंगा

لَكُمْ مِنْ أَوْلَادِكُمْ بَيْنَ وَحَقْدَةً ذَرَزَكُمْ
مِنَ الطَّيِّبَاتِ أَفِي الْمَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَيَنْعَمَتِ
اللَّهُ هُمْ يَكْفُرُونَ ﴿٧٣﴾

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ
رِزْقًا مِنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا
وَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٧٤﴾

فَلَا تَقْرُبُوا إِلَهَ الْأَمْثَالِ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ
لَا تَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾

صَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا عَبْدًا مَمْلُوكًا لَا يَقْدِرُ عَلَى
شَيْءٍ وَمَنْ رَزَقْنَاهُ مِنْ أَرْضٍ فَأَحْسَنَ صَفْوَةً يُفُوقُ
مِنْهُ سَرًَّا وَأَجْهَرًا أَهْلٌ يَسْتَوُونَ وَالْحَمْدُ
لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٧٦﴾

وَصَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَجُلَيْنِ أَحَدُهُمَا أَبْكَمٌ

1 क्यों कि उस के समान कोई नहीं।

2 आयत का भावार्थ यह है कि जैसे पराधीन दास और धनी स्वतंत्र व्यक्ति को तुम बराबर नहीं समझते, ऐसे मुझे और इन मूर्तियों को कैसे बराबर समझ रहे हो जो एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकती। और यदि मक्खी उन का चढ़ावा ले भागे तो वह छीन भी नहीं सकती। इस से बड़ा अत्याचार क्या हो सकता है?

3 अर्थात् अल्लाह के सिवा तुम्हारे पूज्यों में से कोई प्रशंसा के योग्य नहीं।

है। वह किसी चीज़ का अधिकार नहीं रखता। वह अपने स्वामी पर बोज़ है। वह उसे जहाँ भेजता है कोई भलाई नहीं लाता। तो क्या वह, और जो न्याय का आदेश देता हो, और स्वयं सीधी^[1] राह पर हो बराबर हो जायेंगे??

77. और अल्लाह ही को आकाशों तथा धरती के परोक्ष^[2] का ज्ञान है। और प्रलय (क्यामत) का विषय तो बस पलक झपकने जैसा^[3] होगा, अथवा उस से भी अधिक शीघ्र। वास्तव में अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
78. और अल्लाह ही ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भों से निकाला, इस दशा में कि तुम कुछ नहीं जानते थे। और तुम्हारे कान और आँख तथा दिल बनाये, ताकि तुम (उस का) उपकार मानो।
79. क्या वे पक्षियों को नहीं देखते कि वह अन्तरिक्ष में कैसे वशीभूत हैं? उन्हें अल्लाह ही थामता^[4] है। वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।
80. और अल्लाह ही ने तुम्हारे घरों को निवास स्थान बनाया। और पशुओं की खालों से तुम्हारे लिये ऐसे घर^[5] बनाये जिन्हें तुम अपनी यात्रा तथा अपने

لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ وَهُوَ كَلٌّ عَلَى مَوْلَاهُ أَيْنَمَا يُوَجِّهُهُ آيَاتٍ بَعِيْرٌ هَلْ يَسْتَوِي هُوَ وَمَنْ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَهُوَ عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٦﴾

وَاللّٰهُ عَزِيزٌ عَلٰى اَرْضٍ وَمَا اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلِمَةٍ الْبَصِيْرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٥٧﴾

وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْ بُطُوْنِ اُمَّهَاتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ سَيِّئًا وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْئِدَةَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٨﴾

الْمَيْرَ وَاللِّي الطَّيْرِ مُسَخَّرَاتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَاءِ مَا يَسْكُنُنَّ اِلَّا اللّٰهُ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٩﴾

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُم مِّنْ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُم مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ وَمِنْ اَصْوَابِهَا

1 यह दूसरा उदाहरण है जो मूर्तियों का दिया है। जो गूँगी-बहरी होती है।

2 अर्थात् गुप्त तथ्यों का।

3 अर्थात् पलभर में आयेगी।

4 अर्थात् पक्षियों को यह क्षमता अल्लाह ही ने दी है।

5 अर्थात् चमड़ों के खेमे।

विराम के दिन हल्का (अल्पभार) पाते हों। और उन की ऊन और रोम तथा बालों से उपकरण और लाभ के समान जीवन की निश्चित अवधि तक के लिये (बनाये)।

وَأَوْبَارَهَا وَاشْعَارَهَا أَثَانًا وَمَتَاعًا
إِلَىٰ حِينٍ ۝

81. और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिये उस चीज़ में से जो उत्पन्न की है छाया बनायी है। और तुम्हारे लिये पर्वतों में गुफाएं बनायी हैं। और तुम्हारे लिये ऐसे वस्त्र बनाये हैं जो तुम्हें धूप से बचायें। और ऐसे वस्त्र जो तुम्हें तुम्हारे आक्रमण से बचायें।^[1] इसी प्रकार वह तुम पर अपने उपकार पूरा करता है ताकि तुम आज्ञाकारी बनो।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِمَّا خَلَقَ ظِلًّا وَجَعَلَ لَكُمْ
مِنَ الْجِبَالِ الْكُنَاثَ وَجَعَلَ لَكُمْ سَرَائِلَ
تَقِيْكُمْ الْحَرَّ وَسَرَائِلَ تَقِيْكُمْ بِأَسْئَلِكُمْ كَذٰلِكَ
يُبَيِّنُ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝

82. फिर यदि वे विमुख हों तो आप पर बस प्रत्यक्ष (खुला) उपदेश पहुँचा देना है।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ۝

83. वे अल्लाह के उपकारों को पहचानते हैं फिर उस का इन्कार करते हैं। और उन में अधिकतर कृतघ्न हैं।

يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَالْاَكْثَرُ هُمْ
الْكٰفِرُوْنَ ۝

84. और जिस^[2] दिन हम प्रत्येक समुदाय से एक साक्षी (गवाह) खड़ा^[3] करेंगे, फिर काफ़िरों को बात करने की अनुमति नहीं दी जायेगी और न उन से क्षमा याचना की माँग की जायेगी।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيدًا لِّهٖمْ
يُؤَدُّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاُولٰٓئِهِمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۝

85. और जब अत्याचारी यातना देखेंगे, उन की यातना कुछ कम नहीं की जायेगी,

وَإِذِ اَرَادَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا الْعٰدَابَ فَلَا يُغْنَعُهُمْ

1 अर्थात कवच आदि।

2 अर्थात प्रलय के दिन।

3 (देखिये: सूरह निसा, आयत: 41)

और न उन्हें अवकाश दिया^[1] जायेगा।

86. और जब मुशरिक अपने (बनाये हुये) साझियों को देखेंगे तो कहेंगे: हे हमारे पालनहार! यही हमारे साझी हैं जिन को हम तुझे छोड़ कर पुकार रहे थे। तो वह (पूज्य) बोलेंगे कि निश्चय तुम सब मिथ्यावादी (झूठे) हो।

87. उस दिन वे अल्लाह के आगे झुक जायेंगे, और उन से खो जायेंगी जो मिथ्या बातें वह बनाते थे।

88. जो लोग काफिर हो गये और (दूसरों को भी) अल्लाह की डगर (इस्लाम) से रोक दिय, उन्हें हम यातना पर यातना देंगे, उस उपद्रव के बदले जो वे कर रहे थे।

89. और जिस दिन हम प्रत्येक समुदाय से एक साक्षी उन के विरुद्ध उन्हीं में से खड़ा कर देंगे। और (हे नबी!) हम आप को उन पर साक्षी (गवाह) बनायेंगे।^[2] और हम ने आप पर यह पुस्तक (कुरआन) अवतरित की है जो प्रत्येक विषय का खुला विवरण है। तथा मार्ग दर्शन और दया तथा शुभ सूचना है आज्ञाकारियों के लिये।

90. वस्तुतः अल्लाह तुम्हें न्याय तथा उपकार और समीपवर्तियों को देने का आदेश दे रहा है। और निर्लज्जा तथा बुराई और विद्रोह से रोक रहा

عَنهُمْ وَلَا هُمْ يَنْظُرُونَ ۝

وَإِذْ أَرَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَؤُلَاءِ شُرَكَائُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُوا مِنْ دُونِكَ ۚ قَالِقُوا إِلَهُهُمْ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكُنْتُمْ أَكْذِبُونَ ۝

وَالْقَوْمَ إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ يَسْتَلِمُونَ ۝ وَصَلَّ عَلَيْهِمْ مِمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدَّ وَأَخْنُ سَبِيلِ اللَّهِ زُجْرَهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ۝

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِمْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَى هَؤُلَاءِ ۚ وَتَزَيَّنَّا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تَزْيِينًا الْكُلِّ شَيْئًا ۚ وَهُدًى وَرَحْمَةً ۚ وَبَشِّرِ الْمُسْلِمِينَ ۝

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ ۚ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝

1 अर्थात् तौबा करने का।

2 (देखिये: सूरह बकरा, आयत: 143)

है और तुम्हें सिखा रहा है ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।

91. और जब अल्लाह से कोई वचन करो तो उसे पूरा करो। और अपनी शपथों को सुदृढ करने के पश्चात् भंग न करो, जब तुम ने अल्लाह को अपने ऊपर गवाह बनाया है। निश्चय अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उसे जानता है।

92. और तुम्हारी दशा उस स्त्री जैसी न हो जाये जिस ने अपना सूत कातने के पश्चात् उधेड़ दिया। तुम अपनी शपथों को आपस में विश्वासघात का साधन बनाते हो ताकि एक समुदाय दूसरे समुदाय से अधिक लाभ प्राप्त करे। अल्लाह इस^[1] (वचन) के द्वारा तुम्हारी परीक्षा ले रहा है। और प्रलय के दिन तुम्हारे लिये अवश्य उसे उजागर कर देगा जिस में तुम विभेद कर रहे थे।

93. और यदि अल्लाह चाहता तो तुम्हें एक समुदाय बना देता। परन्तु वह जिसे चाहता है कुपथ कर देता है, और जिसे चाहता है सुपथ दर्शा देता है। और तुम से उस के बारे में अवश्य पूछा जायेगा जो तुम कर रहे थे।

94. और अपनी शपथों को आपस में विश्वासघात का साधन न बनाओ, ऐसा न हो कि कोई पग अपने स्थिर

وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ وَلَا تَنْقُضُوا
الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ
عَلَيْكُمْ فَكَيْلًا إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٩١﴾

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِي تَقَصَّتْ عَنَّا مِنْ بَعْدِ
قَوْلِهَا إِنَّا كَانَتْ تَحْجِدُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ
تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ إِنَّمَا يَبُوءُ لِلَّهِ يُبِئُ
وَالْيَمِينِ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ
تَخْتَلِفُونَ ﴿٩٢﴾

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ
يُبَيِّنُ لَكُمْ مَن يُشَاءُ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ
وَلِكَسْرَلْنُ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

وَلَا تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ
قَدَمٌ بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا السُّوْمَ بِمَا

1 अर्थात् किसी समुदाय से समझौता कर के विश्वासघात न किया जाये कि दूसरे समुदाय से अधिक लाभ मिलने पर समझौता तोड़ दिया जाये।

(दृढ़) होने के पश्चात् (ईमान से) फिसल^[1] जाये और तुम उस के बदले बुरा परिणाम चखो कि तुम ने अल्लाह की राह से रोका है। और तुम्हारे लिये बड़ी यातना हो।

95. और अल्लाह से किये हुये वचन को तनिक मूल्य के बदले न बेचो।^[2] वास्तव में जो अल्लाह के पास है वही तुम्हारे लिये उत्तम है, यदि तुम जानो।
96. जो तुम्हारे पास है वह व्यय (खर्च) हो जायेगा। और जो अल्लाह के पास है वह शेष रह जाने वाला है। और हम, जो धैर्य धारण करते हैं उन्हें अवश्य उन का पारिश्रमिक (बदला) उन के उत्तम कर्मों के अनुसार प्रदान करेंगे।
97. जो भी सदाचार करेगा, वह नर हो अथवा नारी, और ईमान वाला हो तो हम उसे स्वच्छ जीवन व्यतीत करायेंगे। और उन्हें उन का पारिश्रमिक उन के उत्तम कर्मों के अनुसार अवश्य प्रदान करेंगे।
98. तो (हे नबी!) जब आप कुरआन का अध्ययन करें तो धिक्कारे हुये शैतान से

صَدَدْتُمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا إِنَّمَا عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لِّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

مَا عِنْدَكُمْ يَنْقَدُ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ ۝
وَلَنَجْزِيَنَ الَّذِينَ صَدَقُوا أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ
مُؤْمِنٌ فَلَنُجْزِيَنَّهُ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ
أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَوِذْ بِاللَّهِ مَن

1 अर्थात् ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति इस्लाम की सत्यता को स्वीकार करने के पश्चात् केवल तुम्हारे दुराचार को देख कर इस्लाम से फिर जाये। और तुम्हारे समुदाय में सम्मिलित होने से रुक जाये। अन्यथा तुम्हारा व्यवहार भी दूसरों से कुछ भिन्न नहीं है।

2 अर्थात् संसारिक लाभ के लिये वचन भंग न करो। (देखिये: सूरह, आराफ़, आयत: 172)

अल्लाह की शरण^[1] माँग लिया करें।

99. वस्तुतः उस का वश उन पर नहीं है जो ईमान लाये हैं, और अपने पालनहार ही पर भरोसा करते हैं।
100. उस का वश तो केवल उन पर चलता है जो उसे अपना संरक्षक बनाते हैं। और जो मिश्रणवादी (मुशरिक) हैं।
101. और जब हम किसी आयत (विधान) के स्थान पर कोई आयत बदल देते हैं, और अल्लाह ही अधिक जानता है उसे जिस को वह उतारता है, तो कहते हैं कि आप तो केवल घड़ लेते हैं, बल्कि उन में अधिकतर जानते ही नहीं।
102. आप कह दें कि इसे ((रूहुल क़ुदुस))^[2] ने आप के पालनहार की ओर से सत्य के साथ क्रमशः उतारा है ताकि उन्हें सुदृढ़ कर दे जो ईमान लाये हैं। तथा मार्ग दर्शन और शुभ सूचना है आज्ञाकारियों के लिये।
103. तथा हम जानते हैं कि वे (काफ़िर) कहते हैं कि उसे (नबी को) कोई मनुष्य सिखा रहा^[3] है। जब कि उस की भाषा जिस की ओर संकेत करते

الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ﴿١٠﴾

إِنَّهُ لَمِنَ لَهُ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٩٩﴾

إِنَّمَا سَلَطْنَاهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَكَّلُونَ عَلَيْهِ وَالَّذِينَ هُمْ بِهِ مُشْرِكُونَ ﴿١٠٠﴾

وَإِذْ أَبْكَلْنَا آيَةَ مَكَانِ آيَةٍ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُنزِّلُ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مُفْتَرٍ بَلْ أَنْزَلْنَاهُمْ لَكَيْلًا ﴿١٠١﴾

فَلْيُرَاكَ رُوحُ الْقُدُسِ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ آمَنُوا وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿١٠٢﴾

وَلَقَدْ نَعَلْنَا أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّمَا عَلَّمَهُ بَشَرٌ لِّسَانِ الَّذِي يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ أَعْجِبُوا وَهَذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّثَبِّتٌ ﴿١٠٣﴾

1 अर्थात् ((अरुजुबिल्लाहि मिनशशैतानिरर्जीम)) पढ़ लिया करें।

2 इस का अर्थ: पवित्रात्मा है। जो जिब्रिल अलैहिस्सलाम की उपाधि है। यही वह फरिश्ता है जो वही लाता था।

3 इस आयत में मक्का के मिश्रणवादियों के इस आरोप का खण्डन किया गया है कि कुर्आन आप को एक विदेशी सिखा रहा है।

है विदेशी है और यह^[1] स्पष्ट अर्बी भाषा है।

104. वास्तव में जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, उन्हें अल्लाह सुपथ नहीं दर्शाता और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।
105. झूठ केवल वही घड़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, और वही मिथ्यावादी (झूठे) हैं।
106. जिस ने अल्लाह के साथ कुफ़्र किया अपने ईमान लाने के पश्चात्, परन्तु जो बाध्य कर दिया गया हो इस दशा में कि उस का दिल ईमान से संतुष्ट हो, (उस के लिये क्षमा है)। परन्तु जिस ने कुफ़्र के साथ सीना खोल दिया^[2] हो, तो उन्हीं पर अल्लाह का प्रकोप है, और उन्हीं के लिये महा यातना है।
107. यह इसलिये कि उन्हीं ने संसारिक जीवन को परलोक पर प्राथमिकता दी है। और वास्तव में अल्लाह, काफ़िरों को सुपथ नहीं दिखाता।
108. वही लोग हैं जिन के दिलों तथा कानों और आँखों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है। तथा यही लोग अचेत हैं।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ وَلَا أُمَّةٌ عَدَابٌ إِلَيْهِمْ ۝

إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكُذِّبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْكٰذِبُونَ ۝

مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَكِنْ مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِنَ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآٰخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَسَمِعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْغٰفِلُونَ ۝

- 1 अर्थात् मक्के वाले जिसे कहते हैं कि वह मुहम्मद को कुर्आन सिखाता है उस की भाषा तो अर्बी है ही नहीं तो वह आप को कुर्आन कैसे सिखा सकता है जो बहुत उत्तम तथा श्रेष्ठ अर्बी भाषा में है। क्या वे इतना भी नहीं समझते?
- 2 अर्थात् स्वेच्छा कुफ़्र किया हो।

109. निश्चय वही लोग परलोक में क्षतिग्रस्त होने वाले हैं।
110. फिर वास्तव में आप का पालनहार उन लोगों^[1] के लिये जिन्होंने हिजरत (प्रस्थान) की, और उस के पश्चात् परीक्षा में डाले गये, फिर जिहाद किया, और सहन शील रहे, वास्तव में आप का पालनहार इस (परीक्षा) के पश्चात् बड़ा क्षमाशील दयावान् है।
111. जिस दिन प्रत्येक प्राणी को अपने बचाव की चिन्ता होगी, और प्रत्येक प्राणी को उस के कर्मों का पूरा बदला दिया जायेगा, और उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।
112. अल्लाह ने एक बस्ती का उदाहरण दिया है, जो शान्त संतुष्ट थी, उस की जीविका प्रत्येक स्थान से प्राचुर्य के साथ पहुँच रही थी, तो उस ने अल्लाह के उपकारों के साथ कुफ़्र किया। तब अल्लाह ने उसे भूख और भय का वस्त्र चखा^[2] दिया उस के बदले जो वह^[3] कर रहे थे।
113. और उन के पास एक^[4] रसूल उन्हीं

لَا جُورَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿١٠٩﴾

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِن بَعْدِ
مَا فَعَلْتُمْ جَهْدًا وَصَبْرًا وَإِنَّ رَبَّكَ
مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٠﴾

يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَفْسِهَا
وَتُوْفَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١١١﴾

وَصَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ آمِنَةً
مُّطْمَئِنَّةً يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِن كُلِّ مَكَانٍ
فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللَّهِ فَأَذَاقَهَا اللَّهُ لِبَاسَ
الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١١٢﴾

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ

- 1 इन से अभिप्रेत नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वह अनुयायी है जो मक्का से मदीना हिजरत कर गये।
- 2 अर्थात् उन पर भूख और भय की आपदायें छा गईं।
- 3 अर्थात् उस बस्ती के निवासी। और इस बस्ती से अभिप्रेत मक्का है जिन पर उन के कुफ़्र के कारण अकाल पड़ा।
- 4 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का के कुरैशी वंश से ही थे फिर भी

में से आया तो उन्होंने उसे झुठला दिया। अतः उन्हें यातना ने पकड़ लिया, और वह अत्याचारी थे।

114. अतः उस में से खाओ जो अल्लाह ने तुम्हें हलाल (वैध) स्वच्छ जीविका प्रदान की है। और अल्लाह का उपकार मानो यदि तुम उसी की इबादत (वंदना) करते हो।
115. जो कुछ उस ने तुम पर हराम (अवैध) किया है वह मुर्दार तथा रक्त और सूअर का मांस है, और जिस पर अल्लाह के सिवा दूसरे का नाम लिया गया^[1] हो, फिर जो भूख से आतुर हो जाये, इस दशा में कि वह नियम न तोड़ रहा^[2] हो, और न आवश्यकता से अधिक खाये, तो वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
116. और मत कहो -उस झूठ के कारण जो तुम्हारी जुबानों पर आ जाये- कि यह हलाल (वैध) है, और यह हराम (अवैध) है ताकि अल्लाह पर मिथ्यारोप^[3] करो। वास्तव में जो लोग अल्लाह पर मिथ्यारोप करते हैं

فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١١٤﴾

فَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمْ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا
وَاشْكُرُوا لِنِعْمَتِ اللَّهِ إِنَّ كُتُوبَكُمْ لَآيَاتٍ
لِّعِبَادٍ ﴿١١٥﴾

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ
الْخِنْزِيرِ وَمِمَّا أَهْلًا لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ فَمَنْ
اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَحِيمٌ ﴿١١٦﴾

وَلَا تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ
الْكُذِبَ هَذَا حَلَالٌ وَهَذَا حَرَامٌ
لِنَفْسِنَا عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ إِنَّ الَّذِينَ
يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿١١٦﴾

उन्होंने ने आप की बात को नहीं माना।

- 1 अर्थात् अल्लाह के सिवा अन्य के नाम से बलि दिया गया पशु। हदीस में है कि जो अल्लाह के सिवा दूसरे के नाम से बलि दे उस पर अल्लाह की धिक्कार है। (सहीह बुखारी-1978)
- 2 (देखिये: सूरह बकरा, आयत-173, सूरह माइदा, आयत-3, तथा सूरह अन्माम, आयत-145)
- 3 क्योंकि हलाल और हराम करने का अधिकार केवल अल्लाह को है।

वह (कभी) सफल नहीं होते।

117. (इस मिथ्यारोपण का) लाभ तो थोड़ा है और उन्हीं के लिये (परलोक में) दुःखदायी यातना है।
118. और उन पर जो यहूदी हो गये, हम ने उसे हराम (अवैध) कर दिया जिस का वर्णन हम ने इस^[1] से पहले आप से कर दिया है। और हम ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वे स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।
119. फिर वास्तव में आप का पालनहार उन्हें जो अज्ञानता के कारण बुराई कर बैठे, फिर उस के पश्चात् क्षमायाचना कर ली, और अपना सुधार कर लिया, वास्तव में आप का पालनहार इस के पश्चात् अति क्षमी दयावान् है।
120. वास्तव में इब्राहीम एक समुदाय^[2] था, अल्लाह का आज्ञाकारी एकेश्वरवादी था। और मिश्रणवादियों (मुश्रिकों) में से नहीं था।
121. उस के उपकारों को मानता था, उस ने उसे चुन लिया, और उसे सीधी राह दिखा दी।

مَتَاعًا قَلِيلًا ۖ وَكَهْمُ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿١١٧﴾

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَزْمًا مِمَّا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٨﴾

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا السُّوءَ بِمَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١١٩﴾

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِلَّهِ حَنِيفًا ۖ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٢٠﴾

شَاكِرًا لِلْعَمَلِ إِجْتَبَاهُ وَهَدَاهُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿١٢١﴾

1 इस से संकेत सूरह अनग्राम, आयत-26 की ओर है।

2 अर्थात् वह अकेला सम्पूर्ण समुदाय था। क्यों कि उस के वंश से दो बड़ी उम्मतें बनीं: एक बनी इस्राईल, और दूसरी बनी इस्राईल जो बाद में अरब कहलाये। इस का एक दूसरा अर्थ मुख्या भी होता है।

122. और हम ने उसे संसार में भलाई दी, और वास्तव में वह परलोक में सदाचारियों में से होगा।
123. फिर हम ने (हे नबी!) आप की ओर वही की, कि एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म का अनुसरण करो, और वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।
124. सब्त^[1] (शनिवार का दिन) तो उन्हीं पर निर्धारित किया गया जिन्होंने उस में विभेद किया। और वस्तुतः आप का पालनहार उन के बीच उस में निर्णय कर देगा जिस में वे विभेद कर रहे थे।
125. (हे नबी!) आप उन्हें अपने पालनहार की राह (इस्लाम) की ओर तत्त्वदर्शिता तथा सदुपदेश के साथ बुलायें। और उन से ऐसे अन्दाज़ में शास्त्रार्थ करें जो उत्तम हो। वास्तव में अल्लाह उसे अधिक जानता है, जो उस की राह से विचलित हो गया, और वही सुपथों को भी अधिक जानता है।
126. और यदि तुम लोग बदला लो, तो उतना ही लो, जितना तुम्हें सताया गया हो। और यदि सहन कर जाओ

وَأَتَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَإِنَّا فِي الآخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٢٢﴾

ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنْ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرٰهِيْمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٣﴾

إِنَّمَا جَعَلْنَا السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَفَوْا فِيهِ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٢٤﴾

أُدْعُ إِلَى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالنُّوْعَظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٢٥﴾

وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا إِيْسَابًا مَّا عُوْبِتُمْ بِهِ وَكَلِيْنَ صَبْرًا لَّمْ لَهُمْ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿١٢٦﴾

1 अर्थात् सब्त का सम्मान जैसे इस्लाम में नहीं है इसी प्रकार इब्राहीम अलैहिस्सलाम के धर्म में भी नहीं है। यह तो केवल उन के लिये निर्धारित किया गया जिन्होंने विभेद कर के जुमुआ के दिन की जगह सब्त का दिन निर्धारित कर लिया। तो अल्लाह ने उन के लिये उसी का सम्मान अनिवार्य कर दिया कि इस में शिकार न करो। (देखिये: सूरह आराफ़, आयत: 163)

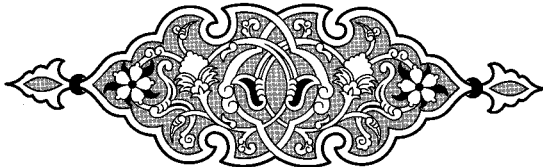
तो सहनशीलों के लिये यही उत्तम है।

127. और (हे नबी!) आप सहन करें, और आप का सहन करना अल्लाह ही की सहायता से है। और उन के (दुर्व्यवहार) पर शोक न करें, और न उन के षड्यंत्र से तनिक भी संकुचित हों।

128. वास्तव में अल्लाह उन लोगों के साथ है, जो सदाचारी हैं, और जो उपकार करने वाले हैं।

وَأَصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ
وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٧﴾

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَالَّذِينَ هُمْ
مُحْسِنُونَ ﴿١٢٨﴾



सूरह बनी इस्राईल - 17



सूरह बनी इस्राईल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 111 आयतें हैं।

- इस की आयत (2-3 में बनी इस्राईल से संबंधित कुछ शिक्षाप्रद बातें सुना कर सावधान किया गया है। इसलिये इस का नाम सूरह (बनी इस्राईल) रखा गया है। और इस की प्रथम आयत में इस्राअ (मेअराज) का वर्णन हुआ है इसलिये इस का दूसरा नाम सूरह (इस्राअ) भी है।
- आयत 9 से 22 तक कुर्आन का आमंत्रण प्रस्तुत किया गया है। और आयत 39 तक उन शिक्षाओं का वर्णन है जो मनुष्य के कर्मों को सजाती हैं और अल्लाह से उस का संबंध दृढ़ करती हैं। और आयत 40 से 60 तक विरोधियों के संदेहों को दूर किया गया है।
- आयत 61 से 65 तक में शैतान इब्लीस के आदम (अलैहिस्सलाम) के सज्दे से इन्कार, और मनुष्य से बैर और उस को कुपथ करने के प्रयास का वर्णन किया गया है, जो आज भी लोगों को कुर्आन से रोक रहा है। और उस से सावधान किया गया है।
- आयत 66 से 72 तक तौहीद तथा परलोक पर विश्वास की बातें प्रस्तुत करते हुये आयत 77 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरोध की आँधियों में सत्य पर स्थित रहने के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 78 से 82 तक में नमाज़ की ताकीद, हिज्रत की ओर संकेत, तथा सत्य के प्रभुत्व की सूचना और अत्याचारियों के लिये चेतावनी है।
- आयत 83 से 100 तक में मनुष्य के कुकर्म पर पकड़ की गई है। तथा विरोधियों की आपत्तियों के उत्तर दिये गये हैं। फिर आयत 104 तक मूसा (अलैहिस्सलाम) के चमत्कारों की चर्चा और उस पर ईमान न लाने के कारण फिरौन पर यातना के आ जाने का वर्णन है।
- आयत 105 से 111 तक यह निर्देश दिये गये हैं कि अल्लाह को कैसे पुकारा जाये, तथा उस की महिमा का वर्णन कैसे किया जाये।

मेअराज की घटना:

- यह अन्तिम नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की विशेषता है कि

हिजरत से एक वर्ष पहले अल्लाह ने एक रात आप को मस्जिदे हराम (काँबा) से मस्जिदे अक़्सा तक, और फिर वहाँ से सातवें आकाश तक अपनी कुछ निशानियाँ दिखाने के लिये यात्रा कराई। फ़रिश्ते जिब्रिल (अलैहिस्सलाम) ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को «बुराक़» (एक जानवर का नाम, जिस पर बैठ कर आप ने यह यात्रा की थी) पर सवार किया और पहले मस्जिदे अक़्सा (फिलस्तीन) ले गये वहाँ आप ने सब नबियों को नमाज़ पढ़ाई। फिर आकाश पर ले गये आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) प्रत्येक आकाश पर नबियों से मिलते हुये सातवें आकाश पर पहुँचो। स्वर्ग और नरक को देखा। इस के पश्चात् आप को ((सिद्रतुल मुन्तहा)) ले जाया गया। फिर ((बैतुल मामूर)) आप के सामने किया गया। उस के पश्चात् अल्लाह के समीप पहुँचाया गया। और अल्लाह ने आप को कुछ उपदेश दिये, और दिन-रात में पाँच समय की नमाज़ अनिवार्य की। (सहीह बुख़ारी-3207, मुस्लिम- 164) (और देखिये: सूरह नज्म)

- जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने सवेरे अपनी जाति को इस यात्रा की सूचना दी तो उन्होंने ने आप का उपहास किया और आप से कहा कि बैतुल मक़्दिस की स्थिति बताओ। इस पर अल्लाह ने उसे आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सामने कर दिया, और आप ने आँखों से देख कर उन को उस की सब निशानियाँ बता दी। (देखिये: सहीह बुख़ारी-3437, मुस्लिम- 172)
- आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जाते और आते हुये राह में उन के एक काफ़िले से मिलने की भी चर्चा की और उस के मक्का आने का समय और उस ऊँट का चिन्ह भी बता दिया जो सब से आगे था और यह सब वैसे ही हुआ जैसे आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने बताया था। (सीरत इब्ने हिशाम-1|402-403)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

1. पवित्र है वह जिस ने रात्रि के कुछ
क्षण में अपने भक्त^[1] को मस्जिदे

سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّن

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को।

हराम (मक्का) से मस्जिदे अक्सा तक यात्रा कराई। जिस के चतुर्दिगं हम ने सम्पन्नता रखी है, ताकि उसे अपनी कुछ निशानियों का दर्शन करायें। वास्तव में वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

2. और हम ने मूसा को पुस्तक प्रदान की और उसे बनी इस्राईल के लिये मार्गदर्शन का साधन बनाया कि मेरे सिवा किसी को कार्यसाधक^[1] न बनाओ।

3. हे उन की संतति जिन को हम ने नूह के साथ (नौका में) सवार किया। वास्तव में वह अति कृतज्ञ^[2] भक्त था।

4. और हम ने बनी इस्राईल को उन की पुस्तक में सूचित कर दिया था कि तुम इस^[3] धरती में दो बार उपद्रव

الْمَسْجِدِ الْمَقَرِّ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي
بَرَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنْ آيَاتِنَا إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ
الْبَصِيرُ ﴿١٧﴾

وَآتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي
إِسْرَائِيلَ الْآتَمِينَ وَالْمَنْ دُونَهُمْ ﴿١٨﴾

ذُرِّيَّةً مِّنْ حَمَلِنَا مَعَهُ نُورًا إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا
شَاكِرًا ﴿١٩﴾

وَقَضَيْنَا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ فِي الْكِتَابِ لَتُفْسِدُنَّ فِي
الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيرًا ﴿٢٠﴾

इस आयत में उस सुप्रसिद्ध सत्य की चर्चा की गई है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से संबन्धित है। जिसे परिभाषिक रूप से "इस्राअ" कहा जाता है जिस का अर्थ है: रात की यात्रा। इस का सविस्तार विवरण हदीसों में किया गया है।

भाष्यकारों के अनुसार हिजरत के कुछ पहले अल्लाह ने आप को रात्रि के कुछ भाग में मक्का से मस्जिदे अक्सा तक जो फिलस्तीन में है यात्रा कराई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है कि जब मक्का के मिश्रणवादियों ने मुझे झुठलाया, तो मैं हिज्र में (जो काँबा का एक भाग है) खड़ा हो गया। और अल्लाह ने बैतुम मक्दिस को मेरे लिये खोल दिया। और मैं उन्हें उस की निशानियाँ देख कर बताने लगा। (सहीह बुखारी, हदीस: 4710)।

1 जिस पर निर्भर रहा जाये।

2 अतः हे सर्वमानव तुम भी अल्लाह के उपकार के आभारी बनो।

3 अर्थात् बैतुल मक्दिस में।

करोगे, और बड़ा अत्याचार करोगे।

5. तो जब प्रथम उपद्रव का समय आया तो हम ने तुम पर अपने प्रबल योद्धा भक्तों को भेज दिया, जो नगरों में घुस गये, और इस वचन को पूरा होना^[1] ही था।

6. फिर हम ने उन पर तुम्हें पुनः प्रभुत्व दिया, तथा धनों और पुत्रों द्वारा तुम्हारी सहायता की, और तुम्हारी संख्या बहुत अधिक कर दी।

7. यदि तुम भला करोगे तो अपने लिये, और यदि बुरा करोगे तो अपने लिये। फिर जब दूसरे उपद्रव का समय आया ताकि (शत्रु) तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें, और मस्जिद (अक़सा) में वैसे ही प्रवेश कर जायें जैसे प्रथम बार प्रवेश कर गये, और ताकि जो भी उन के हाथ आये उसे पूर्णतः नाश^[2] कर दें।

8. संभव है कि तुम्हारा पालनहार तुम पर दया करे। और यदि तुम प्रथम स्थिति पर आ गये, तो हम भी फिर^[3] आयेंगे, और हम ने नरक को काफ़िरो

فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَاهُمَا لَعَنَّا عَلَيْكُمْ عِبَادَنَا أُولَىٰ
بَأْسٍ شَدِيدٍ فَجَاسُوا خِلَالَ الدِّيَارِ وَكَانَ
وَعْدًا مَّفْعُولًا

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنَاكُمْ
بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَجَعَلْنَاكُمْ أَكْثَرَ نَفِيرًا

إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنْتُمْ لِأَنْفُسِكُمْ وَإِنْ
أَسَأْتُمْ فَلَهَا فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءَ
وُجُوهَكُمْ وَلِيَبَدَلُوا أَلْسِنَتَكُمْ لِيُكَلِّمُوا
أُولَٰئِكَ مَرَءَاتُ يَوَسْوِسَاتٍ لَّيِّنَاتٍ لَّا يَخْلَوْنَ
أُولَٰئِكَ مَرَءَاتُ يَوَسْوِسَاتٍ لَّيِّنَاتٍ لَّا يَخْلَوْنَ

عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يُصَلِّمَ وَإِنْ عُدْتُمْ عَدَاْنَا وَجَعَلْنَا
جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا

1 इस से अभिप्रेत बाबिल के राजा बुख्तनस्सर का आक्रमण है जो लग भग छः सौ वर्ष पूर्व मसीह हुआ। इस्राईलियों को बंदी बना कर ईराक ले गया और बैतुल मुकद्दस को तहस नहस कर दिया।

2 जब बनी इस्राईल पुनः पापाचारी बन गये, तो रोम के राजा कैसर ने लग भग सन् 70 ई० में बैतुल मक़दिस पर आक्रमण कर के उन की दुर्गंत बना दी। और उन की पुस्तक तौरात का नाश कर दिया और एक बड़ी संख्या को बंदी बना लिया। यह सब उन के कुकर्म के कारण हुआ।

3 अर्थात् संसारिक दण्ड देने के लिये।

के लिये कारावास बना दिया है।

9. वास्तव में यह कुर्आन वह डगर दिखाता है जो सब से सीधी है, और उन ईमान वालों को शुभसूचना देता है जो सदाचार करते हैं, कि उन्हीं के लिये बहुत बड़ा प्रतिफल है।
10. और जो आखिरत (परलोक) पर ईमान नहीं लाते, हम ने उन के लिये दुःखदायी यातना तय्यार कर रखी है।
11. और मनुष्य (क्षुब्ध हो कर) अभिशाप करने लगता^[1] है, जैसे भलाई के लिये प्रार्थना करता है। और मनुष्य बड़ा ही उतावला है।
12. और हम ने रात्रि तथा दिवस को दो प्रतीक बनाया, फिर रात्रि के प्रतीक को हम ने अंधकार बनाया तथा दिवस के प्रतीक को प्रकाशयुक्त, ताकि तुम अपने पालनहार के अनुग्रह (जीविका) की खोज करो। और वर्षों तथा हिसाब की गिनती जानो, तथा हम ने प्रत्येक चीज़ का सविस्तार वर्णन कर दिया।
13. और प्रत्येक मनुष्य के कर्म पत्र को हम ने उस के गले का हार बना दिया है। और हम उस के लिये प्रलय के दिन एक कर्मलेख निकालेंगे जिसे वह खुला हुआ पायेगा।
14. अपना कर्मलेख पढ़ लो, आज तू स्वयं अपना हिसाब लेने के लिये पर्याप्त है।

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّذِي هُوَ أَقْوَمٌ وَيُخَيِّرُ
الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ إِنَّ لَهُمْ أَجْرًا
كَبِيرًا ۝

وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا ۝

وَيَذُرُّ الْإِنْسَانَ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ وَكَانَ
الْإِنْسَانُ عَجُولًا ۝

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَاتَيْنِ فَمَنْ حَمَلَتْ آيَةٌ أَنْبِلًا
وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْشِرَةً لِّمَنْتَعُوا فَضْلًا مِّنْ
رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ وَكُلُّ
شَيْءٍ قَدْرًا فَتَعْلَمُونَ ۝

وَكُلُّ إِنْسَانٍ لِّرَبِّهِ أَكْرَهٌ ۝ وَخُذْ مِنْهُ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ كَفًى ۝ إِنَّ قُرْآنَكَ لَكُنْفٌ مِّنْثَوْرًا ۝

إِذَا كُتِبَ عَلَيْكَ الْقِتَابُ فَاذْكُرْهُ ۝

1 अर्थात् स्वयं को और अपने घराने को शापने लगता है।

15. जिस ने सीधी राह अपनायी, उस ने अपने ही लिये सीधी राह अपनायी। और जो सीधी राह से विचलित हो गया उस का (दुष्परिणाम) उसी पर है। और कोई दूसरे का बोझ (अपने ऊपर) नहीं लादेगा^[1] और हम यातना देने वाले नहीं हैं जब तक कि कोई रसूल न भेजे^[2]

مَنْ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا

16. और जब हम किसी बस्ती का विनाश करना चाहते हैं तो उस के सम्पन्न लोगों को आदेश देते^[3] हैं, फिर वह उस में उपद्रव करने लगते^[4] हैं तो उस पर यातना की बात सिद्ध हो जाती है, और हम उस का पूर्णतः उन्मूलन कर देते हैं।

وَإِذْ أَرَدْنَا أَنْ نُهْلكَ قَرْيَةً قَدِيمَةً آمُرْنَا مَتْرُفِيهَا فَفَسَقُوا فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنَا تدمِيرًا

17. और हम ने बहुत सी जातियों का नूह के पश्चात् विनाश किया है। और आप का पालनहार अपने दासों के पापों से सूचित होने-देखने को बहुत है।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِنْ بَعْدِ نُوحٍ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

18. जो संसार ही चाहता हो हम उसे यहीं दे देते हैं, जो हम चाहते हैं, जिस के लिये चाहते हैं। फिर हम उस का परिणाम (परलोक में) नरक बना देते हैं, जिस में वह निन्दित-तिरस्कृत

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ جَعَلْنَا لَهُ فِيهَا مَا تَشَاءُ مِنَ ثَمَرَاتٍ مُتَسَعِّفًا وَمَنْ جَعَلْنَا لَهُ جَهَنَّمَ يَصِلُهَا مِنْهَا مَوَآمِدًا فَهَوًّا

1 आयत का भावार्थ यह है कि जो सदाचार करता है, वह किसी पर उपकार नहीं करता। बल्कि उस का लाभ उसी को मिलना है। और जो दुराचार करता है, उस का दण्ड भी उसी को भोगना है।

2 ताकि वे यह बहाना न कर सकें कि हम ने सीधी राह को जाना ही नहीं था।

3 अर्थात् आज्ञापालन का।

4 अर्थात् हमारी आज्ञा का। आयत का भावार्थ यह है कि समाज के सम्पन्न लोगों का दुष्कर्म, अत्याचार और अवैज्ञा पूरी बस्ती के विनाश का कारण बन जाती है।

हो कर प्रवेश करेगा।

19. तथा जो परलोक चाहता हो और उस के लिये प्रयास करता हो, और वह एकेश्वरवादी हो, तो वही है जिन के प्रयास का आदर सम्मान किया जायेगा।

20. हम प्रत्येक की सहायता करते हैं, इन की भी और उन की भी, और आप के पालनहार का प्रदान (किसी से) निषेधित (रोका हुआ) नहीं^[1] है।

21. आप विचार करें कि कैसे हम ने (संसार में) उन में से कुछ को कुछ पर प्रधानता दी है और निश्चय परलोक के पद और प्रधानता और भी अधिक होगी।

22. (हे मानव!) अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य न बना, अन्यथा बुरा और असहाय हो कर रह जायेगा।

23. और (हे मनुष्य!) तेरे पालनहार ने आदेश दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत (वंदना) न करो, तथा माता - पिता के साथ उपकार करो, यदि तेरे पास दोनों में से एक वृद्धावस्था को पहुँच जाये अथवा दौनों, तो उन्हें उफ तक न कहो, और न झिड़को। और उन से सादर बात बोलो।

24. और उन के लिये विनम्रता का बाजू दया से झुका^[2] दो, और प्रार्थना करो:

وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَشْكُورًا ۝

كَلَّا لِمَنْ هُوَ لَهُ وَهُوَ الَّذِي مِنْ عَطَاؤِ رَبِّكَ وَمَا كَانَ عَطَاؤُ رَبِّكَ مَحْظُورًا ۝

أَنْظُرْ كَيْفَ فَكَلَّمْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ وَاللَّخْزُرَةَ الْأَكْبَرُ دَرَجَاتٍ وَالْكَبِيرَ تَفَضِيلًا ۝

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُومًا مَلْعُونًا ۝

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا الْآيَاتِ وَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ احْسَنُوا إِنَّمَا يُلْقُونَ عِنْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمْ أَوْ كَلِمَاتٍ فَلَا تَقُلْ لَهُمْ أُبٌ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ۝

وَاحْفَظْ أَلَمَّا جَنَّاتِ الدِّنِّ مِنَ الرَّجْمَةِ وَقُلْ رَبِّ

1 अर्थात् अल्लाह संसार में सभी को जीविका प्रदान करता है।

2 अर्थात् उन के साथ विनम्रता और दया का व्यवहार करो।

हे मेरे पालनहार! उन दोनों पर दया कर, जैसे उन दोनों ने बाल्यावस्था में मेरा लालन-पालन किया है।

رَحْمَةً كَمَا رَبَّيْتَنِي صَغِيرًا ۝

25. तुम्हारा पालनहार अधिक जानता है जो कुछ तुम्हारी अन्तरात्माओं (मन) में है। यदि तुम सदाचारी रहे, तो वह अपनी ओर ध्यानमग्न रहने वालों के लिये अति क्षमावान् है।

رَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَا فِي نُفُوسِكُمْ إِنَّ تِلْكَ أَوْلَادِي لَمُحْسِنِينَ فَإِنَّهُ كَانَ لِلْأَوَّابِينَ غَفُورًا ۝

26. और समीपवर्तियों को उन का स्वत्व (हिस्सा) दो, तथा दरिद्र और यात्री को, और अपव्यय^[1] न करो।

وَأَيُّ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقُّهُ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّبِيلَ وَلَا تَبْدِلْ دِينًا بَدِيلًا ۝

27. वास्तव में अपव्ययी शैतान के भाई हैं और शैतान अपने पालनहार का अति कृतघ्न है।

إِنَّ الْمُبَدِّلِينَ كَانُوا الْخَوَانَ السَّيْطَانِ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ۝

28. और यदि आप उन से विमुख हों अपने पालनहार की दया की खोज के लिये जिस की आशा रखते हों तो उन से सरल^[2] बात बोलें।

وَأَمَّا تَرْضَىٰ عَنْهُمْ فِيمَا بَيْنَهُمْ رَحْمَةٌ مِنْ رَبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُلْ لَهُمْ قَوْلًا نَيِّبًا ۝

29. और अपना हाथ अपनी गरदन से न बाँध^[3] लो, और न उसे पूरा खोल दो कि निन्दित विवश हो कर रह जाओ।

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَوْتًا مَحْشُورًا ۝

30. वास्तव में आप का पालनहार ही विस्तृत कर देता है जीविका को जिस के लिये चाहता है, तथा संकीर्ण कर देता है। वास्तव में वही अपने दासों

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝

1 अर्थात् अपरिमित और दुष्कर्म में खर्च न करो।

2 अर्थात् उन्हें सरलता से समझा दें कि अभी कुछ नहीं है। जैसे ही कुछ आया तुम्हें अवश्य दूँगा।

3 हाथ बाँधने और खोलने का अर्थ है, कृपण तथा अपव्यय करना। इस में व्यय और दान में संतुलन रखने की शिक्षा दी गयी है।

(वंदों) से अति सूचित^[1] देखने वाला है^[2]

31. और अपनी संतान को निर्धन हो जाने के भय से बध न करो, हम उन्हें तथा तुम्हें जीविका प्रदान करेंगे, वास्तव में उन्हें बध करना महा पाप है।

32. और व्यभिचार के समीप भी न जाओ, वास्तव में वह निर्लज्जा तथा बुरी रीति है।

33. और किसी प्राण को जिसे अल्लाह ने हराम (अवैध) किया है, बध न करो, परन्तु धर्म विधान^[3] के अनुसार। और जो अत्यचार से बध (निहत) किया गया हो हम ने उस के उत्तराधिकारी को अधिकार^[4] प्रदान किया है। अतः वह बध करने में अतिक्रमण^[5] न करे, वास्तव में उसे सहायता दी गयी है।

34. और अनाथ के धन के समीप भी न जाओ, परन्तु ऐसी रीति से जो उत्तम हो, यहाँ तक कि वह अपनी युवा अवस्था को पहुँच जाये, और वचन पूरा करो, वास्तव में वचन के विषय में प्रश्न किया जायेगा।

وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ لَّحَنَ نَزْوُكُمْ
وَأَيُّكُمْ إِن قَتَلْتَهُمْ كَانَ خَطَاً كَبِيراً ۝

وَلَا تَقْرَبُوا الرِّبَا إِن كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا ۝

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَنْ
قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِرَبِّهِ سُلْطٰنًا فَلْيَكْفُرْ
فِي الْقَتْلِ إِن كَانَ مَنصُورًا ۝

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ
يَبْلُغَ أَشُدَّهُ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ إِن الْعَهْدَ كَانَ
مَسْئُولًا ۝

1 अर्थात् वह सब की दशा और कौन किस के योग्य है देखता और जानता है।

2 हदीस में है कि शिर्क के बाद सब से बड़ा पाप अपनी संतान को खिलाने के भय से मार डालना है। (बुखारी, 4477, मुस्लिम: 86)

3 अर्थात् प्रतिहत्या में अथवा विवाहित होते हुये व्यभिचार के कारण, अथवा इस्लाम से फिर जाने के कारण।

4 अधिकार का अर्थ यह है कि वह इस के आधार पर हत्-दण्ड की मांग कर सकता है, अथवा बध या अर्थ-दण्ड लेने या क्षमा कर देने का अधिकारी है।

5 अर्थात् एक के बदले दो को या दूसरे की हत्या न करे।

35. और पूरा नाप कर दो, जब नापो, और सही तराजू से तौलो। यह अधिक अच्छा और इस का परिणाम उत्तम है।
36. और ऐसी बात के पीछे न पड़ो, जिस का तुम्हें कोई ज्ञान न हो, निश्चय कान तथा आँख और दिल इन सब के बारे में (प्रलय के दिन) प्रश्न किया जायेगा।^[1]
37. और धरती में अकड़ कर न चलो, वास्तव में न तुम धरती को फाड़ सकोगे, और न लम्बाई में पर्वतों तक पहुँच सकोगे।
38. यह सब बातें हैं। इन में बुरी बात आप के पालनहार को अप्रिय है।
39. यह तत्वदर्शिता की वह बातें हैं, जिन की वही (प्रकाशना) आप की ओर आप के पालनहार ने की है, और अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य न बना लेना, अन्यथा नरक में निन्दित तिरस्कृत कर के फेंक दिये जाओगे।
40. क्या तुम्हारे पालनहार ने तुम्हें पुत्र प्रदान करने के लिये विशेष कर लिया है, और स्वयं ने फरिश्तों को पुत्रियाँ बना लिया है? वास्तव में तुम बहुत बड़ी बात कह रहे हो।^[2]

وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوا بِالْقِسْطِاسِ الْمُسْتَقِيمِ
ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۝

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ
وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَئِكَ كَانَ عِنْدَهُ مُسْمُورًا ۝

وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْأَرْضَ
وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ۝

كُلُّ ذَلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا ۝

ذَلِكَ وَمِمَّا أَوْحَى إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ
وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتُنْفَلِقَ فِي جَهَنَّمَ
مَوْلًا مَمْدُودًا ۝

أَفَأَصْفَاكُمْ رَبُّكُم بِالْبَنِينَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلَائِكَةِ
إِنَاثًا إِنَّكُمْ لَتَعْتَوُونَ قَوْلًا عَظِيمًا ۝

1 अल्लाह, प्रलय के दिन इन को बोलने की शक्ति देगा। और वह उस के विरुद्ध साक्ष्य देंगे। (देखिये: सूरह, हा, मीम सज्दा, आयत: 20-21)

2 इस आयत में उन अर्बों का खण्डन किया गया है जो फरिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ कहते थे। जब कि स्वयं पुत्रियों के जन्म से उदास हो जाते थे। और कभी ऐसा भी हुआ कि उन्हें जीवित गाड़ दिया जाता था। तो बताओ यह कहाँ का

41. और हम ने विविध प्रकार से इस कुरआन में (तथ्यों का) वर्णन कर दिया है, ताकि लोग शिक्षा ग्रहण करें। परन्तु उस ने उन की घृणा को और अधिक कर दिया।
42. आप कह दें कि यदि अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य होते, जैसा कि वह (मिश्रणवादी) कहते हैं, तो वह अर्श (सिंहासन) के स्वामी (अल्लाह) की ओर अवश्य कोई राह^[1] खोजते।
43. वह पवित्र और बहुत उच्च है, उन बातों से जिन को वे बनाते हैं।
44. उस की पवित्रता का वर्णन कर रहे हैं सातों आकाश तथा धरती और जो कुछ उन में है। और नहीं है कोई चीज़ परन्तु वह उस की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन कर रही है, किन्तु तुम उन के पवित्रता गान को समझते नहीं हो। वास्तव में वह अति सहिष्णु क्षमाशील है।
45. और जब आप कुरआन पढ़ते हैं, तो हम आप के बीच और उन के बीच जो आखिरत (परलोक) पर ईमान नहीं लाते, एक छुपा हुआ आवरण (पर्दा) बना^[2] देते हैं।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ﴿٤١﴾

قُلْ لَوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذْ الْأَبْنَعُ إِلَىٰ ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ﴿٤٢﴾

سُبْحٰنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ﴿٤٣﴾

نُسَبِّحُ لَهُ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ﴿٤٤﴾
وَلَنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا أَسْبَغَ فِي مَدَامِهِ وَلَكِنْ لَا تَفْقَهُونَ
تَسْبِيحَهُمْ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤٥﴾

وَإِذْ أَرْسَلْنَا الْقُرْآنَ فَجَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ قَبَابًا مَسْتُورًا ﴿٤٦﴾

न्याय है कि अपने लिये पुत्रियों को अप्रिय समझते हो और अल्लाह के लिये पुत्रियाँ बना रखी हो।

- 1 ताकि उस से संघर्ष कर के अपना प्रभुत्व स्थापित कर लें।
- 2 अर्थात् परलोक पर ईमान न लाने का यही स्वभाविक परिणाम है कि कुरआन को समझने की योग्यता खो जाती है।

46. तथा उन के दिलों पर ऐसे खोल चढ़ा देते हैं कि उस (कुर्आन) को न समझें, और उन के कानों में बोझ। और जब आप अपने अकेले पालनहार की चर्चा कुर्आन में करते हैं तो वह घृणा से मुँह फेर लेते हैं।

وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمُ آيَةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِذَا ذُكِرْتِ رَبِّكَ فِي الْقُرْآنِ مَحْذُومًا وَلَوْ عَلَىٰ آدْبَارِهِمْ نُجُورًا ﴿٤٦﴾

47. और हम उन के विचारों से भली भाँति अवगत हैं, जब वे कान लगा कर आप की बात सुनते हैं, और जब वे आपस में कानाफूसी करते हैं। जब वे अत्याचारी करते हैं कि तुम लोग तो बस एक जादू किये हुये व्यक्ति का अनुसरण^[1] करते हो।

عَنْ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ إِذْ يَسْمَعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَىٰ إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ إِنَّا تَسْمِعُونَ الْإِنْسَانَ مَا لَا يَسْمَعُ ﴿٤٧﴾

48. सोचिये कि वह आप के लिये कैसे उदाहरण दे रहे हैं? अतः वे कुपथ हो गये, वह सीधी राह नहीं पा सकेंगे।

أَنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَمِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٤٨﴾

49. और उन्होंने ने कहा: क्या हम जब अस्थियाँ और चूर्ण विचूर्ण हो जायेंगे तो क्या हम वास्तव में नई उत्पत्ति में पुनः जीवित कर दिये^[2] जायेंगे?

وَقَالُوا إِذْ أَنْشَأْنَاهُم مَّا دُرُفْنَا أَن إِنَّا الْمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٤٩﴾

50. आप कह दें कि पत्थर बन जाओ, या लोहा।

قُلْ كُونُوا حِجَارًا أَوْ حديدًا ﴿٥٠﴾

51. अथवा कोई उत्पत्ति जो तुम्हारे मन में इस से बड़ी हो। फिर वे पूछते हैं कि कौन हमें पुनः जीवित करेगा? आप कह दें: वही जिस ने प्रथम चरण

أَوْ خَلْقًا مِمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ فَسَيَقُولُونَ مَنْ يُعِيدُنَا قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ

1 मक्का के काफ़िर छुप-छुप कर कुर्आन सुनते। फिर आपस में परामर्श करते कि इस का तोड़ क्या हो? और जब किसी पर संदेह हो जाता कि वह कुर्आन से प्रभावित हो गया है। तो उसे समझाते कि इस के चक्कर में क्या पड़े हो, इस पर किसी ने जादू कर दिया है इस लिये बहकी-बहकी बातें कर रहा है।

2 ऐसी बात वह परिहास अथवा इन्कार के कारण कहते थे।

में तुम्हारी उत्पत्ति की है। फिर वह आप के आगे सिर हिलायेंगे^[1], और कहेंगे: ऐसा कब होगा? आप कह दें कि संभवतः वह समीप ही है।

52. जिस दिन वे तुम्हें पुकारेगा, तो तुम उस की प्रशंसा करते हुये स्वीकार कर लोगे^[2] और यह सोचोगे कि तुम (संसार में) थोड़े ही समय रहे हो।
53. और आप मेरे भक्तों से कह दें कि वह बात बोलें जो उत्तम हो, वास्तव में शैतान उन के बीच बिगाड़ उत्पन्न करना चाहता^[3] है। निश्चय शैतान मनुष्य का खुला शत्रु है।
54. तुम्हारा पालनहार तुम से भली भाँति अवगत है, यदि चाहे तो तुम पर दया करे, अथवा यदि चाहे तो तुम्हें यातना दे, और हम ने आप को उन पर निरीक्षक बना कर नहीं भेजा^[4] है।
55. (हे नबी!) आप का पालनहार भली भाँति अवगत है उस से जो आकाशों तथा धरती में है। और हम ने प्रधानता दी है कुछ नबियों को कुछ पर, और हम ने दावूद को ज़बूर (पुस्तक) प्रदान की।

هُوْكَأَنَّكَ أَنْ يَكُونَ قَرِيبًا ۝

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ وَتَقُولُونَ إِنَّ
كَيْدَنَا لَكُنَّا ۝

وَقُلْ لِيُعَذِّبُنِي يَوْمَ يَقُولُ الَّذِي هُوَ أَحْسَنُ إِنَّ الشَّيْطَانَ
يُفِرُّ بَيْنَهُمْ وَاللَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا
مُبِينًا ۝

رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ إِنَّ يَتَّبِعُكُمْ أُولَئِكَ يَتَّبِعُكُمْ
وَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ۝

وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَقَدْ
فَضَّلْنَا بَعْضَ الرُّسُلِ عَلَى بَعْضٍ وَآتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا ۝

1 अर्थात् परिहास करते हुये आश्चर्य से सिर हिलायेंगे।

2 अर्थात् अपनी कब्रों से प्रलय के दिन जीवित हो कर उपस्थित हो जाओगे।

3 अर्थात् कटु शब्दों द्वारा।

4 अर्थात् आप का दायित्व केवल उपदेश पहुँचा देना है, वह तो स्वयं अल्लाह के समीप होने की आशा लगाये हुये हैं, कि कैसे उस तक पहुँचा जाये तो भला वे पूज्य कैसे हो सकते हैं।

56. आप कह दें कि उन को पुकारो, जिन को उस (अल्लाह) के सिवा (पूज्य) समझते हों। न वे तुम से दुख दूर कर सकते, और न (तुम्हारी दशा) बदल सकते हैं।

قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ رَعَيْتُمْ مِنْ دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ
كُفْرَكُمْ وَالَّذِينَ رَعَيْتُمْ مِنْ دُونِهِ لَا يَمْلِكُونَ
كُفْرَكُمْ وَالَّذِينَ رَعَيْتُمْ مِنْ دُونِهِ لَا يَمْلِكُونَ

57. वास्तव में जिन को यह लोग^[1] पुकारते हैं वह स्वयं अपने पालनहार का सामिप्य प्राप्त करने का साधन^[2] खोजते हैं, कि कौन अधिक समीप है? और उस की दया की आशा रखते हैं। और उस की यातना से डरते हैं। वास्तव में आप के पालनहार की यातना डरने योग्य है।

أُولَئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَى رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ
أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ
إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا

58. और कोई (अत्याचारी) बस्ती नहीं है, परन्तु हम उसे प्रलय के दिन से पहले ध्वस्त करने वाले या कड़ी यातना देने वाले हैं। यह (अल्लाह के) लेख में अंकित है।

وَأَنْ مِنْ قَرْيَةٍ أَلَمْنُ مَهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ
أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا كَانَ ذَلِكَ فِي الْكِتَابِ
مَسْطُورًا

59. और हमें नहीं रोका इस से कि हम निशानियाँ भेजें किन्तु इस बात ने कि विगत लोगों ने उन्हें झुठला^[3] दिया। और हम ने समुद्र को ऊँटनी का खुला चमत्कार दिया, तो उन्होंने ने उस पर अत्याचार किया। और हम चमत्कार डराने के लिये ही भेजते हैं।

وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَنْ كَذَّبَ بِهَا
الَّذِينَ هُمْ وَآتَيْنَاهُمُودًا لِنُفِخَ فِي سُوفِهِمْ
وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَخْوِيفًا

60. और (हे नबी!) याद करो जब हम

وَأَذَقْنَا لِكُلِّ لِقَاءِ رَبِّكَ أَحْسَبًا بِالْبَأْسِ وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا

1 अर्थात् मुश्रिक जिन नबियों, महापुरुषों और फ़रिश्तों को पुकारते हैं।

2 साधन से अभिप्रेत सत्कर्म और सदाचार है।

3 अर्थात् चमत्कार की माँग करने पर चमत्कार इस लिये नहीं भेजा जाता कि उस के पश्चात् न मानने पर यातना का आना अनिवार्य हो जाता है, जैसा कि भाष्यकारों ने लिखा है।

ने आप से कह दिया था कि आप के पालनहार ने लोगों को अपने नियंत्रण में ले रखा है, और यह जो कुछ हम ने आप को दिखाया^[1] उस को और उस वृक्ष को जिस पर कुर्आन में धिक्कार की गयी है, हम ने लोगों के लिये एक परीक्षा बना दिया^[2] है, और हम उन्हें चेतावनी पर चेतावनी दे रहे हैं, फिर भी वह उन की अवैज्ञा को ही अधिक करती जा रही है।

61. और (याद करो), जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो इबलीस के सिवा सब ने सज्दा किया। उस ने कहा: क्या मैं उसे सज्दा करूँ जिसे तू ने गारे से उत्पन्न किया है?
62. (तथा) उस ने कहा: तू बता, क्या यही है जिसे तूने मुझ पर प्रधानता दी है? यदि तू ने मुझे प्रलय के दिन तक अवसर दिया तो मैं उस की संतति को अपने नियंत्रण में कर लूँगा^[3] कुछ के सिवा।
63. अल्लाह ने कहा: "चले जाओ", जो उन में से तेरा अनुसरण करेगा तो

الَّتِي آتَيْنَاكَ الْآيَاتِنَا لِلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ وَنَعَزَّوْهُمْ بِأَيْدِيهِمْ الْأَطْعِمَا إِنَّا كَبِيرٌ ۝

وَلَوْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ قَالَ مَا أَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتُ طِينًا ۝

قَالَ آدَمُ إِنَّكَ هَذَا الَّذِي كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَمَّا أَخْرَجْتَنِي إِلَى الْيَوْمِ الْغَيْمَةِ لَأَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتِي إِلَّا قَلِيلًا ۝

قَالَ أَذْهَبَ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ جَهَنَّمَ

- 1 इस से संकेत "मेअराज" की ओर है। और यहाँ "रु, या" शब्द का अर्थ स्वप्न नहीं बल्कि आँखों से देखना है। और धिक्कारे हुये वृक्ष से अभिप्राय ज़कूम (थोहड़) का वृक्ष है। (सहीह बुखारी, हदीस, 4716)
- 2 अर्थात् काफ़िरों के लिये जिन्होंने कहा कि यह कैसे हो सकता है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) एक ही रात में बैतुल मुक़द्दस पहुँच जायें फिर वहाँ से आकाश की सैर कर के वापिस मक्का भी आ जायें।
- 3 अर्थात् कुपथ कर दूँगा।

निश्चय नरक तुम सब का प्रतिकार (बदला) है, भरपूर बदला।

64. तू उन में से जिस को हो सके अपनी ध्वनि^[1] से बहका लो और उन पर अपनी सवार और पैदल (सेना) चढा^[2] लो और उन का (उन के) धनों और संतान में साझी बन^[3] जा। तथा उन्हें (मिथ्या) वचन दे। और शैतान उन्हें धोखे के सिवा (कोई) वचन नहीं देता।

65. वास्तव में जो मेरे भक्त हैं उन पर तेरा कोई वश नहीं चल सकता। और आप के पालनहार का सहायक होना यह बहुत है।

66. तुम्हारा पालनहार तो वह है जो तुम्हारे लिये सागर में नौका चलाता है, ताकि तुम उस की जीविका की खोज करो, वास्तव में वह तुम्हारे लिये अति दयावान् है।

67. और जब सागर में तुम पर कोई आपदा आ पड़ती है, तो अल्लाह के सिवा जिन को तुम पुकारते हो खो जाते (भूल जाते) हो।^[4] और जब तुम्हें बचा कर थल तक पहुँचा देता है तो मुख फेर लेते हो। और मनुष्य है हि अति कृतघन।

جَزَاءُكُمْ جَزَاءٌ مَّقُورًا ﴿١٧﴾

وَأَسْفِرُ زَمَنًا اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ
وَأَجْلِبُ عَلَيْهِمْ بِخَيْبِكَ وَرَجُلِكَ وَشَارِكُهُمْ فِي
الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ وَعَدُّهُمْ وَمَا يَدُورُ هُمُ الشَّيْطَانُ
الْأَعْوَرُ ﴿١٨﴾

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ وَكُنْ بِرَبِّكَ
وَكَيْلًا ﴿١٩﴾

رَبُّكُمْ وَالَّذِي يُرْجَى لَكُمْ الْفَلَاحُ فِي الْبَحْرِ لَبَّتَعْتُمْ
مِنْ فَضْلِهِ إِنَّهُ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ﴿٢٠﴾

وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ
إِلَّا آيَاتِهِ فَلَمَّا نَجَّيْكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ وَكَانَ
الْإِنْسَانُ كَفُورًا ﴿٢١﴾

1 अर्थात गाने और बाजे द्वारा।

2 अर्थात अपने जिन्न और मनुष्य सहायकों द्वारा उन्हें बहकाने का उपाय कर ले।

3 अर्थात अवैध धन अर्जित करने और व्यभिचार की प्रेरणा दे।

4 अर्थात ऐसी दशा में केवल अल्लाह याद आता है और उसी से सहायता माँगते हो किन्तु जब सागर से निकल जाते हो तो फिर उन्हीं देवी देवताओं की वंदना करने लगते हो।

68. क्या तुम निर्भय हो गये हो कि अल्लाह तुम्हें थल (धरती) ही में धंसा दे? अथवा तुम पर पथरीली आँधी भेज दे? फिर तुम अपना कोई रक्षक न पाओ।
69. या तुम निर्भय हो गये हो कि फिर उस (सागर) में तुम को दूसरी बार ले जाये, फिर तुम पर वायु का प्रचण्ड झोंका भेज दे, फिर तुम को डूबो दे, उस कुफ़ के बदले जो तुम ने किया है। फिर तुम अपने लिये उसे नहीं पाओगे जो हम पर इस का दोष^[1] धरे।
70. और हम ने बनी आदम (मानव) को प्रधानता दी, और उन्हें थल और जल में सवार^[2] किया, और उन्हें स्वच्छ चीज़ों से जीविका प्रदान की, और हम ने उन्हें बहुत सी उन चीज़ों पर प्रधानता दी जिन की हम ने उत्पत्ति की है।
71. जिस दिन हम सब लोगों को उन के अग्रणी के साथ बुलायेंगे तो जिन का कर्मलेख उन के सीधे हाथ में दिया जायेगा तो वही अपना कर्मलेख पढ़ेंगे, और उन पर धागे बराबर भी अत्याचार नहीं किया जयेगा।
72. और जो इस (संसार) में अन्धा^[3] रह गया तो वह आखिरत (परलोक) में भी अन्धा और अधिक कुपथ होगा।

أَقَامْتُمْ أَنْ يَخْصِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا يَجِدُ الْكُفْرَ وَكَيْدًا ۝

أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ يُعِيدَكُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَىٰ
فَلْيُرْسِلْ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِنَ الرِّيحِ فَيُغْرَقَكُمْ
بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُ الْكُفْرَ عَلَيْكُمْ إِلَّا بِمَا تَبِعْتُمْ ۝

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ
وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَىٰ كَثِيرٍ مِمَّنْ
خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ۝

يَوْمَ نَدْعُوا كُلَّ أُنَاثٍ بِأُمِّهِمْ ذَمًّا أَوْ كِتَابًا
يَمِينِهِ فَأُولَٰئِكَ يَقْرَءُونَ كِتَابَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ
فَتِيلًا ۝

وَمَنْ كَانَ فِي هَلْدٍ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْخِزْيَانِ أَعْمَىٰ
وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۝

- 1 और हम से बदले की माँग कर सके।
- 2 अर्थात् सवारी के साधन दिये।
- 3 अर्थात् सत्य से अन्धा।

73. और (हे नबी!) वह (काफ़िर) समीप था कि आप को उस वही से फेर दें, जो हम ने आप की ओर भेजी है, ताकि आप हमारे ऊपर अपनी ओर से कोई दूसरी बात घड़ लें, और उस समय वह आप को अवश्य अपना मित्र बना लेते।

وَإِنْ كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ عَنِ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَةَ وَإِذْ الْأَخْضَدُ ذِكْ خَلِيلًا ﴿٧٣﴾

74. और यदि हम आप को सुदृढ़ न रखते, तो आप उन की ओर कुछ न कुछ झुक जाते।

وَلَوْلَا أَنْ ثَبَّتْنَاكَ لَقَدْ كِدْتُمْ تَمُوتُونَ بِالْأَيْمَانِ سِينًا ﴿٧٤﴾

75. तब हम आप को जीवन की दुगुनी तथा मरण की दोहरी यातना चखाते। फिर आप अपने लिये हमारे ऊपर कोई सहायक न पाते।

إِذَا الْأَذْقَمْنَاكَ ضِعْفَ الْحَيَاةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيرًا ﴿٧٥﴾

76. और समीप है कि वह आप को इस धरती (मक्का) से विचला दें, ताकि आप को उस से निकाल दें, तब वह आप के पश्चात् कुछ ही दिन रह सकेंगे।

وَإِنْ كَادُوا لَيَسْتَفِزُّوكَ مِنَ الْأَرْضِ لِيُخْرِجُوكَ مِنْهَا وَإِذْ أَلَيْبَتُونَ خَلْفَكَ الْأَقْلِيَاءَ ﴿٧٦﴾

77. यह^[1] उस के लिये नियम रहा है जिसे हम ने आप से पहले अपने रसूलों में से भेजा है। और आप हमारे नियम में कोई परिवर्तन नहीं पायेंगे।

سِنَّةٍ مَن قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا ﴿٧٧﴾

78. आप नमाज़ की स्थापना करें सूर्यास्त से रात के अन्धेरे^[2] तक, तथा प्रातः (फ़ज़्र के समय) कुर्आन पढ़िये। वास्तव में प्रातः कुर्आन पढ़ना उपस्थिति का समय^[3] है।

اقْرَأِ الصَّلَاةَ إِذْ لَوْلَا الشَّمْسُ إِلَى عَسْفِ الْكَوْبِ وَقُرْآنَ الْعَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْعَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ﴿٧٨﴾

1 अर्थात् रसूल को निकालने पर यातना देने का हमारा नियम रहा है।

2 अर्थात् जुहर, अस्त्र और मग़रिब तथा इशा की नमाज़।

3 अर्थात् फ़ज़्र की नमाज़ के समय रात और दिन के फ़रिश्ते एकत्र तथा उपस्थित

79. तथा आप रात के कुछ समय जागिये फिर "तहज्जुद"^[1] पढ़िये। यह आप के लिये अधिक (नफ़ल) है। संभव है आप का पालनहार आप को (मक़ामे महमूद)^[2] प्रदान कर दे।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسُجِّدْ لَهُ وَأَقْرَأْ لَكَ تَعْسَىٰ أَنْ يَغْفِرَ لَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا ۝

80. और प्रार्थना करें कि मेरे पालनहार! मुझे प्रवेश^[3] दे सत्य के साथ, और निकाल सत्य के साथ। तथा मेरे लिये अपनी ओर से सहायक प्रभुत्व बना दे।

وَقُلْ رَبِّ ادْخُلْنِي مَدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِي مَخْرَجَ صِدْقٍ وَأَجْعَلْ لِي مِنْ أَمْرِكَ سُلْطٰنًا نَّصِيرًا ۝

81. तथा कहिये कि सत्य आ गया, और असत्य ध्वस्त-निरस्त हो गया, वास्तव में असत्य को ध्वस्त-निरस्त होना ही है।^[4]

وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ ذَهُوِقًا ۝

82. और हम कुर्आन में वह चीज़ उतार रहे हैं, जो आरोग्य तथा दया है ईमान वालों के लिये। और वह अत्याचारियों की क्षति को ही अधिक करता है।

وَنَزَّلْنَا مِنَ الْقُرْآنِ مَاهُونَ شِفَاءً وَرَحْمَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝
وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ۝

83. और जब हम मानव पर उपकार करते हैं, तो मुख फेर लेता है और

وَإِذْ أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَأٰبِجَٰنِيهِ ۝

रहते हैं। (सहीह बुख़ारी-359, सहीह मुस्लिम-632)

- 1 तहज्जुद का अर्थ है: रात के अन्तिम भाग में नमाज़ पढ़ना।
- 2 (मक़ामे महमूद) का अर्थ है प्रशंसा योग्य स्थान। और इस से अभिप्राय वह स्थान है जहाँ से आप प्रलय के दिन शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करेंगे।
- 3 अर्थात् मदीना में, मक्का से निकाल कर।
- 4 अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का (की विजय के दिन) उस में प्रवेश किया तो काँबा के आस पास तीन सौ साठ मूर्तियाँ थीं। और आप के हाथ में एक छड़ी थी, जिस से उन को मार रहे थे। और आप यही आयत पढ़ते जा रहे थे। (सहीह बुख़ारी, 4720, मुस्लिम, 1781)

दूर हो जाता^[1] है। तथा जब उसे दुःख पहुँचता है, तो निराश हो जाता है।

84. आप कह दें कि प्रत्येक अपनी आस्था के अनुसार कर्म कर रहा है, तो आप का पालनहार ही भली भाँति जान रहा है कि कौन अधिक सीधी डगर पर है।
85. (हे नबी!) लोग आप से रूह^[2] के विषय में पूछते हैं, आप कह दें रूह मेरे पालनहार के आदेश से है। और तुम्हें जो ज्ञान दिया गया वह बहुत थोड़ा है।
86. और यदि हम चाहें तो वह सब कुछ ले जायें जो आप की ओर हम ने वही किया है, फिर आप हम पर अपना कोई सहायक नहीं पायेंगे।
87. किन्तु आप के पालनहार की दया के कारण (यह आप को प्राप्त है)। वास्तव में उस का प्रदान आप पर बहुत बड़ा है।
88. आप कह दें: यदि सब मनुष्य तथा जिन जिन पर एकत्र हो जायें कि इस कुर्आन के समान ला देंगे, तो इस के समान नहीं ला सकेंगे, चाहे वह एक दूसरे के समर्थक ही क्यों न हो जायें।
89. और हम ने लोगों के लिये इस कुर्आन में प्रत्येक उदाहरण विविध शैली में वर्णित किया है, फिर भी

وَإِذْ أَمَرْنَا النَّارَ بِالنُّفُسِ الْيَتِيمِ

قُلْ كُلٌّ يَعْمَلُ عَلَى شَاكِلِهِ فَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَن
هُوَ أَهْدَى سَبِيلًا ۝

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي
وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا ۝

وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ ثُمَّ
لَآتِيكَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ وَإِذًّا لَا يَكْفُرُ ۝

الْأَرْحَمَةَ مِن رَّبِّكَ إِنْ فَضَّلْنَا كَانَ عَلَيْكَ
كَيْدًا ۝

قُلْ لَئِنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَىٰ أَنْ يَأْتُوا
بِمِثْلِ هَذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ
لِبَعْضٍ ظَهِيرًا ۝

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ
مَثَلٍ فَأَبَى أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ۝

1 अर्थात् अल्लाह की आज्ञा का पालन करने से।

2 «रूह» का अर्थ: आत्मा है जो हर प्राणी के जीवन का मूल है। किन्तु उस की वास्तविकता क्या है? यह कोई नहीं जानता। क्योंकि मनुष्य के पास जो ज्ञान है वह बहुत कम है।

अधिकतर लोगों ने कुफ़्र के सिवा अस्वीकार ही किया है।

90. और उन्होंने ने कहा: हम आप पर कदापि ईमान नहीं लायेंगे, यहाँ तक कि आप हमारे लिये धरती से एक चश्मा प्रवाहित कर दें।
91. अथवा आप के लिये खजूर अथवा अँगूर का कोई बाग़ हो, फिर उस के बीच आप नहरें प्रवाहित कर दें।
92. अथवा हम पर आकाश को जैसा आप का विचार है, खण्ड-खण्ड कर के गिरा दें, या अल्लाह और फ़रिश्तों को साक्षात हमारे सामने ला दें।
93. अथवा आप के लिये सोने का एक घर हो जाये, अथवा आकाश में चढ़ जायें, और हम आप के चढ़ने का भी कदापि विश्वास नहीं करेंगे, यहाँ तक की हम पर एक पुस्तक उतार लायें जिसे हम पढ़ें। आप कह दें कि मेरा पालनहार पवित्र है, मैं तो बस एक रसूल (संदेशवाहक) मनुष्य^[1] हूँ।
94. और नहीं रोका लोगों को कि वह ईमान लायें, जब उन के पास

وَقَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتَّى تَنْفِرَ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ
بِئُورُشَلِيمَ ۝

أَوْ تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ تَحْتِهَا نَاقُورٌ
الْأَنْهَارِ خَلَلَهَا تَنْفَجِرُ ۝

أَوْ تُسْقِطَ السَّمَاءَ كَمَا زَعَمَتَ عَلَيْنَا كَمَا أَتَانِي بِاللَّهِ
وَالْمَلَائِكَةِ قَبِيلًا ۝

أَوْ يَكُونَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ ذُرْبِ أَشْجَارِ السَّمَاءِ
وَلَنْ نُؤْمِنَ لِرُوحِكَ حَتَّى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتَابًا نَقْرُؤُهُ
قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيَ هَلْ كُنْتُ إِلَّا نَذِيرًا ۝

وَمَا مَنَعَهُ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمْ الْهُدَىٰ

- 1 अर्थात् मैं अपने पालनहार की वही का अनुसरण करता हूँ। और यह सब चीजें अल्लाह के वस में हैं। यदि वह चाहे तो एक क्षण में सब कुछ कर सकता है किन्तु मैं तो तुम्हारे जैसा एक मनुष्य हूँ मुझे केवल रसूल बना कर भेजा गया है ताकि तुम्हें अल्लाह का संदेश सुनाऊँ रहा चमत्कार तो वह अल्लाह के हाथ में है। जिसे चाहे दिखा सकता है। फिर क्या तुम चमत्कार देख कर ईमान लाओगे? यदि ऐसा होता तो तुम कभी के ईमान ला चुके होते क्योंकि कुर्आन से बड़ा क्या चमत्कार हो सकता है।

मार्गदर्शन^[1] आ गया, परन्तु इस ने कि उन्होंने ने कहा: क्या अल्लाह ने एक मनुष्य को रसूल बना कर भेजा है?

95. (हे नबी!) आप कह दें कि यदि धरती में फ़रिश्ते निश्चिन्त हो कर चलते-फिरते होते, तो हम अवश्य उन पर आकाश से कोई फ़रिश्ता रसूल बना कर उतारते।
96. आप कह दें कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह का साक्ष्य^[2] बहुत है। वास्तव में वह अपने दासों (बंदों) से सूचित, सब को देखने वाला है।
97. जिसे अल्लाह सुपथ दिखा दे, वही सुपथगामी है। और जिसे कुपथ कर दे तो आप कदापि नहीं पायेंगे उन के लिये उस के सिवा कोई सहायक। और हम उन्हें एकत्र करेंगे प्रलय के दिन उन के मुखों के बल अंधे तथा गूँगे और बहरे बना कर। और उन का स्थान नरक है, जब भी वह बुझने लगेगी तो हम उसे और भड़का देंगे।
98. यही उन का प्रतिकार (बदला) है, इस लिये कि उन्होंने ने हमारी आयतों के साथ कुफ़ किया, और कहा: क्या जब हम अस्थियाँ और चूर-चूर हो जायेंगे तो नई उत्पत्ति में पुनः जीवित किये जायेंगे?^[3]

الآن قالوا بعث الله بشرا رسولا ﴿١٧﴾

فَلَوْ كَانُوا فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةً يَبْشُرُونَ مُطْمَئِنِّينَ
لَقُلْنَا عَلَيْهِم مِّنَ السَّمَاءِ مَلَكًا رَسُولًا ﴿١٨﴾

قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا لِّبَنِي وَيَدَيْكُمْ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿١٩﴾

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۖ وَمَنْ يُضِلِّ فَلَنْ
تَجِدَ لَهُم أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِهِ يُؤْتُونَ الْقِيمَةَ
عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عَمِيًّا ۖ وَإِنَّمَا وَصَّيْنَا مَا لَهُمْ جَنَّتُمْ
كَلِمَاتٍ لِّدُنُوهِمْ سَعِيرًا ﴿٢٠﴾

ذَلِكَ جِزَاءُ مَا كَفَرُوا بِآيَاتِنَا وَقَالُوا لَئِنَّا
كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا ۗ إِنَّا الْمَبْعُوثُونَ خَلْقًا
جَدِيدًا ﴿٢١﴾

1 अर्थात् रसूल तथा पुस्तकें संमार्ग दर्शाने के लिये।

2 अर्थात् मेरे रसूल होने का साक्षी अल्लाह है।

3 अर्थात् ऐसा होना संभव नहीं है कि जब हमारी हड्डियाँ सड़ गल जायें तो हम

99. क्या वह विचार नहीं करते कि जिस अल्लाह ने आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति की है, वह समर्थ है इस बात पर कि उन के जैसी उत्पत्ति कर दे^[1] तथा उस ने उन के लिये एक निर्धारित अवधि बनायी है, जिस में कोई संदेह नहीं है। फिर भी अत्याचारियों ने कुफ़्र के सिवा अस्वीकार ही किया।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا
لَّا يَبِيحُ فِيهِ قَالُوا الظَّالِمُونَ إِلَّا كُفُورًا ۝

100. आप कह दें कि यदि तुम ही स्वामी होते अपने पालनहार की दया के कोषों के, तब तो तुम खर्च हो जाने के भय से (अपने ही पास) रोक रखते, और मनुष्य बड़ा ही कंजूस है।

قُلْ لَوْ أَنَّمُتَّ مُتَّبِعُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي إِذًا
لَأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنشَانِ وَكَانَ الْإِنشَانُ
كَنُورًا ۝

101. और हम ने मूसा को नौ खुली निशानियाँ दी^[2], अतः बनी इस्राईल से आप पूछ लें, जब वह (मूसा) उन के पास आया, तो फिरऔन ने उस से कहा: हे मूसा! मैं समझता हूँ कि तुझ पर जादू कर दिया गया है।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ فَمُنَّ بِرَبِّي
إِسْرَائِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَكْثَرُ
بِيُوسَىٰ مَشُورًا ۝

102. उस (मूसा) ने उत्तर दिया: तूझे विश्वास है कि इन को आकाशों तथा धरती के पालनहार ही ने सोच-विचार करने के लिये उतारा है, और हे फिरऔन! मैं तुम्हें निश्चय ध्वस्त समझता हूँ।

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَمَا أَنْزَلَ هَؤُلَاءِ الْآرَابُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ بِصَافِرٍ مُّخَوِّقٍ لِّيُفْرِعُونَ مَثُورًا ۝

फिर उठाये जायें।

- 1 अर्थात् जिस ने आकाश तथा धरती की उत्पत्ति की उस के लिये मनुष्य को दोबारा उठाना अधिक सरल है, किन्तु वह समझते नहीं हैं।
- 2 वह नौ निशानियाँ निम्नलिखित थीं: हाथ की चमक, लाठी, आकाल, तूफ़ान, टिड्डी, जूयें, मेंढक, खून, और सागर का दो भाग हो जाना।

103. अन्ततः उस ने निश्चय किया कि उन^[1] को धरती से^[2] उखाड़ फेंके, तो हम ने उसे और उस के सब साथियों को डुबो दिया।

104. और हम ने उस के पश्चात् बनी इस्राईल से कहा: तुम इस धरती में बस जाओ। और जब आखिरत के वचन का समय आयेगा, तो हम तुम्हें एकत्र कर लायेंगे।

105. और हम ने सत्य के साथ ही इस (कुर्आन) को उतारा है, तथा वह सत्य के साथ ही उतरा है। और हम ने आप को बस शुभ सूचना देने तथा सावधान करने वाला बना कर भेजा है।

106. और इस कुर्आन को हम ने थोड़ा थोड़ा कर के उतारा है, ताकि आप लोगों को इसे रुक रुक कर सुनायें, और हम ने इसे क्रमशः^[3] उतारा है।

107. आप कह दें कि तुम इस पर ईमान लाओ अथवा ईमान न लाओ, वास्तव में जिन को इस से पहले ज्ञान दिया^[4] गया है, जब उन्हें यह सुनाया जाता है, तो वह मुँह के बल सज्दे में गिर जाते हैं।

108. और कहते हैं: पवित्र है हमारा

1 अर्थात् बनी इस्राईल को।

2 अर्थात् मिस्र से।

3 अर्थात् तेईस वर्ष की अवधि में।

4 अर्थात् वह विद्वान जिन को कुर्आन से पहले की पुस्तकों का ज्ञान है।

فَأَرَادَ أَنْ يَنْتَقِمَ مِنْهُمْ مِنَ الْأَرْضِ فَأَغْرَقْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ
جَمِيعًا ۝

وَقُلْنَا مَنْ بَعْدُ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اسْكُنُوا الْأَرْضَ
وَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جَمَعْنَاهُمْ لِقَابِنَا ۝

وَالْحَقُّ أَنزَلْنَاهُ وَالْحَقَّ نَزَّلَ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا
وَنَذِيرًا ۝

وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَى حُكْمٍ وَنَزَّلْنَاهُ
تَنْزِيلًا ۝

قُلْ ائْتُوا بِي آيَاتِكُمْ إِن كُنْتُمْ مِنَ الَّذِينَ
أَدَّبْتُمْ عَلَيْهِمْ لِيُخْرَجُوا لِلآذَانِ
سُجَّدًا ۝

وَيَقُولُونَ سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ۝

पालनहार! निश्चय हमारे पालनहार
का वचन पूरा हो के रहा।

109. और वह मुँह के बल रोते हुये गिर
जाते हैं। और वह उन की विनय को
अधिक कर देता है।

110. हे नबी! आप कह दें कि (अल्लाह)
कह कर पुकारो, अथवा (रहमान)
कह कर पुकारो, जिस नाम से भी
पुकारो, उस के सभी नाम शुभ^[1]
हैं। और (हे नबी!) नमाज़ में स्वर
न तो ऊँचा करो, और न उसे
नीचा करो, और इन दोनों के बीच
की राह^[2] अपनाओ।

111. तथा कहो कि सब प्रशंसा उस
अल्लाह के लिये है जिस के कोई
संतान नहीं, और न राज्य में उस
का कोई साझी है। और न अपमान
से बचाने के लिये उस का कोई
समर्थक है। और आप उस की
महिमा का वर्णन करें।

وَيَجْرُونَ لِلَّذِينَ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ خُشُوعًا ۝

قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوْ ادْعُوا الرَّحْمَنَ أَيًّا مَا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ
الْحُسْنَىٰ وَلَا تَجْهَرُوا بِصَلَاتِكُمْ وَلَا تَخَافُتْ بِهَا وَابْتَغِ
بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ۝

وَقُلِ السُّبْحُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُن لَّهُ
شَرِيكٌ فِي الْمَلِكِ وَلَمْ يَكُن لَّهُ وَاوِيٌّ مِنَ الذُّرِّ
وَكَلِمَةٌ كَثِيرًا ۝

1 अरब में "अल्लाह" शब्द प्रचलित था, मगर "रहमान" प्रचलित न था। इस लिये,
वह इस नाम पर आपत्ति करते थे। यह आयत इसी का उत्तर है।

2 हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (आरंभिक युग में) मक्का में
छुप कर रहते थे। और जब अपने साथियों को ऊँचे स्वर में नमाज़ पढ़ाते थे तो
मुशरिक उसे सुन कर कुर्आन को तथा जिस ने कुर्आन उतारा है, और जो उसे
लाया है, सब को गालियाँ देते थे। अतः अल्लाह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व
सल्लम को यह आदेश दिया। (सहीह बुखारी, हदीस नं०: 4722)

सूरह कहफ़ - 18



सूरह कहफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 110 आयतें हैं।

- इस में कहफ़ (गुफा) वालों की कथा का वर्णन है, जिस से दूसरे जीवन का विश्वास दिलाया गया है।
- इस में नसारा (ईसाईयों) को चेतावनी दी गयी है जिन्होंने अल्लाह का पुत्र होने की बात घड़ ली। और शिर्क में उलझ गये, जिस से तौहीद पर आस्था का कोई अर्थ नहीं रह गया।
- इस में दो व्यक्तियों की दशा का वर्णन किया गया है जिन में एक संसारिक सुख में मग्न था और दूसरा परलोक पर विश्वास रखता था। फिर जो संसारिक सुख में मग्न था, उस का दुष्परिणाम दिखाया गया है और संसारिक जीवन का एक उदाहरण दे कर बताया गया है कि परलोक में सदाचार ही काम आयेगा।
- इस में मूसा (अलैहिस्सलाम) की यात्रा का वर्णन करते हुये अल्लाह के ज्ञान के कुछ भेद उजागर किये गये हैं, ताकि मनुष्य यह समझे की संसार में जो कुछ होता है उस में कुछ भेद अवश्य होता है जिसे वह नहीं जान सकता।
- इस में (जुल करनैन) की कथा का वर्णन कर के यह दिखाया गया है उस ने कैसे अल्लाह से डरते हुये और परलोक की जवाब देही (उत्तर दायित्व) का ध्यान रखते हुये अपने अधिकार का प्रयोग किया।
- अन्त में शिर्क और परलोक के इन्कार पर चेतावनी है।

हदीस में है कि जो सूरह कहफ़ के आरंभ की दस आयतें याद कर ले तो वह दज्जाल के उपद्रव से बचा लिया जायेगा। (सहीह मुस्लिम, 809)। दूसरी हदीस में है कि एक व्यक्ति रात में सूरह कहफ़ पढ़ रहा था और उस का घोड़ा उस के पास ही बंधा हुआ था कि एक बादल छा गया और समीप आता गया और घोड़ा बिदकने लगा। जब सवेरा हुआ तो उस ने यह बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बताया। आप ने कहा: यह शान्ति थी जो कुरआन के कारण उतरी थी। (बुखारी: 5011, मुस्लिम: 795)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सब प्रशंसा अल्लाह के लिये हैं जिस ने अपने भक्त पर यह पुस्तक उतारी और उस में कोई टेढ़ी बात नहीं रखी।
2. अति सीधी (पुस्तक), ताकि वह अपने पास की कड़ी यातना से सावधान कर दे, और ईमान वालों को जो सदाचार करते हों, शुभ सूचना सुना दे कि उन्हीं के लिये अच्छा बदला है।
3. जिस में वे नित्य सदावासी होंगे।
4. और उन को सावधान करे जिन्होंने ने कहा कि अल्लाह ने अपने लिये कोई संतान बना ली है।
5. उन्हें इस का कुछ ज्ञान है, और न उन के पूर्वजों को। बहुत बड़ी बात है जो उन के मुखों से निकल रही है, वह सरासर झूठ ही बोल रहे हैं।
6. तो संभवतः आप इन के पीछे अपना प्राण खो देंगे संताप के कारण, यदि वह इस हदीस (कुरआन) पर ईमान न लायें।
7. वास्तव में जो कुछ धरती के ऊपर है, उसे हम ने उस के लिये शोभा बनाया है, ताकि उन की परीक्षा लें कि उन में कौन कर्म में सब से अच्छा है?

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ
وَلَمْ يُجْعَلْ لَهُ عِوَجًا ۝

قِيمًا لِيُنذِرَ رِبَاسًا شَدِيدًا آمِنًا لَدُنْهُ وَيُنَبِّئُ
الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ
أَجْرًا حَسَنًا ۝

مَا كُنْتُمْ فِيهِ أَبَدًا ۝

وَيُنذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۝

مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَلَا لِآبَائِهِمْ كَبُرَتْ كَلِمَةً
تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ إِنْ يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ۝

فَلَعَلَّكَ بَاطِعٌ لِمَا يُغْوِيونَ
بِهَذَا الْحَدِيثِ أَسَفًا ۝

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَهَا لِنَبْهُوهُمْ
إِنَّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۝

8. और निश्चय हम कर देने^[1] वाले हैं, जो उस (धरती) के ऊपर है उसे (बंजर) धूल।
9. (हे नबी!) क्या आप ने समझा है कि गुफा तथा शिला लेख वाले^[2], हमारे अद्भुत लक्षणों (निशानियों) में से थे?^[3]
10. जब नवयुवकों ने गुफा की ओर शरण ली^[4], और प्रार्थना की: हे हमारे पालनहार! हमें अपनी विशेष दया प्रदान कर, और हमारे लिये प्रबंध कर दे हमारे विषय के सुधार का।

وَأَنَّا لَجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ۝

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنَّا أَصْحَابُ الْكَهْفِ وَالرَّقِيِّمِ
كَأَنَّا مِنَ السِّتَةِ الْمُجِيبِينَ ۝

إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا آتِنَا
مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا
رَشَدًا ۝

1 अर्थात् प्रलय के दिन।

2 कुछ भाष्यकारों ने लिखा है कि (रकीम) शब्द जिस का अर्थ: शिला लेख किया गया है, एक बस्ती का नाम है।

3 अर्थात् आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति हमारी शक्ति का इस से भी बड़ा लक्षण है।

4 अर्थात् नवयुवकों ने अपने ईमान की रक्षा के लिये गुफा में शरण ली। जिस गुफा के ऊपर आगे चलकर उन के नामों का स्मारक शिला लेख लगा दिया गया था।

उल्लेखों से यह विद्वित होता है कि नवयुवक ईसा अलैहिससलाम के अनुयायियों में से थे। और रोम के मुशरिक राजा की प्रजा थे। जो एकेश्वर वादियों का शत्रु था। और उन्हें मूर्ति पूजा के लिये बाध्य करता था। इस लिये वे अपने ईमान की रक्षा के लिये जार्डन की गुफा में चले गये जो नये शोध के अनुसार जार्डन की राजधानी से 8 की० मी० दूर (रजीब) में अवशेषज्ञों को मिली है। जिस गुफा के ऊपर सात स्तंभों की मस्जिद के खंडर, और गुफा के भीतर आठ समाधियाँ तथा उत्तरी दीवार पर पुरानी युनानी लिपी में एक शिला लेख मिला है और उस पर किसी जीव का चित्र भी है। जो कुत्ते का चित्र बताया जाता है और यह (रजीब) ही (रकीम) का बदला हुआ रूप है। (देखिये: भाष्य दावतुल कूर्आन-2|983)

11. तो हमने उन्हें गुफा में सुला दिया कई वर्षों तक।
12. फिर हम ने उन्हें जगा दिया ताकि हम यह जान लें कि दो समुदायों में से किस ने उन के ठहरे रहने की अवधि को अधिक याद रखा है?
13. हम आप को उन की सत्य कथा सुना रहे हैं। वास्तव में वे कुछ नवयुवक थे, जो अपने पालनहार पर ईमान लाये, और हम ने उन्हें मार्गदर्शन में अधिक कर दिया।
14. और हम ने उन के दिलों को सुदृढ़ कर दिया जब वे खड़े हुये, फिर कहा: हमारा पालनहार वही है जो आकाशों तथा धरती का पालनहार है। हम उस के सिवा कदापि किसी पूज्य को नहीं पुकारेंगे। (यदि हम ने ऐसा किया) तो (सत्य से) दूर की बात होगी।
15. यह हमारी जाति है, जिस ने अल्लाह के सिवा बहुत से पूज्य बना लिये। क्यों वे उन पर कोई खुला प्रमाण प्रस्तुत नहीं करते? उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्या बात बनाये?
16. और जब तुम उन से विलग हो गये तथा अल्लाह के अतिरिक्त उन के पूज्यों से, तो अब अमुक गुफा की ओर शरण लो, अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी दया फैला देगा, तथा तुम्हारे लिये तुम्हारे विषय में जीवन के

فَضَرَبْنَا عَلَىٰ آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ
عَدَدًا ۝

ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْحِزْبَيْنِ أَحْصَىٰ لِمَا لَمْ يَتْلُوا
أَمَدًا ۝

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم بِالْحَقِّ إِنَّهُمْ فِتْنَةٌ
لِلْمُؤْمِنِينَ وَرَدَّاهُمْ هُدًى ۝

وَرَدَّ بَطْنًا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَن نَدْعُو مِن دُونِهِ الْهَالِكُونَ
فَلَن نَّادِيَ سَطَطًا ۝

هَؤُلَاءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ لَوْلَا يُاتُونَ
عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ مُّبِينٌ فَمَن أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ
عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝

وَإِذْ اعْتَرَفْتُمُوهُمْ وَمَا يُعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَاذْكُرُوا
الْكَهْفَ إِسْرًا كَمَا رَبَّيْتُم مِّن رَّحْمَتِهِ وَهَيِّئْ لَكُم
مِّنْ أَمْرِكُمْ مَرَجًا ۝

साधनों का प्रबंध करेगा।

17. और तुम सूर्य को देखोगे, कि जब निकलता है, तो उन की गुफा से दायें झुक जाता है, और जब डूबता है, तो उन से बायें कतरा जाता है। और वह उस (गुफा) के एक विस्तृत स्थान में है। यह अल्लाह की निशानियों में से है, और जिसे अल्लाह मार्ग दिखा दे वही सुपथ पाने वाला है। और जिसे कुपथ कर दे तो तुम कदापि उस के लिये कोई सहायक मार्ग दर्शक नहीं पाओगे।
18. और तुम^[1] उन्हें समझोगे कि जाग रहे हैं जब कि वह सोये हुये हैं और हम उन्हें दायें तथा बायें पार्श्व पर फिराते रहते हैं, और उन का कुत्ता गुफा के द्वार पर अपनी दोनों बाँहें फैलाये पड़ा है। यदि तुम झाँक कर देख लेते तो पीठ फेर कर भाग जाते, और उन से भय पूर्ण हो जाते।
19. और इसी प्रकार हम ने उन्हें जगा दिया ताकि वे आपस में प्रश्न करें। तो एक ने उन में से कहा: तुम कितने (समय) रहे हो? सब ने कहा: हम एक दिन रहे हैं अथवा एक दिन के कुछ (समय)। (फिर) सब ने कहा: अल्लाह अधिक जानता है कि तुम कितने (समय) रहे हो, तुम अपने में से किसी को अपना यह सिक्का दे कर नगर में भेजो, फिर देखे कि किस के पास अधिक स्वच्छ (पवित्र)

وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ تَوَارِعًا مِّنْهُمْ
ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَقَرُّصًا مِّنْهُمْ
ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِّنْهُ ذَلِكَ مِنْ
آيَاتِ اللَّهِ لَعَلَّكَ تَهْتَدُ اللَّهُ هُوَ الْمُهْتَدِ
وَمَنْ يَضِلَّ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ وَلِيًّا مُّرْسِدًا ۝

وَتَحْسَبُهُمْ آيَاتًا وَأَهُمْ رُؤُودٌ ۗ وَنَعَلِبُهُمْ
ذَاتَ الْيَمِينِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۗ وَكَلْبُهُمْ
بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ
لَوَكَّيْتُمْ مِنْهُمْ فِرَارًا وَكَلْبُكُم مِّنْهُمْ
رُعْبًا ۝

وَكَذَلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا
بِآيَاتِهِمْ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَكُمْ
يَوْمًا أَوْ بَعْضُ يَوْمٍ قَالُوا لَا نَعْلَمُ
بِمَا لَيْسَ شَأْنُكُمْ قَالُوا بَعْثُوا
أَحَدَكُمْ بِرُؤُوسِكُمْ هَذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ
فَلْيَنْظُرْ أَيُّهَا أَزْكَى طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ
بِرُؤُوسِكُمْ وَلَا تَعْصُونَكُمْ
أَحَدًا ۝

1 इस में किसी को भी संबोधित माना जा सकता है, जो उन्हें उस दशा में देख सकें।

भोजन है, और उस में से कुछ जीविका (भोजन) लाये, और चाहिये कि सावधानी बरते। ऐसा न हो कि तुम्हारा किसी को अनुभव हो जाये।

20. क्यों कि यदि वे तुम्हें जान जायेंगे तो तुम्हें पथराव कर के मार डालेंगे, या तुम्हें अपने धर्म में लौटा लेंगे, और तब तुम कदापि सफल नहीं हो सकोगे।

21. इसी प्रकार हम ने उन से अवगत करा दिया, ताकि उन (नागरिकों) को ज्ञान हो जाये कि अल्लाह का वचन सत्य है, और यह कि प्रलय (होने) में कोई संदेह^[1] नहीं। जब वे^[2] आपस में विवाद करने लगे, तो कुछ ने कहा: उन पर कोई निर्माण करा दो, अल्लाह ही उन की दशा को भली भाँति जानता है। परन्तु उन्होंने ने कहा जो अपना प्रभुत्व रखते थे, हम अवश्य उन (की गुफा के स्थान) पर एक मस्जिद बनायेंगे।

22. कुछ^[3] कहेंगे कि वह तीन हैं, और चौथा उन का कुत्ता है। और कुछ कहेंगे कि पाँच हैं, और छठा उन का कुत्ता है। यह अन्धरे में तीर चलाते

إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ فِي مَكَاتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوا إِذًا أَبَدًا ۝

وَكَذَلِكَ أَعِزَّنَا عَلَيْهِمْ لِجَعَلُوا آيَاتِنَا وَعَدَا اللَّهِ حَقًّا ۖ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَأَكْرَبُيبُ فِيهَا ۖ إِذِ تَنَادَعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرُهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِم بُنْيَانًا رَأَيْتُمْ أُعْلِمُوا بِهِمْ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِم مَّسْجِدًا ۝

سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ رَأَيْتُمْ كَلْبَهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَاتَّامَهُمْ كَلْبُهُمْ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ

1 जिस के आने पर सब को उन के कर्मों का फल दिया जायेगा।

2 अर्थात् जब पुराने सिक्के और भाषा के कारण उन का भेद खुल गया और वहाँ के लोगों को उन की कथा का ज्ञान हो गया तो फिर वे अपनी गुफा ही में मर गये। और उन के विषय में यह विवाद उत्पन्न हो गया।

यहाँ यह ज्ञातव्य है कि इस्लाम में समाधियों पर मस्जिद बनाना, और उस में नमाज़ पढ़ना तथा उस पर कोई निर्माण करना अवैध है। जिस का पूरा विवरण हदीसों में मिलेगा। (सहीह बुखारी, 435, मुस्लिम, 531, 32)

3 इन से मुराद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग के अहले किताब हैं।

हैं। और कहेंगे कि सात है, और आठवाँ उन का कुत्ता है। (हे नबी!) आप कह दें, कि मेरा पालनहार ही उन की संख्या भली भाँति जानता है, जिसे कुछ लोगों के सिवा कोई नहीं जानता।^[1] अतः आप उन के संबन्ध में कोई विवाद न करें सिवाये सरसरी बात के, और न उन के विषय में किसी से कुछ पूछें।^[2]

23. और कदापि किसी विषय में न कहें कि मैं इसे कल करने वाला हूँ।
24. परन्तु यह कि अल्लाह^[3] चाहे, तथा अपने पालनहार को याद करें, जब भूल जायें। और कहें: संभव है मेरा पालनहार मुझे इस से अधिक समीप सुधार का मार्ग दर्शा दे।
25. और वे गुफा में तीन सौ वर्ष रहे। और नौ वर्ष अधिक^[4] और।
26. आप कह दें कि अल्लाह उन के रहने की अवधि से सर्वाधिक अवगत है। आकाशों तथा धरती का परोक्ष वही जानता है। क्या ही खूब है वह देखने

يَعَدَّتْهُمْ مَا يَعْلَمُهُمُ إِلَّا قَلِيلٌ ۗ فَلَا تَسْأَلْ فِيهِمُ
الْأَمْرَاءَ ظَاهِرًا ۗ وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِمُ مِنْهُمْ
أَحَدًا ۗ

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَايٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَٰلِكَ عَدَا ۗ

إِنَّا أَنشَأَهُ اللَّهُ ۗ وَادْكُرْ رَبَّكَ إِذَا نَسِيتَ
وَقُلْ عَلَىٰ أَن يَهْدِيَنِّي رَبِّي لِأَقْرَبٍ مِنْ
هَٰذَا رَشْدًا ۗ

وَلَيْسُوا فِي كُفُوهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِينَ
وَأَزَادُوا تِسْعًا ۗ

قُلْ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَيْسُوا لَهُ غِيبُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ أَبْصِرْ بِهِ وَأَسْمِعُ مَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ
مِنَ الْوَعْدِ ۗ وَلَا يُشْرِكُ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ۗ

- 1 भावार्थ यह है कि उन की संख्या का सहीह ज्ञान तो अल्लाह ही को है किन्तु वास्तव में ध्यान देने की बात यह है कि इस से हमें क्या शिक्षा मिल रही है।
- 2 क्योंकि आप को उन के बारे में अल्लाह के बताने के कारण उन लोगों से अधिक ज्ञान है। और उन के पास कोई ज्ञान नहीं। इस लिये किसी से पूछने की आवश्यकता भी नहीं।
- 3 अर्थात् भविष्य में कुछ करने का निश्चय करें, तो "इन् शा अल्लाह" कहें। अर्थात्: यदि अल्लाह ने चाहा तो।
- 4 अर्थात् सूर्य के वर्ष से तीन सौ वर्ष, और चाँद के वर्ष से नौ वर्ष अधिक गुफा में सोये रहे।

वाला और सुनने वाला! नहीं है उन का उस के सिवा कोई सहायक, और न वह अपने शासन में किसी को साझी बनाता है।

27. और आप उसे सुना दें, जो आप की ओर वही (प्रकाशना) की गयी है आप के पालनहार की पुस्तक में से, उस की बातों को कोई बदलने वाला नहीं है, और आप कदापि नहीं पायेंगे उस के सिवा कोई शरण स्थान।

28. और आप उन के साथ रहें जो अपने पालनहार की प्रातः- संध्या बंदगी करते हैं। वे उस की प्रसन्नता चाहते हैं और आप की आँखें संसारिक जीवन की शोभा के लिये^[1] उन से न फिरने पायें और उस की बात न मानें जिस के दिल को हम ने अपनी याद से निश्चेत कर दिया, और उस ने मनमानी की, और जिस का काम ही उल्लंघन (अवैज्ञा करना) है।

29. आप कह दें कि यह सत्य है, तुम्हारे पालनहार की ओर से तो जो चाहे ईमान लाये, और जो चाहे कुफ़ करे, निश्चय हम ने अत्याचारियों के लिये ऐसी अग्नि तय्यार कर रखी है जिस की

وَأَنْتُمْ مَا أَوْحَى إِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ لِأَهْبِئِلَ
لِكَلِمَاتِهِ وَلَنْ يُخِجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحِدًا ۝

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ
بِالْغَدَاوَةِ وَالْعِشِيِّ يَرْجُونَ وَجْهَهُ وَلَا تَعْدُ
عَيْنُكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَلَا تَنْظُرْ مَنْ اغْتَلَبَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبِعْ
هُوْلَهُ وَكَانَ امْرَأً قَوِيًّا ۝

وَقِيلَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمَرْ
وَمَنْ شَاءَ فَلْيُكْفُرْ إِنَّا أَعْتَدْنَا
لِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادُهَا وَإِنَّ
يَسْتَجِيبُوا يَعْثَابًا وَإِنَّا إِنَّمَا كَالْمُهْلِ يَتَّبِعُونَ

1 भाष्यकारों ने लिखा है कि यह आयत उस समय उतरी जब मुशरिक कुरैश के कुछ प्रमुखों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह माँग की, कि आप अपने निर्धन अनुयायियों के साथ न रहें। तो हम आप के पास आ कर आप की बातें सुनेंगे। इस लिये अल्लाह ने आप को आदेश दिया कि इन का आदर किया जाये, ऐसा नहीं होना चाहिये कि इन की उपेक्षा कर के उन धनवानों की बात मानी जाये जो अल्लाह की याद से निश्चेत हैं।

प्राचीर^[1] ने उन को घेर लिया है, और यदि वह (जल के लिये) गुहार करेंगे तो उन्हें तेल की तलछट के समान जल दिया जायेगा जो मुखों को भून देगा, वह क्या ही बुरा पैय है! और वह क्या ही बुरा विश्राम स्थान है!

الْوُجُودَ بِمَسِّ الشَّرَابِ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ۝

30. निश्चय जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये, तो हम उन का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करेंगे जो सदाचारी हैं।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ۝

31. यही हैं जिन के लिये स्थायी स्वर्ग है, जिन में नहरें प्रवाहित हैं, उस में उन्हें सोने के कंगन पहनाये जायेंगे^[2] तथा महीन और गाढ़े रेशम के हरे वस्त्र पहनेंगे, उस में सिंहासनों के ऊपर आसीन होंगे। यह क्या ही अच्छा प्रतिफल और क्या ही अच्छा विश्राम स्थान है!

أُولَئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ يَبْعَثُ الْجِبَابُ وَحَسَنَتْ مُرْتَفَقًا ۝

32. और (हे नबी!) आप उन्हें एक उदाहरण दो व्यक्तियों का दें, हम ने जिन में से एक को दो बाग़ दिये अँगूरों के, और घेर दिया दोनों को खजूरों से, और दोनों के बीच खेती बना दी।

وَأَصْرِبُ لَهُمْ مَثَلًا يُحْلِلْنَ جَعَلْنَا الْإِخْدِيمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زُرْعًا ۝

33. दोनों बाग़ों ने अपने पूरे फल दिये, और उस में कुछ कमी नहीं की, और हम ने जारी कर दी दोनों के बीच एक नहर।

كَلَّمَا الْجَنَّتَيْنِ اتَتَا الْكُهْمَا وَلَمْ تُظْلَمْ مِنْهُ شَيْئًا وَفَجَّرْنَا خِلْفَهُمَا نَهْرًا ۝

1 कूर्आन में «सुरादिक़» शब्द प्रयुक्त हुआ है। जिस का अर्थ प्राचीर, अर्थात् वह दीवार है जो नरक के चारों ओर बनाई गई है।

2 यह स्वर्ग वासियों का स्वर्ण कंगन है। किन्तु संसार में इस्लाम की शिक्षानुसार पुरुषों के लिये सोने का कंगन पहनना हराम है।

34. और उसे लाभ प्राप्त हुआ, तो एक दिन उस ने अपने साथी से कहा: और वह उस से बात कर रहा था, मैं तुझ से अधिक धनी हूँ, तथा स्वजनों में भी अधिक^[1] हूँ।

35. और उस ने अपने बाग़ में प्रवेश किया अपने ऊपर अत्याचार करते हुये, उस ने कहा: मैं नहीं समझता कि इस का विनाश हो जायेगा कभी।

36. और न यह समझता हूँ कि प्रलय होगी। और यदि मुझे अपने पालनहार की ओर पुनः ले जाया गया, तो मैं अवश्य ही इस से उत्तम स्थान पाऊँगा।

37. उस से उस के साथी ने कहा, और वह उस से बात कर रहा था: क्या तू ने उस के साथ कुफ़्र कर दिया, जिस ने तुझे मिट्टी से उत्पन्न किया, फिर वीर्य से, फिर तुझे बना दिया एक पूरा पुरुष?

38. रहा मैं तो वही अल्लाह मेरा पालनहार हूँ, और मैं साझी नहीं बनाऊँगा अपने पालनहार का किसी को।

39. और क्यों नहीं जब तुम ने अपने बाग़ में प्रवेश किया, तो कहा कि "जो अल्लाह चाहे, अल्लाह की शक्ति के बिना कुछ नहीं हो सकता।" यदि तू मुझे देखता है कि मैं तुझ से कम हूँ

وَوَكَانَ لَهُ شَرِكٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَأَعَزُّ نَفَرًا ۝

وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِنَفْسِهِ قَالَ مَا أَظُنُّ أَنْ تَبِيدَ هَذِهِ أَبَدًا ۝

وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِنْ رُودْتُ إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا مِنْهَا مُنْقَلَبًا ۝

قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّاكَ رَجُلًا ۝

لَكِنَّا هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِرَبِّي أَحَدًا ۝

وَلَوْ كَرِهْتَ ادْخَالَ جَنَّتِكَ قُلْتَ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ إِنَّ تَرَبَّنَا أَكْفَلُ مِنْكَ مَالًا وَوَلَدًا ۝

1 अर्थात यदि किसी का धन संतान तथा बाग़ इत्यादि अच्छा लगे तो ((माशा अल्लाह ला कूव्वता इल्ला बिल्ला)) कहना चाहिये। ऐसा कहने से नज़र नहीं लगती। यह इस्लाम धर्म की शिक्षा है, जिस से आपस में द्वेष नहीं होता।

धन तथा संतान में,^[1]

40. तो आशा है कि मेरा पालनहार मुझे प्रदान कर दे तेरे बाग़ से अच्छा, और इस बाग़ पर आकाश से कोई आपदा भेज दे, और वह चिकनी भूमि बन जाये।
41. अथवा उस का जल भीतर उतर जाये, फिर तू उसे पा न सके।
42. (अन्ततः) उस के फलों को घेर^[2] लिया गया, फिर वह अपने दोनों हाथ मलता रह गया उस पर जो उस में खर्च किया था। और वह अपने छप्परों सहित गिरा हुआ था, और कहने लगा: क्या ही अच्छा होता कि मैं किसी को अपने पालनहार का साझी न बनाता।
43. और नहीं रह गया उस के लिये कोई जत्था जो उस की सहायता करता और न स्वयं अपनी सहायता कर सका।
44. यही सिद्ध हो गया कि सब अधिकार सत्य अल्लाह को है, वही अच्छा है प्रतिफल प्रदान करने में, तथा अच्छा है परिणाम लाने में।
45. और (हे नबी!) आप उन्हें संसारिक जीवन का उदाहरण दें उस जल से जिसे हम ने आकाश से बरसाया। फिर उस के कारण मिल गई धरती की उपज, फिर चूर हो गई जिसे वायु

فَعَلَىٰ سَرَّيْنِ أَنْ يُؤْتِيَنِي خَيْرًا مِّنْ حَنَّتِكَ
وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حَبَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَتُصْبِحُ صَعِيدًا
زَلَقًا ۝

أَوْ يُصِيبُ مَا أَنتَ غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيعَ لَهُ طَلَبًا ۝

وَأُحِيطَ بِثَمَرِهِ فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلَىٰ مَا
أَنفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَيَقُولُ
يَلَيْتَنِي لَمْ أَشْرِكْ بِرَبِّي أَحَدًا ۝

وَلَمْ تَكُن لَّهُ فِئَةٌ يَنْصُرُونَهُ مِن دُونِ اللَّهِ
وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ۝

هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقِّ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا
وَخَيْرٌ عُقَابًا ۝

وَأَضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا الْحَيَوَاتِ الدُّنْيَا كَمَا
أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ
الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيحُ ۝
وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝

1 अर्थात् मेरे सेवक और सहायक भी तुझ से अधिक हैं।

2 अर्थात् आपदा ने घेर लिया।

उड़ाये फिरती^[1] हैं और अल्लाह प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्य रखने वाला है।

46. धन और पुत्र संसारिक जीवन की शोभा हैं। और शेष रह जाने वाले सत्कर्म ही अच्छे हैं आप के पालनहार के यहाँ प्रतिफल में, तथा अच्छे हैं आशा रखने के लिये।
47. तथा जिस दिन हम पर्वतों को चलायेंगे, तथा तुम धरती को खुला चटेल^[2] देखोगे। और हम उन्हें एकत्र कर देंगे, फिर उन में से किसी को नहीं छोड़ेंगे।
48. और सभी आप के पालनहार के समक्ष पंक्तियों में प्रस्तुत किये जायेंगे, तुम हमारे पास आ गये जैसे हम ने तुम्हारी उत्पत्ति प्रथम बार की थी, बल्कि तुम ने समझा था कि हम तुम्हारे लिये कोई वचन का समय निर्धारित ही नहीं करेंगे।
49. और कर्म लेख^[3] (सामने) रख दिये जायेंगे, तो आप अपराधियों को देखेंगे कि उस से डर रहे हैं जो कुछ उस में (अंकित) है, तथा कहेंगे कि हाय हमारा विनाश! यह कैसी पुस्तक है जिस ने किसी छोटे और बड़े कर्म को नहीं छोड़ा है, परन्तु उसे अंकित कर रखा है। और जो कर्म उन्हीं

أَمْأَلِ وَالْبَنُونَ رَبَّنَا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا
وَالْبَقِيَّةَ الصَّالِحَاتِ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا
وَخَيْرٌ أَمْأَلًا ۝

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً
وَخَشَرَتُهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۝

وَعَرَضُوا عَلَيَّ رَبِّكَ صَعًا لَقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا
خَلَقْتُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّنْ نَجْعَلَ
لَكُمْ مَوْعِدًا ۝

وَوَضِعَ الْكُتُبَ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ
مُسْتَفْضِينَ مَتَافِيهِ وَيَقُولُونَ لِيُوَلِّتُنَا مَالِ
هَذَا الْكِتَابِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً
إِلَّا أَحْصَاهَا وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا
وَلَا يَظُنُّ رَبُّكَ أَحَدًا ۝

1 अर्थात् संसारिक जीवन और उस का सुख-सुविधा सब साम्यिक है।

2 अर्थात् न उस में कोई चिन्ह होगा तथा न छुपने का स्थान।

3 अर्थात् प्रत्येक का कर्म पत्र जो उस ने संसारिक जीवन में किया है।

ने किये हैं उन्हें वह सामने पायेंगे, और आप का पालनहार किसी पर अत्याचार नहीं करेगा।

50. तथा (याद करो) जब आप के पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा: आदम को सज्दा करो, तो सब ने सज्दा किया इब्लीस के सिवा। वह जिन्नों में से था, अतः उस ने उल्लंघन किया अपने पालनहार की आज्ञा का, तो क्या तुम उस को और उस कि संतति को सहायक मित्र बनाते हो मुझे छोड़ कर जब कि वह तुम्हारे शत्रु है? अत्याचारियों के लिये बुरा बदला है।

51. मैं ने उन को उपस्थित नहीं किया आकाशो तथा धरती की उत्पत्ति के समय और न स्वयं उन की उत्पत्ति के समय, और न मैं कृप्यों को सहायक^[1] बनाने वाला हूँ।

52. जिस दिन वह (अल्लाह) कहेगा कि मेरे साज़ियों को पुकारो जिन्हें समझ रहे थे। वह उन्हें पुकारेंगे, तो वह उन का कोई उत्तर नहीं देंगे, और हम बना देंगे उन के बीच एक विनाशकारी खाई।

53. और अपराधी नरक को देखेंगे तो उन्हें विश्वास हो जायेगा कि वे उस में गिरने वाले हैं। और उस से फिरने का कोई स्थान नहीं पायेंगे।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ أَمْرِ رَبِّهِ أَفَتَتَّبِعُونَهُ وَذُرِّيَّتَهُ أُولِيَاءَ مِنْ دُونِي وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ بِئْسَ لِلظَّالِمِينَ بَدَلًا ۝

مَا أَشْهَدْتُهُمْ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَا خَلْقَ أَنْفُسِهِمْ وَمَا كُنْتُ مَخْتَدًا الْمُضِلِّينَ عَصْدًا ۝

وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَائِيَ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَوْبِقًا ۝

وَرَأَى الْمُجْرِمُونَ النَّارَ فَظَنُّوا أَنَّهُمْ مُوَافِقُوهَا وَلَمْ يَحِيدُوا عَنْهَا مَصْرَفًا ۝

1 भावार्थ यह है कि विश्व की उत्पत्ति के समय इन का अस्तित्व न था। यह तो बाद में उत्पन्न किये गये हैं। उन की उत्पत्ति में भी उन से कोई सहायता नहीं ली गई, तो फिर यह अल्लाह के बराबर कैसे हो गये?

54. और हम ने इस कुर्आन में प्रत्येक उदाहरण से लोगों को समझाया है। और मनुष्य बड़ा ही झगड़ालू है।
55. और नहीं रोका लोगों को कि ईमान लायें जब उन के पास मार्ग दर्शन आ गया और अपने पालनहार से क्षमा याचना करें, किन्तु इसी ने कि पिछली जातियों की दशा उन की भी हो जाये, अथवा उन के समक्ष यातना आ जाये।
56. तथा हम रसूलों को नहीं भेजते परन्तु शुभ सूचना देने वाले और सावधान करने वाले बना कर। और जो काफ़िर है असत्य (अनृत) के सहारे विवाद करते हैं, ताकि उस के द्वारा वह सत्य को नीचा^[1] दिखायें। और उन्होंने ने बना लिया हमारी आयतों को तथा जिस बात की उन्हें चेतावनी दी गई, परिहास।
57. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन है जिसे उस के पालनहार की आयतें सुनाई जायें फिर (भी) उन से मुँह फेर ले और अपने पहले किये हुये कर्तूत भूल जाये? वास्तव में हम ने उन के दिलों पर ऐसे आवरण (पर्दे) बना दिये हैं कि उसे^[2] समझ न पायें और उन के कानों में बोझ। और यदि आप उन्हें सीधी राह की ओर बुलायें तब (भी) कभी सीधी राह नहीं पा सकेंगे।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَفَسْقًا جَدًّا ۝

وَمَا مَنَعَهُ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ سُنَّةٌ مِنَ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ فُبُلًّا ۝

وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَّا الْمُشِيرِينَ
وَمُنذِرِينَ وَيُحَادِّثُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ
لِيُحْضِرُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا الْيَتِيمَ
وَمَا أَنْذَرُوا هُزُوعًا ۝

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَلْيَسَىٰ مَا كَلَّمَتْ يَدَاهُ إِنَّا جَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَنْ يَهْتَدُوا إِلَّا ذُكْرًا ۝

1 अर्थात् सत्य को दबा दें।

2 अर्थात् कुर्आन को।

58. और आप का पालनहार अति क्षमी दयावान् है। यदि वह उन को उन के कर्तूतों पर पकड़ता तो तुरन्त यातना दे देता। बल्कि उन के लिये एक निश्चित समय का वचन है। और वे उस के सिवा कोई बचाव का स्थान नहीं पायेंगे।

وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ لَوْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبُوا الْعَجَلُ لَهُمُ الْعَذَابُ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدًا لَّنْ يُجِدُوا مِنْ دُونِهِ مَوْجِدًا ۝

59. तथा यह बस्तियाँ हैं। हम ने उन (के निवासियों) का विनाश कर दिया जब उन्होंने अत्याचार किया। और हम ने उन के विनाश के लिये एक निर्धारित समय बना दिया था।

وَتِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَوْعِدًا ۝

60. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपने सेवक से कहा: मैं बराबर चलता रहूँगा, यहाँ तक कि दोनों सागरों के संगम पर पहुँच जाऊँ, अथवा वर्षा चलता^[1] रहूँ।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتَاهُ لَا أَبْرَحُ حَتَّىٰ أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْيَحْيَيْنِ أَوْ أَغْمَضَىٰ حُقُبًا ۝

61. तो जब दोनों उन के संगम पर पहुँचे तो दोनों अपनी मछली भूल गये। और उस ने सागर में अपनी राह बना ली सुरंग के समान।

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنَهُمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ۝

62. फिर जब दोनों आगे चले गये तो उस (मूसा) ने अपने सेवक से कहा

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتَاهُ إِنِّي آخِذٌ بِمَا لَقَدَ لَقِينَا مِنْ

1 मूसा अलैहिस्सलाम की यात्रा का कारण यह बना था कि वह एक बार भाषण दे रहे थे तो किसी ने पूछा कि इस संसार में सर्वाधिक ज्ञानी कौन है? मूसा ने कहा: मैं हूँ। यह बात अल्लाह को अप्रिय लगी। और मूसा से फ़रमाया कि दो सागरों के संगम के पास मेरा एक भक्त है जो तुम से अधिक ज्ञानी है। मूसा ने कहा: मैं उस से कैसे मिल सकता हूँ? अल्लाह ने फ़रमाया: एक मछली रख लो, और जिस स्थान पर वह खो जाये, तो वहीं वह मिलेगा। और वह अपने सेवक यूशअ बिन नून को लेकर निकल पड़े। (संक्षिप्त अनुवाद सहीह बुखारी: 4725)।

سَفَرًا لَمْ تَنصِبْ ۝

कि हमारा दिन का भोजन लाओ। हम अपनी इस यात्रा से थक गये हैं।

63. उस ने कहा: क्या आप ने देखा? जब हम ने उस शिला खण्ड के पास शरण ली थी तो मैं मछली भूल गया। और मुझे उसे शैतान ही ने भुला दिया कि मैं उस की चर्चा करूँ, और उस ने अपनी राह सागर में अनोखे तरीके से बना ली।
64. मूसा ने कहा: वही है जो हम चाहते थे। फिर दोनों अपने पदचिन्हों को देखते हुये वापिस हुये।
65. और दोनों ने पाया, हमारे भक्तों में से एक भक्त^[1] को, जिसे हम ने अपनी विशेष दया प्रदान की थी। और उसे अपने पास से कुछ विशेष ज्ञान दिया था।
66. मूसा ने उस से कहा: क्या मैं आप का अनुसरण करूँ, ताकि मुझे भी उस भलाई में से कुछ सिखा दें, जो आप को सिखायी गई है?
67. उस ने कहा: तुम मेरे साथ धैर्य नहीं कर सकोगे।
68. और कैसे धैर्य करोगे उस बात पर जिस का तुम्हें पूरा ज्ञान नहीं?
69. उस ने कहा: यदि अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे सहनशील पायेंगे। और मैं आप की किसी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूँगा।

قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْخُبْرَ ۚ وَمَا أُنْسِينِي إِلَّا الشَّيْطَانُ أَن أذْكُرَهُ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ۝

قَالَ ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِي ۚ فَارْتَدَّا عَلَى آثَارِهِمَا قَصَصًا ۝

وَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَا الَّتِي لَهُ رَحْمَةٌ مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنَاهُ مِمَّا لَمْ نَأْتِ عِلْمًا ۝

قَالَ لَهُ مُوسَى هَلْ أَتَيْتُكَ عَلَىٰ أَن تُعَلِّمَنِي وَمَا عَلَّمْتَنِي رُشْدًا ۝

قَالَ إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝

وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا ۝

قَالَ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ۝

1 इस से अभिप्रेत: आदरणीय खिज़्र अलैहिस्सलाम है।

70. उस ने कहा: यदि तुम्हें मेरा अनुसरण करना है तो मुझ से किसी चीज़ के संबन्ध में प्रश्न न करना जब तक मैं स्वयं तुम से उस की चर्चा न करूँ।

71. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब दोनों नौका में सवार हुये तो उस (खिज़्र) ने उस में छेद कर दिया। मूसा ने कहा: क्या आप ने इस में छेद कर दिया ताकि उस के सवारों को डूबा दें, आप ने अनुचित काम कर दिया।

72. उस ने कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा कि तुम मेरे साथ सहन नहीं कर सकोगे?

73. कहा: मुझे आप मेरी भूल पर न पकड़ें, और मेरी बात के कारण मुझे असुविधा में न डालें।

74. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि एक बालक से मिले तो उस (खिज़्र) ने उसे बध कर दिया। मूसा ने कहा: क्या आप ने एक निर्दोष प्राण ले लिया, वह भी किसी प्राण के बदले^[1] नहीं? आप ने बहुत ही बुरा काम किया।

75. उस ने कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा कि वास्तव में तुम मेरे साथ धैर्य नहीं कर सकोगे?

76. मूसा ने कहा: यदि मैं आप से प्रश्न

قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّى أُحَدِّثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ۝

فَانطَلَقَا حَتَّى إِذَا رَاكِبًا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا قَالَ أَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا ۝

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝

قَالَ لَا تَأْخُذْ بِنِيَابِيِّكَ وَلَا تَرْهَقْنِي مِنْ أَمْرِي خُصْرًا ۝

فَانطَلَقَا حَتَّى إِذَا لَبَيًّا عَلِمَا فَنَقَتَهُ ۝ قَالَ أَقْتَلْتُمْ نَفْسًا كَيْفَ بَعْدَ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا كُفْرًا ۝

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝

قَالَ إِن سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَ هَذَا فَلَا تُصَحِّبْنِي

1 अर्थात् उस ने किसी प्राणी को नहीं मारा कि उस के बदले में उसे मारा जाये।

قَدْ بَلَغْتَ مِنَ لَدُنِّي عُذْرًا ۝

करूँ, किसी विषय में इस के पश्चात्, तो मुझे अपने साथ न रखें। निश्चय आप मेरी ओर से याचना को पहुँच^[1] चुके।

77. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब एक गाँव के वासियों के पास आये तो उन से भोजन माँगा। उन्होंने ने उन का अतिथि सत्कार करने से इन्कार कर दिया। वहाँ उन्होंने एक दीवार पायी जो गिरा चाहती थी। उस ने उसे सीधी कर दिया। कहा: यदि आप चाहते तो इस पर पारिश्रमिक ले लेते।

78. उस ने कहा: यह मेरे तथा तुम्हारे बीच वियोग है। मैं तुम्हें उस की वास्तविकता बताऊँगा, जिस को तुम सहन नहीं कर सके।

79. रही नाव तो वह कुछ निर्धनों की थी, जो सागर में काम करते थे। तो मैं ने चाहा कि उसे छिद्रित^[2] कर दूँ, और उन के आगे एक राजा था जो प्रत्येक (अच्छी), नाव का अपहरण कर लेता था।

80. और रहा बालक तो उस के माता-पिता ईमान वाले थे, अतः हम डरे कि उन्हें अपनी अवैज्ञा और अधर्म से दुःख न पहुँचाये।

81. इसलिये हम ने चाहा कि उन दोनों

فَانطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا الْتَمَّ الْأَهْلُ فَرَجًا اسْتَطَعَمَا أَهْلَهَا
فَأَبْوَأْنَ يُضَيِّقُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ
أَنْ يَنْقُضَ فَأَقَامَهُ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَمَدَدْت
عَلَيْهِ أَجْرًا ۝

قَالَ هَذَا فِرَاقِي بَيْنِي وَبَيْنَكَ تَسَاءَلْتِكُمْ بِتَأْوِيلِ
مَا لَمْ تَسْطِطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۝

أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسْكِينٍ يَعْمَلُونَ فِي
الْبَحْرِ فَأَرَدْتُ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُمْ مَلِكٌ
يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ۝

وَأَمَّا الْعُلُوقُ فَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحِينَ فَأَخْبَيْنَاهُمَا
بِأَهْلِيهِمَا فَطَمَعِنَا وَأَلْفَرْنَا ۝

فَأَرَادْنَا أَنْ يُبَيِّدَ لَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرٌ مِنْهُ زَكَاةً

1 अर्थात् अब कोई प्रश्न करूँ तो आप के पास मुझे अपने साथ न रखने का उचित कारण होगा।

2 अर्थात् उस में छेद कर दूँ।

को उन का पालनहार, इस के बदले उस से अधिक पवित्र और अधिक प्रेमी प्रदान करे।

82. और रही दीवार तो वह दो अनाथ बालकों की थी। और उस के भीतर उन का कोष था। और उन के माता-पिता पुनीत थे तो तेरे पालनहार ने चाहा कि वह दोनों अपनी युवा अवस्था को पहुँचें और अपना कोष निकालें, तेरे पालनहार की दया से। और मैं ने यह अपने विचार तथा अधिकार से नहीं किया^[1] यह उस की वास्तविकता है जिसे तुम सहन नहीं कर सके।

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزُ لَهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا رَحْمَةً مِن رَّبِّكَ وَمَا فَعَلْتَهُ عَنْ أَمْرِي ذَلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا

83. और (हे नबी!) वे आप से जुलकरनैन^[2] के विषय में प्रश्न करते हैं। आप कह दें कि मैं उन की कुछ दशा तुम्हें पढ़ कर सुना देता हूँ।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْقُرْنَيْنِ قُلْ سَأَتْلُو عَلَيْكُم مِّنْهُ ذِكْرًا

- 1 यह सभी कार्य विशेष रूप से निर्दोष बालक का बध धार्मिक नियम से उचित न था। इस लिये मूसा (अलैहिस्सलाम) इस को सहन न कर सके। किन्तु ((खिज़्र)) को विशेष ज्ञान दिया गया था जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के पास नहीं था। इस प्रकार अल्लाह ने जता दिया कि हर ज्ञानी के ऊपर भी कोई ज्ञानी है।

- 2 यह तीसरे प्रश्न का उत्तर है जिसे यहूदियों ने मक्का के मिश्रणवादियों द्वारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कराया था।

जुलकरनैन के आगामी आयतों में जो गुण-कर्म बताये गये हैं उन से विद्वित होता है कि वह एक सदाचारी विजेता राजा था। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के शोध के अनुसार यह वही राजा है जिसे यूनानी साईरस, हिब्रु भाषा में खोरिस तथा अरब में खुसरु के नाम से पुकारा जाता है। जिस का शासन काल 559 ई० पूर्व है। वह लिखते हैं कि 1838 ई० में साईरस की एक पत्थर की मूर्ति अस्तखर के खण्डों में मिली है। जिस में बाज़ पक्षी के भाँति उस के दो पंख तथा उस के सिर पर भेड़ के समान दो सींग हैं। इस में मीडिया और फारस के दो राज्यों की उपमा दो सींगों से दी गयी है। (देखिये: तर्जमानुल कुर्आन, भाग-3 पृष्ठ-436-438)

84. हम ने उसे धरती में प्रभुत्व प्रदान किया, तथा उसे प्रत्येक प्रकार का साधन दिया।

85. तो वह एक राह के पीछे लगा।

86. यहाँ तक कि जब सूर्यास्त के स्थान तक^[1] पहुँचा, तो उस ने पाया कि वह एक काली कीचड़ के स्रोत में डूब रहा है। और वहाँ एक जाति को पाया। हम ने कहा: हे जुलकर्नैन! तू उन्हें यातना दे अथवा उन में अच्छा व्यवहार बना।

87. उस ने कहा: जो अत्याचार करेगा, हम उसे दण्ड देंगे। फिर वह अपने पालनहार की ओर फेरा^[2] जायेगा, तो वह उसे कड़ी यातना देगा।

88. परन्तु जो ईमान लाये, तथा सदाचार करे तो उसी के लिये अच्छा प्रतिफल (बदला) है। और हम उसे अपना सरल आदेश देंगे।

89. फिर वह एक (अन्य) राह की ओर लगा।

90. यहाँ तक कि सूर्योदय के स्थान तक पहुँचा। उसे पाया कि ऐसी जाति पर उदय हो रहा है जिस से हम ने उन के लिये कोई आड़ नहीं बनायी है।

91. उन की दशा ऐसी ही थी, और उस (जुलकर्नैन) के पास जो कुछ था हम उस से पूर्णतः सूचित हैं।

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَاتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبِيلاً

فَاتَّبَع سَبِيلَهُ

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَرْبُؤُنِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ ۖ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا قُلْنَا يَا الْقَوْمِ إِنَّمَا أَنْتُمْ تُعَذِّبُونَ وَإِنَّمَا أَنْتُمْ تُخَذَلُونَ فِيهِمْ حَسْبًا

قَالَ إِنَّمَا أَنْتُمْ مُنذَرُونَ ۖ فَلَوْلِمَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ قُلُوا لَهُمْ عَذَابًا عَظِيمًا

وَإِنَّمَا آمَنَ مِنْ عَمَلٍ صَالِحٍ فَلاَ جَزَاءَ لِحُسْنَىٰ ۖ وَسَنَقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا

فَاتَّبَع سَبِيلَهُ

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْمَعِ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْمَعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَمْ يَجْعَلْ لَهُم مِّن دُونِهَا سُرًّا

كَذَلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا

1 अर्थात् पश्चिम की अन्तिम सीमा तक।

2 अर्थात् निधन के पश्चात् प्रलय के दिन।

92. फिर वह एक दूसरी राह की ओर लगा

﴿فَاتَّبَعَهُ سَبِيلًا﴾

93. यहाँ तक कि जब दो पर्वतों के बीच पहुँचा तो उन दोनों के उस ओर एक जाति को पाया, जो नहीं समीप थी कि किसी बात को समझे।^[1]

﴿حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُونِهِمَا قَوْمًا لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا﴾

94. उन्होंने ने कहा: हे जुल करनैन! वास्तव में याजूज तथा माजूज उपद्रवी हैं इस देश में तो क्या हम निर्धारित कर दें आप के लिये कुछ धन। इसलिये कि आप हमारे और उन के बीच कोई रोक (बंध) बना दें?

﴿قَالُوا يَا أَيُّهَا الْقَرْنَيْنُ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ يَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا﴾

95. उस ने कहा: जो कुछ मुझे मेरे पालनहार ने प्रदान किया है वह उत्तम है। तो तुम मेरी सहायता बल और शक्ति से करो, मैं बना दूँगा तुम्हारे और उन के मध्य एक दृढ़ भीत।

﴿قَالَ يَا مَكِّيُّ وَيَا دُرَيْيُّ خَبِّرْ قَاعِيئُونَ بِيَعْتُونَ بِيَعْتُونَ أَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا﴾

96. मुझे लोहे की चादरें ला दो। और जब दोनों पर्वतों के बीच दीवार तय्यार कर दी, तो कहा कि आग दहकाओ, यहाँ तक कि जब उस दीवार को आग (के समान लाल) कर दिया, तो कहा: मेरे पास लाओ इस पर पिघला हुआ ताँबा उँडेल दूँ।

﴿أَتُورِي ذُبُرَ الْعَدِيدِ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوا حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا قَالَ أَتُورِي أَفْرِغْ عَلَيْهِ قَطْرًا﴾

97. फिर वह उस पर चढ़ नहीं सकते थे और न उस में कोई सेंध लगा सकते थे।

﴿فَمَا اسْطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا﴾

98. उस (जुल करनैन) ने कहा: यह मेरे पालनहार की दया है। फिर जब मेरे पालनहार का वचन^[2] आयेगा तो

﴿قَالَ هَذَا آيَةٌ مِنْ رَبِّي فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ دَكَّاءَ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا﴾

1 अर्थात् अपनी भाषा के सिवा कोई भाषा नहीं समझती थी।

2 वचन से अभिप्राय प्रलय के आने का समय है। जैसा कि सहीह बुखारी हदीस

वह इसे खण्ड-खण्ड कर देगा। और मेरे पालनहार का वचन सत्य है।

99. और हम छोड़ देंगे उस^[1] दिन लोगों को एक दूसरे में लहरें लेते हुये। तथा नरसिंघा में फूँक दिया जायेगा, और हम सब को एकत्रित कर देंगे।

100. और हम सामने कर देंगे उस दिन नरक को काफ़िरोँ के समक्ष।

101. जिन की आँखे मेरी याद से पर्दे में थीं, और कोई बात सुन नहीं सकते थे।

102. तो क्या उन्होंने सोचा है जो काफ़िर हो गये कि वह बना लेंगे मेरे दासों को मेरे सिवा सहायक? वास्तव में हम ने काफ़िरोँ के आतिथ्य के लिये नरक तैयार कर दी है।

103. आप कह दें कि क्या हम तुम्हें बता दें कि कौन अपने कर्मों में सब से अधिक क्षतिग्रस्त है?

104. वह है, जिन के संसारिक जीवन के सभी प्रयास व्यर्थ हो गये, तथा वह समझते रहे कि वे अच्छे कर्म कर रहे हैं।

105. यही वह लोग है, जिन्होंने ने नहीं माना अपने पालनहार की आयतों

وَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي بَعْضٍ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَعَلْنَاهُمْ جَمَاعًا

وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِلْكَافِرِينَ عَرْضًا

لِالَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غَظَاءٍ عَنْ ذِكْرِي وَكَانُوا لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا

أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِنْ ذُرِّيِّ أَوْلِيَآءٍ إِنَّا أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا

الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا

أُولَئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَإِلَّا يَتَذَكَّرُونَ رَبَّهُمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ

नं० 3346 आदि मे आता है कि क्यामत आने के समीप याजूज-माजूज वह दीवार तोड़ कर निकलेंगे, और धरती में उपद्रव मचा देंगे।

1 इस आयत में उस प्रलय के आने के समय की दशा का चित्रण किया गया है जिसे जुलकरनैन ने सत्य वचन कहा है।

तथा उस से मिलने को, अतः हम प्रलय के दिन उन का कोई भार निर्धारित नहीं करेंगे।^[1]

106. उन्हीं का बदला नरक है, इस कारण कि उन्हीं ने कुफ़्र किया, और मेरी आयतों और मेरे रसूलों का उपहास किया।
107. निश्चय जो ईमान लाये और सदाचार किये, उन्हीं के आतिथ्य के लिये फ़िरदौस^[2] के बाग़ होंगे।
108. उस में वे सदावासी होंगे, उसे छोड़ कर जाना नहीं चाहेंगे।
109. (हे नबी!) आप कह दें कि यदि सागर मेरे पालनहार की बातें लिखने के लिये स्याही बन जायें, तो सागर समाप्त हो जायें, इस से पहले कि मेरे पालनहार की बातें समाप्त हों, यद्यपि उतनी ही स्याही और ले आयें।
110. आप कह दें मैं तो तुम जैसा एक मनुष्य पुरुष हूँ, मेरी ओर प्रकाशना (वह्नी) की जाती है कि तुम्हारा पूज्य बस एक ही पूज्य है। अतः जो अपने पालनहार से मिलने की आशा रखता हो उसे चाहिये कि सदाचार करो और साझी न बनाये अपने पालनहार की इबादत (वंदना) में किसी को।

فَحَطَّتْ أَعْمَالَهُمْ فَلَا تُقِيمُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
وَرَبَّنَا ۝

ذَلِكَ جَزَاءُ أَهْلِ الْكَفْرِ وَاللَّذَّةِ وَالْبَيِّنِ
وَرَسُولٍ هُنُورًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ
لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۝

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ۝

قُلْ لَوْ كَانَ الْحَمْدُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا لَقَدْ أَلْفَبُوا
قَبْلَ أَنْ نَسْأَلَ الْكَلِمَاتُ رَبِّي لَوْ جِئْتُمْ بِإِسْلَامٍ مَدَدًا ۝

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُوحَى إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُمُ اللَّهُ وَاحِدٌ
فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَادِقًا وَلَا يُشْرِكْ
بِعبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ۝

1 अर्थात् उन का हमारे यहाँ कोई भार न होगा। हदीस में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: क्यामत के दिन एक भारी भरकम व्यक्ति आयेगा। मगर अल्लाह के सदन में उस का भार मच्छर के पंख के बराबर भी नहीं होगा। फिर आप ने इसी आयत को पढ़ा। (सहीह बुखारी, हदीस नं० 4729)

2 फ़िरदौस: स्वर्ग के सर्वोच्च स्थान का नाम है। (सहीह बुखारी: 7423)

सूरह मर्यम - 19



सूरह मर्यम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 98 आयतें हैं।

- इस सूरह में ईसा (अलैहिस्सलाम) की माँ मर्यम (अलैहस्सलाम) और ईसा (अलैहिस्सलाम) के जन्म की कथा का वर्णन किया गया है। इसी से इस का नाम मर्यम है। इस में सर्वप्रथम यह्या (अलैहिस्सलाम) के जन्म की चर्चा है, उस के पश्चात् ईसा (अलैहिस्सलाम) के जन्म का वर्णन है। और ईसाईयों को उन के विभेद पर सावधान किया गया है।
- इस में इबराहीम (अलैहिस्सलाम) के तौहीद के प्रचार और उन के हिजरत करने और मूसा (अलैहिस्सलाम) तथा अन्य नबियों की चर्चा की गई है, और उन की शिक्षाओं के बिरोधियों के विनाश से सावधान किया गया है। और उन को मानने पर सफलता की शुभसूचना दी गई है। तथा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सहन करने और सुदृढ़ रहने का निर्देश दिया गया है। परलोक के इन्कारियों के सँदेहों को दूर करते हुये ईमान और विश्वास के लिये कुछ स्थितियों का वर्णन किया गया है।
- जब मक्का से कुछ मुसलमान नबूवत के पाँचवें वर्ष हिजरत कर के हब्शा पहुँचे और मक्का के काफ़िरोँ ने कुछ व्यक्तियों को वापिस लाने के लिये भेजा जिन्हों ने उन्हें धर्म बदल लेने का दोषी बताया तो वहाँ के ईसाई राजा नजाशी को जअफ़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने इसी सूरह की आरंभिक आयतें सुनाई जिसे सुन कर वह रोने लगा, और कहा: यह और जो ईसा (अलैहिस्सलाम) लाये थे एक ही नूर (प्रकाश) की दो किरणें हैं। और भूमी से एक तिनका ले कर कहा: ईसा (अलैहिस्सलाम) इस से कुछ भी अधिक नहीं थे। फिर काफ़िरोँ के प्रतिनिधियों को निष्फल वापिस कर दिया। (सीरत इब्ने हिशाम-1। 334, 338)

हदीस में है कि पुरुषों में बहुत से पूर्ण हुये और स्त्रियों में मर्यम बिनत इमरान और फ़िरऔन की पत्नी आसिया ही पूर्ण हुयीं। (सहीह बुख़ारी: 3411, मुस्लिम, 2431)

दूसरी हदीस में है कि प्रत्येक शिशु जब जन्म लेता है तो शैतान उस के बाजू में अपनी दो उंगलियों से कचोके लगाता है, (तो वह चीख कर

रोता है), ईसा (अलैहिस्सलाम) के सिवा शैतान जब उन्हें कचोके लगाने लगा तो पर्दे ही में कचोका लगा दिया। (सहीह बुखारी, 3286, मुस्लिम, 2431)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. काफ़, हा, या, ऐन, साद।
2. यह आप के पालनहार की दया की चर्चा है, अपने भक्त ज़करिय्या पर।
3. जब कि उस ने अपने पालनहार से विनय की, गुप्त विनय।
4. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मेरी अस्थियाँ निर्बल हो गयीं और सिर बुढ़ापे से सफ़ेद^[1] हो गया है, तथा मेरे पालनहार! कभी ऐसा नहीं हुआ कि तुझ से प्रार्थना कर के निष्फल हुआ हूँ।
5. और मुझे अपने भाई बंदों से भय^[2] है, अपने (मरण) के पश्चात्, तथा मेरी पत्नी बाँझ है, अतः मुझे अपनी ओर से एक उत्तराधिकारी प्रदान कर दे।
6. वह मेरा उत्तराधिकारी हो, तथा याकूब के वंश का उत्तराधिकारी^[3] हो और हे पालनहार! उसे प्रिय बना दे।

كُلِّعَصَّ

ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهُ ذَكَرْتَاهُ

إِذْ نَادَى رَبَّهُ نِدَاءً خَفِيًّا

قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَاشْتَعَلَ الرَّأْسُ شَيْبًا وَلَمْ أَكُنْ بِدُعَاؤِكَ رَبِّ شَقِيًّا

وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَرَثَتِي وَأُخْرَى وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَرَثَتِي وَأُخْرَى وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَرَثَتِي وَأُخْرَى

يُرِيئِي وَيُرِيئُ مِنَ آلِ يَعْقُوبَ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا

1 अर्थात् पूरे बाल सफ़ेद हो गये।

2 अर्थात् दुराचार और बुरे व्यवहार का।

3 अर्थात् नबी हो। आदरणीय ज़करिय्या (अलैहिस्सलाम) याकूब (अलैहिस्सलाम) के वंश में थे।

7. हे ज़करिय्या! हम तुझे एक बालक की शुभ सूचना दे रहे हैं, जिस का नाम यह्या होगा। हम ने नहीं बनाया है इस से पहले उस का कोई समनाम।
8. उस ने (आश्चर्य से) कहा: मेरे पालनहार! कहाँ से मेरे यहाँ कोई बालक होगा, जब कि मेरी पत्नी बाँझ है, और मैं बुढ़ापे की चरम सीमा को जा पहुँचा हूँ।
9. उस ने कहा: ऐसा ही होगा, तेरे पालनहार ने कहा है, यह मेरे लिये सरल है, इस से पहले मैं ने तेरी उत्पत्ति की है, जब कि तू कुछ नहीं था।
10. उस (ज़करिय्या) ने कहा: मेरे पालनहार! मेरे लिये कोई लक्षण (चिन्ह) बना दे। उस ने कहा: तेरा लक्षण यह है कि तू बोल नहीं सकेगा, लोगों से निरंतर तीन रातों^[1]।
11. फिर वह मेहराब (चाप) से निकल कर अपनी जाति के पास आया। और उन्हें संकेत द्वारा आदेश दिया कि उस (अल्लाह) की पवित्रता का वर्णन करो, प्रातः तथा संध्या।
12. हे यह्या!^[2] इस पुस्तक (तौरात) को थाम ले, और हम ने उसे बचपन ही में ज्ञान (प्रबोध) प्रदान किया।

يٰزَكَرِيَّا اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ اِسْمًا نَحْيِي لَمْ يَجْعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝

قَالَ رَبِّ اَنْىٰ يَكُوْنُ لىٰ عِلْمٌ وَّكَانَتْ اِمْرَاْتىٰ عَاقِرًا وَّوَقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝

قَالَ كَذٰلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلٰى هٰٓئِيْنٍ وَّوَقَدْ خَلَقْتَنَّاكَ مِنْ قَبْلُ وَّلَمْ تَكُنْ سَمِيًّا ۝

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لىٰ اٰيَةً قَالَ اِيْتِكَ الْاَنْجَلِيْمُ النَّاسُ ثَلَاثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنَ الْمِحْرَابِ فَأَوْحٰى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّكَ وَّعَشِيًّا ۝

يٰحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ وَّاَتَيْنٰهُ الْحِكْمَ صَبِيًّا ۝

- 1 रात से अभिप्राय दिन तथा रात दोनों ही हैं। अर्थात् जब बिना किसी रोग के लोगों से बात न कर सकोगे तो यह शुभ सूचना का लक्षण होगा।
- 2 अर्थात् जब यह्या का जन्म हो गया और कुछ बड़ा हुआ तो अल्लाह ने उसे तौरात का ज्ञान दिया।

13. तथा अपनी ओर से प्रेम भाव तथा पवित्रता, और वह बड़ा संयमी (सदाचारी) था।
14. तथा अपनी माता-पिता के साथ सुशील था, वह क्रूर तथा अवज्ञाकारी नहीं था।
15. उस पर शान्ति है, जिस दिन उस ने जन्म लिया और जिस दिन मरेगा और जिस दिन पुनः जीवित किया जायेगा।
16. तथा आप इस पुस्तक (कुरआन) में मर्यम^[1] की चर्चा करें, जब वह अपने परिजनों से अलग हो कर एक पूर्वी स्थान की ओर आयीं।
17. फिर उन की ओर से पर्दा कर लिया, तो हम ने उस की ओर अपनी रूह (आत्मा)^[2] को भेजा, तो उस ने उस के लिये एक पूरे मनुष्य का रूप धारण कर लिया।
18. उस ने कहा: मैं शरण माँगती हूँ अत्यंत कृपाशील की तुझे से, यदि तुझे अल्लाह का कुछ भी भय हो।
19. उस ने कहा: मैं तेरे पालनहार का भेजा हुआ हूँ, ताकि तुझे एक पुनीत बालक प्रदान कर दूँ।
20. वह बोली: यह कैसे हो सकता है कि मेरे बालक हो, जब कि किसी पुरुष ने मुझे स्पर्श भी नहीं किया है, और

وَحَنَانًا مِّن دُونِهَا وَكَانَ تَوْقِيًّا ۝

وَبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُن جَبَّارًا عَصِيًّا ۝

وَسَلَّمَ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ مَيُوتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۝

وَإِذْ كَرَى الْكَنُيْزَ مَرْيَمَ إِذِ اتَّبَعَتْ مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرْوِيًّا ۝

فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُونِهِمْ حِجَابًا فَأَرْسَلْنَا إِلَيْهَا رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ۝

قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمَنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ۝

قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ لِأَهَبَ لَكِ غُلَامًا زَكِيًّا ۝

قَالَتْ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ وَلَمْ أَكُ بَغِيًّا ۝

1 मर्यम अदरणीय इम्रान की पुत्री दावूद अलैहिस्सलाम के वंश से थी। उन के जन्म के विषय में सूरह आले इमरान देखिये।

2 इस से अभिप्रेत फरिश्ते जिब्रील (अलैहिस्सलाम) हैं।

न मैं व्यभिचारिणी हूँ?

21. फ़रिश्ते ने कहा: ऐसा ही होगा, तेरे पालनहार का वचन है कि वह मेरे लिये अति सरल है, और ताकि हम उसे लोगों के लिये एक लक्षण (निशानी)^[1] बनायें तथा अपनी विशेष दया से, और यह एक निश्चित बात है।
22. फिर वह गर्भवती हो गई, तथा उस (गर्भ को ले कर) दूर स्थान पर चली गई।
23. फिर प्रसव पीड़ा उसे एक खजूर के तने तक लायी, कहने लगी: क्या ही अच्छा होता, मैं इस से पहले ही मर जाती, और भूली बिसरी हो जाती।
24. तो उस के नीचे से पुकारा^[2] कि उदासीन न हो, तेरे पालनहार ने तेरे नीचे^[3] एक स्रोत बहा दिया है।
25. और हिला दे अपनी ओर खजूर के तने को तुझ पर गिरायेगा वह ताजी पकी खजूरें।^[4]
26. अतः खा और पी तथा आँख ठण्डी कर। फिर यदि किसी पुरुष को देखे, तो कह दे: वास्तव में, मैं ने मनौती मान रखी है अत्यंत कृपाशील के

قَالَ كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَىٰ هَيْئٍ
وَلَنَجْعَلَنَّ آيَةً لِلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِنَّا وَكَانَ
أَمْرًا مَّقْضِيًّا ۝

فَحَصَلَتْهُ فَأَنْبَدَتْ بِهِ مَكَانًا قَصِيًّا ۝

فَأَجَاءَهَا الْمَخَاضُ إِلَىٰ جِذْعِ النَّخْلَةِ قَالَتْ
يَلَيْتَنِي مِتُّ قَبْلَ هَذَا وَكُنْتُ نَسِيًّا نَسِيًّا ۝

فَنَادَاهَا مِن تَحْتِهَا أَلَّا تَحْزَنِي قَدْ جَعَلَ
رَبُّكَ تَحْتِكَ سَرِيًّا ۝

وَهَزَمِنَا إِلَيْكَ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ فَسَقَطَ
عَلَيْكَ رُطْبًا جَنِيًّا ۝

فَكُلْ وَاشْرَبِي وَوَقَرِي عَيْنًا فَاِمَّا تَرَيْنَ مِنَ
النَّاسِ أَحَدًا فَعُولِي إِيَّاي نَذَرْتُ لِلرَّحْمَنِ
صَوْمًا فَلَنْ أُكَلِّمَ الْيَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝

- 1 अर्थात् अपने सामर्थ्य की निशानी कि हम नर-नारि के योग के बिना भी स्त्री के गर्भ से शिशु की उत्पत्ति कर सकते हैं।
- 2 अर्थात् जिब्रिल फ़रिश्ते ने घाटी के नीचे से आवाज़ दी।
- 3 अर्थात् मर्यम के चरणों के नीचे।
- 4 अल्लाह ने अस्वभाविक रूप से आदरणीय मर्यम के लिये, खाने-पीने की व्यवस्था कर दी।

लिये व्रत की। अतः मैं आज किसी मनुष्य से बात नहीं करूँगी।

27. फिर उस (शिशु ईसा) को ले कर अपनी जाति में आयी, सब ने कहा: हे मर्यम! तू ने बहुत बुरा किया।

فَأَتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحِيَّةً قَالَ الْوَالِمِرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا ۝

28. हे हारून की बहन!^[1] तेरा पिता कोई बुरा व्यक्ति न था। और न तेरी माँ व्यभिचारिणी थी।

يَا حَتَّ هَارُونَ مَا كَانَ أَبُوكَ امْرَأَ سَوْءٍ وَمَا كَانَتْ أُمُّكَ بَعْثًا ۝

29. मर्यम ने उस (शिशु) की ओर संकेत किया। लोगों ने कहा: हम कैसे उस से बात करें जो गोद में पड़ा हुआ एक शिशु है?

فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ وَالْوَالِدَاتُ كَيْفَ يُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْهُدَى صَبِيًّا ۝

30. वह (शिशु) बोल पड़ा: मैं अल्लाह का भक्त हूँ। उस ने मुझे पुस्तक (इंजील) प्रदान की है, तथा मुझे नबी बनाया है।^[2]

قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ الْغَنِيُّ الْكَلْبُ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ۝

31. तथा मुझे शुभ बनाया है जहाँ रहूँ और मुझे आदेश दिया है, नमाज़ तथा ज़कात का जब तक जीवित रहूँ।

وَجَعَلَنِي مُبَارَكًا أَيْنَ مَا كُنْتُ وَأَوْصَانِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ۝

32. तथा अपनी माँ का सेवक, और उस ने मुझे क्रूर तथा अभागा^[3] नहीं बनाया है।

وَرَبُّ الْوَالِدِ فِي نَوْمٍ يَجْعَلُنِي جَبَّارًا مَشْقِيًّا ۝

33. तथा शान्ति है मुझ पर, जिस दिन मैं ने जन्म लिया तथा जिस दिन मरूँगा और जिस दिन पुनः जीवित किया जाऊँगा।

وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ أَمُوتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ۝

1 अर्थात् हारून अलैहिस्सलाम के वंशज की पुत्री। अरबों के यहाँ किसी कबीले का भाई होने का अर्थ उस कबीले और वंशज का व्यक्ति लिया जाता था।

2 अर्थात् मुझे पुस्तक प्रदान करने और नबी बनाने का निर्णय कर दिया है।

3 इस में यह संकेत है कि माता-पिता के साथ दुर्व्यवहार करना क्रूरता तथा दुर्भाग्य है।

34. यह है ईसा मर्यम का सुत, यही सत्य बात है, जिस के विषय में लोग संदेह कर रहे हैं।
35. अल्लाह का यह काम नहीं कि अपने लिये कोई संतान बनाये, वह पवित्र है! जब वह किसी कार्य का निर्णय करता है, तो उस के सिवा कुछ नहीं होता कि उसे आदेश दे कि: "हो जा" और वह हो जाता है।
36. और (ईसा ने कहा): वास्तव में अल्लाह मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है, अतः उसी की इबादत (वन्दना) करो, यही सुपथ (सीधी राह) है।
37. फिर सम्प्रदायो^[1] ने आपस में विभेद किया, तो विनाश है उन के लिये जो काफिर हो गये एक बड़े दिन के आ जाने के कारण।
38. वे भली भाँति सुनेंगे और देखेंगे जिस दिन हमारे पास आयेंगे, परन्तु अत्याचारी आज खुले कुपथ में हैं।
39. और (हे नबी!) आप उन्हें संताप के दिन से सावधान कर दें, जब निर्णय^[2]

ذَٰلِكَ عَيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِي فِيهِ
يَمْتَرُونَ ﴿١٩﴾

مَا كَانَ لِلَّهِ أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ سُبْحٰنَهُ إِذَا
قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٢٠﴾

وَإِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ هَذَا صِرَاطٌ
مُّسْتَقِيمٌ ﴿٢١﴾

فَاخْتَلَفَتِ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٢٢﴾

أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصُرْ يَوْمَ يَأْتُونَ تَارِكِينَ
الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٢٣﴾

وَإِنذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَصْرَةِ إِذْ يَفْضَى الْأَمْوَالُ فِي

1 अर्थात् अहले किताब के सम्प्रदायों ने ईसा अलैहिस्सलाम की वास्तविकता जानने के पश्चात् उन के विषय में विभेद किया। यहूदियों ने उसे जादूगर तथा वर्णसंकर कहा। और ईसाइयों के एक सम्प्रदाय ने कहा कि वह स्वयं अल्लाह है। दूसरे ने कहा: वह अल्लाह का पुत्र है। और उन के तीसरे कैथुलिक सम्प्रदाय ने कहा कि वह तीन में का तीसरा है। बड़े दिन से अभिप्राय प्रलय का दिन है।

2 अर्थात् प्रत्येक के कर्मानुसार उस के लिये नरक अथवा स्वर्ग का निर्णय कर दिया जायेगा। फिर मौत को एक भेड़ के रूप में बध कर दिया जायेगा। तथा घोषणा कर दी जायेगी कि हे स्वर्गीयो! तुम्हें सदा रहना है, और अब मौत नहीं है। और हे नारकियो! तुम्हें सदा नरक में रहना है, अब मौत नहीं है। (सहीह

- कर दिया जायेगा जब कि वे अचेत हैं तथा ईमान नहीं ला रहे हैं।
40. निश्चय हम ही उत्तराधिकारी होंगे धरती के तथा जो उस के ऊपर है और हमारी ही ओर सब प्रत्यागत किये जायेंगे।
41. तथा आप चर्चा कर दें इस पुस्तक (कुर्आन) में इब्राहीम की वास्तव में वह एक सत्यावादी नबी था।
42. जब उस ने कहा अपने पिता से: हे मेरे प्रिय पिता! क्यों आप उसे पूजते हैं, जो न सुनता है और न देखता है, और न आप के कुछ काम आता?
43. हे मेरे पिता! मेरे पास वह ज्ञान आ गया है जो आप के पास नहीं आया, अतः आप मेरा अनुसरण करें, मैं आप को सीधी राह दिखा दूंगा।
44. हे मेरे प्रिय पिता! शैतान की पूजा न करें, वास्तव में शैतान अत्यंत कृपाशील (अल्लाह) का अवैज्ञाकारी है।
45. हे मेरे पिता! वास्तव में मुझे भय हो रहा है कि आप को अत्यंत कृपाशील की कोई यातना आ लगे तो आप शैतान के मित्र हो जायेंगे।^[1]
46. उस ने कहा: क्या तू हमारे पूज्यों से विमुख हो रहा है? हे इब्राहीम! यदि तू (इस से) नहीं रुका तो मैं तुझे

عَفَلَةً وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٤٠﴾

إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ﴿٤١﴾

وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ إِذْ كَانَ صَدِيقًا نَبِيًّا ﴿٤٢﴾

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ﴿٤٣﴾

يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي مِنَ الْعُلَمَاءُ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿٤٤﴾

يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَنِ عَصِيًّا ﴿٤٥﴾

يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يَمَسَّكَ عَذَابُ الْوَعْدِ الَّذِي أَنْتَ تَكْتُمُونَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ﴿٤٦﴾

قَالَ لَأُعَذِّبَنَّكَ وَأَعِزَّنِي بِكَ يَا إِبْرَاهِيمَ لَنْ أَمُوتَنَّكَ وَلَا أَحْمَقَنَّكَ وَأَعِزَّنِي بِكَ ﴿٤٧﴾

बुखारी, हदीस, नं०-4730)

1 अर्थात् अब मैं आप को संबोधित नहीं करूंगा।

पत्थरों से मार दूँगा। और तू मुझे से विलग हो जा सदा के लिये।

47. (इब्राहीम) ने कहा: सलाम^[1] है आप को। मैं क्षमा की प्रार्थना करता रहूँगा आप के लिये अपने पालनहार से, मेरा पालनहार मेरे प्रति बड़ा करुणामय है।

48. तथा मैं तुम सभी को छोड़ता हूँ और जिसे तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा। और प्रार्थना करता रहूँगा अपने पालनहार से। मुझे विश्वास है कि मैं अपने पालनहार से प्रार्थना कर के असफल नहीं हूँगा।

49. फिर जब उन्हें छोड़ दिया तथा जिसे वह अल्लाह के सिवा पुकार रहे थे, तो हम ने उसे प्रदान कर दिया इस्हाक़ तथा याकूब, और हम ने प्रत्येक को नबी बना दिया।

50. तथा हम ने प्रदान की उन सब को अपनी दया में से, और हम ने बना दी उन की शुभ चर्चा सर्वोच्च।

51. और आप इस पुस्तक में मूसा की चर्चा करें। वास्तव में वह चुना हुआ तथा रसूल एवं नबी था।

52. और हम ने उसे पुकारा तूर पर्वत के दायें किनारे से, तथा उसे समीप कर लिया रहस्य की बात करते हुये।

53. और हम ने प्रदान किया उसे अपनी दया में से, उस के भाई हारून को

قَالَ سَلَامٌ عَلَيْكَ سَأَسْتَغْفِرُكَ رَبِّي إِنَّهُ كَانَ فِي حَفِيًّا ۝

وَأَعْتَرَكُم مَّا تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ وَأَدْعُوا رَبِّي عَسَىٰ أَلاَّ أَكُونَ بِدُعَاءِ رَبِّي شَقِيًّا ۝

فَلَمَّا عَتَرَهُ لَهُمْ مَّا يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ وَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ۝

وَوَهَبْنَا لَهُم مِّن رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُم لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ۝

وَإِذْ كُنَّا فِي الْكَلْبِ مُوسَىٰ إِنَّهُ كَانَ مَخْلُصًا وَكَانَ رَسُولًا نَّبِيًّا ۝

وَنَادَيْنَاهُ مِن جَانِبِ الطُّورِ الْأَيْمَنِ وَقَرَّبْنَاهُ نَجِيًّا ۝

وَوَهَبْنَا لَهُ مِن رَّحْمَتِنَا أَخَاهُ هَارُونَ نَبِيًّا ۝

1 इस्हाक़, इब्राहीम अलैहिमस्सलाम के पुत्र तथा याकूब के पिता थे इन्ही के वंश को बनी इस्राईल कहते हैं।

नबी बना कर।

54. तथा इस पुस्तक में इस्माईल^[1] की चर्चा करो, वास्तव में वह वचन का पक्का, तथा रसूल -नबी था।
55. और आदेश देता था अपने परिवार को नमाज़ तथा ज़कात का और अपने पालनहार के यहाँ प्रिय था।
56. तथा इस पुस्तक में इद्रीस की चर्चा करो, वास्तव में वह सत्यवादी नबी था।
57. तथा हम ने उसे उठाया उच्च स्थान पर।
58. यही वह लोग हैं, जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया नबियों में से आदम की संतति में से तथा उन में से जिन्हें हम ने (नाव पर) सवार किया नूह के साथ तथा इब्राहीम और इसराईल के संतति में से, तथा उन में से जिन्हें हम ने मार्ग दर्शन दिया और चुन लिया, जब इन के समक्ष पढ़ी जाती थी अत्यंत कृपाशील की आयतें तो वे गिर जाया करते थे सज्दा करते हुये तथा रोते हुये।
59. फिर इन के पश्चात् ऐसे कपूत पैदा हुये, जिन्होंने ने गँवा दिया नमाज़ को तथा अनुसरण किया मनोकांक्षाओं का, तो वह शीघ्र ही कुपथ (के

وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ إِذْ كَانَ صَادِقَ
الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُولًا نَبِيًّا ۝

وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُ بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ وَكَانَ عِنْدَ
رَبِّهِ مُضِيًّا ۝

وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ إِدْرِيسَ إِذْ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ۝

وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۝

أُولَئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ مِنْ
ذُرِّيَةِ آدَمَ وَنُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمَنْ حَمَلْنَا مَعَهُ نُوحًا
وَإِسْرَائِيلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَاهُ إِذَا
تَلَّى عَلَيْهِمُ آيَاتِ الرَّحْمَنِ حُزًّا وَسَجْدًا وَرُبِّيًّا ۝

فَخَلَفَ مِنْ بَدْوِهِمْ خَلْفًا أَضَاعُوا الصَّلَاةَ
وَاتَّبَعُوا الشَّهْوَاتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ عَذَابًا ۝

1 आप इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बड़े पुत्र थे, इन्हीं से अरबों का वंश चला और आप ही के वंश से अन्तिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) नबी बना कर भेजे गये हैं।

परिणाम) का सामना करेंगे।

60. परन्तु जिन्होंने क्षमा माँग ली, तथा ईमान लाये और सदाचार किये तो वही स्वर्ग में प्रवेश पायेंगे। और उन पर तनिक अत्याचार नहीं किया जायेगा।
61. स्थायी बिन देखे स्वर्ग, जिन का परोक्षतः वचन अत्यंत कृपाशील ने अपने भक्तों को दिया है, वास्तव में उस का वचन पूरा हो कर रहेगा।
62. वे नहीं सुनेंगे, उस में कोई बकवास, सलाम के सिवा, तथा उन के लिये उस में जीविका होगी प्रातः और संध्या।
63. यही वह स्वर्ग है, जिस का हम उत्तराधिकारी बना देंगे, अपने भक्तों में से उसे जो आज्ञाकारी हो।
64. और हम^[1] नहीं उतरते परन्तु आप के पालनहार के आदेश से, उसी का है जो हमारे आगे तथा पीछे है और जो इस के बीच है, और आप का पालनहार भूलने वाला नहीं है।
65. आकाशों तथा धरती का पालनहार तथा जो उन दोनों के बीच है। अतः उसी की इबादत (वंदना) करें, तथा उस की इबादत पर स्थित रहें। क्या आप उस के सम्मुख किसी को जानते हैं?

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَئِكَ
يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُلَظَمُونَ فِيهَا

جَنَّتِ عَذَابٍ إِلَّا مَنْ وَعَدَ الرَّحْمَنُ عِبَادَةً
بِالْغَيْبِ إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًا

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا إِلَّا سَلَامًا وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ
فِيهَا بَكْرَةٌ وَعَشِيًّا

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ
تَقِيًّا

وَمَا نُنَزِّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا
وَمَا خَلْفُنَا وَمَا بَيْنَ ذَلِكَ وَمَا كَانَ رُبُّكَ نَسِيًّا

رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ
وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا

1 हदीस के अनुसार एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (फरिश्ते) जिबरील से कहा कि क्या चीज़ आप को रोक रही है कि आप मुझ से और अधिक मिला करें, इसी पर यह आयत अवतरित हुई (सहीह बुखारी, हदीस नं० 4731)

66. तथा मनुष्य कहता है कि क्या जब मैं मर जाऊँगा तो फिर निकाला जाऊँगा जीवित हो कर?
67. क्या मनुष्य याद नहीं रखता कि हम ही ने उसे इस से पूर्व उत्पन्न किया है जब कि वह कुछ (भी) न था?
68. तो आप के पालनहार की शपथ! हम उन्हें अवश्य एकत्र कर देंगे और शैतानों को, फिर उन्हें अवश्य उपस्थित कर देंगे, नरक के किनारे मुँह के बल गिरे हूये।
69. फिर हम अलग कर लेंगे प्रत्येक समुदाय से उन में से जो अत्यंत कृपाशील का अधिक अवैज्ञाकारी था।
70. फिर हम ही भली-भाँति जानते हैं कि कौन अधिक योग्य है उस में झोंक दिये जाने के।
71. और नहीं है तुम में से कोई परन्तु वहाँ गुज़रने वाला^[1] है, यह आप के पालनहार पर अनिवार्य है जो पूरा हो कर रहेगा।
72. फिर हम उन्हें बचा लेंगे जो डरते रहे, तथा उस में छोड़ देंगे अत्याचारियों को मुँह के बल गिरे हूये।
73. तथा जब उन के समक्ष हमारी खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो काफ़िर

وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ إِذَا مَا مَاتَ لَسَوْفَ أَخْرَجُ حَيًّا ۝

أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ۝

فَوَرَبِّكَ لَنَحْضُرَهُمُ وَالشَّيْطَانُ لَنَحْضُرُهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ۝

لَنُفَصِّلَنَّ عَنْهُمْ مِنْ كُلِّ شَيْعَةٍ أَيْمًا أَشَدَّ عَلَى الرَّحْمَنِ عِتِيًّا ۝

لَنُكَلِّمَنَّ الَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا صِلِيًّا ۝

وَأَن مِّنكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ۝

لَنُصَلِّيَنَّ عَلَى الَّذِينَ اتَّقَوْا وَنَنذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ۝

وَإِذَا تَنَزَّلَتْ عَلَيْهِمُ آيَاتُنَا نَبَّذُوا الَّذِينَ كَفَرُوا ۝

1 अर्थात् नरक से जिस पर एक पुल बनाया जायेगा। उस पर से सभी ईमान वालों और काफ़िरों को अवश्य गुज़रना होगा। यह और बात है कि ईमान वालों को इस से कोई हानि न पहुँचे। इस की व्याख्या सहीह हदीसों में वर्णित है।

ईमान वालों से कहते हैं कि (बताओ) दोनों सम्प्रदायों में किस की दशा अच्छी है, और किस की मज्लिस (सभा) अधिक भव्य है?

74. जब कि हम ध्वस्त कर चुके हैं इन से पहले बहुत सी जातियों को जो इन में उत्तम थीं संसाधन तथा मान सम्मान में
75. (हे नबी!) आप कह दें कि जो कृपथ में ग्रस्त होता है, अत्यंत कृपाशील उसे अधिक अवसर देता है। यहाँ तक कि जब उसे देख लें जिस का वचन दिये जाते हैं, या तो यातना को अथवा प्रलय को, उस समय उन्हें ज्ञान हो जायेगा कि किस की दशा बुरी और किस का जत्था अधिक निर्बल है।
76. और अल्लाह उन्हें जो सुपथ हों मार्गदर्शन में अधिक कर देता है। और शेष रह जाने वाले सदाचार ही उत्तम हैं आप के पालनहार के समीप कर्म-फल में, तथा उत्तम हैं परिणाम के फलस्वरूप।
77. (हे नबी!) क्या आप ने उसे देखा जिस ने हमारी आयतों के साथ कूफ़ (अविश्वास) किया तथा कहा: मैं अवश्य धन तथा संतान दिया जाऊँगा?
78. क्या वह अवगत हो गया है परोक्ष से अथवा उस ने अत्यंत दयाशील से कोई वचन ले रखा है?

لَّذِينَ آمَنُوا إِلَى الْفُرْقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَأَحْسَنُ نَدِيًّا ۝

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثَانًا وَرِجِيًّا ۝

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَبْدُدْ لَهُ الرَّحْمَنُ مَذَاذًا حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَكَانًا وَأَضْعَفُ جُنْدًا ۝

وَيَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى وَالْبَغْيِ الضَّلِيعِ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ تَوَابًا وَخَيْرٌ مَرَدًّا ۝

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَأُوتِيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ۝

أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ۝

79. कदापि नहीं, हम लिख लेंगे जो वह कहता है, और हम अधिक करते जायेंगे उस की यातना को अत्यधिक।
80. और हम ले लेंगे जिस की वह बात कर रहा है, और वह हमारे पास अकेला^[1] आयेगा।
81. तथा उन्होंने ने बना लिये हैं अल्लाह के सिवा बहुत से पूज्य, ताकि वह उन के सहायक हों।
82. ऐसा कदापि नहीं होगा, वे सब इन की पूजा (उपासना) का अस्वीकार कर^[2] देंगे और उन के विरोधी हो जायेंगे।
83. क्या आप ने नहीं देखा कि हम ने भेज दिया है शैतानों को काफिरों पर जो उन्हें बराबर उकसाते रहते हैं?
84. अतः शीघ्रता न करें उन पर^[3], हम तो केवल उन के दिन गिन रहे हैं।
85. जिस दिन हम एकत्रित कर देंगे आज्ञाकारियों को अत्यंत कृपाशील

كَلَّا سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَعُدُّهُ مِنَ الْعَدَابِ
مَدًّا ۝

وَتَرَاهُ مَعَ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ۝

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ ذُرِّيَّةِ اللَّهِ الْعَهْدَ لِيَكُونُوا لِلْهَمِّ عَزَاءً ۝

كَلَّا سَيَكْفُرُونَ بِصَادِقَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ
ضِدًّا ۝

أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيَاطِينَ عَلَى الْكَافِرِينَ تَوَزُّؤًا ۝

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَمَلًا ۝

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَنِ وَفْدًا ۝

- 1 इन आयतों के अवतरित होने का कारण यह बताया गया है कि खब्बाब बिन अरत्त का आस बिन वायल (काफिर) पर कुछ श्रृण था। जिसे माँगने के लिये गये तो उस ने कहा: मैं तुझे उस समय तक नहीं दूँगा जब तक मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ कुफ्र नहीं करेगा। उन्होंने ने कहा कि यह काम तो तू मर कर पुनः जीवित हो जाये, तब भी नहीं करूँगा। उस ने कहा: क्या मैं मरने के पश्चात् पुनः जीवित कर दिया जाऊँगा? खब्बाब ने कहा: हाँ। आस ने कहा: वहाँ मुझे धन और संतान मिलेगी तो तुम्हारा श्रृण चुका दूँगा। (सहीह बुखारी, हदीस नं०: 4732)
- 2 अर्थात् प्रलय के दिन।
- 3 अर्थात् यातना के आने का। और इस के लिये केवल उन की आयु पूरी होने की देर है।

की ओर अतिथि बना कर।

86. तथा हांक देंगे पापियों को नरक की ओर प्यासे पशुओं के समान।

87. वह (काफ़िर) अभिस्तावना का अधिकार नहीं रखेंगे, परन्तु जिस ने बना लिया हो अत्यंत कृपाशील के पास कोई वचन^[1]

88. तथा उन्होंने ने कहा कि बना लिया है अत्यंत कृपाशील ने अपने लिये एक पुत्र^[2]

89. वास्तव में तुम एक भारी बात घड़ लाये हो।

90. समीप है कि इस कथन के कारण आकाश फट पड़ें तथा धरती चिर जाये, और गिर जायें पर्वत कण-कण हो कर।

91. कि वह सिद्ध करने लगे अत्यंत कृपाशील के लिये संतान।

92. तथा नहीं योग्य है अत्यंत कृपाशील के लिये कि वह कोई संतान बनाये।

93. प्रत्येक जो आकाशों तथा धरती में है आने वाले है अत्यंत कृपाशील की सेवा में दास बन कर।

وَسَوْفَ الْمَجْرُمِينَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وُرْدًا ۝

لَا يَمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ۝

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا ۝

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِذًا ۝

تَكَادُ السَّمَوَاتُ يَتَّقَطْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَكًّا ۝

أَنْ دَعَا لِلرَّحْمَنِ وَلَدًا ۝

وَمَا يَتَّبَعِي لِلرَّحْمَنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ۝

إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا آتِي الرَّحْمَنِ عَبْدًا ۝

1 अर्थात् अल्लाह की अनुमति से वही सिफ़ारिश करेगा जो ईमान लाया है।

2 अर्थात् ईसाइयों ने -जैसा कि इस सूरह के आरंभ में आया है- ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह का पुत्र बना लिया। और इस भ्रम में पड़ गये कि उन्होंने मनुष्य के पापों का प्रायश्चित्त चुका दिया। इस आयत में इसी कुपथ का खण्डन किया जा रहा है।

94. उस ने उन को नियंत्रण में ले रखा है, तथा उन को पूर्णतः गिन रखा है।
95. और प्रत्येक उस के समक्ष आने वाला है प्रलय के दिन अकेला।^[1]
96. निश्चय जो ईमान लाये हैं तथा सदाचार किये हैं, शीघ्र बना देगा उन के लिये अत्यंत कृपाशील (दिलों में)^[2] प्रेम।
97. अतः (हे नबी!) हम ने सरल बना दिया है, इस (कुरआन) को आप की भाषा में ताकि आप इस के द्वारा शुभ सूचना दें संयमियों (आज्ञाकारियों) को, तथा सतर्क कर दें विरोधियों को।
98. तथा हम ने ध्वस्त कर दिया है, इन से पहले बहुत सी जातियों को, तो क्या आप देखते हैं, उन में से किसी को? अथवा सुनते हैं, उन की कोई ध्वनि?

لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ۝

وَكُلُّهُمْ آتِيهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَرْدًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ وُدًّا ۝

فَأَنشَأْنَا لِسَانَكَ لِنُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَنُنذِرَ بِهِ قَوْمًا لُدًّا ۝

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هَلْ يُحِشُّ مِنْهُمْ مِنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ۝

1 अर्थात् उस दिन कोई किसी का सहायक न होगा। और न ही किसी को उस का धन-संतान लाभ देगा।

2 अर्थात् उन के ईमान और सदाचार के कारण, लोग उस से प्रेम करने लगेंगे।

सूरह ता-हा - 20



सूरह ता-हा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 135 आयतें हैं

- इस सूरह के आरंभ में यह दोनों अक्षर आये हैं इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।
- इस में वही और रिसालत का उद्देश्य बताया गया है। और जो नहीं मानते उन्हें चेतावनी दी गई है, और मूसा (अलैहिस्सलाम) को रिसालत देने और उन के विरोधियों का दुष्परिणाम बताया गया है। साथ ही प्रलय की दशा का भी वर्णन किया गया है ताकि नबूवत के विरोधी सावधान हों।
- इस में आदम (अलैहिस्सलाम) की कथा का वर्णन करते हुये यह बताया गया है कि जब मनुष्य इस धरती पर आया तभी यह बात उजागर कर दी गई थी कि मनुष्य को सीधी राह दिखाने के लिये वही तथा रिसालत का क्रम भी जारी किया जायेगा फिर जो सीधी राह अपनायेगा वही शैतान के कुपथ से सुरक्षित रहेगा।
- इस में अल्लाह की आयतों से विमुख होने का बुरा अन्त बताया गया है। तथा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आप के माध्यम से ईमान वालों को सहन और दृढ़ रहने के निर्देश दिये गये हैं। और दिलासा दी गई है कि अन्तिम तथा अच्छा परिणाम उन्हीं के लिये है।
- और अन्त में विरोधियों की आपत्तियों का उत्तर दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. ता, हा।
2. हम ने नहीं अवतरित किया है आप पर कुर्आन इस लिये कि आप दुःखी हों।^[1]

طه

مَا نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْقَىٰ

- 1 अर्थात् विरोधियों के ईमान न लाने पर।

3. परन्तु यह उस की शिक्षा के लिये है जो डरता^[1] हो।
4. उतारा जाना उस की ओर से है, जिस ने उत्पत्ति की है धरती तथा उच्च आकाशों की।
5. जो अत्यंत कृपाशील अर्श पर स्थिर है।
6. उसी का^[2] है, जो आकाशों तथा जो धरती में और जो दोनों के बीच तथा जो भूमि के नीचे है।
7. यदि तुम उच्च स्वर में बात करो, तो वास्तव में वह जानता है भेद को तथा अत्यधिक छुपे भेद को।
8. वही अल्लाह है, नहीं है कोई वंदनीय (पूज्य) परन्तु वही। उसी के उत्तम नाम है।
9. और (हे नबी!) क्या आप को मूसा की बात पहुँची?
10. जब उस ने देखी एक अग्नि, फिर कहा: अपने परिवार से रुको, मैं ने एक अग्नि देखी है, सम्भव है कि मैं तुम्हारे पास उस का कोई अंगार लाऊँ, अथवा पा जाऊँ आग पर मार्ग की कोई सूचना।^[3]
11. फिर जब वहाँ पहुँचा, तो पुकारा गया: हे मूसा!

إِلَّا أَنْذَرْتَهُ لِمَنْ يَخْتَلِي ۝

تَنْزِيلًا مِّنْ خَلْقِ الْأَرْضِ وَالسَّمَوَاتِ الْعُلَى ۝

الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى ۝

لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرَى ۝

وَإِنْ تَجَهَّرَ بِالْقَوْلِ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَى ۝

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى ۝

وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ۝

إِذْ رَأَانَا أَوْفَقَالَ لِهَيْلِهِ امْكُتُوا إِنِّي أَنَسْتُ نَارًا
لَعَلِّي آتِيكُمْ مِنْهَا بِقَبَسٍ أَوْ أَجْدُ عَلَى النَّارِ
هُدًى ۝

فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ يَبُوسَى ۝

1 अर्थात् ईमान न लाने तथा कुकर्माँ के दुष्परिणाम से।

2 अर्थात् उसी के स्वामित्व में तथा उस के आधीन है।

3 यह उस समय की बात है, जब मूसा अपने परिवार के साथ मद्यन नगर से मिस्र आ रहे थे और मार्ग भूल गये थे।

12. वास्तव में मैं ही तेरा पालनहार हूँ, तू उतार दे अपने दोनों जूते, क्योंकि तू पवित्रवादी (उपत्यका) "तुवा" में है।
13. और मैं ने तुझ को चुन^[1] लिया है। अतः ध्यान से सुन, जो वही की जा रही है।
14. निःसन्देह मैं ही अल्लाह हूँ मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, तो मेरी ही इबादत (वंदना) कर तथा मेरे स्मरण (याद) के लिये नमाज़ की स्थापना^[2] कर।
15. निश्चय प्रलय आने वाली है, मैं उसे गुप्त रखना चाहता हूँ, ताकि प्रतिकार (बदला) दिया जाये, प्रत्येक प्राणी को उस के प्रयास के अनुसार।
16. अतः तुम को न रोक दे, उस (के विश्वास) से, जो उस पर ईमान (विश्वास) नहीं रखता, और जिस ने अनुसरण किया हो अपनी इच्छा का। अन्यथा तेरा नाश हो जायेगा।
17. और हे मूसा! यह तेरे दाहिने हाथ में क्या है?
18. उत्तर दिया: यह मेरी लाठी है, मैं इस पर सहारा लेता हूँ तथा इस से अपनी बकरियों के लिये पत्ते झाड़ता हूँ तथा मेरी इस में दूसरी आवश्यकतायें (भी) हैं।
19. कहा: उसे फेंकिये, हे मूसा!

إِنِّي أَنَا رَبُّكَ فَاحْكُم بَعْلِيكَ أَنتَ بِالْوَالِدِ
الْمُعَدِّسِ طَوَّى ①

وَأَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوحَى ②

إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي وَأَقِمِ
الصَّلَاةَ لِذِكْرِي ③

إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِلَّذِينَ عَمِلُوا
سُوءًا بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ④

فَلَا يَصُدُّكَ عَنْهَا مَنْ لَابِسُ مِنَهَا أُنثَىٰ هَوَاهُ
فَكُرْدِي ⑤

وَأَتَاكَ بِمِجْدِكَ يُوسَىٰ ⑥

قَالَ هِيَ عَصَايَ أَتَوَكَّلُ عَلَيْهَا فَاِئْتِنِي بِهَا
عَلَىٰ ذِي قُرْبَىٰ مَا رَبُّ الْأُخْرَىٰ ⑦

قَالَ أَلْقِهَا يُّوسَىٰ ⑧

1 अर्थात् नबी बना दिया।

2 इबादत में नमाज़ सम्मिलित है, फिर भी उस का महत्व दिखाने के लिये उस का विशेष आदेश दिया गया है।

20. तो उस ने उसे फेंक दिया, और सहसा वह एक सर्प थी, जो दौड़ रहा था।
21. कहा: पकड़ ले इस को, और डर नहीं, हम उसे फेर देंगे उस की प्रथम स्थिति की ओर।
22. और अपना हाथ लगा दे अपनी कांख (बगल) की ओर, वह निकलेगा चमकता हुआ बिना किसी रोग के, यह दूसरा चमत्कार है।
23. ताकि हम तुझे दिखायें, अपनी बड़ी निशानियाँ।
24. तुम फिरऔन के पास जाओ, वह विद्रोही हो गया है।
25. मूसा ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! खोल दे, मेरे लिये मेरा सीना।
26. तथा सरल कर दे, मेरे लिये मेरा काम।
27. और खोल दे, मेरी जुबान की गाँठ।
28. ताकि लोग मेरी बात समझें।
29. तथा बना दे, मेरा एक सहायक मेरे परिवार में से।
30. मेरे भाई हारून को।
31. उस के द्वारा दृढ़ कर दे मेरी शक्ति को।
32. और साझी बना दे, उसे मेरे काम में।
33. ताकि हम दोनों तेरी पवित्रता का गान अधिक करें।

فَالْقَهْمَ إِذْ أَذَاهِ حَيَّةٌ تَسْعَى ①

قَالَ خُذْهَا وَأَلْخَفْ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولَى ②

وَأَضْمِرْ يَدَكَ إِلَى جَنَاحِكَ تَخْوِبُ بِيضَةً مِنْ غَيْرِ
سُوءِ الْيَأْسِ الْآخَرَى ③

لِنُرِيكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَى ④

إِذْ هَبَّ إِلَى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَى ⑤

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ⑥

وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ⑦

وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي ⑧

يَفْقَهُوا قَوْلِي ⑨

وَاجْعَلْ لِي وَزِيرًا مِنْ أَهْلِي ⑩

هُرُونَ أَخِي ⑪

اسْتَدْبِرْ بِي أَمْرِي ⑫

وَاشْرِكْهُ فِي أَمْرِي ⑬

لِيُسَبِّحَكَ كَثِيرًا ⑭

34. तथा तुझे अधिक स्मरण (याद) करें।
35. निःसन्देह तू हमें भली प्रकार देखने भालने वाला है।
36. अल्लाह ने कहा: हे मूसा! तेरी सब माँग पूरी कर दी गयीं।
37. और हम उपकार कर चुके हैं तुम पर एक बार और^[1] (भी)।
38. जब हम ने उतार दिया तेरी माँ के दिल में जिस की वही (प्रकाशना) की जा रही है।
39. कि इसे रख दे ताबूत (सन्दूक) में, फिर उसे नदी में डाल दे, फिर नदी उसे किनारे लगा देगी, जिसे उठा लेगा मेरा शत्रु तथा उस का शत्रु^[2], और मैं ने डाल दिया तुझ पर अपनी ओर से विशेष^[3] प्रेम ताकि तेरा पालन-पोषण मेरी रक्षा में हो।
40. जब चल रही थी तेरी बहन^[4], फिर कह रही थी: क्या मैं तुम्हें उसे बता दूँ, जो इस का लालन-पालन करे? फिर हम ने पुनः तुम्हें पहुँचा दिया तुम्हारी माँ के पास, ताकि उस की आँख ठण्डी हो, और उदासीन न हो। तथा हे मूसा! तू ने मार दिया एक व्यक्ति को, तो हम ने तुझे मुक्त कर

وَنذَكُرَكَ كَثِيرًا ۝

إِنَّكَ كُنْتَ بِمَا بَصِيرًا ۝

قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يَا مُوسَى ۝

وَلَقَدْ مَدَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَى ۝

إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ مَا يُوحَىٰ ۝

إِن أَرَادْتَ فِي التَّابُوتِ فَاقْدِرْ فِيهِ فِي الْيَوْمِ
فَلْيَلْقِهِ الْبِعْرُ بِالسَّاحِلِ يَأْخُذُهُ عَدُوٌّ وَعَدُوٌّ
لَهُ وَالْقَيْتُ عَلَيْكَ حَبَّةٌ مِّمَّنِيَّةٌ وَلِصْنَعِ عَلِيٍّ
عَيْنِي ۝

إِذْ تَبَسَّيْتُ لُحْنَتِكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَن
يَكْفُلُهُ فَرَجَعْنَاكَ إِلَىٰ أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا
وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَوَقَلْتُمْ نَفْسًا فَبَيِّنْتَكَ مِنَ الْعَوْرِ
وَقَدَّمْنَاكَ قُدُومًا فَلْيَدِّتْ سِنِينَ فِي أَهْلِ
مَدْيَنَ ۚ ثُمَّ جِئْتَ عَلَيَّ قَدِيرًا يَا مُوسَىٰ ۝

- 1 यह उस समय की बात है जब मूसा का जन्म हुआ। उस समय फिरऔन का आदेश था कि बनी इस्राईल में जो भी शिशु जन्म ले, उसे बध कर दिया जाये।
- 2 इस से तात्पर्य मिस्र का राजा फिरऔन है।
- 3 अर्थात् तुम्हें सब का प्रिय अथवा फिरऔन का भी प्रिय बना दिया।
- 4 अर्थात् सन्दूक के पीछे नदी के किनारे।

दिया चिन्ता^[1] से। और हम ने तेरी भली-भाँति परीक्षा ली। फिर तू रह गया वर्षाँ मद्यन के लोगों में, फिर तू (मद्यन से) अपने निश्चित समय पर आ गया।

41. और मैं ने बना लिया है तुझे विशेष अपने लिये।
42. जा तू और तेरा भाई मेरी निशानियाँ ले कर, और दोनों आलस्य न करना मेरे स्मरण (याद) में।
43. तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ, वास्तव में वह उल्लंघन कर गया है।
44. फिर उस से कोमल बोल बोलो, कदाचित वह शिक्षा ग्रहण करे अथवा डरे।
45. दोनों ने कहा: हे हमारे पालनहार! हमें भय है कि वह हम पर अत्याचार अथवा अतिक्रमण कर दे।
46. उस (अल्लाह) ने कहा: तुम भय न करो, मैं तुम दोनों के साथ हूँ, सुनता तथा देखता हूँ।
47. तुम उस के पास जाओ, और कहो कि हम तेरे पालनहार के रसूल हैं। अतः हमारे साथ बनी इस्राईल को जाने दे, और उन्हें यातना न दे, हम तेरे पास तेरे पालनहार की निशानी लाये हैं, और शान्ति उस के लिये है,

وَاصْطَنَمْتُكَ لِنَفْسِي ۝

إِذْ هَبَّ أَنْتَ وَأَخُوكَ بِالْبَيْتِ وَلَا تَنْبِيأَنِي ذِكْرِي ۝

إِذْ هَبَّ إِلَى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَى ۝

فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لَّيْسَ بِالْعُلَّةِ يَنْزِكُ رَوَاحِشِي ۝

قَالَا رَبَّنَا إِنَّنَا نَخَافُ أَنْ يُفْرَطَ عَلَيْنَا أَوْ أَنْ يَطَّغَى ۝

قَالَ لَا تَخَافَا إِنَّنِي مَعَكُمَا أَسْمَعُ وَأَرَى ۝

فَأَنبِيَهُ فَقُولَا إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَا تَعَذِّبَهُمْ فَكَذَّبْنَاهُ بِآيَاتِنَا مِنْ رَبِّكَ وَالسَّلَامُ عَلَىٰ مَنْ آتَيْنَاهُ الْهُدَىٰ ۝

1 अर्थात् एक फिरऔनी को मारा और वह मर गया, तो तुम मद्यन चले गये, इस का वर्णन सूरह क़सस में आयेगा।

जो मार्ग दर्शन का अनुसरण करे।

48. वास्तव में हमारी ओर वही (प्रकाशना) की गई है कि यातना उसी के लिये है, जो झुठलाये और मुख फेरे।
49. उस ने कहा: हे मूसा! कौन है तुम दोनों का पालनहार?
50. मूसा ने कहा: हमारा पालनहार वह है जिस ने प्रत्येक वस्तु को उस का विशेष रूप प्रदान किया है, फिर मार्ग दर्शन^[1] दिया।
51. उस ने कहा: फिर उन की दशा क्या होनी है जो पूर्व के लोग हैं?
52. मूसा ने कहा: उस का ज्ञान मेरे पालनहार के पास एक लेख्य में सुरक्षित है, मेरा पालनहार न तो चूकता है और न^[2] भूलता है।
53. जिस ने तुम्हारे लिये धरती को बिस्तर बनाया है और तुम्हारे चलने के लिये उस में मार्ग बनाये हैं, और तुम्हारे लिये आकाश से जल बरसाया, फिर उस के द्वारा विभिन्न प्रकार की उपज निकालीं।
54. तुम स्वयं खाओ तथा अपने पशुओं को चराओ, वस्तुतः इस में बहुत सी निशानियाँ हैं बुद्धिमानों के लिये।

إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝

قَالَ فَمَنْ رَبُّكُمَا يَا مُوسَىٰ ۝

قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَىٰ ۝

قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ ۝

قَالَ عَلِمَهَا عِنْدَ رَبِّي فِي كِتَابٍ لَا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنْسَىٰ ۝

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَاسْلَكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتَّىٰ ۝

كُلُوا وَارْزُقُوا الْعَامَّةَ مِمَّا كَرِهْتُمْ فِي ذَلِكَ آيَاتٍ لِّأُولِي النُّعُولِ ۝

1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने प्रत्येक जीव जन्तु के योग्य उस का रूप बनाया है। और उस के जीवन की आवश्यकता के अनुसार उसे खाने पीने तथा निवास की विधि समझा दी है।

2 अर्थात् उन्होंने ने जैसा किया होगा, उन के आगे उन का परिणाम आयेगा।

55. इसी (धरती) से हम ने तुम्हारी उत्पत्ति की है, और उसी में तुम्हें वापिस ले जायेंगे, और उसी से तुम सब को पुनः^[1] निकालेंगे।
56. और हम ने उसे दिखा दी अपनी सभी निशानियाँ, फिर भी उस ने झुठला दिया और नहीं माना।
57. उस ने कहा: क्या तू हमारे पास इस लिये आया है कि हमें हमारी धरती (देश) से अपने जादू (के बल) से निकाल दे, हे मूसा?
58. फिर तो हम तेरे पास अवश्य इसी के समान जादू लायेंगे, अतः हमारे और अपने बीच एक समय निर्धारित कर ले, जिस के विरुद्ध न हम करेंगे और न तुम, एक खुले मैदान में।
59. मूसा ने कहा: तुम्हारा निर्धारित समय शोभा (उत्सव) का दिन^[2] है, तथा यह कि लोग दिन चढ़े एकत्रित हो जायें।
60. फिर फिरऔन लोट गया^[3], और अपने हथकण्डे एकत्र किये, और फिर आया।
61. मूसा ने उन (जादूगरों) से कहा: तुम्हारा विनाश हो! अल्लाह पर मिथ्या आरोप न लगाओ कि वह तुम्हारा किसी यातना द्वारा सर्वनाश कर दे, और वह निष्फल ही रहा है जिस ने मिथ्यारोपण किया।

وَمِمَّا خَلَقْنَاكُمْ فِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِمَّا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَى ﴿٥٥﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَاهُ الْبَيِّنَاتُ كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَإِنِّي

قَالَ أَجِئْتُنَا بِالسِّحْرِ حِينًا مِنْ أَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يَا مُوسَى ﴿٥٦﴾

فَلَمَّا آتَيْنَاكَ بِسِحْرٍ مِثْلِهِ فَأَجَعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا أَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمَ الزَّيْنَةِ وَإِنَّ تُخَشِّرُ النَّاسَ ضَعْفَى ﴿٥٩﴾

فَتَوَلَّى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهُ ثُمَّ أَتَى ﴿٦٠﴾

قَالَ لَهُمْ مُوسَى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا عَلَيَّ اللَّهُ كَذِبًا فَيُسْجَنَكُمْ بِذُنُوبٍ وَقَدْ خَابَ مِنْ أَفْتَرِي ﴿٦١﴾

1 अर्थात् प्रलय के दिन पुनः जीवित निकालेंगे।

2 इस से अभिप्राय उन का कोई वार्षिक उत्सव (मेले) का दिन था।

3 मूसा के सत्य को न मान कर, मुकाबले की तैयारी में व्यस्त हो गया।

62. फिर^[1] उन के बीच विवाद हो गया, और वे चुपके-चुपके गुप्त मंत्रणा करने लगे।
63. कुछ ने कहा: यह दोनों वास्तव में जादूगर हैं, दोनों चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी धरती से अपने जादू द्वारा निकाल दें, और तुम्हारी आदर्श प्रणाली का अन्त कर दें।
64. अतः अपने सब उपाय एकत्र कर लो, फिर एक पंक्ति में हो कर आ जाओ, और आज वही सफल हो गया जो ऊपर रहा।
65. उन्होंने ने कहा: हे मूसा! तू फेंकता है या पहले हम फेंके?
66. मूसा ने कहा: बल्कि तुम्हीं फेंको। फिर उन की रस्सियाँ तथा लाठियाँ उसे लग रही थीं कि उन के जादू (के बल) से दौड़ रही हैं।
67. इस से मूसा अपने मन में डर गया।^[2]
68. हम ने कहा: मत डर, तू ही ऊपर रहेगा।
69. और फेंक दे जो तेरे दायें हाथ में है, वह निगल जायेगा जो कुछ उन्होंने ने बनाया है। वह केवल जादू का स्वाँग बना कर लाये हैं। तथा जादूगर सफल नहीं होता जहाँ से आये।

فَتَنَّاكَ يَا مَرْيَمُ بِإِسْرَائِيلَ وَاسْمِ الْجَنَّةِ

قَالُوا إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ يُرِيدُونَ أَنْ يَخْرُجُوا مِنْ
أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمْ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝

فَأَجْمِعُوا كَيْدَكُمْ أَيَّتُوهَا فَمَتَّعْنَا قَوْمَ الْيَوْمِ
مَنْ اسْتَعْلَى ۝

قَالُوا يَا مُوسَى إِنَّا أَنْتَلْقَىٰ وَوَعَدْنَا لَنْكُونَ
أَوَّلَ ۝

قَالَ بَلْ أَلْقُوا فَأَذَابَهَا اللَّهُ وَعِظَتُهُمْ مُّجْتَلٍ إِلَيْهِ
مِنَ السِّحْرِ وَأَمْ لَا يُغْنِي عَنْهُمُ صِرْتُهُمْ أَن
يَقُولُوا هُمْ عَادِلُونَ ۝

فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّوسَى ۝

فَلَمَّا رَأَيْنَاهُ أَتَيْنَاهُ أَتًا مِنَ الْأَعْلَى ۝

وَأَلْقَىٰ مَا فِي يَمِينَيْهِ فَتَلَفَّتْ يَدَاكَ فَمَاصَ لَهُمَا
وَأَلْقَىٰ مَا فِي شِمَائِلَيْهِ فَتَلَفَّتْ يَدَاكَ فَمَاصَ لَهُمَا ۝

- 1 अर्थात् मूसा (अलैहिस्सलाम) की बात सुन कर उन में मतभेद हो गया। कुछ ने कहा कि यह नबी की बात लग रही है। और कुछ ने कहा कि यह जादूगर है।
- 2 मूसा अलैहिस्सलाम को यह भय हुआ कि लोग जादूगरों के धोखे में न आ जायें।

70. अन्ततः जादूगर सज्दे में गिर गये, उन्होंने ने कहा कि हम ईमान लाये हारून तथा मूसा के पालनहार पर।
71. फिरऔन बोला: क्या तुम ने उस का विश्वास कर लिया इस से पूर्व कि मैं तुम्हें आज्ञा दूँ वास्तव में वह तुम्हारा बड़ा (गुरू) है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है। तो मैं अवश्य कटवा दूँगा तुम्हारे हाथों तथा पावों को विपरीत दिशा^[1] से, और तुम्हें सूली दे दूँगा खजूर के तनों पर, तथा तुम्हें अवश्य ज्ञान हो जायेगा कि हम में से किस की यातना अधिक कड़ी तथा स्थायी है।
72. उन्होंने ने कहा: हम तुझे कभी उन खुली निशानियों (तर्कों) पर प्रधानता नहीं देंगे जो हमारे पास आ गयी है, और न उस (अल्लाह) पर जिस ने हमें पैदा किया है, तू जो करना चाहे कर ले, तू बस इसी संसारिक जीवन में आदेश दे सकता है।
73. हम तो अपने पालनहार पर ईमान लाये हैं, ताकि वह क्षमा कर दे हमारे लिये हमारे पापों को तथा जिस जादू पर तू ने हमें बाध्य किया, और अल्लाह सर्वोत्तम तथा अनन्त^[2] है।
74. वास्तव में जो जायेगा अपने पालनहार के पास पापी बन कर तो उसी के लिये नरक है, जिस में न

فَأَلْقَى السَّحْرَ سُجَّدًا قَالَ أَمَّا رَبِّ لَهْرُونَ
وَمُوسَى ۝

قَالَ امْتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ أَدْنِ لَكُمْ إِنَّهُ لَكَيْدٌ كَرِيمٌ
الَّذِي عَلَّمَكُمُ السَّحْرَ فَلَا تَقْطَعْنَ آيَاتِكُمْ وَارْجِعْكُمْ
مِنْ خَلْفِكُمْ وَلَا وُصَلِكُمْ فِي جُذُورِ النَّخْلِ
وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَا الْأَعْدَاءُ الْأَوْفَى ۝

قَالُوا لَنْ نُؤْمِرَ بِكَ عَلَىٰ مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ
وَالَّذِي قَطَرْنَا قَاطِئًا مَآبِنًا فَاقْضِ لَنَا
نَفْسِي هَذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝

إِنَّا أَمَّا رَبِّنَا لَيَغْفِرُ لَنَا خَطِيئَاتِنَا وَمَا أَكْرَهْتَنَا
عَلَيْهِ وَمِنَ السَّحْرِ وَاللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَى ۝

إِنَّهُ مَنْ يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ
لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ۝

1 अर्थात् दाहिना हाथ और बायाँ पैर अथवा बायाँ हाथ और दाहिना पैर।

2 और तेरा राज्य तथा जीवन तो साम्यिक है।

वह मरेगा और न जीवित रहेगा।^[1]

75. तथा जो उस के पास ईमान ले कर आयेगा, तो उन्हीं के लिये उच्च श्रेणियाँ होंगी।
76. स्थायी स्वर्ग जिन में नहरें बहती होंगी, जिस में सदावासी होंगे, और यही उस का प्रतिफल है जो पवित्र हो गया।
77. और हम ने मूसा की ओर वही की, कि रातों-रात चल पड़ मेरे भक्तों को ले कर, और उन के लिये सागर में सूखा मार्ग बना ले^[2], तुझे पा लिये जाने का कोई भय नहीं होगा और न डरेगा।
78. फिर उन का पीछा किया फिरऔन ने अपनी सेना के साथ, तो उन पर सागर छा गया जैसा कुछ छा गया।
79. और कुपथ कर दिया फिरऔन ने अपनी जाति को और सुपथ नहीं दिखाया।
80. हे इस्राईल के पुत्रो! हम ने तुम्हें मुक्त कर दिया तुम्हारे शत्रु से, और वचन दिया तुम्हें तूर पर्वत से दाहिनी^[3] ओर का, तथा तुम पर उतारा "मन्न" तथा "सल्वा"।^[4]
81. खाओ उन स्वच्छ चीजों में से जो

وَمَنْ يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَىٰ ﴿٥٠﴾

جَعَلْنَا عَدْنَ نَجْرِيٍّ وَمِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاؤُا مَنْ تَزَكَّىٰ ﴿٥١﴾

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنِ اسْرِ بِعِبَادِي فَاصْرَبْ لَهُمْ مَطَرِيًّا فِإِنِ الْبَحْرَ يَبِيسًا أَلَّا تَخْفَ دَرَكًا وَلَا تَخْشَىٰ ﴿٥٢﴾

فَاتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَبِجُودٍ ۖ فَغَشِيَهُمْ مِنَ الْيَمِّ مَاءٌ غَشِيَةٌ ۖ ﴿٥٣﴾

وَأَصْلَ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ وَمَاهِدَىٰ ﴿٥٤﴾

يَبْنِي إِسْرَائِيلَ قَدْ أَجْمَعْنَا لَكُمْ مِنْ عَدُوِّكُمْ وَوَعَدْنَا لَكُمْ جَنَّاتٍ الطُّورِ الْيَمِينِ وَتَزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ ﴿٥٥﴾

كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيهِ

1 अर्थात् उसे जीवन का कोई सुख नहीं मिलेगा।

2 इस का सविस्तार वर्णन सूरह शुअरा-26 में आ रहा है।

3 अर्थात् तुम पर तौरात उतारने के लिये।

4 मन्न तथा सल्वा के भाष्य के लिये देखिये: बकरा, आयत: 57।

जीविका हम ने तुम्हें दी है, तथा उल्लंघन न करो उस में, अन्यथा उतर जायेगा तुम पर मेरा प्रकोप। तथा जिस पर उतर जायेगा मेरा प्रकोप, तो निःसंदेह वह गिर गया।

82. और मैं निश्चय बड़ा क्षमाशील हूँ उस के लिये जिस ने क्षमा याचना की, तथा ईमान लाया और सदाचार किया फिर सुपथ पर रहा।
83. और हे मूसा! क्या चीज़ तुम्हें ले आई अपनी जाति से पहले? ^[1]
84. उस ने कहा: वे मेरे पीछे आ ही रहे हैं, और मैं तेरी सेवा में शीघ्र आ गया, हे मेरे पालनहार! ताकि तू प्रसन्न हो जाये।
85. अल्लाह ने कहा: हम ने परीक्षा में डाल दिया तेरी जाति को तेरे (आने के) पश्चात्, और कुपथ कर दिया है उन को सामरी ^[2] ने।
86. तो मूसा वापिस आया अपनी जाति की ओर अति क्रुद्ध-शोकातुर हो कर। उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! क्या तुम्हें वचन नहीं दिया था तुम्हारे पालनहार ने एक अच्छा वचन? ^[3] तो क्या तुम्हें बहुत दिन लग ^[4] गये?

فِيحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ وَمَنْ يَّحِلِّلْ عَلَيْهِ
غَضَبِيْ فَقَدْ هَوَىٰ ۝

وَإِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ
صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَىٰ ۝

وَمَا أَعْبَأكَ عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوسَىٰ ۝

قَالَ هُمْ أَوْلَاءٌ عَلَىٰ أَشْرَىٰ وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ
رَبِّ لِتَرْضَىٰ ۝

قَالَ فَإِنَّا كُنَّا قَوْمًا مِّنْ بَعْدِكَ
وَأَضَلَّهُمُ النَّاسُ ۝

فَرَجَعْنَا مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا
قَالَ يَقَوْمِ أَلَيْسَ لَكُمْ رَبُّكُمْ وَعَدَا حَسَنَةً أَفَطَالَ
عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ أَمْ أَرَدْتُمْ أَنْ يَحِلَّ عَلَيْكُمْ
غَضَبٌ مِّنْ رَبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُمُوهُ ۝

1 अर्थात् तुम पर्वत की दाहिनी ओर अपनी जाति से पहले क्यों आ गये और उन्हें पीछे क्यों छोड़ दिया?

2 सामरी बनी इस्राईल के एक व्यक्ति का नाम है।

3 अर्थात् धर्म-पुस्तक तौरात देने का वचन।

4 अर्थात् वचन की अवधि दीर्घ प्रतीत होने लगी।

अथवा तुम ने चाहा कि उतर जाये तुम पर कोई प्रकोप तुम्हारे पालनहार की ओर से? अतः तुम ने मेरे वचन^[1] को भंग कर दिया।

87. उन्होंने ने उत्तर दिया कि हम ने नहीं भंग किया है तेरा वचन अपनी इच्छा से, परन्तु हम पर लाद दिया गया था जाति^[2] के आभूषणों का बोझ, तो हम ने उसे फेंक^[3] दिया, और ऐसे ही फेंक^[4] दिया सामरी ने।

88. फिर वह^[5] निकाल लाया उन के लिये एक बछड़े की मूर्ति जिस की गाय जैसी ध्वनि (आवाज़) थी, तो सब ने कहा: यह है तुम्हारा पूज्य तथा मूसा का पूज्य, (परन्तु) मूसा इसे भूल गया है।

89. तो क्या वे नहीं देखते कि वह न उन की किसी बात का उत्तर देता है, और न अधिकार रखता है उन के लिये किसी हानि का न किसी लाभ का?^[6]

90. और कह दिया था हारून ने इस से पहले ही कि हे मेरी जाति के लोगो! तुम्हारी परीक्षा की गई है

قَالُوا مَا آخَلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِسُلْكِهَا وَلَكِنَّا جَاهِلُونَ أَوْزَارًا
مِنْ زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَدْ تَتَذَكَّرُكَ الْفَلْحَى
السَّامِرِيُّ ۝

فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا آلِهَةً خُورُوا بِهَا فَمَا أُولَٰئِكَ
إِلَّا هُمُومٌ وَاللَّهُ مُوسَىٰ ذُنُوبَهُ ۝

أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُرْجَعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا وَلَا تَبْلِيكَ
لَهُمْ صَرًّا وَلَا نَفْعًا ۝

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَارُونُ مِنْ قَبْلِ نَقُومِ آتَمَاتِنْتُمْ
بِهِ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَنُ فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوا أَمْرِي ۝

1 अर्थात् मेरे वापिस आने तक, अल्लाह की इबादत पर स्थिर रहने की जो प्रतिज्ञा की थी।

2 जाति से अभिप्रेत फिरऔन की जाति है, जिन के आभूषण उन्होंने ने उधार ले रखे थे।

3 अर्थात् अपने पास रखना नहीं चाहा, और एक अग्नि कुण्ड में फेंक दिया।

4 अर्थात् जो कुछ उस के पास था।

5 अर्थात् सामरी ने आभूषणों को पिघला कर बछड़ा बना लिया।

6 फिर वह पूज्य कैसे हो सकता है?

इस के द्वारा, और वास्तव में तुम्हारा पालनहार अत्यंत कृपाशील है। अतः मेरा अनुसरण करो तथा मेरे आदेश का पालन करो।

قَالُوا لَنْ نُؤَدِّعَكَ عَلَيْهِمْ حَتَّىٰ يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَىٰ ۝

91. उन्होंने ने कहा: हम सब उसी के पुजारी रहेंगे जब तक (तूर से) हमारे पास मूसा वापिस न आ जाये।

92. मूसा ने कहा: हे हारून! किस बात ने तुझे रोक दिया जब तू ने उन्हें देखा कि कुपथ हो गये?

قَالَ يَهُرُّونَ مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوا ۝

93. कि मेरा अनुसरण न करे? क्या तू ने अवैज्ञा कर दी मेरे आदेश की?

أَلَا تَتَّبِعُنَّ أَفْهَصَيْتَ أَمْرِي ۝

94. उस ने कहा: मेरे माँ जाये भाई! मेरी दाढ़ी न पकड़ और न मेरा सिर। वास्तव में मुझे भय हुआ कि आप कहेंगे कि तू ने विभेद उत्पन्न कर दिया बनी इस्राईल में, और^[1] प्रतीक्षा नहीं की मेरी बात (आदेश) की।

قَالَ يَبْنَؤُمْرًا تَأْخُذُ بِالْحَيْثِيَّ وَلَا يَرَأْسِي إِلَىٰ حَيْثِيذٌ أَنْ تَقُولَ قَوْلَ بَيْنَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَا تَرْجُبَ قَوْلِي ۝

95. (मूसा ने) पूछा: तेरा समाचार क्या है, हे सामरी?

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يَا مَرْيَمُ ۝

96. उस ने कहा: मैं ने वह चीज़ देखी जिसे उन्होंने ने नहीं देखा, तो मैं ने ले ली एक मुट्ठी रसूल के पदचिन्ह से, फिर उसे फेंक दिया, और इसी प्रकार सुझा दिया मुझे^[2] मेरे मन ने।

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهِ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ أَكْرَاسِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَلِكَ سَوَّلَتْ لِي نَفْسِي ۝

1 (देखिये: सूरह आराफ़, आयत: 142)

2 अधिकांश भाष्यकारों ने रसूल से अीभप्राय जिब्रील (फरिश्ता) लिया है। और अर्थ यह है कि सामरी ने यह बात बनाई कि जब उस ने फिरऔन और उस की सेना के डूबने के समय जिब्रील (अलैहिस्सलाम) को घोड़े पर सवार वहाँ देखा तो उन के घोड़े के पदचिन्ह की मिट्टी रख ली। और जब सोने का बछड़ा

97. मूसा ने कहा: जा तेरे लिये जीवन में यह होना है कि तू कहता रहे: मुझे स्पर्श न करना।^[1] तथा तेरे लिये एक और^[2] वचन है जिस के विरुद्ध कदापि न होगा, और अपने पूज्य को देख जिस का पुजारी बना रहा, हम अवश्य उसे जला देंगे, फिर उसे उड़ा देंगे नदी में चूर-चूर कर के।

98. निःसंदेह तुम सभी का पूज्य बस अल्लाह है, कोई पूज्य नहीं है उस के सिवा। वह समोये हुये है प्रत्येक वस्तु को (अपने) ज्ञान में।

99. इसी प्रकार (हे नबी!) हम आप के समक्ष विगत समाचारों में से कुछ का वर्णन कर रहे हैं, और हम ने आप को प्रदान कर दी है अपने पास से एक शिक्षा (कुर्आन)।

100. जो उस से मुँह फेरेगा तो वह निश्चय प्रलय के दिन लादे हुये होगा भारी^[3] बोझ।

101. वे सदा रहने वाले होंगे उस में, और प्रलय के दिन उन के लिये बुरा बोझ होगा।

قَالَ فَادْهَبْ وَإِن لَّكَ فِي الْحَيَاةِ أَنْ تَقُولَ لَا
مَسَاسَ وَإِن لَّكَ مَوْعِدًا لَّنْ مُخْتَلَفَةً وَأَنْظُرْ إِلَى
الهِمَّكَ الَّذِي ظَلَمْتَ عَلَيْهِ عَاكِمًا لِّلْمَعْرُوفَةِ ثُمَّ
لَنَنْسِفَنَّ فِي الْيَوْمِ نَسْفًا ۝

إِنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ الَّذِي لَّا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝

كَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ
وَقَدْ آتَيْنَاكَ مِنْ كُنُوزِنَا ذِكْرًا ۝

مَنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وِزْرًا ۝

خَلْقَيْنَ فِيهِ وِزْرًا لَّهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حِمْلًا ۝

बना कर उस धूल को उस पर फेंक दिया तो उस के प्रभाव से उस में से एक प्रकार की आवाज़ निकलने लगी जो उन के कुपथ होने का कारण बनी।

1 अर्थात् मेरे समीप न आना और न मुझे छूना, मैं अछूत हूँ।

2 अर्थात् परलोक की यातना का।

3 अर्थात् पापों का बोझ।

102. जिस दिन फूंक दिया जायेगा सूर^[1] (नरसिंघा) में, और हम एकत्र कर देंगे पापियों को उस दिन इस दशा में कि उन की आँखें (भय से) नीली होंगी।
103. वे आपस में चुपके-चुपके कहेंगे कि तुम (संसार में) बस दस दिन रहे हो।
104. हम भली-भाँति जानते हैं, जो कुछ वह कहेंगे, जिस समय कहेगा उन में से सब से चतुर कि तुम केवल एक ही दिन रहे^[2] हो।
105. वे आप से प्रश्न कर रहे हैं पर्वतों के संबन्ध में? आप कह दें कि उड़ा देगा उन्हें मेरा पालनहार चूर-चूर कर के।
106. फिर धरती को छोड़ देगा समतल मैदान बना कर।
107. तुम नहीं देखोगे उस में कोई टढ़ापन और न नीच-ऊँचा।
108. उस दिन लोग पीछे चलेंगे पुकारने वाले के, कोई उस से कतरायेगा नहीं, और धीमी हो जायेंगी आवाजें अत्यंत कृपाशील के लिये, फिर तुम नहीं सुनोगे कानाफूँसी की आवाज़ के सिवा।

يَوْمَ يَفْعَقُ فِي الصُّورِ نَحْشُ الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ
زُرُقَاتٌ

يَتَخَفَتُونَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَيْسَ لَنَا إِلَّا عَرَسٌ ۝

مَنْ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً
إِنْ لَيْسَ لَنَا إِلَّا يَوْمَانٌ ۝

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ۝

يَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۝

لَا تَرَى فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ۝

يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لِمَ كَرَجَتْ لَهُ وَخَشَعَتِ
الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ۝

- 1 «सूर» का अर्थ नरसिंघा है, जिस में अल्लाह के आदेश से एक फ़रिश्ता इसाफ़ील अलैहिस्सलाम फूकेगा, और प्रलय आ जायेगी। (मुस्तद अहमद: 2191) और पुनः फूकेगा तो सब जीवित हो कर हश्र के मैदान में आ जायेंगे।
- 2 अर्थात् उन्हें संसारिक जीवन क्षण दो क्षण प्रतीत होगा।

109. उस दिन लाभ नहीं देगी सिफारिश परन्तु जिसे आज्ञा दे अत्यंत कृपाशील, और प्रसन्न हो उस के^[1] लिये बात करने से।
110. वह जानता है जो कुछ उन के आगे तथा पीछे है, और वे उस का पूरा ज्ञान नहीं रखते।
111. तथा सभी के सिर झुक जायेंगे जीवित नित्य स्थायी (अल्लाह) के लिये। और निश्चय वह निष्फल हो गया जिस ने अत्याचार लाद^[2] लिया।
112. तथा जो सदाचार करेगा और वह ईमान वाला भी हो, तो वह नहीं डरेगा अत्याचार से न अधिकार हनन से।
113. और इसी प्रकार हम ने इस अर्बी कुर्आन को अवतरित किया है तथा विभिन्न प्रकार से वर्णन कर दिया है उस में चेतावनी का, ताकि लोग आज्ञाकारी हो जायें अथवा वह उन के लिये उत्पन्न कर दे एक शिक्षा।
114. अतः उच्च है अल्लाह वास्तविक स्वामी। और (हे नबी!) आप शीघ्रता^[3] न करें कुर्आन के साथ इस से पूर्व कि पूरी कर दी

يَوْمَئِذٍ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ
وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ۝

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ
بِهِ عِلْمًا ۝

وَعَدَّتِ الْجُودَةُ لِلْحَيِّ الْقَبُورِ وَقَدْ خَابَ مَنْ
حَمَلَ ظُلْمًا ۝

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الظُّلُمَاتِ لَهُ مُمُورٌ فَلَا يَخِفُ
ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ۝

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا وَصَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ
الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحَدِّثُ كَمَا حَسَدُوا ۝

فَتَعَلَّى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْآنِ مِنْ
قَبْلِ أَنْ يُقْضَىٰ إِلَيْكَ وَحْيُهُ وَقُلْ رَبِّ زِدْنِي
عِلْمًا ۝

1 अर्थात् जिस के लिये सिफारिश कर रहा है।

2 संसार में किसी पर अत्याचार, तथा अल्लाह के साथ शिर्क किया हो।

3 जब जिबरील अलैहिस्सलाम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास वही (प्रकाशना) लाते, तो आप इस भय से कि कुछ भूल न जाये, उन के साथ साथ ही पढ़ने लगते। अल्लाह ने आप को ऐसा करने से रोक दिया। इस का वर्णन सूरह कियामा, आयत: 75 में आ रहा है।

जाये आप की ओर इस की वही (प्रकाशना)। तथा प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार! मुझे अधिक ज्ञान प्रदान कर।

115. और हम ने आदेश दिया आदम को इस से पहले, तो वह भूल गया, और हम ने नहीं पाया उस में कोई दृढ़ संकल्प।^[1]

وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلِ فَتَسَىٰ وَلَمْ يَحْدَ
لَهُ عَزْمًا ۝

116. तथा जब हम ने कहा फ़रिश्तों से कि सज्दा करो आदम को, तो सब ने सज्दा किया इब्लीस के सिवा, उस ने इन्कार कर दिया।

وَأَذُنَّا لِلْمَلَائِكَةِ السُّجُودَ وَالْإِدْمَ فَسَجَدُوا
إِلَّا إِبْلِيسَ ابْنًا ۝

117. तब हम ने कहा: हे आदम! वास्तव में यह शत्रु है तेरा तथा तेरी पत्नी का, तो ऐसा न हो कि तुम दोनों को निकलवा दे स्वर्ग से और तू आपदा में पड़ जाये।

فَعَلْنَا آدَمَ إِنَّ هَذَا عَدُوٌّ لَكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا
يُخْرِجُكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْفَىٰ ۝

118. यहाँ तुझे यह सुविधा है कि न भूखा रहता है और न नग्न रहता है।

إِنَّ لَكَ الْأَتَجُوعَ فِيهَا وَلَا تَعْرَىٰ ۝

119. और न प्यासा होता है और न तुझे धूप सताती है।

وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَصْحَىٰ ۝

120. तो फुसलाया उसे शैतान ने, कहा: हे आदम! क्या मैं तुझे न बताऊँ शाश्वत जीवन का वृक्ष तथा ऐसा राज्य जो पतनशील न हो?

فَوَسَّوَسَ إِلَيْهِ الشَّيْطَانُ قَالَ يَا آدَمُ هَلْ أَدُلُّكَ
عَلَىٰ شَجَرَةٍ الْخُلْدِ وَمَلَكَ لَكَ ابْنًا ۝

121. तो दोनों ने उस (वृक्ष) से खा लिया, फिर उन के गुप्तांग उन दोनों के लिये खुल गये और दोनों चिपकाने

فَاكَلَا مِنْهَا فَأَبَدَّتْ لهُمَا سُرَّتُهُمَا وَطَفِقَا
يَخْفِسُنَ عَلَيْهِمَا مِنْ وَرَقِ الْجَنَّةِ وَعَصَىٰ آدَمُ

1 अर्थात् वह भूल से शैतान की बात में आ गया, उस ने जानबूझ कर हमारे आदेश का उल्लंघन नहीं किया।

लगे अपने ऊपर स्वर्ग के पत्ते।
और आदम अवज्ञा कर गया अपने
पालनहार की और कुपथ हो गया।

122. फिर उस (अल्लाह) ने उसे चुन
लिया और उसे क्षमा कर दिया और
सुपथ दिखा दिया।

123. कहा: तुम दोनों (आदम तथा
शैतान) यहाँ से उतर जाओ, तुम
एक दूसरे के शत्रु हो। अब यदि आये
तुम्हारे पास मेरी ओर से मार्गदर्शन
तो जो अनुपालन करेगा मेरे
मार्गदर्शन का, वह कुपथ नहीं होगा
और न दुर्भाग्य ग्रस्त होगा।

124. तथा जो मुख फेर लेगा मेरे स्मरण
से, तो उसी का संसारिक जीवन
संकीर्ण (तंग)^[1] होगा, तथा हम
उसे उठायेंगे प्रलय के दिन अन्धा
कर के।

125. वह कहेगा: मेरे पालनहार! मुझे
अन्धा क्यों उठाया, मैं तो (संसार
में) आँखों वाला था?

126. अल्लाह कहेगा: इसी प्रकार तेरे पास
हमारी आयतें आयीं तो तू ने उन्हें
भुला दिया। अतः इसी प्रकार आज तू
भुला दिया जायेगा।

127. तथा इसी प्रकार हम बदला देते हैं
उसे जो सीमा का उल्लंघन करे,
और ईमान न लाये अपने पालनहार

رَبِّهِ فَعَوَى ۝

ثُمَّ اجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَاهُ ۝

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جُجِبِعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ
فَأَمَّا آيَاتِنَا فَكُلَّمَا هَدَىٰ فَكَمِنَ النَّاسُ هَذَا
فَلَا يَصِلُ وَلَا يَشْفَىٰ ۝

وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً
ضَنْكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَعْمَىٰ ۝

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَىٰ وَقَدْ كُنْتُ بَصِيرًا ۝

قَالَ كَذَلِكَ أَتَتْكَ آيَاتُنَا فَنَسِيْتَهَا وَكَذَلِكَ الْيَوْمِ
تُنْفَىٰ ۝

وَكَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ أَسْرَفَ وَلَوْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ رَبِّهِ
وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَدُّ وَأَبْغَىٰ ۝

1 अर्थात् वह संसार में धनी हो तब भी उसे संतोष नहीं होगा। और सदा चिन्तित और व्याकुल रहेगा।

की आयतों पर। और निश्चय आखिरत की यातना अति कड़ी तथा अधिक स्थायी है।

128. तो क्या उन्हें मार्ग दर्शन नहीं दिया इस बात ने कि हम ने ध्वस्त कर दिया इन से पहले बहुत सी जातियों को, जो चल फिर-रही थी अपनी बस्तियों में, निःसंदेह इस में निशानियाँ हैं बुद्धिमानों के लिये।
129. और यदि एक बात पहले से निश्चित न होती आप के पालनहार की ओर से, तो यातना आ चुकी होती, और एक निर्धारित समय न होता।^[1]
130. अतः आप सहन करें उन की बातों को तथा अपने पालनहार की पवित्रता का वर्णन उस की प्रशंसा के साथ करते रहें सूर्योदय से पहले^[2] तथा सूर्यास्त से^[3] पहले, तथा रात्रि के क्षणों^[4] में और दिन के किनारों^[5] में, ताकि आप प्रसन्न हो जायें।
131. और कदापि न देखिये आप उस आनन्द की ओर जो हम ने उन^[6] में से विभिन्न प्रकार के लोगों को दे रखा

أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمَا هَدَيْنَا قَبْلَهُمْ مِنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسْجِدِهِمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي الْأَبْصَارِ

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَكَانَ لِزِمَامِ الْجَنَّةِ آسَافًا
مُّسَكِّيًا

فَأَصْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ
الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا وَمِنْ آنَا إِلَى الْوَيْلِ الْمَبِيِّمِ
وَأَطْرَافِ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضَى

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَى مَا مَتَّعْتَابِهِمْ زَوَاجًا
مِّمَّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لِنَفْسِهِمْ فَبِئْسَ

1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह का यह निर्णय है कि वह किसी जाति का उस के विरुद्ध तर्क तथा उस की निश्चित अवधि पूरी होने पर ही विनाश करता है, यदि यह बात न होती तो इन मक्का के मिश्रणवादियों पर यातना आ चुकी होती।

- 2 अर्थात् फ़ज़ की नमाज़ में।
3 अर्थात् अस्त्र की नमाज़ में।
4 अर्थात् इशा की नमाज़ में।
5 अर्थात् जुहर तथा मग़रब की नमाज़ में।
6 अर्थात् मिश्रणवादियों में से।

है, वह संसारिक जीवन की शोभा है, ताकि हम उन की परीक्षा लें, और आप के पालनहार का प्रदान^[1] ही उत्तम तथा अति स्थायी है।

132. और आप अपने परिवार को नमाज़ का आदेश दें, और स्वयं भी उस पर स्थित रहें, हम आप से कोई जीविका नहीं मांगते, हम ही आप को जीविका प्रदान करते हैं। और अच्छा परिणाम आज्ञाकारियों के लिये है।

133. तथा उन्होंने कहा: क्यों वह हमारे पास कोई निशानी अपने पालनहार की ओर से नहीं लाता? क्या उन के पास उस का प्रत्यक्ष प्रमाण (कुर्आन) नहीं आ गया जिस में अगली पुस्तकों की (शिक्षायें) हैं?

134. और यदि हम ध्वस्त कर देते उन्हें किसी यातना से इस से^[2] पहले, तो वे अवश्य कहते कि हे हमारे पालनहार! तू ने हमारी ओर कोई रसूल क्यों नहीं भेजा कि हम तेरी आयतों का अनुपालन करते इस से पहले कि हम अपमानित और हीन होते।

135. आप कह दें कि प्रत्येक, (परिणाम की) प्रतीक्षा में है। अतः तुम भी प्रतीक्षा करो, शीघ्र ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कौन सीधी राह वाले हैं, और किस ने सीधी राह पाई है।

وَرَزَقُ رَبِّكَ حَيْرٌ وَأَبْقَى ۝

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا
لَا تَسْأَلُكَ رِزْقًا نَحْنُ نَرْزُقُكَ وَالْعَاقِبَةُ
لِلتَّقْوَى ۝

وَقَالُوا لَوْلَا يَا تَيْم يَا بَايَةَ مِنْ رَبِّهِ أَوْلَمُ تَأْتِيهِمْ
بَيِّنَةٌ مِّنَ السَّمْعِ الْأُولَى ۝

وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُمْ بِعَذَابٍ مِّن قَبْلِهِ لَقَالُوا
رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعُ آلِيبِكَ
مِن قَبْلِ أَنْ نَقْدَلَ وَنَخْزَى ۝

قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوا ۚ فَسْتَعْلَمُونَ
مَنْ أَصْحَابُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَى ۝

1 अर्थात् परलोक का प्रतिफल।

2 अर्थात् नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और कुर्आन के आने से पहले।

सूरह अम्बिया - 21



सूरह अम्बिया के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 112 आयतें हैं।

इस सूरह में अनेक नबियों की चर्चा के कारण इस का नाम «अम्बिया» है।

- इस में बताया गया है कि सभी नबियों ने अपनी जातियों को बराबर यह शिक्षा दी कि उन्हें अल्लाह के लिये अपने कर्मों का उत्तर देना है फिर भी वह संभलने के बजाये विरोध ही करते रहे और अल्लाह की सहायता सदा नबियों के साथ रही।
- यह भी बताया गया है कि अल्लाह ने संसार को खेल के लिये नहीं बनाया है बल्कि सत्य और असत्य के बीच संघर्ष के लिये बनाया है।
- इस में तौहीद का वर्णन है जो सभी नबियों का संदेश था। और रिसालत से संबंधित संदेशों का जवाब किया गया है तथा रसूलों का उपहास करने वालों को चेतावनी दी गई है।
- नबियों की शिक्षाओं और उन पर अल्लाह के अनुग्रह और दया को दिखाया गया है।
- अन्त में विरोधियों को यातना की धमकी तथा ईमान वालों को शुभसूचना दी गई है। और यह बताया गया है कि नबियों को भेजना संसार वासियों के लिये सर्वथा दया है, और उन का अपमान करना स्वयं अपने ही लिये हानिकारक है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. समीप आ गया है लोगों के हिसाब^[1] का समय, जब कि वे अचेतना में मुँह फेरे हुये हैं।

اقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ مُّعْرِضُونَ

1 अर्थात् प्रलय का समय, फिर भी लोग उस से अचेत माया मोह में लिप्त हैं।

2. नहीं आती उन के पास उन के पालनहार की ओर से कोई नई शिक्षा^[1], परन्तु उसे सुनते हैं और खेलते रह जाते हैं।
3. निश्चेत हैं उन के दिल, और उन्होंने ने चुपके-चुपके आपस में बातें की जो अत्याचारी हो गये: यह (नबी) तो बस एक पुरुष है तुम्हारे समान, तो क्या तुम जादू के पास जाते हो जब कि तुम देखते हो?^[2]
4. आप कह दें कि मेरा पालनहार जानता है प्रत्येक बात को जो आकाश तथा धरती में है। और वह सब सुनने जानने वाला है।
5. बल्कि उन्होंने ने कह दिया कि यह^[3] बिखरे स्वप्न हैं। बल्कि उस (नबी) ने इसे स्वयं बना लिया है, बल्कि वह कवि है। अन्यथा उसे चाहिये कि हमारे पास कोई निशानी ला दे जैसे पूर्व के रसूल (निशानियों के साथ) भेजे गये।
6. नहीं ईमान^[4] लायी इन से पहले कोई बस्ती जिस का हम ने विनाश किया, तो क्या यह ईमान लायेंगे?
7. और (हे नबी!) हम ने आप से पहले

مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنْ رَبِّهِمْ مُحَدَّثٍ إِلَّا اسْتَمَعُوهُ
وَهُمْ يَسْتَعْبِئُونَ

لَاهِيَةٍ قُلُوبُهُمْ وَاسْرُؤُا الْعَجُوزِ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَهْلَ
هَذَا الْأَنْبِيَاءِ مِثْلَكُمْ أَفَتَأْتُونَ السَّحْرَ وَأَنْتُمْ
تُبْصِرُونَ

قُلْ رَبِّي يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

بَلْ قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ بَلْ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ
شَاعِرٌ قَلِيلًا يَتَّبِعُ آيَاتِهِ مَا أَرْسِلُ إِلَّا رُسُلًا

مَا أَمَدَّتْ قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ أَهْلَكْنَاهَا أَفَهُمْ يُؤْمِنُونَ

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلَّا رُسُلًا نَحْنُ الْيَوْمَ

1 अर्थात् कुर्आन की कोई आयत अवतरित होती है तो उस में चिन्तन और विचार नहीं करते।

2 अर्थात् यह कि वह तुम्हारे जैसा मनुष्य है, अतः इस का जो भी प्रभाव है वह जादू के कारण है।

3 अर्थात् कुर्आन की आयतों।

4 अर्थात् निशानियाँ देख कर भी ईमान नहीं लायी।

मनुष्य पुरुषों को ही रसूल बना कर भेजा, जिन की ओर वही भेजते रहे। फिर तुम ज्ञानियों^[1] से पूछ लो, यदि तुम (स्वयं) नहीं^[2] जानते हो।

فَسَأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَاعْلَمُونَ ۝

8. तथा नहीं बनाये हम ने उन के ऐसे शरीर^[3] जो भोजन न करते हों। तथा न वे सदावासी थे।

وَمَا جَعَلْنَاهُمْ جَسَدًا آلَا يَأْكُلُونَ الطَّعَامَ
وَمَا كَانُوا خَالِدِينَ ۝

9. फिर हम ने पूरे कर दिये उन से किये हुये वचन, और हम ने बचा लिया उन्हें, और जिसे हम ने चाहा। और विनाश कर दिया उल्लंघनकारियों का।

لَوْ صَدَقْتَهُمْ الْوَعْدَ فَأُجِيبْنَاهُمْ وَمَنْ نَشَاءُ وَأَهْلَكْنَا
الْمُسْرِفِينَ ۝

10. निःसंदेह हम ने उतार दी है तुम्हारी ओर एक पुस्तक (कुरआन) जिस में तुम्हारे लिये शिक्षा है। तो क्या तुम समझते नहीं हो?

لَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ كِتَابًا فِيهِ ذِكْرُكُمْ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

11. और हम ने तोड़ कर रख दिया बहुत सी बस्तियों को जो अत्याचारी थीं, और हम ने पैदा कर दिया उन के पश्चात् दूसरी जाति को।

وَكَمْ قَصَبْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَأَنْشَأْنَا
بَعْدَهَا قَوْمًا آخَرِينَ ۝

12. फिर जब उन्हें संवेदन हो गया हमारे प्रकोप का, तो अकस्मात् वहाँ से भागने लगे।

فَلَمَّا أَحْسَبُوا أَنَّنَا إِذَا هُمْ مِمَّا يُكْذَبُونَ ۝

13. (कहा गया) भागो नहीं। तथा तुम वापिस जाओ जिस सुख-सुविधा में थे, तथा अपने घरों की ओर, ताकि

لَا تَرْجِعُوا وَارْجِعُوا إِلَىٰ مَا أَنْتُمْ فِيهِ وَسَمِكْتُمْ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

1 अर्थात् आदि आकाशीय पुस्तकों के ज्ञानियों से।

2 देखिये: सूरह नहल, आयत: 43।

3 अर्थात् उन में मनुष्य की ही सब विशेषताएँ थीं।

तुम से पूछा^[1] जाये।

14. उन्हीं ने कहा: हाय हमारा विनाश! वास्तव में हम अत्याचारी थे।
15. और फिर बराबर यही उन की पुकार रही यहाँ तक कि हम ने बना दिया उन्हें कटी खेती के समान बुझे हुये।
16. और हम ने नहीं पैदा किया है आकाश और धरती को तथा जो कुछ दोनों के बीच है खेल के लिये।
17. यदि हम कोई खेल बनाना चाहते तो उसे अपने पास ही से बना^[2] लेते, यदि हमें यह करना होता।
18. बल्कि हम मारते हैं सत्य से असत्य पर, तो वह उस का सिर कुचल देता है, और वह अकस्मात समाप्त हो जाता है, और तुम्हारे लिये विनाश है उन बातों के कारण जो तुम बनाते हो।
19. और उसी का है जो आकाशों तथा धरती में है, और जो फरिश्ते उस के पास हैं वे उस की इबादत (वंदना) से अभिमान नहीं करते, और न थकते हैं।
20. वे रात और दिन उस की पवित्रता का गान करते हैं, तथा आलस्य नहीं करते।

قَالُوا وَيَوْمَئِذٍ أَتَاكُمْ مَخْلَبِينَ ۝

فَمَا زِلْتُمْ تِلْكَ دَعْوَاهُمْ حَتَّىٰ جَعَلْنَاهُمْ حَصِيدًا خُمُودِينَ ۝

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا الْغَيْبِينَ ۝

لَوْ أَرَدْنَا أَنْ نَتَّخِذَ لَهُمُ الْآرَئِدْنَ لَهُ مِنْ كُدَّائِهِ إِنَّ كُنَّا لَفَاعِلِينَ ۝

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدَّبَغُهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُونَ ۝

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ عِنْدَهُ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ۝

يُسَبِّحُونَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُونَ ۝

1 अर्थात् यह कि यातना आने पर तुम्हारी क्या दशा हुयी?

2 अर्थात् इस विशाल विश्व के बनाने की आवश्यकता न थी। इस आयत में यह बताया जा रहा है कि इस विश्व को खेल नहीं बनाया गया है। यहाँ एक साधारण नियम काम कर रहा है। और वह सत्य और असत्य के बीच संघर्ष का नियम है। अर्थात् यहाँ जो कुछ होता है वह सत्य की विजय और असत्य की पराजय के लिये होता है। और सत्य के आगे असत्य समाप्त हो कर रह जाता है।

21. क्या इन के बनाये हुये पार्थिव पूज्य ऐसे हैं जो (निर्जीव) को जीवित कर देते हैं?
22. यदि होते उन दोनों^[1] में अन्य पूज्य अल्लाह के सिवा तो निश्चय दोनों की व्यवस्था बिगड़^[2] जाती। अतः पवित्र है अल्लाह अर्श (सिंहासन) का स्वामी उन बातों से जो वे बता रहे हैं।
23. वह उत्तर दायी नहीं है अपने कार्य का और सभी (उस के समक्ष) उत्तर दायी हैं।
24. क्या उन्होंने बना लिये हैं उस के सिवा अनेक पूज्य? (हे नबी!) आप कहें कि अपना प्रमाण लाओ। यह (क़ुर्आन) उन के लिये शिक्षा है जो मेरे साथ हैं और यह मुझ से पूर्व के लोगों की शिक्षा^[3] है, बल्कि उन में से अधिकतर सत्य का ज्ञान नहीं रखते। इसी कारण वह विमुख हैं।
25. और नहीं भेजा हम ने आप से पहले कोई भी रसूल परन्तु उस की ओर यही वही (प्रकाशना) करते रहे कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है। अतः मेरी ही इबादत (वंदना) करो।

أَمْ اتَّخَذُوا مِنَ الْأَرْضِ هُمْ يُبْرِئُونَ ①

لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا فَتَقْبِخَنَّ
اللَّهُ رَبَّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ②

لَأَيُّسَلَّ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ ③

أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ قُلُوبًا مِثْلَ قُلُوبِ
بُرْهَانَكُمْ هَذَا إِذْ كَرِهْتُمْ مَعِيَ وَذِكْرٌ مَنْ
قَبْلِي بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ الْحَقَّ
فَهُمْ مُعْرِضُونَ ④

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا نُوحِي
إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ⑤

1 आकाश तथा धरती में।

2 क्योंकि दोनों अपनी अपनी शक्ति का प्रयोग करते और उन के आपस के संघर्ष के कारण इस विश्व की व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाती। अतः इस विश्व की व्यवस्था स्वयं बता रही है कि इस का स्वामी एक ही है। और वही अकेला पूज्य है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि यह क़ुर्आन है और यह तौरात तथा इंजील हैं। इन में कोई प्रमाण दिखा दो कि अल्लाह के अन्य साझी और पूज्य हैं। बल्कि यह मिश्रणवादी निर्मूल बातें कर रहे हैं।

26. और उन (मुश्रिकों) ने कहा कि बना लिया है अत्यंत कृपाशील ने संतति। वह पवित्र है! बल्कि वे (फ़रिश्ते)^[1] आदरणीय भक्त हैं।
27. वे उस के समक्ष बढ़ कर नहीं बोलते और उस के आदेशानुसार काम करते हैं।
28. वह जानता है जो उन के सामने है और जो उन से ओझल है। वह किसी की सिफ़ारिश नहीं करेंगे उस के सिवा जिस से वह (अल्लाह) प्रसन्न^[2] हो, तथा वह उस के भय से सहमे रहते हैं।
29. और जो कह दे उन में से कि मैं पूज्य हूँ अल्लाह के सिवा तो वही है जिसे हम दण्ड देंगे नरक का, इसी प्रकार हम दण्ड दिया करते हैं अत्याचारियों को।
30. और क्या उन्होंने ने विचार नहीं किया जो काफ़िर हो गये कि आकाश तथा धरती दोनों मिले हुये^[3] थे, तो हम ने दोनों को अलग-अलग किया। तथा हम ने बनाया पानी से प्रत्येक जीवित चीज़ को? फिर क्या वह (इस बात पर) विश्वास नहीं करते?
31. और हम ने बना दिये धरती में पर्वत

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهُ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ﴿٢٦﴾

لَا يَسْبِقُونَهُ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِأَمْرِهِ يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَىٰ وَهُمْ مِنْ
خَشِيئَتِهِ مُسْفِقُونَ ﴿٢٨﴾

وَمَنْ يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّي إِلٰهٌ مِّنْ دُونِهِ فَنُذِقْ
عَذَابَ جَهَنَّمَ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظَّٰلِمِينَ ﴿٢٩﴾

أَوَلَمْ يَرَأِ الْذٰلِئِينَ كَفَرُوا أَنَّ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ
كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ اَفَاٰلَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٠﴾

وَجَعَلْنَا فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيًا اَنْ تَمِيدَ بِهُمْ وَجَعَلْنَا

1 अर्थात् अरब के मिश्रणवादी जिन फ़रिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ कहते हैं, वास्तव में वह उस के भक्त तथा दास हैं।

2 अर्थात् जो एकेश्वरवादी होंगे।

3 अर्थात् अपनी उत्पत्ति के आरंभ में।

ताकि झुक न^[1] जाये उन के साथ,
और बना दिये उन (पर्वतों) में चोड़े
रास्ते ताकि लोग राह पायें।

فِيهَا فِجَاجًا سَبِيلًا لِّعَالَمِهِمْ يَهْتَدُونَ ﴿٣١﴾

32. और हम ने बना दिया आकाश को
सुरक्षित छत, फिर भी वह उस के
प्रतीकों (निशानियों) से मुँह फेरे
हुये हैं।

وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَّحْفُوظًا ۗ وَهُمْ عَنْ آيَاتِنَا
مُعْرِضُونَ ﴿٣٢﴾

33. तथा वही है जिस ने उत्पत्ति की है
रात्रि तथा दिवस की और सूर्य तथा
चाँद की, प्रत्येक एक मण्डल में तैर
रहे^[2] हैं।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ ۗ كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٣٣﴾

34. और (हे नबी!) हम ने नहीं बनायी है
किसी मनुष्य के लिये आप से पहले
नित्यता। तो यदि आप मर^[3] जायें,
तो क्या वह नित्य जीवी है?

وَمَا جَعَلْنَا الْإِنسَانَ مِن قَبْلِكَ الْخَالِدَ ۗ أَفَلَا يَرَى
مِمَّا كَفَرَ أَنَّهُمْ الْخَالِدُونَ ﴿٣٤﴾

35. प्रत्येक जीव को मरण का स्वाद
चखना है, और हम तुम्हारी
परीक्षा कर रहे हैं अच्छी तथा बुरी
परिस्थितियों से, तथा तुम्हें हमारी ही
ओर फिर आना है।

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَنَبْلُوكُم بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۗ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٣٥﴾

- 1 अर्थात् यह पर्वत न होते तो धरती सदा हिलती रहती।
- 2 कुर्आन अपनी शिक्षा में विश्व की व्यवस्था से एक के पूज्य होने का प्रमाण प्रस्तुत करता है। यहाँ भी आयत: 30 से 33 तक एक अल्लाह के पूज्य होने का प्रमाण प्रस्तुत किया गया है।
- 3 जब मनुष्य किसी का विरोधी बन जाता है तो उस के मरण की कामना करता है। यही दशा मक्का के काफिरों की भी थी। वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मरण की कामना कर रहे थे। फिर यह कहा गया है कि संसार के प्रत्येक जीव को मरना है। यह कोई बड़ी बात नहीं, बड़ी बात तो यह है कि अल्लाह इस संसार में सब के कर्मों की परीक्षा कर रहा है। और फिर सब को अपने कर्मों का फल भी परलोक में मिलना है तो कौन इस परीक्षा में सफल होता है?

36. तथा जब देखते हैं आप को जो काफिर हो गये तो बना लेते हैं आप को उपहास, (वे कहते हैं) क्या यही है जो तुम्हारे पूज्यों की चर्चा किया करता है? जब कि वे स्वयं रहमान (अत्यंत कृपाशील) के स्मरण के^[1] निवर्ती हैं।

37. मनुष्य जन्मजात व्यग्र (अधीर) है, मैं शीघ्र तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखा दूँगा। अतः तुम जल्दी न करो।

38. तथा वह कहते हैं कि कब पूरी होगी यह^[2] धमकी, यदि तुम लोग सच्चे हो?

39. यदि जान लें जो काफिर हो गये हैं उस समय को जब वह नहीं बचा सकेंगे अपने मुखों को अग्नि से और न अपनी पीठों को, और न उन की कोई सहायता की जायेगी (तो ऐसी बातें नहीं करेंगे)।

40. बल्कि वह समय उन पर आ जायेगा अचानक, और उन्हें आश्चर्य चकित कर देगा, जिसे वह फेर नहीं सकेंगे और न उन्हें समय दिया जायेगा।

41. और उपहास किया गया बहुत से रसूलों का आप से पहले, तो घेर लिया उन को जिन्होंने उपहास किया उन में से उस चीज़ ने जिस^[3]

وَاذْأَرَأَيْتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَإِن يَتَّخِذُوا نَكَ
الْأَهْرَ وَأَهْلَهُمْ أَهْلًا هَذَا الَّذِي يَذْكُرُ إِلَهُكُمْ وَهُمْ
يَذْكُرُونَ الرَّحْمَنَ هُمْ كُفْرًا ۝

خُلِقَ الْإِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ سَأُرِيكُمْ آيَاتِي
فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ۝

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينٌ لَا يَكْفُرُونَ عَنْ
وُجُوهِهِمْ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُورِهِمْ
وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۝

بَل تَأْتِيهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ
رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۝

وَلَقَدْ اسْتَهْزَيْتُمْ بِرُسُلٍ مِنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ
بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِئُونَ ۝

1 अर्थात् अल्लाह को नहीं मानते।

2 अर्थात् हमारे न मानने पर यातना आने की धमकी।

3 अर्थात् यातना ने।

का उपहास कर रहे थे।

42. आप पूछिये कि कौन तुम्हारी रक्षा करेगा रात तथा दिन में अत्यंत कृपाशील^[1] से? बल्कि वह अपने पालनहार की शिक्षा (कुर्आन) से विमुख है।
43. क्या उन के पूज्य हैं जो उन्हें बचायेंगे हम से? वह स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकेंगे और न हमारी ओर से उन का साथ दिया जायेगा।
44. बल्कि हम ने जीवन का लाभ पहुँचाया है उन को तथा उन के पूर्वजों को यहाँ तक कि (सुखों में) उन की बड़ी आयु गुज़र^[2] गई, तो क्या वह नहीं देखते कि हम धरती को कम करते आ रहे हैं उस के किनारों से, फिर क्या वह विजयी हो रहे हैं?
45. (हे नबी!) आप कह दें कि मैं तो वही ही के आधार पर तुम्हें सावधान कर रहा हूँ (परन्तु) बहरे पुकार नहीं सुनते जब उन्हें सावधान किया जाता है।
46. और यदि छू जाये उन को आप के पालनहार की तनिक भी यातना, तो अवश्य पुकारेंगे कि हाये,

قُلْ مَنْ يَكْفُرُ بِآيَاتِنَا وَاللَّهُمِّنَ الرَّحْمٰنِ
بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُعْرِضُونَ ﴿٢٠﴾

أَمْ لَهُمُ الْهَيْهَاتَ عَنْهُمْ مَنْ دُونَنَا
لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ أَنفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِنَّا
يُصْحَبُونَ ﴿٢١﴾

بَلْ مَتَّعْنَا هَؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّى طَالَ
عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ
نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا إِنَّهُمْ لَ الْغٰلِبُونَ ﴿٢٢﴾

قُلْ إِنَّمَا أُنذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاءَ
إِذَا مَا يُنذَرُونَ ﴿٢٣﴾

وَلَئِنْ مَسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ
يَكْفُرُونَ يُبَئِلُونَ إِنَّكَ لَ الْظٰلِمِينَ ﴿٢٤﴾

1 अर्थात् उस की यातना से।

2 अर्थ यह है कि वह मक्का के काफिर सुख-सुविधा मंद रहने के कारण अल्लाह से विमुख हो गये हैं, और सोचते हैं कि उन पर यातना नहीं आयेगी और वही विजयी होंगे। जब कि दशा यह है कि उन के अधिकार का क्षेत्र कम होता जा रहा है और इस्लाम बराबर फैलता जा रहा है। फिर भी वे इस भ्रम में हैं कि वे प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगे।

हमारा विनाश! निश्चय ही हम अत्याचारी^[1] थे।

47. और हम रख देंगे न्याय का तराजू^[2] प्रलय के दिन, फिर नहीं अत्याचार किया जायेगा किसी पर कुछ भी, तथा यदि होगा राई के दाने के बराबर (किसी का कर्म) तो हम उसे सामने ला देंगे, और हम बस (काफी) हैं हिसाब लेने वाले।
48. और हम दे चुके हैं मूसा तथा हारून को विवेक तथा प्रकाश और शिक्षाप्रद पुस्तक आज्ञाकारियों के लिये।
49. जो डरते हों अपने पालनहार से बिन देखे, और वे प्रलय से भयभीत हों।
50. और यह (कुर्आन) एक शुभ शिक्षा है जिसे हम ने उतारा है, तो क्या तुम इस के इन्कारी हो?
51. और हम ने प्रदान की थी इब्राहीम को उस की चेतना इस से पहले, और हम उस से भली भाँति अवगत थे।
52. जब उस ने अपने बाप तथा अपनी जाति से कहा: यह प्रतिमायें (मुर्तियाँ) कैसी हैं जिन की पूजा में तुम लगे हुये हो?

وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلَا تُظْلَمُ
نَفْسٌ شَيْئًا وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِنْ
خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا وَكَفَىٰ بِنَاصِحِينَ ﴿٤٧﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ وَهَارُونَ الْفُرْقَانَ
وَضِيَاءً وَذِكْرًا لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٨﴾

الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِنْ
السَّاعَةِ مُشْفِقُونَ ﴿٤٩﴾

وَهَذَا ذِكْرٌ مُّبَرِّكٌ أَنْزَلْنَاهُ أَقَاتُكُمْ لَهُ
مُكْرَمُونَ ﴿٥٠﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رُشْدَهُ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا
بِهِ عَلِيمِينَ ﴿٥١﴾

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا هَذِهِ التَّمَاثِيلُ الَّتِي
أَنْتُمْ لَهَا عَاكِفُونَ ﴿٥٢﴾

1 अर्थात् अपने पापों को स्वीकार कर लेंगे।

2 अर्थात् कर्मों को तौलने और हिसाब करने के लिये, ताकि प्रत्येक व्यक्ति को उस के कर्मानुसार बदला दिया जाये।

53. उन्होंने ने कहा: हम ने पाया है अपने पूर्वजों को इन की पूजा करते हुये।
54. उस (इब्राहीम) ने कहा: निश्चय तुम और तुम्हारे पूर्वज खुले कुपथ में हो।
55. उन्होंने ने कहा: क्या तुम लाये हो हमारे पास सत्य या तुम उपहास कर रहे हो?
56. उस ने कहा: बल्कि तुम्हारा पालनहार आकाशों तथा धरती का पालनहार है जिस ने उन्हें पैदा किया है, और मैं तो इसी का साक्षी हूँ।
57. तथा अब्नाह की शपथ! मैं अवश्य चाल चलूँगा तुम्हारी मुर्तियों के साथ, इस के पश्चात् कि तुम चले जाओ।
58. फिर उस ने कर दिया उन्हें खण्ड-खण्ड, उन के बड़े के सिवा, ताकि वह उस की ओर फिरें।
59. उन्होंने ने कहा: किस ने यह दशा कर दी है हमारे पूज्यों (देवताओं) की? वास्तव में वह कोई अत्याचारी होगा!
60. लोगों ने कहा: हम ने सुना है एक नवयुवक को उन की चर्चा करते जिसे इब्राहीम कहा जाता है।
61. लोगों ने कहा: उसे लाओ लोगों के सामने ताकि लोग देखें।
62. उन्होंने ने पूछा: क्या तू ने ही यह किया है हमारे पूज्यों के साथ, हे इब्राहीम?

قَالُوا وَجَدْنَا آبَاءَنَا لَهَا عَابِدِينَ ﴿٥٣﴾

قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٥٤﴾

قَالُوا آجَعْتَنَا بِالْحَقِّ أَمْ أَنْتَ مِنَ اللَّاعِبِينَ ﴿٥٥﴾

قَالَ بَلْ رَبُّكُمْ رَبَّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الَّذِي ظَهَرُنَّ وَأَنَا عَلَىٰ ذَلِكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٥٦﴾

وَتَاللَّهِ لَأَكِيدَنَّ أَصْنَامَكُمْ بَعْدَ أَنْ تُوَلُّوا مُدْبِرِينَ ﴿٥٧﴾

فَجَعَلَهُمْ جُودًا إِلَّا كِبْرًا لَهُمْ لَعَلَّهُمْ إِلَيْهِ يَرْجِعُونَ ﴿٥٨﴾

قَالُوا مَنْ فَعَلَٰ هَذَا بِالْهَيْتِنَا إِنَّهُ لَكَيْنَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٩﴾

قَالُوا سَمِعْنَا فَتَىٰ يَدُودَهُمْ يَقُولُ لَكُمُ الْبَرَّهِيمُ ﴿٦٠﴾

قَالُوا فَأْتُوا بِهِ عَلَىٰ أَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُونَ ﴿٦١﴾

قَالُوا أَنْتَ فَعَلْتَٰ هَذَا بِالْهَيْتِنَا يَا بَرَّهِيمُ ﴿٦٢﴾

63. उस ने कहा: बल्कि इसे इन के इस बड़े ने किया^[1] है, तो उन्हीं से पूछ लो यदि वह बोलते हों?
64. फिर अपने मन में वे सोच में पड़ गये। और (अपने मन में) कहा: वास्तव में तुम्हीं अत्याचारी हो।
65. फिर वह ओंधे कर दिये गये अपने सिरों के बल^[2] (और बोले): तू जानता है कि यह बोलते नहीं हैं।
66. इब्राहीम ने कहा: तो क्या तुम इबादत (वंदना) अल्लाह के सिवा उस की करते हो जो न तुम्हें कुछ लाभ पहुँचा सकते हैं और न तुम्हें हानि पहुँचा सकते हैं?
67. तुफ़ (थू) है तुम पर और उस पर जिस की तुम इबादत (वंदना) करते हो अल्लाह को छोड़ कर। तो क्या तुम समझ नहीं रखते हो?
68. उन्हीं ने कहा: इस को जला दो तथा सहायता करो अपने पूज्यों की, यदि तुम्हें कुछ करना है।
69. हम ने कहा: हे अग्नि! तू शीतल तथा शान्ति बन जा इब्राहीम पर।
70. और उन्हीं ने उस के साथ बुराई चाही, तो हम ने उन्हीं को क्षतिग्रस्त कर दिया।

قَالَ بَلْ فَعَلَهُ كَبِيرُهُمْ هَذَا فَاسْأَلُوهُمْ
إِنْ كَانُوا يَنْطِقُونَ ﴿٣٥﴾

فَرَجَعُوا إِلَىٰ أَنفُسِهِمْ فَقَالُوا لَوْلَا
أَنكُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٣٦﴾

ثُمَّ نَكَّسُوا عَلَىٰ رُءُوسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتُمْ
مَا هُمُ اللَّاءُ يَنْطِقُونَ ﴿٣٧﴾

قَالَ اقْتَبِدُونِ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْئًا
وَلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٣٨﴾

أَفْ لَكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٣٩﴾

قَالُوا حَرِّقُوهُ وَانصُرُوا آلِهَتَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
فَاعِلِينَ ﴿٤٠﴾

فَلَمَّا يَتَذَكَّرُونَ يُرَدُّ أَسْلَمًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ﴿٤١﴾

وَآمَرُوا بِأَن يَكِيدُوا فَجَعَلْنَاهُمُ الْخَسِرِينَ ﴿٤٢﴾

1 यह बात इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उन्हें उन के पूज्यों की विवशता दिखाने के लिये कही।

2 अर्थात् सत्य को स्वीकार कर के उस से फिर गये।

71. और हम उस (इब्राहीम) को बचा कर ले गये तथा लूत^[1] को उस भूमि^[2] की ओर जिस में हम ने सम्पन्नता रखी है विश्व वासियों के लिये।

72. और हम ने उसे प्रदान किया (पुत्र) इसहाक़ और (पौत्र) याकूब उस पर अधिक, और प्रत्येक को हम ने सत्कर्मी बनाया।

73. और हम ने उन्हें अग्रणी (प्रमुख) बना दिया जो हमारे आदेशानुसार (लोगों को) सुपथ दर्शाते हैं तथा हम ने वह्यी (प्रकाशना) की उन की ओर सत्कर्माँ के करने तथा नमाज़ की स्थापना करने और ज़कात देने की, तथा वे हमारे ही उपासक थे।

74. तथा लूत को हम ने निर्णय शक्ति और ज्ञान दिया, और बचा लिया उस बस्ती से जो दुष्कर्म कर रही थी, वास्तव में वे बुरे अवैज्ञाकारी लोग थे।

75. और हम ने प्रवेश दिया उसे अपनी दया में, वास्तव में वह सदाचारियों में से था।

76. तथा नूह को (याद करो) जब उस ने पुकारा इन (नबियों) से पहले। तो हम ने उस की पुकार सुन ली, फिर उसे और उस के घराने को मुक्ति दी महा पीड़ा से।

وَنَجَّيْنَاهُ وَلُوطًا إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا لِلْعَالَمِينَ ﴿٦١﴾

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً ۗ وَكُلًّا جَعَلْنَا صَالِحِينَ ﴿٦٢﴾

وَجَعَلْنَاهُمْ أئِمَّةً يَهْتَدُونَ بِأَمْرِنَا وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَإِقَامَ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءَ الزَّكَاةِ وَكَانُوا لَنَا عَابِدِينَ ﴿٦٣﴾

وَلُوطًا آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ تَعْمَلُ الْخَبِيثَاتِ ۗ إِنَّهُمْ كَانُوا اقْوَامًا سَوَاءً فُتُورِينَ ﴿٦٤﴾

وَادْخَلْنَاهُ فِي رَحْمَتِنَا ۗ إِنَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٦٥﴾

وَنُوحًا إِذْ نَادَى مِنْ قَبْلُ ۖ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ﴿٦٦﴾

1 लूत अलैहिस्सलाम इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे थे।

2 इस से अभिप्राय सीरिया देश है। और अर्थ यह है कि अल्लाह ने इबराहीम अलैहिस्सलाम की अग्नि से रक्षा करने के पश्चात् उन्हें सीरिया देश की ओर प्रस्थान कर जाने का आदेश दिया। और वह सीरिया चले गये।

77. और उस की सहायता की उस जाति के मुकाबले में जिन्होंने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया, वास्तव में वे बुरे लोग थे। अतः हम ने डुबो दिया उन सभी को।

وَصَرْنَاهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا آيَاتِنَا
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا سَوِيًّا فَآخَرُوا لَهُمْ أَجْمَعِينَ ۝

78. तथा दावूद और सुलैमान को (याद करो) जब वह दोनों निर्णय कर रहे थे खेत के विषय में जब रात्रि में चर गईं उसे दूसरों की बकरियाँ, और हम उन का निर्णय देख रहे थे।

وَدَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ إِذْ يَحْكُمُونَ فِي الْحَرْثِ إِذْ
نَفَسَتْ فِيهِ غَمُّ الْقَوْمِ وَكَانَ الْحُكْمُ
شَهِيدِينَ ۝

79. तो हम ने उस का उचित निर्णय समझा दिया सुलैमान^[1] को, और प्रत्येक को हम ने प्रदान किया था निर्णय शक्ति तथा ज्ञान, और हम ने आधीन कर दिया था दावूद के साथ पर्वतों को जो (अल्लाह की पवित्रता का) वर्णन करते थे तथा पक्षियों को, और हम ही इस कार्य के करने वाले थे।

فَفَعَلْنَا لَهَا نُصُوبًا وَأَجْرًا وَإِنَّا لَمَّا
وَسَخَّرْنَا مَعَ دَاوُدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحُونَ
وَالطَّيْرَ وَكَانَ الْجَحْدُ ۝

80. तथा हम ने उस (दावूद) को सिखाया तुम्हारे लिये कवच बनाना ताकि तुम्हें बचाये तुम्हारे आक्रमण से, तो क्या तुम कृतज्ञ हो?

وَعَلَّمْنَاهُ صَنْعَةَ لَبُوسٍ لَكُمْ
لِيَحْصِنَكُمْ مِنْ بَأْسِكُمْ فَهَلْ أَنْتُمْ
شَاكِرُونَ ۝

81. और सुलैमान के आधीन कर दिया

وَلِسُلَيْمَانَ الرِّيحَ عَاصِفَةً تَجْرِي بِأَمْرِهِ إِلَى

1 हदीस में वर्णित है कि दो नारियों के साथ शिशु थे। भेड़िया आया और एक को ले गया तो एक ने दूसरी से कहा कि तुम्हारे शिशु को ले गया है और निर्णय के लिये दावूद के पास गयीं। उन्होंने ने बड़ी के लिये निर्णय कर दिया। फिर वह सुलैमान अलैहिस्सलाम के पास आयी, उन्होंने ने कहा, छुरी लाओ मैं तुम दोनों के लिये दो भाग कर दूँ। तो छोटी ने कहा: ऐसा न करें अल्लाह आप पर दया करे, यह उसी का शिशु है। यह सुन कर उन्होंने ने छोटी के पक्ष में निर्णय कर दिया। (बुखारी, 3427, मुस्लिम, 1720)

उग्र वायु को, जो चल रही थी उस के आदेश से^[1] उस धरती की ओर जिस में हम ने सम्पन्नता (विभूतियाँ) रखी हैं, और हम ही सर्वज्ञ हैं।

الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا وَكُنَّا بِحُلِيِّ شَيْءٍ
عَلِيمِينَ ۝

82. तथा शैतानों में से उन्हें (उस के आधीन कर दिया) जो उस के लिये डुबकी लगाते^[2] तथा इस के सिवा दूसरे कार्य करते थे, और हम ही उन के निरीक्षक^[3] थे।

وَمِنَ الشَّيْطَانِ مَنْ يَغْوُصُونَ لَهُ وَيَعْمَلُونَ
عَمَلًا دُونَ ذَلِكَ وَكُنَّا لَهُمْ حَافِظِينَ ۝

83. तथा अय्यूब (की उस स्थिति) को (याद करो) जब उस ने पुकारा अपने पालनहार को कि मुझे रोग लग गया है और तू सब से अधिक दयावान् है।

وَأَيُّوبَ إِذْ نَادَى رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ
وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ۝

84. तो हम ने उस की गुहार सुन ली^[4] और दूर कर दिया जो दुःख उसे था, और प्रदान कर दिया उसे उस का परिवार तथा उतने ही और उन के साथ, अपनी विशेष दया से तथा शिक्षा के लिये उपासकों की।

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَكَشَفْنَا مَا بِهِ مِنْ ضُرِّهِ وَآتَيْنَاهُ
أَهْلَهُ وَمِثْلَهُم مِّمَّهُمْ رَحْمَةً مِنْ عِنْدِنَا
وَذِكْرًا لِّلْعَالَمِينَ ۝

85. तथा इस्माईल और इद्रीस तथा जुल क़िफ़ल को (याद करो), सभी सहनशीलों में से थे।

وَإِسْمَاعِيلَ وَإِدْرِيسَ وَذَا الْكِفْلِ كُلٌّ مِنَ
الضَّالِّينَ ۝

- 1 अर्थात् वायु उन के सिंहासन को उन के राज्य में जहाँ चाहते क्षणों में पहुँचा देती थी।
- 2 अर्थात् मोतियाँ तथा जवाहिरात निकालने के लिये।
- 3 ताकि शैतान उन को कोई हानि न पहुँचाये।
- 4 आदरणीय अय्यूब अलैहिस्सलाम की अल्लाह ने उन के धन-धान्य तथा परिवार में परीक्षा ली। वह स्वयं रोगग्रस्त हो गये। परन्तु उन के धैर्य के कारण अल्लाह ने उन को फिर स्वस्थ कर दिया और धन-धान्य के साथ ही पहले से दो गुने पुत्र प्रदान किये।

86. और हम ने प्रवेश दिया उन को अपनी दया में, वास्तव में वे सदाचारी थे।

وَأَدْخَلْنَاهُمْ فِي رَحْمَتِنَا إِنَّهُمْ مِنَ
الضَّالِّينَ ﴿٥٠﴾

87. तथा जुन्नून^[1] को जब वह चला^[2] गया क्रोधित हो कर और सोचा कि हम उसे पकड़ेंगे नहीं, अन्ततः उस ने पुकारा अंधेरो में कि नहीं है कोई पूज्य तेरे सिवा, तू पवित्र है, वास्तव में मैं ही दोषी^[3] हूँ।

وَدَاخِلْنِيْ اِلٰى اَرْضِيْكَ اِنَّكَ
اَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيْمُ ﴿٥١﴾

88. तब हम ने उस की पुकार सुन ली, तथा उसे मुक्त कर दिया शोक से, और इसी प्रकार हम बचा लिया करते हैं ईमान वालों को।

فَاَسْتَجِبْنٰ اِلَيْهِمْ وَنَجَّيْنٰهُم مِّنَ الْعَمْرِ
وَكَذٰلِكَ نُنصِىْ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٢﴾

89. तथा ज़करिय्या को (याद करो) जब पुकारा उस ने अपने पालनहार^[4] को, हे मेरे पालनहार! मुझे मत छोड़ दे अकेला, और तू सब से अच्छा उत्तराधिकारी है।

وَذَكَرْنَا اِيْضًا اِلٰى نٰدٰى رَبِّهِ رَبِّ لَآ اَتَدْرٰى
فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٥٣﴾

90. तो हम ने सुन ली उस की पुकार तथा प्रदान कर दिया उसे यह्या, और सुधार दिया उस के लिये उस

فَاَسْتَجِبْنٰ اِلَيْهِمْ وَوَهَبْنَا لَهٗ اِيْحٰى وَاَصْلَحْنَا لَهٗ
رَوْحًا اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسْرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ ﴿٥٤﴾

1 जुन्नून से अभिप्रेत यूनस अलैहिस्सलाम हैं। नून का अर्थ अर्बी भाषा में मछली है। उन को "साहिबुल हूत" भी कहा गया है। अर्थात् मछली वाला। क्यों कि उन को अल्लाह के आदेश से एक मछली ने निगल लिया था। इस का कुछ वर्णन सूरह यूनस में आ चुका है। और कुछ सूरह साफ़ात में आ रहा है।

2 अर्थात् अपनी जाति से क्रोधित हो कर अल्लाह के आदेश के बिना अपनी बस्ती से चले गये। इसी पर उन्हें पकड़ लिया गया।

3 सहीह हदीस में आता है कि जो भी मुसलमान इस शब्द के साथ किसी विषय में दुआ करेगा तो अल्लाह उस की दुआ को स्वीकार करेगा। (तिर्मिज़ी-3505)

4 आदरणीय ज़करिय्या ने एक पुत्र के लिये प्रार्थना की, जिस का वर्णन सूरह आले इमरान तथा सूरह ता-हा में आ चुका है।

की पत्नी को। वास्तव में वह सभी दौड़-धूप करते थे सत्कर्मों में और हम से प्रार्थना करते थे रुचि तथा भय के साथ, और हमारे आगे झुके हुये थे।

91. तथा जिस ने रक्षा की अपने सतीत्व^[1] की, तो फूंक दी हम ने उस के भीतर अपनी आत्मा से, और उसे तथा उस के पुत्र को बना दिया एक निशानी संसार वासियों के लिये।
92. वास्तव में तुम्हारा धर्म एक ही धर्म^[2] है, और मैं ही तुम सब का पालनहार (पूज्य) हूँ। अतः मेरी ही इबादत (वंदना) करो।
93. और खण्ड-खण्ड कर दिया लोगों ने अपने धर्म को (विभेद कर के) आपस में, सब को हमारी ओर ही फिर आना है।
94. फिर जो सदाचार करेगा और वह एकेश्वरवादी हो, तो उस के प्रयास की उपेक्षा नहीं की जायेगी, और हम उसे लिख रहे हैं।
95. और असंभव है किसी भी बस्ती पर जिस का हम ने विनाश कर^[3] दिया

وَيَدْعُونََنَا رَغَبًا وَرَهَبًا وَكَانُوا لَنَا خٰشِعِينَ ⑩

وَالَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهَا مِن دُرُّوجِنَا وَجَعَلْنَاهَا آيَةً لِلْعٰلَمِينَ ⑪

إِنَّ هٰذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ⑫

وَنَقُضُوا أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ كُلٌّ إِلَيْنَا رٰجِعُونَ ⑬

مَنْ يَعْمَلْ مِنَ الظَّالِمَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَكْفُرْ إِن لِّسَعْيِهِ وَأَن آتٰهُ كِتَابٌ ⑭

وَحَرَمٌ عَلَى قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا أَهْمُ لَا يَرْجِعُونَ ⑮

- 1 इस से संकेत मर्यम तथा उस के पुत्र ईसा (अलैहिस्सलाम) की ओर है।
- 2 अर्थात् सब नबियों का मूल धर्म एक है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मैं मर्यम के पुत्र ईसा से अधिक संबंध रखता हूँ। क्यों कि सब नबी भाई भाई हैं उन की मायें अलग अलग हैं, सब का धर्म एक है। (सहीह बुखारी: 3443)। और दूसरी हदीस में यह अधिक है कि: मेरे और उस के बीच कोई और नबी नहीं है। (सहीह बुखारी: 3442)
- 3 अर्थात् उस के वासियों के दुराचार के कारण।

- है कि वह फिर (संसार में) आ जाये।
96. यहाँ तक कि जब खोल दिये जायेंगे याजूज तथा माजूज^[1] और वे प्रत्येक ऊँचाई से उतर रहे होंगे।
97. और समीप आ जायेगा सत्य^[2] वचन, तो अकस्मात् खुली रह जायेंगी काफिरों की आँखें, (वे कहेंगे): "हाय हमारा विनाश"! हम असावधान रह गये इस से, बल्कि हम अत्याचारी थे।
98. निश्चय तुम सब तथा तुम जिन (मूर्तियों) को पूज रहे हो अल्लाह के अतिरिक्त नरक के ईंधन हैं, तुम सब वहाँ पहुँचने वाले हो।
99. यदि वे वास्तव में पूज्य होते, तो नरक में प्रवेश नहीं करते, और प्रत्येक उस में सदावासी होंगे।
100. उन की उस में चीखें होंगी तथा वे उस में (कुछ) सुन नहीं सकेंगे।
101. (परन्तु) जिन के लिये पहले ही से हमारी ओर से भलाई का निर्णय हो चुका है, वही उस से दूर रखे जायेंगे।
102. वे उस (नरक) की सरसर भी नहीं सुनेंगे, और अपनी मन चाही चीजों में सदा (मग्न) रहेंगे।
103. उन्हें उदासीन नहीं करेगी (प्रलय के दिन की) बड़ी व्यग्रता, तथा फरिश्ते

حَتَّىٰ إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ وَهُمْ مِنْ
كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ ﴿٩٦﴾

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقِّ إِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ
أَبْصَارِ الَّذِينَ كَفَرُوا يَوِيلُكُنَا قَدْ كُنَّا فِي
غَفْلَةٍ مِّنْ هَذَا بَلْ كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٩٧﴾

إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ حَصَبُ
جَهَنَّمَ أَنْتُمْ لَهَا وَرَدُونَ ﴿٩٨﴾

لَوْ كَانَ هَؤُلَاءِ آلِهَةً مَا وَرَدُواهَا
وَكُلٌّ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٩٩﴾

لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾

إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِنَّا الْحُسْنَىٰ
أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ﴿١٠١﴾

لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ
أَنْفُسُهُمْ خَالِدُونَ ﴿١٠٢﴾

لَا يَحْزَنُهُمُ الْفَرَقَ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّهُمُ الْمَلَائِكَةُ

1 याजूज तथा माजूज के विषय में देखिये सूरह कहफ़, आयत: 93 से 100 तक का अनुवाद।

2 सत्य वचन से अभिप्राय प्रलय का वचन है।

उन्हें हाथों-हाथ ले लेंगे (तथा कहेंगे):
यही तुम्हारा वह दिन है जिस का
तुम्हें वचन दिया जा रहा था।

هَذَا يَوْمُكُمْ الَّذِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٥٠﴾

104. जिस दिन हम लपेट^[1] देंगे आकाश
को पांजिका के पन्नों को लपेट देने
के समान, जैसे हम ने आरंभ किया
था प्रथम उत्पत्ति का उसी प्रकार
उसे^[2] दुहरायेंगे, इस (वचन) को
पूरा करना हम पर है, और हम
पूरा कर के रहेंगे।

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِّيلِ لِلْكُتُبِ كَمَا
بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ وَعُدُّا عَلَيْهَا أَنفَاكُنَا
فُعِلِينَ ﴿٥١﴾

105. तथा हम ने लिख दिया है ज़बूर^[3] में
शिक्षा के पश्चात् कि धरती के
उत्तराधिकारी मेरे सदाचारी भक्त होंगे।

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِن بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ
الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ﴿٥٢﴾

106. वस्तुतः इस (बात) में एक बड़ा
उपदेश है उपासकों के लिये।

إِنَّ فِي هَذَا لَلْبَلَاغَ الْقَوْمِ غَيْرِينَ ﴿٥٣﴾

107. और (हे नबी!) हम ने आप को
नहीं भेजा है किन्तु समस्त संसार के
लिये दया बना^[4] कर।

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ﴿٥٤﴾

108. आप कह दें कि मेरी ओर तो बस
यही वही की जा रही है कि तुम सब
का पूज्य बस एक ही पूज्य है, फिर
क्या तुम उस के आज्ञाकारी^[5] हो?

ثُمَّ إِنَّمَا يُوْحَىٰ إِلَيْنَا أَنَا الْهَكْمَ إِلَهُ وَوَاحِدٌ
فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٥٥﴾

1 (देखिये: सूरह जुमर, आयत: 67)

2 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भाषण दिया कि लोग अल्लाह के पास बिना जूते के, नग्न, तथा बिना खतने के एकत्र किये जायेंगे। फिर इब्राहीम अलैहिस्सलाम को सर्वप्रथम वस्त्र पहनायें जायेंगे। (सहीह बुखारी, 3349)

3 ज़बूर वह पुस्तक है जो दावूद अलैहिस्सलाम को प्रदान की गयी।

4 अर्थात् जो आप पर ईमान लायेगा, वही लोक-परलोक में अल्लाह की दया का अधिकारी होगा।

5 अर्थात् दया एकेश्वरवाद में है, मिश्रणवाद में नहीं।

109. फिर यदि वे विमुख हों, तो आप कह दें कि मैं ने तुम्हें समान रूप से सावधान कर दिया^[1], और मैं नहीं जानता कि समीप है अथवा दूर जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है।
110. वास्तव में वही जानता है खुली बात को तथा जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो।
111. तथा मुझे यह ज्ञान (भी) नहीं, संभव है यह^[2] तुम्हारे लिये कोई परीक्षा हो तथा लाभ हो एक निर्धारित समय तक?
112. उस (नबी) ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! सत्य के साथ निर्णय कर दे। और हमारा पालनहार अत्यंत कृपाशील है जिस से सहायता माँगी जाये उन बातों पर जो तुम लोग बना रहे हो।

فَإِنْ كُونُوا قَتْلَ الَّذِينَ أَنْتُمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ وَإِنْ أُدْرِي
أَقْرَبُ أَمْرَبَعِيدًا مَا تُوْعَدُونَ ﴿١٠٩﴾

إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ
مَا تَكْتُمُونَ ﴿١١٠﴾

وَإِنْ أُدْرِي لَعَلَّهُ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿١١١﴾

قُلْ رَبِّ احْكُم بِالْحَقِّ وَرَبُّنَا الرَّحْمَنُ
الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا نَصِفُونَ ﴿١١٢﴾

1 अर्थात् ईमान न लाने और मिश्रणवाद के दुष्परिणाम से।

2 अर्थात् यातना में विलम्ब।

सूरह हज्ज - 22



सूरह हज्ज के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 78 आयतें हैं।

- इस सूरह में हज्ज की साधारण घोषणा की चर्चा है इस लिये इस का नाम सूरह हज्ज है।
- आरंभिक आयतों में प्रलय के कड़े भूकम्प पर सावधान करते हुये इस बात से सूचित किया गया है कि शैतान के उकसाने से कितने ही लोग अल्लाह के बारे में निर्मूल बातों में उलझे रहते हैं जिस के कारण वह नरक की आग में जा गिरेंगे।
- दूसरे जीवन के प्रमाण और गुमराही की बातों के परिणाम बताये गये हैं।
- अल्लाह की असुद्ध वंदना को व्यर्थ बताते हुये शिर्क का खण्डन किया गया है।
- यह बताया गया है कि काँबा एक अल्लाह की वंदना के लिये बनाया गया है। तथा हज्ज के कर्मों को बताया गया है। और मुसलमानों को अनुमति दी गई है कि जिहाद कर के काँबा को मुक्त करायें।
- यातना की जल्दी मचाने पर अत्याचारी जातियों के विनाश की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- अल्लाह की राह में हिज्रत करने पर शूभसूचना सुनाई गई है।
- अल्लाह के उपकारों का वर्णन तथा विरोधियों के संदेहों को दूर करते हुये शिर्क को निर्मूल बताया गया है।
- अन्त में मुसलमानों को अपने कर्तव्य का पालन करने और अल्लाह की राह में प्रयास करने और लोगों के सामने उस के धर्म की गवाही देने पर बल दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे मनुष्यो! अपने पालनहार से डरो, वास्तव में क्यामत (प्रलय) का भूकम्प बड़ा ही घोर विषय है।
2. जिस दिन तुम उसे देखोगे, सुध न होगी प्रत्येक दूध पिलाने वाली को अपने दूध पीते शिशु की, और गिरा देगी प्रत्येक गर्भवती अपना गर्भ, तथा तुम देखोगे लोगों को मतवाले जब कि वे मतवाले नहीं होंगे, परन्तु अल्लाह की यातना बहुत कड़ी^[1] होगी।
3. और कुछ लोग विवाद करते हैं अल्लाह के विषय में बिना किसी ज्ञान के, तथा अनुसरण करते हैं प्रत्येक उद्धत शैतान का।
4. जिस के भाग्य में लिख दिया गया है कि जो उसे मित्र बनायेगा वह उसे कुपथ कर देगा और उसे राह दिखायेगा नरक की यातना की ओर।
5. हे लोगो! यदि तुम किसी संदेह में हो

يَأْتِيهَا النَّاسُ اتِّفَؤَارِكُمْ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ
شَيْءٌ عَظِيمٌ

يَوْمَ تَرَوُنَّهَا تُذْهِلُ كُلَّ مَرْصِعَةٍ عَمَّا
أَصْعَقَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا
وَتَرَى النَّاسَ سُكَرَىٰ وَمَا هُمْ بِسُكَرَىٰ
وَلَكِنَّ عَذَابَ اللَّهِ شَدِيدٌ

وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ
وَيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطَانٍ مَّرِيدٍ

كُذِّبَ عَلَيْهِ أَنَّهُ مَن تَوَلَّاهُ فَاَتَهُ بِضُلْمِهِ
وَيَهْدِيهِ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ

يَأْتِيهَا النَّاسُ إِنَّ لَكُمْ فِي رَيْبٍ مِّنَ الْبُعْثِ وَإِنَّا

- 1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि अल्लाह प्रलय के दिन कहेगा: हे आदम! वह कहेंगे: मैं उपस्थित हूँ। फिर पुकारा जायेगा कि अल्लाह आदेश देता है कि अपनी संतान में से नरक में भेजने के लिये निकालो। वह कहेंगे कितने? वह कहेगा: हज़ार में से नौ सौ निन्नानवे। तो उसी समय गर्भवती अपना गर्भ गिरा देगी और शिशु के बाल सफेद हो जायेंगे। और तुम लोगों को मतवाले समझोगे। जब कि वे मतवाले नहीं होंगे किन्तु अल्लाह की यातना कड़ी होगी। यह बात लोगों को भारी लगी और उनके चेहरे बदल गये। तब आप ने कहा: याजूज और माजूज में से नौ सौ निन्नानवे होंगे और तुम में से एक। (संक्षिप्त हदीस, बुखारी: 4741)

पुनः जीवित होने के विषय में, तो (सोचो कि) हम ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर रक्त के थक्के से, फिर मांस के खण्ड से जो चित्रित तथा चीत्रविहीन होता है^[1], ताकि हम उजागर कर^[2] दें तुम्हारे लिये, और स्थिर रखते हैं गर्भाशयों में जब तक चाहें एक निर्धारित अवधि तक, फिर तुम्हें निकालते हैं शिशु बना कर, फिर ताकि तुम पहुँचो अपने यौवन को, और तुम में से कुछ (पहले ही) मर जाते हैं और तुम में से कुछ जीर्ण आयु की ओर फेर दिये जाते हैं ताकि उसे कुछ ज्ञान न रह जाये ज्ञान के पश्चात्,

خَلَقْنَاكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُضْغَةٍ مُخَلَّقَةٍ وَغَيْرِ
مُخَلَّقَةٍ لِنَبِّئَنَّ لَكُمْ وَنُقَرِّفِي الْأَرْحَامَ مَا
نَشَاءُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا
ثُمَّ لِنَبِّغَنَّ أَشْدَّكُمْ وَمِنْكُمْ مَنْ يُتَوَفَّىٰ
وَمِنْكُمْ مَنْ يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا
يَعْلَمَ مِنْ بَعْدِ عَلِيمٍ شَيْئًا وَتَرَى الْأَرْضَ
هَامِدَةً فَاذًا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْبَازَتْ
وَرَبَّتْ وَأَنْبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ۝

1 अर्थात्: यह वीर्य चालीस दिन के बाद गाढ़ी रक्त बन जाता है। फिर गोशत का लोथड़ा बन जाता है। फिर उस से सहीह सलामत बच्चा बन जाता है। और ऐसे बच्चे में जान फूँक दी जाती है। और अपने समय पर उस की पैदाइश हो जाती है। और -अल्लाह की इच्छा से- कभी कुछ कारणों फलस्वरूप ऐसा भी होता है कि खून का वह लोथड़ा अपना सहीह रूप नहीं धार पाता। और उस में रूह भी नहीं फूँकी जाती। और वह अपने पैदाइश के समय से पहले ही गिर जाता है। सहीह हदीसों में भी माँ के पेट में बच्चे की पैदाइश की इन अवस्थाओं की चर्चा मिलती है। उदाहरण स्वरूप, एक हदीस में है कि वीर्य चालीस दिन के बाद गाढ़ी खून बन जाता है। फिर चालीस दिन के बाद लोथड़ा अथवा गोशत की बोटी बन जाता है। फिर अल्लाह की ओर से एक फ़रिश्ता चार शब्द ले कर आता है: वह संसार में क्या काम करेगा, उस की आयु कितनी होगी, उस को क्या और कितनी जीविका मिलेगी, और वह शुभ होगा अथवा अशुभ। फिर वह उस में जान डालता है। (देखिये: सहीह बुखारी, 3332)

अर्थात्: चार महीने का बाद उस में जान डाली जाती है। और बच्चा एक सहीह रूप धारण कर लेता है। इस प्रकार आज जिस को वैज्ञानिकों ने बहुत दोड़ धूप के बाद सिद्ध किया है उस को कुर्आन ने चौदह सौ साल पूर्व ही बता दिया था। यह इस बात का प्रमाण है कि यह किताब (कुर्आन) किसी मानव की बनाई हुई नहीं है, बल्कि अल्लाह की ओर से है।

2 अर्थात् अपनी शक्ति तथा सामर्थ्य को।

तथा तुम देखते हो धरती को सूखी, फिर जब हम उस पर जल-वर्षा करते हैं, तो सहसा लहलहाने और उभरने लगी, तथा उगा देती है प्रत्येक प्रकार की सुदृश्य वनस्पतियाँ।

6. यह इस लिये है कि अल्लाह ही सत्य है तथा वही जीवित करता है मुर्दा को, तथा वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।
7. यह इस कारण है कि क्यामत (प्रलय) अवश्य आनी है जिस में कोई संदेह नहीं, और अल्लाह ही उन्हें पुनः जीवित करेगा जो समाधियों (कब्रों) में हैं।
8. तथा लोगों में वह (भी) है जो विवाद करता है अल्लाह के विषय में बिना किसी ज्ञान और मार्ग दर्शन एवं बिना किसी ज्योतिमय पुस्तक के।
9. अपना पहलू फेर कर ताकि अल्लाह की राह^[1] से कुपथ कर दे। उसी के लिये संसार में अपमान है और हम उसे प्रलय के दिन दहन की यातना चखायेंगे।
10. यह उन कर्मों का परिणाम है जिसे तेरे हाथों ने आगे भेजा है, और अल्लाह अत्याचारी नहीं है (अपने भक्तों के लिये)।
11. तथा लोगों में वह (भी) है जो इबादत (वंदना) करता है अल्लाह की एक

ذَلِكَ يَأْتِيَنَّ اللَّهُ هُوَ الْحَقُّ وَأَنْتَ يُعْجَى
الْمَوْتَى وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

وَأَنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ لَّارْيَبَ فِيهَا وَأَنَّ اللَّهَ
يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُورِ ۝

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ
وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُنِيرٍ ۝

ثَأْنٍ عَطْفِهِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ لَهُ فِي
الدُّنْيَا خِزْيٌ وَنَذِيقُهُ يَوْمَ الْقِسْمَةِ عَذَابَ
الْحَرِيقِ ۝

ذَلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدَاكَ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَالِمٍ
لِّلْعَبِيدِ ۝

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَعْْبُدُ اللَّهَ عَلَى حَرْفٍ ۝

1 अर्थात् अभिमान करते हुये।

किनारे पर हो कर^[1], फिर यदि उसे कोई लाभ पहुँचता है तो वह संतोष हो जाता है। और यदि उसे कोई परीक्षा आ लगे तो मुँह के बल फिर जाता है। वह क्षति में पड़ गया लोक तथा परलोक की, और यही खुली क्षति है।

12. वह पुकारता है अल्लाह के अतिरिक्त उसे जो न हानि पहुँचा सके उसे और न लाभ, यही दूर^[2] का कुपथ है।

13. वह उसे पुकारता है जिस की हानि अधिक समीप है उस के लाभ से, वास्तव में वह बुरा संरक्षक तथा बुरा साथी है।

14. निश्चय अल्लाह उन्हें प्रवेश देगा जो ईमान लाये तथा सत्कर्म किये ऐसे स्वर्गों में जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वास्तव में अल्लाह करता है जो चाहता है।

15. जो सोचता है कि उस^[3] की सहायता नहीं करेगा अल्लाह लोक तथा परलोक में, तो उसे चाहिये कि तान ले कोई रस्सी आकाश की ओर फिर फाँसी दे कर मर जाये। फिर देखे कि क्या दूर कर देती है उस का उपाय उस के रोष (क्रोध)^[4] को?

16. तथा इसी प्रकार हम ने इस (कुआन)

1 अर्थात् सदिग्ध हो कर।

2 अर्थात् कोई दुख होने पर अल्लाह के सिवा दूसरों को पुकारना।

3 अर्थात् अपने रसूल की।

4 अर्थ यह है कि अल्लाह अपने नबी की सहायता अवश्य करेगा।

أَصَابَهُ خَيْرٌ لِّطَمَانٍ بِهِ وَإِنْ أَصَابَتْهُ
فِتْنَةٌ ائْتَلَبَ عَلَىٰ وَجْهِهِ خَيْرٌ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ
ذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ﴿١١﴾

يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُ وَمَا لَا نَبْعُهُ
ذَلِكَ هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ﴿١٢﴾

يَدْعُوا مَنْ قَرُبُهُ أَقْرَبُ مِنْ نَفْعِهِ لَيْسَ
الْمَوْلَىٰ وَلَيْسَ الْعَشِيرُ ﴿١٣﴾

إِنَّ اللَّهَ يَدْخُلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ﴿١٤﴾

مَنْ كَانَ يَظُنُّ أَنْ لَسَّ يَصْرُوهُ اللَّهُ فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ إِلَى السَّمَاءِ
ثُمَّ لِيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُدْهِبَنَّ كَيْدَهُ مَا يَغِيبُ ﴿١٥﴾

وَكذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَأَنَّ اللَّهَ يَهْدِي

مَنْ يُرِيدْ ﴿٥﴾

को खुली आयतों में अवतरित किया है। और अल्लाह सुपथ दर्शा देता है जिसे चाहता है।

17. जो ईमान लाये तथा जो यहूदी हुये, और जो साबई तथा ईसाई हैं और जो मजूसी हैं तथा जिन्होंने शिर्क किया है, अल्लाह निर्णय^[1] कर देगा उन के बीच प्रलय के दिन। निश्चय अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है।
18. (हे नबी!) क्या आप नहीं जानते कि अल्लाह ही को सज्दा^[2] करते हैं जो आकाशों तथा धरती में हैं तथा सूर्य और चाँद तथा तारे और पर्वत एवं वृक्ष और पशु तथा बहुत से मनुष्य, और बहुत से वह भी हैं जिन पर यातना सिद्ध हो चुकी है। और जिसे अल्लाह अपमानित कर दे उसे कोई सम्मान देने वाला नहीं है। निःसंदेह अल्लाह करता है जो चाहता है।
19. यह दो पक्ष हैं जिन्होंने विभेद किया^[3] अपने पालनहार के विषय में, तो इन में से काफिरों के लिये ब्योत दिये गये हैं

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّالِينَ
وَالنَّصَارَى وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ
يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
شَهِيدٌ ﴿٥﴾

الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّالِينَ
وَالنَّصَارَى وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ
يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
شَهِيدٌ ﴿٥﴾

هَذَانِ خَصْمِينَ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ فَالَّذِينَ
كَفَرُوا قُطِعَتْ لَهُمْ شِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ يَصِطُّ مِنْ

- 1 अर्थात् प्रत्येक को अपने कर्म की वास्तविकता का ज्ञान हो जायेगा।
- 2 इस आयत में यह बताया जा रहा है कि अल्लाह ही अकेला पूज्य है उस का कोई साझी नहीं। क्यों कि इस विश्व की सभी उत्पत्ति उसी के आगे झुक रही है और बहुत से मनुष्य भी उस के आज्ञाकारी हो कर उसी को सज्दा कर रहे हैं। अतः तुम भी उस के आज्ञाकारी हो कर उसी के आगे झुको। क्यों कि उस की अवैज्ञा यातना को अनिवार्य कर देती है। और ऐसे व्यक्ति को अपमान के सिवा कुछ हाथ न आयेगा।
- 3 अर्थात् संसार में कितने ही धर्म क्यों न हों वास्तव में दो ही पक्ष हैं: एक सत्धर्म का विरोधी और दूसरा सत्धर्म का अनुयायी, अर्थात् काफिर और मोमिन और प्रत्येक का परिणाम बताया जा रहा है।

- अग्नि के वस्त्र, उन के सिरों पर धारा बहायी जायेगी खौलते हुये पानी की।
20. जिस से गला दी जायेंगी उन के पेटों के भीतर की वस्तुयें और उन की खालें।
21. और उन्हीं के लिये लोहे के आँकुश हैं।
22. जब भी उस (अग्नि) से निकलना चाहेंगे व्याकुल हो कर, तो उसी में फेर दिये जायेंगे, तथा (कहा जायेगा कि) दहन की यातना चखो।
23. निश्चय अल्लाह प्रवेश देगा उन्हें जो ईमान लाये तथा सत्कर्म किये ऐसे स्वर्गों में जिन में नहरें प्रवाहित होंगी, उन में उन्हें सोने के कंगन पहनाये जायेंगे तथा मोती, और उन का वस्त्र उस में रेशम का होगा।
24. तथा उन्हें मार्ग दर्शा दिया गया पवित्र बात^[1] का, और उन्हें दर्शा दिया गया प्रशंसित (अल्लाह) का^[2] मार्ग।
25. जो काफिर हो गये^[3] और रोकते हैं अल्लाह की राह से और उस मस्जिदे हराम से जिसे सब के लिये हम ने एक जैसा बना दिया है: उस के वासी हों अथवा प्रवासी। तथा जो उस में अत्याचार से अधर्म का

فَوْقَ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمِ ﴿٥٧﴾

يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُودُ ﴿٥٨﴾

وَأَلَهُمْ مَقَامِعٌ مِنْ حَدِيدٍ ﴿٥٩﴾

كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٦٠﴾

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٦١﴾

وَهُدُوا إِلَى الْمَقَابِلِ مِنَ الْقَوْلِ وَهُدًى وَإِلَى صِرَاطِ الْحَمِيدِ ﴿٦٢﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِ وَمَنْ يُرِدْ فِيهِ بِالْحَادِ يَظْلَمْ تُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ الْيَوْمِ ﴿٦٣﴾

1 अर्थात् स्वर्ग का, जहाँ पवित्र बातें ही होंगी, वहाँ व्यर्थ पाप की बातें नहीं होंगी।

2 अर्थात् संसार में इस्लाम तथा कुरआन का मार्ग।

3 इस आयत में मक्का के काफिरों को चेतावनी दी गई है, जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और इस्लाम के विरोधी थे। और उन्होंने आप को तथा मुसलमानों को "हुदैबिया" के वर्ष मस्जिदे हराम से रोक दिया था।

विचार करेगा, हम उसे दुःखदायी यातना चखायेंगे।^[1]

26. तथा वह समय याद करो जब हम ने निश्चित कर दिया इब्राहीम के लिये इस घर (काबा) का स्थान^[2] (इस प्रतिबंध के साथ) कि साझी न बनाना मेरा किसी चीज़ को, तथा पवित्र रखना मेरे घर को परिक्रमा करने, खड़े होने, रुकूअ (झुकना) और सज्दा करने वालों के लिये।
27. और घोषणा कर दो लोगों में हज्ज की, वे आयेंगे तेरे पास पैदल तथा प्रत्येक दुबली पतली स्वारियों पर, जो प्रत्येक दूरस्थ मार्ग से आयेंगी।
28. ताकि वह उपस्थित हों अपने लाभ प्राप्त करने के लिये, और ताकि अल्लाह का नाम^[3] लें निश्चित^[4] दिनों में उस पर जो उन्हें प्रदान किया है पालतू चौपायों में से। फिर उस में से स्वयं खाओ तथा भूखे निर्धन को खिलाओ।
29. फिर अपना मैल कुचैल दूर^[5] करें

وَأَذِّنْ لِلرُّحَمَاءِ أَنَّ الْبَيْتَ أَنْ لَا تُشْرِكُوا
بِي سَيِّئًا وَطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ
وَالرُّكُوعِ السُّجُودِ ﴿٢٦﴾

وَأَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَى
كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَبِيقٍ ﴿٢٧﴾

لِيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي
أَيَّامٍ مَّعْلُومَاتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقْتَهُمْ مِنْ
بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطِيعُوا
أَمْرَ اللَّهِ وَالرَّسُولِ ﴿٢٨﴾

ثُمَّ لِيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلِيُؤْتُوا ذُرْوَاهُمْ

- 1 यह मक्का की मुख्य विशेषताओं में से है कि वहाँ रहने वाला अगर कुफ़्र और शिर्क या किसी बिद्अत का विचार भी दिल में लाये तो उस के लिये घोर यातना है।
- 2 अर्थात् उस का निर्माण करने के लिये। क्यों कि नूह (अलैहिस्सलाम) के तूफ़ान के कारण सब बह गया था इस लिये अल्लाह ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के लिये बैतुल्लाह का वास्तविक स्थान निर्धारित कर दिया। और उन्होंने ने अपने पुत्र इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के साथ उसे दोबारा स्थापित किया।
- 3 अर्थात् उसे वध करते समय अल्लाह का नाम लें।
- 4 निश्चित दिनों से अभिप्राय 10, 11, 12 तथा 13 ज़िल हिज्जा के दिन हैं।
- 5 अर्थात् 10 ज़िल हिज्जा को बड़े ((जमरे)) को जिस को लोग शैतान कहते हैं

तथा अपनी मनौतियाँ पूरी करें, और परिक्रमा करें प्राचीन घर^[1] की।

30. यह है (आदेश), और जो अल्लाह के निर्धारित किये प्रतिबंधों का आदर करे, तो यह उस के लिये अच्छा है उस के पालनहार के पास। और हलाल (वैध) कर दिये गये तुम्हारे लिये चौपाये उन के सिवा जिन का वर्णन तुम्हारे समक्ष कर दिया^[2] गया है, अतः मुर्तियों की गन्दगी से बचो, तथा झूठ बोलने से बचो।

31. अल्लाह के लिये एकेश्वरवादी होते हुये उस का साझी न बनाते हुये। और जो साझी बनाता हो अल्लाह का तो मानो वह आकाश से गिर गया फिर उसे पक्षी उचक ले जाये अथवा वायु का झोंका किसी दूर स्थान पर फेंक^[3] दे।

32. यह (अल्लाह का आदेश है), और जो आदर करे अल्लाह के प्रतीकों (निशानों)^[4] का, तो यह निःसन्देह दिलों के आज्ञाकारी होने की बात है।

وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ۝

ذَلِكَ وَمَنْ يُعِظْمِ حُرْمَتِ اللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ
عِنْدَ رَبِّهِ وَأَجَلْتُ لَكُمْ الْأَنْعَامَ إِلَّا مَا يَمِثُلُ
عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ
وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ ۝

حُنْفَاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ وَمَنْ يُشْرِكْ
بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ
أَوْ تَهْوِي بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحِيقٍ ۝

ذَلِكَ وَمَنْ يُعِظْمِ شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِنْ تَقْوَى
الْقُلُوبِ ۝

कंकरियाँ मारने के पश्चात् एहराम उतार दें और बाल नाखून साफ़ कर के स्नान करें।

1 अर्थात् काँबा का।

2 (देखिये सूरह माइदा, आयत: 3)

3 यह शिर्क के परिणाम का उदाहरण है कि मनुष्य शिर्क के कारण स्वाभाविक ऊँचाई से गिर जाता है। फिर उसे शैतान पक्षियों के समान उचक ले जाते हैं, और वह नीच बन जाता है। फिर उस में कभी ऊँचा विचार उत्पन्न नहीं होता, और वह मासिक तथा नैतिक पतन की ओर ही झुका रहता है।

4 अर्थात् भक्ति के लिये उस के निश्चित किये हुये प्रतीकों की।

33. तुम्हारे लिये उन में बहुत से लाभ^[1] हैं एक निर्धारित समय तक, फिर उन के वध करने का स्थान प्राचीन घर के पास है।

34. तथा प्रत्येक समुदाय के लिये हम ने बलि की विधि निर्धारित की है, ताकि वह अल्लाह का नाम लें उस पर जो प्रदान किये हैं उन को पालतू चौपायों में से। अतः तुम्हारा पूज्य एक ही पूज्य है, उसी के आज्ञाकारी रहो! और (हे नबी!) आप शुभ सूचना सुना दें विनीतों को।

35. जिन की दशा यह है कि जब अल्लाह की चर्चा की जाये तो उन के दिल डर जाते हैं तथा धैर्य रखते हैं उस विपदा पर जो उन्हें पहुँचे, और नमाज़ की स्थापना करने वाले हैं, तथा उस में से जो हम ने उन्हें दिया है दान करते हैं।

36. और ऊँटों को हम ने बनाया है तुम्हारे लिये अल्लाह की निशानियों में, तुम्हारे लिये उन में भलाई है। अतः अल्लाह का नाम लो उन पर (बध करते समय) खड़े कर के। और जब धरती से लग जायें^[2] उन के पहलू तो स्वयं खाओ उन में से और खिलाओ उस में से संतोषी तथा भिक्षु को, इसी प्रकार हम ने उसे वश

لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَا إِلَىٰ الْبَيْتِ الْعَتِيقِ ۖ

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّذِكْرِ اللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقْنَاهُمْ مِنْ بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ۗ وَاللَّهُ وَاحِدٌ ۖ فَآلَهُ اسْلُبُوا وَيَبِيرِ الْمُحْسِنِينَ ۖ

الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَّتْ قُلُوبُهُمْ وَالضَّالِّينَ عَلَىٰ مَا صَابَهُمْ وَالْمُقِيمِي الصَّلَاةِ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۖ

وَالْبُدْنَ جَعَلْنَا لَكُمْ مِنْهَا لَعْنَةً لِيُذَكَّرَ فِيهَا خَيْرٌ ۗ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا صَوَافٍ ۗ فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوبُهَا فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطِيعُوا الْقَائِمَ وَالْمُعْتَصِمَ ۚ كَذَلِكَ سَخَّرْنَاهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۖ

1 अर्थात् कुर्बानी के पशु पर सवारी तथा उन के दूध और ऊन से लाभ प्राप्त करना उचित है।

2 अर्थात् उस का प्राण पूरी तरह निकल जाये।

में कर दिया है तुम्हारे, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

37. नहीं पहुँचते अल्लाह को उन के माँस न उन के रक्त, परन्तु उस को पहुँचता है तुम्हारा आज्ञा पालना। इसी प्रकार उस (अल्लाह) ने उन (पशुओं) को तुम्हारे वश में कर दिया है, ताकि तुम अल्लाह की महिमा का वर्णन करो^[1] उस मार्गदर्शन पर जो तुम्हें दिया है। और आप सत्कर्मियों को शुभ सूचना सुना दें।
38. निश्चय ही अल्लाह प्रतिरक्षा करता है उन की ओर से जो ईमान लाये हैं, वास्तव में अल्लाह किसी विश्वासघाती कृतघ्न से प्रेम नहीं करता।
39. उन्हें अनुमति दे दी गई जिन से युद्ध किया जा रहा है क्यों कि उन पर अत्याचार किया गया है, और निश्चय अल्लाह उन की सहायता पर पूर्णतः सामर्थ्यवान है।^[2]
40. जिन को इन के घरों से अकारण निकाल दिया गया केवल इस बात पर कि वह कहते थे कि हमारा पालनहार अल्लाह है, और यदि अल्लाह प्रतिरक्षा न कराता कुछ लोगों की कुछ लोगों द्वारा तो ध्वस्त कर दिये

لَنْ يَنَالَهُ اللَّهُ لُحُومَهَا وَلَا دِمَافُهَا وَلَكِنْ يَنَالُهُ التَّقْوَىٰ مِنكُمْ كَذَٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِينَ ﴿٢٢﴾

إِنَّ اللَّهَ يُدْفِعُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّافٍ كَفُورٍ ﴿٢٣﴾

أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقْتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظَلَمُوا وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ﴿٢٤﴾

الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا أَنْ يَقُولُوا رَبَّنَا اللَّهُ ۗ لَوْلَا دَفَعَهُ اللَّهُ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَفَسَدَتِ سَمَاوَاتُ وَبِحَمِّهِمْ وَأَسْجِدًا يُذَكَّرُ فِيهَا اسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا ۗ وَلْيَنْصُرَنَّ اللَّهُ مَن يَبْصُرُ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢٥﴾

1 बध करते समय (बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर) कहां।

2 यह प्रथम आयत है जिस में जिहाद की अनुमति दी गयी है। और कारण यह बताया गया है कि मुसलमान शत्रु के अत्याचार से अपनी रक्षा करें। फिर आगे चल कर सूरह बकरा, आयत: 190 से 193 और 216 तथा 226 में युद्ध का आदेश दिया गया है। जो (बद्र) के युद्ध से कुछ पहले दिया गया।

जाते आश्रम तथा गिरजे और यहूदियों के धर्म स्थल तथा मस्जिदें जिन में अल्लाह का नाम अधिक लिया जाता है। और अल्लाह अवश्य उस की सहायता करेगा जो उस (के सत्य) की सहायता करेगा, वास्तव में अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभुत्वशाली है।

41. यह^[1] वह लोग हैं कि यदि हम इन्हें धरती में अधिपत्य प्रदान कर दें, तो नमाज़ की स्थापना करेंगे और ज़कात देंगे, तथा भलाई का आदेश देंगे, और बुराई से रोकेंगे, और अल्लाह के अधिकार में है सब कर्मों का परिणाम।
42. और (हे नबी!) यदि वह आप को झुठलायें तो इन से पूर्व झुठला चुकी है नूह की जाति और (आद) तथा (समूद)।
43. तथा इब्राहीम की जाति और लूत की (जाति)।
44. तथा मद्यन वाले^[2], और मूसा (भी) झुठलाये गये, तो मैं ने अवसर दिया काफ़िरों को, फिर उन्हें पकड़ लिया, तो मेरा दण्ड कैसा रहा?
45. तो कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने ध्वस्त कर दिया, जो अत्याचारी थीं, वह अपनी छतों के समेत गिरी हुई है और बेकार कुएँ तथा पक्के ऊँचे भवना।
46. तो क्या वह धरती में फिरे नहीं? तो उन के ऐसे दिल होते जिन से

الَّذِينَ إِن مَكَّنَّمُ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلَاةَ
وَأَتُوا الزَّكَاةَ وَأَمَرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ
الْمُنْكَرِ وَاللَّهُ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿١١﴾

وَإِن يَكْفُرْ بَوَدُّ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ
وَقَوْمُ هُودٍ ﴿١٢﴾

وَقَوْمُ إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمُ لُوطٍ ﴿١٣﴾

وَأَصْحَابُ مَدْيَنَ وَكَذَّبَ مُوسَى فَأَمَلَيْتُ لِلْكَافِرِينَ
ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿١٤﴾

فَكَانَ مِنَ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَمِنْ ذَلِكِ
عَلَّوْشَهَا وَيَبُرُّ الْعَظْمَ وَيَقْتِرُ الْمَشْيِئَةَ ﴿١٥﴾

أَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَكَلِمُونَ لَهُمْ قُلُوبٌ

1 अर्थात् उत्पीड़ित मुसलमान।

2 अर्थात् शुऐब अलैहिससलाम की जाति।

- समझते, अथवा ऐसे कान होते जिन से सुनते, वास्तव में आँखें अन्धी नहीं हो जाती, परन्तु वह दिल अन्धे हो जाते हैं जो सीनों में^[1] है।
47. तथा वे आप से शीघ्र यातना की माँग कर रहे हैं, और अल्लाह कदापि अपने वचन को भंग नहीं करेगा। और निश्चय आप के पालनहार के यहाँ एक दिन तुम्हारी गणना से हज़ार वर्ष के बराबर^[2] है।
48. और बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने अवसर दिया जब कि वह अत्याचारी थी, फिर मैं ने उन्हें पकड़ लिया। और मेरी ही ओर (सब को) वापिस आना है।
49. (हे नबी!) आप कह दें कि हे लोगो! मैं तो बस तुम्हें खुला सावधान करने वाला हूँ।
50. तो जो ईमान लाये तथा सदाचार किये, उन्हीं के लिये क्षमा और सम्मानित जीविका है।
51. और जिन्होंने प्रयास किया हमारी आयतों में विवश करने का, तो वही नारकी है।
52. और (हे नबी!) हम ने नहीं भेजा आप से पूर्व किसी रसूल और न किसी नबी

يَعْقِلُونَ بِهَا أَوْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا وَأَنْهَا لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلَكِنْ تَعْمَى الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصُّدُورِ ﴿٢٢﴾

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ وَعْدَهُ وَإِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ ﴿٢٣﴾

وَكَانَ مِنْ قَوْمٍ أَمَلْتُمْ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ لَكُمْ لَخَدَّتْهَا وَالِى الْبَصِيرُ ﴿٢٤﴾

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ نَدِيرٌ مِثْلِينَ ﴿٢٥﴾

فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٢٦﴾

وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿٢٧﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا

1 आयत का भावार्थ यह है कि दिल की सूझ-बूझ चली जाती है तो आँखें भी अन्धी हो जाती हैं और देखते हुये भी सत्य को नहीं देख सकतीं।

2 अर्थात् वह शीघ्र यातना नहीं देता, पहले अवसर देता है जैसा कि इस के पश्चात् की आयत में बताया जा रहा है।

को किन्तु जब उस ने (पुस्तक) पढ़ी तो संशय डाल दिया शैतान ने उस के पढ़ने में फिर निरस्त कर देता है अल्लाह शैतान के संशय को, फिर सुदृढ़ कर देता है अल्लाह अपनी आयतों को और अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ^[1] है।

53. यह इस लिये ताकि अल्लाह शैतानी संशय को उन के लिये परीक्षा बना दे जिन के दिलों में रोग (द्विधा) है और जिन के दिल कड़े हैं। और वास्तव में अत्याचारी विरोध में बहुत दूर चले गये हैं।

54. और इस लिये (भी) ताकि विश्वास हो जाये उन्हें जो ज्ञान दिये गये हैं कि यह (कुआन) सत्य है आप के पालनहार की ओर से, और इस पर ईमान लायें और इस के लिये झुक जायें उन के दिल, और निःसंदेह अल्लाह ही पथ प्रदर्शक है उन का जो ईमान लायें सुपथ की ओर।

55. तथा जो काफ़िर हो गये तो वह सदा संदेह में रहेंगे इस (कुआन) से, यहाँ तक कि उन के पास सहसा प्रलय आ जाये, अथवा उन के पास बांझ^[2] दिन की यातना आ जाये।

56. राज्य उस दिन अल्लाह ही का होगा, वही उन के बीच निर्णय करेगा, तो जो ईमान लाये और सदाचार किये

إِذَاتَمَّتْ آيَاتُ الشَّيْطَانِ فِي أُمَّمَّتِهِمْ فَيَسْخَرُ اللَّهُ مَا لَيْقَى الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحَكِّمُ اللَّهُ آيَاتِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٣﴾

لِيَجْعَلَ مَا لَيْقَى الشَّيْطَانُ فِتْنَةً لِلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْقَاسِيَةِ قُلُوبَهُمْ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَكَفَىٰ شِقَاقَ بَعِيدٍ ﴿٥٤﴾

وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَيُؤْمِنُوا بِهِ فَتُخْبِتَ لَهُ قُلُوبُهُمْ وَإِنَّ اللَّهَ لَهَادِ الَّذِينَ آمَنُوا إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٥﴾

وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مَرِيضَةٍ مِنْهُمْ حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ يَوْمَ عَقَابِهِمْ ﴿٥٦﴾

الْمَلِكُ يَوْمَئِذٍ يَكْحُكُمُ بَيْنَهُمْ فَاَلَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٥٧﴾

1 आयत का अर्थ यह है कि जब नबी धर्मपुस्तक की आयतें सुनाते हैं तो शैतान, लोगों को उस के अनुपालन से रोकने के लिये संशय उत्पन्न करता है।

2 बांझ दिन से अभिप्राय प्रलय का दिन है क्योंकि उस की रात नहीं होगी।

तो वह सुख के स्वर्गों में होंगे।

57. और जो काफिर हो गये, और हमारी आयतों को झूठलाया, उन्हीं के लिये अपमानकारी यातना है।
58. तथा जिन लोगों ने हिजरत (प्रस्थान) की अल्लाह की राह में, फिर मारे गये अथवा मर गये तो उन्हें अल्लाह अवश्य उत्तम जीविका प्रदान करेगा। और वास्तव में अल्लाह ही सर्वोत्तम जीविका प्रदान करने वाला है।
59. वह उन्हें प्रवेश देगा ऐसे स्थान में जिस से वह प्रसन्न हो जायेंगे, और वास्तव में अल्लाह सर्वज्ञ सहन्शील है।
60. यह वास्तविकता है, और जिस ने बदला लिया वैसा ही जो उस के साथ किया गया फिर उस के साथ अत्याचार किया जाये, तो अल्लाह उस की अवश्य सहायता करेगा, वास्तव में अल्लाह अति क्षान्त क्षमाशील है।
61. यह इस लिये कि अल्लाह प्रवेश देता है रात्रि को दिन में, और प्रवेश देता है दिन को रात्रि में। और अल्लाह सब कुछ सुनने देखने वाला^[1] है।
62. यह इस लिये कि अल्लाह ही सत्य है, और जिसे वह अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वही असत्य है, और अल्लाह ही सर्वोच्च महान् है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ
عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿٥٧﴾

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قُتِلُوا
أَوْ مَاتُوا أَلِيرْزَقْتَهُمُ اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا
وَإِنَّ اللَّهَ لَهُمْ خَيْرُ الرَّزُقِينَ ﴿٥٨﴾

لِيُدْخِلَهُمْ مَدِينًا مَّا رِضْوَنَهُ وَإِنَّ اللَّهَ
لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿٥٩﴾

ذَٰلِكَ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهِ
ثُمَّ نَجَّى عَلَيْهِ لِيُبَصِّرَهُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ لَعَفُورٌ
غَفُورٌ ﴿٦٠﴾

ذَٰلِكَ يَأْتِ اللَّهُ يُؤَلِّمُ الْيَلِيلَ فِي النَّهَارِ
وَيُؤَلِّمُ النَّهَارَ فِي الْيَلِيلِ وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ
بَصِيرٌ ﴿٦١﴾

ذَٰلِكَ يَأْتِ اللَّهُ هُوَ الْحَقُّ وَإِنَّ مَا يَدْعُونَ
مِنْ دُونِهِ هُوَ الْبَاطِلُ وَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ
الْكَبِيرُ ﴿٦٢﴾

1 अर्थात् उस का नियम अन्धा नहीं है कि जिस के साथ अत्याचार किया जाये उस की सहायता न की जाये। रात्रि तथा दिन का परिवर्तन बता रहा है कि एक ही स्थिति सदा नहीं रहती।

63. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह आकाश से जल बरसाता है तो भूमि हरी हो जाती है, वास्तव में अल्लाह सूक्ष्मदर्शी सर्वसूचित है।
64. उसी का है जो आकाशों में तथा जो धरती में है। और वास्तव में अल्लाह ही निस्पृह प्रशंसित है।
65. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह ने वश में कर दिया^[1] है तुम्हारे, जो कुछ धरती में है, तथा नाव को (जो) चलती है सागर में उस के आदेश से, और रोकता है आकाश को धरती पर गिरने से परन्तु उस की अनुमति से? वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये अति करुणामय दयावान् है।
66. तथा वही है जिस नें तुम्हें जीवित किया, फिर तुम्हें मारेगा, फिर तुम्हें जीवित करेगा, वास्तव में मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न है।
67. (हे नबी!) हम ने प्रत्येक समुदाय के लिये (इबादत की) विधि निर्धारित कर दी थी, जिस का वह पालन करते रहे, अतः उन्हें आप से इस (इस्लाम के नियम) के संबंध में विवाद नहीं करना चाहिये। और आप अपने पालनहार की ओर लोगों को बुलायें, वास्तव में आप सीधी राह पर हैं^[2]।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
فَتَصْبِحُ الْأَرْضُ مُخْضَرَةً إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ
خَبِيرٌ

لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَمِيدُ

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مِمَّا فِي الْأَرْضِ
وَأَنَّكُمْ تَجْرُونَ فِي الْبِحَارِ بِأَمْوَاجٍ وَالسَّمَاءِ
أَنْ تَقَعَّ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا يَادِينُ إِنَّ اللَّهَ
بِالنَّاسِ لَرَوُّوفٌ رَحِيمٌ

وَهُوَ الَّذِي أَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ
إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ

لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ فَلَا
يُنَازِعُكَ فِي الْأَمْرِ وَأُدْعُ إِلَى رَبِّكَ إِنَّكَ
لَعَلَىٰ هُدًى مِّنْ سُبُلِهِ

1 अर्थात् तुम उन से लाभान्वित हो रहे हो।

2 अर्थात् जिस प्रकार प्रत्येक युग में लोगों के लिये धार्मिक नियम निर्धारित किये गये उसी प्रकार अब कूर्आन धर्म विधान तथा जीवन विधान है। इस लिये अब प्राचीन धर्मों के अनुयायियों को चाहिये कि इस पर ईमान लायें, न कि इस

68. और यदि वह आप से विवाद करें, तो कह दें कि अल्लाह तुम्हारे कर्मों से भली भाँति अवगत है।

69. अल्लाह ही तुम्हारे बीच निर्णय करेगा क्यामत (प्रलय) के दिन जिस में तुम विभेद कर रहे हो।

70. (हे नबी!) क्या आप नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो आकाश तथा धरती में है, यह सब एक किताब में (अंकित) है। वास्तव में यह अल्लाह के लिये अति सरल है।

71. और वह इबादत (वंदना) अल्लाह के अतिरिक्त उस की कर रहे हैं जिस का उस ने कोई प्रमाण नहीं उतारा है, और न उन्हें उस का कोई ज्ञान है। और अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं होगा।

72. और जब उन को सुनायी जाती है हमारी खुली आयतें तो आप पहचान लेते हैं उन के चेहरों में जो काफिर हो गये बिगाड़ को। और लगता है कि वह आक्रमण कर देंगे उन पर जो उन्हें हमारी आयतें सुनाते हैं। आप कह दें: क्या मैं तुम्हें इस से बुरी चीज़ बता दूँ? वह अग्नि है जिस का वचन अल्लाह ने काफिरों को दिया है, और वह बहुत ही बुरा आवास है।

وَأَنْ جَادِلُواكَ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٦٨﴾

اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٦٩﴾

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّ ذَلِكَ فِي كِتَابٍ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧٠﴾

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يَنْزِلْ بِهِ سُلْطَانًا وَالَّذِينَ لَهُمْ بِهِ عِلْمٌ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ﴿٧١﴾

وَإِذَا تُلِّقُ عَلَيْهِمُ الْآيَاتُ يُذَكِّرُنَّ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَالْمُنْكَرُ بِكَادُونَ يُسْطُونَ بِالَّذِينَ يَسْتَلُونَ عَلَيْهِمُ الْآيَاتُ قُلْ أَفَأَنْتُمْ كُنْتُمْ بِشِرِّهِمْ مِنْ ذَلِكَ أَلْتَأْوَعَدُهُمُ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَأَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٧٢﴾

विषय में आप से विवाद करें। और आप निश्चिन्त हो कर लोगों को इस्लाम की ओर बुलायें क्यों कि आप सत्धर्म पर हैं। और अब आप के बाद सारे पुराने धर्म निरस्त कर दिये गये हैं।

73. हे लोगो! एक उदाहरण दिया गया है इसे ध्यान से सुनो, जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो, वह सब एक मक्खी नहीं पैदा कर सकते यद्यपि सब इस के लिये मिल जायें। और यदि उन से मक्खी कुछ छीन ले तो उस से वापिस नहीं ले सकते। माँगने वाले निर्बल, और जिन से माँगा जाये वह दोनों ही निर्बल हैं।

74. उन्हीं ने अल्लाह का आदर किया ही नहीं जैसे उस का आदर करना चाहिये! वास्तव में अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभुत्वशाली है।

75. अल्लाह ही निर्वाचित करता है फ़रिश्तों में से तथा मनुष्यों में से रसूलों को। वास्तव में वह सुनने तथा देखने^[1] वाला है।

76. वह जानता है जो उन के सामने है और जो कुछ उन से ओझल है, और उसी की ओर सब काम फेरे जाते हैं।

77. हे ईमान वालो! रुकूअ करो तथा सज्दा करो, और अपने पालनहार की इबादत (वंदना) करो, और भलाई करो ताकि तुम सफल हो जाओ।

78. तथा अल्लाह के लिये जिहाद करो जैसे जिहाद करना^[2] चाहिये। उसी

يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضَرْبٌ مِّثْلُ مَا سَأَلْتُمُوهُ إِنَّ
الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ
يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوْ اجْتَمَعُوا لَهُ وَلَا
يَسُدُّهُمُ اللَّهُ ذُبَابٌ شَيْئًا إِلَّا يَسْتَفْتِدُوهُ مِنْهُ
ضَعُفَ الظَّالِمِ وَالْمَطْلُوبِ ۝

مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ
عَزِيزٌ ۝

اللَّهُ يَصْطَلِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمَنْ
النَّاسِ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَالِلَّهِ تُرْجِعُ الْأُمُورُ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا
وَاعْبُدُوا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ
تَكْفُرُونَ ۝

وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ هُوَ

1 अर्थात् वही जानता है कि रसूल (संदेशवाहक) बनाये जाने के योग्य कौन है।

2 एक व्यक्ति ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया कि कोई धन के लिये लड़ता है, कोई नाम के लिये और कोई वीरता दिखाने के लिये। तो कौन अल्लाह के लिये लड़ता है? आप ने फ़रमाया: जो अल्लाह का शब्द ऊँचा करने के लिये लड़ता है। (सहीह बुखारी: 123, 2810)

ने तुम्हें निर्वाचित किया है और नहीं बनाई तुम पर धर्म में कोई संकीर्णता (तंगी)। यह तुम्हारे पिता इब्राहीम का धर्म है, उसी ने तुम्हारा नाम मुस्लिम रखा है इस (कुरआन) से पहले तथा इस में भी। ताकि रसूल गवाह हों तुम पर, और तुम गवाह^[1] बनो सब लोगों पर। अतः नमाज़ की स्थापना करो तथा ज़कात दो, और अल्लाह को सुदृढ़ पकड़^[2] लो। वही तुम्हारा संरक्षक है। तो वह क्या ही अच्छा संरक्षक तथा क्या ही अच्छा सहायक है।

اجْتَبَاكُمْ وَمَا جَعَلْ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ
حَرَجٍ مِّلَّةَ اٰبِاِكُمْ اِبْرٰهٖمَ هُوَ سَمٰنُكُمْ
المُسْلِمِيْنَ ؕ مِنْ قَبْلُ وَفِي هٰذَا يَكُوْنُ
الرَّسُوْلُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْنَ شٰهَدًا عَلٰى
النَّاسِ ۗ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَآتُوا الزَّكٰوةَ
وَاعْتَصِمُوا بِاِلٰهِ هُوَ مَوْلٰكُمْ فَنِعْمَ
المَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝

1 व्याख्या के लिये देखिये सूरह बकरा, आयत: 143।

2 अर्थात् उस की आज्ञा और धर्म विधान का पालन करो।

सूरह मुमिनून - 23



सूरह मुमिनून के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 118 आयतें हैं।

- इस सूरह में ईमान वालों की सफलता तथा उन के गुणों को बताया गया है।
- और जिस आस्था पर सफलता निर्भर है उस के सत्य होने के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं। और संदेहों को दूर किया गया है।
- यह बताया गया है कि सब नबियों का धर्म एक था, लोगों ने विभेद कर के अनेक धर्म बना लिये।
- जो लोग अचेत हैं उन्हें सावधान करने के साथ साथ मौत तथा प्रलय के दिन उनकी दुर्दशा को बताया गया है।
- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के माध्यम से मुसलमानों को अल्लाह की क्षमा तथा दया के लिये प्रार्थना की शिक्षा दी गयी है।
- हदीस में है कि जिस में तीन बातें हों उसे ईमान की मिठास मिल जाती है: जिस को अल्लाह और उस के रसूल सब से अधिक प्रिय हों। और जो किसी से मात्र अल्लाह के लिये प्रेम करे। और जिसे यह अप्रिय हो कि इस के पश्चात् कुफ़्र में वापिस जाये जब कि अल्लाह ने उसे उस से निकाल दिया। जैसे की उसे यह अप्रिय हो कि उसे नरक में फेंक दिया जाये। (सहीह बुखारी, 21, मुस्लिम, 43)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सफल हो गये ईमान वाले।
2. जो अपनी नमाज़ों में विनीत रहने वाले हैं।

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ۝

الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۝

3. और जो व्यर्थ^[1] से विमुख रहने वाले हैं
4. तथा जो ज़कात देने वाले हैं।
5. और जो अपने गुप्तांगो की रक्षा करने वाले हैं।
6. परन्तु अपनी पत्नियों तथा अपने स्वामित्व में आयी दासियों से, तो वही निन्दित नहीं हैं।
7. फिर जो इस के अतिरिक्त चाहें, तो वही उल्लंघनकारी हैं।
8. और जो अपनी धरोहरों तथा वचन का पालन करने वाले हैं।
9. तथा जो अपनी नमाजों की रक्षा करने वाले हैं।
10. यही उत्तराधिकारी हैं।
11. जो उत्तराधिकारी होंगे फ़िर्दौस^[2] के, जिस में वे सदावासी होंगे।
12. और हम ने उत्पन्न किया है मनुष्य को मिट्टी के सार^[3] से।
13. फिर हम ने उसे वीर्य बना कर रख दिया एक सुरक्षित स्थान^[4] में।
14. फिर बदल दिया वीर्य को जमे हुये रक्त में, फिर हम ने उसे मांस का

وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُونَ ﴿٣﴾

وَالَّذِينَ هُمْ لِلزَّكَاةِ فَاعِلُونَ ﴿٤﴾

وَالَّذِينَ هُمْ لِأُفْئُوتِهِمْ حَافِظُونَ ﴿٥﴾

إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٦﴾

فَمَنِ ابْتِغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ﴿٧﴾

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ﴿٨﴾

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٩﴾

أُولَٰئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ ﴿١٠﴾

الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرَادُوسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١١﴾

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِنْ سَلْطَنٍ مِنْ طِينٍ ﴿١٢﴾

ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ﴿١٣﴾

ثُمَّ خَلَقْنَا النَّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً

1 अर्थात् प्रत्येक व्यर्थ कार्य तथा कथन से। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जो अल्लाह और प्रलय के दिन पर ईमान रखता हो वह अच्छी बात बोले अन्यथा चुप रहे। (सहीह बुखारी, 6019, मुस्लिम, 48)

2 फ़िर्दौस: स्वर्ग का सर्वोच्च स्थान।

3 अर्थात् वीर्य से।

4 अर्थात् गर्भाशय में।

लोथड़ा बना दिया, फिर हम ने लोथड़े में हड्डियाँ बनायीं, फिर हम ने पहना दिया हड्डियों को मांस, फिर उसे एक अन्य रूप में उत्पन्न कर दिया। तो शुभ है अल्लाह जो सब से अच्छी उत्पत्ति करने वाला है।

15. फिर तुम सब इस के पश्चात् अवश्य मरने वाले हो।
16. फिर निश्चय तुम सब (प्रलय) के दिन जीवित किये जाओगे।
17. और हम ने बना दिये तुम्हारे ऊपर सात आकाश, और हम उत्पत्ति से अचेत नहीं^[1] हैं।
18. और हम ने आकाश से उचित मात्रा में पानी बरसाया, और उसे धरती में रोक दिया तथा हम उसे विलुप्त कर देने पर निश्चय सामर्थ्यवान हैं।
19. फिर हम ने उपजा दिये तुम्हारे लिये उस (पानी) के द्वारा खजूरों तथा अंगूरों के बाग, तुम्हारे लिये उस में बहुत से फल हैं, और उसी में से तुम खाते हो।
20. तथा वृक्ष जो निकलता है सैना पर्वत से जो तेल लिये उगता है। तथा सालन है खाने वालों के लिये।
21. और वास्तव में तुम्हारे लिये पशुओं में एक शिक्षा है, हम तुम्हें पिलाते हैं उस में से जो उन के पेटों में^[2] है।

فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظًا فَكَسَوْنَا الْعِظَ لَحْمًا ثُمَّ
أَنشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ﴿٥﴾

ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَلِكَ لَمَيِّتُونَ ﴿٦﴾

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تُبْعَثُونَ ﴿٧﴾

وَلَقَدْ خَلَقْنَا قَوْمَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقٍ وَأَوْكَيْنَا عَنْ
الطَّيْقِ ﴿٨﴾

وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَنْتَهُ فِي الْأَرْضِ
وَإِنَّا عَلَى ذَهَابٍ بِهِ لَقَادِرُونَ ﴿٩﴾

فَأَنشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَبَلٍ مِّنْ نَّجِيلٍ وَأَعْنَابٍ لَّكُمْ
فِيهَا قَوَاقِرٌ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿١٠﴾

وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِن طُورِ سَيْنَاءَ تَنبُتُ بِالذُّهْنِ
وَصِبْغٍ لِلْأَكْلِيِّينَ ﴿١١﴾

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً لِّتَسْقِيَهُمْ مِمَّا فِي
بَطْنِهَا وَأَكُمُوهَا مِن مَّا نَفَعُ كَثِيرَةً وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿١٢﴾

1 अर्थात् उत्पत्ति की आवश्यकता तथा जीवन के संसाधन की व्यवस्था भी कर रहे हैं।

2 अर्थात् दूध।

तथा तुम्हारे लिये उन में अन्त्य बहुत से लाभ हैं, और उन में से कुछ को तुम खाते हो।

22. तथा उन पर और नावों पर तुम सवार किये जाते हो।

23. तथा हम ने भेजा नूह^[1] को उस की जाति की ओर, उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! इबादत (वन्दना) अल्लाह की करो, तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है उस के सिवा, तो क्या तुम डरते नहीं हो?

24. तो उन प्रमुखों ने कहा जो काफिर हो गये उस की जाति में से, यह तो एक मनुष्य है, तुम्हारे जैसा, यह तुम पर प्रधानता चाहता है। और यदि अल्लाह चाहता तो किसी फरिश्ते को उतारता, हम ने तो इसे^[2] सुना ही नहीं अपने पूर्वजों में।

25. यह बस एक ऐसा पुरुष है जो पागल हो गया है, तो तुम उस की प्रतीक्षा करो कुछ समय तक।

26. नूह ने कहा: हे मेरे पालनहार! मेरी सहायता कर उन के मुझे झुठलाने पर।

27. तो हम ने उस की ओर वह्यी की, कि नाव बना हमारी रक्षा में हमारी वह्यी के अनुसार, और जब हमारा

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلِكِ تُحْمَلُونَ ﴿٢٢﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ لِقَوْمِ أَعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٢٣﴾

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ بَرِيدًا نَبَأَ الْبَطْشَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ سَاءَ إِلَهُ لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً لِنَسْمِعَنَّ بِهِدَايَاتِ آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ﴿٢٤﴾

إِنَّهُ هُوَ الْاَرْجَلُ بِهِ جِنَّةٌ فَاَتَرَ صُورَاهُ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٢٥﴾

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِي آيَةً ﴿٢٦﴾

فَاَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنْ اصْنَعِ الْفُلَكَ بِأَعْيُنِنَا وَوْحَيْنَا فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُورَ فَاسْلُكْ

1 यहाँ यह बताया जा रहा है कि अल्लाह ने जिस प्रकार तुम्हारे आर्थिक जीवन के साधन बनाये उसी प्रकार तुम्हारे आत्मिक मार्ग दर्शन की व्यवस्था की और रसूलों को भेजा जिन में नूह अलैहिस्सलाम प्रथम रसूल थे।

2 अर्थात् एकेश्वरवाद की बात अपने पूर्वजों के समय में सुनी ही नहीं।

आदेश आ जाये तथा तन्नूर उबल पड़े, तो रख ले प्रत्येक (जीव) के एक-एक जोड़े तथा अपने परिवार को, उस के सिवा जिस पर पहले निर्णय हो चुका है उन में से, और मुझे संबोधित न करना उन के विषय में जिन्होंने अत्याचार किये हैं, निश्चय वे डुबो दिये जायेंगे।

28. और जब स्थिर हो जाये तू और जो तेरे साथी हैं नाव पर, तो कह: सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जिस ने हमें मुक्त किया अत्याचारी लोगों से।
29. तथा कह: हे मेरे पालनहार! मुझे शुभ स्थान में उतार, और तू उत्तम स्थान देने वाला है।
30. निश्चय इस में कई निशानियाँ हैं, तथा निःसंदेह हम परीक्षा लेने^[1] वाले हैं।
31. फिर हम ने पैदा किया उन के पश्चात् दूसरे समुदाय को।
32. फिर हम ने भेजा उन में रसूल उन्हीं में से कि तुम इबादत (वंदना) करो अल्लाह की, तुम्हारा कोई (सच्चा) पूज्य नहीं है उस के सिवा, तो क्या तुम डरते नहीं हो?
33. और उस की जाति के प्रमुखों ने कहा जो काफिर हो गये तथा आखिरत (परलोक) का सामना करने को झुठला दिया, तथा हम ने उन्हें सम्पन्न किया था संसारिक जीवन में:

فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَمَّا كَإِلَّا
مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ وَلَا تَحْطِطُنَّ
فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا إِلَهُهُمْ مَعْرِفُونَ ﴿٢٥﴾

فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَعَكَ عَلَى الْفُلِكِ فَقُلْ
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي بَخَسَنَا مِنْ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٢٦﴾

وَقُلْ رَبِّ ارْتَلَىٰ نَزْلًا مُبَارَكًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْمُنزِلِينَ ﴿٢٧﴾

إِنَّ فِي ذَلِكَ لآيَاتٍ وَإِن كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ﴿٢٨﴾

ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَوْمًا آخَرِينَ ﴿٢٩﴾

فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم
مِنَ الْإِلَهِ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣٠﴾

وَقَالَ الْمَلَائِكَةُ قَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
الْآخِرَةَ وَأَتَوْقَفُهُمْ فِي السَّيِّئَاتِ الدُّنْيَا مَا هَذَا إِلَّا بَشِيرٌ
مِثْلَكُمْ بِأَكْلِ مَا تَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِثْلًا
مِثْلِيُونَ ﴿٣١﴾

1 अर्थात् रसूलों के द्वारा परीक्षा लेते रहे हैं।

यह तो बस एक मनुष्य है तुम्हारे
जैसा, खाता है जो तुम खाते हो और
पीता है जो तुम पीते हो।

وَلَكِنْ أَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ أَإِنَّكُمْ لَذَاكِرُونَ ﴿٦٠﴾

34. और यदि तुम ने मान लिया अपने
जैसे एक मनुज को तो निश्चय तुम
क्षतिग्रस्त हो।

أَيَعِدْكُمْ أَنْتُمْ إِذْ آمَنْتُمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَعِظَامًا أَنْتُمْ
تُخْرَجُونَ ﴿٦١﴾

35. क्या वह तुम को वचन देता है कि
जब तुम मर जाओगे और धूल तथा
हड्डियाँ हो जाओगे तो तुम फिर
जीवित निकाले जाओगे?

هِيَ هَاتَ هِيَ هَاتَ لِمَا تُوَعَدُونَ ﴿٦٢﴾

36. बहुत दूर की बात है जिस का तुम्हें
वचन दिया जा रहा है।

إِنَّ هِيَ إِلَّا حَيَاتُ الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نحْنُ
بِمُعْذِبِينَ ﴿٦٣﴾

37. जीवन तो बस संसारिक जीवन है,
हम मरते-जीते हैं, और हम फिर
जीवित नहीं किये जायेंगे।

إِنَّ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَمَا نحْنُ
لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٦٤﴾

38. यह तो बस एक व्यक्ति है जिस ने
अल्लाह पर एक झूठ घड़ लिया है।
और हम उस का विश्वास करने
वाले नहीं हैं।

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ﴿٦٥﴾

39. नबी ने प्रार्थना की: मेरे पालनहार!
मेरी सहायता कर उन के झुठलाने
पर मुझे।

قَالَ عَمَّا يُدْبِلُ لِيُضِلَّكَ لِيُذِيبَنَ ﴿٦٦﴾

40. (अल्लाह ने) कहा: शीघ्र ही वह (अपने
किये पर) पछतायेंगे।

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنَاهُمْ غُرَابًا
مِّبْعَدَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٦٧﴾

41. अन्ततः पकड़ लिया उन्हें कोलाहल ने
सत्यानुसार, और हम ने उन्हें कचरा
बना दिया, तो दूरी हो अत्याचारियों
के लिये।

ثُمَّ أَنشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُونًا آخَرِينَ ﴿٦٨﴾

42. फिर हम ने पैदा किया उन के

पश्चात् दूसरे युग के लोगों को।

43. नहीं आगे होती है कोई जाति अपने समय से और न पीछे।^[1]
44. फिर हम ने भेजा अपने रसूलों को निरन्तर, जब जब किसी समुदाय के पास उस का रसूल आया, उन्होंने ने उस को झुठला दिया, तो हम ने पीछे लगा^[2] दिया उन के एक को दूसरे के और उन्हें कहानी बना दिया। तो दूरी है उन के लिये जो ईमान नहीं लाते।
45. फिर हम ने भेजा मूसा तथा उस के भाई हारून को अपनी निशानियों तथा खुले तर्क के साथ।
46. फिर औन और उस के प्रमुखों की ओर तो उन्होंने ने गर्व किया, तथा थे थे ही अभिमानी लोग।
47. उन्होंने ने कहा: क्या हम ईमान लायें अपने जैसे दो व्यक्तियों पर, जब कि उन दोनों की जाति हमारे आधीन है?
48. तो उन्होंने ने दोनों को झुठला दिया, तथा हो गये विनाशों में।
49. और हम ने प्रदान की मूसा को पुस्तक^[3], ताकि वह मार्ग दर्शन पा जायें।
50. और हम ने बना दिया मर्यम के पुत्र

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجْلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٢٣﴾

ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرًا كُلَّمَا جَاءَ أُمَّةٌ رَسُولَهَا
كَذَّبُوهُ فَأَنْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ
أَحَادِيثَ فَبِعَدَّةِ الْقَوْمِ لَأَنُؤْمِنُونَ ﴿٢٤﴾

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا
وَسُلْطِينَ مُبِينِينَ ﴿٢٥﴾

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا
عَالِينَ ﴿٢٦﴾

فَقَالُوا أَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا
عِبَادُونَ ﴿٢٧﴾

فَلَدَّيْنَاهُمَا فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ ﴿٢٨﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٢٩﴾

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّةً آيَةً وَآدَيْنَاهُمَا إِلَىٰ

1 अर्थात् किसी जाति के विनाश का समय आ जाता है तो एक क्षण की भी देर-सवेर नहीं होती।

2 अर्थात् विनाश में।

3 अर्थात् तौरात।

तथा उस की माँ को एक निशानी,
तथा दोनों को शरण दी एक उच्च
बसने योग्य तथा प्रवाहित स्रोत के
स्थान की ओर।^[1]

51. हे रसूलो! खाओ स्वच्छ^[2] चीजों में से तथा अच्छे कर्म करो, वास्तव में, मैं उस से जो तुम कर रहे हो भली भाँति अवगत हूँ।
52. और वास्तव में यह तुम्हारा धर्म एक ही धर्म है और मैं ही तुम सब का पालनहार हूँ, अतः मुझी से डरो।
53. तो उन्होंने ने खण्ड कर लिया अपने धर्म का आपस में कई खण्ड, प्रत्येक सम्प्रदाय उसी में जो उन के पास^[3] है मग्न है।
54. अतः (हे नबी!) आप उन्हें छोड़ दें उन की अचेतना में कुछ समय तक।
55. क्या वे समझते हैं कि हम जो सहायता कर रहे हैं उन की धन तथा संतान से।
56. शीघ्रता कर रहे हैं उन के लिये

رَبُّو قَدَاتٍ قَرَارٍ وَمَعِينٍ ۝

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ كُلُوا مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا
إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝

وَأَنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ
فَاتَّقُونِ ۝

فَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا كُلُّ حِزْبٍ بِمَا
لَدَيْهِمْ فِرْعَوْنٌ ۝

فَدَرَأَهُمْ فِي غَمْرَتِهِمْ حَتَّى حِينٍ ۝

أَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُسَبِّهُنَّ بِهُ مِنْ قَالٍ وَنَسِينٍ ۝

نَسَاءٍ لَهُمْ فِي الْحَيَاتِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

1 इस से अभिप्राय बैतुल मक़दिस है।

2 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: अल्लाह स्वच्छ है और स्वच्छ ही को स्वीकार करता है। और ईमान वालों को वही आदेश दिया है जो रसूलों को दिया है। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (संक्षिप्त अनुवाद, मुस्लिम: 1015)

3 इन आयतों में कहा गया है कि सब रसूलों ने यही शिक्षा दी है कि स्वच्छ पवित्र चीजें खाओ और सदाचार करो। तुम्हारा पालनहार एक है और तुम सभी का धर्म एक है। परन्तु लोगों ने धर्म में विभेद कर के बहुत से सम्प्रदाय बना लिये, और अब प्रत्येक सम्प्रदाय अपने विश्वास तथा कर्म में मग्न है भले ही वह सत्य से दूर हो।

भलाईयों में? बल्कि वह समझते नहीं हैं।^[1]

57. वास्तव में जो अपने पालनहार के भय से डरने वाले हैं।
58. और जो अपने पालनहार की आयतों पर ईमान रखते हैं।
59. और जो अपने पालनहार का साझी नहीं बनाते हैं।
60. और जो करते हैं जो कुछ भी करें, और उन के दिल काँपते रहते हैं कि वे अपने पालनहार की ओर फिर कर जाने वाले हैं।
61. वही शीघ्रता कर रहे हैं भलाईयों में, तथा वही उन के लिये अग्रसर हैं।
62. और हम बोझ नहीं रखते किसी प्राणी पर परन्तु उस के सामर्थ्य के अनुसार। तथा हमारे पास एक पुस्तक है जो सत्य बोलती है, और उन पर अत्याचार नहीं किया^[2] जायेगा।
63. बल्कि उन के दिल अचेत हैं इस से, तथा उन के बहुत से कर्म हैं इस के सिवा जिसे वे करने वाले हैं।
64. यहाँ तक कि जब हम पकड़ लेंगे उन के सुखियों को यातना में, तो वे विलाप करने लगेंगे।
65. आज विलाप न करो, निःसंदेह तुम हमारी ओर से सहायता नहीं दिये जाओगे।

إِنَّ الَّذِينَ هُمْ مِنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُتَّقُونَ ﴿٥٧﴾

وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٨﴾

وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾

وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوْا وَقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ لَهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ لَجِبُونَ ﴿٦٠﴾

أُولَٰئِكَ يَسْرِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا سَابِقُونَ ﴿٦١﴾

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا وَّلَا وُسْعَهَا وَلَا نَكْتُمُ لِلنَّاسِ نِجْمًا بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٢﴾

بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي غَمْرَةٍ مِنْ هَذَا وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِنْ دُونِ ذَٰلِكَ هُمْ لَهَا عَالِمُونَ ﴿٦٣﴾

حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِمْ بِالْعَذَابِ إِذَا هُمْ يَجْتَرُونَ ﴿٦٤﴾

لَا تَجْعَلُوا الْيَوْمَ لَكُمْ مَوْتًا لَآتِيَهُمْ رُسُلُهُمْ

1 अर्थात् यह कि हम उन्हें अवसर दे रहे हैं।

2 अर्थात् प्रत्येक का कर्म लेख है जिस के अनुसार ही उसे बदला दिया जायेगा।

66. मेरी आयतें तुम्हें सुनायी जाती रहीं तो तुम अपनी एड़ियों के बल फिरते रहे।
67. अभिमान करते हुये, उसे कथा बना कर बकवास करते रहे।
68. क्या उन्होंने ने इस कथन (कुर्आन) पर विचार नहीं किया, अथवा इन के पास वह^[1] आ गया जो उन के पूर्वजों के पास नहीं आया?
69. अथवा वह अपने रसूल से परिचित नहीं हुये, इस लिये वह उस का इन्कार कर रहे^[2] हैं?
70. अथवा वे कहते हैं कि वह पागलपन है? बल्कि वह तो उन के पास सत्य लाये हैं, और उन में से अधिकतर को सत्य अप्रिय है।
71. और यदि अनुसरण करने लगे सत्य उन की मनमानी का, तो अस्त-व्यस्त हो जाये आकाश तथा धरती और जो उन के बीच है, बल्कि हम ने दे दी है उन को उन की शिक्षा, फिर (भी) वे अपनी शिक्षा से विमुख हो रहे हैं।
72. (हे नबी!) क्या आप उन से कुछ (धन) माँग रहे हैं? आप के लिये तो आप के पालनहार का दिया हुआ ही उत्तम है। और वह सर्वोत्तम जीविका देने वाला है।

قَدَّ كَانَتْ الَّتِي تَشْتَلُّ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ
تَنَكِّصُونَ ﴿٦٦﴾

مُسْتَكْبِرِينَ تَكْبِرُ بِهِ سِيرَاتِهِمْ يُجْرُونَ ﴿٦٧﴾

أَفَلَمْ يَذْكُرُوا الْقَوْلَ الَّذِي كَانُوا يَدْعُونَ
أَبَاءَهُمْ ﴿٦٨﴾

أَمْ لَهُمْ بَعْدَ ذَلِكَ سُرَّةٌ أَلَمْ يَكُونُوا
مَعْرِضِينَ ﴿٦٩﴾

أَمْ يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ بَلْ جَاءَهُمُ الْبَصِيرُ
الْحَقِّ يُرْوُونَ ﴿٧٠﴾

وَلَوْ اتَّبَعَ الشُّعْرَاءُ لَمَسَدَاتِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَمَنْ فِيهِنَّ بَلْ آتَيْنَاهُمُ الْبَصِيرَةَ عَنْ ذِكْرِهِمْ
مُعْرِضُونَ ﴿٧١﴾

أَمْ تَسْأَلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَجْنَا بِكَ خَيْرًا وَهُوَ خَيْرٌ
الَّذِي قَبِلْنَا ﴿٧٢﴾

- 1 अर्थात् कुर्आन तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आ गये। इस पर तो इन्हें अल्लाह का कृतज्ञ होना और इसे स्वीकार करना चाहिये।
- 2 इस में चेतावनी है कि वह अपने रसूल की सत्यता - अमानत तथा उन के चरित्र और वंश से भली भाँति अवगत हैं।

73. निश्चय आप तो उन्हें सुपथ की ओर बुला रहे हैं।
74. और जो आखिरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते वे सुपथ से कतराने वाले हैं।
75. और यदि हम उन पर दया कर दें और दूर कर दें जो दुःख उन के साथ है^[1] तो वह अपने कुकर्मों में और अधिक बहकते जायेंगे।
76. और हम ने उन्हें यातना में ग्रस्त (भी) किया, तो अपने पालनहार के समक्ष नहीं झुके और न विनय करते हैं।
77. यहाँ तक कि जब हम उन पर खोल देंगे कड़ी यातना के^[2] द्वार, तो सहसा वह उस समय निराश हो जायेंगे^[3]।
78. वही है जिस ने बनाये हैं तुम्हारे लिये कान तथा आँखें और दिल^[4], (फिर भी) तुम बहुत कम कृतज्ञ होते हो।
79. और उसी ने तुम्हें धरती में फैलाया है, और उसी की ओर एकत्र किये जाओगे।
80. तथा वही है जो जीवन देता और मारता है, और उसी के अधिकार में है रात्रि तथा दिन का फेर बदल, तो क्या तुम समझ नहीं रखते?

وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصَّوَابِ لَنُكَيِّبُنَّ ۝

وَلَنُوجِبُهُمْ ذُرِّيَّتَهُمْ مِنْ صُورٍ كَالْجِبَالِ
طُعْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝

وَلَقَدْ أَخَذْنَا آلَ آدَمَ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوا لِرَبِّهِمْ
وَمَا يَتَضَعُونَ ۝

حَتَّى إِذَا فَتَنَّا عَلَيْهِمْ آبَاءَ آدَمَ أَشَدِّ
إِذْ هُمْ فِيهِ مُبَسِّئُونَ ۝

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ
قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝

وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ
تُحْشَرُونَ ۝

وَهُوَ الَّذِي يُعَيِّشُ وَيُمِيتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ اللَّيْلِ
وَالنَّهَارِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

1 इस से अभिप्राय वह अकाल है जो मक्का के काफिरों पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अवज्ञा के कारण आ पड़ा था। (देखिये, बुखारी: 4823)

2 कड़ी यातना से अभिप्राय परलोक की यातना है।

3 अर्थात् प्रत्येक भलाई से।

4 सत्य को सुनने-देखने और उस पर विचार कर के उसे स्वीकार करने के लिये।

81. बल्कि उन्होंने ने वही बात कही जो अगलों ने कही।
82. उन्होंने ने कहा: क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी तथा हड्डियाँ हो जायेंगे, तो क्या हम फिर अवश्य जीवित किये जायेंगे?
83. हम को तथा हमारे पूर्वजों को इस से पहले यही वचन दिया जा चुका है, यह तो बस अगलों की कल्पित कथायें हैं।
84. (हे नबी!) उन से कहो: किस की है धरती और जो उस में है, यदि तुम जानते हो?
85. वे कहेंगे कि अल्लाह की। आप कहिये: फिर तुम क्यों शिक्षा ग्रहण नहीं करते?
86. आप पूछिये कि कौन है सातों आकाशों का स्वामी तथा महा सिंहासन का स्वामी?
87. वे कहेंग: अल्लाह है। आप कहिये: फिर तुम उस से डरते क्यों नहीं हो?
88. आप उन से कहिये कि किस के हाथ में है प्रत्येक वस्तु का अधिकार? और वह शरण देता है और उसे कोई शरण नहीं दे सकता, यदि तुम ज्ञान रखते हो?
89. वे अवश्य कहेंगे कि (यह सब गुण) अल्लाह ही के हैं। आप कहिये: फिर तुम पर कहाँ से जादू^[1] हो जाता है?

بَلْ قَالُوا مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُونَ ﴿۵۱﴾

قَالُوا إِنْ أَدَامَتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا إِنَّا لَبَعُولُونَ ﴿۵۲﴾

لَقَدْ وَعَدْنَا عَنَّا وَآبَاءَ هَذَا مِن قَبْلُ إِن هَذَا إِلَّا سَاطِرُ الْأَوَّلِينَ ﴿۵۳﴾

قُلْ لِيَن الْأَرْضُ وَمَن فِيهَا إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿۵۴﴾

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿۵۵﴾

قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿۵۶﴾

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿۵۷﴾

قُلْ مَنْ مِّنْ يَدِي ه مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِيبُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿۵۸﴾

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ فَأَنَّى تُسْحَرُونَ ﴿۵۹﴾

1 अर्थात् जब यह मानते हो कि सब अधिकार अल्लाह के हाथ में है और शरण भी

90. बल्कि हम ने उन्हें सत्य पहुँचा दिया है, और निश्चय यही मिथ्यावादी हैं।
91. अल्लाह ने नहीं बनायी है अपनी कोई संतान, और न उस के साथ कोई अन्य पूज्य है। यदि ऐसा होता तो प्रत्येक पूज्य अलग हो जाता अपनी उत्पत्ति को ले कर, और एक-दूसरे पर चढ़ दौड़ता। पवित्र है अल्लाह उन बातों से जो यह लोग बनाते हैं!
92. वह परोक्ष (छुपे) तथा प्रत्यक्ष (खुले) का ज्ञानी है, तथा उच्च है उस शिर्क से जो वे करते हैं।
93. (हे नबी!) आप प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार! यदि तू मुझे वह दिखाये जिस की उन्हें धमकी दी जा रही है।
94. तो मेरे पालनहार! मुझे इन अत्याचारियों में सम्मिलित न करना।
95. तथा वास्तव में हम आप को उसे दिखाने पर जिस की उन्हें धमकी दे रहे हैं अवश्य सामर्थ्यवान हैं।
96. (हे नबी!) आप दूर करें उस (व्यवहार) से जो उत्तम हो बुराई को। हम भली भाँति अवगत हैं उन बातों से जो वे बनाते हैं।
97. तथा आप प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण माँगता हूँ, शैतानों की शंकाओं से।

بَلْ آتَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٩٠﴾

مَا اتَّخَذَ اللَّهُ مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ إِلَهٍ إِذْ أَذْهَبَ كُلَّ إِلَهٍ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَّ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُصِفُونَ ﴿٩١﴾

عَلِيمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعَلَّى عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٩٢﴾

قُلْ رَبِّ إِمَّا تُرِيدُنِي مَا يُوعَدُونَ ﴿٩٣﴾

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٩٤﴾

وَإِنِّي عَلَىٰ أَنْ تُرِيدَ مَا نَعِدُهُمْ لَقَدِيرٌ ﴿٩٥﴾

إِذْ فَعَّمْنَا الْبَنِيَّ هِيَ أَحْسَنُ السَّبِيَّةِ طَمَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ﴿٩٦﴾

وَقُلْ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيْطَانِ ﴿٩٧﴾

वही देता है तो फिर उस के साझी कहाँ से आ गये। और उन्हें कहाँ से अधिकार मिल गया?

98. तथा मैं तेरी शरण माँगता हूँ, मेरे पालनहार! कि वह मेरे पास आयें।

99. यहाँ तक कि जब उन में किसी की मौत आने लगे तो कहता है: मेरे पालनहार! मुझे (संसार में) वापिस कर दे।^[1]

100. संभवतः मैं अच्छा कर्म करूँगा, उस (संसार में) जिसे छोड़ आया हूँ। कदापि ऐसा नहीं होगा। वह केवल एक कथन है जिसे वह कह रहा^[2] है। और उन के पीछे एक आड़^[3] है उन के पुनः जीवित किये जाने के दिन तक।

101. तो जब नरसिंघा में फूँक दिया जायेगा, तो कोई संबंध नहीं होगा उन के बीच उस^[4] दिन और न वे एक दूसरे को पृछेंगे।

102. फिर जिस के पलड़े भारी होंगे, वही सफल होने वाले हैं।

103. और जिस के पलड़े हल्के होंगे, तो उन्होंने ने ही स्वयं को क्षतिग्रस्त कर लिया, जो नरक में सदावासी होंगे।

104. झुलस देगी उन के चेहरों को अग्नि तथा उस में उन के जबड़े (झुलस कर) बाहर निकले होंगे।

وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَنْ يُخْضِرُونِ ۝

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجُونِ ۝

لَعَلِّي أَعْمَلُ صَالِحًا فِيمَا تَرَكْتُ كَلَّا إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا وَمِنْ وَرَائِهِمْ بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝

وَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَا أَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ۝

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَعْلِقُونَ ۝

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ۝

تَلْفَعُهُمْ وُجُوهُهُمْ لِلنَّارِ وَهُمْ فِيهَا كَالْحِجُونَ ۝

1 यहाँ मरण के समय काफ़िर की दशा को बताया जा रहा है। (इब्ने कसीर)

2 अर्थात् उस के कथन का कोई प्रभाव नहीं होगा।

3 आड़ जिस के लिये बर्ज़ख़ शब्द आया है, उस अवधि का नाम है जो मृत्यु तथा प्रलय के बीच होगी।

4 अर्थात् प्रलय के दिन उस दिन भय के कारण सब को अपनी चिन्ता होगी।

105. (उन से कहा जायेगा): क्या जब मेरी आयतें तुम्हें सुनायी जाती थीं तो तुम उन को झुठलाते नहीं थे?
106. वे कहेंगे: हमारे पालनहार! हमारा दुर्भाग्य हम पर छा गया^[1], और वास्तव में हम कुपथ थे।
107. हमारे पालनहार! हमें इस से निकाल दे, यदि अब हम ऐसा करें तो निश्चय हम अत्याचारी होंगे।
108. वह (अल्लाह) कहेगा: इसी में अपमानित हो कर पड़े रहो, और मुझ से बात न करो।
109. मेरे भक्तों में एक समुदाय था जो कहता था कि हमारे पालनहार! हम ईमान लाये। तू हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर, और तू सब दयावानों से उत्तम है।
110. तो तुम ने उन का उपहास किया, यहाँ तक कि तुम को मेरी याद भुला दी, और तुम उन पर हँसते रहे।
111. मैं ने उन को आज बदला (प्रतिफल) दे दिया है उन के धैर्य का, वास्तव में वही सफल है।
112. (अल्लाह) उन से कहेगा: तुम धरती में कितने वर्ष रहे?
113. वे कहेंगे: हम एक दिन या दिन के कुछ भाग रहे। तो गणना करने वालों से पूछ लें।

أَلَمْ تَكُنْ الْيَتِيمَ الَّذِي سَأَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ فَلَمْ تَكُنْ مِنْهَا
شَاكِرًا ۝

قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا
ضَالِّينَ ۝

رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ۝

قَالَ اخْسَوْا مِنِّي وَلَا تَكْفُرُوا ۝

إِنَّهُ كَانَ قَرِيْبًا مِّنْ عِبَادِي يَفْعَلُونَ رَبَّنَا
أَمْرًا فَاغْفِرْ لَنَا وَأَرْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ
الرَّاحِمِينَ ۝

فَاتَّخَذْنَا لَهُمْ سِجْرًا لِّمَا كَانُوا فِيكَ يَكْفُرُونَ
۝

إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا أَلَمْ تَكُنْ مِنْهُمْ
الْمَعْرُوفِينَ ۝

قُلْ كَمْ لَكُمْ لَيْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدُ سِنِينَ ۝

قَالُوا الْبَيْنُنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضُ يَوْمٍ فَسْئَلُ
الْعَادِيِّنَ ۝

1 अर्थात् अपने दुर्भाग्य के कारण हम ने तेरी आयतों को अस्वीकार कर दिया।

114. वह कहेगा: तुम नहीं रहे परन्तु बहुत कम। क्या ही अच्छा होता कि तुम ने (पहले ही) जान लिया^[1] होता।
115. क्या तुम ने समझ रखा है कि हम ने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है और तुम हमारी ओर फिर नहीं लाये^[2] जाओगे?
116. तो सर्वोच्च है अल्लाह वास्तविक अधिपति। नहीं है कोई सच्चा पूज्य परन्तु वही महिमावान अर्श (सिंहासन) का स्वामी।
117. और जो (भी) पुकारेगा अल्लाह के साथ किसी अन्य पूज्य को जिस के लिये उस के पास कोई प्रमाण नहीं, तो उस का हिसाब केवल उस के पालनहार के पास है, वास्तव में काफ़िर सफल नहीं^[3] होंगे।
118. तथा आप प्रार्थना करें कि मेरे पालनहार! तू क्षमा कर तथा दया कर, और तू ही सब दयावानों से उत्तम (दयावान्) है।

قُلْ إِنْ لَيْسَ لَكُمْ إِلَّا قَلِيلٌ مِّنْ نَّوَابِغِكُمْ فَكَيْفَ تَعْلَمُونَ ﴿١١٤﴾

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾

فَتَعَلَى اللَّهِ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ﴿١١٦﴾

وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُغْنِيهِ الْكَفْرُونَ ﴿١١٧﴾

وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿١١٨﴾

- 1 आयत का भावार्थ है कि यदि तुम यह जानते कि परलोक का जीवन स्थायी है तथा संसार का आस्थायी तो आज तुम भी ईमान वालों के समान अल्लाह की आज्ञा का पालन कर के सफल हो जाते, और अवज्ञा तथा दुराचार न करते।
- 2 अर्थात् परलोक में।
- 3 अर्थात् परलोक में उन्हें सफलता प्राप्त नहीं होगी, और न मुक्ति ही मिलेगी।

सूरह नूर - 24



सूरह नूर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 64 आयतें हैं।

- इस सूरह में व्यभिचार और उस का कलंक लगाने का दण्ड बताया गया है।
- मुनाफिकों को झूठे कलंक घड़ कर समाज में फैलाने पर चेतावनी दी गयी है।
- मान मर्यादा की रक्षा पर बल दिया गया है।
- अल्लाह की राह में चलने और उस के इन्कार पर लाभ और हानि का वर्णन किया गया है।
- ईमान वालों को अधिकार प्रदान करने की शुभ सूचना दी गयी है।
- घरेलू आदाब बताये गये हैं।
- और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आदर करने पर बल दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. यह एक सूरह है जिसे हम ने उतारा तथा अनिवार्य किया है। और उतारी है इस में बहुत सी खुली आयतें (निशानियाँ), ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।
2. व्यभिचारिणी तथा^[1] व्यभिचारी दोनों

سُورَةً أَنْزَلْنَاهَا وَقَرَّضْنَاهَا وَأَنْزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ
لِّكُلِّكُمْ تَذَكُّرُونَ

الرَّائِيَةَ وَالرَّائِيَ فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا

1. व्यभिचार से संबंधित आरंभिक आदेश सूरह निसा, आयत 15 में आ चुका है। अब यहाँ निश्चित रूप से उस का दण्ड नियत कर दिया गया है। आयत में वर्णित सौ कोड़े दण्ड अविवाहित व्यभिचारी तथा व्यभिचारिणी के लिये हैं। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अविवाहित व्यभिचारी को सौ कोड़े मारने का और एक वर्ष देश से निकाल देने का आदेश देते थे। (सहीह बुखारी, 6831)

में से प्रत्येक को सौ कोड़े मारो, और तुम्हें उन दोनों पर कोई तरस न आये अल्लाह के धर्म के विषय^[1] में, यदि तुम अल्लाह तथा अन्तिम दिन पर ईमान (विश्वास) रखते हो। और चाहिये कि उन के दण्ड के समय उपस्थित रहे ईमान वालों का एक^[2] गिरोह।

3. व्यभिचारी^[3] नहीं विवाह करता परन्तु व्यभिचारिणी अथवा मिश्रणवादिनी से, और व्यभिचारिणी नहीं विवाह करती परन्तु व्यभिचारी अथवा मिश्रणवादी से और इसे हराम (अवैध) कर दिया गया है ईमान वालों पर।

وَأَن تَأْخُذُوا بِمَا آفَةٌ فِي دِينِ
اللَّهِ إِن كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
وَلَيْسَ هَدَىٰ عَبْدًا بِمَا طَآفَىٰ مِنْ الْمُؤْمِنِينَ ①

الرِّبَايَ لَا يَتَكَبَّرُ الْأَرَابِيُّ أَوْ مُشْرِكًا
وَالرِّبَايَةُ لَا يَتَكَبَّرُ الْأَرَابِيُّ أَوْ مُشْرِكًا
وَحَرَّمَ ذَلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ②

किन्तु यदि दोनों में से कोई विवाहित है तो उस के लिये रज्म (पत्थरों से मार डालने) का दण्ड है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: मुझ से (शिक्षा) ले लो, मुझ से (शिक्षा) ले लो। अल्लाह ने उन के लिये राह बना दी। अविवाहित के लिये सौ कोड़े और विवाहित के लिये रज्म है। (सहीह मुस्लिम, 1690, अबूदाऊद, 4418) इत्यादि।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने युग में रज्म का दण्ड दिया जिस के सहीह हदीसों में कई उदाहरण हैं। और खुलफ़ाये राशिदीन के युग में भी यही दण्ड दिया गया। और इस पर मुस्लिम समुदाय का इज्मा (मतैक्य) है।

व्यभिचार ऐसा घोर पाप है जिस से परिवारिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाती है। पति-पत्नी को एक दूसरे पर विश्वास नहीं रह जाता। और यदि कोई शिशु जन्म ले तो उस के पालन पोषण की भीषण समस्या सामने आती है। इसी लिये इस्लाम ने इस का घोर दण्ड रखा है ताकि समाज और समाज वालों को शान्त और सुरक्षित रखा जाये।

- 1 अर्थात् दया भाव के कारण दण्ड देने से न रुक जाओ।
- 2 ताकि लोग दण्ड से शिक्षा लें।

- 3 आयत का अर्थ यह है कि साधारणतः कुकर्म विवाह के लिये अपने ही जैसों की ओर आकर्षित होते हैं। अतः व्यभिचारिणी व्यभिचारी से ही विवाह करने में रुचि रखती हैं। इस में ईमान वालों को सतर्क किया गया है कि जिस प्रकार व्यभिचार महा पाप है उसी प्रकार व्यभिचारियों के साथ विवाह संबन्ध स्थापित करना भी निषेध है। कुछ भाष्यकारों ने यहाँ विवाह का अर्थ व्यभिचार लिया है।

4. तथा जो आरोप^[1] लगायें व्यभिचार का सतवन्ती स्त्रियों को, फिर न लायें चार साक्षी तो उन्हें अस्सी कोड़े मारो, और न स्वीकार करो उन का साक्ष्य कभी भी, और वह स्वयं अवैज्ञाकारी है।

5. परन्तु जिन्होंने क्षमा माँग ली इस के पश्चात्, तथा अपना सुधार कर लिया, तो निःसंदेह अल्लाह अति क्षमी दयावान्^[2] है।

6. और जो व्यभिचार का आरोप लगाये अपनी पत्नियों पर, और उन के साक्षी न हों^[3] परन्तु वह स्वयं, तो चार साक्ष्य अल्लाह की शपथ लेकर देना है कि वास्तव में वह सच्चा है।^[4]

7. और पाँचवी बार यह कि उस पर अल्लाह की धिक्कार है यदि वह झूठा हो।

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَا يَأْتُوا
بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَإِذْ لَوْلَا أَنَّهُمْ
شَهِدُوا لَهُمْ شَهَادَةً آتِيَةً مِنْ
أُولَئِكَ هُمُ
الْفَاسِقُونَ ﴿٢٠﴾

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا
فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢١﴾

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُن لَهُمْ
شُهَدَاءُ إِلَّا أَنفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعَةٌ
شَهَادَتٌ بِاللَّهِ أَنَّهُ لَيِّنٌ بِالضَّرِيقِ ﴿٢٢﴾

وَالْخَامِسَةَ أَنَّ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ
الْكَاذِبِينَ ﴿٢٣﴾

1 इस में किसी पवित्र पुरुष या स्त्री पर व्यभिचार का कलंक लगाने का दण्ड बताया गया है। कि जो पुरुष अथवा स्त्री किसी पर कलंक लगाये, तो वह चार ऐसे साक्षी लाये जिन्होंने उन को व्यभिचार करते अपनी आँखों से देखा हो। और यदि वह प्रमाण स्वरूप चार साक्षी न लायें तो उस के तीन आदेश हैं:

(क) उसे अस्सी कोड़े लगाये जायें।

(ख) उस का साक्ष्य कभी स्वीकार न किया जाये।

(ग) वह अल्लाह तथा लोगों के समक्ष दूराचारी है।

2 सभी विद्वानों का मतैक्य है कि क्षमा याचना से उसे दण्ड (अस्सी कोड़े) से क्षमा नहीं मिलेगी। बल्कि क्षमा के पश्चात् वह भी अवैज्ञाकारी नहीं रह जायेगा, तथा उस का साक्ष्य स्वीकार किया जायेगा। अधिकतर विद्वानों का यही विचार है।

3 अर्थात् चार साक्षी।

4 अर्थात् आरोप लगाने में।

8. और स्त्री से दण्ड^[1] इस प्रकार दूर होगा कि वह चार बार साक्ष्य दे अल्लाह की शपथ ले कर कि निःसंदेह वह (पति) मिथ्यावादियों में से है।
9. और पाँचवी बार यह कि उस पर अल्लाह की धिक्कार हो यदि वह सच्चा^[2] हो।
10. और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और दया न होती, और यह कि अल्लाह अति क्षमी तत्त्वज्ञ है (तो समस्या बढ़ जाती)।
11. वास्तव^[3] में जो कलंक घड़ लाये हैं

وَيَذَرُوهَا الْعَذَابَ أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعَهُ
شَهَادَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ①

وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللَّهِ عَلَيْهَ إِنْ كَانَ مِنَ
الضَّالِّينَ ②

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ
حَكِيمٌ ③

إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مُمْتَكِدَةٌ

1 अर्थात् व्यभिचार का दण्ड।

2 शरीअत की परिभाषा में इसे "लिआन" कहा जाता है। यह लिआन न्यायालय में अथवा न्यायालय के अधिकारी के समक्ष होना चाहिये। लिआन की माँग पुरुष की ओर से भी हो सकती है और स्त्री की ओर से भी। लिआन के पश्चात् दोनों सदा के लिये अलग हो जायेंगे। लिआन का अर्थ होता है: धिक्कार। और इस में पति और पत्नी दोनों अपने को मिथ्यावादी होने की अवस्था में धिक्कार का पात्र स्वीकार करते हैं। यदि पति अपनी पत्नि के गर्भ का इन्कार करे तब भी लिआन होता है। (बुखारी: 4746, 4747, 4748)

3 यहाँ से आयत 26 तक उस मिथ्यारोपण का वर्णन किया गया है जो मुनाफ़ि़कों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नी आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) पर बनी मुसतलिक के युद्ध से वापसी के समय लगाया था। इस युद्ध से वापसी के समय नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक स्थान पर पड़ाव किया। अभी कुछ रात रह गयी थी कि यात्रा की तय्यारी होने लगी। उस समय आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) उस स्थान से दूर शौच के लिये गई, और उन का हार टूट कर गिर गया। वह उस की खोज में रह गयी। सेवकों ने उन की पालकी को सवारी पर यह समझ कर लाद दिया कि वह उस में होंगी। वह आई तो वहीं लेट गयी कि कोई अवश्य खोजने आयेगा। थोड़ी देर में सफ़्वान पुत्र मोअत्तल (रज़ियल्लाहु अन्हु) जो यात्रियों के पीछे उन की गिरी-पड़ी चीज़ों को संभालने का काम करते थे वहाँ आ गये। और इन्ना लिल्लाहु पढ़ी, जिस से आप जाग गयीं। और उन को पहचान लिया। क्यों कि उन्होंने पर्दे का आदेश आने से पहले उन्हें देखा था। उन्होंने आप

तुम्हारे ही भीतर का एक गिरोह है, तुम उसे बुरा न समझो, बल्कि वह तुम्हारे लिये अच्छा^[1] है। उन में से प्रत्येक के लिये जितना भाग लिया उतना पाप है और जिस ने भार लिया उस के बड़े भाग^[2] का तो उस के लिये बड़ी यातना है।

12. क्यों जब उसे ईमान वाले पुरुषों तथा स्त्रियों ने सुना तो अपने आप में अच्छा विचार नहीं किया तथा कहा कि यह खुला आरोप है?
13. वे क्यों नहीं लाये इस पर चार साक्षी? (जब साक्षी नहीं लाये) तो निःसंदेह अल्लाह के समीप वही झूठे हैं।
14. और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और दया न होती लोक तथा परलोक में, तो जिन बातों में तुम पड़ गये उन के बदले तुम पर कड़ी यातना आ जाती।
15. जब कि (बिना सोचे) तुम अपनी जुबानों से इसे लेने लगे, और अपने मुखों से वह बात कहने लगे जिस का तुम्हें कोई ज्ञान न था, तथा तुम इसे

لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَّكُم بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّمَّهَّمَا تَأْتَسَّبَ مِنَ الْإِثْمِ وَالَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنَّهْمَ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ①

لَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا هَذَا إِفْكٌ مُّبِينٌ ②

لَوْلَا جَاءَ عَلَيْهِمْ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا بِالشُّهَدَاءِ قَالُوا لَيْكَ عِنْدَ اللَّهِ هُمُ الْكَذِبُونَ ③

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَكُنْتُمْ مِنَ الْفَاسِقِينَ ④

إِذْ تَلَقَوْنَهُ بِالسَّبْتِ وَتَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُمْ مَا لَيْسَ لَكُم بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسَبُونَهُ هَيِّنًا وَهُوَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمٌ ⑤

को अपने ऊँट पर सवार किया और स्वयं पैदल चल कर यात्रियों से जा मिले। द्विधावादियों ने इस अवसर को उचित जाना, और उन के मुखिया अब्दुल्लाह बिन उबय्य ने कहा कि यह एकांत अकारण नहीं था। और आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) को सफवान के साथ कलंकित कर दिया। और उस के षड्यंत्र में कुछ सच्चे मुसलमान भी आ गये। इस का पूरा विवरण हदीस में मिलेगा। (देखिये: सहीह बुखारी, 4750)

- 1 अर्थ यह है कि इस दुःख पर तुम्हें प्रतिफल मिलेगा।
- 2 इस से तात्पर्य अब्दुल्लाह बिन उबय्य द्विधावादियों का मुखिया है।

सरल समझ रहे थे, जब कि अल्लाह के समीप वह बहुत बड़ी बात थी।

16. और क्यों नहीं जब तुम ने इसे सुना, तो कह दिया कि हमारे लिये योग्य नहीं कि यह बात बोलें? हे अल्लाह! तू पवित्र है! यह तो बहुत बड़ा आरोप है।
17. अल्लाह तुम्हें शिक्षा देता है कि पुनः कभी इस जैसी बात न कहना। यदि तुम ईमान वाले हो।
18. और अल्लाह उजागर कर रहा है तुम्हारे लिये आयतों (आदेशों)को। तथा अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।
19. जो लोग चाहते हैं कि उन में अशलीलता^[1] फैले जो ईमान लाये हैं, तो उन के लिये दुःखदायी यातना है लोक तथा परलोक में, तथा अल्लाह जानता^[2] है और तुम नहीं जानते।
20. और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह तथा उस की दया न होती (तो तुम पर यातना आ जाती)। और वास्तव में अल्लाह अति करुणामय दयावान् है।
21. हे ईमान वालो! शैतान के पदचिन्हों पर न चलो, और जो उस के पदचिन्हों पर चलेगा, तो वह अशलील कार्य तथा बुराई का ही आदेश देगा, और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और उस की दया

وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُمْ مَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَتَكَلَّمَ بِهَذَا سُبْحَانَكَ هَذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ ﴿١٦﴾

يَعِظُكُمُ اللَّهُ أَنْ تَعُودُوا لِلْبُهْتَانِ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّكُمْ مُؤْمِنُونَ ﴿١٧﴾

وَيَسِّرُ اللَّهُ لَكُمْ الْأَيْتَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٨﴾

لِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٩﴾

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ رءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٢٠﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ وَمَنْ يَتَّبِعْ خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ وَالنُّبُوذِ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ مَا زَكَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ أَبَدًا وَلَكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢١﴾

1 अशलीलता, व्याभिचार और व्याभिचार के निर्मूल आरोप की चर्चा दोनों को कहा गया है।

2 उन के मिथ्यारोपण को।

न होती, तो तुम में से कोई पवित्र कभी नहीं होता। परन्तु अल्लाह पवित्र करता है जिसे चाहे, और अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

22. और न शपथ लें^[1] तुम में से धनी और सुखी कि नहीं देंगे समीपवर्तियों तथा निर्धनों को और जो हिजरत कर गये अल्लाह की राह में, और चाहिये कि क्षमा कर दें तथा जाने दें, क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा कर दे, और अल्लाह अति क्षमी सहनशील है।
23. जो लोग आरोप लगाते हैं सतवन्ती भोली-भाली ईमान वाली स्त्रियों को, वह धिक्कार दिये गये लोक तथा परलोक में और उन्हीं के लिये बड़ी यातना है।
24. जिस दिन साक्ष्य (गवाही) देंगी उन की जीभें तथा उन के हाथ और उन के पैर उन के कर्मों की।
25. उस दिन अल्लाह उन को उन का पूरा न्यायपूर्वक बदला देगा, तथा वह जान लेंगे कि अल्लाह ही सत्य है,

وَلَا يَأْتِيَنَّ أُولُو الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۗ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۗ أَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ لَهُ عَفْوٌ رَحِيمٌ ﴿٢٢﴾

إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لَأُنثَوْنَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَأَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾

يَوْمَ يَنْذِرُ يَوْمَئِذِهِمُ اللَّهُ ذِيَنَّهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ﴿٢٥﴾

- 1 आदरणीय मिस्तह पुत्र उसासा (रज़ियल्लाहु अन्हु) निर्धन, और आदरणीय अबूबक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) के समीपवर्ती थे। और वह उन की सहायता किया करते थे। वह भी आदरणीय आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के विरुद्ध आक्षेप में लिप्त हो गये थे। अतः आदरणीय आइशा के निर्दोष होने के बारे में आयतें उतरने के पश्चात् आदरणीय अबूबक्र ने शपथ ली कि अब वह मिस्तह की कोई सहायता नहीं करेंगे। उसी पर यह आयत उतरी। और उन्हीं ने कहा: निश्चय मैं चाहता हूँ कि अल्लाह मुझे क्षमा कर दे। और पुनः उन की सहायता करने लगे। (सहीह बुखारी, 4750)

(सच्च को) उजागर करने वाला।

26. अपवित्र स्त्रीयाँ अपवित्र पुरुषों के लिये हैं, तथा अपवित्र पुरुष अपवित्र स्त्रियों के लिये, और पवित्र स्त्रियाँ पवित्र पुरुषों के लिये हैं, तथा पवित्र पुरुष पवित्र स्त्रियों के^[1] लिये। वही निर्दोष है उन बातों से जो वह कहते हैं। उन्हीं के लिये क्षमा तथा सम्मानित जीविका है।
27. हे ईमान वालो!^[2] मत प्रवेश करो किसी घर में अपने घरों के सिवा यहाँ तक कि अनुमति ले लो, और उन के वासियों को सलाम कर^[3] लो, यह तुम्हारे लिये उत्तम है, ताकि तुम याद रखो।
28. और यदि उन में किसी को न पाओ तो उन में प्रवेश न करो, यहाँ तक कि तुम्हें अनुमति दे दी जाये, और यदि तुम से कहा जाये कि वापिस हो जाओ तो वापिस हो जाओ, यह तुम्हारे लिये अधिक पवित्र है, तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो भली-भाँति जानने वाला है।
29. तुम पर कोई दोष नहीं है कि प्रवेश

الْمَيْمِثَاتُ لِلْمَيْمِثِينَ وَالْمَيْمِثُونَ لِلْمَيْمِثَاتِ وَالْمُطَهَّرَاتُ لِلْمُطَهَّرِينَ وَالْمُطَهَّرُونَ
لِلْمُطَهَّرَاتِ وَالْمُغْتَبِرُونَ مِمَّا قَبْلُ وَالْمُغْتَبِرُونَ
مِمَّا بَعْدُ وَمَنْ عَفَا ذُنُوبَهُ فَغَفَرَ لَهُ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ
حَتَّى تَسْتَأْذِنُوا وَلَسْتُمْ عَلَىٰ أَهْلِهَا ذَلِكُمْ حَتَّىٰ تَكُونُوا
لِعَالَمِكُمْ مِّنْذَرِينَ

وَإِن كُنْتُمْ فِي بَيْتٍ مِّمَّا فَخُطِبْتُ فَادْخُلُوهُ حَتَّىٰ يُؤْذَنَ
لَكُمْ وَإِن قِيلَ لَكُمُ انْجِعُوا فَانْجِعُوا أَتَىٰ لَكُمْ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ

- 1 इस में यह संकेत है कि जिन पुरुषों तथा स्त्रियों ने आदरणीय आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) पर आरोप लगाया वह मन के मलीन तथा अपवित्र हैं।
- 2 सूरह के आरंभ में यह आदेश दिये गये थे कि समाज में कोई बुराई हो जाये तो उस का निवारण कैसे किया जाये? अब वह आदेश दिये जा रहे हैं जिन से समाज में बुराईयों को जन्म लेने ही से रोक दिया जाये।
- 3 हदीस में इस का नियम यह बताया गया है कि (द्वार पर दायें या बायें खड़े हो कर) सलाम करो। फिर कहो कि क्या भीतर आ जाऊँ? ऐसे तीन बार करो, और अनुमति न मिलने पर वापिस हो जाओ। (बुखारी, 6245, मुस्लिम, 2153)

करो निर्जन घरों में जिन में तुम्हारा सामान हो, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम बोलते हो और जो मन में रखते हो।

30. (हे नबी!) आप ईमान वालों से कहें कि अपनी आँखें नीची रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। यह उन के लिये अधिक पवित्र है, वास्तव में अल्लाह सूचित है उस से जो कुछ वह कर रहे हैं।

31. और ईमान वालियों से कहें कि अपनी आँखें नीची रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। और अपनी शोभा^[1] का प्रदर्शन न करें सिवाय उस के जो प्रकट हो जाये तथा अपनी ओढ़नियाँ अपने वक्षस्थलों (सीनों) पर डाली रहें। और अपनी शोभा का प्रदर्शन न करें, परन्तु अपने पतियों के लिये अथवा अपने पिताओं अथवा अपने ससुरों के लिये अथवा अपने पुत्रों^[2] अथवा अपने पति के पुत्रों के लिये अथवा अपने भाईयों^[3] अथवा भतीजो अथवा अपने भाजों के^[4] लिये अथवा अपनी स्त्रियों^[5] अथवा अपने

فِي مَآئِمَاتِكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ﴿٣٠﴾

قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ذَٰلِكُمْ أَرَىٰ كِهْمَ إِنْ اللَّهُ جَمِيْرًا يَصْنَعُونَ ﴿٣١﴾

وَقُلْ لِلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلَا يَضْرِبْنَ بِمَخْرُجِهِنَّ عَلَىٰ جُجُوِهِنَّ وَلَا يَبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ أَبْنَائِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنَاتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنَاتِ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ أَوِ التَّابِعِينَ غَيْرِ أُولِي الْإِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَىٰ حَوَارِثِ السَّاءِ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِنْ زِينَتِهِنَّ وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيْعًا أَيُّهُ الْمُؤْمِنُونَ كَعَلَّمَ طَٰغُوتُونَ ﴿٣١﴾

1 शोभा से तात्पर्य वस्त्र तथा आभूषण हैं।

2 पुत्रों में पौत्र तथा नाती परनाती सब सम्मिलित हैं, इस में सगे सौतीले का कोई अन्तर नहीं।

3 भाईयों में सगे और सौतीले तथा माँ जाये सब भाई आते हैं।

4 भतीजों और भाजों में उन के पुत्र तथा पौत्र और नाती सभी आते हैं।

5 अपनी स्त्रियों से अभिप्रेत मुस्लिम स्त्रियाँ हैं।

दास-दासियों अथवा ऐसे आधीन^[1] पुरुषों के लिये जो किसी और प्रकार का प्रयोजन न रखते हों, अथवा उन बच्चों के लिये जो स्त्रियों की गुप्त बातें न जानते हों और अपने पैर (धरती पर) मारती हुयी न चलें कि उस का ज्ञान हो जाये जो शोभा उन्हीं ने छुपा रखी है। और तुम सब मिल कर अल्लाह से क्षमा माँगो, हे ईमान वालो! ताकि तुम सफल हो जाओ।

32. तथा तुम विवाह कर दो^[2] अपनों में से अविवाहित पुरुषों तथा स्त्रियों का, और अपने सदाचारी दासों और अपनी दासियों का, यदि वह निर्धन होंगे तो अल्लाह उन्हें धनी बना देगा अपने अनुग्रह से, और अल्लाह उदार सर्वज्ञ है।

وَأَكْمُوا الْوَالِيَّاتِ مِنْكُمْ وَالطَّالِقَاتِ مِنَ الْعِبَادِ
وَأَمَّا لَكُمْ أَنْ تَكُونُوا أَقْرَاءَ يُعْذِرُ اللَّهُ مِنْ قَوْلِهِ
وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿۳۲﴾

33. और उन को पवित्र रहना चाहिये जो विवाह करने का सामर्थ्य नहीं रखते, यहाँ तक कि उन को धनी कर दे अल्लाह अपने अनुग्रह से। तथा जो स्वाधीनता लेख की माँग करें तुम्हारे दास-दासियों में से, तो तुम उन को लिख दो, यदि तुम उन में कुछ भलाई जानो^[3], और उन्हें अल्लाह के

وَالسَّتِّيفِ الذِّينَ لَا يُعِدُّونَ كَلِمَاتِهِ
يُعْذِرُهُمُ اللَّهُ مِنْ قَوْلِهِ وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ
مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكَابِرُوهُمُ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ
خَيْرًا وَإِذَا تَوَهَّمُ مِنْ مَالِ اللَّهِ الَّذِي آتَاكُمْ وَلَا
تُكْرَهُمْ وَأَقْبَلْتُمْ عَلَى الْبِعَارِ إِنْ أَرَدْتُمْ تَصَدَّقُوا
عَوَضَ الصَّلَاةِ الدُّنْيَا وَمَنْ يَكْرِهْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ
مِنْ أَعْدَائِكُمْ إِنَّهُمْ عَمُورٌ رَجِيمٌ ﴿۳۳﴾

- 1 अर्थात् जो आधीन होने के कारण घर की महिलाओं के साथ कोई अनुचित इच्छा का साहस न कर सकेंगे। कुछ ने इस का अर्थ नपुंसक लिया है। (इब्ने कसीर) इस में घर के भीतर उन पर शोभा के प्रदर्शन से रोका गया है जिन से विवाह हो सकता है।
- 2 विवाह के विषय में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है: "जो मेरी सुबत से विमुख होगा" वह मुझ से नहीं है। (बुखारी-5063 तथा मुस्लिम, 1020)
- 3 इस्लाम ने दास-दासियों की स्वाधीनता के जो साधन बनाये हैं उन में यह भी है कि वह कुछ धनराशि देकर स्वाधीनता लेख की माँग करें, तो यदि उन में इस

उस माल में से दो जो उस ने तुम्हें प्रदान किया है, तथा बाध्य न करो अपनी दासियों को व्यभिचार पर जब वे पवित्र रहना चाहती हैं^[1] ताकि तुम संसारिक जीवन का लाभ प्राप्त करो। और जो उन्हें बाध्य करेगा, तो अल्लाह उन के बाध्य किये जाने के पश्चात्^[2] अति क्षमी दयावान् है।

34. तथा हम ने तुम्हारी ओर खुली आयतें उतारी हैं और उन का उदाहरण जो तुम से पहले गुजर गये तथा आज्ञाकारियों के लिये शिक्षा।

35. अल्लाह आकाशों तथा धरती का^[3] प्रकाश है, उस के प्रकाश की उपमा ऐसी है जैसे एक ताखा हो जिस में दीप हो, दीप कांच के झाड़ में हो, झाड़ मोती जैसे चमकते तारे के

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُّبِينَاتٍ وَمَثَلًا لِّلَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٣٤﴾

اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ مِثْلُ نُورِ كَوْكَبٍ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي سَمَاءٍ بَازِلَةٍ يُضَاءُ بِهَا كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ زُرِّيٌّ يُوقَدُ مِن شَجَرَةٍ مُّبَارَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ يَكْبُرُ فِي ثَمَرِهَا لِيَضِيَ

धनराशि को चुकाने की योग्यता हो तो आयत में बल दिया गया है कि उन को स्वाधीनता-लेख दे दो।

- 1 अज्ञानकाल में स्वामी, धन अर्जित करने के लिये अपनी दासियों को व्यभिचार के लिये बाध्य करते थे। इस्लाम ने इस व्यवसाय को वर्जित कर दिया। हदीस में आया है कि रसूल सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम ने कुत्ते के मूल्य तथा वैश्या और ज्योतिषी की कमाई से रोक दिया। (बुखारी, 2237, मुस्लिम, 1567)
- 2 अर्थात् दासी से बल पूर्वक व्यभिचार कराने का पाप स्वामी पर होगा, दासी पर नहीं।
- 3 अर्थात् आकाशों तथा धरती की व्यवस्था करता और उन के वासियों को संमार्ग दर्शाता है। और अल्लाह की पुस्तक और उस का मार्ग दर्शन उस का प्रकाश है। यदि उस का प्रकाश न होता तो यह विश्व अन्धेरा होता। फिर कहा कि उस की ज्योति ईमान वालों के दिलों में ऐसे है जैसे किसी ताखा में अति प्रकाशमान दीप रखा हो, जो आगामी वर्णित गुणों से युक्त हो। पूर्वी तथा पश्चिमी न होने का अर्थ यह है कि उस पर पूरे दिन धूप पड़ती हो जिस के कारण उस का तेल अति शुद्ध तथा साफ हो।

समान हो, वह ऐसे शुभ जैतून के वृक्ष के तेल से जलाया जाता हो जो न पूर्वी हो और न पश्चिमी, उस का तेल समीप (संभव) है कि स्वयं प्रकाश देने लगे, यद्यपि उसे आग न लगे। प्रकाश पर प्रकाश है, अल्लाह अपने प्रकाश का मार्ग दिखा देता है जिसे चाहे। और अल्लाह लोगों को उदाहरण दे रहा है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु से भली-भाँति अवगत है।

36. (यह प्रकाश) उन घरों^[1] में है अल्लाह ने जिन्हें ऊँचा करने और उन में अपने नाम की चर्चा करने का आदेश दिया है, उस की महिमा का गान करते हैं जिन में प्रातः तथा संध्या।
37. ऐसे लोग जिन्हें अचेत नहीं करता व्यापार तथा सौदा अल्लाह के स्मरण तथा नमाज़ की स्थापना करने और ज़कात देने से। वह उस दिन^[2] से डरते हैं जिस में दिल तथा आँखें उलट जायेंगी।
38. ताकि अल्लाह उन्हें बदला दे उन के सर्वोत्तम कर्मों का और उन्हें अधिक प्रदान करे अपने अनुग्रह से। और अल्लाह जिसे चाहे अनगिनत जीविका देता है।
39. तथा जो काफ़िर^[3] हो गये उन के

وَأُولَٰئِكَ تَسْمَعُهُ آثَارُهُمْ عَلَىٰ نُورٍ يُهْدِي اللَّهُ لِلنُّورِ
مَنْ يَشَاءُ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ
وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

فِي بُيُوتِ الَّذِينَ أَنْزَلْنَا اللَّهُ لَهُمُ الْقُرْآنَ وَيَذْكُرُ فِيهَا اسْمَهُ
سُبْحَانَ اللَّهِ فِيهَا الْقُدُّ وَالْإِصْلَاحُ

رَجَالٌ لَا تُلْمِهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ دُكْرَانِهِمْ وَقَالُوا
الصَّلَاةَ وَإِنَّمَا الزُّكُورُ لَمِيعَاتُهُمْ يَوْمَ تَحْتَكِبُ فِيهِ
الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ

لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ
وَاللَّهُ يُرِزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِعَدْرِ حِسَابٍ

وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ بِفِئَةٍ يُحْسِبُ

1 इस से तात्पर्य मस्जिदें हैं।

2 अर्थात् प्रलय के दिन।

3 आयत का अर्थ यह है कि काफ़िरों के कर्म, अल्लाह पर ईमान न होने के कारण अल्लाह के समक्ष व्यर्थ हो जायेंगे।

कर्म उस चमकते सुराब^[1] के समान हैं जो किसी मैदान में हो, जिसे प्यासा पानी समझता हो। परन्तु जब उस के पास आये तो कुछ न पाये, और वहाँ अल्लाह को पाये जो उस का पूरा हिसाब चुका दे, और अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

40. अथवा उन अन्धकारों के समान है जो किसी गहरे सागर में हो और जिस पर तरंग छायी हो जिस के ऊपर तरंग, उस के ऊपर बादल हो, अन्धकार पर अन्धकार हो, जब अपना हाथ निकाले तो उसे भी न देख सके। और अल्लाह जिसे प्रकाश न दे उस के लिये कोई प्रकाश^[2] नहीं।
41. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह ही की पवित्रता का गान कर रहे हैं जो आकाशों तथा धरती में हैं तथा पँख फैलाये हुये पक्षी? प्रत्येक ने अपनी बंदगी तथा पवित्रता गान को जान लिया^[3] है, और अल्लाह भली-भाँति जानने वाला है जो वे कर रहे हैं।
42. अल्लाह ही के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्य। और अल्लाह ही की

الظَّامِنُ مَاءً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُ لَمْ يَجِدْكَ سَيِّئًا وَوَجَدَ
اللَّهَ عِنْدَكَ فَوْقَهُ حِسَابَهُ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٤٠﴾

أَوْ كَظُلُمَاتٍ فِي بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَغْشَاهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهِ مَوْجٌ
مِّنْ فَوْقِهِ سَابُغٌ ظَلَمْتُ بَعْضَهُمَا فَوْقَ بَعْضٍ
إِذَا الْخَوَاصِرَ يَدَّكَ لَمْ يَكُنْ لِيَرْبَا وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللَّهُ
لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِنْ نُورٍ ﴿٤١﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَالطَّيْرِ وَصَفِيَّتِ كُلِّ دَابَّةٍ لَّعَلَّكُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤٢﴾
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٤٣﴾

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿٤٤﴾

- 1 कड़ी गर्मी के समय रेगिस्तान में जो चमकती हुई रेत पानी जैसी लगती है उसे सुराब कहते हैं।
- 2 अर्थात् काफिर, अविश्वास और कुकर्मों के अन्धकार में घिरा रहता है। और यह अन्धकार उसे मार्ग दर्शन की ओर नहीं आने देता।
- 3 अर्थात् तुम भी उस की पवित्रता का गान गाओ। और उस की आज्ञा का पालन करो।

ओर फिर कर^[1] जाना है।

43. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह बादलों को चलाता है फिर उसे परस्पर मिला देता है, फिर उसे घंघोर मेघ बना देता है, फिर आप देखते हैं बूंद को उस के मध्य से निकलती हुयी, और वही पर्वतों जैसे बादल से ओले बरसाता है, फिर जिस पर चाहे आपदा उतारता है और जिस से चाहे फेर देता है। उस की बिजली की चमक संभव होता है कि आँखों को उचक ले।

44. अल्लाह ही रात और दिन को बदलता^[2] है। बेशक इस में बड़ी शिक्षा है समझ-बूझ वालों के लिये।

45. अल्लाह ही ने प्रत्येक जीव धारी को पानी से पैदा किया है। तो उन में से कुछ अपने पेट के बल चलते हैं। और कुछ दो पैर पर, तथा कुछ चार पैर पर चलते हैं। अल्लाह जो चाहे पैदा करता है, वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।

46. हम ने खुली आयतें (क़ूर्आन) अवतरित कर दी है। और अल्लाह जिसे चाहता है सुपथ दिखा देता है।

47. और^[3] वे कहते हैं कि हम अल्लाह

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُرْسِلُ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَّامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ جِبَالٍ فِيهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَصْرِفُهُ عَنِ مَنْ يَشَاءُ يَكادُ سَنَا بَرْقِهِ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ﴿٢٤﴾

يُقَلِّبُ اللَّهُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لَأُولِي الْأَبْصَارِ ﴿٢٥﴾

وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِنْ تَأْتِيهِمْ مِنْ تَائِيهِمْ عَلَى بَطْنَيْهِ وَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَى رِجْلَيْنِ وَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَى أَرْبَعٍ يَخْلُقُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٦﴾

لَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ مُبِينَاتٍ وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٢٧﴾

وَيَقُولُونَ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ

1 अर्थात् प्रलय के दिन अपने कर्मों का फल भोगने के लिये।

2 अर्थात् रात के पश्चात् दिन और दिन के पश्चात् रात होती है। इसी प्रकार कभी दिन बड़ा रात छोटी, और कभी रात बड़ी दिन छोटा होता है।

3 यहाँ से मुनाफिकों (द्विधावादियों) की दशा का वर्णन किया जा रहा है, तथा

तथा रसूल पर ईमान लाये, और हम आज्ञाकारी हो गये, फिर मुँह फेर लेता है उन में से एक गिरोह इस के पश्चात् वास्तव में वे ईमान वाले हैं ही नहीं।

48. और जब बुलाये जाते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल की ओर, ताकि (रसूल) निर्णय कर दें उन के बीच (विवाद का), तो अकस्मात् उन में से एक गिरोह मुँह फेर लेता है।
49. और यदि उन्हीं को अधिकार पहुँचता हो, तो आप के पास सिर झुकाये चले आते हैं।
50. क्या उन के दिलों में रोग है अथवा द्विधा में पड़े हुये हैं, अथवा डर रहे हैं कि अल्लाह अत्याचार कर देगा उन पर और उस के रसूल? बल्कि वही अत्याचारी हैं।
51. ईमान वालों का कथन तो यह है कि जब अल्लाह और उस के रसूल की ओर बुलाये जायें ताकि आप उन के बीच निर्णय कर दें, तो कहें कि हम ने सुन लिया तथा मान लिया, और वही सफल होने वाले हैं।
52. तथा जो अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा का पालन करें और अल्लाह का भय रखें, और उस की (यातना से) डरें, तो वही सफल होने वाले हैं।

يَتَوَلَّى فِرْيَقٌ مِّنْهُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَمَا أُولَئِكَ
بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٤﴾

وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا
فَرِيقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٢٥﴾

وَإِنْ يَكُنْ لَهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوا إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ ﴿٢٦﴾

أَفِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ أَمْ ارْتَابُوا أَن يَحْكُمَ اللَّهُ
بَيْنَهُمْ وَعَلَيْهِمْ رَسُولٌ مِّنْ لَّدُنْهُمْ الْغَالِبُونَ ﴿٢٧﴾

إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ
لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَن يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَأُولَئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٢٨﴾

وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَخْشَ اللَّهَ الَّذِي يَتَّقُوهُ
فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٢٩﴾

यह बताया जा रहा है कि ईमान के लिये अल्लाह के सभी आदेशों तथा नियमों का पालन आवश्यक है। और कुर्आन तथा सुबत के निर्णय का पालन करना ही ईमान है।

53. और इन (द्विधावादियों) ने बल पूर्वक शपथ ली कि यदि आप उन्हें आदेश दें तो अवश्य वह (घरों से) निकल पड़ेंगे। उन से कह दें: शपथ न लो। तुम्हारे आज्ञापालन की दशा जानी पहचानी है। वास्तव में अल्लाह तुम्हारे कर्मों से सूचित है।

54. (हे नबी!) आप कह दें कि अल्लाह की आज्ञा का पालन करो तथा रसूल की आज्ञा का पालन करो, और यदि वह विमुख हों, तो आप का कर्तव्य केवल वही है जिस का भार आप पर रखा गया है, और तुम्हारा वह है जिस का भार तुम पर रखा गया है। और रसूल का दायित्व केवल खुला आदेश पहुँचा देना है।

55. अल्लाह ने वचन^[1] दिया है उन्हें जो तुम में से ईमान लायें तथा सुकर्म करें कि उन्हें अवश्य धरती में अधिकार प्रदान करेगा जैसे उन्हें अधिकार प्रदान किया जो इन से पहले थे, तथा अवश्य सुदृढ़ कर देगा उन के उस धर्म को जिसे उन के लिये पसंद किया है, तथा उन (की दशा) को उन के भय के पश्चात् शान्ति में बदल देगा, वह मेरी इबादत (वंदना) करते रहें और किसी चीज़ को मेरा साझी न बनायें। और जो कुफ़र करें इस के

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ آيْمَانِهِمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجْنَ قُلْ لَا تَقْسِمُوا بِاللَّهِ مَعْرُوفَةٌ ۗ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٥٣﴾

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَا حُمِّلْتُمْ وَإِنْ تُطِيعُوا فَتُهَيِّدُوا وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينِ ﴿٥٤﴾

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٥٥﴾

1 इस आयत में अल्लाह ने जो वचन दिया है, वह उस समय पूरा हो गया जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के अनुयायियों को जो काफिरों से डर रहे थे उन की धरती पर अधिकार दे दिया। और इस्लाम पूरे अरब का धर्म बन गया और यह वचन अब भी है, जो ईमान तथा सत्कर्म के साथ प्रतिबंधित है।

पश्चात् तो वही उल्लंघनकारी है।

56. तथा नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो, तथा रसूल की आज्ञा का पालन करो, ताकि तुम पर दया की जाये।
57. और (हे नबी!) कदापि आप न समझें कि जो काफिर हो गये, वे (अल्लाह को) धरती में विवश कर देने वाले हैं। और उन का स्थान नरक है और वह बुरा निवास स्थान है।
58. हे ईमान वाले! तुम^[1] से अनुमति लेना आवश्यक है तुम्हारे स्वामित्व के दास-दासियों को और जो तुम में से (अभी) युवा अवस्था को न पहुँचे हों तीन समय: फ़ज़्र (भोर) की नमाज़ से पहले, और जिस समय तुम अपने वस्त्र उतारते हो दोपहर में, तथा इशा (रात्रि) की नमाज़ के पश्चात्। यह तीन (एकान्त) पर्दे के समय है तुम्हारे लिये। (फिर) तुम पर और उन पर कोई दोष नहीं है इन के पश्चात्, तुम अधिकतर आने-जाने वाले हो एक दूसरे के पास। अल्लाह तुम्हारे लिये आदेशों का वर्णन कर रहा है। और अल्लाह सर्वज्ञ निपुण है।
59. और जब तुम में से बच्चे युवा अवस्था को पहुँचें, तो वह भी वैसे ही अनुमति

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاطِيعُوا الرُّسُولَ
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٥٦﴾

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ
وَأُولَئِكَ الْمَتَّارُ وَالْمِصْرُ ﴿٥٧﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَسْتَأْذِنَكُمْ الَّذِينَ مَلَكَتْ
أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنكُمْ تِلْكَ
مَرْثَةٌ مِّن قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ
ثِيَابَكُمْ مِنَ الظَّهِيرَةِ وَمِن بَعْدِ صَلَاةِ الْعِشَاءِ
تِلْكَ عَوْرَتُ لَكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ
جُنَاحٌ بَعْدَ هُنَّ ظُفُوفٌ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلَى
بَعْضٍ كَذَلِكَ يَبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ ﴿٥٨﴾

وَإِذَا ابْتَلَى الْوَالِدُ الْوَالِدَ الْأَطْفَالَ مِنْكُمْ الْحُلُمَ

1 आयत: 27 में आदेश दिया गया है कि जब किसी दूसरे के यहाँ जाओ तो अनुमति ले कर घर में प्रवेश करो। और यहाँ पर आदेश दिया जा रहा है कि स्वयं अपने घर में एक-दूसरे के पास जाने के लिये भी अनुमति लेना तीन समय में आवश्यक है।

लें जैसे उन से पूर्व के (बड़े) अनुमति माँगते हैं, इसी प्रकार अल्लाह उजागर करता है तुम्हारे लिये अपनी आयतों को, तथा अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

60. तथा जो बूढ़ी स्त्रियाँ विवाह की आशा न रखती हों, तो उन पर कोई दोष नहीं कि अपनी (पर्दे की) चादरें उतार कर रख दें, प्रतिबंध यह है कि अपनी शोभा का प्रदर्शन करने वाली न हों, और यदि सुरक्षित रहें^[1] तो उन के लिये अच्छा है।

61. अन्धे पर कोई दोष नहीं है और न लंगड़े पर कोई दोष^[2] है, और न रोगी पर कोई दोष है और न स्वयं तुम पर कि खाओ अपने घरों^[3] से अथवा अपने बापों के घरों से अथवा अपनी माँओं के घरों से अथवा अपने भाईयों के घरों से अथवा अपनी बहनों के घरों से अथवा अपने चाचाओं के घरों से अथवा अपनी फूफियों के घरों से अथवा अपने मामाओं के घरों से अथवा अपनी मौसियों के घरों से अथवा जिस की चाबियों के तुम स्वामी^[4] हो, अथवा अपने मित्रों के घरों से, तुम पर कोई दोष नहीं एक साथ खाओ या अलग अलग, फिर जब तुम प्रवेश

فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِنْ قَوْمِهِمْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٠﴾

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الَّتِي لَا يَرْجُونَ بَكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَنْ يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ وَأَنْ يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَهُنَّ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٥١﴾

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى أَنْفُسِكُمْ أَنْ تَأْكُلُوا مِنْ بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَلَتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَالِكُمْ أَوْ بُيُوتِ خَالَاتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ أَوْ صَدِيقِكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوا جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا إِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُبْرَكَةٌ طَيِّبَةٌ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٥٢﴾

1 अर्थात् पर्दे की चादर न उतारें।

2 इस्लाम से पहले विकलांगों के साथ खाने पीने को दोष समझा जाता था जिस का निवारण इस आयत में किया गया है।

3 अपने घरों से अभिप्राय अपने पुत्रों के घर हैं जो अपने ही होते हैं।

4 अर्थात् जो अपनी अनुपस्थिति में तुम्हें रक्षा के लिये अपने घरों की चाबियाँ दे जायें।

करो घरों में^[1] तो अपनों को सलाम किया करो, एक आशीर्वाद है अल्लाह की ओर से निर्धारित किया हुआ जो शुभ पवित्र है। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये आयतों का वर्णन करता है ताकि तुम समझ लो।

62. वास्तव में ईमान वाले वह हैं जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाये और जब आप के साथ किसी सामुहिक कार्य पर होते हैं तो जाते नहीं जब तक आप से अनुमति न लें, वास्तव में जो आप से अनुमति लेते हैं वही अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान रखते हैं, तो जब वह आप से अपने किसी कार्य के लिये अनुमति माँगें, तो आप उन में से जिसे चाहें अनुमति दें। और उन के लिये अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करें। वास्तव में अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

63. और तुम मत बनाओ रसूल के पुकारने को परस्पर एक-दूसरे को पुकारने जैसा^[2], अल्लाह तुम में से उन को जानता है जो सरक जाते हैं एक-दूसरे की आड़ ले कर। तो उन्हें सावधान रहना चाहिये जो आप के आदेश का विरोध करते हैं कि उन

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا
حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوا ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَإِذَا
اسْتَأْذَنُوكَ لِيَعُضَ شَأْنِهِمْ فَإِذَا نَسِيتَ
بَيْنَهُمْ وَاسْتَعْفِفَ لَهُمُ اللَّهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ

لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ
بَعْضًا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَسْتَلُونُ مِنْكُمْ
لِوَادِّ أَقْلِحِ خَدْرِ الَّذِينَ يُعَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ ۗ أَنْ
تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

- 1 अर्थात् वह साधारण भोजन जो सब के लिये पकाया गया हो। इस में वह भोजन सम्मिलित नहीं जो किसी विशेष व्यक्ति के लिये तैयार किया गया हो।
2 अर्थात्: «हे मुहम्मद!» न कहो। बल्कि आप को हे अल्लाह के नबी! हे अल्लाह के रसूल! कह कर पुकारो। इस का यह अर्थ भी किया गया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रार्थना को अपनी प्रार्थना के समान न समझो, क्यों कि आप की प्रार्थना स्वीकार कर ली जाती है।

पर कोई आपदा आ पड़े अथवा उन पर कोई दुःखदायी यातना आ जाये।

64. सावधान! अल्लाह ही का है जो आकाशों तथा धरती में है, वह जानता है जिस (दशा) पर तुम हो, और जिस दिन वे उस की ओर फेरे जायेंगे तो उन्हें बता^[1] देगा जो उन्होंने ने किया है। और अल्लाह प्रत्येक चीज़ का अति ज्ञानी है।

الَّذِينَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ قَدْ يَعْلَمُ
مَا اَنْتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ اِلَيْهِ
فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا وَاللّٰهُ بِشَيْءٍ عَلِيْمٌ

1 अर्थात् प्रलय के दिन तुम्हें तुम्हारे कर्मों का फल देगा।

सूरह फुर्कान - 25



सूरह फुर्कान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 77 आयतें हैं।

- इस सूरह में उस का परिचय कराते हुए जिस ने फुर्कान उतारा है शिक्र का खण्डन तथा बह्यी और रिसालत से सम्बन्धित संदेहों को चेतावनी की शैली में दूर किया गया है।
- अल्लाह के एक होने की निशानियों की ओर ध्यान आकर्षित कराया गया है।
- अल्लाह के भक्तों के गुण और मानव पर कुर्आन की शिक्षा का प्रभाव बताया गया है।
- अन्त में उन्हें चेतावनी दी गयी है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा कुर्आन के सावधान करने पर भी सत्य को नहीं मानते।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शुभ है वह (अल्लाह) जिस ने फुर्कान^[1] अवतरित किया अपने भक्त^[2] पर, ताकि पूरे संसार वासियों को सावधान करने वाला हो।
2. जिस के लिये आकाशों तथा धरती का राज्य है तथा उस ने अपने लिये

تَبْرَأُكَ الَّذِي تَزِيلُ الْفُرْقَانَ عَلَى عِبْدِهِ لِيَكُونَ
لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا

لِيَتَذَكَّرَ لَهُ لَمَّا تَلَكَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا

- 1 फुर्कान का अर्थ वह पुस्तक है जिस के द्वारा सच्च और झूठ में विवेक किया जाये और इस से अभिप्राय कुर्आन है।
- 2 भक्त से अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, जो पूरे मानव संसार के लिये नबी बना कर भेजे गये हैं। हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझे से पहले नबी अपनी विशेष जाति के लिये भेजे जाते थे, और मुझे सर्व साधारण लोगों की ओर नबी बना कर भेजा गया है। (सहीह बुखारी, 335, सहीह मुस्लिम, 521)

कोई संतान नहीं बनायी। और न उस का कोई साझी है राज्य में, तथा उस ने प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति की फिर उस को एक निर्धारित रूप दिया।

وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ
قَدَرًا مَّعْدُودًا ﴿١٧﴾

3. और उन्होंने ने उस के अतिरिक्त अनेक पूज्य बना लिये हैं जो किसी चीज़ की उत्पत्ति नहीं कर सकते, और वह स्वयं उत्पन्न किये जाते हैं, और न वह अधिकार रखते हैं अपने लिये किसी हानि का और न अधिकार रखते हैं किसी लाभ का, तथा न अधिकार रखते हैं मरण और न जीवन और न पुनः^[1] जीवित करने का।

وَأَنعَدُوا مِن دُونِهِ آلِهَةً لَا يُخْلِقُونَ شَيْئًا وَهُمْ
يُخْلَقُونَ وَلَا يَمْلِكُونَ لِأَنفُسِهِمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا
وَلَا يَمْلِكُونَ مَوْتًا وَلَا حَيَاةً وَلَا نُشُورًا ﴿١٨﴾

4. तथा काफ़िरों ने कहा: यह^[2] तो बस एक मन घड़त बात है जिसे इस^[3] ने स्वयं घड़ लिया है, और इस पर अन्य लोगों ने उस की सहायता की है। तो वास्तव में वह (काफ़िर) बड़ा अत्याचार और झूठ बना लाये हैं।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَئِن هَذَا إِلَّا إِفْكٌ
لِّأَقْرَبِهِ وَأَعَانَهُ عَلَيْهِ قَوْمٌ آخَرُونَ فَقَدْ
جَاءُوا ظُلْمًا وَزُورًا ﴿١٩﴾

5. और कहा कि यह तो पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं जिसे उस ने स्वयं लिख लिया है, और वह पढ़ी जाती हैं उस के समक्ष प्रातः और संध्या।

وَقَالُوا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلَى
عَلَيْهِمْ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٢٠﴾

6. आप कह दें कि इसे उस ने अवतरित किया है जो आकाशों तथा धरती का भेद जानता है। वास्तव में वह^[4] अति क्षमाशील दयावान् है।

قُلْ أَنْزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا رَّحِيمًا ﴿٢١﴾

1 अर्थात् प्रलय के पश्चात्।

2 अर्थात् कुर्आन।

3 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने।

4 इसी लिये क्षमा याचना का अवसर देता है।

7. तथा उन्होंने ने कहा: यह कैसा रसूल है जो भोजन करता है तथा बाज़ारों में चलता है? क्यों नहीं उतार दिया गया उस की ओर कोई फ़रिश्ता, तो वह उस के साथ सावधान करने वाला होता?
8. अथवा उस की ओर कोई कोष उतार दिया जाता अथवा उस का कोई बाग़ होता जिस में से वह खाता? तथा अत्याचारियों ने कहा: तुम तो बस एक जादू किये हुये व्यक्ति का अनुसरण कर रहे हो।
9. देखो! आप के संबंध में यह कैसी कैसी बातें कर रहे हैं? अतः वह कुपथ हो गये हैं, वह सुपथ पा ही नहीं सकते।
10. शुभकारी है वह (अल्लाह) जो यदि चाहे तो बना दे आप के लिये इस^[1] से उत्तम बहुत से बाग़ जिन में नहरें प्रवाहित हों, और बना दे आप के लिये बहुत से भवन।
11. वास्तविक बात यह है कि उन्होंने ने झूठला दिया है क़्यामत (प्रलय) को, और हम ने तय्यार किया है उस के लिये जो प्रलय को झूठलाये भड़कती हुई अग्नि।
12. जब वह उन्हें दूर स्थान से देखेगी, तो सुन लेंगे उस के क्रोध तथा आवेग की ध्वनि को।
13. और जब वह फेंक दिये जायेंगे

وَقَالُوا مَالِ هَذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ
وَيَمْشِي فِي الْأَسْوَاقِ لَوْلَا أَنْزَلْنَا إِلَيْهِ مَلَكَ
فَيَكُونُ مَعَهُ تَذَكِيرًا ۝

أَوْ يُلْقَىٰ إِلَيْهِ كِتَابٌ تَكُونُ لَهُ حِجَابًا يَأْكُلُ مِنْهَا
وَقَالَ الظَّالِمُونَ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا
مَّسْحُورًا ۝

أَنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا
فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ۝

تَبَارَكَ الَّذِي إِنْ شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِنْ
ذَلِكَ جَلِيلٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
وَيَجْعَلُ لَكَ قُصُورًا ۝

بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ وَأَعْتَدْنَا لِلْمَكِّدِينَ
بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ۝

إِذَا رَأَوْهُمْ مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَتَنَبَّأُ
وَرَفِيرًا ۝

وَإِذَا الْقُؤُومَةُ مَكَانًا حَيْثُهَا مُقْرَبُونَ دَعَا

1 अर्थात् उन के विचार से उत्तम।

उस के किसी संकीर्ण स्थान में बंधे
हुये, (तो) वहाँ विनाश को पुकारेंगे।

14. (उन से कहा जायेगा): आज एक
विनाश को मत पुकारो, बहुत से
विनाश को पुकारो।^[1]
15. (हे नबी!) आप उन से कहिये कि
क्या यह अच्छा है या स्थायी स्वर्ग
जिस का वचन आज्ञाकारियों को
दिया गया है, जो उन का प्रतिफल
तथा आवास है?
16. उन्हीं को उस में जो इच्छा वे करेंगे
मिलेगा। वे सदावासी होंगे, आप के
पालनहार पर (यह) वचन (पूरा
करना) अनिवार्य है।
17. तथा जिस दिन वह एकत्र करेगा
उन को और जिस की वह इबादत
(वंदना) करते थे अल्लाह के सिवाय,
तो वह (अल्लाह) कहेगा: क्या तुम्हीं
ने मेरे इन भक्तों को कुपथ किया है
अथवा वे स्वयं कुपथ हो गये?
18. वे कहेंगे: तू पवित्र है! हमारे लिये
यह योग्य नहीं था कि तेरे सिवा कोई
संरक्षक^[2] बनायें, परन्तु तू ने सुखी
बना दिया उन को तथा उन के पूर्वजों
को यहाँ तक कि वह शिक्षा को भूल
गये, और वह थे ही विनाश के योग्य।

هُنَالِكَ تُبَوَّرُونَ ﴿٢٥﴾

لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ مُبَوَّرًا وَاحِدًا وَادْعُوا تُبَوَّرًا
كَثِيرًا ﴿٢٥﴾

قُلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ خَيْرٍ مِّمَّا جَعَلْتُمُ الْخُلْدَ اللَّحْمِيِّ وَعِدَّةَ
الْمُتَّقُونَ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمَصِيرًا ﴿٢٥﴾

لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ
وَعْدًا مُّسْتَوْفًى ﴿٢٥﴾

وَيَوْمَ يُحْشِرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
فَيَقُولُ يَا أَيُّكُمْ أَضَلَّتُمْ عِبَادِي هَؤُلَاءِ أَمْ
هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ﴿٢٥﴾

قَالُوا سُبْحَانَكَ مَا كَانَ يَنْتَظِرُ لَنَا أَنْ تَكُونَ
مِنْ دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِنْ مَتَّعْتَهُمْ
وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوا قَوْمًا
بُورًا ﴿٢٥﴾

1 अर्थात् आज तुम्हारे लिये विनाश ही विनाश है।

2 अर्थात् जब हम स्वयं दूसरे को अपना संरक्षक नहीं समझे, तो फिर अपने विषय में यह कैसे कह सकते हैं कि हमें अपना रक्षक बना लो?

19. उन्होंने^[1] ने तो तुम्हें झुठला दिया तुम्हारी बातों में, तो तुम न यातना को फेर सकोगे और न अपनी सहायता कर सकोगे। और जो भी अत्याचार^[2] करेगा तुम में से हम उसे घोर यातना चखायेंगे।

20. और नहीं भेजा हम ने आप से पूर्व किसी रसूल को, परन्तु वे भोजन करते और बाज़ारों में (भी) चलते^[3] फिरते थे। तथा हम ने बना दिया तुम में से एक को दूसरे के लिये परीक्षा का साधन, तो क्या तुम धैर्य रखोगे? तथा आप का पालनहार सब कुछ देखने^[4] वाला है।

21. तथा उन्होंने ने कहा जो हम से मिलने की आशा नहीं रखते: हम पर फ़रिश्ते क्यों नहीं उतारे गये या हम अपने पालनहार को देख लेते? उन्होंने ने अपने में बड़ा अभिमान कर लिया है तथा बड़ी अवैज्ञा^[5] की है।

22. जिस दिन^[6] वे फ़रिश्तों को देख लेंगे

فَقَدْ كَذَّبْتُمْ بِمَا تَقُولُونَ فَمَا اسْتَطِيعُونَ
صِرَافًا وَلَا تَصْرًا وَمَنْ يَظْلِمُ مِنْكُمْ نُذِقْهُ
عَذَابًا كَبِيرًا ﴿١٩﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا أَنْهُمْ
لِيَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ
وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً
أَنْ تَصْبِرُونَ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ﴿٢٠﴾

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا أُولَئِكَ
أَنْزِلْ عَلَيْهَا الْمَلَائِكَةُ أَنْزِلُوا رَبَّنَا لَقَدْ اسْتَكْبَرُوا
فِي أَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْا عُتُوًا كَبِيرًا ﴿٢١﴾

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلَائِكَةَ لَا بُشْرَىٰ يَوْمَئِذٍ لِلْمُجْرِمِينَ

1 यह अल्लाह का कथन है, जिसे वह मिश्रणवादियों से कहेगा कि तुम्हारे पूज्यों ने स्वयं अपने पूज्य होने को नकार दिया।

2 अत्याचार से तात्पर्य शिर्क (मिश्रणवाद) है। (सूरह लुक्मान, आयत:13)

3 अर्थात् वे मानव पुरुष थे।

4 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह चाहता तो पूरा संसार रसूलों का साथ देता। परन्तु वह लोगों की रसूलों द्वारा तथा रसूलों की लोगों के द्वारा परीक्षा लेना चाहता है कि लोग ईमान लाते हैं या नहीं और रसूल धैर्य रखते हैं या नहीं।

5 अर्थात् ईमान लाने के लिये अपने समक्ष फ़रिश्तों के उतरने तथा अल्लाह को देखने की माँग कर के।

6 अर्थात् मरने के समया (देखिये: अन्फाल-13) अथवा प्रलय के दिन।

उस दिन कोई शुभ सूचना नहीं होगी अपराधियों के लिये तथा वह कहेंगे:^[1]
वंचित वंचित है।

وَيَقُولُونَ حَجْرًا مَّحْجُورًا ۝

23. और उनके कर्मों^[2] को हम ले कर धूल के समान उड़ा देंगे।

وَقَدْ مَنَّ اللَّهُ مَاعْمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً مَّنْثُورًا ۝

24. स्वर्ग के अधिकारी उस दिन अच्छे स्थान तथा सुखद शयनकक्ष में होंगे।

أَصْحَابُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَأَحْسَنُ مَقِيلًا ۝

25. जिस दिन चिर जायेगा आकाश बादल के साथ^[3] और फ़रिश्ते निरन्तर उतार दिये जायेंगे।

يَوْمَ تَشْقَى السَّمَاءُ بِالسَّحَابِ وَنُزِلَ الْمَلَكُ تَنْزِيلًا ۝

26. उस दिन वास्तविक राज्य अति दयावान् का होगा, और काफ़िरों पर एक कड़ा दिन होगा।

الْمَلِكُ يَوْمَئِذٍ الْخَبِيرُ لِلرَّحْمَنِ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكَافِرِينَ عَسِيرًا ۝

27. उस दिन अत्याचारी अपने दोनों हाथ चबायेगा, वह कहेगा: क्या ही अच्छा होता कि मैं ने रसूल का साथ दिया होता।

وَيَوْمَ يَعْصُ الظَّالِمُ عَلَى يَدَيْهِ يَقُولُ يَا لَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ۝

28. हाये मेरा दुर्भाग्य! काश मैं ने अमुक को मित्र न बनाया होता।

يَا لَيْتَنِي لَيْتَنِي لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيلًا ۝

29. उस ने मुझे कुपथ कर दिया शिक्षा (क़ुर्आन) से इस के पश्चात् कि मेरे पास आयी, और शैतान मनुष्य को (समय पर) धोखा देने वाला है।

لَقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي، وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنْسَانِ خَدًّا ۝

1 अर्थात् वह कहेंगे कि हमारे लिये सफलता तथा स्वर्ग निषेधित है।

2 अर्थात् ईमान न होने के कारण उनके पुण्य के कार्य व्यर्थ कर दिये जायेंगे।

3 अर्थात् आकाश चीरता हुआ बादल छा जायेगा और अल्लाह अपने फ़रिश्तों के साथ लोगों का हिसाब करने के लिये हश्र के मैदान में आ जायेगा। (देखिये सूरह, बकरा, आयत: 210)

30. तथा रसूल [1] कहेगा: हे मेरे पालनहार! मेरी जाति ने इस कुर्आन को त्याग[2] दिया।
31. और इसी प्रकार हम ने बना दिया प्रत्येक का शत्रु कुछ अपराधियों को। और आप का पालनहार मार्गदर्शन देने तथा सहायता कर ने को बहुत है।
32. तथा काफ़िरो ने कहा: क्यों नहीं उतार दिया गया आप पर कुर्आन पूरा एक ही बार? [3] इसी प्रकार (इस लिये किया गया) ताकि हम आप के दिल को दृढ़ता प्रदान करें, और हम ने इस का क्रमशः प्रस्तुत किया है।
33. (और इस लिये भी कि) वह आप के पास कोई उदाहरण लायें तो हम आप के पास सत्य ला दें और उत्तम व्याख्या।
34. जो अपने मुखों के बल नरक की ओर एकत्र किये जायेंगे, उन्हीं का सब से बुरा स्थान है तथा सब से अधिक कुपथ है।
35. तथा हम ने ही मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की और उस के साथ उस के भाई हारून को सहायक बनाया।
36. फिर हम ने कहा: तुम दोनों उस

وَقَالَ الرَّسُولُ يَا رَبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا هَذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا ۝

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ هَادِيًا وَنَصِيرًا ۝

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَالْوَلَا يُزِيلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً وَآجِدَةً كَذَلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهِ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنَاهُ تَرْتِيلًا ۝

وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَاكَ بِالْحَقِّ وَأَحْسَنَ تَفْسِيرًا ۝

الَّذِينَ يُحْشَرُونَ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ إِلَىٰ جَهَنَّمَ أُولَٰئِكَ سَاءَ مَكَانًا وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَا مَعَهُ أَخَاهُ هَارُونَ وَرِيسًا ۝

فَقُلْنَا أَذْهَبَ إِلَى الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا

1 अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। (इब्ने कसीर)

2 अर्थात इसे मिश्रणवादियों ने नहीं सुना और न माना।

3 अर्थात तौरात तथा इंजील के समान एक ही बार क्यों नहीं उतारा गया, आगामी आयतों में उस का कारण बताया जा रहा है कि कुर्आन 23 वर्ष में क्रमशः आवश्यकतानुसार क्यों उतारा गया।

जाति की ओर जाओ जिस ने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया। अन्ततः हम ने उन को ध्वस्त निरस्त कर दिया।

37. और नूह की जाति ने जब रसूलों को झुठलाया तो हम ने उन को डुबो दिया और लोगों के लिये उन को शिक्षाप्रद प्रतीक बना दिया तथा हम ने^[1] तय्यार की है अत्याचारियों के लिये दुःखदायी यातना।

38. तथा आद और समूद एवं कूवें वालों तथा बहुत से समुदायों को इस के बीच।

39. और प्रत्येक को हम ने उदाहरण दिये, तथा प्रत्येक को पूर्णतः नाश कर^[2] दिया।

40. तथा यह^[3] लोग उस बस्ती^[4] पर आये गये हैं जिन पर बुरी वर्षा की गई, तो क्या उन्होंने ने उसे नहीं देखा? बल्कि यह लोग पुनः जीवित होने का विश्वास नहीं रखते।

41. और (हे नबी!) जब वह आप को देखते हैं, तो आप को उपहास बना लेते हैं कि क्या यही है जिसे अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है?

42. इस ने तो हमें अपने पूज्यों से कुपथ

فَدَرَأْنَاهُمْ تَدْبِيرًا ۝

وَقَوْمِ نُوحٍ إِذْ أَنْبَأْنَاهُمْ بِمَا كَانُوا يُكْفَرُونَ ۝ وَجَعَلْنَاهُمْ لِلنَّاسِ آيَةً ۝ وَأَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ عَذَابَ أَلِيمًا ۝

وَعَادًا وَثَمُودَ ۝ وَأَصْحَابَ الرَّسِّ وَقُرُونَيْنِ ۝ ذَلِكُمْ كَثِيرٌ ۝

وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْأَمْثَالَ ۝ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيرًا ۝

وَلَقَدْ أَنْوَأْنَا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِي أَمْطَرْنَا مَطَرًا سَوِيًّا ۝ أَفَلَمْ يَكُونُوا يَرَوْنها بَلْ كَانُوا إِلَّا يَرْجُونَ ۝ نُشُورًا ۝

وَأَذًا ۝ أَرَأَوْكَ إِن يَتَجَدَّدُونَكَ ۝ فَأَنْهَضُوا أَلْهَدًا ۝ الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ۝

إِنْ كَادَ لَيُبْدِّلَنَا عَنْ إِلَهِنَا لَوْلَا أَنْ صَبَرْنَا

1 अर्थात परलोक में नरक की यातना।

2 सत्य को स्वीकार न करने पर।

3 अर्थात मक्का के मुश्रिक।

4 अर्थात लूत जाति की बस्ती पर जिस का नाम "सदूम" था जिस पर पत्थरों की वर्षा हुई। फिर भी शिक्षा ग्रहण नहीं की।

कर दिया होता यदि हम उन पर अडिग न रहते। और वे शीघ्र ही जान लेंगे जिस समय यातना देखेंगे कि कौन अधिक कुपथ है?

عَلَيْهَا وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرْوُونَ الْعَذَابَ
مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ۝

43. क्या आप ने उसे देखा जिस ने अपना पूज्य अपनी अभिलाषा को बना लिया है, तो क्या आप उस के संरक्षक^[1] हो सकते हैं?

أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ أَفَأَنْتَ تَكُونُ
عَلَيْهِ وَكَفِيلًا ۝

44. क्या आप सझते हैं कि उन में से अधिकतर सुनते और समझते हैं? वे पशुओं के समान हैं बल्कि उन से भी अधिक कुपथ हैं।

أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ
إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ۝

45. क्या आप ने नहीं देखा कि आप के पालनहार ने कैसे छाया को फैला दिया और यदि वह चाहता तो उसे स्थिर^[2] बना देता फिर हम ने सूर्य को उस पर प्रमाण^[3] बना दिया।

أَلَمْ تَرَ إِلَى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ
سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسُ عَلَيْهِ دَلِيلًا ۝

46. फिर हम उस (छाया को) समेट लेते हैं अपनी ओर धीरे-धीरे।

ثُمَّ مَقْبَضَةً إِلَيْنَا فَبُضًا يَبِيرًا ۝

47. और वही है जिस ने रात्रि को तुम्हारे लिये वस्त्र^[4] बनाया, तथा निद्रा को शान्ति, तथा दिन को जागने का समय।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِیَسَاءَ وَالتَّوْمَ سُبَاتًا
وَجَعَلَ النَّهَارَ أَشْرًا ۝

48. तथा वही है जिस ने भेजा वायुओं को शुभ सूचना बनाकर अपनी दया (वर्षा) से पूर्व, तथा हम ने आकाश

وَهُوَ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ بُشْرًا لِّبَنِّیَدَى
رَحْمَتِهِ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا ۝

1 अर्थात उसे सुपथ दर्शा सकते हैं ?

2 अर्थात सदा छाया ही रहती।

3 अर्थात छाया सूर्य के साथ फैलती तथा सिमटती है। और यह अल्लाह के सामर्थ्य तथा उस के एकमात्र पूज्य होने का प्रमाण है।

4 अर्थात रात्रि का अंधेरा वस्त्र के समान सब को छुपा लेता है।

से स्वच्छ जल बरसाया।

49. ताकि जीवित कर दें उस के द्वारा निर्जीव नगर को तथा उसे पिलायें उन में से जिन्हें पैदा किया है बहुत से पशुओं तथा मानव को।
50. तथा हम ने विभिन्न प्रकार से इसे वर्णन कर दिया है, ताकि वे शिक्षाग्रहण करें। परन्तु अधिकतर लोगों ने अस्वीकार करते हुये कुफ़्र ग्रहण कर लिया।
51. और यदि हम चाहते तो भेज देते प्रत्येक बस्ती में एक सचेत करने [1] वाला।
52. अतः आप काफ़िरोँ की बात न मानें और इस (क़ुर्आन के) द्वारा उन से भारी जिहाद (संघर्ष) [2] करें।
53. वही है जिस ने मिला दिया दो सागरों को, यह मीठा रुचिकार है, और वह नमकीन खारा, और उस ने बना दिया दोनों के बीच एक पर्दा [3] एवं रोका।
54. तथा वही है जिस ने पानी (वीर्य) से मनुष्य को उत्पन्न किया, फिर उस के वंश तथा ससुराल के संबन्ध बना दिये, आप का पालनहार अति सामर्थ्यवान है।
55. और वे लोग इबादत (वन्दना) करते हैं अल्लाह के सिवा उन की जो न उन

لِنُخْرِجَ بِهِ بَلَدًا مِّمَّنَّا وَنُسْقِيَهُ مِمَّا خَلَقْنَا أَنْعَامًا
وَأَنْسَابًا كَثِيرًا ۝

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيهِمْ لِيَذَكَّرُوا فَأَبَى أَكْثَرُ النَّاسِ
إِلَّا كُفُورًا ۝

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ كَذِبًا ۝

فَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَجَاهِدْهُمْ بِهِ
جِهَادًا كَبِيرًا ۝

وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هَذَا عَذْبٌ فُورًا وَهَذَا
مِلْحٌ أجاجٌ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَحِجْرًا مَّحْجُورًا ۝

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا جَعَلَهُ نَسَبًا
وَصِهْرًا وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ۝

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا

1 अर्थात रसूल। इस में यह संकेत है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पूरे मनुष्य विश्व के लिये एक अन्तिम रसूल हैं।

2 अर्थात क़ुर्आन के प्रचार-प्रसार के लिये भरपूर प्रयास करें।

3 ताकि एक का पानी और स्वाद दूसरे में न मिले।

को लाभ पहुँचा सकते और न हानि पहुँचा सकते हैं, और काफिर अपने पालनहार का विरोधी बन गया है।

56. और हम ने आप को बस शुभसूचना देने, सावधान करने वाला बनाकर भेजा है।
57. आप कह दें: मैं इस^[1] पर तुम से कोई बदला नहीं मांगता, परन्तु यह कि जो चाहे अपने पालनहार की ओर मार्ग बना ले।
58. तथा आप भरोसा कीजिये उस नित्य जीवी पर जो मरेगा नहीं, और उस की पवित्रता का गान कीजिये उसकी प्रशंसा के साथ, और आप का पालनहार पर्याप्त है अपने भक्तों के पापों से सूचित होने को।
59. जिस ने उत्पन्न कर दिया आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उनके बीच है छः दिनों में, फिर (सिंहासन) पर स्थिर हो गया अति दयावान्, उसकी महिमा किसी ज्ञानी से पूछो।
60. और जब उन से कहा जाता है कि रहमान (अति दयावान्) को सज्दा करो, तो कहते हैं कि रहमान क्या है? क्या हम सज्दा करने लगे जिसे आप आदेश दें? और इस (आमंत्रण) ने उन को और अधिक भड़का दिया।
61. शुभ है वह जिसने आकाश में राशि चक्र बनाये तथा उस में सूर्य और

يَضْرَهُمْ وَكَانَ الْكَافِرَ عَلَىٰ رَبِّهِ ظَهِيرًا ۝

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَنْ شَاءَ
أَنْ يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝

وَيُكَلِّمُ عَلَىٰ النَّارِ الَّذِي لَا يُمُوتُ وَيَسْبِحُ بِحَمْدِهِ
وَكُنِيَ بِهِ يَدُّ يُدَبِّعُ عِبَادَهُ خَيْرًا ۝

الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي
سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ الرَّحْمَنُ فَسَمِّلْ
بِهِ خَيْرًا ۝

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَنِ قَالُوا وَمَا
الرَّحْمَنُ أَفَعْبُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ۝

تَبَارَكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا

प्रकाशित चाँद को बनाया।

62. वही है जिस ने रात्रि तथा दिन को एक दूसरे के पीछे आते-जाते बनाया उस के लिये जो शिक्षा ग्रहण करना चाहे या कृतज्ञ होना चाहे।
63. और अति दयावान् के भक्त वह हैं जो धरती पर नम्रता से चलते^[1] हैं और अशिक्षित (अक्खड़) लोग उन से बात करते हैं तो सलाम करके अलग^[2] हो जाते हैं।
64. और जो रात्रि व्यतीत करते हैं अपने पालनहार के लिये सज्दा करते हुये तथा खड़े^[3] हो कर।
65. तथा जो प्रार्थना करते हैं कि हे हमारे पालनहार! फेर दे हम से नरक की यातना को, वास्तव में उस की यातना चिपक जाने वाली है।
66. वास्तव में वह बुरा आवास और स्थान है।
67. तथा जो व्यय (खर्च) करते समय अपव्यय नहीं करते और न कृपण (कंजूसी) करते हैं और वह इस के बीच संतुलित रहता है।
68. और जो नहीं पुकारते हैं अल्लाह के साथ किसी दूसरे^[4] पूज्य को और

وَجَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا وَقَمَرًا مُنِيرًا ﴿١٩﴾

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَن أَرَادَ أَن يَذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ﴿٢٠﴾

وَعِبَادُ الرَّحْمَنِ الَّذِينَ يَمْشُونَ عَلَى الْأَرْضِ هَوْنًا
وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ﴿٢١﴾

وَالَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ لِلَّهِمْ سِجْدًا وَقِيَامًا ﴿٢٢﴾

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ
جَهَنَّمَ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٢٣﴾

إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿٢٤﴾

وَالَّذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ يَقْتُرُوا
وَكَانَ بَيْنَ ذَلِكَ قَوَامًا ﴿٢٥﴾

وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ

1 अर्थात घमंड से अकड़ कर नहीं चलते।

2 अर्थात उन से उलझते नहीं।

3 अर्थात अल्लाह की इबादत करते हुये।

4 अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद कहते हैं कि मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से

न बध करते हैं उस प्राण को जिसे अल्लाह ने वर्जित किया है परन्तु उचित कारण से, और न व्यभिचार करते हैं। और जो ऐसा करेगा वह पाप का सामना करेगा।

69. दुगनी की जायेगी उस के लिये यातना प्रलय के दिन, तथा सदा उस में अपमानित^[1] हो कर रहेगा।
70. उस के सिवा जिस ने क्षमा याचना कर ली, और ईमान लाया तथा कर्म किया अच्छा कर्म, तो वही है बदल देगा अल्लाह जिन के पापों को पुण्य से। तथा अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।
71. और जिस ने क्षमा याचना कर ली और सदाचार किये तो वास्तव में वही अल्लाह की ओर झुक जाता है।
72. तथा जो मिथ्या साक्ष्य नहीं देते, और जब व्यर्थ के पास से गुज़रते हैं तो सज्जन बन कर गुज़र जाते हैं।
73. और जब उन्हें शिक्षा दी जाये उनके पालनहार की आयतों द्वारा उन पर नहीं गिरते अन्धे तथा बहरे हो^[2] करा

وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ
وَلَا يَزْنُونَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَتَمًا ۝

يُضَعَفُ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخَذُّ فِيهِ
مُهَاتًا ۝

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَئِكَ
يَبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا
رَحِيمًا ۝

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ
مَتَابًا ۝

وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُّوا بِالْغَوَا
مُرُّوا كَرَامًا ۝

وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِرُوا بِالْبِئْسَةِ لَهُمْ حِجْرٌ وَعَلَيْهَا
صُمٌّ وَأَعْيُنَانَا ۝

प्रश्न किया कि कौन सा पाप सब से बड़ा है? फरमाया: यह कि तुम अल्लाह का साझी बनाओ जब कि उस ने तुम को पैदा किया है। मैं ने कहा: फिर कौन सा? फरमाया: अपनी संतान को इस भय से मार दो कि वह तुम्हारे साथ खायेगी। मैं ने कहा: फिर कौन सा? फरमाया: अपने पड़ोसी की पत्नी से व्यभिचार करना। यह आयत इसी पर उतरी। (देखिये: सहीह बुखारी, 4761)

1 इब्ने अब्बास ने कहा: जब यह आयत उतरी तो मक्का वासियों ने कहा: हम ने अल्लाह का साझी बनाया है और अवैध जान भी मारी है तथा व्यभिचार भी किया है। तो अल्लाह ने यह आयत उतारी। (सहीह बुखारी, 4765)

2 अर्थात् आयतों में सोच-विचार करते हैं।

74. तथा जो प्रार्थना करते हैं कि हे हमारे पालनहार! हमें हमारी पत्नियों तथा संतानों से आँखों की ठण्डक प्रदान कर और हमें आज्ञाकारियों का अग्रणी बना दे।

75. यही लोग उच्च भवन अपने धैर्य के बदले में पायेंगे, और स्वागत किये जायेंगे उस में आशीर्वाद तथा सलाम के साथ।

76. वे उस में सदावासी होंगे, वह अच्छा निवास तथा स्थान है।

77. (हे नबी!) आप कह दें कि यदि तुम्हारा उसे पुकारना न^[1] हो तो मेरा पालनहार तुम्हारी क्या परवाह करेगा? तुम ने तो झुठला दिया है, तो शीघ्र ही (उसका दण्ड) चिपक जाने वाला होगा।

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا
وَدُرِّبَتِنَا فِرَّةً أَعْيُنٌ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ۝

أُولَٰئِكَ يَجْزُونَ الْعُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُقُونَ فِيهَا
حِجَّةً وَسَلَامًا ۝

خَالِدِينَ فِيهَا أَحْسَنَتْ مَسَافِرًا أَوْ مَقَامًا ۝

قُلْ مَا يَعْجَبُ أَيْكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ فَقَدْ
كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَوَامًا ۝

1 अर्थात् उस से प्रार्थना तथा उस की इबादत न करो।

सूरह शुअरा - 26



सूरह शुअरा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 227 आयतें हैं

- इस में मक्का के मुर्ति पूजकों के आरोप का खण्डन किया गया है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शायर (कवि) कहते थे। और कवि और नबी के बीच अन्तर बताया गया है।
- इस में धर्म प्रचार के लिये नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चिन्ता और विरोधियों के आप के साथ उपहास की चर्चा है।
- इस में मूसा अलैहिस्सलाम तथा इब्राहीम अलैहिस्सलाम के एकेश्वरवाद के उपदेश को प्रस्तुत किया गया है जो उन्होंने अपनी जाति को दिया था।
- इस में कई नबियों के धर्म प्रचार और उन के विरोधियों के दुष्परिणाम को बताया गया है।
- अनेक युग में नबियों के आने और उन के उपदेश में समानता का भी वर्णन है।
- कुर्आन तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से संबंधित संदेहों का निवारण किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. ता, सीन, मीमा।
2. यह प्रकाशमय पुस्तक की आयतें हैं।
3. संभवतः आप अपना प्राण^[1] खो देने वाले हैं कि वे ईमान लाने वाले नहीं हैं!

طسّر ①

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ②

لَعَلَّكَ بَآخِئَةِ نَفْسِكَ الْأَيْكُونُوا مُؤْمِنِينَ ③

1 अर्थात् उन के ईमान न लाने के शोक में।

4. यदि हम चाहें तो उतार दें उन पर आकाश से ऐसी निशानी कि उन की गर्दनें उस के आगे झुकी कि झुकी रह जायें।^[1]
5. और नहीं आती है उन के पालनहार अति दयावान् की ओर से कोई नई शिक्षा परन्तु वे उस से मुख फेरने वाले बन जाते हैं।
6. तो उन्होंने ने झुठला दिया, अब उनके पास शीघ्र ही उस की सूचनायें आ जायेंगी जिस का उपहास वे कर रहे थे।
7. और क्या उन्होंने ने धरती की ओर नहीं देखा कि हम ने उस में उगाई है बहुत सी प्रत्येक प्रकार की अच्छी वनस्पतियाँ?
8. निश्चय ही इस में बड़ी निशानी (लक्षण)^[2] है। फिर उन में अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं हैं।
9. तथा वास्तव में आप का पालनहार ही प्रभुत्वशाली अति दयावान् है।
10. (उन्हें उस समय की कथा सुनाओ) जब पुकारा आप के पालनहार ने मूसा को, कि जाओ अत्याचारी जाति^[3] के पास।

إِنْ نَشَأْ نُزِيلْ عَلَيْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ آيَةً
فَطَلَّكَتْ أَعْيَانُهُمْ لَهَا خَضِيعِينَ ①

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنَ الرَّحْمَنِ مُحَدِّثٍ إِلَّا
كَانُوا عَنْهُ مُعْرِضِينَ ②

فَقَدْ كَذَّبُوا نَسِيًّا بَيْنَهُمْ أَبْلَوْا مَا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِئُونَ ③

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمَا أَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ
شَيْءٍ كَرِيمٍ ④

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ⑤

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ⑥

وَإِذْ تَأَذَىٰ رَبُّكَ مُوسَىٰ أَنْ أَنْبَتِ الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ⑦

- 1 परन्तु ऐसा नहीं किया, क्यों कि दबाव का ईमान स्वीकार्य तथा मान्य नहीं होता।
- 2 अर्थात् अल्लाह के सामर्थ्य की।
- 3 यह उस समय की बात है जब मूसा (अलैहिस्सलाम) दस वर्ष मद्यन में रह कर मिस्र वापिस आ रहे थे।

11. फिरऔन की जाति के पास, क्या वे डरते नहीं?
12. उस ने कहा: मेरे पालनहार वास्तव में मुझे भय है कि वह मुझे झुठला देंगे।
13. और संकुचित हो रहा है मेरा सीना, और नहीं चल रही है मेरी जुबान, अतः वही भेज दे हारून की ओर (भी)।
14. और उन का मुझ पर एक अपराध भी है। अतः मैं डरता हूँ कि वह मुझे मार डालेंगे।
15. अल्लाह ने कहा: कदापि ऐसा नहीं होगा। तुम दोनों हमारी निशानियाँ ले कर जाओ, हम तुम्हारे साथ सुनने^[1] वाले हैं।
16. तो तुम दोनों जाओ, और कहो कि हम विश्व के पालनहार के भेजे हुये (रसूल) हैं।
17. कि तू हमारे साथ बनी इस्राईल को जाने दे।
18. (फिरऔन ने) कहा: क्या हम ने तेरा पालन नहीं किया है अपने यहाँ बाल्यवस्था में, और तू रहा है हम में अपनी आयु के कई वर्ष?
19. और तू कर गया वह कार्य^[2] जो किया, और तू कृतघ्नों में से है।

قَوْمٌ فِرْعَوْنَ الْأَيْتُونَ ⑩

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ⑪

وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَبْسُطُ لِسَانِي فَأرْسِلْ إِلَى هَارُونَ ⑫

وَلَهُمْ عَلَى ذُنُوبٍ فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ⑬

قَالَ كَلِمَةٌ فَاذْهَبْ بِالْبَيِّنَاتِ إِنَّا مَعَكُمْ مُسْمِعُونَ ⑭

فَأْتِيَاهُ عَوْنًا فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ⑮

إِنْ أَرْسِلْ مَعَنَا نَبِيًّا إِسْرَائِيلَ ⑯

قَالَ أَلَمْ نُرَبِّكَ فِينَا وَلِيدًا وَلَمِثَّتْ فِينَا مِنْ عَمُرِكَ سِنِينَ ⑰

وَعَلَّمْتَ مَعَلَّتَكَ الْكَلِمَ فَعَلَّمْتَ وَأَنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ⑱

1 अर्थात् तुम दोनों की सहायता करते रहेंगे।

2 यह उस हत्या काण्ड की ओर संकेत है जो मूसा (अलैहिस्सलाम) से नबी होने से पहले हो गया था। (देखिये: सूरह क़सस)

20. (मूसा ने) कहा: मैं ने ऐसा उस समय कर दिया, जब कि मैं अनजान था।
21. फिर मैं तुम से भाग गया जब तुम से भय हुआ। फिर प्रदान कर दिया मुझे मेरे पालनहार ने तत्वदर्शिता और मुझे बना दिया रसूलों में से।
22. और यह कोई उपकार है जो तू मुझे जता रहा है कि तू ने दास बना लिया है इस्राईल के पुत्रों को।
23. फिरऔन ने कहा: विश्व का पालनहार क्या है?
24. (मूसा ने) कहा: आकाशों तथा धरती और उसका पालनहार जो कुछ दोनों के बीच है, यदि तुम विश्वास रखने वाले हो।
25. उस ने उन से कहा जो उस के आस पास थे: क्या तुम सुन नहीं रहे हो?
26. (मूसा ने) कहा: तुम्हारा पालनहार तथा तुम्हारे पूर्वजों का पालनहार है।
27. (फिरऔन ने) कहा: वास्तव में तुम्हारा रसूल जो तुम्हारी ओर भेजा गया है पागल है।
28. (मूसा ने) कहा: वह, पूर्व तथा पश्चिम, तथा दोनों के मध्य जो कुछ है सब का पालनहार है।
29. (फिरऔन ने) कहा। यदि तू ने कोई पूज्य बना लिया मेरे अतिरिक्त, तो तुझे बंदियों में कर दूँगा।

قَالَ قَعْلَبًا إِذَا أَنَا مِنَ الضَّالِّينَ ﴿٢٠﴾

فَقَرَرْتُ مِنكُمْ لَمَّا خِفْتُمْ فَوَهَبَ لِي رَبِّي حُكْمًا
وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢١﴾

وَوَيْلٌ لَّكَ بِعِمَّةٍ مَّتَمَّتْ عَلَيَّ أَنْ عَبَّدتَّ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٢﴾

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٣﴾

قَالَ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنَّكُمْ
مُؤْتَقِنِينَ ﴿٢٤﴾

قَالَ لِمَنْ حُوكْمَةُ الْأَسْمَاءِ مُعُونَ ﴿٢٥﴾

قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٦﴾

قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمْ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُونٌ ﴿٢٧﴾

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ﴿٢٨﴾

قَالَ لِمَنِ اتَّخَذتَّ الْهَاطِعِيُّ لِمَ جَعَلتَّكَ مِنَ
السَّجُونِينَ ﴿٢٩﴾

30. (मूसा ने) कहा: क्या यद्यपि मैं ला दूँ
तेरे पास एक खुली चीज़?
31. उसने कहा: तू उसे ला दे यदि सच्चा है।
32. फिर उस ने अपनी लाठी को फेंक
दिया, तो अकस्मात् वह एक प्रत्यक्ष
अजगर बन गयी।
33. तथा अपना हाथ निकाला तो
अकस्मात् वह उज्ज्वल था देखने
वालों के लिये।
34. उस ने अपने प्रमुखों से कहा जो उस
के पास थे: वास्तव में यह तो बड़ा
दक्ष जादूगर है।
35. वह चाहता है कि तुम्हें तुम्हारी धरती
से निकाल^[1] दे अपने जादू के बल
से, तो अब तुम क्या आदेश देते हो?
36. सब ने कहा: अवसर (समय) दो मूसा
और उसके भाई (के विषय) को, और
भेज दो नगरों में एकत्र करने वालों को।
37. वह तुम्हारे पास प्रत्येक बड़े दक्ष
जादूगर को लायें।
38. तो एकत्र कर लिये गये जादूगर एक
निश्चित दिन के समय के लिये।
39. तथा लोगों से कहा गया कि क्या तुम
एकत्र होने वाले ^[2] हो?
40. ताकि हम पीछे चलें जादूगरों के यदि
वही प्रभुत्वशाली (विजयी) हो जायें।

قَالَ أَوْ لَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِينٍ ۝

قَالَ فَأْتِ بِآيَاتٍ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝

فَأَلْقَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثَمْبَانٌ مُّبِينٌ ۝

وَرَزَقَ يَدَّهَا وَإِذْ هِيَ بَيْضٌ لِلنّٰظِرِيْنَ ۝

قَالَ لِلْمَلَآئِكَةِ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عَٰلِيٌّ ۝

يُرِيدُ أَنْ يُنَزِّلَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ بِعُرْقٍ مِّمَّاذَا
تَأْمُرُونَ ۝

قَالُوا الرَّجِيَّةُ وَآخَاهُ وَأَبْعَثْ فِي الْمَدَائِنِ خَيْرِيْنَ ۝

يَأْتُوكَ بِجُلٍّ سَخِرَ عَلَيْهِ ۝

فَجُمِعَ السّٰحِرَةُ لِيَوْمَاتٍ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۝

وَقِيلَ لِلنّٰسِ هَلْ أَنْتُمْ مُّجْتَمِعُونَ ۝

لَعَلَّكُمْ تَتَّبِعُمُ السّٰحِرَةَ إِنْ كَانُوا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ۝

1 अर्थात् यह उग्रवाद कर के हमारे देश पर अधिकार कर ले।

2 अर्थात् लोगों को प्रेरणा दी जा रही है कि इस प्रतियोगिता में अवश्य उपस्थित हों।

41. और जब जादूगर आये, तो फिरऔन से कहा: क्या हमें कुछ पुरस्कार मिलेगा यदि हम ही प्रभुत्वशाली होंगे?
42. उसने कहा: हाँ, और तुम उस समय (मेरे) समीपवर्तियों में हो जाओगे।
43. मूसा ने उन से कहा: फेंको जो कुछ तुम फेंकने वाले हो।
44. तो उन्होंने ने फेंक दी अपनी रस्सियाँ तथा अपनी लाठियाँ, तथा कहा: फिरऔन के प्रभुत्व की शपथ! हम ही अवश्य प्रभुत्वशाली (विजयी) होंगे।
45. अब मूसा ने फेंक दी अपनी लाठी, तो तत्क्षण वह निगलने लगी जो झूठ वह बना रहे थे।
46. तो गिर गये सभी जादूगर^[1] सज्दा करते हुये।
47. और सब ने कह दिया: हम विश्व के पालनहार पर ईमान लाये।
48. मूसा तथा हारून के पालनहार पर।
49. (फिरऔन ने) कहा: तुम उस का विश्वास कर बैठे इस से पहले कि मैं तुम्हें आज्ञा दूँ वास्तव में वह तुम्हारा बड़ा (गुरु) है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है, तो तुम्हें शीघ्र ज्ञान हो जायेगा, मैं अवश्य तुम्हारे हाथों तथा पैरों को विपरीत दिशा^[2] से काट दूँगा

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ أَإِنَّا لَمَّا كُنَّا مِنَّا كَانُوا كَذِبًا
إِنَّا كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿٢٦﴾

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذًا لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٢٧﴾

قَالَ لَهُمْ مُوسَى الْقَوْمَا إِنَّمَا أَنتُم مُّثَقَلُونَ ﴿٢٨﴾

فَالْقَوَاعِبُ آلَهُمْ وَوَعِيَّةَهُمْ وَقَالُوا بَعْزَةٌ فِرْعَوْنَ
إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ﴿٢٩﴾

فَألقى مُوسَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ كَلْفُ مَائَا فَاكُونَ ﴿٣٠﴾

فَألقى السَّحَرَةُ سُجُودًا ﴿٣١﴾

قَالُوا الْمَنَارِبُ الْعَالَمِينَ ﴿٣٢﴾

رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ ﴿٣٣﴾

قَالَ امْنُتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ أَدْنَى لَكُمْ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي
عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَكَسُوفَ تَعْلَمُونَ هَلْ أَتَقَطَعَنَّ أَيْدِيَكُمْ
وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ وَلَا وَصَلَكُمْ
أَجْمَعِينَ ﴿٣٤﴾

1 क्यों कि उन्हें विश्वास हो गया कि मूसा (अलैहिस्सलाम) जादूगर नहीं, बल्कि वह सत्य के उपदेशक हैं।

2 अर्थात दायाँ हाथ और बायाँ पैर या बायाँ हाथ और दायाँ पैर।

- तथा तुम सभी को फाँसी दे दूंगा।
50. सब ने कहा: कोई चिन्ता नहीं, हम तो अपने पालनहार ही की ओर फिर कर जाने वाले हैं।
51. हम आशा रखते हैं कि क्षमा कर देगा हमारे लिये हमारा पालन- हार हमारे पापों को क्यों कि हम सब से पहले ईमान लाने वाले हैं।
52. और हम ने मूसा की ओर वही की, कि रातों - रात निकल जा मेरे भक्तों को ले कर, तुम सब का पीछा किया जायेगा।
53. तो फिरऔन ने भेज दिया नगरों में (सेना) एकत्र करने ^[1] वालों को।
54. कि वह बहुत थोड़े लोग हैं।
55. और (इस पर भी) वह हमें अति क्रोधित कर रहे हैं।
56. और वास्तव में हम एक गिरोह हैं सावधान रहने वाले।
57. अन्ततः हम ने निकाल दिया उन को बागों तथा स्रोतों से।
58. तथा कोषों और उत्तम निवास स्थानों से।
59. इसी प्रकार हुआ, और हम ने उन का उत्तराधिकारी बना दिया इस्राईल की संतान को।

قَالُوا أَأُصِيبُوا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُتَّقِبُونَ ﴿٥٠﴾

إِنَّا نَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطِيئَاتِنَا إِنَّ كُنَّا أُولَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥١﴾

وَإِذْ نَادَىٰ إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي هَٰؤُلَاءِ يَكْفُرُونَ ﴿٥٢﴾

فَأرْسَلَ فِرْعَوْنَ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿٥٣﴾

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيلُونَ ﴿٥٤﴾

وَأَنَّهُمْ لَنَا الْعَاكِفُونَ ﴿٥٥﴾

وَإِنَّا لَجَمِيعٌ حَازِرُونَ ﴿٥٦﴾

فَأَخْرَجْنَاهُمْ مِنْ جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٧﴾

وَأَنْزَلْنَاهُمْ مَقَامًا كَرِيمًا ﴿٥٨﴾

كَذَٰلِكَ وَأَوْصَيْنَاهُمُ الْإِسْرَاءَ لِيَلْ

1 जब मूसा (अलैहिस्सलाम) अल्लाह के आदेशानुसार अपने साथियों को ले कर निकल गये तो फिरऔन ने उन का पीछा करने के लिये नगरों में हरकारे भेजे।

60. तो उन्होंने ने उनका पीछा किया प्रातः होते ही।
61. और जब दोनों गिरोहों ने एक दूसरे को देख लिया तो मूसा के साथियों ने कहा: हम तो निश्चय ही पकड़ लिये^[1] गये।
62. (मूसा ने) कहा: कदापि नहीं, निश्चय मेरे साथ मेरा पालनहार है।
63. तो हम ने मूसा को वही की, कि मार अपनी लाठी से सागर को, अकस्मात् सागर फट गया, तथा प्रत्येक भाग भारी पर्वत के समान^[2] हो गया।
64. तथा हमने समीप कर दिया उसी स्थान के दूसरे गिरोह को।
65. और मुक्ति प्रदान कर दी मूसा और उसके सब साथियों को।
66. फिर हमने डुबो दिया दूसरों को।
67. वास्तव में इस में बड़ी शिक्षा है, और उन में से अधिकतर लोग ईमान वाले नहीं थे।
68. तथा वास्तव में आप का पालनहार निश्चय अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।
69. तथा आप उन्हें सुना दें इब्राहीम का समाचार (भी)।
70. जब उस ने कहा: अपने बाप तथा

فَاتَّبَعُوهُمْ مُتَّبِعِينَ ﴿٦٠﴾

فَلَمَّا تَرَاهُ الْجَمْعَيْنِ قَالَ اضْحَبْ مُوسَى إِنَّا لَمُدْرِكُونَ ﴿٦١﴾

قَالَ كَلَّا إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٦٢﴾

فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ اضْحَبْ بِعَصَاكَ الْبَحْرَ ۚ فَانفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فُوْءٍ كَالظُّورِ الْعَظِيمِ ﴿٦٣﴾

وَأَلْقَيْنَا لَمَّا الْآخِرِينَ ﴿٦٤﴾

وَاجْبَيْنَا مُوسَىٰ وَمَنْ مَعَهُ أَجْمَعِينَ ﴿٦٥﴾

لَمَّا عَرَوْنَا الْآخِرِينَ ﴿٦٦﴾

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٦٧﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٦٨﴾

وَأَتْلُ عَلَىٰ يَوْمِ نَبَأِ إِبْرَاهِيمَ ﴿٦٩﴾

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ﴿٧٠﴾

1 क्यों कि अब सामने सागर और पीछे फिरऔन की सेना थी।

2 अर्थात् बीच से मार्ग बन गया और दोनों ओर पानी पर्वत के समान खड़ा हो गया।

- अपनी जाति से कि तुम क्या पूज रहे हो?
71. उन्होंने ने कहा: हम मुर्तियों की पूजा कर रहे हैं और उन्हीं की सेवा में लगे रहते हैं।
72. उसने काह: क्या वे तुम्हारी सुनती हैं जब पुकारते हो?
73. या तुम्हें लाभ पहुँचाती या हानि पहुँचाती है?
74. उन्होंने ने कहा: बल्कि हम ने अपने पूर्वजों को इसी प्रकार करते हुये पाया है।
75. उस ने कहा: क्या तुम ने कभी (आँख खोल कर) उसे देखा जिसे तुम पूज रहे हो।
76. तुम तथा तुम्हारे पहले पूर्वज?
77. क्यों कि यह सब मेरे शत्रु हैं पूरे विश्व के पालनहार के सिवा।
78. जिस ने मुझे पैदा किया, फिर वही मुझे मार्ग दर्शा रहा है।
79. और जो मुझे खिलाता और पिलाता है।
80. और जब रोगी होता हूँ तो वही मुझे स्वस्थ करता है।
81. तथा वही मुझे मारेगा फिर^[1] मुझे जीवित करेगा।
82. तथा मैं आशा रखता हूँ कि क्षमा
- قَالُوا تَعْبُدُوا اصْنَامًا غَضَلُوا عَنْهَا حِينًا ۝۱
- قَالَ هَلْ يُسْمِعُونَكُمَا اِذْ تَدْعُونَ ۝۲
- اَوْ يَنفَعُونَكُمَا اَوْ يَضُرُّونَ ۝۳
- قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُونَ ۝۴
- قَالَ اَفَرَأَيْتُمْ مٰا كُنتُمْ تَعْبُدُونَ ۝۵
- اَنْتُمْ وَاٰبَاؤُكُمُ الْاَقْدَامُونَ ۝۶
- وَالَّذِي عَدُوٌّ لِّىَ الْاَرَابَ الْعٰلِيِّنَ ۝۷
- الَّذِي خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ۝۸
- وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِيْ وَيَسْقِيْنِ ۝۹
- وَإِذَا مَرَضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ۝۱۰
- وَالَّذِي يُمَيِّتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ۝۱۱
- وَالَّذِي اَظْمَرُ اَنْ يُعْفِرَ لِيْ خَطِيْئَتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ ۝۱۲

1 अर्थात प्रलय के दिन अपने कर्मों का फल भोगने के लिये ।

- कर देगा मेरे लिये मेरे पाप प्रतिकार
(प्रलय) के दिन।
83. हे मेरे पालनहार! प्रदान कर दे मुझे
तत्वदर्शिता और मुझे सम्मिलित कर
सदाचारियों में।
84. और मुझे सच्ची ख्याति प्रदान कर
आगामी लोगों में।
85. और बना दे मुझे को सुख के स्वर्ग
का उत्तराधिकारी।
86. तथा मेरे बाप को क्षमा कर दे^[1]
वास्तव में वह कुपथों में है।
87. तथा मुझे निरादर न कर जिस दिन
सब जीवित किये^[2] जायेंगे।
88. जिस दिन लाभ नहीं देगा कोई धन
और न संतान।
89. परन्तु जो अल्लाह के पास स्वच्छ
दिल ले कर आयेगा।
90. और समीप कर दी जायेगी स्वर्ग
आज्ञाकारियों के लिये।
91. तथा खोल दी जायेगी नरक कुपथों
के लिये।
92. तथा कहा जायेगा: कहाँ है वह जिन्हें
तुम पूज रहे थे?

رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ ﴿٨٣﴾

وَأَجْعَلْ لِي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْآخِرِينَ ﴿٨٤﴾

وَأَجْعَلْنِي مِنْ وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ ﴿٨٥﴾

وَاعْفُرْ لِأَبِي إِنَّهُ كَانَ مِنَ الضَّالِّينَ ﴿٨٦﴾

وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ﴿٨٧﴾

يَوْمَ لَا يُنْفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ﴿٨٨﴾

إِلَّا مَنْ آتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿٨٩﴾

وَأُولَئِكَ الْجَنَّةُ الْمُتَّقِينَ ﴿٩٠﴾

وَبُرِّدَتِ الْجَحِيمُ لِلْغَوَّاتِ ﴿٩١﴾

وَقِيلَ لَهُمْ أَيُّكُمْ كَفَرُونَ ﴿٩٢﴾

1 (देखिये: सूरह तौबा, आयत: 114)

2 हदीस में वर्णित है कि प्रलय के दिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने बाप से मिलेंगे। और कहेंगे: हे मेरे पालनहार! तू ने मुझे वचन दिया था कि मुझे पुनः जीवित होने के दिन अपमानित नहीं करेगा। तो अल्लाह कहेगा: मैं ने स्वर्ग को काफ़िरों के लिये अवैध कर दिया है। (सहीह बुखारी, 4769)

93. अल्लाह के सिवा, क्या वह तुम्हारी सहायता करेंगे अथवा स्वयं अपनी सहायता कर सकते हैं?
94. फिर उस में औघे झोंक दिये जायेंगे वह और सभी कुपथा।
95. और इब्लीस की सेना सभी।
96. और वह उस में आपस में झगड़ते हुये कहेंगे:
97. अल्लाह की शपथ! वास्तव में हम खुले कुपथ में थे।
98. जब हम तुम्हें बराबर समझ रहे थे विश्व के पालनहार के।
99. और हमें कुपथ नहीं किया परन्तु अपराधियों ने।
100. तो हमारा कोई अभिस्तावक (सिफारशी) नहीं रह गया।
101. तथा न कोई प्रेमी मित्र।
102. तो यदि हमें पुनः संसार में जाना होता^[1] तो हम ईमान वालों में हो जाते।
103. निःसंदेह इस में बड़ी निशानी है। और उन में से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं हैं।
104. और वास्तव में आप का पालनहार ही अति प्रभुत्वशाली^[2] दयावान् है।

مِنْ دُونِ اللَّهِ هَلْ يَبْصُرُونَكُمْ أَوْ يَنْصُرُونَ ﴿٦٠﴾

فَلْيَكْبُرُوا فِيهَا هُمْ وَالْقَائِنُ ﴿٦١﴾

وَجُنُودُ إبْلِيسَ أَجْمَعُونَ ﴿٦٢﴾

قَالُوا وَهُمْ فِيهَا يَتَخِمُونَ ﴿٦٣﴾

تَاللَّهِ إِنَّ كُتَابَنَا لَكُنَّا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٦٤﴾

إِذْ نُسَبِّحُكُمْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٥﴾

وَمَا أَصْلَنَا إِلَّا الْمَحْرُومُونَ ﴿٦٦﴾

فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِينَ ﴿٦٧﴾

وَلَا صِدِّيقٍ حَمِيمٍ ﴿٦٨﴾

فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةٌ فَمَتَلُونَ مِنْ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٩﴾

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٧٠﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٧١﴾

1 इस आयत में संकेत है कि संसार में एक ही जीवन कर्म के लिये मिलता है। और दूसरा जीवन प्रलोक में कर्मों के फल के लिये मिलेगा।

2 परन्तु लोग स्वयं अत्याचार कर के नरक के भागी बन रहे हैं।

105. नूह की जाति ने भी रसूलों को झुठलाया।
106. जब उन से उन के भाई नूह ने कहा: क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो?
107. वास्तव में मैं तुम्हारे लिये एक ^[1] रसूल हूँ।
108. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरी बात मानो।
109. मैं नहीं माँगता इस पर तुम से कोई पारिश्रमिक (बदला) मेरा बदला तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।
110. अतः तुम अल्लाह से डरो और मेरी आज्ञा का पालन करो।
111. उन्होंने ने कहा: क्या हम तुझे मान लें, जब कि तेरा अनुसरण पतित (नीच) लोग^[2] कर रहे हैं।
112. (नूह ने) कहा: मुझे क्या ज्ञान कि वे क्या कर्म करते रहे हैं?
113. उन का हिसाब तो बस मेरे पालनहार के ऊपर है यदि तुम समझो।
114. और मैं धुतकारने वाला^[3] नहीं हूँ ईमान वालों को।

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٥﴾

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٠٦﴾

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٠٧﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرِي ﴿١٠٨﴾

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجِرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٩﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرِي ﴿١١٠﴾

قَالُوا أَأَتُونَا بِكَ الْآرَاءَ لَوْ نَحْنُ نَحْكُمُ ﴿١١١﴾

قَالَ وَمَا عَلِمْتُ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٢﴾

إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١٣﴾

وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٤﴾

1 अल्लाह का संदेश बिना कमी और अधिकता के तुम्हें पहुँचा रहा हूँ।

2 अर्थात् धनी नहीं, निर्धन लोग कर रहे हैं।

3 अर्थात् मैं हीन वर्ग के लोगों को जो ईमान लाये हैं अपने से दूर नहीं कर सकता जैसा कि तुम चाहते हो।

115. मैं तो बस खुला सावधान करने वाला हूँ
 116. उन्होंने ने कहा: यदि रुका नहीं, हे नूह! तो तू अवश्य पथराव कर के मारे हुये में होगा।
 117. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मेरी जाति ने मुझे झुठला दिया।
 118. अतः तू निर्णय कर दे मेरे और उनके बीच, और मुक्त कर दे मुझ को तथा जो मेरे साथ है ईमान वालों में से।
 119. तो हम ने उसे मुक्त कर दिया तथा जो उसके साथ भरी नाव में थे।
 120. फिर हम ने डुबो दिया उस के पश्चात् शेष लोगों को।
 121. वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है, तथा उन में से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं।
 122. और निश्चय आप का पालनहार ही अति प्रभुत्वशाली दयावान् है।
 123. झुठला दिया आद (जाति) ने (भी) रसूलों को।
 124. जब कहा उन से उनके भाई हूद^[1] ने: क्या तुम डरते नहीं हो?
 125. वस्तुतः मैं तुम्हारे लिये एक न्यासिक (अमानतदार) रसूल हूँ।
 126. अतः अल्लाह से डरो और मेरा

إِن أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿١١٥﴾

قَالُوا لَيْنَ كَمْ تَتَنَبَّأُ بِئُورُوكَ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٦﴾

قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ ﴿١١٧﴾

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا وَّابْتِغِ فِي دِينِكُمْ مَعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾

فَأَجْمِعْ كَيْدَكَ وَسَمْعَكَ فِي الْفُلِّ الْمَشْحُونِ ﴿١١٩﴾

ثُمَّ اعْرِفْ مَا بَعْدَ الْبَأْسِ ﴿١٢٠﴾

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٢١﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٢﴾

كَذَّبَتْ عَادُ الْأُمْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾

إِذْ قَالَ لَهُمُ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلا تَتَّقُونَ ﴿١٢٤﴾

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٢٥﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ﴿١٢٦﴾

1 आद जाति के नबी हूद (अलैहिस्सलाम) को उन का भाई कहा गया है क्यों कि वह भी उन्हीं के समुदाय में से थे।

अनुपालन करो।

127. और मैं तुम से कोई पारिश्रमिक (बदला) नहीं माँगता, मेरा बदला तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।
128. क्यों तुम बना लेते हो हर ऊँचे स्थान पर एक यादगार भवन व्यर्थ में।
129. तथा बनाते हो बड़े-बड़े भवन जैसे कि तुम सदा रहोगे।
130. और जब किसी को पकड़ते हो तो पकड़ते हो महा अत्याचारी बन कर।
131. तो अल्लाह से डरो और मेरी आज्ञा का पालन करो।
132. तथा उस से भय रखो जिस ने तुम्हारी सहायता की है उस से जो तुम जानते हो।
133. उस ने सहायता की है तुम्हारी चौपायों तथा संतान से।
134. तथा बागों (उद्यानों) तथा जल स्रोतों से।
135. मैं तुम पर डरता हूँ भीषण दिन की यातना से।
136. उन्होंने ने कहा: नसीहत करो या न करो, हम पर सब समान है।
137. यह बात तो बस प्राचीन लोगों की नीति^[1] है।
138. और हम उन में से नहीं हैं जिन को

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٢٧﴾

أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ آلِيَةً تُتَّبُونَ ﴿١٢٨﴾

وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلَدُونَ ﴿١٢٩﴾

وَإِذَا بَطِئْتُمْ بِطِشْتُمْ جَبَّارِينَ ﴿١٣٠﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ﴿١٣١﴾

وَاتَّقُوا الَّذِي أَمَّاكُمْ بِمَا تَعْلَمُونَ ﴿١٣٢﴾

أَمَّاكُمْ بِأَنْعَامٍ وَأَبْنَائِنَ ﴿١٣٣﴾

وَجَدَّتْ وَعْيُونَ ﴿١٣٤﴾

إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٣٥﴾

قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعظت أم لم تكن مِنَ الْوَعظِينَ ﴿١٣٦﴾

إِنَّ هَذَا إِلَّا كَلِمَاتُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣٧﴾

وَمَا نَحْنُ بِمُعَدِّيْنَ ﴿١٣٨﴾

1 अर्थात् प्राचीन युग से होती चली आ रही है।

यातना दी जायेगी।

139. अन्ततः उन्हीं ने हमें झुठला दिया तो हम ने उन्हें ध्वस्त कर दिया। निश्चय इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है। और लोगों में अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं हैं।
140. और वास्तव में आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।
141. झुठला दिया समूद ने भी^[1] रसूलों को।
142. जब कहा, उन से उनके भाई सालेह ने: क्या तुम डरते नहीं हो?
143. वास्तव में, मैं तुम्हारा विश्वासनीय रसूल हूँ।
144. तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो।
145. तथा मैं नहीं माँगता इस पर तुम से कोई परिश्रमिक, मेरा पारिश्रमिक तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।
146. क्या तुम छोड़ दिये जाओगे उस में जो यहाँ है निश्चिन्त रह कर?
147. बागों तथा स्रोतों में।
148. तथा खेतों और खजूरों में जिन के गुच्छे रस भरे हैं।
149. तथा तुम पर्वतों को तराश कर घर बनाते हो गर्व करते हुये।

فَلَذَّ بؤه فَأَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لآيَةً لِّمَن كَانَ
أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣٩﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٤٠﴾

كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٤١﴾

إِذْ قَالَ أُمُّهُمُ طَيْمٌ الْاِسْتَفُونَ ﴿١٤٢﴾

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٤٣﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ
الْعَالَمِينَ ﴿١٤٥﴾

أَتَذْكُرُونَ فِي مَا هُمْ بِأَمِينِينَ ﴿١٤٦﴾

فِي جَدَّتِ وَعَيْرُونَ ﴿١٤٧﴾

وَزُدُّوا نَخْلًا مَّا هُمْ بِأَمِينِينَ ﴿١٤٨﴾

وَتَجْعَلُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا يُفْرِحُونَ ﴿١٤٩﴾

1 यहाँ यह बात याद रखने की है कि एक रसूल का इन्कार सभी रसूलों का इन्कार है क्योंकि सब का उपदेश एक ही था।

150. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरा अनुपालन करो।
151. और पालन न करो उल्लंघनकारियों के आदेश का।
152. जो उपद्रव करते हैं धरती में और सुधार नहीं करते।
153. उन्होंने ने कहा: वास्तव में तू उन में से है जिन पर जादू कर दिया गया है।
154. तू तो बस हमारे समान एक मानव है। तो कोई चमत्कार ला दे, यदि तू सच्चा है।
155. कहा: यह ऊँटनी है^[1] इस के लिये पानी पीने का एक दिन है और तुम्हारे लिये पानी लेने का निश्चित दिन है।
156. तथा उसे हाथ न लगाना बुराई से, अन्यथा तुम्हें पकड़ लेगी एक भीषण दिन की यातना।
157. तो उन्होंने ने बध कर दिया उसे, अन्ततः पछताने वाले हो गये।
158. और पकड़ लिया उन्हें यातना ने। वस्तुतः इस में बड़ी निशानी है, और नहीं थे उन में से अधिकतर ईमान लाने वाले।
159. और निश्चय आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।
160. झुठला दिया लूत की जाति ने (भी) रसूलों को।

قَالِقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا^{١٥٠}

وَالْأَطِيعُوا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ^{١٥١}

الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ^{١٥٢}

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَخَّرِينَ^{١٥٣}

مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا فَأْتِ بِآيَاتٍ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ^{١٥٤}

قَالَ هَذِهِ نَاقَةٌ لَهَا شِرْبٌ وَلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَعْلُومٍ^{١٥٥}

وَلَا تَسْوَأُوا بِهَا فَإِنَّهَا بِأَيْدِيكُمْ عَذَابٌ يَوْمٍ عَظِيمٍ^{١٥٦}

فَعَقَرُوهَا فَاصْبَحُوا نَادِمِينَ^{١٥٧}

فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ^{١٥٨}

وَلَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ^{١٥٩}

كَذَبَتْ قَوْمٌ لوطِ الْمَسْلُومِينَ^{١٦٠}

1 अर्थात् यह ऊँटनी चमत्कार है जो उन की माँग पर पत्थर से निकली थी।

161. जब कहा उन से उन के भाई लूत ने: क्या तुम डरते नहीं हो?
162. वास्तव में, मैं तुम्हारे लिये एक अमानतदार रसूल हूँ।
163. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरा अनुपालन करो।
164. और मैं तुम से प्रश्न नहीं करता इस पर किसी पारिश्रमिक (बदले) का। मेरा बदला तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।
165. क्या तुम जाते^[1] हो पुरुषों के पास संसार वासियों में से?
166. तथा छोड़ देते हो जिसे पैदा किया है तुम्हारे पालनहार ने अर्थात् अपनी पत्नियों को, बल्कि तुम एक जाति हो सीमा का उल्लंघन करने वाली।
167. उन्होंने ने कहा: यदि तू नहीं रुका, हे लूत! तो अवश्य तेरा वहिष्कार कर दिया जायेगा।
168. उस ने कहा: वास्तव में मैं तुम्हारे कर्तूत से बहुत अप्रसन्न हूँ।
169. मेरे पालनहार! मुझे बचा ले तथा मेरे परिवार को उस से जो वह कर रहे हैं।
170. तो हम ने उसे बचा लिया तथा उस के सभी परिवार को।

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطُ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿۱۶۱﴾

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿۱۶۲﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا عَمْرًا

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَرَادْتُ إِلَّا عَلَاقَ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿۱۶۴﴾

أَأَنْتُمْ التَّائِبُونَ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿۱۶۵﴾

وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَنْفُسَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ عَادُونَ ﴿۱۶۶﴾

قَالُوا إِنْ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ يَا لُوطُ إِنَّا جَاءْنَاكَ مِنَ الْمُجْرِمِينَ ﴿۱۶۷﴾

قَالَ إِنِّي لِعِبَادِكُمْ مِنَ الْقَائِلِينَ ﴿۱۶۸﴾

رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْبُدُونَ ﴿۱۶۹﴾

فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿۱۷۰﴾

1 इस कुकर्म का आरंभ संसार में लूत (अलैहिस्सलाम) की जाति से हुआ। और अब यह कुकर्म पूरे विश्व में विशेष रूप से यूरोपीय सभ्य देशों में व्यापक है। और समलैंगिक विवाह को यूरोप के बहुत से देशों में वैध मान लिया गया है। जिस के कारण कभी भी उन पर अल्लाह की यातना आ सकती है।

171. परन्तु एक बुढ़िया^[1] को जो पीछे रह जाने वालों में थी।
172. फिर हम ने विनाश कर दिया दूसरों का।
173. और वर्षा की उन पर एक घोर^[2] वर्षा। तो बुरी हो गई डराये हुये लोगों की वर्षा।
174. वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है। और उन में अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं थे।
175. और निश्चय आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।
176. झुठला दिया ऐयका^[3] वालों ने रसूलों को।
177. जब कहा, उन से शुऐब ने: क्या तुम डरते नहीं हो?
178. मैं तुम्हारे लिये एक विश्वासनीय रसूल हूँ।
179. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरी आज्ञा का पालन करो।
180. और मैं नहीं माँगता तुम से इस पर कोई पारिश्रमिक, मेरा पारिश्रमिक तो बस समस्त विश्व के पालनहार पर है।

الْأَجْمُونَ فِي الْغَابِرِينَ ﴿٣٠﴾

ثُمَّ دَمَرْنَا الْآخَرِينَ ﴿٣١﴾

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا سَاءَ مَطَرًا السُّدْرِيِّ ﴿٣٢﴾

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٣٣﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٣٤﴾

كَذَّبَ أَصْحَابُ لَيْكَةِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٥﴾

إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣٦﴾

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿٣٧﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا ﴿٣٨﴾

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٩﴾

1 इस से अभिप्रेत लूत (अलैहिस्सलाम) की काफ़िर पत्नी है।

2 अर्थात् पत्थरों की वर्षा। (देखिये: सूरह हूद, आयत: 82 - 83)

3 ऐयका का अर्थ झाड़ी है। यह मद्यन का क्षेत्र है जिस में शुऐब (अलैहिस्सलाम) को भेजा गया था।

181. तुम नाप-तौल पूरा करो, और न बनो कम देने वालों में।
182. और तौलो सीधे तराजू से।
183. और मत कम दो लोगों को उन की चीजें, और मत फिरो धरती में उपद्रव फैलाते।
184. और डरो उस से जिस ने पैदा किया है तुम्हें तथा अगले लोगों को।
185. उन्हीं ने कहा: वास्तव में तू उन में से है जिन पर जादू कर दिया गया है।
186. और तू तो बस एक पुरुष^[1] है हमारे समान। और हम तो तुझे झूठों में समझते हैं।
187. तो हम पर गिरा दे कोई खण्ड आकाश का यदि तू सच्चा है।
188. उस ने कहा: मेरा पालनहार भली प्रकार जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।

أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ۝

وَزِنُوا بِالْأَنْصَافِ الْمُسْتَقِيمِ ۝

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَقْرَبُوا الْأَرْضِ
مُفْسِدِينَ ۝

وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِيلَ الْأَوَّلِينَ ۝

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ۝

وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَإِنْ نَطَّقْنَاكَ لَكُنْ
الْكَذِبِينَ ۝

فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ إِنْ كُنْتَ مِنَ
الضَّالِّينَ ۝

قَالَ رَبِّيَ عَلِيمٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

1 यहाँ यह बात विचारणीय है कि सभी विगत जातियों ने अपने रसूलों को उन के मानव होने के कारण नकार दिया। और जिस ने स्वीकार भी किया तो उस ने कुछ युग व्यतीत होने के पश्चात अति कर के अपने रसूलों को प्रभु अथवा प्रभु का अंश बना कर उन्हीं को पूज्य बना लिया। तथा ऐकेश्वरवाद को कड़ा आघात पहुँचा कर मिश्रणवाद का द्वार खोल लिया और कुपथ हो गये। वर्तमान युग में भी इसी का प्रचलन है और इस का आधार अपने पूर्वजों की रीतियों को बनाया जाता है। इस्लाम इसी कुपथ का निवारण कर के ऐकेश्वरवाद की स्थापना के लिये आया है और वास्तव में यही सत्धर्म है। हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: मुझे वैसे न बढ़ा चढ़ाना जैसे ईसाईयों ने मर्यम के पुत्र (ईसा) को बढ़ा चढ़ा दिया। वास्तव में मैं उस का दास हूँ। अतः मुझे अल्लाह का दास और उस का रसूल कहो। (देखिये: सहीह बुखारी, 3445)

189. तो उन्होंने ने उसे झूठला दिया।
अन्ततः पकड़ लिया उन्हें छाया के^[1]
दिन की यातना ने। वस्तुतः वह एक
भीषण दिन की यातना थी।
190. निश्चय इस में एक बड़ी निशानी
(शिक्षा) है। और नहीं थे उन में
अधिकतर ईमान लाने वाले।
191. और वास्तव में आप का पालनहार
ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।
192. तथा निःसंदेह यह (कुर्आन) पूरे विश्व
के पालनहार का उतारा हुआ है।
193. इसे ले कर रूहुल अमीन^[2] उतरा।
194. आप के दिल पर ताकि आप हो
जायें सावधान करने वालों में।
195. खुली अर्बी भाषा में।
196. तथा इस की चर्चा^[3] अगले रसूलों
की पुस्तको में (भी) है।
197. क्या और उन के लिये यह निशानी
नहीं है कि इस्राईलियों के विद्वान^[4]

فَلَا يُؤْمِرُ فَاحْتَدَاهُمْ عَذَابَ يَوْمِ الظَّلَامَةِ إِنَّهُ كَانَ
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٣٥﴾

إِنَّ فِي ذَلِكَ لآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٣٦﴾

وَأَنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٣٧﴾

وَأَنَّهُ لَتَتَرَىٰ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٨﴾

تَنَزَّلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ ﴿٣٩﴾

عَلَى قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنذِرِينَ ﴿٤٠﴾

بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُبِينٍ ﴿٤١﴾

وَأَنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ﴿٤٢﴾

أَوَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ آيَةٌ أَن يَكْفُلَهُ عَلَمُوا بِبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٤٣﴾

- 1 अर्थात उनकी यातना के दिन उन पर बादल छा गया। फिर आग बरसने लगी और धरती कंपित हो गई। फिर एक कड़ी ध्वनी ने उन की जानें ले ली। (इब्ने कसीर)
- 2 रूहुल अमीन से अभिप्राय आदरणीय फरिश्ता जिब्रिल (अलैहिस्सलाम) है। जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर अल्लाह की ओर से वही लेकर उतरते थे जिस के कारण आप रसूलों की और उन की जातियों की दशा से अवगत हुये। अतः यह आप के सत्य रसूल होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है।
- 3 अर्थात सभी आकाशीय ग्रन्थों में अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन तथा आप पर पुस्तक कुर्आन के अवतरित होने की भविष्यवाणी की गई है। और सब नबियों ने इस की शुभ सूचना दी है।
- 4 बनी इस्राईल के विद्वान अब्दुल्लाह बिन सलाम आदि जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि

इसे जानते हैं।

198. और यदि हम इसे उतार देते किसी अजमी^[1] पर।

وَلَوْ كُنَّا لَهُ عَلَىٰ بَعْضِ الْأَعْمَىٰ ۝

199. और वह इसे उन के समक्ष पढ़ता तो वह उस पर ईमान लाने वाले न होते^[2] ।

فَقَرَأَهُ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ۝

200. इसी प्रकार हम ने घुसा दिया है इस (कुर्आन के इन्कार) को पापियों के दिलों में।

كَذَٰلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ۝

201. वह नहीं ईमान लायेंगे उस पर जब तक देख न लेंगे दुःख दायी यातना।

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّىٰ يَرُوا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝

202. फिर उन पर सहसा आ जायेगी और वह समझ भी नहीं पायेंगे।

فَيَأْتِيهِمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

203. तो कहेंगे: क्या हमें अवसर दिया जायेगा?

فَيَقُولُوا هَلْ عَنَّا مُنْظَرُونَ ۝

204. तो क्या वह हमारी यातना की जल्दी मचा रहे हैं?

أَفِعْدَا إِنَّا يَسْتَعْجِلُونَ ۝

205. (हे नबी!) तो क्या आप ने विचार किया कि यदि हम लाभ पहुँचायें इन्हें वर्षाँ।

أَفَرَأَيْتَ إِن مَتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ۝

206. फिर आ जाये उन पर जिस की उन्हें धमकी दी जा रही थी।

ثُمَّ جَاءَهُمْ مَا كَانُوا يُوعَدُونَ ۝

207. तो क्या काम आयेगा उनके जो

مَا آغَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَسْتَعْوُونَ ۝

वसल्लम और कुर्आन पर ईमान लाये वह इस के सत्य होने का खुला प्रमाण है।

1 अर्थात् ऐसे व्यक्ति पर जो अरब देश और जाति के अतिरिक्त किसी अन्य जाति का हो।

2 अर्थात् अर्बी भाषा में न होता तो कहते कि यह हमारी समझ में नहीं आता। (देखिये: सूरह, हा, मीम, सज्दा, आयत: 44)

उन्हें लाभ पहुँचाया जाता रहा?

208. और हम ने किसी बस्ती का विनाश नहीं किया परन्तु उस के लिये सावधान करने वाले थे।

وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنذِرُونَ ۝

209. शिक्षा देने के लिये, और हम अत्याचारी नहीं हैं।

ذِكْرِي ۝ وَمَا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝

210. तथा नहीं उतरे हैं (इस कुर्आन) को ले कर शैतान।

وَمَا تَزَكَّىٰ بِهِ الشَّيْطَانُ ۝

211. और न योग्य है उन के लिये और न वह इस की शक्ति रखते हैं।

وَمَا يَنْبَغِي لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ۝

212. वास्तव में वह तो (इस के) सुनने से भी दूर^[1] कर दिये गये हैं।

إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعُزُونَ ۝

213. अतः आप न पुकारें अल्लाह के साथ किसी अन्य पूज्य को अन्यथा आप दण्डितों में हो जायेंगे।

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا الْخَرَفْتَكُمْ مِنَ الْمَعَدِّينَ ۝

214. और आप सावधान कर दें अपने समीपवर्ती^[2] सम्बन्धियों को।

وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ۝

1 अर्थात् इस के अवतरित होने के समय शैतान आकाश की ओर जाते हैं तो उल्का उन्हें भस्म कर देते हैं।

2 आदरणीय इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि जब यह आयत उतरी तो आप सफ़ा पर्वत पर चढ़े। और कुरैश के परिवारों को पुकारा। और जब सब एकत्र हो गये, और जो स्वयं नहीं आ सका तो उस ने किसी प्रतिनीधि को भेज दिया। और अबू लहब तथा कुरैश आ गये तो आप ने फ़रमाया: यदि मैं तुम से कहूँ कि उस वादी में एक सेना है जो तुम पर आक्रमण करने वाली है, तो क्या तुम मुझे सच्चा मानोगे? सब ने कहा: हाँ। हम ने आप को सदा ही सच्चा पाया है। आप ने कहा: मैं तुम्हें आगामी कड़ी यातना से सावधान कर रहा हूँ। इस पर अबू लहब ने कहा: तेरा पूरे दिन नाश हो! क्या हमें इसी के लिये एकत्र किया है? और इसी पर सूरह लहब उतरी। (सहीह बुख़ारी, 4770)

215. और झुका दें अपना बाहु^[1] उसके लिये जो आप का अनुयायी हो ईमान वालों में से।
216. और यदि वह आप की अवज्ञा करें तो आप कह दें कि मैं निर्दोष हूँ उस से जो तुम कर रहे हो।
217. तथा आप भरोसा करें अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् पर।
218. जो देखता है आप को जिस समय (नमाज़ में) खड़े होते हैं।
219. और आप के फिरने को सज्दा करने^[2] वालों में।
220. निःसंदेह वही सब कुछ सुनने-जानने वाला है।
221. क्या मैं तुम सब को बताऊँ कि किस पर शैतान उतरते हैं?
222. वे उतरते हैं प्रत्येक झूठे पापी^[3] पर।
223. वह पहुँचा देते हैं सुनी-सुनाई बातों को और उन में अधिकतर झूठे हैं।
224. और कवियों का अनुसरण बहके हुये लोग करते हैं।
225. क्या आप नहीं देखते कि वह प्रत्येक

وَاقْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١٥﴾

فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢١٦﴾

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿٢١٧﴾

الَّذِي يَرِيكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٢١٨﴾

وَقَدْ بَكَ فِي السُّجُودِ ﴿٢١٩﴾

إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٢٢٠﴾

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ﴿٢٢١﴾

تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٢٢٢﴾

يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْتَرُوهُمْ كَذِبُونَ ﴿٢٢٣﴾

وَالشُّعْرَاءَ يُتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ﴿٢٢٤﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ ﴿٢٢٥﴾

1 अर्थात् उस के साथ विनम्रता का व्यवहार करें।

2 अर्थात् प्रत्येक समय अकेले हों या लोगों के बीच हों।

3 हदीस में है कि फ़रिश्ते बादल में उतरते हैं, और आकाश के निर्णय की बात करते हैं, जिसे शैतान चोरी से सुन लेते हैं। और ज्योतिषियों को पहुँचा देते हैं। फिर वह उस में सौ झूठ मिलाते हैं। (सहीह बुख़ारी, 3210)

वादी में फिरते^[1] हैं।

226. और ऐसी बात कहते हैं जो करते नहीं।
227. परन्तु वह (कवि) जो^[2] ईमान लाये तथा सदाचार किये और अल्लाह का बहुत स्मरण किया, तथा बदला लिया इस के पश्चात् कि उन के ऊपर अत्याचार किया गया। तथा शीघ्र ही जान लेंगे जिन्होंने अत्याचार किया है कि वह किस दुष्परिणाम की ओर फिरते हैं।

وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٢٦﴾
 إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ
 كَثِيرًا وَانْتَصَرُوا مِن بَعْدِ مَا ظَلَمُوا وَسَيَعْلَمُ
 الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ ﴿٢٢٧﴾

1 अर्थात् कल्पना की उड़ान में रहते हैं।

2 इन से अभिप्रेत हस्सान बिन साबित आदि कवि हैं जो कुरैश के कवियों की भर्त्सना किया करते थे। (देखिये: सहीह बुखारी, 4124)

सूरह नम्ल - 27



सूरह नम्ल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 93 आयतें हैं।

- इस सूरह में बताया गया है कि कुर्आन को अल्लाह की किताब न मानने और शिर्क से न रुकने का सब से बड़ा कारण सत्य को नकारना है। जो मायामोह में मग्न रहते हैं उन पर कुर्आन की शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं होता और वे नबियों के इतिहास से कोई शिक्षा नहीं लेते।
- इस में मुसा (अलैहिस्सलाम) को फिरऔन तथा उस की जाति की ओर भेजने और उन के साथ जो दुर्व्यवहार किया गया उस का दुष्परिणाम बताया गया है।
- दावूद तथा सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के विशाल राज्य की चर्चा कर के बताया गया है कि वह कैसे अल्लाह के आभारी भक्त बने रहे जिस के कारण (सबा) की रानी बिल्कीस इस्लाम लायी।
- इस में लूत तथा सालेह (अलैहिस्सलाम) की जाति के उपद्रव का दुष्परिणाम बताया गया है तथा एकेश्वरवाद के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं।
- यह घोषणा भी की गई है कि कुर्आन ने मार्ग दर्शन की राह खोल दी है और भविष्य में भी इस के सत्य होने के लक्षण उजागर होते रहेंगे।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. ता, सीन, मीमा। यह कुर्आन तथा प्रत्यक्ष पुस्तक की आयतें हैं।
2. मार्ग दर्शन तथा शुभसूचना है उन ईमान लाने वालों के लिये।
3. जो नमाज़ की स्थापना करते तथा ज़कात देते हैं और वही हैं जो अन्तिम दिन (परलोक) पर विश्वास रखते हैं।

طَسَّاتُكَ أَيُّ الْقُرْآنِ وَكِتَابِ مُبِينٍ

هُدًى وَبُشْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ

الَّذِينَ يَقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ
بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ

4. वास्तव में जो विश्वास नहीं करते परलोक पर हम ने शोभनीय बना दिया है उन के कर्मों को, इस लिये वह बहके जा रहे हैं।
5. यही हैं जिन के लिये बुरी यातना है तथा परलोक में वही सर्वाधिक क्षति ग्रस्त रहने वाले हैं।
6. और (हे नबी!) वास्तव में आप को दिया जा रहा है कुर्आन एक तत्वज्ञ सर्वज्ञ की ओर से।
7. (याद करो) जब कहा, ^[1] मूसा ने अपने परिजनो मैं ने आग देखी है, मैं तुम्हारे पास कोई सूचना लाऊँगा या लाऊँगा आग का कोई अँगार, ताकि तुम तापो।
8. फिर जब आया वहाँ, तो पुकारा गया: शुभ है वह जो अग्नि में है और जो उस के आस-पास है, और पवित्र है अल्लाह सर्वलोक का पालनहार।
9. हे मूसा यह मैं हूँ अल्लाह अति प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ।
10. और फेंक दे अपनी लाठी, फिर जब उसे देखा की रेंग रही है जैसे वह कोई सर्प हो तो पीठ फेर कर भागा और पीछे फिर कर देखा भी नहीं। (हम ने कहा): हे मूसा भय न कर, वास्तव में नहीं भय करते मेरे पास रसूल।
11. उस के सिवा जिस ने अत्याचार

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ رَبَّتَّ لَهُمْ
أَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُونَ ۝

أُولَئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي
الْآخِرَةِ هُمْ الْآخْسَرُونَ ۝

وَإِلَّا كَلَّمْنَا لَأَخَذْنَا مِنَ ذُنُوبِهِمْ عَذَابًا

إِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِأَهْلِهِ إِنِّي آنَسْتُ نَارًا سَائِغًا فِيهَا
سَعِيرٌ أَوْ نَارًا يُشْهَبُ فِيهَا عَمَكٌ مَّصْطُونَ ۝

فَلَمَّا جَاءَهَا نُودِيَ أَنْ بُورِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ
حَوْلَهَا وَسُبْحٰنَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

يُوسَىٰ إِنَّهُ أَنَا اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

وَأَلْقَ عَصَاهُ فَلَمَّا رَأَاهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ وَلَّى
مُرْغَبًا وَلَمْ يُعِثِّبْ يُوَسِّىٰ لِأَخْتَفٍ إِتِي لَأَخْتَفٍ
لَدَى الْمُرْسَلُونَ ۝

إِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلْ حَسَنًا بَعْدَ سُوءٍ فَإِنِّي

1 यह उस समय की बात है जब मूसा (अलैहिस्सलाम) मद्दन से आ रहे थे। रात्री के समय वह मार्ग भूल गये और शीत से बचाव के लिये आग की अवश्यक्ता थी।

किया हो, फिर जिस ने बदल लिया अपना कर्म भलाई से बुराई के पश्चात्, तो निश्चय मैं अति क्षमी दयावान् हूँ।

12. और डाल दे अपना हाथ अपनी जेब में वह निकलेगा उज्ज्वल हो कर बिना किसी रोग के, नौ निशानियों में से है, फिरऔन तथा उस की जाति की ओर (ले जाने के लिये) वास्तव में वे उल्लंघन कारियों में हैं।
13. फिर जब आयीं उन के पास हमारी निशानियाँ आँख खोलने वाली, तो कह दिया कि यह तो खुला जादू है।
14. तथा उन्होंने नकार दिया उन्हें, अत्याचार तथा अभिमान के कारण, जब कि उन के दिलों ने उन का विश्वास कर लिया, तो देखो कि कैसा रहा उपद्रवियों का परिणाम?
15. और हम ने प्रदान किया दावूद तथा सुलैमान को ज्ञान^[1], और दोनों ने कहा: प्रशंसा है उस अल्लाह के लिये जिस ने हमें प्रधानता दी अपने बहुत से ईमान वाले भक्तों पर।
16. और उत्तराधिकारी हुआ सुलैमान दावूद का, तथा उस ने कहा: हे लोगो! हमें सिखाई गई है पक्षियों की बोली, तथा हमें प्रदान की गई है सब चीज़ से कुछ। वास्तव में

عَفْوَرَجِيمٍ ۝

وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخَرُّجَ بَيْضَاءَ مِنْ عَيْرٍ
سَوَاءٌ لِي تَسْعَ إِلَيْتِ إِلَى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِ إِنَّهُمْ
كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝

فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ آيَاتُنَا مُبْجَرَةً قَالُوا هَذَا سِحْرٌ
مُبِينٌ ۝

وَحَدُّوا بِهَا وَاسْتَفْتَاهَا أَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَعُلُوًّا
فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ عِلْمًا وَقَالَ الْخَمْدُ لِلَّهِ
الَّذِي فَضَّلَنَا عَلَى كَثِيرٍ مِنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَوَرِّثْ سُلَيْمَانَ دَاوُدَ وَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ عَلِمْنَا
مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَأَوْعَيْنَا عَنْ كُلِّ شَيْءٍ إِنَّ هَذَا لَهُوَ
الْقَضَاءُ الْبَيِّنُ ۝

1 अर्थात् विशेष ज्ञान जो नबूवत का ज्ञान है जैसे मूसा अलैहिस्सलाम को प्रदान किया और इसी प्रकार अन्तिम रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस कुर्आन द्वारा प्रदान किया है।

यह प्रत्यक्ष अनुग्रह है।

17. तथा एकत्र कर दी गयीं सुलैमान के लिये उस की सेनायें जिन्नों तथा मानवों और पक्षी की, और वह व्यवस्थित रखे जाते थे।
18. यहाँ तक कि वे (एक बार) जब पहुँचे च्यूटियों की घाटी पर, तो एक च्यूटी ने कहा: हे च्यूटियो! प्रवेश कर जाओ अपने घरों में ऐसा न हो कि तुम्हें कुचल दे सुलैमान तथा उस की सेनायें, और उन्हें ज्ञान न हो।
19. तो वह (सुलैमान) मुस्करा कर हँस पड़ा उस की बात पर, और कहा: हे मेरे पालनहार! मुझे क्षमता प्रदान कर कि मैं कृतज्ञ रहूँ तेरे उस पुरस्कार का जो पुरस्कार तू ने मुझ पर तथा मेरे माता-पिता पर किया है। तथा यह कि मैं सदाचार करता रहूँ जिस से तू प्रसन्न रहे और मुझे प्रवेश दे अपनी दया से अपने सदाचारी भक्तों में।
20. और उस ने निरीक्षण किया पक्षियों का तो कहा: क्या बात है कि मैं नहीं देख रहा हूँ हुदहुद को, या वह अनुपस्थितों में है?
21. मैं उसे कड़ी यातना दूँगा या उसे बध कर दूँगा, या मेरे पास कोई खुला प्रमाण लाये।
22. तो कुछ अधिक समय नहीं बीता कि उस ने (आकर) कहा: मैं ने ऐसी बात

وَحِثْرًا لِّسُلَيْمَانَ جُودًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ وَالطَّيْرِ
فَهُمْ يُوزَعُونَ ۝

حَتَّىٰ إِذَا اتَّوَعَلَىٰ وَادِ النَّمْلِ قَالَتْ نَمْلَةٌ يَا أَيُّهَا
النَّمْلُ ادْخُلُوا مَسْكِنَكُمْ لَا يَحْطِطُ سُلَيْمَانُ
وَجُودًا لَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّن قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي
أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ
وَالِدَيَّْ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأُدْخِلْنِي
بِرَحْمَتِكَ فِي الْعِبَادِ الصَّالِحِينَ ۝

وَوَقَفْنَا الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهُدُودَ هُنَا
كَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ۝

لَأَعَذِّبَنَّكَ عَبْدًا أَبَاشِدِيدٍ أَوْلَاكَ أَذْبَحْتَهُ وَوَلِيًّا تَبِيَّ
يُسُلْطِنُ تُبَيْدِي ۝

فَمَكَتْكَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطَّ بِمَا لَمْ حُطِّ بِهِ

का ज्ञान प्राप्त किया है जो आप के ज्ञान में नहीं आयी है, और मैं लाया हूँ आप के पास "सबा"^[1] से एक विश्वासनीय सूचना।

23. मैं ने एक स्त्री को पाया जो उन पर राज्य कर रही है, और उसे प्रदान किया गया है कुछ न कुछ प्रत्येक वस्तु से तथा उस के पास एक बड़ा भव्य सिंहासन है।

24. मैं ने उसे तथा उस की जाति को पाया कि सज्दा करते हैं सूर्य को अल्लाह के सिवा, और शोभनीय बना दिया है उन के लिये शैतान ने उन के कर्मों को और उन्हें रोक दिया है सुपथ से, अतः वह सुपथ पर नहीं आते।

25. (शैतान ने शोभनीय बना दिया है उन के लिये) कि उस अल्लाह को सज्दा न करें जो निकालता है गुप्त वस्तु को^[2] आकाशों तथा धरती में, तथा जानता वह सब कुछ जिसे तुम छुपाते हो तथा जिसे व्यक्त करते हो।

26. अल्लाह जिस के अतिरिक्त कोई वंदनीय नहीं, जो महा सिंहासन का स्वामी है।

27. (सुलैमान ने) कहा: हम देखेंगे कि तू सत्य वादी है अथवा मिथ्यावादियों में से है।

28. जाओ यह मेरा पत्र लेकर, और उसे

وَجِئْتِكَ مِنْ سَبَأٍ نَبَأٌ كَثِيرٌ ﴿١٠﴾

إِنِّي وَجَدْتُ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ﴿١١﴾

وَجَدْتُهُمْ قَوْمًا يَسْبُدُونَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَزَيْنُ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالُكُمْ فَصَدَّاهُمْ عَنِ السَّبِيلِ فَهَمُّ لَهُمْ لِيَهْتَدُونَ ﴿١٢﴾

الَّذِينَ سَجَدُوا لِلْإِلَهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْغَبَّ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ الْغُفُونَ وَمَا تُعَلِّمُونَ ﴿١٣﴾

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿١٤﴾

قَالَ سَنَنْظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿١٥﴾

إِذْ هَبَّ بِنُفُوسِنَا هَذَا فَالِقَهُ إِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّى عَدَمًا ﴿١٦﴾

1 सबा यमन का एक नगर है।

2 अर्थात् वर्षा तथा पौधों को।

डाल दो उन की ओर, फिर वापिस आ जाओ उन के पास से, फिर देखो कि वह क्या उत्तर देते हैं?

29. उस ने कहा: हे प्रमुखो! मेरी ओर एक महत्व पूर्ण पत्र डाला गया है।
30. वह सुलैमान की ओर से है, और वह अल्लाह अत्यंत कृपाशील दयावान् के नाम से (आरंभ) है।
31. कि तुम मुझे पर अभिमान न करो तथा आ जाओ मेरे पास आज्ञाकारी हो कर।
32. उस ने कहा: हे प्रमुखो! मुझे परामर्श दो मेरे विषय में, मैं कोई निर्णय करने वाली नहीं हूँ जब तक तुम उपस्थित न रहो।
33. सब ने उत्तर दिया कि हम शक्ति शाली तथा बड़े योद्धा हैं, आप स्वयं देख लें कि आप को क्या आदेश देना है।
34. उस ने कहा: राजा जब प्रवेश करते हैं किसी बस्ती में तो उसे उजाड़ देते हैं और उस के आदरणीय वासियों को अपमानित बना देते हैं और वे ऐसा ही करेंगे।
35. और मैं भेजने वाली हूँ उन की ओर एक उपहार फिर देखती हूँ कि क्या लेकर आते हैं दूत?
36. तो जब वह (दूत) आया सुलैमान के पास, तो कहा: क्या तुम मेरी सहायता धन से करते हो? मुझे अल्लाह ने जो दिया है उस से उत्तम है

فَأَنْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُونَ ﴿٢٧﴾

قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ الْإِنِّي آتِيَةٌ إِلَيْكُمْ بِبُرْهَانٍ ﴿٢٨﴾

إِنَّهُ مِنْ سُلَيْمَانَ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿٢٩﴾

الْأَعْلَىٰ وَأَتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿٣٠﴾

قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي أَمْرِي مَا كُنْتُ قَاطِعَةً أَمْرًا حَتَّىٰ تَشْهَدُونِ ﴿٣١﴾

قَالُوا إِنْ هُوَ إِلَّا قَوْلٌ فَاؤُولَآئِيسَ شَدِيدٍ وَالْأَمْرُ إِلَيْكِ فَانظُرِي مَاذَا تَأْمُرِينَ ﴿٣٢﴾

قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا أَعْرَافَ أَهْلِهَا آذِلَّةً ۚ وَكَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٣٣﴾

وَإِنِّي مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنْظُرْهُ بِمَا يَرْجِعُونَ ﴿٣٤﴾

فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمَانَ قَالَ أَتُمِدُّونَنِ بِمَالٍ فَمَا آتَانِيَ اللَّهُ خَيْرًا مِّمَّا الشَّكَّرُ بَلْ أَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ أَفْرَحُونَ ﴿٣٥﴾

जो तुम्हें दिया है, बल्कि तुम्हीं अपने उपहार से प्रसन्न हो रहे हो।

37. वापिस हो जाओ उन की ओर, हम लायेंगे उनके पास ऐसी सेनायें जिन का वह सामना नहीं कर सकेंगे, और हम अवश्य उन्हें उस (बस्ती) से निकाल देंगे अपमानित कर के और वह तुच्छ (हीन) हो कर रहेंगे।
38. सुलैमान ने कहा: हे प्रमुखो! तुम में से कौन लायेगा^[1] उस का सिंहासन इस से पहले कि वह आ जायें आज्ञाकारी हो कर।
39. कहा एक अतिकाय ने जिबों में से: मैं ला दूँगा आप के पास उसे इस से पूर्व कि आप खड़े हों अपने स्थान से, और इस पर मुझे शक्ति है मैं विश्वासनीय हूँ।
40. कहा उस ने जिस के पास पुस्तक का ज्ञान था: मैं ला दूँगा उसे आप के पास इस से पहले कि आप की पलक झपके, और जब देखा उसे अपने पास रखा हुआ, तो कहा: यह मेरे पालनहार का अनुग्रह है, ताकि मेरी परीक्षा ले कि मैं कृतज्ञता दिखाता हूँ या कृतघ्नता। और जो कृतज्ञ होता है वह अपने लाभ के लिये होता है तथा जो कृतघ्न हो तो निश्चय मेरा पालनहार निस्पृह महान् है।

رُدِّعُوا إِلَيْهِمْ قَلْبًا يَتَذَكَّرُونَ لِقَبْلِ لَّهُمْ بِهَا
وَنُخْرِجُهُمْ مِنْهَا إِذْ لَهُمْ صُغُرُونَ ﴿٣٧﴾

قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ الْأَيْمَنُ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ
يَا تَوَفَّى مَسْلُوبِينَ ﴿٣٨﴾

قَالَ عِفْرِيُّ مَنِ الْبَيْنُ أَمَا لَيْتَكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ تَقُومَ
مِنْ مَقَامِكَ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ أَمِينٌ ﴿٣٩﴾

قَالَ الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ
بِهِ قَبْلَ أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ فَلَمَّا رَأَاهُ
مَسْتَقِرًّا عِنْدَهُ قَالَ هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي لِيَبْلُوَنِي
أَشْكُرُ أَمْ أَكْفُرُ وَمَنْ شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ
لِنَفْسِهِ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَأْيِي عَسِيٌّ كَرِيهٌُ ﴿٤٠﴾

1 जब सुलैमान ने उपहार वापिस कर दिया और धमकी दी तो रानी ने स्वयं सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की सेवा में उपस्थित होना उचित समझा। और अपने सेवकों के साथ फ़लस्तीन के लिये प्रस्थान किया, उस समय उन्होंने ने राज्यसदस्यों से यह बात कही।

41. कहा: परिवर्तन कर दो उस के लिये उसके सिंहासन में, हम देखेंगे कि वह उसे पहचान जाती है या उन में से हो जाती है जो पहचानते न हों।
42. तो जब वह आई, तो कहा गया: क्या ऐसा ही तेरा सिंहासन है? उस ने कहा: वह तो मानो वही है। और हम तो जान गये थे इस से पहले ही और आज्ञाकारी हो गये थे।
43. और रोक रखा था उसे (ईमान से) उन (पूज्यों ने) जिस की वह इबादत (वंदना) कर रही थी अल्लाह के सिवा। निश्चय वह काफिरों की जाति में से थी।
44. उस से कहा गया कि भवन में प्रवेश कर। तो जब उसे देखा तो उसे कोई जलाशय (हौद) समझी और खोल दी^[1] अपनी दोनों पिंडलियाँ, (सुलैमान ने) कहा: यह शीशे से निर्मित भवन है। उस ने कहा: मेरे पालनहार! मैं ने अत्याचार किया अपने प्राण^[2] पर और (अब) मैं इस्लाम लाई सुलैमान के साथ अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये।
45. और हम ने भेजा समूद की ओर उनके भाई सालेह को, कि तुम सब इबादत (वंदना) करो अल्लाह की, तो अकस्मात् वे दो गिरोह होकर लड़ने लगे।
46. उस ने कहा: हे मेरी जाति! क्यों तुम

قَالَ تَكْرُوهًا وَالْحَا عَرَشَهَا نَنْظُرُ أَهْتَدَىٰ أَمْ تَكُونُ
مِنَ الَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٦٠﴾

فَلَمَّا جَاءَتْ قِيلَ أَهَلِكُنَّ أَعْرَشُكَ قَالَتْ
كَانَتْ هُوَ وَأُورِثُنَا الْعَالَمِ مِن قَبْلِهَا وَكُنَّا
مُسْلِمِينَ ﴿٦١﴾

وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَعْبُدُ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنَّهَا
كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كَافِرِينَ ﴿٦٢﴾

قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ
لُجَّةً وَكَشَفَتْ عَنْ سَاقِهَا قَالَتْ إِنَّهُ صَرْحٌ
مُمَرَّدٌ مِن قَوَارِيرَ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي
وَاسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٣﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا أَنْ
اعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيقَانِ يَخْتَصِمُونَ ﴿٦٤﴾

قَالَ يَوْمَئِذٍ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ

1 पानी से बचाव के लिये कपड़े पाईचे ऊपर कर लिये।

2 अर्थात् अन्य की पूजा-उपासना कर के।

शीघ्र चाहते हो बुराई^[1] को भलाई से पहले? क्यों तुम क्षमा नहीं माँगते अल्लाह से, ताकि तुम पर दया की जाये?

47. उन्होंने ने कहा: हम ने अपशकुन लिया है तुम से तथा उन से जो तेरे साथ हैं। (सालेह ने) कहा: तुम्हारा अपशकुन अल्लाह के पास^[2] है, बल्कि तुम लोगों की परीक्षा हो रही है।
48. और उस नगर में नौ व्यक्तियों का एक गिरोह था जो उपद्रव करते थे धरती में, और सुधार नहीं करते थे।
49. उन्होंने ने कहा: आपस में शपथ लो अल्लाह की कि हम अवश्य रात्री में छापा मार देंगे सालेह तथा उसके परिवार पर, फिर कहेंगे उस (सालेह) के उत्तराधिकारी से, हम उपस्थित नहीं थे उस के परिवार के विनाश के समय, और निःसंदेह हम सत्यवादी (सच्चे) हैं।
50. और उन्होंने ने एक षडयंत्र रचा, और हम ने भी एक उपाय किया, और वे समझ नहीं रहे थे।
51. तो देखो कैसा रहा उन के षडयंत्र का परिणाम? हम ने विनाश कर दिया उन का तथा उन की पूरी जाति का।
52. तो यह उन के घर है उजाड़ पड़े हुये

الْحَسَنَةَ لَوْلَا اسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٢٧﴾

قَالُوا الظُّلُمَاتُ بَيْنَنَا وَبَيْنَ مَعَكَ قَالَ نَحْوِكُمْ إِعْنَدَ اللَّهِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّفْتَنُونَ ﴿٢٨﴾

وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿٢٩﴾

قَالُوا نَحْنُ أَسْمَاءُ بِاللَّهِ لَتُنَبِّئَنَّهُ وَأَهْلَهُ ثُمَّ لَنَقُولَنَّ لِوَالِيهِ نَأْمُرُ بِمَا مَهْلِكُ أَهْلِهِ وَأَنَا الصّٰدِقُونَ ﴿٣٠﴾

وَمَكْرًا وَمَكْرًا أَوْ مَكَرًا مَكْرًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٣١﴾

فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مُّكْرِهِمْ أَنَا دَمَّرْنَاهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٢﴾

فَتِلْكَ بُيُوتُهُمْ خَاوِيَةٌ بِمَا ظَلَمُوا الْإِنِّ فِي ذٰلِكَ

1 अर्थात ईमान लाने के बजाये इन्कार क्यों कर रहे हो?

2 अर्थात तुम पर जो अकाल पड़ा है वह अल्लाह की ओर से है जिसे तुम्हारे कुकर्मों के कारण अल्लाह ने तुम्हारे भाग्य में लिख दिया है। और यह अशुभ मेरे कारण नहीं बल्कि तुम्हारे कुफ़ के कारण है। (फ़तहल कदीर)

- उन के अत्याचार के कारण, निश्चय इस में एक बड़ी निशानी है उन लोगों के लिये जो ज्ञान रखते हैं।
53. तथा हम ने बचा लिया उन्हें जो ईमान लाये, और (अल्लाह से) डर रहे थे।
54. तथा लूत को (भेजा), जब उस ने अपनी जाति से कहा: क्या तुम कुकर्म कर रहे हो जब कि तुम^[1] आँखें रखते हो?
55. क्या तुम पुरुषों के पास जाते हो काम वासना की पूर्ति के लिये? तुम लोग बड़े ना समझ हो।
56. तो उस की जाति का उत्तर बस यह था कि उन्होंने ने कहा: लूत के परिजनों को निकाल दो अपने नगर से, वास्तव में यह लोग बड़े पवित्र बन रहे हैं।
57. तो हम ने बचा लिया उसे तथा उस के परिवार को, उस की पत्नी के सिवा, जिसे हम ने नियत कर दिया पीछे रह जाने वालों में।
58. और हम ने उन पर बहुत अधिक वर्षा कर दी। तो बुरी हो गई सावधान किये हुये लोगों की वर्षा।
59. आप कह दें: सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है, और सलाम है उस के उन भक्तों पर जिन को उस ने चुन

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾

وَأَنْجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٣﴾

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ
وَأَنْتُمْ تَبْصُرُونَ ﴿٥٤﴾

أَيْنَكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِنْ دُونِ
النِّسَاءِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿٥٥﴾

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُو آلَ
لُوطٍ مِنْ قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أَنَاسٌ يَبْطِغُونَ ﴿٥٦﴾

فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَا فِيهَا مِنَ
الْغَيْرِينَ ﴿٥٧﴾

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا نِسَاءَ مِثْلِ الْمُنذَرِينَ ﴿٥٨﴾

قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَى عِبَادِهِ الَّذِينَ
اصْطَفَى اللَّهُ خَيْرًا مِمَّا يَشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾

1 (देखिये: सूरह आराफ़, 84, और सूरह हूद, 82, 83)। इस्लाम में स्त्री से भी अस्वभाविक संभोग वर्जित है। (सुनन नसाई, हदीस नं० - 8985, और सुनन इब्ने माजा, हदीस नं० - 1924)।

लिया। क्या अल्लाह उत्तम है या जिसे वह साझी बनाते हैं?

60. या वह है जिस ने उत्पत्ति की है आकाशों तथा धरती की और उतारा है तुम्हारे लिये आकाश से जल, फिर हम ने उगा दिया उस के द्वारा भव्य बाग़, तुम्हारे बस में न था कि उगा देते उस के वृक्ष, तो क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? बल्कि यही लोग (सत्य से) कतरा रहे हैं।
61. या वह है जिस ने धरती को रहने योग्य बनाया तथा उस के बीच नहरें बनायीं, और उस के लिये पर्वत बनाये, और बना दी दो सागरों के बीच एक रोक। तो क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? बल्कि उन में से अधिकतर ज्ञान नहीं रखते।
62. या वह है जो व्याकुल की प्रार्थना सुनता है जब उसे पुकारे और दूर करता है दुःख को, तथा तुम्हें बनाता है धरती का अधिकारी, क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? तुम बहुत कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो।
63. या वह है जो तुम्हें राह दिखाता है सूखे तथा सागर के अँधेरों में, तथा भेजता है वायुओं को शुभ सूचना देने के लिये अपनी दया (वर्षा) से पहले, क्या कोई और पूज्य है अल्लाह के साथ? उच्च है अल्लाह उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं।
64. या वह है जो आरंभ करता है

أَمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا بِهِ حَدَائِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْبِتُوا شَجَرَهَا ۗ عَالِمٌ مَعَ اللَّهِ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَعْبُدُونَ ﴿٦٠﴾

أَمْ مَنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَالَهَا أَنْهَارًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَاسِي وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۗ عَالِمٌ مَعَ اللَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦١﴾

أَمْ مَنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُ لَكُمْ خُلُقَاءَ الْأَرْضِ ۗ عَالِمٌ مَعَ اللَّهِ قَلِيلًا مَاتَدَّ كُرُؤُنُ ﴿٦٢﴾

أَمْ مَنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمَاتِ اللَّيْلِ وَالْيَمْرِ وَمَنْ يُرْسِلُ الرِّيَّاحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۗ عَالِمٌ مَعَ اللَّهِ تَعَلَّى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٣﴾

أَمْ مَنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَنْ

उत्पत्ति को, फिर उसे दुहरायेगा तथा जो तुम्हें जीविका देता है आकाश तथा धरती से, क्या कोई पुज्य है अल्लाह के साथ? आप कह दें कि अपना प्रमाण लाओ यदि तुम सच्चे^[1] हो।

65. आप कह दें कि नहीं जानता है जो आकाशों तथा धरती में है परोक्ष को अल्लाह के सिवा, और वे नहीं जानते कि कब फिर जीवित किये जायेंगे।
66. बल्कि समाप्त हो गया है उन का ज्ञान आखिरत (परलोक) के विषय में, बल्कि वे द्विधा में हैं, बल्कि वे उस से अंधे हैं।
67. और कहा काफिरों ने: क्या जब हम हो जायेंगे मिट्टी तथा हमारे पूर्वज तो क्या हम अवश्य निकाले^[2] जायेंगे।
68. हमें इस का वचन दिया जा चुका है तथा हमारे पूर्वजों को इस से पहले, यह तो बस अगलों की बनायी हुई कथायें हैं।
69. (हे नबी!) आप कह दें कि चलो-फिरो धरती में फिर देखो कि कैसा हुआ अपराधियों का परिणाम।

يُرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ أَلَا مَعَ اللَّهِ
قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٦٥﴾

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَن فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ
إِلَّا اللَّهُ ۗ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٦٦﴾

بَلِ الْأُفُكِ عَلَيْهِمْ فِي الْأَخْرَافِ ۗ بَلْ هُمْ فِي
شَكٍّ مِّنْهَا ۖ بَلْ هُمْ فِيهَا عَمَوُونَ ﴿٦٧﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ إِذَا كُنَّا تُرَابًا
وَأَبَاؤُنَا إِنَّا لِلْمَعْرُوجِينَ ﴿٦٨﴾

لَقَدْ وَعَدْنَا هَٰذَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا مِن قَبْلُ
إِنَّ هَٰذَا إِلَّا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٩﴾

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا ۖ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٧٠﴾

1 आयत नं० 60 से यहाँ तक का सारांश यह है कि जब अल्लाह ने ही पूरे विश्व की उत्पत्ति की है और सब की व्यवस्था वही कर रहा है, और उस का कोई साक्षी नहीं तो फिर यह मिथ्या पूज्य अल्लाह के साथ कहाँ से आ गये? यह तो ज्ञान और समझ में आने की बात नहीं और न इस का कोई प्रमाण है।

2 अर्थात् प्रलय के दिन अपनी समाधियों से जीवित निकाले जायेंगे।

70. और आप शोक न करें उन पर और न किसी संकीर्णता में रहें उस से जो चालें वह चल रहें हैं।
71. तथा वह कहते हैं: कब यह धमकी पूरी होगी यदि तुम सच्चे हो?
72. आप कह दें: संभव है कि तुम्हारे समीप हो उस में से कुछ जिसे तुम शीघ्र चाहते हो।
73. तथा निःसंदेह आप का पालनहार बड़ा दयालु है लोगों^[1] पर, परन्तु उन में से अधिकतर कृतज्ञ नहीं होते।
74. और वास्तव में आप का पालनहार जानता है जो छुपाते हैं उन के दिल तथा जो व्यक्त करते हैं।
75. और कोई छुपी चीज़ नहीं है आकाश तथा धरती में परन्तु वह खुली पुस्तक में^[2] है।
76. निःसंदेह यह कुर्आन वर्णन कर रहा है इस्राईल के संतान की समक्ष उन अधिकतर बातों को जिस में वह विभेद कर रहे हैं।
77. और वास्तव में वह मार्ग दर्शन तथा दया है ईमान वालों के लिये।
78. निःसंदेह आप का पालनहार^[3] निर्णय कर देगा उन के बीच अपने आदेश

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿٧٠﴾

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٧١﴾

قُلْ عَلَىٰ أَنْ يَكُونَ رَدْفٌ لَّكُمْ بَعْضُ الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٧٢﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٤﴾

وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٧٥﴾

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَفُضُّ عَلَىٰ سِنِيٍّ إِسْرَائِيلَ أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٧٦﴾

وَإِنَّهُ لَهْدَىٰ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾

إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُم بِحُكْمِهِ ﴿٧٨﴾

1 अर्थात् लोगों को अपने अनुग्रह से अवसर देता रहता है।

2 इस से तात्पर्य (लौहे महफूज़) सुरक्षित पुस्तक है जिस में सब कुछ अंकित है।

3 अर्थात् प्रलय के दिन। और सत्य तथा असत्य को अलग कर के उस का बदला देगा।

से, तथा वही प्रबल सब कुछ जानने वाला है।

79. अतः आप भरोसा करें अल्लाह पर, वस्तुतः आप खुले सत्य पर हैं।
80. वास्तव में आप नहीं सुना सकेंगे मुर्दों को। और न सुना सकेंगे बहरों को अपनी पुकार, जब वह भागे जा रहे हों पीठ फेर^[1] कर।
81. तथा आप अंधे को मार्ग दर्शन नहीं दे सकते उन के कुपथ से, आप तो बस उसी को सुना सकते हैं जो ईमान रखता हो हमारी आयतों पर फिर वह आज्ञाकारी हो।
82. और जब आ जायेगा बात पूरी होने का समय उन के ऊपर^[2], तो हम निकालेंगे उन के लिये एक पशु धरती से जो बात करेगा उन^[3] से कि लोग हमारी आयतों पर

وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ۝

إِنَّكَ لَا تَسْمِعُ الْمُوتَىٰ وَلَا تَسْمِعُ الضَّمَّةَ الدُّعَاءَ إِذَا وَكُومًا مَدْبُورِينَ ۝

وَمَا آتَيْتَ بِطَيْرٍ الْعَبِيِّ عَنْ صَلَاتِهِمْ ۝
إِنَّ تَسْمِعُ الْأَمَّنَ يُؤْمِنُ يَا أَيَّتِنَا لَهُمْ
مُسْلِمُونَ ۝

وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً
مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ كَالْوَا
يَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ۝

1 अर्थात् जिन की अंतरात्मा मर चुकी हो, और जिन की दुराग्रह ने सत्य और असत्य का अन्तर समझने की क्षमता खो दी हो।

2 अर्थात् प्रलय होने का समय।

3 यह पशु वही है जो प्रलय के समीप होने का एक लक्षण है जैसा कि हदीस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि प्रलय उस समय तक नहीं होगी जब तक तुम दस लक्षण न देख लो, उन में से एक पशु का निकालना है। (देखिये: सहीह मुस्लिम हदीस नं: 2901)

आप का दूसरा कथन यह है कि सर्व प्रथम जो लक्षण होगा वह सूर्य का पश्चिम से निकलना होगा तथा पूर्वान्ध से पहले पशु का निकलना इन में से जो भी पहले होगा शीघ्र ही दूसरा उस के पश्चात् होगा। (देखिये: सहीह मुस्लिम हदीस नं: 2941)

और यह पशु मानव-भाषा में बात करेगा जो अल्लाह के सामर्थ्य का एक चिन्ह होगा।

विश्वास नहीं करते थे।

83. तथा जिस दिन हम घेर लायेंगे प्रत्येक समुदाय से एक गिरोह उन का जो झुठलाते रहे हमारी आयतों को, फिर वह सब (एकत्र किये जाने के लिये) रोक दिये जायेंगे।
84. यहाँ तक कि जब सब आ जायेंगे तो अल्लाह उन से कहेगा: क्या तुम ने मेरी आयतों को झुठला दिया जब कि तुम ने उन का पूरा ज्ञान नहीं किया, अन्यथा तुम और क्या कर रहे थे?
85. और सिद्ध हो जायेगा यातना का वचन उन के ऊपर उन के अत्याचार के कारण। तब वह बात नहीं कर सकेंगे।
86. क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि हम ने रात बनाई ताकि वह शान्त रहें उस में, तथा दिन को दिखाने वाला।^[1] वास्तव में इस में बड़ी निशानियाँ (लक्षण) हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।
87. और जिस दिन फूँका जायेगा^[2] सूर (नरसिंघा) में, तो घबरा जायेंगे जो आकाशों तथा धरती में हैं। परन्तु वह जिसे अल्लाह चाहे, तथा सब उस (अल्लाह) के समक्ष आ जायेंगे विवश हो कर।
88. और तुम देखते हो पर्वतों को तो उन्हें समझते हो स्थिर (अचल) है, जब

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِمَّنْ
يُكَذِّبُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿٣٥﴾

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُمْ وَقَالَ كَذَّبْتُمْ بِآيَاتِي وَلَمْ
تَحِيطُوا بِهَا عِلْمًا أَمَّا ذَلِكُمْ فَتَمَعَلُونَ ﴿٣٦﴾

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوا فَهُمْ
لَا يَنْطِقُونَ ﴿٣٧﴾

الْمَيِّرُوا أَكَا جَعَلْنَا الْبَيْتَ لِمَنْ سَكَتْنَا فِيهِ
وَاللَّهَ مُبْجِبٌ إِِلَآئِنَّا فِي ذَلِكَ لآيَاتٍ لِّقَوْمٍ
يُؤْمِنُونَ ﴿٣٨﴾

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ نَفْعٌ مِّنْ فِي
السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ
اللَّهُ وَكُلُّ الْأَوَّلَىٰ ذَخِيرَةٌ ﴿٣٩﴾

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَمَادًا وَهِيَ كَمِرْمَرٍ

1 जिस के प्रकाश में वह देखें और अपनी जीविका के लिये प्रयास करें।

2 अर्थात् प्रलय के दिन।

कि वह (उस दिन) उड़ेंगे बादल के समान, यह अल्लाह की रचना है जिस ने सुदृढ़ किया है प्रत्येक चीज़ को, निश्चय वह भली-भाँति सूचित है उस से जो तुम कर रहे हो।

89. जो भलाई^[1] लायेगा, तो उस के लिये उस से उत्तम (प्रतिफल) है और वह उस दिन की व्यग्रता से निर्भय रहने वाले होंगे।
90. और जो बुराई लायेगा, तो वही झोंक दिये जायेंगे औंधे मुँह नरक में (तथा कहा जायेगा): तुम्हें वही बदला दिया जा रहा है जो तुम करते रहे हो।
91. मुझे तो बस यही आदेश दिया गया है कि इस नगर (मक्का) के पालनहार की इबादत (वन्दना) करूँ जिस ने उसे आदरणीय बनाया है, तथा उसी के अधिकार में है प्रत्येक चीज़, और मुझे आदेश दिया गया है कि आज्ञाकारियों में से रहूँ।
92. तथा कुर्आन पढ़ता रहूँ, तो जिस ने सुपथ अपनाया तो वह अपने ही लाभ के लिये सुपथ अपनायेगा। और जो कुपथ हो जाये तो आप कह दें कि वास्तव में मैं तो बस सावधान करने वालों में से हूँ।
93. तथा आप कह दें कि सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है, वह शीघ्र तुम्हें दिखा देगा अपनी निशानियाँ जिन्हें

السَّحَابِ صُنِعَ لِلَّهِ الْكِبْرُ الَّذِي أَنْفَعَنَ كُلَّ شَيْءٍ إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ ﴿٢٠﴾

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِمَّا يَحْتَسِبُ وَمَنْ جَاءَ بِالسُّيْئَةِ فَلَهُ شَرٌّ مِمَّا يَحْتَسِبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٢١﴾

وَمَنْ جَاءَ بِالسُّيْئَةِ فَكَيْبَتْ وَجُوهُهُمْ فِي النَّارِ هُمْ فِيهَا كَالْعِجْلِ لَمَّا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٢٢﴾

إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَذِهِ الْبَلَدِ الَّذِي كَرَّمَهَا وَلِكُلِّ شَيْءٍ أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٢٣﴾

وَأَنْ أَتُوا الْقُرْآنَ مِمَّنْ أُمَّتِي وَأَنَا مِنَ الْمُنذِرِينَ ﴿٢٤﴾

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْنَا الْقُرْآنَ الْعَرَبِيَّ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٢٥﴾

1 अर्थात् एक अल्लाह के प्रति आस्था तथा तदानुसार कर्म ले कर प्रलय के दिन आयेगा।

तुम पहचान^[1] लोगे और तुम्हारा
पालनहार उस से अचेत नहीं है जो
कुछ तुम कर रहे हो।

1 (देखिये सूरह हा, मीम सज्दा, आयत- 53)

सूरह क़सस - 28



सूरह क़सस के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 88 आयतें हैं।

इस सूरह का नाम इस की आयत नं० 25 में आये हुये शब्द ((क़सस)) से लिया गया है। जिस का अर्थ: वाक्य क्रम का वर्णन करना है। इस सूरह में मूसा (अलैहिस्सलाम) के जन्म, उन का अपने शत्रु के भवन में पालन-पोषण, फिर उन के मद्यन जाने और दस वर्ष के पश्चात् अपने परिजनों के साथ अपने देश वापिस आने और राह में नबूवत और चमत्कार मिलने और फिरऔन तथा उस की जाति के ईमान न लाने के कारण अपनी सेना के साथ डुबो दिये जाने का पूरा विवरण है। जिस से यह बताया गया है कि अल्लाह जो कुछ करना चाहता है उस के संसाधन इस प्रकार बना देता है कि किसी को उस का ज्ञान भी नहीं होता। इसी प्रकार किसी को नबी बनाने के लिये आकाश और धरती में कोई एलान नहीं किया जाता। अतः यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कैसे और कब नबी हो गये।

- इस में यह बताया गया है कि अल्लाह जिस से काम लेना चाहता है उसे किसी राज्य और सेना की सहायता की आवश्यकता नहीं होती और अन्ततः वही सफल होता है।
- इस में यह संकेत भी है कि सत्य के विरोधी चमत्कार की माँग तो करते हैं किन्तु वह चमत्कार देख कर भी ईमान नहीं लाते जैसा कि मूसा (अलैहिस्सलाम) की जाति ने किया और स्वयं अपना विनाश कर लिया।
- यह पूरी सूरह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सत्य नबी होने का प्रमाण भी है क्योंकि हज़ारों वर्ष पुरानी मूसा (अलैहिस्सलाम) की पूरी स्थिति का विवरण इस प्रकार वही दे सकता है जिसे अल्लाह ने वही द्वारा यह सब कुछ बताया हो। अन्यथा आप स्वयं निरक्षर थे और अरब में आप के पास ऐसे साधन भी नहीं थे जिस से आप यह सब कुछ जान सकें।
- इस में मक्का के काफ़िरों को कुछ ईसाईयों के कुर्आन पाक सुन कर ईमान लाने पर लज्जित किया गया है कि तुम ने अपने घर की बात नहीं मानी।

- और इस के अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिलासा देते हुये सत्य पर स्थित रहने का निर्देश दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. ता, सीन, मीमा।
2. यह इस खुली पुस्तक की आयतें हैं।
3. हम आप के समक्ष सुना रहे हैं मूसा तथा फ़िरऔन के कुछ समाचार सत्य के साथ उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं।
4. वास्तव में फ़िरऔन ने उपद्रव किया धरती में और कर दिया उस के निवासियों को कई गिरोह। वह निर्बल बना रहा था एक गिरोह को उन में से, बध कर रहा था उन के पुत्रों को और जीवित रहने देता था उन की स्त्रियों को। निश्चय वह उपद्रवियों में से था।
5. तथा हम चाहते थे कि उन पर दया करें जो निर्बल बना दिये गये धरती में तथा बना दें उन्हीं को प्रमुख और बना दें उन्हीं को^[1]उत्तराधिकारी।
6. तथा उन्हें शक्ति प्रदान कर दें धरती में और दिखा दें फ़िरऔन तथा हामान और उन की सेनाओं को उन की ओर से वह जिस से वह डर रहे^[2] थे।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

طسّم

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ

نَتْلُو عَلَيْكَ مِنْ نَبَأِ مُوسَىٰ وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ

إِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْأَرْضِ وَجَعَلَ أَهْلَهَا شِيَعًا يَسْتَضَعِفُ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ يُدْبِرُوهُنَّ وَنَسِئَهُنَّ نِسَاءً لَهُمُ الرِّثَاءُ كَانُوا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ

وَنُرِيدُ أَنْ نَمُنَّ عَلَى الَّذِينَ اسْتُضِعِفُوا فِي الْأَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ أَئِمَّةً وَنَجْعَلَهُمُ الْوَارِثِينَ

وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَنُرِي فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمْ مَا كَانُوا يَحَدِّثُونَ

1 अर्थात मिस्र देश का राज्य उन्हीं को प्रदान कर दें।

2 अर्थात बनी इस्राईल के हाथों अपने राज्य के पतन से।

7. और हम ने वही^[1] की मूसा की माता की ओर कि उसे दूध पिलाती रह और जब तुझे उस पर भय हो तो उसे सागर में डाल दे, और भय न कर और न चिन्ता कर, निःसंदेह हम वीपस लायेंगे उसे तेरी ओर, और बना देंगे उसे रसूलों में से।

8. तो ले लिया उसे फिरऔन के कर्मचारियों ने^[2] ताकि वह बने उन के लिये शत्रु तथा दुःख का कारण। वास्तव में फिरऔन तथा हामान और उन की सेनायें दोषी थीं।

9. और फिरऔन की पत्नी ने कहा: यह मेरी तथा आप की आँखों की ठण्डक है। इसे बध न करो, संभव है हमें लाभ पहुँचाये या उसे हम पुत्र बना लें। और वह समझ नहीं रहे थे।

10. और हो गया मूसा की माँ का दिल व्याकुल, समीप था कि वह उस का भेद खोल देती यदि हम आश्वासन न देते उस के दिल को, ताकि वह हो जाये विश्वास करने वालों में।

11. तथा (मूसा की माँ ने) कहा: उस की बहन से कि तू इस के पीछे-पीछे जा। तो उस ने उसे दूर ही दूर से देखा और उन्हें इस का आभास तक न हुआ।

12. और हम ने अवैध (निषेध) कर दिया

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّ مُوسَىٰ أَنْ أَرْضِعِيهِ ۖ فَإِذَا
خَضَّتْ عَلَيْهِ ۖ وَالْقِيَّةُ فِي الْبَيْمِ ۖ وَلَا تَحْزَنِي وَلَا
تَحْزَنِي إِنَّا رَأَوْنَا إِلَيْكَ ۖ وَجَاعَلُوهُ مِنَ
الْمُرْسَلِينَ ۝

فَالنَّظَّةَ ۖ أَلْ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا
وَحَزَنًا ۖ إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا
كَانُوا خَاطِبِينَ ۝

وَقَالَتِ امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قُوَّتْ عَيْنِي فِي
وَلَكَ ۖ لَا تَقْتُلُوهُ ۗ عَلَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا
أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا ۖ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فِرْعَانَ ۖ كَادَتْ
لَتُسْبِئِي بِهِ ۖ لَوْلَا أَن تَبْتَاطَا عَلٰى قَلْبِهَا
لَتَكُونُ مِنَ الْمُنْهِنِينَ ۝

وَقَالَتْ لِأُخْتِهِ قُصِّيهِ ۖ فَبَصَّرَتْ بِهِ عَنْ
جُنُبٍ ۖ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلِ فَقَالَتْ هَلْ

- 1 जब मूसा का जन्म हुआ तो अल्लाह ने उन के माता के मन में यह बातें डाल दीं।
- 2 अर्थात् उसे एक सन्दूक में रख कर सागर में डाल दिया जिसे फिरऔन की पत्नी ने निकाल कर उसे (मूसा को) अपना पुत्र बना लिया।

उस (मूसा) पर दाईयों को इस से^[1] पूर्वी तो उस (की बहन) ने कहा: क्या मैं तुम्हें न बताऊँ ऐसा घराना जो पालनपोषण करे इस का तुम्हारे लिये तथा वह उस के शुभचिन्तक हों?

13. तो हम ने फेर दिया उसे उस की माँ की ओर ताकि ठण्डी हो उस की आँख और चिन्ता न करे, और ताकि उसे विश्वास हो जाये कि अल्लाह का वचन सच्च है, परन्तु अधिकतर लोग विश्वास नहीं रखते।
14. और जब वह अपनी युवावस्था को पहुँचा और उस का विकास पूरा हो गया तो हम ने उसे प्रबोध तथा ज्ञान दिया। और इसी प्रकार हम बदला देते हैं सदाचारियों को।
15. और उस ने प्रवेश किया नगर में उस के वासियों की अचेतना के समय, और उस में दो व्यक्तियों को लड़ते हुये पाया, यह उस के गिरोह से था और दूसरा उस के शत्रु में^[2] से। तो उसे पुकारा उस ने जो उस के गिरोह से था उस के विरुद्ध जो उस के शत्रु में से था। जिस पर मूसा ने उसे घूसा मारा और वह मर गया। मूसा ने कहा: यह शैतानी कर्म है। वास्तव में वह शत्रु है खुला कुपथ करने वाला।

16. उस ने कहा: हे मेरे पालनहार! मैं ने

أَذْلِكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتِكُمْ لِكُفْلُونَهُ لَكُمْ وَهُمْ
لَهُ نَصِيبٌ ۝

فَرَدَدْنَاهُ إِلَىٰ أُمِّهِ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ
وَلَنَعْلَمَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَاسْتَوَىٰ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا
وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝

وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينٍ غَفْلَةٍ مِّنْ أَهْلِهَا
فَوَجَدَ فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هَذَا مِنْ شِيعَةِ
وَهَذَا مِنْ عَدُوِّهِ فَاسْتَعَاذَهُ الَّذِي مِنْ شِيعَتِهِ
عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ فَوَكَرَهُ مُوسَىٰ فَقَضَىٰ عَلَيْهِ
قَالَ هَذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِينٌ ۝

قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْمُصْ لِي فَخْرًا

1 अर्थात् उस की माता के पास आने से पूर्वी

2 अर्थात् एक इस्राईली तथा दूसरा किब्ती फिरऔन की जाति से था।

अपने ऊपर अत्याचार कर लिया, तू मुझे क्षमा कर दे। फिर अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया। वास्तव में वह क्षमाशील अति दयावान् है।

إِنَّهُ هُوَ الْعَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٠﴾

17. उस ने कहा: उस के कारण जो तू ने मुझे पर पुरस्कार किया है अब मैं कदापि अपराधियों का सहायक नहीं बनूँगा।

قَالَ رَبِّ بِمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ أَكُونَ ظَهِيرًا
لِلْمُجْرِمِينَ ﴿١١﴾

18. फिर प्रातः वह नगर में डरता हुआ समाचार लेने गया तो सहसा वही जिस ने उस से कल सहायता माँगी थी, उसे पुकार रहा है। मूसा ने उस से कहा: वास्तव में तू ही खुला कुपथ है।

فَأَصْبَحَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِبًا يَتَرَِّبُ فَإِذَا الَّذِي
اسْتَصْرَعَهُ بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِحُهُ قَالَ لَهُ مُوسَى
إِنَّكَ لَعَوِيُّ مُّبِينٌ ﴿١٢﴾

19. फिर जब पकड़ना चाहा उसे जो उन दोनों का शत्रु था, तो उस ने कहा: हे मूसा! क्या तू मुझे मार देना चाहता है जैसे मार दिया एक व्यक्ति को कल? तू तो चाहता है कि बड़ा उपद्रवी बन कर रहे इस धरती में और तू नहीं चाहता कि सुधार करने वालों में से हो।

فَلَمَّا أَنْ أَرَادَ أَنْ يَبْطِشَ بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ
لَهُمَا قَالَ يَمْسَى أَتْرِيدُ أَنْ تَقْتُلَنِي كَمَا
قَتَلْتَ نَفْسًا يَا لَأَمْسٍ إِنْ تُرِيدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ
جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ وَمَا تُرِيدُ أَنْ تَكُونَ مِنَ
الْمُصْلِحِينَ ﴿١٣﴾

20. और आया एक पुरुष नगर के किनारे से दौड़ता हुआ, उस ने कहा: हे मूसा! (राज्य के) प्रमुख परामर्श कर रहे हैं तेरे विषय में कि तुझे बध कर दें, अतः तू निकल जा। वास्तव में मैं तेरे शुभचिन्तकों में से हूँ।

وَجَاءَ رَجُلٌ مِنَ أَقْصَا الْمَدِينَةِ يَسْعَى قَالَ
يَمْسَى إِنْ الْمَلَآئِكَةُ يُاتُونَ بِكَ لِتَقْتُلُوكَ
فَاخْرُجْ إِنِّي لَكَ مِنَ النَّاصِحِينَ ﴿١٤﴾

21. तो वह निकल गया उस (नगर) से डरा सहमा हुआ। उस ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! मुझे बचा ले अत्याचारी जाति से।

فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِبًا يَتَرَِّبُ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِي
قَوْمًا ظَالِمِينَ ﴿١٥﴾

22. और जब वह जाने लगा मद्यन की ओर, तो उस ने कहा: मुझे आशा है कि मेरा पालनहार मुझे दिखायेगा सीधा मार्ग।

23. और जब उतरा मद्यन के पानी पर तो पाया उस पर लोगों का एक समूह जो (अपने पशुओं को) पानी पिला रहा था। तथा पाया उस के पीछे दो स्त्रियों को (अपने पशुओं को) रोकती हुई। उस ने कहा: तुम्हारी समस्या क्या है? दोनों ने कहा: हम पानी नहीं पिलाती जब तक चरवाहे चले न जायें, और हमारे पिता बहुत बूढ़े हैं।

24. तो उस ने पिला दिया दोनों के लिये। फिर चल दिया छाया की ओर, और कहने लगा: हे मेरे पालनहार! तू जो भी भलाई मुझ पर उतार दे मैं उस का आकांक्षी हूँ।

25. तो आई उस के पास दोनों में से एक स्त्री चलती हुयी लज्जा के साथ, उस ने कहा: मेरे पिता^[1] आप को बुला रहे हैं। ताकि आप को उस का पारिश्रमिक दें जो आप ने पानी पिलाया है हमारे लिये। फिर जब (मूसा) उस के पास पहुँचा और पूरी कथा उसे सुनाई तो उस ने कहा: भय न कर। तू मुक्त हो गया अत्याचारी^[2] जाति से।

وَلَمَّا تَوَجَّهَ بِلِقَاءِ رَبِّهِ قَالَ عَلَىٰ رَبِّي أَن يَهْدِيَنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ ①

وَلَمَّا وَرَدَ مَاءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِنَ النَّاسِ يَسْقُونَهُ وَوَجَدَ مِنْ دُونِهِمُ امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا قَالَتَا لَا نَسْقِي حَتَّىٰ يُصَدِّقَ الرَّعَاءُ وَأَبُونَا شَيْخٌ كَبِيرٌ ②

سَقَىٰ لَهُمَا ثُمَّ تَوَلَّىٰ إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ إِنِّي لِمَا أَنْزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ③

فَجَاءَتْهُ إِحْدَاهُمَا تَشْتِي عَلَىٰ اسْتِغْيَارٍ قَالَتْ إِنَّ ابْنِي يَدْعُوكَ لِيَجْزِيَكَ أَجْرًا وَسَعِدْتَ لَنَا فَلَمَّا جَاءَهُ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ قَالَ لَا تَحْزَنْ جَعَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ④

1 व्याख्या कारों ने लिखा है कि वह आदरणीय शुऐब (अलैहिस्सलाम) थे जो मद्यन के नबी थे। (देखिये: इब्ने कसीर)

2 अर्थात् फिरऔनियों से।

26. कहा उन दोनों में से एक ने: हे पिता! आप इन को सेवक रख लें, सब से उत्तम जिसे आप सेवक बनायें वही हो सकता है जो प्रबल विश्वासनीय हो।
27. उस ने कहा: मैं चाहता हूँ कि विवाह दूँ तुम्हें अपनी इन दो पुत्रियों में से एक से, इस पर कि मेरी सेवा करोगे आठ वर्ष, फिर यदि तुम पूरा कर दो दस (वर्ष) तो यह तुम्हारी इच्छा है। मैं नहीं चाहता कि तुम पर बोझ डालूँ, और तुम मुझे पाओगे यदि अल्लाह ने चाहा तो सदाचारियों में से।
28. मूसा ने कहा: यह मेरे और आप के बीच (निश्चित) है। मैं दो में से जो भी अवधि पूरी कर दूँ, मुझ पर कोई अत्याचार न हो। और अल्लाह उस पर जो हम कह रहे हैं निरीक्षक है।
29. फिर जब पूरी कर ली मूसा ने अवधि और चला अपने परिवार के साथ तो उस ने देखी तूर (पर्वत) की ओर एक अग्नि। उस ने अपने परिवार से कहा: रुको मैं ने देखी है एक अग्नि, संभव है तुम्हारे पास लाऊँ वहाँ से कोई समाचार अथवा कोई अंगार अग्नि का ताकि तुम ताप लो।
30. फिर जब वह वहाँ आया तो पुकारा गया वादी के दायें किनारे से, शुभ क्षेत्र में वृक्ष से: हे मूसा! निःसंदेह मैं ही अल्लाह हूँ सर्वलोक का पालनहार।
31. और फेंक दो अपनी लाठी, फिर जब उसे देखा कि रेंग रही मानो वह कोई

قَالَتْ اِحْدَاهُمَا يَا بَتِ اسْتَاَجِرُكَ اِنْ خَيْرٍ مِّنْ اسْتَاَجَرْتُ الْقَوِيَّ الرَّامِيْنَ ۝

قَالَ اِنِّي اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ اِحْدَى ابْنَتِي لِهَاتَيْنِ عَلَى اَنْ تَاَجِرِيْنِي ثَمَنِيْ جِجِيْرًا اِنْ اَتَمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ وَمَا اُرِيْدُ اَنْ اَسْئَلُ عَلَيْكَ سَجْدَةً ۝ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ مِنَ الضّٰعِفِيْنَ ۝

قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ اَيُّمَا الْاَكْلِيْنَ قَضَيْتَ فَاَعْمَدُ وَاَنْ عَلَى نَوَالِ اللّٰهِ عَلَى مَا نَقُولُ وَكِتٰبٌ ۝

فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاهْلِهٖ اَنْسَ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ نَارًا قَالَ لِاَهْلِهٖ امْكُثُوْا اِنِّيْ اَسْتُنَاظِرُ نَارَ الْعَلِيِّ اَيْنَاكُمْ وَّمَهَا يَخْبِرُ اَوْ جَدَّ وَاَوْ مِنْ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۝

فَلَمَّا اَنْشَبَهَا نُورًا مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبْرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يُّمَسَّوْا اِنِّيْ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَاَهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا

सर्प हो तो भागने लगा पीठ फेर कर और पीछे फिर कर नहीं देखा। हे मूसा! आगे आ तथा भय न कर, वास्तव में तू सुरक्षितों में से है।

32. डाल अपना हाथ अपनी जेब में वह निकलेगा उज्ज्वल हो कर बिना किसी रोग के। और चिमटा ले अपनी ओर अपनी भुजा, भय दूर करने के लिये तो यह दो खुली निशानियाँ हैं तेरे पालनहार की ओर से फिर औन तथा उस के प्रमुखों के लिये, वास्तव में वह उल्लंघनकारी जाति है।

33. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मैं ने बघ किया है उन के एक व्यक्ति को। अतः मैं डरता हूँ कि वह मुझे मार देंगे।

34. और मेरा भाई हारून मुझ से अधिक सुभाषी है, तू उसे भी भेज दे मेरे साथ सहायक बना कर ताकि वह मेरा समर्थन करे, मैं डरता हूँ कि वह मुझे झुठला देंगे।

35. उस ने कहा: हम तुझे बाहुबल प्रदान करेंगे तेरे भाई द्वारा, और बनायेंगे तुम दोनों के लिये ऐसा प्रभाव कि वह तुम दोनों तक नहीं पहुँच सकेंगे अपनी निशानियों द्वारा, तुम दोनों तथा तुम्हारे अनुयायी ही ऊपर रहेंगे।

36. फिर जब मूसा उन के पास हमारी खुली निशानियाँ लाया, तो उन्होंने ने कह दिया कि यह तो केवल घड़ा हुआ जादू है और हम ने कभी नहीं सुनी यह बात अपने पूर्वजों के युग में।

جَاءَ قَوْمًا مُّؤْمِنِينَ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ أَيُّكُمْ قَوْمٌ يَّتَّبِعُونَ
وَلَا تَحْتَفِئْ إِيَّاكَ مِنَ الْإِيمَانِ ۝

أَسْلَكَ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْشَى بِيضَاءَ مِنْ
غَيْرِ سُوْدٍ وَأَضْمَرَ إِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ
فَذُنِبْ رِهَانًا مِنْ رَبِّكَ إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝

قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَأَخَافُ أَنْ
يَقْتُلُونِ ۝

وَإِخِي هَارُونَ هُوَ أَضْمَرُ مَعِيَ لِسَانًا فَأَرْسَلَهُ
مَعِيَ رِدْءًا يُصَدِّقُنِي إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ۝

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِأَخِيكَ وَجَعَلْنَا
لَكُمَا سُلْطَانًا فَلَا يَصِلُونَ إِلَيْكُمَا بِآيَاتِنَا
أَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغَالِبُونَ ۝

فَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَى بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَذَا
إِلَّا سِحْرٌ مُّؤْتَرَى وَمَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي آبَائِنَا
الْأَوَّلِينَ ۝

37. तथा मूसा ने कहा: मेरा पालनहार अधिक जानता है उसे जो मार्ग दर्शन लाया है उस के पास से और किस का अन्त अच्छा होना है? वास्तव में अत्याचारी सफल नहीं होंगे।
38. तथा फिरऔन ने कहा: हे प्रमुखो! मैं नहीं जानता तुम्हारा कोई पूज्य अपने सिवा। तो हे हामान! ईंटें पकवा कर मेरे लिये एक ऊँचा भवन बना दे। संभव है मैं झाँक कर देख लूँ मूसा के पूज्य को, और निश्चय मैं उसे समझता हूँ झूठों में से।
39. तथा घमंड किया उस ने तथा उस की सेनाओं ने धरती में अवैध, और उन्होंने ने समझा कि वह हमारी ओर वापिस नहीं लाये जायेंगे।
40. तो हम ने पकड़ लिया उसे और उस की सेनाओं को, फिर फेंक दिया हम ने उन्हें सागर में, तो देखो कि कैसा रहा अत्याचारियों का अन्त (परिणाम)।
41. और हम ने उन्हें बना दिया ऐसा अगुवा जो बुलाते हों नरक की ओर तथा प्रलय के दिन उन की सहायता नहीं की जायेगी।
42. और हम ने पीछे लगा दिया उन के संसार में धिक्कार को और प्रलय के दिन वह बड़ी दुर्दशा में होंगे।
43. और हम ने मूसा को पुस्तक प्रदान की इस के पश्चात् कि हम ने

وَقَالَ مُوسَى رَبِّي أَعْلَمُ بِمَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ مِنْ عِنْدِهِ وَمَنْ يَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٣٧﴾

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُمَا عَلِمْتُ لَكُم مِّنَ اللَّهِ عَيْرِي فَأَوْقِدْ لِي يَا هَامَانُ عَلَى الطِّينِ فَاجْعَلْ لِي صَرْحًا لَعَلِّي أَطَّلِعُ إِلَى اللَّهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي لَأَكْذِبُ يَمِينًا ﴿٣٨﴾

وَأَسْتَكْبِرُ هُوَ وَجُودُهُ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُوا أَنَّهُم إِلَيْنَا لَا يُرْجَعُونَ ﴿٣٩﴾

فَأَخَذْنَاهُ وَجُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿٤٠﴾

وَجَعَلْنَاهُمْ آيَةً يُدْعَوْنَ إِلَى الثَّوَرِ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا يُبْصَرُونَ ﴿٤١﴾

وَاتَّبَعْنَاهُمْ فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ هُمْ مِنَ الْمَقْبُوحِينَ ﴿٤٢﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِ مَا

विनाश कर दिया प्रथम समुदायों का, ज्ञान का साधन बना कर लोगों के लिये तथा मार्गदर्शन और दया ताकि वे शिक्षा लें।

44. और (हे नबी!) आप नहीं थे पश्चिमी दिशा में^[1] जब हम ने पहुँचाया मूसा की ओर यह आदेश और आप नहीं थे उपस्थितों^[2] में।

45. परन्तु (आप के समय तक) हम ने बहुत से समुदायों को पैदा किया फिर उन पर लम्बी अवधि बीत गई तथा आप उपस्थित न थे मद्यन के वासियों में कि सुनाते उन्हें हमारी आयतें और परन्तु हम ही रसूलों को भेजने^[3] वाले हैं।

46. तथा नहीं थे आप तूर के अंचल में जब हम ने उसे पुकारा, परन्तु आप के पालनहार की दया है, ताकि आप सतर्क करें जिन के पास नहीं आया कोई सचेत करने वाला आप से पूर्व, ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

47. तथा यदि यह बात न होती कि उन पर कोई आपदा आ जाती उन के कर्तूतों के कारण, तो कहते कि

أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولَىٰ بَصَائِرٍ
لِّلنَّاسِ وَهَدَىٰ ذُرِّيَّةَ لَعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٠﴾

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْعَرَبِ إِذْ فَضَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى
الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٢١﴾

وَلَكِنَّا أَنْشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ وَمَا كُنْتَ
تَأْوِيلًا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا
وَلَكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ﴿٢٢﴾

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَكِن رَحْمَةً
مِّن رَّبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَلَّيْتَهُمْ مِن نَّذِيرٍ
مِّن قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٣﴾

وَلَوْلَا أَن نُّصِيبَهُمْ مُّصِيبَةً يُعَذِّبَهُمُ
الْبَاطِلُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَائِلِينَ ﴿٢٤﴾

1 पश्चिमी दिशा से अभिप्राय तूर पर्वत का पश्चिमी भाग है जहाँ मूसा (अलैहिस्सलाम) को तौरात प्रदान की गई।

2 इन से अभिप्राय वह बनी ईसाईल है जिन से धर्मबिधान प्रदान करते समय उस का पालन करने का वचन लिया गया था।

3 भावार्थ यह है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हज़ारो वर्ष पहले के जो समाचार इस समय सुना रहे हैं जैसे आँखों से देखे हों वह अल्लाह की ओर से वही के कारण ही सुना रहे हैं जो आप के सच्चे नबी होने का प्रमाण है।

हमारे पालनहार तू ने क्यों नहीं भेजा हमारी ओर कोई रसूल कि हम पालन करते तेरी आयतों का, और हो जाते ईमान वालों में से।^[1]

48. फिर जब आ गया उन के पास सत्य हमारे पास से तो कह दिया कि क्यों नहीं दिया गया उसे वही जो मूसा को (चमत्कार) दिया गया, तो क्या उन्होंने ने कुफ़्र (इन्कार) नहीं किया उस का जो मूसा दिये गये इस से पूर्व? उन्होंने ने कहा: दो^[2] जादूगर हैं दोनों एक-दूसरे के सहायक हैं। और कहा: हम किसी को नहीं मानते।

49. (हे नबी!) आप कह दें: तब तुम्हीं ला दो कोई पुस्तक अल्लाह की ओर से जो अधिक मार्ग दर्शक हो इन दोनों^[3] से, मैं चलूँगा उस पर यदि तुम सच्चे हो।

50. फिर भी यदि वे पूरी न करें आप की माँग, तो आप जान लें कि वे अपनी मनमानी कर रहे हैं, और उस से अधिक कुपथ कौन है जो मनमानी करे अपनी अल्लाह की ओर से बिना किसी मार्गदर्शन के? वास्तव में अल्लाह सुपथ नहीं दिखाता है अत्याचारी लोगों को।

رَسُولًا فَتَنْبِئْهُم بِآيَاتِكَ وَتَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٠﴾

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالَ الْوَالِدُ الْأُتُبِيُّ مِثْلَ مَا أُوتِيَ مُوسَىٰ أَوْ لَوْ كُنْتُمْ مُعْتَدِلِينَ ﴿٥١﴾
بِمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ قَالُوا سِحْرَانِ
تَطَّهَّرْنَا بِسُورَةِ الْأِنْبَاءِ لَكُلِّ كَفْرٍ وَن ﴿٥٢﴾

قُلْ قَاتُوا إِلَهُكُمْ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ هُوَ أهدى
مِنْهُمَا إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٥٣﴾

وَإِنْ كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِنْهَا لَمَّا نَزَّلْنَا الْكُتُبَ عَلَى الْمُرْسَلِينَ أَعْرَضُوا عَنْهَا وَأَمْرُهُمْ شُكْرٌ وَكُفْرٌ وَكَانُوا مُسْتَعْذِلِينَ ﴿٥٤﴾
أَهْوَاءَهُمْ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوَاهُ بِغَيْرِ
هُدًى مِنَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظَّالِمِينَ ﴿٥٥﴾

- 1 अर्थात् आप को उन की ओर रसूल बना कर इस लिये भेजा है ताकि प्रलय के दिन उन को यह कहने का अवसर न मिले कि हमारे पास कोई रसूल नहीं आया ताकि हम ईमान लाते।
- 2 अर्थात् मूसा (अलैहिस्सलाम) तथा उन के भाई हारून (अलैहिस्सलाम)। और भावार्थ यह है कि चमत्कारों की माँग, न मानने का एक बहाना है।
- 3 अर्थात् कुर्आन और तौरात से।

51. और (हे नबी!) हम ने निरन्तर पहुँचा दिया है उन को अपनी बात, (कुर्आन) ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।
52. जिन को हम ने प्रदान की है पुस्तक^[1] इस (कुर्आन) से पहले वह^[2] इस पर ईमान लाते हैं।
53. तथा जब उन्हें सुनाया जाता है तो कहते हैं: हम इस (कुर्आन) पर ईमान लाये, वास्तव में वह सत्य है हमारे पालनहार की ओर से, हम तो इस के (उतारने के) पहले ही से मुस्लिम हैं।^[3]
54. यही दिये जायेंगे अपना बदला दुहरा^[4] अपने धैर्य के कारण, और वह दूर करते हैं अच्छाई के द्वारा बुराई को। और उस में से जो हम ने उन्हें दिया है दान करते हैं।
55. और जब वह सुनते हैं व्यर्थ बात तो विमुख हो जाते हैं उस से। तथा कहते हैं: हमारे लिये हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिये तुम्हारे कर्माँ सलाम है तुम पर हम (उलझना) नहीं चाहते आज्ञानों से।
56. (हे नबी!) आप सुपथ नहीं दर्शा सकते जिसे चाहें,^[5] परन्तु अल्लाह

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥١﴾

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِهِ هُمْ بِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾

وَإِذْ يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُ الْكِتَابِ وَإِنَّهُمْ لَرَبَّنَا آتِلُونَ ﴿٥٣﴾

أُولَٰئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُمْ مَرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٥٤﴾

وَإِذْ أَسْمِعُوا لِلْقَوْمِ آيَاتِنَا وَقَالُوا لَئِنَّا عَمِلْنَا وَلَا لَكُمْ أَعْمَالُكُمْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَا تَبْغِي الْجَاهِلِينَ ﴿٥٥﴾

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ

1 अर्थात तौरात तथा इंजील।

2 अर्थात उन में से जिन्होंने ने अपनी मूल पुस्तक में परिवर्तन नहीं किया है।

3 अर्थात आज्ञाकारी तथा एकेश्वरवादी हैं।

4 अपनी पुस्तक तथा कुर्आन दोनों पर ईमान लाने के कारण। (देखिये: सहीह बुखारी -97, मुस्लिम- 154)

5 हदीस में वर्णित है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के (काफिर)

सुपथ दर्शाता है जिसे चाहे, और वह भली - भाँति जानता है सुपथ प्राप्त करने वालों को।

57. तथा उन्होंने ने कहा: यदि हम अनुसरण करें मार्ग दर्शन का आप के साथ, तो अपनी धरती से उचक^[1] लिये जायेंगे। क्या हम ने निवास स्थान नहीं बनाया है उन के लिये भयरहित ((हरम))^[2] को उन के लिये, खिंचे चले आ रहे हैं जिस की ओर प्रत्येक प्रकार के फल जीविका स्वरूप हमारे पास से? और परन्तु उन में से अधिकतर लोग नहीं जानते।
58. और हम ने विनाश कर दिया बहुत सी बस्तियों का इतराने लगी जिन की जीविका। तो यह हैं उन के घर जो आबाद नहीं किये गये उन के पश्चात् परन्तु बहुत थोड़े और हम ही उत्तराधिकारी रह गये।
59. और नहीं है आप का पालन- हार विनाश करने वाला बस्तियों को जब तक उन के केन्द्र में कोई रसूल नहीं भेजता जो पढ़ कर सुनाये उन के समक्ष हामरी आयतें, और हम बस्तियों का विनाश करने वाले नहीं परन्तु जब

يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٥٧﴾

وَقَالُوا إِنَّا تَتَّبِعِ الْهُدَىٰ مَعَكَ نَتَّخِظُ مِنْ
أَرْضِنَا أَوْ لَعْنَتِكُمْ لَكُمُ حَرَمًا مِمَّا يُحِبُّ إِلَيْهِ
تَمَرْتُ كُلُّ شَيْءٍ رَمَّ قَامِنٌ لَدُنَّا وَلَكِنَّ
أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٨﴾

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ بَطَرَتْ مَعِشَتَهَا عَمَلَتِكَ
مَسَكِنُهُمْ أَمْ تَتَّكِنُ مِنْ بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا
وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ﴿٥٩﴾

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُولَاهَا
رَسُولًا يَتْلُو عَلَيْهِمُ آيَاتِنَا وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي
الْقُرَىٰ إِلَّا وَآهْلُهَا ظَالِمُونَ ﴿٥٩﴾

चाचा अबू तालिब के निधन का समय हुआ, तो आप उन के पास गये। उस समय उन के पास अबू जहल तथा अब्दुल्लाह बिन अबि उमय्या उपस्थित थे। आप ने कहा: चाचा ((ला इलाहा इल्लल्लाह)) कह दें ताकि मैं क्यामत के दिन अल्लाह से आप की क्षमा के लिये सिफारिश कर सकूँ। परन्तु दोनों के कहने पर उन्होंने ने अस्वीकार कर दिया और उन का अन्त कुफ़्र पर हुआ। इसी विषय में यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी हदीस नं०, 4772)

- 1 अर्थात् हमारे विरोधी हम पर आक्रमण कर देंगे।
2 अर्थात् मक्का नगर को।

उस के निवासी अत्याचारी हों।

60. तथा जो कुछ तुम दिये गये हो वह संसारिक जीवन का सामान तथा उस की शोभा है। और जो अल्लाह के पास है उत्तम तथा स्थायी है, तो क्या तुम समझते नहीं हो?
61. तो क्या जिसे हम ने वचन दिया है एक अच्छा वचन और वह पाने वाला हो उसे, उस के जैसा हो सकता है जिसे हम ने दे रखा है संसारिक जीवन का सामान फिर वह प्रलय के दिन उपस्थित किये लोगों में से होगा?^[1]
62. और जिस दिन वह^[2] उन्हें पुकारेगा, तो कहेगा: कहाँ हैं मेरे साझी जिन्हें तुम समझ रहे थे?
63. कहेंगे वह जिन पर सिद्ध हो चुकी है यह बात^[3]: हे हमारे पालनहार! यही है जिन्हें हम ने बहका दिया, और हम ने इन को बहकाया जैसे हम बहके, हम उन से अलग हो रहे हैं तेरे समक्ष, यह हमारी पूजा^[4] नहीं कर रहे थे।
64. तथा कहा जायेगा: पुकारो अपने साझियों को। तो वे पुकारेंगे, और वह उन्हें उत्तर तक नहीं देंगे, तथा वह यातना देख लेंगे तो कामना करेंगे कि उन्होंने सुपथ अपनाया होता!

وَمَا أُوتِيتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَزِينَتُهَا وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَى
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٠﴾

أَمَنْ وَعَدْنَاهُ وَعَدْنَا حَسَنًا فَهَوْلَ لِقَائِهِ كَيْسٌ مِمَّنَّعْتَهُ
مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ
الْمُحْضَرِينَ ﴿٦١﴾

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَاءِيَ الَّذِينَ
كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٦٢﴾

قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ
الَّذِينَ كُنَّا نَعْبُدُهُمْ كَمَا عَابَدْنَاكَ إِنَّا إِلَيْكَ
مَا كُنَّا لِلْإِنْسَانِ عَابِدُونَ ﴿٦٣﴾

وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمُ فَلَمْ
يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ لَوْ أَنَّهُمْ
كَانُوا يَهْتَدُونَ ﴿٦٤﴾

1 अर्थात दण्ड और यातना का अधिकारी होगा।

2 अर्थात अल्लाह प्रलय के दिन पुकारेगा।

3 अर्थात दण्ड और यातना के अधिकारी होने की।

4 यह हमारे नहीं बल्कि अपने मन के पूजारी थे।

65. और वह (अल्लाह) उस दिन उन को पुकारेगा, फिर कहेगा: तुम ने क्या उत्तर दिया रसूलों को?
66. तो नहीं सूझेगा उन्हें कोई उत्तर उस दिन और न वह एक-दूसरे से प्रश्न कर सकेंगे।
67. फिर जिस ने क्षमा माँग ली^[1] तथा ईमान लाया और सदाचार किया, तो आशा कर सकता है कि वह सफल होने वालों में से होगा।
68. और आप का पालनहार उत्पन्न करता है जो चाहे, तथा निर्वाचित करता है। नहीं है उन के लिये कोई अधिकार, पवित्र है अल्लाह तथा उच्च है उन के साझी बनाने से।
69. और आप का पालनहार ही जानता है जो छुपाते हैं उन के दिल तथा जो व्यक्त करते हैं।
70. तथा वही अल्लाह^[2] है कोई वन्दनीय (सत्य पूज्य) नहीं है उस के सिवा, उसी के लिये सब प्रशंसा है लोक तथा परलोक में तथा उसी के लिये शासन है और तुम उसी की ओर फेरे^[3] जाओगे।
71. (हे नबी!) आप कहिये: तुम बताओ कि यदि बना दे तुम पर रात्रि को निरन्तर क्यामत के दिन तक, तो

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ
الْمُرْسَلِينَ ﴿٦٥﴾

فَعَبِدْتَ عَلَيْهِمْ أَلْبَانًا يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا
يَسْتَأْذِنُونَ ﴿٦٦﴾

فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَىٰ أَنْ
يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ﴿٦٧﴾

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ مَا كَانَ لَهُمُ
الْخِيَرَةُ سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٨﴾

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٦٩﴾

وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ فِي الْأُولَىٰ
وَالْآخِرَةِ وَالْأُولَىٰ وَالْآخِرَةُ وَهُوَ الَّذِي يُرْجِعُ الشُّعُورَ ﴿٧٠﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ الْكَيْلَ سَرْمَدًا
إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مِنْ إِلَهٍ غَيْرِ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِضِيَاءٍ

1 अर्थात संसार में से।

2 अर्थात जो उत्पत्ति करता तथा सब अधिकार और ज्ञान रखता है।

3 अर्थात हिसाब और प्रतिफल के लिये।

कौन पूज्य है अल्लाह के सिवा जो ला दे तुम्हारे पास प्रकाश? तो क्या तुम सुनते नहीं हो?

72. आप कहिये: तुम बताओ, यदि अल्लाह कर दे तुम पर दिन को निरन्तर क्यामत के दिन तक, तो कौन पूज्य है अल्लाह के सिवा जो ला दे तुम्हारे पास रात्रि जिस में तुम शान्ति प्राप्त करो, तो क्या तुम देखते नहीं^[1] हो?

73. तथा अपनी दया ही से उस ने बनाये हैं तुम्हारे लिये रात्रि तथा दिन ताकि तुम शान्ति प्राप्त करो उस में और ताकि तुम खोज करो उस के अनुग्रह(जीविका) की, और ताकि तुम उस के कृतज्ञ बनो।

74. और अल्लाह जिस दिन उन्हें पुकारेगा, तो कहेगा: कहाँ है वे जिन को तुम मेरा साझी समझ रहे थे?

75. और हम निकाल लायेंगे प्रत्येक समुदाय से एक गवाह, फिर कहेंगे: लाओ अपने^[2] तर्क? तो उन्हें ज्ञान हो जायेगा कि सत्य अल्लाह ही की ओर है, और उन से खो जायेंगी जो बातें वे घड़ रहे थे।

76. कारून^[3] था मूसा की जाति में से। फिर उस ने अत्याचार किया उन पर, और हम ने उसे प्रदान किया

أَفَلَا تَسْمَعُونَ ۝

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَمَوَاتٍ
إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مِنْ إِلَهِ غَيْرِ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِلَيْلٍ
تَسْكُنُونَ فِيهَا أَفَلَا تُبْصِرُونَ ۝

وَمِنْ نَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا
فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ۝

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَاءِيَ الَّذِينَ
كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ۝

وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا
بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ
مَا كَانُوا يَفْتُرُونَ ۝

إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مَوْسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ
وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوءُ

1 अर्थात रात्रि तथा दिन के परिवर्तन को।

2 अर्थात शिर्क के प्रमाण।

3 यहाँ से धन के गर्व तथा उस के दुष्परिणाम का एक उदाहरण दिया जा रहा है कि कारून, मूसा (अलैहिस्सलाम) के युग का एक धनी व्यक्ति था।

इतने कोष कि उस की कुंजियाँ भारी थीं एक शक्तिशाली समुदाय पर। जब कहा उस से उस की जाति ने: मत इतरा, वास्तव में अल्लाह प्रेम नहीं करता है इतराने वालों से।

بِالْعَصْبَةِ أُولَى الْقُوَّةِ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ
لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ۝

77. तथा खोज कर उस से जो दिया है अल्लाह ने तुझे आखिरत (परलोक) का घर, और मत भूल अपना संसारिक भाग और उपकार कर जैसे अल्लाह ने तुझ पर उपकार किया है। तथा मत खोज कर धरती में उपद्रव की, निश्चय अल्लाह प्रेम नहीं करता है उपद्रवियों से।

وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ وَلَا تَنْسَ
نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنْ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ
إِلَيْكَ وَلَا تَتَّبِعِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ ۝
إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ۝

78. उस ने कहा: मैं तो उसे दिया गया हूँ बस अपने ज्ञान के कारण। क्या उसे यह ज्ञान नहीं हुआ कि अल्लाह ने विनाश किया है उस से पहले बहुत से समुदायों को जो उस से अधिक थे धन तथा समूह में, और प्रश्न नहीं किया जाता^[1] अपने पापों के सम्बंध में अपराधियों से।

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِنْدِي ۚ أَوَلَمْ يَعْلَمْ
أَنَّ اللَّهَ ذَا أَهْلِكَ مِنْ قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ
أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَأَكْثَرَ جَمْعًا وَلَا يَسْتَلْ عَنْ
ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ۝

79. एक दिन वह निकला अपनी जाति पर अपनी शोभा में, तो कहा उन लोगों ने जो चाहते थे संसारिक जीवन: क्या ही अच्छा होता कि हमारे लिये (भी) उसी के समान (धन- धान्य) होता जो दिया गया है क़ारून को! वास्तव में वह बड़ा शौभाग्यशाली है।

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ ۚ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ
الْحَيَاةَ الدُّنْيَا يَا لَيْلَىٰ لَنَا مِثْلَ مَا أُوتِيَ قَارُونُ ۗ
إِنَّهُ لَدْ وَحِظٌ عَظِيمٌ ۝

80. तथा उन्होंने ने कहा जिन को ज्ञान

وَقَالَ الَّذِينَ
أُوتُوا الْعِلْمَ وَيَلَكُمْ تَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ

1 अर्थात् विनाश के समय।

दिया गया: तुम्हारा बुरा हो! अल्लाह का प्रतिकार उस के लिये उत्तम है जो ईमान लाये तथा सदाचार करे, और यह सोच धैर्यवानों ही को मिलती है।

81. अन्ततः हम ने धंसा दिया उस के तथा उस के घर सहित धरती को, तो नहीं रह गया उस का कोई समुदाय जो सहायता करे उस की अल्लाह के आगे, और न वह स्वयं अपनी सहायता कर सका।
82. और जो कामना कर रहे थे उस के स्थान की कल, कहने लगे: क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह अधिक कर देता है जीविका जिस के लिये चाहता हो अपने दासों में से और नाप कर देता है (जिसे चाहता है)। यदि हम पर उपकार न होता अल्लाह का, तो हमें भी धंसा देता। क्या तुम देखते नहीं कि काफ़िर (कृतघ्न) सफल नहीं होते।
83. यह परलोक का घर (स्वर्ग) है हम उसे विशेष कर देंगे उन के लिये जो नहीं चाहते बड़ाई करना धरती में और न उपद्रव करना, और अच्छा परिणाम आज्ञा- कारियों^[1] के लिये है।
84. जो भलाई लायेगा उस के लिये उस से उत्तम (भलाई) है। और जो बुराई लायेगा तो नहीं बदला दिया जायेगा उन को जिन्होंने बुराईयाँ की हैं

لَمِنَ اٰمَنٍ وَعَمِلَ صَالِحًا ۗ وَلَا يُلَاقِيهَا اِلَّا
الظَّٰمِرُونَ ﴿٢٠﴾

فَخَسَفْنَا بِهٖ وَيَدَارِہٖ الْاَرْضَ ۗ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ ذُرِّيَّةٍ
يَبْصُرُوْنَہٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰہِ ۗ وَمَا كَانَ مِنَ
السَّٰعِیْرِیْنَ ﴿٢١﴾

وَاصْبِرْ لِّلَّذِیْنَ تَمَنَّوْا مَکَانَہٗ بِالْاَرْضِ یَقُولُوْنَ
وَلَیْسَ اِنَّ اللّٰہَ یَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِہٖ
وَقَدْرًا ۗ لَوْ اَنَّ مِنْ اِنۡسَ اللّٰہِ عَلَیۡنَا لَخَسَفَ بِنَا ۗ
وَلَیْسَ اِنَّہٗ لَا یَفۡرِہُ الْکٰفِرُوْنَ ﴿٢٢﴾

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجَعَلَهَا لِمَنْ یَّشَآءُ
لَا یُرِیدُ وَّنَ عَلٰوٰی اِلَّا الْاَرْضَ ۗ وَلَا فَسَادًا وَّ الْعَاقِبَةُ
لِلْمُتَّقِیْنَ ﴿٢٣﴾

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَیْرٌ مِّمَّا اُوْمِنَ جَاءَ
بِالسَّیِّئَةِ ۗ فَلَا یُجْزٰی الَّذِیۡنَ عَمِلُوا السَّیِّئَاتِ
اِلَّا مَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾

1 इस में संकेत है कि धरती में गर्व तथा उपद्रव का मूलाधार अल्लाह की अवैज्ञा है।

परन्तु वही जो वे करते रहे।

85. और (हे नबी!) जिस ने आप पर कुर्आन उतारा है वह आप को लौटाने वाला है आप के नगर (मक्का) की^[1] ओर। आप कह दें कि मेरा पालनहार भली-भाँति जानने वाला है कि कौन मार्गदर्शन लाया है, और कौन खुले कृपथ में है।

86. और आप आशा नहीं रखते थे कि अवतरित की जायेगी आप की ओर यह पुस्तक^[2], परन्तु यह दया है आप के पालनहार की ओर से अतः आप कदापि न हों सहायक काफिरों के।

87. और वह आप को न रोके अल्लाह की आयतों से इस के पश्चात् जब उतार दी गई आप की ओर, और बुलाते रहें अपने पालनहार की ओर। और कदापि आप न हों मुशरिकों में से।

88. और आप न पुकारें किसी अन्य पूज्य को अल्लाह के साथ, नहीं है कोई वंदनीय (सत्य पूज्य) उस (अल्लाह) के सिवा। प्रत्येक वस्तु नाशवान है सिवाय उस के स्वरूप के। उसी का शासन है और उसी की ओर तुम सब फेरे^[3] जाओगे।

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَأْدُكَ إِلَى
مَعَادِهِ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَى
وَمَنْ هُوَ قَبِيحٌ ضَالٌّ مُبِينٌ ۝

وَمَا كُنْتَ تَرْجُو أَنْ يُلْقَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ
إِلَّا رَحْمَةً مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا
لِّلْكَافِرِينَ ۝

وَلَا يَصُدُّكَ عَنِ الْبَيْتِ اللَّهُ بَعْدَ إِذْ أَنْزَلْنَا
إِلَيْكَ وَأَدْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ ۝

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ كُلُّ
شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ ۝

1 अर्थात् आप जिस शहर मक्का से निकाले गये हैं उसे विजय कर लेंगे। और यह भविष्य वाणी सन् 8 हिज्री में पूरी हुई (सहीह बुखारी: 4773)

2 अर्थात् कुर्आन पाक।

3 अर्थात् प्रलय के दिन हिसाब तथा अपने कर्मों का फल पाने के लिये।

सूरह अन्कबूत - 29



सूरह अन्कबूत के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 69 आयतें हैं।

- इस सूरह का यह नाम इस की आयत नं० (41) में आये हुये शब्द ((अन्कबूत)) से लिया गया है। जिस का अर्थ मकड़ी है। इस सूरह में, जो अल्लाह के सिवा दूसरों को अपना संरक्षक बनाते हैं उन की उपमा मकड़ी से दी गई है। जिस का घर सब से अधिक निर्बल होता है। इसी प्रकार मुश्रिकों का भी कोई सहारा नहीं होगा।
- इस में उन लोगों को निर्देश दिये गये हैं जो ईमान लाने के कारण सताये जाते हैं और अनेक प्रकार की परीक्षाओं से जूझते हैं। और कई नबियों के उदाहरण दिये गये हैं जिन्होंने अपनी जातियों के अत्याचार का सामना किया। और धैर्य के साथ सत्य तथा तौहीद पर स्थित रहे और अन्ततः सफल हुये।
- इस में मुश्रिकों के लिये सोच-विचार का आमंत्रण तथा विरोधियों के संदेहों का निवारण किया गया है। और तौहीद तथा परलोक की वास्तविकता की ओर ध्यान दिलाया गया है और उस के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं।
- अन्तिम आयत में अल्लाह की राह में प्रयास करने पर उस की सहायता और उस के वचन के पूरा होने की ओर संकेत किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़, लाम, मीम।
2. क्या लोगों ने समझ रखा है कि वह छोड़ दिये जायेंगे कि वह कहते हैं, हम ईमान लाये और उन की परीक्षा नहीं ली जायेगी?

الْعَنَكَبُوتِ

أَحْسَبَ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ

3. और हम ने परीक्षा ली है उन से पूर्व के लोगों की, तो अल्लाह अवश्य जानेगा^[1] उन को जो सच्चे हैं, तथा अवश्य जानेगा झूठों को।
4. क्या समझ रखा है उन लोगों ने जो कुकर्म कर रहे हैं कि हम से अग्रसर^[2] हो जायेंगे? क्या ही बुरा निर्णय कर रहे हैं!
5. जो आशा रखता हो अल्लाह से मिलने^[3] की, तो अल्लाह की ओर से निर्धारित किया हुआ समय^[4] अवश्य आने वाला है। और वह सब कुछ सुनने जानने^[5] वाला है।
6. और जो प्रयास करता है तो वह प्रयास करता है अपने ही भले के लिये, निश्चय अल्लाह निस्पृह है संसार वासियों से।
7. तथा जो लोग ईमान लाये और सदाचार किये, हम अवश्य दूर कर देंगे उन से उन की बुराईयाँ, तथा उन्हें प्रतिफल देंगे उन के उत्तम कर्मों का।
8. और हम ने निर्देश दिया मनुष्य को अपने माता-पिता के साथ उपकार

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ
الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَذِبِينَ ﴿١﴾

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ أَنْ
يَسْبِقُونَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٢﴾

مَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ اللَّهِ فَإِنْ أَجَلَ اللَّهُ لَاتٍ
وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣﴾

وَمَنْ جُهَدًا فَاتَمَّا بِجَاهِدٍ لِنَفْسِهِ إِنَّ اللَّهَ
لَعَزِيزٌ عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿٤﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ
عَنَّهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِي
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٥﴾

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا وَإِنْ

- 1 अर्थात् आपदाओं द्वारा परीक्षा ले कर जैसा कि उस का नियम है उन में विवेक कर देगा। (इब्ने कसीर)
- 2 अर्थात् हमें विवश कर देंगे और हमारे नियंत्रण में नहीं आयेंगे।
- 3 अर्थात् प्रलय के दिन।
- 4 अर्थात् प्रलय का दिन।
- 5 अर्थात् प्रत्येक के कथन और कर्म को उस का प्रतिकार देने के लिये।

करने का^[1], और यदि दोनों दबाव डालें तुम पर कि तुम साझी बनाओ मेरे साथ उस चीज़ को जिस का तुम को ज्ञान नहीं, तो उन दोनों की बात न मानो^[2] मेरी ओर ही तुम्हें फिर कर आना है, फिर मैं तुम्हें सूचित कर दूँगा उस कर्म से जो तुम करते रहे हो।

9. और जो ईमान लाये तथा सदाचार किये हम उन्हें अवश्य सम्मिलित कर देंगे सदाचारियों में।
10. और लोगों में वे (भी) हैं जो कहते हैं कि हम ईमान लाये अल्लाह पर। फिर जब सताये गये अल्लाह के बारे में तो समझ लिया लोगों की परीक्षा को अल्लाह की यातना के समान। और यदि आ जाये कोई सहायता आप के पालनहार की ओर से, तो अवश्य कहेंगे कि हम तुम्हारे साथ थे। तो क्या अल्लाह भली-भाँति अवगत नहीं है उस से जो संसारवासियों के दिलों में है?
11. और अल्लाह अवश्य जान लेगा उन को जो ईमान लाये हैं, तथा अवश्य जान लेगा द्विधावादियों^[3] को।
12. और कहा काफिरों ने उन से जो

جَهْدَكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ
فَلَا تُطِعْهُمَا ۗ إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأُنَبِّئُكُم بِمَا
كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ
فِي الصَّالِحِينَ ﴿١٠﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ
فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللَّهِ
وَلَيْنَ جَاءَ نَصْرٌ مِّنَ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ إِنَّا كُنَّا
مَعَهُ أَوْلِيَاءَ أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ
الْعَالَمِينَ ﴿١١﴾

وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ
الْمُنَافِقِينَ ﴿١٢﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا اتَّبِعُوا

- 1 हदीस में है कि जब साद बिन अबी वक्कास इस्लाम लाये तो उन की माँ ने दबाव डाला और शपथ ली कि जब तक इस्लाम न छोड़ दें वह न उन से बात करेगी और न खायेगी न पियेगी, इसी पर यह आयत उतरी (सहीह मुस्लिम: 1748)
- 2 इस्लाम का यह नियम है जैसा कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि ((किसी के आदेश का पालन अल्लाह की अवैज्ञा मैं नहीं है।)) (मुस् नद अहमद-1|66, सिलसिला सहीहा- अल्बानी: 179)
- 3 अर्थात् जो लोगों के भय के कारण दिल से ईमान नहीं लाते।

ईमान लाये हैं: अनुसरण करो हमारे पथ का, और हम भार ले लेंगे तुम्हारे पापों का, जब की वह भार लेने वाले नहीं हैं उन के पापों का कुछ भी, वास्तव में वह झूठे हैं।

13. और वह अवश्य प्रभारी होंगे अपने बोझों के और कुछ^[1] बोझों के अपने बोझों के साथ, और उन से अवश्य प्रश्न किया जायेगा प्रलय के दिन उस झूठ के बारे में जो घड़ते रहे।

14. तथा हम^[2] ने भेजा नूह को उस की जाति की ओर, तो वह रहा उन में हजार वर्ष किन्तु पचास^[3] वर्ष, फिर उन्हें पकड़ लिया तूफान ने, तथा वे अत्याचारी थे।

15. तो हम ने बचा लिया उस को और नाव वालों को, और बना दिया उसे एक निशानी (शिक्षा) विश्व वासियों के लिये।

16. तथा इब्राहीम को जब उस ने अपनी जाति से कहा: इबादत (वंदना) करो अल्लाह की तथा उस से डरो, यह तुम्हारे लिये उत्तम है यदि तुम जानो।

17. तुम तो अल्लाह के सिवा बस उन की वंदना कर रहे हो जो मूर्तियाँ हैं, तथा तुम झूठ घड़ रहे हो, वास्तव में जिन

سَيِّئَاتِنَا وَتَحْمِيلُ خَطِيئَتِكُمْ وَمَا هُمْ بِحَمِيلِينَ
مِنْ خَطِيئَتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٠﴾

وَالْحَمِيلُونَ أَتَقَالَهُمْ وَأَتَقَالَا مَعَهُ أَتَقَالَهُمْ
وَلَيْسَتُنَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَمَّا كَانُوا يَفْتُرُونَ ﴿١١﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ
سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ
وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١٢﴾

فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً
لِّلْعَالَمِينَ ﴿١٣﴾

وَأِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ
ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٤﴾

إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا
وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ

1 अर्थात् दूसरों को कुपथ करने के पापों का।

2 यहाँ से कुछ नबियों की चर्चा की जा रही है जिन्होंने ने धैर्य से काम लिया।

3 अर्थात् नूह (अलैहिस्सलाम) (950) वर्ष तक अपनी जाति में धर्म का प्रचार करते रहे।

को तुम पूज रहे हो अल्लाह के सिवा वे नहीं अधिकार रखते हैं तुम्हारे लिये जीविका देने का। अतः खोज करो अल्लाह के पास जीविका की तथा इबादत (वंदना) करो उस की और कृतज्ञ बनो उस के, उसी की ओर तुम फेरे जाओगे।

18. और यदि तुम झुठलाओ तो झुठलाया है बहुत से समुदायों ने तुम से पहले, और नहीं है रसूल^[1] का दायित्व परन्तु खुला उपदेश पहुँचा देना।
19. क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि अल्लाह ही उत्पत्ति का आरंभ करता है फिर उसे दुहरायेगा^[2], निश्चय यह अल्लाह पर अति सरल है।
20. (हे नबी!) कह दें कि चलो- फिरो धरती में फिर देखो कि उस ने कैसे उत्पत्ति का आरंभ किया है, फिर अल्लाह दूसरी बार भी उत्पन्न^[3] करेगा, वास्तव में अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
21. वह यातना देगा जिसे चाहेगा तथा दया करेगा जिस पर चाहेगा, और उसी की ओर तुम फेरे जाओगे।
22. तुम उसे विवश करने वाले नहीं हो, न धरती में न आकाश में, तथा नहीं है तुम्हारा उस के सिवा कोई

مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَاتَّبِعُوا
عِنْدَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا
لَهُ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٥﴾

وَإِنْ تَكْفُرْ بُوَافَقْتُمْ كَذَّبَ أَمْرٌ مِّنْ
قَبْلِكُمْ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ
الْمُبِينُ ﴿٥﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ
يُعِيدُهُمْ وَإِن ذَلِك عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٦﴾

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ
بَدَأَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ
الْآخِرَةَ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٧﴾

يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَشَاءُ
وَالِيهِ تُقْلَبُونَ ﴿٨﴾

وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي
السَّمَاءِ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ

1 अर्थात् अल्लाह का उपदेश मनवा देना रसूल का कर्तव्य नहीं है।

2 इस आयत में आखिरत (परलोक) के विषय का वर्णन किया जा रहा है।

3 अर्थात् प्रलय के दिन कर्मा का प्रतिफल देने के लिये।

संरक्षक और न सहायक।

23. तथा जिन लोगों ने इन्कार किया अल्लाह की आयतों और उस से मिलने का, वही निराश हो गये हैं मेरी दया से और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।
24. तो उस (इब्राहीम) की जाति का उत्तर बस यही था कि उन्हीं ने कहा: इसे बध कर दो या इसे जला दो, तो अल्लाह ने उसे बचा लिया अग्नि से। वास्तव में इस में बड़ी निशानियाँ हैं उन के लिये जो ईमान रखते हैं।
25. और कहा: तुम ने तो अल्लाह को छोड़ कर मूर्तियों को प्रेम का साधन बना लिया है अपने बीच संसारिक जीवन में, फिर प्रलय के दिन तुम एक-दूसरे का इन्कार करोगे तथा धिक्कारोगे एक-दूसरे को, और तुम्हारा आवास नरक होगा, और नहीं होगा तुम्हारा कोई सहायक।
26. तो मान लिया उस को लूत^[1] ने, और इब्राहीम ने कहा: मैं हिजरत कर रहा हूँ अपने पालनहार^[2] की ओर। निश्चय वही प्रबल तथा गुणी है।
27. और हम ने प्रदान किया उसे इसहाक तथा याकूब तथा हम ने रख दी उस की संतान में नबूवत तथा पुस्तक,

وَلَا تَصْبِرُونَ

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ أُولَئِكَ يَكْفُرُونَ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ إِيمَانِهِ لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْكٰفِرِينَ ﴿٢٣﴾

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا اقْتُلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنْجَاهُ اللَّهُ مِنَ النَّارِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢٤﴾

وَقَالَ إِنَّمَا اتَّخَذْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُم بِبَعْضٍ وَيَلْعَنُ بَعْضُكُم بَعْضًا وَمَأْوٰلِكُمُ النَّارُ وَمَالِكُمْ مِّن لَّصْرِينَ ﴿٢٥﴾

فَأَمِّن لَّهُ لَوْطًا وَقَالَ إِنِّي مُهَاجِرٌ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٦﴾

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَآتَيْنَاهُ أَجْرًا

1 लूत (अलैहिस्सलाम) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के भतीजे थे। जो उन पर ईमान लाये।

2 अर्थात अल्लाह के आदेशानुसार शाम जा रहा हूँ।

और हम ने प्रदान किया उसे उस का प्रतिफल संसार में, और निश्चय वह परलोक में सदाचारियों में से होगा।

28. तथा लूत को (भेजा)। जब उस ने अपनी जाति से कहा: तुम तो वह निर्लज्जा कर रहे हो जो तुम से पहले नहीं किया है किसी ने संसार वासियों में से।
29. क्या तुम पुरुषों के पास जाते हो, और डकैती करते हो तथा अपनी सभाओं में निर्लज्जा के कार्य करते हो? तो नहीं था उस की जाति का उत्तर इस के अतिरिक्त कि उन्होंने ने कहा: तू ला दे हमारे पास अल्लाह की यातना, यदि तू सच्चों में से है।
30. लूत ने कहा: मेरे पालनहार! मेरी सहायता कर उपद्रवी जाति पर।
31. और जब आये हमारे भेजे हुये (फरिश्ते) इब्राहीम के पास शुभ सूचना ले कर, तो उन्होंने ने कहा: हम विनाश करने वाले हैं इस बस्ती के वासियों का। वस्तुतः इस के वासी अत्याचारी हैं।
32. इब्राहीम ने कहा: उस में तो लूत है। उन्होंने ने कहा: हम भली-भाँति जानने वाले हैं जो उस में है। हम अवश्य बचा लेंगे उसे और उस के परिवार को उस की पत्नी के सिवा, वह पीछे रह जाने वालों में थी।
33. और जब आ गये हमारे भेजे हुये लूत

فِي الدُّنْيَا وَآرَائِهِ فِي الْآخِرَةِ لِمَنِ
الطَّالِحِينَ ﴿٢٨﴾

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اِنَّا كُنَّا لَمُتَّوْنٌ
الْفَاحِشَةُ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْ
الْعَالَمِيْنَ ﴿٢٩﴾

اَيُّكُمْ لَمُتَّوْنٌ الرَّجَالِ وَتَقَطُّوْنَ السَّبِيْلَةَ
وَتَأْتُوْنَ فِي تَارِيْخِكُمْ الْمُنْكَرَ فَمَا كَانَ جَوَابَ
قَوْمِهِ اِلَّا اَنْ قَالُوْا ائْتِنَا بِعَدَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ
مِّنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣٠﴾

قَالَ رَبِّ اَنْصُرْنِيْ عَلٰى الْقَوْمِ الْمَفْسِدِيْنَ ﴿٣١﴾

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا اِبْرٰهِيْمَ بِالْبَشْرِىْ قَالُوْا
اِنَّا مُهْلِكُوْكُمْ هٰذِهِ الْقَرْيَةُ
اِنْ اَهْلُهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٣٢﴾

قَالَ اِنَّ فِيْهَا لُوْطًا قَالُوْا حٰنُ اَعْلَمُ بِمَنْ
فِيْهَا النَّجِيْبَةُ وَاَهْلُهُ اِلَّا امْرَاَتُهُ كَانَتْ
مِّنَ الْغٰثِرِيْنَ ﴿٣٣﴾

وَلَمَّا اَنَّ جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِىْءَ يَوْمِهِمْ

के पास तो उसे बुरा लगा और वह उदासीन हो गया^[1] उन के आने पर और उन्होंने ने कहा: भय न कर और न उदासीन हो, हम तुझे बचा लेने वाले हैं तथा तेरे परिवार को, परन्तु तेरी पत्नी को, वह पीछे रह जाने वालों में है।

34. वास्तव में हम उतारने वाले हैं इस बस्ती के वासियों पर आकाश से यातना इस कारण कि वह उल्लंघन कर रहे हैं।

35. तथा हम ने छोड़ दी है उस में एक खुली निशानी उन लोगों के लिये जो समझ-बूझ रखते हैं।

36. तथा मद्यन की ओर उन के भाई शुऐब कौ (भेजा) तो उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! इबादत (वंदना) करो अल्लाह की, तथा आशा रखो प्रलय के दिन^[2] की और मत फिरो धरती में उपद्रव करते हुये।

37. किन्तु उन्होंने ने उसे झुठला दिया तो पकड़ लिया उन्हें भूकम्प ने और वह अपने घरों में औधे पड़े रह गये।

38. तथा आद और समूद का (विनाश किया) और उजागर हैं तुम्हारे लिये उन के घरों के कुछ अवशेष, और शोभनीय बना दिया शैतान ने उन के कर्मों को और रोक दिया उन्हें सुपथ

وَصَاحَ بِهِمْ دُرْعًا وَقَالُوا لَا تَخَفُ
وَلَا تَحْزَنْ إِنَّا مُنْجُوكَ وَاهْلَكَ
أَمْرَاتِكَ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٣٤﴾

إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلَىٰ أَهْلِ هَذِهِ الْقَرْيَةِ جُرْأَمِينَ
السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٣٥﴾

وَلَقَدْ تَرَكْنَا مِنْهَا آيَةً بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ
يَعْقِلُونَ ﴿٣٦﴾

وَالِى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يَوْمَ
اعْبُدُوا اللَّهَ وَأَطِئُوا الْيَوْمَ الْأَخْرَجُ وَلَا تَعْتُوا
فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٣٧﴾

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا
فِي دَارِهِمْ جثِيمِينَ ﴿٣٨﴾

وَعَادَ إِثْمُودَ وَقَدْ تَبَيَّنَ لَكُمْ مِنْ مَسْكِدِهِمْ
وَرَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ
عَنِ السَّبِيلِ وَكَانُوا مُسْتَبِيرِينَ ﴿٣٩﴾

1 क्योंकि लूत (अलैहिस्सलाम) को अपनी जाति की निर्लज्जा का ज्ञान था।

2 अर्थात संसारिक जीवन ही को सब कुछ न समझो, परलोक के अच्छे परिणाम की भी आशा रखो और सदाचार करो।

से, जब कि वह समझ- बूझ रखते थे।

39. और कारून तथा फिरऔन और हामान का, और लाये उन के पास मूसा खुली निशानियाँ, तो उन्होंने ने अभिमान किया और वह हम से आगे^[1] होने वाले न थे।

40. तो प्रत्येक को हम ने पकड़ लिया उस के पाप के कारण, तो इन में से कुछ पर पत्थर बरसाये^[2] और उन में से कुछ को पकड़ा^[3] कड़ी ध्वनि ने तथा कुछ को धंसा दिया धरती में, और कुछ को डुबो^[4] दिया। तथा नहीं था अल्लाह कि उन पर अत्याचार करता परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

41. उन का उदाहरण जिन्होंने बना लिये अल्लाह को छोड़ कर संरक्षक, मकड़ी जैसा है जिस ने एक घर बनाया, और वास्तव में घरों में सब से अधिक निर्बल घर^[5] मकड़ी का है यदि वह जानते।

42. वास्तव में अल्लाह जानता है कि वे जिसे पुकारते हैं^[6] अल्लाह को छोड़

وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ
مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ فَأَسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا
سَاقِيْنَ ﴿٣٩﴾

فَكُلًّا أَخَذْنَا بِنَبِيِّهِمْ فَمِنْهُمْ مَنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ
حَاصِبًا وَمِنْهُمْ مَنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ وَمِنْهُمْ
مَنْ حَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ وَمِنْهُمْ مَنْ أَعْرَفْنَا
وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ
يُظْلِمُونَ ﴿٤٠﴾

مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ
كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوتِ إِتَّخَذَتْ بَيْتًا وَإِنَّ أَوْهَنَ
الْبُيُوتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوتِ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مِنْ

1 अर्थात हमारी पकड़ से नहीं बच सकते थे।

2 अर्थात लूत की जाति पर।

3 अर्थात सालेह और शुऐब (अलैहिमस्सलाम) की जाति को।

4 जैसे कारून को।

5 अर्थात नूह तथा मूसा(अलैहिमस्सलाम) की जातियों को।

6 जिस प्रकार मकड़ी का घर उस की रक्षा नहीं करता वैसे ही अल्लाह की यातना के समय इन जातियों के पूज्य उन की रक्षा नहीं कर सके।

कर वह कुछ नहीं है। और वही प्रबल गुणी (प्रवीण) है।

43. और यह उदाहरण हम लोगों के लिये दे रहे हैं और इसे नहीं समझेंगे परन्तु ज्ञानी लोग (ही)।

44. उत्पत्ति की है अल्लाह ने आकाशों तथा धरती की सत्य के साथ। वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (लक्षण) है ईमान लाने वालों के^[1] लिये।

45. आप उस पुस्तक को पढ़ें जो वही (प्रकाशना) की गई है आप की ओर, तथा स्थापना करें नमाज़ की। वास्तव में नमाज़ रोकती है निर्लज्जा तथा दुराचार से और अल्लाह का स्मरण ही सर्व महान् है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते^[2] हो।

46. और तुम वाद-विवाद न करो अहले किताब^[3] से परन्तु ऐसी विधि से जो सर्वोत्तम हो, उन के सिवा जिन्होंने अत्याचार किया है उन में से। तथा तुम कहो कि हम ईमान लाये उस पर जो हमारी ओर उतारा गया और उतारा गया तुम्हारी ओर, तथा हमारा पूज्य और तुम्हारा पूज्य एक ही^[4] है। और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।^[5]

شَيْءٌ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٩﴾

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ لَضَرِبَ لَهَا لِلنَّاسِ وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ ﴿٣٠﴾

خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٣١﴾

أَتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَلِكُنَّا لِلَّهِ الْكَبِيرِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا نَصْنَعُونَ ﴿٣٢﴾

وَلَا تُجَادِلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ وَقُولُوا آمَنَّا بِالَّذِي أُنزِلَ إِلَيْنَا وَأُنزِلَ إِلَيْكُمْ وَاللَّهُ وَاحِدٌ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿٣٣﴾

1 अर्थात् इस विश्व की उत्पत्ति तथा व्यवस्था ही इस का प्रमाण है कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है।

2 अर्थात् जो भला- बुरा करते हो उस का प्रतिफल तुम्हें देगा।

3 अहले किताब से अभिप्रेत यहूदी तथा ईसाई हैं।

4 अर्थात् उस का कोई साझी नहीं।

5 अतः तुम भी उस की आज्ञा के आधीन हो जाओ और सभी आकाशीय पुस्तकों

47. और इसी प्रकार हम ने उतारी है आप की ओर यह पुस्तक, तो जिन को हम ने पुस्तक प्रदान की है वह इस (कुर्आन) पर ईमान लाते^[1] हैं और इन में से (भी) कुछ^[2] इस (कुर्आन) पर ईमान ला रहे हैं और हमारी आयतों को काफ़िर ही नहीं मानते हैं।
48. और आप इस से पूर्व न कोई पुस्तक पढ़ सकते थे और न अपने हाथ से लिख सकते थे। यदि ऐसा होता तो झूठे लोग संदेह^[3] में पड़ सकते थे।
49. बल्कि यह खुली आयतें हैं जो उन के दिलों में सुरक्षित हैं जिन को ज्ञान दिया गया है। तथा हमारी आयतों (कुर्आन) का इन्कार^[4] अत्याचारी ही करते हैं।
50. तथा (अत्याचारियों) ने कहा: क्यों नहीं उतारी गयी आप पर निशानियाँ आप के पालनहार की ओर से? आप कह दें कि निशानियाँ तो अल्लाह के पास^[5] हैं। और मैं तो खुला सावधान करने वाला हूँ।

وَكذَلِكَ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ فَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ
الْكِتَابَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَبعضُ هَؤُلَاءِ مِنْ مُؤْمِنِينَ بِهِ
وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا الْكَافِرُونَ ﴿٢٩﴾

وَمَا كُنْتُمْ تَلُوقُونَ قَبْلَهُ مِنْ كِتَابٍ وَلَا تَخْطَطُّ
بِإيْمَانِكُمْ إِذَ الْأَرْكَابُ الْمُبْطِلُونَ ﴿٣٠﴾

بَلْ هُوَ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ فِي صُدُورِ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ
وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا الظَّالِمُونَ ﴿٣١﴾

وَقَالُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَاتٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ
عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٣٢﴾

को कुर्आन सहित स्वीकार करो।

- 1 अर्थात् अहले किताब में से जो अपनी पुस्तकों के सत्य अनुयायी हैं।
- 2 अर्थात् मक्का वासियों में से।
- 3 अर्थात् यह संदेह करते कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह बातें आदि ग्रन्थों से सीख ली या लिख ली हैं। आप तो निरक्षर थे लिखना-पढ़ना जानते ही नहीं थे तो फिर आप के नबी होने और कुर्आन के अल्लाह की ओर से अवतरित किये जाने में क्या संदेह हो सकता है।
- 4 अर्थात् जो सत्य से आज्ञान हैं।
- 5 अर्थात् उसे उतारना-न उतारना मेरे अधिकार में नहीं, मैं तो अपने कर्तव्य का पालन कर रहा हूँ।

51. क्या उन्हें पर्याप्त नहीं कि हम ने उतारी है आप पर यह पुस्तक (कुरआन) जो पढ़ी जा रही है उन पर। वास्तव में इस में दया और शिक्षा है उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।
52. आप कह दें: पर्याप्त है अल्लाह मेरे तथा तुम्हारे बीच साक्षी।^[1] वह जानता है जो आकाशों तथा धरती में है। और जिन लोगों ने मान लिया है असत्य को और अल्लाह से कुफ्र किया है वही विनाश होने वाले हैं।
53. और वे^[2] आप से शीघ्र माँग कर रहे हैं यातना की। और यदि एक निर्धारित समय न होता तो आजाती उन के पास यातना, और अवश्य आयेगी उन के पास अचानक और उन्हें ज्ञान (भी) न होगा।
54. वे शीघ्र माँग^[3] कर रहे हैं आप से यातना की। और निश्चय नरक घेरने वाली है काफ़िरों^[4] को।
55. जिस दिन छा जायेगी उन पर यातना उन के ऊपर से तथा उन के पैरों के नीचे से। और अल्लाह कहेगा: चखो जो कुछ तुम कर रहे थे।

أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَرَحْمَةً وَذِكْرَىٰ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾

قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ شَهِيدًا لِّعَمَلِكُمُ الَّذِي تَمَرَّتْ وَالأَرْضِ وَالدِّينِ أَمْثُلُ الأَبَاطِلِ وَكَفَرُوا بِاللَّهِ أُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٥٢﴾

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالعَذَابِ وَلَوْ أَنَّ أَجَلَ مُسَيِّئِهِمْ العَذَابِ وَلِيَا تَدْبِرُهُمْ بَعْتَهُ وَهُمْ لَا يُعْرَفُونَ ﴿٥٣﴾

يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالعَذَابِ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿٥٤﴾

يَوْمَ نَعْتَشِئُهُمُ العَذَابِ مِنْ قُوتِهِمْ وَمِنْ حَتَّىٰ أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٥﴾

1 अर्थात मेरे नबी होने पर।

2 अर्थात मक्का के काफ़िर।

3 अर्थात संसार ही में उपहास स्वरूप यातना की माँग कर रहे हैं।

4 अर्थात परलोक में।

56. हे मेरे भक्तों जो ईमान लाये हो! वास्तव में मेरी धरती विशाल है, अतः तुम मेरी ही इबादत (वंदना)^[1] करो।
57. प्रत्येक प्राणी मौत का स्वाद चखने वाला है फिर तुम हमारी ही ओर फेरे^[2] जाओगे।
58. तथा जो ईमान लाये, और सदा चार किये तो हम अवश्य उन्हें स्थान देंगे स्वर्ग के उच्च भवनों में, प्रवाहित होंगी जिन में नहरें, वह सदावासी होंगे उन में, तो क्या ही उत्तम है कर्म करने वालों का प्रतिफल।
59. जिन लोगों ने सहन किया तथा वह अपने पालनहार ही पर भरोसा करते हैं।
60. कितने ही जीव हैं जो नहीं लादे फिरते^[3] अपनी जीविका, अल्लाह ही उन्हें जीविका प्रदान करता है तथा तुम को, और वह सब कुछ सुनने-जानने वाला है।
61. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने उत्पत्ति की है आकाशों तथा धरती की, और (किस ने) वश में कर रखा है सूर्य तथा चाँद को? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। तो

يُعْبَادِي الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ أَرْضِي وَاسِعَةٌ وَأَيَّتِي
تَعْبُدُونَ ﴿٥٦﴾

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٥٧﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِنَ
الْجَنَّةِ عُرُفًا نَّجْوَىٰ مِنْ حَيْثُ مَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ
فِيهَا ذَٰلِكَ جَزَاءُ الْعَمِلِينَ ﴿٥٨﴾

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٥٩﴾

وَكَايِنٍ مِّنْ ذَائِبَةٍ لِجَحِيمٍ لِّرِزْقِهَا ۗ وَاللَّهُ بَرَزْتُهَا
وَأَيَّتَهُ ۗ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٠﴾

وَلَكِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَنَحَرَ
الشَّمْسِ وَالْقَمَرَ لِيَقُولَنَّ اللّٰهُ فَاَلَيْ يُوَدَّعُونَ ﴿٦١﴾

- 1 अर्थात् किसी धरती में अल्लाह की इबादत न कर सको तो वहाँ से निकल जाओ जैसा कि आरंभिक युग में मक्का के काफ़िरों ने अल्लाह की इबादत से रोक दिया तो मुसलमान हबशा और फिर मदीना चले गये।
- 2 अर्थात् अपने कर्मों का फल भोगने के लिये।
- 3 हदीस में है कि यदि तुम अल्लाह पर पूरा पूरा भरोसा करो तो तुम्हें पक्षी के समान जीविका देगा जो सवेरे भूखा जाते हैं और शाम को अघा कर आते हैं। (तिर्मिज़ी- 2344, यह हदीस हसन सहीह है।)

फिर वह कहाँ बहके जा रहे हैं?

62. अल्लाह ही फैलाता है जीविका को जिस के लिये चाहता है अपने भक्तों में से और नाप कर देता है उस के लिये। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु का अति ज्ञानी है।
63. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने उतारा है आकाश से जल, फिर उस के द्वारा जीवित किया है धरती को उस के मरण के पश्चात्? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। आप कह दें कि सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है। किन्तु उन में से अधिकतर लोग समझते नहीं।^[1]
64. और नहीं है यह संसारिक^[2] जीवन किन्तु मनोरंजन और खेल और परलोक का घर ही वास्तविक जीवन है। क्या ही अच्छा होता यदि वह जानते।
65. और जब वह नाव पर सवार होते हैं, तो अल्लाह के लिये धर्म को शुद्ध कर के उसे पुकारते हैं। फिर जब वह बचा लाता है उन्हें थल तक, तो फिर शिर्क करने लगते हैं।

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ
وَيَقْدِرُ لَهُ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٢﴾

وَلَمَّا سَأَلْتَهُمْ مَنْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَاهُ
الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا يَقُولُونَ اللَّهُ قُلِ الْحَمْدُ
لِلَّهِ لَئِنْ كُنْتُمْ لَآيْقِنُونَ ﴿٦٣﴾

وَمَا هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهُمْ وَكَيْبٌ وَإِنَّ الدَّارَ
الْآخِرَةَ لَآيِ الْحَيَاةِ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٦٤﴾

فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلِ دَعَاؤُ اللَّهِ مُخْلِصِينَ لَهُ
الَّذِينَ ءَكَلَمَاتُ نَجَّوهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ
يُنْتَرِكُونَ ﴿٦٥﴾

- 1 अर्थात् जब उन्हें यह स्वीकार है कि रचयिता अल्लाह है और जीवन के साधन की व्यवस्था भी वही करता है तो फिर इबादत (पूजा) भी उसी की करनी चाहिये और उस की वंदना तथा उस के शुभगुणों में किसी को उस का साझी नहीं बनाना चाहिये। यह तो मूर्खता की बात है कि रचयिता तथा जीवन के साधनों की व्यवस्था तो अल्लाह करे और उस की वंदना में अन्य को साझी बनाया जाये।
- 2 अर्थात् जिस संसारिक जीवन का संबंध अल्लाह से न हो तो उस का सुख साम्यिक है। वास्तविक तथा स्थायी जीवन तो परलोक का है अतः उस के लिये प्रयास करना चाहिये।

66. ताकि वह कुफ़ करें उस के साथ जो हम ने उन्हें प्रदान किया है, और ताकि आनन्द लेते रहें, तो शीघ्र ही इन्हें ज्ञान हो जायेगा।

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ وَلِيَمْتَعُوا بِهَا فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٥٦﴾

67. क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि हम ने बना दिया है हरम (मक्का) को शान्ति स्थल, जब कि उचक लिये जाते हैं लोग उन के आस- पास से? तो क्या वह असत्य ही को मानते हैं और अल्लाह के पुरस्कार को नहीं मानते?

أَوْ لَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا مِّنَ الْمِنَا وَيُعْتَظِفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ أَقْبَابًا لِطِلِّ يُؤْمِنُونَ وَبِعِزَّةِ اللَّهِ يَكْفُرُونَ ﴿٥٧﴾

68. तथा कौन अधिक अत्याचारी होगा उस से जो अल्लाह पर झूठ घड़े या झूठ कहे सच्च को जब उस के पास आ जाये, तो क्या नहीं होगा नरक में आवास काफ़िरों का?

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ الْبَيِّنَاتُ فِي جَهَنَّمَ مَنُورًا لِّلْكَافِرِينَ ﴿٥٨﴾

69. तथा जिन्होंने ने हमारी राह में प्रयास किया तो हम अवश्य दिखा¹ देंगे उन को अपनी राह। और निश्चय अल्लाह सदाचारियों के साथ है।

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٩﴾

1 अर्थात अपनी राह पर चलने की अधिक क्षमता प्रदान करेंगे।

सूरह रूम - 30



सूरह रूम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 60 आयतें हैं।

- इस सूरह में रूमियों के बारे में एक भविष्यवाणी की गई है इसी लिये इस को यह नाम दिया गया है।
- इस में आखिरत का विश्वास दिलाया गया है जो संसार की वास्तविकता पर विचार करने से पैदा होता है तथा इस से कि अल्लाह का प्रत्येक वचन पूरा होता है।
- इस में रूमियों की विजय की भविष्यवाणी की गई है और इस से विश्व के स्वामी तथा आखिरत की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- अल्लाह की निशानियों में सोच-विचार का आमंत्रण दिया गया है जो आकाशों तथा धरती में फैली हुई हैं और परलोक का विश्वास दिलाती हैं।
- तौहीद के सत्य तथा शिर्क के असत्य होने के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं और यह बताया गया है कि तौहीद स्वाभाविक धर्म है। अल्लाह की आज्ञा के पालन तथा पाप से बचने के निर्देश दिये गये हैं और इस पर उत्तम परिणाम की शुभ सूचना दी गई है।
- अन्त में फिर बात प्रलय तथा परलोक की ओर फिर गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़ लाम मीमा।
2. पराजित हो गये रूमी।
3. समीप की धरती में, और वह अपने पराजित होने के पश्चात् जल्द ही विजयी हो जायेंगे।
4. कुछ वर्षों में, अल्लाह ही का अधिकार

الْحَمْدُ

عُنْدَ الرَّؤُومِ

فِي أَدْنَى الْأَرْضِ وَهُمْ مِنْ بَعْدِ عَلَيْهِمْ

سَيِّغْلَبُونَ

فِي بَضْعِ سِنِينَ ۗ إِنَّ اللَّهَ الْأَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ

है पहले (भी) और बाद में (भी)। और उस दिन प्रशन्न होंगे ईमान वाले।

5. अल्लाह की सहायता से, तथा वही अति प्रभुत्वशाली दयावान् है।
6. यह अल्लाह का वचन है, नहीं विरुद्ध करेगा अल्लाह अपने वचन^[1] के, और परन्तु अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते।
7. वह तो जानते हैं बस ऊपरी संसारिक जीवन को। तथा^[2] वह परलोक से अचेत हैं।
8. क्या और उन्होंने ने अपने में सोच-विचार नहीं किया कि नहीं उत्पन्न किया है अल्लाह ने आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उन^[3] दोनों के बीच है परन्तु सत्यानुसार

بَعْدُ وَيَوْمَئِذٍ يَفْعَرُ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٠﴾

يَنْصُرُ اللَّهُ يَنْصُرُ مَن يَشَاءُ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١١﴾

وَعَدَ اللَّهُ لَا يَخْلِفُ اللَّهُ وَعْدَهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٢﴾

يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ عَنِ
الْآخِرَةِ هُمْ غَفْلُونَ ﴿١٣﴾

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنفُسِهِمْ مَّا خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِآجَلٍ مُّسَمًّى
وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَائِ رَبِّهِمْ لَكْفُرُونَ ﴿١٤﴾

1. इन आयतों के अन्दर दो भविष्य वाणियाँ की गई हैं। जो कुर्आन शरीफ तथा स्वयं नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सत्य होने का ऐतिहासिक प्रमाण है। यह वह युग था जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और मक्का के कुरैश के बीच युद्ध आरंभ हो गया था। रूम के राजा कैसर को उस समय, ईरान के राजा (किस्सा) ने पराजित कर दिया था। जिस से मक्कावासी प्रसन्न थे। क्यों कि वह अग्नि के पुजारी थे। और रूमी ईसाई आकाशीय धर्म के अनुयायी थे। और कह रहे थे कि हम मिश्रणवादी भी इसी प्रकार मुसलमानों को पराजित कर देंगे जिस प्रकार रूमियों को ईरानियों ने पराजय किया। इसी पर यह दो भविष्य वाणी की गई कि रूमी कुछ वर्षों में फिर विजयी हो जायेंगे और यह भविष्य वाणी इस के साथ पूरी होगी कि मुसलमान भी उसी समय विजयी हो कर प्रसन्न हो रहे होंगे। और ऐसा ही हुआ कि 9 वर्ष के भीतर रूमियों ने ईरानियों को पराजित कर दिया।
2. अर्थात् सुख-सुविधा और आनन्द को। और वह इस से अचेत हैं कि एक और जीवन भी है जिस में कर्मों के परिणाम सामने आयेंगे। बल्कि यही देखा जाता है कि कभी एक जाति उन्नति कर लेने के पश्चात् असफल हो जाती है।
3. विश्व की व्यवस्था बता रही है कि यह अकारण नहीं, बल्कि इस का कुछ अभिप्राय है।

और एक निश्चित अवधि के लिये? और बहुत से लोग अपने पालनहार से मिलने का इन्कार करने वाले हैं।

9. क्या वह चले-फिरे नहीं धरती में, फिर देखते कि कैसा रहा उन का परिणाम जो इन से पहले थे? वह इन से अधिक थे शक्ति में। उन्होंने ने जोता-बोया धरती को और उसे आबाद किया, उस से अधिक जितना इन्होंने ने आबाद किया, और आये उन के पास उन के रसूल खुली निशानियाँ (प्रमाण) ले कर। तो नहीं था अल्लाह कि उन पर अत्याचार करता, और परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

10. फिर हो गया उन का बुरा अन्त जिन्होंने ने बुराई की, इस लिये कि उन्होंने ने झूठ कहा अल्लाह की आयतों को, और वह उन का उपहास कर रहे थे।

11. अल्लाह ही उत्पत्ति का आरंभकरता है फिर उसे दुहरायेगा, तथा उसी की ओर तुम फेरे^[1] जाओगे।

12. और जब स्थापित होगी प्रलय, तो निराश^[2] हो जायेंगे अपराधी।

13. और नहीं होगा उन के साझियों में उन का अभिस्तावक (सिफारशी) और वह अपने साझियों का इन्कार

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ
قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ مِمَّا
عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانَ اللَّهُ
لِيُظْلِمَهُمْ وَلَكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٩﴾

ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِينَ أَسَاءُوا السُّؤْيَ
أَن كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِءُونَ ﴿١٠﴾

اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١١﴾

وَيَوْمَ يَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُونَ ﴿١٢﴾

وَلَمْ يَكُنْ لَهُم مِّنْ شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاءُ
وَكَانُوا بِشُرَكَائِهِمْ كُفْرِينَ ﴿١٣﴾

1 अर्थात प्रलय के दिन अपने संसारिक अच्छे बुरे कर्मों का प्रतिकार पाने के लिये।

2 अर्थात अपनी मुक्ति से और चकित हो कर रह जायेंगे।

करने वाले^[1] होंगे।

14. और जिस दिन स्थापित होगी प्रलय, तो उस दिन सब अलग अलग हो जायेंगे।
15. तो जो ईमान लाये तथा सदाचार किये वही स्वर्ग में प्रसन्न किये जायेंगे।
16. और जिन्होंने क़ुफ़्र किया और झुठलाया हमारी आयतों को और परलोक के मिलन को, तो वही यातना में उपस्थित किये हुये होंगे।
17. अतः तुम अल्लाह की पवित्रता का वर्णन संध्या तथा सवेरे किया करो।
18. तथा उसी की प्रशंसा है आकाशों तथा धरती में तीसरे पहर तथा जब दोपहर हो।
19. वह निकालता है^[2] जीवित से निर्जीव को, तथा निकालता है निर्जीव से जीव को, और जीवित कर देता है धरती को उस के मरण (सूखने) के पश्चात् और इसी प्रकार तुम (भी) निकाले जाओगे।
20. और उस की (शक्ति) के लक्षणों में से यह (भी) है कि तुम्हें उत्पन्न किया मिट्टी से, फिर अब तुम मनुष्य हो (कि धरती में) फैलते जा रहे हो।

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُومِّدُ الْمُتَّقِينَ ﴿١٤﴾

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَهُمْ فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ ﴿١٥﴾

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ فَأُولَئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ﴿١٦﴾

مَسْبُحِينَ اللَّهُ حِينَ شُؤُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ ﴿١٧﴾

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ ﴿١٨﴾

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَكَذَلِكَ تُخْرَجُونَ ﴿١٩﴾

وَمِنَ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ إِذَا أَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَبِرُونَ ﴿٢٠﴾

1. क्यों कि यह देख लेंगे कि उन्हें सिफ़ारिश करने का कोई अधिकार नहीं होगा। (देखिये सूरह, अन्आम आयत: 23)
2. यहाँ से यह बताया जा रहा है कि प्रलय होकर परलोक में सब को पुनः जीवित किया जाना संभव है और उस का प्रमाण दिया जा रहा है। इसी के साथ यह भी बताया जा रहा है कि इस विश्व का स्वामी और व्यवस्थापक अल्लाह ही है, अतः पूज्य भी केवल वही है।

21. तथा उस की निशानियों (लक्षणों) में से यह (भी) है कि उतपन्न किया तुम्हारे लिये तुम्हीं में से जोड़े, ताकि तुम शान्ति प्राप्त करो उन के पास तथा उतपन्न कर दिया तुम्हारे बीच प्रेम तथा दया, वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं उन लोगो के लिये जो सोच-विचार करते हैं।

وَمِنَ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا
لِتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُتَفَكَّرُونَ ۝

22. तथा उस की निशानियों में से है आकाशों और धरती को पैदा करना, तथा तुम्हारी बोलियों और रंगों का विभिन्न होना निश्चय इस में कई निशानियाँ है ज्ञानियों^[1] के लिये।

وَمِنَ آيَاتِهِ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَخَلْقَ
السِّنِّتِ وَالْوَالِدَاتِ إِذَا فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ
لِّلْعَالَمِينَ ۝

23. तथा उस की निशानियों में से है तुम्हारा सोना रात्री में तथा दिन में, और तुम्हारा खोज करना उस के अनुग्रह (जीविका) का। वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो सुनते हैं।

وَمِنَ آيَاتِهِ مَنَامُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ
وَأَبْعَادُكُمْ مِنْ قَضَائِهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ
لِّقَوْمٍ يُسْمَعُونَ ۝

24. और उस की निशानियों में से (यह भी) है कि वह दिखाता है तुम्हें बिजली को भय तथा आशा बना कर और उतारता है आकाश से जल, फिर जीवित करता है उस के द्वारा धरती को उस के मरण के पश्चात्,

وَمِنَ آيَاتِهِ يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنزِلُ
مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيُحْيِي بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

1 कुर्आन ने यह कह कर कि भाषाओं और वर्ग-वर्ण का भेद अल्लाह की रचना की निशानियाँ हैं, उस भेद-भाव को सदा के लिये समाप्त कर दिया जो पक्षताप, आपसी बैर और गर्व का आधार बनते हैं। और संसार की शान्ति का भेद करने का कारण होते हैं। (देखिये: सूरह हुजुरात, आयत: 13)
यदि आज भी इस्लाम की इस शिक्षा को अपना लिया जाये तो संसार शान्ति का गहवारा बन सकता है।

वस्तुतः इस में कई निशानियाँ है उन लोगों के लिये जो सोचते हैं।

25. और उस की निशानियों में से है कि स्थापित हैं आकाश तथा धरती उस के आदेश से। फिर जब तुम्हें पुकारेगा एक बार धरती से तो सहसा तुम निकल पड़ोगे।
26. और उसी का है जो आकाशों तथा धरती में है, सब उसी के आधीन हैं।
27. तथा वही है जो आरंभ करता है उत्पत्ति को, फिर वह उसे दुहरायेगा। और वह अति सरल है उस पर। और उसी का सर्वोच्च गुण है आकाशों तथा धरती में, और वही प्रभुत्व शाली तत्वज्ञ है।
28. उस ने एक उदाहरण दिया है स्वयं तुम्हारा: क्या तुम्हारे^[1] दासों में से तुम्हारा कोई साझी है उस में जो जीविका प्रदान की है हम ने तुम को, तो तुम उस में उस के बराबर हो, उन से डरते हो जैसे अपनी से डरते हो? इसी प्रकार हम वर्णन करते हैं आयतों का उन लोगों के लिये जो समझ रखते हैं।
29. बल्कि चले हैं अत्याचारी अपनी मनमानी पर बिना समझे, तो कौन राह दिखाये उसे जिस को अल्लाह ने कुपथ कर दिया हो? और नहीं है उन

وَمِنَ آيَاتِهِ أَنْ تَقُومَ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ بِأَمْرِهِ ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ﴿٢٥﴾

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ كُلِّ لَهٗ قَدِيۡرٌ ﴿٢٦﴾

وَهُوَ الَّذِي يَبْدُءُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ ۗ وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٧﴾

ضَرَبَ لَكُمْ مَثَلًا مِّنْ أَنْفُسِكُمْ هَلْ لَكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءٍ فِي مَآ رِسَاقِكُمْ قَالْتُمْ فِيهِ سَوَآءٌ نَّخَافُهُمْ كَخِيفَتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيٰتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُوۡنَ ﴿٢٨﴾

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَهْوَاءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ فَمَنْ يَهْدِي مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ وَمَا لَهُمْ مِّنْ مُّشِيرِينَ ﴿٢٩﴾

1 परलोक और एकेश्वरवाद के तर्कों का वर्णन करने के पश्चात् इस आयत में शुद्ध एकेश्वरवाद के प्रमाण प्रस्तुत किये जा रहे हैं कि जब तुम स्वयं अपने दासों को अपनी जीविका में साझी नहीं बना सकते तो जिस अल्लाह ने सब को बनाया है उस की वंदना उपासना में दूसरों को कैसे साझी बनाते हो?

का कोई सहायक।

30. तो (हे नबी!) आप सीधा रखें अपना मुख इस धर्म की दिशा में एक ओर हो कर उस स्वभाव पर पैदा किया है अल्लाह ने मनुष्यों को जिस^[1] पर। बदलना नहीं है अल्लाह के धर्म को, यही स्वभाविक धर्म है किन्तु अधिकतर लोग नहीं^[2] जानते।

31. ध्यान कर के अल्लाह की ओर, और डरो उस से तथा स्थापना करो नमाज़ की, और न हो जाओ मुशरिकों में से।

32. उन में से जिन्होंने ने अलग बना लिया अपना धर्म। और हो गये कई गिरोह, प्रत्येक गिरोह उसी में^[3] जो उस के पास है मग्न है।

33. और जब पहुँचता है मनुष्यों को कोई दुख तो वह पुकारते हैं अपने पालनहार को ध्यान लगा कर उस की ओर। फिर जब वह चखाता है उन को अपनी ओर से कोई दया, तो सहसा एक गिरोह उन में से अपने पालनहार के

فَأَوْمَ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا فِطْرَتَ اللَّهِ
الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ
اللَّهِ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾

مُنِيبِينَ إِلَيْهِ وَاتَّقُوهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٣١﴾

مِنَ الَّذِينَ فَتَرُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِعَابًا كُلِّ
حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٣٢﴾

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَاوْا رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ
سَمِعُوا إِذَا دَعَاوَهُمْ مِنْهُ رَحْمَةً إِذَا فَرِحُوا مِنْهُمْ وَرَأَوْا
يُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾

1 एक हदीस में कुछ इस प्रकार आया है कि प्रत्येक शिशु प्राकृति (नेचर, अर्थात् इस्लाम) पर जन्म लेता है। परन्तु उस के माँ-बाप उसे यहूदी या ईसाई या मजूसी बना देते हैं। (देखिये: सहीह मुस्लिम: 2656) और यदि उस के माता पिता हिन्दु अथवा बुद्ध या और कुछ हैं तो वे अपने शिशु को अपने धर्म के रंग में रंग देते हैं।

आयत का भावार्थ यह है कि स्वभाविक धर्म इस्लाम और तौहीद को न बदलो बल्कि सहीह पालन पोषण द्वारा अपने शिशु को इसी स्वभाविक धर्म इस्लाम की शिक्षा दो।

2 इसी लिये वह इस्लाम और तौहीद को नहीं पहचानते।

3 वह समझता है कि मैं ही सत्य पर हूँ और उन्हें तथ्य की कोई चिन्ता नहीं।

साथ शिर्क करने लगता है।

34. ताकि वह उस के कृतघ्न हो जायें जो हम ने प्रदान किया है उन को। तो तुम आनन्द ले लो, तुम को शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा।
35. क्या हम ने उतारा है उन पर कोई प्रमाण जो वर्णन करता है उस का जिसे वह अल्लाह का साझी बना^[1] रहे हैं।
36. और जब हम चखाते हैं लोगों को कुछ दया तो वह उस पर इतराने लगते हैं। और यदि पहुँचता है उन को कोई दुःख उन के करतूतों के कारण तो वह सहसा निराश हो जाते हैं।
37. क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि अल्लाह फैला देता है जीविका जिस के लिये चाहता है और नाप कर देता है? निश्चय इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।
38. तो दो समीपवर्तियों को उस का अधिकार तथा निर्धनों और यात्रियों को। यह उत्तम है उन लोगों के लिये जो चाहते हों अल्लाह की प्रसन्नता, और वही सफल होने वाले हैं।
39. और जो तुम व्याज देते हो ताकि अधिक हो जाये लोगो के धनों^[2] में

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ فَتَمَتَّعُوا فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾

أَمْ أَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ سُُلْطَانًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٣٥﴾

وَإِذْ أَنْزَلْنَا النَّاسَ رَحْمَةً رِجْوًا يَبَاهُونَ ﴿٣٦﴾
سَيِّئَةٌ لِّمَا قَدَّمْتُمْ إِلَيْنَاهُمْ إِذَا هُمْ يَفْطَنُونَ ﴿٣٧﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣٨﴾

فَأْتِ ذَٰلِكَ الْقُرَىٰ حَقًّا وَالْبِسْكَينَ وَابْنَ السَّبِيلِ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٣٩﴾

وَمَا آتَيْنَاهُمْ مِنْ رَبِّ الْبَرِّ جُبُوتًا فِي أَمْوَالِ النَّاسِ

1 यह प्रश्न नकारात्मक है अर्थात उन के पास इस का कोई प्रमाण नहीं है।

2 इस आयत में सामाजिक अधिकारों की ओर ध्यान दिलाया गया है कि जब सब कुछ अल्लाह ही का दिया हुआ है तो तुम्हें अल्लाह की प्रसन्नता के लिये सब का अधिकार देना चाहिये। हदीस में है कि जो व्याज खाता-खिलाता है और उसे लिखता तथा उस पर गवाही देता है उस पर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

मिलकर तो वह अधिक नहीं होता अल्लाह के यहाँ। तथा तुम जो ज़कात देते हो चाहते हुये अल्लाह की प्रसन्नता तो वही लोग सफल होने वाले हैं।

40. अल्लाह ही है जिस ने उत्पन्न किया है तुम को, फिर तुम्हें जीविका प्रदान की फिर तुम्हें मारेगा, फिर^[1] जीवित करेगा, तो क्या तुम्हारे साझियों में से कोई है जो इस में से कुछ कर सके? वह पवित्र है और उच्च है उन के साझी बनाने से।

41. फैल गया उपद्रव जल तथा^[2] थल में लोगों के करतूतों के कारण, ताकि वह चखाये उन को उन का कुछ कर्म, संभवतः वह रुक जायें।

42. आप कह दें चलो-फिरो धरती में फिर देखो कि कैसा रहा उन का अन्त जो इन से पहले थे। उन में अधिकतर मुशरिक थे।

43. अतः आप सीधा रखें अपना मुख सत्धर्म की दिशा में इस से पहले कि आ जाये वह दिन जिसे फिरना नहीं है अल्लाह की ओर से, उस दिन

فَلَا يُرْوَىٰ عِنْدَ اللَّهِ وَمَا آتَيْتُم مِّن زَكَاةٍ
تُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْبُضْعُونَ ﴿٤٠﴾

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُبْيِتُكُمْ ثُمَّ
يُحْيِيكُمْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَن يَفْعَلُ
مِثْلَ ذَٰلِكُمْ مِمَّن سَبَّحْتَهُ وُتَعَلَّىٰ عَنَّا يَسْتَرْكُونُ ﴿٤١﴾

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي
النَّاسِ لِيُبْدِيَ لَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ﴿٤٢﴾

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الَّذِينَ مِن قَبْلُ كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِينَ ﴿٤٣﴾

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَدِيمِ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ
يَوْمَ لَا مَرَدَ لَهُ مِنَ اللَّهِ يَوْمَئِذٍ يُصَدِّقُونَ ﴿٤٤﴾

ने धिक्कार किया है।

- 1 इस में फिर एकेश्वरवाद का वर्णन तथा शिर्क का खण्डन किया है।
- 2 आयत में बताया गया है कि इस विश्व में जो उपद्रव तथा अत्याचार हो रहा है यह सब शिर्क के कारण हो रहा है। जब लोगों ने एकेश्वरवाद को छोड़ कर शिर्क अपना लिया तो अत्याचार और उपद्रव होने लगा। क्यों कि न एक अल्लाह का भय रह गया और न उस के नियमों का पालन।

लोग अलग-अलग हो^[1]जायेंगे।

44. जिस ने कुफ़्र किया तो उसी पर उस का कुफ़्र है और जिस ने सदाचार किया तो वे अपने ही लिये (सफलता का मार्ग) बना रहे हैं।
45. ताकि अल्लाह बदला दे उन को जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये अपने अनुग्रह से। निश्चय वह प्रेम नहीं करता काफ़िरों से।
46. और उस की निशानियों में से है कि भेजता है वायु को शुभसूचना देने के लिये और ताकि चखाये तुम्हें अपनी दया (वर्षा) में से, और ताकि नाव चलें उस के आदेश से, और ताकि तुम खोजो उस जीविका और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।
47. और हम ने भेजा आप से पहले रसूलों को उन की जातियों की ओर। तो वह लाये उन के पास खुली निशानियाँ, अन्ततः हम ने बदला ले लिया उन से जिन्होंने अपराध किया। और अनिवार्य था हम पर ईमान वालों की सहायता^[2] करना।
48. अल्लाह ही है जो वायुओं को भेजता है, फिर वह उसे फैलाता है आकाश में जैसे चाहता है, और उसे घंघोर बना देता है। तो तुम देखते हो बूंदों

مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلَا نَفْسَ لَهُمْ بِنَاهُونَ ﴿٤٤﴾

لِيُعْزَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْ فَضْلِهِ ۗ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ﴿٤٥﴾

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ يُرْسِلَ الرِّيحَ مُبَشِّرَاتٍ
وَلِيُذِيقَكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيُخْرِجَ الْغُلُوكَ بِأَمْرِهِ
وَلِيَجْتَنِّعُوا مِنْ فَضْلِهِ ۗ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٤٦﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ
فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَاسْتَقْبَمَا مِنَ الَّذِينَ
أَجْرَمُوا ۗ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرَ
الْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾

اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ فَتُبْرِئُ سَحَابًا
فَيَبْسُطُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ
كِسْفًا فَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ ۗ فَإِذَا

1 अर्थात ईमान वाले और काफ़िर।

2 आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा आप के अनुयायियों को सांत्वना दी जा रही है।

को निकलते उस के बीच से, फिर जब उसे पहुँचाता है जिस के लिये चाहता है अपने भक्तों में से तो सहसा वह प्रफुल्ल हो जाते हैं।

49. यद्यपि वह थे इस से पहले कि उन पर उतारी जाये, अति निराशा।
50. तो देखो अल्लाह की दया के लक्षणों को, वह कैसे जीवित करता है धरती को उस के मरण के पश्चात्, निश्चय वही जीवित करने वाला है मुर्दा को तथा वह सब कुछ कर सकता है।
51. और यदि हम भेज दें उग्र वायु फिर वह देख लें उस (खेती) को पीली तो इस के पश्चात् कुफ़र करने लगते हैं।
52. तो (हे नबी) आप नहीं सुना सकेंगे मुर्दों^[1] को और नहीं सुना सकेंगे बहरों को पुकार जब वह भाग रहे हों पीठ फेर कर।
53. तथा नहीं है आप मार्ग दर्शाने वाले अँधों को उन के कुपथ से, आप सुना सकेंगे उन्हीं को जो ईमान लाते हैं हमारी आयतों पर फिर वही मुस्लिम हैं।
54. अल्लाह ही है जिस ने उत्पन्न किया तुम्हें निर्बल दशा से फिर प्रदान किया निर्बलता के पश्चात् बल फिर कर दिया बल के पश्चात् निर्बल तथा बूढ़ा^[2], वह उत्पन्न करता है

أَصَابَ بِهِ مَن يَشَاءُ مَن عِبَادِهِ إِذَا هُوَ يَتَّبِعُ رُؤُوسَهُ ۝

وَلَٰن كَانُوا مِن قَبْلِ أَن يُنزَّلَ عَلَيْهِم مِّن قِبَلِهِ لَمُبْسِلِينَ ۝

فَإِنظُرْ إِلَىٰ الشَّرْحَمَتِ اللَّوْهُ كَيْفَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ ذَٰلِكَ لَمُعْجِزٌ لِّلَّذِينَ هُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

وَلَمَّا أَرْسَلْنَا بِعَاصِفٍ مِّمَّنْ أَعْيَاظُوا مِن بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ۝

فَإِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الضُّمَمَ الدَّاعَاءَ إِذَا أَوَّلَتْ أَمْدَانَهُنَّ ۝

وَمَا أَنْتَ بِهَادٍ الْعُمَىٰ عَنِ ضَلَالَتِهِمْ إِنْ تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ۝

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِّنْ ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِن بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِن بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَشَيْبَةً يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ۝

- 1 अर्थात् जिन की अन्तरात्मा मर चुकी हो और सत्य सुनने के लिये तय्यार न हों।
- 2 अर्थात् एक व्यक्ति जन्म से मरण तक अल्लाह के सामर्थ्य के आधीन रहता है फिर उस की वंदना में उस के आधीन होने और उस के पुनः पैदा

जो चाहता है और वही सर्वज्ञ सब सामर्थ्य रखने वाला है।

55. और जिस दिन व्याप्त होगी प्रलय तो शपथ लेंगे अपराधी कि वह नहीं रहे क्षणभर^[1] के सिवा। और इसी प्रकार वह बहकते रहे।
56. तथा कहेंगे जो ज्ञान दिये गये तथा ईमान, कि तुम रहे हो अल्लाह के लेख में प्रलय के दिन तक, तो अब यह प्रलय का दिन है। और परन्तु तुम विश्वास नहीं रखते थे।
57. तो उस दिन नहीं काम देगा अत्याचारियों को उन का तर्क और न उन से क्षमायाचना कराई जायेगी।
58. और हम ने वर्णन कर दिया है लोगों के लिये इस कुर्आन में प्रत्येक उदाहरण का, और यदि आप ला दें उन के पास कोई निशानी तब भी अवश्य कह देंगे जो काफ़िर हो गये कि तुम तो केवल झूठ बनाते हो।
59. इसी प्रकार मुहर लगा देता है अल्लाह उन के दिलों पर जो समझ नहीं रखते।
60. तो आप सहन करें, वास्तव में अल्लाह का वचन सत्य है, और

يَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ مَا نَبِئُوا
عِبْرَةَ كَذَلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ﴿٥٥﴾

وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَالْإِنْسَانَ لَقَدْ
لِئْسْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْبَعْثِ فَهَذَا
يَوْمُ الْبَعْثِ وَلَكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٥٦﴾

يَوْمَئِذٍ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعِيذُهُمْ
وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٥٧﴾

وَلَقَدْ خَرَقْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ
مَثَلٍ وَلَكِنْ حُجَّتْ بِهَمَّ بِالْآيَةِ لِيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ ﴿٥٨﴾

كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الَّذِينَ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٩﴾

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَا يَسْتَخِفُّكَ

कर देने के सामर्थ्य को अस्वीकार क्यों करता है?

1 अर्थात् संसार में।

कदापि वह आप^[1] को हलका न
समझें जो विश्वास नहीं रखते।

الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

1 अन्तिम आयत में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धैर्य तथा साहस रखने का आदेश दिया गया है। और अल्लाह ने जो विजय देने तथा सहायता करने का वचन दिया है उस के पूरा होने और निराश न होने के लिये कहा जा रहा है।

सूरह लुक़्मान - 31



सूरह लुक़्मान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 34 आयतें हैं।

- इस सूरह में लुक़्मान को ज्ञान देने की बात है इस लिये इस का नाम सूरह लुक़्मान है।
- इस में धर्म के विषय में विचार करने तथा अंध विश्वास से बचने तथा उन निशानियों से शिक्षा लेने के निर्देश दिये गये हैं जिन से जीवन सुधरता है।
- अल्लाह तथा धर्म के बारे में बिना ज्ञान के बात करने पर सावधान किया गया है और कर्म सुधारने पर उत्तम परिणाम की शुभसूचना दी गई है।
- लुक़्मान की उत्तम बातों का वर्णन किया गया है जो कुर्आन पाक की शिक्षाओं के अनुसार हैं।
- उन निशानियों को बताया गया है जिन से तौहीद तथा आख़िरत की राह खुलती है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के सामने उपस्थित होने के दिन से डराया गया है और बताया गया है कि वह सब कुछ जानता है ताकि उस की आख़िरत के बारे में सूचना का विश्वास हो जाये।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़ लाम मीम।
2. यह आयतें हैं ज्ञानपूर्ण पुस्तक की।
3. मार्ग दर्शन तथा दया है सदाचारियों के लिये।
4. जो नमाज़ की स्थापना करते हैं तथा ज़कात देते हैं और परलोक पर (पूरा) विश्वास रखते हैं।

اللَّهُ

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ

هُدًى وَرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِينَ

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ

بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ

5. वही लोग
अपने पालनहार के शुपथों पर हैं।
तथा वही लोग सफल होने वाले हैं।
6. तथा लोगों में वह (भी) है जो
खरीदता है खेल की^[1] बात ताकि
कुपथ करे अल्लाह की राह (इस्लाम)
से बिना किसी ज्ञान के और उसे
उपहास बनाये। यही है जिन के लिये
अपमानकारी यातना है।
7. और जब पढ़ी जायें उस के समक्ष
हमारी आयतें तो वह मुख फेर लेता
है घमंड करते हुये। जैसे उस के
दोनों कान बहरे हों, तो आप उसे
शुभसूचना सुना दें दुःखदायी यातना की।
8. वस्तुतः जो ईमान लाये तथा सदाचार
किये तो उन्हीं के लिये सुख के बाग़ हैं।
9. वह सदावासी होंगे उन में, अल्लाह
का सत्य वचन है, और वही
प्रभुत्वशाली सर्व ज्ञानी है।
10. उस ने उत्पन्न किया है आकाशों
को बिना किसी स्तम्भ के जिन्हें तुम
देख रहे हो, और बना दिये धरती
में पर्वत ताकि डोल न जाये तुम्हें
लेकर, और फैला दिये उन में हर
प्रकार के जीव, तथा हम ने उतारा
आकाश से जल, फिर हम ने उगाये
उस में प्रत्येक प्रकार के सुन्दर जोड़े।

أُولَئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ
عَن سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَيَتَّخِذَ هَاهُوَ
أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٦﴾

وَإِذَا تُلِيَ عَلَيْهِ آيَاتُ الْمُرْسَلِينَ كَانُوا
يَسْمَعُهَا كَانُوا فِي أَذُنٍ وَإِلَهُهَا
بُغْيٌ ﴿٧﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتُ
الْجَنَّةِ ﴿٨﴾

خَالِدِينَ فِيهَا وَعَدَّ اللَّهُ حَقًّا وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٩﴾

خَلَقَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَالْأَرْضَ فِي
الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَيَتَرَكُ فِيهَا مِن كُلِّ
دَابَّةٍ وَاتْرَأْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِن
كُلِّ رَوْحٍ كَرِيمٍ ﴿١٠﴾

1 इस से अभिप्राय गाना-बजाना तथा संगीत और प्रत्येक वह साधन है जो सदाचार से अचेत कर दें। इस में किस्से, कहानियाँ, काम संबंधी साहित्य सब सम्मिलित हैं।

11. यह अल्लाह की उत्पत्ति है, तो तुम दिखाओ, क्या उत्पन्न किया है उन्होंने ने जो उस के अतिरिक्त है? बल्कि अत्याचारी खुले कुपथ में है?
12. और हमने लुकमान को प्रबोध प्रदान किया कि कृतज्ञ बनो अल्लाह के, तथा जो (अल्लाह का) आभारी हो वह आभारी है अपने ही (लाभ) के लिये। और जो आभारी न हो तो अल्लाह निःस्वार्थ सराहनीय है।
13. तथा (याद करो) जब लुकमान ने कहा अपने पुत्र से जब वह समझा रहा था उसे: हे मेरे पुत्र! साझी मत बना अल्लाह का, वास्तव में शिर्क (मिश्रण वाद) बड़ा घोर अत्याचार^[1] है।
14. और हम ने आदेश दिया है मनुष्यों को अपने माता-पिता के संबन्ध में, अपने गर्भ में रखा उसे उस की माता ने दुःख पर दुःख झेल कर, और उस का दूध छुड़ाया दो वर्ष में कि तुम कृतज्ञ रहो मेरे और अपनी माता-पिता के, और मेरी ही ओर (तुम्हें) फिर आना है।
15. और यदि वह दोनों दबाव डालें तुम पर कि तुम साझी बनाओ मेरा उसे जिस का तुम को कोई ज्ञान नहीं, तो न^[2] मानो उन दोनों की

هَذَا خَلَقَ اللَّهُ فَأَرَوْنِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ بَلِ الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿١١﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنْ اشْكُرْ لِلَّهِ وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَفِيرٌ حَبِيدٌ ﴿١٢﴾

وَإِذْ قَالَ لُقْمَانُ لِابْنِهِ وَهُوَ يَعِظُهُ يَا بُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللَّهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ﴿١٣﴾

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ وَهَذَا عَلَى وَهْنٍ وَفَضْلُهُ فِي عَمَيْنِ أَنْ اشْكُرْ لِي وَلِوَالِدِكَ إِلَى الْمَصِيرِ ﴿١٤﴾

وَإِنْ جَاهِدَاكَ عَلَى أَنْ تُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبِ الْمَائِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا وَأَتَّبِعْ سَبِيلَ مَنْ أَنَابَ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ

- 1 हदीस में है कि घोर पापों में से: अल्लाह के साथ शिर्क करना, माँ-बाप के साथ बुरा व्यवहार, जान मारना तथा झूठी शपथ लेना है। (सहीह बुखारी: हदीस नंः 6675)
- 2 हदीस में है कि पाप में किसी की बात नहीं माननी है पुण्य में माननी है। (सहीह बुखारी: 7257)

बाता और उन के साथ रहो संसार^[1] में सुचारू रूप से, तथा राह चलो उस की जो ध्यान मग्न हो मेरी ओर, फिर मेरी ही ओर तुम्हें फिर कर आना है तो मैं तुम्हें सूचित कर दूंगा उस से जो तुम कर रहे थे।

فَأَنبِئْكُمْ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٠﴾

16. हे मेरे पुत्र! यदि हो (कोई कर्म) राई के दाने के बराबर, फिर वह यदि हो किसी पत्थर के भीतर या आकाशों में या धरती में, तो उसे भी उपस्थित करेगा^[2] अल्लाह! वास्तव में वह सब महीन बातों से सूचित है।

يُنَبِّئُ أَهْلَآن تَك مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ حَرْدَلٍ
فَتَكُنُّ فِي صَعْرَةٍ أَوْ فِي السَّمَوَاتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ
يَأْتِ بِهَا اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ﴿٥١﴾

17. हे मेरे पुत्र! स्थापना कर नमाज़ की और आदेश दे भलाई का तथा रोक बुराई से और सहन कर उस (दुःख) पर जो तुझे पहुँचे, वास्तव में यह बड़े साहस की बात है।

يُبَيِّنُ أَقِيمِ الصَّلَاةَ وَأْمُرْ بِالْمَعْرُوفِ وَانْهَ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَأَصْبِرْ عَلَىٰ مَا أَصَابَكَ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ
مِنَ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿٥٢﴾

18. और मत बल दे अपने माथे पर^[3] लोगों के लिये तथा मत चल धरती में अकड़ कर। निःसंदेह अल्लाह प्रेम नहीं करता^[4] किसी अहंकारी गर्व करने वाले से।

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ ۚ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ
مَرْحًا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَأَبْصِرُ كُلَّ مَخْفٍ ۚ ﴿٥٣﴾

19. और संतुलन रख अपनी चाल^[5] में तथा धीमी रख अपनी आवाज़,

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْبَصِيرُ ﴿٥٤﴾

1 अर्थात् माता-पिता यदि मिश्रणवादी और काफिर हों तब भी उन की संसार में सहायता करो।

2 प्रलय के दिन उस का प्रतिफल देने के लिये।

3 अर्थात् गर्व से।

4 सहीह हदीस में कहा गया है कि, वह स्वर्ग में नहीं जायेगा जिस के दिल में राई के दाने के बराबर भी अहंकार हो। (मुसन्द अहमद: 1/412)

5 (देखिये: सूरह फुर्कान, आयत नं०: 63)

वास्तव में सब से बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है।

20. क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह ने वश में कर दिया^[1] है तुम्हारे लिये जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, तथा पूर्ण कर दिया है तुम पर अपना पुरस्कार खुला तथा छुपा? और कुछ लोग विवाद करते हैं अल्लाह के विषय^[2] में बिना किसी ज्ञान तथा बिना किसी मार्गदर्शन और बिना किसी दिव्य (रोशन) पुस्तक के।
21. और जब कहा जाता है उन से कि पालन करो उस (कुर्आन) का जिसे उतारा है अल्लाह ने, तो कहते हैं: बल्कि हम तो उसी का पालन करेंगे जिस पर अपने पूर्वजों को पाया है। क्या यद्यपि शैतान उन्हें बुला रहा हो नरक की यातना की^[3] ओर?
22. और समर्पित कर देगा स्वयं को अल्लाह के तथा वह एकेश्वर वादी हो तो उस ने पकड़ लिया सुदृढ़ कड़ा तथा अल्लाह ही की ओर कर्मों का परिणाम है।
23. तथा जो काफिर हो गया तो आप को उदासीन न करे उस का कुफ़र। हमारी ओर ही उन्हें लौटना है, फिर हम सूचित कर देंगे उन को उन के कर्मों से। निःसंदेह अल्लाह अति ज्ञानी

إِنَّ أَنْكَرَ الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ ﴿١٠﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ تَأْتِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ ذِمَّةً ظَاهِرَةً وَأَظْهَرَةً وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿١٠﴾

وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ قَالُوا بَلِ نَتَّبِعُهُ مَا جَاءَنَا عَلَيْهِ الْآبَاءُ نَاوِلُونَكَ الشَّيْطَانَ يَدْعُوهُمْ إِلَى عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿١١﴾

وَمَنْ يُسْلِمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ وَإِلَى اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿١٢﴾

وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ كُفْرُهُ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١٣﴾

1 अर्थात तुम्हारी सेवा में लगा रखा है।

2 अर्थात उस के अस्तित्व और उस के अकेले पूज्य होने के विषय में।

3 अर्थात क्या वह सत्य और असत्य में अन्तर किये बिना असत्य ही का पालन करेंगे, और न समझ से काम लेंगे, न धर्म पुस्तक को मानेंगे?

है दिलों के भेदों का।

24. हम उन्हें लाभ पहुँचायेंगे बहुत^[1], थोड़ा फिर हम विवश कर देंगे उन्हें घोर यातना की ओर।
25. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने उत्पन्न किया है आकाशों तथा धरती को, तो अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने, आप कह दें कि सब प्रशंसा अल्लाह के लिये^[2] है, बल्कि उन में अधिकतर ज्ञान नहीं रखते।
26. अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों ताथ धरती में है, वास्तव में अल्लाह निस्पृह सराहनीय है।
27. और यदि जो भी धरती में वृक्ष है सब लेखनियाँ बन जायें तथा उस के पश्चात् सागर स्याही हो जायें सात सागरों तक, तो भी समाप्त नहीं होंगे अल्लाह (कि प्रशंसा) के शब्द, वास्तव में अल्लाह प्रभाव शाली गुणी है।
28. और तुम्हें उत्पन्न करना और पुनः जीवित करना केवल एक प्राण के समान^[3] है। निःसंदेह अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।
29. क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह मिला^[4] देता है रात्री को दिन में और

نَسَبَهُمْ وَلِيْلَاتِهِمْ نَصَبَهُمْ اِلَىٰ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٢٤﴾

وَلَيِّنَ سَاَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ فَلَئِمَّا الَّذِىُّ بَدَّلَ اٰكْرَهُمْ لَيَعْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾

اللّٰهُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَزِىْزُ الْحَمِيْدُ ﴿٢٦﴾

وَلَوْ اَنْسَا فِى الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامُ وَالْبَحْرِ يَمِيْنُهُ مِنْ بَعْدِ سَبْعَةِ اُبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمَتُ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ عَزِىْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٧﴾

مَا خَلَقَكُمْ وَاَلْبَعَثَكُمْ اِلَّا كُنُفٌ وَّ اِجْدَادٌ اِنَّ اللّٰهَ بِمَعِيَّةٍ بَصِيْرٌ ﴿٢٨﴾

الْوَتْرَانَ اللّٰهُ يُوَلِّجُ الْبَيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوَلِّجُ الْبَهَارَ

1 अर्थात् संसारिक जीवन का लाभ।

2 कि उन्होंने ने सत्य को स्वीकार कर लिया।

3 अर्थात् प्रलय के दिन अपनी शक्ति तथा सामर्थ्य से सब को एक प्राणी के पैदा करने तथा जीवित करने के समान पुनः जीवित कर देगा।

4 कुर्आन ने एकेश्वरवाद का आमंत्रण देने तथा मिश्रणवाद का खण्डन करने के

मिला देता है दिन को^[1] रात्री में, तथा वश में कर रखा है सूर्य तथा चाँद को, प्रत्येक चल रहा है एक निर्धारित समय तक, और अल्लाह उस से जो तुम कर रहे हो भली भाँती अवगत है।

30. यह सब इस कारण है कि अल्लाह ही सत्य है और जिसे वह पुकारते हैं अल्लाह के सिवा असत्य है, तथा अल्लाह ही सब से ऊँचा, सब से बड़ा है।
31. क्या तुम ने नहीं देखा कि नाव चलती है सागर में अल्लाह के अनुग्रह के साथ, ताकि वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाये। वास्तव में इस में कई निशानियाँ है प्रत्येक सहनशील कृतज्ञ के लिये।
32. और जब छा जाती है उन पर लहर छत्रों के समान, तो पुकारने लगते हैं अल्लाह को उस के लिये शुद्ध कर के धर्म को, और जब उन्हें सुरक्षित पहुँचा देता है थल तक तो उन में से कुछ संतुलित रहने वाले होते हैं। और हमारी निशानियों को प्रत्येक वचनभंगी अति कृतघ्न ही नकारते हैं।
33. हे लोगों! डरो अपने पालनहार से तथा भय करो उस दिन का जिस

فِي الْبَيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلَّ يَوْمٍ يَجْرِي إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى وَأَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٣٠﴾

ذَٰلِكَ يَٰأَنَّا اللَّهُ هُوَ السَّمِيُّ وَأَنَّ يَٰأَيُّهَا النَّاسُ مَنْ دُونِهِ
الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٣١﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ يَجْرِي فِي الْبَحْرِ نَبْعَةً مِنَ اللَّهِ
لِيُرِيَكُمْ مِنْ آيَاتِهِ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ
شَاكِرٍ ﴿٣٢﴾

وَإِذْ أَخَشَيْنَاهُمْ مُوجًا ظَالِمًا دَعَا إِلَهَ الْغُلَامِينَ لَهُ
الَّذِينَ قَالُوا نَجِّنَا مِنْهُ إِلَى الْبَرِّ فَبِهِمْ
مُقْتَصِدًا وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ﴿٣٣﴾

يَٰأَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ وَأَخْشَوْا يَوْمًا لَا يَجْرِي

लिये फिर इस का वर्णन किया है कि जब विश्व का रचयिता तथा विधाता अल्लाह ही है तो पूज्य भी वही है, फिर भी यह विश्वव्यापी कुपथ है कि लोग अल्लाह के सिवा अन्य कि पूजा करते तथा सूर्य और चाँद को सज्दा करते हैं, निर्धारित समय से अभिप्राय प्रलय है।

1 तो कभी दिन बड़ा होता है तो कभी रात्री।

दिन नहीं काम आयेगा कोई पिता अपनी संतान के और न कोई पुत्र काम आने वाला होगा अपने पिता के कुछ^[1] भी। निश्चय अल्लाह का वचन सत्य है। अतः तुम्हें कदापि धोखे में न रखे संसारिक जीवन और न धोखे में रखे अल्लाह से प्रवचक (शैतान)।

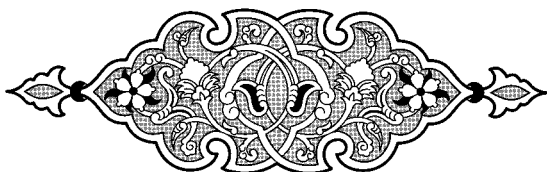
34. निःसंदेह अल्लाह ही के पास है प्रलय^[2] का ज्ञान, और वही उतारता हे वर्षा, और जानता है जो कुछ गर्भाशयों में है, और नहीं जानता कोई प्राणी कि वह क्या कमायेगा कल, और नहीं

وَالِدٌ عَنْ وَاٰلِدٍ وَلَا مَوْلُوۡدٌ هُوَ جَارِعٌ
وَالِدٌ سُبُوۡاۡنٌ اِنَّ وَعَدَ اللّٰهُ حَقًّا فَلَا تَعۡزٰنُكُمُ الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَا وَلَا يَعۡزٰنُكُمُ بِاللّٰهِ الْعُرُوۡرُ ﴿٣٤﴾

اِنَّ اللّٰهَ عِنۡدَهُ عِلۡمُ السَّاعَةِ وَيُنۡزِلُ الْغَيْثَ
وَيَعۡلَمُ مَا فِى الْاَرْحَامِ وَمَا تَدۡرِىۡ نَفۡسٌ مَّاذَا
تَكۡسِبُ عۡدَاۗءُ مَا تَدۡرِىۡ نَفۡسٌ بِاٰتِىۡ اَرۡضٍ
تَمُوۡتُ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيۡمٌ خَبِيۡرٌ ﴿٣٥﴾

- 1 अर्थात् परलोक की यातना संसारिक दण्ड के सामान नहीं होगी कि कोई किसी की सहायता से दण्ड मुक्त हो जाये।
- 2 अब हुरैरह (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दिन लोगों के बीच बैठे हुये थे कि एक व्यक्ति आया, और प्रश्न किया कि अल्लाह के रसूल! ईमान क्या है? आप ने कहा: ईमान यह है कि तुम अल्लाह पर तथा उस के फरिश्तों, उस के सब रसूलों और उस से मिलने और फिर दौबारा जीवित किये जाने पर ईमान लाओ।
उस ने कहा: इस्लाम क्या है? आप ने कहा: इस्लाम यह है कि केवल अल्लाह की इबादत करो और किसी वस्तु को उस का साझी न बनाओ, तथा नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो, तथा रमज़ान के रोज़े रखो।
उस ने कहा: इहसान क्या है? आप ने कहा: इहसान यह है कि अल्लाह की इबादत ऐसे करो जैसे कि तुम उसे देख रहे हो। यदि यह न हो सके तो यह ख्याल रखो कि वह तुम्हें देख रहा है।
उस ने कहा: प्रलय कब होगी? आप ने कहा: मैं प्रश्नकर्ता से अधिक नहीं जानता। परन्तु मैं तुम्हें उस की कुछ निशानियाँ बताऊँगा: जब स्त्री अपने स्वामिनी को जन्म देगी और जब नंगे निः वस्त्र लोग मुखिया हो जायेंगे। पाँच बातों में जिन को अल्लाह ही जानता है। और आप ने यही आयत पढ़ी। फिर वह व्यक्ति चला गया। आप ने कहा: उसे बुलाओ, तो वह नहीं मिला। आप ने फ़रमाया: वह ज़िब्रील थे, तुम्हें तुम्हारा धर्म सिखाने आये थे। (सहीह बुख़ारी 4777)

जानता कोई प्राणी कि किस धरती
में मरेगा, वास्तव में अल्लाह ही सब
कुछ जानने वाला सब से सूचित है।



सूरह सज्दा - 32



सूरह सज्दा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 30 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत नं० 15 में ईमान वालों का यह गुण बताया गया है कि उन्हें अल्लाह की आयतों द्वारा शिक्षा दी जाती है तो वह सज्दे में गिर पड़ते हैं। इसी लिये इस का यह नाम है।
- इस में तौहीद तथा आखिरत की बातों को ऐसे वर्णन किया गया है कि संदेह दूर हो कर दिल को विश्वास हो जाये। और बताया गया है कि यह पुस्तक (क़र्आन) लोगों को सावधान करने के लिये उतारी गई है। तौहीद के साथ ही मनुष्य की उत्पत्ति की चर्चा भी की गई है।
- इस में आखिरत का विषय तथा ईमान वालों की कुछ विशेषतायें तथा उन का शुभ परिणाम बताया गया है और झुठलाने वालों का दुष्परिणाम भी दिखाया गया है।
- यह बताया गया है कि नबी का आना कोई अनोखी बात नहीं है। इस से पहले भी मूसा (अलैहिस्सलाम) तथा दूसरे नबी आते रहे। और विनाशित जातियों के परिणाम पर विचार करने को कहा गया है।
- अन्त में विरोधियों की आपत्तियों का जवाब देते हुये उन्हें सावधान किया गया है। हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) इस सूरह को जुमुआ के दिन फ़ज्र की नमाज़ में पढ़ते थे। (सहीह बुख़ारी: 891)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़ लाम मीम।
2. इस पुस्तक का उतारना जिस में कोई संदेह नहीं पूरे संसार के पालनहार की ओर से है।
3. क्या वे कहते हैं कि इसे इस ने घड़

الْعَمَّ

تَنْزِيلِ الْكِتَابِ لَارْتِيبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ

लिया है? बल्कि यह सत्य है आप के पालनहार कि ओर से ताकि आप सावधान करें उन लोगों को जिन^[1] के पास नहीं आया है कोई सावधान करने वाला आप से पहले। संभव है वह सीधी राह पर आ जायें।

4. अल्लाह वही है जिस ने पैदा किया आकाशों तथा धरती को और जो दोनों के मध्य है छः दिनों में। फिर स्थित हो गया अर्श पर। नहीं है उस के सिवा तुम्हारा कोई संरक्षक और न कोई अभिस्तावक (सिफारशी) तो क्या तुम शिक्षा नहीं लेते?
5. वह उपाय करता है प्रत्येक कार्य की आकाश से धरती तक, फिर प्रत्येक कार्य ऊपर उस के पास जाता है एक दिन में जिस का माप एक हज़ार वर्ष है तुम्हारी गणना से।
6. वही है ज्ञानी छुपे तथा खुले का अति प्रभुत्वशाली दयावान्।
7. जिस ने सुन्दर बनाई प्रत्येक चीज़ जो उत्पन्न की, और आरंभ की मनुष्य की उत्पत्ति मिट्टी से।
8. फिर बनाया उस का वंश एक तुच्छजल के निचोड़ (वीर्य) से।
9. फिर बराबर किया उस को और फूंक दिया उस में अपनी आत्मा (प्राण)। तथा बनाये तुम्हारे लिये कान और आँख तथा दिला तुम कम

لَسْتُمْ تَدْرِكُونَ مِمَّا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكُمْ
لَعَلَّكُمْ يَهْتَدُونَ ۝

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ مَا لَكُمْ مِنْ
دُونِهِ مِنْ دَلِيلٍ وَلَا تَسْتَعِينُ ۝ فَكَلِمَةً كُرُوءًا ۝

يُدَبِّرُ الْأُمُورَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ
فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ ۝

ذَٰلِكَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝

الَّذِي أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ
الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ ۝

ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ ۝

ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِن رُّوحِهِ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ
وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝

1 इस से अभिप्राय मक्का वासी हैं।

ही कृतज्ञ होते हो।

10. तथा उन्होंने ने कहा: क्या जब हम खो जायेंगे धरती में तो क्या हम नई उत्पत्ति में होंगे? बल्कि वह अपने पालनहार से मिलने का इन्कार करने वाले हैं।
11. आप कह दें कि तुम्हारा प्राण निकाल लेगा मौत का फरिश्ता जो तुम पर नियुक्त किया गया है फिर अपने पालनहार की ओर फेर दिये जाओगे।^[1]
12. और यदि आप देखते जब अपराधी अपने सिर झुकाये होंगे अपने पालनहार के समक्ष (वह कह रहे होंगे): हे हमारे पालनहार! हम ने देख लिया और सुन लिया, अतः हमें फेर दे (संसार में) हम सदाचार करेंगे। हमें पुरा विश्वास हो गया।
13. और यदि हम चाहते तो प्रदान कर देते प्रत्येक प्राणी को उस का मार्गदर्शन। परन्तु मेरी यह बात सत्य हो कर रही कि मैं अवश्य भरूँगा नरक को जिन्नों तथा मानव से।
14. तो चखो अपने भूल जाने के कारण अपने इस दिन के मिलने को, हम ने (भी) तुम्हें भुला दिया^[2] है। चखो सदा की यातना उस के बदले जो तुम कर रहे थे।

وَقَالُوا إِذَا ضَلَلْنَا فِي الْأَرْضِ أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ
جَدِيدٍ ۚ بَلْ هُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ كَفِرُونَ ۝

قُلْ يَتَوَفَّاكُم مِّمَّا تَتَذَكَّرُ الَّذِي فِيكُمْ مَخْفُونٌ
إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ۝

وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا رُءُوسِهِمْ عِندَ رَبِّهِمْ
رَبَّنَا أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا لَعَمَلٍ صَالِحًا إِنَّا
مُقِرُّونَ ۝

وَأَوْشِكُنَا اللَّيْلُ تَنَاكُلُ نَفْسٍ هُدَاهَا وَلَكِن حَقَّ
الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ
أَجْمَعِينَ ۝

فَذُوقُوا أَيُّهَا النَّاسُ عَذَابَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ
وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

- 1 अर्थात नई उत्पत्ति पर आश्चर्य करने से पहले इस पर विचार करो कि मरण तो आत्मा के शरीर से विलग हो जाने का नाम है जो दूसरे स्थान पर चली जाती है। और परलोक में उसे नया जन्म दे दिया जायेगा फिर उसे अपने कर्म के अनुसार स्वर्ग अथवा नरक में पहुँचा दिया जायेगा।
- 2 अर्थात आज तुम पर मेरी कोई दया नहीं होगी।

15. हमारी आयतों पर बस वही ईमान लाते हैं जिन को जब समझाया जाये उन से तो गिर जाते हैं सज्दा करते हुये और पवित्रता का गान करते हैं अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ और अभिमान नहीं करते।^[1]
16. अलग रहते हैं उन के पार्श्व (पहलु) बिस्तरों से, वह प्रार्थना करते रहते हैं अपने पालनहार से भय तथा आशा रखते हुये, तथा उस में से जो हम ने उन्हें प्रदान किया है दान करते रहते हैं।
17. तो नहीं जानता कोई प्राणी उसे जो छुपा रखा है हम ने उन के लिये आँखों की ठंडक^[2] उस के प्रतिफल में जो वह कर रहे थे।
18. फिर क्या जो ईमान वाला हो उस के समान है जो अवज्ञाकारी हो? वह सब समान नहीं हो सकेंगे।
19. जो ईमान लाये तथा सदाचार किये तो उन्हीं के लिये स्थायी स्वर्ग है, अतिथि सत्कार के लिये उस के बदले जो वह करते रहे।
20. और जो अवज्ञा कर गये, उन का आवास नरक है। जब जब वह निकलना चाहेंगे उस में से तो फेर दिये जायेंगे उस में, तथा कहा

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِرُوا بِهَا حُزِنُوا
سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ
لَا يَسْتَكْبِرُونَ ⑤

تَجَنَّبَنِي لِمَا بَوَّأْتُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ عُونًا رَبِّهِمْ
خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ⑥

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ
جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑦

أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا كَمَن كَانَ فَالِيسَآءَ أَلَيْسَتُنَّ ⑧

أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ
أَلْبَسُوا نَزَلَ لِكُلِّ مَنَّا كِتَابٌ ⑨

وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ كُلَّمَا أَرَادُوا
أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا
عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنتُمْ فِيهَا تُكذِّبُونَ ⑩

1 यहाँ सज्दा तिलावत करना चाहिये।

2 हदीस में है कि अल्लाह ने कहा है कि मैं ने अपने सदाचारी भक्तों के लिये ऐसी चीजें तैयार की हैं जिन्हें न किसी आँख ने देखा है और न किसी कान ने सुना और न किसी मनुष्य के दिल में उन का विचार आया। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (सहीह बुखारी: 4780)

जायेगा उन से कि चखो उस अग्नि की यातना जिसे तुम झुठला रहे थे।

21. और हम अवश्य चखायेंगे उन को संसारिक यातना, बड़ी यातना से पूर्व ताकि वह फिर^[1] आयें।
22. और उस से अधिक अत्याचारी कौन है जिसे शिक्षा दी जाये उस के पालनहार की आयतों द्वारा, फिर विमुख हो जाये उन से? वास्तव में हम अपराधियों से बदला लेने वाले हैं।
23. तथा हम ने मूसा को प्रदान की (तौरात) तो आप न हों किसी संदेह में उस^[2] से मिलने में। तथा बनाया हम ने उसे (तौरात को) मार्गदर्शन इस्राईल की संतान के लिये।
24. तथा हम ने उन में से अग्रणी बनाये जो मार्गदर्शन देते रहे हमारे आदेश द्वारा जब उन्होंने ने सहन किया तथा हमारी आयतों पर विश्वास^[3] करते रहे।
25. वस्तुतः आप का पालनहार ही निर्णय करेगा उन के बीच प्रलय के दिन जिस में वह विभेद करते रहे।
26. तो क्या मार्गदर्शन नहीं कराया उन्हें

وَلَنذِيْقَنَّهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ
الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ
أَعْرَضَ عَنْهَا إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُن فِي
سُرِيَةٍ مِّنْ لِّقَاءِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى
لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٣﴾

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ إِبْرَاهِيمَ يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا آلًا
صَابِرِينَ وَكَانُوا يَا بَيْتَنَا يُوْقِنُونَ ﴿٢٤﴾

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْفَصْلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٥﴾

أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ

1 अर्थात ईमान लायें और अपने कुकर्म से क्षमा याचना कर लें।

2 इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मेराज की रात्रि में मूसा (अलैहिस्सलाम) से मिलने की ओर संकेत है। जिस में मूसा (अलैहिस्सलाम) ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अल्लाह से पचास नमाजों को पाँच कराने का प्रामर्श दिया। (सहीह बुखारी: 3207, मुस्लिम: 164)

3 अर्थ यह है कि आप भी धैर्य तथा पूरे विश्वास के साथ लोगों को सुपथ दर्शायें।

कि हम ने ध्वस्त कर दिया इस से पूर्व बहुत से युग के लोगों को जो चल-फिर रहे थे अपने घरों में वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ (शिक्षायें) हैं, तो क्या वह सुनते नहीं हैं?

27. क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि हम बहा ले जाते हैं जल को सूखी भूमि की ओर फिर उपजाते हैं उस के द्वारा खेतियाँ, खाते हैं जिस में से उन के चौपाये तथा वह स्वयं तो क्या वह गौर नहीं करते?
28. तथा कहते हैं कि कब होगा वह निर्णय यदि तुम सच्चे हो?
29. आप कह दें: निर्णय के दिन लाभ नहीं देगा काफ़िरों को उन का ईमान लाना^[1] और न उन्हें अवसर दिया जायेगा।
30. अतः आप विमुख हो जायें उन से तथा प्रतीक्षा करें, यह भी प्रतीक्षा करने वाले हैं।

الْقُرُونِ يَبْشُرُونَ فِي مَسْجِدِهِمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَآيَاتٍ أَفْلا يَسْمَعُونَ ﴿٢٧﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ
فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ
وَأَنْفُسُهُمْ أَفْلا يُبْصِرُونَ ﴿٢٨﴾

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْفَتْحُ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٢٩﴾

قُلْ يَوْمَ الْقِيَامِ لَا يَنْفَعُ الْكَاذِبِينَ كَفَرُوا وَإِيمَانُهُمْ
وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٣٠﴾

فَاعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرِ الْإِهْمُ مُنْتَظَرُونَ ﴿٣١﴾

1 इन आयतों में मक्का के काफ़िरों को सावधान किया गया है कि इतिहास से शिक्षा ग्रहण करो, जिस जाति ने भी अल्लाह के रसूलों का विरोध किया उस को संसार से निरस्त कर दिया गया। तुम निर्णय की मांग करते हो तो जब निर्णय का दिन आ जायेगा तो तुम्हारे संभाले नहीं संभलेगी और उस समय का ईमान कोई लाभ नहीं देगा।

सूरह अहज़ाब - 33



सूरह अहज़ाब के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 73 आयतें हैं।

- इस सूरह में अहज़ाब (जत्था या सेनाओं) की चर्चा के कारण इसे यह नाम दिया गया है।
- इस में काफ़िरों और मुनाफ़िकों के धोखे में न आने तथा केवल अल्लाह पर भरोसा करने पर बल दिया गया है। फिर जाहिलियत के मुंह बोले पुत्र की परम्परा का सुधार करने के साथ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पत्नियों का पद बताया गया है।
- अहज़ाब के युद्ध में अल्लाह की सहायता तथा मुनाफ़िकों की दुर्गंत बताई गई है।
- इस में मुँह बोले पुत्र की परम्परा को तोड़ने के लिये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) के विवाह का वर्णन किया गया है।
- ईमान वालों को, अल्लाह को याद करने का निर्देश देते हुये उस पर दया तथा बड़े प्रतिफल की शुभ सूचना दी गई है। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मान-मर्यादा को उजागर किया गया है।
- तलाक़ और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पत्नियों के विषय में कुछ विशेष आदेश दिये गये हैं।
- पर्दे का आदेश दिया गया है, तथा प्रलय की चर्चा की गई है।
- अन्त में मुसलमानों का दायित्व याद दिलाते हुये मुनाफ़िकों को चेतावनी दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे नबी! अल्लाह से डरो, और

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ

काफ़िरों तथा मुनाफ़िकों की आज्ञापालन न करो। वास्तव में अल्लाह हिक़मत वाला सब कुछ जानने^[1] वाला है।

2. तथा पालन करो उस का जो वही (प्रकाशना) की जा रही है आप की ओर आप के पालनहार की ओर से। निश्चय अल्लाह जो तुम कर रहे हो उस से सूचित है।
3. और आप भरोसा करें अल्लाह पर, तथा अल्लाह पर्याप्त है रक्षा करने वाला।
4. और नहीं रखे हैं अल्लाह ने किसी के दो दिल उस के भीतर और नहीं बनाया है तुम्हारी पत्नियों को जिन से तुम ज़िहार^[2] करते हो उन में से तुम्हारी मातायें तथा नहीं बनाया है तुम्हारे मुँह बोले पुत्रों को तुम्हारा पुत्र। यह तुम्हारी मौखिक बातें हैं। और अल्लाह सच्च कहता है तथा वही सुपथ दिखाता है।
5. उन्हें पुकारो उन के बापों से संबन्धित कर के, यह अधिक न्याय

وَالْمُتَّفِقِينَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

وَأَتَّبِعْ مَا يُوْحَىٰ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝

مَا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ مِنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفَةٍ ۚ وَمَا جَعَلَ أَزْوَاجَكُمْ أَلَىٰ أَنْ تَظْهَرُونَ مِنْهُنَّ ۚ أُمَّهَاتِكُمْ وَمَا جَعَلَ أَدْعِيَاءَكُمْ أَبْنَاءَكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ ۚ يَأْفُواهُمُ ۗ وَاللَّهُ يَقُولُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيلَ ۝

أَدْعُوهُمْ لِأَبَائِهِمْ ۚ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ ۚ وَإِنْ لَمْ

- 1 अतः उसी की आज्ञा तथा प्रकाशना का अनुसरण और पालन करो।
- 2 इस आयत का भावार्थ यह है कि जिस प्रकार एक व्यक्ति के दो दिल नहीं होते वैसे ही उस की पत्नी ज़िहार कर लेने से उस की माता तथा उस का मुँह बोला पुत्र उस का पुत्र नहीं हो जाता।
नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने नबी होने से पहले अपने मुक्त किये हुये दास ज़ैद बिन हारिसा को अपना पुत्र बनाया था और उन को हारिसा पुत्र मुहम्मद कहा जाता था जिस पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी: 4782)
ज़िहार का विवरण सूरह मुजादला में आ रहा है।

की बात है अल्लाह के समीप। और यदि तुम नहीं जानते उन के बापों को तो वह तुम्हारे धर्म बन्धु तथा मित्र हैं। और तुम्हारे ऊपर कोई दोष नहीं है उस में जो तुम से चूक हुई है, परन्तु (उस में है) जिस का निश्चय तुम्हारे दिल करें। तथा अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

6. नबी^[1] अधिक समीप (प्रिय) है ईमान वालों से उन के प्राणों से, और आप की पत्नियाँ^[2] उन की मातायें हैं। और समीपवर्ती संबन्धी एक दूसरे से अधिक समीप^[3] हैं, अल्लाह के लेख में ईमान वालों और मुहाजिरों से। परन्तु यह कि करते रहो अपने मित्रों के साथ भलाई, और यह पुस्तक में लिखा हुआ है।

7. तथा (याद करो) जब हम ने नबियों से उन का वचन^[4] लिया तथा आप से और नूह तथा इब्राहीम और मूसा तथा मर्यम के पुत्र ईसा से, और हम ने लिया उन से दृढ़ वचन।

تَعْلَمُوا الْآبَاءَ هُمْ فَأَخَوَانِكُمْ فِي الدِّينِ وَمَوْلَانِكُمْ
وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُم بِهِ وَلَكِنْ
تَاءَتَدَّتْ قُلُوبِكُمْ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

الَّذِينَ أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ وَأَزْوَاجُهُ
أُمَّهَاتُهُمْ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ
فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا أَنْ
تَفْعَلُوا إِلَىٰ أَوْلِيَائِكُمْ مَعْرُوفًا كَانَ ذَلِكَ فِي الْكِتَابِ
مَسْطُورًا ۝

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ
نُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَىٰ ابْنِ مَرْيَمَ وَأَخَذْنَا
مِنْهُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا ۝

- 1 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मैं मुसलमानों का अधिक समीपवर्ती हूँ। यह आयत पढ़ो, तो जो माल छोड़ जाये वह उस के वारिस का है और जो कर्ज़ तथा निर्बल संतान छोड़ जाये तो मैं उस का रक्षक हूँ। (सहीह बुखारी: 4781)
- 2 अर्थात् उन का सम्मान माताओं के बराबर है और आप के पश्चात् उन से विवाह निषेधित है।
- 3 अर्थात् धर्म विधानानुसार उत्तराधिकार समीपवर्ती संबंधियों का है, इस्लाम के आरंभिक युग में हिज़रत तथा ईमान के आधार पर एक दूसरे के उत्तराधिकारी होते थे जिसे मीरास की आयत द्वारा निरस्त कर दिया गया।
- 4 अर्थात् अपना उपदेश पहुँचाने का।

8. ताकि वह प्रश्न^[1] करे सच्चों से उन के सच्च के संबंध में तथा तय्यार की है काफ़िरों के लिये दुःखदायी यातना।
9. हे ईमान वालो! याद करो अल्लाह के पुरस्कार को अपने ऊपर जब आ गई तुम्हारे पास जत्थे, तो भेजी हम ने उन पर आँधी और ऐसी सेनायें जिन को तुम ने नहीं देखा, और अल्लाह जो तुम कर रहे थे उसे देख रहा था।
10. जब वह तुम्हारे पास आ गये तुम्हारे ऊपर से तथा तुम्हारे नीचे से और जब पत्थरा गई आँखें, तथा आने लगे दिल मुँह^[2] को तथा तुम विचारने लगे अल्लाह के संबंध में विभिन्न विचार।
11. यहीं परीक्षा ली गई ईमान वालों की और वह झंझोड़ दिये गये पूर्ण रूप से।
12. और जब कहने लगे मुश्रिक और जिन के दिलों में कुछ रोग था कि अल्लाह तथा उस के रसूल ने नहीं वचन दिया हमें परन्तु धोखे का।
13. और जब कहा उन के एक गिरोह ने: हे यस्त्रिब^[3] वालो! कोई स्थान नहीं

لِيَسْتَلِ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ وَاَعَدَّ لِلْكَٰفِرِيْنَ
عَذٰبًا اَلِيْمًا

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ
جَآءَكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا لَّمْ
تَرَوْهَا وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا

اِذْ جَآءَ وَاُتُوْا مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ
رَمَحْتَ الْاَنْصَابَ وَبَلَغْتَ الْفُلُوْبُ السَّنَاجِرَ
وَتَطَّلَوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَ

هٰذَا الَّذِيْ اُنْتَبِهُ الْمُوْمِنُوْنَ وَاذْكُرُوْا زُلْفَةَ الْاَسَدِيَّةِ

وَاذْكُرُوْا الْقَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ
مَّا وَعَدْنَا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ الْاِغْوَاوًا

وَاِذْ قَالَتْ طٰلُفَةُ مِّنْهُمْ يٰۤاَهْلُ يَثْرِبَ لَا مَقٰمَ

1 अर्थात प्रलय के दिन (देखिये: सूरह आराफ़, आयत: 6)

2 इन आयतों में अहज़ाब के युद्ध की चर्चा की गई है। जिस का दूसरा नाम (खन्दक का युद्ध) भी है। क्यों कि इस में खन्दक (खाई) खोद कर मदीना की रक्षा की गई। सन् 5 हिजरी में मक्का के काफ़िरों ने अपने पूरे सहयोगी कबीलों के साथ एक भारी सेना लेकर मदीना को घेर लिया और नीचे वादी और ऊपर पर्वतों से आक्रमण कर दिया। उस समय अल्लाह ने ईमान वालों की रक्षा आँधी तथा फ़रिश्तों की सेना भेज कर की। और शत्रु पराजित हो कर भागे। और फिर कभी मदीना पर आक्रमण करने का साहस न कर सकें।

3 यह मदीने का प्राचीन नाम है।

है तुम्हारे लिये, अतः लौट^[1] चलो।
तथा अनुमति माँगने लगा उन में
से एक गिरोह नबी से, कहने लगा:
हमारे घर ख़ाली है, जब कि वह
ख़ाली न थे। वह तो बस निश्चय कर
रहे थे भाग जाने का।

14. और यदि प्रवेश कर जातीं उन पर
मदीने के चारों ओर से (सेनायें) फिर
उन से माँग की जाती उपद्रव^[2] की
तो अवश्य उपद्रव कर देते। और उस
में तनिक भी देर नहीं करते।

15. जब कि उन्होंने ने वचन दिया था
अल्लाह को इस से पूर्व कि पीछा नहीं
दिखायेंगे और अल्लाह के वचन का
प्रश्न अवश्य किया जायेगा।

16. आप कह दें: कदापि लाभ नहीं
पहुँचायेगा तुम्हें भागना यदि तुम
भाग जाओ मरण से या मारे जाने से।
और तब तुम थोड़ा ही^[3] लाभ प्राप्त
कर सकोगे।

17. आप पूछिये कि वह कौन है जो तुम्हें
बचा सके अल्लाह से यदि वह तुम्हारे
साथ बुराई चाहे अथवा तुम्हारे साथ
भलाई चाहे? और वह अपने लिये
नहीं पायेंगे अल्लाह के सिवा कोई
संरक्षक और न कोई सहायक।

18. जानता है अल्लाह जो रोकने वाले हैं तुम

لَكُمْ قَارِعُونَ وَسَيَأْذُنُ قَوْمٌ مِّنْهُمْ النَّبِيِّ
يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ
إِنَّ يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ۝

وَلَوْ دَخَلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ أَقْطَارِهِمْ سُبُلُ الْفِتْنَةِ
لَأْتَوْهَا وَمَا تَأْتِبُوا بِهَا إِلَّا يُبِيرًا ۝

وَلَقَدْ كَانُوا عَاهِدُوا لَ اللَّهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُؤْتُوا
الْأَذْهَانَ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ مَسْئُولًا ۝

قُلْ لَنْ يَنْفَعَكُمْ أَلْفَ أَرَانٍ قَدْ نَزَمْتُمْ مِنَ الْمَوْتِ
أَوْ الْقَتْلِ وَإِذْ أَنْتُمْ تَعْمُونَ الْأَقْلِيَالَ ۝

قُلْ مَنْ ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُمْ مِنَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ
سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ
دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝

وَدَنْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمَعْرُوقِينَ مِنْكُمْ وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ

1 अर्थात् रणक्षेत्र से अपने घरों को।

2 अर्थात् इस्लाम से फिर जाने तथा शिर्क करने की।

3 अर्थात् अपनी सीमित आयु तक जो परलोक की अपेक्षा बहुत थोड़ी है।

में से तथा कहने वाले हैं अपने भाईयों से कि हमारे पास चले आओ, तथा नहीं आते हैं युद्ध में परन्तु कभी कभी।

19. वह बड़े कंजूस हैं तुम पर। फिर जब आजाये भय का^[1] समय, तो आप उन्हें देखेंगे कि आप की ओर तक रहे हैं फिर रही है उन की आँखें, उस के समान जो मरणासन्न दशा में हो, और जब दूर हो जाये भय तो वह मिलेंगे तुम से तेज़ जुबानों^[2] से बड़े लोभी हो कर धन को वह ईमान नहीं लाये हैं। अतः व्यर्थ कर दिये अल्लाह ने उन के सभी कर्म, तथा यह अल्लाह पर अति सरल है।
20. वह समझते हैं कि जत्थे नहीं^[3] गये और यदि आ जायें सेनायें तो वह चाहेंगे कि वह गाँव में हों, गाँव वालों के बीच तथा पूछते रहें तुम्हारे समाचार, और यदि तुम में होते भी तो वह युद्ध में कम ही भाग लेते।
21. तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल में उत्तम^[4] आदर्श है, उस के लिये जो आशा रखता हो अल्लाह और अन्तिम दिन (प्रलय) की, तथा याद करे अल्लाह को अत्यधिक।
22. और जब ईमान वालों ने सेनायें देखीं तो कहा: यही है जिस का वचन दिया

هَلُمَّ الْبَنَاءَ وَلَا يَأْتُونَ الْبَأْسَ إِلَّا قَلِيلًا

أَشْتَهَىٰ عَلَيْكُمْ فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنْظُرُونَ
إِلَيْكَ تَدْوِيرًا أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ
الْمَوْتِ فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُمْ بِالْأَسِنَّةِ جَمَدًا
أَشْتَهَىٰ عَلَى الْغَيْرِ وَاللَّيْلُ لَكُمْ رُجُومًا فَأَحْبَطَ اللَّهُ
أَعْمَالَهُمْ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا

يَحْسَبُونَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا وَإِنْ يَأْتِ الْأَحْزَابَ
يَوَدُّ وَالْوَلَاةُ أَنْهُمْ بَادُونَ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ
عَنْ أَيْمَانِكُمْ أَكْرَمًا وَلَوْ كَانُوا فِيكُمْ يَفْتَنُوكُمُ الْإِسْلَامَ

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ
كَانَ يَرْجُو اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا

وَلَتَنَارَ الْمُشْرِكُونَ الْأَحْزَابَ قَالُوا هَذَا مَا

1 अर्थात् युद्ध का समय।

2 अर्थात् मर्म भेदी बातें करेंगे, और विजय में प्राप्त धन के लोभ में बातें बनायेंगे।

3 अर्थात् ये मुनाफ़िक इतने कायर हैं कि अब भी उन्हें सेनाओं का भय है।

4 अर्थात् आप के सहन, साहस तथा वीरता में।

था हमें अल्लाह और उस के रसूल ने। और सच्च कहा अल्लाह तथा उस के रसूल ने और इस ने नहीं अधिक किया परन्तु (उन के) ईमान तथा स्वीकार को।

23. ईमान वालों में कुछ वह भी है जिन्होंने सच्च कर दिखाया अल्लाह से किये हुये अपने वचन को। तो उन में कुछ ने अपना वचन^[1] पूरा कर दिया, और उन में से कुछ प्रतीक्षा कर रहे हैं। और उन्होंने तनिक भी परिवर्तन नहीं किया।

24. ताकि अल्लाह प्रतिफल प्रदान करे सच्चों को उन के सच्च का। तथा यातना दे मुनाफ़िकों को अथवा उन को क्षमा कर दे। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील और दयावान् है।

25. तथा फेर दिया अल्लाह ने काफ़िरों को (मदीना से) उन के क्रोध के साथ। वह नहीं प्राप्त कर सके कोई भलाई और पर्याप्त हो गया अल्लाह ईमान वालों के लिये युद्ध में। और अल्लाह अति शक्तिशाली तथा प्रभुत्वशाली है।

26. और उतार दिया अल्लाह ने उन अहले किताब को जिन्होंने सहायता की उन (सेनाओं) की उन के दुर्गाँ से। तथा डाल दिया उन के दिलों में भय।^[2]

وَعَدْنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ
وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا ۝

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ
عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَنْ قَضَىٰ نَجْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ
وَمَا بَدَّلُوا بَدْلًا ۝

لِيَجْزِيَ اللَّهُ الصَّادِقِينَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ
الْمُنَافِقِينَ إِنْ شَاءَ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَلُؤْ أَحَدًا
وَكَفَىٰ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ ۖ وَكَانَ اللَّهُ
قَوِيًّا عَزِيمًا ۝

وَأَنْزَلَ الَّذِينَ ظَاهَرُوهُمْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ
صَيَاصِيهِمْ وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ فَرَبَقًا
تَقْتُلُونَ وَتَأْبِرُونَ فَرِيقًا ۝

1 अर्थात युद्ध में शहीद कर दिये गये।

2 इस आयत में बनी कुरैज़ा के युद्ध की ओर संकेत है। इस यहूदी कबीले की नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ संधि थी। फिर भी उन्होंने संधि भंग कर के खन्दक के युद्ध में कुरैशे मक्का का साथ दिया। अतः युद्ध समाप्त होते

उन के एक गिरोह को तुम बध कर रहे थे तथा बंदी बना रहे थे एक दूसरे गिरोह को।

27. और तुम्हारे अधिकार में दे दी उन की भूमी, तथा उन के घरों और धनों को, और ऐसी धरती को जिस पर तुम ने पग नहीं रखे थे। तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
28. हे नबी! आप अपनी पत्नियों से कह दें कि यदि तुम चाहती हो संसारिक जीवन तथा उस की शोभा तो आओ मैं तुम्हें कुछ दे दूँ तथा विदा कर दूँ अच्छाई के साथ।
29. और यदि तुम चाहती हो अल्लाह और उस के रसूल तथा आखिरत के घर को तो अल्लाह ने तय्यार कर रखा है तुम में से सदाचारिणियों के लिये भारी प्रतिफल^[1]

وَأَوْزَانَكُمْ أَرْضَهُمْ وَيَا أَرْضَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَهُمْ
تَنْظُرُهَا وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۝

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِأَزْوَاجِكِ إِن كُنْتُنَّ تُرِيدْنَ
الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا فَتَعَالَيْنَ أُمَتِّعْكُنَّ
وَأُسْرِحْكِنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ۝

وَأَن كُنْتُنَّ تُرِيدْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالذَّارَ
الْآخِرَةَ فَإِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْمُحْسِنَاتِ مِنكُنَّ
أَجْرًا عَظِيمًا ۝

ही आप ने उन से युद्ध की घोषणा कर दी। और उनकी घेरा बंदी कर ली गई। पच्चीस दिन के बाद उन्होंने सअद बिन मुआज़ को अपना मध्यस्थ मान लिया। और उन के निर्णय के अनुसार उन के लड़ाकुओ को बध कर दिया गया। और बच्चों, बूढ़ों तथा स्त्रियों को बन्दी बना लिया गया। इस प्रकार मदीना से इस आतंकवादी कबीले को सदैव के लिये समाप्त कर दिया गया।

- 1 इस आयत में अल्लाह ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ये आदेश दिया है कि आप की पत्नियाँ जो आप से अपने खर्च अधिक करने की माँग कर रही हैं, तो आप उन्हें अपने साथ रहने या न रहने का अधिकार दे दें। और जब आप ने उन्हें अधिकार दिया तो सब ने आप के साथ रहने का निर्णय किया। इस को इस्लामी विधान में (तख़ीर) कहा जाता है। अर्थात् पत्नि को तलाक़ लेने का अधिकार दे देना।

हदीस में है कि जब यह आयत उतरी तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपनी पत्नी आईशा से पहले कहा कि मैं तुम्हें एक बात बता रहा हूँ। तुम अपने माता-पिता से परामर्श किये बिना जल्दी न करना। फिर आप ने यह आयत

30. हे नबी की पत्नियों! जो तुम में से खुला दुराचार करेगी उस के लिये दुगनी कर दी जायेगी यातना और यह अल्लाह पर अति सरल है।

يَسَاءَ النَّبِيِّ مَنْ يَمَاتُ مِنْكُمْ بِفَاحِشَةٍ مُّبِينَةٍ يُضَعَفُ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۚ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝

31. तथा जो मानेंगे तुम में से अल्लाह तथा उस के रसूल की बात और सदाचार करेंगी हम उन्हें प्रदान करेंगे उन का प्रतिफल दोहरा। और हम ने तय्यार की है उन के लिये उत्तम जीविका।^[1]

وَمَنْ يَقْنُتْ مِنْكُمْ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُؤْتْهَا أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيمًا ۝

32. हे नबी की पत्नियों! तुम नहीं हो अन्य स्त्रियों के समान। यदि तुम अल्लाह से डरती हो तो कोमल भाव से बात न करो, कि लोभ करने लगे वह जिस के दिल में रोग हो और सभ्य बात बोलो।

يَسَاءَ النَّبِيِّ لَسُنَّ كَأَحَدٍ مِنَ النِّسَاءِ إِنْ اتَّقَيْنَ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِي فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝

33. और रहो अपने घरों में, और सौन्दर्य का प्रदर्शन न करो प्रथम अज्ञान युग के प्रदर्शन के समान। तथा नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो तथा आज्ञा पालन करो अल्लाह और उस के रसूल की। अल्लाह चाहता है कि मलिनता को दूर कर दे तुम से, हे नबी के घर वालियों! तथा तुम्हें पवित्र कर दे अति पवित्र।

وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَىٰ وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ وَآتِينَ الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا ۝

34. तथा याद रखो उसे जो पढ़ी जाती

وَإِذْ كُنَّ مَا يَمُتَلِي فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ آيَاتِ

सुनाई। तो आईशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा: मैं इस के बारे में भी अपने माता-पिता से परामर्श करूँगी? मैं अल्लाह तथा उस के रसूल और आखिरत के घर को चाहती हूँ। और फिर आप की दूसरी पत्नियों ने भी ऐसा ही किया (देखिये: सहीह बुखारी: 4786)

विषय में। और जो अवैज्ञा करेगा अल्लाह एवं उस के रसूल की तो वह खुले कुपथ में^[1] पड़ गया।

37. तथा (हे नबी!) आप वह समय याद करें जब आप उस से कह रहे थे उपकार किया अल्लाह ने जिस पर तथा आप ने उपकार किया जिस पर, रोक ले अपनी पत्नी को तथा अल्लाह से डर, और आप छुपा रहे थे अपने मन में जिसे अल्लाह उजागर करने वाला^[2] था, तथा डर रहे थे तुम लोगों से, जब कि अल्लाह अधिक योग्य था कि उस से डरते, तो जब ज़ैद ने पूरी कर ली उस (स्त्री) से अपनी अवश्यक्ता तो हम ने विवाह दिया उस को आप से, ताकि ईमान वालों पर कोई दोष न रहे अपने मुँह बोले पुत्रों की पत्नियों के विषय^[3] में

وَأَذِّنْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفِي فِي
نَفْسِكَ مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ وَيَعْنَى النَّاسَ وَاللَّهُ
أَخْبَرُ إِنَّ نَفْسَكُمُ الْفِتْنَةُ قَلَمًا أَضْطَى زَيْدًا مِنْهَا وَطَرًا
رَوَّجْنَا لَهُ الْكَلِمَ لَا يَكُونُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي
أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا اقْتَضُوا مِنْهُنَّ وَطَرًا
وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ۝

- 1 हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मेरी पूरी उम्मत स्वर्ग में जायेगी किन्तु जो इन्कार करे। कहा गया कि कोन इन्कार करेगा, हे अल्लाह के रसूल? आप ने कहा: जिस ने मेरी बात मानी वह स्वर्ग में जायेगा और जिस ने नहीं मानी तो उस ने इन्कार किया। (सहीह बुखारी: 2780)
- 2 हदीस में है कि यह आयत ज़ैनब बिनते जहश तथा (उस के पति) ज़ैद बिन हारिसा के बारे में उतरी। (सहीह बुखारी, हदीस नं०: 4787)
ज़ैद बिन हारिसा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दास थे। आप ने उन्हें मुक्त कर के अपना पुत्र बना लिया। और ज़ैनब से विवाह दिया। परन्तु दोनों में निभाव न हो सका। और ज़ैद ने अपनी पत्नी को तलाक़ दे दी। और जब मुँह बोले पुत्र की परम्परा को तोड़ दिया गया तो इसे पूर्णतः खण्डित करने के लिये आप को ज़ैनब से आकाशीय आदेश द्वारा विवाह दिया गया। इस आयत में उसी की ओर संकेत है। (इब्ने कसीर)
- 3 अर्थात् उन से विवाह करने में जब वह उन्हें तलाक़ दे दें। क्योंकि जाहिली समय में मुँह बोले पुत्र की पत्नी से विवाह वैसे ही निषेध था जैसे सगे पुत्र की पत्नी से। अल्लाह ने इस नियम को तोड़ने के लिये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

जब वह पूरी कर लें उन से अपनी आवश्यकता तथा अल्लाह का आदेश पूरा हो कर रहा।

38. नहीं है नबी पर कोई तंगी उस में जिस का आदेश दिया है अल्लाह ने उन के लिये^[1] अल्लाह का यही नियम रहा है उन नबियों में जो हुये हैं आप से पहले। तथा अल्लाह का निश्चित किया आदेश पूरा होना ही है।

39. जो पहुँचाते हैं अल्लाह के आदेश तथा उस से डरते हैं, वह नहीं डरते हैं किसी से उस के सिवा। और पर्याप्त है अल्लाह हिसाब लेने के लिये।

40. मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं हैं। किन्तु वह^[2] अल्लाह के रसूल और सब नबियों में अन्तिम^[3] हैं। और अल्लाह प्रत्येक वस्तु का अति ज्ञानी है।

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا كَرِهَ اللَّهُ لَهُ
سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ
وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا مَقْدُورًا

إِلَّا الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَهُ
وَلَا يَخْتَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ وَلَكِنْ رَسُولَ
اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمًا

का विवाह अपने मुँह बोले पुत्र की पत्नी से कराया। ताकि मुसलमानों को इस से शिक्षा मिले कि ऐसा करने में कोई दोष नहीं है।

- 1 अर्थात् अपने मुँह बोले पुत्र की पत्नी से उस के तलाक़ देने के पश्चात् विवाह करने में।
- 2 अर्थात् आप ज़ैद के पिता नहीं हैं। उस के वास्विक पिता हारिसा हैं।
- 3 अर्थात् अब आप के पश्चात् प्रलय तक कोई नबी नहीं आयेगा। आप ही संसार के अन्तिम रसूल हैं। हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: मेरी मिसाल तथा नबियों का उदाहरण ऐसा है जैसे किसी ने एक सुन्दर भवन बनाया। और एक ईंट की जगह छोड़ दी। तो उसे देख कर लोग आश्चर्य करने लगे कि इस में एक ईंट की जगह के सिवा कोई कमी नहीं थी। तो मैं वह ईंट हूँ। मैं ने उस ईंट की जगह भर दी। और भवन पूरा हो गया। और मेरे द्वारा नबियों की कड़ी का अन्त कर दिया गया। (सहीह बुखारी, हदीस नं: 3535, सहीह मुस्लिम- 2286)

41. हे ईमान वालो! याद करते रहो अल्लाह को अत्यधिक।^[1]
42. तथा पवित्रता बयान करते रहो उस की प्रातः तथा संध्या।
43. वही है जो दया कर रहा है तुम पर तथा प्रार्थना कर रहे हैं (तुम्हारे लिये) उस के फरिश्तो ताकि वह निकाल दे तुम को अंधेरों से प्रकाश^[2] की ओर। तथा ईमान वालों पर अत्यंत दयावान् है।
44. उन का स्वागत जिस दिन उस से मिलेंगे सलाम सै होगा। और उस ने तय्यार कर रखा है उन के लिये सम्मानित प्रतिफल।
45. हे नबी! हम ने भेजा है आप को साक्षी^[3] तथा शुभसूचक^[4] और सचेत कर्ता^[5] बना कर।
46. तथा बुलाने वाला बना कर अल्लाह की ओर उस की अनुमति से, तथा प्रकाशित प्रदीप बना कर।^[6]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ۝

وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝

هُوَ الَّذِي يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ۝

حَسْبَتْ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ سَلَامٌ وَعَدْلُهُمْ أَجْرًا وَرِئًا ۝

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝

وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِآذَانِهِ وَسِرًا جَانِبِيًّا ۝

- 1 अपने मुखों, कर्मों तथा दिलों से नमाज़ों के पश्चात् तथा अन्य समय में। हदीस में है कि जो अल्लाह को याद करता हो और जो याद न करता हो दोनों में वही अन्तर है जो जीवित तथा मरे हुये में है। (सहीह बुख़ारी, हदीस नं०: 6407, मुस्लिम: 779)
- 2 अर्थात् अज्ञानता तथा कुपथ से, इस्लाम के प्रकाश की ओर।
- 3 अर्थात् लोगों को अल्लाह का उपदेश पहुँचाने का साक्षी। (देखिये: सूरह बकरा, आयत: 143, तथा सूरह निसा, आयत: 41)
- 4 अल्लाह की दया तथा स्वर्ग का, आज्ञाकारियों के लिये।
- 5 अल्लाह की यातना तथा नरक से, अवैज्ञाकारियों के लिये।
- 6 इस आयत में यह संकेत है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) दिव्य प्रदीप

47. तथा आप शुभसूचना सुना दें ईमान वालों को कि उन के लिये अल्लाह की ओर से बड़ा अनुग्रह है।

48. तथा न बात मानें काफ़िरोँ और मुनाफ़िकों की, तथा न चिन्ता करें उन के दुःख पहुँचाने की और भरोसा करें अल्लाह पर। तथा पर्याप्त है अल्लाह काम बनाने के लिये।

49. हे ईमान वालो! जब तुम विवाह करो ईमान वालियों से फिर तलाक़ दो उन्हें इस से पूर्व कि हाथ लगाओ उन को तो नहीं है तुम्हारे लिये उन पर कोई इद्दत^[1] जिस की तुम गणना करो। तो तुम उन्हें कुछ लाभ पहुँचाओ, और उन्हें विदा करो भलाई के साथ।

50. हे नबी! हम ने हलाल (वैध) कर दिया है आप के लिये आप की पत्नियों को जिन्हें चुका दिया हो आप ने उन का महर (विवाह उपहार), तथा जो आप के स्वामित्व में हों उस में से जो प्रदान किया है अल्लाह ने आप^[2] को, तथा आप के चाचा की पुत्रियों और आप की फूफी की पुत्रियों तथा आप के मामा की पुत्रियों

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُم مِّنَ اللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا ۝

وَلَا تُطِيعُوا الْكُفْرَانَ وَالْمُنَافِقِينَ وَدَعُوا لَهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَمْسُوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُونَهَا لَمَّا تَمْتَعُوهُنَّ وَسِرَّوَهُنَّ سِرًّا جَبِيلًا ۝

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ الَّتِي آتَيْتَ أَجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ وَمِمَّا أَقَامَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَدَلَ عَمَّكَ وَبَدَلَ عَمَّتِكَ وَبَدَلَ خَالَكَ وَبَدَلَ خَالَتِكَ الَّتِي هَاجَرُونَ مَعَكَ وَأُمَّرَأَةً مُؤْمِنَةً إِنْ وَهَبْتَ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ أَنْ يَسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً لَكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِي أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ لِكَيْلًا

के समान पूरे मानव विश्व को सत्य के प्रकाश से जो एकेश्वरवाद तथा एक अल्लाह की इबादत (वंदना) है प्रकाशित करने के लिये आये हैं। और यही आप की विशेषता है कि आप किसी जाति या देश अथवा वर्ण-वर्ग के लिये नहीं आये हैं। और अब प्रलय तक सत्य का प्रकाश आप ही के अनुसरण से प्राप्त हो सकता है।

1 अर्थात् तलाक़ के पश्चात् की निर्धारित अवधि जिस के भीतर दूसरे से विवाह करने की अनुमति नहीं है।

2 अर्थात् वह दासियाँ जो युद्ध में आप के हाथ आई हों।

तथा मौसी की पुत्रियों को, जिन्होंने हिजरत की है आप के साथ, तथा किसी भी ईमान वाली नारी को यदि वह स्वयं को दान कर दे नबी के लिये, यदि नबी चाहें कि उस से विवाह कर लें। यह विशेष है आप के लिये अन्य ईमान वालों को छोड़ कर। हमें ज्ञान है उस का जो हम ने अनिवार्य किया है उन पर उन की पत्नियों तथा उन के स्वामित्व में आयी दासियों के संबंध^[1] में ताकि तुम पर कोई संकीर्णता (तंगी) न हो। और अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

51. (आप को अधिकार है कि) जिसे आप चाहें अलग रखें अपनी पत्नियों में से, और अपने साथ रखें जिसे चाहें। और जिसे आप चाहें बुला लें उन में से जिसे अलग किया है। आप पर कोई दोष नहीं है। इस प्रकार अधिक आशा है कि उन की आँखें शीतल हों, और वह उदासीन न हों तथा प्रसन्न रहें उस से जो आप उन सब को दें, और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों^[2] में है। और अल्लाह अति ज्ञानी सहनशील^[3] है।

52. (हे नबी!) नहीं हलाल (वैध) है आप के लिये पत्नियाँ इस के पश्चात्, और

يَكُونُ عَلَيْكَ حَرَجٌ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

تُرْجَىٰ مَنْ نَشَاءُ مِنْهُنَّ وَتُؤَىٰ إِلَيْكَ مَنْ نَشَاءُ
وَمَنْ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ذَلِكَ
أَدْنَىٰ أَنْ تَقْرَأَ عَيْنُهُنَّ وَلَا تَحْزَنَ وَلَا يَحْزَنَ بِمَا
اتَّيَّهَنَ لُهُنَّ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ
وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

لِكَيْلِكَ الْبِسَاءُ مِنْ بَعْدٍ وَلَا أَنْ تَبْكَلَ

1 अर्थात् यह कि चार पत्नियों से अधिक न रखो तथा महर (विवाह उपहार) और विवाह के समय दो साक्षी बनाना और दासियों के लिये चार का प्रतिबंध न होना एवं सब का भरण- पोषण और सब के साथ अच्छा व्यवहार करना इत्यदि।

2 अर्थात् किसी एक पत्नी में रुची।

3 इसीलिये तुरंत यातना नहीं देता।

न यह कि आप बदलें उन को दूसरी पत्नियों^[1] से यद्यपि आप को भाये उन का सौन्दर्या परन्तु जो दासी आप के स्वामित्व में आ जाये तथा अल्लाह प्रत्येक वस्तु का (पूर्ण) रक्षक है।

53. हे ईमान वालो! मत प्रवेश करो नबी के घरों में परन्तु यह कि अनुमति दी जाये तुम को भोज के लिये। परन्तु भोजन पकने की प्रतिक्षा न करते रहो। किन्तु जब तुम बुलाये जाओ तो प्रवेश करो, फिर जब भोजन कर लो तो निकल जाओ। लीन न रहो बातों में। वास्तव में इस से नबी को दुःख होता है, अतः वह तुम से लजाते हैं। और अल्लाह नहीं लजाता है सत्य^[2] से तथा जब तुम नबी की पत्नियों से कुछ माँगो तो पर्दे के पीछे से माँगो, यह अधिक पवित्रता का कारण है तुम्हारे दिलों तथा उन के दिलों के लिये। और तुम्हारे लिये उचित नहीं है कि नबी को दुःख दो, न यह कि विवाह करो उन की पत्नियों से आप के पश्चात् कभी भी। वास्तव में यह अल्लाह के समीप महा (पाप) है।

54. यदि तुम कुछ बोलो अथवा उसे मन

بِهِمْ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَعَجَبَكَ حُسْنُهُنَّ
إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
رَاقِبًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ
إِلَّا أَنْ يُدْعَ لَكُمْ إِلَى طَعَامٍ غَيْرِ نَظِيرٍ مِنْهُ
وَلَكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا إِذَا أُطِيعْتُمْ
فَأَنْتَشِرُوا وَلَا أَمْسَأْتُمْ عَلَيْكُمْ جِدِيثَ إِنْ ذَلِكُمْ
كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَعْجِلْ مِنْكُمْ وَاللَّهُ
لَا يَسْتَعْجِلُ مِنَ الْحَقِّ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ
مَتَاعًا فَسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ذَلِكُمْ أَطْهَرُ
لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ
اللَّهِ وَلَا أَنْ تَنْكِحُوا أَزْوَاجَهُ مِنْ بَعْدِ آبْدَأَ
إِنْ ذَلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا ۝

إِنْ تُبْدُوا شَيْئًا أَوْ يُخْفَا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بَصِيرًا

- 1 अर्थात् उन में से किसी को छोड़ कर उस के स्थान पर किसी दूसरी स्त्री से विवाह करें।

- 2 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ सभ्य व्यवहार करने की शिक्षा दी जा रही है। हुआ यह कि जब आप ने ज़ैनब से विवाह किया तो भोजन बनवाया और कुछ लोगों को आमंत्रित किया। कुछ लोग भोजन कर के वहीं बातें करने लगे जिस से आप को दुःख पहुँचा। इसी पर यह आयत उतरी। फिर पर्दे का आदेश दे दिया गया। (सहीह बुखारी नं०: 4792)

में रखो तो अल्लाह प्रत्येक वस्तु का अत्यंत ज्ञानी है।

55. कोई दोष नहीं है उन (स्त्रियों) पर अपने पिताओं, न अपने पुत्रों एवं भाईयों और न भतीजों तथा न अपनी (मेल-जोल की) स्त्रियों और न अपने स्वामित्व (दासी तथा दास) के सामने होने में, यदि वह अल्लाह से डरती रहें। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है।
56. अल्लाह तथा उस के फ़रिश्ते दरूद^[1] भेजते हैं नबी पर। हे ईमान वालो! उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।
57. जो लोग दुःख देते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल को तो अल्लाह ने उन्हें धिक्कार दिया है लोक तथा परलोक में। और तय्यार की है उन के लिये अपमानकारी यातना।
58. और जो दुःख देते हैं ईमान वालों तथा ईमान वालियों को बिना किसी दोष के जो उन्होंने ने किया हो, तो उन्होंने ने

سَمِعُ عَلِيمًا ۝

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِمْ فِي آبَائِهِمْ وَلَا أَبْنَائِهِمْ
وَلَا إِخْوَانِهِمْ وَلَا أَسْبَاءَ إِخْوَانِهِمْ وَلَا أَسْبَاءَ
أَخْوَانِهِمْ وَلَا نِسَاءِهِمْ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ
وَأَقْبَيْنَ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
شَهِيدًا ۝

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ۝

وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بَعَثْنَا
أَقْبَابًا عَلَيْهِمْ لِيَتَذَكَّرُوا وَأَلَّامُوا بِمُحْسِنَاتِنَا ۝

- 1 अल्लाह के दरूद भेजने का अर्थ यह है कि फ़रिश्तों के समक्ष आप की प्रशंसा करता है। तथा आप पर अपनी दया भेजता है। और फ़रिश्तों के दरूद भेजने का अर्थ यह है कि वह आप के लिये अल्लाह से दया की प्रार्थना करते हैं। हदीस में आता है कि आप से प्रश्न किया गया कि हम सलाम तो जानते हैं पर आप पर दरूद कैसे भेजें? तो आप ने फ़रमाया: यह कहो: ((अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मद व अला आलि मुहम्मद, कमा सल्लैता अला आलि इब्राहीम, इब्रका हमीदुम मजीद। अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मद व अला आलि मुहम्मद कमा बारक्ता अला आलि इब्राहीम इब्रका हमीदुम मजीद।)) (सहीह बुखारी: 4797)
- दूसरी हदीस में है कि: जो मुझ पर एक बार दरूद भेजेगा अल्लाह उस पर दस बार दया भेजता है। (सहीह मुस्लिम: 408)

लाद लिया आरोप तथा खुले पाप को।

59. हे नबी! कह दो अपनी पत्नियों से तथा अपनी पुत्रियों एवं ईमान वालों की स्त्रियों से कि डाल लिया करें अपने ऊपर अपनी चादरें। यह अधिक समीप है कि वह पहचान ली जायें। फिर उन्हें दुःख न दिया^[1] जाये। और अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।
60. यदि न रुके मुनाफ़िक^[2] तथा जिन के दिलों में रोग है और मदीना में अफ़्वाह फैलाने वाले तो हम आप को भड़का देंगे उन पर। फिर वह आप के साथ नहीं रह सकेंगे उस में परन्तु कुछ ही दिन।
61. धिक्कारे हुये वे जहाँ पाये जायें पकड़ लिये जायेंगे तथा जान से मार दिये जायेंगे।
62. यही अल्लाह का नियम रहा है उन में जो इन से पूर्व रहे। तथा आप कदापि नहीं पायेंगे अल्लाह के नियम में कोई परिवर्तन।
63. प्रश्न करते हैं आप से लोग^[3] प्रलय

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِرِجَالِكُمْ وَبَنَاتِكُمْ وَنِسَاءِ
الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيبِهِنَّ
ذَلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ وَكَانَ اللَّهُ
عَفُورًا رَحِيمًا ۝

لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ الْمُتَنَفِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ
مَّرَضٌ وَالْمُرْجِفُونَ فِي الْمَدِينَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ
بِهِمْ نَصْرًا لِكَبَّالِ وَأُرُوتَكَ فِيهَا إِلَّا قَلِيلًا ۝

مَلْعُونِينَ أَيْ مَا مُحْتَفُونَ خِذُوا وَكُفُّوا قَوْلًا لَعْنًا ۝

سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ
وَلَنْ يَجْعَلَ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ
سَبِيلًا ۝

يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ

1 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पत्नियों तथा पुत्रियों और साधारण मुस्लिम महिलाओं को यह आदेश दिया गया है कि घर से निकलें तो पर्दे के साथ निकलें। जिस का लाभ यह है कि इस से एक सम्मानित तथा सभ्य महिला की असभ्य तथा कुकर्म महिला से पहचान होगी और कोई उस से छेड़ छाड़ का साहस नहीं करेगा।

2 मुश्रिक (द्विधावादी) मुसलमानों को हताश करने के लिये कभी मुसलमानों की पराजय और कभी किसी भारी सेना के आक्रमण की अफ़्वाह मदीना में फैला दिया करते थे। जिस के दुष्परिणाम से उन्हें सावधान किया गया है।

3 यह प्रश्न उपहास स्वरूप किया करते थे। इसलिये उस की दशा का चित्रण

के विषय में। तो आप कह दें कि उस का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। संभव है कि प्रलय समीप हो।

اللَّهُ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ۝

64. अल्लाह ने धिक्कार दिया है काफ़िरो को। और तय्यार कर रखी है उन के लिये दहकती अग्नि।

إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ وَاَعَدَّ لَهُمْ سَعِيْرًا ۝

65. वे सदावासी होंगे उस में। नहीं पायेंगे कोई रक्षक और न कोई सहायक।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا اَبَدًا لَا يَجِدُوْنَ وَّلِيًّا وَلَا نَصِيْرًا ۝

66. जिस दिन उलट पलट किये जायेंगे उन के मुख अग्नि में, वे कहेंगे: हमारे लिये क्या ही अच्छा होता की हम कहा मानते अल्लाह का तथा कहा मानते रसूल का!

يَوْمَ تَقُوبُ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يَا لَيْتَنَا اَطَعْنَا اللَّهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَ ۝

67. तथा कहेंगे: हमारे पालनहार! हम ने कहा माना अपने प्रमुखों एवं बड़ों का। तो उन्होंने हमें कुपथ कर दिया सुपथ से।

وَقَالُوْا رَبَّنَا اِنَّا اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَاٰكِبَرٰهُمْ اِنَّا قٰصَمُوْنَا السِّيْرَ ۝

68. हमारे पालनहार! उन्हें दुगुनी यातना दे। तथा उन्हें धिक्कार दे बड़ी धिक्कार।

رَبَّنَا اِنْتَهُمْ ضَعْفَيْنِ مِنَ الْعٰلَابِ وَاَلْعٰنَمُ لَعْنَا كَيْرًا ۝

69. हे ईमान वालो! न हो जाओ उन के समान जिन्होंने ने मुसा को दुःख दिया, तो अल्लाह ने निदोष कर दिया^[1] उसे उन की बनाई बातों से। और वह था अल्लाह के समक्ष सम्मानित।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذٰ وَا مُوسٰى قَبْرًا ۗ اِنَّ اللَّهَ وَمٰٓا قَالُوْا وَا كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ۝

किया गया है।

1 हदीस में आया है कि मुसा (अलैहिस्सलाम) बड़े लज्जशील थे। प्रत्येक समय वस्त्र धारण किये रहते थे। जिस से लोग समझने लगे कि संभवतः उन में कुछ रोग है। परन्तु अल्लाह ने एक बार उन्हें नग्न अवस्था में लोगों को दिखा दिया और संदेह दूर हो गया। (सहीह बुखारी: 3404, मुस्लिम: 155)

70. हे ईमान वालो! अल्लाह से डरो तथा सहीह और सीधी बात बोलो।
71. वह सुधार देगा तुम्हारे लिये तुम्हारे कर्मों को, तथा क्षमा कर देगा तुम्हारे पापों को और जो अनुपालन करेगा अल्लाह तथा उस के रसूल का तो उस ने बड़ी सफलता प्राप्त कर ली।
72. हम ने प्रस्तुत किया अमानत^[1] को आकाशों तथा धरती एवं पर्वतों पर तो उन सब ने इन्कार कर दिया उन का भार उठाने से। तथा डर गये उस से। किन्तु उस का भार ले लिया मनुष्य ने। वास्तव में वह बड़ा अत्याचारी^[2] अज्ञान है।
73. (यह अमानत का भार इस लिये लिया है) ताकि अल्लाह दण्ड दे मुनाफ़िक़ पुरुष तथा मुनाफ़िक़ स्त्रियों को, और मुशर्रिक पुरुष तथा स्त्रियों को। तथा क्षमा कर दे अल्लाह ईमान वालों तथा ईमान वालियों को और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۝

يُضِلِّكُمْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ۝

إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا
وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ۝

لِيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ
وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

1 अमानत से अभिप्रायः धार्मिक नियम है जिन के पालन का दायित्व तथा भार अल्लाह ने मनुष्य पर रखा है। और उस में उन का पालन करने की योग्यता रखी है जो योग्यता आकाशों तथा धरती और पर्वतों को नहीं दी है।

2 अर्थात् इस अमानत का भार ले कर भी अपने दायित्व को पूरा न कर के स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करता है।

सूरह सबा - 34



सूरह सबा के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 54 आयतें हैं।

- इस में सबा जाति के चर्चा के कारण इसे यह नाम दिया गया है।
- इस में संदेहों को दूर करते हुये अल्लाह का परिचय ऐसे कराया गया है जिस से तौहीद तथा आखिरत के प्रति विश्वास हो जाता है।
- इस में दावूद तथा सुलैमान (अलैहिमस्सलाम) पर अल्लाह के पुरस्कारों और उन पर उन के आभारी होने का वर्णन तथा सबा जाति की कृतघ्नता और उस के दुष्परिणाम को बताया गया है।
- शिर्क का खण्डन तथा विरोधियों का जवाब देते हुये परलोक के कुछ तथ्य प्रस्तुत किये गये हैं।
- सूरह के अन्त में सोच-विचार कर के निर्णय करने का सुझाव दिया गया है और इस बात पर सावधान किया गया है कि समय निकल जाने पर पछतावे के सिवा कुछ हाथ नहीं आयेगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है जिस के अधिकार में है जो आकाशों तथा धरती में है। और उसी की प्रशंसा है आखिरत (परलोक) में। और वही उपाय जानने वाला सब से सूचित है।

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْآخِرَةِ
وَهُوَ الْحَكِيمُ الْغَنِيُّ ۝

2. वह जानता है जो कुछ घुसता है धरती के भीतर तथा जो^[1] निकलता है उस से, तथा जो उतरता है

يَعْلَمُ مَا يَلْبِغُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا
وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۝

1 जैसे वर्षा, कोष और निधि आदि।

आकाश^[1] से और चढ़ता है उस में^[2]
तथा वह अति दयावान् क्षमी है।

3. तथा कहा काफ़िरों ने कि हम पर प्रलय नहीं आयेगी। आप कह दें: क्यों नहीं? मेरे पालनहार की शपथ! वह तुम पर अवश्य आयेगी जो परोक्ष का ज्ञानी है। नहीं छुपा रह सकता उस से कण बराबर (भी) आकाशों तथा धरती में, न उस से छोटी कोई चीज़ और न बड़ी किन्तु वह खुली पुस्तक में (अंकित) है।^[3]
4. ताकि^[4] वह बदला दे उन को जो ईमान लाये तथा सुकर्म किये उन्हीं के लिये क्षमा तथा सम्मानित जीविका है।
5. तथा जिन्होंने प्रयत्न किये हमारी आयतों में विवश^[5] करने का तो यही है जिन के लिये यातना है अति घोर दुःखदायी।
6. तथा (साक्षात्) देख^[6] लेंगे जिन को उस का ज्ञान दिया गया है जो अवतरित किया गया है आप की ओर आप के पालनहार की ओर से। वही सत्य है, तथा सुपथ दर्शाता है, अति प्रभुत्वशाली प्रशंसित का सुपथ।

وَهُوَ الرَّحِيمُ الْعَفُورُ

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ عِلْمُ الْغَيْبِ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغُرِينَ
ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَرِيمٌ

وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي الْبَيْتِ مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رَّجْزِ الْيَوْمِ

وَيَرَى الَّذِينَ أُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقُّ وَيَهْدِي إِلَى صِرَاطٍ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ

1 जैसे वर्षा, ओला, फ़रिश्ते और आकाशीय पुस्तकें आदि।

2 जैसे फ़रिश्ते तथा कर्म।

3 अर्थात् लौहे महफूज़ (सुरक्षित पुस्तक) में।

4 यह प्रलय के होने का कारण है।

5 अर्थात् हमारी आयतों से रोकते हैं और समझते हैं कि हम उन को पकड़ने से विवश होंगे।

6 अर्थात् प्रलय के दिन कि कुरआन ने जो सूचना दी है वह साक्षात् सत्य है।

7. तथा काफ़िरोँ ने कहा: क्या हम तुम्हें एक ऐसे व्यक्ति को बतायें जो तुम्हें सूचना देता है कि जब तुम पूर्णतः चूर-चूर हो जाओगे तो अवश्य तुम एक नई उतपत्ति में होगे?
8. उस ने बना ली है अल्लाह पर एक मिथ्या बात, अथवा वह पागल हो गया है। बल्कि जो विश्वास (ईमान) नहीं रखते आख़िरत (परलोक) पर, वह यातना^[1] तथा दूर के कुपथ में हैं।
9. क्या उन्होंने ने नहीं देखा उस की ओर जो उन के आगे तथा उन के पीछे आकाश और धरती है। यदि हम चाहें तो धंसा दें उन के सहित धरती को अथवा गिरा दें उन पर कोई खण्ड आकाश से। वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी है प्रत्येक भक्त के लिये जो ध्यानमग्न हो।
10. तथा हम ने प्रदान किया दावूद को अपना कुछ अनुग्रह^[2] हे पर्वतो! सरुचि महिमा गान करो^[3] उस के साथ, तथा हे पक्षियो! तथा हम ने कोमल कर दिया उस के लिये लोहा को।
11. कि बनाओ भरपूर कवचें तथा अनुमति रखो उस की कड़ियों को, तथा सदाचार करो। जो कुछ तुम कर रहे हो उसे मैं देख रहा हूँ।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ يُبَيِّنُ لَكُمْ إِذَا مَرُفْتُمْ كُلَّ مَسْرَافٍ أَنْتُمْ لَكِنِّي خَلَقْتُ جَدِيدًا ۝

أَفَتُرَىٰ عَلَىٰ اللَّهِ كَيْدًا بِأَمْرِ يَوْمِ عِثَّةِ بَنِي الْاَذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ الْبَعِيدِ ۝

أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّ نَسْأَتَهُمْ بِهَمِّ الْاَرْضِ أَوْ سَقَطَ عَلَيْهِمْ سِقَاطٌ مِنَ السَّمَاءِ إِنْ فِي ذَلِكَ لَآيَةٌ لِّكُلِّ عِبْدٍ مُّشْرِبٍ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ وَمُوسَىٰ قَصْدًا لِّبُحْبَالِ الْاَوْرِي مَعَهُ وَالْكَابِرَةَ وَالنَّالَةَ الْحَدِيدَ ۝

إِنْ أَعْمَلُ سَبِيحَتٍ وَقَدَّرُ فِي السَّرْدِ وَأَعْمَلُوا صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

1 अर्थात इस का दूष्परिणाम नरक की यातना है।

2 अर्थात उन को नबी बनाया और पुस्तक का ज्ञान प्रदान किया।

3 अल्लाह के इस आदेश अनुसार पर्वत तथा पक्षी उन के लिये अल्लाह की महिमा गान के समय उन की ध्वनी को दुहराते थे।

12. तथा (हम ने वश में कर दिया) सुलैमान^[1] के लिये वायु को। उस का प्रातः चलना एक महीने का तथा संध्या का चलना एक महीने का^[2] होता था। तथा हम ने बहा दिये उस के लिये तांबे के स्रोत। तथा कुछ जिन्न कार्यरत थे उस के समक्ष उस के पालनहार की अनुमति से। तथा उन में से जो फिरेगा हमारे आदेश से तो हम चखायेंगे^[3] उसे भड़कती अग्नि की यातना।

13. वह बनाते थे उस के लिये जो वह चाहता था भवन (मस्जिदें) और चित्र तथा बड़े लगन जलाशयों (तालाबों) के समान तथा भारी देगों जो हिल न सकें। हे दावूद के परिजनो! कर्म करो कृतज्ञ हो कर, और मेरे भक्तों में र्थाड़े ही कृतज्ञ होते हैं।

14. फिर जब हम ने उस (सुलैमान) पर मौत का निर्णय कर दिया तो जिन्नों को उन के मरण पर एक घुन के सिवा किसी ने सूचित नहीं किया जो उस की छड़ी खा रहा था।^[4] फिर जब वह गिर गया तो जिन्नों पर यह

وَأَسْلَمْنَا لَهُ الْفِطْرَ وَمِنْ أَلْحِينَ مَن يَعْمَل بَيْنَ يَدَيْهِ إِذْنًا رَبِّهِ وَمَنْ يَزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ۝

يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُونَ مِنْ مَّحَارِبٍ وَتَمَاثِيلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُورٍ رِيسَاتٍ اِعْمَلُوا آلَ دَاوُدَ شُكْرًا وَقِيلَ لَهُمْ مَنْ عِبَادِيَ الشَّاكِرُونَ ۝

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَى مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنْسَأَتَهُ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنَّ أَنْ كَانُوا يُعْلَمُونَ الْغَيْبِ مَا لِمَا تُوَفَّى الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۝

- 1 सुलैमान (अलैहिस्सलाम) दावूद (अलैहिस्सलाम) के पुत्र तथा नबी थे।
- 2 सुलैमान (अलैहिस्सलाम) अपने राज्य के अधिकारियों के साथ सिंहासन पर आसीन हो जाते। और उन के आदेश से वायु उसे इतनी तीव्र गति से उड़ा ले जाती कि आधे दिन में एक महीने की यात्रा पूरी कर लेते। इस प्रकार प्रातः संध्या मिला कर दो महीने की यात्रा पूरी हो जाती। (देखिये: इब्ने कसीर)
- 3 अर्थात् नरक की यातना।
- 4 जिस के सहारे वह खड़े थे तथा घुन के खाने पर उन का शव धरती पर गिर पड़ा।

बात खुली कि यदि वे परोक्ष का ज्ञान रखते तो इस अपमान कारी^[1] यातना में नहीं पड़े रहते।

15. सबा^[2] की जाति के लिये उन की बस्तियों में एक निशानी^[3] थी: बाग थे दायें और बायें। खाओ अपने पालनहार का दिया हुआ, और उस के कृतज्ञ रहो। स्वच्छ नगर है तथा अति क्षमी पालनहार।
16. परन्तु उन्होंने मुँह फेर लिया तो भेज दी हम ने उन पर बांध तोड़ बाढ़। तथा बदल दिया हम ने उन के दो बागों को दो कड़वे फलों के बागों और झाऊ तथा कुछ बैरी से।
17. यह कुफल दिया हम ने उन के कृतघ्न होने के कारण। तथा हम कृतघ्नों ही को कुफल दिया करते हैं।
18. और हम ने बना दी थी उन के बीच तथा उन की बस्तियों के बीच जिस में हम ने समपन्नता^[4] प्रदान की थी खुली बस्तियाँ तथा नियत कर दिया था उन में चलने का स्थान^[5] (कि) चलो उस में रात्रि तथा दिनों के

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكَئِهِمْ آيَةٌ جَنَّتِ عَنْ يَمِينٍ
وَشِمَالٍ كُلًّا مِنْ رِزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لِلَّهِ
بِأُدَاةِ طَيِّبَةٍ وَرَسَبٌ غَفُورٌ ۝

فَاعْرَضُوا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنَاهُمْ
بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتِ أُكُلٍ خَمْطٍ وَأَثَلٍ وَمَشُو
مِنْ سِدْرٍ قَلِيلٍ ۝

ذَلِكَ جَزَاءُ نَبْهَمِهِمْ بِمَا كَفَرُوا وَهَلْ نُجْزِي إِلَّا الْكَفُورَ ۝

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا قُرًى
ظَاهِرَةً وَتَدْرُنَا فِيهَا السَّيْرُ سَبِيلًا فِيهَا لِيَالِي
وَآيَاتُ مَا أَمِينِينَ ۝

- 1 सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के युग में यह भ्रम था कि जिन्हों को परोक्ष का ज्ञान होता है। जिसे अल्लाह ने माननीय सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के निघ्न द्वारा तोड़ दिया कि अल्लाह के सिवा किसी को परोक्ष का ज्ञान नहीं है। (इब्ने कसीर)
- 2 यह जाति यमन में निवास करती थी।
- 3 अर्थात अल्लाह के सामर्थ्य की।
- 4 अर्थात सबा तथा शाम (सीरिया) के बीच है।
- 5 अर्थात एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा की सुविधा रखी थी।

समय शान्त^[1] हो कर।

19. तो उन्होंने कहा: हे हमारे पालनहार! दूरी^[2] कर दे हमारी यात्राओं के बीच। तथा उन्होंने अत्याचार किया अपने ऊपर। अंततः हम ने उन्हें कहानियाँ^[3] बना दिया, और तित्तर बित्तर कर दिया। वास्तव में इस में कई निशानियाँ (शिक्षायें) हैं प्रत्येक अति धैर्यवान कृतज्ञ के लिये।
20. तथा सच्च कर दिया इब्लीस ने उन पर अपना अंकलन^[4] तो उन्होंने अनुसरण किया उस का एक समुदाय को छोड़ कर ईमान वालों के।
21. और नहीं था उस का उन पर कुछ अधिकार (दबाव) किन्तु ताकि हम जान लें कि कौन ईमान रखता है आखिरत (परलोक) पर उन में से जो उस के विषय में किसी संदेह में है। तथा आप का पालनहार प्रत्येक चीज़ का निरीक्षक है।^[5]
22. आप कह दें: उन (पूज्यों) को पुकारो^[6] जिन को तुम समझते हो अल्लाह के सिवा। वह नहीं अधिकार रखते कण

فَقَالُوا رَبَّنَا بَعْدَ بَيْنِنَا أَهْلَكْنَا وَظَلَمْنَا أَنْفُسَهُمْ
فَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ وَمَزَّقْنَاهُمْ كُلَّ مَسْرُوقٍ إِنَّ فِي
ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝

وَلَقَدْ صَدَقَ عَلَيْهِمْ لِقَائِهِ أَتَيْنَاهُ فَاتَّبَعُوهُ
إِلَّا فَرِيقًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِمْ مِنْ سُلْطَانٍ إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ
يُؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِي شَكٍّ
وَرَبُّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيفٌ ۝

قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ
لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي

1 शत्रु तथा भूख-प्यास से निर्भय हो कर।

2 हमारी यात्रा के बीच कोई बस्ती न हो।

3 उन की कथायें रह गई, और उन का अस्तित्व नहीं रह गया।

4 अर्थात् यह अनुमान कि वह आदम के पुत्रों को कुपथ करेगा। (देखिये सूरह आराफ़, आयत: 16, तथा सूरह साद, आयत: 82)

5 ताकि उन का प्रतिकार बदला दे।

6 इस में संकेत उन की ओर है जो फ़रिश्तों को पूजते तथा उन्हें अपना सिफ़ारशी मानते थे।

बराबर भी आकाशों में न धरती में तथा नहीं है उन का उन दोनों में कोई भाग। और नहीं है उस अल्लाह का उन में से कोई सहायक।

23. तथा नहीं लाभ देगी अभिस्तावना (सिफारिश) अल्लाह के पास परन्तु जिस के लिये अनुमति देगा।^[1] यहाँ^[2] तक कि जब दूर कर दिया जाता है उद्वेग उन के दिलों से तो वह (फरिश्ते) कहते हैं कि तुम्हारे पालनहार ने क्या कहा? वे कहते हैं कि सत्य कहा। तथा वह अति उच्च महान् है।

24. आप (मुश्रिकों) से प्रश्न करें कि कौन जीविका प्रदान करता है तुम्हें आकाशों^[3] तथा धरती से? आप कह दें कि अल्लाह! तथा हम अथवा तुम अवश्य सुपथ पर हैं अथवा खुले कुपथ में हैं।

25. आप कह दें: तुम से नहीं प्रश्न किया जायेगा हमारे अपराधों के विषय में, और न हम से प्रश्न किया जायेगा तुम्हारे कर्मों के^[4] संबंध में।

الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهَا مِنْ شَرْكٍَ وَمَا لَهُ مِنْهُمْ مَنْ ظَلَمُوا

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ حَتَّىٰ إِذَا فُزِعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالَ أَمَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا الْحَقُّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلِ اللَّهُ وَإِنَّا لَوَائِيًا لَكُمْ لَعَلَّ هُدًى أَوْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ

قُلْ لَاسْأَلُونَكُمْ عَمَّا أَجْرَمْنَا وَلَا نَسْأَلُ عَمَّا تَعْمَلُونَ

1 (देखिये सूरह बकरा, आयत: 255, तथा सूरह अम्बिया, आयत: 28)

2 अर्थात् जब अल्लाह आकाशों में कोई निर्णय करता है तो फरिश्ते भय से काँपने और अपने पंखों को फड़फड़ाने लगते हैं। फिर जब उन की उद्विग्नता दूर हो जाती है तो प्रश्न करते हैं कि तुम्हारे पालनहार ने क्या आदेश दिया है? तो वे कहते हैं कि उस ने सत्य कहा है। और वह अति उच्च महान् है। (संक्षिप्त अनुवाद हदीस, सहीह बुखारी नं०: 4800)

3 आकाशों की वर्षा तथा धरती की उपज से।

4 क्यों कि हम तुम्हारे शिर्क से विरक्त हैं।

26. आप कह दें कि एकत्रित^[1] कर देगा हमें हमारा पालनहार। फिर निर्णय कर देगा हमारे बीच सत्य के साथ। तथा वही अति निर्णय कारी सर्वज्ञ है।
27. आप कह दें कि तनिक मुझे उन को दिखा दो जिन को तुम ने मिला दिया है अल्लाह के साथ साझी^[2] बना कर? ऐसा कदापि नहीं। बल्कि वही अल्लाह है अत्यंत प्रभावशाली तथा गुणी।
28. तथा नहीं भेजा है हम ने आप^[3] को

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبَّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ
وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ۝

قُلْ أَرُونِي الَّذِينَ الَّحَقُّ بِهِ شُرَكَاءُ كَلَّا
بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَكِنَّ

1 अर्थात् प्रलय के दिन।

2 अर्थात् पूजा-आराधना में।

3 इस आयत में अल्लाह ने जनाब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विश्वव्यापी रसूल तथा सर्व मनुष्य जाति के पथ प्रदर्शक होने की घोषणा की है। जिसे सूरह आराफ़, आयत नं०: 158, तथा सूरह फुर्कान आयत नं०: 1, में भी वर्णित किया गया है। इसी प्रकार आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि मुझे पाँच ऐसी चीज़ दी गई हैं जो मुझ से पूर्व किसी नबी को नहीं दी गईं। और वे ये हैं:

1- एक महीने की दूरी तक शत्रुओं के दिलों में मेरी धाक द्वारा मेरी सहायता की गई है।

2- पूरी धर्ती मेरे लिये मस्जिद तथा पवित्र बना दी गई है।

3- युद्ध में प्राप्त धन मेरे लिये वैध कर दिया गया है जो पहले किसी नबी के लिये वैध नहीं किया गया।

4- मुझे सिफ़ारिश का अधिकार दिया गया है।

5- मुझ से पहले के नबी मात्र अपने समुदाय के लिये भेजा जाता था परन्तु मुझे सम्पूर्ण मानव जाति के लिये नबी बना कर भेजा गया है। (सहीह बुख़ारी: 335)

आयत का भावार्थ यह है कि आप के आगमन के पश्चात् आप पर ईमान लाना तथा आप के लाये धर्म विधान कुर्आन का अनुपालन करना पूरे मानव विश्व पर अनिवार्य है। और यही सत्धर्म तथा मुक्ति-मार्ग है। जिसे अधिकतर लोग नहीं जानते।

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: उस की शपथ जिस के हाथ में मेरे प्राण है! इस उम्मत का कोई यहूदी और ईसाई मुझे सुनेगा और मौत से पहले मेरे धर्म पर ईमान नहीं लायेगा तो वह नरक में जायेगा। (सहीह मुस्लिम: 153)

परन्तु सब मनुष्यों के लिये शुभसूचना देने तथा सचेत करने वाला बनाकर। किन्तु अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते।

29. तथा वह कहते^[1] हैं कि यह वचन कब पूरा होगा यदि तुम सत्यवादी हो?
30. आप उन से कह दें कि एक दिन वचन का निश्चित^[2] है। वे नहीं पीछे होंगे उस से क्षण भर और न आगे होंगे।
31. तथा काफ़िरों ने कहा कि हम कदापि ईमान नहीं लायेंगे इस कुर्आन पर और न उस पर जो इस से पूर्व की पुस्तक है। और यदि आप देखेंगे इन अत्याचारियों को खड़े हुये अपने पालनहार के समक्ष तो वे दोषारोपण कर रहे होंगे एक दूसरे पर। जो निर्बल समझे जा रहे थे वे कहेंगे उन से जो बड़े बन रहे थे: यदि तुम न होते तो हम अवश्य ईमान लाने वालों^[3] में होते।
32. वह कहेंगे जो बड़े बने हुये थे उन से जो निर्बल समझे जा रहे थे: क्या हम ने तुम्हें रोका सुपथ से जब वह तुम्हारे पास आया? बल्कि तुम ही अपराधी थे।
33. तथा कहेंगे जो निर्बल होंगे उन से जो बड़े (अहंकारी) होंगे: बल्कि

أَكْفَرُ النَّاسِ لَأَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣١﴾

قُلْ لَكُمْ مَبْعَادٌ يَوْمَ لَا تَسْتَأْخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً
وَلَا تَسْتَفْتِي مَوْتًا ﴿٣٢﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ نُؤْمِنَ بِهَذَا الْقُرْآنِ
وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ
مُوقِفُونَ عِندَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ
لِلْقَوْلِ يَقُولُ الَّذِينَ اسْتَضَعِفُوا الَّذِينَ
اسْتَكْبَرُوا وَالْوَالَا أَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ﴿٣٣﴾

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتَضَعِفُوا لَنْ
صَدَدْنَاكُمْ عَنِ الْهُدَىٰ بَعْدَ إِجْرَائِكُمْ بَلْ كُنْتُمْ
مُجْرِمِينَ ﴿٣٤﴾

وَقَالَ الَّذِينَ اسْتَضَعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ

1 अर्थात उपहास करते हैं।

2 प्रलय का दिन।

3 तुम्हीं ने हमें सत्य से रोक दिया।

रात-दिन के षड्यंत्र^[1] ने, जब तुम हमें आदेश दे रहे थे कि हम कुफ़र करें अल्लाह के साथ तथा बनायें उस के साक्षी, तथा अपने मन में पछतायेंगे जब यातना देखेंगे। और हम तौक डाल देंगे उन के गलों में जो काफ़िर हो गये, वह नहीं बदला दिये जायेंगे परन्तु उसी का जो वह कर रहे थे।

34. और नहीं भेजा हम ने किसी बस्ती में कोई सचेतकर्ता (नबी) परन्तु कहा उस के सम्पन्न लोगों ने: हम जिस चीज़ के साथ तुम भेजे गये हो उसे नहीं मानते हैं।^[2]

35. तथा कहा कि हम अधिक हैं तुम से धन और संतान में। तथा हम यातना ग्रस्त होने वाले नहीं हैं।

36. आप कह दें कि वास्तव में मेरा पालनहार फैला देता है जीविका को जिस के लिये चाहता है। और नाप कर देता है। किन्तु अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते।

37. और तुम्हारे धन और तुम्हारी संतान ऐसी नहीं है कि तुम्हें हमारे कुछ

مَكْرًا لَيْلٍ وَالنَّهَارِ إِذْ تَأْمُرُونَ نَحْنُ نَكْفُرُ بِاللَّهِ
وَجَعَلْ لَكَ آتِدَادًا الْأَسْرَافُ وَالنَّدَامَةُ لِمَ آرَأُوا
الْعَذَابَ وَيَجْعَلْنَا الْأَعْمَلُ فِي أَعْتَاقِ الَّذِينَ
كَفَرُوا هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٤﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا
إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ﴿٣٥﴾

وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِدُ بِمَا
أُرْسِلْتُمْ بِهِ لَأَكْتُمُوا أَوْلَادَهُمْ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٣٦﴾

قُلْ إِن رَّبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ
وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٧﴾

وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِالْحَيِّ ثَقَرًا بَكُمْ

1 अर्थात् तुम्हारे षड्यंत्र ने हमें रोका था।

2 नबियों के उपदेश का विरोध सब से पहले सम्पन्न वर्ग ने किया है। क्योंकि वे यह समझते हैं कि यदि सत्य सफल हो गया तो समाज पर उन का अधिकार समाप्त हो जायेगा। वे इस आधार पर भी नबियों का विरोध करते रहे कि हम ही अल्लाह के प्रिय हैं। यदि वह हम से प्रसन्न न होता तो हमें धन-धान्य क्यों प्रदान करता। अतः हम परलोक की यातना में ग्रस्त नहीं होंगे। कुर्आन ने अनेक आयतों में उन के इस भ्रम का खण्डन किया है।

समीप^[1] कर दो परन्तु जो ईमान लाये तथा सदाचार करे तो यही हैं जिन के लिये दोहरा प्रतिफल है। और यही ऊँचे भवनों में शान्त रहने वाले हैं।

عِنْدَنَا زُلْفَىٰ أَلَا مَنْ أَمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا
فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الضَّعِيفِ يَمَاعِلُوا وَهُمْ
فِي الْعُرُوفِ الْمُؤَنُونَ ﴿٢٠﴾

38. तथा जो प्रयास करते हैं हमारी आयतों में विवश करने के लिये^[2] तो वही यातना में ग्रस्त होंगे।

وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آلِيْنَا مُعْجِزِينَ
أُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ﴿٢١﴾

39. आप कह दें: मेरा पालनहार ही फैलाता है जीविका को जिस के लिये चाहता है अपने भक्तों में से। और तंग करता है उस के लिये। और जो भी तुम दान करोगे तो वह उस का पूरा बदला देगा। और वही उत्तम जीविका देने वाला है।

قُلْ إِنْ رَبِّي يَسْتَطِيعُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ
عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ
فَهُوَ يُخْلِفُهُ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٢٢﴾

40. तथा जिस दिन एकत्र करेगा उन सब को, फिर कहेगा फ़रिश्तों से: क्या यही तुम्हारी इबादत (वंदना) कर रहे थे।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ
أَهْلُوا لَهُ أَيْ كَمُ كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٢٣﴾

41. वह कहेंगे: तू पवित्र है! तू ही हमारा संरक्षक है न कि यहाँ बल्कि यह इबादत करते रहे जिन्नो^[3] की। इन में अधिकतर उन्हीं पर ईमान लाने वाले हैं।

قَالُوا اسْمُكَ أَنْتَ وَإِلَيْنَا مِنْ دُونِهِمْ بَلْ كَانُوا
يَعْبُدُونَ الْجِنَّ أَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُؤْمِنُونَ ﴿٢٤﴾

42. तो आज तुम^[4] में से कोई एक-दूसरे को लाभ अथवा हानि पहुँचाने का अधिकार नहीं रखेगा। तथा हम कह देंगे अत्याचारियों से कि तुम अग्नि की

قَالِيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَفَعًا وَلَا ضَرًّا
وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي
كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿٢٥﴾

1 अर्थात् हमारा प्रिय बना दे।

2 अर्थात् हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिये।

3 अरब के कुछ मुशरिक लोग, फ़रिश्तों को पूज्य समझते थे। अतः उन से यह प्रश्न किया जायेगा।

4 अर्थात् मिथ्या पूज्य तथा उन के पुजारी।

यातना चखो जिसे तुम झुठला रहे थे।

43. और जब सुनाई जाती है उन के समक्ष हमारी खुली आयतें तो कहते हैं: यह तो एक पुरुष है जो चाहता है कि तुम्हें रोक दे उन पज्यों से जिन की इबादत करते रहे हैं तुम्हारे पूर्वज। तथा उन्होंने कहा कि यह तो बस एक झूठी बनायी हुयी बात है। तथा कहा काफिरों ने इस सत्य को कि यह तो बस एक प्रत्यक्ष (खुला) जादू है।

44. जब कि हम ने नहीं प्रदान की है इन (मक्का वासियों) को कोई पुस्तक जिसे वे पढ़ते हों। तथा न हम ने भेजा है इन की ओर आप से पहले कोई सचेत करने वाला।^[1]

45. तथा झुठलाया था इन से पूर्व के लोगों ने और नहीं पहुँचे यह उस के दसवें भाग को भी जो हम ने प्रदान किया था उन को। तो उन्होंने झुठला दिया मेरे रसूलों को अन्ततः मेरा इन्कार कैसा रहा?^[2]

46. आप कह दें कि मैं बस तुम्हें एक बात की नसीहत कर रहा हूँ कि तुम अल्लाह के लिये दो-दो तथा अकेले-अकेले खड़े हो जाओ। फिर

وَإِذَا اشْتَلَىٰ عَلَيْهِمُ الْيَتْنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَذَا
إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَنْ يَصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ
آبَاءَكُمْ وَقَالَ الْوَأْمَاءُ هَذَا إِلَّا آفَاكٌ مُّفْتَرَىٰ
وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ
إِنَّ هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۖ

وَمَا آتَيْنَاهُمْ مِنْ كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا وَمَا أَرْسَلْنَا
إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَذِيرٍ ۗ

وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَالْبَعْضَ أَوْعِيَةً
مَا آتَيْنَاهُمْ فَكَذَّبُوا رَسُولِي ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ۗ

قُلْ إِنَّمَا أَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۖ أَنْ تَقُومُوا لِلَّهِ
مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۖ وَتَنْفَكُوا مِنْ أَصْحَابِكُمْ
مِنْ جَنَّةٍ ۚ إِنَّ هُوَ الْأَنْذِيرُ لَكُمْ بَيْنَ يَدَيْهِ

1 तो इन्हें कैसे ज्ञान हो गया कि यह कुर्आन खुला जादू है? क्यों कि यह एतिहासिक सत्य है कि आप से पहले मक्का में कोई नबी नहीं आया। इसलिये कुर्आन के प्रभाव को स्वीकार करना चाहिये न कि उस पर जादू होने का आरोप लगा दिया जाये।

2 अर्थात् आद और समूद ने। अतः मेरे इन्कार के दुष्परिणाम अर्थात् उन के विनाश से इन्हें शिक्षा लेनी चाहिये जो धन-बल तथा शक्ति में इन से अधिक थे।

सोचो। तुम्हारे साथी को कोई पागलपन नहीं है।^[1] वह तो बस सचेत करने वाले है तुम्हें आगामी कड़ी यातना से।

47. आप कह दें: मैं ने तुम से कोई बदला माँगा है तो वह तुम्हारे^[2] ही लिये है। मेरा बदला तो बस अल्लाह पर है। और वह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है।
48. आप कह दें कि मेरा पालनहार वही करता है सत्य की। वह परोक्षों का अति ज्ञानी है।
49. आप कह दें कि सत्य आ गया। और असत्य न (कुछ का) आरंभ कर सकता है और न (उसे) पुनः ला सकता है।
50. आप कह दें कि यदि मैं कुपथ हो गया तो मेरे कुपथ होने का (भार) मुझ पर है। और यदि मैं सुपथ पर हूँ तो उस वही के कारण जिसे मेरी और मेरा पालनहार उतार रहा है। वह सब कुछ सुनने वाला, समीप है।
51. तथा यदि आप देखेंगे जब वह घबराये हुये^[3] होंगे तो उन के खो जाने का कोई उपाय न होगा। तथा पकड़ लिये जायेंगे समीप स्थान से।
52. और कहेंगे: हम उस^[4] पर ईमान

عَذَابٍ شَدِيدٍ ۝

قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ إِنَّ أَجْرِي
إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَفْقَهُ الْغَيْبُ ۝

قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِيُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُهُ ۝

قُلْ إِنْ صَلَّيْتُ وَإِنَّمَا أَضِلُّ عَلَى نَفْسِي وَإِنْ
اهْتَدَيْتُ فِيمَا أُبَيِّنُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ۝

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فِرْعَوْنًا فَكَلَّمْتَهُ وَاجْتَدَىٰ مِنْ
مَكَانٍ قَرِيبٍ ۝

وَقَالُوا الْمَتَابَ ۖ وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَادُشُ مِنْ

1 अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दशा के बारे में।

2 कि तुम संमार्ग अपनाकर आगामी प्रलय की यातना से सुरक्षित हो जाओ।

3 प्रलय की यातना देख कर।

4 अर्थात अल्लाह तथा उस के रसूल पर।

مَمَّا كَانُوا يَعْبُدُونَ ۝

- लाये। तथा कहाँ हाथ आ सकता है
उन के (ईमान) इतने दूर स्थान^[1] से?
53. जब कि उन्होंने कुफ़र कर दिया पहले
उस के साथ। और तीर मारते रहे
बिन देखे दूर^[2] से।
54. और रोक बना दी जायेगी उन
के तथा उस के बीच जिस की वे
कामना करेंगे जैसे किया गया इन के
जैसों के साथ इस से पहले। वास्तव
में वे संदेह में पड़े थे।

وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ وَيَسْخَرُونَ بِالْعَيبِ
مِنْ مَمَّا كَانُوا يَعْبُدُونَ ۝

وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِمْ
مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُرِيبٍ ۝

- 1 ईमान लाने का स्थान तो संसार था। परन्तु संसार में उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया।
- 2 अर्थात् अपने अनुमान से असत्य बातें करते रहे।

सूरह फ़ातिर - 35



सूरह फ़ातिर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 45 आयतें हैं।

- इस सूरह में फ़ातिर शब्द आया है जिस का अर्थ: उत्पत्तिकार है। इसी कारण इसे यह नाम दिया गया है।
- इस में अल्लाह के उत्पत्ति तथा पालन-पोषण करने के शुभगुणों को उजागर करके लोगों को एकेश्वरवाद तथा परलोक और रिसालत पर ईमान लाने को कहा गया है। इस की आरंभिक आयतों में ही पूरी सूरह का सारांश आ गया है।
- इस में तौहीद (एकेश्वरवाद) तथा परलोक का सविस्तार वर्णन तथा शिर्क का खण्डन किया गया है। और रिसालत पर ईमान न लाने का दुष्परिणाम बताया गया है।
- इस में बताया गया है कि अल्लाह की निशानियों की पहचान तथा धार्मिक ग्रन्थों द्वारा जो ज्ञान मिलता है वह मार्गदर्शन की राह खोल कर सफल बनाता है। और इस पहचान और ज्ञान से विमुख होने का परिणाम विनाश है।
- अन्त में मुश्रिकों को चेतावनी दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है जो उत्पन्न करने वाला है आकाशों तथा धरती का, (और) बनाने वाला^[1] है संदेशवाहक फ़रिश्तों को दो-दो तीन-तीन चार -चार परों वाला। वह अधिक करता है उत्पत्ति में जो चाहता है, निःसंदेह अल्लाह जो

أَحْسَدُ لِلَّهِ فَاطِرُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ
الْمَلَكَةَ نُسُلًا أُولَىٰ أَجْجَدَ مَثْنَىٰ وَثَلَاثَ وَرُبْعَ
يُرِيدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاءُ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

1 अर्थात् फ़रिश्तों के द्वारा नबियों तक अपनी प्रकाशना तथा संदेश पहुँचाता है।

- चाहे कर सकता है।
2. जो खोल दे अल्लाह लोगों के लिये अपनी दया^[1] तो उसे कोई रोकने वाला नहीं। तथा जिसे रोक दे तो कोई खोलने वाला नहीं उस का उस के पश्चात् तथा वही प्रभावशाली चतुर है।
 3. हे मनुष्यो! याद करो अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को, क्या कोई उत्पत्तिकर्ता है अल्लाह के सिवा जो तुम्हें जीविका प्रदान करता हो आकाश तथा धरती से? नहीं है कोई बंदनीय परन्तु वही। फिर तुम कहाँ फिरे जा रहे हो।
 4. और यदि वह आप को झुठलाते हैं, तो झुठलाये जा चुके हैं बहुत से रसूल आप से पहले। और अल्लाह ही की ओर फेरे जायेंगे सब विषय।^[2]
 5. हे लोगो! निश्चय अल्लाह का वचन सत्य है। अतः तुम्हें धोखे में न रखे संसारिक जीवन और न धोखे में रखे अल्लाह से अति प्रवंचक (शैतान)।
 6. वास्तव में शैतान तुम्हारा शत्रु है। अतः तुम उसे अपना शत्रु ही समझो। वह बुलाता है अपने गिरोह को इसी लिये ताकि वह नारकियों में हो जायें।
 7. जो काफ़िर हो गये उन्हीं के लिये

مَا يَفْتَحُ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا
وَمَا يُمْسِكُ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِنْ بَعْدِهَا
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ①

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ هَلْ مِنْ
خَالِقٍ غَيْرِ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَأَنْتُمْ تُكْفُرُونَ ②

وَأَنْ يَكْفُرُوكُمْ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ عَنْ قِيلِكَ وَإِلَى
اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ③

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ
الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِاللَّهِ الْغُرُورُ ④

إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا إِنَّمَا يَدْعُو حِزْبَهُ
لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ⑤

الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَالَّذِينَ آمَنُوا

- 1 अर्थात् स्वास्थ्य, धन, ज्ञान आदि प्रदान करे।
- 2 अर्थात् अन्ततः सभी विषयों का निर्णय हमें ही करना है तो यह कहाँ जायेंगे? अतः आप धैर्य से काम लें।

कड़ी यातना है। तथा जो ईमान लाये और सदाचार किये तो उन के लिये क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है।

8. तथा क्या शोभनीय बना दिया गया हो जिस के लिये उस का कुकर्म, और वह उसे अच्छा समझता हो? तो अल्लाह की कुपथ करता है जिसे चाहे और सुपथ दिखाता है जिसे चाहे। अतः न खोयें आप अपना प्राण इन^[1] पर संताप के कारण। वास्तव में अल्लाह जानता है जो कुछ वे कर रहे हैं।

9. तथा अल्लाह वही है जो वायु को भेजता है। जो बादलों को उठाती है, फिर हम हाँक देते हैं उसे निर्जीव नगर की ओर। फिर जीवित कर देते हैं उस के द्वारा धरती को उस के मरण के पश्चात्। इसी प्रकार फिर जीना (भी)^[2] होगा।

10. जो सम्मान चाहता हो तो अल्लाह ही के लिये है सब सम्मान। और उसी की ओर चढ़ते हैं पवित्र वाक्य^[3] तथा सत्कर्म ही उन को ऊपर ले जाता^[4] है, तथा जो दाव घात में

وَعَمَلُوا الصَّالِحَاتِ لَمْ يُعْفَرُوا وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿١٠﴾

أَمِنْ زَيْنٍ لَهُ سَوْءٌ عَلَيْهِ قَوْلًا حَسَنًا فَإِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ فَلَا تَذْهَبُ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسْرَتٌ إِنَّ اللَّهَ عَلَيْهِمْ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿١١﴾

وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ فَتُبْرِئُ سَحَابًا فَأَسْقِيَنَّ إِلَىٰ بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَحْيَيْنَاهُ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا أَكُنَّا لَكَ الشُّكُورُ ﴿١٢﴾

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ جَمِيعًا إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَمَكْرُ أُولَٰئِكَ هُوَ يُبْرَأُ ﴿١٣﴾

1 अर्थात् इन के ईमान न लाने पर संताप न करें।

2 अर्थात् जिस प्रकार वर्षा से सूखी धरती हरी हो जाती है इसी प्रकार प्रलय के दिन तुम्हें भी जीवित कर दिया जायेगा।

3 पवित्र वाक्य से अभिप्राय ((ला इलाहा इल्लल्लाह)) है। जो तौहीद का शब्द है। तथा चढ़ने का अर्थ है: अल्लाह के यहाँ स्वीकार होना।

4 आयत का भावार्थ यह है कि सम्मान अल्लाह की वंदना से मिलता है अन्य की पूजा से नहीं। और तौहीद के साथ सत्कर्म का होना भी अनिवार्य है। और जब

लगे रहते हैं बुराईयों की, तो उन्हीं के लिये कड़ी यातना है और उन्हीं के षड्यंत्र नाश हो जायेंगे।

11. अल्लाह ने उत्पन्न किया तुम्हें मिट्टी से फिर वीर्य से, फिर बनाये तुम को जोड़े। और नहीं गर्भ धारण करती कोई नारी और न जन्म देती परन्तु उस के ज्ञान से। और नहीं आयु दिया जाता कोई अधिक और न कम की जाती है उस की आयु परन्तु वह एक लेख में^[1] है। वास्तव में यह अल्लाह पर अति सरल है।

12. तथा बराबर नहीं होते दो सागर, यह मधुर प्यास बुझाने वाला है, रुचिकर है जिस का पीना। और वह (दूसरा) खारी कड़वा है, तथा प्रत्येक में से तुम खाते हो ताज़ा माँस, तथा निकालते हो आभूषण जिसे पहनते हो। और तुम देखते हो नाव को उस में पानी फाड़ती हुई, ताकि तुम खोज करो अल्लाह के अनुग्रह की। और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

13. वह प्रवेश करता है रात को दिन में, तथा प्रवेश करता है दिन को रात्रि में। तथा वश में कर रखा है सूर्य तथा चन्द्रा को, प्रत्येक चलते रहेंगे एक निश्चित समय तक। वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है। उसी का राज्य है। तथा जिन को तुम पुकारते हो

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ
جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا وَمَا يَحْبُلُ مِنْ أَنْتُمْ وَلَا لَكُمْ
إِلَٰهٌ إِلَّا اللَّهُ وَمَا يَغْمُرُ مِنْ مَّعْتَمِرٍ إِلَّا نَقْصُ مِنْ غَمْرَةٍ
إِلَّا فِي كِتَابٍ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ⑩

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرَيْنِ هَذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَالِمٌ
شَرَابُهُ وَهَذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ وَمِنْ كُلِّ تَاكُلُونَ
لَحْمًا طَرِبًا وَمَا يَشْتَرُونَ بِهِمْ جَلِيَّةٌ تَأْكُلُ مِنْهَا وَمَنْ
أَفْلَاكٌ فِيهِمْ مَوَٰخِرٌ لَسْتَ مَسْئُومٌ مِنْ قَضَاهُمْ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ⑪

يُولِيهِ الْبَيْتَ فِي النَّهَارِ وَيُولِيهِ النَّهَارَ فِي الْبَيْتِ وَسَخَّرَ
النَّجْمَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُسَمًّى ذَلِكَ
اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ
مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْبَرٍ ⑫

ऐसा होगा तो उसे अल्लाह स्वीकार कर लेगा।

- 1 अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति की पूरी दशा उस के भाग्य लेख में पहले ही से अंकित है।

उस के सिवा वह स्वामी नहीं हैं एक
तिनके के भी।

14. यदि तुम उन्हें पुकारते हो तो वह
नहीं सुनते तुम्हारी पुकार को। और
यदि सुन भी लें तो नहीं उत्तर दे
सकते तुम्हें। और प्रलय के दिन वह
नकार देंगे तुम्हारे शिर्क (साझी
बनाने) को। और आप को कोई
सूचना नहीं देगा सर्वसूचित जैसी।^[1]
15. हे मनुष्यो! तुम सभी भिक्षु हो अल्लाह
को तथा अल्लाह ही निःस्वार्थ प्रशंसित है।
16. यदि वह चाहे तो तुम्हें ध्वस्त कर दे,
और नई^[2] उत्पत्ति ला दे।
17. और यह नहीं है अल्लाह पर कुछ कठिन।
18. तथा नहीं लादेगा कोई लादने वाला
दूसरे का बोझ अपने ऊपर।^[3] और
यदि पुकारेगा कोई बोझल उसे लादने
के लिये तो वह नहीं लादेगा उस में
से कुछ. चाहे वह उस का समीपवर्ती

إِنَّ تَدْعُوهُمْ لَا يَسْعَوْنَ أَعْيُنُهُمْ لَوِ سِعُوا
مَا اسْتَجَابُوا لَهُمْ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ
بِشِرْكِكُمْ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِنْهُ خَبِيرٌ

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ
وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ

إِنْ يَشَاءُ يُدْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ

وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ وَإِنْ تَدْعُ مُثَمَّلَةٌ
إِلَىٰ حِمْلِهَا لَا يَحْمِلُ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا
قُرْبَىٰ إِنْ تَسْتَأْذِنُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ
بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَمَنْ تَزَكَّىٰ

- 1 इस आयत में प्रलय के दिन उन के पूज्य की दशा का वर्णन किया गया है। कि यह प्रलय के दिन उन के शिर्क को अस्वीकार कर देंगे। और अपने पुजारियों से विरक्त होने की घोषणा कर देंगे। जिस से विद्वित हुआ कि अल्लाह का कोई साझी नहीं। और जिन को मुश्रिकों ने साझी बना रखा है वह सब धोखा है।
- 2 भावार्थ यह है कि मनुष्य को प्रत्येक क्षण अपने अस्तित्व तथा स्थायित्व के लिये अल्लाह की आवश्यकता है। और अल्लाह ने निर्लोभ होने के साथ ही उस के जीवन के संसाधन की व्यवस्था कर दी है। अतः यह न सोचो कि तुम्हारा विनाश हो गया तो उस की महिमा में कोई अन्तर आ जायेगा। वह चाहे तो तुम्हें एक क्षण में ध्वस्त कर के दूसरी उत्पत्ति ले आये क्योंकि वह एक शब्द ((कुन्)) (जिस का अनुवाद है: हो जा) से जो चाहे पैदा कर दे।
- 3 अर्थात् पापों का बोझ। अर्थ यह है कि प्रलय के दिन कोई किसी की सहायता नहीं करेगा।

ही क्यों न हों। आप तो बस उन्हीं को सचेत कर रहे हैं जो डरते हों अपने पालनहार से बिन देखे। तथा जो स्थापना करते हैं नमाज़ की। तथा जो पवित्र हुआ तो वह पवित्र होगा अपने ही लाभ के लिये। और अल्लाह ही की ओर (सब को) जाना है।

قَاتِمَا يَكْتُمُونَ لِنَفْسِهِمْ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝

19. तथा समान नहीं हो सकता अँधा तथा आँख वाला।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۝

20. और न अंधकार तथा प्रकाश।

وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا النُّورُ ۝

21. और न छाया तथा न धूप।

وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُورُ ۝

22. तथा समान नहीं हो सकते जीवित तथा निर्जीवा^[1] वास्तव में अल्लाह ही सुनाता है जिसे चाहता है। और आप नहीं सुना सकते जो कब्रों में हों।

وَمَا يَسْتَوِي الْكَيِّسُ وَلَا الْأُمُوتُ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ
مَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَا أَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّن فِي
الْقُبُورِ ۝

23. आप तो बस सचेत कर्ता है।

إِنَّ أَنْتَ إِلَّا نَذِيرٌ ۝

24. वास्तव में हम ने आप को सत्य के साथ शुभसूचक तथा सचेतकर्ता बना कर भेजा है। और कोई ऐसा समुदाय नहीं जिस में कोई सचेत कर्ता न आया हो।

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا
وَإِنْ مِنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ۝

25. और यदि ये आप को झुठलायें तो इन से पूर्व लोगों ने भी झुठलाया है, जिन के पास हमारे रसूल खुले प्रमाण तथा ग्रंथ और प्रकाशित पुस्तकें लाये।

وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
جَاءَهُمْ رَسُولُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۚ وَالْكِتَابِ
النَّبِيِّ ۝

26. फिर मैं ने पकड़ लिया उन्हें जो काफ़िर हो गये तो कैसा रहा मेरा इन्कार।

ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَكَيْفَ كَانَ لِكَيْفِ
الْمُرْسَلِينَ ۝

27. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह ने

الْمُرْسَلِينَ ۝

1 अर्थात जो कुफ़ के कारण अपनी ज्ञान शक्ति खो चुके हों।

उतारा आकाश से जल, फिर हम ने निकाल दिये उस के द्वारा बहुत से फल विभिन्न रंगों के। तथा पर्वतों के विभिन्न भाग हैं श्वेत तथा लाल विभिन्न रंगों के तथा गहरे काले।

فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهَا وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بَيْضٌ وَحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَعَرَايِبٌ سُوْدٌ ۝

28. तथा मनुष्य एवं जीवों तथा पशुओं में भी विभिन्न रंगों के हैं इसी प्रकार। वास्तव में डरते हैं अल्लाह से उस के भक्तों में से वही जो ज्ञानी^[1] हों। निस्सदेह अल्लाह अति प्रभुत्वशाली क्षमी है।

وَمِنَ النَّاسِ وَالذّٰوَابِ وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذٰلِكَ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعٰلَمُوْنَ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيزٌ عَلِيْمٌ ۝

29. वास्तव में जो पढ़ते हैं अल्लाह की पुस्तक (क़ुर्आन), तथा उन्होंने स्थापना की नमाज़ की, एवं दान किया उस में से जो हम ने उन्हें प्रदान किया है खुले तथा छुपे तो वही आशा रखते हैं ऐसे व्यापार की जो कदापि हानिकर नहीं होगा।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْكُوْنَ كَيْدَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَعَلٰنِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ نُّبَوِّرَهُمْ

30. ताकि अल्लाह प्रदान करे उन्हें भरपूर उन का प्रतिफल। तथा उन्हें अधिक दे अपने अनुग्रह से। वास्तव में वह अति क्षमी आदर करने वाला है।

لِيُوَفِّيَهُمْ اُجْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِنْ فَضْلِنَا اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝

31. तथा जो हम ने प्रकाशना की है आप की ओर यह पुस्तक। वही सर्वथा सच्च है, और सच्च बताती है अपने पूर्व की पुस्तकों को। वास्तव में अल्लाह अपने भक्तों से सूचित

وَالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَا اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ اِنَّ اللّٰهَ رَءِیْسُ الْبٰصِرِيْنَ ۝

1 अर्थात् अल्लाह के इन सामर्थ्यों तथा रचनात्मक गुणों को जान सकते हैं जिन को क़ुर्आन तथा हदीसों का ज्ञान हो। और उन्हें जितना ही अल्लाह का आत्मिक ज्ञान होता है उतना ही वह अल्लाह से डरते हैं। मानो जो अल्लाह से नहीं डरते वह ज्ञानशून्य होते हैं। (इब्ने कसीर)

भली-भाँति देखने वाला है।^[1]

32. फिर हम ने उत्तरधिकारी बनाया इस पुस्तक का उन को जिन्हें हम ने चुन लिया अपने भक्तों में^[2] से। तो उन में कुछ अत्याचारी हैं अपने ही लिये तथा उन में से कुछ मध्यवर्ती हैं और कुछ अग्रसर हैं भलाईयों में अल्लाह की अनुमति से, तथा यही महान् अनुग्रह है।
33. सदावास के स्वर्ग है, वे प्रवेश करेंगे उन में और पहनाये जायेंगे उन में सोने के कंगन तथा मोती। और उन के वस्त्र उस में रेशम के होंगे।
34. तथा वे कहेंगे: सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जिस ने दूर कर दिया हम से शोक। वास्तव में हमारा पालनहार अति क्षमी गुणग्राही है।
35. जिस ने हमें उतार दिया स्थायी घर में अपने अनुग्रह से। नहीं छूयेगी उस में हमें कोई आपदा और न छूयेगी उस में कोई थकान।
36. तथा जो काफ़िर हैं उन्हीं के लिये नरक की अग्नि है। न तो उन की मौत ही आयेगी कि वह मर जायें, और न हलकी की जायेगी उन से उस की कुछ यातना। इसी प्रकार हम बदला देते हैं प्रत्येक नाशुक्रे को।

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا
فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِنَفْسِهِ وَمِنْهُمْ مُقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ
سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ يُأْتِنُ اللَّهَ ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ
الْكَبِيرُ ۝

جَدَّتْ عَدْنٌ يَدَّخُلُونَهَا يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ
أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسٌ مِنْ نَهْجٍ حَرِيرٍ ۝

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزْنَ
إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ۝

الَّذِينَ أَحْكَمْنَا آدَارَ الْمَقَامَةِ مِنْ فَضْلِهِ
لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نَصَبٌ وَلَا يَمَسُّنَا فِيهَا الْهَوْبُ ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ
فِيمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِنْ عَذَابِهَا
كَذَلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَفُورٍ ۝

- 1 कि कौन उस के अनुग्रह के योग्य है। इसी कारण उस ने नबियों को सब पर प्रधानता दी है। तथा नबियों को भी एक-दूसरे पर प्रधानता दी है। (देखिये: इब्ने कसीर)
- 2 इस आयत में कुर्आन के अनुयायियों की तीन श्रेणियाँ बताई गई हैं। और तीनों ही स्वर्ग में प्रवेश करेंगी: अग्रगामी बिना हिसाब के। मध्यवर्ती सरल हिसाब के पश्चात् तथा अत्याचारी दण्ड भुगतने के पश्चात् शिफ़ाअत द्वारा। (फतहल कदीर)

37. और वह उस में चिल्लायेंगे: हे हमारे पालनहार! हमें निकाल दे, हम सदाचार करेंगे उस के अतिरिक्त जो कर रहे थे। क्या हम ने तुम्हें इतनी आयु नहीं दी जिस में शिक्षा ग्रहण कर ले जो शिक्षा ग्रहण करे। तथा आया तुम्हारे पास सचेतकर्ता (नबी)? अतः तुम चखो। अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं है।

وَهُمْ يَصْطَرِحُونَ فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ
صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۖ أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُم
مَا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَن تَذَكَّرَ وَجَاءَكُمُ النَّذِيرُ
فَلَا تُؤْمِنُوا بِالظَّالِمِينَ مَن تَصْبِرُونَ

38. वास्तव में अल्लाह ही ज्ञानी है आकाशों तथा धरती के भेद का। वास्तव में वही भली-भाँति जानने वाला है सीनों की बातों का।

إِنَّ اللَّهَ عَلِيمُ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ

39. वही है जिस ने तुम्हें एक दूसरे के पश्चात् बसाया है धरती में तो जो कुफ़ करेगा तो उस के लिये है उस का कुफ़, और नहीं बढ़ायेगा काफ़िरों के लिये उन का कुफ़ उन के पालनहार के यहाँ परन्तु क्रोध ही, और नहीं बढ़ायेगा काफ़िरों के लिये उन का कुफ़ परन्तु क्षति ही।

هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ فَمَن كَفَرَ
فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَلَا يُزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ
عِندَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ۖ وَلَا يُزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ
إِلَّا اخْسَارًا

40. (हे नबी^[1]!) उन से कहो: क्या तुम ने देखा है अपने साझियों को जिन्हें तुम पुकारते हो अल्लाह के अतिरिक्त? मुझे भी दिखाओ कि उन्होंने कितना भाग बनाया है धरती में से? या उन का आकाशों में कुछ साझा है? या हम ने प्रदान की है उन्हें कोई पुस्तक, तो यह उस के खुले प्रमाणों पर है? बल्कि (बात यह है कि) अत्याचारी एक-दूसरे को केवल धोखे

قُلْ أَرَأَيْتُمْ شُرَكَاءَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ
اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ
فِي السَّمَوَاتِ ۚ أَمْ آتَيْنَهُم كِتَابًا فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَاتٍ
بِمَنَّةٍ ۚ بَلْ إِن يُغِدُّ الظَّالِمُونَ بَعْضُهُم لِبَعْضٍ
الْأَعْرُوسَ

1 यहाँ से अन्तिम सूरह तक शिर्क (मिश्रणवाद) का खण्डन किया जा रहा है।

का वचन दे रहे हैं।

41. अल्लाह ही रोकता^[1] है आकाशों तथा धरती को खिसक जाने से। और यदि खिसक जायें वे दोनों तो नहीं रोक सकेगा उन को कोई उस (अल्लाह) के पश्चात्। वास्तव में वह अत्यंत सहनशील क्षमाशील है।
42. और उन काफ़िरों ने शपथ ली थी अल्लाह की पक्की शपथ! कि यदि आ गया उन के पास कोई सचेतकर्ता (नबी) तो वह अवश्य हो जायेंगे सर्वाधिक संमार्ग पर समुदायों में से किसी एक से। फिर जब आ गये उन के पास एक रसूल^[2] तो उन की दूरी ही अधिक हुई।
43. अभिमान के कारण धरती में तथा बुरे षडयंत्र के कारण। और नहीं घेरता है बुरा षडयंत्र परन्तु अपने करने वाले ही को। तो क्या वह प्रतीक्षा कर रहे हैं पूर्व के लोगों की नीति की?^[3] तो नहीं पायेंगे आप अल्लाह के नियम में कोई अन्तर।^[4]
44. और क्या वह नहीं चले-फिरे धरती में, तो देख लेते कि कैसा रहा उन का दुष्परिणाम जो इन से पूर्व रहे जब कि वह इन से कड़े थे बल में?

إِنَّ اللَّهَ يُمَسِّكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا
وَلَكِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِنْ
بَعْدِي إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَهُمْ
نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ أَهْدَى الْأُمَمِ فَلَمَّا
جَاءَهُمْ نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمُ الْإِنْفُورًا

لِاسْتِكْبَارِهِمْ فِي الْأَرْضِ وَمَكْرُ السَّيِّئِ
وَلَا يَجِئُ الْمَكْرُ السَّيِّئِ إِلَّا بِأَهْلِهِ فَهَلْ
يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّنْتَ الْأُولَىٰ ۗ فَلَئِنْ تَجِدَ
لِلسَّنَةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۗ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ
تَحْوِيلًا ۝

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ
مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِنْ

1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात में नमाज़ के लिये जागते तो आकाश की ओर देखते और यह पूरी आयत पढ़ते थे। (सहीह बुख़ारी: 7452)

2 मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

3 अर्थात् यातना की।

4 अर्थात् प्रत्येक युग और स्थान के लिये अल्लाह का नियम एक ही रहा है।

तथा अल्लाह ऐसा नहीं, वास्तव में वह सर्वज्ञ अति सामर्थ्यवान है।

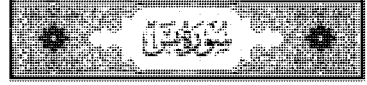
45. और यदि पकड़ने लगता अल्लाह लोगों को उन के कर्मों के कारण, तो नहीं छोड़ता धरती के ऊपर कोई जीव। किन्तु अवसर दे रहा है उन्हें एक निश्चित अवधि तक, फिर जब आजायेगा उन का निश्चित समय तो निश्चय अल्लाह अपने भक्तों को देख रहा^[1] है।

شَيْءٌ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ﴿٥٠﴾

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَى ظَهْرهَا مِنْ دَابَّةٍ وَالَّذِينَ يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ آجَلٍ مُّسَمًّى فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ بَصِيرًا ﴿٥١﴾

1 अर्थात् उस दिन उन के कर्मों का बदला चुका देगा।

सूरह यासीन - 36



सूरह यासीन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 83 आयतें हैं।

- सूरह के प्रथम दो शब्दों से इस को यह नाम दिया गया है।
- इस में रसूल के सत्य होने पर कुर्आन की गवाही से यह बताया गया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अचेत लोगों को जगाने के लिये भेजा गया है। और इस में उस का एक उदाहरण दिया गया है।
- तौहीद की निशानियाँ बता कर विरोधियों का खण्डन किया गया है। और इस प्रकार सावधान किया गया है जिस से लगता है कि प्रलय आ गई है।
- रिसालत, तौहीद तथा दूसरे जीवन के संबंध में विरोधियों की अपत्तियों का जवाब दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. या सीन।
2. शपथ है सुदृढ़ कुर्आन की!
3. वस्तुतः आप रसूलों में से हैं।
4. सुपथ पर हैं।
5. (यह कुर्आन) प्रभुत्वशाली अति दयावान् का अवतरित किया हुआ है।
6. ताकि आप सावधान करें उस जाति^[1] को, नहीं सावधान किये गये हैं जिन के पूर्वज। इसलिये वह अचेत हैं।

يَسِّ

وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ

إِنَّكَ لَكَلِمَ الْمُؤْمِنِينَ

عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ

تَنْزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ

لِيُنذِرَ قَوْمًا مَّا أُنذِرَ آبَاؤَهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ

1 मक्का वासियों को जिन के पास इस्मार्ईल (अलैहिस्सलाम) के पश्चात् कोई नबी नहीं आया।

7. सिद्ध हो चुका है वचन^[1] उन में से अधिकतर लोगों पर। अतः वह ईमान नहीं लायेंगे।
8. तथा हम ने डाल दिये हैं तौक उन के गलों में, जो हड्डियों तक^[2] हैं। इसलिये वह सिर ऊपर किये हुये हैं।
9. तथा हम ने बना दी है उन के आगे एक आड़ और उन के पीछे एक आड़। फिर ढाँक दिया है उन को, तो^[3] वह देख नहीं रहे हैं।
10. तथा समान है उन पर कि आप उन्हें सावधान करें अथवा सावधान न करें वह ईमान नहीं लायेंगे।
11. आप तो बस उसे सचेत कर सकेंगे जो माने इस शिक्षा (कुर्आन) को, तथा डरे अत्यंत कृपाशील से बिन देखे। तो आप शुभसूचना सुना दें उसे क्षमा की तथा सम्मानित प्रतिफल की।
12. निश्चय हम ही जीवित करेंगे मुर्दा को, तथा लिख रहे हैं जो कर्म उन्होंने किया है और उन के पद चिन्हों^[4] को, तथा प्रत्येक वस्तु को हम ने गिन रखा है खुली पुस्तक में।

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَىٰ أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠﴾

إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُقْمَحُونَ ﴿١١﴾

وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٢﴾

وَسَاءَ عَلَيْهِمْ إِذْ ذَرَبْنَاهُمْ أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٣﴾

إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَنَ الْغَيْبِ فَغُفِرَ لَهُ بِمَغْفِرَةِ وَأَجْرٌ كَرِيمٌ ﴿١٤﴾

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ وَكُلِّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُّبِينٍ ﴿١٥﴾

- 1 अर्थात् अल्लाह का यह वचन किः ((मैं जिन्हों तथा मनुष्यों से नरक को भर दूँगा।)) (देखिये: सूरह: सज्दा, आयत: 13)
- 2 इस से अभिप्राय उन का कुफ़ पर दुराग्रह तथा ईमान न लाना है।
- 3 अर्थात् सत्य की ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं, और न उस से लाभान्वित हो रहे हैं।
- 4 अर्थात् पुण्य अथवा पाप करने के लिये आते-जाते जो उन के पदचिन्ह धरती पर बने हैं उन्हें भी लिख रखा है। इसी में उन के अच्छे-बुरे वह कर्म भी आते हैं जो उन्होंने किये हैं। और जिन का अनुसरण उन के पश्चात् किया जा रहा है।

13. तथा आप उन को^[1] एक उदाहरण दीजिये नगर वासियों का। जब आये उस में कई रसूल।
14. जब हम ने भेजा उन की ओर दो को। तो उन्होंने ने झुठला दिया उन दोनों को। फिर हम ने समर्थन दिया तीसरे के द्वारा। तो तीनों ने कहा: हम तुम्हारी ओर भेजे गये हैं।
15. उन्होंने कहा: तुम सब तो मनुष्य ही हो हमारे^[2] समान। और नहीं अवतरित किया है अत्यंत कृपाशील ने कुछ भी। तुम सब तो बस झूठ बोल रहे हो।
16. उन रसूलों ने कहा: हमारा पालनहार जानता है कि वास्तव में हम तुम्हारी ओर रसूल बना कर भेजे गये हैं।
17. तथा हमारा दायित्व नहीं है खुला उपदेश पहुँचा देने के सिवा।
18. उन्होंने कहा: हम तुम्हें अशुभ समझ रहे हैं। यदि तुम रुके नहीं तो हम तुम्हें अवश्य पथराव कर के मार डालेंगे। और तुम्हें अवश्य हमारी ओर से पहुँचेगी दुःखदायी यातना।
19. उन्होंने कहा: तुम्हारा अशुभ तुम्हारे

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَاتِ إِذْ
جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿١٣﴾

إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا
بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَهُكُم مُّرْسَلُونَ ﴿١٤﴾

قَالُوا مَا آتَانَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَمَا أَنزَلَ
الرَّحْمَنُ مِنْ شَيْءٍ إِن أَنْتُمْ إِلَّا كَذِبُونَ ﴿١٥﴾

قَالُوا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّا إِلَهُكُم لَمُرْسَلُونَ ﴿١٦﴾

وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿١٧﴾

قَالُوا إِنَّا نَطِّيرُكُم بِأَيْدِينَا لَمَّا تَدَّعَوْا
لِكُرْبَانِكُمْ وَلَيْسَ لَكُم مِّنَّا عِدَابٌ إِلَيْكُمْ ﴿١٨﴾

قَالُوا طَائِفُكُمْ مَعَكُمْ أَيْنَ ذُكِّرْتُمْ

1 अर्थात् अपने आमंत्रण के विरोधियों को।

2 प्राचीन युग से मुश्रिकों तथा कुपथों ने अल्लाह के रसूलों को इसी कारण नहीं माना कि एक मनुष्य पुरुष अल्लाह का रसूल कैसे हो सकता है? यह तो खाता-पीता तथा बाजारों में चलता-फिरता है। (देखिये: सूरह फुर्कान, आयत: 7-20, सूरह अम्बिया, आयत: 3, 7, 8, सूरह मूमिनून, आयत: 24-33-34, सूरह इब्राहीम, आयत: 10-11, सूरह इस्रा, आयत: 94-95, और सूरह तगाबुन, आयत: 6)

साथ है। क्या यदि तुम्हें शिक्षा दी जाये (तो अशुभ समझते हो)? बल्कि तुम उल्लंघन कारी जाति हो।

20. तथा आया नगर के अन्तिम किनारे से एक पुरुष दौड़ता हुआ। उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! अनुसरण करो रसूलों का।
21. अनुसरण करो उन का जो तुम से नहीं माँगते कोई पारिश्रमिक (बदला) तथा वह सुपथ पर हैं।
22. तथा मुझे क्या हुआ है कि मैं उस की इबादत (वंदना) न करूँ जिस ने मुझे पैदा किया है? और तुम सब उसी की ओर फेरे जाओगे।^[1]
23. क्या मैं बना लूँ उस को छोड़ कर बहुत से पूज्य? यदि अत्यंत कृपाशील मुझे कोई हानि पहुँचाना चाहें तो नहीं लाभ पहुँचायेगी मुझे उन की अनुशंसा (सिफारिश) कुछ, और न वह मुझे बचा सकेंगे।
24. वास्तव में तब तो मैं खुले कुपथ में हूँ
25. निश्चय मैं ईमान लाया तुम्हारे पालनहार पर, अतः मेरी सुनो।
26. (उस से) कहा गया: तुम प्रवेश कर जाओ स्वर्ग में। उस ने कहा: काश मेरी जाति जानती!

بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ﴿١٠﴾

وَجَاءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَى قَالَ
يَقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ﴿١١﴾

اتَّبِعُوا مَنْ لَا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ
مُهْتَدُونَ ﴿١٢﴾

وَمَا لِيَ لَا أَعْبُدَ الَّذِي فَطَرَنِي وَالَّذِي
كُنْتُ جُوعُونَ ﴿١٣﴾

أَتَّخِذُ مِنْ دُونِهِ آلِهَةً إِنْ يُرِدْنِ الرَّحْمَنُ بِضُرٍّ
لَأَنْعِنَ عَنْهُ شَفَاعَتُهُمْ سِيئًا وَلَا يُنْقِذُونِ ﴿١٤﴾

إِنِّي إِذًا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿١٥﴾

إِنِّي آمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمِعُونِ ﴿١٦﴾

قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ لِيَبْتَغِي يَعْلمُونَ ﴿١٧﴾

1 अर्थात् मैं तो उसी की वंदना करता हूँ और करता रहूँगा। और उसी की वंदना करनी भी चाहिये। क्योंकि वही वंदना किये जाने के योग्य है। उस के अतिरिक्त कोई वंदना के योग्य हो ही नहीं सकता।

27. जिस कारण क्षमा^[1] कर दिया मुझे को मेरे पालनहार ने और मुझे सम्मिलित कर दिया सम्मानितों में।

يَمَّا عَفَّرَ لِي رِزْقِي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمَكْرُمِينَ ﴿٣٦﴾

28. तथा हम ने नहीं उतारी उस की जाति पर उस के पश्चात् कोई सेना^[2] आकाश से। और न हमें उतारने की आवश्यकता थी।

وَمَا أَنْزَلْنَا عَلَى قَوْمِهِ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ جُنْدٍ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِينَ ﴿٣٧﴾

29. वह तो बस एक कड़ी ध्वनि थी। फिर सहसा सब के सब बुझ गये।^[3]

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خُمُودُونَ ﴿٣٨﴾

30. हाये संताप है^[4] भक्तों पर! नहीं आया उन के पास रसूल परन्तु वे उस का उपहास करते रहे।

يَحْسِرُونَ عَلَى الْعِبَادَةِ مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٣٩﴾

31. क्या उन्होंने नहीं देखा कि उन से पहले विनाश कर दिया बहुत से समुदायों का। वे उन की ओर दौबारा फिर कर नहीं आयेंगे।

أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٤٠﴾

32. तथा सब के सब हमारे समक्ष उपस्थित किये^[5] जायेंगे।

وَإِنْ كُلُّ لُحْمًا جُمِعَ لَدَيْنَا لَخَطِرُونَ ﴿٤١﴾

33. तथा उन^[6] के लिये एक निशानी है निर्जीव (सूखी) धरती। जिसे हम

وَإِنَّ لَهُمُ لَهَا أَرْضًا مِثْلَهُ أُخْرَى ﴿٤٢﴾

1 अर्थात् एकेश्वरवाद तथा अल्लाह की आज्ञा के पालन पर धैर्य के कारण।

2 अर्थात् यातना देने के लिये सेनायें नहीं उतारते ।

3 अर्थात् एक चीख ने उन को बुझी हुई राख के समान कर दिया। इस से ज्ञात होता है कि मनुष्य कितना निर्बल है।

4 अर्थात् प्रलय के दिन रसूलों का उपहास भक्तों के लिये संताप का कारण होगा।

5 प्रलय के दिन हिसाब तथा प्रतिकार के लिये।

6 यहाँ से एकेश्वरवाद तथा आखिरत (परलोक) के विषय का वर्णन किया जा रहा है। जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा मक्का के काफ़िरों के बीच विवाद का कारण था।

ने जीवित कर दिया, और हम ने निकाले उस से अन्न, तो तुम उसी में से खाते हो।

34. तथा पैदा कर दिये उस में बाग़ खजूरों तथा अँगूरों के, और फाड़ दिये उस में जल स्रोत।
35. ताकि वह खाये उस के फल। और नहीं बनाया है उसे उन के हाथों ने तो क्या वह कृतज्ञ नहीं होते?
36. पवित्र हे वह जिस ने पैदा किये प्रत्येक जोड़े उस के जिसे उगाती है धरती, तथा स्वयं उन कि अपनी जाति के। और उस के जिसे तुम नहीं जानते हो।
37. तथा एक निशानी (चिन्ह) है उन के लिये रात्रि खींच लेते हैं हम जिस से दिन को तो सहसा वह अँधेरों में हो जाते हैं।
38. तथा सूर्य चला जा रहा है अपने निर्धारित स्थान कि ओर। यह प्रभुत्वशाली सर्वज्ञ का निर्धारित किया हुआ है।
39. तथा चन्द्रमा के हम ने निर्धारित कर दिये हैं गंतव्य स्थान। यहाँ तक की फिर वह हो जाता है पुरानी खजूर की सूखी शाखा के समान।
40. न तो सूर्य के लिये ही उचित है कि चन्द्रमा को पा जाये। और न रात अग्रगामी हो सकती है दिन से। सब एक मण्डल में तैर रहे हैं।

وَمِمَّا حَيَّأْنَا قَيْنَةً يَأْكُلُونَ ﴿٣٦﴾

وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِّنْ نَّجِيلٍ وَأَعْنَابٍ وَفَجْرًا
فِيهَا مِّنَ الْعَيْوُنِ ﴿٣٧﴾

لِيَأْكُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ إِذَا أَغْمَسَتِ أَيْدِيُهُمْ
أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٨﴾

سُبْحَانَ الَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ وَاجْرَاهَا مَجَارِيَ الْأَنْهَارِ
وَمَنْ أَنْفَسَهُمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

وَأَيَّةٌ لَهُمُ اللَّيْلُ سَلَخُ مِنْهُ اللَّيْلَ فَإِذَا هُمْ
مُظْلِمُونَ ﴿٤٠﴾

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ
الْعَلِيِّ ﴿٤١﴾

وَالْقَمَرَ قَدَّارُنُهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْوَةِ الْقَدِيمِ ﴿٤٢﴾

لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ
النَّهَارِ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٤٣﴾

41. तथा उन के लिये एक निशानी (लक्षण) (यह भी) है कि हम ने सवार किया उन की संतान को भरी हुई नाव में।
42. तथा हम ने पैदा किया उन के लिये उस के समान वह चिज़ जिस पर वह सवार होते हैं।
43. और यदि हम चाहें तो उन्हें जलमग्न कर दें। तो न कोई सहायक होगा उन का, और न वह निकाले (बचाये) जायेंगे।
44. परन्तु हमारी दया से तथा लाभ देने के लिये एक समय तक।
45. और^[1] जब उन से कहा जाता है कि डरो उस (यातना) से जो तुम्हारे आगे तथा तुम्हारे पीछे है ताकि तुम पर दया की जाये।
46. तथा नहीं आती उन के पास कोई निशानी उन के पालनहार की निशानियों में से परन्तु वह उस से मँह फेर लेते हैं।
47. तथा जब उन से कहा जाता है कि दान करो उस में से जो प्रदान किया है अल्लाह ने तुम को, तो कहते हैं जो काफ़िर हो गये उन से जो ईमान लाये हैं: क्या हम उसे

وَالْيَوْمِ لَهُمُ آتَا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلِكِ الْمَسْجُونِ ۝

وَحَمَلْنَا لَهُمُ مِنْ مِثْلِهِ مَا يَرْكَبُونَ ۝

وَإِنْ نَشَاءُ نُغْرِقْهُمْ فَلَاصِرٌ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُونَ ۝

إِلَّا رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ۝

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝

وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِنَا إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ اتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا الَّذِينَ آمَنُوا أَتَطْعَمُونَ لَوْ شَاءَ اللَّهُ لَطَعَمَهُ تَارَةً أَنْتُمْ مِنَ الْآفِيضِينَ ۝

1 आयत नं० 33 से यहाँ तक एकेश्वरवाद तथा परलोक के प्रमाणों, जिन्हें सभी लोग देखते तथा सुनते हैं, और जो सभी इस विश्व की व्यवस्था तथा जीवन के संसाधनों से संबंधित हैं, उन का वर्णन करने के पश्चात् अब मिश्रणवादीयों तथा काफ़िरों कि दशा और उन के अचरण का वर्णन किया जा रहा है।

खाना खिलायें जिसे यदि अल्लाह चाहे तो खिला सकता है? तुम तो खुले कुपथ में हो।

48. और वे कहते हैं कि कब यह (प्रलय) का वचन पूरा होगा यदि तुम सत्यवादी हो?

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدَانِ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾

49. वह नहीं प्रतीक्षा कर रहे हैं परन्तु एक कड़ी ध्वनि^[1] की जो उन्हें पकड़ लेगी और वह झगड़ रहे होंगे।

مَا يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ﴿٤٩﴾

50. तो न वह कोई वसियत कर सकेंगे, और न अपने परिजनों में वापिस आ सकेंगे।

فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٠﴾

51. तथा फूँका^[2] जायेगा सूर (नरसिंघा) में, तो वह सहसा समाधियों से अपने पालनहार की ओर भागते हुये चलने लगेंगे।

وَيُفْعَلُ فِي الصُّورِ قَدْ آتَاهُمْ مِنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ ذُرِّيَّتِهِمْ يَخْسِفُونَ ﴿٥١﴾

52. वह कहेंगे: हाय हमारा विनाश! किस ने हमें जगा दिया हमारी विश्रामगृह से? यह वह है जिस का वचन दिया था अत्यंत कृपाशील ने, तथा सच्च कहा था रसूलों ने।

قَالُوا أَوَلَيْسَ لَنَا مَنْ نَعْتَدُ مِنْ مَرْقَدِنَا نَحْنُ هَذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٢﴾

53. नहीं होगी वह परन्तु एक कड़ी ध्वनि। फिर सहसा वह सब के सब हमारे समक्ष उपस्थित कर दिये जायेंगे।

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٥٣﴾

1 इस से अभिप्राय प्रथम सूर है जिस में फूँकते ही अल्लाह के सिवा सब बिलय हो जायेंगे।

2 इस से अभिप्राय दूसरी बार सूर फूँकना है जिस से सभी जीवित हो कर अपनी समाधियों से निकल पड़ेंगे।

54. तो आज नहीं अत्याचार किया जायेगा किसी प्राणी पर कुछा और तुम्हें उसी का प्रतिफल (बदला) दिया जायेगा जो तुम कर रहे थे।

فَالْيَوْمَ لَا نُنْظِمُ لَكُمْ نَفْسًا شَيْئًا وَلَا نُخَوِّدُكُمْ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٤﴾

55. वास्तव में स्वर्गीय आज अपने आनन्द में लगे हुये हैं।

إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغْلٍ فَهْمُونَ ﴿٥٥﴾

56. वे तथा उन की पत्नियाँ सायों में हैं, मसन्दों पर तकिये लगाये हुये।

هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلِّ عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَكِنُونَ ﴿٥٦﴾

57. उन के लिये उस में प्रत्येक प्रकार के फल हैं तथा उन के लिये वह है जिस की वह माँग करें।

لَهُمْ فِيهَا وَكُلُّ شَيْءٍ لَهُمْ يُرِيدُونَ ﴿٥٧﴾

58. (उन को) सलाम कहा गया है अति दयावान् पालनहार की ओर से।

سَلَامٌ قَوْلًا مِنْ رَبِّ رَحِيمٍ ﴿٥٨﴾

59. तथा तुम अलग^[1] हो जाओ आज, हे अपराधियो!

وَأَمَّا تَرَاؤُا الْيَوْمَ أَنَّهُمُ الْمُؤْمِنُونَ ﴿٥٩﴾

60. हे आदम की संतान! क्या मैं ने तुम से बल दे कर नहीं^[2] कहा था कि इबादत (वंदना) न करना शैतान की? वास्तव में वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَا بَنِي آدَمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿٦٠﴾

61. तथा इबादत (वंदना) करना मेरी ही, यही सीधी डगर है।

وَأَنْ اعْبُدُونِي هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾

62. तथा वह कुपथ कर चुका है तुम में से बहुत से समुदायों को, तो क्या तुम समझते नहीं हो?

وَلَقَدْ أَصَلَّ مِنْتُمْ جِبَالًا كَثِيرًا أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ﴿٦٢﴾

63. यही नरक है जिस का वचन तुम्हें

هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٦٣﴾

1 अर्थात ईमान वालों से।

2 भाष्य के लिये देखिये: सूरह, आराफ, आयत: 172।

दिया जा रहा था।

64. आज प्रवेश कर जाओ उस में उस कुफ़ के बदले जो तुम कर रहे थे।
65. आज हम मुहर (मुद्रा) लगा देंगे उन के मुखों पर। और हम से बात करेंगे उन के हाथ, तथा साक्ष्य (गवाही) देंगे उन के पैर उन के कर्मों की जो वे कर रहे थे।^[1]
66. और यदि हम चाहते तो उन की आँखें अँधी कर देते। फिर वे दोड़ते संमार्ग की ओर, परन्तु कहाँ से देखते?
67. और यदि हम चाहते तो विकृत कर देते उन को उन के स्थान पर, तो न वह आगे जा सकते थे न पीछे फिर सकते थे।
68. तथा जिसे हम अधिक आयु देते हैं, तो उसे उत्पत्ति में प्रथम दशा^[2] की ओर फेर देते हैं। तो क्या वह समझते नहीं हैं?
69. और हम ने नहीं सिखाया नबी को काव्य^[3] और न यह उन के लिये योग्य है। यह तो मात्र एक शिक्षा तथा खुला कुर्आन है।
70. ताकि वह सचेत करें उसे जो जीवित

إِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٦٤﴾

الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيَهُمْ وَنَنصِتُهُمْ أَرْجُلَهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٦٥﴾

وَلَوْ نَشَاءُ لَمَمَسْنَا عَلَىٰ أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَنَّىٰ يُبْصِرُونَ ﴿٦٦﴾

وَلَوْ نَشَاءُ لَنَسَخْنَاهُمْ عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ﴿٦٧﴾

وَمَنْ نَعْبُدُهُ تُنْسِئُهُ فِي الْخَلْقِ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٨﴾

وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُّبِينٌ ﴿٦٩﴾

لِيُنذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٧٠﴾

- 1 यह उस समय होगा जब मिश्रणवादी शपथ लेंगे कि वह मिश्रण (शिकर्क) नहीं करते थे। देखिये: सूरह अनआम, आयत: 23।
- 2 अर्थात वह शिशु की तरह निर्बल तथा निर्बोध हो जाता है।
- 3 मक्का के मुर्तिपूजक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के संबंध में कई प्रकार की बातें कहते थे जिन में यह बात भी थी कि आप कवि हैं। अल्लाह ने इस आयत में इसी का खण्डन किया है।

हो^[1] तथा सिद्ध हो जाये यातना की बात काफ़िरों पर।

71. क्या मनुष्य ने नहीं देखा कि हम ने पैदा किये है उन के लिये उस में से जिसे बनाया है हमारे हाथों ने चौपाये। तो वह उन के स्वामी है?
72. तथा हम ने वश में कर दिया उन्हें उन के, तो उन में से कुछ उन की सवारी है। तथा उन में से कुछ को वे खाते हैं।
73. तथा उन के लिये उन में बहुत से लाभ तथा पेय हैं। तो क्या (फिर भी) वह कृतज्ञ नहीं होते?
74. और उन्होंने बना लिया अल्लाह के सिवा बहुत से पूज्य, कि संभवतः वे उन की सहायता करेंगे।
75. वह स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकेंगे। तथा वे उन की सेना हैं, (यातना) में^[2] उपस्थित।
76. अतः आप को उदासीन न करे उन की बात। वस्तुतः हम जानते हैं जो वह मन में रखते हैं तथा जो बोलते हैं।
77. और क्या नहीं देखा मनुष्य ने कि पैदा किया हम ने उसे वीर्य से? फिर भी वह खुला झगड़ालू है।
78. और उस ने वर्णन किया हमारे लिये एक उदाहरण, और अपनी उत्पत्ति

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِنْ مِثْلِ مَا أَنْعَمْنَا عَلَيْهِمْ
لَهُمْ لِبُكُورٍ ۝

وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُمُونَ ۝

وَلَهُمْ فِيهَا مَنَاقِمٌ وَمَشَارِبٌ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝

وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ ۝

لَا يَسْتَطِيعُونَ صَرْفَهُمْ وَلَهُمْ جُنُودٌ مَحْضُرُونَ ۝

فَلَا يَخْرُجُكَ قَوْلُهُمْ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُبَيِّرُونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝

أَوَلَمْ يَرِ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ إِذْ هُوَ حَصِيمٌ
مُؤْمِنٌ ۝

وَصَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَكَيْسَى خَلَقَهُ قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ

1 जीवित होने का अर्थ अन्तरात्मा का जीवित होना और सत्य को समझने के योग्य होना है।

2 अर्थात् वह अपने पूज्यों सहित नरक में झोंक दिये जायेंगे।

को भूल गया। उस ने कहा: कौन जीवित करेगा इन अस्थियों को जब कि वह जीर्ण हो चुकी होंगी?

79. आप कह दें: वही जिस ने पैदा किया है प्रथम बार। और वह प्रत्येक उत्पत्ति को भली-भाँति जानने वाला है।
80. जिस ने बना दी तुम्हारे लिये हरे वृक्ष से अग्नि, तो तुम उस से आग^[1] सुलगाते हो।
81. तथा क्या जिस ने आकाशों तथा धरती को पैदा किया है वह सामर्थ्य नहीं रखता इस पर कि पैदा करे उस के समान? क्यों नहीं? और वह रचयिता अति ज्ञाता है।
82. उस का आदेश जब वह किसी चीज़ को अस्तित्व प्रदान करना चाहे तो बस यह कह देना है: हो जा। तत्क्षण वह हो जाती है।
83. तो पवित्र है वह जिस के हाथ में प्रत्येक वस्तु का राज्य है, और तुम सब उसी की ओर फेरे^[2] जाओगे।

وَيَوْمَئِذٍ

عَلَّمْ يَحْيِيهَا الَّذِي أَنْشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ
وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ

الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا إِذَا فَاذَأْتُمُ
مِيْنَهُ تُؤْتَوْنَ

أَوَّلِينَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِعَدْرِ
عَلَىٰ أَنْ تَخْلُقَ مِثْلَهُم بَلْ وَهُوَ خَلْقُ الْعَالِمِ

إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ

فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ
نُرْجَعُونَ

1 भावार्थ यह है कि जो अल्लाह जल से हरे वृक्ष पैदा करता है फिर उसे सुखा देता है जिस से तुम आग सुलगाते हो, तो क्या वह इसी प्रकार तुम्हारे मरने गलने के पश्चात् फिर तुम्हें जीवित नहीं कर सकता?

2 प्रलय के दिन अपने कर्मों का प्रतिकार प्राप्त करने के लिये।

सूरह साफ़ात - 37



सूरह साफ़ात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 182 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((वस् साफ़ात)) से हुआ है जिस का अर्थ है: पंक्तिवद्ध फरिश्तों की शपथ! इस लिये इस का नाम सूरह साफ़ात है।
- इस में आयत 1 से 10 तक अल्लाह के अकेले पूज्य होने पर फरिश्तों की गवाही प्रस्तुत करते हुये यह बताया गया है कि शैतान, फरिश्तों की उच्च सभा तक जाने से रोक दिये गये हैं। फिर दूसरे जीवन की दशा का वर्णन करके उन के दुष्परिणाम को बताया गया है जो अल्लाह के सिवा दूसरों को पूजते हैं तथा अल्लाह के पूजारियों का उत्तम परिणाम बताया गया है।
- आयत 75 से 148 तक अनेक नबियों की चर्चा है जिन्होंने तौहीद (एकेश्वरवाद) का प्रचार करते हुये अनेक प्रकार के दुःख सहे। तथा अल्लाह ने उन्हें उन के प्रयासों का उत्तम प्रतिफल प्रदान किया।
- आयत 149 से 166 तक फरिश्तों के बारे में मुश्रिकों के गलत विचारों का खण्डन करते हुये फरिश्तों ही द्वारा यह बताया गया है कि वास्तव में वह क्या है?
- फिर सूरह की अन्तिम आयतों में अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा अल्लाह की सेना अर्थात् रसूल के अनुयायियों को अल्लाह की सहायता तथा विजय की शुभ सूचना दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है पंक्तिवद्ध(फरिश्तों) की!
2. फिर झिड़कियाँ देने वालों की!
3. फिर स्मरण करके पढ़ने वालों^[1] की!

وَالصَّفَاتِ صَفَاةً

فَالرُّجُزِ رَجْرًا

فَالثَّلَايِثِ ذِكْرًا

1 यह तीनों गुण फरिश्तों के हैं जो आकाशों में अल्लाह की इबादत के लिये

4. निश्चय तुम्हारा पूज्य एक ही है।
5. आकाशों तथा धरती का पालनहार, तथा जो कुछ उन के मध्य है, और सूर्योदय होने के स्थानों का रब।
6. हम ने अलंकृत किया है संसार (समीप) के आकाश को तारों की शोभा से।
7. तथा रक्षा करने के लिये प्रत्येक उध्दत शैतान से।
8. वह नहीं सुन सकते (जा कर) उच्च सभा तक फरिश्तों की बात, तथा मारे जाते हैं प्रत्येक दिशा से।
9. राँदने के लिये, तथा उन के लिये स्थायी यातना है।
10. परन्तु जो ले उड़े कुछ तो पीछा करती है उस का दहकती ज्वाला।^[1]
11. तो आप इन (काफिरों) से प्रश्न करें कि क्या उन को पैदा करना अधिक कठिन है या जिन^[2] को हम ने पैदा किया है? हम ने उन को ^[3]पैदा किया है लेसदार मिट्टी से।
12. बल्कि आप ने आश्चर्य किया (उन

إِنَّ إِلَهُكُمْ لَوَاحِدٌ ۝

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝

إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةِ الْكَوَكِبِ ۝

وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطَانٍ تَارِدٍ ۝

لَا يَسْمَعُونَ إِلَى الْمَلَأِ الْأَعْلَىٰ وَيُقَدِّفُونَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۝

دُورًا وَأَلَهُمْ عَذَابٌ وَأَوْسَبٌ ۝

إِلَّا مَن حَطَبَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَائِبٌ ۝

فَسَتَفْقَهُمْ أَهْمُ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ مَن خَلَقْنَا إِنَّا خَائِفُهُمْ
مِّنْ طِينٍ لَّازِبٍ ۝

بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ۝

पक्तिवद्ध रहते तथा बादलों को हाँकते और अल्लाह के स्मरण जैसे कुर्आन तथा नमाज़ पढ़ने और उस की पवित्रता का गान करने इत्यादि में लगे रहते हैं।

1 फिर यदि उस से बचा रह जाये तो आकाश की बात अपने नीचे के शैतानों तक पहुँचाता है और वह उसे काहिनों तथा ज्योतिषियों को बताते हैं। फिर वह उस में सौ झूठ मिला कर लोगों को बताते हैं। (सहीह बुखारी: 6213, सहीह मुस्लिम: 2228)

2 अर्थात् फरिश्तों तथा आकाशों को?

3 उन के पिता आदम (अलैहिस्सलाम) को।

के अस्वीकार पर) तथा वह उपहास करते हैं।

13. और जब शिक्षा दी जाये तो शिक्षा ग्रहण नहीं करते।
14. और जब देखते हैं कोई निशानी तो उपहास करने लगते हैं।
15. तथा कहते हैं कि यह तो मात्र खुला जादू है।
16. (कहते हैं कि) क्या जब हम मर जायेंगे तथा मिट्टी और हड्डियाँ हो जायेंगे, तो हम निश्चय पुनः जीवित किये जायेंगे?
17. और क्या हमारे पहले पूर्वज भी (जीवित किये जायेंगे)?
18. आप कह दें कि हाँ, तथा तुम अपमानित (भी) होगे।
19. वह तो बस एक झिड़की होगी, फिर सहसा वह देख रहे होंगे।
20. तथा कहेंगे: हाय हमारा विनाश! यह तो बदले (प्रलय) का दिन है।
21. यही निर्णय का दिन है जिसे तुम झुठला रहे थे।
22. (आदेश होगा कि) घर लाओ सब अत्याचारियों को तथा उन के साथियों को और जिस की वे इबादत (वन्दना) कर रहे थे।
23. अल्लाह के सिवा। फिर दिखा दो उन को नरक की राह।

وَاذْكُرُوا الْآيَةَ كُؤُونَ ﴿١٣﴾

وَاذْكُرُوا الْآيَةَ يَسْتَكْبِرُونَ ﴿١٤﴾

وَقَالُوا إِن هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾

عِزًّا مِمَّنَّا وَكُنَّا تَرَابًا وَعِظًا لِمَنْ إِنَّا لَبَعُوثُونَ ﴿١٦﴾

أَوَلَمْ نَكُنَّا الْأَوَّلُونَ ﴿١٧﴾

قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ دَاخِرُونَ ﴿١٨﴾

فَأَمَّا هِيَ رَجْرَجَةٌ وَاحِدَةٌ وَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ ﴿١٩﴾

وَقَالُوا يَا وَيْلَنَا هَذَا يَوْمُ الَّذِينَ ﴿٢٠﴾

هَذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢١﴾

أَحْشَرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَذَابُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ يَعْبدُونَ ﴿٢٢﴾

مِنْ دُونِ اللَّهِ فَأَهْدُوهُمْ إِلَى صِرَاطِ الْجَحِيمِ ﴿٢٣﴾

24. और उन्हें रोक^[1] लो। उन से प्रश्न किया जाये।
25. क्या हो गया है तुम्हें कि एक-दूसरे की सहायता नहीं करते?
26. बल्कि वह उस दिन सिर झुकाये खड़े होंगे।
27. और एक-दूसरे के सम्मुख हो कर परस्पर प्रश्न करेंगे:^[2]
28. कहेंगे कि तुम हमारे पास आया करते थे दारों^[3] से।
29. वह^[4] कहेंगे: बल्कि तुम स्वयं ईमान वाले न थे।
30. तथा नहीं था हमारा तुम पर कोई अधिकार,^[5] बल्कि तुम स्वयं अवैज्ञाकारी थे।
31. तो सिद्ध हो गया हम पर हमारे पालनहार का कथन कि हम (यातना) चखने वाले हैं।
32. तो हम ने तुम्हें कुपथ कर दिया। हम तो स्वयं कुपथ थे।
33. फिर वह सभी उस दिन यातना में साझी होंगे।

وَقَفُّوهُمْ إِنَّهُمْ مُسْتَوُونَ ﴿٢٤﴾

مَا لَكُمْ إِنْ تَأْتَوْنَ ﴿٢٥﴾

بَلْ هُمْ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ﴿٢٦﴾

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٧﴾

قَالُوا إِنَّا كُنْتُمْ نَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ﴿٢٨﴾

قَالُوا بَلْ كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٢٩﴾

وَمَا كُنَّا لَكُمْ عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ، بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طَٰغِينَ ﴿٣٠﴾

حَقٌّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا إِنَّكَ لَدَّابِعُونَ ﴿٣١﴾

فَأَعْوَبْنَاكُمْ، إِنَّا كُنَّا لَخَوِينِ ﴿٣٢﴾

فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٣﴾

1 नरक में झोंकने से पहले।

2 अर्थात् एक - दूसरे को धिक्कारेंगे।

3 इस से अभिप्राय यह है कि धर्म तथा सत्य के नाम से आते थे अर्थात् यह विश्वास दिलाते थे कि यही मिश्रणवाद मूल तथा सत्धर्म है।

4 इस से अभिप्राय उन के प्रमुख लोग हैं।

5 देखिये: सूरह इब्राहीम, आयत: 22।

34. हम इसी प्रकार किया करते हैं
अपराधियों के साथ।
35. यह वह है कि जब कहा जाता था उन
से कि कोई पूज्य (वंदनीय) नहीं अल्लाह
के अतिरिक्त तो वह अभिमान करते थे।
36. तथा कह रहे थे: क्या हम त्याग देने
वाले हैं अपने पूज्यों को एक उन्मत्त
कवि के कारण?
37. बल्कि वह (नबी) सच्च लाये हैं तथा
पुष्टि की है सब रसूलों की।
38. निश्चय तुम दुःखदायी यातना चखने
वाले हो।
39. तथा तुम उस का प्रतिकार (बदला)
दिये जाओगे जो तुम कर रहे थे।
40. परन्तु अल्लाह के शुद्ध भक्त।
41. यही है जिन के लिये विदित जीविका है।
42. प्रत्येक प्रकार के फल तथा वही
आदरणीय होंगे।
43. सुख के स्वर्गों में।
44. आसनों पर एक-दूसरे के सम्मुख
असीन होंगे।
45. फिराये जायेंगे उन पर प्याले प्रवाहित
पेय के।
46. श्वेत आस्वाद पीने वालों के लिये।
47. नहीं होगी उस में शारिरिक पीड़ा
और न वह उस से बहकेंगे।

إِنَّا كَذَلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ﴿٣٤﴾

إِنَّمْ كَانُوا إِذْ أُقِيلَ لَهُمُ الذَّلَالَةَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٣٥﴾

وَيَقُولُونَ إِنَّمَا كُنَّا لِرِئَاسَةِ الشَّاعِرِ الْمَجْنُونِ ﴿٣٦﴾

بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَقَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٧﴾

إِنَّكُمْ لَذَائِقُوا الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ﴿٣٨﴾

وَمَا تَجْزُونَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٩﴾

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾

أُولَئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَعْلُومٌ ﴿٤١﴾

فَوَاكِهَ وَهُمْ مُكْرَمُونَ ﴿٤٢﴾

فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٤٣﴾

عَلَى سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿٤٤﴾

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِنْ مَعِينٍ ﴿٤٥﴾

بَيضَاءَ لَبَّاءَ وَالشَّهِيدِينَ ﴿٤٦﴾

لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُذَفَّرُونَ ﴿٤٧﴾

48. तथा उन के पास आँखें झुकाये (सति) बड़ी आँखों वाली (नारियाँ) होंगी।
وَعِنْدَهُمُ نُصْرَةُ الظُّرِفِ عَيْنٌ ﴿٤٨﴾
49. वह छुपाये हुये अन्डों के मानिन्द होंगी।^[1]
كَأَكْفَنَ بَيْضٌ تَكْتُونَ ﴿٤٩﴾
50. वह एक - दूसरे से सम्मुख हो कर प्रश्न करेंगे।
فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٥٠﴾
51. तो कहेगा एक कहने वाला उन में से: मेरा एक साथी था।
قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ﴿٥١﴾
52. जो कहता था कि क्या तुम (पलय का) विश्वास करने वालों में से हो?
يَقُولُ إِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِينَ ﴿٥٢﴾
53. क्या जब हम मर जायेंगे तथा मिट्टी और अस्थियाँ हो जायेंगे तो क्या हमें (कर्माँ का) प्रतिफल दिया जायेगा।
أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ﴿٥٣﴾
54. वह कहेगा: क्या तुम झाँक कर देखने वाले हो?
قَالَ هَلْ أَنْتُمْ مُظْلِمُونَ ﴿٥٤﴾
55. फिर झाँकते ही उसे देख लेगा नरक के बीच।
فَأَظْلَمَ قَرَاهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿٥٥﴾
56. उस से कहेगा: अल्लाह की शपथ! तुम तो मेरा विनाश कर देने के समीप थे।
قَالَ تَاللَّهِ إِنْ كُنْتُ لَأَكْرَمِينَ ﴿٥٦﴾
57. और यदि मेरे पालनहार का अनुग्रह न होता तो मैं (नरक के) उपस्थितों में होता।
وَلَوْلَا رَحْمَةُ رَبِّي لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ﴿٥٧﴾
58. फिर वह कहेगा: क्या (यह सहीह नहीं है कि) हम मरने वाले नहीं हैं?
أَفَمَا نَحْنُ بِمَبْتَلِينَ ﴿٥٨﴾
59. सिवाये अपनी प्रथम मौत के और न हम को यातना दी जायेगी।
إِلَّا مَوْتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿٥٩﴾

1 अर्थात् जिस प्रकार पक्षी के पँखों के नीचे छुपे हुये अन्डे सुरक्षित होते हैं वैसे ही वह नारियाँ सुरक्षित, सुन्दर रंग और रूप की होंगी।

60. वास्तव में यही बड़ी सफलता है।
61. इसी (जैसी सफलता) के लिये चाहिये कि कर्म करें कर्म करने वाले।
62. क्या यह आतिथ्य उत्तम है अथवा थोहड़ का वृक्ष?
63. हम ने उसे अत्याचारियों के लिये एक परीक्षा बनाया है।
64. वह एक वृक्ष है जो नरक की जड़ (तह) से निकलता है।
65. उस के गुच्छे शैतानों के सिरों के समान हैं।
66. तो वह (नरकवासी) खाने वाले हैं उस से। फिर भरने वाले हैं उस से अपने पेट।
67. फिर उन के लिये उस के ऊपर से खौलता गरम पानी है।
68. फिर उन्हें प्रत्यागत होना है नरक की ओर।
69. वास्तव में उन्होंने पाया अपने पूर्वजों को कुपथ।
70. फिर वह उन्हीं के पदचिन्हों पर^[1] दौड़े चले जा रहे हैं।
71. और कुपथ हो चुके हैं इन से पूर्व अगले लोगों में से अधिकतर।
72. तथा हम भेज चुके हैं उन में सचेत

إِنَّ هَذَا لَهُمُ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

لِيُمَثِّلَ هَذَا أَقْلِعَعْبِلَ الْعَمَلُونَ ۝

أَذَلِكَ خَيْرٌ تُزَلُّوا مِنْ شَجَرَةِ الرَّقُومِ ۝

إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِلظَّالِمِينَ ۝

إِنهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ۝

كُلَّمَا كَانَتْ رُوسُ الشَّيْطَانِ ۝

فَأَنَّهُمْ لَأَكْثُونَ مِنْهَا فَمَا لَئُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ۝

ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوَابًا مِّنْ حَمِيمٍ ۝

ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَإِلَى الْجَحِيمِ ۝

إِنَّهُمْ أَقْوَامٌ بَاءَ مَا هُمْ ضَالِّينَ ۝

فَهُمْ عَلَىٰ آثَرِهِمْ يُهْرَعُونَ ۝

وَلَقَدْ صَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأُولَئِينَ ۝

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا قَوْمَهُمُ مِّنْ ذُرِّيَّتِنَ ۝

1 इस में नरक में जाने का जो सब से बड़ा कारण बताया गया है वह है नबी को न मानना, और अपने पूर्वजों के पंथ पर ही चलते रहना।

(सावधान) करने वाले।

73. तो देखो कि कैसा रहा सावधान किये हुये लोगों का परिणाम?^[1]

فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُتَدَرِّينَ ﴿۱﴾

74. हमारे शुद्ध भक्तों के सिवा।

الْإِعْمَادَ لِلَّهِ الْمُخْلِصِينَ ﴿۲﴾

75. तथा हमें पुकारा नूह ने तो हम क्या ही अच्छे प्रार्थना स्वीकार करने वाले हैं।

وَلَقَدْ نَادَانَا نُوحٌ فَلَنعَمِ الْمُجِيبُونَ ﴿۳﴾

76. और हम ने बचा लिया उस को और उस के परिजनों को घोर आपदा से।

وَجَبَبْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ﴿۴﴾

77. तथा कर दिया हम ने उस की संतति को शेष^[2] रह जाने वालों में।

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ ﴿۵﴾

78. तथा शेष रखा हम ने उस की सराहना तथा प्रशंसा को पिछलों में।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿۶﴾

79. सलाम (सुरक्षा)^[3] है नूह के लिये समस्त विश्वासियों में।

سَلَامٌ عَلَى نُوحٍ فِي الْعَالَمِينَ ﴿۷﴾

80. इसी प्रकार हम प्रतिफल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿۸﴾

81. वास्तव में वह हमारे ईमान वाले भक्तों में से था।

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿۹﴾

82. फिर हम ने जलमग्न कर दिया दूसरों को।

ثُمَّ أَخْرَجْنَا الْآخَرِينَ ﴿۱۰﴾

83. और उस के अनुयायियों में निश्चय इब्राहीम है।

وَأَنَّ مِنْ شَيْعَتِهِ لِإِبْرَاهِيمَ ﴿۱۱﴾

84. जब लाया वह अपने पालनहार के पास स्वच्छ दिल।

إِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿۱۲﴾

1 अतः उन के दुष्परिणाम से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

2 उस की जाति के जलमग्न हो जाने के पश्चात्।

3 अर्थात् उस की बुरी चर्चा से।

85. जब कहा उस ने अपने पिता तथा अपनी जाती से: तुम किस की इबादत (वंदना) कर रहे हो?
86. क्या अपने बनाये पूज्यों को अल्लाह के सिवा चाहते हो?
87. तो तुम्हारा क्या विचार है विश्व के पालनहार के विषय में?
88. फिर उस ने देखा तारों की^[1] ओर।
89. तथा उन से कहा: मैं रोगी हूँ।
90. तो उसे छोड़ कर चले गये।
91. फिर वह जा पहुँचा उन के उपास्यों (पूज्यों) की ओर। कहा कि (वह प्रसाद) क्यों नहीं खाते?
92. तुम्हें क्या हुआ है कि बोलते नहीं?
93. फिर पिल पड़ा उन पर मारते हुये दायें हाथ से।
94. तो वह आये उस की ओर दौड़ते हुये।
95. इब्राहीम ने कहा: क्या तुम इबादत (वंदना) करते हो उस की जिसे पत्थरों से तराशते हो?
96. जब कि अल्लाह ने पैदा किया है तुम को तथा जो तुम करते हो।
97. उन्होंने कहा: इस के लिये एक (अग्निशाला का) निर्माण करो। और उसे झोंक दो दहकती अग्नि में।
98. तो उन्होंने उस के साथ षड्यंत्र रचा,

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا عَبَدُونَ ﴿١﴾

أَفَبِكُمْ أَلِهَةٌ دُونَ اللَّهِ تُرِيدُونَ ﴿٢﴾

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٣﴾

فَنظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ﴿٤﴾

فَقَالَ إِنِّي سَعِيفٌ ﴿٥﴾

فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ﴿٦﴾

فَوَاعَدُوا إِلَى الْهَيْمِ فَقَالَ آلا تَأْكُلُونَ ﴿٧﴾

مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ ﴿٨﴾

فَوَاعَرَ عَلَيْهِمْ ضَمْرًا بِالْيَمِينِ ﴿٩﴾

فَأَمَّا بِلِّئَالِيهِ يَرْفُونَ ﴿١٠﴾

قَالَ أَعْبُدُونَ مَا تَحْمِلُونَ ﴿١١﴾

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٢﴾

قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُيُوتًا فَأَلْفُوهَا فِي الْجَحِيمِ ﴿١٣﴾

فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ﴿١٤﴾

1 यह सोचते हुये कि इन के उत्सव में न जाने के लिये क्या बहाना करूँ।

तो हम ने उन्हीं को नीचा कर दिया।

99. तथा उस ने कहा: मैं जाने वाला हूँ अपने पालन हार की^[1] ओर। वह मुझे सुपथ दर्शायेगा।

100. हे मेरे पालनहार! प्रदान कर मुझे एक सदाचारी (पूनीत) पुत्र।

101. तो हम ने शुभ सूचना दी उसे एक सहनशील पुत्र की।

102. फिर जब वह पहुँचा उस के साथ चलने-फिरने की आयु को, तो इबराहीम ने कहा: हे मेरे प्रिय पुत्र! मैं देख रहा हूँ स्वपन में कि मैं तुझे बध कर रहा हूँ। अब तू बता कि तेरा क्या विचार है? उस ने कहा: हे पिता! पालन करें जिस का अदेश आप को दिया जा रहा है। आप पायेंगे मुझे सहनशीलों में से यदि अल्लाह की इच्छा हुई।

103. अन्ततः जब दोनों ने स्वयं को अर्पित कर दिया, और उस (पिता) ने उसे गिरा दिया माथे के बल।

104. तब हम ने उसे आवाज़ दी कि हे इबराहीम!

105. तू ने सच्च कर दिया अपना स्वप्न। इसी प्रकार हम प्रति फल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।

106. वास्तव में यह खुली परीक्षा थी।

107. और हम ने उस के मुक्ति- प्रतिदान

وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿۹۹﴾

رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿۱۰۰﴾

فَبَشِّرْنَاهُ بِعِلْمٍ حَلِيمٍ ﴿۱۰۱﴾

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَبْنَؤُا إِنِّي أَرَىٰ فِي
السَّمَاءِ آتِيًا ذَرِيئًا فَأَنْظُرُ مَاذَا بَرَأْتِ قَالَ يَا بَتِ
أَعْمَلُ مَا تَأْمُرُ سَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ
الصَّالِحِينَ ﴿۱۰۲﴾

فَلَمَّا اسْتَلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ﴿۱۰۳﴾

وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَا إِبْرَاهِيمُ ﴿۱۰۴﴾

فَدَّصَدَّقْتَ الرَّؤْيَا إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي
الْمُحْسِنِينَ ﴿۱۰۵﴾

إِنَّ هَذَا هُوَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ﴿۱۰۶﴾

وَوَدَّيْنَاهُ يَدْبُجِ عَظِيمٍ ﴿۱۰۷﴾

1 अर्थात ऐसे स्थान की ओर जहाँ अपने पालनहार की इबादत कर सकूँ।

- के रूप में प्रदान कर दी एक महान्^[1] बलि।
108. तथा हम ने शेष रखी उस की शुभ चर्चा पिछलों में
109. सलाम है इब्राहीम पर।
110. इसी प्रकार हम प्रतिफल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।
111. निश्चय ही वह हमारे ईमान वाले भक्तों में से था।
112. तथा हम ने उसे शुभसूचना दी इसहाक नबी की, जो सदा-चारियों में^[2] होगा।
113. तथा हम ने बरकत (विभूति) अवतरित की उस पर तथा इसहाक पर। और उन दोनों की संतति में से कोई सदाचारी है और कोई अपने लिये खुला अत्याचारी।
114. तथा हम ने उपकार किया मूसा और हारून पर।
115. तथा मुक्त किया दोनों को और उन

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝

سَلَامًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۝

كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَتَبَرَكْنَا بِمَا يَشْفِقُ بَيْنَنَا مِنَ الظَّالِمِينَ ۝

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلَىٰ اسْحَقَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا الْحَسَنُ
وَعَظَاهُمْ لِنَفْسِهِمْ مُبِينٌ ۝

وَلَقَدْ مَتَّعْنَا عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝

وَجَعَلْنَاهُمَا قَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۝

- 1 यह महान् बलि एक मेंढा था। जिसे जिब्रील (अलैहिस्सलाम) द्वारा स्वर्ग से भेजा गया। जो आप के प्रिय पुत्र इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के स्थान पर बलि दिया गया। फिर इस विधि को प्रलय तक के लिये अल्लाह के समिप्य का एक साधन तथा ईदुल अज़्हा (बकरेईद) का प्रियवर कर्म बना दिया गया। जिसे संसार के सभी मुसलमान ईदुल अज़्हा में करते हैं।
- 2 इस आयत से विद्वित होता है कि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को इस बलि के पश्चात् दूसरे पुत्र आदरणीय इसहाक की शुभ सूचना दी गई। इस से ज्ञान हुआ कि बलि इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की दी गई थी। और दोनों की आयु में लग-भग चौदह वर्ष का अन्तर है।

- कि जाति को घोर व्यग्रता से
116. तथा हम ने सहायता की उन की तो वही प्रभावशाली हो गये
117. तथा हम ने प्रदान की दोनों को प्रकाशमय पुस्तक (तौरात)।
118. और हम ने दर्शाई दोनों को सीधी डगर।
119. तथा शेष रखी दोनों की शुभ चर्चा पिछलों में।
120. सलाम है मूसा तथा हारून पर।
121. हम इसी प्रकार प्रतिफल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।
122. वस्तुतः वह दोनों हमारे ईमान वाले भक्तों में थे।
123. तथा निश्चय इल्यास नबियों में से था।
124. जब कहा उस ने अपनी जाति से: क्या तुम डरते नहीं हो?
125. क्या तुम बअ्ल (नामक मुर्ति) को पुकारते हो? तथा त्याग रहे हो सर्वोत्तम उत्पत्ति कर्ता को?
126. अल्लाह ही तुम्हारा पालनहार है, तथा तुम्हारे प्रथम पूर्वजों का पालनहार है।
127. अन्ततः उन्होंने झुठला दिया उस को। तो निश्चय वही (नरक में) उपस्थित होंगे।
- وَوَصَّوْنَهُمْ كَمَا نُوَاهِمُ الْغَالِبِينَ ﴿١١٦﴾
- وَأَنزَلْنَا لَهُمَا الْكِتَابَ الْمُبِينَ ﴿١١٧﴾
- وَهَدَيْنَاهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿١١٨﴾
- وَوَرَكْنَا نَاعِلِهِمَا فِي الْآخِرِينَ ﴿١١٩﴾
- سَلَامٌ عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿١٢٠﴾
- إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢١﴾
- إِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٢٢﴾
- وَإِنَّ إِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾
- إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَالَأْتَقُونَ ﴿١٢٤﴾
- أَتَدْعُونَ بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ ﴿١٢٥﴾
- اللَّهُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأُولِينَ ﴿١٢٦﴾
- فَكَذَّبُوهُ وَانَّهُمْ كَالْحُضُرُوتِ ﴿١٢٧﴾

128. किन्तु अल्लाह के शुद्ध भक्त।
 129. तथा शेष रखी हम ने उसकी शुभ चर्चा पिछलों में।
 130. सलाम है इल्यासीन^[1] पर।
 131. वास्तव में हम इसी प्रकार प्रतिफल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।
 132. वस्तुतः वह हमारे ईमान वाले भक्तों में से था।
 133. तथा निश्चय लूत नबियों में से था।
 134. जब हम ने मुक्त किया उस को तथा उस के सब परिजनों को।
 135. एक बुढ़िया^[2] के सिवा, जो पीछे रह जाने वालों में थी।
 136. फिर हम ने अन्यों को तहस नहस कर दिया।
 137. तथा तुम^[3] गुज़रते हो उन (की निर्जन बस्तियों) पर प्रातः के समय।
 138. तथा रात्रि में। तो क्या तुम समझते नहीं हो?
 139. तथा निश्चय यूनस नबियों में से था।

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٢٨﴾

وَتَرَكْنَا آخِرِينَ فِي الْآخِرِينَ ﴿١٢٩﴾

سَلَامٌ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ﴿١٣٠﴾

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣١﴾

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾

وَإِنَّ لُوطًا لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٣﴾

إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٣٤﴾

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ﴿١٣٥﴾

ثُمَّ دَمَرْنَا الْآخَرِينَ ﴿١٣٦﴾

وَالَكُمْ لَتَنزُرُونَ عَلَيْهِمْ مُّصِيبَاتٍ ﴿١٣٧﴾

وَبِأَيِّ لُغْلُلٍ أَقْلًا تَعْمَلُونَ ﴿١٣٨﴾

وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٩﴾

1 इल्यासीन: इल्यास ही का एक उच्चारण है। उन्हें अन्य धर्म ग्रन्थों में इलया भी कहा गया है।

2 यह लूत (अलैहिस्सलाम) की काफ़िर पत्नी थी।

3 मक्का वासियों को संबोधित किया गया है।

140. जब वह भाग^[1] गया भरी नाव की ओर।
141. फिर नाम निकाला गया तो वह हो गया फेंके हुआओं में से।
142. तो निगल लिया उसे मछली ने, और वह निन्दित था।
143. तो यदि न होता अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करने वालों में।
144. तो वह रह जाता उस के उदर में उस दिन तक जब सब पुनः जीवित किये^[2] जायेंगे।
145. तो हम ने फेंक दिया उसे खुले मैदान में और वह रोगी^[3] था।
146. और उगा दिया उस^[4] पर लताओं का एक वृक्ष।
147. तथा हम ने उसे रसूल बना कर भेजा एक लाख बल्कि अधिक की ओर।
148. तो वह ईमान लाये। फिर हम ने उन्हें सुख - सुविधा प्रदान की एक समय^[5] तक।

إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلِّكَ الشَّحُونِ ۝

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ۝

فَالْتَمَتَهُ الْحَوْتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ۝

فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ۝

لَلْبَيْتِ فِي بَطْنِهِ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝

فَبَدَّدْنَا بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ۝

وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّطِينٍ ۝

وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَى مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ۝

فَأَمَّاؤًا فَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ۝

1 अल्लाह की अनुमति के बिना अपने नगर से नगर वासियों को यातना के आने की सूचना देकर निकल गये। और नाव पर सवार हो गये। नाव सागर की लहरों में घिर गई। इसलिये बोज़ कम करने के लिये नाम निकाला गया। तो यूनस (अलैहिस्सलाम) का नाम निकला और उन्हें समुद्र में फेंक दिया गया।

2 अर्थात् प्रलय के दिन तक। (देखिये: सूरह अम्बिया, आयत: 87)

3 अर्थात् निर्बल नवजात शिशु के समान।

4 रक्षा के लिये।

5 देखिये: सूरह यूनस।

149. तो (हे नबी!) आप उन से प्रश्न करें कि क्या आप के पालनहार के लिये तो पुत्रियाँ हों और उन के लिये पुत्र?
150. अथवा क्या हम ने पैदा किया है फ़रिश्तों को नारियाँ। और वह उस समय उपस्थित^[1] थे?
151. सावधान! वास्तव में वह अपने मन से बना कर यह बात कह रहे हैं।
152. कि अल्लाह ने संतान बनाई है। और निश्चय वह मिथ्या भाषी हैं।
153. क्या अल्लाह ने प्राथमिकता दी है पुत्रियों को पुत्रों पर?
154. तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा निर्णय दे रहे हो?
155. तो क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?
156. अथवा तुम्हारे पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण है?
157. तो अपनी पुस्तक लाओ यदि तुम सत्यवादी हो?
158. और उन्होंने बना दिया अल्लाह तथा जिन्नों के मध्य वंश-संबंध। जब कि जिन्न स्वयं जानते हैं कि वह अल्लाह के समक्ष निश्चय उपस्थित किये^[2] जायेंगे।

فَأَسْتَفْتِيهِمَ الرِّبَّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبُتُونُ ﴿١٤٩﴾

أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنَاثًا وَهُمْ شَاهِدُونَ ﴿١٥٠﴾

أَلَا لَهُمْ مِّنْ أَوْلَادٍ لِّمُؤْمِنِينَ ﴿١٥١﴾

وَلَدَ اللَّهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٥٢﴾

أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ ﴿١٥٣﴾

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿١٥٤﴾

أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٥﴾

أَمْ لَكُمْ سُلْطَانٌ مُّبِينٌ ﴿١٥٦﴾

فَأْتُوا إِلَيْنَا بِكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٥٧﴾

وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجَنَّةِ نَسْبًا وَلَقَدْ عَلِمْتِ
الْجَنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٥٨﴾

1 इस में मक्का के मिश्रणवादियों का खण्डन किया जा रहा है जो फ़रिश्तों को देवियाँ तथा अल्लाह की पुत्रियाँ कहते थे। जब कि वह स्वयं पुत्रियों के जन्म को अप्रिय मानते थे।

2 अर्थात् यातना के लिये। तो यदि वे उस के संबन्धी होते तो उन्हें यातना क्यों देता?

159. अल्लाह पवित्र है उन गुणों से जिस का वह वर्णन कर रहे हैं।
سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُصِفُوْنَ ۝
160. परन्तु अल्लाह के शुद्ध भक्ता^[1]
اِلٰعِبَادَ اللّٰهِ الْمُحْصِيْنَ ۝
161. तो निश्चय तुम तथा तुम्हारे पूज्य
فَاَنْتُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ۝
162. तुम सब किसी एक को भी कुपथ
مَا اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ۝
163. उस के सिवा जो नरक में झोंका
اِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ ۝
164. और नहीं है हम (फ़रिश्तों) में से
وَمَا مِثْلًا اِلٰلٰهَةً مَّقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ۝
165. तथा हम ही (आज्ञापालन के लिये)
وَاِنَّا لَنَحْنُ الصّٰمِعُوْنَ ۝
166. और हम ही तस्बीह (पवित्रता गान)
وَاِنَّا لَنَحْنُ السّٰبِقُوْنَ ۝
167. तथा वह (मुश्रिक) तो कहा करते
وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ۝
168. यदि हमारे पास कोई स्मृति
لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۝
- (पुस्तक) होती जो पहले लोगों में
आई...
169. तो हम अवश्य अल्लाह के शुद्ध
لَكِنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُحْصِيْنَ ۝
- भक्तों में से हो जाते।
170. (फिर जब आ गयी) तो उन्होंने
فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝
- कुर्आन के साथ कुफ़र कर दिया अतः
शीघ्र ही उन्हें ज्ञान हो जायेगा।
171. और पहले ही हमारा वचन हो चुका
وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ۝

1 वह अल्लाह को ऐसे दुर्गुणों से युक्त नहीं करते।

- है अपने भेजे हुये भक्तों के लिये।
172. कि निश्चय उन्हीं की सहायता की जायेगी।
173. तथा वास्तव में हमारी सेना ही प्रभावशाली (विजयी) होने वाली है।
174. तो आप मुँह फेर लें उन से कुछ समय तक।
175. तथा उन्हें देखते रहें। वह भी शीघ्र ही देख लेंगे।
176. तो क्या वह हमारी यातना की शीघ्र माँग कर रहे हैं।
177. तो जब वह उतर आयेगी उन के मैदानों में तो बुरा हो जायेगा सावधान किये हुआ का सवेरा।
178. और आप मुँह फेर लें उन से कुछ समय तक।
179. तथा देखते रहें, अन्ततः वह (भी) देख लेंगे।
180. पबित्र है आप का पालनहार गौरव का स्वामी उस बात से जो वह बना रहे हैं।
181. तथा सलाम है रसूलों पर।
182. तथा सभी प्रशंसा अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये है।
- إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُورُونَ ﴿١٧٢﴾
- وَأَنَّ جُنُودَنَا الْعُلْيَاءُ ﴿١٧٣﴾
- فَقَوْلَ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٤﴾
- وَأَبْصُرُهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿١٧٥﴾
- أَفِعْدَا إِنِّي آتٍ مَّتَّعِجِلُونَ ﴿١٧٦﴾
- وَإِذَا نَزَلَ بِسَاحِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ ﴿١٧٧﴾
- وَقَوْلَ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٨﴾
- وَأَبْصُرُهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿١٧٩﴾
- سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٨٠﴾
- وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ﴿١٨١﴾
- وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٨٢﴾

सूरह साद - 38



सूरह साद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 88 आयतें हैं।

- इस में पहले अच्छर (साद) आया है जिस के कारण इस का नाम ((सूरह साद)) है।
- इस की आरंभिक आयतों में कुर्आन के शिक्षाप्रद पुस्तक होने की चर्चा करते हुये यह चेतावनी दी गई है कि जो इसे नहीं मानेंगे वह अपने आप को बुरे परिणाम तक पहुँचायेंगे।
- आयत 12 से 16 तक उन जातियों का बुरा अन्त बताया गया है जिन्होंने रसूलों को झुठलाया। फिर आयत 17 से 24 तक नबियों के, अल्लाह की ओर ध्यानमग्न होने की चर्चा की गई है। फिर अल्लाह की आज्ञा का पालन करने और न करने दोनों का परलोक में अलग-अलग परिणाम बताया गया है।
- आयत 65 से 85 तक में बताया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सावधान करने के लिये आये हैं। और आप के विरोध करने का वही फल होगा जो इब्लीस के अभिमान का हुआ।
- अन्तिम आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा कुर्आन के सत्य होने तथा कुर्आन की बताई हुयी बातों के अवश्य पूरी होने की ओर संकेत किये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सादा शपथ है शिक्षा प्रद कुर्आन की!
2. बल्कि जो काफिर हो गये वह एक गर्व तथा विरोध में ग्रस्त है।
3. हम ने विनाश किया है इन से पूर्व बहुत से समुदायों का। तो वह पुकारने लगे और नहीं होता वह बचने का समय।

ص وَالْقُرْآنِ ذِي الذِّكْرِ

بِلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عُرْفٍ وَشَقَاتٍ

كَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قُرُونٍ فَتَادُوا ذِوَالِ
حِينَ مَنَاصٍ

4. तथा उन्हें आश्चर्य हुआ कि आ गया उन के पास उन्हीं में से एक सचेत करने^[1] वाला! और कह दिया काफिरों ने कि यह तो बड़ा झूठा जादूगर है।

وَعَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنذِرٌ مِنْهُمْ وَقَالَ الْكَاذِبُونَ
هَذَا صِرَاطٌ كَذَّابٌ ۝

5. क्या उस ने बना दिया है सब पूज्यों को एक पूज्य? यह तो बड़े आश्चर्य का विषय है।

اجْعَلِ الْاِلٰهَةَ الْهٰٓءَا وَاِحْنًا ۗ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عَجَابٌ ۝

6. तथा चल दिये उन के प्रमुख (यह) कहते हुये कि चलो दृढ़ रहो अपने पूज्यों पर। इस बात का कुछ और ही लक्ष्य^[2] है।

وَاطَّلَقَ الْمَلَائِكَةُ اَنْ اَمْشُوا وَاَصْبِرُوا عَلٰى الْهَيْكَلِ ۗ
اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ يُرَادُ ۝

7. हम ने नहीं सुनी यह बात प्राचीन धर्मों में, यह तो बस मन- घड़त बात है।

مَا سَمِعْتُمْ اِهْدَانِي الْاٰخِرَةَ ۗ اِنَّ هٰذَا اِلَّا
اٰخِطَاوٌ ۝

8. क्या उसी पर उतारी गई है यह शिक्षा (कुर्आन) हमारे बीच में से? बल्कि वह संदेह में है मेरी शिक्षा से। बल्कि उन्होंने अभी यातना नहीं चखी है।

ءَا نَزَّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ بَيْنِناۤ اَنْ اٰمِلَ فِيْ شَيْءٍ مِّنْ
ذِكْرِيْۗ بَلْ اِنَّمَا تَكُوْنُوْنَ اَعْدَابٌ ۝

9. अथवा उन के पास है आप के अत्यंत प्रभुत्वशाली प्रदाता पालनहार की दया के कोष^[3]।

اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَاۤئِرٌ رَّحْمَةً رَبِّكَ الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ ۝

10. अथवा उन्हीं का है राज्य आकाशों तथा धरती का। और जो कुछ उन दोनों के मध्य है? तो उन्हें

اَمْ لَهُمْ مَّاكَ التَّمْرٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَاۗ
فَلْيَرْتَدُوْا اِنِ الْاَسْبَابُ ۝

1 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

2 अर्थात् एकेश्वरवाद की यह बात सत्य नहीं है और ऐसी बात अपने किसी स्वार्थ के लिये की जा रही है।

3 कि वह जिसे चाहें नबी बनायें?

चाहिये कि चढ़ जायें (आकाशों में)
रस्सियाँ तान^[1] कर।

11. यह एक तुच्छ सेना है यहाँ पराजित
सेनाओं^[2] में से।

12. झुठलाया इन से पहले नूह तथा
आद और शक्तिवान फिरऔन की
जाति ने।

13. तथा समूद और लूत की जाति एवं
बन के वासियों^[3] ने। यही सेनायें हैं।

14. इन सभी ने झुठलाया रसूलों को, तो
मेरी यातना सिद्ध हो गई।

15. और यह नहीं प्रतीक्षा कर रहे हैं
परन्तु एक कर्कश ध्वनि की जिस के
लिये कुछ भी देर नहीं होगी।

16. तथा उन्होंने कहा कि हे हमारे
पालनहार! शीघ्र प्रदान कर दे हमारे
लिये हमारी (यातना का) भाग
हिसाब के दिन से पहले!^[4]

17. आप सहन करें उस पर जो वे कह
रहे हैं। तथा याद करें हमारे भक्त
दावूद को जो अत्यंत शक्तिशाली था
निश्चय वह ध्यान मग्न था।

جُنْدًا هَٰذَا لِكَ مَهْرُومٍ مِّنَ الْأَحْزَابِ ۝

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَارِ ۝

وَشُعُوبٌ وَقَوْمٌ لُّوطٍ وَأَصْحَابُ لَيْكَةِ أُولَٰئِكَ
الْأَحْزَابُ ۝

إِنَّ كُلَّ الْإِلَّاكَةِ مِنَ الرَّسُلِ فَحَقَّ عِقَابُ ۝

وَمَا يَنْظُرُ هُمُ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً مَّا لَهَا
مِنَ قَوَاتٍ ۝

وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّلْ لَنَا قِطْنَا قَبْلَ يَوْمِ
الْحِسَابِ ۝

إِصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَادْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُدَ
ذَا الْأَيْدِ إِثْمَةً أَوَّابٌ ۝

1 और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर प्रकाशना के अवतरण को
रोक दें।

2 अर्थात् इन मक्का वासियों के पराजित होने में देर नहीं होगी।

3 इस से अभिप्राय शुऐब (अलैहिस्सलाम) की जाति है। (देखिये: सूरह, शुअरा
आयत: 176)

4 अर्थात् वह उपहास स्वरूप कहते हैं कि प्रलय से पहले ही संसार में हमें यातना
मिल जाये। अर्थ यह है कि हमें कोई यातना नहीं दी जायेगी।

18. हम ने वश्वती कर दिया था पर्वतों को जो उसके साथ पवित्रता गान करते थे संध्या तथा प्रातः।
19. तथा पक्षियों को एकत्रित किये हुये, प्रत्येक उस के आधीन ध्यान मगन रहते थे।
20. और हम ने दृढ़ किया उस के राज्य को और हम ने प्रदान की उसे नबूवत तथा निर्णय शक्ति।
21. तथा क्या आया आप के पास दो पक्षों का समाचार जब वह दीवार फांद कर मेहराब (वंदना स्थल) में आ गये?
22. जब उन्होंने प्रवेश किया दावूद पर तो वह घबरा गया उन से। उन्होंने कहा: डरिये नहीं। हम दो पक्ष हैं अत्याचार किया है हम में से एक ने दूसरे पर। तो आप निर्णय कर दें हमारे बीच सत्य (न्याय) के साथ। तथा अन्याय न करें तथा हमें दर्शा दें सीधी राह।
23. यह मेरा भाई है उस के पास निन्दावे भेड़ हैं। और मेरे एक भेड़ है। तो यह कहता है कि वह (भी) मुझे दे दो। और यह प्रभावशाली हो गया मुझ पर बात करने में।
24. दावूद ने कहा: उस ने तुम पर अवश्य अत्याचार किया तुम्हारी भेड़ को (मिलाने की) माँग कर के अपनी भेड़ों में। तथा बहुत से साझी एक दूसरे पर अत्याचार करते हैं उन के सिवा जो

إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَبْقَرِيِّ
وَالْإِشْرَاقِ ۝

وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً كُلٌّ لَّآءَابٍ ۝

وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَأَيَّدْنَا الْحِكْمَةَ وَقَضَلْنَا الْخِطَابِ ۝

وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَصْمِ إِذْ تَسُوَّرُوا الْعِرَابِ ۝

إِذْ دَخَلُوا عَلَى دَاوُدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوا لَا تَخَفْ
خَصْمِي بَعْضُنَا عَلَى بَعْضٍ فَأَحْكُم بَيْنَنَا
بِالْحَقِّ وَلَا تَشْطِطْ وَأَهْرَبْنَا إِلَى سَوَاءِ الصُّرَاوِ ۝

إِنَّ هَذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْجَةً وَلِيَ نَعْجَةٌ
وَاحِدَةٌ فَقَالَ الْكَلْبَاءُ لِيُعْنِي فِي الْخِطَابِ ۝

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلَى نِعَاجِهِ وَإِنَّ
كَثِيرًا مِنَ الْخُلَطَاءِ لِيَمْنَعِي بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ إِلَّا
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ نَّالَهُمْ

ईमान लाये तथा सदाचार किये। और बहुत थोड़े हैं ऐसे लोग। और दावूद ने भीषण लिया की हम ने उस की परीक्षा ली है तो सहसा उस ने क्षमायाचना कर ली। और गिर गया सज्दे में तथा ध्यान मग्न हो गया।

وَلَقَدْ دَاوُدَ إِذْ أَنَا فَتَنَّا فَاسْتَغْفِرَ رَبَّهُ وَحَمَّرْنَا كَعَابًا
وَأَنَابَ ۝

25. तो हम ने क्षमा कर दिया उस के लिये वही। तथा उस के लिये हमारे पास निश्चय सामिप्य है तथा अच्छा स्थान।

فَغَفَرْنَا لَهُ ذَلِكَ وَإِن لَّهُ عِنْدَنَا لِرُؤْفَىٰ وَحُسْنِ
مَّآبٍ ۝

26. हे दावूद! हम ने तुझे राज्य दिया है धरती में। अतः निर्णय कर लोगों के बीच सत्य (न्याय) के साथ तथा अनुसरण न कर आकांक्षा का। अन्यथा वह कुपथ कर देगी तुझे अल्लाह की राह से। निःसंदेह जो कुपथ हो जायेंगे अल्लाह की राह ^[1]से तो उन्हीं के लिये घोर यातना है, इस कारण कि वह भूल गये हिसाब का दिन।

يَا دَاوُدُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُم بَيْنَ
النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ ۗ إِنَّ الَّذِينَ يَصِلُونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ يَوْمَ الْحِسَابِ ۝

27. तथा नहीं पैदा किया है हम ने आकाश और धरती को तथा जो कुछ उन के बीच है व्यर्थ। यह तो उन का विचार है जो काफिर हो गये। तो विनाश है उन के लिये जो काफिर हो गये अग्नि से।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَابَيْنَهُمَا بَاطِلًا
ذَلِكَ ظَنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا
مِنَ النَّارِ ۝

28. क्या हम कर देंगे उन्हें जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन के समान जो उपद्रवी हैं धरती में? या कर देंगे आज्ञाकारियों को उल्लंघनकारियों के समान? ^[2]

أَمْ جَعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَالْمُفْسِدِينَ
فِي الْأَرْضِ أَمْ جَعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ ۝

1 अल्लाह की राह से अभिप्राय उस का धर्म विधान है।

2 यह प्रश्न नकारात्मक है और अर्थ यह कि दोनों का परिणाम समान नहीं होगा।

29. यह (कुर्आन) एक शुभ पुस्तक है। जिसे हम ने अवतरित किया है आप की ओर, ताकि लोग विचार करें उस की आयतों पर। और ताकि शिक्षा ग्रहण करें मतिमान।
30. तथा हम ने प्रदान किया दावूद को सुलैमान (नामक पुत्र)। वह अति ध्यान मग्न था।
31. जब प्रस्तुत किये गये उस के समक्ष संध्या के समय सधे हुये वेग गामी घोड़े।
32. तो कहा: मैं ने प्राथमिकता दी इन घोड़ों के प्रेम को अपने पालनहार के स्मरण पर। यहाँ तक कि वह ओझल हो गये।
33. उन्हें वापिस लाओ मेरे पास। फिर हाथ फेरने लगे उन की पिंडलियों तथा गर्दनों पर।
34. और हम ने परीक्षा^[1] ली सुलैमान कि तथा डाल दिया उस के सिंहासन पर एक धड़। फिर वह ध्यान मग्न हो गया।
35. उस ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! मुझे क्षमा कर दे। तथा मुझे प्रदान कर ऐसा राज्य जो उचित

كُنْتُ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ لِيَدَّبَّرُوا آيَاتِهِ
وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٣٠﴾

وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ سُلَيْمَانَ نِعَمَ الْعَبْدِ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿٣١﴾

إِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصُّفُنَاتُ الْجِيَادِ ﴿٣٢﴾

فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْلِ عَن ذِكْرِ رَبِّي حَتَّى
تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿٣٣﴾

رُدُّوهُمَا عَلَيَّ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ وَالْأَعْيُنِ ﴿٣٤﴾

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَأَلْقَيْنَا عَلَى كُرْسِيِّهِ جَسَدًا ثُمَّ
أَنَابَ ﴿٣٥﴾

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِي غُزًى وَعَسَى أَنْ يَكُونَ بِنِي إِحْدَى
مِنَ بَعْدِي إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٦﴾

1 हदीस से भाष्यकारों ने लिखा है कि सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने एक बार कहा कि मैं आज रात अपनी सभी पत्नियों जिन की संख्या 70 अथवा 90 थी, से संभोग करूँगा। जिन से योद्धा घुड़ सवार पैदा होंगे जो अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे। तथा उन्होंने यह नहीं कहा: यदि अल्लाह ने चाहा। जिस का परिणाम यह हुआ कि केवल एक ही पत्नी गर्भवती हुई। और उस ने भी अधूरे शिशु को जन्म दिया। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: वह ((यदि अल्लाह ने चाहा)) कह देते तो सब योद्धा पैदा होते। (सहीह बुखारी, हदीस: 6639, सहीह मुस्लिम, हदीस: 1656)

न हो किसी के लिये मेरे पश्चात्।
वास्तव में तू ही अति प्रदाता है।

36. तो हम ने वश में कर दिया उस के लिये वायु को जो चल रही थी धीमी गति से उस के आदेश से वह जहाँ चाहता।

37. तथा शैतानों को प्रत्येक प्रकार के निर्माता, तथा ग़ोता ख़ोर को।

38. तथा दूसरों को बंधे हुये बेड़ियों में।

39. यह हमारा प्रदान है। तो उपकार करो अथवा रोक लो, कोई हिसाब नहीं।

40. और वास्तव में उस के लिये हमारे पास सामिप्य तथा उत्तम स्थान है।

41. तथा याद करो हमारे भक्त अय्यूब को। जब उस ने पुकारा अपने पालनहार को कि शैतान ने मुझ को पहुँचाया^[1] है दुख, तथा यातना।

42. अपना पाँव (धरती पर) मार। यह है शीतल स्नान तथा पीने का जल।

43. और हम ने प्रदान किया उसे उस का परिवार तथा उनके साथ और उन के समान। अपनी दया से, और मतिमानों की शिक्षा के लिये।

44. तथा ले अपने हाथ में तीलियों की एक झाड़, तथा उस से मार और

فَسَحَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُجَاءَ حَيْثُ أَسَابَ ۝

وَالشَّيْطَانِ كُلِّ بَنَاءٍ وَعَوَاصٍ ۝

وَالْخَرِبِينَ مُقَرَّبِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۝

هَذَا عَطَاؤُنَا وَمَنْ أَوْمِسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحَسَنَ مَّآبٍ ۝

وَإِذْ كُرِعْنَا لَهُ فَأُولَآئِ الَّذِينَ كَانُوا مِن مَّوْجِي السَّيْطَانِ نَبْضًا وَعَذَابٍ ۝

أُكْحُسُّ يَرْجَلُكَ هَذَا مَغْسَلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ ۝

وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُم مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا وَذِكْرَىٰ لَأُولِي الْأَلْبَابِ ۝

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْتًا قَاصِرًا ۖ بَرِّبِّهِ وَلَا تَحْنُطْ ۚ إِنَّكَ

1 अर्थात् मेरे दुख तथा यातना के कारण मुझे शैतान उकसा रहा है तथा वह मुझे तेरी दया से निराश करना चाहता है।

- अपनी शपथ भंग न कर। वास्तव^[1] में हम ने उसे पाया धैर्य वान। निश्चय वह बड़ा ध्यान मग्न था।
45. तथा याद करो, हमारे भक्त इब्राहीम तथा इसहाक एवं याकूब को, जो कर्म शक्ति तथा ज्ञानचक्षु^[2] वाले थे।
46. हम ने उन्हें विशेष कर लिया बड़ी विशेषता परलोक (आखिरत) की याद के साथ।
47. वास्तव में वह हमारे यहाँ उत्तम निर्वाचितों में से थे।
48. तथा आप चर्चा करें इसमाईल तथा यसअ एवं जुलक़िफ़ल की और यह सभी निर्वाचितों में से थे।
49. यह (कुर्आन) एक शिक्षा है तथा निश्चय आज्ञाकारियों के लिये उत्तम स्थान है।
50. स्थायी स्वर्ग खुले हुये हैं उन के लिये (उन के) द्वारा।
51. वे तकिये लगाये होंगे उन में। मागेंगे उन में बहुत से फल तथा पेय पदार्थ।
52. तथा उन के पास आँखें सीमित रखने वाली समायु पत्नियाँ होंगी।
53. यह है जिस का वचन दिया जा रहा था तुम्हें हिसाब के दिन।

وَجَدْنَاهُ صَابِرًا نَعْمَ الْجِدَارُ أَنَّهُ أَوَّابٌ ﴿٥٠﴾

وَأَذْكُرْ عَبْدَنَا إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ أُولَى الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ ﴿٥١﴾

إِنَّا أَخْلَصْنَاهُمْ بِخَالِصَةٍ ذُكِّرَى الْغَلَّادِ ﴿٥٢﴾

وَأَنَّهُمْ جَنَّاتٌ نَّالِينَ الْمُصْطَفَيْنَ الْأَخْيَارِ ﴿٥٣﴾

وَأَذْكُرْ إسماعِيلَ وَالْيَسَعَ وَالدَّكَّيْلَ وَكُلًّا مِّنَ الْأَخْيَارِ ﴿٥٤﴾

هَذَا ذِكْرٌ وَإِن لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ نَّابٍ ﴿٥٥﴾

جَلَّتْ عَن مِّنْهُمُ مَفْصَحَةٌ لَهُمُ الْأَنْبَابُ ﴿٥٦﴾

مُتَّكِبِينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ لَّا يَنْتَرِبُونَ ﴿٥٧﴾ وَنَسْرَابٍ ﴿٥٨﴾

وَعِنْدَهُمْ قَصِيرَاتُ الطَّرِيفِ أَتْرَابٍ ﴿٥٩﴾

هَذَا مِمَّا نُوْعَدُ وَنَلِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٦٠﴾

1 अय्युब (अलैहिस्सलाम) की पत्नी से कुछ चूक हो गई जिस पर उन्होंने उसे सौ कोड़े मारने की शपथ ली थी।

2 अर्थात् आज्ञा पालन में शक्तिवान तथा धर्म का बोध रखते थे।

54. यह है हमारी जीविका जिस का कोई अन्त नहीं है।
55. यह है। और अवैज्ञाकारियों के लिये निश्चय बुरा स्थान है।
56. नरक है, जिस में वे जायेंगे, क्या ही बुरा आवास है!
57. यह है। तो तुम चखो खौलता पानी तथा पीप।
58. तथा कुछ अन्य इसी प्रकार की विभिन्न यातनायें।
59. यह^[1] एक और जत्था है जो घुसा आ रहा है तुम्हारे साथ। कोई स्वागत नहीं है उन का। वास्तव में वह नरक में प्रवेश करने वाले हैं।
60. वह उत्तर देंगे: बल्कि तुम। तुम्हारा कोई स्वागत नहीं। तुम्हीं आगे लाये हो इस (यातना) को हमारे। तो यह बुरा निवास है।
61. (फिर) वह कहेंगे: हमारे पालनहार! जो हमारे आगे लाया है इसे, उस को दुगनी यातना दे नरक में।
62. तथा (नारकी) कहेंगे: हमें क्या हुआ है कि हम कुछ लोगों को नहीं देख रहे हैं जिन की गणना हम बुरे लोगों में कर^[2] रहे थे?

إِنَّ هَذَا الرِّزْقُ مَالُهُ مِنْ تَقَادِرٍ ۝

هَذَا وَإِنَّ لِلطَّالِبِينَ أَكْثَرَ مَا لِي ۝

جَهَنَّمَ يَصَلُّونَهَا فَمَنْ فِيهَا مِنْكُمْ ۝

هَذَا أَقْلِيدُ وَقُوَّةٌ حَبِيمٌ وَعَسَائِقُ ۝

وَأَخْرَجُوا مِنْ شَكْلَةٍ أَزْوَاجًا ۝

هَذَا أَقْوَبٌ مُقْتَضٍ مَعَكُمْ لِأَمْرِجَابِهِمْ
لِنَأْتِيَهُمْ صَالُوا النَّارِ ۝

قَالُوا بَلْ أَنْتُمْ لِأَمْرِجَابِكُمْ أَنْتُمْ قَدْ مُمُّوهُ
لِنَأْتِيَهُمْ صَالُوا النَّارِ ۝

قَالُوا وَإِنِّي نَأْمَنُ قَدْ مَرَكْنَا هَذَا فَرِيدُهُ عَدَا بَاطِعًا
فِي النَّارِ ۝

وَقَالُوا مَا لَنَا لَأَنْ تَرَى رَجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِنَ
الْأَشْرَارِ ۝

1 यह बात काफ़िरों के प्रमुख जो पहले से नरक में होंगे अपने उन अनुयायियों से कहेंगे जो संसार में उन के अनुयायी बने रहे उस समय जब उन के अनुयायियों का गिरोह नरक में आने लगेगा।

2 इस से उन का संकेत उन निर्धन-निर्बल मुसलमानों की ओर होगा जिन्हें वह

63. क्या हम ने उन्हें उपहास बना रखा था अथवा चूक रही हैं उन से हमारी आँखें?
64. निश्चय सत्य है नारकियों का आपस में झगड़ना।
65. हे नबी! आप कह दें: मैं तो मात्र सचेत करने वाला^[1] हूँ तथा कोई (सच्चा) पूज्य नहीं है अकेले प्रभावशाली अल्लाह के सिवा।
66. वह आकाशों तथा धरती का और जो कुछ उन दोनों के मध्य है सब का पालनहार अति प्रभाव शाली क्षमी है।
67. आप कह दें कि यह^[2] बहुत बड़ी सूचना है।
68. और तुम हो कि उस से मुँह फेर रहे हो।
69. मुझे कोई ज्ञान नहीं है उच्च सभा वाले (फरिश्ते) जब वाद- विवाद कर रहे थे।
70. मेरी ओर तो मात्र इस लिये वही (प्रकाशना) की जा रही है कि मैं खुला सचेत करने वाला हूँ।
71. जब कि कहा आप के पालनहार ने फरिश्तों से: मैं पैदा करने वाला हूँ एक मनुष्य मिट्टी से।

أَتَّخَذُوا لَهُمْ سَعِيرًا لَّأَمْرًا لَّغَتْ عَنْهُمْ الْأَبْصَارُ ﴿٦٣﴾

إِنَّ ذَلِكَ لَحَقٌّ تَخَافُكُمْ أَهْلُ النَّارِ ﴿٦٤﴾

قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ وَمَنْ يُوَلِّهِمْ الْوَالِدَ الَّذِي يُؤْتِيهِ الْوَحْدَ الْفَقَارُ ﴿٦٥﴾

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾

قُلْ هُوَ رَبُّوَاعِظٍ ﴿٦٧﴾

أَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ﴿٦٨﴾

مَا كَانَ لِي مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَائِكَةِ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿٦٩﴾

إِنْ يُرِيدُ إِلَىٰ إِلَّا أَنَّمَا أَنزَلْنَاهُ مِنْ سَمَوَاتٍ ﴿٧٠﴾

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّنْ طِينٍ ﴿٧١﴾

संसार में उपद्रवी कह रहे थे।

1 कूर्आन ने इसे बहुत सी आयतों में दुहराया है कि नबियों का कर्तव्य मात्र सत्य को पहुँचाना है। किसी को बल पूर्वक सत्य को मनवाना नहीं है।

2 परलोक की यातना तथा तौहीद (ऐकेश्वरवाद) की जो बातें तुम्हें बता रहा हूँ।

72. तो जब मैं उसे बराबर कर दूँ तथा फूँक दूँ उस में अपनी ओर से रूह (प्राण) तो गिर जाओ उस के लिये सज्दा करते हुये।

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَكَفَّتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي فَقُولْ لَهُ
لِيَعْبُدْنِي ④

73. तो सज्दा किया सभी फ़रिश्तों ने एक साथ।

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ④

74. इब्लीस के सिवा, उस ने अभिमान किया और हो गया काफिरों में से।

إِلَّا إِبْلِيسَ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ④

75. अल्लाह ने कहा: हे इब्लीस! किस चिज़ ने तुझे रोक दिया सज्दा करने से उस के लिये जिस को मैं ने पैदा किया अपने हाथ से? क्या तू अभिमान कर गया अथवा वास्तव में तू ऊँचे लोगों में से है?

قَالَ يَا بَلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ
بِيَدَيَّ أَاسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِينَ ④

76. उस ने कहा: मैं उस से उत्तम हूँ। तू ने मुझे पैदा किया है अग्नि से तथा उसे पैदा किया है मिट्टी से।

قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِمَّنْ خَلَقْتَنِي مِنْ نَارٍ وَخَلَقْتَهُ
مِنْ طِينٍ ④

77. अल्लाह ने कहा: तू निकल जा यहाँ से, तू वास्तव में धिक्कृत है।

قَالَ فَاحْرَزْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ④

78. तथा तुझ पर मेरी दया से दूरी है प्रलय के दिन तक।

وَأَنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ④

79. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मुझे अवसर दे उस दिन तक जब लोग पूनः जीवित किये जायेंगे।

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ④

80. अल्लाह ने कहा: तुझे अवसर दे दिया गया।

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ④

81. निर्धारित समय के दिन तक।

إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ④

82. उस ने कहा: तो तेरे प्रताप की

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ④

- शपथ! मैं आवश्य कुपथ कर के
रहूँगा सब को।
83. तेरे शुद्ध भक्तों के सिवा उन में से।
84. अल्लाह ने कहा: तो यह सत्य है और
मैं सत्य ही कहा करता हूँ:
85. कि मैं अवश्य भर दूँगा नरक को
तुझ से तथा जो तेरा अनुसरण करेंगे
उन सब से।
86. (हे नबी!) कह दें कि मैं नहीं माँग
करता हूँ तुम से इस पर किसी
पारिश्रमिक की, तथा मैं नहीं हूँ
अपनी ओर से कुछ बनाने वाला।
87. नहीं है यह (कुरआन) परन्तु एक
शिक्षा सर्वलोक वासियों के लिये।
88. तथा तुम्हें अवश्य ज्ञान हो जायेगा
उस के समाचार (तथ्य) का एक
समय के पश्चात्।

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمْ الْمُخْلِصِينَ ۝

قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقُّ أَقُولُ ۝

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّن تَبِعَكَ مِنْهُمْ

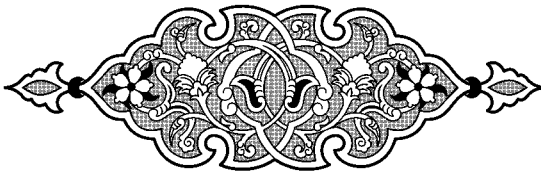
أَجْمَعِينَ ۝

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ

الْمُتَكَلِّفِينَ ۝

إِنَّ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝

وَلَتَعْلَمَنَّ نَبَأَ بَعْدَ حِينٍ ۝



सूरह जुमर - 39



सूरह जुमर के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 75 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 71 तथा 73 में (जुमर) शब्द आया है। जिस का अर्थ है: समूह तथा गिरोह। और इसी से सूरह का नाम लिया गया है।
- इस की आरंभिक आयतों में कुरआन की मूल शिक्षा को प्रमाणों (दलीलों) के साथ प्रस्तुत किया गया है कि आज्ञा पालन (वंदना) मात्र अल्लाह ही के लिये है। फिर आगे आयत 20 तक दोनों गिरोह: जो धर्म का पालन करते और केवल अल्लाह की वंदना (इबादत) करते हैं तथा जो दूसरों की पूजा करते हैं उन के मध्य अन्तर बताया गया है। फिर आयत 35 तक कुरआन को मानने वालों की विशेषतायें और उन का प्रतिफल बताया गया है और विरोधियों को बुरे परिणाम से सावधान किया गया है।
- आयत 36 से 52 तक ऐसे समझाया गया है कि (तौहीद) उभर कर सामने आ जाये। और ईमान लाने की भावना पैदा हो जाये। फिर आयत 63 तक अल्लाह को मानने की प्रेरणा दी गई है।
- अन्तिम आयतों में यह बताया गया है कि एक अल्लाह की वंदना ही सच्च है। फिर प्रलय की कुछ दशाओं की झलक दिखा कर (नेकों) सदाचारियों और बुरों के अलग-अलग स्थानों की ओर जाने, और उन के अन्तिम परिणाम को बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. इस पुस्तक का अवतरित होना अल्लाह अति प्रभावशाली तत्वज्ञ की ओर से है।
2. हम ने आप की ओर यह पुस्तक सत्य के साथ अवतरित की है। अतः इबादत (वंदना) करो अल्लाह की शुद्ध

تَنْزِيلِ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ

إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللَّهَ
مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ

करते हुये उस के लिये धर्म को।

3. सुन लो! शुद्ध धर्म अल्लाह ही के लिये (योग्य) है। तथा जिन्होंने बना रखा है अल्लाह के सिवा संरक्षक वे कहते हैं कि हम तो उन की वंदना इस लिये करते हैं कि वह समीप कर देंगे हमें अल्लाह^[1] से। वास्तव में अल्लाह ही निर्णय करेगा उन के बीच जिस में वे विभेद कर रहे हैं। वास्तव में अल्लाह उसे सुपथ नहीं दर्शाता जो बड़ा मिथ्यावादी कृतघ्न हो।
4. यदि अल्लाह चाहता कि अपने लिये संतान बनाये तो चुन लेता उस में से जिसे पैदा करता है जिसे चाहता। वह पवित्र है! वही अल्लाह अकेला सब पर प्रभावशाली है।
5. उस ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को सत्य के आधार पर। वह लपेट देता है रात्रि को दिन पर तथा दिन को रात्रि पर तथा वशवर्ती किया है सूर्य और चन्द्रमा को। प्रत्येक चल रहा है अपनी निर्धारित अवधि के लिये। सावधान! वही अत्यंत प्रभावशाली क्षमी है।
6. उस ने तुम को पैदा किया एक प्राण

الذليلون الذين اتخذوا
أولياء ما تعبدونهم إلا ليقربوا
إلى الله ولقد ألقى
إلى الله عنكم بدينتهم في ما هم
بين يدي يتلفون
إلى الله لا يهدي من هو كذب كذاب

لَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَخْتِذَ
وَلَدًا لَأَصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ
مَائِمًا سُبْحَانَهُ هُوَ اللَّهُ
الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
بِالْحَقِّ يَكُونُ اللَّيْلَ عَلَى
النَّهَارِ وَيَكُونُ النَّهَارَ
عَلَى اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ
مُّسَمًّى ۝
الَّذِي هُوَ الْعَزِيزُ الْعَقَّارُ ۝

خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ
ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا

1 मक्का के काफ़िर यह मानते थे कि अल्लाह ही वास्तविक पूज्य है। परन्तु वह यह समझते थे कि उस का दरबार बहुत ऊँचा है इसलिये वह इन पूज्यों को माध्यम बनाते थे। ताकि इन के द्वारा उन की प्रार्थनायें अल्लाह तक पहुँच जायें। यही बात साधारणतः मुश्रिक कहते आये हैं। इन तीन आयतों में उन के इसी कुविचार का खण्डन किया गया है। फिर उन में कुछ ऐसे थे जो समझते थे कि अल्लाह के संतान है। कुछ, फ़रिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ कहते, और कुछ, नबियों (ईसा) को अल्लाह का पुत्र कहते थे। यहाँ इसी का खण्डन किया गया है।

से फिर बनाया उसी से उस का जोड़ा। तथा अवतरित किये तुम्हारे लिये पशुओं में से आठ जोड़े। वह पैदा करता है तुम को तुम्हारी माताओं के गर्भाशयों में एक रूप में, एक रूप के पश्चात् तीन अँधेरों में, यही अल्लाह है तुम्हारा पालनहार, उसी का राज्य है। कोई (सच्चा) वंदनीय नहीं उस के सिवा। तो तुम कहाँ फिराये जा रहे हो?

7. यदि तुम कृतघ्न बनो तो अल्लाह निस्पृह है तुम से। और वह प्रसन्न नहीं होता अपने भक्तों की कृतघ्नता से और यदि कृतज्ञता करो तो वह प्रसन्न हो जायेगा तुम से। और नहीं बोझ उठायेगा कोई उठाने वाला दूसरों का बोझ। फिर तुम्हारे पालनहार ही की ओर तुम्हारा फिरना है। तो वह तुम्हें सूचित कर देगा तुम्हारे कर्मों से। वास्तव में वह भली-भाँति जानने वाला है दिलों के भेदों को।

8. तथा जब पहुँचता है मनुष्य को कोई दुःख तो पुकारता है अपने पालनहार को ध्यानमग्न हो कर उस की ओर। फिर जब हम उसे प्रदान करते हैं कोई सुख अपनी ओर से तो भूल जाता है जिस के लिये वह पुकार रहा था इस से पूर्वी तथा बना लेता है अल्लाह का साझी ताकि कुपथ करे उस की डगर से। आप कह दें कि आनन्द ले लो अपने कुफ़्र का थोड़ा

وَأَنْزَلْنَا لَكُمْ مِنَ الْأَنْعَامِ نَمِيَّةً آذْرًا لِتَخْلُقُوا فِي
بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ خَلْقًا مِّنْ بَعْدِ خَلْقِ فِي ظُلُمَاتٍ ثَلَاثٍ
ذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ قَائِلٌ
نَّصْرُونَ ﴿٧﴾

إِن تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ عَنِّي وَعَنْكُمْ وَلَا يَرْضَى
لِعِبَادِي الْكُفْرَ وَإِن تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ وَلَا تَزِرُ
وِزْرَةَ ذُرٍّ أَوْ ذُرٍّ آخَرَ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ فَيُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٨﴾

وَإِذْ أَمْسَأَ الْإِنْسَانَ ضَرْبًا رَّكِيَةً مُّنبِئًا إِلَىٰ رَبِّهِ
إِذْ أَحْوَلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ ذِي مَآكَانٍ يَدْعُو إِلَىٰهِ مِنْ
قَبْلِ مَوْجَعٍ يَلُوهُ أَنذَارًا الْبُضْلُ عَنْ سَبِيلِهِ قُلْ
تَمَّتْ لَكُمْ بِكُفْرِكُمْ أَقْلَابًا لَّا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَصْحَابُ النَّارِ ﴿٩﴾

सा। वास्तव में तू नारकियों में से है।

9. तो क्या जो आज्ञाकारी रहा हो रात्रि के क्षणों में सज्जदा करते हुये, तथा खड़ा रह कर, (और) डर रहा हो परलोक से, तथा आशा रखता हो अल्लाह की दया की, आप कहें कि क्या समान हो जायेंगे जो ज्ञान रखते हों तथा जो ज्ञान नहीं रखते? वास्तव में शिक्षा ग्रहण करते हैं मतिमान लोग ही।
10. आप कह दें उन भक्तों से जो ईमान लाये तथा डरे अपने पालनहार से कि उन्हीं के लिये जिन्होंने सदाचार किये इस संसार में बड़ी भलाई है। तथा अल्लाह की धरती विस्तृत है। और धैर्यवान ही अपना पूरा प्रतिफल अगणित दिये जायेंगे।
11. आप कह दें कि मुझे आदेश दिया गया है कि इबादत (वंदना) करूँ अल्लाह की शुद्ध कर के उस के लिये धर्म को।
12. तथा मुझे आदेश दिया गया है कि प्रथम आज्ञाकारी हो जाऊँ।
13. आप कह दें: मैं डरता हूँ यदि मैं अवैज्ञा करूँ अपने पालनहार की, एक बड़े दिन की यातना से।
14. आप कह दें: अल्लाह ही की इबादत (वंदना) मैं कर रहा हूँ शुद्ध कर के उस के लिये अपने धर्म को।
15. अतः तुम इबादत (वंदना) करो जिस की चाहो उस के सिवा। आप कह दें: वास्तव में क्षतिग्रस्त वही है जिन्होंने

أَنْ هُوَ قَائِلٌ إِنَّهُ الْبَيْلُ سَاجِدًا أَوْ قَائِمًا يَحْدُرُ
الْأَجْرَةَ وَيَرْجُوا رَحْمَةً رَبِّهِ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي
الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ
أُولُو الْأَلْبَابِ ۝

قُلْ يِعْبُدِ الَّذِينَ الْمُؤْتَفِقُونَ لَكُمْ الَّذِينَ
أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَأَرْضُ اللَّهِ
وَاسِعَةٌ إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ
حِسَابٍ ۝

قُلْ إِنِّي أُرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ۝

وَأُرْتُ لِأَنَّ الْكُونَ أَوْلَى الْمَسْلُوبِينَ ۝

قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝

قُلْ اللَّهُ أَعْبُدُ مُخْلِصًا لَهُ دِينِي ۝

فَاعْبُدُوا مَا شِئْتُمْ مِنْ دُونِهِ قُلْ إِنَّ الْخَاسِرِينَ
الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

क्षतिग्रस्त कर लिया स्वयं को तथा अपने परिवार को प्रलय के दिन। सावधान! यही खुली क्षति है।

أَلَاذَلِكَ هُوَ الْحُضْرَانُ الْيُبَيْنُ ①

16. उन्हीं के लिये छत्र होंगे अग्नि के, उन के ऊपर से तथा उन के नीचे से छत्र होंगे। यही है डरा रहा है अल्लाह जिस से अपने भक्तों को। हे मेरे भक्तो! मुझी से डरो।

لَهُمْ مِنْ ذُرِّيَّتِهِمْ طُلُقٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ حَمِيمٍ طَلِقٌ
ذَلِكَ يُخَوِّفُ اللَّهَ بِهِ عِبَادَةً يُعْبَادُونَ فَأَنْفُونَ ①

17. जो बचे रहे तागूत (असुर)^[1] की पूजा से तथा ध्यान मग्न हो गये अल्लाह की ओर तो उन्हीं के लिये शुभसूचना है। अतः आप शुभ सूचना सुना दें मेरे भक्तों को।

وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَنْ يِعْبُدُوهَا
وَأْتَابُوا إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فَبَشِّرْ عِبَادَ ①

18. जो ध्यान से सुनते हैं इस बात को फिर अनुसरण करते हैं इस सर्वोत्तम बात का तो वही है जिन्हें सुपथ दर्शन दिया है अल्लाह ने, तथा वही मतिमान हैं।

الَّذِينَ يَسْمَعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ أُولَٰئِكَ
الَّذِينَ هَدَىٰ لَهُمُ اللَّهُ وَأُولَٰئِكَ هُمْ أُولُو الْأَلْبَابِ ①

19. तो क्या जिस पर यातना की बात सिद्ध हो गई, क्या आप निकाल सकेंगे उसे जो नरक में है?

أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ أَفَأَنْتَ تُنقِذُ
مَنْ فِي النَّارِ ①

20. किन्तु जो अपने पालनहार से डरे उन्हीं के लिये उच्च भवन हैं। जिन के ऊपर निर्मित भवन हैं। प्रवाहित हैं जिन में नहरें, यह अल्लाह का वचन है। और अल्लाह वचन भंग नहीं करता।

لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا لَهُمْ مِنْ قَوْمِهِمْ آلِهَةً
مِّمَّنْ بَيْنَهُمْ يُجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَعَدَّ اللَّهُ الْخَلِيفَ
اللَّهُ الْيُبَيْعَادَ ①

21. क्या तुम ने नहीं देखा^[2] कि अल्लाह ने

الَّذِينَ تَرَىٰ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعُ

1 अल्लाह के अतिरिक्त मिथ्या पूज्यों से।

2 इस आयत में अल्लाह के एक नियम की ओर संकेत है जो सब में समान रूप से प्रचलित है। अर्थात् वर्षा से खेती का उगना और अनेक स्थितियों से गुज़र कर नाश हो जाना। इसे मतिमानों के लिये शिक्षा कहा गया है। क्योंकि मनुष्य की

उतारा आकाश से जल? फिर प्रवाहित कर दिये उस के स्रोत धरती में फिर निकालता है उस से खेतियाँ विभिन्न रंगों की। फिर सूख जाती हैं, तो तुम देखते हो उन्हें पीली, फिर उसे चूर-चूर कर देता है। निश्चय इस में बड़ी शिक्षा है मतिमानों के लिये।

22. तो क्या खोल दिया हो अल्लाह ने जिस का सीना इस्लाम के लिये तो वह एक प्रकाश पर हो अपने पालनहार की ओर से। तो विनाश है जिन के दिल कड़े हो गये अल्लाह के स्मरण से वही खुले कुपथ में हैं।

23. अल्लाह ही है जिस ने सर्वोत्तम हदीस (क़ुर्आन) को अवतरित किया है। ऐसी पुस्तक जिस की आयतें मिलती जुलती बार-बार दुहराई जाने वाली हैं। जिसे (सुन कर) खड़े हो जाते हैं उन के रूंगटे जो डरते हैं अपने पालनहार से। फिर कोमल हो जाते हैं उन के अंग तथा दिल अल्लाह के स्मरण कि ओर। यही है अल्लाह का मार्गदर्शन जिस के द्वारा वह संमार्ग पर लगा देता जिसे चाहता है। और जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो उस का कोई पथ दर्शक नहीं है।

24. तो क्या जो अपनी रक्षा करेगा अपने मुख^[1] से बुरी यातना से प्रलय के

فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُعْجِرُ بِهِ ذَرَاةً مَّا تَلَوْتُمْ لَعْنَةً ثُمَّ يُمَجِّدُ
فَتَرَاهُ مُصْفًّى ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَذِكْرًا لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٦﴾

أَفَمَنْ شَرَعَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِإِسْلَامٍ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّنْ
رَّبِّهِ قَوْلٌ لِّالنَّبِيِّ قُلُوبُهُمْ مِنْ ذِكْرِ اللَّهِ
أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٢﴾

اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ
تَقَرَّرُ بِتِلْكَ آيَاتِهِ الْغُلُوبُ الَّذِينَ يُحْسِنُونَ رَبُّهُمْ ثُمَّ
يَتْلُونَ حُلُودَهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ ذَلِكَ
هُدًى لِّلَّذِينَ هَدَىٰ رَبُّهُمْ بِهِ مِّن بَيْنِ أُمَّةٍ وَمَنْ يُضِلِلِ
اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٢٣﴾

أَفَمَنْ يَتَّبِعُنِي يَجْعَلْهُ سِوَى الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

भी यही दशा होती है। वह शिशु जन्म लेता है फिर युवक और बूढ़ा हो जाता है। और अन्ततः संसार से चला जाता है।

1 इस लियेकि उस के हाथ पीछे बंधे होंगे। वह अच्छा है या जो स्वर्ग के सुख में

- दिन? तथा कहा जायेगा अत्याचारियों से: चखो जो तुम कर रहे थे।
25. झुठला दिया उन्होंने जो इन से पूर्व थे। तो आ गई यातना उन के पास जहाँ से उन्हें अनुमान (भी) न था।
26. तो चखा दिया अल्लाह ने उन को अपमान संसारिक जीवन में। और आखिरत (परलोक) की यातना निश्चय अत्यधिक बड़ी है। क्या ही अच्छा होता यदि वह जानते।
27. और हम ने मनुष्य के लिये इस कुर्आन में प्रत्येक उदाहरण दिये हैं ताकि वह शिक्षा ग्रहण करे।
28. अर्बी भाषा में कुर्आन जिस में कोई टेढ़ापन नहीं है, ताकि वह अल्लाह से डरें।
29. अल्लाह ने एक उदाहरण दिया है एक व्यक्ति का जिस में बहुत से परस्पर विरोधी साझी हैं। तथा एक व्यक्ति पूरा एक व्यक्ति का (दास) है। तो क्या दशा में दोनों समान हो जायेंगे?^[1] सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है, बल्कि उन में से अधिकतर नहीं जानते।
30. (हे नबी!) निश्चय आप को मरना है तथा उन्हें भी मरना है।

وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٢٥﴾

كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَاَتَهُمُ الْعَذَابُ
مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾

فَاَذَاقَهُمُ اللَّهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ
الْآخِرَةِ اَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾

وَلَقَدْ صَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ
كُلِّ مَثَلٍ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٨﴾

قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي عِوَجٍ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٢٩﴾

صَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَجُلًا فِيهِ شُرَكَاءُ مُتَشَاكِسُونَ
وَرَجُلًا سَلَمًا لِرَجُلٍ هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا الْحَمْدُ لِلَّهِ
بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾

إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ ﴿٣٠﴾

होगा वह अच्छा है?

- 1 इस आयत में मिश्रणवादी और एकेश्वरवादी की दशा का वर्णन किया गया है कि मिश्रणवादी अनेक पूज्यों को प्रसन्न करने में व्याकुल रहता है। तथा एकेश्वरवादी शान्त हो कर केवल एक अल्लाह की इबादत करता है और एक ही को प्रसन्न करता है।

31. फिर तुम सभी^[1] प्रलय के दिन अल्लाह के समक्ष झगड़ोगे।
32. तो उस से बड़ा अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ बोले तथा सच्च को झूठलाये जब उस के पास आ गया? तो क्या नरक में नहीं है ऐसे काफ़िरों का स्थान?
33. तथा जो सत्य लाये^[2] और जिस ने उसे सच्च माना तो वही (यातना से) सुरक्षित रहने वाले है।
34. उन्हीं के लिये है जो वह चाहेंगे उन के पालनहार के यहाँ। और यही सदाचारियों का प्रतिफल है।
35. ताकि अल्लाह क्षमा कर दे जो कुकर्म उन्होंने किये हैं। तथा उन्हें प्रदान करे उन का प्रतिफल उन के उत्तम कर्मों के बदले जो वे कर रहे थे।
36. क्या अल्लाह पर्याप्त नहीं है अपने भक्त के लिये? तथा वह डराते हैं आप को उन से जो उस के सिवा हैं। तथा जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो नहीं है उसे कोई सुपथ दर्शाने वाला।
37. और जिसे अल्लाह सुपथ दर्शा दे तो नहीं है उसे कोई कुपथ करने वाला। क्या नहीं है अल्लाह प्रभुत्वशाली

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ﴿٣١﴾

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَبَ
بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ ۗ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى
لِّلْكَافِرِينَ ﴿٣٢﴾

وَالَّذِي جَاءَهُ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ ۗ أُوْلَٰئِكَ
هُمُ الْمُمْتَقُونَ ﴿٣٣﴾

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ ذَٰلِكَ جَزَاؤُ
الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٤﴾

لِيَكْفُرَ اللَّهُ عَنْهُمْ ۗ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ
أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٥﴾

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۗ وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِنْ
دُونِهِ ۗ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٣٦﴾

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُضِلٍّ ۗ أَلَيْسَ اللَّهُ
بِعَزِيزٍ ذِي انْتِقَامٍ ﴿٣٧﴾

1 और वहाँ तुम्हारे झगड़े का निर्णय और सब का अन्त सामने आ जायेगा। इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मौत को सिद्ध किया गया है। जिस प्रकार (सूरह आले इमरान, आयत: 144, में आप की मौत का प्रमाण बताया गया है।

2 इस से अभिप्राय अन्तिम नबी जनाब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं।

बदला लेने वाला?

38. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। आप कहिये कि तुम बताओ जिसे तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो: यदि अल्लाह मुझे कोई हानि पहुँचाना चाहे तो क्या यह उस की हानि को दूर कर सकता है? अथवा मेरे साथ दया करना चाहे, तो क्या वह रोक सकता है उस की दया को? आप कह दें कि मुझे पर्याप्त है अल्लाह! और उसी पर भरोसा करते हैं भरोसा करने वाले।
39. आप कह दें कि हे मेरी जाति के लोगो! तुम काम करो अपने स्थान पर, मैं भी काम कर रहा हूँ तो शीघ्र ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा।
40. कि किस के पास आती है ऐसी यातना जो उसे अपमानित कर दे। तथा उतरती है किस के ऊपर स्थायी यातना?
41. वास्तव में हम ने ही अवतरित की है आप पर यह पुस्तक लोगों के लिये सत्य के साथ। तो जिस ने मार्गदर्शन प्राप्त कर लिया तो उस के अपने (लाभ के) लिये है। तथा जो कुपथ हो गया तो वह कुपथ होता है अपने ऊपर। तथा आप उन पर संरक्षक नहीं है।
42. अल्लाह ही खींचता है प्राणों को उन के मरण के समय, तथा जिस के

وَلَيْنَ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ قُلْ اَفَرَأَيْتُمْ مَاتَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِیْ اللّٰهُ بِضَرٍّ هَلْ هُنَّ
كٰشِفٰتُ ضَرِّهٖۗ اَوْ اَرَادَنِیْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ
مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖۗ قُلْ حَسْبِیَ اللّٰهُ
عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٣٩﴾

قُلْ لِيَقُوْمِ اَعْمٰلُوْا عَلٰی مَكَاَنَتِهِمْ اِنَّیْ عٰمِلٌ
فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٠﴾

مَنْ يَّاتِبْهُ عَذَابٌ يُجْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ
مُّقِيمٌ ﴿٤١﴾

اِنَّا اَنْزَلْنَا عَلَیْكَ الْكِتٰبَ الْلٔس بِالْحَقِّ فَمَنْ
اَهْتَدٰی فَلِنَفْسِهٖۗ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ
عَلَيْهَا وَمَا اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٤٢﴾

اللّٰهُ يَتَوَكَّلُ الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَاللّٰهُ لَمَّ

मरण का समय नहीं आया उस की निद्रा में। फिर रोक लेता है जिस पर निर्णय कर दिया हो मरण का। तथा भेज देता है अन्य को एक निर्धारित समय तक के लिये। वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं उन के लिये जो मनन-चिन्तन^[1] करते हों।

43. क्या उन्होंने बना लिये हैं अल्लाह के अतिरिक्त बहुत से अभिस्तावक (सिफारशी)? आप कह दें: क्या (यह सिफारिश करेंगे) यदि वह अधिकार न रखते हों किसी चीज़ का और न ही समझ रखते हों?
44. आप कह दें कि अनुशंसा (सिफारिश) तो सब अल्लाह के अधिकार में है। उसी के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्य। फिर उसी की ओर तुम फिराये जाओगे।
45. तथा जब वर्णन किया जाता है अकेले अल्लाह का तो संकीर्ण होने लगते हैं उन के दिल जो ईमान नहीं रखते आखिरत^[2] पर। तथा जब वर्णन किया जाता है उन का जो उस के सिवा हैं तो वह सहसा प्रसन्न हो जाते हैं।

تَمَّتْ فِي مَنَامِهَا فَيُمْسِكُ الَّتِي قَضَىٰ عَلَيْهَا
الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْأَخْرَىٰ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّعَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٣٩﴾

أَمْ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ شُفَعَاءَ قُلُوبِ أَوْلَادِهِمْ
كَأَنَّهُمْ لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٣٩﴾

قُلْ لِلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٣٩﴾

وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ يَا الْأَخْرَىٰ ؕ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِنْ
دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٣٩﴾

- 1 इस आयत में बताया जा रहा है कि मरण तथा जीवन अल्लाह के नियंत्रण में है। निद्रा में प्राणों को खींचने का अर्थ है उन की संवेदन शक्ति को समाप्त कर देना। अतः कोई इस निद्रा की दशा पर विचार करे तो यह समझ सकता है कि अल्लाह मुर्दा को भी जीवित कर सकता है।
- 2 इस में मुशरिकों की दशा का वर्णन किया जा रहा है कि वह अल्लाह की महिमा और प्रेम को स्वीकार तो करते हैं फिर भी जब अकेले अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा का वर्णन किया जाता है तो प्रसन्न नहीं होते जब तक दूसरे पीरों-फकीरों तथा देवताओं के चमत्कार की चर्चा न की जाये।

46. (हे नबी!) आप कहें: हे अल्लाह आकाशों तथा धरती के पैदा करने वाले, परोक्ष तथा प्रत्यक्ष के ज्ञानी! तू ही निर्णय करेगा अपने भक्तों के बीच, जिस बात में वह झगड़ रहे थे।

قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ عَلِيمُ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ
فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝

47. और यदि उन का जिन्होंने अत्याचार किया है जो कुछ धरती में है सब हो जाये तथा उस के समान उस के साथ और आ जाये तो वह उसे दण्ड में दे देंगे^[1] घोर यातना के बदले प्रलय के दिन। तथा खुल जायेगी उन के लिये अल्लाह की ओर से वह बात जिसे वह समझ नहीं रहे थे।

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا
وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ وَبَدَّ اللَّهُ مَا لَهُمْ
يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ۝

48. तथा खुल जायेंगी उन के लिये उन के करतूतों की बुराईयाँ और उन्हें घेर लेगा जिस का वह उपहास कर रहे थे।

وَبَدَّ اللَّهُ مَا كَسَبُوا وَوَحَاقَ بِهِمْ
مَا كَانُوا بِهٖ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

49. और जब पहुँचता है मनुष्य को कोई दुःख तो हमें पुकारता है। फिर जब हम प्रदान करते हैं कोई सुख अपनी ओर से, तो कहता है: यह तो मुझे प्रदान किया गया है ज्ञान के कारण। बल्कि यह एक परीक्षा है। किन्तु लोगों में से अधिकतर (इसे) नहीं जानते।

فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا بُشِّرْ إِذْ أَحْوَلُهُ
رِعْمَةً مِمَّا قَالِ إِنَّمَا أُوتِيْتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ بَلِٰلِٰهِي
فِتْنَةٌ وَلَٰكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

50. यही बात उन लोगों ने भी कही थी जो इन से पूर्व थे। तो नहीं काम आया उन के जो कुछ वह कमा रहे थे।

فَدَّ قَالَهَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَا أَخْنَىٰ عَنْهُمْ
مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

51. फिर आ पड़े उन पर उन के सब कुकर्म, और जो अत्याचार किये

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَالَّذِينَ ظَلَمُوا

1 परन्तु वह सब स्वीकार्य नहीं होगा। (देखिये: सूरह बकरा, आयत: 48, तथा सूरह आले इमरान, आयत: 91)

हैं इन में से आ पड़ेंगे उन पर (भी) उन के कुकर्म। तथा वह (हमें) विवश करने वाले नहीं हैं।

52. क्या उन्हें ज्ञान नहीं कि अल्लाह फैलाता है जीविका जिस के लिये चाहता है, तथा नाप कर देता है (जिस के लिये चाहता है)? निश्चय इस में कई निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं।
53. आप कह दें मेरे उन भक्तों से जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किये हैं कि तुम निराश^[1] न हो अल्लाह की दया से। वास्तव में अल्लाह क्षमा कर देता है सब पापों को। निश्चय वह अति क्षमी दयावान् है।
54. तथा झुक पड़ो अपने पालनहार की ओर, और आज्ञाकारी हो जाओ उस के इस से पूर्व कि तुम पर यातना आ जाये, फिर तुम्हारी सहायता न की जाये।
55. तथा पालन करो उस सर्वोत्तम (कूर्आन) का जो अवतरित किया गया है तुम्हारी ओर तुम्हारे पालनहार की ओर से इस से पूर्व कि आ पड़े तुम पर यातना और तुम्हें ज्ञान न हो।
56. (ऐसा न हो कि) कोई व्यक्ति कहे कि

مِنْ هَؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَوَأَهُمْ بِمَعْرِفَتِهِمْ ۝

أَوْ لَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

قُلْ لِيُعَذِّبَ الَّذِينَ الَّذِينَ اسْرَفُوا عَلَىٰ انْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝

وَإِنِّي بَوَّأْتُ لِي رَيْبَكُمْ وَأَسْلَمْتُ إِلَيْهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمْ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ۝

وَإِنِّي بَوَّأْتُ لِي رَيْبَكُمْ وَأَسْلَمْتُ إِلَيْهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمْ الْعَذَابُ بَعْتَهُ وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ۝

أَنْ تَقُولَ نَفْسٌ يُمْسِكُنِي عَلَىٰ مَا قَرَّطْتُ فِي

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास कुछ मुशरिक आये जिन्होंने बहुत जानें मारी और बहुत व्यभिचार किये थे। और कहा: वास्तव में आप जो कुछ कह रहे हैं वह बहुत अच्छा है। तो आप बतायें कि हम ने जो कुकर्म किये हैं उन के लिये कोई कफ़ारा (प्रायश्चित) है? उसी पर फुर्कान की आयत 68 और यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी: 4810)

हाय संताप! इस बात पर कि मैं ने आलस्य किया अल्लाह के पक्ष में, तथा मैं उपहास करने वालों में रह गया।

جَنَّبَ اللهُ وَإِنْ كُنْتُ لِمَنِ السَّخِرُونَ ﴿٥٧﴾

57. अथवा कहे कि यदि अल्लाह मुझे सुपथ दिखाता तो मैं डरने वालों में से हो जाता।

أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿٥٨﴾

58. अथवा कहे जब देख ले यातना को, कि यदि मुझे (संसार में) फिर कर जाने का अवसर हो जाये तो मैं अवश्य सदाचारियों में से हो जाऊँगा।

أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً فَآكُونَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٩﴾

59. हाँ, आई तुम्हारे पास मेरी निशानियाँ तो तुम ने उन्हें झूठला दिया और अभिमान किया तथा तुम थे ही काफ़िरों में से।

بَلْ قَدْ جَاءَتْكَ الْيَقِينُ فَكَذَّبْتَهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِينَ ﴿٦٠﴾

60. और प्रलय के दिन आप उन्हें देखेंगे जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बोले कि उन के मुख काले होंगे। तो क्या नरक में नहीं है अभिमानियों का स्थान?

وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَى اللَّهِ وُجُوهُهُم مُّسْوَدَّةٌ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٦١﴾

61. तथा बचा लेगा अल्लाह जो आज्ञाकारी रहे उन को उन की सफलता के साथ। नहीं लगेगा उन को कोई दुःख और न वह उदासीन होंगे।

وَيُنَجِّي اللَّهُ الَّذِينَ اتَّقَوْا بِمِقَادِرِهِمْ لَّا يَسْأَلُهُمُ السُّوءَ وَلَا هُمْ يَسْأَلُونَ ﴿٦٢﴾

62. अल्लाह ही प्रत्येक वस्तु का पैदा करने वाला तथा वही प्रत्येक वस्तु का रक्षक है।

اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿٦٣﴾

63. उसी के अधिकार में हैं आकाशों तथा धरती की कुंजियाँ^[1] तथा जिन्होंने

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا

1 अर्थात् सब का विधाता तथा स्वामी वही है। वही सब की व्यवस्था करता है। और सब उसी के आधीन तथा अधिकार में है।

नकार दिया अल्लाह की आयतों को वही क्षति में है।

64. आप कह दें: तो क्या अल्लाह से अन्य की तुम मुझे इबादत (वंदना) करने का आदेश देते हो, हे अज्ञानो?
65. तथा वही की गई है आप की ओर तथा उन (नबियों) की ओर जो आप से पूर्व (हुये) कि यदि आप ने शिर्क किया तो अवश्य व्यर्थ हो जायेगा आप का कर्म। तथा आप हो जायेंगे^[1] क्षति ग्रस्तों में से।
66. बल्कि आप अल्लाह ही की इबादत (वंदना) करें तथा कृतज्ञों में रहें।
67. तथा उन्होंने अल्लाह का सम्मान नहीं किया जैसे उस का सम्मान करना चाहिये था। और धरती पूरी उस की एक मुट्ठी में होगी प्रलय के दिन। तथा आकाश लपेटे हुये होंगे उस के हाथ^[2]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أُولَئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٣٩﴾

قُلْ أَفَعَبَّرَ اللَّهُ تَأْمُرُونَ بِعِبَادَتِهَا الْجَاهِلُونَ ﴿٤٠﴾

وَلَقَدْ أَوْحَىٰ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخٰسِرِينَ ﴿٤١﴾

بَلِ اللَّهِ فَاعْبُدْ ۖ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٤٢﴾

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۗ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيٰتٌ بِيَمِينِهِ ۗ سُبْحٰنَهُ وَتَعَلَّىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٣﴾

- 1 इस आयत का भावार्थ यह है कि यदि मान लिया जाये कि आप के जीवन का अन्त शिर्क पर हुआ, और क्षमा याचना नहीं की तो आप के भी कर्म नष्ट हो जायेंगे। हालाँकि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और सभी नबी शिर्क से पाक थे। इसलिये कि उन का संदेश ही एकेश्वरवाद और शिर्क का खंडन है। फिर भी इस में संबोधित नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को किया गया। और यह साधारण नियम बताया गया कि शिर्क के साथ अल्लाह के हाँ कोई कर्म स्वीकार्य नहीं। तथा ऐसे सभी कर्म निष्फल होंगे जो एकेश्वरवाद की आस्था पर आधारित न हों। चाहे वह नबी हो या उस का अनुयायी हो।
- 2 हदीस में आता है कि एक यहूदी विद्वान नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आया और कहा: हम अल्लाह के विषय में (अपनी धर्म पुस्तकों में) यह पाते हैं कि प्रलय के दिन आकाशों को एक उँगली, तथा भूमि को एक उँगली पर और पेड़ों को एक उँगली, जल तथा तरी को एक उँगली पर और समस्त उत्पत्ति को एक उँगली पर रख लेगा, तथा कहेगा: ((मैं ही राजा हूँ)) यह सुन

में। वह पवित्र तथा उच्च है उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं।

68. तथा सूर (नरसिंघा) फूँका^[1] जायेगा तो निश्चेत हो कर गिर जायेंगे जो आकाशों तथा धरती में हैं। परन्तु जिसे अल्लाह चाहे, फिर उसे पुनः फूँका जायेगा तो सहसा सब खड़े देख रहे होंगे।

وَيُفَعَّرُ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ ﴿٦٨﴾

69. तथा जगमगाने लगेगी धरती अपने पालनहार की ज्योती से। और परस्तुत किये जायेंगे कर्म लेख तथा लाया जायेगा नबियों और साक्षियों को। तथा निर्णय किया जायेगा उन के बीच सत्य (न्याय) के साथ, और उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

وَأَسْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتَابُ وَجَاءَتْ بِالنَّبِيِّينَ وَالشُّهَدَاءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٩﴾

70. तथा पूरा-पूरा दिया जायेगा प्रत्येक जीव को उस का कर्मफल तथा वह भली-भाँति जानने वाला है उस को जो वह कर रहे हैं।

وَوَقَّيْتُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٧٠﴾

71. तथा हाँके जायेंगे जो काफिर हो गये नरक की ओर झुण्ड बना कर। यहाँ तक कि जब वह उस के पास

وَسَيِّقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ مُرْمَرًا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا فَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا

कर आप हँस पड़े। और इसी आयत को पढ़ा। (सहीह बुखारी, हदीस: 4812, 6519, 7382, 7413)

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: दूसरी फूँक के पश्चात् सब से पहले मैं सिर उठाऊँगा। तो मूसा अर्श पकड़े हुये खड़े होंगे। मुझे ज्ञान नहीं कि वह ऐसे ही रह गये थे, या फूँकने के पश्चात् मुझे से पहले उठ चुके होंगे। (सहीह बुखारी: 4813)

दूसरी हदीस में है कि दोनों फूँकों के बीच चालीस की अवधि होगी। और मनुष्य की दुमची की हड्डी के सिवा सब सड़ जायेगा। और उसी से उस को फिर बनाया जायेगा। (सहीह बुखारी: 4814)

पालनहार की प्रशंसा के साथ।
तथा निर्णय कर दिया जायेगा लोगों
के बीच सत्य के साथ। तथा कह
दिया जायेगा कि सब प्रशंसा अल्लाह
सर्वलोक के पालनहार के लिये है।^[1]

وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

1 अर्थात जब ईमान वाले स्वर्ग में और मुशरिक नरक में चले जायेंगे तो उस समय का चित्र यह होगा कि अल्लाह के अर्श को फ़रिश्ते हर ओर से घेरे हुये उस की पवित्रता तथा प्रशंसा का गान कर रहे होंगे।

सूरह मुमिन - 40



सूरह मुमिन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 85 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत नं० 28 में एक मूमिन व्यक्ति की कथा का वर्णन किया गया है जिस ने फिरऔन के दरबार में मूसा (अलैहिस्सलाम) का खुल कर साथ दिया था। इसलिये इस का नाम सूरह मुमिन रखा गया है।
- इस सूरह का दूसरा नाम (सूरह गाफिर) भी है। क्योंकि इस की आयत नं० 3 में (गाफिरुज्जम्ब) अर्थातः (पाप क्षमा करने वाला) का शब्द आया है।
- इस की आरंभिक आयतों में उस अल्लाह के गुण बताये गये हैं जिस ने कुर्आन उतारा है। फिर आयत 4 से 6 तक उन्हें बुरे परिणाम की चेतावनी दी गई है जो अल्लाह की आयतों में विवाद खड़ा करते हैं।
- आयत 7 से 9 तक ईमान वालों को यह शुभसूचना सुनाई गई है कि फ़रिश्ते उन की क्षमा के लिये दुआ करते हैं। इस के पश्चात् काफ़िरों और मुश्रिकों को सावधान किया गया है। और उन्हें शिक्षा दी गई है।
- आयत 23 से 46 तक मूसा (अलैहिस्सलाम) के विरुद्ध फिरऔन के विवाद और एक मूमिन के मूसा (अलैहिस्सलाम) का भरपूर साथ देने तथा फिरऔन के परिणाम को विस्तार के साथ बताया गया है। फिर उन को सावधान किया गया जो अंधे हो कर बड़े बनने वालों के पीछे चलते हैं और ईमान वालों को साहस दिया गया है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के धर्म में विवाद करने वालों को सावधान करते हुये कुफ़्र तथा शिर्क के बुरे परिणाम से सचेत किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा, मीमा।
2. इस पुस्तक का उतरना अल्लाह की ओर से है जो सब चीजों और गुणों

حَمْدًا

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ

को जानने वाला है।

3. पाप क्षमा करने, तौबा स्वीकार करने, क्षमायाचना का स्वीकारी, कड़ी यातना देने वाला, समाई वाला जिस के सिवा कोई (सच्चा) वंदनीय नहीं। उसी की ओर (सब को) जाना है।
4. नहीं झगड़ते हैं अल्लाह की आयतों में उन के सिवा जो काफिर हो गये। अतः धोखे में न डाल दे आप को उन की यातायात देशों में।
5. झुठलाया इन से पूर्व नूह की जाति ने तथा बहुत से समुदायों ने उन के पश्चात्, तथा विचार किया प्रत्येक समुदाय ने अपने रसूल को बंदी बना लेने का। तथा विवाद किया असत्य के सहारे, ताकि असत्य बना दें सत्य को। तो हम ने उन्हें पकड़ लिया। फिर कैसी रही हमारी यातना?
6. और इसी प्रकार सिद्ध हो गई आप के पालनहार की बात उन पर जो काफिर हो गये कि वही नारकी है।
7. वह (फ़रिश्ते) जो अपने ऊपर उठाये हुये हैं अर्श (सिंहासन) को तथा जो उस के आस पास हैं वह पवित्रतागान करते रहते हैं अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ। तथा उस पर ईमान रखते हैं और क्षमा याचना करते रहते हैं उन के लिये जो ईमान लाये हैं।^[1] हे

عَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيدِ الْعِقَابِ ذِي الطُّوْلِ لِآلِهَ الْاِلَهِ الْاَلَهُوَ الْيَهُ الْمَصِيرُ ۝

مَا يُجَادِلُ فِي الْاِيْتِ اللّٰهُ الْاَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَاَلَا يَعْرِوْكَ تَقْلِيْبُهُمْ فِي الْاِيْلَادِ ۝

كَذَّبَتْ قَبِيْلُهُمْ قَوْمَ نُوْحٍ الْاَلْحَرَابِ مِنْ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَجَادُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهٖ الْحَقَّ فَاَخَذْنَاهُمْ كَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝

وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمٰتُ رَبِّكَ عَلٰى الْاَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۝

الَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُوْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَعِيْزُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاْتَابَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝

1 यहाँ फ़रिश्तों के दो गिरोह का वर्णन किया गया है। एक वह जो अर्श को उठाये हुया है। और दूसरा वह जो अर्श के चारों ओर घूम कर अल्लाह की प्रशंसा का गान और ईमान वालों के लिये क्षमायाचना कर रहा है।

हमारे पालनहार! तू ने घेर रखा है प्रत्येक वस्तु को (अपनी) दया तथा ज्ञान से। अतः क्षमा कर दे उन को जो क्षमा माँगें, तथा चलें तेरे मार्ग पर तथा बचा ले उन्हें नरक की यातना से।

8. हे हमारे पालनहार! तथा प्रवेश कर दे उन्हें उन स्थाई स्वर्गों में जिन का तू ने उन को वचन दिया है। तथा जो सदाचारी हैं उन के पूर्वजों तथा पत्नियों और उन की संतानों में से। निश्चय तू सब चीजों और गुणों को जानने वाला है।

9. तथा उन्हें सुरक्षित रख दुष्कर्मों से, तथा तू ने जिसे बचा दिया दुष्कर्मों से उस दिन, तो दया कर दी उस पर। और यही बड़ी सफलता है।

10. जिन लोगों ने कुफ़्र किया है उन्हें (प्रलय के दिन) पुकारा जायेगा कि अल्लाह का क्रोध तुम पर उस से अधिक था जितना तुम्हें (आज) अपने ऊपर क्रोध आ रहा है जब तुम (संसार में) ईमान की ओर बुलाये^[1] जा रहे थे।

11. वे कहेंगे: हे हमारे पालनहार! तू ने हमें दो बार मारा^[2] तथा जीवित

رَبِّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتٍ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ
وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ
وُذُرِّيَّتِهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ
فَقَدْ رَجِمْتَهُ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ينادونَ لِمَقَّتْ اللهُ
الْكِبْرَ مِنْ مَقَّتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى
الْإِيمَانِ فَتَكْفُرُونَ ۝

قَالُوا رَبَّنَا آمَنَّا ائْتِنَّا ائْتِنَّا ائْتِنَّا

1 आयत का अर्थ यह है कि जब काफ़िर लोग प्रलय के दिन यातना देखेंगे तो अपने ऊपर क्रोधित होंगे। उस समय उन से पुकार कर यह कहा जायेगा कि जब संसार में तुम्हें ईमान की ओर बुलाया जाता था फिर भी तुम कुफ़्र करते थे तो अल्लाह को इस से अधिक क्रोध होता था जितना आज तुम्हें अपने ऊपर हो रहा है।

2 देखिये: सूरह बकरा, आयत: 28।

(भी) दो बार किया। अतः हम ने मान लिया अपने पापों को। तो क्या (यातना से) निकलने की कोई राह (उपाय) है?

12. (यह यातना) इस कारण है कि जब तूम्हें (संसार में) बुलाया गया अकेले अल्लाह की ओर तो तुम ने कुफ़र कर दिया। और यदि शिक किया जाता उस के साथ तो तुम मान लेते थे। तो आदेश देने का अधिकार अल्लाह को है जो सर्वोच्च सर्वमहान् है।
13. वही दिखाता है तुम्हें अपनी निशानियाँ तथा उतारता है तुम्हारे लिये आकाश से जीविका। और शिक्षा ग्रहण नहीं करता परन्तु वही जो (उस की ओर) ध्यान करता है।
14. तो तुम पुकारो अल्लाह को शुद्ध कर के उस के लिये धर्म को यद्यपि बुरा लगे काफ़िरो को।
15. वह उच्च श्रेणियों वाला अर्श का स्वामी है। वह उतारता है अपने अदेश से रूह^[1] (वह्नी) को जिस पर चाहता है अपने भक्तों में से। ताकि वह सचेत करे मिलने के दिन से।
16. जिस दिन सब लोग (जीवित हो कर) निकल पड़ेंगे। नहीं छुपी होगी अल्लाह पर उन की कोई चीज़। किस का राज्य है आज?^[2] अकेले

فَاعْتَرَفْتُمَا يُدْنُو بِمَا قَعَلْتُمْ إِلَىٰ خُرُوجِهِ مِّن سَبِيلٍ ۝

ذٰلِكُمْ يَآئْتُهُ اِذَا دَعِيَ اللّٰهُ وَحَدّٰهُ كَفَرْتُمْ وَاِنَّ يُسْرٰرَكُمْ بِهٖ تُوْمَمُوْنَ فَاَلْحٰكُمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ۝

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ الْاٰيٰتِہٖ وَيُنزِلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ رِزْقًا وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَن يُنۡذِبُ ۝

فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيۡنَ لَهٗ الدِّيۡنَ وَلِكُوۡرَةِ الْكٰفِرِيۡنَ ۝

رَفِيۡعِ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ يَلۡقَى الرَّوۡمَ مِنۡ اَمۡرِهٖ عَلٰی مَنۡ يَّشَآءُ مِنۡ عِبَادِهٖ لِيُنۡذِرَ يَوْمَ السَّلٰوٰقِ ۝

يَوْمَ هُمۡ بِارۡرٰوۡنَ ؕ لَا يَخۡفٰى عَلٰی اللّٰهِ مِنْهُمۡ شٰیۡءٌ ۝ اَلۡيَمِيۡنَ الْمَلٰٓئِكَةُ الْيَوْمَ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝

- 1 यहाँ वह्नी को रूह कहा गया है क्योंकि जिस प्रकार रूह (आत्मा) मनुष्य के जीवन का कारण होती है वैसे ही प्रकाशना भी अन्तरात्मा को जीवित करती है।
- 2 अर्थात् प्रलय के दिन। (सहीह बुखारी: 4812)

प्रभुत्वशाली अल्लाह का।

17. आज प्रतिकार दिया जायेगा प्रत्येक प्राणी को उस के करतूत का। कोई अत्याचार नहीं है आज। वास्तव में अल्लाह अतिशीघ्र हिसाब लेने वाला है।
18. तथा आप सावधान कर दें उन को आगामी समीप दिन से जब दिल मुँह को आ रहे होंगे। लोग शोक से भरे होंगे। नहीं होगा अत्याचारियों का कोई मित्र न कोई सिफारशी जिस की बात मानी जाये।
19. वह जानता है आँखों की चोरी तथा जो (भेद) सीने छुपाते हैं।
20. अल्लाह ही निर्णय करेगा सत्य के साथ। तथा जिन को वह पुकारते हैं अल्लाह के अतिरिक्त वह कोई निर्णय नहीं कर सकते। निश्चय अल्लाह ही भली-भाँति सुनने-देखने वाला है।
21. क्या वह चले-फिरे नहीं धरती में ताकि देखते कि कैसा रहा उन का परिणाम जो इन से पूर्व थे? वह इन से अधिक थे बल में तथा अधिक चिन्ह छोड़ गये धरती में। तो पकड़ लिया अल्लाह ने उन को उन के पापों के कारण, और नहीं था उन के लिये अल्लाह से कोई बचाने वाला।
22. यह इस कारण हुआ कि उन के पास लाते थे हमारे रसूल खुली निशानियाँ, तो उन्होंने कुफ़ किया। अन्ततः पकड़ लिया उन्हें अल्लाह ने। वस्तुतः वह अति

الْيَوْمَ تُجْزَى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ لَا ظُلْمَ
الْيَوْمَ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

وَأَنْذَرُهُمْ يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ
كَاطْمِينٍ ۝ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ
يُطَاعُ ۝

يَعْلَمُ خَائِبَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ۝

وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ
دُونِهِ لَا يَقْضُونَ بِشَيْءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ
الْبَصِيرُ ۝

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا هُمْ
أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَنَارُوا فِي الْأَرْضِ فَاخَذَهُمْ
اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ ۝

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ
فَكَفَرُوا ۚ فَآخَذَهُمُ اللَّهُ إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ۝

शक्तिशाली घोर यातना देने वाला है।

23. तथा हम ने भेजा मूसा को अपनी निशानियों और हर प्रकार के प्रामाण के साथ।
24. फिरऔन और (उस के मंत्री) हामान तथा कारून के पास। तो उन्होंने ने कहा: यह तो बड़ा झूठा जादूगर है।
25. तो जब वह उन के पास सत्य लाया हमारी ओर से तो सब ने कहा: बध कर दो उन के पुत्रों को जो ईमान लाये हैं उस के साथ, तथा जीवित रहने दो उन की स्त्रियों को। और काफिरों का षड्यंत्र निष्फल (व्यर्थ) ही हुआ।^[1]
26. और कहा फिरऔन ने (अपने प्रमुखों से): मुझे छोड़ो, मैं बध कर दूँ मूसा को। और उसे चाहिये कि पुकारे अपने पालनहार को। वास्तव में मैं डरता हूँ कि वह बदल देगा तुम्हारे धर्म को^[2] अथवा पैदा कर देगा इस धरती (मिस्र) में उपद्रव।
27. तथा मूसा ने कहा: मैं ने शरण ली है अपने पालनहार तथा तुम्हारे पालनहार की प्रत्येक अहंकारी से जो ईमान नहीं रखता हिसाब के दिन पर।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ۝

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا سِحْرٌ كَذَّابٌ ۝

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِينَ إِلَّا فِي ضَلٰلٍ ۝

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَىٰ وَلْيَدْعُ رَبَّهُ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَنْ يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ ۝

وَقَالَ مُوسَىٰ إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ مِنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝

1 अर्थात् फिरऔन और उस की जाति का। जब मूसा (अलैहिस्सलाम) और उन की जाति बनी इस्राईल को कोई हानि नहीं हुई। इस से उन की शक्ति बढ़ती ही गई यहाँ तक कि वह पवित्र स्थान के स्वामी बन गये।

2 अर्थात् शिर्क तथा देवी-देवता की पूजा से रोक कर एक अल्लाह की इबादत में लगा देगा। जो उपद्रव तथा अशान्ति का कारण बन जायेगा और देश हमारे हाथ से निकल जायेगा।

28. तथा कहा एक ईमान वाले व्यक्ति ने फिरऔन के घराने के, जो छुपा रहा था अपना ईमान: क्या तुम बध कर दोगे एक व्यक्ति को कि वह कह रहा है: मेरा पालनहार अल्लाह है? जब कि वह तुम्हारे पास लाया है खुली निशानियाँ तुम्हारे पालनहार की ओर से? और यदि वह झूठा हो तो उसी के ऊपर है उन का झूठा और यदि सच्चा हो तो आ पड़ेगा वह कुछ जिसकी तुम्हें धमकी दे रहा है। वास्तव में अल्लाह मार्ग दर्शन नहीं देता उसे जो उल्लंघनकारी बहुत झूठा हो।

29. हे मेरी जाति के लोगो! तुम्हारा राज्य है आज, तुम प्रभावशाली हो धरती में, तो कौन हमारी रक्षा करेगा अल्लाह की यातना से यदि वह हम पर आ जाये? फिरऔन ने कहा: मैं तुम सब को वही समझा रहा हूँ जिसे मैं उचित समझता हूँ और तुम्हें सीधी ही राह दिखा रहा हूँ।

30. तथा उस ने कहा जो ईमान लाया: हे मेरी जाति! मैं तुम पर डरता हूँ (अगले) समुदायों के दिन जैसे (दिन^[1]) से।

31. नूह की जाति की जैसी दशा से, तथा आद और समूद की एवं जो उन के पश्चात् हुये। तथा अल्लाह नहीं चाहता कोई अत्याचार भक्तों के लिये।

وَقَالَ رَبُّ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ مِثْلَ يَوْمِ الْأَحْزَابِ ۝
 إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَنْ يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ وَإِنْ يَكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ وَإِنْ يَكُ صَادِقًا يُصِيبْكُمْ بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْمُؤْمِرِينَ ۝ كَذَّابٌ ۝

يَقَوْمَكُمْ الْمَلَائِكَةُ وَالْمَلَائِكَةُ فِي الْأَرْضِ فَمَنْ يَنْصُرُنَا مِنْ بَأْسِ اللَّهِ إِنْ جَاءَنَا قَالَ فِرْعَوْنُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَى وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا السَّبِيلَ الرِّشَادَ ۝

وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَقَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ مِثْلَ يَوْمِ الْأَحْزَابِ ۝

مِثْلَ دَابِ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَشُعُوبٍ وَقَوْمِ لُوطٍ وَمَنْ يُجَادِدِ اللَّهَ يُجَادِدْ لِنَفْسِهِ إِنَّ اللَّهَ يُغْنِي عَنِ الْبَشَرِ ۝

1 अर्थात् उन की यातना के दिन जैसे दिन से।

32. तथा हे मेरी जाति! मैं डर रहा हूँ
तुम पर एक - दूसरे को पुकारने के
दिन^[1] से।

وَيَقَوْمٍ إِنَّ إِخْفَافَ عَلَيْكُمْ يَوْمَ
التَّنَادِ ۝

33. जिस दिन तुम पीछे फिर कर
भागोगे, नहीं होगा तुम्हें अल्लाह से
कोई बचाने वाला। तथा जिसे अल्लाह
कुपथ कर दे तो उस का कोई पथ
प्रदर्शक नहीं।

يَوْمَ تُولَوْنَ مُدْبِرِينَ مِمَّا لَكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ
وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝

34. तथा आये यूसुफ़ तुम्हारे पास इस
से पूर्व खुले प्रमाणों के साथ, तो
तुम बराबर संदेह में रहे उस से जो
तुम्हारे पास लाये। यहाँ तक कि जब
वह मर गये तो तुम ने कहा कि
कदापि नहीं भेजेगा अल्लाह उन के
पश्चात् कोई रसूल।^[2] इसी प्रकार
अल्लाह कुपथ कर देता है। उसे जो
उल्लंघनकारी डाँवाडोल हो।

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِنْ قَبْلِ الْيَاقُوتِ فَمَا
رَأَيْتُمْ فِي شَيْءٍ مِمَّا جَاءَكُمْ بِهِ حَقٌّ إِذَا هَلَكَ فُلَانٌ
لَنْ يَبْعَثَ اللَّهُ مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا كَذَلِكَ يُضِلُّ
اللَّهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُرْتَابٍ ۝

35. जो झगड़ते हैं अल्लाह की आयतों में
बिना किसी ऐसे प्रमाण के जो उन के
पास आया हो। तो यह बड़े क्रोध की
बात है अल्लाह के समीप तथा उन के
समीप जो ईमान लाये हैं। इसी प्रकार
अल्लाह मुहर लगा देता है प्रत्येक
अहंकारी अत्याचारी के दिल पर।

إِلَّا الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آلِ اللَّهِ وَيَعْبُدُونَ سُلْطِينَ أَنَّهُمْ
كَوْمَقَاتِعِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ الَّذِينَ الْمُؤَاكِلَاتِ
يُطْبِعُ اللَّهُ عَلَى كُلِّ قَلْبٍ مُنْكَرًا جَبَّارًا ۝

36. तथा कहा फिरऔन ने कि हे हामान!
मेरे लिये बना दो एक उच्च भवन,
संभवतः मैं उन मार्गों तक पहुँच सकूँ।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا هَامَانَ ابْنِ بَنِي صَارِحَةَ الْعَلِيِّ ابْنَةَ
الْأَسْبَابِ ۝

1 अर्थात् प्रलय के दिन से जब भय के कारण एक-दूसरे को पुकारेंगे।

2 अर्थात् तुम्हारा आचरण ही प्रत्येक नबी का विरोध रहा है। इसीलिये तुम समझते थे कि अब कोई रसूल नहीं आयेगा।

37. आकाश के मार्गों तक ताकि मैं देखूँ
मुसा के पूज्य (उपास्य) को। और
निश्चय मैं उसे झूठा समझ रहा
हूँ। और इसी प्रकार शोभनीय बना
दिया गया फिरऔन के लिये उस का
दुष्कर्म तथा रोक दिया गया संमार्ग
से। और फिरऔन का षड्यंत्र विनाश
ही में रहा।
38. तथा उस ने कहा जो ईमान लाया: हे
मेरी जाति! मेरी बात मानो, मैं तुम्हें
सीधी राह बता रहा हूँ।
39. हे मेरी जाति! यह संसारिक जीवन
कुछ साम्यिक लाभ है। तथा वास्तव
में प्रलोक ही स्थायी निवास है।
40. जिस ने दुष्कर्म किया तो उस को
उसी के समान प्रतिकार दिया
जायेगा। तथा जो सुकर्म करेगा नर
अथवा नारी में से और वह ईमान
वाला (एकेश्वरवादी) हो तो वही
प्रवेश करेंगे स्वर्ग में। जीविका दिये
जायेंगे उस में अगणित।
41. तथा हे मेरी जाति! क्या बात है कि मैं
बुला रहा हूँ तुम्हें मुक्ति की ओर तथा
तुम बुला रहे हो मुझे नरक की ओर।
42. तुम मुझे बुला रहे हो ताकि मैं कुफ़्र
करूँ अल्लाह के साथ और साझी
बनाऊँ उस का उसे जिस का मुझे
कोई ज्ञान नहीं है। तथा मैं बुला रहा हूँ
तुम्हें प्रभावशाली अति क्षमी की ओर।
43. निश्चित है कि तुम जिस की ओर

سَبَّابِ السَّمَوَاتِ فَاطْلِمِ إِلَى الدُّمُولَى وَإِنِّي
لَكَلِمَةٌ كَاذِبَةٌ وَكَذَلِكَ زَيْنَ لِفِرْعَوْنَ سَوْءَ عَمَلِهِ
وَصَدَّ عَنِ السَّبِيلِ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي
تَبَابٍ ۝

وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَوْمَ الرَّيْعُونِ أَهْدِكُمْ سَبِيلَ
الرِّشَادِ ۝

يَقُولُ إِنَّمَا هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَإِنَّ
الْآخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ۝

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا وَمَنْ
عَمِلَ صَالِحًا مِمَّنْ ذَكَرْنَا وَأَنْتُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَأُولَئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْرُونَ فِيهَا
بِعَيْنٍ حِسَابٍ ۝

وَيَقُولُ مَلَأْتُ أَدْعُوكُمْ إِلَى الْجَهَنَّمَ وَتَدْعُونَنِي
إِلَى النَّارِ ۝

تَدْعُونَنِي لِأَكْفُرَ بِاللَّهِ وَأَشْرِكَ بِهِ مَا لَيْسَ
لِي بِهِ عِلْمٌ وَأَنَا أَدْعُوكُمْ إِلَى الْعَزِيمِ وَالْغَفْلَةِ ۝

لَا جُورَ لِمَنْ تَدْعُونَنِي إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ فِي

मुझे बुला^[1] रहे हो वह पुकारने योग्य नहीं है न लोक में न परलोक में। तथा हमें जाना है अल्लाह ही की ओर, तथा वास्तव में अतिक्रमी ही नारकी हैं।

44. तो तुम याद करोगे जो मैं कह रहा हूँ, तथा मैं समर्पित करता हूँ अपना मामला अल्लाह को। वास्तव में अल्लाह देख रहा है भक्तों को।

45. तो अल्लाह ने उसे सुरक्षित कर दिया उन के षडयंत्र की बुराईयों से। और घेर लिया फिरऔनियों को बुरी यातना ने।

46. वे^[2] प्रस्तुत किये जाते हैं अग्नि पर प्रातः तथा संध्या। तथा जिस दिन प्रलय स्थापित होगी (यह आदेश होगा) कि डाल दो फिरऔनियों को कड़ी यातना में।

47. तथा जब वह झगड़ेंगे अग्नि में, तो कहेंगे निर्बल उन से जो बड़े बन कर रहे: हम तुम्हारे अनुयायी थे, तो क्या तुम दूर करोगे हम से अग्नि का कुछ भाग?

48. वे कहेंगे जो बड़े बन कर रहे: हम सब इसी में हैं। अल्लाह निर्णय कर

الَّذِينَ يَدْعُونَ إِلَى الْإِسْرَةِ وَأَنْ مَرْوَنًا إِلَى اللَّهِ
وَأَنْ السُّرِفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ

فَسَتَذْكُرُونَ مَا أَقُولُ لَكُمْ وَأَفَؤُصُّ أَمْرِي إِلَى
اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۖ

فَوَقَّهَ اللَّهُ سَيِّئَاتٍ مَّا مَكَرُوا وَوَحَىٰ
بِالْفُرْعُونَ سُوءَ الْعَذَابِ ۖ

الَّذِينَ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا وَيَوْمَ
تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ
أَشَدَّ الْعَذَابِ ۖ

وَإِذْ يَتَحَفَّضُونَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضُّعْفَاءُ
لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا
فَهَلْ أَنْتُمْ مُنْعُونَ عَنَّا نَصِيبًا مِّنَ النَّارِ ۖ

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُلٌّ فِيهَا إِنَّ اللَّهَ

1 क्योंकि लोक तथा परलोक में कोई सहायता नहीं कर सकते। (देखिये: सूरह फ़ातिर, आयत: 140, तथा सूरह अहक़ाफ़, आयत: 5)

2 हदीस में है कि जब तुम में से कोई मरता है तो (क़ब्र में) उस पर प्रातः संध्या उस का स्थान प्रस्तुत किया जाता है। (अर्थात् स्वर्गी है तो स्वर्ग और नारकी है तो नरक)। और कहा जाता है कि यही प्रलय के दिन तेरा स्थान होगा। (सहीह बुख़ारी: 1379, मुस्लिम: 2866)

चुका है भक्तों (बंदों) के बीच।

49. तथा कहेंगे जो अग्नि में है नरक के रक्षकों से: अपने पालनहार से प्रार्थना करो कि हम से हल्की कर दे किसी दिन कुछ यातना।
50. वह कहेंगे: क्या नहीं आये तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल खुले प्रमाण ले कर? वे कहेंगे क्यों नहीं! वह कहेंगे तो तुम ही प्रार्थना करो। और काफ़िरों की प्रार्थना व्यर्थ ही होगी।
51. निश्चय हम सहायता करेंगे अपने रसूलों की तथा उन की जो ईमान लायें, संसारिक जीवन में, तथा जिस दिन^[1] साक्षी खड़े होंगे।
52. जिस दिन नहीं लाभ पहुँचायेगी अत्याचारियों को उन की क्षमा याचना। तथा उन्हीं के लिये धिक्कार और उन्हीं के लिये बुरा घर है।
53. तथा हम ने प्रदान किया मूसा को मार्ग दर्शन और हम ने उत्तराधिकारी बनाया ईसाईल की संतान को पुस्तक (तौरात) का।
54. जो मार्ग दर्शन तथा शिक्षा थी समझ वालों के लिये।
55. तो (हे नबी!) आप धैर्य रखें। वास्तव में अल्लाह का वचन^[2] सत्य है। तथा

قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ۝

وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ۝

قَالُوا أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۚ قَالُوا بَلَىٰ قَالُوا فَاذْعَبُوا وَمَا دُعَاؤُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ۝

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظَّالِمِينَ مَعَذَرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَىٰ وَأَوْرَثْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ ۝

هُدَىٰ وَذِكْرَىٰ لِأُولَى الْأَلْبَابِ ۝

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَاسْتَغْفِرْ

1 अर्थात् प्रलय के दिन, जब अम्बिया और फ़रिश्ते गवाही देंगे।

2 नबियों की सहायता करने का।

क्षमा माँगें अपने पाप^[1] की। तथा पवित्रता का वर्णन करते रहें अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ संध्या और प्रातः।

56. वास्तव में जो झगड़ते हैं अल्लाह की आयतों में बिना किसी प्रमाण के जो आया^[2] हो उन के पास, तो उन के दिलों में बड़ाई के सिवा कुछ नहीं है, जिस तक वह पहुँचने वाले नहीं हैं। अतः आप अल्लाह की शरण लें। वास्तव में वही सब कुछ सुनने-जानने वाला है।

57. निश्चय आकाशों तथा धरती को पैदा करना अधिक बड़ा है मनुष्य को पैदा करने से। परन्तु अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते।^[3]

58. तथा समान नहीं होता अंधा तथा आँख वाला। और न जो ईमान लाये और सत्कर्म किये हैं और दुष्कर्मी। तुम (बहुत) कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो।

59. निश्चय प्रलय आनी ही है। जिस में कोई संदेह नहीं। परन्तु अधिकतर लोग ईमान (विश्वास) नहीं रखते।

60. तथा कहा है तुम्हारे पालनहार ने कि

لِذُنُوبِكُمْ وَسَيَعْبُرْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ۝

إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ يَعْتَبِرُونَ
سُلْطِينَ أَتُهمُّ إِنْ فِي صُدُورِهِمُ الْأَكْبَرُ
مَاهُمْ بِالْبَغْيِ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ
إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ
النَّاسِ وَلٰكِنْ اَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصَّالِحٰتِ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۝ فَاَلَمْ يَكُنْ لَكُمْ
اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝

إِنَّ السَّاعَةَ لَأَيَّمَةٌ لَّارْيَبَ فِيْهَا وَلٰكِنْ اَكْثَرُ
النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُوْنِيْ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ۝

1 अर्थात भूल-चूक की। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: मैं दिन में 70 बार क्षमा माँगता हूँ। और 70 बार से अधिक तौबा करता हूँ। (सहीह बुखारी: 6307)

जब कि अल्लाह ने आप को निर्दोष (मासूम) बनाया है।

2 अर्थात बिना किसी ऐसे प्रमाण के जो अल्लाह की ओर से आया हो। उन के सब प्रमाण वे हैं जो उन्होंने अपने पूर्वजों से सीखे हैं। जिन की कोई वास्तविकता नहीं है।

3 और मनुष्य के पुनः जीवित किये जाने का इन्कार करते हैं।

मुझी से प्रार्थना^[1] करो, मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करूँगा। वास्तव में जो अभिमान (अहंकार) करेंगे मेरी इबादत (वंदना-प्रार्थना) से तो वह प्रवेश करेंगे नरक में अपमानित हो कर।

61. अल्लाह ही ने तुम्हारे लिये रात्रि बनाई ताकि तुम विश्राम करो उस में, तथा दिन को प्रकाशमान बनाया।^[2] वस्तुतः अल्लाह बड़ा उपकारी है लोगों के लिये। किन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञ नहीं होते।
62. यही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, प्रत्येक वस्तु का रचयिता, उत्पत्तिकार। नहीं है कोई (सच्चा) वंदनीय उस के सिवा, फिर तुम कहाँ बहके जाते हो?
63. इसी प्रकार बहका दिये जाते हैं वह जो अल्लाह की आयतों को नकारते हैं।
64. अल्लाह ही है जिस ने बनाया तुम्हारे लिये धरती को निवास स्थान तथा आकाश को छत, और तुम्हारा रूप बनाया तो सुन्दर रूप बनाया। तथा तुम्हें जीविका प्रदान की स्वच्छ चीज़ों से। वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, तो शुभ है अल्लाह सर्वलोक का पालनहार।
65. वह जीवित है, कोई (सच्चा) वंदनीय नहीं है उस के सिवा। अतः विशेष रूप

إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي
سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ ذُخْرَيْنَ ۗ

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ
وَالنَّهَارَ مُبْجِرًا إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى
النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَر النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۝

ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ لَّا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
فَأَلَّنْ تَوْفَكُونَ ۝

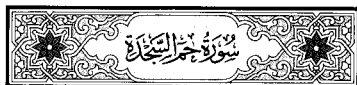
كَذَلِكَ يُؤْفِكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ
يَجْحَدُونَ ۝

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ
بِنَاءً وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ
وَمَرَرَكُمْ مِّنَ الظُّلُمَاتِ ذَلِكُمُ اللَّهُ
رَبُّكُمْ فَتَبَرَّكُوا اللَّهُ رَبَّ الْعَالَمِينَ ۝

هُوَ الْحَيُّ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ

- 1 हदीस में है कि प्रार्थना ही वंदना है। फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यही आयत पढ़ी। (तिर्मिज़ी: 2969) इस हदीस की सनद हसन है।
- 2 ताकि तुम जीविका प्राप्त करने के लिये दौड़ धूप करो।

सूरह हा मीम सज्दा - 41



सूरह हा मीम सज्दा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 54 आयतें हैं।

- इस सूरह का नाम (हा, मीम सज्दा) है। क्योंकि इस का आरंभ अक्षर: (हा, मीम) से हुआ है। और आयत 37 में केवल अल्लाह ही को सज्दा करने का आदेश दिया गया है। और इस सूरह की तीसरी आयत में (फुस्सिलत) का शब्द आया है। इसलिये इस का दूसरा नाम (फुस्सिलत) भी है।
- इस के आरंभ में कुरआन के पहचानने पर बल देते हुये सोच-विचार की दावत, तथा वही और रिसालत को झुठलाने पर यातना की चेतावनी दी गई है। फिर अल्लाह के विरोधियों के दुष्परिणाम को बताया गया है।
- आयत 30 से 36 तक उन्हें स्वर्ग की शुभसूचना दी गई है जो अपने धर्म पर स्थित हैं। और उन्हें विरोधियों को क्षमा कर देने के निर्देश दिये गये हैं। फिर आयत 40 तक अल्लाह के अकेले पूज्य होने तथा मुर्दा को जीवित करने का सामर्थ्य रखने की निशानियाँ प्रस्तुत की गयी हैं।
- आयत 41 से 46 तक कुरआन के साथ उस के विरोधियों के व्यवहार तथा उस के दुष्परिणाम को बताया गया है। फिर 51 तक शिर्क करने और प्रलय के इन्कार पर पकड़ की गयी है।
- अन्त में कुरआन के विरोधियों के संदेहों को दूर करते हुये यह भविष्यवाणी की गई है कि जल्द ही कुरआन के सच्च होने की निशानियाँ विश्व में सामने आ जायेंगी।

भाष्यकारों ने लिखा है कि जब मक्का में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अनुयायियों की संख्या प्रतिदिन बढ़ने लगी तो कुरैश के प्रमुखों ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास एक व्यक्ति उतबा पुत्र रबीआ को भेजा। उस ने आकर आप से कहा कि यदि आप इस नये आमंत्रण से धन चाहते हैं तो हम आप के लिये धन एकत्र कर देंगे। और यदि प्रमुख और बड़ा बनना चाहते हैं तो हम तुम्हें अपना प्रमुख बना लेंगे। और यदि किसी सुन्दरी से विवाह करना चाहते हों तो हम उस की भी व्यवस्था कर देंगे। और यदि आप पर भूत-प्रेत का प्रभाव हो तो हम उस का उपचार करा देंगे। उतबा की यह बातें सुन कर आप (सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम) ने यही सूरह उसे सुनायी जिस से प्रभावित हो कर वापिस आया। और कहा कि जो बात वह पेश करता है वह जादू-ज्योतिष और काव्य-कविता नहीं है। यह बातें सुन कर कुरैश के प्रमुखों ने कहा कि तू भी उस के जादू के प्रभाव में आ गया। उस ने कहा: मैं ने अपना विचार बता दिया अब तुम्हारे मन में जो भी आये वह करो। (सीरते इब्ने हिशाम- 1 | 313, 314)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा, मीमा।
2. अवतरित है अत्यन्त कृपाशील दयावान् की ओर से।
3. (यह ऐसी) पुस्तक है सविस्तार वर्णित की गई है जिस की आयतों कुर्आन अर्बी (भाषा में) है उन के लिये जो ज्ञान रखते हों।^[1]
4. वह शुभसूचना देने तथा सचेत करने वाला है। फिर भी मुँह फेर लिया है उन में से अधिकतर ने, और सुन नहीं रहे हैं।
5. तथा उन्होंने कहा:^[2] हमारे दिल आवरण (पर्दे) में है उस से आप हमें जिस की ओर बुला रहे हैं। तथा हमारे कानों में बोझ है तथा हमारे और आप के बीच एक आड़ है। तो आप अपना काम करें और हम

حَمْدٌ

تَنْزِيلٌ مِنَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

كِتَابٌ فَصَّلَتْ آيَاتُهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ

بَشِيرًا وَنَذِيرًا فَأَعْرَضَ الْأَكْثَرُ مِنْهُمْ فَوهُمْ لَا يَسْمَعُونَ

وَقَالُوا أَأَلْقَىٰ بِآيَاتِنَا الْكُفْرَ وَمَا نَدْعُونَكَ إِلَيْهِ وَفِي
آذَانِنَا وَقُورًا وَمَنْ بَيْنِنَا وَبَيْنَكَ حِجَابٌ فَاغْمَلْ
إِنَّا نَعْلَمُونَ

1 अर्बी भाषा तथा शैली का।

2 अर्थात् मक्का के मुश्रिकों ने कहा कि यह एकेश्वरवाद की बात हमें समझ में नहीं आती। इसलिये आप हमें हमारे धर्म पर ही रहने दें।

अपना काम कर रहे हैं।

6. आप कह दें कि मैं तो एक मनुष्य हूँ तुम्हारे जैसा। मेरी ओर वह्नी की जा रही है कि तुम्हारा वंदनीय (पूज्य) केवल एक ही हा अतः सीधे हा जाओ उसी की ओर तथा क्षमा माँगो उस से। और विनाश है मुश्रिकों के लिये।
7. जो ज़कात नहीं देते तथा आखिरत को (भी) नहीं मानते।
8. निःसंदेह जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन्ही के लिये अनन्त प्रतिफल है।
9. आप कहें कि क्या तुम उसे नकारते हो जिस ने पैदा किया धरती को दो दिन में, और बनाते हो उस के साझी? वही है सर्वलोक का पालनहार।
10. तथा बनाये उस (धरती) में पर्वत उस के ऊपर तथा बरकत रख दी उस में। और अंकन किया उस में उस के वासियों के आहारों का चार^[1] दिनों में समान रूप^[2] से प्रश्न करने वालों के लिये।
11. फिर आकर्षित हुआ आकाश की ओर तथा वह धुवाँ था। तो उसे तथा धरती को आदेश दिया कि तुम दोनों आ जाओ प्रसन्न होकर अथवा दबाव से। तो दोनों ने कहा हम प्रसन्न होकर आ गये।
12. तथा बना दिया उन को सात आकाश

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ
وَاحِدٌ فَاسْتَعِينُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفِرُوا
لَهُ وَاللَّهُ شَكِيرٌ ۝

الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ
هُمْ كَافِرُونَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ
غَيْرُ مَسْئُورٍ ۝

قُلْ إِنَّمَا لَكُمْ الْفَرُوقُ بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي
يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ أَندَادًا ذَلِكَ رَبُّ
الْعَالَمِينَ ۝

وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيًا مِنْ فَوْقِهَا وَبَرَكًا فِيهَا وَقَدَّرَ
فِيهَا أَنْهَارًا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ سَوَاءً
لِلنَّاسِ يَلِينٌ ۝

ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ
لَهَا وَإِلَى الْأَرْضِ انثَبِي طَوْعًا أَوْ كَرْهًا
قَالَتَىٰ أَتَيْتَا طَائِعِينَ ۝

فَقَضَاهُنَّ سَبْعَ سَمَوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ

- 1 अर्थात धरती को पैदा करने और फैलाने के कुल चार दिन हुये।
- 2 अर्थात धरती के सभी जीवों के आहार के संसाधन की व्यवस्था कर दी। और यह बात बता दी ताकि कोई प्रश्न करे तो उसे इस का ज्ञान करा दिया जाये।

दो दिन में। तथा वही कर दिया प्रत्येक आकाश में उस का आदेश। तथा हम ने सुसज्जित किया समीप (संसार) के आकाश को दीपों (तारों) से तथा सुरक्षा के^[1] लिये। यह अति प्रभावशाली सर्वज्ञ की योजना है।

13. फिर भी यदि वह विमुख हों तो आप कह दें कि मैं ने तुम्हें सावधान कर दिया कड़ी यातना से जो आद तथा समूद की कड़ी यातना जैसी होगी।

14. जब आये उन के पास उन के रसूल उन के आगे तथा उन के पीछे^[2] से कि न इबादत (वंदना) करो अल्लाह के सिवा की। तो उन्होंने कहा: यदि हमारा पालनहार चाहता तो किसी फरिश्ते को उतार देता^[3] अतः तुम जिस बात के साथ भेजे गये हो हम उसे नहीं मानते।

15. रहे आद तो उन्होंने अभिमान किया धरती में अवैधा तथा कहा कि कौन हम से अधिक है बल में? क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह, जिस ने उन को पैदा किया है उन से अधिक है बल में, तथा हमारी आयतों को नकारते रहे।

16. अन्ततः हम ने भेज दी उन पर प्रचण्ड वायु कुछ अशुभ दिनों में।

سَاءَ أَمْرًا وَزَيْنًا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِعِهِمْ وَحَفَظًا
ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنْذَرْتُكُمْ صِغَةَ مِثْلَ صِغَةِ
عَادٍ وَثَمُودَ ۝

إِذْ جَاءَهُمُ الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ
خَلْفِهِمْ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ قَالُوا لَوْ شَاءَ رَبُّنَا لَأَنْزَلَ
مَلَائِكَةً فَإِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ لَكَاذِبُونَ ۝

فَأَمَّا عَادُ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ
وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً أُولَئِكَ زُرْنَا إِنَّ اللَّهَ الَّذِي
خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَكَانُوا بِآيَاتِنَا
يَجْحَدُونَ ۝

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ مِجَاصَ صَوَّافِيٍّ أَيَّامٍ مَخْسَاتٍ

1 अर्थात शैतानों से रक्षा के लिये। (देखिये: सूरह साफ़ात, आयत: 7 से 10 तक)।

2 अर्थात प्रत्येक प्रकार से समझाते रहे।

3 वे मनुष्य को रसूल मानने के लिये तय्यार नहीं थे। (जिस प्रकार कुछ लोग जो रसूल को मानते हैं पर वे उन्हें मनुष्य मानने को तय्यार नहीं हैं)। (देखिये: सूरह अनआम, आयत: 9-10, सूरह मुमिनून, आयत: 24)

ताकि चखायें उन्हें अपमानकारी यातना संसारिक जीवन में। और आखिरत (परलोक) की यातना अधिक अपमानकारी है। तथा उन्हें कोई सहायता नहीं दी जायेगी।

لِنُنْذِرَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْثَرُ لَهُمْ لَأَبْصُرُونَ ۝

17. और रही समूद तो हम ने उन्हें मार्ग दिखाया फिर भी उन्होंने अंधे बने रहने को मार्ग दर्शन से प्रिय समझा। अन्ततः पकड़ लिया उन को अपमानकारी यातना की कड़क ने उस के कारण जो वह कर रहे थे।

وَأَنذَرْتَهُمْ فَمَا تَوَدَّ هَدَيْتَهُمْ فَأَسْتَجَبُوا لِعَمَىٰ عَلَىٰ الْهُدَىٰ
فَأَخَذْنَا مِنْهُمُ صُغِيرَةَ الْعَذَابِ الْهُونِ بِمَا كَانُوا
يَكْفُرُونَ ۝

18. तथा हम ने बचा लिया उन को जो ईमान लाये तथा (अवैज्ञा से) डरते रहे।

وَقَعَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝

19. और जिस दिन अल्लाह के शत्रु नरक की ओर एकत्र किये जायेंगे तो वह रोक लिये जायेंगे।

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ
يُبْزَعُونَ ۝

20. यहाँ तक की जब आजायेंगे उस (नरक) के पास तो साक्ष्य देंगे उन पर उन के कान तथा उन की आँखें और उन की खालें उस कर्म का जो वह किया करते थे।

حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ
وَأَبْصَارُهُمْ وُجُودُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

21. और वे कहेंगे अपनी खालों से: क्यों साक्ष्य दिया तुम ने हमारे विरुद्ध? वह उत्तर दैगी कि हमें बोलने की शक्ति प्रदान की है उस ने जिस ने प्रत्येक वस्तु को बोलने की शक्ति दी है। तथा उसी ने तुम्हें पैदा किया प्रथम बार और उसी की ओर तुम सब फेरे जा रहे हो।

وَقَالُوا الْجُودُودُ هُمْ لِمَ شَهِدْتُمْ عَلَيْنَا قَالُوا
أَنطَقَتَ اللَّهُ الَّذِي أَنطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ
خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَرَأَيْبَهُ تُرْجَعُونَ ۝

22. तथा तुम (पाप करते समय^[1]) छुपते नहीं थे कि कहीं साक्ष्य न दें तुम पर तुम्हारे कान तथा तुम्हारी आँख एवं तुम्हारी खालें। परन्तु तुम समझते रहे कि अल्लाह नहीं जानता उस में से अधिकतर बातों को जो तुम करते हो।
23. इसी कुविचार ने जो तुम ने किया अपने पालनहार के विषय में तुम्हें नाश कर दिया। और तुम विनाशों में हो गये।
24. तो यदि वे धैर्य रखें तब भी नरक ही उन का आवास है। और यदि वे क्षमा माँगें तब भी वे क्षमा नहीं किये जायेंगे।
25. और हम ने बना दिये उन के लिये ऐसे साथी जो शोभनीय बना रहे थे उन के लिये उन के अगले तथा पिछले दुष्कर्माँ को। तथा सिद्ध हो गया उन पर अल्लाह (की यातना) का वचन उन समुदायों में जो गुज़र गये इन से पूर्व जिन्नों तथा मनुष्यों में से। वास्तव में वही क्षतिग्रस्त थे।
26. तथा काफ़िरों ने कहा^[2] कि इस कुर्आन को न सुनो। और कोलाहल (शोर) करो उस (के सुनाने) के समय। सम्भवतः तुम प्रभुत्वशाली हो जाओ।

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَرْوُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ
سَمْعُكُمْ وَلَا أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُودُكُمْ وَلَكِنْ كُنْتُمْ
أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِمَّا تَعْمَلُونَ ۝

وَذَلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي كُنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرْتُمُوهُ
فَأَصْبَحْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝

فَإِنْ يَصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ وَإِنْ يَسْتَعْتِبُوا
فَمَا لَهُمْ مِنَ الْمُعْتَبِينَ ۝

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا لَهُمْ مَا بَيْنَ
أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ
فِي أَسْمِهِمْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنَّةِ
وَالْإِنْسِ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ۝

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَأَسْمَعُوا هَذَا الْقُرْآنَ
وَالْعُرَافِينَ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُونَ ۝

- 1 आदरणीय अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि खाना कौबा के पास एक घर में दो कुरैशी तथा एक सकफ़ी अथवा दो सकफ़ी और एक कुरैशी थे। तो एक ने दूसरे से कहा कि तुम समझते हो कि अल्लाह हमारी बातें सुन रहा है? किसी ने कहा: यदि कुछ सुनता है तो सब कुछ सुनता है। उसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी: 4816, 4817, 7521)
- 2 मक्का के काफ़िरों ने जब देखा कि लोग कुर्आन सुन कर प्रभावित हो रहे हैं तो उन्होंने यह योजना बनायी।

27. तो हम अवश्य चखायेंगे उन को जो काफिर हो गये कड़ी यातना और अवश्य उन को कुफल देंगे उस दुष्कर्म का जो वे करते रहे।

28. यह अल्लाह के शत्रुओं का प्रतिकार नरक है। उन के लिये उस में स्थायी घर होंगे उस के बदले जो हमारी आयतों को नकार रहे हैं।

29. तथा वह कहेंगे जो काफिर हो गये कि हे हमारे पालनहार! हमें दिखा दे उन को जिन्होंने हमें कुपथ किया है जिन्नों तथा मनुष्यों में से। ताकि हम रौंद दें उन दोनों को अपने पैरों से। ताकि वह दोनों अधिक नीचे हो जायें।

30. निश्चय जिन्होंने कहा कि हमारा पालनहार अल्लाह है फिर इसी पर स्थित रह^[1] गये तो उन पर फरिश्ते उतरते हैं^[2] कि भय न करो, और न उदासीन रहो, तथा उस स्वर्ग से प्रसन्न हो जाओ जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है।

31. हम तुम्हारे सहायक हैं संसारिक जीवन में तथा परलोक में, और तुम्हारे लिये उस (स्वर्ग) में वह चीज़ है जो तुम्हारा मन चाहे तथा उस में तुम्हारे लिये वह है जिस की तुम माँग करोगे।

32. अतिथि-सत्कार स्वरूप अति क्षमी दयावान् की ओर से।

فَلَنذِيْقَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا
وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾

ذَٰلِكَ جَزَاءُ عَذَابِ اللَّهِ الشَّارِعُ لَهُمْ فِيهَا
دَارُ الْخُلْدِ جَزَاءً لِّمَا كَانُوا يَأْتِيْنَ
بِجَحْدُونَ ﴿٢٨﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الَّذِيْنَ اصْطَلَمْنَا
مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ نَجْعَلْهُنَّ حَتَّ أَقْدَامِنَا
لِيَكُونَا مِنَ الْاسْقَلِيْنَ ﴿٢٩﴾

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ
عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ الْآتِفَاتُ وَلَا تَحْزَنُوا وَلَا يَبْسُوْا
بِالْحَبْطِ الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٣٠﴾

مَنْ أَوْلَيْكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ
وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهَى أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدْعُونَ ﴿٣١﴾

نَزَّلْنَا مِنْ غَفْوَرٍ رِّجِيمًا ﴿٣٢﴾

1 अर्थात् प्रत्येक दशा में आज्ञा पालन तथा एकेश्वरवाद पर स्थिर रहे।

2 उन के मरण के समय।

33. और किस की बात उस से अच्छी होगी जो अल्लाह की ओर बुलाये तथा सदाचार करे। और कहे कि मैं मुसलमानों में से हूँ।
34. और समान नहीं होते पुण्य तथा पाप, आप दूर करें (बुराई को) उस के द्वारा जो सर्वोत्तम हो। तो सहसा आप के तथा जिस के बीच बैर हो मानो वह हार्दिक मित्र हो गया।^[1]
35. और यह गुण उन्हीं को प्राप्त होता है जो सहन करें, तथा उन्हीं को होता है जो बड़े भाग्यशाली हों।
36. और यदि आप को शैतान की ओर से कोई संशय हो तो अल्लाह की शरण लें। वास्तव में वही सब कुछ सुनने-जानने वाला है।
37. तथा उस की निशानियों में से है रात्रि तथा दिवस तथा सूर्य तथा चन्द्रमा, तुम सज्दा न करो सूर्य तथा चन्द्रमा को। और सज्दा करो उस अल्लाह को जिस ने पैदा किया है उन को, यदि तुम उसी (अल्लाह) की इबादत (वन्दना) करते हो।^[2]

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ
صَالِحًا وَقَالَ إِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٣﴾

وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ادْفَع بِالَّذِي هِيَ
أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ
كَانَ وَدَىٰ حِمِيمًا ﴿٣٤﴾

وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَمَا يُلْقِيهَا
إِلَّا ذُو حِظٍّ عَظِيمٍ ﴿٣٥﴾

وَأَمَّا يُتْرَعْتَكَ مِنَ الشَّيْطَانِ تَرَعٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ
إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٦﴾

وَمِنَ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ لَا سَجْدُوا
لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ
إِن كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿٣٧﴾

1 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को तथा आप के माध्यम से सर्वसाधारण मुसलमानों को यह निर्देश दिया गया है कि बुराई का बदला अच्छाई से तथा अपकार का बदला उपकार से दें। जिस का प्रभाव यह होगा कि अपना शत्रु भी हार्दिक मित्र बन जायेगा।

2 अर्थात् सच्चा वंदनीय (पूज्य) अल्लाह के सिवा कोई नहीं है। यह सूर्य, चन्द्रमा और अन्य आकाशीय ग्रहें अल्लाह के बनाये हुये हैं। और उसी के आधीन हैं। इसलिये इन को सज्दा करना व्यर्थ है। और जो ऐसा करता है वह अल्लाह के साथ उस की बनाई हुई चीज़ को उस का साझी बनाता है जो शिर्क और

38. तथा यदि वह अभिमान करें तो जो (फ़रिश्ते) आप के पालनहार के पास हैं वह उस की पवित्रता का वर्णन करते रहते हैं रात्रि तथा दिवस में, और वह थकते नहीं हैं।

فَإِن اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ
بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْأَمُونَ ۝

39. तथा उस की निशानियों में से है कि आप देखते हैं धरती को सहमी हुई। फिर जैसे ही हम ने उस पर जल बरसाया तो वह लहलहाने लगी तथा उभर गई। निश्चय जिस ने जीवित किया है उसे अवश्य वही जीवित करने वाला है मुर्दा को। वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।

وَمِنَ آيَاتِهِ أَن تَرَى الْأَرْضَ خَاشِعَةً وَأَإِنزَلْنَا
عَلَيْهَا الْمَاءَ أَهْزَتْ وَرَبَّتْ إِنَّ الَّذِي أَحْيَاهَا لَمُجِي
الْمَوْتِ إِنَّهُ عَلَّ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

40. जो टेढ़ निकालते हैं हमारी आयतों में वह हम पर छुपे नहीं रहते। तो क्या जो फेंक दिया जायेगा अग्नि में उत्तम है अथवा जो निर्भय हो कर आयेगा प्रलय के दिन? करो जो चाहो, वास्तव में वह जो तुम करते हो उसे देख रहा है।^[1]

إِنَّ الَّذِينَ يُجَادُونَ فِي الْبَيْتِ الْكَافِرِينَ عَالِمَاتٌ
أَقَمْنَ بُرْجًا فِي النَّارِ خَيْرًا مِّنْ يَّأْتِي أُمَّتَهُمْ
الْقِيمَةَ أَعْلَمُوا مَا سُئِلُوا إِنَّهُمْ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

41. निश्चय जिन्होंने कुफ़र कर दिया इस शिक्षा (क़ुरआन) के साथ जब आ गई उन के पास। और सच्च यह है कि यह एक अति सम्मानित पुस्तक है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ
وَإِنَّهُ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ ۝

अक्षम्य पाप तथा अन्याय है। सज्दा करना इबादत है। जो अल्लाह ही के लिये विशेष है। इसीलिये कहा है कि यदि अल्लाह ही की इबादत करते हो तो सज्दा भी उसी के लिये करो। उस के सिवा कोई ऐसा नहीं जिसे सज्दा करना उचित हो। क्योंकि सब अल्लाह के बनाये हुये हैं सूर्य हो या कोई मनुष्य। सज्दा आदर के लिये हो या इबादत (वंदना) के लिये। अल्लाह के सिवा किसी को भी सज्दा करना अवैध तथा शिर्क है जिस का परिणाम सदैव के लिये नर्क है। आयत 38 पूरी कर के सज्दा करें।

1 अर्थात् तुम्हारे मनमानी करने का कुफल तुम्हें अवश्य देगा।

42. नहीं आ सकता झूठ इस के आगे से और न इस के पीछे से। उतरा है तत्वज्ञ प्रशंसित (अल्लाह) की ओर से।
43. आप से वही कहा जा रहा है जो आप से पूर्व रसूलों से कहा गया।^[1] वास्तव में आप का पालनहार क्षमा करने (तथा) दुःखदायी यातना देने वाला है।
44. और यदि हम इसे बनाते अर्बी (के अतिरिक्त किसी) अन्य भाषा में तो वह अवश्य कहते कि क्यों नहीं खोल दी गई उस की आयतें? यह क्या कि (पुस्तक) ग़ैर अर्बी और (नबी) अर्बी? आप कह दें कि वह उन के लिये जो ईमान लाये मार्गदर्शन तथा आरोग्यकर है। और जो ईमान न लायें उन के कानों में बोझ है और वह उन पर अंधापन है। और वही पुकारे जा रहे हैं दूर स्थान से।^[2]
45. तथा हम प्रदान कर चुके हैं मूसा को पुस्तक (तौरात)। तो उस में भी विभेद किया गया, और यदि एक बात पहले ही से निर्धारित न होती^[3] आप के पालनहार की ओर से, तो निर्णय कर दिया जाता उन के बीच। निःसंदेह वह उस के विषय में संदेह में ड़ाँवाडोल है।

لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ
تَنْزِيلٌ مِنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ﴿٤٢﴾

مَا يَقَالَ لَكَ الْإِمَامُ قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ
إِنْ رَبِّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ لِرَبِّكَ وَعِقَابٍ أَلِيمٍ ﴿٤٣﴾

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا عَجَبِيًّا لَقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ
آيَاتُهُ أَءِذَا وَعِيَ قُلُوبَهُ لَدِينِ الْمُنَافِقِينَ
هُدًى وَبَيِّنَاتٍ وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي إِذْنِهِمْ
وَقُرْآنَهُمْ عَلَيْهِمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ يُنَادُونَ مِنْ مَكَانٍ
بَعِيدٍ ﴿٤٤﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَآخْتَلَفَ فِيهِ
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَفُضِيَ
بَيْنَهُمْ وَاللَّهُ لَفِي شَكِّ مِمَّنْ مَرِيِبٍ ﴿٤٥﴾

1 अर्थात् उनको जादूगर झूठा तथा कवि इत्यादि कहा गया। (देखिये: सूरह, ज़ारियात आयत: 52, 53)

2 अर्थात् कर्तुआन से प्रभावित होने के लिये ईमान आवश्यक है इस के बिना इस का कोई प्रभाव नहीं होता।

3 अर्थात् प्रलय के दिन निर्णय करने की। तो संसार ही में निर्णय कर दिया जाता और उन्हें कोई अवसर नहीं दिया जाता। (देखिये: सूरह फातिर, आयत: 45)

46. जो सदाचार करेगा तो वह अपने ही लाभ के लिये करेगा। और जो दुराचार करेगा तो उस का दुष्परिणाम उसी पर होगा। और आप का पालनहार तनिक भी अत्याचार करने वाला नहीं है भक्तों पर।^[1]

47. उसी की ओर फेरा जाता है प्रलय का ज्ञान। तथा नहीं निकलते कोई फल अपने गाभों से और नहीं गर्भ धारण करती कोई मादा, और न जन्म देती है, परन्तु उस के ज्ञान से। और जिस दिन वह पुकारेगा उन को कि कहाँ हैं मेरे साझी? तो वह कहेंगे कि हम ने तुझे बता दिया था कि हम में से कोई उस का गवाह नहीं है।

48. और खो जायेंगे^[2] उन से वे जिन्हें पुकारते थे इस से पूर्वी तथा वह विश्वास कर लेंगे कि नहीं है उन के लिये कोई शरण का स्थान।

49. नहीं थकता मनुष्य भलाई (सुख) की प्रार्थना से और यदि उसे पहुँच जाये बुराई (दुःख) तो (हताश) निराश^[3] हो जाता है।

50. और यदि हम उसे^[4] चखा दें अपनी

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا
وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِلْعَبِيدِ ۝

الْيَوْمَ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ
ثَمَرَاتٍ مِنَ الْمَاءِهَا وَمَا يُحْمَلُ مِنْ آثَمٍ
وَلَا تَنْصَعُ الْأَبْعَابُ وَيَوْمَ يُنَادِي يَوْمَئِذٍ
مُرَرَّاءُ مِي قَالُوا ذَلِكَ مَا يَتْلُو شُهَدَاءُ ۝

وَصَلَ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَدْعُونَ مِنْ قَبْلُ وَظَلُّوا
مَا لَهُمْ مِنْ مَّجِيصٍ ۝

لَا يَنْتَعِمُ الْإِنْسَانُ مِنْ دَعْوِ الْخَيْرِ وَإِنْ مَسَّهُ الشَّرُّ
فَيَسْتَوْسِقُ مَقْطُوطٌ ۝

وَلِإِنْ أَدْمَتُهُ رَحْمَةً مِنَّا مِنْ بَعْدِ ضَرْبٍ مَسَّتُهُ

1 अर्थात् किसी को बिना पाप के यातना नहीं देता।

2 अर्थात् सब ग़ैब की बातें अल्लाह ही जानता है। इसलिये इस की चिन्ता न करो कि प्रलय कब आयेगी। अपने परिणाम की चिन्ता करो।

3 यह साधारण लोगों की दशा है। अन्यथा मुसलमान निराश नहीं होता।

4 आयत का भावार्थ यह है कि काफिर की यह दशा होती है। उसे अल्लाह के यहाँ जाने का विश्वास नहीं होता। फिर यदि प्रलय का होना मान लें तो भी इसी

दया दुःख के पश्चात् जो उसे पहुँचा हो तो अवश्य कह देता है कि मैं तो इस के योग्य ही था। और मैं नहीं समझता कि प्रलय होनी है। और यदि मैं पुनः अपने पालनहार की ओर गया तो निश्चय ही मेरे लिये उस के पास भलाई होगी। तो हम अवश्य अवगत कर देंगे काफिरों को उन के कर्मों से तथा उन्हें अवश्य घोर यातना चखायेंगे।

51. तथा जब हम उपकार करते हैं मनुष्य पर तो वह विमुख हो जाता है तथा अकड़ जाता है। और जब उसे दुःख पहुँचे तो लम्बी-चौड़ी प्रार्थना करने लगता है।
52. आप कह दें: भला तुम यह तो बताओ कि यदि यह (कुर्आन) अल्लाह की ओर से हो फिर तुम कुफ़र कर जाओ उस के साथ, तो कौन उस से अधिक कुपथ होगा जो उस के विरोध में दूर तक चला जाये?
53. हम शीघ्र ही दिखा देंगे उन को अपनी निशानियाँ संसार के किनारों में तथा स्वयं उन के भीतर। यहाँ तक कि खुल जायेगी उन के लिये यह बात कि यही सच्च है।^[1] और क्या

لَيَقُولَنَّ هَذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً
وَلَئِنْ رُجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِنْدَهُ الْخُسْفَىٰ
فَلَنُذَيَّبَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِي مَا عَمِلُوا وَلَنُدْبِقَنَّهُمْ
مِّنْ عَذَابٍ عَظِيمٍ ۝

وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَىٰ الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَىٰ بِجَانِبِهِ
وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَوَدَّعَاذًا عَرِيضًا ۝

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ تُهْمٌ كُفَرْتُمْ
بِهِ مِنْ أُمَّةٍ مِّنْ قَبْلِهِ فَمَا لَمْ يَكُنْ لَكُمْ شِقَاقَ آبَعِيْدٍ ۝

سُرْرِهِمْ الَّتِي تَأْتِي الْإِنْفَاقَ وَفِي أَنْفُسِهِمْ حَتَّىٰ
يَبَيِّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ أَوْ لَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَكْفَهُ
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

कृविचार में मग्न रहता है कि यदि अल्लाह ने मुझे संसार में सुख-सुविधा दी है तो वहाँ भी अवश्य देगा। और यह नहीं समझता कि यहाँ उसे जो कुछ दिया गया है वह परीक्षा के लिये दिया गया है। और प्रलय के दिन कर्मों के आधार पर प्रतिकार दिया जायेगा।

- 1 कुर्आन, और निशानियों से अभिप्राय वह विजय है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा आप के पश्चात् मुसलमानों को प्राप्त होंगी। जिन से उन्हें

यह बात पर्याप्त नहीं कि आप का पालनहार ही प्रत्येक वस्तु का साक्षी (गवाह) है?

54. सावधान! वही संदेह में है अपने पालनहार से मिलने के विषय से। सावधान! वही (अल्लाह) प्रत्येक वस्तु को घेरे हुये है।

أَلَا إِنَّمَا فِي صُورَةٍ مِنْ لِقَاءِ رَبِّهِمْ
الْإِنشَاءُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُخِيطٌ ﴿٥٤﴾

विश्वास हो जायेगा कि कूर्आन ही सत्य है। इस आयत का एक दूसरा भावार्थ यह भी लिया गया है कि अल्लाह इस विश्व में तथा स्वयं तुम्हारे भीतर ऐसी निशानियाँ दिखायेगा। और यह निशानियाँ निरन्तर वैज्ञानिक आविष्कारों द्वारा सामने आ रही हैं। और प्रलय तक आती रहेंगी जिन से कूर्आन पाक का सत्य होना सिद्ध होता रहेगा।

सूरह शूरा - 42



सूरह शूरा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 53 आयतें हैं।

- इस की आयत 38 में ईमान वालों को आपस में प्रामर्श करने का नियम बताया गया है। इसलिये इस का नाम ((सूरह शूरा)) है।
- इस की आरंभिक आयतों में उन बातों को बताया गया है जिन से वही को समझने में सहायता मिलती है। फिर आयत 20 तक बताया गया है कि यह वही धर्म है जिस की वही सभी नबियों की ओर की गई थी। और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को यह निर्देश दिया गया है कि इस पर स्थित रह कर इस धर्म की ओर आमंत्रण दें। और जो लोग विवाद में उलझे हुये हैं उन के पास सत्य का कोई प्रमाण नहीं है।
- आयत 21 से 35 तक उन की पकड़ की गई है जो मनमानी धर्म बना कर उस पर चलते हैं। और सत्धर्म पर ईमान लाने तथा सदाचार करने पर शुभसूचना दी गई है और विरोधियों के कुछ संदेहों को दूर किया गया है,
- आयत 36 से 40 तक सत्धर्म के अनुयायियों के वह गुण बताये गये हैं जो संघर्ष की घड़ी में उन्हें सफल बनायेंगे। फिर विरोधियों को सावधान करते हुये अपने पालनहार की पुकार को स्वीकार कर लेने का आमंत्रण दिया गया है।
- अन्तिम आयतों में सूरह के आरंभिक विषय अर्थात् वही को और अधिक उजागर किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा, मीम।
2. ऐन, सीन, काफ ।

حَمْدٌ

عَسَقٌ

3. इसी प्रकार (अल्लाह) ने प्रकाशना^[1] भेजी है आप, तथा उन (रसूलों) की ओर जो आप से पूर्व हुये हैं। अल्लाह सब से प्रबल और सब गुणों को जानने वाला है।
4. उसी का है जो आकाशों तथा धरती में है और वह बड़ा उच्च- महान् है।
5. समीप है कि आकाश फट^[2] पड़ें अपने ऊपर से, जब कि फरिश्ते पवित्रता का गान करते हैं अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ, तथा क्षमायाचना करते हैं उन के लिये जो धरती में हैं। सुनो! वास्तव में अल्लाह ही अत्यंत क्षमा करने तथा दया करने वाला है।
6. तथा जिन लोगों ने बना लिये हैं अल्लाह के सिवा संरक्षक, अल्लाह ही उन पर निरीक्षक (निगराँ) है और आप उन के उत्तर दायी^[3] नहीं हैं।
7. तथा इसी प्रकार हम ने वही (प्रकाशना) की है आप की ओर अर्बी क़ुर्आन की। ताकि आप सावधान कर दें मक्का^[4] वासियों को, और जो उस

كَذَلِكَ يُوحِي إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ
اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ۝

تَكَادُ السَّمَوَاتُ يَتَّقَطْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلَائِكَةُ
يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِمَنْ فِي
الْأَرْضِ ۗ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ اللَّهُ حَفِيفٌ عَلَيْهِمْ
وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ۝

وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِتُنذِرَ
أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنذِرَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ لِأَرْبَابِ
مِثْلِ قُرَيْشٍ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٍ فِي السَّعِيرِ ۝

- 1 आरंभ में यह बताया जा रहा है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कोई नई बात नहीं कर रहे हैं और न यह वही (प्रकाशना) का विषय ही इस संसार के इतिहास में प्रथम बार सामने आया है। इस से पूर्व भी पहले अम्बिया पर प्रकाशना आ चुकी है और वह एकेश्वरवाद का संदेश सुनाते रहे हैं।
- 2 अल्लाह की महिमा तथा प्रताप के भय से।
- 3 आप का दायित्व मात्र सावधान कर देना है।
- 4 आयत में मक्का को उम्मुल कुरा कहा गया है। जो मक्का का एक नाम है जिस का शाब्दिक अर्थ: (वस्तियों की माँ) है। बताया जाता है कि मक्का अरब की मूल

के आस-पास हैं। तथा सावधान कर दें एकत्र होने के दिन^[1] से जिस दिन के होने में कोई संशय नहीं। एक पक्ष स्वर्ग में तथा एक पक्ष नरक में होगा।

8. और यदि अल्लाह चाहता तो सभी को एक समुदाय^[2] बना देता। परन्तु वह प्रवेश कराता है जिसे चाहे अपनी दया में। तथा अत्याचारियों का कोई संरक्षक तथा सहायक न होगा।

9. क्या उन्होंने बना लिये हैं उस के सिवा संरक्षक? तो अल्लाह ही संरक्षक है और जीवित करेगा मुर्दा को। और वही जो चाहे कर सकता है।^[3]

10. और जिस बात में भी तुम ने विभेद किया है उस का निर्णय अल्लाह ही को करना है।^[4] वही अल्लाह मेरा पालनहार है, उसी पर मैं ने भरोसा किया है तथा उसी की ओर ध्यान मग्न होता हूँ।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يَدْخُلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُمْ مِنْ قَوْلِي وَلَا تَصْيِيرِي ۝

أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۚ قَالَ اللَّهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۝

बस्ती है और उस के आस-पास से अभिप्राय पूरा भूमण्डल है। आधुनिक भूगोल शास्त्र के अनुसार मक्का पूरे भूमण्डल का केन्द्र है। इसलिये यह आश्चर्य की बात नहीं कि कुआन इसी तथ्य की ओर संकेत कर रहा हो। सारांश यह है कि इस आयत में इस्लाम के विश्वव्यापी धर्म होने की ओर संकेत किया गया है।

1 इस से अभिप्राय प्रलय का दिन है जिस दिन कर्मों के प्रतिकार स्वरूप एक पक्ष स्वर्ग में और एक पक्ष नरक में जायेगा।

2 अर्थात् एक ही सत्धर्म पर कर देता। किन्तु उस ने प्रत्येक को अपनी इच्छा से सत्य या असत्य को अपना देने की स्वाधीनता दे रखी है। और दोनों का परिणाम बता दिया है।

3 अतः उसी को संरक्षक बनाओ और उसी की आज्ञा का पालन करो।

4 अतः उस का निर्णय अल्लाह की पुस्तक कुआन से तथा उस के रसूल की सुन्नत से लो।

11. वह आकाशों तथा धरती का रचयिता है। उस ने बनाये हैं तुम्हारी जाति में से तुम्हारे जोड़े तथा पशुओं के जोड़े। वह फैला रहा है तुम को इस प्रकार। उस की कोई प्रतिमा^[1] नहीं। और वह सब कुछ सुनने-जानने वाला है।

فَاطْرُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَمِنَ الْأَنْعَامِ أَزْوَاجًا يَذُرُّكُمْ فِيهِ لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿١١﴾

12. उसी के^[2] अधिकार में है आकाशों तथा धरती की कृजियाँ। वह फैला देता है जीविका जिस के लिये चाहे तथा नाप कर देता है। वास्तव में वही प्रत्येक वस्तु का जानने वाला है।

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٢﴾

13. उस ने नियत^[3] किया है तुम्हारे लिये वही धर्म जिस का आदेश दिया था नूह को, और जिसे वही किया है आप की ओर, तथा जिस का आदेश दिया था इब्राहीम तथा मूसा और ईसा को। कि इस धर्म की स्थापना करो और इस में भेद भाव न करो। यही बात अप्रिय लगी है मुश्रिकों

شَرَعْنَا لَكُمْ مِنَ الدِّينِ مَا وُضِعَ بِهِ نُوحًا وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا وُضِعْنَا بِهِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى وَعِيسَى أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ اللَّهُ يَجْتَبِي إِلَيْهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ يُنِيبُ ﴿١٣﴾

1 अर्थात् उस के अस्तित्व तथा गुण और कर्म में कोई उस के समान नहीं है। भावार्थ यह है कि किसी व्यक्ति या वस्तु में उस का गुण कर्म मानना या उसे उस का अंश मानना असत्य तथा अधर्म है।

2 आयत नं० 9 से 12 तक जिन तथ्यों की चर्चा है उन में एकेश्वरवाद तथा परलोक के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं। और सत्य से विमुख होने वालों को चेतावनी दी गई है।

3 इस आयत में पाँच नबियों का नाम ले कर बताया गया है कि सब को एक ही धर्म दे कर भेजा गया है। जिस का अर्थ यह है कि इस मानव संसार में अन्तिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तक जो भी नबी आये सभी की मूल शिक्षा एक रही है। कि एक अल्लाह को मानो और उसी एक की वंदना करो। तथा वैध - अवैध के विषय में अल्लाह ही के आदेशों का पालन करो। और अपने सभी धार्मिक तथा सामाजिक और राजनैतिक विवादों का निर्णय उसी के धर्मविधान के आधार पर करो (देखिये: सूरह निसा, आयत: 163- 164)

को जिस की ओर आप बुला रहे हैं। अल्लाह ही चुनता है इस के लिये जिसे चाहे, और सीधी राह उसी को दिखाता है जो उसी की ओर ध्यान मग्न हो।

14. और उन्होंने^[1] इस के पश्चात् ही विभेद किया जब उन के पास ज्ञान आ गया आपस के विरोध के कारण, तथा यदि एक बात पहले से निश्चित^[2] न होती आप के पालनहार की ओर से तो अवश्य निर्णय कर दिया गया होता उन के बीच और जो पुस्तक के उत्तराधिकारी बनाये^[3] गये उन के पश्चात् उस की ओर से संदेह में उलझे हुये हैं।

15. तो आप लोगों को इसी (धर्म) की ओर बुलाते रहें तथा जैसे आप को आदेश दिया गया है उस पर स्थित रहें। और उन की इच्छाओं पर न चलें। तथा कह दें कि मैं ईमान लाया उन सभी पुस्तकों पर जो अल्लाह ने उतारी^[4] हैं। तथा मुझे आदेश दिया गया है कि तुम्हारे बीच न्याय करूँ। अल्लाह हमारा तथा तुम्हारा पालनहार है। हमारे लिये हमारे कर्म हैं तथा तुम्हारे लिये तुम्हारे कर्म। हमारे और

وَمَا تَفَرَّقُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ
بِعَيَّاينَهُمْ ۚ وَلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ إِلَى
أَجَلٍ مُّسَمًّى لِّقَضَىٰ بَيْنِهِمْ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ أُورِثُوا
الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِهِمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيدِينَ ۝

فَلِنَا لِكَ فَادَعُ ۚ وَاسْتَقْبُوا كَمَا أَمَرْتُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا
أَهْوَاءَهُمْ ۚ وَقُلْ أَمَرْتُ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنْ
كِتَابٍ ۚ وَأَمَرْتُ لِأَحْدِلَ بَيْنَكُمْ ۚ اللَّهُ رَبُّنَا
وَرَبُّكُمْ ۚ لَنَا أَعْمَالُنَا ۚ وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۚ لَا حِجَّةَ
بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ۚ اللَّهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَإِلَيْهِ
الْمَصِيرُ ۝

1 अर्थात् मुशरिकों ने।

2 अर्थात् प्रलय के दिन निर्णय करने की।

3 अर्थात् यहूदी तथा ईसाई भी सत्य में विभेद तथा संदेह कर रहे हैं।

4 अर्थात् सभी आकाशीय पुस्तकों पर जो नबियों पर उतारी गई हैं।

तुम्हारे बीच कोई झगड़ा नहीं। अल्लाह ही हमें एकत्र करेगा तथा उसी की ओर सब को जाना है।^[1]

16. तथा जो लोग झगड़ते हैं अल्लाह (के धर्म के बारे) में जब कि उसे^[2] मान लिया गया है। उन का विवाद (कुतर्क) असत्य है अल्लाह के समीप, तथा उन्हीं पर क्रोध है और उन्हीं के लिये कड़ी यातना है।

وَالَّذِينَ يُجَادُونَ فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا نَسِيْبَ لَهُ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ عَذَابٌ وَآلِمٌ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۝

17. अल्लाह ही ने उतारी है सब पुस्तकें सत्य के साथ तथा तराजू^[3] को। और आप को क्या पता शायद प्रलय का समय समीप हो।

اللَّهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَالْبَيِّنَاتِ ۝ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ۝

18. शीघ्र माँग कर रहे हैं उस (प्रलय) की जो ईमान नहीं रखते उस पर। और जो ईमान लाये हैं वह उस से डर रहे हैं तथा विश्वास रखते हैं कि वह सच्च है। सुनो! निश्चय जो विवाद कर रहे हैं प्रलय के विषय में वह कुपथ में बहुत दूर चले गये हैं।

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا وَالَّذِينَ آمَنُوا مُشْفِقُونَ مِنْهَا وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا الْحَقُّ ۝ أَلَا إِنَّ الَّذِينَ يُبَادِرُونَ فِي السَّاعَةِ لَفِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝

19. अल्लाह बड़ा दयालु है अपने भक्तों पर। वह जीविका प्रदान करता है जिसे चाहे। तथा वह बड़ा प्रबल प्रभावशाली है।

اللَّهُ لَطِيْفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ ۝ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ۝

20. जो आखिरत (परलोक) की खेती^[4]

مَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي

1 अर्थात प्रलय के दिन। फिर वह हमारे बीच निर्णय कर देगा।

2 अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), और इस्लाम धर्म को।

3 तराजू से अभिप्राय: न्याय का आदेश है। जो कुर्आन द्वारा दिया गया है। (देखिये: सूरह हदीद, आयत: 25)

4 अर्थात जो अपने संसारिक सत्कर्म का प्रतिफल परलोक में चाहता है तो उसे

चाहता हो तो हम उस के लिये उस की खेती बढ़ा देते हैं। और जो संसार की खेती चाहता हो तो हम उसे उस में से कुछ दे देते हैं। और उस के लिये परलोक में कोई भाग नहीं।

21. क्या इन (मुश्रिकों) के कुछ ऐसे साझी^[1] है जिन्होंने उन के लिये कोई ऐसा धार्मिक नियम बना दिया है जिस की अनुमति अल्लाह ने नहीं दी है? और यदि निर्णय की बात निश्चित न होती तो (अभी) इन के बीच निर्णय कर दिया जाता। तथा निश्चय अत्याचारियों के लिये ही दुःखदायी यातना है।
22. तुम अत्याचारियों को डरते हुये देखोगे उन दुष्कर्मा के कारण जो उन्होंने किये हैं और वह उन पर आ कर रहेगा। तथा जो ईमान लाये और सदाचार किये वे स्वर्ग के बागों में होंगे। वह जिस की इच्छा करेंगे उन के पालनहार के यहाँ मिलेगा। यही बड़ी दया है।
23. यही वह (दया) है जिस की शुभसूचना देता है अल्लाह अपने भक्तों को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये। आप कह दें कि मैं नहीं माँगता हूँ इस पर तुम से कोई बदला उस

حَوْرَتُهُمْ وَمَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ شَيْءٍ ۝

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ اشْتَرَعُوا لَهُمْ مِنَ الدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنَ بِهِ اللَّهُ ۗ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَفُضِّى بَيْنَهُمْ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

تَرَى الظَّالِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا وَهُمْ لَا يَأْتُونَ اللَّهَ وَلَا يَأْتُونَ الْيَوْمَ الضَّالِحِينَ فِي رُوضَاتِ الْجَنَّاتِ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝

ذَلِكَ الَّذِي يُبَشِّرُ اللَّهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَىٰ وَمَنْ يَقْرَفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهُ فِيهَا حَسَنَةً ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

उस का प्रतिफल परलोक में दस गुना से सात सौ गुना तक मिलेगा। और जो संसारिक फल का अभिलाषी हो तो जो उस के भाग्य में हो उसे उतना ही मिलेगा और परलोक में कुछ नहीं मिलेगा। (इब्ने कसीर)

- 1 इस से अभिप्राय उन के वह प्रमुख है जो वैध-अवैध का नियम बनाते थे। इस में यह संकेत है कि धार्मिक जीवन विधान बनाने का अधिकार केवल अल्लाह को है। उस के सिवा दूसरों के बनाये हुये धार्मिक जीवन विधान को मानना और उस का पालन करना शिर्क है।

प्रेम के सिवा जो संबन्धियों^[1] में (होता) है। तथा जो व्यक्ति कोई पुण्य करेगा हम उस के पुण्य को अधिक कर देंगे। वास्तव में अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला गुणग्राही है।

24. क्या वह कहते हैं कि उस ने अल्लाह पर झूठ घड़ लिया है? तो यदि अल्लाह चाहे तो आप के दिल पर मुहर लगा दे।^[2] और अल्लाह मिटा देता है झूठ को और सच्च को अपने आदेशों द्वारा सच्च कर दिखाता है। वह सीनों (दिलों) के भेदों का जानने वाला है।
25. वही है जो स्वीकार करता है अपने भक्तों की तौबा। तथा क्षमा करता है दोषों^[3] को और जानता है जो कुछ तुम करते हो।
26. और उन की प्रार्थना स्वीकार करता है जो ईमान लाये और सदाचार किये तथा उन्हें अधिक प्रदान करता है अपनी दया से। और काफिरों ही के लिये कड़ी यातना है।

أَمْ يَتَّبِعُونَ أَفْتِرَىٰ عَلَىٰ اللَّهِ كَذِبًا ۖ إِنَّ يَسِيرًا اللَّهُ
يَخْتَمِرُ عَلَىٰ قَلْبِكَ وَيَمْحُ اللَّهُ الْبَاطِلَ وَيُخَوِّضُ الْحَقَّ
بِكَلِمَةٍ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْمَلُ عَنِ
السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ۝

وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَيَزِيدُهُمْ
مِّنْ فَضْلِهِ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۝

- 1 भावार्थ यह है कि हे मक्का वासियो! यदि तुम सत्धर्म पर ईमान नहीं लाते हो तो मुझे इस का प्रचार तो करने दो। मुझ पर अत्याचार न करो। तुम सभी मेरे संबन्धी हो इसलिये मेरे साथ प्रेम का व्यवहार करो। (सहीह बुखारी: 4818)
- 2 अर्थ यह है कि हे नबी! इन्होंने आप को अपने जैसा समझ लिया है जो अपने स्वार्थ के झूठ का सहारा लेते हैं। किन्तु अल्लाह ने आप के दिल पर मुहर नहीं लगाई है जैसे इन के दिलों पर लगा रखी है।
- 3 तौबा का अर्थ है: अपने पाप पर लज्जित होना फिर उसे न करने का संकल्प लेना। हदीस में है कि जब बंदा अपना पाप स्वीकार कर लेता है। और फिर तौबा करता है तो अल्लाह उसे क्षमा कर देता है। (सहीह बुखारी: 4141, सहीह मुस्लिम: 2770)

27. और यदि फैला देता अल्लाह जीविका अपने भक्तों के लिये तो वह विद्रोह^[1] कर देते धरती में। परन्तु वह उतारता है एक अनुमान से जैसे वह चाहता है। वास्तव में वह अपने भक्तों से भली-भाँति सूचित है। (तथा) उन्हें देख रहा है।
28. तथा वही है जो वर्षा करता है इस के पश्चात् की लोग निराश हो जायें। तथा फैला^[2] देता है अपनी दया। और वही संरक्षक सराहनीय है।
29. तथा उस की निशानियों में से है आकाशों और धरती की उत्पत्ति, तथा जो फैलाये हैं उन दोनों में जीव। और वह उन्हें एकत्र करने पर जब चाहे^[3] सामर्थ्य रखने वाला है।
30. और जो भी दुःख तुम को पहुँचता है वह तुम्हारे अपने कर्तूत से पहुँचता है। तथा वह क्षमा कर देता है तुम्हारे बहुत से पापों को।^[4]
31. और तुम विवश करने वाले नहीं हो धरती में, और न तुम्हारा अल्लाह के सिवा कोई संरक्षक और न सहायक है।
32. तथा उस के (सामर्थ्य) की निशानियों

وَلَوْ بَسَطَ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ
وَلَكِنْ يُنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَا يَشَاءُ إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿٢٧﴾

وَهُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِ مَا قَطَبُوا
وَيُنَسِّرُ رَحْمَتَهُ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٨﴾

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
فِي سِتِّينَ يَوْمًا وَهُوَ الْعَلِيمُ الْبَصِيرُ ﴿٢٩﴾

وَمَا آصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ
وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ ﴿٣٠﴾

وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا لَكُمْ مِنْ
دُونِ اللَّهِ مِنْ دَلِيلٍ وَاللَّهُ بَصِيرٌ ﴿٣١﴾

وَمِنْ آيَاتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ﴿٣٢﴾

- 1 अर्थात् यदि अल्लाह सभी को सम्पन्न बना देता तो धरती में अवज्ञा और अत्याचार होने लगता और कोई किसी के आधीन न रहता।
- 2 इस आयत में वर्षा को अल्लाह की दया कहा गया है। क्योंकि इस से धरती में उपज होती है जो अल्लाह के अधिकार में है। इसे नक्षत्रों का प्रभाव मानना शिर्क है।
- 3 अर्थात् प्रलय के दिन।
- 4 देखिये: सूरह फ़ातिर, आयत: 45।

में से हैं चलती हुई नाव सागरों में पर्वतों के समान।

33. यदि वह चाहे तो रोक दे वायु को और वह खड़ी रह जायें उस के ऊपर। निश्चय इस में बड़ी निशानियाँ हैं प्रत्येक बड़े धैर्यवान^[1] कृतज्ञ के लिये।
34. अथवा विनाश^[2] कर दे उन (नावों) का उन के कर्तूतों के बदले। और वह क्षमा करता है बहुत कुछ।
35. तथा वह जानता है उन को जो झगड़ते हैं हमारी आयतों में। उन्हीं के लिये कोई भागने का स्थान नहीं है।
36. तुम्हें जो कुछ दिया गया है वह संसारिक जीवन का संसाधन है तथा जो कुछ अल्लाह के पास है वह उत्तम और स्थायी^[3] है उन के लिये जो अल्लाह पर ईमान लाये तथा अपने पालनहार ही पर भरोसा रखते हैं।
37. तथा जो बचते हैं बड़े पापों तथा निर्लज्जा के कर्मों से। और जब क्रोध आ जाये तो क्षमा कर देते हैं।
38. तथा जिन्होंने अपने पालनहार के आदेश को मान लिया तथा स्थापना की नमाज़ की और उन के प्रत्येक कार्य आपस के विचार-विमर्श से होते

إِن تَيْسَأْتِئِكُمُ الرِّيحُ قَيْظَلَانٌ رَّوَادِكٌ عَلَى ظَهْرِهِ
إِن فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ﴿٣٣﴾

أَوْ يُؤَيِّقُهُنَّ بِمَا كَسَبُوا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيرٍ ﴿٣٤﴾

وَيَعْلَمُ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا لَهُم مِّنْ
حِجَابٍ ﴿٣٥﴾

فَمَا أَوْتَيْنَاهُم مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَى لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَى
رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٣٦﴾

وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْإِتْمَارِ وَالْفَوَاحِشَ
وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفُرُونَ ﴿٣٧﴾

وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ
وَأَمْرُهُمْ شُورَى بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٣٨﴾

1 अर्थात जो अल्लाह की आज्ञापालन पर स्थित रहे।

2 उन के सवारों को उन के पापों के कारण डुबो दे।

3 अर्थ यह है कि संसारिक साम्यिक सुख को परलोक के स्थाई जीवन तथा सुख पर प्राथमिकता न दो।

हैं^[1] और जो कुछ हम ने उन्हें प्रदान किया है उस में से दान करते हैं।

39. और यदि उन पर अत्याचार किया जाये तो वह बराबरी का बदला लेते हैं।

40. और बुराई का प्रतिकार (बदला) बुराई है उसी जैसी^[2] फिर जो क्षमा कर दे तथा सुधार कर ले तो उस का प्रतिफल अल्लाह के ऊपर है। वास्तव में वह प्रेम नहीं करता है अत्याचारियों से।

41. तथा जो बदला लें अपने ऊपर अत्याचार होने के पश्चात् तो उन पर कोई दोष नहीं है।

42. दोष केवल उन पर है जो लोगों पर अत्याचार करते हैं और नाहक ज़मीन में उपद्रव करते हैं। उन्हीं के लिये दर्दनाक यातना है।

وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَوِرُونَ ۝

وَحَزْرًا وَسَيِّئَةً سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۝

وَلَمَنْ اتَّخَذَ بَعْدَ ظُلْمِهِ فَأُولَئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِنْ سَبِيلٍ ۝

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

1 इस आयत में ईमान वालों का एक उत्तम गुण बताया गया है कि वह अपने प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य परस्पर प्रामर्श से करते हैं। सूरह आले इमरान आयत: 159 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आदेश दिया गया है कि आप मुसलमानों से परामर्श करें। तो आप सभी महत्वपूर्ण कार्यों में उन से परामर्श करते थे। यही नीति तत्पश्चात् आदरणीय खलीफा उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने भी अपनाई। जब आप घायल हो गये और जीवन की आशा न रही तो आप ने छः व्यक्तियों को नियुक्त कर दिया कि वह आपस के परामर्श से शासन के लिये किसी एक को निर्वाचित कर लें। और उन्होंने आदरणीय उसमान (रज़ियल्लाहु अन्हु) को शासक निर्वाचित कर लिया। इस्लाम पहला धर्म है जिस ने परामर्शिक व्यवस्था की नींव डाली। किन्तु यह परामर्श केवल देश का शासन चलाने के विषयों तक सीमित है। फिर भी जिन विषयों में कुर्आन तथा हदीस की शिक्षायें मौजूद हों उन में किसी परामर्श की आवश्यकता नहीं है।

2 इस आयत में बुराई का बदला लेने की अनुमति दी गई है। बुराई का बदला यद्यपि बुराई नहीं, बल्कि न्याय है फिर भी बुराई के समरूप होने के कारण उसे बुराई ही कहा गया है।

43. और जो सहन करे तथा क्षमा कर दे तो यह निश्चय बड़े साहस^[1] का कार्य है
44. तथा जिसे अल्लाह कुपथ कर दे, तो उस का कोई रक्षक नहीं है उस के पश्चात। तथा आप देखेंगे अत्याचारियों को जब वह देखेंगे यातना को, वह कह रहे होंगे: क्या वापसी की कोई राह है?^[2]
45. तथा आप उन्हें देखेंगे कि वह प्रस्तुत किये जा रहे हैं नरक पर सिर झुकाये अपमान के कारण। वे देख रहे होंगे कन्खियों से। तथा कहेंगे जो ईमान लाये कि वास्तव में घाटे में वही है जिन्होंने घाटे में डाल दिया स्वयं को तथा अपने परिवार को प्रलय के दिन। सुनो! अत्याचारी ही स्थाई यातना में होंगे।
46. तथा नहीं होंगे उन के कोई सहायक जो अल्लाह के मुकाबले में उन की सहायता करें और जिसे कुपथ कर दे अल्लाह, तो उस के लिये कोई मार्ग नहीं
47. मान लो अपने पालनहार की बात इस से पूर्व कि आ जाये वह दिन जिसे टलना नहीं है अल्लाह की ओर से। नहीं होगा तुम्हारे लिये कोई शरण का स्थान उस दिन और न

وَلَمَنْ صَبَرَ وَعَفَا إِنَّ ذَلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿٤٣﴾

وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ دَافِعٍ لِمَنْ بَعْدَهُ وَتَوَى
الظَّالِمِينَ لِنَارِ الْأَعْدَابِ يََعْقُبُونَ هَلْ إِلَى مَرَدٍّ
مِنْ سَبِيلٍ ﴿٤٤﴾

وَتَرَاهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا خَشِيعِينَ مِنَ الَّذِينَ
يَنْظُرُونَ مِنْ طَرْفٍ حَافِيٍّ وَقَالَ الَّذِينَ آمَنُوا
إِنَّ الْخَبِيرِينَ الَّذِينَ خَبَرُوا النَّفْتُمْ وَأَهْلِيَهُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ الْآرَاءَ الظَّالِمِينَ فِي عَذَابٍ مُتَقَبٍ ﴿٤٥﴾

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ أَوْلِيَاءَ يَبْعَثُونَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ
وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ سَبِيلٍ ﴿٤٦﴾

إِسْتَجِيبُوا لِلرَّبِّكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمَ لَا مَرْوَةَ
مِنْ اللَّهِ بِالْكَافِرِينَ مَلْجَأًا مَوْبِقًا وَمَا لَكُمْ مِنْ كَبِيرٍ ﴿٤٧﴾

- 1 इस आयत में क्षमा करने की प्रेरणा दी गई है कि यदि कोई अत्याचार कर दे तो उसे सहन करना और क्षमा कर देना और सामर्थ्य रखते हुये उस से बदला न लेना ही बड़ी सुशीलता तथा साहस की बात है जिस की बड़ी प्रधानता है।
- 2 ताकि संसार में जा कर ईमान लायें और सदाचार करें तथा परलोक की यातना से बच जायें।

छिप कर अन जान बन जाने का।

48. फिर भी यदि वह विमुख हों तो (हे नबी!) हम ने नहीं भेजा है आप को उन पर रक्षक बना कर। आप का दायित्व केवल सदिश पहुँचा देना है। और वास्तव में जब हम चखा देते हैं मनुष्य को अपनी दया तो वह इतराने लगता है उस पर। और यदि पहुँचता है उन को कोई दुख उन के कर्तूत के कारण तो मनुष्य बड़ा कृतघ्न बन जाता है।
49. अल्लाह ही का है आकाशों तथा धरती का राज्य। वह पैदा करता है जो चाहता है। जिसे चाहे पुत्रियाँ प्रदान करता है तथा जिसे चाहे पुत्र प्रदान करता है।
50. अथवा उन्हें पुत्र और^[1] पुत्रियाँ मिला कर देता है। और जिसे चाहे बाँझ बना देता है। वास्तव में वह सब कुछ जानने वाला (तथा) सामर्थ्य रखने वाला है।
51. और नहीं संभव है किसी मनुष्य के लिये कि बात करे अल्लाह उस से परन्तु वही^[2] द्वारा, अथवा पर्दे के

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَأَنْرِسْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا إِنَّ عَلَيْكَ
إِلَّا الْبَلْغَةَ وَالْأَذَىٰ أَذَىٰ مَنَّا الْإِنْسَانَ وَمُنَازِحَةَ قَرْعٍ
بِهَاءٍ وَإِنْ تُصِيبُهُمْ سَيِّئَةٌ سَيِّئَةٌ يَمَاقِدًا مَتَّ أَيْدِيهِمْ
فَإِنَّ الْإِنْسَانَ كُفُورٌ

بِاللَّهِ تِلْكَ السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ يُخَلِّقُ مَا يَشَاءُ يُهَبِّ
لِمَنْ يَشَاءُ إِنَّا ثَائِرٌ بِهَبِّ لِمَنْ يَشَاءُ الذُّكُورُ

أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَإِنَّا لَمُرْسِلِينَ مَنْ يَشَاءُ عَظِيمًا
إِنَّهُ عَلَيْهِ قَدِيرٌ

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَكْتُمَ اللَّهُ الْأَوْحِيَاءَ وَمَنْ وَّرَأَىٰ
حِجَابٍ أَوْ رُسُلٍ رَسُولًا فَيُعِيبِي بِإِذْنِهِ مَا يَشَاءُ

- 1 इस आयत में संकेत है कि पुत्र-पुत्री माँगने के लिये किसी पीर, फकीर के मज़ार पर जाना उन को अल्लाह की शक्ति में साझी बनाना है। जो शिर्क है। और शिर्क ऐसा पाप है जिस के लिये बिना तौबा के कोई क्षमा नहीं।
- 2 वही का अर्थ: संकेत करना या गुप्त रूप से बात करना है। अर्थात् अल्लाह अपने अपने रसूलों को अपना आदेश और निर्देश इस प्रकार देता है जिसे कोई दूसरा व्यक्ति सुन नहीं सकता। जिस के तीन रूप होते हैं:
- प्रथम: रसूल के दिल में सीधे अपना ज्ञान भर दे।
 - दूसरा: पर्दे के पीछे से बात करो। किन्तु वह दिखाई न दे।
 - तीसरा: फ़रिश्ते द्वारा अपनी बात रसूल तक गुप्त रूप से पहुँचा दे।
- इन में पहले और तीसरे रूप में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास

पीछे से अथवा भेज दे कोई रसूल (फरिश्ता) जो वही करे उस की अनुमति से जो कुछ वह चाहता हो। वास्तव में वह सब से ऊँचा (तथा) सभी गुण जानने वाला है।

52. और इसी प्रकार हम ने वही (प्रकाशना) की है आप की ओर अपने आदेश की रूह (कुर्आन)। आप नहीं जानते थे कि पुस्तक क्या है तथा और ईमान^[1] क्या है। परन्तु हम ने इसे बना दिया एक ज्योति। हम मार्ग दिखाते हैं इस के द्वारा जिसे चाहते हैं अपने भक्तों में से। और वस्तुतः आप सीधी राह^[2] दिखा रहे हैं।
53. अल्लाह की राह जिस के अधिकार में है जो कुछ आकाशों में तथा जो कुछ धरती में है। सावधान! अल्लाह ही की ओर फिरते हैं सभी कार्य।

إِنَّهُ عَلَىٰ حَكِيمٍ ۝

وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا مَا كُنْتَ تَدْرِي
مَا الْكِتَابُ وَلَا الْإِيمَانُ وَلَكِن جَعَلْنَاهُ نُورًا نَّهْدِي بِهِ
مَنْ نَّشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا وَإِنَّكَ لَتَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيمٍ ۝

صِرَاطَ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ
الَّا اِلٰلٰهَ تَصِيْرُ الْاُمُوْر ۝

वही उतरती थी। (सहीह बुख़ारी: 2)

- 1 मक्का वासियों को यह आश्चर्य था कि मनुष्य अल्लाह का नबी कैसे हो सकता है? इस पर कुर्आन बता रहा है कि आप नबी होने से पहले न तो किसी आकाशीय पुस्तक से अवगत थे। और न कभी ईमान की बात ही आप के विचार में आई। और यह दोनों बातें ऐसी थीं जिन का मक्कावासी भी इन्कार नहीं कर सकते थे। और यही आप का अज्ञान होना आप के सत्य नबी होने का प्रमाण है। जिसे कुर्आन की अनेक आयतों में वर्णित किया गया है।
- 2 सीधी राह से अभिप्राय सत्धर्म इस्लाम है।

सूरह जुळरुफ - 43



सूरह जुळरुफ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 89 आयतें हैं।

- इस की आयत 35 में ((जुळरुफ)) शब्द आया है। जिस से यह नाम लिया गया है। जिस का अर्थ है: सोना-शोभा।
- इस की आरंभिक आयतें कुर्आन के लाभ और उस की बड़ाई को उजागर करती है। फिर उन निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जिन पर विचार करने से अल्लाह के अकेले पूज्य होने का विश्वास होता है। फिर आयत 15 से 25 तक फरिश्तों को अल्लाह का साझी बनाने को अनुचित बताया गया है। फिर आयत 26 से 33 तक इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के मूर्तियों से विरक्त होने के एलान को प्रस्तुत किया गया है। और बताया गया है कि मक्कावासी जो उन्हीं के वंश से हैं वे शिर्क तथा मूर्तियों की पूजा के पक्षपाती हो गये हैं। और अल्लाह के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस लिये विरोधी बन गये हैं कि आप एक अल्लाह के पूज्य होने का आमंत्रण दे रहे हैं।
- आयत 34 से 45 तक तनिक संसारिक लाभ के लिये परलोक तथा वही और रिसालत के इन्कार कर देने के परिणाम को बताया गया है। और फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) की कुछ दशाओं का वर्णन किया गया है। जिस से यह बात सामने आती है कि वह भी तौहीद का प्रचार करते थे और उन के विरोधियों ने अपना परिणाम देख लिया।
- अन्तिम आयतों में विरोधियों के लिये चेतावनी तथा सदाचारियों के लिये शुभसूचना के साथ अपराधियों को उन के दुष्परिणाम से सावधान, और कुछ संदेहों को दूर किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

2. शपथ है प्रत्यक्ष (खुली) पुस्तक की!
3. इसे हम ने बनाया है अर्बी कुर्आन ताकि वह इसे समझ सकें।
4. तथा वह मूल पुस्तक^[1] में है हमारे पास, बड़ा उच्च तथा ज्ञान से परिपूर्ण है।
5. तो क्या हम फेर दें इस शिक्षा को तुम से इसलिये कि तुम उल्लंघनकारी लोग हो?
6. तथा हम ने भेजे हैं बहुत से नबी (गुज़री हुयी) जातियों में।
7. और नहीं आता रहा उन के पास कोई नबी परन्तु वह उस के साथ उपहास करते रहे।
8. तो हम ने विनाश कर दिया इन से^[2] अधिक शक्तिवानों का तथा गुज़र चुका है अगलों का उदाहरण।
9. और यदि आप प्रश्न करें उन से कि किस ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को? तो अवश्य कहेंगे: उन्हें पैदा किया है बड़े प्रभावशाली सब कुछ जानने वाले ने।

وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝

إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝

وَأَنَّهُ فِي أَوَّلِ الْكِتَابِ لَدَيْ بَابِ الْعِلْمِ حَكِيمٌ ۝

أَفَنَضْرِبُ عَنْكُمْ الذِّكْرَ صَفْحًا أَن كُنتُمْ قَوْمًا مُّشْرِكِينَ ۝

وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِنْ نَبِيِّ فِي الْأَوَّلِينَ ۝

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

فَأَهْلَكَكَ أَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَمَضَىٰ مَثَلُ الْأَوَّلِينَ ۝

وَلَيْنَ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝

1 मूल पुस्तक से अभिप्राय लौहे महफूज़ (सुरक्षित पुस्तक) है। जिस से सभी आकाशीय पुस्तकें अलग कर के अवतरित की गई हैं। सूरह वाकिआ में इसी को ((किताबे मकनून)) कहा गया है। सूरह बुरूज में इसे ((लौहे महफूज़)) कहा गया है। सूरह शुअरा में कहा गया कि यह अगले लोगों की पुस्तको में है। सूरह आँला में कहा गया है कि यह विषय पहली पुस्तकों में भी आँकित है। सारांश यह है कि कुर्आन के इन्कार करने का कोई कारण नहीं। तथा कुर्आन का इन्कार सभी पहली पुस्तकों का इन्कार करने के बराबर है।

2 अर्थात मक्कावासियों से।

10. जिस ने बनाया तुम्हारे लिये धरती को पालना। और बनाये उस में तुम्हारे लिये मार्ग ताकि तुम मार्ग पा सको।^[1]
11. तथा जिस ने उतारा आकाश से जल एक विशेष मात्रा में फिर जीवित कर दिया उस के द्वारा मुर्दा भूमी को। इसी प्रकार तुम (धरती से) निकाले जाओगे।
12. तथा जिस ने पैदा किये सब प्रकार के जोड़े, तथा बनाई तुम्हारे लिये नवकायें तथा पशु जिन पर तुम सवार होते हो।
13. ताकि तुम सवार हो उन के ऊपर, फिर याद करो अपने पालनहार के प्रदान को जब सवार हो जाओ उस पर और यह^[2] कहो: पवित्र है वह जिस ने वश में कर दिया हमारे लिये इस को। अन्यथा हम इसे वश में नहीं कर सकते थे।
14. तथा हम अवश्य ही अपने पालनहार ही की ओर फिर कर जाने वाले हैं।
15. और बना लिया उन्होंने^[3] उस के भक्तों में से कुछ को उस का अंश। वास्तव में मनुष्य खुला कृतघ्न है।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا
سُبُلًا لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠﴾

وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً يُقَدِّرُ فَأَنْزَعْنَا
بِهِ بَلَدًا مَّيِّتًا كَذَلِكَ نُخْرِجُكُمْ ﴿١١﴾

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمُ مِنَ الْفَالِكِ
الْإِنْعَامَ مَا تَرْكَبُونَ ﴿١٢﴾

لِتَسْتَوِيَ عَلَى ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا
اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحٰنَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا
هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ﴿١٣﴾

وَأَنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ﴿١٤﴾

وَجَعَلُوا آلَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ
مُبِينٌ ﴿١٥﴾

1 एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिये।

2 आदरणीय अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ऊँट पर सवार होते तो तीन बार: अल्लाह अक़्बर कहते फिर यही आयत ((मुन्क़लिबून)) तक पढ़ते। और कुछ और प्रार्थना के शब्द कहते थे जो दुआओं की पुस्तकों में मिलेंगे। (सहीह मुस्लिम हदीस न०: 1342)

3 जैसे मक्का के मुशरिक लोग फ़रिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ मानते थे। और ईसाईयों ने ईसा (अलैहिस्सलाम) को अल्लाह का पुत्र माना। और किसी ने आत्मा को प्रमात्मा तथा अवतारों को प्रभु बना दिया। और फिर उन्हें पूजने लगे।

16. क्या अल्लाह ने उस में से जो पैदा करता है, पुत्रियाँ बना ली हैं तथा तुम्हें विशेष कर दिया है पुत्रों के साथ?
17. जब कि उन में से किसी को शुभसूचना दी जाये उस (के जन्म लेने) की जिस का उस ने उदाहरण दिया है अत्यंत कृपाशील के लिये तो उस का मुख काला^[1] हो जाता है। और शोक से भर जाता है।
18. क्या (अल्लाह के लिये) वह है जिस का पालन-पोषण अभूषण में किया जाता है। तथा वह विवाद में खुल कर बात नहीं कर सकती?
19. और उन्होंने बना दिया फ़रिश्तों को जो अत्यंत कृपाशील के भक्त हैं पुत्रियाँ। क्या वह उपस्थित थे उन की उत्पत्ति के समय? लिख ली जायेगी उन की गवाही और उन से पूछ होगी।
20. तथा उन्होंने कहा कि यदि अत्यंत कृपाशील चाहता तो हम उन की इबादत नहीं करते। उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं। वह केवल तीर तुक़े चला रहे हैं।

أَمْ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَدَاتٍ وَأَصْفَاكُمْ بِالْبَيْنِ ۝

وَأَذَىٰ يَبُئِرُ أَحَدُهُمْ بِمَا عَصَىٰ رَبِّ الرَّحْمَنِ مِثْلَ لَاطِلٍ
وَجَهَّةٍ مُّسَوَّدَةٍ أَوْ هُوَ كَاطِلِهِ ۝

أَمْ أَنْ يُشْتَوَىٰ فِي الْحَلِيَّةِ وَهُوَ فِي الْخِصَابِ
غَيْرِ مُبِينٍ ۝

وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ الرَّحْمَنِ
إِنَاثًا لَّاشْهَادَ وَأَخْلَقَهُمْ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ
وَيُسْتَأْذَنُونَ ۝

وَقَالُوا الْوَيْحَاءُ الرَّحْمَنِ مُعَذِّبُهُمْ مَا لَهُمْ بَدَلُ
مِنْ عَذَابِهِ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝

- 1 इस्लाम से पूर्व यही दशा थी। कि यदि किसी के हाँ बच्ची जन्म लेती तो लज्जा के मारे उस का मुख काला हो जाता। और कुछ अरब के कबीले उसे जन्म लेते ही जीवित गाड़ दिया करते थे। किन्तु इस्लाम ने उस को सम्मान दिया। तथा उस की रक्षा की। और उस के पालनपोषण को पुण्य कर्म घोषित किया। हदीस में है कि जो पुत्रियों के कारण दुःख झेले और उन के साथ उपकार करे तो उस के लिये वे नरक से पर्दा बनेंगी। (सहीह बुखारी: 5995, सहीह मुस्लिम: 2629) आज भी कुछ पापी लोग गर्भ में बच्ची का पता लगते ही गर्भपात करा देते हैं। जिसको इस्लाम बहुत बड़ा अत्याचार समझता है।

21. क्या हम ने उन्हें प्रदान की है कोई पुस्तक इस से पहले, जिसे वह दृढ़ता से पकड़े हुये है? [1]
22. बल्कि यह कहते हैं कि हम ने पाया है अपने पूर्वजों को एक रीति पर और हम उन्हीं के पदचिन्हों पर चल रहे हैं।
23. तथा (हे नबी!) इसी प्रकार हम ने नहीं भेजा आप से पूर्व किसी बस्ती में कोई सावधान करने वाला परन्तु कहा उस के सुखी लोगों ने: हम ने पाया है अपने पूर्वजों को एक रीति पर और हम निश्चय उन्हीं के पदचिन्हों पर चल रहे है। [2]
24. नबी ने कहा: क्या (तुम उन्हीं का अनुगमन करोगे) यद्यपि मैं लाया हूँ तुम्हारे पास उस से अधिक सीधा मार्ग जिस पर तुम ने पाया है अपने पूर्वजों को? तो उन्होंने कहा: हम जिस (धर्म) के साथ तुम भेजे गये हो उसे मानने वाले नहीं हैं।
25. अन्ततः हम ने बदला चुका लिया उन से। तो देखो कि कैसा रहा झुठलाने वालों का दुष्परिणाम।
26. तथा याद करो, जब कहा इब्राहीम ने अपने पिता तथा अपनी जाति से: निश्चय मैं विरक्त हूँ उस से जिस की वंदना तुम करते हो।

أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا مِنْ قَبْلِهِ فَهُمْ بِهِ مُسْتَكْبِرُونَ ﴿١﴾

بَلْ قَالُوا لَئِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ
الْآثَرِهِمْ مُهُتَدُونَ ﴿٢﴾

وَكَذَٰلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِنْ
تَذْذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهُمْ إِنَّا وَإِذَا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ
أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ الْآثَرِهِمْ مُتَّقِتُونَ ﴿٣﴾

قُلْ أَوْ لَوْ جِئْتُمْ بِأَهْدَىٰ مِمَّا وَجَدْتُمْ عَلَيْهِ آبَاءَكُمْ
قَالُوا لَئِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ لَكَارُونَ ﴿٤﴾

فَأَنْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَنْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُكَدِّبِينَ ﴿٥﴾

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ إِنَّنِي بَرَاءٌ مِمَّا
تَعْبُدُونَ ﴿٦﴾

- 1 अर्थात कुर्आन से पहले की किसी ईश- पुस्तक में अल्लाह के सिवा किसी और की उपासना की शिक्षा दी ही नहीं गई है कि वह कोई पुस्तक ला सकें।
- 2 आयत का भावार्थ यह है कि प्रत्येक युग के काफिर अपने पूर्वजों के अनुसरण के कारण अपने शिर्क और अंधविश्वास पर स्थित रहे।

27. उस के अतिरिक्त जिस ने मुझे पैदा किया है। वही मुझे राह दिखायेगा।
28. तथा छोड़ गया वह इस बात (एकेश्वरवाद) को^[1] अपनी संतान में ताकि वह (शिरक से) बचते रहें।
29. बल्कि मैं ने इन को तथा इन के बाप दादा को जीवन का सामान दिया। यहाँ तक कि आ गया उन के पास सत्य (कुर्आन) और एक खुला रसूल।^[2]
30. तथा जब आ गया उन के पास सत्य तो उन्होंने कह दिया कि यह जादू है तथा हम इसे मानने वाले नहीं हैं।
31. तथा उन्होंने कहा कि क्यों नहीं उतारा^[3] गया यह कुर्आन दो बस्तियों में से किसी बड़े व्यक्ति पर?
32. क्या वही बाँटते^[4] हैं आप के पालनहार की दया? हम ने बाँटा है उन के बीच उन की जीविका को संसारिक जीवन में। तथा हम ने उच्च किया है उन में से एक

إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ﴿٢٧﴾

وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقْبِهِ لَعَلَّهُمْ يُرجِعُونَ ﴿٢٨﴾

بَلْ مَتَّعْتُ هَؤُلَاءِ وَاَبَاءَهُمْ حَتَّى جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولٌ مُبِينٌ ﴿٢٩﴾

وَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ وَإِنَّا بِهِ كَافِرُونَ ﴿٣٠﴾

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هَذَا الْقُرْآنُ عَلَى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيمٍ ﴿٣١﴾

أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّوَدِّنَاسَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سَفِرًا لِّرَحْمَتِ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٣٢﴾

- 1 आयत 26 से 28 तक का भावार्थ यह है कि यदि तुम्हें अपने पूर्वजों ही का अनुगमन करना है तो अपने पूर्वज इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का अनुगमन करो। जो शिरक से विरक्त तथा एकेश्वरवादी थे। और अपनी संतान में एकेश्वरवाद (तौहीद) की शिक्षा छोड़ गये ताकि लोग शिरक से बचते रहें।
- 2 अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।
- 3 मक्का के काफ़िरों ने कहा कि यदि अल्लाह को रसूल ही भेजना था तो मक्का और ताइफ़ के नगरों में से किसी प्रधान व्यक्ति पर कुर्आन उतार देता। अब्दुल्लाह का अनाथ-निर्धन पुत्र मुहम्मद तो कदापि इस के योग्य नहीं है।
- 4 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने जैसे संसारिक धन-धान्य में लोगों की विभिन्न श्रेणियाँ बनाई हैं उसी प्रकार नबूवत और रिसालत, जो उस की दया है, उन को भी जिस के लिये चाहा प्रदान किया है।

को दूसरे पर कई श्रेणियाँ। ताकि एक-दूसरे से सेवा कार्य लें, तथा आप के पालनहार की दया^[1] उस से उत्तम है जिसे वह इकट्ठा कर रहे हैं।

33. और यदि यह बात न होती कि सभी लोग एक ही नीति पर हो जाते तो हम अवश्य बना देते उन के लिये जो कुफ़र करते हैं अत्यंत कृपाशील के साथ उन के घरों की छतें चाँदी की तथा सीढ़ियाँ जिन पर वह चढ़ते हैं।
34. तथा उन के घरों के द्वार, और तख्त जिन पर वह तकिये लगाये^[2] रहते हैं।
35. तथा बना देते शोभा नहीं है यह सब कुछ परन्तु संसारिक जीवन के सामान। तथा आखिरत^[3] (परलोक) आप के पालनहार के यहाँ केवल आज्ञाकारियों के लिये है।
36. और जो व्यक्ति अत्यंत कृपाशील (अल्लाह) के स्मरण से अँधा हो जाता है तो हम उस पर एक शैतान नियुक्त कर देते हैं जो उस का साथी हो जाता है।
37. और वह (शैतान) उन को रोकते हैं सीधी राह से। तथा वह समझते हैं कि वे सीधी राह पर हैं।
38. यहाँ तक कि जब वह हमारे पास आयेगा तो यह कामना करेगा कि मेरे

وَلَوْلَا أَنْ يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَجَعَلْنَا لِمَنْ يَكْفُرُ بِالرَّحْمَنِ لِيُوقِتَهُمْ سُغُفْرًا مِنْ نَضْرَةٍ وَمَعَارِجَ عَلَيْهِمْ يَظَاهِرُونَ ﴿٣٣﴾

وَلِيُوقِتَهُمْ أِبْوَابًا وَسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَكَبَّرُونَ ﴿٣٤﴾

وَدُخْرًا وَأَنْ كُلُّ ذَلِكَ لِنَا مَتَاعٍ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةَ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٥﴾

وَمَنْ يُضِلَّهُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمَنِ نُفَيِّضْ لَهُ شَيْطَانًا فَهُوَ لَهُ قَرِينٌ ﴿٣٦﴾

وَأَنَّهُمْ لَيَصَدُّونَهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُهُتَدُونَ ﴿٣٧﴾

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَنَا قَالَ لِيَكُنْتِ بَيْنِي وَبَيْنَكَ بَعْدَ

1 अर्थात् परलोक में स्वर्ग सदाचारी भक्तों को मिलेगी।

2 अर्थात् सब मायामोह में पड़ जाते।

3 भावार्थ यह है कि संसारिक धन-धान्य का अल्लाह के हाँ कोई महत्व नहीं है।

तथा तेरे (शैतान के) बीच पश्चिम तथा पूर्व की दूरी होती। तू बुरा साथी है।

39. (उन से कहा जायेगा): और तुम्हें कदापि कोई लाभ नहीं होगा आज, जब कि तुम ने अत्याचार कर लिया है। वास्तव में तुम सब यातना में साझी रहोगे।

40. तो (हे नबी!) क्या आप सुना लेंगे बहरों को या सीधी राह दिखा देंगे अँधों को तथा जो खुले कुपथ^[1] में हों?

41. फिर यदि हम आप को (संसार से) ले जायें तो भी हम उन से बदला लेने वाले हैं।

42. अथवा आप को दिखा दें जिस (यातना) का हम ने उन को वचन दिया है तो निश्चय हम उन पर सामर्थ्य रखने वाले हैं।

43. तो (हे नबी!) आप दृढ़ता से पकड़े रहें उसे जो हम आप की ओर वही कर रहे हैं। वास्तव में आप सीधी राह पर हैं।

44. निश्चय यह (कुर्आन) आप के लिये तथा आप की जाति के लिये एक शिक्षा^[2] है। और जल्द ही तुम से प्रश्न^[3] किया जायेगा।

الْمُشْرِكِينَ قَيْسَ الْقَرِينُ ۝

وَلَنْ يَنْفَعَكُمْ الْيَوْمَ إِذْ ظَلَمْتُمْ أَكْثَرًا فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ۝

أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَتُهَدِي الْعُصَىٰ وَمَنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

فَأَمَّا نَذْرَ هَبْ بَكَ فَإِنَّا مَهْمُ مُنْتَقِمُونَ ۝

أَوْتُرِيكَ الْبَدَىٰ وَعَدَّوْهُمْ فَإِنَّا عَلَيْهِم مُّقْتَدِرُونَ ۝

فَأَسْمِسْكَ بِالَّذِي أَوْحَىٰ إِلَيْكَ آتَاكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝

وَأِنَّهُ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۖ وَسَوْفَ تُسْأَلُونَ ۝

1 अर्थ यह है कि जो सच्च को न सुने तथा दिल का अँधा हो तो आप के सीधी राह दिखाने का उस पर कोई प्रभाव नहीं होगा।

2 इस का पालन करने के संबन्ध में।

3 पहले नबियों से पूछने का अर्थ उन की पुस्तकों तथा शिक्षाओं में यह बात

45. तथा हे नबी! आप पूछ लें उन से जिन्हें हम ने भेजा है आप से पहले अपने रसूलों में से कि क्या हम ने बनायें हैं अत्यंत कृपाशील के अतिरिक्त वंदनीय जिन की वंदना की जाये?
46. तथा हम ने भेजा मूसा को अपनी निशानियों के साथ फिरऔन और उस के प्रमुखों की ओर। तो उस ने कहा: वास्तव में, मैं सर्वलोक के पालनहार का रसूल हूँ।
47. और जब वह उन के पास लाया हमारी निशानियाँ तो सहसा वह उन की हँसी उड़ाने लगे।
48. तथा हम उन को एक से बढ़ कर एक निशानी दिखाते रहे। और हम ने पकड़ लिया उन्हें यातना में ताकि वह (ठट्टा) से रुक जायें।
49. और उन्होंने कहा: हे जादूगर! प्रार्थना कर हमारे लिये अपने पालनहार से उस वचन के आधार पर जो तुझ से किया है। वास्तव में हम सीधी राह पर आ जायेंगे।
50. तो जैसे ही हम ने दूर किया उन से यातना को, तो वह सहसा वचन तोड़ने लगे।
51. तथा पुकारा फिरऔन ने अपनी जाति में। उस ने कहा: हे मेरी जाति! क्या नहीं है मेरे लिये मिस्र का राज्य तथा यह नहरें जो वह

وَسَلِّ مَنْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُسُلِنَا
أَجْعَلْنَا مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ إِلَهًا يُعْبَدُونَ ۝

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَآلِهِ
فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ إِذْ أَنهَمُ بِهَا يَضْحَكُونَ ۝

وَنَارِيهِمْ مِنَ آيَةِ الْكُتُبِ اخْتِمْهَا
وَآخِذْهُمْ بِأَعْدَابِ لَعْنَتِهِمْ يَرْجِعُونَ ۝

وَقَالُوا يَا أَيُّهَا السَّاحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ
عِنْدَكَ إِنَّا لَمُهْتَدُونَ ۝

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ آعْدَابِ إِذْ أَنهَمُ يَنْتَدُونَ ۝

وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ
مِصْرَ وَهَذِهِ الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِن تَحْتِي أَفَلَا
تُبْصِرُونَ ۝

रही हैं मेरे नीचे से? तो क्या तुम देख नहीं रहे हो।

52. मैं अच्छा हूँ या वह जो अपमानित (हीन) है और खुल कर बोल भी नहीं सकता?
53. क्यों नहीं उतारे गये उस पर सोने के कंगन अथवा आये फ़रिश्ते उस के साथ पंक्ति बाँधे हुये? [1]
54. तो उस ने झाँसा दे दिया अपनी जाति को और सब ने उस की बात मान ली। वास्तव में वह थे ही अवज्ञाकारी लोग।
55. फिर जब उन्होंने हमें क्रोधित कर दिया तो हम ने उन से बदला ले लिया और सब को डुबो दिया।
56. और बना दिया हम ने उन को गया गुज़रा और एक उदाहरण पश्चात के लोगों के लिये।
57. तथा जब दिया गया मर्यम के पुत्र का [2] उदाहरण तो सहसा आप की जाति उस से प्रसन्न हो कर शोर मचाने लगी।
58. तथा मुशरिकों ने कहा कि हमारे

أَمْ آخِزِينَ هَذَا الَّذِي هُوَ مَهِينٌ ۚ وَلَا يَكَادُ يَبِينُ ﴿٥٢﴾

فَلَوْلَا الْبَقِيَّةُ عَلَيْهِمْ أَسْوَدَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلَائِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ﴿٥٣﴾

فَأَسْتَحَفَّ قَوْمَهُ فَأَطَاعُوهُ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٥٤﴾

فَلَمَّا أَسْفَوْنَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٥﴾

فَجَعَلْنَاهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِّلْآخِرِينَ ﴿٥٦﴾

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ﴿٥٧﴾

وَقَالُوا آلَ الْهَيْمَانَ خَبِيرٌ أَهْلُ مَادْيَنَ ضَرْبُ لَكَ الْإِجْدَالِ

- 1 अर्थात यदि मूसा (अलैहिस्सलाम) अल्लाह का रसूल होता तो उस के पास राज्य, और हाथों में सोने के कंगन तथा उस की रक्षा के लिये फ़रिश्तों को उस के साथ रहना चाहिये था। जैसे मेरे पास राज्य, हाथों में सोने के कंगन तथा सुरक्षा के लिये सेना है।
- 2 आयत नं० 45 में कहा गया है कि पहले नबियों की शिक्षा पढ़ कर देखो कि क्या किसी ने यह आदेश दिया है कि अल्लाह अत्यंत कृपाशील के सिवा दूसरों की इबादत की जाये? इस पर मुशरिकों ने कहा कि ईसा (अलैहिस्सलाम) की इबादत क्यों की जाती है? क्या हमारे पूज्य उन से कम है?

देवता अच्छे हैं या वे? उन्होंने नहीं दिया यह (उदाहरण) आप को परन्तु कुतर्क (झगड़ने) के लिये। बल्कि वह हैं ही बड़े झगड़ालू लोग।

59. नहीं है वह^[1] (ईसा) परन्तु एक भक्त (दास) जिस पर हम ने उपकार किया। तथा उसे इस्राईल की संतान के लिये एक आदर्श बनाया।
60. और यदि हम चाहते तो बना देते तुम्हारे बदले फ़रिश्ते धरती में, जो एक-दूसरे का स्थान लेते।
61. तथा वास्तव में वह (ईसा) एक बड़ा लक्षण^[2] है प्रलय का। अतः कदापि संदेह न करो प्रलय के विषय में। और मेरी ही बात मानो। यही सीधी राह है।
62. तथा तुम्हें कदापि न रोक दे शैतान। निश्चय वह तुम्हारा खुला शत्रु है।
63. और जब आ गया ईसा खुली निशानियाँ ले कर तो कहा: मैं लाया हूँ तुम्हारे पास ज्ञान। और ताकि उजागर कर दूँ तुम्हारे लिये कुछ वह बातें जिन में तुम विभेद कर रहे हो। अतः अल्लाह से डरो और मेरा ही कहा मानो।

بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصْمُونَ ﴿٥٩﴾

إِنَّ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا
لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٦٠﴾

وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَلَائِكَةً فِي الْأَرْضِ
يَخْلُقُونَ ﴿٦١﴾

وَإِنَّهُ لَعِلْمٌ لِلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَالْيَعْقُونَ
هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦٢﴾

وَلَا يَصُدُّكُمْ الشَّيْطَانُ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ
مُبِينٌ ﴿٦٣﴾

وَلَمَّا جَاءَ عِيسَى بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ
بِالْحِكْمَةِ وَالْبَيِّنَاتِ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِي تَخْتَلَفُونَ فِيهِ
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ﴿٦٤﴾

1 इस आयत में बताया जा रहा है कि यह मुशर्रिक, ईसा (अलैहिस्सलाम) के उदाहरण पर बड़ा शोर मचा रहे हैं। और उसे कुतर्क स्वरूप प्रस्तुत कर रहे हैं। जब कि वह पूज्य नहीं, अल्लाह के दास हैं। जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया और इस्राईल की संतान के लिये एक आदर्श बना दिया।

2 हदीस शरीफ में है आया है कि प्रलय की बड़ी दस निशानियों में से ईसा (अलैहिस्सलाम) का आकाश से उतरना भी एक निशानी है। (सहीह मुस्लिम: 2901)

64. वास्तव में अल्लाह ही मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है। अतः उसी की वंदना (इबादत) करो यही सीधी राह है।
65. फिर विभेद कर लिया गिरोहों^[1] ने आपस में। तो विनाश है उन के लिये जिन्होंने अत्याचार किया दुःखदायी दिन की यातना से।
66. क्या वह बस इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि प्रलय उन पर सहसा आ पड़े और उन्हें (उस का) संवेदन (भी) न हो?
67. सभी मित्र उस दिन एक-दूसरे के शत्रु हो जायेंगे आज्ञाकारियों के सिवा।
68. हे मेरे भक्तो! कोई भय नहीं है तुम पर आज। और न तुम उदासीन होगे।
69. जो ईमान लाये हमारी आयतों पर तथा आज्ञाकारी बन के रहे।
70. प्रवेश कर जाओ स्वर्ग में तुम तथा तुम्हारी पत्नियाँ। तुम्हें प्रसन्न रखा जायेगा।
71. फिरायी जायेंगी उन पर सोने की थालें तथा प्याले। और उस में वह सब कुछ होगा जिसे उन का मन चाहेगा और जिसे उन की आँखें देख कर आनन्द लेंगी। और तुम सब उस में सदैव रहोगे।

إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَأَعْبُدُوا اللَّهَ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦٤﴾

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ قَوْلًا لَكِنَّ كَلِمَاتٍ مَلَظَمًا مِنْ عَذَابٍ يَوْمَ الْقِيَامِ ﴿٦٥﴾

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٦٦﴾

الْأَحْزَابُ يَوْمَئِذٍ بِغِضٍّ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدَاوًا وَالْمُتَّقِينَ ﴿٦٧﴾

يُعِيبُ الَّذِينَ يَخُوفُونَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ﴿٦٨﴾

الَّذِينَ آمَنُوا بِالْآيَاتِ وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٦٩﴾

ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ﴿٧٠﴾

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصَفَافٍ مِنْ ذَهَبٍ وَالْكَؤُوبِ فِيهَا مَا مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْأَنْفُسِ وَتِلْكَ الْأَعْيُنُ وَأَنْتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٧١﴾

1 इस्राईली समुदायों में कुछ ने ईसा (अलैहिस्सलाम) को अल्लाह का पुत्र, किसी ने प्रभु तथा किसी ने उसे तीन का तीसरा (तीन खुदाओं में से एक) कहा। केवल एक ही समुदाय ने उन्हें अल्लाह का भक्त तथा नबी माना।

72. और यह स्वर्ग है जिस के तुम उत्तराधिकारी बनाये गये हो अपने कर्मों के बदले जो तुम कर रहे थे।
73. तुम्हारे लिये इस में बहुत से मेवे हैं जिन में से तुम खाते रहोगे।
74. निःसंदेह अपराधी नरक की यातना में सदावासी होंगे।
75. उन से (यातना) हल्की नहीं की जायेगी तथा वे उस में निराश होंगे।
76. और हम ने अत्याचार नहीं किया उन पर, परन्तु वही अत्याचारी थे।
77. तथा वह पुकारेंगे कि हे मालिक!^[1] हमारा काम ही तमाम कर दे तेरा पालनहार। वह कहेगा: तुम्हें इसी दशा में रहना है।
78. (अल्लाह कहेगा): हम तुम्हारे पास सत्य^[2] लाये किन्तु तुम में से अधिकतर को सत्य अप्रिय था।
79. क्या उन्होंने किसी बात का निर्णय कर लिया है?^[3] तो हम भी निर्णय कर देंगे।^[4]
80. क्या वह समझते हैं की हम नहीं सुनते हैं उन की गुप्त बातों तथा प्रामर्श को? क्यों नहीं, बल्कि हमारे फ़रिश्ते उन के पास ही

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُدْرِمْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٧٢﴾

لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٧٣﴾

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابٍ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ﴿٧٤﴾

لَا يُفَعِّلُهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْسُوتُونَ ﴿٧٥﴾

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ﴿٧٦﴾

وَتَادُوا إِلَيْكَ لِيَقْضَ عَلَيْكَ رَبُّكَ قَالِ إِنَّكُمْ مُكْشِفُونَ ﴿٧٧﴾

لَقَدْ جِئْتُمُوهَا بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَرِهُونَ ﴿٧٨﴾

أَمْ أَمْرًا مَوْأَمَرًا إِنَّا مَبْرُؤُونَ ﴿٧٩﴾

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنَّا لَنَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ بَلَىٰ وَرَسُولُنَا الَّذِي يُمْسِكُهُمْ يُكَتِّبُونَ ﴿٨٠﴾

1 मालिक: नरक के अधिकारी फ़रिश्ते का नाम है।

2 अर्थात नबियों द्वारा।

3 अर्थात सत्य के इन्कार का।

4 अर्थात उन्हें यातना देने का।

लिख रहे हैं।

81. (हे नबी!) आप उन से कह दें कि यदि अत्यंत कृपाशील (अल्लाह)की कोई संतान होती तो सब से पहले मैं उस का पुजारी होता।
82. पवित्र है आकाशों तथा धरती का पालनहार सिंहासन का स्वामी उन बातों से जो वह कहते हैं।
83. तो आप उन्हें छोड़ दें, वह वाद-विवाद तथा खेल-कूद करते रहें, यहाँ तक की अपने उस दिन से मिल जायें जिस से उन्हें डराया जा रहा है।
84. वही है जो आकाश में वंदनीय और धरती में वंदनीय है। और वही हिक्मत और ज्ञान वाला है।
85. शुभ है वह जिस के अधिकार में आकाशों तथा धरती का राज्य है तथा जो कुछ दोनों के मध्य है। तथा उसी के पास प्रलय का ज्ञान है। और उसी की ओर तुम सब प्रत्यागत किये जाओगे।
86. तथा नहीं अधिकार रखते हैं जिन्हें वह पुकारते हैं अल्लाह के अतिरिक्त सिफारिश का। हाँ (सिफारिश के योग्य वे हैं) जो सत्य^[1] की गवाही

قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمَنِ وَلَدٌ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَابِدِينَ ۝

سُبْحَانَ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝

قَدْ رَهُمُ يَوْمَئِذٍ وَيُعبُوا حَاشَىٰ يَوْمَئِذٍ أُولَٰئِكَ يَلْعَنُونَ ۝

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَهٌُ وَفِي الْأَرْضِ إِلَهٌُ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۝

وَتَبَرَكَ الَّذِي لَهُ مَلَكُوتُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَالَّذِينَ كُفَرُوا ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝

1 सत्य से अभिप्राय धर्म-सूत्र ((ला इलाहा इल्लल्लाह)) है। अर्थात् जो इसे जान बूझ कर स्वीकार करते हैं तो शफ़ाअत उन्हीं के लिये होगी। उन काफ़िरों के लिये नहीं जो मुर्तियों को पुकारते हैं। अथवा इस से अभिप्राय यह है कि सिफ़ारिश का अधिकार उन को मिलेगा जिन्होंने सत्य को स्वीकार किया है। जैसे अम्बिया, धर्मात्मा तथा फ़रिश्तों को, न कि झूठे उपास्यों को जिन को मुशर्रिक अपना सिफ़ारिशी समझते हैं।

दें, और (उसे) जानते भी हों।

87. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने पैदा किया है उन को? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। तो फिर वह कहाँ फिरे जा रहे हैं?^[1]
88. तथा रसूल की यह बात कि, हे मेरे पालनहार! यह वे लोग हैं जो ईमान नहीं लाते।
89. तो आप उन से विमुख हो जायें, तथा कह दें कि सलाम^[2] है। शीघ्र ही उन्हें ज्ञान हो जायेगा।

وَلَيْنَ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَنَّى يُؤْفَكُونَ ۝

وَقِيلَ لَهُ يَرْبِّ إِنَّا هُمْ أَوْلَىٰ بِمَا نُؤْمِنُ ۝

فَأَصْفَعْ عَنْهُمْ وَفَلَّ سَلَامٌ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

1 अर्थात् अल्लाह की उपासना से।

2 अर्थात् उन से न उलझें।

सूरह दुख़ान - 44



सूरह दुख़ान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 59 आयतें हैं।

- इस की आयत 10 में आकाश से दुख़ान (धुवें) के निकलने की चर्चा है इसलिये इस का नाम सूरह दुख़ान है।
- इस की आरंभिक आयतों में कुर्आन का महत्व बताया गया है। फिर आयत 7-8 में कुर्आन उतारने वाले का परिचय कराया गया है।
- आयत 9 से 33 तक फिरऔन की जाति के विनाश और बनी इसराईल की सफलता को एक ऐतिहासिक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है कि रसूल के विरोधियों का दुष्परिणाम कैसा हुआ। और उन के अनुयायी किस प्रकार सफल हुये।
- आयत 34 से 57 तक दूसरे जीवन के इन्कार तथा उस का विश्वास कर के जीवन व्यतीत करने का अलग-अलग फल बताया गया है जो प्रलय के दिन सामने आयेगा।
- अन्तिम आयतों में उन को सावधान किया गया है जो कुर्आन का आदर नहीं करते। अर्थात इस सूरह के आरंभिक विषय ही में इस का अन्त भी किया गया है।
- हदीस में है कि जब मक्कावासियों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कड़ा विरोध किया तो आप ने अल्लाह से दुआ की, कि यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के अकाल के समान इन पर भी सात वर्ष का अकाल भेज दे। और फिर उन पर ऐसा अकाल आया कि प्रत्येक चीज़ का नाश कर दिया गया। और वह मुर्दार खाने पर वाध्य हो गये। और यह दशा हो गयी कि जब वह आकाश की ओर देखते तो भूक के कारण धूवाँ जैसा दिखाई देता था। (देखिये: सहीह बुख़ारी: 4823, 4824)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा, मीमा।
2. शपथ है इस खुली पुस्तक की!
3. हम ने ही उतारा है इस^[1] को एक शुभ रात्री में। वास्तव में हम सावधान करने वाले हैं।
4. उसी (रात्रि) में निर्णय किया जाता है प्रत्येक सुदृढ़ कर्म का।
5. यह (आदेश) हमारे पास से है। हम ही भेजने वाले हैं रसूलों को।
6. आप के पालनहार की दया से, वास्तव में वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।
7. जो आकाशों तथा धरती का पालनहार है तथा जो कुछ उन दोनों के बीच है, यदि तुम विश्वास करने वाले हो।
8. नहीं है कोई वंदनीय परन्तु वही जो जीवन देता तथा मारता है। तुम्हारा पालनहार तथा तुम्हारे गुज़रे हुये पूर्वजों का पालनहार।
9. बल्कि वह (मुशरिक) संदेह में खेल रहे हैं।

حَمْدٌ

وَالْكِتَابِ الْمُنِينِ ۝

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ مُبْرَكَةٍ إِنَّا كُنَّا مُنذِرِينَ ۝

فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ ۝

أَمْرًا مِنْ عِنْدِنَا إِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ۝

رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاٰبِيۡنَاهُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّوَقِنِيۡنَ ۝

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيِيۡ وَيُمِيۡتُ رَبُّكُمْ وَرَبُّۤ اٰبَاۡكُمْ اِلٰوٰلِيۡنَ ۝

بَلْ هُمْ فِيۡ شَكٍّ يَّالْعٰبُوۡنَ ۝

1 शुभ रात्री से अभिप्राय (लैलतुल कद्र) है यह रमज़ान के महीने के अन्तिम दशक की एक विषम रात्री होती है। यहाँ आगे बताया जा रहा है कि इसी रात्री में पूरे वर्ष होने वाले विषय का निर्णय किया जाता है। इस शुभ रात की विशेषता तथा प्रधानता के लिये सूरह कद्र देखिये। इसी शुभ रात्रि में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर क़ुर्आन उतरने का आरंभ हुआ। फिर 23 वर्षों तक आवश्यकतानुसार विभिन्न समय में उतरता रहा। (देखिये: सूरह बकरा, आयत नं०: 185)

10. तो आप प्रतीक्षा करें उस दिन जब आकाश खुला धुवाँ^[1] लायेगा।
11. जो छा जायेगा सब लोगों पर। यही दुःखदायी यातना है।
12. (वे कहेंगे): हमारे पालनहार हम से यातना दूर कर दे। निश्चय हम ईमान लाने वाले हैं।
13. और उन के लिये शिक्षा का समय कहाँ रह गया? जब कि उन के पास आ गये एक रसूल (सत्य को) उजागर करने वाले।
14. फिर भी वह आप से मुँह फेर गये तथा कह दिया कि एक सिखाया हुआ पागल है।
15. हम दूर कर देने वाले हैं कुछ यातना, वास्तव में तुम फिर अपनी प्रथम स्थिति पर आ जाने वाले हो।
16. जिस दिन हम अत्यंत कड़ी पकड़^[2] में ले लेंगे। तो हम

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ۝

يَغشى النَّاسَ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

رَبَّنَا أَلِيْفٌ عَنَّا الْعَذَابُ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ۝

أَلَيْ لَهُمُ الذِّكْرَى وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ ۝

لَقَدْ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّوْا مَجْجُونُونَ ۝

إِنَّا كَاشِفُو الْعَذَابِ وَإِنَّا لَآتِكُمْ عَازِدُونَ ۝

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَى إِنَّا مُنْتَقِمُونَ ۝

- 1 इस प्रत्यक्ष धुंवे तथा दुःखदायी यातना की व्याख्या सहीह हदीस में यह आयी है कि जब मक्कावासियों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कड़ा विरोध किया तो आप ने यह शाप दिया कि हे अल्लाह! उन पर सात वर्ष का आकाल भेज दे। और जब आकाल आया तो भूक के कारण उन्हें धुवाँ जैसा दिखायी देने लगा। तब उन्होंने आप से कहा कि आप अल्लाह से प्रार्थना कर दें। वह हम से आकाल दूर कर देगा तो हम ईमान ले आयेंगे। और जब आकाल दूर हुआ तो फिर अपनी स्थिति पर आ गये। फिर अल्लाह ने बद्र के युद्ध के दिन उन से बदला लिया। (सहीह बुखारी: 4821, तथा सहीह मुस्लिम: 2798)
- 2 यह कड़ी पकड़ का दिन बद्र के युद्ध का दिन है। जिस में उन के बड़े बड़े सत्तर प्रमुख मारे गये तथा इतनी ही संख्या में बंदी बनाये गये। और उन की दूसरी पकड़ क़यामत के दिन होगी जो इस से भी बड़ी और गंभीर होगी।

निश्चय बदला लेने वाले हैं।

17. तथा हम ने परीक्षा ली इन से पूर्व फ़िरऔन की जाति की। तथा उन के पास एक आदरणीय रसूल आया।
18. कि मुझे सौंप दो अल्लाह के भक्तों को। निश्चय मैं तुम्हारे लिये एक अमानतदार रसूल हूँ।
19. तथा अल्लाह के विपरीत घमंड न करो। मैं तुम्हारे सामने खुला प्रमाण प्रस्तुत करता हूँ।
20. तथा मैं ने शरण ली है अपने पालनहार की तथा तुम्हारे पालनहार की इस से कि तुम मुझ पर पथराव कर दो।
21. और यदि तुम मेरा विश्वास न करो तो मुझ से परे हो जाओ।
22. अन्ततः मूसा ने पुकारा अपने पालनहार को, कि वास्तव में यह लोग अपराधी हैं।
23. (हम ने आदेश दिया) कि निकल जा रातो-रात मेरे भक्तों को लेकर। निश्चय तुम्हारा पीछा किया जायेगा।
24. तथा छोड़ दे सागर को उस की दशा पर खुला। वास्तव में यह डूब जाने वाली सेना है।
25. वह छोड़ गये बहुत से बाग़ तथा जल स्रोत।
26. तथा खेतियाँ और सुखदायी स्थान।
27. तथा सुख के साधन जिन में वह

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ
رَسُولٌ كَرِيمٌ ﴿١٧﴾

أَنْ أَذُوآلِيَ عِبَادِ اللَّهِ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٨﴾

وَأَنْ لَا تَعْلُوا عَلَيَّ اللَّهُ إِنِّي إِلَيْكُمْ بِسُلْطِينَ مُبِينٌ ﴿١٩﴾

وَإِنِّي عَدْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ أَنْ تَرْجُمُونِ ﴿٢٠﴾

وَإِنْ لَمْ تُوْثِقُوا إِلَيَّ فَأَعَزُّ لَوْثُونَ ﴿٢١﴾

ذَذَرَآرِيهٖ أَنْ هَؤُلَاءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُونَ ﴿٢٢﴾

فَأَسْرِعِي بَادِي أَيْسَلًا إِنِّي لَكُمْ مُّتَّبِعُونَ ﴿٢٣﴾

وَإِنَّرِيكَ الْبَحْرَ رَهْوًا إِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّعْرَفُونَ ﴿٢٤﴾

كَمْ تَرَكُوا مِنْ جَبَّتٍ وَعَيْبُونَ ﴿٢٥﴾

وَدَّرُورٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٢٦﴾

وَتَعْمَةٍ كَانُوا فِيهَا فَلَاحِقِينَ ﴿٢٧﴾

आनन्द ले रहे थे।

28. इसी प्रकार हुआ। और हम ने उन का उत्तरधिकारी बना दिया दूसरे^[1] लोगों को।
29. तो नहीं रोया उन पर आकाश और न धरती, और न उन्हें अवसर (समय) दिया गया।
30. तथा हम ने बचा लिया इस्राईल की संतान को अपमानकारी यातना से।
31. फिरौन से। वास्तव में वह चढ़ा हुआ उल्लंघनकारियों में से था।
32. तथा हम ने प्रधानता दी उन को जानते हुये संसारवासियों पर।
33. तथा हम ने उन्हें प्रदान की ऐसी निशानियाँ जिन में खुली परीक्षा थी।
34. वास्तव में यह^[2] कहते हैं कि
35. हमें तो बस प्रथम बार मरना है तथा हम फिर जीवित नहीं किये जायेंगे।
36. फिर यदि तुम सच्चे हो तो हमारे पूर्वजों को (जीवित कर के) ला दो।
37. यह अच्छे हैं अथवा तुब्बअ की जाति^[3], तथा जो उन से पूर्व रहे हैं?

كَذَلِكَ وَأَوْرَثْنَاهَا آخَرِينَ ۝

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ۝

وَلَقَدْ بَعَثْنَا لَبِيَّ إِسْرَائِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۝

مِنْ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ كَانَ عَلِيًّا مِنَ الْمُسْرِفِينَ ۝

وَلَقَدْ اخْتَرْتَهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَىٰ الْغُلَامِينَ ۝

وَأَتَيْنَهُمُ مِنَ اللَّيْلِ بِأَفْيُوكَ الْإِثْمِينَ ۝

إِنَّ هَؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ۝

إِنْ هِيَ إِلَّا أَمْوَاتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا عَنَّا بِشَيْءٍ ۝

فَأَنْوَابًا بِآبَائِنَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُكَيْمٍ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ

1 अर्थात् बनी इस्राईल (याकूब अलैहिस्सलाम की संतान) को।

2 अर्थात् मक्का के मुशूरिक कहते हैं कि संसारिक जीवन ही अन्तिम जीवन है। इस के पश्चात् परलोक का जीवन नहीं है।

3 तुब्बअ की जाति से अभिप्राय यमन की जाति सबा है। जिस के विनाश का वर्णन सूरह सबा में किया गया है। तुब्बअ हिमयर जाति के शासकों की उपाधि थी जिसे उन की अवैज्ञा के कारण ध्वस्त कर दिया गया। (देखिये: सूरह सबा की

हम ने उन का विनाश कर दिया।
निश्चय वह अपराधी थे।

38. तथा हम ने आकाशों और धरती को एवं जो कुछ उन दोनों के बीच है खेल नहीं बनाया है।
39. हम ने नहीं पैदा किया है उन दोनों को परन्तु सत्य के आधार पर। किन्तु अधिकतर लोग इसे नहीं जानते हैं।
40. निःसंदेह निर्णय^[1] का दिन उन सब का निश्चित समय है।
41. जिस दिन कोई साथी किसी साथी के कुछ काम नहीं आयेगा और न उन की सहायता की जायेगी।
42. परन्तु जिस पर अल्लाह की दया हो जाये तो वास्तव में वह बड़ा प्रभावशाली दयावान है।
43. निःसंदेह ज़क़ूम (थोहड़) का वृक्षा।
44. पापियों का भोजन है।
45. पिघले हुये ताँबे जैसा, जो खौलेगा पेटों में।
46. गर्म पानी के खौलने के समान।
47. (आदेश होगा कि) उसे पकड़ो, तथा धक्का देते नरक के बीच तक पहुँचा दो।
48. फिर बहाओ उस के सिर के ऊपर

أَهْلَكْتَهُمْ إِنَّمَا كَانُوا أَجْرِمِينَ ﴿٣٨﴾

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَبَيْنَهُمَا الْعِزِينَ ﴿٣٩﴾

مَا خَلَقْنَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٠﴾

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤١﴾

يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلَى عَنْ مَوْلَى شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٢﴾

إِلَّا مَنْ رَحِمَ اللَّهُ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٤٣﴾

إِنَّ شَجَرَتَ الرَّقُودِ ﴿٤٤﴾

طَعَامُ الْإِثْمِ ﴿٤٥﴾

كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ﴿٤٦﴾

كَغَلِي الْحَمِيمِ ﴿٤٧﴾

خَذُوهُ فَأَعْتَلُوهُ إِلَى سَوَاءِ الْحَمِيمِ ﴿٤٨﴾

ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ﴿٤٩﴾

आयत- 15, से 19, तक।)

1 अर्थात् आकाशों तथा धरती की रचना लोगों की परीक्षा के लिये की गई है। और परीक्षा फल के लिये प्रलय का समय निर्धारित कर दिया गया है।

अत्यंत गर्म जल की यातना^[1]

49. (तथा कहा जायेगा कि) चख, क्योंकि तू बड़ा आदरणीय सम्मानित था।
50. यही वह चीज़ है जिस में तुम संदेह कर रहे थे।
51. निःसंदेह आज्ञाकारी शान्ति के स्थान में होंगे।
52. बागों तथा जल स्रोतों में।
53. वस्त्र धारण किये हुये महीन तथा कोमल रेशम के एक-दूसरे के सामने (आसीन) होंगे।
54. इसी प्रकार होगा। तथा हम विवाह देंगे उन को हूरों से।^[2]
55. वह माँग करेंगे उस में प्रत्येक प्रकार के मेवों की निश्चिन्त हो कर।
56. वह उस स्वर्ग में मौत^[3] नहीं चखेंगे प्रथम (संसारिक) मौत के सिवा। तथा (अल्लाह) बचा देगा उन्हें नरक की यातना से।
57. आप के पालनहार की दया से, वही

ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الرَّكِيمُ ۝

إِنَّ هَذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ۝

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ۝

فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝

يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَقَابِلِينَ ۝

كَذَلِكَ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ۝

يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ۝

لَا يَأْتِيهِمْ فِيهَا الْمَوْتُ إِلَّا الْمَوْتُ الْأُولَىٰ
وَوَقَّعَهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝

فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

- 1 हदीस में है कि इस से जो कुछ उस के भीतर होगा पिघल कर दोनों पाँव के बीच से निकल जायेगा, फिर उसे अपनी पहली दशा पर कर दिया जायेगा। (तिर्मिज़ी: 2582, इस हदीस की सनद हसन है।)
- 2 हूर: अर्थात् गोरी और बड़े बड़े नैनों वाली स्त्रियों।
- 3 हदीस में है कि जब स्वर्गी स्वर्ग में और नारकी नरक में चले जायेंगे तो मौत को स्वर्ग और नरक के बीच ला कर बध कर दिया जायेगा। और एलान कर दिया जायेगा कि अब मौत नहीं होगी। जिस से स्वर्गी प्रसन्न पर प्रसन्न हो जायेंगे और नारकियों को शोक पर शोक हो जायेगा। (सहीह बुखारी: 6548, सहीह मुस्लिम: 2850)

बड़ी सफलता है।

58. तो हम ने सरल कर दिया इस (कुरआन) को आप की भाषा में ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।
59. अतः आप प्रतीक्षा करें^[1] वह भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

فَأَنبَأَيَسْرَٰنَهُۥٓ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾

فَأَنْتَظِرُ الْإِنهْمُ مَرْتَبُونَ ﴿٥٩﴾

1 अर्थात परिणाम की।

सूरह जासियह - 45



सूरह जासियह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 37 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 28 में प्रलय के दिन प्रत्येक समुदाय के जासियह अर्थात् घुटनों के बल गिरे हुये होने की चर्चा की गई है। इसलिये इस का नाम सूरह जासियह है।
- इस की आरंभिक आयतों में तौहीद की निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है। जिस की ओर कुर्आन बुला रहा है।
- इस की आयत 7 से 15 तक में अल्लाह की आयतें न सुनने पर परलोक में बुरे परिणाम से सावधान किया गया है। और ईमान वालों को निर्देश दिया गया है कि वे विरोधियों को क्षमा कर दें।
- आयत 16 से 20 तक में बनी इस्राईल को चेतावनी दी गई है कि उन्होंने धर्म का परस्कार पा कर उस में विभेद कर लिया। और अब जो धर्म विधान उतारा जा रहा है उस का पालन करें।
- आयत 21 से 35 में परलोक के प्रतिफल के बारे में कुछ संदेहों का निवारण किया गया है।
- इस की अंतिम आयतों में अल्लाह की प्रशंसा का वर्णन किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा, मीम।
2. इस पुस्तक^[1] का उतरना अल्लाह, सब चीजों और गुणों को जानने वाले की ओर से है।

حَمْدًا

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ

1 इस सूरह में भी तौहीद तथा परलोक के संबन्ध में मुश्रिकों के संदेह को दूर किया गया तथा उन की दुराग्रह की निन्दा की गई है।

3. वास्तव में आकाशों तथा धरती में बहुत सी निशानियाँ (लक्षण) हैं ईमान लाने वालों के लिये।
4. तथा तुम्हारी उत्पत्ति में तथा जो फैला^[1] दिये हैं उस ने जीव, बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो विश्वास रखते हों।
5. तथा रात और दिन के आने- जाने में, तथा अल्लाह ने आकाश से जो जीविका उतारी है, फिर जीवित किया है उस के द्वारा धरती को उस के मरने के पश्चात् तथा हवाओं के फेरने में बड़ी निशानियाँ हैं उन के लिये जो समझ-बूझ रखते हों।
6. यह अल्लाह की आयतें हैं जो वास्तव में हम तुम्हें सुना रहें हैं। फिर कौन सी बात रह गई है अल्लाह तथा उस के आयतों के पश्चात् जिस पर वह ईमान लायेंगे?
7. विनाश है प्रत्येक झूठे पापी के लिये!
8. जो अल्लाह की उन आयतों को जो उस के सामने पढ़ी जायें सुने, फिर भी वह अकड़ता हुआ (कुफ़र पर) अड़ा रहे, जैसे कि उन को सुना ही

إِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَآيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝

وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُذُّ مِنْ دَابَّۃٍ اِلَيْتُمْ لِقَوْمٍ يُّٰذِقُوْنَ ۝

وَاجْتِرَافِ الْبَيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِزْقٍ فَاَحْيَا بِهَا الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيفِ الرِّيْحِ اِلَيْتُمْ لِقَوْمٍ يَعْمَلُوْنَ ۝

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ تَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ فَاِتٰى حَدِيْثًا بَعْدَ اللّٰهِ وَاِلَيْتُمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝

وَبَلِّغْ لِقُلِّ اَقَاٰكِ اٰتِيْهِ ۝

يَسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنَّهُ لَمْ يَسْمَعْهَا فَبَعْدُ عَتَاٰ بِاَلْوَابِ ۝

- 1 तौहीद (एकेश्वरवाद) के प्रकरण में कुर्आन ने प्रत्येक स्थान पर आकाश तथा धरती में अल्लाह के सामर्थ्य की फैली हुई निशानियों को प्रस्तुत किया है। और यह बताया है कि जैसे उस ने वर्षा द्वारा मनुष्य के आर्थिक जीवन की व्यवस्था की है वैसे ही रसूलों तथा पुस्तकों द्वारा उस के आत्मिक जीवन की भी व्यवस्था कर दी है जिस पर आश्चर्य नहीं होना चाहिये। यह विश्व की व्यवस्था स्वयं ऐसी खुली पुस्तक है जिस के पश्चात् ईमान लाने के लिये किसी और प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

- न हो! तो आप उसे दुःखदायी यातना की सूचना पहुँचा दें।
9. और जब उसे ज्ञान हो हमारी किसी आयत का तो उसे उपहास बना ले। यही हैं जिन के लिये अपमानकारी यातना है।
10. तथा उन के आगे नरक है। और नहीं काम आयेगा उन के जो कुछ उन्होंने कमाया है और न जिसे उन्होंने अल्लाह के सिवा संरक्षक बनाया है। और उन्हीं के लिये कड़ी यातना है।
11. यह (कुर्आन) मार्गदर्शन है। तथा जिन्होंने कुफ़ किया अपने पालनहार की आयतों के साथ तो उन्हीं के लिये यातना है दुःखदायी यातना।
12. अल्लाह ही ने वश में किया है तुम्हारे लिये सागर को ताकि नाव चले उस में उस के आदेश से। और ताकि तुम खोज करो उस के अनुग्रह (दया) की। और ताकि तुम उस के कृतज्ञ (आभारी) बनो।
13. तथा उस ने तुम्हारी सेवा में लगा रखा है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है सब को अपनी ओर से। वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन के लिये जो सोच-विचार करें।
14. (हे नबी!) आप उन से कह दें जो ईमान लाये हैं कि क्षमा कर^[1] दें उन को जो आशा नहीं रखते हैं अल्लाह के

وَأَذَاعِلَمٌ مِّنَ الْيَتَامَىٰ إِتَّخَذَهَا هُرُوقًا ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٩﴾

مِن قَوْلِهِمْ جَهَنَّمَ ۖ وَلَا يُغْنِي عَنْهُمْ تَأْكِبُوتُهُمْ ۖ وَلَا مَا اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ ۗ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠﴾

هَٰذَا هُدًى ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِالآيَاتِ ۖ وَرَوَّاهُم عَنْهَا ۖ مِنَ رَّجْزٍ عَظِيمٍ ﴿١١﴾

أَلَمْ يَكُن لَّهُمُ الْبَحْرُ الْبَحْرَيْنِ مَنَافِقَ فَاكْفُرُوا بِهِمَا ۖ وَيَأْتِيهِمَا الْبِحْرَانِ ۖ وَيَتَّبِعُهُمُ الْغُلَامُ ۖ وَأُولَٰئِكَ يَتْلُونَ ﴿١٢﴾

وَسَخَّرْنَا لَهُمُ فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ جِجَعًا مِّمَّةً ۖ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٣﴾

قُلْ لِلَّذِينَ آمَنُوا نِعْمُ الْوَعْدُ ۖ وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ أَيَّامٌ لَّهُمْ لِيُجْزَىٰ قَوْمًا لِّمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾

1 अर्थात् उन की ओर से जो दुःख पहुँचता है।

दिनों^[1] की, ताकि वह बदला दे एक समुदाय को उन की कमाई का।

15. जिस ने सदाचार किया तो अपने भले के लिये किया। तथा जिस ने दुराचार किया तो अपने ऊपर किया। फिर तुम (प्रतिफल के लिये) अपने पालनहार की ओर ही फेरे^[2] जाओगे।
16. तथा हम ने प्रदान की इस्राईल की संतान को पुस्तक, तथा राज्य और नबूवत (दूतत्व), और जीविका दी उन को स्वच्छ चीजों से तथा प्रधानता दी उन्हें (उन के युग के) संसारवासियों पर।
17. तथा दिये हम ने उन को खुले आदेश। तो उन्होंने विभेद नहीं किया परन्तु अपने पास ज्ञान^[3] आ जाने के पश्चात् आपस के द्वेष के कारण। निःसंदेह आप का पालनहार ही निर्णय करेगा उन के बीच प्रलय के दिन जिस बात में वह विभेद कर रहे हैं।
18. फिर (हे नबी!) हम ने कर दिया आप को एक खुले धर्म विधान पर, तो आप अनुसरण करें इस का, तथा न चलें उन की आकांक्षाओं पर जो ज्ञान नहीं रखते।
19. वास्तव में वह आप के काम न आयेंगे अल्लाह के सामने कुछ। यह

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا قَلْبُهُ وَأَمَّا عَنْكَ فَمَكْرًا
تُرَى إِلَى رَبِّكَ تُرْجَعُونَ ⑤

وَلَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ وَالْعِلْمَ وَالنَّبُوَّةَ
وَوَزَعْنَاهُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ وَقَضَيْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ⑥

وَالْيَدِيهِمْ يَتَّبِعُونَ مِنَ الْأُمْرِ فَمَا اخْتَلَفُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ
مَا جَاءَهُمْ مِنَ الْعِلْمِ بَعِيًا بَيْنَهُمْ إِنَّ رَبَّكَ
يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ
يَخْتَلِفُونَ ⑦

تُرْجَعُونَ عَلَى شَرِّ عَمَلِكُمْ مِنَ الْأُمْرِ فَمَا تَتَّبِعُونَ
وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ⑧

إِنَّهُمْ لَنْ يَغْنَمُوا عَنكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَإِنَّ الظَّالِمِينَ

- 1 अल्लाह के दिनों से अभिप्राय वे दिन हैं जिन में अल्लाह ने अपराधियों को यातनायें दी हैं। (देखिये: सूरह इब्राहीम, आयत: 5)
- 2 अर्थात् प्रलय के दिन। जिस अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया है उसी के पास जाना भी है।
- 3 अर्थात् वैध तथा अवैध, और सत्योसत्य का ज्ञान आ जाने के पश्चात्।

अत्याचारी एक-दूसरे के मित्र हैं और अल्लाह आज्ञाकारियों का साथी है।

20. यह (कुर्आन) सूझ की बातें हैं सब मनुष्यों के लिये तथा मार्ग दर्शन एवं दया है उन के लिये जो विश्वास करें।

21. क्या समझ रखा है जिन्होंने दुष्कर्म किया है कि हम कर देंगे उन को उन के समान जो ईमान लाये तथा सदाचार किये हैं कि उन का जीवन तथा मरण समान^[1] हो जाये? वह बुरा निर्णय कर रहे हैं।

22. तथा पैदा किया है अल्लाह ने आकाशों एवं धरती को न्याय के साथ और ताकि बदला दिया जाये प्रत्येक प्राणी को उस के कर्म का तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

23. क्या आप ने उसे देखा जिस ने बना लिया अपना पूज्य अपनी इच्छा को। तथा कुपथ कर दिया अल्लाह ने उसे जानते हुये, और मुहर लगा दी उस के कान तथा दिल पर, और बना दिया उस की आँख पर आवरण (पर्दा)? फिर कौन है जो सीधी राह दिखायेगा उसे अल्लाह के पश्चात्? तो क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?

24. तथा उन्होंने कहा कि हमारा यही संसारिक जीवन है। हम यहीं मरते और जीते हैं। और हमारा विनाश युग (काल) ही करता है। उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं। वे केवल अनुमान की

بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۗ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِينَ ۝

هَذَا بَصِيرَةٌ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۝

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ نَحْمَلَهُمْ كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَوَاءً عِندَنَا ۖ وَمِمَّا أَسَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝

وَخَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِيُخْزِيَ كُلَّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۖ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝

أَفَرَأَيْتَ مَنْ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ وَأَضَلَّهُ اللَّهُ عَلَىٰ عِلْمِهِ وَخَوَّاهُ عَلَىٰ سَمْعِهِ وَقَلْبِهِ وَجَعَلَ عَلَىٰ بَصَرِهِ عَشْرَ ۖ مِثْرًا ۖ مَنِ اهْتَدَىٰ مِن بَعْدِ اللَّهِ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝

وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا أَمْثَلُنَا مَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا إِلَّا الدَّهْرُ وَمَا لَهُم بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ۝

1 अर्थात् दोनों के परिणाम में अवश्य अन्तर होगा।

बात^[1] कर रहे हैं।

25. और जब पढ़ कर सुनाई जाती है उन्हें हमारी खुली आयतें तो उन का तर्क केवल यह होता है कि ला दो हमारे पूर्वजों को यदि तुम सच्चे हो।
26. आप कह दें: अल्लाह ही तुम्हें जीवन देता तथा मारता है, फिर एकत्र करेगा तुम्हें प्रलय के दिन जिस में कोई संदेह नहीं। परन्तु अधिकतर लोग (इस तथ्य को) नहीं^[2] जानते।
27. तथा अल्लाह ही का है आकाशों तथा धरती का राज्य और जिस दिन स्थापना होगी प्रलय की तो उस दिन क्षति में पड़ जायेंगे झूठे।
28. तथा देखेंगे आप प्रत्येक समुदाय को घुटनों के बल गिरा हुआ। प्रत्येक समुदाय पुकारा जायेगा अपने कर्म-पत्र की ओर। आज बदला दिया जायेगा तुम लोगों को तुम्हारे कर्मों का।
29. यह हमारा कर्म-पत्र है जो बोल रहा है तुम पर सहीह बात। वास्तव में हम लिखवा रहे थे जो कुछ तुम कर रहे थे।
30. तो जो ईमान लाये तथा सदाचार

وَأَذَانُ عَلَيْهِمُ الْيَتْنَا بَيِّنَاتٍ مَا كَانَ حُجَّتَهُمْ
إِلَّا أَنْ قَالُوا اتَّبُوا آبَاءَنَا إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٤٥﴾

قُلِ اللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمَيِّتُكُمْ ثُمَّ يُجْمَعُكُمْ إِلَى
يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَأَرْبَبَ فِيهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٦﴾

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ
يَوْمَ يَخْسِرُ الْمُبْطِلُونَ ﴿٤٧﴾

وَتَرَى كُلَّ أُمَّةٍ جَائِئَةٌ تُكْفِرُ بِكُمْ وَتَقُولُ
أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤٨﴾

هَذَا كَيْفَ نَأْتِي بِطُغْيَانِكُمْ يَا حَقِّقُ إِنْ كُنَّا
نَسْتَسْمِعُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٩﴾

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُدْخِلُهُمْ

- 1 हदीस में है कि अल्लाह फरमाता है कि मनुष्य मुझे बुरा कहता है। वह युग को बुरा कहता है जब कि युग मैं हूँ। रात और दिन मेरे हाथ में है। (सहीह बुखारी: 6181) हदीस का अर्थ यह है कि युग को बुरा कहना अल्लाह को बुरा कहना है। क्योंकि युग में जो होता है उसे अल्लाह ही करता है।
- 2 आयत का अर्थ यह है कि जीवन और मौत देना अल्लाह के हाथ में है। वही जीवन देता है तथा मारता है। और उस ने संसार में मरने के बाद प्रलय के दिन फिर जीवित करने का समय रखा है। ताकि उन के कर्मों का प्रतिफल प्रदान करे।

किये उन्हें प्रवेश देगा उन का पालनहार अपनी दया में यही प्रत्यक्ष (खुली) सफलता है।

31. परन्तु जिन्होंने कुफ़ किया (उन से कहा जायेगा): क्या मेरी आयतें तुम्हें पढ़ कर नहीं सुनाई जा रही थी? तो तुम ने घमंड किया, तथा तुम अपराधी बन कर रहे?।

32. तथा जब कहा जाता था कि निश्चय अल्लाह का वचन सच्च है तथा प्रलय होने में तनिक भी संदेह नहीं तो तुम कहते थे कि प्रलय क्या है? हम तो केवल एक अनुमान रखते हैं तथा हम विश्वास करने वाले नहीं हैं।

33. तथा खुल जायेंगी उन के लिये उन के दुष्कर्मों की बुराईयाँ और घेर लेगा उन को जिस का वह उपहास कर रहे थे।

34. और कहा जायेगा कि आज हम तुम्हें भुला देंगे^[1] जैसे तुम ने इस दिन से मिलने को भुला दिया। और तुम्हारा कोई सहायक नहीं है।

35. यह (यातना) इस कारण है कि तुम ने बना लिया था अल्लाह की आयतों को उपहास, तथा धोखे में रखा तुम्हें

رَبُّكُمْ فِي رَحْمَتِهِ ذَلِكَ هُوَ الْعَزِيزُ الْمُبِينُ ﴿٢٥﴾

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا إِذْ أَقَامُوا كُنُوزَ اللَّهِ عَلَىٰ نَفْسِهِمْ فَانْتَبَهُ الْمَوْتُ فَمَا جَزَاءُ الْمُفْسِدِينَ ﴿٢٦﴾

وَإِذَا قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ لَارِيْبٌ فِيهَا فَلْتُمْ مَنَادِرِي مَا السَّاعَةُ إِنْ نَسْتَأْذِنُ إِلَّا طَائِفًا مِّنْهُمْ يَسْتَفْتِينَ ﴿٢٧﴾

وَبَدَأَ اللَّهُ سَيْبَاتٍ مِّنْ عَمَلِكُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٢٨﴾

وَقِيلَ الْيَوْمَ نَنْسِفُكُمْ كَمَا نَسِفْنَا لِقَاءَ رَبِّكُمْ هَذَا وَمَا لَكُمْ لِمَا كُنْتُمْ تُبْهِرُونَ ﴿٢٩﴾

ذَلِكُمْ بِأَنكُمْ اتَّخَذْتُمُ اللَّهَ هُزُوًا وَعَظَمْتُمْ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا قَالِيَوْمَ لَا يُخْرَجُونَ مِنْهَا

1 जैसे हदीस में आता है कि अल्लाह अपने कुछ बंदों से कहेगा: क्या मैं ने तुम्हें पत्नी नहीं दी थी? क्या मैं ने तुम्हें सम्मान नहीं दिया था? क्या मैं ने घोड़े तथा बैल इत्यादि तेरे आधीन नहीं किये थे? तू सरदारी भी करता तथा चुंगी भी लेता रहा। वह कहेगा: हाँ ये सहीह है, हे मेरे पालनहार! फिर अल्लाह उस से प्रश्न करेगा: क्या तुम्हें मुझ से मिलने का विश्वास था? वह कहेगा: "नहीं।" अल्लाह फरमायेगा: (तो आज मैं तुझे नरक में डाल कर भूल जाऊँगा जैसे तू मुझे भूला रहा। (सहीह मुस्लिम: 2968)

संसारिक जीवन ने। तो आज वे नहीं निकाले जायेंगे (यातना से)। और न उन्हें क्षमा माँगने का अवसर दिया जायेगा।^[1]

وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٢٥﴾

36. तो अल्लाह के लिये सब प्रशंसा है जो आकाशों तथा धरती का पालनहार एवं सर्वलोक का पालनहार है।

قَبْلَهُ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَرَبِّ الْأَرْضِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٦﴾

37. और उसी की महिमा^[2] है आकाशों तथा धरती में और वही प्रबल और सब गुणों को जानने वाला है।

وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٧﴾

1 अर्थात् अल्लाह की निशानियों तथा आदेशों का उपहास तथा दुनिया के धोखे में लिप्त रहना। यह दो अपराध ऐसे हैं जिन्होंने तुम्हें नरक की यातना का पात्र बना दिया। अब उस से निकलने की संभावना नहीं। तथा न इस बात की आशा है कि किसी प्रकार तुम्हें तौबा तथा क्षमा याचना का अवसर प्रदान कर दिया जाये। और तुम क्षमा माँग कर अल्लाह को मना लो।

2 अर्थात् महिमा और बड़ाई अल्लाह के लिये विशेष है। जैसा कि एक हदीस कुदूसी में अल्लाह तआला ने फरमाया है कि महिमा मेरी चादर है तथा बड़ाई मेरा तहबंद है। और जो भी इन दोनों में से किसी एक को मुझ से खींचेगा तो मैं उसे नरक में फेंक दूँगा। (सहीह मुस्लिम: 2620)

सूरह अहकाफ़ - 46



सूरह अहकाफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 35 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 21 में आद जाति की बस्ती ((अहकाफ)) की चर्चा की गई है जो यमन के समीप एक रेतीला क्षेत्र है। इसी कारण इस का नाम सूरह अहकाफ़ है।
- इस की आयत 21 से 28 तक में क़ुर्आन के अल्लाह की बाणी होने का दावा प्रस्तुत करते हुये शिर्क के अनुचित होने को उजागर किया गया है। और नबूवत से संबंधित संदेहों का निवारण किया गया है। इसी के साथ ईमान वालों को दिलासा तथा शुभसूचना दी गई है। और काफ़िरों के बुरे परिणाम से सावधान किया गया है।
- इस में ((आद)) जाति के परिणाम से शिक्षा प्राप्त करने को कहा गया है।
- आयत 29 से 32 तक जिन्नों के क़ुर्आन पाक सुनने, तथा उस पर ईमान लाने का वर्णन है।
- इस में मरने के पश्चात् जीवन से संबंधित संदेह को दूर किया गया है। और नरक की यातना से सावधान किया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सहन करने का निर्देश दिया गया है। क्योंकि आप से पूर्व जो नबी आये थे उन को भी विभिन्न प्रकार से सताया गया था परन्तु उन्होंने धैर्य धारण किया।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा, मीमा।
2. इस पुस्तक का उतरना अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वदर्शी की ओर से है।
3. हम ने नहीं उत्पन्न किया है आकाशों

حَمْدًا

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ

مَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا

तथा धरती को और जो कुछ उन के बीच है परन्तु सत्य के साथ एक निश्चित अवधि तक के लिये। तथा जो काफ़िर हैं उन्हें जिस बात से सावधान किया जाता है वे उस से मुँह मोड़े हुये हैं।

4. आप कहें कि भला देखो कि जिसे तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा, तनिक मुझे दिखा दो कि उन्होंने क्या उत्पन्न किया है धरती में से? अथवा उन का कोई साझा है आकाशों में? मेरे पास कोई पुस्तक^[1] प्रस्तुत करो इस से पूर्व की, अथवा बचा हुआ कुछ^[2] ज्ञान यदि तुम सच्चे हो।
5. तथा उस से अधिक बहका हुआ कौन हो सकता है जो अल्लाह के सिवा उसे पुकारता हो जो उस की प्रार्थना स्वीकार न कर सके प्रलय तक। और वह उस की प्रार्थना से निश्चेत (अनजान) हों?
6. तथा जब लोग एकत्र किये जायेंगे तो वह उन के शत्रु हो जायेंगे और उन की इबादत का इन्कार कर^[3] देंगे।

بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى وَالَّذِينَ كَفَرُوا عَمَّا أُنذِرُوا
مُعْرِضُونَ ①

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي
مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي
السَّمَوَاتِ إِنِّي لَكَيْتٌ مِنْ قَبْلِ هَذَا أَوْ أَشْرَافٌ
مِّنْ عِلمِهِمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ①

وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَن
لَّا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَهُمْ عَنِ
دُعَائِهِمْ غَافِلُونَ ①

وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً وَكَانُوا
بِعِبَادَتِهِمْ كَافِرِينَ ①

- 1 अर्थात यदि तुम्हें मेरी शिक्षा का सत्य होना स्वीकार नहीं तो किसी धर्म की आकाशीय पुस्तक ही से सिद्ध कर के दिखा दो कि सत्य की शिक्षा कुछ और है। और यह भी न हो सके तो किसी ज्ञान पर आधारित कथन और रिवायत ही से सिद्ध कर दो कि यह शिक्षा पूर्व के नबियों ने नहीं दी है। अर्थ यह है कि जब आकाशों और धरती की रचना अल्लाह ही ने की है तो उस के साथ दूसरों को पूज्य क्यों बनाते हो?
- 2 अर्थात इस से पहले वाली आकाशीय पुस्तकों का।
- 3 इस विषय की चर्चा कुरआन की अनेक आयतों में आई है। जैसे सूरह यूनस, आयत:

7. और जब पढ़ कर सुनाई गई उन को हमारी खुली आयतें तो काफिरों ने उस सत्य को जो उन के पास आ चुका है, कह दिया कि यह तो खुला जादू है।
8. क्या वह कहते हैं कि आप ने इसे^[1] स्वयं बना लिया है? आप कह दें कि यदि मैं ने इसे स्वयं बना लिया है तो तुम मुझे अल्लाह की पकड़ से बचाने का कोई अधिकार नहीं रखते।^[2] वही अधिक ज्ञानी है उन बातों का जो तुम बना रहे हो। वही पर्याप्त है गवाह के लिये मेरे तथा तुम्हारे बीच और वह बड़ा क्षमाशील दयावान् है।
9. आप कह दें कि मैं कोई नया रसूल नहीं हूँ, और न मैं जानता कि मेरे साथ क्या होगा^[3] और न तुम्हारे साथ। मैं तो केवल अनुसरण कर रहा हूँ उस का जो मेरी ओर वही (प्रकाशना) की जा रही है। मैं तो केवल खुला सावधान करने वाला हूँ।
10. आप कह दें: तुम बताओ यदि यह (कुर्आन) अल्लाह की ओर से हो और तुम उसे न मानो जब कि गवाही दे चुका है एक गवाह, इस्राईल की

وَأَدَّاتِلُّ عَلَيْهِمُ آيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ هَذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ كُلُّ إِنَّا فَرَّيْتَهُ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ كَفَىٰ بِهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝

قُلْ مَا كُنْتُ بِدَاعِيَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفَعَّلُ بِي وَلَا يَكُنْ لِي آتِيَةٌ إِلَّا مَا يَكُونُ لِي وَمَا أَتَاكَ إِلَّا تَنْذِيرًا مُّبِينٌ ①

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَكُفِّرْتُمْ بِهِ وَشَهِدَ شَهِدًا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ قَامَنَ وَأَسْتَكْبَرْتُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

290, सूरह मर्यम, आयत: 81, 82, सूरह अन्कबूत, आयत: 25, आदि।

- 1 अर्थात् कुर्आन को।
- 2 अर्थात् अल्लाह की यातना से मेरी कोई रक्षा नहीं कर सकता। (देखिये: सूरह अहकाफ, आयत: 44, 47)
- 3 अर्थात् संसार में। अन्यथा यह निश्चित है कि परलोक में ईमान वाले के लिये स्वर्ग तथा काफिर के लिये नरक है। किन्तु किसी निश्चित व्यक्ति के परिणाम का ज्ञान किसी को नहीं।

संतान में से इसी जैसी बात^[1] पर,
फिर वह ईमान लाया तथा तुम
घमंड कर गये? तो वास्तव में अल्लाह
सुपथ नहीं दिखाता अत्याचारी जाति
को।^[2]

11. और काफिरों ने कहा, उन से जो
ईमान लाये यदि यह (धर्म) उत्तम होता
तो वह पहले नहीं आते हम से उस की
ओर। और जब नहीं पाया मार्ग दर्शन
उन्हों ने इस (कुर्आन) से तो अब यही
कहेंगे कि यह तो पुराना झूठ है।
12. जब कि इस से पूर्व मूसा की पुस्तक
मार्गदर्शक तथा दया बन कर आ
चुकी। और यह पुस्तक (कुर्आन)
सच्च^[3] बताने वाली है अर्बी भाषा
में।^[4] ताकि वह सावधान कर दे
अत्याचारियों को और शुभसूचना हो
सदाचारियों के लिये।
13. निश्चय जिन्होंने कहा कि हमारा
पालनहार अल्लाह है। फिर उस पर

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَا
سَبَقُونَا إِلَيْهِ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ هَذَا
إِنشَاءٌ قَدِيمٌ ۝

وَمِنْ قَبْلِهِ كَتَبَ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً وَهَذَا كِتَابٌ
مُّصَدِّقٌ لِّسَانِ عَزْرَةَ الْبَنِي إِسْرَائِيلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا
وَبُشْرَىٰ لِلْمُحْسِنِينَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ

- 1 जैसे इस्राईली विद्वान अब्दुल्लाह पुत्र सलाम ने इसी कुर्आन जैसी बात के तौरात में होने की गवाही दी कि तौरात में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के नबी होने का वर्णन है। और वे आप पर ईमान भी लाये। (सहीह बुख़ारी: 3813, सहीह मुस्लिम: 2484)
- 2 अर्थात अत्याचारियों को उन के अत्याचार के कारण ही कुपथ में रहने देता है। ज़बरदस्ती किसी को सीधी राह पर नहीं चलाता।
- 3 अपने पूर्व की आकाशीय पुस्तकों को।
- 4 अर्थात इस की कोई मूल शिक्षा ऐसी नहीं जो मूसा की पुस्तक में न हो। किन्तु यह अर्बी भाषा में है। इसलिये कि इस से प्रथम सम्बोधित अरब लोग थे। फिर सारे लोग। इसीलिये कुर्आन का अनुवाद प्राचीन काल ही से दूसरी भाषाओं में किया जा रहा है। ताकि जो अर्बी नहीं समझते वह भी उस से शिक्षा ग्रहण करें।

स्थित रह गये तो कोई भय नहीं होगा उन पर, और न वह^[1] उदासीन होंगे।

14. यही स्वर्गीय हैं जो सदावासी होंगे उस में उन कर्मों के प्रतिफल (बदले) में जो वे करते रहे।
15. और हम ने निर्देश दिया है मनुष्य को अपने माता पिता के साथ उपकार करने का। उसे गर्भ में रखा है उस की माँ ने दुख झेल कर। तथा जन्म दिया उस को दुख झेल कर। तथा उस के गर्भ में रखने तथा दूध छुड़ाने की अवधि तीस महीने रही।^[2] यहाँ तक कि जब वह अपनी पूरी शक्ति को पहुँचा तथा चालीस वर्ष का हुआ, तो कहने लगा: हे मेरे पालनहार! मुझे क्षमता दे कि कृतज्ञ रहूँ तेरे उस पुरस्कार का जो तूने प्रदान किया है मुझे को तथा मेरे माता-पिता को। तथा ऐसा सत्कर्म करूँ जिस से तू प्रसन्न हो जाये। तथा

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٤٦﴾

أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٤٦﴾

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا وَحَمَلُهُ وَفِضْلُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ اأَشَدَّاهُ وَبَلَغَ اأَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْحِرْ لِي فِي دُرِّي عِنِّي إِنَّ رَبِّي لَبِتَّ إِلَيْكَ إِنَّتِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٤٦﴾

1 (देखिये: सूरह, हा, मीम सजदा, आयत: 31)

हदीस में है कि एक व्यक्ति ने कहा: हे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! मुझे इस्लाम के बारे में ऐसी बात बतायें कि फिर किसी से कुछ पछाना न पड़े। आप ने फरमाया: कहो कि मैं अल्लाह पर ईमान लाया फिर उसी पर स्थित हो जाओ। (सहीह मुस्लिम: 38)

- 2 इस आयत तथा कुर्आन की अन्य आयतों में भी माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने पर विशेष बल दिया गया है। तथा उन के लिये प्रार्थना करने का आदेश दिया गया है। देखिये: सूरह बनी इस्राईल, आयत: 170। हदीसों में भी इस विषय पर अति बल दिया गया है। आदरणीय अबू हुरैरा (रजियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि एक व्यक्ति ने आप से पूछा कि मेरे सदव्यवहार का अधिक योग्य कौन है? आप ने फरमाया: तेरी माँ। उस ने कहा: फिर कौन है? आप ने कहा: तेरी माँ। उस ने कहा: फिर कौन है? आप ने कहा: तेरी माँ। तथा चौथी बार आप ने कहा: तेरे पिता। (सहीह बुखारी: 5971, तथा सहीह मुस्लिम: 2548)

सुधार दे मेरे लिये मेरी संतान को, मैं ध्यानमग्न हो गया तेरी ओर। तथा मैं निश्चय मुस्लिमों में से हूँ।

16. वही है स्वीकार कर लेंगे हम जिन से उन के सर्वोत्तम कर्मों को, तथा क्षमा कर देंगे उन के दुष्कर्मों को। (वह) स्वर्ग वासियों में है उस सत्य वचन के अनुसार जो उन से किया जाता था।

17. तथा जिस ने कहा अपने माता-पिता से: धिक् है तुम दोनों पर! क्या मुझे डरा रहे हो कि मैं (धरती से) निकाला^[1] जाऊँगा जब कि बहुत से युग बीत गये^[2] इस से पूर्व? और वह दोनों दुहाई दे रहे थे अल्लाह की: तेरा विनाश हो! तू ईमान ला! निश्चय अल्लाह का वचन सच्च है। तो वह कह रहा था कि यह अगलों की कहानियाँ हैं।^[3]

18. यही वह लोग हैं जिन पर अल्लाह की यातना का वचन सिद्ध हो गया उन समुदायों में जो गुज़र चुके इन से पूर्व जिन्न तथा मनुष्यों में से। वास्तव में वही क्षति में थे।

19. तथा प्रत्येक के लिये श्रेणियाँ हैं उन के

أُولَئِكَ الَّذِينَ نَقَّبَلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَتَتَجَاوَرُ
عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ وَعَدَّ الصَّادِقُ الَّذِينَ
كَانُوا وَعَدُوًّا ۖ

وَالَّذِي قَالَ لَوْلَا دِيَةٌ أَبِي كَلَّمَا اتَّعَدَ نَبِيُّ أَنْ أُخْرِجَ
وَقَدْ خَلَّتِ الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِهِ ۖ وَهِيَ اسْتَمِعَتْ مِنْ اللَّهِ
وَنَبِيِّكَ مِنْ رَبِّكَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَيَقُولُ مَا هَذَا إِلَّا
أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۖ

أُولَئِكَ الَّذِينَ نَحْنُ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي آيَةِ الْقَوْلِ ۖ وَكَانُوا
مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنَّهُمْ كَانُوا
خَبِيرِينَ ۖ

وَلِكُلِّ دَرَجَةٍ مِمَّا عَمِلُوا وَلِيُوقِعَهُمْ أَعْمَالَهُمْ

1 अर्थात् मौत के पश्चात् प्रलय के दिन पुनः जीवित कर के समाधि से निकाला जाऊँगा। इस आयत में बुरी संतान का व्यवहार बताया गया है।

2 और कोई फिर जीवित हो कर नहीं आया।

3 इस आयत में मुसलमान माता-पिता का विवाद एक काफिर पुत्र के साथ हो रहा है जिस का वर्णन उदाहरण के लिये इस आयत में किया गया है। और इस प्रकार का वाद-विवाद किसी भी मुसलमान तथा काफिर में हो सकता है। जैसा कि आज अनैक पश्चिम आदि देशों में हो रहा है।

कर्मानुसार। और उन्हें भरपूर बदला दिया जायेगा उन के कर्मों का तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٠﴾

20. और जिस दिन सामने लाये जायेंगे जो काफिर हो गये अग्नि के। (उन से कहा जायेगा): तुम ले चुके अपना आनन्द अपने संसारिक जीवन में और लाभान्वित हो चुके उन से। तो आज तुम को अपमान की यातना दी जायेगी उस के बदले जो तुम घमंड करते रहे धरती में अनुचित तथा उस के बदले जो उल्लंघन करते रहे।

وَيَوْمَ نَعْرُضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَذْهَبْتُمْ كَلْبَتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَبْتَعْتُم بِهَا ۖ
فَالْيَوْمَ نَجْزِيَنَّ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ
تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ
وَبِمَا كُنتُمْ تَقْسُمُونَ ﴿١٠﴾

21. तथा याद करो आद के भाई (हूद^[1]) को। जब उस ने अपनी जाति को सावधान किया, अहकाफ^[2] में जब कि गुजर चुके सावधान करने वाले (रसूल) उस के पहले और उस के पश्चात्, कि इबादत (वन्दना) न करो अल्लाह के अतिरिक्त की। मैं डरता हूँ तुम पर एक बड़े दिन की यातना से।

وَأذْكُرْ أَخَا عَادٍ إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ
وَقَدْ خَلَّتِ الشُّرُومُ بَيْنَ يَدَيْهِ وَمِن
خَلْفِهِ أَلَّا يَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١١﴾

22. तो उन्होंने कहा कि क्या तुम हमें फेरने आये हो हमारे पूज्यों से? तो ला दो हमारे पास जिस की हमें धमकी दे रहे हो यदि तुम सच्चे हो।

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَأْفِكَنَا عَنِ الْهَيْئَةِ ۚ فَايْتَنَا
بِمَا نَعْبُدُ ۖ إِنَّا لَكُنْتُ مِنَ الضَّالِّينَ ﴿١١﴾

- 1 इस में मक्का के प्रमुखों को जिन्हें अपने धन तथा बल पर बड़ा गर्व था अरब क्षेत्र की एक प्राचीन जाति की कथा सुनाने को कहा जा रहा है जो बड़ी सम्पन्न तथा शक्तिशाली थी।
- 2 अहकाफ: अर्थात: ऊँचा रेत का टीला है। यह जाति उसी क्षेत्र में निवास करती थी जिसे ((रुबाल खाली)) (अर्थात अरब टापू का चौथाई भाग जो केवल मरुस्थल है) कहा जाता है। यह क्षेत्र ओमान से यमन तक फैला हुआ था। जहाँ आज कोई आबादी नहीं है। इसी जाति को प्रथम आद भी कहा गया है।

23. हूद ने कहा: उस का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। और मैं तुम्हें वही उपदेश पहुँचा रहा हूँ जिस के साथ मैं भेजा गया हूँ। परन्तु मैं देख रहा हूँ तुम को कि तुम अज्ञानता की बातें कर रहे हो।

قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِن لَّيَعْلَمَنَّ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ وَلَكِنِّي أَرَكُمُ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ﴿٢٣﴾

24. फिर जब उन्होंने देखा एक बादल आते हुये अपनी वादियों की ओर तो कहा: यह एक बादल है हम पर बरसने वाला। बल्कि यह वही है जिस की तुम ने जल्दी मचाई है। यह आँधी है जिस में दुःखदायी यातना है।^[1]

فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُّتَقَبِّلًا أَدْبَيْتُمْ مِمَّا قَالُوا هَذَا عَارِضٌ مُّطَّرٌ نَّابِلٌ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٤﴾

25. वह विनाश कर देगी प्रत्येक वस्तु को अपने पालनहार के आदेश से, तो वे हो गये ऐसे कि नहीं दिखाई देता था कुछ उन के घरों के अतिरिक्त। इसी प्रकार हम बदला दिया करते हैं अपराधि लोगों को।

تَدْمِرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا لَا يُرَى إِلَّا مَسَاجِدُهُمْ كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٥﴾

26. तथा हम ने उन को वह शक्ति दी थी जो इन^[2] को नहीं दी है। हम ने बनाये थे उन के कान तथा आँखें और दिल, तो नहीं काम आये उन के कान और उन की आँखें तथा न उन

وَلَقَدْ مَكَّنَّهُمْ فِيمَا آتَيْنَاهُمْ مَكَّنَّاكُمْ فِيهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَأَبْصَارًا وَأَفْئِدَةً فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَا أَبْصَارُهُمْ وَلَا أَفْئِدَتُهُمْ مِّنْ شَيْءٍ إِذْ كَانُوا يُجْحَدُونَ

1 हदीस में है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बादल या आँधी देखते तो व्याकुल हो जाते। आईशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा: अल्लाह के रसूल! लोग बादल देख कर वर्षा की आशा में प्रसन्न होते हैं और आप क्यों व्याकुल हो जाते हैं? आप ने कहा: आईशा! मुझे भय रहता है कि इस में कोई यातना न हो? एक जाति को आँधी से यातना दी गई। और एक जाति ने यातना देखी तो कहा: यह बादल हम पर वर्षा करेगा। (सहीह बुखारी: 4829, तथा सहीह मुस्लिम: 899)

2 अर्थात् मक्का के काफ़िरों को।

के दिल कुछ भी। क्योंकि वे इन्कार करते थे अल्लाह की आयतों का तथा घेर लिया उन को उस ने जिस का वह उपहास कर रहे थे।

يَا أَيُّهَا اللَّهُ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٥٦﴾

27. तथा हम ध्वस्त कर चुके हैं तुम्हारे आस पास की बस्तियों को। तथा हम ने उन्हें अनेक प्रकार से आयतें सुना दीं ताकि वह वापिस आ जायें।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِنَ الْقُرَى
وَصَرَفْنَا الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٧﴾

28. तो क्यों नहीं सहायता की उन की उन्होंने जिन को बनाया था अल्लाह के अतिरिक्त (अल्लाह के) समिप्य के लिये पूज्य (उपास्य)? बल्कि वह खो गये उन से, और यह^[1] उन का झूठ था, तथा जिसे स्वयं वे घड़ रहे थे।

فَلَوْلَا نَصْرَهُمْ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ
اللَّهِ قُرْبَانًا آلِهَةً بَلَّ ضَلُوعُهُمْ وَذَلِكَ
إِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوا يَفْقَهُونَ ﴿٥٨﴾

29. तथा याद करें जब हम ने फेर दिया आप की ओर जिन्नों के एक^[2] गिरोह को ताकि वह कुर्आन सुनें तो जब वह

وَأَذْصَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْعِجْنِ يُسَمِعُونَ
الْقُرْآنَ فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوا أَنصَبُوا لَنَا
مِمَّا يُضَىٰ وَلَوْ إِلَىٰ قَوْمِهِمْ مُنْذِرِينَ ﴿٥٩﴾

1 अर्थात् अल्लाह के अतिरिक्त को पूज्य बनाना।

2 आदरणीय इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि एक बार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने कुछ अनुयायियों (सहाबा) के साथ उकाज़ के बाज़ार की ओर जा रहे थे। इन दिनों शैतानों को आकाश की सूचनायें मिलनी बंद हो गई थीं। तथा उन पर आकाश से अंगारे फेंके जा रहे थे। तो वे इस खोज में पूर्व तथा पश्चिम की दिशाओं में निकले कि इस का क्या कारण है? कुछ शैतान तिहामा (हिजाज़) की ओर भी आये और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तक पहुँच गये। उस समय आप ((नब्ला)) में फ़ज़्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे। जब जिन्नों ने कुर्आन सुना तो उस की ओर कान लगा दिये। फिर कहा कि यही वह चीज़ है जिस के कारण हम को आकाश की सूचना मिलनी बंद हो गई है। और अपनी जाति से जा कर यह बात कही। तथा अल्लाह ने यह आयत अपने नबी पर उतारी। (सहीह बुख़ारी: 4921)

इन आयतों में संकेत है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जैसे मनुष्यों के नबी थे वैसे ही जिन्नों के भी नबी थे। और सभी नबी मनुष्यों में आये। (देखिये: सूरह नहल, आयत: 43, सूरह फुर्कान, आयत: 20)

उपस्थित हुये आप के पास तो उन्होंने कहा कि चुप रहो। और जब पढ़ लिया गया तो वे फिर गये अपनी जाति की ओर सावधान करने वाले हो कर।

30. उन्होंने कहा: हे हमारी जाति! हम ने सुनी है एक पुस्तक जो उतारी गई है मूसा के पश्चात्। वह अपने से पूर्व की किताबों की पुष्टि करती है। और सत्य तथा सीधी राह दिखाती है।

31. हे हमारी जाति! मान लो अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात को। तथा ईमान लाओ उस पर, वह क्षमा कर देगा तुम्हारे लिये तुम्हारे पापों को तथा बचा देगा तुम्हें दुश्खदायी यातना से।

32. तथा जो मानेगा नहीं अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात तो नहीं है वह विवश करने वाला धरती में। और नहीं है उस के लिये अल्लाह के अतिरिक्त कोई सहायक। यही लोग खुले कुपथ में हैं।

33. और क्या उन लोगों ने नहीं समझा कि अल्लाह, जिस ने उत्पन्न किया है आकाशों तथा धरती को, और नहीं थका उन को बनाने से, वह सामर्थ्यवान है कि जीवित कर दे मुर्दा को? क्यों नहीं? वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।

34. और जिस दिन सामने लाये जायेंगे जो काफ़िर हो गये नरक के, (और उन से कहा जायेगा): क्या यह सचच नहीं है? वे कहेंगे: क्यों नहीं? हमारे

قَالُوا لَقَوْمًا آتَيْنَا مِنْكُمْ كِتَابًا أَنْزَلْنَا مِنْ بَعْدِ
مُوسَىٰ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَيَهْدِي إِلَى الْحَقِّ
وَأَلَّا تَكْفُرُوا ۝٣٠

يَوْمًا آجِبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَأُمّوَابِهِ يُغْفِرُ لَكُمْ مِنْ
ذُنُوبِكُمْ وَيُجِزُّكُمْ مِنْ عَذَابِ الْآلِيمِ ۝٣١

وَمَنْ لَا يُؤْمَرْ بِالْإِيمَانِ فَإِنَّ اللَّهَ قَلِيلٌ يُعْزِزُ فِي الْأَرْضِ
وَلَيْسَ لَهُ مِنْ دُونِهِ آلُؤُفِيَاءُ ۝٣٢ وَاللَّهُ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝٣٣

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
وَلَمْ يَعْبَءْ بِخَلْقِهِنَّ يَقْدِرُ عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ
بَلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝٣٤

وَيَوْمَ يَعْرُضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَلَيْسَ هٰذَا
بِالْحَقِّ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ
بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ۝٣٥

पालनहार की शपथ! वह कहेगा: तब चखो यातना उस कुफ़्र के बदले जो तुम कर रहे थे।

35. तो (हे नबी!) आप सहन करें जैसे साहसी रसूलों ने सहन किया। तथा जल्दी न करें उन (की यातना) के लिये। जिस दिन वह देख लेंगे जिस का उन्हें वचन दिया जा रहा है तो समझेंगे कि जैसे वह नहीं रहे हैं परन्तु दिन के कुछ^[1] क्षण। बात पहुँचा दी गई है, तो अब उन्हीं का विनाश होगा जो अवैज्ञाकारी हैं।

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُو الْعِزِّ مِنَ الرُّسُلِ
وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَهُمْ كَانَهُمْ يَوْمُ يَوْمُونَ
مَائِدُونَ لَمْ يَلْبَسُوا إِلَّا السَّاعَةَ مِنْ نَهَارٍ
بَلَعَتْ فَعَلْ يُهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمَ الْفَاسِقُونَ ﴿٤٦﴾

1 अर्थात् प्रलय की भीषणता के आगे संसारिक सुख क्षणभर प्रतीत होगा। हदीस में है कि नारकियों में से प्रलय के दिन संसार के सब से सुखी व्यक्ति को ला कर नरक में एक बार डाल कर कहा जायेगा: क्या कभी तुम ने सुख देखा है? वह कहेगा: मेरे पालनहार! (कभी) नहीं (देखा)।
(सहीह मुस्लिम शरीफ़: 2807)

सूरह मुहम्मद - 47



सूरह मुहम्मद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 38 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 27 में नबी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का नाम आया है। जिस के कारण इस का नाम सूरह मुहम्मद है। इस का एक दूसरा नाम ((क़िताल)) भी है जो इस की आयत 20 से लिया गया है।
- इस में बताया गया है कि काफ़िरों तथा ईमान वालों की कार्य प्रणाली विभिन्न है। इसलिये उन के साथ अल्लाह का व्यवहार भी अलग-अलग होगा। वह काफ़िरों के कर्म असफल कर देगा। और ईमान वालों की दशा सुधार देगा।
- इस में आयत 4 से 15 तक ईमान वालों को युद्ध के संबन्ध में निर्देश दिये गये हैं। और परलोक के उत्तम फल की शुभसूचना दी गयी है।
- आयत 16 से 32 तक मुनाफ़ि़कों कि दशा बतायी गयी है जो जिहाद के डर से काफ़िरों से मिल कर षड्यंत्र रचते थे।
- इस की आयत 33 से 38 तक साधारण मुसलमानों को जिहाद करने तथा अल्लाह की राह में दान करने की प्रेरणा दी गयी है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जिन लोगों ने क़ुफ़्र (अविश्वास) किया तथा अल्लाह की राह से रोका, (अल्लाह ने) व्यर्थ (निष्फल) कर दिया उन के कर्मों को।
2. तथा जो ईमान लाये और सदाचार किये तथा उस (कुआन) पर ईमान लाये जो उतारा गया है मुहम्मद पर, और वह सचच है उन के पालनहार

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ أَصَلَّ
أَعْمَالَهُمْ ۝

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآمَنُوا بِمَا نُزِّلَ
عَلَيْ مُحَمَّدٍ وَهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ كَفَّرَ عَنْهُمْ
سَيِّئَاتِهِمْ وَأَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝

की ओर से, तो दूर कर दिया उन से उन के पापों को तथा सुधार दिया उन की दशा को।

3. यह इस कारण कि जिन्होंने कुफ़्र किया और चले असत्य पर तथा जो ईमान लाये वह चले सत्य पर अपने पालनहार की ओर से (आये हुये) इसी प्रकार बता देता है अल्लाह लोगों को उन की सहीह दशायें।^[1]
4. तो जब (युद्ध में) भिड़ जाओ काफ़िरों से तो गर्दन उड़ाओ, यहाँ तक की जब कुचल दो उन को तो उन्हें दूढ़ता से बाँधो। फिर उस के बाद या तो उपकार कर के छोड़ दो या अर्थदण्ड ले कर। यहाँ तक कि युद्ध अपने हथियार रख दे।^[2] यह आदेश है। और यदि अल्लाह चाहता तो स्वयं उन से बदला ले लेता। किन्तु (यह आदेश इस लिये दिया) ताकि तुम्हारी एक-दूसरे द्वारा परीक्षा ले। और जो मार दिये गये अल्लाह की राह में तो वह कदापि व्यर्थ नहीं करेगा उन के कर्मों को।
5. वह उन्हें मार्गदर्शन देगा तथा सुधार देगा उन की दशा।
6. और प्रवेश करायेगा उन्हें स्वर्ग में

ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تَتَّبِعُوْنَ الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا يَتَّبِعُوْنَ الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ
لِلنَّاسِ اَمْثَالَھُمْ ﴿١﴾

فَاذِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قَصَبَ الرِّجَابِ حَتّٰى اِذَا
اَخْتَضَرْتُمْھُمْ فَشُدُّوا الْوَتَانَ وَاَقَامْتُمْ اَعْدَاؤِنَا
فِدَاءً حَتّٰى تَضْمَعَ السَّرْوِبُ اَوْ رَاهَا ذٰلِكَ وَاَوْ
يَشَاكُ اللّٰهُ لَانْتَصَرِيْمِهِمْ وَاَلَسِنُ لِيَبْلُوْا بَعْضَكُمْ
بِبَعْضٍ وَاَلَّذِيْنَ فِتَنُوْا فِى سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُعِيْلَ
اَعْمَالِهِمْ ﴿٢﴾

سَيَهْدِيْھُمْ وَيُصْلِحُ بَالھُمْ ﴿١﴾

وَيَدْخُلُھُمْ الْجَنَّةَ كَرۡهًا لَّھُمْ ﴿٢﴾

- 1 यह सूरह बद्र के युद्ध से पहले उतरी। जिस में मक्का के काफ़िरों के आक्रमण से अपने धर्म और प्राण तथा मान-मर्यादा की रक्षा के लिये युद्ध करने की प्रेरणा तथा साहस और आवश्यक निर्देश दिये गये हैं।
- 2 इस्लाम से पहले युद्ध के बंदियों को दास बना लिया जाता था किन्तु इस्लाम उन्हें उपकार कर के या अर्थ दण्ड ले कर मुक्त करने का आदेश देता है। इस आयत में यह संकेत है कि इस्लाम जिहाद की अनुमति दूसरों के आक्रमण से रक्षा के लिये देता है।

जिस की पहचान दे चुका है उन को।

7. हे ईमान वालो! यदि तुम सहायता करोगे अल्लाह (के धर्म) की तो वह सहायता करेगा तुम्हारी। तथा दृढ़ (स्थिर) कर देगा तुम्हारे पैरों को।
8. और जो काफिर हो गये तो विनाश है उन्हीं के लिये और उस ने व्यर्थ कर दिया उन के कर्मों को
9. यह इसलिये कि उन्होंने बुरा माना उसे जो अल्लाह ने उतारा और उस ने उन के कर्म व्यर्थ कर^[1] दिये।
10. तो क्या वह चले- फिरे नहीं धरती में कि देखते उन लोगों का परिणाम जो इन से पहले गुज़रे? विनाश कर दिया अल्लाह ने उन का तथा काफिरों के लिये इसी के समान (यातनायें) है।
11. यह इसलिये कि अल्लाह संरक्षक (सहायक) है उन का जो ईमान लाये और काफिरों का कोई संरक्षक (सहायक)^[2] नहीं।

12. निःसंदेह अल्लाह प्रवेश देगा उन को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये ऐसे स्वर्गों में जिन में नहरें बहती होंगी। तथा जो काफिर हो गये वह आनन्द लेते तथा खाते हैं जैसे^[3] पशु

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَصُرُوا اللَّهَ يَنْصُرْكُمْ
وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعَسَا لَهُمْ وَعَاصِلٌ أَعْمَالُهُمْ ۝

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأَحْبَطَ
أَعْمَالَهُمْ ۝

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ دُمِّرُوا اللَّهُ عَلَيْهِمْ
وَاللَّكْفِيرِينَ أَمْثَالَهَا ۝

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَإِنَّ
الْكَافِرِينَ
لَأَعْمَى لَهُمْ ۝

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
يَسْتَعْوُونَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ
مَثْوًى لَهُمْ ۝

1 इस में इस ओर संकेत है कि बिना ईमान के अल्लाह के हाँ कोई सत्कर्म मान्य नहीं है।

2 उहद के युद्ध में जब काफिरों ने कहा कि हमारे पास उज्ज़ा (देवी) है, और तुम्हारे पास उज्ज़ा नहीं। तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा। उन का उत्तर इसी आयत से दो। (सहीह बख़ारी: 4043)

3 अर्थात् परलोक से निश्चिन्त संसारिक जीवन ही को सब कुछ समझते हैं।

खाते हैं। और अग्नि उन का आवास (स्थान) है।

13. तथा बहुत सी बस्तियों को जो अधिक शक्तिशाली थीं आप की बस्ती से, जिस ने आप को निकाल दिया, हम ने ध्वस्त कर दिया, तो कोई सहायक न हुआ उन का।

14. तो क्या जो अपने पालनहार के खुले प्रमाण पर हो वह उस के समान हो सकता है शोभनीय बना दिया गया हो जिस के लिये उस का दुष्कर्म तथा चलता हो अपनी मनमानी पर?

15. उस स्वर्ग की विशेषता जिस का वचन दिया गया है आज्ञाकरियों को, उस में नहरें हैं निर्मल जल की, तथा नहरें हैं दूध की, नहीं बदलेगा जिस का स्वाद, तथा नहरें हैं मदिरा की पीने वालों के स्वाद के लिये, तथा नहरें हैं मधु की स्वच्छ। तथा उन्हीं के लिये उन में प्रत्येक प्रकार के फल हैं, तथा उन के पालनहार की ओर से क्षमा। (क्या यह) उस के समान होंगे जो सदावासी होंगे नरक में तथा पिलाये जायेंगे खौलता जल जो खण्ड-खण्ड कर देगा उन की आँतों को?

16. तथा उन में से कुछ वह हैं जो कान धरते हैं आप की ओर यहाँ तक कि जब निकलते हैं आप के पास से तो कहते हैं उन से जिन को ज्ञान दिया गया है कि अभी क्या^[1] कहा है? यही

وَكَايُنَ مِنْ قَرْيَةٍ إِسْتُلُّ قُوَّةً مِنْ قَرْيَتِكَ الَّتِي أَخْرَجْتِكَ أَهْلَكْنَهُمْ فَلَا نَاوِيَةَ لَهُمْ ⑤

أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّهِ كَتَبَ رَبُّنَا لَهُ سُوءَ عَمَلِهِ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ⑥

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وَعَدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا أَنْهَارٌ مِنْ مَاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِنْ لَبَنٍ لَمْ يَتَغَيَّرَ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِنْ خَمْرٍ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِنْ عَسَلٍ مُصَفًّى وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفُورَةٌ لِمَنْ تَابَ وَرَبُّهُمْ لَمَنَّ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ⑦

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوا لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ أَنفَأُ أَوَلَيْكَ الَّذِي تَبِعَ اللَّهَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ⑧

1 यह कुछ मुनाफिकों की दशा का वर्णन है जिन को आप (सल्लल्लाहु अलैहि व

वह है कि मुहर लगा दी है अल्लाह ने उन के दिलों पर और वही चल रहे हैं अपनी मनोकांक्षाओं पर।

17. और जो सीधी राह पर हैं अल्लाह ने अधिक कर दिया है उन को मार्ग दर्शन में। और प्रदान किया है उन को उन का सदाचार।

18. तो क्या वह प्रतीक्षा कर रहे हैं प्रलय ही की, कि आ जाये उन के पास सहसा? तो आ चुके हैं उस के लक्षण^[1] फिर कहाँ होगा उन के शिक्षा लेने का समय, जब वह (क़्यामत) आ जायेगी उन के पास?

19. तो (हे नबी!) आप विश्वास रखिये कि नहीं है कोई वंदनीय अल्लाह के सिवा तथा क्षमा^[2] माँगिये अपने पाप के लिये, तथा ईमान वाले पुरुषों और स्त्रियों के लिये। और अल्लाह जानता है तुम्हारे फिरने तथा रहने के स्थान को।

وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَآتَاهُمْ تَقْوَاهُمْ ۝

فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً
فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا فَأَنَّى لَهُمْ إِذَا جَاءَتْهُمْ
ذِكْرُهُمْ ۝

فَاعْلَمُوا أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرُوا لِذَنبِكُمْ
وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ
وَمَثُوبَكُمْ ۝

सल्लम) की बातें समझ में नहीं आती थीं। क्योंकि वे आप की बातें दिल लगा कर नहीं सुनते थे। तथा आप की बातों का इस प्रकार उपहास करते थे।

1 आयत में कहा गया है कि प्रलय के लक्षण आ चुके हैं। और उन में सब से बड़ा लक्षण आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का आगमन है। जैसा कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि आप ने फ़रमाया: ((मेरा आगमन तथा प्रलय इन दो ऊंगलियों के समान है।)) (सहीह बुखारी: 4936) अर्थात् बहुत समीप है। जिस का अर्थ यह है कि जिस प्रकार दो ऊंगलियों के बीच कोई तीसरी ऊंगली नहीं इसी प्रकार मेरे और प्रलय के बीच कोई नबी नहीं। मेरे आगमन के पश्चात् अब प्रलय ही आयेगी।

2 आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: मैं दिन में सत्तर बार से अधिक अल्लाह से क्षमा माँगता तथा तौबा करता हूँ। (बुखारी: 6307) और फ़रमाया कि लोगो! अल्लाह से क्षमा माँगो। मैं दिन में सौ बार क्षमा माँगता हूँ। (सहीह मुस्लिम: 2702)

20. तथा जो ईमान लाये उन्होंने कहा कि क्यों नहीं उतारी जाती कोई सूरह (जिस में युद्ध का आदेश हो)? तो जब एक दूढ़ सूरह उतार दी गई तथा उस में वर्णन कर दिया गया युद्ध का तो आप ने उन्हें देख लिया जिन के दिलों में रोग (द्विधा) है कि वह आप की ओर उस के समान देख रहे हैं जो मौत के समय अचेत पड़ा हुआ हो। तो उन के लिये उत्तम है।

21. आज्ञा पालन तथा उचित बात बोलना। तो जब (युद्ध का) आदेश निर्धारित हो गया तो यदि वे अल्लाह के साथ सच्चे रहें तो उन के लिये उत्तम है।

22. फिर यदि तुम विमुख^[1] हो गये तो दूर नहीं कि तुम उपद्रव करोगे धरती में तथा तोड़ोगे अपने रिश्तों (संबंधों) को।

23. यही है जिन को अपनी दया से दूर कर दिया है अल्लाह ने, और उन्हें बहरा, तथा उन की आँखें अंधी कर दी हैं^[2]

24. तो क्या लोग सोच-विचार नहीं करते या उन के दिलों पर ताले लगे हुये हैं?

25. वास्तव में जो फिर गये पीछे इस के

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا لَوْلَا نَزَّلَتْ سُورَةٌ أَذَا
نَزَّلَتْ سُورَةٌ مُحْكَمَةٌ وَذُكِّرْ فِيهَا الْقِتَالَ رَأَيْتَ
الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ يُنظُرُونَ إِلَيْكَ نَطْرَ
الْمَيْتَةِ عَلَيْهِمْ مِنَ الْمَوْتِ فَأُولَئِكَ لَهُمْ

طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَعْرُوفٌ أَذَا عَزَمَ الْأُمُورَ فَلَوْ صَدَقُوا
اللَّهُ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ ﴿١٠﴾

فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ
وَتَقَطَعُوا أَرْحَامَكُمْ ﴿١١﴾

أُولَئِكَ الَّذِينَ كَعَبَهُمُ اللَّهُ فَأَمْهَمَهُمْ وَاعْمَى
أَبْصَارَهُمْ ﴿١٢﴾

أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَى قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ﴿١٣﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٤﴾

1 अर्थात अल्लाह तथा रसूल की आज्ञा का पालन करने से। इस आयत में संकेत है कि धरती में उपद्रव, तथा रक्तपात का कारण अल्लाह तथा उस के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की आज्ञा से विमुख होने का परिणाम है। हदीस में है कि जो रिश्ते (संबंध) को जोड़ेगा तो अल्लाह उस को (अपनी दया से) जोड़ेगा। और जो तोड़ेगा तो उसे (अपनी दया से) दूर कर देगा। (सहीह बखारी: 4820)

2 अतः वे न तो सत्य को देख सकते हैं और न ही सुन सकते हैं।

पश्चात् कि उजागर हो गया उन के लिये मार्ग दर्शन तो शैतान ने सुन्दर बना दिया (पापों को) उन के लिये, तथा उन को बड़ी आशा दिलाई है।

26. यह इस कारण हुआ कि उन्होंने कहा उन से जिन्होंने बुरा माना उस (कुर्आन) को जिसे उतारा अल्लाह ने कि हम तुम्हारी बात मानेंगे कुछ कार्य में। तथा अल्लाह जानता है उन की गुप्त बातों को।
27. तो कैसी दुर्गत होगी उन की जब प्राण निकाल रहे होंगे फरिश्ते मारते हुये उन के मुखों तथा उन की पीठों पर।
28. यह इसलिये कि वे चले उस राह पर जिस ने अप्रसन्न कर दिया अल्लाह को, तथा बुरा माना उस की प्रसन्नता को तो उस ने व्यर्थ कर दिया उन के कर्मों को।^[1]
29. क्या समझ रखा है उन्होंने जिन के दिलों में रोग है कि नहीं खोलेगा अल्लाह उन के द्वेषों को?^[2]
30. और (हे नबी!) यदि हम चाहें तो दिखा दें आप को उन्हें, तो पहचान लेंगे आप उन को उन के मुख से। और आप अवश्य पहचान लेंगे उन को^[3] (उन की) बात के ढंग से। तथा

الْهُدَىٰ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمَلَهُمْ ۖ

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا الَّذِيْنَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللهُ سَاطِعَةً
فِي بَعْضِ الْأُمَمِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَسْرَارَهُمْ ۖ

كَيْفَ إِذَا تَوَفَّيْتَهُمُ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ
وَأَذْبَابَهُمْ ۖ

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ اتَّبَعُوا مَا آسَخَطَ اللهُ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ
فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ۗ

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ أَن لَّنْ
يُخْرِجَ اللهُ أَسْخَانَهُمْ ۗ

وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَتَلَمَّعَتْ لَهُمْ نَبِيئُهُمْ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ
فِي لَحْنِ الْقَوْلِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ۖ

- 1 आयत में उन के दुष्परिणाम की ओर संकेत है जो इस्लाम के साथ उस के विरोधी नियमों और विधानों को मानते हैं। और युद्ध के समय काफ़िरों का साथ देते हैं।
- 2 अर्थात् जो द्वेष और बैर इस्लाम और मुसलामनों से रखते हैं उसे अल्लाह उजागर अवश्य कर के रहेगा।
- 3 अर्थात् उन के बात करने की रीति से।

अल्लाह जानता है उन के कर्मों को।

31. और हम अवश्य परीक्षा लेंगे तुम्हारी, ताकि जाँच लें तुम में से मुजाहिदों तथा धैर्यवानों को तथा जाँच लें तुम्हारी दशाओं को।
32. जिन लोगों ने कुफ़ किया और रोका अल्लाह की राह (धर्म) से तथा विरोध किया रसूल का इस के पश्चात् कि उजागर हो गया उनके लिये मार्गदर्शन, वह कदापि हानि नहीं पहुँचा सकेंगे अल्लाह को कुछ। तथा वह व्यर्थ कर देगा उन के कर्मों को।
33. हे लोगो जो ईमान लाये हो! आज्ञा मानो अल्लाह की, तथा आज्ञा मानो^[1] रसूल की तथा व्यर्थ न करो अपने कर्मों को।
34. जिन लोगों ने कुफ़ किया तथा रोका अल्लाह की राह से, फिर वे मर गये कुफ़ की स्थिति में तो कदापि क्षमा नहीं करेगा अल्लाह उन को।
35. अतः तुम निर्बल न बनो और न (शत्रु को) संधि की ओर^[2] पुकारो।

وَلَتَبْلُوَكُمْ حَتَّى تَعْلَمَ الْمُجِدِّينَ مِنْكُمْ وَالصَّادِقِينَ
وَيَبْلُوَ أَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدَّوْا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
وَسَأَوْا الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ
الْهُدَى لَنْ يَضُرَّوْا اللَّهَ شَيْئًا وَسَيُحِطُّ أَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اطِيعُوا اللَّهَ وَاطِيعُوا الرَّسُولَ
وَلَا تَبْغُوا أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدَّوْا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ
مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾

فَلَا تَهِنُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلْمَةِ وَأَنْتُمْ الْإِعْلُونَ ﴿٣٥﴾

1 इस आयत में कहा गया है कि जिस प्रकार कुर्आन को मानना अनिवार्य है उसी प्रकार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सुन्नत (हदीसों) का पालन करना भी अनिवार्य है। हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: मेरी पूरी उम्मत स्वर्ग में जायेगी उस के सिवा जिस ने इन्कार किया। कहा गया कि कोन इन्कार करेगा, हे अल्लाह के रसूल? आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: जिस ने मेरी आज्ञाकारी की तो वह स्वर्ग में जायेगा। और जिस ने मेरी आज्ञाकारी नहीं की तो उस ने इन्कार किया। (सहीह बुखारी: 7280)

2 आयत का अर्थ यह नहीं कि इस्लाम संधि का विरोधी है। इस का अर्थ यह है कि ऐसी दशा में शत्रु से संधि न करो कि वह तुम्हें निर्बल समझने लगे। बल्कि

तथा तुम्हीं उच्च रहने वाले हो और अल्लाह तुम्हारे साथ है। और वह कदापि व्यर्थ नहीं करेगा तुम्हारे कर्मों को।

36. यह संसारिक जीवन तो एक खेल कूद है और यदि तुम ईमान लाओ तथा अल्लाह से डरते रहो तो वह प्रदान करेगा तुम्हें तुम्हारा प्रतिफल। और नहीं माँग करेगा तुम से तुम्हारे धनों की।
37. और यदि वह तुम से माँगे और तुम्हारा पूरा धन माँगे तो तुम कंजूसी करने लगोगे, और वह खोल^[1] देगा तुम्हारे द्वेषों को।
38. सुनो! तुम लोग हो जिन को बुलाया जा रहा है ताकि दान करो अल्लाह की राह में, तो तुम में से कुछ कंजूसी करने लगते हैं। और जो कंजूसी करता^[2] है तो वह अपने आप ही से कंजूसी करता है। और अल्लाह धनी है तथा तुम निर्धन हो। और यदि तुम मुँह फेरोगे तो वह तुम्हारे स्थान पर दूसरों को ला देगा, फिर वे नहीं होंगे तुम्हारे जैसे^[3]।

وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَتَرَكُمْ أَعْمَالَكُمْ ۝

إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهُمْ وَأَنْ تُوْمِنُوا
وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ أُجُورَكُمْ وَلَا يَسْئَلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ ۝

إِنْ يَسْئَلْكُمُوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبَخَّرُوا وَيَمْزِجْ أَمْوَالَكُمْ ۝

هَآأَنْتُمْ هَآؤِلَآءُ تَدْعُونَ لِنُفْسِكُمْ سَبِيلَ اللَّهِ
فَمِنْكُمْ مَنْ يَبْخُلُ وَمَنْ يَبْخُلْ فَإِنَّمَا يَحْمِلْ عَنْ
نَفْسِهِ ۗ وَاللَّهُ الْغَنِيُّ وَأَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ وَإِنْ
تَسْأَلُوهُ سَبِيلَ اللَّهِ فَمَا غَيْرِكُمْ تَسْأَلُوهُ
أَمْوَالَكُمْ ۝

अपनी शक्ति का लोहा मनवाने के पश्चात् संधि करो। ताकि वह तुम्हें निर्बल समझ कर जैसे चाहें संधि के लिये बाध्य न कर लें।

- 1 अर्थात् तुम्हारा पूरा धन माँगे तो यह स्वभाविक है कि तुम कंजूसी कर के दोषी बन जाओगे। इसलिये इस्लाम ने केवल ज़कात अनिवार्य की है। जो कुल धन का ढाई प्रतिशत है।
- 2 अर्थात् कंजूसी कर के अपने ही को हानि पहुँचाता है।
- 3 तो कंजूस नहीं होंगे। (देखिये: सूरह माइदा, आयत: 54)

सूरह फ़तह - 48



सूरह फ़तह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 29 आयतें हैं।

- फ़तह का अर्थ: विजय है। और इस की प्रथम आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को विजय की शुभसूचना दी गई है। इसलिये इस का यह नाम रखा गया है।
- इस में विजय की शुभसूचना देते हुये आप तथा आप के साथियों के लिये उन पुरस्कारों की चर्चा की गई है जो इस विजय के द्वारा प्राप्त हुये। साथ ही मुनाफिकों तथा मुशरिकों को चेतावनी दी गई कि उन के बुरे दिन आ गये हैं।
- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के हाथ पर बैअत (वचन) को अल्लाह के हाथ पर वचन कह कर आप के पद को बताया गया है। तथा इस में मुनाफिकों को जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ नहीं निकले और अपने धन-परिवार की चिन्ता में रह गये चेतावनी दी गई है। और जो विवश थे उन्हें निर्दोष करार दिया गया है।
- इस में ईमान वालों को जो रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये जान देने को तय्यार हो गये अल्लाह की प्रसन्नता की शुभसूचना दी गई है। और बताया गया है कि उन का भविष्य उज्ज्वल होगा तथा उन की सहायता होगी।
- इस में बताया गया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मस्जिदे हराम में प्रवेश का जो सपना देखा है वह सच्चा है। और वह पूरा होगा। आप को ऐसे साथी मिल गये हैं जिन का चित्र तौरात और इंजील में देखा जा सकता है।
- यह सूरह जी क़ादा के महीने, सन् 6 हिज्री में हुदैबिया से वापसी के समय हुदैबिया तथा मदीना के बीच उतरी। (सहीह बुख़ारी: 4833)। और दो वर्ष बाद मक्का विजय हो गया। और अल्लाह ने आप के स्वप्न को सच्च कर दिया।

हुदैबिय्या की संधि:

मदीना हिज्रत के पश्चात् मक्का के मुश्रिकों ने मस्जिदे हराम (काँबा) पर अधिकार कर लिया। और मुसलमानों को हज्ज तथा उमरा करने से रोक दिया।

अब तक मुसलमानों और काफ़िरों के बीच तीन युद्ध हो चुके थे कि सन् 6 हिज्री में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह सपना देखा कि आप मस्जिदे हराम में प्रवेश कर गये हैं। इसलिये आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उमरे का एलान कर दिया। और अपने चौदह सौ साथियों के साथ 1 जीकादा सन् 6 हिज्री को मक्का की ओर चल दिये। मदीना से 6 मील जा कर जुल हुलैफ़ा में एहराम बाँधा। और कुर्बानी के पशु साथ लिये। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मक्का से 22 कि॰मी॰ दूर हुदैबिय्या तक पहुँच गये तो उसमान (रज़ियल्लाहु अन्हु) को मक्का भेजा कि हम उमरा के लिये आये हैं। मक्का वासियों ने उन का आदर किया। किन्तु इस के लिये तय्यार नहीं हुये कि नबी अपने साथियों के साथ मक्का में प्रवेश करें। इस विवाद के कारण उसमान (रज़ियल्लाहु अन्हु) की वापसी में कुछ देर हो गई। जिस से ऐसी स्थिति पैदा हो गई कि अब बलपूर्वक ही मक्का में प्रवेश करना पड़ेगा। और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने साथियों से जिहाद के लिये बैअत (वचन) ली। इस एतिहासिक वचन को ((बैअत रिज़वान)) के नाम से याद किया जाता है। जब मक्का वासियों को इस की सूचना मिली तो वह संधि के लिये तय्यार हो गये। और संधि के लिये कुछ प्रतिनिधि भेजे। और निम्नलिखित बातों पर संधि हुई:

- 1- मुसलमान आगामी वर्ष आ कर उमरा करेंगे।
- 2- वह अपने साथ केवल तलवार लायेंगे जो नियाम में होगी।
- 3- वह केवल तीन दिन मक्का में रहेंगे।
- 4- मुसलमान और उन के बीच दस वर्ष युद्ध विराम रहेगा।
- 5- मक्का का कोई व्यक्ति मदीना जाये तो उसे वापिस करना होगा। किन्तु यदि कोई मुसलमान काफ़िर बन कर मक्का आये तो वे उसे वापिस नहीं करेंगे।
- 6- हरम के आस पास के कबीले जिस पक्ष के साथ चाहें हो जायें। और उन पर वही दायित्व होगा जो उन के पक्ष पर होगा।

7- यदि इन कबीलों में किसी ने दूसरे पक्ष के किसी कबीले के साथ अत्याचार किया तो इसे संधि भंग माना जायेगा। यह संधि मुसलमानों ने बहुत दब कर की थी। मगर इस से उन्हें दो बड़े लाभ प्राप्त हुये:

क- मस्जिदे हराम में प्रवेश की राह खुल गई।

ख- इस्लाम और मुसलमानों पर आक्रमण की स्थिति समाप्त हो गई। जिस से इस्लाम के प्रचार-प्रसार की बाधा दूर हो गई और इस्लाम तेज़ी से फैलने लगा। और जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मक्का वासियों के संधि भंग कर देने के कारण सन् 10 हिजरी में मक्का विजय किया तो उस समय आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथियों की संख्या दस हज़ार थी। और मक्का की विजय के साथ ही पूरे मक्का वासी तथा आस-पास के कबीले मुसलमान हो गये। इस प्रकार धीरे धीरे आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के युग ही में सारे अरब, मुसलमान हो गये। इसीलिये कुरआन ने हुदैबिया कि संधि को फ़तहे मुबीन (खुली विजय) कहा है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे नबी! हम ने विजय^[1] प्रदान कर दी आप को खुली विजय।

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا

2. ताकि क्षमा कर दे^[2] अल्लाह आप के लिये आप के अगले तथा पिछले दोषों को तथा पूरा करे अपना पुरस्कार आप के ऊपर और दिखाये आप को सीधी राह।

لِيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا

1 हदीस में है कि इस से अभिप्राय हुदैबिया की संधि है। (बुख़ारी: 4834)

2 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) रात्री में इतनी नमाज़ पढ़ा करते थे कि आप के पाँव सूज जाते थे। तो आप से कहा गया कि आप ऐसा क्यों करते हैं? अल्लाह ने तो आप के बिगत तथा भविष्य के पाप क्षमा कर दिये हैं? तो आप ने फ़रमाया। तो क्या मैं कृतज्ञ भक्त न बनूँ। (सहीह बुख़ारी: 4837)

3. तथा अल्लाह आप की सहायता करे
भरपूर सहायता।
4. वही है जिस ने उतारी शान्ति ईमान
वालों के दिलों में ताकि अधिक हो जाये
उन का ईमान अपने ईमान के साथ।
तथा अल्लाह ही की है आकाशों तथा
धरती की सेनायें, तथा अल्लाह सब कुछ
और सब गुणों को जानने वाला है।
5. ताकि वह प्रवेश कराये ईमान वाले
पुरुषों तथा स्त्रियों को ऐसे स्वर्गों में बह
रही है जिन में नहरों और वे सदैव रहेंगे
उन में। और ताकि दूर कर दे उन से
उन की बुराईयों को। और अल्लाह के
यहाँ यही बहुत बड़ी सफलता है।
6. तथा यातना दे मुनाफ़िक पुरुषों तथा
स्त्रियों और मुशरिक पुरुषों तथा
स्त्रियों को जो बुरा विचार रखने वाले
हैं अल्लाह के संबन्ध में। उन्हीं पर
बुरी आपदा आ पड़ी। तथा अल्लाह
का प्रकोप हुआ उन पर, और उस
ने धिक्कार दिया उन को। तथा तय्यार
कर दी उन के लिये नरक, और वह
बुरा जाने का स्थान है।
7. तथा अल्लाह ही की है आकाशों तथा
धरती की सेनायें और अल्लाह प्रबल
तथा सब गुणों को जानने वाला है।^[1]
8. (हे नबी!) हम ने भेजा है आप को
गवाह बनाकर तथा शुभ सूचना देने
एवं सावधान करने वाला बना कर।

وَيُنصِرُكَ اللَّهُ نَصْرًا عَظِيمًا ﴿١٠﴾

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ
لِيُذْأَبُوا الْوَيْحَ إِذَا قَامَ إِلَيْهِمُ الْوَيْحُ وَبِاللَّهِ جُنُودُ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١١﴾

لِيَدْخُلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَيُكَفِّرُ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ
وَكَانَ ذَلِكَ عِنْدَ اللَّهِ قُورًا عَظِيمًا ﴿١٢﴾

وَيُعَذِّبُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ
وَالْمُشْرِكَاتِ الْكَافِرِينَ بِاللَّهِ طَمَّ السَّوَاءُ عَلَيْهِمْ
ذَائِبَةُ السَّوَاءِ وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ
وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿١٣﴾

وَبِاللَّهِ جُنُودُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيمًا
حَكِيمًا ﴿١٤﴾

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿١٥﴾

1 इसलिये वह जिस को चाहे, और जब चाहे, हिलाक और नष्ट कर सकता है।

9. ताकि तुम ईमान लाओ अल्लाह एवं उस के रसूल पर। और सहायता करो आप की, तथा आदर करो आप का, और अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करते रहो प्रातः तथा संध्या।

10. (हे नबी!) जो बैअत कर रहे हैं आप से, वह वास्तव में बैअत^[1] कर रहे हैं अल्लाह से। अल्लाह का हाथ उन के हाथों के ऊपर है। फिर जिस ने वचन तोड़ा तो वह अपने ऊपर ही वचन तोड़ेगा। तथा जिस ने पूरा किया जो वचन अल्लाह से किया है तो वह उसे बड़ा प्रतिफल (बदला) प्रदान करेगा।

11. (हे नबी!) वह^[2] शीघ्र ही आप से कहेंगे, जो पीछे छोड़ दिये गये बददुओं में से कि हम लगे रह गये अपने धनों तथा परिवार में। अतः आप क्षमा की प्रार्थना कर दें हमारे लिये। वह अपने मुखों से ऐसी बात कहेंगे जो उन के दिलों में नहीं है। आप उन से कहिये कि कौन है जो अधिकार रखता हो तुम्हारे लिये अल्लाह के सामने किसी चीज़ का यदि अल्लाह तुम्हें कोई हानि

لَتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ
وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلاً ①

إِنَّ الدِّينَ بِيَاثِرَاتِكُمْ إِنَّمَا يَبْعَثُ اللَّهُ يَدُ اللَّهِ
فَوْقَ أَيْدِيكُمْ فَمَنْ نَكَثَ فَإِنَّمَا يَنْكُثُ عَلَى نَفْسِهِ وَمَنْ
أَوْقَى بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهِ اللَّهُ فَمَآ يَسُوؤُا تِيهَ أَجْرًا عَظِيمًا ②

سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا
أَمْوَالُنَا وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْنَا يَمْوُلُونَ
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ شَيْءٌ فَمَنْ يُبَدِّلِكَ
لَكُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ
نِعْمًا بَلْ كَانَ اللَّهُ مَتَعْمُونَ حَبِيبًا ③

1 बैअत का अर्थ है हाथ पर हाथ मार कर वचन देना। यह बैअत नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध के लिये हुदैबिया में अपने चौदह सौ साथियों से एक वक्ष के नीचे ली थी। जो इस्लामी इतिहास में «बैअते रिज़वान» के नाम से प्रसिद्ध है। रही वह बैअत जो पीर अपने मुरीदों से लेते हैं तो उस का इस्लाम से कोई संबन्ध नहीं है।

2 आयत 11, 12 में मदीना के आस-पास के मुनाफिकों की दशा बतायी गयी है जो नबी के साथ उमरा के लिये मक्का नहीं गये। उन्होंने इस डर से कि मुसलमान सब के सब मार दिये जायेंगे, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का साथ नहीं दिया।

पहुँचाना चाहे या कोई लाभ पहुँचाना चाहे? बल्कि अल्लाह सूचित है उस से जो तुम कर रहे हो।

12. बल्कि तुम ने सोचा था कि कदापि वापिस नहीं आयेंगे रसूल, और न ईमान वाले अपने परिजनों की ओर कभी भी। और भली लगी यह बात तुम्हारे दिलों को, और तुम ने बुरी सोच सोची। और थे ही तुम विनाश होने वाले लोग।

13. और जो ईमान नहीं लाये अल्लाह तथा उस के रसूल पर, तो हम ने तय्यार कर रखी है काफ़िरों के लिये दहकती अग्नि।

14. अल्लाह के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्या। वह क्षमा कर दे जिसे चाहे और यातना दे जिसे चाहे। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

15. वह लोग जो पीछे छोड़ दिये गये कहेंगे, जब तुम चलोगे ग़नीमतों की ओर ताकि उन्हें प्राप्त करो कि हमें (भी) अपने साथ ^[1]चलने दो। वह चाहते हैं कि बदल दें अल्लाह के

بَلْ كُنْتُمْ مَن كُنْ تَقُولُ وَالرَّسُولَ وَالْمُؤْمِنِينَ إِلَىٰ
أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَذُنُوبَكُمْ فِي قُلُوبِكُمْ وَكُنْتُمْ طَرَفًا
السُّورَةُ ۖ وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُورًا ۝

وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا أَعْتَدْنَا
لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ۝

وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يُغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ
وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انطَلَقْتُمْ إِلَىٰ مَغَارِمٍ
لِتُحَادَثُوا هَٰذَا ذُرُونًا تَتَّبِعُونَ أَرَأَيْتُمْ أَن
يُؤَيَّدُوا لَوْ كَلَّمَ اللَّهُ قُلُوبَ كُنْ تَتَّبِعُونَا
كَذَٰلِكُمْ قَالَ اللَّهُ مِن قَبْلُ فَسَيَقُولُونَ

- 1 हुदैबिया से वापिस आकर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने खैबर पर आक्रमण किया जहाँ के यहूदियों ने संधि भंग कर के अहज़ाब के युद्ध में मक्का के काफ़िरों का साथ दिया था। तो जो बददु हुदैबिया में नहीं गये वह अब खैबर के युद्ध में इसलिये आप के साथ जाने के लिये तय्यार हो गये कि वहाँ ग़नीमत का धन मिलने की आशा थी। अतः आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से यह कहा गया कि उन्हें बता दें कि यह पहले ही से अल्लाह का आदेश है कि तुम हमारे साथ नहीं जा सकते। खैबर मदीने से डेढ़ सौ कि॰मी॰ दूर मदीने के उत्तर पूर्वी दिशा में है। यह युद्ध मुहर्रम सन् 7 हिजरी में हुआ।

आदेश को। आप कह दें कि कदापि हमारे साथ न चला इसी प्रकार कहा है अल्लाह ने इस से पहले। फिर वह कहेंगे कि बल्कि तुम द्वेष (जलन) रखते हो हम से। बल्कि वह कम ही बात समझते हैं।

16. आप कह दें पीछे छोड़ दिये गये बददुओं से कि 'शीघ्र तुम बुलाये जाओगे एक अति योद्धा जाति (से युद्ध) की ओर।^[1] जिन से तुम युद्ध करोगे अथवा वह इस्लाम ले आयें। तो यदि तुम आज्ञा का पालन करोगे तो प्रदान करेगा अल्लाह तुम्हें उत्तम बदला तथा यदि तुम विमुख हो गये जैसे इस से पूर्व (मक्का जाने से) विमुख हो गये तो तुम्हें यातना देगा दुःखदायी यातना।

17. नहीं है अंधे पर कोई दोष^[2] और न लंगड़े पर कोई दोष और न रोगी पर कोई दोष। तथा जो आज्ञा का पालन करेगा अल्लाह एवं उस के रसूल की तो वह प्रवेश देगा उसे ऐसे स्वर्गों में बहती हैं जिन में नहरें, तथा जो मुख फेरेगा तो वह यातना देगा उसे दुःखदायी यातना।

18. अल्लाह प्रसन्न हो गया ईमान वालों से जब वह आप (नबी) से बैअत कर रहे थे वृक्ष के नीचे। उस ने जान लिया

بَلْ تَحْسَدُونَ عَلَى آلِ أَبِي سَلَمَةَ
إِلَّا قَلِيلًا ۝

قُلْ لِلْمُخَلَّفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ سُدُّ عَوْنٍ إِلَى قَوْمِهِ
أُولَىٰ بَأْسٍ شَدِيدٍ لِّقَاتِلُوا نَهْمًا أَوْ يُسَلِّمُونَ ۚ وَإِن
يُطِيعُوا أَمْرًا مِّنَ اللَّهِ فَجَزَاءٌ حَسَنًا ۚ وَإِن تَوَلَّوْا كَمَا
تَوَلَّيْتُمْ مِّن قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَابِ حَرَجٌ وَلَا
عَلَى الْمَرْغُوبِ حَرَجٌ ۚ وَمَنْ يُظِلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يَدْخُلْهُ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ وَمَنْ يُتَوَلَّ يَعْذِِبْهُ
عَذَابًا أَلِيمًا ۝

لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ
الشَّجَرَةِ ۚ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ

1 इस से अभिप्राय हुनैन का युद्ध है जो सन् 8 हिजरी में मक्का की विजय के पश्चात् हुआ। जिस में पहले पराजय, फिर विजय हुई। और बहुत सा ग़नीमत का धन प्राप्त हुआ, फिर वह भी इस्लाम ले आये।

2 अर्थात् जिहाद में भाग न लेने पर।

जो कुछ उन के दिलों में था इसलिये उतार दी शान्ति उन पर, तथा उन्हें बदले में दी समीप की विजया^[1]

19. तथा बहुत से ग़नीमत के धन (परिहार) जिन को वह प्राप्त करेंगे, और अल्लाह प्रभुत्वशाली गुणी है।
20. अल्लाह ने वचन दिया है तुम्हें बहुत से परिहार (ग़नीमतों) का जिसे तुम प्राप्त करोगे। तो शीघ्र प्रदान कर दी तुम्हें यह (ख़ैबर की ग़नीमत)। तथा रोक दिया लोगों के हाथों को तुम से ताकि^[2] वह एक निशानी बन जाये ईमान वालों के लिये, और तुम्हें सीधी राह चलाये।
21. और दूसरी ग़नीमतें भी जिन को तुम प्राप्त नहीं कर सके हो, अल्लाह ने उन को नियन्त्रण में कर रखा है, तथा अल्लाह जो कुछ चाहे कर सकता है।
22. और यदि तुम से युद्ध करते जो काफ़िर^[3] हैं तो अवश्य पीछा दिखा देते, फिर नहीं पाते कोई संरक्षक और न कोई सहायक।
23. यह अल्लाह का नियम है उन में जो चला आ रहा है पहले से। और तुम कदापि नहीं पाओगे अल्लाह के नियम में कोई परिवर्तन।
24. तथा वही है जिस ने रोक दिया उन

عَلَيْكُمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا وَبَيِّنَاتٍ

وَمَغَازِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُ وَنَهَا وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا
حَكِيمًا ۝

وَعَدَّ اللَّهُ مَغَازِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُ وَنَهَا فَعَجَلَ لَكُمْ
هَذِهِ وَكَفَّ أَيْدِيَ الثَّائِبِينَ عَنْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ آيَةٌ
لِلْمُؤْمِنِينَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۝

وَأَخْرَجَ لَمْ تَقْبَلُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ
بِهَا وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۝

وَلَوْ قَاتَلَكُمْ الَّذِينَ كَفَرُوا وَالْوَكُوفُ الْأَكْثَرُ لَكُمْ
لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝

سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ وَلَنْ تَجِدَ
إِسْنَةَ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۝

وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ

1 इस से अभिप्राय ख़ैबर की विजय है।

2 अर्थात् ख़ैबर की विजय और मक्का की विजय के समय शत्रुओं के हाथों को रोक दिया ताकि यह विश्वास हो जाये कि अल्लाह ही तुम्हारा रक्षक तथा सहायक है।

3 अर्थात् मक्का में प्रवेश के समय युद्ध हो जाता।

के हाथों को तुम से तथा तुम्हारे हाथों को उन से मक्का की वादी^[1] में, इस के पश्चात् कि तुम्हें विजय प्रदान कर की उन पर। तथा अल्लाह देख रहा था जो कुछ तुम कर रहे थे।

25. यह वे लोग हैं जिन्होंने कुफ़ किया और रोक दिया तुम्हें मस्जिद हाराम से। तथा बलि के पशु को उन के स्थान तक पहुँचने से रोक दिया। और यदि यह भय न होता कि तुम कुछ मुसलमान पुरुषों तथा कुछ मुसलमान स्त्रियों को जिन्हें तुम नहीं जानते थे रौद दोगे जिस से तुम पर दोष आ जायेगा^[2] (तो युद्ध से न रोका जाता।) ताकि प्रवेश कराये अल्लाह जिसे चाहे अपनी दया में। यदि वह (मुसलमान) अलग होते तो हम अवश्य यातना देते उन को जो काफिर हो गये उन में से दुखदायी यातना।

26. जब काफ़िरों ने अपने दिलों में पक्षपात को स्थान दे दिया जो वास्तव में जाहिलाना पक्षपात है तो अल्लाह ने अपने रसूल पर तथा ईमान वालों पर शान्ति उतार दी, तथा उन को पाबन्द रखा सदाचार की बात का,

بِطَرْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرْتُمْ عَلَيْهِمْ
وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝

هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
وَالْهَدْيِ مَحْكُوفًا أَنْ تَبْلُغَ عِمْلَةَ وَكُلُوا لِرِجَالِ
مُؤْمِنِينَ وَنِسَاءً مُؤْمِنَاتٍ لَمْ تَعْلَمُوهُمْ أَنْ تَطَّوَّفُوا
فَتُصِيبَكُمْ مِنْهُمْ مَعَزَةٌ يَتَغَيَّرُ عَلَيْهِمْ لِيُدْخِلَ اللَّهُ
فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ لَوْ تَرَى إِلَى الْعَدُوِّ بَنَاتِ الَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْهُمْ عَدَا بَابِ الْيَمِينِ ۝

أَدْجَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ
حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى
رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالزَّمَّهُمْ كَلِمَةَ
التَّقْوَى وَكَانُوا أَحْسَنَ بِهَا وَأَهْلَكُهَا
وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

- 1 जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हुदैबिया में थे तो काफ़िरों ने 80 सशस्त्र युवकों को भेजा कि वह आप तथा आप के साथियों के विरुद्ध काररवाही कर के सब को समाप्त कर दें। परन्तु वह सभी पकड़ लिये गये। और आप ने सब को क्षमा कर दिया। तो यह आयत इसी अवसर पर उतरी। (सहीह मुस्लिम: 1808)
- 2 अर्थात् यदि हुदैबिया के अवसर पर संधि न होती और युद्ध हो जाता तो अनजाने में मक्का में कई मुसलमान भी मारे जाते जो अपना ईमान छुपाये हुये थे। और हिजरत नहीं कर सके थे। फिर तुम पर दोष आ जाता कि तुम एक ओर इस्लाम का संदेश देते हो, तथा दूसरी ओर स्वयं मुसलमानों को मार रहे हो।

तथा वह^[1] उस के अधिक योग्य और पात्र थे। तथा अल्लाह प्रत्येक वस्तु को भली-भाँति जानने वाला है।

27. निश्चय अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा सपना दिखाया सच्च के अनुसार। तुम अवश्य प्रवेश करोगे मस्जिदे हराम में यदि अल्लाह ने चाहा निर्भय हो कर, अपने सिर मुंडाते तथा बाल कतरवाते हुये तुम को किसी प्रकार का भय नहीं होगा^[2], वह जानता है जिस को तुम नहीं जानते। इसलिये प्रदान कर दी तुम्हें इस (मस्जिदे हराम में प्रवेश) से पहले एक समीप (जल्दी) की^[3] विजय।

28. वही है जिस ने भेजा अपने रसूल को मार्गदर्शन तथा सत्धर्म के साथ, ताकि उसे प्रभुत्व प्रदान कर दे प्रत्येक धर्म पर। तथा पर्याप्त है (इस

لَقَدْ صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّسُلَ بِالْحَقِّ لَتَنذَحْنَ
الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ إِبْرِينَ مَحْبُورِينَ
رُؤُوسَكُمْ وَمَقَصِّرِينَ لِاتَّخِفُونَ فَعَلِمُوا مَا لَهُمْ
تَعَلَّمُوا فَجَعَلَ مِنْ دُونِ ذَلِكَ فَتْحًا قَرِيبًا ۝

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَكُفَى بِإِلَهِهِ
شَهِيدًا ۝

- 1 सदाचार की बात से अभिप्राय (ला इलाहा इल्लाहा मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह) है। हुदैबिया का संधिलेख जब लिखा गया और आप ने पहले ((बिस्मिल्लाहिर्रहमान निर्रहीम)) लिखवाई तो कुरैश के प्रतिनिधियों ने कहा: हम रहमान रहीम नहीं जानते। इसलिये ((बिस्मिका अल्लाहुम्मा)) लिखा जाये। और जब आप ने लिखवाया कि यह संधिपत्र है जिस पर ((मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह)) ने संधि की है तो उन्होंने कहा: ((मुहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह)) लिखा जाये। यदि हम आप को अल्लाह का रसूल ही मानते तो अल्लाह के घर से नहीं रोकते। आप ने उन की सब बातें मान लीं। और मुसलमानों ने भी सब कुछ सहन कर लिया। और अल्लाह ने उन के दिलों को शान्त रखा और संधि हो गई।
- 2 अर्थात् ((उमरा)) करते हुये जिस में सिर के बाल मुंडाये या कटाये जाते हैं। इसी प्रकार ((हज्ज)) में भी मुंडाये या कटाये जाते हैं।
- 3 इस से अभिप्राय खैबर की विजय है जो हुदैबिया से वापसी के पश्चात् कुछ दिनों के बाद हुई। और दूसरे वर्ष संधि के अनुसार आप ने अपने अनुयायियों के साथ उमरा किया और आप का सपना अल्लाह ने साकार कर दिया।

पर) अल्लाह का गवाह होना।

29. मुहम्मद [1] अल्लाह के रसूल हैं, तथा जो लोग आप के साथ हैं वह काफिरों के लिये कड़े, और आपस में दयालु हैं। तुम देखोगे उन्हें रुकूअ-सज्दा करते हुये वह खोज कर रहे होंगे अल्लाह की दया तथा प्रसन्नता की। उन के लक्षण उन के चेहरों पर सज्दों के चिन्ह होंगे। यह उन की विशेषता तौरात में है। तथा उन के गुण इंजील में उस खेती के समान बताये गये हैं जिस ने निकाला अपना अंकुर, फिर उसे बल दिया, फिर वह कड़ा हो गया फिर वह (खेती) खड़ी हो गई अपने तने पर। प्रसन्न करने लगी किसानों को, ताकि काफिर उन से जलों वचन दे रखा है अल्लाह ने उन लोगों को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन में से क्षमा तथा बड़े प्रतिफल का।

مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ
رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ
اللَّهِ وَرِضْوَانًا لِيَمَّا هُمْ فِي وُجُوهِهِمْ مِنَ الشَّرِّ السُّجُودِ
ذَلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَةِ وَمَثَلُهُمْ فِي الْإِنْجِيلِ شَجَرٍ
أَخْرَجَ شَطَأَهُ فَآرِزُهُ فَاسْتَعْلَقَ فَاسْتَغْوَى عَلَى
سُقُوهِ يُعْجَبُ الرُّعَاءُ لِيُعِيظُ بِهِمُ الْكَفَّارَ وَعَدَّ اللَّهُ
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُمْ مَغْفِرَةً
وَأَجْرًا عَظِيمًا ۝

- 1 इस अन्तिम आयत में सहाबा (नबी के साथियों) के गुणों का वर्णन करते हुये यह सूचना दी गई है कि इस्लाम क्रमशः प्रगतिशील हो कर प्रभुत्व प्राप्त कर लेगा। तथा ऐसा ही हुआ कि इस्लाम जो आरंभ में खेती के अंकुर के समान था क्रमशः उन्नति कर के एक दृढ़ प्रभुत्वशाली धर्म बन गया। और काफिर अपने द्वेष की अग्नि में जल-भुन कर ही रह गये। हदीस में है कि ईमान वाले आपस के प्रेम तथा दया और करुणा में एक शरीर के समान हैं। यदि उस के एक अंग को दुख हो तो पूरा शरीर ताप और अनिद्रा में ग्रस्त हो जाता है। (सहीह बुखारी: 6011, सहीह मुस्लिम: 2596)

सूरह हुजुरात - 49



सूरह हुजुरात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 18 आयतें हैं।

- इस की आयत 4 में हुजुरों के बाहर से नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पुकारने पर पकड़ की गई है इस लिये इस का नाम सूरह हुजुरात है।
- इस की आयत 1 से 5 तक में इस बात पर बल दिया गया है कि अपनी बात प्रस्तुत करने में अल्लाह के रसूल से आगे न बढ़ो। और आप के मान-मर्यादा का ध्यान रखो। तथा ऐसी बात न बोलो जो इस्लामी भाई चारे के लिये हानिकारक हो, और न्याय की नीति अपनाओ।
- इस की आयत 11 से 12 में उन नैतिक बुराईयों से बचने का निर्देश दिया गया है जो आपस में घृणा उत्पन्न करती तथा उपद्रव का कारण बनती हैं।
- इस की आयत 13 में वर्ग-वर्ण और जातिवाद के गर्व का खण्डन करते हुये यह बताया गया है कि सभी जातियाँ और कबीले एक ही नर-नारी की संतान हैं। इसलिये वर्ण-वर्ग और जाति पर गर्व का कोई आधार नहीं। किसी की प्रधानता का कारण केवल अल्लाह की आज्ञा का पालन है।
- इस की अन्तिम आयतों में उन की पकड़ की गई है जो मुख से तो इस्लाम को मानते हैं किन्तु ईमान उन के दिलों में नहीं उतरा है। और उन्हें बताया गया है कि सच्चा ईमान वह है जिस में निफाक न हो तथा सच्चा ईमान उस का है जो अल्लाह की राह में धन और प्राण के साथ जिहाद (संघर्ष) करता हो।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे लोगो! जो ईमान लाये हो आगे न बढ़ो अल्लाह तथा उस के रसूल^[1] से।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقَدْ مُؤَابِقِينَ يَدَيَّ اللَّهُ

- 1 अर्थात् दीन धर्म तथा अन्य दूसरे मामलात के बारे में प्रमुख न बनो। अनुयायी बन कर रहो। और स्वयं किसी बात का निर्णय न करो।

और डरो अल्लाह से। वास्तव में अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

وَرَسُولُهُ وَأَنْقَضُوا اللَّهُ إِنْ اللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٠﴾

- हे लोगो जो ईमान लाये हो! अपनी आवाज़ नबी की आवाज़ से ऊँची न करो। और न आप से ऊँची आवाज़ में बात करो जैसे एक दूसरे से ऊँची आवाज़ में बात करते हो। ऐसा न हो कि तुम्हारे कर्म व्यर्थ हो जायें और तुम्हें पता (भी) न हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَنْ تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ﴿١٠﴾

- निःसंदेह जो धीमी रखते हैं अपनी आवाज़ अल्लाह के रसूल के सामने, वही लोग हैं जाँच लिया है अल्लाह ने जिन के दिलों को सदाचार के लिये। उन्हीं के लिये क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है।

إِنَّ الَّذِينَ يَعْضُونَ أَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ أُولَئِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ لِلتَّقْوَى لَهُمْ مَعْفَرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٠﴾

- वास्तव में जो आप को पुकारते^[1] हैं कमरों के पीछे से उन में से

إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِنَ الْاُحْجُرَاتِ الْاَكْثَرُهُمْ

- हदीस में है कि बनी तमीम के कुछ सवार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आये तो आदरणीय अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा कि काकाअ बिन उमर को इन का प्रमुख बनाया जाये। और आदरणीय उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: बल्कि अकरअ बिन हाबिस को बनाया जाये। तो अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: तुम केवल मेरा विरोध करना चाहते हो। उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: यह बात नहीं है। और दोनों में विवाद होने लगा और उन के स्वर ऊँचे हो गये। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी: 4847)

इन आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मान-मर्यादा तथा आप का आदर-सम्मान करने की शिक्षा और आदेश दिये गये हैं। एक हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने साबित बिन कैस (रज़ियल्लाहु अनहु) को नहीं पाया तो एक व्यक्ति से पता लगाने को कहा। वह उन के घर गये तो वह सिर झुकाये बैठे थे। पूछने पर कहा: बुरा हो गया। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास ऊँची आवाज़ से बोलता था, जिस के कारण मेरे सारे कर्म व्यर्थ हो गये। आप ने यह सुन कर कहा: उसे बता दो कि वह नारकी नहीं वह स्वर्ग में जायेगा। (सहीह बुखारी शरीफ: 4846)

अधिकतर निर्बोध हैं।

5. और यदि वह सहन^[1] करते यहाँ तक कि आप निकल कर आते उन की ओर तो यह उत्तम होता उन के लिये। तथा अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला दयावान् है।
6. हे ईमान वालो! यदि तुम्हारे पास कोई दुराचारी^[2] कोई सूचना लाये तो भली-भाँति उस का अनुसंधान (छान बीन) कर लिया करो। ऐसा न हो कि तुम हानि पहुँचा दो किसी समुदाय को आज्ञानता के कारण, फिर अपने किये पर पछताओ।
7. तथा जान लो कि तुम में अल्लाह के रसूल मौजूद हैं। यदि वह तुम्हारी बात मानते रहे बहुत से विषय में तो तुम आपदा में पड़ जाओगे। परन्तु

لَيَعْقِلُونَ ﴿٥٩﴾

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّى تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ
وَاللَّهُ عَزِيزٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٩﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ جَاءَكُمْ قَائِمٌ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ
أَنْ يُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْحَبُوا عَلَيْهِمْ فَامْكُمُوهُمْ
فَإِنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٠﴾

وَاعْلَمُوا أَنِّي فِيكُمْ رَسُولَ اللَّهِ لَوْ يُطِيعُكُمْ فِي كَثِيرٍ
مِنَ الْأُمُورِ لَعَلَّكُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ حَبِيبُ الْإِيمَانِ
وَرَبِّيَنِي فِي قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَتْ إِلَيْكُمْ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ

1. हदीस में है कि अकरअ बिन हाबिस (रज़ियल्लाहु अन्हु) नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आये और कहा: हे मुहम्मद! बाहर निकलिये। उसी पर यह आयत उतरी। (मुसुनद अहमद: 3।588, 6।394)
2. इस में इस्लाम का यह नियम बताया गया है कि बिना छान बीन के किसी की ऐसी बात न मानी जाये जिस का सम्बन्ध दीन अथवा किसी बहुत गंभीर समस्या से हो। अथवा उस के कारण कोई बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न हो सकती हो। और जैसा कि आप जानते हैं अब यह नियम संसार के कोने कोने में फैल गया है। सारे न्यायालयों में इसी के अनुसार न्याय किया जाता है। और जो इस के विरुद्ध निर्णय करता है उस की कड़ी आलोचना की जाती है। तथा अब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु के पश्चात् यह नियम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस पाक के लिये भी है। कि यह छान बीन किये बगैर कि वह सहीह है या नहीं उस पर अमल नहीं किया जाना चाहिये। और इस चीज़ को इस्लाम के विद्वानों ने पूरा कर दिया है कि अल्लाह के रसूल की वे हदीसें कौन सी हैं जो सहीह हैं तथा वह कौन सी हदीसें हैं जो सहीह नहीं हैं। और यह विशेषता केवल इस्लाम की है। संसार का कोई धर्म यह विशेषता नहीं रखता।

अल्लाह ने प्रिय बना दिया है तुम्हारे लिये ईमान को तथा सुशोभित कर दिया है उसे तुम्हारे दिलों में और अप्रिय बना दिया है तुम्हारे लिये कुफ्र तथा उल्लंघन और अवैज्ञा को, और यही लोग संमार्ग पर हैं।

8. अल्लाह की दया तथा उपकार से, और अल्लाह सब कुछ तथा सब गुणों को जानने वाला है।

9. और यदि ईमान वालों के दो गिरोह लड़^[1] पड़े तो संधि करा दो उन के बीच फिर दोनों में से एक दूसरे पर अत्याचार करे तो उस से लड़ो जो अत्याचार कर रहा है यहाँ तक कि फिर जाये अल्लाह के आदेश की ओर। फिर यदि वह फिर^[2] आये तो उन के बीच संधि करा दो न्याय के साथ। तथा न्याय करो, वास्तव में अल्लाह प्रेम करता है न्याय करने वालों से।

10. वास्तव में सब ईमान वाले भाई भाई हैं। अतः संधि (मेल) करा दो अपने दो भाईयों के बीच तथा अल्लाह से डरो, ताकि तुम पर दया की जाये।

11. हे लोगो जो ईमान लाये हो!^[3] हँसी

وَالْعَصِيَّانَ أَوَّلِكَ هُمُ الرِّشْدُونَ

فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ۗ وَاللّٰهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ

وَإِنْ طَرَفَتِ اِحْتِزَامًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ اِقْتَتَلُوا
فَاَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا ۗ اِنْ اَبَغَتْ اِحْدَاهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى
فَقَاتِلُوا الَّتِي تَبَغٰى حَتّٰى تَنْفِىَ اِلٰى اَمْرِ اللّٰهِ ۗ اِنْ
فَاءَتَتْ فَاَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا لِىَا الْعَدْلِ ۗ وَاَسْطُوْا
اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ اِخْوَةٌ ۗ فَاصْلِحُوا بَيْنَ اَخْوَابِكُمْ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا لَا يَسْخَرُ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰى اَنْ

1 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: मेरे पश्चात् काफ़िरों के समान हो कर एक दूसरे की गर्दन न मारना। (सहीह बुख़ारी: 121, सहीह मुस्लिम: 65)

2 अर्थात् किताब और सुन्नत के अनुसार अपना झगड़ा चुकाने के लिये तय्यार हो जाये।

3 आयत 11 तथा 12 में उन सामाजिक बुराईयों से रोका गया है जो भाईचारे को खंडित करती हैं। जैसे किसी मुसलमान पर व्यंग करना, उस की हँसी उड़ाना,

न उड़ाये कोई जाति किसी अन्य जाति की। हो सकता है वह उन से अच्छी हो। और न नारी अन्य नारियों की हो सकता है कि वह उन से अच्छी हों। तथा आक्षेप न लगाओ एक-दूसरे को और न किसी को बुरी उपाधि दो। बुरा नाम है अपशब्द ईमान के पश्चात् और जो क्षमा न माँगे तो वही लोग अत्याचारी हैं।

12. हे लोगो जो ईमान लाये हो! बचो अधिकांश गुमानों से। वास्तव में कुछ गुमान पाप हैं। और किसी का भेद न लो। और न एक-दूसरे की गीबत^[1] करो। क्या चाहेगा तुम में से कोई अपने मरे भाई का मांस खाना? अतः तुम्हें इस से घृणा होगी। तथा अल्लाह से डरते रहो। वास्तव में अल्लाह अति क्षमावान् दयावान् है।

يَكُونُوا خَيْرًا مِنْهُمْ وَلَا نِسَاءً مِنْ نِسَاءِ عَسَىٰ أَنْ يَكُنَّ خَيْرًا مِنْهُمْ وَلَا تَلْمِزُوا أَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِاللِّقَابِ بَدَأَ الْأَيْمَانَ وَمَنْ لَمْ يَدَّبَّ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٤٩﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَبَّ بَعْضُكُم بَعْضًا أَيُّبٌ أَحَدِكُمْ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ﴿٤٩﴾

उसे बुरे नाम से पुकारना, उस के बारे में बुरा गुमान रखना, किसी के भेद की खोज करना आदि। इसी प्रकार गीबत करना। जिस का अर्थ यह है कि किसी की अनुपस्थिति में उस की निन्दा की जाये। यह वह सामाजिक बुराईयाँ हैं जिन से कुआन तथा हदीसों में रोका गया है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने हज्जतुल वदाअ के भाषण में फ़रमाया: मुसलमानों! तुम्हारे प्राण, तुम्हारे धन तथा तुम्हारी मर्यादा एक दूसरे के लिये उसी प्रकार आदर्णीय हैं जिस प्रकार यह महीना तथा यह दिन आदर्णीय हैं। (सहीह बुख़ारी: 1741, सहीह मुस्लिम: 1679) दूसरी हदीस में है कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है। वह न उस पर अत्याचार करे और न किसी को अत्याचार करने दे। और न उसे नीच समझे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने सीने की ओर संकेत कर के कहा: अल्लाह का डर यहाँ होता है। (सहीह मुस्लिम: 2564)

- 1 हदीस में है कि तुम्हारा अपने भाई की चर्चा ऐसी बात से करना जो उसे बुरी लगे वह गीबत कहलाती है। पूछा गया कि यदि उस में वह बुराई हो तो फिर? आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: यही तो गीबत है। यदि न हो तो फिर वह आरोप है। (सहीह मुस्लिम: 2589)

13. हे मनुष्यो!^[1] हम ने तुम्हें पैदा किया है एक नर-नारी से। तथा बना दी है तुम्हारी जातियाँ तथा प्रजातियाँ ताकि एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में तुम में अल्लाह के समीप सब से अधिक आदरणीय वही है जो तुम में अल्लाह से सब से अधिक डरता हो। वास्तव में अल्लाह सब जानने वाला

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا إِنَّ الْأَكْرَمَ عِنْدَ اللَّهِ أَتَقْوَمُ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿١٣﴾

1 इस आयत में सभी मनुष्यों को संबोधित कर के यह बताया गया है कि सब जातियों और कबीलों के मूल माँ-बाप एक ही हैं। इसलिये वर्ग-वर्ण तथा जाति और देश पर गर्व और भेद-भाव करना उचित नहीं। जिस से आपस में घृणा पैदा होती है। इस्लाम की सामाजिक व्यवस्था में कोई भेद-भाव नहीं है। और न ऊँच नीच का कोई विचार है, और न जात-पात का, तथा न कोई छूवा-छूत है। नमाज़ में सब एक साथ खड़े होते हैं। विवाह में भी कोई वर्ग-वर्ण और जाति का भेद-भाव नहीं। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कुरैशी जाति की स्त्री ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) का विवाह अपने मुक्त किये हुये दास ज़ैद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से किया था। और जब उन्होंने उसे तलाक़ दे दी तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ज़ैनब से विवाह कर लिया। इसलिये कोई अपने को सय्यद कहते हुये अपनी पुत्री का विवाह किसी व्यक्ति से इसलिये न करे कि वह सय्यद नहीं है तो यह जाहिली युग का विचार समझा जायेगा। जिस से इस्लाम का कोई सम्बंध नहीं है। बल्कि इस्लाम ने इस का खण्डन किया है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के युग में अफ़रीका के एक आदमी बिलाल (रज़ियल्लाहु अन्हु) तथा रोम के एक आदमी सुहैब (रज़ियल्लाहु अन्हु) बिना रंग और देश के भेद-भाव के एक साथ रहते थे। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: अल्लाह ने मुझे उपदेश भेजा है कि आपस में झुक कर रहो। और कोई किसी पर गर्व न करे। और न कोई किसी पर अत्याचार करे। (सहीह मुस्लिम: 2865)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: लोग अपने मरे हुये बापों पर गर्व न करें। अन्यथा वे उस कीड़े से हीन हो जायेंगे जो अपने नाक से गन्दगी ढकैलता है। अल्लाह ने जाहिलियत का पक्षपात और बापों पर गर्व को दूर कर दिया। अब या तो सदाचारी ईमान वाला है या कुकर्मी अभागा। सभी आदम की संतान हैं। (सुनन अबू दाऊद: 5116। इस हदीस की सनद हसन है।)

यदि आज भी इस्लाम की इस व्यवस्था और विचार को मान लिया जाये तो पूरे विश्व में शान्ति तथा मानवता का राज्य हो जायेगा।

सब से सूचित है।

14. कहा कुछ बददुओं (देहातियों) ने कि हम ईमान लाये। आप कह दें कि तुम ईमान नहीं लाये। परन्तु कहो कि हम इस्लाम लाये। और ईमान अभी तक तुम्हारे दिलों में प्रवेश नहीं किया। तथा यदि तुम आज्ञा का पालन करते रहे अल्लाह तथा उस के रसूल की, तो नहीं कम करेगा वह (अल्लाह) तुम्हारे कर्मों में से कुछा वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान्^[1] है।
15. वास्तव में ईमान वाले वही हैं जो ईमान लाये अल्लाह तथा उस के रसूल पर, फिर संदेह नहीं किया और जिहाद किया अपने प्राणों तथा धनों से अल्लाह की राह में, यही सच्चे हैं।
16. आप कह दें कि क्या तुम अवगत करा रहे हो अल्लाह को अपने धर्म से? जब कि अल्लाह जानता है जो कुछ (भी) आकाशों तथा धरती में है तथा वह प्रत्येक वस्तु का अति ज्ञानी है।
17. वे उपकार जता रहे हैं आप के ऊपर कि वह इस्लाम लाये हैं। आप कह दें कि उपकार न जताओ मुझ पर अपने इस्लाम का। बल्कि अल्लाह का उपकार है तुम पर कि उस ने राह दिखायी है तुम्हें ईमान की, यदि तुम सच्चे हो।

قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا قُلْ لَوْ تَوَدُّونَ وَاللَّيْنُ قَوْلًا
 أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ
 وَإِنْ تُطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَا يَلِفَنَّ مِنْكُمْ أَحْمَالُكُمْ
 شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَحِيمٌ ⑩

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ
 يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي
 سَبِيلِ اللَّهِ أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ⑩

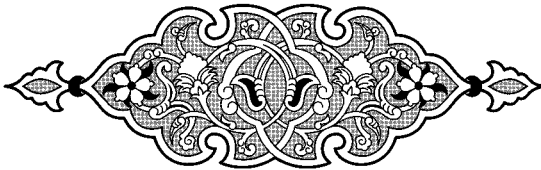
قُلْ أَعْلَمُونَهُ اللَّهُ يَدِينُكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي
 السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَاللَّهُ بِشَيْءٍ عَالِمٌ ⑩

يَتَّبِعُونَ عَلَيْكُمْ أَنْ أَسْلَمُوا قُلْ لَأَسْتَوْاعَنَّ
 إِسْلَامَكُمْ بَلِ اللَّهُ يَبْنِي عَلَيْكُمْ أَنْ
 هَدَيْتُمْ لِلْإِيمَانِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ⑩

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि मुख से इस्लाम को स्वीकार कर लेने से मुसलमान तो हो जाता है किन्तु जब तक ईमान दिल में न उतरे वह अल्लाह के समीप ईमान वाला नहीं होता। और ईमान ही आज्ञा पालन की प्रेरणा देता है जिस का प्रतिफल मिलेगा।

18. निःसंदेह अल्लाह ही जानता है आकाशों तथा धरती के ग़ैब (छुपी बात) को, तथा अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम कर रहे हो।

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَاللَّهُ بَصِيرٌ لِّمَا تَعْمَلُونَ ۝



सूरह काफ़ - 50



सूरह काफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 45 आयतें हैं।

- इस सूरह का आरंभ, अक्षर (काफ़) से हुआ है। जो इस का यह नाम रखने का कारण है।
- इस में कुर्आन की महिमा का वर्णन करते हुये मौत के पश्चात् जीवन से संबन्धित संदेहो को दूर किया गया है। और आकाश तथा धरती के उन लक्षणों की ओर ध्यान दिलाया गया है जिन पर विचार करने से मौत के पश्चात् जीवन का विश्वास होता है।
- इस में उन जातियों के परिणाम द्वारा शिक्षा दी गई है जिन्होंने उन रसूलों को झुठलाया जो दूसरे जीवन की सूचना दे रहे थे।
- इस में कर्मों के अभिलेख तथा नरक और स्वर्ग का ऐसा चित्र दिखाया गया है जिस से लगता है कि यह सब सामने हो रहा है।
- आयत 36 और 38 में शिक्षा दी गई है, और अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अपने स्थान पर स्थित रह कर कुर्आन द्वारा शिक्षा देते रहने के निर्देश दिये गये हैं।

हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) प्रत्येक जुमुआ को मिम्बर पर यह सूरह पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम: 873)

इसी प्रकार आप इसे दोनो ईद की नमाज़, और फ़ज़्र की नमाज़ में भी पढ़ते थे। (मुस्लिम: 878, 458)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. काफ़ा शपथ है आदरणीय कुर्आन की!
2. बल्कि उन्हें आश्चर्य हुआ कि आ गया उन के पास एक सवधान करने

قَسَمَ الْقُرْآنُ الْجَبْرِ
بَلْ عَجَبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنذِرٌ مِنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُونَ

- वाला उन्हीं में से। तो कहा काफ़िरों ने यह तो बड़े आश्चर्य^[1] की बात है।
3. क्या जब हम मर जायेंगे और धूल हो जायेंगे? तो यह वापसी दूर की बात^[2] (असंभव) है।
4. हमें ज्ञान है जो कम करती है धरती उन का अंश, तथा हमारे पास एक सुरक्षित पुस्तक है।
5. बल्कि उन्होंने झुठला दिया सत्य को जब आ गया उन के पास। इसलिये उलझन में पड़े हुये हैं।
6. क्या उन्होंने नहीं देखा आकाश की ओर अपने ऊपर कि कैसा बनाया है हम ने उसे और सजाया है उस को और नहीं है उस में कोई दराड़?
7. तथा हम ने धरती को फैलाया, और डाल दिये उस में पर्वत। तथा उपजायीं उस में प्रत्येक प्रकार की सुन्दर वनस्पतियाँ।
8. आँख खोलने तथा शिक्षा देने के लिये प्रत्येक अल्लाह की ओर ध्यानमग्न भक्त के लिये।
9. तथा हम ने उतारा आकाश से शुभ जल, फिर उगाये उस के द्वारा बाग तथा अब जो काटे जायें।

هَذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ۝

وَإِذْ أَمْنُنَا وَكُنَّا ثَرَابًا ۚ ذَٰلِكَ رَجْعٌ بَعِيدٌ ۝

فَدَعَلْنَا مَا تَقْصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ وَعِنْدَنَا كِتَابٌ حَفِيفٌ ۝

بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَمَنْ فِي الْأَرْوَاحِ ۝

أَفَلَمْ يَنْظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَزَيَّنَّاهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوجٍ ۝

وَالْأَرْضُ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَجْنَدْنَاهَا ۚ وَنَحْنُ الْمُنِزِّلُونَ ۝

بَصِيرَةٌ ۚ وَذَكَرَىٰ لِكُلِّ عِبْدٍ مُّشْرِكٍ ۝

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبَارَكًا فَأَنْبَتْنَا بِهِ جِبْدًا ۚ وَحَمِيعًا ۝

1 कि हमारे जैसा एक मनुष्य रसूल कैसे हो गया?

2 सुरक्षित पुस्तक से अभिप्राय ((लौहे महफूज़)) है। जिस में जो कुछ उन के जीवन-मरण की दशायें हैं वह पहले ही से लिखी हुई हैं। और जब अल्लाह का आदेश होगा तो उन्हें फिर बनाकर तय्यार कर दिया जायेगा।

10. तथा खजूर के ऊँचे वृक्ष जिन के गुच्छे गुथे हुये हैं।
11. जीविका के लिये भक्तों की, तथा हम ने जीवित कर दिया निर्जीव नगर को। इसी प्रकार (तुम्हें भी) निकलना है।
12. झुठलाया इस से पहले नूह की जाति तथा कूवें के वासियों एवं समूद ने।
13. तथा आद और फिरऔन एवं लूत के भाईयों ने।
14. तथा ऐका के वासियों ने, और तुब्बअ^[1] की जाति ने। प्रत्येक ने झुठलाया^[2] रसूलों को। अन्ततः सच्च हो गई (उन पर) हमारी धमकी।
15. तो क्या हम थक गये हैं प्रथम बार पैदा कर के? बल्कि यह लोग संदेह में पड़े हुये हैं नये जीवन के बारे में।
16. जब कि हम ने ही पैदा किया है मनुष्य को और हम जानते हैं जो विचार आते हैं उस के मन में। तथा हम अधिक समीप हैं उस से (उस की) प्राणनाड़ी^[3] से।

وَالنَّخْلَ بَسِطَتِ لَهَا طَعْمًا تَصِيدُ ۝

رَبِّرَّ قَالَ لِلْعِبَادِ وَأَحْيَيْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذَلِكَ
الْمُخْرَجُونَ ۝

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَصْحَابُ الرَّسِّ وَشَمُودُ ۝

وَعَادٌ وَذُرَّعُونَ وَإِخْوَانُ لُوطٍ ۝

وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ
فَحَقَّ وَعِيدُ ۝

أَفَعَيَّبْنَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِنْ
خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ ۗ
وَعَنْ أَوْقُرُبِّ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ۝

1 देखिये: सूरह दुखान, आयत: 37।

2 इन आयतों में इन जातियों के विनाश की चर्चा कर के कुआन और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को न मानने के परिणाम से सावधान किया गया है।

3 अर्थात हम उस के बारे में उस से अधिक जानते हैं।

17. जब कि^[1] (उस के) दायें-बायें बैठे दो फरिश्ते लिख रहे हैं।
18. वह नहीं बोलता कोई बात मगर उसे लिखने के लिये उस के पास एक निरीक्षक तय्यार होता है।
19. आ पहुँची मौत की अचेतना (बे होशी) सत्य ले कर। यह वही है जिस से तू भाग रहा था।
20. और फूँक दिया गया सूर (नरसिंघा) में। यही यातना के वचन का दिन है।
21. तथा आयेगा प्रत्येक प्राणी इस दशा में कि उस के साथ एक हाँकने^[2] वाला और एक गवाह होगा।
22. तू इसी से अचेत था, तो हम ने दूर कर दिया तेरे पर्दे को, तो तेरी आँख आज खूब देख रही है।
23. तथा कहा उस के साथी^[3] ने: यह है जो मेरे पास तय्यार है।
24. दोनों (फरिश्तों को आदेश होगा कि) फेंक दो नरक में प्रत्येक काफिर (सत्य के) विरोधी को।
25. भलाई के रोकने वाले, अधर्मी,

إِذْ يَتْلَى السَّمْعَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشَّمَالِ
قَعِيدٌ ۝

مَا يَلْفُظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَقِيدٌ ۝

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ
تَحِيدٌ ۝

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ذَلِكَ يَوْمَ الْوَعِيدِ ۝

وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَعَ سَائِرٍ وَشَهِيدٍ ۝

لَقَدْ كُنْتَ فِي غَفْلَةٍ مِنْ هَذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَاءَكَ
فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ۝

وَقَالَ قَرِينُهُ هَذَا مَا لَدَىٰ عَقِيدٍ ۝

الْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلِّ قَدَّارٍ عَنِيدٍ ۝

مَنَّانٍ الْغَائِبِينَ مُعْتَدٍ فَرِيدٍ ۝

- 1 अर्थात प्रत्येक व्यक्ति के दायें तथा बायें दो फरिश्ते नियुक्त हैं जो उस की बातों तथा कर्मों को लिखते रहते हैं। जो दायें है वह पुण्य को लिखता है। और जो बायें है वह पाप को लिखता है।
- 2 यह दो फरिश्ते होंगे एक उसे हिसाब के लिये हाँक कर लायेगा, और दूसरा उस का कर्म-पत्र प्रस्तुत करेगा।
- 3 साथी से अभिप्राय वह फरिश्ता है जो संसार में उस का कर्म लिख रहा था। वह उस का कर्म-पत्र उपस्थित कर देगा।

संदेह करने वाले को।

26. जिस ने बना लिये अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य, तो दोनों को फेंक दो कड़ी यातना में।
27. उस के साथी (शैतान) ने कहा: हे हमारे पालनहार! मैं ने इसे कुपथ नहीं किया, परन्तु वह स्वयं दूर के कुपथ में था।
28. अल्लाह ने कहा: झगड़ा न करो मेरे पास। मैं ने तो पहले ही (संसार में) तुम्हारी ओर चेतावनी भेज दी थी।
29. नहीं बदली जाती बात मेरे पास^[1], और न मैं तनिक भी अत्याचारी हूँ भक्तों के लिये।
30. जिस दिन हम कहेंगे नरक से कि तू भर गई? और वह कहेगी क्या कुछ और है?^[2]
31. तथा समीप कर दी जायेगी स्वर्ग, वह सदाचारियों से कुछ दूर न होगी।
32. यह है जिस का तुम को वचन दिया जाता था, प्रत्येक ध्यानमग्न रक्षक^[3] के लिये।
33. जो डरा अत्यंत कृपाशील से बिन देखे तथा ले कर आया ध्यान मग्न दिला।
34. प्रवेश कर जाओ इस में शान्ति के

لَا تَدْرِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ الْخَرَفَ الْوَيْبَةَ فِي الْعَذَابِ
الشَّدِيدِ ①

قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْعَمْتُهُ وَلَكِنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ
بَعِيدٍ ②

قَالَ لَا تَحْتَصِمُوا لَدَائِي وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُمْ بِالْوَعِيدِ ③

مَا يَبْدُلُ الْقَوْلَ لَدَائِي وَمَا أَنَا بِظَالِمٍ لِلْعَالَمِينَ ④

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَنَقُولُ هَلْ مِنْ
زَوَائِدِ ⑤

وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ⑥

هَذَا مَا تُوْعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ⑦

مَنْ خَشِيَ الرَّحْمَنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُنِيبٍ ⑧

لَدْخُلْهَا يَسْلَمُ ذَلِكَ يَوْمَ الْخُلُودِ ⑨

1 अर्थात् मेरे नियम अनुसार कर्मों का प्रतिकार दिया गया है।

2 अल्लाह ने कहा है कि वह नरक को अवश्य भर देगा। (देखिये: सूरह सज्दा, आयत: 13)। और जब वह कहेगी कि क्या कुछ और है? तो अल्लाह उस में अपना पैर रख देगा। और वह बस-बस कहने लगेगी। (बुखारी: 4848)

3 अर्थात् जो अल्लाह के आदेशों का पालन करता था।

साथ। यह सदैव रहने का दिन है।

35. उन्हीं के लिये जो वे इच्छा करेंगे उस में मिलेगा। तथा हमारे पास (इस से भी) अधिक है।^[1]
36. तथा हम विनाश कर चुके हैं इन से पूर्व बहुत से समुदायों का जो इन से अधिक थे शक्ति में। तो वह फिरते रहे नगरों में, तो क्या कहीं कोई भागने की जगह पा सके?^[2]
37. वास्तव में इस में निश्चय शिक्षा है उस के लिये जिस के दिल हो, अथवा कान धरे और वह उपस्थित^[3] हो।
38. तथा निश्चय हम ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को और जो कुछ दोनों के बीच है छः दिनों में, और हमें कोई थकान नहीं हुई।
39. तो आप सहन करें उन की बातों को तथा पवित्रता का वर्णन करें अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ सूर्य के निकलने से पहले तथा डूबने से पहले।^[4]

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ﴿٣٥﴾

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِنْ مَخْرُجٍ ﴿٣٦﴾

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِكْرًا لِمَنْ كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ﴿٣٧﴾

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا مَسَّنَا مِنْ لُغُوبٍ ﴿٣٨﴾

فَاصْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ﴿٣٩﴾

1 अधिक से अभिप्राय अल्लाह का दर्शन है। (देखिये: सूरह यूनस, आयत: 26, की व्याख्या में: सहीह मुस्लिम: 181)

2 जब उन पर यातना आ गई।

3 अर्थात् ध्यान से सुनता हो।

4 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने चाँद की ओर देखा। और कहा: तुम अल्लाह को ऐसे ही देखोगे। उस के देखने में तुम्हें कोई बाधा न होगी। इसलिये यदि यह हो सके कि सूर्य निकलने तथा डूबने से पहले की नमाज़ों से पीछे न रहो तो यह अवश्य करो। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (सहीह बुखारी: 554, सहीह मुस्लिम: 633)

यह दोनों फ़ज़ और अस्त्र की नमाज़ें हैं। हदीस में है कि प्रत्येक नमाज़ के पश्चात्

40. तथा रात के कुछ भाग में उस की पवित्रता का वर्णन करें और सज्दों (नमाज़ों) के पश्चात् (भी)।
41. तथा ध्यान से सुनो, जिस दिन पुकारने वाला^[1] पुकारेगा समीप स्थान से।
42. जिस दिन सब सुनेंगे कड़ी आवाज़ सत्य के साथ, वही निकलने का दिन होगा।
43. वास्तव में हम ही जीवन देते तथा मारते हैं और हमारी ओर ही फिर कर आना है।
44. जिस दिन फट जायेगी धरती उन से, वह दौड़ते हुये (निकलेंगे) यह एकत्र करना हम पर बहुत सरल है।
45. तथा हम भली-भाँति जानते हैं उसे जो कुछ वे कह रहे हैं। और आप उन्हें बल पूर्वक मनवाने के लिये नहीं हैं। तो आप शिक्षा दें कुर्आन द्वारा उसे जो डरता हो मेरी यातना से।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ۝

وَأَسْمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادُ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ۝

يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ذَلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ۝

إِنَّا نَعْنُ عُثَى وَنُؤَيْتُ وَاللَّيْنَا الْمَصِيرُ ۝

يَوْمَ نَشَقُّ الْأَرْضَ عَنْهُمْ يَوْمَ نَآدِكَ حَسْرَةً عَلَيْنَا
يَسِيرٌ ۝

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ
فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَنْ يَخَافُ وَعِيدِ ۝

अल्लाह की तस्बीह और हम्द तथा तक्बीर 33, 33 बार करो। (सहीह बुखारी: 843, सहीह मुस्लिम: 595)

1 इस से अभिप्राय प्रलय के दिन सूर में फूँकने वाला फ़रिश्ता है।

सूरह ज़ारियात - 51



सूरह ज़ारियात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 60 आयतें हैं।

- ज़ारियात का अर्थ है ऐसी वायु जो धूल उड़ाती हो। इस की आयत 1 से 6 तक में तूफ़ानी तथा वर्षा करने वाली हवाओं और संसार की रचना तथा व्यवस्था में जो मनुष्य को सचेत कर देती है, उन के द्वारा इस बात की ओर ध्यान दिलाया गया है कि कर्मों का प्रतिफल मिलना आवश्यक है। तथा इसी प्रकार कर्मफल के इन्कार और उपहास के दुष्परिणाम से सावधान किया गया है।
- आयत 15 से 19 तक में अल्लाह से डरने तथा सदाचार का जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी गई है। और उस का उत्तम फल बताया गया है।
- आयत 20 से 23 तक में उन निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो आकाश तथा धरती में और स्वयं मनुष्य में हैं। जो इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह की यातना का नियम इस संसार में भी काफ़िरों पर लागू होता रहा है।
- अन्त में आयत 47 से 60 तक अल्लाह की शक्ति तथा महिमा का वर्णन करते हुये उस की ओर लपकने और उस की वंदना करने का आमंत्रण दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

1. शपथ है (बादलों को) बिखेरने
वालियों की!

وَالذَّرِیَّتِ ذُرَّوۡا

2. फिर (बादलों का) बोझ लादने
वालियों की!

فَالْحِیَلِیۡ وَوَرَّوۡا

3. फिर धीमी गति से चलने वालियों की!

فَالْحِیۡلِیۡتِ یَسِّرَۡوۡا

4. फिर (अल्लाह का) आदेश बाँटने वाले (फ़रिश्तों की)!

فَالْمُقْسِمَاتِ أَمْرًا ۝

5. निश्चय जिस (प्रलय) से तुम्हें डराया जा रहा है वह सच्ची है।^[1]

إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَصَادِقٌ ۝

6. तथा कर्मों का फल अवश्य मिलने वाला है।

وَأَنَّ الَّذِينَ لَوْ قِيعٌ ۝

7. शपथ है रास्तों वाले आकाश की!

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْحُبُوبِ ۝

8. वास्तव में तुम विभिन्न^[2] बातों में हो।

إِنَّمَا لَكُمْ فِي قَوْلِ مَعْرُوفٍ ۝

9. उस से वही फेर दिया जाता है जो (सत्य से) फिरा हुआ हो।

يُؤَقِّكُ عَنْهُ مِنَ الْوَيْقِ ۝

10. नाश कर दिये गये अनुमान लगाने वाले।

قِيلَ الْفَرُصُونَ ۝

11. जो अपनी अचेतना में भूले हुये हैं।

الَّذِينَ هُمْ عَنْ عَذَابٍ سَاهُونَ ۝

12. वह प्रश्न^[3] करते हैं कि प्रतिकार का दिन कब है?

يَسْأَلُونَ أَيَّانَ يَوْمِ الدِّينِ ۝

13. (उस दिन है) जिस दिन वह अग्नि पर तपाये जायेंगे।

يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُعْتَدُونَ ۝

14. (उन से कहा जायेगा): स्वाद चखो अपने उपद्रव का। यही वह है जिस की तुम शीघ्र माँग कर रहे थे।

دُوقُوا فَمَا تَسْتَغِيحُونَ ۝

15. वास्तव में आज्ञाकारी स्वर्गों तथा जल स्रोतों में होंगे।

إِنَّ السَّمْعَانَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝

1 इन आयतों में हवाओं की शपथ ली गई है कि हवा (वायु) तथा वर्षा की यह व्यवस्था गवाह है कि प्रलय तथा परलोक का वचन सत्य तथा न्याय का होना आवश्यक है।

2 अर्थात् कुर्आन तथा प्रलय के विषय में विभिन्न बातें कर रहे हैं।

3 अर्थात् उपहास स्वरूप प्रश्न करते हैं।

16. लेते हुये जो कुछ प्रदान किया है उन को उन के पालनहार ने।
वस्तुतः वह इस से पहले (संसार में) सदाचारी थे।

17. वह रात्रि में बहुत कम सोया करते थे।^[1]

18. तथा भोरों^[2] में क्षमा माँगते थे।

19. और उन के धनों में माँगने वाले तथा न पाने वाले^[3] का भाग था।

20. तथा धरती में बहुत सी निशानियाँ हैं विश्वास करने वालों के लिये।

21. तथा स्वयं तुम्हारे भीतर (भी)। फिर क्या तुम देखते नहीं?

22. और आकाश में तुम्हारी जीविका^[4] है, तथा जिस का तुम्हें वचन दिया जा रहा है।

23. तो शपथ है आकाश एवं धरती के पालनहार की यह (बात) ऐसे ही सच्च है जैसे तुम बोल रहे हो।^[5]

24. (हे नबी!) क्या आई आप के पास

الْحٰزِنِينَ مَا شَأْنُهُمْ رَبُّهُمْ أَنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذٰلِكَ
مُحْسِنِينَ ﴿١٦﴾

كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ ﴿١٧﴾

وَبِالْآسْمَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿١٨﴾

وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُورِ ﴿١٩﴾

وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٢٠﴾

وَفِي أَنفُسِكُمْ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٢١﴾

وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تَعْدُونَ ﴿٢٢﴾

قَوْرَبِ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّكُمْ لَتَشْبَهُونَ مَا لَكُم مِّنْ
تَلْوِينٍ ﴿٢٣﴾

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ صَيْبِ بْنِ رَبِيْعٍ الْكَلْبِيِّ الْعَدُوِّ ﴿٢٤﴾

1 अर्थात अपना अधिक समय अल्लाह के स्मरण में लगाते थे। जैसे तहज्जुद की नमाज़ और तस्बीह आदि।

2 हदीस में है कि अल्लाह प्रत्येक रात में जब तिहाई रात रह जाये तो संसार के आकाश की ओर उतरता है। और कहता है: है कोई जो मुझे पुकारे तो मैं उस की पुकार सुनूँ? है कोई जो माँगे, तो मैं उसे दूँ? है कोई जो मुझ से क्षमा माँगे, तो मैं उसे क्षमा करूँ। (बुखारी: 1145, मुस्लिम: 758)

3 अर्थात जो निर्धन होते हुये भी नहीं माँगता था इसलिये उसे नहीं मिलता था।

4 अर्थात आकाश की वर्षा तुम्हारी जीविका का साधन बनती है। तथा स्वर्ग और नरक आकाशों में हैं।

5 अर्थात अपने बोलने का विश्वास है।

इब्राहीम के सम्मानित अतिथियों की सूचना?

25. जब वे आये उस के पास तो सलाम किया। इब्राहीम ने (भी) सलाम किया (तथा कहा): अपरिचित लोग हैं।
26. फिर चुपके से अपने परिजनों की ओर गया। और एक मोटा (भुना हुआ) बछड़ा लाया।
27. फिर रख दिया उन के पास, उस ने कहा: तुम क्यों नहीं खाते हो?
28. फिर अपने दिल में उन से कुछ डरा, उन्होंने कहा: डरो नहीं। और उसे शुभसूचना दी एक ज्ञानी पुत्र की।
29. तो सामने आई उस की पत्नी, और उस ने मार लिया (आश्चर्य से) अपने मुँह पर हाथ। तथा कहा: मैं बाँझ बुढ़िया हूँ।
30. उन्होंने कहा: इसी प्रकार तेरे पालनहार ने कहा है। वास्तव में वह सब गुण और सब कुछ जानने वाला है।
31. उस (इब्राहीम) ने कहा: तो तुम्हारा क्या अभियान है, हे भेजे हुये (फ़रिश्तो!)?
32. उन्होंने कहा: वास्तव में हम भेजे गये हैं एक अपराधी जाति की ओर।
33. ताकि हम बरसायें उन पर पत्थर की कंकरी।

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ سَلَامٌ قَوْمٌ مُّنتَكِرُونَ ﴿٢٥﴾

قَرَأُوا إِلَىٰ أَهْلِهِ فَجَاءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ ﴿٢٦﴾

فَعَرَّضَهُ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٢٧﴾

فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً قَالُوا لَا تَمَتُّنَا وَبَشِّرُوهُ بَعْلَامٍ عَلِيمٍ ﴿٢٨﴾

فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُ فِي صَاعٍ فَمَكَتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ ﴿٢٩﴾

قَالُوا كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٣٠﴾

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٣١﴾

قَالُوا وَإِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾

لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ جَمَالَءًا مِّنْ طِينٍ ﴿٣٣﴾

34. नामांकित^[1] तुम्हारे पालनहार की ओर से उल्लंघनकारियों के लिये।
35. फिर हम ने निकाल दिया जो भी उस (बस्ती) में ईमान वाले थे।
36. और हम ने उस में मुमिनों का केवल एक ही घर^[2] पाया।
37. तथा छोड़ दी हम ने उस (बस्ती) में एक निशानी उन के लिये जो डरते हों दुःखदायी यातना से।
38. तथा मूसा (की कथा) में, जब हम ने भेजा उसे फिरऔन की ओर प्रत्यक्ष (खुले) प्रमाण के साथ।
39. तो वह विमुख हो गया अपने बल-बूते के कारण, और कह दिया की जादूगर अथवा पागल है।
40. अन्ततः हम ने पकड़ लिया उस को तथा उस की सेनाओं को, फिर फेंक दिया उन को सागर में और वह निन्दित हो कर रह गया।
41. तथा आद में (शिक्षाप्रद निशानी है)। जब हम ने भेज दी उन पर बाँझ^[3] आँधी।
42. वह नहीं छोड़ती थी किसी वस्तु को जिस पर गुज़रती परन्तु उसे बना देती थी जीर्ण चूर-चूर हड्डी के समान।

مَوْتَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٤﴾

فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٥﴾

فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٦﴾

وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٣٧﴾

وَفِي مُوسَى إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَى فِرْعَوْنَ بِسُلْطَنٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾

فَتَوَلَّى بُرْجَانِيَّةً وَقَالَ سُحْرٌ أَوْ أَجْرُونٌ ﴿٣٩﴾

فَلَخْنَاهُ وَجُودًا فَغَدَا نَهْمٌ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿٤٠﴾

وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ ﴿٤١﴾

مَا تَذَرْنَ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلاَّ جَعَلْنَاهُ كَالرِّيمِ ﴿٤٢﴾

1 अर्थात् प्रत्येक पत्थर पर पापी का नाम है।

2 जो आदर्णीय लूत (अलैहिस्सलाम) का घर था।

3 अर्थात् अशुभा (देखिये: सूरह हाक्का. आयत: 7)

43. तथा समूद में जब उन से कहा गया कि लाभान्वित हो लो एक निश्चित समय तक।
44. तो उन्होंने अवैज्ञा की अपने पालनहार के आदेश की तो सहसा पकड़ लिया उन्हें कड़क ने, और वह देखते रह गये।
45. तो वे न खड़े हो सके और न (हम से) बदला ले सके।
46. तथा नूह^[1] की जाति को इस से पहले (याद करो)। वास्तव में वह अवैज्ञाकारी जाति थे।
47. तथा आकाश को हम ने बनाया है हाथों^[2] से और हम निश्चय विस्तार करने वाले हैं।
48. तथा धरती को हम ने बिछाया है तो हम क्या^[3] ही अच्छे बिछाने वाले हैं।
49. तथा प्रत्येक वस्तु का हम ने उत्पन्न किया है जोड़ा, ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।
50. तो तुम दौड़ो अल्लाह की ओर, वास्तव

وَبِنِي سُوْدٍ اِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا حَتَّىٰ حِينٍ ۝

فَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ فَاَخَذْنَا مِنْهُمُ الضُّعْفَةَ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۝

فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُتَعَبِينَ ۝

وَقَوْمَ نُوحٍ مِّنْ قَبْلُ اِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فٰسِقِينَ ۝

وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَا بِاَيْدِي وَاِنَّا لَمُوْسِعُونَ ۝

وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمُهْدُونَ ۝

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا رَوْحًا وَّجِبِينَ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝

فَوَرُّوْا اِلَى اللّٰهِ اِنَّ لَكُمْ مِّنْهُ نَزِيْرًا مُّبِيْنًا ۝

1 आयत 31 से 46 तक नबियों तथा विगत जातियों के परिणाम की ओर निरंतर संकेत कर के सावधान किया गया है कि अल्लाह के बदले का नियम बराबर काम कर रहा है।

2 अर्थात् अपनी शक्ति से।

3 आयत का भावार्थ यह है कि जब सब जिन्नों तथा मनुष्यों को अल्लाह ने अपनी वंदना के लिये उत्पन्न किया है तो अल्लाह के सिवा या उस के साथ किसी जिन्न या मनुष्य अथवा फ़रिश्ते और देवी देवता की वंदना अवैध और शिर्क है। जिस के लिये क्षमा नहीं है। (देखिये: सूरह निसा, आयत: 48, 116)। और जो व्यक्ति शिर्क कर लेता है तो उस के लिये स्वर्ग निषेध है। (देखिये: सूरह माइदा, आयत: 72)

में मैं तुम्हें उस की ओर से प्रत्यक्ष रूप से (खुला) सावधान करने वाला हूँ

51. और मत बनाओ अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्या वास्तव में मैं तुम्हें इस से खुला सावधान करने वाला हूँ

وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ إِنِّي لَكُم مِّنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥١﴾

52. इसी प्रकार नहीं आया उन के पास जो इन (मक्का वासियों) से पूर्व रहे कोई रसूल परन्तु उन्होंने ने कहा कि जादूगर या पागल है।

كَذَلِكَ مَا آتَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مُجُنُونٌ ﴿٥٢﴾

53. क्या वह एक दूसरे को वसियत^[1] कर चुके हैं इस की? बल्कि वे उल्लंघनकारी लोग हैं।

أَتَوْا صَوَابَهُ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٥٣﴾

54. तो आप मुख फेर लें उन से। आप की कोई निन्दा नहीं है।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَأَنْتَ بِمَلُومٍ ﴿٥٤﴾

55. और आप शिक्षा देते रहें। इसलिये कि शिक्षा लाभप्रद है ईमान वालों के लिये।

وَذُرِّقَٰنَ الدِّكْوَىٰ تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٥﴾

56. और नहीं उत्पन्न किया है मैं ने जिन्न तथा मनुष्य को परन्तु ताकि मेरी ही इबादत करें।

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾

57. मैं नहीं चाहता हूँ उन से कोई जीविका, और न चाहता हूँ कि वह मुझे खिलायें।

مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطْعَمُونِ ﴿٥٧﴾

58. अवश्य अल्लाह ही जीविका दाता शक्तिशाली बलवान है।

إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ﴿٥٨﴾

59. तो इन अत्याचारियों के पाप हैं इन

فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُنُوبًا تَمَثَّلَ دُونِ أَصْحَابِهِمْ

1 वसियत का अर्थ है: मरणसन्न आदेश। अर्थ यह कि क्या वे रसूलों के इन्कार का अपने मरण के समय आदेश देते आ रहे हैं कि यह भी अपने पूर्व के लोगों के समान रसूल का इन्कार कर रहे हैं।

के साथियों के पापों के समान अतः
वह उतावले न बनें।

60. अन्ततः विनाश है काफ़िरों के लिये
उन के उस दिन^[1] से जिस से वह
डराये जा रहे हैं।

فَلَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿٥٠﴾

فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي
يُوعَدُونَ ﴿٥١﴾

1 अर्थात् प्रलय के दिन।

सूरह तूर - 52



सूरह तूर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 49 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ में तूर (पर्वत) की शपथ लेने के कारण इस का नाम सूरह तूर है।
- इस में प्रतिफल के दिन को न मानने पर चेतावनी है कि अल्लाह की यातना उन पर अवश्य आ कर रहेगी। और इस पर विश्वास करने के साक्ष्य प्रस्तुत किये गये हैं तथा यातना का चित्र भी।
- अल्लाह की आज्ञा के पालन तथा अपने कर्तव्य को समझते हुये जीवन यापन करने पर अल्लाह के पुरस्कारों से सम्मानित किये जाने का चित्रण भी किया गया है।
- विरोधियों के आगे ऐसे प्रश्न रख दिये गये हैं जिन से संदेह स्वयं दूर हो जाते हैं।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सहन करने तथा अल्लाह की प्रशंसा तथा पवित्रता गान का निर्देश दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है तूर^[1] (पर्वत) की!
2. और लिखी हुई पुस्तक^[2] की!
3. जो झिल्ली के खुले पन्नों में लिखी हुई है।

وَالطُّورِ

وَكِتَابٍ مَّسْطُورٍ

فِي رَقٍّ مَّنشُورٍ

1 यह उस पर्वत का नाम है जिस पर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अल्लाह से वार्तालाप की थी।

2 इस से अभिप्राय कुर्आन है।

4. तथा बैतुल मअमूर (आबाद^[1] घर) की!
5. तथा ऊँची छत (आकाश) की!
6. और भड़काये हुये सागर^[2] की!
7. वस्तुतः आप के पालनहार की यातना हो कर रहेगी।
8. नहीं है उसे कोई रोकने वाला।
9. जिस दिन आकाश डगमगायेगा।
10. तथा पर्वत चलेंगे।
11. तो विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
12. जो विवाद में खेल रहे हैं।
13. जिस दिन वे धक्का दिये जायेंगे नरक की अग्नि की ओर।
14. (उन से कहा जायेगा): यही वह नरक है जिसे तुम झुठला रहे थे।
15. तो क्या यह जादू है या तुम्हें सुझाई नहीं देता?
16. इस में प्रवेश कर जाओ फिर सहन करो या सहन न करो तुम पर समान है। तुम उसी का बदला दिये जा रहे हो जो तुम कर रहे थे।
17. निश्चय, आज्ञाकारी बागों तथा

وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ۝

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِ ۝

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ۝

إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۝

ثَالِهٍ مِنْ دَافِعٍ ۝

يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَورًا ۝

وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سِيرًا ۝

فَوَيْلٌ لِلْيَوْمِينَ لِلْمَلَكِ الْمُنِينِ ۝

الَّذِينَ هُمْ فِي حُوضٍ يَلْعَبُونَ ۝

يَوْمَ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ تَارِحِهِمْ دَعْوًا ۝

هَذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝

أَفَسِحْرُ هَذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ۝

إِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ ۝

إِنَّمَا تُجْرُونَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعَيْشٍ ۝

1 यह आकाश में एक घर है जिस की फ़रिश्ते सदेव परिक्रमा करते रहते हैं। कुछ व्याख्या कारों ने इस का अर्थ: कौबा लिया है। जो उपासकों से प्रत्येक समय आबाद रहता है। क्योंकि मअमूर का अर्थ: ((आबाद)) है।

2 (देखिये: सूरह तकवीर, आयत: 6)

सुखों में होंगे।

18. प्रसन्न हो कर उस से जो प्रदान किया होगा उन को उन के पालनहार ने, तथा बचा लेगा उन को उन का पालनहार नरक की यातना से।

فَكَيْفَ يَمَآئَاتُهُمْ رَبُّهُمْ وَرُفْقَهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابِ الْجَحِيمِ ۝

19. (उन से कहा जायेगा): खाओ और पीओ मनमानी उस के बदले में जो तुम कर रहे थे।

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

20. तकिये लगाये हुये होंगे तख्तों पर बराबर बिछे हुये तथा हम विवाह देंगे उन को बड़ी आँखों वाली स्त्रियों से।

مُتَكِبِينَ عَلَى سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ۝

21. और जो लोग ईमान लाये और अनुसरण किया उन का उन की संतान ने ईमान के साथ तो हम मिला देंगे उन की संतान को उन के साथ तथा नहीं कम करेंगे उन के कर्माँ में से कुछ, प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्माँ का बंधक^[1] है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُمْ مِنْ عَمَلِهِمْ مِنْ شَيْءٍ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ۝

22. तथा हम अधिक देंगे उन को मेवे तथा मांस जिस की वह रुचि रखेंगे।

وَأَمَدَدْنَاهُمْ بِهَا هَيْهَاتَ وَهَيْمًا يَشْتَهُونَ ۝

23. वे एक-दूसरे से उस में लेते रहेंगे मदिरा के प्याले जिस में न कोई व्यर्थ बात होगी, न कोई पाप की बात।

يَتَنَاوَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَّا لَعْوُفِيهَا وَلَا تَأْتِيهِمْ ۝

24. और फिरते रहेंगे उन की सेवा में (सुन्दर) बालक जैसे वह छुपाये हुये मोती हों।

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكُونٌ ۝

25. और वह (स्वर्ग वासी) सम्मुख होंगे एक-दूसरे के प्रश्न करते हुये।

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝

1 अर्थात जो जैसा करेगा वैसा भरेगा।

26. वह कहेंगे: इस से पूर्व^[1] हम अपने परिजनों में डरते थे।
27. तो अल्लाह ने उपकार किया हम पर, तथा हमें सुरक्षित कर दिया तापलहरी की यातना से।
28. इस से पूर्व^[2] हम वंदना किया करते थे उस की। निश्चय वह अति परोपकारी दयावान् है।
29. तो आप शिक्षा देते रहें। क्योंकि आप के पालनहार के अनुग्रह से न आप काहिन (ज्योतिषी) हैं, और न पागल।^[3]
30. क्या वह कहते हैं कि यह कवि है हम प्रतीक्षा कर रहे हैं उस के साथ कालचक्र की?^[4]
31. आप कह दें कि तुम प्रतीक्षा करते रहो, मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ।
32. क्या उन्हें सिखाती है उन की समझ यह बातें, अथवा वह उल्लंघनकारी लोग हैं?
33. क्या वह कहते हैं कि इस (नबी) ने इस (कुर्आन) को स्वयं बना लिया है? वास्तव में वह ईमान नहीं लाना चाहते।

قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ﴿٢٦﴾

فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَدْنَا عَدَابَ النَّسُورِ ﴿٢٧﴾

إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوهُ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ﴿٢٨﴾

فَذَكِّرْ فَمَا أَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٌ
وَلَا مَجْنُونٌ ﴿٢٩﴾

أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ مَتَّبِعِيصُ بِهِ رَيْبٍ
الْمُتُونِ ﴿٣٠﴾

قُلْ تَرْتَضُوا فِإِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَزِعِينَ ﴿٣١﴾

أَمْ تَأْتُرُهُمْ آحْلَامُهُمْ بِهِذَا أَمْ لَهُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٣٢﴾

أَمْ يَقُولُونَ نَقُولُهُ بَلْ لَأَيُّ مَبْنُوتٍ ﴿٣٣﴾

1 अर्थात संसार में अल्लाह की यातना से।

2 अर्थात संसार में।

3 जैसा कि वह आप पर यह आरोप लगा कर हताश करना चाहते हैं।

4 अर्थात कुरैश इस प्रतीक्षा में हैं कि संभवतः आप को मौत आ जाये तो हमें चैन मिल जाये।

34. तो वे ला दें इस (कुरआन) के समान कोई एक बात यदि वह सच्चे हैं।
35. क्या वह पैदा हो गये हैं बिना^[1] किसी के पैदा किये, अथवा वह स्वयं पैदा करने वाले हैं?
36. या उन्होंने ही उत्पत्ति की है आकाशों तथा धरती की? वास्तव में वह विश्वास ही नहीं रखते।
37. अथवा उन के पास आप के पालनहार के कोषागार हैं या वही (उस के) अधिकारी हैं?
38. अथवा उन के पास कोई सीढ़ी है जिसे लगा कर सुनते^[2] हैं? तो उन का सुनने वाला कोई खुला प्रमाण प्रस्तुत करें।
39. क्या अल्लाह के लिये पुत्रियाँ हों तुम्हारे लिये पुत्र हों।
40. या आप माँग कर रहे हैं उन से किसी पारिश्रमिक^[3] की तो वे उस के बोझ से दबे जा रहे हैं?
41. अथवा उन के पास परोक्ष (का ज्ञान) है जिसे वे लिख^[4] रहे हैं?

فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلَهُ إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ ﴿٣٤﴾

أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ﴿٣٥﴾

أَمْ خَلَقُوا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بَلْ لَئِيْفُونَ ﴿٣٦﴾

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رِزْقِ أَمْ هُمُ الْمُحْسِيطُونَ ﴿٣٧﴾

أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ مَسْمُوعُونَ فِيهِ فَلْيَأْتِ مُسْمِعَهُمْ
بِسُلْطَنِ قُبُورٍ ﴿٣٨﴾

أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكِنَّ الْبَنُونَ ﴿٣٩﴾

أَمْ نَسَأَهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَغْرُومٍ مُنْتَقِلُونَ ﴿٤٠﴾

أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٤١﴾

- 1 जुबैर बिन मुत्इम कहते हैं कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मग़िब की नमाज़ में सूरह तूर पढ़ रहे थे। जब इन आयतों पर पहुँचे तो मेरे दिल की दशा यह हुई कि वह उड़ जायेगा। (सहीह बुखारी: 4854)
- 2 अर्थात् आकाश की बातों और जब उन के पास आकाश की बातें जानने का कोई साधन नहीं तो यह लोग, अल्लाह, फ़रिश्ते और धर्म की बातें किस आधार पर करते हैं?
- 3 अर्थात् सत्धर्म के प्रचार पर।
- 4 इसीलिये इस वही (कुरआन) को नहीं मानते हैं।

42. या वे चाहते हैं कोई चाल चलना? तो जो काफिर हो गये वे उस चाल में ग्रस्त होंगे।
43. अथवा उन का कोई और उपास्य (पूज्य) है अल्लाह के सिवा? अल्लाह पवित्र है उन के शिर्क से।
44. यदि वे देख लें कोई खण्ड आकाश से गिरता हुआ तो कहेंगे कि तह पर तह बादल है।^[1]
45. अतः आप छोड़ दें उन को यहाँ तक कि मिल जायें अपने उस दिन से जिस में^[2] इन्हें अपनी सुध नहीं होगी।
46. उस दिन नहीं काम आयेगी उन के उन की चाल कुछ, और न उन की सहायता की जायेगी।
47. तथा निश्चय अत्याचारियों के लिये एक यातना है इस के अतिरिक्त^[3] (भी)। परन्तु उन में से अधिकतर ज्ञान नहीं रखते हैं।
48. और (हे नबी!) आप सहन करें अपने पालनहार का आदेश आने तक। वास्तव में आप हमारी रक्षा में हैं। तथा पवित्रता का वर्णन करें अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ जब जागते हों।^[4]

أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمْ
الْمُكِيدُونَ ﴿٥٢﴾

أَمْ لَهُمُ اللَّهُ غَيْرَ اللَّهِ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٥٣﴾

وَإِنْ تَرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ
مَّرْكُومٌ ﴿٥٤﴾

فَدَرَهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ
يُصْعَقُونَ ﴿٥٥﴾

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ
يُنصَرُونَ ﴿٥٦﴾

وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَلِكَ وَلَٰكِن
أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٧﴾

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ
بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٥٨﴾

- 1 अर्थात् तब भी अपने कुफ़्र से नहीं रुकेंगे जब तक कि उन पर यातना न आ जाये।
- 2 अर्थात् प्रलय के दिन से।
- 3 इस से संकेत संसारिक यातनाओं की ओर है। (देखिये: सूरह सज्दा आयत: 21)
- 4 इस में संकेत है आधी रात्री के बाद की नमाज़ (तहज्जुद) की ओर।

49. तथा रात्री में (भी) उस की पवित्रता का वर्णन करें और तारों के डूबने के^[1] पश्चात् (भी)।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ﴿٥٢﴾

1 रात्री में तथा तारों के डूबने के समय से संकेत मग़िब तथा इशा और फ़ज्र की नमाज़ की ओर है जिन में यह सब नमाज़े भी आती हैं।

सूरह नज्म - 53



सूरह नज्म के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है। इस में 62 आयतें हैं।

- इस सूरह का आरंभ नज्म (तारे) की शपथ से हुआ है। इसलिये इस का नाम सूरह नज्म है।
- इस में वही तथा रिसालत से सम्बंधित तथ्यों को प्रस्तुत किया गया है। जिन से ईमान तथा विश्वास पैदा होता है। और ज्योतिष के आरोप का खण्डन होता है।
- नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सम्बंधित संदेहों को दूर किया गया है। जो वही के बारे में किये जाते थे। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जो कुछ आकाशों में देखा उसे प्रस्तुत किया गया है।
- वही (प्रकाशना) को छोड़ कर मनमानी तथा शिर्क करने और प्रतिफल के इन्कार पर पकड़ की गई है। जिन से इन विचारों का व्यर्थ होना उजागर होता है।
- सदाचारियों को क्षमा और पुरस्कार की शुभ सूचना दी गई है। और इन्कारियों को सोच-विचार का आमंत्रण दिया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सावधान कर्ता होने का वर्णन है। तथा प्रलय के दिन से सावधान करने के साथ ही अल्लाह ही को सज्दा करने तथा उसी की वंदना करने का आदेश दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है तारे की, जब वह डूबने लगे!
2. नहीं कुपथ हुआ है तुम्हारा साथी और न कुमार्ग हुआ है।
3. और वह नहीं बोलते अपनी इच्छा से।

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ

مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ

- | | |
|--|---|
| 4. वह तो बस वही (प्रकाशना) है जो
(उन की ओर) की जाती है। | إِنَّ هُوَ الْأَوَّلِيُّ الْآخِرِيُّ ۝ |
| 5. सिखाया है जिसे उन को शक्तिवान ने ^[1] | عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَى ۝ |
| 6. बड़े बलशाली ने, फिर वह सीधा
खड़ा हो गया। | ذُو مِرَّةٍ فَاسْتَوَى ۝ |
| 7. तथा वह आकाश के ऊपरी किनारे
पर था। | وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلَى ۝ |
| 8. फिर समीप हुआ, और फिर लटक
गया। | ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّى ۝ |
| 9. फिर हो गया दो कमान के बराबर
अथवा उस से भी समीप। | فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى ۝ |
| 10. फिर उस ने वही की उस (अल्लाह)
के भक्त ^[2] की ओर जो भी वही की। | فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ۝ |
| 11. नहीं झूठलाया उन के दिल ने जो
कुछ उन्होंने देखा। | مَا كَذَّبَ الْقُودُ مَا رَأَىٰ ۝ |
| 12. तो क्या तुम उन से झगड़ते हो उस
पर जिसे वह (आँखों से) देखते हैं? | أَفَكُرُّوهُ وَعَلَىٰ مَا يَرَىٰ ۝ |
| 13. निःसंदेह उन्होंने उसे एक बार और
भी उतरते देखा। | وَلَقَدْ رَأَىٰ الْأَنْزِلَةَ الْخُرَىٰ ۝ |

1 इस से अभिप्राय जिब्रील (अलैहिस्सलाम) है जो वही लाते थे।

2 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की ओर। इन आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के जिब्रील (फ़रिश्ते) को उन के वास्तविक रूप में दो बार देखने का वर्णन है। आईशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा: जो कहे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अल्लाह को देखा है तो वह झूठा है। और जो कहे कि आप कल (भविष्य) की बात जानते थे तो वह झूठा है। तथा जो कहे कि आप ने धर्म की कुछ बातें छुपा ली तो वह झूठा है। किन्तु आप ने जिब्रील (अलैहिस्सलाम) को उन के रूप में दो बार देखा। (बुखारी: 4855) इब्ने मसूद ने कहा कि आप ने जिब्रील को देखा जिन के छः सौ पँख थे। (बुखारी: 4856)

14. सिद्रतुल मुन्तहा^[1] के पास।
15. जिस के पास जन्नतुल^[2] मावा है।
16. जब सिद्रह पर छा रहा था जो कुछ छा रहा था।^[3]
17. न तो निगाह चुँधियाई और न सीमा से आगे हुई।
18. निश्चय आप ने अपने पालनहार की बड़ी निशानिया देखीं।^[4]
19. तो (हे मुश्रिकों!) क्या तुम ने देख लिया लात्त तथा उज्जा को।
20. तथा एक तीसरे मनात को।^[5]
21. क्या तुम्हारे लिये पुत्र हैं और उस अल्लाह के लिये पुत्रियाँ?
22. यह तो बड़ा भोंडा विभाजन है।
23. वास्तव में यह कुछ केवल नाम हैं जो तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिये हैं। नहीं उतारा है अल्लाह ने उन का कोई प्रमाण। वह केवल अनुमान^[6]

عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَى ۝

عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَأْوَى ۝

إِذْ يَنْشَى السِّدْرَةَ مَا يَنْشَى ۝

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَى ۝

لَقَدْ رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَى ۝

أَفَرَأَيْتُمُ اللَّاتَ وَالْعُزَّىٰ ۝

وَمَنْوَةَ الْعَالِيَةَ الْأُخْرَىٰ ۝

أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنثَىٰ ۝

بَلْ تِلْكَ إِذًا قِسْمَةٌ ضِيزَىٰ ۝

إِنَّ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءُ سَبَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَالْبَأْوُكُمْ
 مَا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ إِنْ يَتَّبِعُونَ
 إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ

- 1 सिद्रतुल मुन्तहा यह छठें या सातवें आकाश पर बैरी का एक वृक्ष है। जिस तक धरती की चीज़ पहुँचती हैं। तथा ऊपर की चीज़ उतरती हैं। (सहीह मुस्लिम: 173)
- 2 यह आठ स्वर्गों में से एक का नाम है।
- 3 हदीस में है कि वह सोने के पतिंगे थे। (सहीह मुस्लिम: 173)
- 4 इस में मेअराज की रात आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आकाशों में अल्लाह की निशानियाँ देखने का वर्णन है।
- 5 लात्त उज्जा और मनात यह तीनों मक्का के मुश्रिकों की देवियों के नाम हैं। और अर्थ यह है कि क्या इन की भी कोई वास्तविकता है?
- 6 मुश्रिक अपनी मूर्तियों को अल्लाह की पुत्रियाँ कह कर उन की पूजा करते थे। जिस का यहाँ खण्डन किया जा रहा है।

पर चल रहे हैं। तथा अपनी मनमानी पर। जब कि आ चुका है उन के पालनहार की ओर से मार्गदर्शन।

24. क्या मनुष्य को वही मिल जायेगा जिस की वह कामना करे?

مَنْ زَيَّلَهُمُ الْهُدَىٰ ۝

أَمْ لِلْإِنْسَانِ مَا تَمَنَّى ۝

25. (नहीं, यह बात नहीं है) क्यों कि अल्लाह के अधिकार में है आखिरत (प्रलोक) तथा संसार।

فَبَلِّغْهُ الْآخِرَةَ وَالْأُولَىٰ ۝

26. और आकाशों में बहुत से फ़रिश्ते हैं जिन की अनुशंसा कुछ लाभ नहीं देती, परन्तु इस के पश्चात् कि अनुमति दे अल्लाह जिस के लिये चाहे तथा उस से प्रसन्न हो।^[1]

وَلَمْ يَكُنْ فِي السَّمَوَاتِ لَأَتَّعِي شَفَاعَتَهُمْ شَيْئًا إِلَّا مَنْ بَعْدَ أَنْ يَأْذَنَ اللَّهُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَرْضَىٰ ۝

27. वास्तव में जो ईमान नहीं लाते परलोक पर, वे नाम देते हैं फ़रिश्तों को स्त्रियों के नाम।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ لَيَسْتُؤْنَسِبُونَ الْمَلَائِكَةَ نَسَبًا لَأُنثَىٰ ۝

28. उन्हें इस का कोई ज्ञान। नहीं वह अनुसरण कर रहे हैं मात्र गुमान का और वस्तुतः गुमान नहीं लाभप्रद होता सत्य के सामने कुछ भी।

وَاللَّهُ بِهِ مِنْ عَلَمٍ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنَّ الظَّنَّ لَأَتَّعِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۝

29. अतः आप विमुख हो जायें उस से जिस ने मुँह फेर लिया है हमारी शिक्षा से। तथा वह संसारिक जीवन ही चाहता है।

فَأَعْرَضَ عَنْ مَنْ تَوَلَّىٰ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝

30. यही उन के ज्ञान की पहुँच है। वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है उसे जो कुपथ हो

ذَلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ اهْتَدَىٰ ۝

1 अरब के मुशर्रिक यह समझते थे कि यदि हम फ़रिश्तों की पूजा करेंगे तो वह अल्लाह से सिफ़ारिश कर के हमें यातना से मुक्त करा देंगे। इसी का खण्डन यहाँ किया जा रहा है।

गया उस के मार्ग से, तथा उसे जिस ने संमार्ग अपना लिया।

31. तथा अल्लाह ही का है जो आकाशों तथा धरती में है ताकि वह बदला दे जिस ने बुराई की उस के कुकर्म का, और बदला दे जिस ने सुकर्म किया अच्छा बदला।

32. उन लोगों को जो बचते हैं, महा पापों तथा निर्लज्जा^[1] से, कुछ चूक के सिवा। वास्तव में आप का पालनहार उदार क्षमाशील है। वह भली-भाँति जानता है तुम को, जब कि उस ने पैदा किया तुम को धरती^[2] से तथा जब तुम भ्रूण थे अपनी माताओं के गर्भ में। अतः अपने में पवित्र न बनो। वही भली- भाँति जानता है उसे जिस ने सदाचार किया है।

33. तो क्या आप ने उसे देखा जिस ने मुँह फेर लिया?

34. और तनिक दान किया फिर रुक गया।

35. क्या उस के पास परोक्ष का ज्ञान है

وَاللَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لَيَجِزِي
الَّذِينَ آسَأُوا بِمَا عَمِلُوا وَيَجْزِي الَّذِينَ
أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَىٰ ۝

الَّذِينَ يَحْتَسِبُونَ كَثِيرًا الْأَثْمَ وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّهُمَّ
إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَعْفِرَةِ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنْشَأَكُمْ
مِنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجْنَةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ
فَلَا تَزُولُ أَنْفُسُكُمْ هُوَ أَعْلَمُ بِمِنَ النَّفْسِ ۝

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي تَوَلَّىٰ

وَءَعْطَىٰ قَلِيلًا وَأَكْدَىٰ ۝

أَعْنَدُهُ عَلِيمٌ الْغَيْبِ فَهُوَ بَصِيرٌ ۝

1 निर्लज्जा से अभिप्रायः निर्लज्जा पर आधारित कुकर्म हैं। जैसे बाल-मैथुन, व्यभिचार, नारियों का अपने सौन्दर्य का प्रदर्शन और पर्दे का त्याग, मिश्रित शिक्षा, मिश्रित सभायें, सौन्दर्य की प्रतियोगिता आदि। जिसे आधुनिक युग में सभ्यता का नाम दिया जाता है। और मुस्लिम समाज भी इस से प्रभावित हो रहा है। हदीस में है कि सात विनाशकारी कर्मों से बचो: 1- अल्लाह का साझी बनाने से। 2- जादू करना। 3- अकारण जान मारना। 4- मदिरा पीना। 5- अनाथ का धन खाना। 6- युद्ध के दिन भागना। 7- तथा भोली भाली पवित्र स्त्री को कलंक लगाना। (सहीह बुखारी: 2766, मुस्लिम: 89)

2 अर्थात् तुम्हारे मूल आदम (अलैहिस्सलाम) को।

कि वह (सब कुछ) देख^[1] रहा है?

36. क्या उसे सूचना नहीं हुई उन बातों की जो मूसा के ग्रन्थों में है?

37. और इब्राहीम की जिस ने (अपना वचन) पूरा कर दिया।

38. कि कोई दूसरे का भार नहीं लादेगा।

39. और यह कि मनुष्य के लिये वही है जो उस ने प्रयास किया।

40. और यह कि उस का प्रयास शीघ्र देखा जायेगा।

41. फिर प्रतिफल दिया जायेगा उसे पूरा प्रतिफल।

42. और यह कि आप के पालनहार की ओर ही (सब को) पहुँचना है।

43. तथा वही है जिस ने (संसार में) हँसाया तथा रुलाया।

44. तथा उसी ने मारा और जिवाया।

45. तथा उसी ने दोनों प्रकार उत्पन्न किये: नर और नारी।

46. वीर्य से जब (गर्भाशय में) गिरा।

47. तथा उसी के ऊपर दूसरी बार^[2] उत्पन्न करना है।

أَمْ لَمْ يُبَيِّنَّا بِمِائَاتِ مُصْفٍ مُّوسَىٰ ۝

وَابْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّىٰ ۝

أَلَا سِزْرٌ وَأِزْدَادٌ ۖ وَذُرَّ الْاٰخِرَىٰ ۝

وَأَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعَىٰ ۝

وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَىٰ ۝

ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجِزَاءَ اِلَّا اَوْفَىٰ ۝

وَأَنَّ اِلَىٰ رَبِّكَ اِلْتِمَاسُهَا ۝

وَأَنَّهُ هُوَ اَضْحَكَ وَابْكَىٰ ۝

وَأَنَّهُ هُوَ اَمَاتٌ وَاَحْيَا ۝

وَأَنَّهُ خَلَقَ الرُّوْحَيْنِ الذَّكْرَ وَاِلْاُنثَىٰ ۝

مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا اُنْتَبَىٰ ۝

وَأَنَّ عَلَيْهِ النُّشَاةَ الْاٰخِرَىٰ ۝

1 इस आयत में जो परम्परागत धर्म को मोक्ष का साधन समझता है उस से कहा जा रहा है कि क्या वह जानता है कि प्रलय के दिन इतने ही से सफल हो जायेगा? जब कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) वही के आधार पर जो प्रस्तुत कर रहे हैं वही सत्य है। और अल्लाह की वही ही परोक्ष के ज्ञान का साधन है।

2 अर्थात् प्रलय के दिन प्रतिफल प्रदान करने के लिये।

48. तथा उसी ने धनी बनाया और धन दिया।

وَأَنَّهُ هُوَ أَعْيَىٰ وَأَقْنَىٰ ﴿٥٨﴾

49. और वही शेअरा^[1] का स्वामी है।

وَأَنَّهُ هُوَ رَبُّ الشَّعْرَىٰ ﴿٥٩﴾

50. तथा उसी ने ध्वस्त किया प्रथम^[2] आद को।

وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ ﴿٦٠﴾

51. तथा समूद को। किसी को शेष नहीं रखा।

وَسَمُودَ أَفْمًا الْبَقَىٰ ﴿٦١﴾

52. तथा नूह की जाति को इस से पहले, वस्तुतः वह बड़े अत्याचारी अवैज्ञाकारी थे।

وَقَوْمَ نُوحٍ مِّن قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ وَأَطْغَىٰ ﴿٦٢﴾

53. तथा औधी की हुई बस्ती^[3] को उस ने गिरा दिया।

وَالْبُؤْتِغَةَ الْأَمْوَىٰ ﴿٦٣﴾

54. फिर उस पर छा दिया जो छा^[4] दिया।

فَغَشَّاهَا مَا عَشَىٰ ﴿٦٤﴾

55. तो (हे मनुष्य!) तू अपने पालनहार के किन किन पुरस्कारों में संदेह करता रहेगा।

فَيَأْتِي الْأَمْرَ بِكَ تَتَمَارَىٰ ﴿٦٥﴾

56. यह^[5] सचेतकर्ता हैं प्रथम सचेतकर्ताओं में से।

هَذَا أَنْذِيرُكَ مِنَ النَّذْرِ الْأُولَىٰ ﴿٦٦﴾

57. समीप आ लगी समीप आने वाली।

أَرْزَقَتْ الْأَرْضُ فُكَّٰةً ﴿٦٧﴾

58. नहीं है अल्लाह के सिवा उसे कोई दूर करने वाला।

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ﴿٦٨﴾

1 शेअरा एक तारे का नाम है। जिस की पूजा कुछ अरब के लोग किया करते थे। (इब्ने कसीर)। अर्थ यह है कि यह तारा पूज्य नहीं, वास्तविक पूज्य उस का स्वामी अल्लाह है।

2 यह हूद (अलैहिस्सलाम) की जाति थे।

3 अर्थात् सालेह (अलैहिस्सलाम) की जाति को।

4 अर्थात् लूत (अलैहिस्सलाम) की जाति की बस्तियों को।

5 अर्थात् पत्थरों की वर्षा कर के उन की बस्ती को ढाँक दिया।

59. तो क्या तुम इस^[1] कूर्आन पर
आश्चर्य करते हो?
60. तथा हँसते हो, और रोते नहीं।
61. तथा विमुख हो रहे हो।
62. अतः सज्दा करो अल्लाह के लिये तथा
उसी की वंदना^[2] करो।

أَفَمِنْ هَذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ۝٥٩

وَتَضْحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ ۝٦٠

وَأَنْتُمْ سَوِيدُونَ ۝٦١

فَاسْجُدْ لِلَّهِ وَاعْبُدْ ۝٦٢

- 1 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) भी एक रसूल हैं प्रथम रसूलों के समान।
- 2 हदीस में है कि जब सज्दे की प्रथम सूरह: «नज्म» उतरी तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और जो आप के पास थे सब ने सज्दा किया एक व्यक्ति के सिवा। उस ने कुछ धूल ली, और उस पर सज्दा किया। तो मैं ने इस के पश्चात् देखा कि वह काफिर रहते हुये मारा गया। और वह उमय्या बिन ख़लफ़ है। (सहीह बुख़ारी: 4863)

सूरह क़मर - 54



सूरह क़मर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है। इस में 55 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में क़मर (चाँद) के दो भाग हो जाने का वर्णन है। इसलिये इसे सूरह क़मर कहा जाता है।
- इस में काफ़िरों को झंझोड़ा गया है कि जब प्रलय का लक्षण उजागर हो गया है, और वह एतिहासिक बातें भी आ गई हैं जिन में शिक्षा है तो फिर वह कैसे अपने कुफ़्र पर अड़े हुये हैं? यह काफ़िर उसी समय सचेत होंगे जब प्रलय आ जायेगी।
- उन जातियों का कुछ परिणाम बताया गया है जिन्होंने रसूलों को झुठलाया। और संसार ही में यातना की भागी बन गईं। और मक्का के काफ़िरों को प्रलय की आपदा से सावधान किया गया है।
- अन्तिम आयतों में आज्ञाकारियों को स्वर्ग की शुभ सूचना दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. समीप आ गई^[1] प्रलय, तथा दो खण्ड हो गया चाँद।
2. और यदि वह देखते हैं कोई निशानी तो मुँह फेर लेते हैं। और कहते हैं: यह तो जादू है जो होता रहा है।

إِن تَرَبَّتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ

وَإِنْ يَرَوْا آيَةً يُعْرَضُوا وَيَقُولُوا سِحْرٌ مُّسْتَمَرٌّ

1 आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से मक्का वासियों ने माँग की, कि आप कोई चमत्कार दिखायें। अतः आप ने चाँद को दो भाग होते उन्हें दिखा दिया। (बुख़ारी: 4867)

आदरणीय अब्दुल्लाह बिन मसूद कहते हैं कि रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के युग में चाँद दो खण्ड हो गया: एक खण्ड पर्वत के ऊपर और दूसरा उस के नीचे। और आप ने कहा: तुम सभी गवाह रहो। (सहीह बुख़ारी: 4864)

3. और उन्होंने झुठलाया और अनुसरण किया अपनी आकांक्षाओं का और प्रत्येक कार्य का एक निश्चित समय है।
4. और निश्चय आ चुके हैं उन के पास कुछ ऐसे समाचार जिन में चेतवानी है।
5. यह (क़ुरआन) पूर्णतः तत्वदर्शिता (ज्ञान) है फिर भी नहीं काम आई उन के चेतानियाँ।
6. तो आप विमुख हो जायें उन से, जिस दिन पुकारने वाला पुकारेगा एक अप्रिय चीज़ की^[1] ओर।
7. झुकी होंगी उन की आँख। वह निकल रहे होंगे समाधियों से जैसे कि वह टिड्डी दल हों बिखरे हुये।
8. दौड़ रहे होंगे पुकारने वाले की ओर। काफ़िर कहेंगे: यह तो बड़ा भीषण दिन है।
9. झुठलाया इन से पहले नूह की जाति ने। तो झुठलाया उन्होंने हमारे भक्त को और कहा कि (पागल) है। और (उसे) झड़का गया।
10. तो उस ने प्रार्थना की अपने पालनहार से कि मैं विवश हूँ, अतः मेरा बदला ले ले।
11. तो हम ने खोल दिये आकाश के द्वार धारा प्रवाह जल के साथ।
12. तथा फाड़ दिये धरती के स्रोत, तो मिल गया (आकाश और धरती

وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَكُلُّ أُمَّةٍ مُّسْتَفِرَّةٌ ۝

وَلَمَّا جَاءَهُمْ مِنَ الْبَيِّنَاتِ مَا فِيهِمْ مُّذَبِّحٌ ۝

حِكْمَةٌ بِاللِّغَةِ فَمَا تَعْنِ التُّدَارُ ۝

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَرُدُّ الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ مُّكْرٍ ۝

خُسْفًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَمَا تَأْتِي
جِرَادٌ مُّنْشِرٌ ۝

مُطَّعِنِينَ إِلَىٰ الدَّاعِ يَقُولُ الْكَاذِبُونَ هَذَا
يَوْمَ عَصِيرٌ ۝

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا
مَجْنُونٌ وَارْدُجِرٌ ۝

فَدَعَا رَبُّكَ آتِي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرٌ ۝

فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُّنْهَرٍ ۝

وَوَجَّعْنَا الْأَرْضَ عَيْبُونَ فَالتَّقَىٰ الْمَاءِ عَلَيَّ أُمَّرٌ وَقَدْ قُدِرَ ۝

1 अर्थात् प्रलय के दिन हिसाब के लिये।

का) जल उस कार्य के अनुसार जो निश्चित किया गया।

13. और सवार कर दिया हम ने उस (नूह) को तख्तों तथा कीलों वाली (नाव) पर।
14. जो चल रही थी हमारी रक्षा में उस का बदला लेने के लिये जिस के साथ कुफ़ किया गया था।
15. और हम ने छोड़ दिया इसे एक शिक्षा बना कर। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?
16. फिर (देख लो!) कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ?
17. और हम ने सरल कर दिया है कुर्आन को शिक्षा के लिये। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?
18. झुठलाया आद ने तो कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ।
19. हम ने भेज दी उन पर कड़ी आँधी एक निरन्तर अशुभ दिन में।
20. जो उखाड़ रही थी लोगों को जैसे वह खजूर के खोखले तने हों।
21. तो कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ?
22. और हम ने सरल बना दिया है कुर्आन को शिक्षा के लिये। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?

وَحَمَلْنَاهُ عَلَىٰ ذَاتِ الْأَوْبَانِ يُرْسِدُ ۝

تَجْرِي بِأَعْيُنِنَا جَزَاءً لِّمَن كَانَ كُفِرًا ۝

وَلَقَدْ تَرَكْنَاهَا آيَةً فَهَلْ مِنْ مُدْرِكٍ ۝

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ ۝

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدْرِكٍ ۝

كَذَّبَتْ عَادٌ كَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ ۝

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْسْرًا فِي يَوْمِ نَحْصٍ مُّسَوِّمٍ ۝

تَنْزِعُ النَّاسَ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعَةٍ ۝

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ ۝

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدْرِكٍ ۝

23. झूठला दिया समूद^[1] ने चेतावनियों को।
24. और कहा: क्या अपने ही में से एक मनुष्य का हम अनुसरण करें? वास्तव में तब तो हम निश्चय बड़े कुपथ तथा पागलपन में हैं।
25. क्या उतारी गई है शिक्षा उसी पर हमारे बीच में से? (नहीं) बल्कि वह बड़ा झूठा अहंकारी है।
26. उन्हें कल ही ज्ञान हो जायेगा कि कौन बड़ा झूठा अहंकारी है?
27. वास्तव में हम भेजने वाले हैं ऊँटनी उन की परीक्षा के लिये। अतः (हे सालेह!) तुम उन के (परिणाम की) प्रतीक्षा करो तथा धैर्य रखो।
28. और उन्हें सूचित कर दो कि जल विभाजित होगा उन के बीच, और प्रत्येक अपनी बारी के दिन^[2] उपस्थित होगा।
29. तो उन्होंने पुकारा अपने साथी को। तो उस ने आक्रमण किया और उसे बध कर दिया।
30. फिर कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ?
31. हम ने भेज दी उन पर कर्कश ध्वनी,

1 यह सालेह (अलैहिस्सलाम) की जाति थी। उन्होंने उन से चमत्कार की माँग की तो अल्लाह ने पर्वत से एक ऊँटनी निकाल दी। फिर भी वह ईमान नहीं लाये। क्योंकि उन के विचार से अल्लाह का रसूल कोई मनुष्य नहीं फ़रिश्ता होना चाहिये था। जैसा की मक्का के मुश्रिकों का विचार था।

2 अर्थात् एक दिन जल स्रोत का पानी ऊँटनी पियेगी और एक दिन तुम सब।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ۝

فَقَالُوا أَبَشْرًا مِثْلًا وَاحِدًا اتَّبَعْنَا لَأَنَّ الْفَيْضَ لَنَا
وَسُغَيْرِ ۝

أَلَيْسَ لِلَّهِ الْكُرُوسِيُّونَ مِنْ بَيْنِنَا لَنْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌ ۝

سَيَعْلَمُونَ غَدًا لَنْ الْكَذَّابُ الْأَشْرُ ۝

إِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةَ فَمَنْ لَكُمْ فَارْتَبِعُوهُمْ
وَاصْطَبِرُوا ۝

وَنَبِّئُهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلٌّ شَرْبٍ
مُعْتَصِرٌ ۝

فَنَادُوا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَى فَعَقَرَ ۝

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِي ۝

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا

كَهَيْسِ الْمَخَضِرِ ۝

- तो वे हो गये बाड़ा बनाने वाले की रौंदी हुई बाढ़ के समान (चूर-चूर)।
32. और हम ने सरल कर दिया है कुर्आन को शिक्षा के लिये। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?
33. झूठला दिया लूत की जाति ने चेतावनियों को।
34. तो हम ने भेज दिये उन पर, पत्थर लूत के परिजनों के सिवा, हम ने उन्हें बचा लिया रात्री के पिछले पहर।
35. अपने विशेष अनुग्रह से। इसी प्रकार हम बदला देते हैं उस को जो कृतज्ञ हो।
36. और निःसंदेह (लूत) ने सावधान किया उन को हमारी पकड़ से। परन्तु उन्होंने संदेह किया चेतावनियों के विषय में।
37. और बहलाना चाहा उस (लूत) को उस के अतिथियों^[1] से तो हम ने अंधी कर दी उन की आँखें। कि चखो मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियों (का परिणाम)।
38. और उन पर आ पहुँची प्रातः भोर ही में स्थायी यातना।
39. तो चखो मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ।
40. और हम ने सरल कर दिया है कुर्आन को शिक्षा के लिये तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?

وَلَقَدْ يَتْرَأُ الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ۝

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالَّذِينَ ۝

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ
بِحَبْلِهِمْ بَسَطْنَا ۝

نَعْمَةٌ مِنْ عِنْدِنَا كَذَلِكَ نُجْزِي مَنْ شَكَرَ ۝

وَلَقَدْ أَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالَّذِينَ ۝

وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَنْ صَافِيَةِ فَامْسَكَهَا عَلَيْهِمْ قَدْ وَفُوا
عَنَّا إِنِّي وَنَدَّرُ ۝

وَلَقَدْ صَبَحَ لَهُمْ نَكْرَةٌ كَذَلِكَ نُنْزِلُ ۝

فَذُوقُوا عَذَابِي وَنَدَّرُ ۝

وَلَقَدْ يَتْرَأُ الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ۝

1 अर्थात् उन्होंने अपने दुराचार के लिये फ़रिश्तों को जो सुन्दर युवकों के रूप में आये थे, उन को लूत (अलैहिस्सलाम) से अपने सुपर्द करने की माँग की।

41. तथा फिरऔनियों के पास भी चेतावनियाँ आईं।
42. उन्होंने झूठलाया हमारी प्रत्येक निशानियों को तो हम ने पकड़ लिया उन को अति प्रभावी आधिपति के पकड़ने के समान।
43. (हे मक्का वासियों!) क्या तुम्हारे काफ़िर उत्तम हैं उन से अथवा तुम्हारी मुक्ति लिखी हुई है आकाशीय पुस्तकों में?
44. अथवा वह कहते हैं कि हम विजेता समूह हैं।
45. शीघ्र ही पराजित कर दिया जायेगा यह समूह, और वह पीठ दिखा^[1] देंगे।
46. बल्कि प्रलय उन के वचन का समय है तथा प्रलय अधिक कड़ी और तीखी है।
47. वस्तुतः यह पापी कुपथ तथा अग्नि में हैं।
48. जिस दिन वे घसीटे जायेंगे यातना में अपने मुखों के बल (उन से कहा जायेगा कि) चखो नरक की यातना का स्वाद।
49. निश्चय हम ने प्रत्येक वस्तु को उत्पन्न किया है एक अनुमान से।
50. और हमारा आदेश बस एक ही बार

وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النَّذِيرُ ﴿١﴾

كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَابًا وَخَذَّ اللَّهُ لَهُم مَّا خَدَّ عَزِيزٌ مُّقْتَدِرٌ ﴿٢﴾

أَلَمْ نَكْتُمُ خَيْرٌ مِّنْ أَوْلِيَانِكُمْ إِذْ جَاءَكُمُ الْبُرْهَانُ فِي الرُّؤْيَى ﴿٣﴾

أَمْ يَقُولُونَ غَنُ جَمِيمٌ مِّنْصُرٌ ﴿٤﴾

سَيَهْرَمُ الْجَمْعُ وَيُولُونَ الدُّبُرُ ﴿٥﴾

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمُ وَالسَّاعَةُ أَذَىٰ وَأَمْرٌ ﴿٦﴾

إِنَّ النُّجُومِ مِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ﴿٧﴾

يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ ﴿٨﴾

إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ﴿٩﴾

وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلِمَةً بَايَضَّرُ ﴿١٠﴾

1 इस में मक्का के काफ़िरो की पराजय की भविष्यवाणी है जो बद्र के युद्ध में पूरी हुई। हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बद्र के दिन एक खेमे में अल्लाह से प्रार्थना कर रहे थे। फिर यही आयत पढ़ते हुये निकले। (सहीह बुख़ारी: 4875)

होता है आँख झपकने के समान।^[1]

51. और हम ध्वस्त कर चुके हैं तुम्हारे जैसे बहुत से समुदायों को।
52. जो कुछ उन्होंने किया है कर्मपत्र में है।^[2]
53. और प्रत्येक तुच्छ तथा बड़ी बात अंकित है।
54. वस्तुतः सदाचारी लोग स्वर्गों तथा नहरों में होंगे।
55. सत्य के स्थान में अति सामर्थ्यवान स्वामी के पास।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاءَ عَمَّ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ﴿٥١﴾

وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾

وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُسْتَطَرٌّ ﴿٥٣﴾

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهْرٍ ﴿٥٤﴾

فِي مَقْعَدٍ صَدِيقٍ عِنْدَ مَلِكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٥﴾

1 अर्थात् प्रलय होने में देर नहीं होगी। अल्लाह का आदेश होते ही तत्क्षण प्रलय आ जायेगी।

2 जिसे उन फ़रिश्तों ने जो दायें तथा बायें रहते हैं लिख रखा है।

सूरह रहमान - 55



सूरह रहमान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 78 आयतें हैं।

- इस सूरह का आरंभ अल्लाह के शुभ नाम ((रहमान)) से हुआ है। इसलिये इस का नाम सूरह रहमान है।
- इस की आरंभिक आयतों में रहमान (अत्यंत कृपाशील) की सब से बड़ी दया का वर्णन हुआ है कि उस ने मनुष्य को कुर्आन का ज्ञान प्रदान किया और उसे बात करने की शक्ति दी जो उस का विशेष गुण है।
- फिर आयत 12 तक धरती तथा आकाश की विचित्र चीजों का वर्णन कर के यह प्रश्न किया गया है कि तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों तथा गुणों को नकारोगे?
- इस की आयत 13 से 30 तक जिबों तथा मनुष्यों की उत्पत्ति, दो पूर्व तथा पश्चिमों की दूरी, दो सागरों का संगम तथा इस प्रकार की अन्य विचित्र निशानियों और अल्लाह की दया की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- आयत 31 से 45 तक मनुष्यों तथा जिबों को उन के पापों पर कड़ी चेतावनी दी गई है कि वह दिन आ ही रहा है जब तुम्हारे किये का दुःखदायी दण्ड तुम्हें मिलेगा।
- अन्त में उन का शुभ परिणाम बताया गया है जो अल्लाह से डरते रहे। और फिर स्वर्ग के सुखों की एक झलक दिखायी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अत्यंत कृपाशील ने।
2. शिक्षा दी कुर्आन की।
3. उसी ने उत्पन्न किया मनुष्य को।
4. सिखाया उसे साफ़ साफ़ बोलना।

الرَّحْمَنِ

عَلَّمَ الْقُرْآنَ

خَلَقَ الْإِنْسَانَ

عَلَّمَهُ الْبَيَانَ

5. सूर्य तथा चन्द्रमा एक (नियमित) हिसाब से हैं।
6. तथा तारे और वृक्ष दोनों (उसे) सज्दा करते हैं।
7. और आकाश को ऊँचा किया और रख दी तराजू^[1]
8. ताकि तुम उल्लंघन न करो तराजू (न्याय) में।
9. तथा सीधी रखो तराजू न्याय के साथ और कम न तौलो।
10. धरती को उस ने (रहने योग्य) बनाया पूरी उत्पत्ति के लिये।
11. जिस में मेवे तथा गुच्छे वाले खजूर हैं।
12. और भूसे वाले अन्न तथा सुगंधित (पुष्प) फूल हैं।
13. तो (हे मनुष्य तथा जिन्न!) तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
14. उस ने उत्पन्न किया मनुष्य को खनखनाते ठीकरी जैसे सूखे गारे से।
15. तथा उत्पन्न किया जिन्नों को अग्नि की ज्वाला से।
16. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ مُجْبَرَانِ ۝

وَالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدَانِ ۝

وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ۝

لَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ۝

وَأَقِيمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيزَانَ ۝

وَالْأَرْضَ وَضَعَهَا لِلْأَنَامِ ۝

فِيهَا فَالْكِهَةُ وَالنَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ ۝

وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۝

مِائِي الْأَوَّارِكَمَا تُكَذِّبِينَ ۝

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۝

وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَّارِجٍ مِنْ نَارٍ ۝

فِي أَيِّ الْأَوَّارِكَمَا تُكَذِّبِينَ ۝

1 (देखिये: सूरह हदीद, आयत: 25) अर्थ यह है कि धरती में न्याय का नियम बनाया और उस के पालन का आदेश दिया।

17. वह दोनों सूर्योदय^[1] के स्थानों तथा दोनों सूर्यास्त के स्थानों का स्वामी है।
18. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन पुरस्कारों को झुठलाओगे?
19. उस ने दो सागर बहा दिये जिन का संगम होता है।
20. उन दोनों के बीच एक आड़ है। वह एक-दूसरे से मिल नहीं सकते।
21. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
22. निकलता है उन दोनों से मोती तथा मूँगा।
23. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
24. तथा उसी के अधिकार में हैं जहाज़ खड़े किये हुये सागर में पर्वतों जैसे।
25. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
26. प्रत्येक जो धरती पर है नाशवान है।
27. तथा शेष रह जायेगा आप के प्रतापी सम्मानित पालनहार का मुख (अस्तित्व)।

رَبِّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبِّ الْمَغْرِبَيْنِ ۝

فِي أَيِّ الْأَرْضِ لَكُمْ تَكْدِيبٌ ۝

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيَانِ ۝

بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبْغِيَانِ ۝

فِي أَيِّ الْأَرْضِ لَكُمْ تَكْدِيبٌ ۝

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ۝

فِي أَيِّ الْأَرْضِ لَكُمْ تَكْدِيبٌ ۝

وَالَهُ الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۝

فِي أَيِّ الْأَرْضِ لَكُمْ تَكْدِيبٌ ۝

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝

وَيَسْفَىٰ وَجْهَ رَبِّكَ ذُؤَالِجِلِّيًّا ۝

1 गर्मी तथा जाड़े में सूर्योदय तथा सूर्यास्त के स्थानों का। इस से अभिप्राय पूर्व तथा पश्चिम की दिशा नहीं है।

28. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
29. उसी से माँगते हैं जो आकाशों तथा धरती में हैं। प्रत्येक दिन वह एक नये कार्य में है।^[1]
30. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
31. और शीघ्र ही हम पूर्णतः आकर्षित हो जायेंगे तुम्हारी ओर, हे (धरती के) दोनों बोज़ [2] (जिन्नो और मनुष्यो!)^[3]
32. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
33. हे जिन्न तथा मनुष्य के समूह! यदि निकल सकते हो आकाशों तथा धरती के किनारों से तो निकल भागो। और तुम निकल नहीं सकोगे बिना बड़ी शक्ति^[4] के।
34. फिर तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
35. तुम दोनों पर अग्नि की ज्वाला तथा धूवाँ छोड़ा जायेगा। तो तुम अपनी सहायता नहीं कर सकोगे।

فَيَأْتِي الْأَرْضَ رَيْكُمَا تَكْذِبِينَ ﴿٢٨﴾

يَسْتَلُّهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ﴿٢٩﴾

فَيَأْتِي الْأَرْضَ رَيْكُمَا تَكْذِبِينَ ﴿٣٠﴾

سَنَفَعُكُمْ أَيُّهَا الشَّقَلَاءُ ﴿٣١﴾

فَيَأْتِي الْأَرْضَ رَيْكُمَا تَكْذِبِينَ ﴿٣٢﴾

يَمْعَشِرَ الْجَيْنَ وَالْإِنْسَ إِنْ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانْفُذُوا وَالْأَنْفُذُونَ إِلَّا سُلْطِينَ ﴿٣٣﴾

فَيَأْتِي الْأَرْضَ رَيْكُمَا تَكْذِبِينَ ﴿٣٤﴾

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شَوْاظٌ مِّنْ نَّارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرُونَ ﴿٣٥﴾

1 अर्थात् वह अपनी उत्पत्ति की आवश्यकतायें पूरी करता, प्रार्थनायें सुनता, सहायता करता, रोगी को निरोग करता, अपनी दया प्रदान करता, तथा अपमान-सम्मान और विजय-प्राजय देता और अगणित कार्य करता है।

2 इस वाक्य का अर्थ मुहावरे में धमकी देना और सावधान करना है।

3 इस में प्रलय के दिन की ओर संकेत है जब सब मनुष्यों और जिन्नों के कर्मों का हिसाब लिया जायेगा।

4 अर्थ यह है कि अल्लाह की पकड़ से बच निकलना तुम्हारे बस में नहीं है।

36. फिर तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٣٦﴾

37. जब आकाश (प्रलय के दिन) फट जायेगा तो लाल हो जायेगा लाल चमड़े के समान।

فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾

38. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٣٨﴾

39. तो उस दिन नहीं प्रश्न किया जायेगा अपने पाप का किसी मनुष्य से न जिन्न से।

فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌ ﴿٣٩﴾

40. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٤٠﴾

41. पहचान लिये जायेंगे अपराधी अपने मुखों से, तो पकड़ा जायेगा उन के माथे के बालों और पैरों को।

يَعْرِفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمَاهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ ﴿٤١﴾

42. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٤٢﴾

43. यही वह नरक है जिसे झूठ कह रहे थे अपराधी।

هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٤٣﴾

44. वह फिरते रहेंगे उस के बीच तथा खौलते पानी के बीच।

يَطُوفُونَ فِيهَا وَبَيْنَ حَيْبَرَيْنِ ﴿٤٤﴾

45. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٤٥﴾

46. और उस के लिये जो डरा अपने पालनहार के समक्ष खड़े होने से दौभाग्य है।

وَلَمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتٍ ﴿٤٦﴾

47. तो तुम अपने पालनहार के

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٤٧﴾

- किन-किन उपकारों को झुठलाओगे।
48. दो बाग़ हरी भरी शाखाओं वाले।
49. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
50. उन दोनों में दो जल स्रोत बहते होंगे।
51. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन पुरस्कारों को झुठलाओगे?
52. उन में प्रत्येक फल के दो प्रकार होंगे।
53. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
54. वह ऐसे बिस्तरों पर तकिये लगाये हुये होंगे जिन के अस्तर दबीज़ रेशम के होंगे। और दोनों बाग़ों (की शाखायें) फलों से झुकी हुई होंगी।
55. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
56. उन में लजीली आँखों वाली स्त्रियाँ होंगी जिन को हाथ नहीं लगाया होगा किसी मनुष्य ने इस से पूर्व और न किसी जिन्न ने।
57. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
58. जैसे वह हीरे और मूँगे हों।
59. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
60. उपकार का बदला उपकार ही है।

ذَوَاتَا أَغْنَانٍ ۝

فِي أَيِّ الْأَرْضَيْنِمَا تَكْتَدَانِ ۝

فِي مِمَّا عَيْنُنَّ يُجْرِيْنَ ۝

فِي أَيِّ الْأَرْضَيْنِمَا تَكْتَدَانِ ۝

فِي مِمَّا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ رُوحَيْنِ ۝

فِي أَيِّ الْأَرْضَيْنِمَا تَكْتَدَانِ ۝

مُتَكَبِّرِينَ عَلَى فُرُشٍ بَطَائِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ وَجَنَّا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ۝

فِي أَيِّ الْأَرْضَيْنِمَا تَكْتَدَانِ ۝

فِي مِمَّا قُصِرَتْ الطُّرُفُ لَمْ يَطْمِئِنَّ رِئْسَ قَلْبِهِمْ وَلَا جَانٍ ۝

فِي أَيِّ الْأَرْضَيْنِمَا تَكْتَدَانِ ۝

كَأَنَّهَا يَاقُوتٌ وَاللُّجَاجُ ۝

فِي أَيِّ الْأَرْضَيْنِمَا تَكْتَدَانِ ۝

هَلْ جَزَاءُ الْإِنْسَانِ إِلَّا الْإِنْسَانُ ۝

61. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
62. तथा उन दोनों के सिवा^[1] दो बाग होंगे।
63. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
64. दोनों हरे-भरे होंगे।
65. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
66. उन दोनों में दो जल स्रोत होंगे उबलते हुये।
67. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
68. उन में फल तथा खजूर और अनार होंगे।
69. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
70. उन में सुचरिता सुन्दरियाँ होंगी।
71. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
72. गोरियाँ सुरक्षित होंगी खेमों में।
73. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

فِي أَيِّ آلاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٥٥﴾

وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتَيْنِ ﴿٥٦﴾

فِي أَيِّ آلاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٥٧﴾

مُدْمَأْمَأَتَيْنِ ﴿٥٨﴾

فِي أَيِّ آلاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٥٩﴾

فِيهِمَا عَيْنَيْنِ تَظَّاحَتَيْنِ ﴿٦٠﴾

فِي أَيِّ آلاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٦١﴾

فِيهِمَا نَارُكَاهِمَهُ وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ ﴿٦٢﴾

فِي أَيِّ آلاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٦٣﴾

فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حَسَنَاتٌ ﴿٦٤﴾

فِي أَيِّ آلاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٦٥﴾

حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي الْبُيُوتِ ﴿٦٦﴾

فِي أَيِّ آلاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٦٧﴾

1 हदीस में है कि दो स्वर्ग चाँदी की हैं। जिन के बर्तन तथा सब कुछ चाँदी के हैं। और दो स्वर्ग सोने की, जिन के बर्तन तथा सब कुछ सोने का है। और स्वर्ग वासियों तथा अल्लाह के दर्शन के बीच अल्लाह के मुख पर महिमा के पर्दे के सिवा कुछ नहीं होगा। (सहीह बुखारी: 4878)

74. नहीं हाथ लगाया होगा^[1] उन्हें किसी मनुष्य ने इस से पूर्व और न किसी जिन्न ने।
75. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
76. वे तकिये लगाये हुये होंगे हरे गलीचों तथा सुन्दर विस्तरों पर।
77. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
78. शुभ है आप के प्रतापी सम्मानित पालनहार का नाम।

لَمْ يَطْمِئِنُّنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌ ۝

فَمَا بَى الْأَرْضِ لَكُمْ مَكْدِبِينَ ۝

مُتَكِبِينَ عَلَى رُفُوفٍ خُضْرٍ وَعَبَقَرِيٍّ حَسَانٍ ۝

فَمَا بَى الْأَرْضِ لَكُمْ مَكْدِبِينَ ۝

تَبَارَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۝

1 हदीस में है कि यदि स्वर्ग की कोई सुन्दरी संसार वासियों की ओर झाँक दे, तो दोनों के बीच उजाला हो जाये। और सुगंध से भर जायें। (सहीह बुखारी शरीफ: 2796)

सूरह वाकिआ - 56



सूरह वाकिआ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 96 आयत हैं।

- वाकिआ प्रलय का एक नाम है। जो इस सूरह की प्रथम आयत में आया है। जिस के कारण इस का यह नाम रखा गया है।
- इस में प्रलय का भ्यावः चित्रण है जिस में लोगों को तीन भागों में कर दिया जायेगा। फिर प्रत्येक के परिणाम को बताया गया है। और उन तथ्यों का वर्णन किया गया है जिन से प्रतिफल के प्रति विश्वास होता है।
- सूरह के अन्त में कुर्आन से विमुख होने पर झंझोंड़ा गया है कि कुर्आन जो प्रलय तथा प्रतिफल की बातें बता रहा है वह सर्वथा अल्लाह का संदेश है। उस में शैतान का कोई हस्तक्षेप नहीं है।
- अन्त में मौत के समय की विवशता का वर्णन करते हुये अन्तिम परिणाम से सावधान किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब होने वाली हो जायेगी।
2. उस का होना कोई झूठ नहीं है।
3. नीचा-ऊँचा करने^[1] वाली।
4. जब धरती तेज़ी से डोलने लगेगी।
5. और चूर-चूर कर दिये जायेंगे पर्वत।

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝
لَيْسَ لَوْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۝
خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۝
إِذَا رَجَّبتِ الْأَرْضُ رَجًّا ۝
وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۝

- 1 इस से अभिप्राय प्रलय है। जो सत्य के विरोधियों को नीचा कर के नरक तक पहुँचायेगी। तथा आज्ञाकारियों को स्वर्ग के ऊँचे स्थान तक पहुँचायेगी। आरंभिक आयतों में प्रलय के होने की चर्चा, फिर उस दिन लोगों के तीन भागों में विभाजित होने का वर्णन किया गया है।

6. फिर हो जायेंगे विखरी हुई धूला
7. तथा तुम हो जाओगे तीन समूह।
8. तो दायें वाले, तो क्या हैं दायें वाले!^[1]
9. और बायें वाले, तो क्या हैं बायें वाले!
10. और आग्रगामी तो आग्रगामी ही हैं।
11. वही समीप किये^[2] हुये हैं।
12. वह सुखों के स्वर्गों में होंगे।
13. बहुत से अगले लोगों में से।
14. तथा कुछ पिछले लोगों में से होंगे।
15. स्वर्ण से बुने हुये तख्तों पर।
16. तकिये लगाये उन पर एक- दूसरे के सम्मुख (आसीन) होंगे।
17. फिरते होंगे उन की सेवा के लिये बालक जो सदा (बालक) रहेंगे।
18. प्याले तथा सुराहियाँ लेकर तथा मदिरा के छलकते प्याले।
19. न तो सिर चकरायेगा उन से न वह निर्बाध होंगी।
20. तथा जो फल वह चाहेंगे।
21. तथा पक्षी का जो मांस वे चाहेंगे।
22. और गोरियाँ बड़े नैनों वाली।
23. छुपा कर रखी हुई मोतियों के समान।

فَكَانَتْ هَبَاءً مُنْبَثًا ۝
 وَتُنْتَهَمُ أَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ۝
 فَأَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا مِنْ أَصْحَابِ الْمَشْأَمَةِ ۝
 وَأَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا مِنْ أَصْحَابِ الْمَيْمَنَةِ ۝
 وَالسَّيِّقُونَ وَالسَّيْقُونُ ۝
 أُولَٰئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ۝
 فِي جَنَّاتٍ النَّعِيمِ ۝
 ثَلَاثَةٌ مِنَ الْأُولَىٰ ۝
 وَقَلِيلٌ مِنَ الْآخِرِينَ ۝
 عَلَىٰ سُرُورٍ مُّوَضَّوْنَ ۝
 مُتَّكِفِينَ عَلَيْهَا مُتَّقِيبِينَ ۝
 يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَدَّدُونَ ۝
 بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقٍ وَكَأْسٍ مِنْ مَّعِينٍ ۝
 لَا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُزْفُونَ ۝
 وَقَاهِهِمْ مِمَّا يَخْتَارُونَ ۝
 وَلَحْمِ طَيْرٍ مِمَّا يَشْتَهُونَ ۝
 وَحُورٍ عِينٍ ۝
 كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ۝

1 दायें वालों से अभिप्राय वह हैं जिन का कर्मपत्र दायें हाथ में दिया जायेगा। तथा बायें वाले वह दुराचारी होंगे जिन का कर्मपत्र बायें हाथ में दिया जायेगा।

2 अर्थात् अल्लाह के प्रियवर और उस के समीप होंगे।

24. उस के बदले जो वह (संसार में) करते रहे।
25. नहीं सुनैंगे उन में व्यर्थ बात और न पाप की बात।
26. केवल सलाम ही सलाम की ध्वनी होगी।
27. और दायें वाले, (क्या ही भाग्य शाली) हैं दायें वाले!
28. बिन काँटे की बैरी में होंगे।
29. तथा तह पर तह केलों में।
30. फैली हुई छाया^[1] में।
31. और प्रवाहित जल में।
32. तथा बहुत से फलों में।
33. जो न समाप्त होंगे, न रोके जायेंगे।
34. और ऊँचे बिस्तर पर।
35. हम ने बनाया है (उन की) पत्नियों को एक विशेष रूप से।
36. हम ने बनाया है उन्हें कुमारियाँ।
37. प्रेमिकायें समायु।
38. दाहिने वालों के लिये।
39. बहुत से अगलों में से होंगे।
40. तथा बहुत से पिछलों में से।

حِزَابًا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْتِيهَا ﴿٢٥﴾

إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ﴿٢٦﴾

وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ هُمْ أَصْحَابُ الْيَمِينِ ﴿٢٧﴾

فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ﴿٢٨﴾

وَطَلْحٍ مُنْقَرٍ ﴿٢٩﴾

وَطِيلٍ مَّهْدُودٍ ﴿٣٠﴾

وَأَمْوٍ مَّسْلُوبٍ ﴿٣١﴾

وَقَالِكِهَادٍ كَثِيرٍ ﴿٣٢﴾

لَا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ﴿٣٣﴾

وَفُؤُوشٍ مَّرْفُوعَةٍ ﴿٣٤﴾

إِنَّا أَنْشَأْنَاهُنَّ إِنشَاءً ﴿٣٥﴾

فَجَعَلْنَهُنَّ أَجْحَارًا ﴿٣٦﴾

عُرُبًا أَتْرَابًا ﴿٣٧﴾

لِأَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٣٨﴾

ثَلَاثَةٌ مِنَ الْأُولَىٰ ﴿٣٩﴾

وَسَلْةٌ مِنَ الْآخِرِينَ ﴿٤٠﴾

1 हदीस में है कि स्वर्ग में एक वृक्ष है जिस की छाया में सवार सौ वर्ष चलेगा फिर भी वह समाप्त नहीं होगी। (सहीह बुखारी: 4881)

41. और बायें वाले, क्या है बायें वाले!
42. वह गर्म वायु तथा खौलते जल में (होंगे)।
43. तथा काले धूवें की छाया में।
44. जो न शीतल होगा और न सुखदा।
45. वास्तव में वह इस से पहले (संसार में) सम्पन्न (सुखी) थे।
46. तथा दुराग्रह करते थे महा पापों पर।
47. तथा कहा करते थे कि क्या जब हम मर जायेंगे तथा हो जायेंगे धूल और अस्थियाँ तो क्या हम अवश्य पूनः जीवित होंगे?
48. और क्या हमारे पूर्वज (भी)?
49. आप कह दें कि निःसंदेह सब अगले तथा पिछले।
50. अवश्य एकत्रित किये जायेंगे एक निर्धारित दिन के समय।
51. फिर तुम, हे कुपथो! झुठलाने वालो!!
52. अवश्य खाने वाले हो जककूम (थोहड़) के वृक्ष से।^[1]
53. तथा भरने वाले हो उस से (अपने) उदर।
54. तथा पीने वाले हो उस पर से खौलता जल।

وَأَصْحَابُ الشَّمَالِ ۖ مَا أَصْحَابُ الشَّمَالِ ۖ

فِي سَمُومٍ وَحَمِيمٍ ۖ

ذَوَّلٍ مِّنْ يَّمِينٍ ۖ

لَّا بَارِدٌ وَلَا هَارٍ ۖ

إِنَّمَا كَانُوا تُقْبَلُ ذَلِكَ مُتْرَفِينَ ۖ

وَكَانُوا يُصْرُونَ عَلَى الْيَمِينِ الْعَظِيمِ ۖ

وَكَانُوا يَقُولُونَ ۖ إِنَّا كُنَّا رَبَّاءَ عَظَمًا
مَّا رَأَى الْمُبْعُوثُونَ ۖ

أَوَابَاءُنَا الْأُولُونَ ۖ

قُلْ إِنَّ الْأُولِينَ وَالْآخِرِينَ ۖ

لَمَجْمُوعُونَ ۖ إِلَىٰ مِيْقَاتٍ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۖ

ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيْهَا الضَّالُّونَ الْمَكِيدُونَ ۖ

لَأَكَلُونَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زُقُومٍ ۖ

فَمَا لُؤُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ۖ

فَشَرِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ ۖ

55. फिर पीने वाले हो प्यासे^[1] ऊँट के समान।

فَشَرِبُونَ شُرْبَ الْهَيْمِ ۝

56. यही उन का अतिथि-सत्कार है प्रतिकार (प्रलय) के दिन।

هَذَا نُزْلُهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ۝

57. हम ने ही उत्पन्न किया है तुम को फिर तुम विश्वास क्यों नहीं करते?

فَعَنْ خَلْقِكُمْ فَلَوْلَا تَصَدَّقُونَ ۝

58. क्या तुम ने यह विचार किया की जो वीर्य तुम (गर्भाशय में) गिराते हो।

أَفَرَأَيْتُمْ مَا تُمْنُونَ ۝

59. क्या तुम उसे शिशु बनाते हो या हम बनाने वाले हैं।

ءَأَنْتُمْ تَخْلُقُونَهُ أَمْ عَنِ الْخَلْقُونَ ۝

60. हम ने निर्धारित किया है तुम्हारे बीच मरण को तथा हम विवश होने वाले नहीं हैं।

عَنْ نَدْرًا يَأْتِيَنَّكُمُ الْمَوْتُ وَمَا عَنْ يَسْتَبْرَأِينَ ۝

61. कि बदल दें तुम्हारे रूप, और तुम्हें बना दें उस रूप में जिसे तुम नहीं जानते।

عَلَىٰ أَنْ يُبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَتُنشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

62. तथा तुम ने तो जान लिया है प्रथम उत्पत्ति को फिर तुम शिक्षा ग्रहण क्यों नहीं करते?

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَتَذَكَّرُونَ ۝

63. फिर क्या तुम ने विचार किया कि उस में जो तुम बोते हो?

أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَحْمِلُونَ ۝

64. क्या तुम उसे उगाते हो या हम उसे उगाने वाले हैं?

ءَأَنْتُمْ تَزْرَعُونَهُ أَمْ عَنِ الزَّرْعُونَ ۝

65. यदि हम चाहें तो उसे भुस बना दें फिर तुम बातें बनाते रह जाओ।

لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا فَظَلَمْتُمْ تَفَكَّهُونَ ۝

1 आयत में प्यासे ऊँटों के लिये ((हीम)) शब्द प्रयुक्त हुआ है। यह ऊँट में एक विशेष रोग होता है जिस से उस की प्यास नहीं जाती।

66. वस्तुतः हम दण्डित कर दिये गये।
67. बल्कि हम (जीविका से) वंचित कर दिये गये।
68. फिर तुम ने विचार किया उस पानी में जो तुम पीते हो।
69. क्या तुम ने उसे बरसाया है उसे बादल से अथवा हम उसे बरसाने वाले हैं।
70. यदि हम चाहें तो उसे खारी कर दें फिर तुम आभारी (कृतज्ञ) क्यों नहीं होते?
71. क्या तुम ने उस अग्नि को देखा जिसे तुम सुलगाते हो।
72. क्या तुम ने उत्पन्न किया है उस के वृक्ष को या हम उत्पन्न करने वाले हैं?
73. हम ने ही बनाया उस को शिक्षाप्रद तथा यात्रियों के लाभदायक।
74. अतः (हे नबी!) आप पवित्रता का वर्णन करें अपने महा पालनहार के नाम की।
75. मैं शपथ लेता हूँ सितारों के स्थानों की!
76. और यह निश्चय एक बड़ी शपथ है यदि तुम समझो।
77. वास्तव में यह आदरणीय^[1] कुर्आन है।
78. सुरक्षित^[2] पुस्तक में है।

إِنَّا الْمَعْرُومُونَ ﴿٦٦﴾

بَلْ سَخَّرْنَاكُمْ مَحْرُومُونَ ﴿٦٧﴾

أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ﴿٦٨﴾

ءَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ السَّمَاءِ أَمْ هُمْ أَنْزَلُوهُ ﴿٦٩﴾

لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أَجْحًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ﴿٧٠﴾

أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ﴿٧١﴾

ءَأَنْتُمْ أَنْشَأْتُمْ شَجَرَهَا أَمْ هُمْ أَنْشَأُوهُ ﴿٧٢﴾

عَنْ جَعَلْنَاهَا تَذَكُّرًا وَرَمَاقًا لِلْمَعْرُومِينَ ﴿٧٣﴾

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾

فَلَا أُقْسِمُ بِمَا يَقَمُّ السُّجُودُ ﴿٧٥﴾

وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لَوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ﴿٧٦﴾

إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ﴿٧٧﴾

فِي كِتَابٍ مُكْتُومٍ ﴿٧٨﴾

1 तारों की शपथ का अर्थ यह है कि जिस प्रकार आकाश के तारों की एक दृढ़ व्यवस्था है उसी प्रकार यह कुर्आन भी अति ऊँचा तथा सुदृढ़ है।

2 इस से अभिप्रायः ((लौहे महफूज़)) है।

79. इसे पवित्र लोग ही छूते हैं।^[1]
80. अवतरित किया गया है सर्वलोक के पालनहार की ओर से।
81. फिर क्या तुम इस वाणी (कुरआन) की अपेक्षा करते हो?
82. तथा बनाते हो अपना भाग कि इसे तुम झुठलाते हो?
83. फिर क्यों नहीं जब प्राण गले को पहुँचते हैं।
84. और तुम उस समय देखते रहते हो।
85. तथा हम अधिक समीप होते हैं उस के तुम से, परन्तु तुम नहीं देख सकते।
86. तो यदि तुम किसी के आधीन नहीं हो।
87. तो उस (प्राण) को फेर क्यों नहीं लाते, यदि तुम सच्चे हो?
88. फिर यदि वह (प्राणी) समीपवर्तियों में है।
89. तो उस के लिये सुख तथा उत्तम जीविका तथा सुख भरी स्वर्ग है।
90. और यदि वह दायें वालों में से है।
91. तो सलाम है तेरे लिये दायें वालों में होने के कारण।^[2]
92. और यदि वह है झुठलाने वाले कुपथों में से।

لَا يَسْتَفِيئُونَ إِلَّا الْأَمَّاطُونَ ﴿١﴾

تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٢﴾

أَفَمَهَذَا الْحَدِيثِ أَنْتُمْ مُدْهِنُونَ ﴿٣﴾

وَيَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنْتُمْ مُكذِّبُونَ ﴿٤﴾

فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلُقُومَ ﴿٥﴾

وَأَنْتُمْ حِينِيذٍ تَنْظُرُونَ ﴿٦﴾

وَعَنُّ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلَكِنْ لَا تُبْصِرُونَ ﴿٧﴾

فَلَوْلَا إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ﴿٨﴾

تَرْجِعُونَهَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٩﴾

فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿١٠﴾

فَسُرُورٌ وَرِيحَانٌ لَّهُ وَجَنَّتِ نَعِيمٌ ﴿١١﴾

وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْأَعْيَابِ الْمَيْمِينِ ﴿١٢﴾

فَسَلَامٌ لَّكَ مِنَ الْأَعْيَابِ الْمَيْمِينِ ﴿١٣﴾

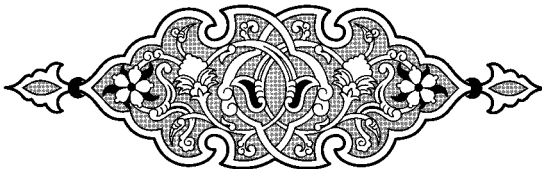
وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُتَكذِّبِينَ الضَّالِّينَ ﴿١٤﴾

1 पवित्र लोगों से अभिप्राय: फरिश्ते हैं। (देखिये: सूरह अबस, आयत: 15, 16)

2 अर्थात् उस का स्वागत सलाम से होगा।

93. तो अतिथि सत्कार है खौलते पानी से।
 94. तथा नरक में प्रवेश।
 95. वास्तव में यही निश्चय सत्य है।
 96. अतः (हे नबी!) आप पवित्रता का वर्णन करें अपने महा पालनहार के नाम की।

فَنُزِّلْ مِنْ حَيْثُومُ ﴿٥٦﴾
 وَتَصَلِّيَةً جَجِيمًا ﴿٥٧﴾
 إِنَّ هَذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ﴿٥٨﴾
 فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٥٩﴾



सूरह हदीद - 57



सूरह हदीद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 29 आयत हैं।

- इस सूरह की आयत 25 में हदीद शब्द आया है। जिस का अर्थ: ((लोहा)) है इस लिये इस का नाम सूरह हदीद पड़ा है।
- इस में अल्लाह की पवित्रता तथा उस के गुणों का वर्णन किया गया है। और शुद्ध मन से ईमान लाने तथा उस की माँगों को पूरा करने का निर्देश दिया गया है।
- इस में ईमान वालों को शुभसूचना दी गई है कि प्रलय के दिन के लिये ज्योति होगी। जिस से मुनाफ़िक वंचित रहेंगे और उन की यातना की दशा को दिखाया गया है।
- आयत 16 से 24 तक में बताया गया है कि ईमान क्या चाहता है? और संसार का अपेक्षा परलोक को लक्ष्य बनाने की प्रेरणा दी गई है।
- आयत 25 से 27 तक न्याय की स्थापना के लिये बल प्रयोग को आवश्यक करार देते हुये जिहाद की प्रेरणा दी गई है। और रुहबानिय्यत (सन्यास) का खण्डन किया गया है।
- अन्तिम आयतों में आज्ञाकारी ईमान वालों को प्रकाश तथा बड़ी दया प्रदान किये जाने की शुभ सूचना दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह की पवित्रता का गान करता है जो भी आकाशों तथा धरती में है और वह प्रबल गुणी है।

سُبْحَانَ اللَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

2. उसी का है आकाशों तथा धरती का राज्य। वह जीवन देता है तथा मारता है और वह जो चाहे कर सकता है।

لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ
وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

3. वही प्रथम तथा वही अन्तिम और प्रत्यक्ष तथा गुप्त है। और वह प्रत्येक वस्तु का जानने वाला है।
4. उसी ने उत्पन्न किया है आकाशों तथा धरती को छः दिनों में फिर स्थित हो गया अर्श (सिंहासन) पर। वह जानता है जो प्रवेश करता है धरती में तथा जो निकलता है उस से। और जो उतरता है आकाश से तथा चढ़ता है उस में। और वह तुम्हारे साथ^[1] है जहाँ भी तुम रहो, और अल्लाह जो कुछ तुम कर रहे हो उसे देख रहा है।
5. उसी का है आकाशों तथा धरती का राज्य और उसी की ओर फेरे जाते हैं सब मामले (निर्णय के लिये)।
6. वह प्रवेश करता है रात्रि को दिन में और प्रवेश करता है दिन को रात्रि में। तथा वह सीनों के भेदों से पूर्णतः अवगत है।
7. तुम सभी ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल पर। और व्यय करो उस में से जिस में उस ने अधिकार दिया है तुम को। तो जो लोग ईमान लायेंगे तुम में से तथा दान करेंगे तो उन्हीं के लिये बड़ा प्रतिफल है।
8. और तुम्हें क्या हो गया है कि ईमान

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ
وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٥٧﴾

هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يَعْلَمُ مَا يَكُونُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٥٨﴾

لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٥٩﴾

يُولِيهِ الْكَيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِيهِ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ
وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٦٠﴾

إِنَّمَا لِلَّهِ دَعْوَةُ السُّلُوكِ وَأَنْفَعُوا مِمَّا جَعَلَهُمْ
مُسْتَخْلِفِينَ فِيهِ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ
وَأَنْفَعُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٦١﴾

وَمَا لَكُمْ لَأَنْتُمْ مُنُونٌ بِاللَّهِ وَالرَّسُولِ يَدْعُونَ لِلتَّوْحِيدِ

- 1 अर्थात् अपने सामर्थ्य तथा ज्ञान द्वारा। आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह सदा से है। और सदा रहेगा। प्रत्येक चीज़ का अस्तित्व उस के अस्तित्व के पश्चात् है। वही नित्य है, विश्व की प्रत्येक वस्तु उस के होने को बता रही है फिर भी वह ऐसा गुप्त है कि दिखाई नहीं देता।

नहीं लाते अल्लाह पर जब कि रसूल^[1] तुम्हें पुकार रहा है ताकि तुम ईमान लाओ अपने पालनहार पर, जब कि अल्लाह ले चुका है तुम से वचन,^[2] यदि तुम ईमान वाले हो।

9. वही है जो उतार रहा है अपने भक्त पर खुली आयतें ताकि वह तुम्हें निकाले अंधेरों से प्रकाश की ओर। तथा वास्तव में अल्लाह तुम्हारे लिये अवश्य करुणामय दयावान् है।

10. और क्या कारण है कि तुम व्यय नहीं करते अल्लाह की राह में, जब अल्लाह ही के लिये है आकाशों तथा धरती का उत्तराधिकार। नहीं बराबर हो सकते तुम में से वे जिन्होंने दान किया (मक्का) की विजय से पहले तथा धर्मयुद्ध किया। वही लोग पद में अधिक ऊँचे हैं उन से जिन्होंने दान किया उस के पश्चात्^[3] तथा धर्मयुद्ध किया। तथा प्रत्येक को अल्लाह ने वचन दिया है भलाई का, तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उस से पूर्णतः सूचित है।

بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾

هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَى عَبْدِكَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَرَؤُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٥٨﴾

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ مِيرَاتُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ مَن أنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الفَتْحِ وَقَاتِلْ أُولَئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً مِنَ الَّذِينَ أنْفَقُوا مِنْ بَعْدِ وَقَاتِلُوا وَكَلَّا وَعَدَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٥٩﴾

1 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

2 (देखिये: सूरह आराफ़, आयत: 172)। इब्ने कसीर ने इस से अभिप्राय वह वचन लिया है जिस का वर्णन (सूरह माइदा, आयत: 7) में है। जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के द्वारा सहाबा से लिया गया कि वह आप की बातें सुनेंगे तथा सुख-दुःख में अनुपालन करेंगे। और प्रिय और अप्रिय में सच्च बोलेंगे। तथा किसी की निन्दा से नहीं डरेंगे। (बुख़ारी: 7199, मुस्लिम: 1709)

3 ऋण से अभिप्राय अल्लाह की राह में धन दान करना है।

11. कौन है जो ऋण^[1] दे अल्लाह को अच्छा ऋण? जिसे वह दुगुना कर दे उस के लिये और उसी के लिये अच्छा प्रतिदान है।
12. जिस दिन तुम देखोगे ईमान वालों तथा ईमान वालियों को, कि दौड़ रहा^[2] होगा उन का प्रकाश उन के आगे तथा उन के दायें। तुम्हें शुभसूचना है ऐसे स्वर्गों की बहती है जिन में नहरें, जिन में तुम सदावासी होगे, वही बड़ी सफलता है।
13. जिस दिन कहेंगे मुनाफ़िक़ पुरुष तथा मुनाफ़िक़ स्त्रियाँ उन से जो ईमान लाये कि हमारी प्रतीक्षा करो हम प्राप्त कर लें तुम्हारे प्रकाश में से कुछ। उन से कहा जायेगा: तुम अपने पीछे वापिस जाओ, और प्रकाश की खोज करो।^[3] फिर बना दी जायेगी उन के बीच एक दीवार जिस में एक द्वार होगा। उस के भीतर दया होगी तथा उस के बाहर यातना होगी।
14. वह उन को पुकारेंगे: क्या हम (संसार में) तुम्हारे साथ नहीं थे? (वह कहेंगे): परन्तु तुम ने उपद्रव में डाल लिया अपने आप को, और

مَنْ ذَا الَّذِي يُقرضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضْعِفُهُ لَهُ وَهٗ أَجْرُ كَرِيمٍ ۝

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَى نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ بِنُورِهِمْ أَلَمْ جَعَلْنَا نَجْوَى مِنَ تَحْتِهَا الْأَنْهَارَ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا انظُرُوا نَارَ النَّبْتِيسِ مِنْ تَحْتِ كَعْبِ الْأُجْعَادِ إِنَّكُمْ فَا تَسُوا نُورًا فَضْرَبَ بَيْنَهُمْ بِسُورَةٍ بِأَبْ بَاطِنَةٍ فِيهِ الرِّحْمَةُ وَظَاهِرٌ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۝

يُنَادُوا لَهُمْ أَلَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ قَالُوا بَلَىٰ وَلَكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ أَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّبْتُمْ الْأَمَانِ حَتَّىٰ جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ وَعَزَلْتُمْ بِاللَّهِ الْعُرُودُ ۝

- 1 हदीस में है कि कोई उहद (पर्वत) बराबर भी सोना दान करे तो मेरे सहाबा के चौथाई अथवा आधा किलो के बराबर भी नहीं होगा। (सहीह बुखारी: 3673, सहीह मुस्लिम: 2541)
- 2 यह प्रलय के दिन होगा जब वह अपने ईमान के प्रकाश में स्वर्ग तक पहुँचेंगे।
- 3 अर्थात् संसार में जा कर ईमान तथा सदाचार के प्रकाश की खोज करो किन्तु यह असंभव होगा।

प्रतीक्षा में^[1] रहे तथा संदेह किया और धोखे में रखा तुम्हें तुम्हारी मिथ्या कामनाओं ने। यहाँ तक की आ पहुँचा अल्लाह का आदेश। और धोखे ही में रखा तुम्हें बड़े वंचक (शैतान) ने।

15. तो आज तुम से कोई अर्थ-दण्ड नहीं लिया जायेगा और न काफ़िरों से। तुम्हारा आवास नरक है, वही तुम्हारे योग्य है, और वह बुरा निवास है।
16. क्या समय नहीं आया ईमान वालों के लिये कि झुक जायें उन के दिल अल्लाह के स्मरण (याद) के लिये, तथा जो उतरा है सत्य, और न हो जायें उन के समान जिन को प्रदान की गई पुस्तकें इस से पूर्व, फिर लम्बी अवधि व्यतीत हो गई उन पर, तो कठोर हो गये उन के दिल।^[2] तथा उन में अधिकतर अवैज्ञाकारी हैं।
17. जान लो कि अल्लाह ही जीवित करता है धरती को उस के मरण के पश्चात, हम ने उजागर कर दी है तुम्हारे लिये निशानियाँ ताकि तुम समझो।
18. वस्तुतः दान करने वाले पुरुष तथा दान करने वाली स्त्रियाँ तथा जिन्होंने ऋण दिया है अल्लाह को अच्छा ऋण,^[3] उसे बढ़ाया जायेगा उन

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ وِدْيَةٌ وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا
مَا لَكُمْ التَّارُ هِيَ مَوْلَاكُمْ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ①

أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ
اللَّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتَابَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ
قُلُوبُهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ②

اعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا قَدْ بَيَّنَّا
لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ③

إِنَّ الْمُصَدِّقِينَ وَالْمُصَدِّقَاتِ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا
حَسَنًا يُضَاعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ ④

1 कि मुसलमानों पर कोई आपदा आयो।

2 (देखिये: सूरह माइदा, आयत: 13)

3 हदीस में है कि जो पवित्र कमाई से एक खजूर के बराबर भी दान करता है

के लिये, और उन्हीं के लिये अच्छा प्रतिदान है।

19. तथा जो ईमान लाये अल्लाह और उस के रसूलों^[1] पर वही सिद्दीक तथा शहीद^[2] हैं अपने पालनहार के समीप। उन्हीं के लिये उन का प्रतिफल तथा उन की दिव्य ज्योति है। और जो काफिर हो गये और झुठलाया हमारी आयतों को तो वही नारकीय हैं।

20. जान लो कि संसारिक जीवन एक खेल तथा मनोरंजन और शोभा^[3] एवं आपस में गर्व तथा एक-दूसरे से बढ़ जाने का प्रयास है धनों तथा संतान में। उस वर्षा के समान भा गई किसानों को जिस की उपज, फिर वह पक गई तो तुम उसे देखने लगे पीली, फिर वह हो जाती है चूर-चूर। और परलोक में कड़ी यातना है, तथा अल्लाह की क्षमा और प्रसन्नता है। और संसारिक जीवन तो बस धोखे का संसाधन है।

21. एक-दूसरे से आगे बढ़ो अपने

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ أُولَئِكَ هُمُ
الصَّادِقُونَ وَالَّذِينَ كَفَرُوا عِنْدَ رَبِّهِمْ لَهُمْ أَجْرُهُمْ
وَنُورُهُمْ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَئِكَ
أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿٥٧﴾

اعْلَمُوا أَنَّهَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا الْعَيْبُ وَالْهُوْ وَزِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ
بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ كَمَثَلِ غَيْثٍ
أَخْبَبَ الْكُفَّارَ رَبَاتَهُ ثُمَّ يَهْبِجُ فَتَرَاهُ مُمْصِرًا ثُمَّ
يَكُونُ حُطًا وَآوِي الْأَرْضِ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَمَغْفِرَةٌ مِنَ
اللَّهِ وَرِضْوَانٌ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَمَتَاعٌ
الْعُرُورُ ﴿٥٧﴾

سَابِقُوا إِلَى مَغْفِرَةٍ وَمِنْ رَبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ

तो अल्लाह उसे पोसता है जैसे कोई घोड़ा के बच्चे को पोसता है यहाँ तक कि पर्वत के समान हो जाता है। (सहीह बुखारी: 1014)

- 1 अर्थात् बिना अन्तर और भेद-भाव किये सभी रसूलों पर ईमान लाये।
- 2 सिद्दीक का अर्थ है: बड़ा सच्चा। और शहीद का अर्थ गवाह है। (देखिये: सूरह बकरा, आयत: 143, और सूरह हज्ज, आयत: 78)। शहीद का अर्थ अल्लाह की राह में मारा गया व्यक्ति भी है।
- 3 इस में संसारिक जीवन की शोभा की उपमा वर्षा की उपज की शोभा से दी गई है। जो कुछ ही दिन रहती है फिर चूर-चूर हो जाती है।

पालनहार की क्षमा तथा उस स्वर्ग की ओर जिस का विस्तार आकाश तथा धरती के विस्तार के^[1] समान है। जो तैयार की गई है उन के लिये जो ईमान लायें अल्लाह और उस के रसूलों पर। यह अल्लाह का अनुग्रह है वह प्रदान करता है उसे जिस को चाहता है और अल्लाह बड़ा उदार (दयाशील) है।

السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَعَدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ
وَرَسُولِهِ ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ①

22. नहीं पहुँचती कोई आपदा धरती में और न तुम्हारे प्राणों में परन्तु वह एक पुस्तक में लिखी है इस से पूर्व कि हम उसे उत्पन्न करें^[2], और यह अल्लाह के लिये अति सरल है।

مَا صَابِعِينَ مُصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا
فِي كِتَابٍ مِنْ قَبْلِ أَنْ نَبْرَأَهَا إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ②

23. ताकि तुम शोक न करो उस पर जो तुम से खो जाये। और न इतराओ उस पर जो तुम्हें प्रदान किया है। और अल्लाह प्रेम नहीं करता किसी इतराने गर्व करने वाले से।

لِكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ وَاللَّهُ
لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ③

24. जो कंजूसी करते हैं और आदेश देते हैं लोगों को कंजूसी करने का। तथा जो विमुख होगा तो निश्चय अल्लाह निस्पृह सराहनीय है।

لِلَّذِينَ يَحْمِلُونَ وِيَأْتُونَ النَّاسَ بِالْحُلِّ
وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَمِيدُ ④

25. निःसंदेह हम ने भेजा है अपने रसूलों को खुले प्रमाणों के साथ, तथा उतारी है उन के साथ पुस्तक, तथा तुला

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنْزَلْنَا مَعَهُمُ
الْكِتَابَ وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ⑤

1 (देखिये: सूरह आले इमरान, आयत: 133)

2 अर्थात् इस विश्व और मनुष्य के अस्तित्व से पूर्व ही अल्लाह ने अपने ज्ञान अनुसार ((लौहे महफूज)) (सुरक्षित पुस्तक) में लिख रखा है। हदीस में है कि अल्लाह ने पूरी उत्पत्ति का भाग्य आकाशों तथा धरती की रचना से पचास हजार वर्ष पहले लिख दिया। जब कि उस का अर्श पानी पर था। (सहीह मुस्लिम: 2653)

(न्याय का नियम), ताकि लोग स्थित रहें न्याय पर। तथा हम ने उतारा लोहा जिस में बड़ा बल^[1] है तथा लोगों के लिये बहुत से लाभ और ताकि अल्लाह जान ले कि कौन उस की सहायता करता है तथा उस के रसूलों की बिना देखे। वस्तुतः अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभावशाली है।

26. हम ने (रसूल बना कर) भेजा नूह को तथा इबराहीम को और रख दी उन की संतति में नबूवत (दुतत्व) तथा पुस्तक। तो उन में से कुछ ने मार्गदर्शन अपनाया और उन में से बहुत से अवैज्ञाकारी हैं।

27. फिर हम ने निरन्तर उन के पश्चात् अपने रसूल भेजे और उन के पश्चात् भेजा मरयम के पुत्र ईसा को तथा प्रदान की उसे इंजील, और कर दिया उस का अनुसरण करने वालों के दिलों में करुणा तथा दया, और संसार^[2] त्याग को उन्होंने स्वयं बना लिया, हम ने नहीं अनिवार्य किया उसे उन के ऊपर। परन्तु अल्लाह की प्रसन्नता के लिये (उन्होंने

وَأَنْزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَمَنْفَعَةٌ
لِّلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَنْصُرُهُ وَرَسُولَهُ
بِالْغَيْبِ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢٦﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي قُرْبَانِهِمَا
الْبَيْتَةَ وَالْكَتَابَ مِنْهُمْ مُّهِمًّا وَكَيَّرْتُمُوهُمْ
فَسَقُونَ ﴿٢٧﴾

فَرَقَعْنَا آخَى الثَّوَارِهِمْ بُرْسُلَنَا وَقَفَيْنَا يَمِينَى ابْنِ
مَرْيَمَ وَالتَّيْنَةَ الْإِسْمِيلَ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ
اتَّبَعُوا رَأْفَةً وَرَحْمَةً وَرَهْمَانِيَّةً لِابْتَدَعُوا
مَا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ إِلَّا اتِّبَاعَ رِضْوَانِ اللَّهِ فَمَا
رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا فَآتَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ
أَجْرَهُمْ وَكَيَّرْتُمُوهُمْ فَسَقُونَ ﴿٢٧﴾

1 उस से अस्त्र-शस्त्र बनाये जाते हैं।

2 संसार त्याग अर्थात् सन्यास के विषय में यह बताया गया है कि अल्लाह ने उन्हें इस का आदेश नहीं दिया। उन्होंने अल्लाह की प्रसन्नता के लिये स्वयं इसे अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया। फिर भी इसे निभा नहीं सके। इस में यह संकेत है कि योग तथा सन्यास का धर्म में कभी कोई आदेश नहीं दिया गया है। इस्लाम में भी शरीअत के स्थान पर तरीकत बना कर नई बातें बनाई गईं और सत्धर्म का रूप बदल दिया गया। हदीस में है कि कोई हमारे धर्म में नई बात निकाले जो उस में नहीं है तो वह मान्य नहीं। (सहीह बुखारी: 2697, सहीह मुस्लिम: 1718)

ऐसा किया) तो उन्होंने नहीं किया उस का पूर्ण पालना फिर (भी) हम ने प्रदान किया उन को जो ईमान लाये उन में से उन का बदला और उन में से अधिकतर अवैज्ञाकारी हैं।

28. हे लोगों जो ईमान लाये हो! अल्लाह से डरो और ईमान लाओ उस के रसूल पर वह तुम्हें प्रदान करेगा दोहरा^[1] प्रतिफल अपनी दया से, तथा प्रदान करेगा तुम्हें ऐसा प्रकाश जिस के साथ तुम चलोगे, तथा क्षमा कर देगा तुम्हें, और अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

29. ताकि ज्ञान हो जाये (इन बातों से) अहले^[2] किताब को कि वह कुछ शक्ति नहीं रखते अल्लाह के अनुग्रह पर। और यह कि अनुग्रह अल्लाह ही के हाथ में है। वह प्रदान करता है जिसे चाहे, और अल्लाह बड़े अनुग्रह वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَالْمُؤْمِنِينَ
يُؤْتِكُمْ كَفْلًا مِّن رَّحْمَتِهِ وَيَعْمَل لَّكُمْ نُورًا
تَسْلُونَ بِهِ وَيَغْفِر لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

لِيَلْعَلَّكُمْ أَهْلُ الْكِتَابِ الْآيِقِدُونَ عَلَى شَيْءٍ
مِّن فَضْلِ اللَّهِ وَأَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن
يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

1 हदीस में है कि तीन व्यक्ति ऐसे हैं जिन को दोहरा प्रतिफल मिलेगा। इन में एक, अहले किताब में से वह व्यक्ति है जो अपने नबी पर ईमान लाया था फिर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर भी ईमान लाया। (सहीह बुखारी: 97, 2544, सहीह मुस्लिम: 154)

2 अहले किताब से अभिप्राय: यहूदी तथा ईसाई हैं।

सूरह मुजादला - 58



सूरह मुजादला के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 22 आयतें हैं।

- मुजादला का अर्थ है: झगड़ा और तकरार। इस के आरंभ में एक नारी की तकरार का वर्णन है। इसलिये इस का नाम सूरह मुजादला है।
- इस में ज़िहार के विषय में धार्मिक नियमों को बताया गया है। साथ ही इन नियमों का इन्कार करने पर कड़े दण्ड की चेतावनी दी गई है।
- आयत 7 से 11 तक मुनाफ़िकों के षडयंत्र और उपद्रव की चर्चा करते हुये ईमान वालों के सामाजिक नियमों के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 12 और 13 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ काना फूसी के सम्बंध में एक विशेष आदेश दिया गया है।
- अन्त में द्विधावादियों (मुनाफ़िकों) की पकड़ करते हुये सच्चे ईमान वालों के लक्षण बताये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) अल्लाह ने सुन ली है उस स्त्री की बात जो आप से झगड़ रही थी अपने पति के विषय में तथा गुहार रही थी अल्लाह को। और अल्लाह सुन रहा था तुम दोनों की वार्तालाप, वास्तव में वह सब कुछ सुनने-देखने वाला है।

قَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَادِلُكَ فِي زَوْجِهَا وَتَشْتَكِي إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ يَسْمَعُ مَا نُكْرِمُ
إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ

2. जो ज़िहार^[1] करते हैं तुम में से

الَّذِينَ يَظَاهِرُونَ مِنكُم مِّن سَائِرِم مَّا هُنَّ أَهْلُهُمْ

- 1 ज़िहार का अर्थ है: पति का अपनी पत्नी से यह कहना कि तू मुझ पर मेरी माँ की पीठ के समान है। इस्लाम से पूर्व अरब समाज में यह कुरीति थी कि पति अपनी पत्नी से यह कह देता तो पत्नी को तलाक़ हो जाती थी। और सदा के लिये पति से बिलग हो जाती थी। और इस का नाम ((ज़िहार)) था। इस्लाम में

अपनी पत्नियों से तो वे उन की माँ नहीं हैं। उन की माँ तो वे हैं जिन्होंने उन को जन्म दिया है। और वह बोलते हैं अप्रिय तथा झूठी बात। और वास्तव में अल्लाह माफ़ करने वाला क्षमाशील है।

3. और जो ज़िहार कर लेते हैं अपनी पत्नियों से, फिर वापिस लेना चाहते हों अपनी बात तो (उस का दण्ड) एक दास मुक्त करना है, इस से पूर्व कि एक-दूसरे को हाथ लगायें।^[1] इसी की तुम्हें शिक्षा दी जा रही है। और अल्लाह उस से जो तुम करते हो भली-भाँति सूचित है।

4. फिर जो (दास) न पाये तो दो महीने निरन्तर रोज़ा (ब्रत) रखना है इस से पूर्व कि एक-दूसरे को हाथ लगाये। फिर जो सकत न रखे तो साठ निर्धनों को भोजन कराना है। यह आदेश इस लिये है ताकि तुम ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल पर। और यह अल्लाह की सीमायें हैं। तथा काफ़िरों के लिये दुःखदायी यातना है।

5. वास्तव में जो विरोध करते हैं अल्लाह

إِنَّ اللَّهَ لَهُمْ إِلَّا إِلَىٰ وَوَالِدَهُمْ وَإِنَّهُمْ لَيَقُولُونَ مُنْكَرًا
مِّنَ الْقَوْلِ وَزُورًا وَإِنَّ اللَّهَ لَعَفُوفٌ غَفُورٌ ﴿٥٨﴾

وَالَّذِينَ يَبْظُرُونَ مِن نِّسَائِهِمْ ثُمَّ يَعُودُونَ
لِئْسَاءِ الْوَأَقْتَحِرُوا رِقَابَهُمْ مِن قَبْلِ أَنْ يَبَيِّنَ لَنَا ذَلِكُمْ
ثُمَّ يَعْطُونَ بِهِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٥٩﴾

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِن قَبْلِ
أَنْ يَبَيِّنَ لَنَا فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاطْعَامُ سِتِّينَ مِسْكِينًا
ذَلِكَ لِيُذَكِّرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۗ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ
وَاللَّهُ يَزِيدُ الْعَذَابَ الَّذِينَ

إِنَّ الَّذِينَ يُجَادُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لِكَيْتُمُوا مَا كُتِبَ

एक स्त्री जिस का नाम ((ख़ौला)) (रज़ियल्लाहु अन्हा) है उस से उस के पति: औस पुत्र सामित (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने ज़िहार कर लिया। ख़ौला (रज़ियल्लाहु अन्हा) नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आई। और आप से इस विषय में झगड़ने लगी। उस पर यह आयतें उतरीं। (सहीह अबुदाऊद- 2214)। आईशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा: मैं उस की बात नहीं सुन सकी। और अल्लाह ने सुन ली। (इब्ने माजा: 156, यह हदीस सहीह है।)

1 हाथ लगाने का अर्थ संभोग करना है। अर्थात् संभोग से पहले प्रायश्चित्त चुका दे।

तथा उस के रसूल का, वे अपमानित कर दिये जायेंगे जैसे अपमानित कर दिये गये जो इन से पूर्व हुये और हम ने उतार दी है खुली आयतें और काफ़िरों के लिये अपमान कारी यातना है।

6. जिस दिन जीवित करेगा उन सब को अल्लाह तो उन्हें सूचित कर देगा उन के कर्मों से। गिन रखा है उसे अल्लाह ने और वह भूल गये है उसे। और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर गवाह है।
7. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो (भी) आकाशों तथा धरती में है? नहीं होती किसी तीन की काना फूसी परन्तु वह उन का चौथा होता है। और न पाँच की परन्तु वह उन का छठा होता है। और न इस से कम की और न इस से अधिक की परन्तु वह उन के साथ होता^[1] है, वे जहाँ भी हों। फिर वह उन्हें सूचित कर देगा उन के कर्मों से प्रलय के दिन। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु से भली-भाँति अवगत है।
8. क्या आप ने नहीं देखा उन्हें जो रोके गये हैं काना फूसी^[2] से? फिर (भी) वही करते हैं जिस से रोके गये हैं। तथा काना फूसी करते हैं पाप और अत्याचार, तथा रसूल की अवैज्ञा

الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتِنَا
وَاللَّكْفِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ

يَوْمَ يَجْعَلُ اللَّهُ جَمِيعًا فِتْنَةً لِمَنْ يَمَّا عَمِلُوا
أَحْصَاهُ اللَّهُ وَسُؤَالَ اللَّهِ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
مَا يَكُونُ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا هُوَ آخِزٌ بِهِ إِنَّ اللَّهَ لَظَاهِرٌ
لِلْأَهْوَاءِ سَادِسٌ وَمَا أَذَى مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْزَرَ الْأَهْوَاءِ
مَعَهُمْ إِنَّ اللَّهَ مَا كَانُوا يَتَّبِعُونَ يَمَّا عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ
إِنَّ اللَّهَ لَجَلِيٌّ عَلَيْهِمْ

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نُهُوا عَنِ الْجُبْحِيِّ ثُمَّ يُعْودُونَ لِمَا
نُهُوا عَنْهُ وَيَتَنَجَّوْنَ بِالْأَلْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ
الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحْيِكَ بِهِ اللَّهُ
وَيَقُولُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ

1 अर्थात जानता और सुनता है।

2 इन से अभिप्राय मुनाफ़िक़ हैं। क्योंकि उन की काना फूसी बुराई के लिये होती थी। (देखिये: सूरह निसा, आयत: 114)

की। और जब वे आप के पास आते हैं तो आप को ऐसे (शब्द से) सलाम करते हैं जिस से आप पर सलाम नहीं भेजा अल्लाह ने। तथा कहते हैं अपने मनों में: क्यों अल्लाह हमें यातना नहीं देता उस पर जो हम कहते^[1] हैं? पर्याप्त है उन को नरक जिस में वह प्रवेश करेंगे, तो बुरा है उन का ठिकाना।

حَسِبُوهُمْ جَهَنَّمَ يَصُولُونَهَا فَيَسُ الْمَصِيرُ ۝

9. हे लोगो जो ईमान लाये हो! जब तुम काना फूसी करो तो काना फूसी न करो पाप तथा अत्याचार एवं रसूल की अवैज्ञा की। और काना फूसी करो पुण्य तथा सदाचार की। और डरते रहो अल्लाह से जिस की ओर ही तुम एकत्र किये जाओगे।
10. वास्तव में काना फूसी शैतानी काम है ताकि वह उदासीन हों^[2] जो ईमान लाये। जब कि नहीं है वह हानिकर उन को कुछ, परन्तु अल्लाह की अनुमति से। और अल्लाह ही पर

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَنَاجُوا بِالْأَلْسِنَةِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ وَتَنَاجُوا بِالْيَدِ وَالسَّمْوِيِّ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝

إِنَّمَا السَّمْوِيُّ مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزَنَ الَّذِينَ آمَنُوا
وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

- 1 मुनाफिक और यहूदी जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सेवा में आते तो (अस्सलामु अलैकुम) (अनुवाद: आप पर सलाम और शान्ति हो।) की जगह (अस्सामु अलैकुम) (अनुवाद: आप पर मौत आये।) कहते थे। और अपने मन में यह सोचते थे कि यदि आप अल्लाह के सत्य रसूल होते तो हमारे इस दुराचार के कारण हम पर यातना आ जाती। और जब कोई यातना नहीं आई तो आप अल्लाह के रसूल नहीं हो सकते। हदीस में है कि यहूदी तुम को सलाम करें तो वह ((अस्सामु अलैका)) कहते हैं, तो तुम ((व अलैका)) कहो। अर्थात: और तुम पर भी। (सहीह बुखारी: 6257, सहीह मुस्लिम: 2164)
- 2 हदीस में है कि जब तुम तीन एक साथ रहो तो दो आपस में काना फूसी न करें। क्योंकि इस से तीसरे को दुख होता है। (सहीह बुखारी: 6290, सहीह मुस्लिम: 2184)

चाहिये कि भरोसा करें ईमान वाले।

11. हे ईमान वालो! जब तुम से कहा जाये कि विस्तार कर दो अपनी सभावों में तो विस्तार^[1] कर दो, विस्तार कर देगा अल्लाह तुम्हारे लिये। तथा जब कहा जाये कि सुकड़ जाओ तो सुकड़ जाओ। ऊँचा^[2] कर देगा अल्लाह उन को जो ईमान लाये हैं तुम में से तथा जिन को ज्ञान प्रदान किया गया है कई श्रेणियाँ। तथा अल्लाह उस से जो तुम करते हो भली-भाँति अवगत है।

12. हे ईमान वालो! जब तुम अकेले बात करो रसूल से तो बात करने से पहले कुछ दान करो।^[3] यह तुम्हारे लिये उत्तम तथा अधिक पवित्र है। फिर यदि तुम (दान के लिये कुछ) न पाओ तो अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

13. क्या तुम (इस आदेश से) डर गये कि एकान्त में बात करने से पहले कुछ दान कर दो? फिर जब तुम ने ऐसा नहीं किया तो स्थापना करो नमाज़ की तथा ज़कात दो और आज्ञा पालन करो अल्लाह तथा उस के रसूल की। और अल्लाह सूचित है उस से जो कुछ तुम कर रहे हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ فَتَسْتَحْوَفِ
الْبَطِينِ فَافْسَحُوا يَفْسَحَ اللَّهُ لَكُمْ وَإِذَا قِيلَ
انْشُرُوا فَاَنْشُرُوا وَرَفَعَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا
مِنْكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَادَاكُمُ الرَّسُولُ فَجَبِّدُوا
بَيْنَ يَدَيْ جُنُودِكُمْ صَدَقَةٌ ذَلِكَ خَيْرٌ لَكُمْ وَأَطْرُقُ
فَإِنْ لَمْ تُجِدُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

ءَأَسَفَقْتُمْ إِنْ تَعَدَّ مُؤَابَاةَ يَدَيْ نَجْوَاكُمْ
صَدَقَةٌ فَإِذَا لَمْ تَفْعَلُوا وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقْبِمُوا
الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ
وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

- 1 भावार्थ यह है कि कोई आये तो उसे भी खिसक कर और आपस में सुकड़ कर जगह दो।
- 2 हदीस में है कि जो अल्लाह के लिये झुकता और अच्छा व्यवहार चयन करता है तो अल्लाह उसे ऊँचा कर देता है। (सहीह मुस्लिम: 2588)
- 3 प्रत्येक मुसलमान नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से एकान्त में बात करना चाहता था। जिस से आप को परेशानी होती थी। इसलिये यह आदेश दिया गया।

14. क्या आप ने उन्हें देखा^[1] जिन्होंने मित्र बना लिया उस समुदाय को जिस पर क्रोधित हो गया अल्लाह? न वह तुम्हारे हैं और न उन को और वह शपथ लेते हैं झूठी बात पर जान बूझ कर।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا مَا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مَتَّامٌ
مِّنْكُمْ وَلَا مِنْكُمْ وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكُذِّبِ وَهُمْ
يَعْلَمُونَ ﴿١٤﴾

15. तय्यार की है अल्लाह ने उन के लिये कड़ी यातना, वास्तव में वह बुरा है जो वे कर रहे हैं।

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا إِذْ كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾

16. उन्होंने बना लिया अपनी शपथों को एक ढाल। फिर रोक दिया (लोगों को) अल्लाह की राह से, तो उन्हीं के लिये अपमान कारी यातना है।

إِنَّمَا وَآيَاتِهِمْ جُنَّةٌ قَصَدُوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿١٦﴾

17. कदापि नहीं काम आयेंगे उन के धन और न उन की संतान अल्लाह के समक्ष कुछ। वही नारकी है, वह उस में सदावासी होंगे।

لَنْ نُّعْطِيَهُمْ أَموَالَهُمْ وَلَا أَوْلَادَهُمْ مِنَ اللَّهِ
شَيْئًا أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٧﴾

18. जिस दिन खड़ा करेगा उन को अल्लाह तो वह शपथ लेंगे अल्लाह के समक्ष जैसे वह शपथ ले रहे हैं तुम्हारे समक्ष। और वह समझ रहे हैं कि वह कुछ (तर्क)^[2] पर हैं। सुन लो! वास्तव में वही झूठे हैं।

يَوْمَ يَبْعَهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا
يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ
أَلَّا أَنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٨﴾

19. छा^[3] गया है उन पर शैतान और भुला दी है उन को अल्लाह की याद। यही शैतान की सेना हैं। सुन लो! शैतान की सेना ही क्षतिग्रस्त होने वाली है।

اسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنسَاهُمْ ذِكْرَ اللَّهِ
أُولَئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ
هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿١٩﴾

- 1 इस से संकेत मुनाफ़ि़कों की ओर है जिन्होंने यहूदियों को अपना मित्र बना रखा था।
- 2 अर्थात उन्हें अपनी शपथ का कुछ लाभ मिल जायेगा जैसे संसार में मिलता रहा।
- 3 अर्थात उन को अपने नियंत्रण में ले रखा है।

20. वास्तव में जो विरोध करते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल का, वही अपमानितों में से हैं।
21. लिख रखा है अल्लाह ने कि अवश्य मैं प्रभावशाली (विजयी) रहूँगा^[1] तथा मेरे रसूल। वास्तव में अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभावशाली है।
22. आप नहीं पायेंगे उन को जो ईमान रखते हों अल्लाह तथा अन्त- दिवस (प्रलय) पर कि वह मैत्री करते हों उन से जिन्होंने विरोध किया अल्लाह और उस के रसूल का, चाहे वह उन के पिता हों अथवा उन के पुत्र अथवा उन के भाई अथवा उन के परिजन^[2] हों। वही है लिख दिया है (अल्लाह ने) जिन के दिलों में ईमान और समर्थन दिया है जिन को अपनी ओर से रूह (आत्मा) द्वारा तथा प्रवेश देगा उन को ऐसे स्वर्गों में बहती हैं जिन में नहरें, वह सदावासी होंगे जिन में प्रसन्न हो गया अल्लाह उन से तथा वह प्रसन्न हो गये उस से। वह अल्लाह का समूह है। सुन लो अल्लाह का समूह ही सफल होने वाला है।

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادِّثُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ ۝

كَتَبَ اللَّهُ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَرَسُولِهِ أَنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝

لَا تُحِدُّ قَوْمًا يَتُومِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ
مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ
أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُولَئِكَ كَتَبَ فِي
قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحِهِمْ وَمَنْ يَدْخُلْهُمْ جُزْءٌ
مِّنْهَا مِنْ غَيْرِهَا أُولَئِكَ هُمْ خٰلِدِينَ فِيهَا رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ أُولَئِكَ حِزْبُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ
حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُغْلِبُونَ ۝

1 (देखिये: सूरह मुमिन, आयत: 51- 52)

2 इस आयत में इस बात का वर्णन किया गया है कि ईमान, और काफिर जो इस्लाम और मुसलमानों के जानी दुश्मन हों उन से सच्ची मैत्री करना एकत्र नहीं हो सकते। अतः जो इस्लाम और इस्लाम के विरोधियों से एक साथ सच्चे सम्बंध रखते हों तो उन का ईमान सत्य नहीं है।

सूरह हश्र - 59



सूरह हश्र के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मदनी है, इस में 24 आयतें हैं।

- इस सूरह की दूसरी आयत में हश्र का शब्द आया है। जिस का अर्थ: एकत्र होना है। और इसी से यह नाम लिया गया है।
- इस में अल्लाह और उस के रसूल के विरोधियों को मदीना के यहूदी कबीले के अपमानकारी परिणाम से चेतावनी दी गयी है।
- आरंभ में बताया गया है कि आकाशों तथा धरती की प्रत्येक चीज़ अल्लाह की पवित्रता का गान करती है। फिर यहूदी कबीले बनी नज़ीर के, अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करने का परिणाम बताया गया है। और ईमान वालों को कुछ निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 11 से 17 तक में उन मुनाफ़िकों की पकड़ की गई है जो यहूदियों से मिल कर इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे थे।
- अन्त में प्रभावी शिक्षा तथा अल्लाह से डरने की बातों का वर्णन किया गया है। तथा आज्ञा पालन और अवैज्ञा का अन्तर बताया गया है।
- इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने कहा: कि यह सूरह बनी नज़ीर के बारे में उतरी। इसे सूरह बनी नज़ीर कहो। (सहीह बुख़ारी: 4883)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह की पवित्रता का गान किया है उस ने जो भी आकाशों तथा धरती में है। और वह प्रभुत्वशाली गुणी है।
2. वही है जिस ने अहले किताब में से काफ़िरों को उन के घरों से पहले ही आक्रमण में निकाल दिया। तुम ने नहीं समझा था कि वे निकल जायेंगे, और

سَيَعْبُدُهُمْ فِي الْآرْضِ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ
دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ يَخْرُجُوا وَظَنُّوا
أَنْهُمْ تَالِعَةُهُمْ حُصُونُهُمْ مِنَ اللَّهِ فَأَتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ

उन्होंने समझा था कि रक्षक होंगे उन के दुर्गा^[1] अल्लाह से। तो आ गया उन के पास अल्लाह (का निर्णय)। ऐसा उन्होंने सोचा भी न था। तथा डाल दिया उन के दिलों में भय। वह उजाड़ रहे थे अपने घरों को अपने हाथों से तथा ईमान वालों के हाथों^[2] से। तो शिक्षा लो, हे आँख वालो!

3. और यदि अल्लाह ने न लिख दिया होता उन (के भाग्य में) देश निकाला, तो उन्हें यातना दे देता संसार (ही) में। तथा उन के लिये आखिरत (परलोक) में नरक की यातना है।
4. यह इसलिये कि उन्होंने विरोध किया अल्लाह तथा उस के रसूल का, और जो विरोध करेगा अल्लाह का तो निश्चय अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا وَقَدْ فِى قُلُوبِهِمُ الرَّعْبُ
يَجْرُونَ بِأَنَّهُمْ يَأْتِيهِمْ وَأَيُّ الْمُؤْمِنِينَ
فَالْعِتْرُ وَإِلَى الْأَبْصَارِ ۝

وَلَوْلَا أَن كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَءَ لَعَذَّبُوهُمْ فِى
الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِى الْآخِرَةِ عَذَابٌ ثَوَابٍ ۝

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاؤُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ
فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

- 1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जब मदीना पहुँचे तो वहाँ यहूदियों के तीन कबीले आबाद थे: बनी नज़ीर, बनी कुरैज़ा तथा बनी कैनुकाआ। आप ने उन सभी से संधि कर ली। परन्तु वह इस्लाम के विरुद्ध षड्यंत्र रचते रहे। और एक समय जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बनी नज़ीर के पास गये तो उन्होंने ऊपर से एक पत्थर फेंक कर आप को मार डालने की योजना बनाई। जिस से वही द्वारा अल्लाह ने आप को सूचित कर दिया। उन के इस संधि भंग तथा षड्यंत्र के कारण आप ने उन पर आक्रमण किया। वह कुछ दिन अपने दुर्गों में बंद रहे। अन्ततः उन्होंने प्राण क्षमा के रूप में देश निकाल को स्वीकार किया। और यह मदीना से यहूद का प्रथम देश निकाला था। यहाँ से वह खैबर पहुँचे और अदरणीय उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के युग में उन्हें फिर देश निकाला दिया गया। और वह वहाँ से शाम चले गये जो हश्र का मैदान होगा।
- 2 जब वे अपने घरों से जाने लगे तो घरों को तोड़-तोड़ कर जो कुछ साथ ले जा सकते थे ले गये। और शेष सामान मुसलमानों ने निकाला।

5. (हे मुसलमानो!) तुम ने नहीं काटा^[1] कोई खजूर का वृक्ष और न छोड़ा उसे खड़ा अपने तने पर, तो यह सब अल्लाह के आदेश से हुआ। और ताकि वह अपमानित करे पथभ्रष्टों को।

6. और जो धन दिला दिया अल्लाह ने अपने रसूल को उन से, तो नहीं दौड़ाये तुम ने उस के लिये घोड़े और न ऊँटा परन्तु अल्लाह प्रभुत्व प्रदान कर देता है अपने रसूल को जिस पर चाहता है, तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

7. अल्लाह ने जो धन दिलाया है अपने रसूल को इस बस्ती वालों^[2] से, वह अल्लाह तथा रसूल, तथा (आप के) समीपवर्तियों तथा अनार्थों और निर्धनों तथा यात्रियों के लिये है। ताकि वह फिरता न रह^[3] जाये

مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لَبَنَةٍ أَوْ نَرْتُمْوهَا قَائِمَةً عَلَىٰ أُصُولِهَا
فِيَادِنِ اللَّهِ وَلِيُخْزِيَ الضَّالِّينَ ۝

وَأَقَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ
مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رَسُولَهُ
عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

مَا أَقَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ فَلِلَّهِ
وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّكِينِ
وَابْنِ السَّبِيلِ كَمَا لَا يَكُونُ دُولَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ
وَمَنْكُم مَّا أَلْتَمَسُوا الرِّسُولَ فَخُذُوهُ وَمَنْهُم مَّنْ
عَنْتَهُ فَأَتَمُّوا وَاثِقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

1 बनी नज़ीर के घिराव के समय नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आदेशानुसार उन के खजूरों के कुछ वृक्ष जला दिये और काट दिये गये और कुछ छोड़ दिये गये ताकि शत्रु की आड़ को समाप्त किया जाये। इस आयत में उसी का वर्णन किया गया है। (सहीह बुखारी: 4884)

2 अर्थात् यहूदी कबीला बनी नज़ीर से जो धन बिना युद्ध के प्राप्त हुआ उस का नियम बताया गया है कि वह पूरा धन इस्लामी बैतुल माल का होगा उसे मुजाहिदों में विभाजित नहीं किया जायेगा। हदीस में है कि यह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये विशेष था जिस से आप अपनी पत्नियों को खर्च देते थे। फिर जो बच जाता तो उसे अल्लाह की राह में शस्त्र और सवारी में लगा देते थे। (बुखारी: 4885)

इस को फय का माल कहते हैं जो ग़नीमत के माल से अलग है।

3 इस में इस्लाम की अर्थ व्यवस्था के मूल नियम का वर्णन किया गया है। पूँजी पति व्यवस्था में धन का प्रवाह सदा धनवानों की ओर होता है। और निर्धन दरिद्रता की चक्री में पिसता रहता है। कम्युनिज़्म में धन का प्रवाह सदा शासक

तुम्हारे धनवानों के बीच और जो प्रदान कर दें रसूल, तुम उसे ले लो और रोक दें तुम को जिस से तो तुम रुक जाओ। तथा अल्लाह से डरते रहो, निश्चय अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

8. उन निर्धन मुहाजिरों के लिये है जो निकाल दिये गये अपने घरों तथा धनों से। वह चाहते हैं अल्लाह का अनुग्रह तथा प्रसन्नता, और सहायता करते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल की, यही सच्चे हैं।

9. तथा उन लोगों^[1] के लिये (भी) जिन्होंने आवास बना लिया इस घर (मदीना) को तथा उन (मुहाजिरों के आने) से पहले ईमान लाये, वह प्रेम करते हैं उन से जो हिजरत कर के आ गये उन के यहाँ। और वे नहीं पाते अपने दिलों में कोई आवश्यकता उस की जो उन्हें दिया जाये। और प्रथामिकता देते हैं (दूसरों को) अपने ऊपर चाहे स्वयं भूखे^[2] हों। और जो

لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ
وَأَمْوَالِهِمْ يُبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا
وَيَنْصُرُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُخْرَجُونَ
مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي صُدُوقِهِمْ
حَاجَةً مِمَّا أُوتُوا وَيُؤْتُونَ عَلَى أَنْفُسِهِمْ
وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ وَمَنْ يُوقِ شُحَّ
نَفْسِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

वर्ग की ओर होता है। जब कि इस्लाम में धन का प्रवाह निर्धन वर्ग की ओर होता है।

- 1 इस से अभिप्राय मदीना के निवासी: अनुसार हैं। जो मुहाजिरीन के मदीना में आने से पहले ईमान लाये थे। इस का यह अर्थ नहीं है कि वह मुहाजिरीन से पहले ईमान लाये थे।
- 2 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास एक अतिथि आया और कहा: हे अल्लाह के रसूल! मैं भूखा हूँ। आप ने अपनी पत्नियों के पास भेजा तो वहाँ कुछ नहीं था। एक अन्सारी उसे घर ले गये। घर पहुँचे तो पति ने कहा: घर में केवल बच्चों का खाना है। उन्होंने परस्पर प्रामर्श किया कि बच्चों को बहला कर सुला दिया जाये। तथा पति से कहा कि जब अतिथि खाने लगे तो

बचा लिये गये अपने मन की तंगी से, तो वही सफल होने वाले हैं।

10. और जो आये उन के पश्चात् वे कहते हैं: हे हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे तथा हमारे उन भाईयों को जो हम से पहले ईमान लाये। और न रख हमारे दिलों में कोई बैर उन के लिये जो ईमान लाये। हे हमारे पालनहार! तू अति करूणामय दयावान् है।
11. क्या आप ने उन्हें^[1] नहीं देखा जो मुनाफ़िक (अवसरवादी) हो गये, और कहते हैं अपने अहले किताब भाईयों से कि यदि तुम्हें देश निकाला दिया गया तो हम अवश्य निकल जायेंगे तुम्हारे साथ। और नहीं मानेंगे तुम्हारे बारे में किसी की (बात) कभी। और यदि तुम से युद्ध हुआ तो हम अवश्य तुम्हारी सहायता करेंगे। तथा अल्लाह गवाह है कि वह झूठे हैं।
12. यदि वे निकाले गये तो यह उन के

وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَأْفِكُوا يَقُولُونَ لَا إِخْوَانَهُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِنْ قُوتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ

لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِنْ قُوتِلُوا

तुम दीप बुझा देना। उस ने ऐसा ही किया। सब भूखे सो गये और अतिथि को खिला दिया। जब वह अनसारी भोर में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास पहुँचे तो आप ने कहा: अमुल पुरुष (अबू तलहा) और अमुल स्त्री (उम्मे सुलैम) से अल्लाह प्रसन्न हो गया। और उस ने यह आयत उतारी है। (सहीह बुखारी: 4889)

- 1 इस से अभिप्राय अब्दुल्लाह बिन उबेय्य मुनाफ़िक और उस के साथी हैं। जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यहूद को उन के वचन भंग तथा षड्यंत्र के कारण दस दिन के भीतर निकल जाने की चेतावनी दी, तो उस ने उन से कहा कि तुम अड़ जाओ। मेरे बीस हज़ार शस्त्र युवक तुम्हारे साथ मिल कर युद्ध करेंगे। और यदि तुम्हें निकाला गया तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जायेंगे। परन्तु यह सब मैखिक बातें थीं।

साथ नहीं निकालेंगे। और यदि उन से युद्ध हो तो वे उन की सहायता नहीं करेंगे। और यदि उन की सहायता की (भी) तो अवश्य पीठ दिखा देंगे, फिर (कहीं से) कोई सहायता नहीं पायेंगे।

13. निश्चय अधिक भय है तुम्हारा उन के दिलों में अल्लाह (के भय) से। यह इसलिये कि वे समझ-बूझ नहीं रखते।

14. वह नहीं युद्ध करेंगे तुम से एकत्र हो कर परन्तु यह कि दुर्ग बंद बस्तियों में हों, अथवा किसी दीवार की आड़ से। उन का युद्ध आपस में बहुत कड़ा है। आप उन्हें एकत्र समझते हैं जब कि उन के दिलों में अलग अलग हैं। यह इसलिये कि वह निर्बाध होते हैं।

15. उन के समान जो उन से कुछ ही पूर्व चख चुके^[1] हैं अपने किये का स्वादा और इन के लिये दुःखदायी यातना है।

16. (उन का उदाहरण) शैतान जैसा है कि वह कहता है मनुष्य से कि कुफ़र कर, फिर जब वह काफ़िर हो गया तो कह दिया कि मैं तुझ से विरक्त (अलग) हूँ। मैं तो डरता हूँ अल्लाह सर्वलोक के पालनहार से।

17. तो हो गया उन दोनों का दुष्परिणाम यह कि वे दोनों नरक में सदावासी रहेंगे। और यही है अत्याचारियों का कुफल।

لَا يَنْصُرُوهُمْ وَلَيْنَ تَصَوُّرُهُمْ لِيُولُجُوا الْأَذْهَانَ
ثُمَّ لَا يَنْصُرُونَ ﴿٥٩﴾

لَأَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ
ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٦٠﴾

لَا يَأْتِيَاتُكُمْ جَيْبِعًا إِلَّا فِي قَوْمٍ مُّخَضَّنَةٍ
أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ
تَحْسِبُهُمْ جَيْبِعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ذَٰلِكَ
بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٦١﴾

كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمًا أَقْبَا
وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٢﴾

كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اذْكُرْ فَلَمَّا
كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِنْكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ
الْعَالَمِينَ ﴿٦٣﴾

فَكَانَ عَاقِبَتُهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا
وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿٦٤﴾

1 इस में संकेत बद्र में मक्का के काफ़िरों तथा कौक़ाअ कबीले की पराजय की ओर है।

18. हे लोगो जो ईमान लाये हो! अल्लाह से डरो, और देखना चाहिये प्रत्येक को कि उस ने क्या भेजा है कल के लिये। तथा डरते रहो अल्लाह से, निश्चय अल्लाह सूचित है उस से जो तुम करते हो।

19. और न हो जाओ उन के समान जो भूल गये अल्लाह को तो भुला दिया (अल्लाह ने) उन्हें अपने आप से, यही अवैज्ञकारी हैं।

20. नहीं बराबर हो सकते नारकी तथा स्वर्गी। स्वर्गी ही वास्तव में सफल होने वाले हैं।

21. यदि हम अवतरित करते इस कुर्आन को किसी पर्वत पर तो आप उसे देखते कि झुका जा रहा है तथा कण-कण होता जा रहा है अल्लाह के भय^[1] से। और इन उदाहरणों का वर्णन हम लोगों के लिये कर रहे हैं ताकि वह सोच-विचार करें। वह खुले तथा छुपे का जानने वाला है। वही अत्यंत कृपाशील दयावान् है।

22. वह अल्लाह ही है जिस के अतिरिक्त कोई (सत्य) पूज्य नहीं है।

23. वह अल्लाह ही है जिस के अतिरिक्त नहीं है^[2] कोई सच्चा वंदनीया वह

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنْسَاهُمْ أَنْفُسَهُمْ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝

لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝

لَوْ أَنزَلْنَاهُ لَكَرْبَانَ عَلَىٰ جَبَلٍ لَّرَأَيْتَهُ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ لَضَرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ الْعَرْشُ وَالشَّهَادَةُ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ

1 इस में कुर्आन का प्रभाव बताया गया है कि यदि अल्लाह पर्वत को ज्ञान और समझ-बुझ दे कर उस पर उतारता तो उस के भय से दब जाता और फट पड़ता। किन्तु मनुष्य की यह दशा है कि कुर्आन सुन कर उस का दिल नहीं पसीजता। (देखिये: सूरह बकरा, आयत: 74)

2 इन आयतों में अल्लाह के शुभनामों और गुणों का वर्णन कर के बताया गया है

सब का स्वामी, अत्यंत पवित्र,
सर्वथा शान्ति प्रदान करने वाला,
रक्षक, प्रभावशाली, शक्तिशाली
बल पूर्वक आदेश लागू करने वाला,
बड़ाई वाला है। पवित्र है अल्लाह उस
से जिसे वे (उस का) साझी बनाते हैं।

24. वही अल्लाह है पैदा करने वाला,
बनाने वाला, रूप देने वाला। उसी
के लिये शुभनाम है, उस की
पवित्रता का वर्णन करता है जो (भी)
आकाशों तथा धरती में है, और वह
प्रभावशाली हिक्मत वाला है।

الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيَّبُ الْعَزِيزُ
الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٢٠﴾

هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ
الْحُسْنَى يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢١﴾

कि वह अल्लाह कैसा है जिस ने यह कुरआन उतारा है। इस आयत में अल्लाह के ग्यारह शुभनामों का वर्णन है। हदीस में है कि अल्लाह के निम्नाने नाम हैं, जो उन्हें गिनेगा तो वह स्वर्ग में जायेगा। (सहीह बुखारी: 7392, सहीह मुस्लिम: 2677)

सूरह मुम्तहिना - 60



सूरह मुम्तहिना के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 13 आयतें हैं।

- इस की आयत 10 से यह नाम लिया गया है।
- इस की आयत 1 से 7 तक में इस्लाम के विरोधियों से मैत्री रखने पर कड़ी चेतावनी दी गई है। और अपने स्वार्थ के लिये उन्हें भेद की बातें पहुँचाने से रोका गया है। तथा इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और उन के साथियों के, काफ़िर जाति से विरक्त होने के एलान को आदर्श के लिये प्रस्तुत किया गया है।
- आयत 8 और 9 में बताया गया है कि जो काफ़िर युद्ध नहीं करते तो उन के साथ न्याय तथा अच्छा व्यवहार करो।
- आयत 10 से 12 तक मक्का से हिज्रत कर के आई हुई तथा उन नारियों के बारे में जो मुसलमानों के विवाह में थीं और उन के हिज्रत कर जाने पर मक्का ही में रह गई थीं निर्देश दिये गये हैं।
- अन्त में उन्हीं बातों पर बल दिया गया है जिन से सूरह का आरंभ हुआ है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे लोगो जो ईमान लाये हो! मेरे शत्रुओं तथा अपने शत्रुओं को मित्र न बनाओ। तुम संदेश भेजते हो उन की ओर मैत्री^[1] का, जब कि उन्हीं

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ
تَلْقَوْنَ إِلَيْهِمْ بِالْمُؤَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا جَاءَكُمْ مِنْ
الرَّسُولِ يُخْرِجُونَ الرُّسُولَ وَإِيَّاكُمْ أَنْ تَتُومِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ

- 1 मक्का वासियों ने जब हदैबिया की संधि का उल्लंघन किया, तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मक्का पर आक्रमण करने के लिये गुप्त रूप से मुसलमानों को तय्यारी का आदेश दे दिया। उसी बीच आप की इस योजना से सूचित करने के लिये हातिब बिन अबी बलतआ ने एक पत्र एक नारी के माध्यम से मक्का वासियों को भेज दिया। जिस की सूचना नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को

ने कुफ़ किया है उस का जो तुम्हारे पास सत्य आया है। वह देश निकाला देते हैं रसूल को तथा तुम को इस कारण कि तुम ईमान लाये हो अल्लाह अपने पालनहार पर? यदि तुम निकले हो जिहाद के लिये मेरी राह में और मेरी प्रसन्नता की खोज के लिये तो गुप्त रूप से उन को मैत्री का संदेश भेजते हो? जब कि मैं भली-भाँति जानता हूँ उसे जो तुम छुपाते हो और जो खुल कर करते हो? तथा जो करेगा ऐसा, तो निश्चय वह कुपथ हो गया सीधी राह से।

2. और यदि वश में पा जायें तुम को तो तुम्हारे शत्रु बन जायें तथा तुम्हें अपने हाथों और जुबानों से दुःख पहुँचायें और चाहने लगेंगे कि तुम (फिर) काफ़िर हो जाओ।
3. तुम्हें लाभ नहीं देंगे तुम्हारे सम्बन्धी और न तुम्हारी संतान प्रलय के दिन। वह (अल्लाह) अलगाव कर देगा

إِنْ كُنْتُمْ حَرِبْتُمْ جِهَادًا إِلَى سَبِيلِ وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي
فِيُرُونَ إِلَهُكُمْ بِالْمُؤَدَّةِ وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا خَفَيْتُمْ وَمَا
أَعْلَنْتُمْ وَمَنْ يَفْعَلْهُ وَمَنْ تَعْلَمُ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ
السَّبِيلِ ①

إِنْ يَتَّقُواكُمْ يَكُونُوا أَعْدَاءً وَيَسْطَوْا إِلَيْكُمْ
أَيْدِيَهُمْ وَالسِّنَنُ بِالشُّؤْمِ وَوَدَّاءُ لَوْ تَكْفُرُونَ ②

لَنْ تَنْفَعَكُمْ أَرْحَامُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
يَقْصِلُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهِ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ③

वह्नी द्वारा दे दी गई। आप ने आदरणीय अली, मिक्दाद तथा जुबैर से कहा कि जाओ, रौजा खाख़ (एक स्थान का नाम) में एक स्त्री मिलेगी जो मक्का जा रही होगी। उस के पास एक पत्र है वह ले आओ। यह लोग वह पत्र लाये। तब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: हे हातिब! यह क्या है? उन्होंने कहा: यह काम मैं ने कुफ़ तथा अपने धर्म से फिर जाने के कारण नहीं किया है। बल्कि इस का कारण यह है कि अन्य मुहाजिरीन के मक्का में सम्बन्धी हैं जो उन के परिवार तथा धनों की रक्षा करते हैं। पर मेरा वहाँ कोई सम्बन्धी नहीं है। इसलिये मैं ने चाहा कि उन्हें सूचित कर दूँ ताकि वे मेरे आभारी रहें। और मेरे समीपवर्तियों की रक्षा करें। आप ने उन की सच्चाई के कारण उन्हें कुछ नहीं कहा। फिर भी अल्लाह ने चेतवनी के रूप में यह आयतें उतारी ताकि भविष्य में कोई मुसलमान काफ़िरों से ऐसा मैत्री सम्बन्ध न रखे। (सहीह बुखारी: 4890)

तुम्हारे बीच। और अल्लाह जो कुछ तुम कर रहे हो उसे देख रहा है।

4. तुम्हारे लिये इब्राहीम तथा उस के साथियों में एक अच्छा आदर्श है। जब कि उन्होंने अपनी जाति से कहा: निश्चय हम विरक्त हैं तुम से तथा उन से जिन की तुम इबादत (वंदना) करते हो अल्लाह के अतिरिक्त। हम ने तुम से कुफ़ किया। खुल चुका है बैर हमारे तथा तुम्हारे बीच और क्रोध सदा के लिये। जब तक तुम ईमान न लाओ अकेले अल्लाह पर, परन्तु इब्राहीम का (यह) कथन अपने पिता से कि मैं अवश्य तेरे लिये क्षमा की प्रार्थना^[1] करूँगा। और मैं नहीं अधिकार रखता हूँ अल्लाह के समक्ष कुछ। हे हमारे पालनहार! हम ने तेरे ही ऊपर भरोसा किया और तेरी ही ओर ध्यान किया है और तेरी ही ओर फिर आना है।

5. हे हमारे पालनहार! हमें न बना परीक्षा^[2] (का साधन) काफिरों के लिये और हमें क्षमा कर दे, हे हमारे पालनहार! वास्तव में तू ही प्रभुत्वशाली गुणी है।

6. निःसंदेह तुम्हारे लिये उन में एक

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ
إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرءُؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ
مِنْ دُونِ اللَّهِ كَقَرَابِكُمْ وَمَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ
وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّى تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحَدَاهُ إِلَّا قَوْلَ
إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَا أَمْرُكَ لَكَ مِنَ
اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ رَبَّنَا عَلَّمَكُنَا مَا كُنَّا وَاللَّيْلُ الْبَيْتُ
وَاللَّيْلُ الْبَيْتُ الْبَيْتُ

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَاعْفُ عَنَّا رَبَّنَا
إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

قَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ

1 इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने जो प्रार्थनायें अपने पिता के लिये कीं उन के लिये देखिये: सूरह इब्राहीम, आयत: 41, तथा सूरह शुअरा, आयत: 86। फिर जब आदरणीय इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को यह ज्ञान हो गया कि उन का पिता अल्लाह का शत्रु है तो आप उस से विरक्त हो गये। (देखिये: सूरह तौबा, आयत: 114)

2 इस आयत में मक्का की विजय और अधिकांश मुश्रिकों के ईमान लाने की भविष्यवाणी है जो कुछ ही सप्ताह के पश्चात् पूरी हुई और पूरा मक्का ईमान ले आया।

अच्छा आदर्श है उस के लिये जो आशा रखता हो अल्लाह तथा अन्तिम दिवस (प्रलय) की। और जो विमुख हो तो निश्चय अल्लाह निस्पृह प्रशंसित है।

7. कुछ दूर नहीं कि अल्लाह बना दे तुम्हारे बीच तथा उन के बीच जिन से तुम बैर रखते हो प्रेम^[1] और अल्लाह बड़ा सामर्थ्यवान है, और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
8. अल्लाह तुम को नहीं रोकता उन से जिन्होंने तुम से युद्ध न किया हो धर्म के विषय में, और न बहिष्कार किया हो तुम्हारा तुम्हारे देश से, इस से कि तुम उन से अच्छा व्यवहार करो और न्याय करो उन से। वास्तव में अल्लाह प्रेम करता है न्याय^[2] कारियों से।
9. तुम्हें अल्लाह बस उन से रोकता है जिन्होंने युद्ध किया हो तुम से धर्म के विषय में तथा बहिष्कार किया हो तुम्हारा तुम्हारे घरों से, और सहायता की हो तुम्हारा बहिष्कार कराने में, कि तुम मैत्री रखो उन से। और जो मैत्री करेंगे उन से तो वही अत्याचारी हैं।

يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَمِيدُ ۝

عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الدِّينِ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۝

لَا يَأْتِيَنَّكُمْ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ كَفَرُوا قِيَامًا وَلَا يَكُونُوا فِي الدِّينِ وَلَا يَحْزَنُوا لَكُمْ مِنْ دِينِكُمْ وَأَنْ تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝

لَا يَأْتِيَنَّكُمْ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَنْ تَوَلَّوْهُمْ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

- 1 अर्थात: उन को मुसलमान कर के तुम्हारा दीनी भाई बना दे। और फिर ऐसा ही हुआ कि मक्का की विजय के बाद लोग तेजी के साथ मुसलमान होना आरंभ हो गये। और जो पुरानी दुश्मनी थी वह प्रेम में बदल गई।
- 2 इस आयत में सभी मनुष्यों के साथ अच्छे व्यवहार तथा न्याय करने की मूल शिक्षा दी गई है। उन के सिवा जो इस्लाम के विरुद्ध युद्ध करते हैं और मुसलमानों से बैर रखते हैं।

10. हे ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मुसलमान स्त्रियाँ हिज्रत कर के आयें तो उन की परीक्षा ले लिया करो। अल्लाह अधिक जानता है उन के ईमान को, फिर यदि तुम्हें यह ज्ञान हो जाये कि वह ईमान वालियाँ हैं तो उन्हें वापिस न करो^[1] काफिरों की ओर। न वे औरततें हलाल (वैध) हैं उन के लिये और न वे काफिर हलाल (वैध) हैं उन औरतों के लिये^[2] और चुका दो उन काफिरों को जो उन्होंने खर्च किया हो। तथा तुम पर कोई दोष नहीं है कि विवाह कर लो उन से जब दे दो उन को उन का महर (स्त्री उपहार)। तथा न रखो काफिर स्त्रियों को अपने विवाह में, तथा माँग लो जो तुम ने खर्च किया हो। और चाहिये कि वह काफिर माँग लें जो उन्होंने खर्च किया हो। यह अल्लाह का आदेश है, वह निर्णय कर रहा है तुम्हारे बीच, तथा अल्लाह सब जानने वाला गुणी है।

11. और यदि तुम्हारे हाथ से निकल जाये तुम्हारी कोई पत्नी काफिरों की ओर

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ
فَأَمْتَحِنُوهُنَّ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِإِيمَانِهِنَّ ۚ فَإِنْ
عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ
لَا مِنْ جِلِّ لَهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ وَآلِهِنَّ مَا
أَنْفَقُوا ۚ وَالْجَنَامُ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ
أُجُورَهُنَّ وَلَا تَسْئَلُوا بِعِصَمِ الْكُفَّارِ وَ سَأَلُوا
مَا أَنْفَقْتُمْ وَلَيْسَ لَكُمْ بِمَا أَنْفَقُوا إِلَيْكُمْ حَقٌّ ۚ وَاللَّهُ
يَعْلَمُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

وَأَنْ فَانْكَرْتُمْ شَيْءٌ مِنْ أَوْجَاعِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ

- 1 इस आयत में यह आदेश दिया जा रहा है कि जो स्त्री ईमान ला कर मदीना हिज्रत कर के आ जाये उसे काफिरों को वापिस न करो। यदि वह काफिर की पत्नी रही है तो उस के पती को जो स्त्री उपहार (महर) उस ने दिया हो उसे दे दो। और उन से विवाह कर लो। और अपने विवाह का महर भी उस स्त्री को दो। ऐसे ही जो काफिर स्त्री किसी मुसलमान के विवाह में हो अब उस का विवाह उस के साथ अवैध है। इसलिये वह मक्का जा कर किसी काफिर से विवाह करे तो उस के पती से जो स्त्री उपहार तुम ने उसे दिया है माँग लो।
- 2 अर्थात अब मुसलमान स्त्री का विवाह काफिर के साथ, तथा काफिर स्त्री का मुसलमान के साथ अवैध (हराम) कर दिया गया है।

और तुम को बदले^[1] का अवसर मिल जाये तो चुका दो उन को जिन की पत्नियाँ चली गई हैं उस के बराबर जो उन्होंने खर्च किया है। तथा डरते रहो उस अल्लाह से जिस पर तुम ईमान रखते हो।

12. हे नबी! जब आयें आप के पास ईमान वालियाँ ताकि^[2] वचन दें आप को इस पर कि वह साझी नहीं बनायेंगी अल्लाह का किसी को और न चोरी करेंगी और व्यभिचार करेंगी और न बध करेंगी अपनी संतान को और न कोई ऐसा आरोप (कलंक) लगायेंगी जिसे उन्होंने घड़ लिया हो आपने हाथों तथा पैरों के आगे और नहीं अवैज्ञा करेंगी आप की किसी भले काम में तो आप वचन ले लिया करें उन से तथा क्षमा की प्रार्थना करें उन के लिये अल्लाह से। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील तथा दयावान् है।

13. हे ईमान वालो! तुम उन लोगों को मित्र न बनाओ क्रोधित हो गया है अल्लाह जिन पर। वह निराश हो चुके

فَعَاقِبْهُمْ نَأْوًا الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ وَمَثَلًا مَّا أَنْفَقُوا وَأَتَقُوا اللَّهَ الَّذِيْ أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿١٠﴾

يَأْتِيهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَهُ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعُنَّكَ عَلَىٰ أَنْ لَا يُشْرِكُنَّ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَرْزُقْنَ وَلَا يُزْنِقْنَ وَلَا يَمْتَسِلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِيْنَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيَنَّكَ فِي مَعْرُوفٍ مَّبَإِعُهُنَّ وَاسْتَنْفَرْنَ لَهُنَّ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١١﴾

يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا الِاتِّوَالُوا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ بَيسُوا مِنَ الْاِخْوَةِ كَمَا يَمِيسُ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْطَلِبِ الْقُبُورِ ﴿١٢﴾

- 1 भावार्थ यह है कि मुसलमान हो कर जो स्त्री आ गई है उस का महर जो उस के काफिर पति को देना है वह उसे न दे कर उस के बराबर उस मुसलमान को दे दो जिस की काफिर पत्नी उस के हाथ से निकल गई है।
- 2 हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) इस आयत द्वारा उन की परीक्षा लेते और जो मान लेती उस से कहते कि जाओ मैं ने तुम से वचन ले लिया। और आप ने (अपनी पत्नियों के इलावा) कभी किसी नारी के हाथ को हाथ नहीं लगाया। (सहीह बुखारी: 4891, 93, 94, 95)

हैं आख़िरत^[1] (परलोक) से उसी प्रकार
 जैसे काफ़िर समाधियों में पड़े हुये
 लोगों (के जीवित होने) से निराश हैं।

1 आख़िरत से निराश होने का अर्थ उस का इन्कार है जैसे उन्हें मरने के पश्चात् जीवन का इन्कार है।

सूरह सफ़ - 61



सूरह सफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 14 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 4 में ((सफ़)) शब्द आया है जिस का अर्थ पंक्ति है उसी से यह नाम लिया गया है। और प्रथम आयत में आकाशों तथा धरती की प्रत्येक चीज़ के अल्लाह की तस्बीह (पवित्रता का गुण गान करने) की चर्चा की गई है। फिर मुसलमानों पर जो अपनी बात के अनुसार कर्म नहीं करते और वचन भंग करते हैं उन की निन्दा है। तथा उन की सराहना है जो मिल कर अल्लाह की राह में संघर्ष करते और अपना वचन पूरा करते हैं।
- आयत 5 और 6 में मुसलमानों को सावधान किया गया है कि यहूदियों की नीति पर न चले जिन्होंने ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को दुःख दिया। और कुरीति अपनाई जिस से उन के दिल टेढ़े हो गये। फिर उन्होंने अपने सभी रसूलों का इन्कार किया जो खुली निशानियाँ लाये।
- इस में इस्लाम के विरोधियों को सावधान करते हुये बताया गया है कि अल्लाह अपना प्रकाश पूरा करेगा और उस का धर्म सभी धर्मों पर प्रभुत्वशाली होगा। काफ़िरों और मुश्रिकों को कितना ही बुरा क्यों न लगे।
- मुसलमानों को ईमान की माँग पूरी करने तथा जिहाद करने का आदेश देते हुये परलोक में उस के प्रतिफल, तथा संसार में सहायता और विजय की शुभ सूचना दी गई है।
- ईसा (अलैहिस्सलाम) के साथियों का उदाहरण दे कर अल्लाह के धर्म की सहायता करने का आमंत्रण दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह की पवित्रता का गान करती है जो वस्तु आकाशों तथा धरती में है और वह प्रभुत्वशाली गुणी है।

سَيَعْبُدُهُمْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ①

2. हे ईमान वालो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं।
3. अत्यंत अप्रिय है अल्लाह को तुम्हारी वह बात कहना जिसे तुम (स्वयं) करते नहीं।
4. निःसंदेह अल्लाह प्रेम करता है उन से जो युद्ध करते हैं उस की राह में पंक्तिबंद हो कर जैसे कि वह सीसा पिलायी दीवार हों।
5. तथा याद करो जब कहा मूसा ने अपनी जाति से: हे मेरे समुदाय! तुम क्यों दुःख देते हो मुझ को जब कि तुम जानते हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ तुम्हारी ओर? फिर जब वह टेढ़े ही रह गये तो टेढ़े कर दिये अल्लाह ने उन के दिल। और अल्लाह संमार्ग नहीं दिखाता उल्लंघनकारियों को।
6. तथा याद करो जब कहा, मर्यम के पुत्र ईसा ने: हे इस्राईल की संतान! मैं तुम्हारी अरि रसूल हूँ, और पुष्टि करने वाला हूँ उस तौरात की जो मुझ से पूर्व आयी है। तथा शुभ सूचना देने वाला हूँ एक रसूल की जो आयेगा मेरे पश्चात्, जिस का नाम अहमद है। फिर जब वह आ गये उन के पास खुले प्रमाणों को ले कर तो उन्होंने कह दिया कि यह तो खुला जादू है।
7. और उस से अधिक अत्याचारी कौन होगा जो झूठ घड़े अल्लाह पर जब कि वह बुलाया जा रहा हो इस्लाम

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَعْلَمُونَ ①

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَعْلَمُونَ ②

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًّا ③
كَانَهُمْ بَيْنًا مَرصُوضًا ④

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ لِقَوْمِهِ تَوَدُّونَ نَبِيَّ وَوَقَدْ
تَعْلَمُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ فَلَمَّا تَرَاءُوا آيَاتِنَا
أَنَّهُ قُلُوبُهُمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ⑤

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ بَنِي إِسْرَائِيلَ إِنِّي رَسُولُ
اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ
وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدٌ
فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُضْتَرٌّ ⑥

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ وَهُوَ يُدْعَى
إِلَى الْإِسْلَامِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ⑦

की ओर। और अल्लाह मार्ग दर्शन नहीं देता अत्याचारी जाति को।

8. वह चाहते हैं कि बुझा दें अल्लाह के प्रकाश को अपने मुखों से। तथा अल्लाह पूरा करने वाला है अपने प्रकाश को, यद्यपि बुरा लगे काफ़िरों को।
9. वही है जिस ने भेजा है अपने रसूल को संमार्ग तथा सत्धर्म के साथ ताकि प्रभावित कर दे उसे प्रत्येक धर्म पर चाहे बुरा लगे मुश्रिकों को।
10. हे ईमान वालो! क्या मैं बता दूँ तुम्हें ऐसा व्यापार जो बचा ले तुम को दुःखदायी यातना से?
11. तुम ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल पर और जिहाद करो अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों से यही तुम्हारे लिये उत्तम है यदि तुम जानो।
12. वह क्षमा कर देगा तुम्हारे पापों को और प्रवेश देगा तुम्हें ऐसे स्वर्गों में बहती हैं जिन में नहरें तथा स्वच्छ घरों में स्थायी स्वर्गों में। यही बड़ी सफलता है।
13. और एक अन्य (प्रदान) जिस से तुम प्रेम करते हो। वह अल्लाह की सहायता तथा शीघ्र विजय है। तथा शुभसूचना सुना दो ईमान वालों को।
14. हे ईमान वालो! तुम बन जाओ अल्लाह (के धर्म) के सहायक जैसे मर्यम के पुत्र ईसा ने हवारियों से कहा था कि कौन मेरा सहायक है

يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ
وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ①

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظَاهِرَهُ
عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ②

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ تِجَارَةٍ تُنصِبُكُمْ
مِنْ عَذَابِ أَلِيمٍ ③

تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ④

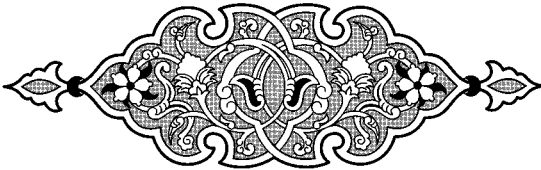
يَعْرِضُ لَكُمْ دُؤُوبَكُمْ وَيُدْخِلُكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ وَمَسْكِنٌ طَيِّبَةٌ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ
ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ⑤

وَأُخْرَىٰ يُحِبُّونَهَا نَصْرٌ مِنَ اللَّهِ وَفَتْحٌ قَرِيبٌ
وَبَيِّنَاتٍ لِّلْمُؤْمِنِينَ ⑥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنْصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى
ابْنُ مَرْيَمَ لِّلْحَوَارِيِّينَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ
الْحَوَارِيُّونَ مَعَنْ أَنْصَارَ اللَّهِ فَأَمَّا نَتْ كَلِمَةٌ مِنْ نَبِيِّ

अल्लाह (के धर्म के प्रचार में)? तो हवारियों ने कहा: हम हैं अल्लाह के (धर्म के) सहायक। तो ईमान लाया ईसाईलियों का एक समूह और कुफ़ किया दूसरे समूह ने। तो हम ने समर्थन दिया उन को जो ईमान लाये उन के शत्रु के विरुद्ध, तो वही विजयी रहे।

إِسْرَائِيلَ وَكَفَرَتْ طَائِفَةٌ فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ
 آمَنُوا عَلَىٰ عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ﴿٦١﴾



सूरह जुमुआ - 62



सूरह जुमुआ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस की आयत 9 में जुमुआ का महत्व बताया गया है। इसलिये इस का नाम सूरह जुमुआ है।
- इस की आरंभिक आयत में अल्लाह की तस्बीह (पवित्रता) और उस के गुणों का वर्णन है।
- इस में अल्लाह के अनुग्रह को बताया गया है कि उस ने उम्मियों (अबों) में एक रसूल भेजा है और यहूदियों के कुकर्म और निर्मूल दावों पर पकड़ की गई है।
- मुसलमानों को जुमुआ की नमाज़ का पालन करने पर बल दिया गया है।
- हदीस में है कि उत्तम दिन जिस में सूर्य निकलता है जुमुआ का दिन है। उसी में आदम (अलैहिस्सलाम) पैदा किये गये। उसी दिन स्वर्ग में रखे गये। और उसी दिन स्वर्ग से निकाले गये। तथा प्रलय भी इसी दिन आयेगी। (सहीह मुस्लिम: 854) एक दूसरी हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: लोग जुमुआ छोड़ने से रुक जायें अन्यथा अल्लाह उन के दिलों पर मुहर लगा देगा। (सहीह मुस्लिम: 856)
- आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जुमुआ की नमाज़ में यह सूरह और सूरह मुनाफ़िकून पढ़ते थे। (सहीह मुस्लिम: 877)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करती हैं वह सब चीज़ें जो आकाशों तथा धरती में हैं। जो अधिपति, अति पवित्र, प्रभावशाली गुणी (दक्ष) हैं।

يَسْبُغُهُ اللَّهُ مَاءَ الْسَّمَوَاتِ وَمَاءِ الْأَرْضِ الْمَبْكُورِ
الْقُدُّوسِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ

2. वही है जिस ने निरक्षरों^[1] में एक रसूल भेजा उन्हीं में से। जो पढ़ कर सुनाते हैं उन्हें अल्लाह की आयतें और पवित्र करते हैं उन को तथा शिक्षा देते हैं उन्हें पुस्तक (कुर्आन) तथा तत्वदर्शिता (सुन्नत^[2]) की। यद्यपि वह इस से पूर्व खुले कुपथ में थे।
3. तथा दूसरों के लिये भी उन में से जो अभी उन से नहीं^[3] मिले हैं। वह अल्लाह प्रभुत्वशाली गुणी है।
4. यह^[4] अल्लाह का अनुग्रह है जिसे वह प्रदान करता है उस के लिये जिस के लिये वह चाहता है। और अल्लाह बड़े अनुग्रह वाला है।
5. उन की दशा जिन पर तौरात का भार रखा गया फिर तदानुसार कर्म

هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ
الْبَيِّنَاتِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ
وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

وَالَّذِينَ مِنْهُمْ لَمَا يَلْبِغُوا بِهِمْ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرَةَ ثُمَّ لَا يُحْمِلُوهَا كَمَا نُحِئْ

- 1 अनभिज्ञों से अभिप्राय: अरब हैं। अर्थात् जो अहले किताब नहीं हैं। भावार्थ यह है कि पहले रसूल इस्राईल की संतति में आते रहे। और अब अन्तिम रसूल इसमाईल की संतति में आया है। जो अल्लाह की पुस्तक कुर्आन पढ़ कर सुनाते हैं। यह केवल अरबों के नबी नहीं पूरे मनुष्य जाति के नबी हैं।
- 2 सुन्नत जिस के लिये हिक्मत शब्द आया है उस से अभिप्राय साधारण परिभाषा में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की हदीस, अर्थात् आप का कथन और कर्म इत्यादि है।
- 3 अर्थात् आप अरब के सिवा प्रलय तक के लिये पूरे मानव संसार के लिये भी रसूल बना कर भेजे गये हैं। हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से प्रश्न किया गया कि वह कौन है? तो आप ने अपना हाथ सल्मान फारसी के ऊपर रख दिया। और कहा: यदि ईमान सुरय्या (आकाश के कुछ तारों का नाम) के पास भी हो तो कुछ लोग उस को वहाँ से भी प्राप्त कर लेंगे। (सहीह बुखारी: 4897)
- 4 अर्थात् आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अरबों तथा पूरे मानव संसार के लिये रसूल बनाना।

नहीं किया उस गधे के समान है जिस के ऊपर पुस्तकें^[1] लदी हुई हों। बुरा है उस जाति का उदाहरण जिन्होंने झूठला दिया अल्लाह की आयतों को। और अल्लाह मार्ग दर्शन नहीं देता अत्याचारियों को।

6. आप कह दें कि हे यहूदियों! यदि तुम समझते हो कि तुम्हीं अल्लाह के मित्र हो अन्य लोगों के अतिरिक्त, तो कामना करो मरण की यदि तुम सच्चे^[2] हो?
7. तथा वह अपने किये हुये कर्तूतों के कारण कदापि उस की कामना नहीं करेंगे। और अल्लाह भली-भाँति अवगत है अत्याचारियों से।
8. आप कह दें कि जिस मौत से तुम भाग रहे हो वह अवश्य तुम से मिल कर रहेगी। फिर तुम अवश्य फेर दिये जाओगे परोक्ष (छुपे) तथा प्रत्येक (खुले) के ज्ञानी की ओर। फिर वह तुम को सूचित कर देगा उस से जो तुम करते रहे।^[3]
9. हे ईमान वालो! जब अज्ञान दी जाये नमाज़ के लिये जुमुआ के दिन तो

الْحَمَارِ يَحْمِلُ أَثْقَالَ إِبْرَاهِيمَ مِثْلَ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا
بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ لَآيِهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا إِنْ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ أَوْلِيَاءُ لِلَّهِ
مِن دُونِ النَّاسِ فَتَمَتُّوا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ۝

وَلَا يَمُنُّونَ إِلَّا بِالْمَآقِدَاتِ أَيُّهُمْ
وَاللَّهُ عَالِمُ بِالظَّالِمِينَ ۝

قُلْ إِنْ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ مُلْفِيكُمْ
تُؤْتَرُونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمٍ

- 1 अर्थात जैसे गधे को अपने ऊपर लादी हुई पुस्तकों का ज्ञान नहीं होता कि उन में क्या लिखा है वैसे ही यह यहूदी तौरात के आदेशानुसार कर्म न कर के गधे के समान हो गये हैं।
- 2 यहूदियों का दावा था कि वही अल्लाह के प्रियवर हैं। (देखिये: सूरह बकरा, आयत: 111, तथा सूरह माइदा, आयत: 18) इसलिये कहा जा रहा है कि स्वर्ग में पहुँचने के लिये मौत की कामना करो।
- 3 अर्थात तुम्हारे दुष्कर्मा के परिणाम से।

दौड़^[1] जाओ अल्लाह की याद की ओर तथा त्याग दो क्रय-विक्रय^[2] यह उत्तम है तुम्हारे लिये यदि तुम जानो।

10. फिर जब नमाज़ हो जाये तो फैल जाओ धरती में। तथा खोज करो अल्लाह के अनुग्रह की तथा वर्णन करते रहो अल्लाह का अत्यधिक ताकि तुम सफल हो जाओ।

11. और जब वह देख लेते हैं कोई व्यापार अथवा खेल तो उस की ओर दौड़ पड़ते हैं^[3] तथा आप को छोड़ देते हैं खड़े। आप कह दें कि जो कुछ अल्लाह के पास है वह उत्तम है खेल तथा व्यापार से। और अल्लाह सर्वोत्तम जीविका प्रदान करने वाला है।

الْجُمُعَةَ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ
ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٥﴾

فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا
مِن فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٦﴾

وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انفَضُّوا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ
قَائِمًا قُلْ مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ مِنَ اللَّهِو وَمِن
التِّجَارَةِ وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٧﴾

1 अर्थ यह है कि जुमुआ की अज्ञान हो जाये तो अपने सारे कारोबार बंद कर के जुमुआ का खुत्बा सुनने, और जुमुआ की नमाज़ पढ़ने के लिये चल पड़ो।

2 इस से अभिप्राय संसारिक कारोबार है।

3 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जुमुआ का खुत्बा (भाषण) दे रहे थे कि एक कारवाँ ग़ल्ला लेकर आ गया। और सब लोग उस की ओर दौड़ पड़े। बारह व्यक्ति ही आप के साथ रह गये। उसी पर अल्लाह ने यह आयत उतारी (सहीह बुखारी: 4899)

सूरह मुनाफ़िकून - 63



सूरह मुनाफ़िकून के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस का नाम इस की प्रथम आयत से लिया गया है।
- इस में मुनाफ़िकों के उस दुर्व्यवहार का वर्णन है जो उन्होंने इस्लाम के विरोध में अपना रखा था जिस के कारण वह अक्षम्य अपराध के दोषी बन गये।
- आयत 9 से 11 तक में ईमान वालों को संबोधित कर के अल्लाह का स्मरण (याद) करने तथा उस की राह में दान करने पर बल दिया गया है। जिस से निफ़ाक़ (द्विधा) के रोग का पता भी लगता है। और उसे दूर करने का उपाय भी सामने आ जाता है।
- हदीस में है कि मुनाफ़िक़ के लक्षण तीन हैं: जब वह बात करे तो झूठ बोले। और जब वादा करे तो मुकर जाये। और जब उस के पास अमानत रखी जाये तो उस में ख़्यानत (विश्वासघात) करे। (सहीह बुख़ारी: 33, सहीह मुस्लिम: 59)
- दूसरी हदीस में एक चौथा लक्षण यह बताया गया है कि जब वह झगड़ा करे तो गाली दे। (सहीह बुख़ारी: 34, तथा सहीह मुस्लिम: 58)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब आते हैं आप के पास मुनाफ़िक़ तो कहते हैं कि हम साक्ष्य (गवाही) देते हैं कि वास्तव में आप अल्लाह के रसूल हैं। तथा अल्लाह जानता है कि वास्तव में आप अल्लाह के रसूल हैं। और अल्लाह गवाही देता है कि

إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ
وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ
لَكَاذِبُونَ ۝

मुनाफिक़ निश्चय झूठे^[1] हैं।

2. उन्होंने बना रखा है अपनी शपथों को एक ढाल और रुक गये अल्लाह की राह से। वास्तव में वह बड़ा दुष्कर्म कर रहे हैं।
3. यह सब कुछ इस कारण है कि वे ईमान लाये फिर कुफ़र कर गये तो मुहर लगा दी अल्लाह ने उन के दिलों पर, अतः वह समझते नहीं।
4. और यदि आप उन्हें देखें तो आप को भा जायें उन के शरीर। और यदि वह बात करें तो आप सुनने लें उन की बात, जैसे कि वह लकड़ियाँ हों दीवार के सहारे लगाई^[2] हुईं। वह प्रत्येक कड़ी ध्वनी को अपने विरुद्ध^[3] समझते हैं। वही शत्रु है, आप उन से सावधान रहें। अल्लाह उन को नाश करे, वह किधर फिरे जा रहे हैं!

اَتَّخَذُوا اٰيٰتِنَا حِجَّةً فَصَدُّوا عَن سَبِيْلِ اللّٰهِ
اِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ لَنَقَرُوْا قَلْبِهِمْ عَلٰى فَلَوْ اَنَّهُمْ
لَا يَفْقَهُوْنَ ۝

وَ اِذَا رَاٰتِهِمْ تَعْجَبَ اَجْسَامُهُمْ وَاِنْ يَقُوْلُوْا سَمِعْنَا
لَقَوْلِهِمْ كَانْتُمْ حُشْبٌ مِّنْ سَنَدَةٍ يَّحْسِبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ
عَلَيْهِمْ هُمُ الْعَادُوْنَ فَاحْذَرُوْهُمْ فَاَنْتُمْ لَمَلَّةٌ اَنْتِيْ يُّوْفِكُوْنَ ۝

- 1 आदरणीय ज़ैद पुत्र अर्कम (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि एक युद्ध में मैं ने (मुनाफिकों के प्रमुख) अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य को कहते हुये सुना कि उन पर खर्च न करो जो अल्लाह के रसूल के पास हैं। यहाँ तक कि वह बिखर जायें आप के आस-पास से। और यदि हम मदीना वापिस गये तो हम सम्मानित उस से अपमानित (इस से अभिप्राय वह मुसलमानों को ले रहे थे।) को अवश्य निकाल देंगे। मैं ने अपने चाचा को यह बात बता दी। और उन्होंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बता दी। तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य को बुलाया। उस ने और उस के साथियों ने शपथ ले ली कि उन्होंने यह बात नहीं कही है। इस कारण आप ने मुझे (अर्थात: ज़ैद पुत्र अर्कम) झूठा समझ लिया। जिस पर मुझे बड़ा शोक हुआ। और मैं घर में रहने लगा। फिर अल्लाह ने यह सूरह उतारी तो आप ने मुझे बुला कर सुनायी। और कहा कि हे ज़ैद! अल्लाह ने तुम्हें सच्चा सिद्ध कर दिया है। (सहीह बुख़ारी: 4900)
- 2 जो देखने में सुन्दर परन्तु निर्बाध होती है।
- 3 अर्थात प्रत्येक समय उन्हें धड़का लगा रहता है कि उन के अपराध खुल न जायें।

5. जब उन से कहा जाता है कि आओ, ताकि क्षमा की प्रार्थना करें तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल, तो मोड़ लेते हैं अपने सिर। तथा आप उन्हें देखते हैं कि वह रुक जाते हैं अभिमान (घमंड) करते हुये।

6. हे नबी! उन के समीप समान है कि आप क्षमा की प्रार्थना करें उन के लिये अथवा क्षमा की प्रार्थना न करें उन के लिये। कदापि नहीं क्षमा करेगा अल्लाह उन को। वास्तव में अल्लाह सुपथ नहीं दिखाता है अवैज्ञाकारियों को।

7. यही वे लोग हैं जो कहते हैं कि मत खर्च करो उन पर जो अल्लाह के रसूल के पास रहते हैं ताकि वह बिखर जायें। जब कि अल्लाह ही के अधिकार में है आकाशों तथा धरती के सभी कोष (खजाने)। परन्तु मुनाफ़िक समझते नहीं हैं।

8. वे कहते हैं कि यदि हम वापिस पहुँच गये मदीना तक तो निकाल^[1] देगा सम्मानित उस से अपमानित को। जब कि अल्लाह ही के लिये सम्मान है एवं उस के रसूल तथा ईमान वालों के लिये। परन्तु मुनाफ़िक जानते नहीं।

9. हे ईमान वालो! तुम्हें अचेत न करें तुम्हारे धन तथा तुम्हारी संतान अल्लाह के स्मरण (याद) से। और जो ऐसा करेंगे वही क्षति ग्रस्त है।

وَإِذْ أُقْبِلَ لَهُمْ تَالُوَاتٍ يُسْتَعْفَرُ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوْ أَنَّ
رُؤُسَهُمْ وَرَأْيَهُمْ يَصْذُقُونَ ۖ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ۝

سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ
يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝

هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَلَيَّ مِنْ عِنْدَ رَسُولِ
اللَّهِ حَتَّىٰ يَنْفَضُوا وَيَلْغُوا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَلَكِنَّ الْمُنْفِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ۝

يَقُولُونَ لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ
مِنهَا الْأَذَلَّ ۚ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَالرَّسُولُ ۚ وَالْمُؤْمِنِينَ
وَلَكِنَّ الْمُنْفِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْتُوا بَأْسَكُمْ وَلَا أَوْلِيَاءَهُمْ
عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ
الْحَاسِرُونَ ۝

1 सम्मानित: मुनाफ़िकों के मुख्या अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य ने स्वयं को, तथा अपमानित: रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को कहा था।

10. तथा दान करो उस में से जो प्रदान किया है हम ने तुम को, इस से पूर्व कि आ जाये तुम में से किसी के मरण का^[1] समय, तो कहे कि मेरे पालनहार! क्यों नहीं अवसर दे दिया मुझ को कुछ समय का ताकि मैं दान करता तथा सदाचारियों में हो जाता।
11. और कदापि अवसर नहीं देता अल्लाह किसी प्राणी को जब आ जाये उस का निर्धारित समय। और अल्लाह भली-भाँति सूचित है उस से जो कुछ तुम कर रहे हो।

وَأَنْفُقُوا مِنْ تَارِزْتُمْ مَنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِي أَحَدَكُمْ
 الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ
 قَرِيبٍ فَأَصَّدَّقَ وَأَكُنُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١٠﴾

وَلَكِنْ يُؤَخِّرِ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا
 وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١١﴾

1 हदीस में है कि मनुष्य का वास्तविक धन वही है जिस को वह इस संसार में दान कर जाये। और जिसे वह छोड़ जाये तो वह उस का नहीं बल्कि उस के वारिस का धन है। (सहीह बुखारी: 6442)

सूरह तगाबुन - 64



सूरह तगाबुन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदीनी है, इस में 18 आयतें हैं।

- इस का नाम इस की आयत 9 में ((तगाबुन)) शब्द से लिया गया है। इस में अल्लाह का परिचय देते हुये यह बताया गया है कि इस विश्व की रचना सत्य के साथ हुई है। तथा नबूवत और परलोक के इन्कार के परिणाम से सावधान किया गया है। और ईमान लाने का आदेश दे कर हानि के दिन से सतर्क किया गया है। और ईमान तथा इन्कार दोनों का अन्त बताया गया है।
- आयत 11 से 13 तक में समझाया गया है कि संसारिक जीवन के भय से अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा पालन से मूँह न फेरना अन्यथा इस का अन्त विनाश कारी होगा।
- इस की आयत 14 से 18 तक में ईमान वालों को अपनी पत्नियों और संतान की ओर से सावधान रहने का निर्देश दिया गया है कि वह उन्हें कुपथ न कर दें। और धन तथा संतान के मोह में परलोक से अचेत न हो जायें। और जितना हो सके अल्लाह से डरते रहें। और अल्लाह की राह में दान करते रहें।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह की पवित्रता वर्णन करती है प्रत्येक चीज़ जो आकाशों में है तथा जो धरती में है। उसी का राज्य है, और उसी के लिये प्रशंसा है। तथा वह जो चाहे कर सकता है।
2. वही है जिस ने उत्पन्न किया है तुम को, तो तुम में से कुछ काफ़िर हैं, और तुम में से कोई ईमान वाला है। तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो

يَسْبِغُ اللَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ اللَّهُ الْمَلِكُ ۗ وَلَهُ الْحَمْدُ ۗ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَمِنْكُمْ مُؤْمِنٌ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

उसे देख रहा है।^[1]

3. उस ने उत्पन्न किया आकाशों तथा धरती को सत्य के साथ, तथा रूप बनाया तुम्हारा तो सुन्दर बनाया तुम्हारा रूप, और उसी की ओर फिर कर जाना है।^[2]

4. वह जानता है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, और जानता है जो तुम मन में रखते हो और जो बोलते हो। तथा अल्लाह भली-भाँति अवगत है दिलों के भेदों से।

5. क्या नहीं आई तुम्हारे पास उन की सूचना जिन्होंने कुफ़्र किया इस से पूर्व? तो उन्होंने चख लिया अपने कर्म का दुष्परिणाम। और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।^[3]

6. यह इस लिये कि आते रहे उन के पास उन के रसूल खुली निशानियाँ ले कर। तो उन्होंने कहा: क्या कोई मनुष्य हमें मार्ग दर्शन^[4] देगा? अतः उन्होंने कुफ़्र किया। तथा मुँह फेर लिया और अल्लाह (भी उन से) निश्चिन्त हो गया तथा अल्लाह निस्पृह प्रशंसित है।

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ﴿٦٤﴾

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسْرُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بَدَائِتِ الصُّدُورِ ﴿٦٥﴾

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُؤُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ فَذُوقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٦﴾

ذَلِكَ بِأَنَّهُ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَكَأَلُوا الْآيَاتِ لَهُمْ وَنَنَاءَ فَكَفَرُوا وَتَوَلَّوْا وَاسْتَغْنَى اللَّهُ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَمِيدٌ ﴿٦٧﴾

1. देखने का अर्थ कर्मों के अनुसार बदला देना है।

2. अर्थात् प्रलय के दिन कर्मों का प्रतिफल पाने के लिये।

3. अर्थात् परलोक में नरक की यातना है।

4. अर्थात् रसूल मनुष्य कैसे हो सकता है। यह कितनी विचित्र बात है कि पत्थर की मूर्तियों को तो पूज्य बना लिया जाये इसी प्रकार मनुष्य को अल्लाह का अवतार और पुत्र बना लिया जाये, पर यदि रसूल सत्य ले कर आये तो उसे न माना जाये। इस का अर्थ यह हुआ कि मनुष्य कुपथ करे तो यह मान्य है, और यदि वह सीधी राह दिखाये तो मान्य नहीं।

7. समझ रखा है काफ़िरों ने कि वह कदापि फिर जीवित नहीं किये जायेंगे। आप कह दें कि क्यों नहीं? मेरे पालनहार की शपथ! तुम अवश्य जीवित किये जाओगे। फिर तुम्हें बताया जायेगा कि तुम ने (संसार में) क्या किया है। तथा यह अल्लाह पर अति सरल है।
8. अतः तुम ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल^[1] पर। तथा उस नूर (ज्योति^[2]) पर जिसे हम ने उतारा है। तथा अल्लाह उस से जो तुम करते हो भली-भाँति सूचित है।
9. जिस दिन वह तुम को एकत्र करेगा एकत्र किये जाने वाले दिन। तो वह क्षति (हानि) के खुल जाने^[3] का दिन होगा। और जो ईमान लाया अल्लाह पर तथा सदाचार करता है तो वह क्षमा कर देगा उस के दोषों को, और प्रवेश देगा उसे ऐसे स्वर्गों में बहती होंगी जिन में नहरें वह सदावासी होंगे उन में। यही बड़ी सफलता है।
10. और जिन लोगों ने कुफ़ किया और झुठलाया हमारी आयतों (निशानियों) को तो वही नारकी है जो सदावासी होंगे उस (नरक) में। तथा वह बुरा ठिकाना है।

زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ كُنْ يُبْعَثُونَ
قُلْ وَإِنِّي لَأُبْعَثَنَّكُمْ فَاتَّبِعُونِي إِنَّمَا
عَمِلْتُمْ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿٧﴾

فَأْمُرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي أَنْزَلْنَا
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٨﴾

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذَلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ وَمَنْ
يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكْفِرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ
وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ
فِيهَا أَبَدًا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٩﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ
خَالِدِينَ فِيهَا وَسَاءَ الْمَصِيرُ ﴿١٠﴾

1 इस से अभिप्राय अन्तिम रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) है।

2 ज्योति से अभिप्राय अन्तिम ईश-वाणी कुर्आन है।

3 अर्थात् काफ़िरों के लिये, जिन्होंने अल्लाह की आज्ञा का पालन नहीं किया।

11. जो आपदा आती है वह अल्लाह ही की अनुमति से आती है। तथा जो अल्लाह पर ईमान^[1] लाये तो वह मार्ग दर्शन देता^[2] है उस के दिल को। तथा अल्लाह प्रत्येक चीज़ को जानता है।

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَمَنْ يُؤْمِنْ
بِاللَّهِ يَهْدِ اللَّهُ لِحُجَّتِهِ وَأَلَّهُ يُجَلِّ شَيْءٌ عَلَيْهِ ⑩

12. तथा आज्ञा का पालन करो अल्लाह की तथा आज्ञा का पालन करो उस के रसूल की। फिर यदि तुम विमुख हुये तो हमारे रसूल का दायित्व केवल खुले रूप से (उपदेश) पहुँचा देना है।

وَاطِيعُوا اللَّهَ وَاطِيعُوا الرَّسُولَ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ
فَأَنَّمَا عَلَى رَسُولِنَا الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ⑪

13. अल्लाह वह है जिस के सिवा कोई वंदनीय (सच्चा पूज्य) नहीं है। अतः अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये ईमान वालों को।

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَعَلَى اللَّهِ فَلَيتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ⑫

14. हे लोगो जो ईमान लाये हो! वास्तव में तुम्हारी कुछ पत्नियाँ तथा संतान तुम्हारी शत्रु^[3] हैं। अतः उन से सावधान रहो। और यदि तुम क्षमा से काम लो तथा सुधार करो और क्षमा कर दो तो वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ أَرْوَاحِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ
عَدُوًّا لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ وَإِنْ تَعَفَّوْا وَتَصَفَّحُوا
وَتَعَفَّرُوا فَإِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَحِيمٌ ⑬

15. तुम्हारे धन तथा तुम्हारी संतान तो तुम्हारे लिये एक परीक्षा है।

إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَاللَّهُ عِنْدَكَ

- 1 अर्थ यह है कि जो व्यक्ति आपदा को यह समझ कर सहन करता है कि अल्लाह ने यही उस के भाग्य में लिखा है।
- 2 हदीस में है कि ईमान वाले की दशा विभिन्न होती है। और उस की दशा उत्तम ही होती है। जब उसे सुख मिले तो कृतज्ञ होता है। और दुःख हो तो सहन करता है। और यह उस के लिये उत्तम है। (मुस्लिम: 2999)
- 3 अर्थात् जो तुम्हें सदाचार एवं अल्लाह के आज्ञापालन से रोकते हों, फिर भी उन का सुधार करने और क्षमा करने का निर्देश दिया गया है।

तथा अल्लाह के पास बड़ा प्रतिफल^[1]
(बदला) है।

16. तो अल्लाह से डरते रहो जितना तुम से हो सके तथा सुनो और आज्ञा पालन करो और दान करो। यह उत्तम है तुम्हारे लिये। और जो बचा लिया गया अपने मन की कंजूसी से तो वही सफल होने वाले हैं।
17. यदि तुम अल्लाह को उत्तम ऋण^[2] दोगे तो वह तुम्हें कई गुना बढ़ा कर देगा, और क्षमा कर देगा तुम्हें। और अल्लाह बड़ा गुणग्राही सहनशील है।
18. वह परोक्ष और हाज़िर का ज्ञान रखने वाला है। वह अति प्रभावी तथा गुणी है।

أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٠﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَأَسْمِعُوا وَأَطِيعُوا
وَأَنْفِقُوا خَيْرَ الْأَنْفُسِكُمْ وَمَنْ يُؤْتِكُمْ شَيْئًا فَمِنْ نَفْسِهِ
فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠﴾

إِنْ تَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يَضْعَفْهُ لَكُمْ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ﴿١١﴾

عَلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٢﴾

1 भावार्थ यह है कि धन और संतान के मोह में अल्लाह की अवैज्ञाना न करो।

2 ऋण से अभिप्राय अल्लाह की राह में दान करना है।

सूरह तलाक़ - 65



सूरह तलाक़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 12 आयतें हैं।

- इस सूरह में तलाक़ के नियम और आदेश बताये गये हैं। और मुसलमानों को चेतावनी दी गई है कि अल्लाह के आदेशों से मुँह न फेरें और अवैज्ञाकारी जातियों के परिणाम को याद रखें। दूसरे शब्दों में इस्लाम के परिवारिक नियमों का पालन करें।
- «इद्दत» उस निश्चित अवधि का नाम है जिस के भीतर स्त्री के लिये तलाक़ या पति की मौत के पश्चात् दूसरे से विवाह करना अवैध और वर्जित होता है। तलाक़ के मूल नियम सूरह बकरा तथा सूरह अहज़ाब में वर्णित हुये हैं। इस आयत में तलाक़ देने का समय बताया गया है कि तलाक़ ऐसे समय में दी जाये जब इद्दत का आरंभ हो सके। अर्थात् मासिक धर्म की स्थिति में तलाक़ न दी जाये। और मासिक धर्म से पवित्र होने पर संभोग न किया गया हो तब तलाक़ दी जाये। «इद्दत के समय» से अभिप्राय यहाँ यही है। फिर यदि «तलाक़ रजई» दी हो तो निर्धारित अवधि पूरी होने तक वह अपने पति के घर ही में रहेगी। परन्तु यदि व्यभिचार कर जाये तो उसे घर से निकाला जा सकता है। नई बात उत्पन्न करने का अर्थ यह है कि अवधि के भीतर पति अपनी पत्नी को वापिस कर ले जिसे «रजअत» करना कहा जाता है। और यह बात «रजई तलाक़» में ही होती है। अर्थात् जब एक या दो तलाक़ ही दी हों। इस में यह संकेत भी है कि यदि पति तीन तलाक़ दे चुका हो जिस के पश्चात् पति को रजअत का अधिकार नहीं होता तो पत्नी को भी उस के घर में रहने का अधिकार नहीं रह जाता। और न पति पर इस अवधि में उस के खाने-कपड़े का भार होता है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे नबी! जब तुम लोग तलाक़ दो अपनी पत्नियों को तो उन्हें तलाक़

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعَدَّتِيَّوْنَ

दो उन की «इद्दत» के लिये, और गणना करो «इद्दत» की। तथा डरो अपने पालनहार, अल्लाह से। और न निकालो उन को उन के घरों से, और न वह स्वयं निकलें परन्तु यह कि वह कोई खुली बुराई कर जायें। तथा यह अल्लाह की सीमायें हैं। और जो उल्लंघन करेगा अल्लाह की सीमाओं का तो उस ने अत्याचार कर लिया अपने ऊपर। तुम नहीं जानते संभवतः अल्लाह कोई नई बात उत्पन्न कर दे इस के पश्चात्।

2. फिर जब पहुँचने लगे अपने निर्धारित अवधि को तो उन्हें रोक लो नियमानुसार अथवा अलग कर दो नियमानुसार।^[1] और गवाह (साक्षी) बनालो^[2] अपने में से दो न्यायकारियों को। तथा सीधी गवाही दो अल्लाह के^[3] लिये। इस की शिक्षा दी जा रही है उसे जो ईमान रखता हो अल्लाह तथा अन्त-दिवस (प्रलय) पर। और जो कोई डरता हो अल्लाह से तो वह बना देगा उस के लिये कोई निकलने का उपाय।
3. और उस को जीविका प्रदान करेगा उस स्थान से जिस का उसे अनुमान (भी) न हो। तथा जो अल्लाह पर निर्भर रहेगा तो वही उसे पर्याप्त है। निश्चय अल्लाह अपना कार्य पूरा कर

وَأَحْصُوا الْعِدَّةَ وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ لَا تُخْرِجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ وَلَا يُخْرِجَنَّ إِلَّا أَنْ يُبَيِّنَنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبِينَةٍ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ لَا تَدْرِي لَعَلَّ اللَّهَ يُخْرِتَ بِمَدَائِكِ أَمْرًا

وَإِذَا بَلَغَنَّ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهِدُوا ذَوَى عَدْلٍ مِنْكُمْ وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ذَلِكَ يُوعِظُ بِهِ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَنْ يَشْتَقِ اللَّهُ يُجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا

وَيَرْزُقُهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ إِنَّ اللَّهَ بِالْعُمُرِ أَهْلٌ فَجَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا

1 अर्थात् तलाक तथा रज्जत पर।

2 यदि एक या दो तलाक दी हो। (देखिये: सूरह बकरा, आयत: 229)

3 अर्थात् निष्पक्ष हो कर।

के रहेगा।^[1] अल्लाह ने प्रत्येक वस्तु के लिये एक अनुमान (समय) नियत कर रखा है।

4. तथा जो निराश^[2] हो जाती है मासिक धर्म से तुम्हारी स्त्रियों में से यदि तुम्हें संदेह हो तो उन की निर्धारित अवधि तीन मास है। तथा उन की जिन्हें मासिक धर्म न आता हो। और गर्भवती स्त्रियों की निर्धारित अवधि यह है कि प्रसव हो जाये। तथा जो अल्लाह से डरेगा वह उस के लिये उस का कार्य सरल कर देगा।
5. यह अल्लाह का आदेश है जिसे उतारा है तुम्हारी ओर, अतः जो अल्लाह से डरेगा^[3] वह क्षमा कर देगा उस से उस के दोषों को तथा प्रदान करेगा उसे बड़ा प्रतिफल।
6. और उन को (निर्धारित अवधि में)

وَالَّذِي يَتَّبِعُ مِنَ الْمَجْمُوعِ مِنْ نِسَائِكُمْ إِنْ ارْتَبْتُمْ فَوَدَّ تَهْنِئَةً ثَلَاثَةَ أَشْهُرٍ وَالَّذِي لَمْ يَجِدْ مِنْ أَوْلَادٍ الْأَحْوََالَ أَجْلُهُمْ أَنْ تَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ۝

ذَلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنْزَلَهُ إِلَيْكُمْ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ۝

أَسْأَلُكُمْ عَنْهُ مِنْ حَيْثُ سَأَلْتُمْ مِنْ دُونِكُمْ

- 1 अर्थात् जो दुःख तथा सुख भाग्य में अल्लाह ने लिखा है वह अपने समय में अवश्य पूरा होगा।
- 2 निश्चित अवधि से अभिप्राय वह अवधि है जिस के भीतर कोई स्त्री तलाक़ पाने के पश्चात् दूसरा विवाह नहीं कर सकती। और यह अवधि उस स्त्री के लिये जिसे दीर्घायु अथवा अल्पायु होने के कारण मासिक धर्म न आये तीन मास तथा गर्भवती के लिये प्रसव है। और मासिक धर्म आने की स्थिति में तीन मासिक धर्म पूरा होना है।
हदीस में है कि सुबैआ असलमिय्या (रज़ियल्लाहु अन्हा) के पति मारे गये तो वह गर्भवती थी। फिर चालीस दिन बाद उस ने शिशु जन्म दिया। और जब उस की मंगनी हुई तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उसे विवाह दिया। (सहीह बुखारी: 4909)
- 3 अर्थात् उस के आदेश का पालन करेगा।

रखो जहाँ तुम रहते हो अपनी शक्ति अनुसार। और उन्हें हानि न पहुँचाओ उन्हें तंग करने के लिये। और यदि वह गर्भवती हों तो उन पर खर्च करो यहाँ तक की प्रसव हो जाये। फिर यदि दूध पिलायें तुम्हारे (शिशु) लिये तो उन्हें उन का परिश्रामिक दो। और विचार-विमर्श कर लो आपस में उचित रूप^[1] से। और यदि तुम दोनों में तनाव हो जाये तो दूध पिलायेगी उस को कोई दूसरी स्त्री।

7. चाहिये की सम्पन्न (सुखी) खर्च दे अपनी कमाई के अनुसार, और तंग हो जिस पर उस की जीविका तो चाहिये कि खर्च दे उस में से जो दिया है उस को अल्लाह ने। अल्लाह भार नहीं रखता किसी प्राणी पर परन्तु उतना ही जो उसे दिया है। शीघ्र ही कर देगा अल्लाह तंगी के पश्चात् सुविधा।
8. कितनी बस्तियाँ^[2] थीं जिन के वासियों ने अवैज्ञा की अपने पालनहार और उस के रसूलों के आदेश की, तो हम ने हिसाब ले लिया उन का कड़ा हिसाब, और उन्हें यातना दी बुरी यातना।
9. तो उस ने चख लिया अपने कर्म का दुष्परिणाम और उन का कार्य-परिणाम विनाश ही रहा।
10. तय्यार कर रखी है अल्लाह ने उन

1 अर्थात् परिश्रामिक के विषय में।

2 यहाँ से अल्लाह की अवैज्ञा के दुष्परिणाम से सावधान किया जा रहा है।

وَلَا تَضْرِبُوا عَنْ أَيْدِيكُمْ إِلَيْهِمْ نَوَافِلَ إِنَّ أَنْفُسَكُمْ لَكُمْ وَأَنْتُمْ أَعْيُنٌ لَكُمْ فَاكْفَرْتُمْ وَأَنْتُمْ أَعْيُنٌ لَكُمْ فَاكْفَرْتُمْ وَأَنْتُمْ أَعْيُنٌ لَكُمْ فَاكْفَرْتُمْ وَأَنْتُمْ أَعْيُنٌ لَكُمْ فَاكْفَرْتُمْ

لِيُنْفِقَ ذُو سَعَةٍ مِّن سَعِيهِ وَمَن قَدَّرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ فَلْيُنْفِقْ حِسَابًا ۗ وَاللَّهُ لَا يَكْفُلُ الْآفَامَ الَّذِينَ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

وَكَانَ مِنْ قَوْمِ عَادٍ عَدَّتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرَسُولِهِ فَأَسْبَغْنَا حَسَابًا شَدِيدًا وَعَدَّبْنَا عَادَ أَبَانَ كُرًا ۗ

فَدَاقَتْ وَيَالَ أُمَّهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خَسِرًا ۗ

عَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۗ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي

के लिये भीषण यातना। अतः अल्लाह से डरो, हे समझ वालो, जो ईमान लाये हो! निःसंदेह अल्लाह ने उतार दी है तुम्हारी ओर एक शिक्षा।

11. (अर्थात्) एक रसूल^[1] जो पढ़ कर सुनाते हैं तुम को अल्लाह की खुली आयतें ताकि वह निकाले उन को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये अन्धकारों से प्रकाश की ओर। और जो ईमान लाये तथा सदाचार करेगा वह उसे प्रवेश देगा ऐसे स्वर्गों में प्रवाहित हैं जिन में नहरें, वह सदावासी होंगे उन में। अल्लाह ने उस के लिये उत्तम जीविका तैयार कर रखी है।
12. अल्लाह वह है जिस ने उत्पन्न किये सात आकाश तथा धरती में से उन्हीं के समान। वह उतारता है आदेश उन के बीच, ताकि तुम विश्वास करो कि अल्लाह जो कुछ चाहे कर सकता है। और यह की अल्लाह ने घेर रखा है प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान की पतिधि में।

الْكِتَابِ الَّذِينَ آمَنُوا وَقَدْ أُنزِلَ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۝

رَسُولًا يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِ اللَّهِ مَبِينَاتٍ لِّخُرُوجِ الَّذِينَ
آمَنُوا وَعَلِمُوا الصَّالِحَاتِ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَمَنْ
يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُحَلِّهِ خَلْقَهُ حَدَّثَتْ تَجْرِبِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَلَيْسَ أَفْئِدًا قَدْ أَحْسَنَ اللَّهُ
لَهُمْ رِزْقًا ۝

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ
يَتَنَزَّلُ الْأَنْزِيلُ فِيهَا أَنْ تَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝

1 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को। अंधकारों से अभिप्रायः कुफ्र, तथा प्रकाश से अभिप्रायः ईमान है।

सूरह तहरीम - 66



सूरह तहरीम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 12 आयतें हैं।

- इस का नाम इस की प्रथम आयत से लिया गया है। जिस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की एक चूक पर सावधान किया गया है। जो आप से आप की अपनी पत्नियों से प्रेम के कारण हुई। और आप की पत्नियों की भी पकड़ की गई है। और उन्हें अपना सुधार करने की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- इस की आयत 6 से 8 तक में ईमान वालों को अपनी पत्नियों का सुधार करने से निश्चिन्त न होने और अपना दायित्व निभाने का निर्देश दिया गया है कि उन्हें प्रलोक के दण्ड से बचाने के लिये भरपूर प्रयास करें।
- आयत 9 में काफ़िरों तथा मुनाफ़िकों से जिहाद करने का आदेश दिया गया है। जो सदा आप के तथा मुसलमान स्त्रियों के बारे में कोई न कोई उपद्रव मचाते थे।
- आयत 10 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की दो पत्नियों को चेतावनी दी गई है। और अन्त में दो सदाचारी स्त्रियों का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे नबी! क्यों हराम (अवैध) करते हैं उसे जो हलाल (वैध) किया है अल्लाह ने आप के लिये? आप अपनी पत्नियों की प्रसन्नता^[1] चाहते हैं? तथा अल्लाह

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ تَبْتَغِي مَرْضَاتَ أَزْوَاجِكَ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ①

1. हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अन्न की नमाज़ के पश्चात् अपनी सब पत्नियों के यहाँ कुछ देर के लिये जाया करते थे। एक बार कई दिन अपनी पत्नी ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) के यहाँ अधिक देर तक रह गये। कारण यह था कि वह आप को मधु पिलाती थी। आप की पत्नी आईशा तथा

अति क्षमी दयावान् है।

2. नियम बना दिया है अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारी शपथों से निकलने^[1] का। तथा अल्लाह संरक्षक है तुम्हारा, और वही सर्व ज्ञानी गुणी है।
3. और जब नबी ने अपनी कुछ पत्नियों से एक^[2] बात कही, तो उस ने उसे बता दिया, और अल्लाह ने उसे खोल दिया नबी पर, तो नबी ने कुछ से सूचित किया और कुछ को छोड़ दिया। फिर जब सूचित किया आप ने पत्नी को उस से तो उस ने कहा: किस ने सूचित किया आप को इस बात से? आप ने कहा: मुझे सूचित किया है सब जानने और सब से सूचित रहने वाले ने।
4. यदि तुम^[3] दोनों (हे नबी की पत्नियो!) क्षमा माँग लो अल्लाह से (तो तुम्हारे लिये उत्तम है), क्योंकि तुम दोनों के दिल कुछ झुक गये हैं। और यदि तुम दोनों एक-दूसरे की

قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ وَاللَّهُ مَوْلَاكُمْ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝

وَإِذْ أَسْرَأَ النَّبِيُّ إِلَىٰ بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا فَلَمَّا بَيَّنَّاتُ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَفَ بَعْضُهُ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِ قَالَتْ مَنْ أَنبَأَكَ هَذَا قَالَ نَبَّأَنِيَ الْعَلِيمُ الْخَبِيرُ ۝

إِنْ تَوُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا وَإِنْ تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ ۝

हफ़सा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने योजना बनाई कि जब आप आयें तो जिस के पास जायें वह यह कहे कि आप के मुँह से मगाफ़ीर (एक दुर्गाधित फूल) की गन्ध आ रही है। और उन्होंने यही किया। जिस पर आप ने शपथ ले ली कि अब मधु नहीं पीऊँगा। उसी पर यह आयत उतरी। (बुख़ारी: 4912) इस में यह संकेत भी है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को भी किसी हलाल को हराम करने अथवा हराम को हलाल करने का कोई अधिकार नहीं था।

- 1 अर्थात प्रयाश्चित दे कर उस को करने का जिस के न करने की शपथ ली हो। शपथ के प्रयाश्चित (कफ़ारा) के लिये देखिये: माइदा, आयत: 81।
- 2 अर्थात मधु न पीने की बात।
- 3 दोनों से अभिप्राय: आदरणीय आईशा तथा आदरणीय हफ़सा हैं।

सहायता करोगी आप के विरुद्ध तो निःसंदेह अल्लाह आप का सहायक है तथा जिब्रिल और सदाचारी ईमान वाले और फ़रिश्ते (भी) इन के अतिरिक्त सहायक हैं।

5. कुछ दूर नहीं कि आप का पालनहार यदि आप तलाक़ दे दें तुम सभी को तो बदले में दे आप को पत्नियाँ तुम से उत्तम, इस्लाम वालियाँ, इबादत करने वालियाँ, आज्ञा पालन करने वालियाँ, क्षमा माँगने वालियाँ, व्रत रखने वालियाँ, विधवायें तथा कुमारियाँ।

6. हे लोगो जो ईमान लाये हो! बचाओ^[1] अपने आप को तथा अपने परिजनों को उस अग्नि से जिस का ईंधन मनुष्य तथा पत्थर होंगे। जिस पर फ़रिश्ते नियुक्त हैं कड़े दिल, कड़े स्वभाव वाले। वह अवैज्ञा नहीं करते अल्लाह के आदेश की तथा वही करते हैं जिस का आदेश उन्हें दिया जाये।

7. हे काफ़िरो! बहाना न बनाओ आज, तुम्हें उसी का बदला दिया जा रहा है जो तुम करते रहे।

8. हे ईमान वाले! अल्लाह के आगे

عَلَىٰ رَبِّهِ إِنْ كَلَّفْتُمْ أَنْ تُبَدِّلَهُ أَزْوَاجًا
خَيْرًا مِنْكُمْ مُسْلِمَاتٍ مُؤْمِنَاتٍ قَنَاطٍ تَبَيَّنَ
عَهْدَاتٍ سَبِيحَتٍ تَبَيَّنَ وَأَجْمَارًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا
وَوُودَهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَائِكَةٌ غِلَاظٌ
شِدَادٌ لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ
وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ إِنَّمَا
تُجْرُونَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تُوبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَصُوحًا

- 1 अर्थात् तुम्हारा कर्तव्य है कि अपने परिजनों को इस्लाम की शिक्षा दो ताकि वह इस्लामी जीवन व्यतीत करें। और नरक का ईंधन बनने से बच जायें। हदीस में है कि जब बच्चा सात वर्ष का हो जाये तो उसे नमाज़ पढ़ने का आदेश दो। और जब दस वर्ष का हो जाये तो उसे नमाज़ के लिये (यदि ज़रूरत पड़े तो) मारो। (तिर्मिज़ी- 407)

पत्थर से अभिप्राय वह मुर्तियाँ हैं जिन्हें देवता और पूज्य बनाया गया था।

सच्ची^[1]तौबा करो। संभव है कि तुम्हारा पालनहार दूर कर दे तुम्हारी बुराईयाँ तुम से, तथा प्रवेश करा दे तुम्हें ऐसे स्वर्गों में बहती हैं जिन में नहरों। जिस दिन वह अपमानित नहीं करेगा नबी को और न उन को जो ईमान लाये हैं उन के साथ। उन का प्रकाश^[2] दौड़ रहा होगा उन के आगे तथा उन के दायें, वह प्रार्थना कर रहे होंगे: हे हमारे पालनहार! पूर्ण कर दे हमारे लिये हमारे प्रकाश को, तथा क्षमा कर दे हम को। वास्तव में तू जो चाहे कर सकता है।

عَلَىٰ رَبِّكُمْ أَنْ يَغْفِرَ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمُ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ
النَّبِيَّ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ
وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّهُمْ لَنَا نُورٌ وَآخِرُ لَنَا
إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

9. हे नबी! आप जिहाद करें काफ़िरों और मुनाफ़िकों से और उन पर कड़ाई करें^[3] उन का स्थान नरक है और वह बुरा स्थान है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ
عَلَيْهِمْ وَمَا لَهُمْ بِهِمْ وَمِمَّنَّ الْمَصِيرُ ۝

10. अल्लाह ने उदाहरण दिया है उन के लिये जो काफ़िर हो गये नूह की पत्नी तथा लूत की पत्नी का। जो दोनों विवाह में थीं दो भक्तों के हमारे सदाचारी भक्तों में से। फिर दोनों ने विश्वासघात^[4] किया उन से।

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتِ نُوحٍ
وَامْرَأَتِ لُوطٍ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا
صَالِحَيْنِ فَخَانَتَهُمَا فَأَمَّْا يُعَذِّبُهُمَا مِنَ اللَّهِ
شَيْئًا وَقِيلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الَّذِينَ خَلِين ۝

1 सच्ची तौबा का अर्थ यह है कि पाप को त्याग दे। और उस पर लज्जित हो तथा भविष्य में पाप न करने का संकल्प ले। और यदि किसी का कुछ लिया है तो उसे भरे और अत्याचार किया है तो क्षमा माँग ले।

2 देखिये: सूरह हदीद, आयत: 12)।

3 अर्थात् जो काफ़िर इस्लाम के प्रचार से रोकते हैं, और जो मुनाफ़िक उपद्रव फैलाते हैं उन से कड़ा संघर्ष करें।

4 विश्वासघात का अर्थ यह है कि आदरणीय नूह (अलैहिस्सलाम) की पत्नी ने ईमान तथा धर्म में उन का साथ नहीं दिया। आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह के यहाँ कर्म काम आयेगा। सम्बंध नहीं काम नहीं आयेंगे।

तो दोनों उन के, अल्लाह के यहाँ कुछ काम नहीं आये। तथा (दोनों स्त्रियों से) कहा गया कि प्रवेश कर जाओ नरक में प्रवेश करने वालों के साथ।

11. तथा उदाहरण^[1] दिया है अल्लाह ने उन के लिये जो ईमान लाये फिरऔन की पत्नी का। जब उस ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! बना दे मेरे लिये अपने पास एक घर स्वर्ग में, तथा मुझे मुक्त कर दे फिरऔन तथा उस के कर्म से, और मुझे मुक्त कर दे अत्याचारी जाति से।

12. तथा मर्यम, इम्रान की पुत्री का, जिस ने रक्षा की अपने सतीत्व की, तो फूँक दी हम ने उस में अपनी ओर से रूह (आत्मा)। तथा उस (मर्यम) ने सच्च माना अपने पालनहार की बातों और उस की पुस्तकों को। और वह इबादत करने वालों में से थी।

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ آمَنُوا امْرَأَاتٍ يُرْوَعُونَ
إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِي عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِنْ
فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِ وَنَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَدَتْ فَرجَهَا
فَنَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رُوحِنَا وَصَدَقَتْ بِكَلِمَاتِ رَبِّهَا
وَكُنْتِ مِنْ الصَّابِرِينَ ۝

1 हदीस में है कि पुरुषों में से बहुत पूर्ण हुये। पर स्त्रियों में इमरान की पुत्री मर्यम और फिरऔन की पत्नी आसिया ही पूर्ण हुई। और आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की प्रधानता नारियों पर वही है जो सरीद (एक प्रकार का खाना) की सब खानों पर है। (सहीह बुख़ारी: 3411, सहीह मुस्लिम: 2431)

सूरह मुल्क - 67



सूरह मुल्क के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 30 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ ही में अल्लाह के मुल्क (राज्य) की चर्चा की गई है। जिस से यह नाम लिया गया है।
- इस में मरण तथा जीवन का उद्देश्य बताते हुये आकाश तथा धरती की व्यवस्था पर विचार करने का आमंत्रण दिया गया है जिस से विश्व विधाता का ज्ञान होता है। और यह बात भी उजागर होती है कि मनुष्य का यह जीवन परीक्षा का जीवन है। और इस कुर्आन की बताई हुई बातों के इन्कार का दुष्परिणाम बताया गया है।
- आयत 13, 14 में उन का शुभपरिणाम बताया गया है जो अपने पालनहार से डरते रहते हैं। जो प्रत्येक खुली और छुपी बात को जानता है और उस से कोई बात छुपी नहीं रह सकती।
- अन्त में मनुष्य को सोच-विचार का आमंत्रण देते हुये उसे अचेतना से चौकाने का सामान किया गया है। यदि मनुष्य आँखें खोल कर इस विश्व को देखे तो कुर्आन का सच्च उजागर हो जायेगा। और वह अपने जीवन के लक्ष्य को समझ जायेगा। हदीस में है कि कुर्आन में तीस आयतों की एक सूरह है जिस ने एक व्यक्ति के लिये सिफारिश की यहाँ तक कि उसे क्षमा कर दिया गया। (सुनन अबू दाऊद: 1400, हाकिम 11565)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शुभ है वह अल्लाह जिस के हाथ में राज्य है। तथा वह जो कुछ चाहे कर सकता है।

تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

2. जिस ने उत्पन्न किया है मृत्यु तथा जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा

الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيُبْلِغَكُمْ آيَاتِهِ

ले कि तुम में किस का कर्म अधिक अच्छा है? तथा वह प्रभुत्वशाली अति क्षमावान् है।^[1]

3. जिस ने उत्पन्न किये सात आकाश ऊपर तले। तो क्या तुम देखते हो अत्यंत कृपाशील की उत्पत्ति में कोई असंगति? फिर पुनः देखो, क्या तुम देखते हो कोई दराड़?
4. फिर बार-बार देखो, वापिस आयेगी तुम्हारी ओर निगाह थक-हार कर।
5. और हम ने सजाया है संसार के आकाशों को प्रदीपों (ग्रहों) से। तथा बनाया है उन्हें (तारों को) मार भगाने का साधन शैतानों^[2] को, और तय्यार की है हम ने उन के लिये दहकती अग्नि की यातना।
6. और जिन्होंने कुफ़्र किया अपने पालनहार के साथ तो उनके लिये नरक की यातना है। और वह बुरा स्थान है।
7. जब वह फेंके जायेंगे उस में तो सुनेंगे उस की दहाड़ और वह खौल रही होगी।
8. प्रतीत होगा की फट पड़ेगी रोष (क्रोध) से, जब-जब फेंका जायेगा उस में कोई समूह तो प्रश्न करेंगे उन से उस के प्रहरी: क्या नहीं आया तुम्हारे पास कोई सावधान करने वाला (रसूल)?

أَحْسَنُ عَمَلًا وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١﴾

الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا مَا تَرَى فِي خَلْقِ
الرَّحْمَنِ مِنْ تَفْوُتٍ فَأَرْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرَى
مِنْ فُطُورٍ ﴿٢﴾

تُؤَرِّجُ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبُ إِلَيْكَ الْبَصَرُ
خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ﴿٣﴾

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحٍ
وَجَعَلْنَا رُجُومًا لِلشَّيْطَانِ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ
عَذَابَ السَّعِيرِ ﴿٤﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ
وَيَسَّ الْمُبْدِيَةِ ﴿٥﴾

إِذَا الْقُوفُ فِيهَا سَمِعُوا لَهَا شَهِيقًا وَهِيَ تَفُورٌ ﴿٦﴾

تَكَادُ تَمَيَّرُ مِنَ النَّارِ كُلَّمَا أَلْقَى فِيهَا نَوْجٌ
سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ﴿٧﴾

1 इस में आज्ञा पालन की प्रेरणा तथा अवैज्ञा पर चेतावनी है।

2 जो चोरी से आकाश की बातें सुनते हैं। (देखिये: सूरह साफ़ात आयत: 7, 10)

9. वह कहेंगे: हाँ हमारे पास आया सावधान करने वाला। पर हम ने झुठला दिया, और कहा कि नहीं उतारा है अल्लाह ने कुछ। तुम ही बड़े कुपथ में हो।

10. तथा वह कहेंगे: यदि हम ने सुना और समझा होता तो नरक के वासियों में न होते।

11. ऐसे वह स्वीकार कर लेंगे अपने पापों को। तो दूरी^[1] है नरक वासियों के लिये।

12. निःसंदेह जो डरते हों अपने पालनहार से बिन देखे उन्हीं के लिये क्षमा है तथा बड़ा प्रतिफल है।^[2]

13. तुम चुपके बोलो अपनी बात अथवा ऊँचे स्वर में। वास्तव में वह भली-भाँति जानता है सीनों के भेदों को।

14. क्या वह नहीं जानेगा जिस ने उत्पन्न किया? और वह सूक्ष्मदर्शक^[3] सर्व सूचित है?

15. वही है जिस ने बनाया है तुम्हारे लिये धरती को वशवर्ती, तो चलो फिरो उस के क्षेत्रों में तथा खाओ उस की प्रदान की हुई जीविका और उसी की ओर तुम्हें फिर जीवित हो कर जाना है।

قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ إِنَّا نَرَاهُ إِذْ نُنزَّلُ إِنَّا لَنَخِفُّ لَكِيۡمٍ ۝۱

وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝۱۰

فَاعْتَرَفُوا بِإِذْنِهِمْ فَسَحَّطَ اللَّهُ أَصْحَابَ السَّعِيرِ ۝۱۱

إِنَّ الْكَذِبَ يَخْسِفُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَعْرَفَةٌ وَأَجْرٌ كَثِيرٌ ۝۱۲

وَأَسْرُوۡا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِۦ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُوۡرِ ۝۱۳

أَلَمْ يَعْلَمِۦمَّنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۝۱۴

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُولًا فَامشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِن رِّزْقِهَا وَإِنَّهُ الثَّوۡرُ ۝۱۵

1 अर्थात् अल्लाह की दया से।

2 हदीस में है कि मैं ने अपने सदाचारी भक्तों के लिये ऐसी चीज़ तय्यार की है जिसे न किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी दिल ने सोचा। (सहीह बुखारी: 3244, सहीह मुस्लिम: 2824)

3 बारीक बातों को जानने वाला।

16. क्या तुम निर्भय हो गये हो उस से जो आकाश में है कि वह धँसा दे धरती में फिर वह अचानक काँपने लगे।
17. अथवा निर्भय हो गये उस से जो आकाश में है कि वह भेज दे तुम पर पथरीली वायु तो तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कैसा रहा मेरा सावधान करना?
18. झुठला चुके हैं इन^[1] से पूर्व के लोग तो कैसी रही मेरी पकड़?
19. क्या उन्होंने नहीं देखा पक्षियों की ओर अपने ऊपर पँख फैलाते तथा सिकोड़ते। उन को अत्यंत कृपाशील ही थामता है। निःसंदेह वह प्रत्येक वस्तु को देख रहा है।
20. कौन है वह तुम्हारी सेना जो तुम्हारी सहायता कर सकेगी अल्लाह के मुक़ाबले में? काफ़िर तो बस धोखे ही में हैं।
21. या कौन है जो तुम्हें जीविका प्रदान कर सके यदि रोक ले वह अपनी जीविका? बल्कि वह घुस गये हैं अवैज्ञा तथा घृणा में।^[2]
22. तो क्या जो चल रहा हो औँधा हो कर अपने मुँह के बल वह अधिक मार्गदर्शन पर है या जो सीधा हो कर चल रहा हो सीधी राह पर?^[3]

ءَأَمِنْتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يَخِفَّ بِكُمْ
الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورٌ ﴿١٦﴾

أَمْ أَمِنْتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ
حَاصِبًا أَفَسْتَعْمَلُونَ كَيْفَ نَذِيرٍ ﴿١٧﴾

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ
نَجِيرٍ ﴿١٨﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَفًى وَيَقْبِضْنَ
مَا يَسْأَلُهُنَّ إِلَّا الرِّجْمَ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ﴿١٩﴾

أَعَنْ هَذَا الَّذِي هُوَ جُنْدٌ لَكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِنْ
دُونِ الرَّحْمَنِ إِنَّ الْكُفْرَ الْإِنْفِرُ عُرُوبٌ ﴿٢٠﴾

أَعَنْ هَذَا الَّذِي يَرِيكُمْ أَنْ أَمْسَكَ
رِزْقَهُ بَلْ لَجُّوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ﴿٢١﴾

أَفَمَنْ يَمْشِي مُكِبًّا عَلَى وَجْهِهِ أَهْدَى
أَفَمَنْ يَمْشِي سَوِيًّا عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٢٢﴾

1 अर्थात मक्का वासियों से पहले आद, समूद आदि जातियों ने। तो लूत (अलैहिस्सलाम) की जाति पर पत्थरों की वर्षा हुई।

2 अर्थात सत्य से घृणा में।

3 इस में काफ़िर तथा ईमानधारी का उदाहरण है। और दोनों के जीवन- लक्ष्य को बताया गया है कि काफ़िर सदा मायामोह में रहते हैं।

23. हे नबी! आप कह दें कि वही है जिस ने पैदा किया है तुम्हें और बनाये हैं तुम्हारे कान तथा आँख और दिल। बहुत ही कम आभारी (कृतज्ञ) होते हो।
24. आप कह दें: उसी ने फैलाया है तुम्हें धरती में और उसी की ओर एकत्रित^[1] किये जाओगे।
25. तथा वह कहते हैं कि यह वचन कब पूरा होगा यदि तुम सच्चे हो?
26. आप कह दें: उस का ज्ञान बस अल्लाह ही को है। और मैं केवल खुला सावधान करने वाला हूँ।
27. फिर जब वह देखेंगे उसे समीप, तो बिगड़ जायेंगे उन के चेहरे जो काफ़िर हो गये। तथा कहा जायेगा: यह वही है जिस की तुम माँग कर रहे थे।
28. आप कह दें: देखो यदि अल्लाह नाश कर दे मुझ को तथा मेरे साथियों को अथवा दया करे हम पर, तो (बताओ कि) कौन है जो शरण देगा काफ़िरों को दुःखदायी^[2] यातना से?
29. आप कह दें: वह अत्यंत कृपाशील है। हम उस पर ईमान लाये तथा उसी पर भरोसा किया, तो तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कौन खुले कुपथ में है।

قُلْ هُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ
وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾

قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ
تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾

قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ
مُبِينٌ ﴿٢٦﴾

فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سَيِّئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا
وَقِيلَ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَدَّاعُونَ ﴿٢٧﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكَنِيَ اللَّهُ وَمَن مَّعِيَ
أَوْ رَحِمَنَا فَمَن يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابِ إِلَهِمْ ﴿٢٨﴾

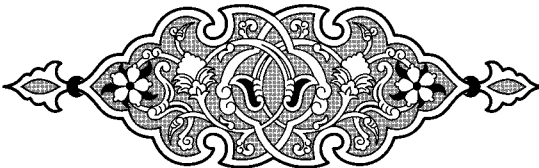
قُلْ هُوَ الرَّحِيمُ الْمَتَّابُ عَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا
فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٩﴾

1 प्रलय के दिन अपने कर्मों के लेख-जोखा तथा प्रतिकार के लिये।

2 अर्थात् तुम हमारा बुरा तो चाहते हो परन्तु अपनी चिन्ता नहीं करते।

30. आप कह दें: भला देखो यदि तुम्हारा पानी गहराई में चला जाये, तो कौन है जो तुम्हें ला कर देगा बहता हुआ जल?

قُلْ اَرَأَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَأْتِيكُمْ بِمَاءٍ مَّعِينٍ ﴿٣٠﴾



सूरह कलम - 68



सूरह कलम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 52 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ ही में कलम शब्द आया है। जिस से यह नाम लिया गया है। और इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बारे में बताया गया है कि आप का चरित्र क्या है। और जो आप के विरोधी आप को पागल कहते हैं वह कितने पतित (गिरे हुये) हैं।
- इस में शिक्षा के लिये एक बाग के स्वामियों का उदाहरण दिया गया है। जिन्होंने अल्लाह के कृतज्ञ न होने के कारण अपने बाग के फल खो दिये। फिर आज्ञाकारियों को स्वर्ग की शुभसूचना दी गई है। और विरोधियों के इस विचार का खण्डन किया गया है कि आज्ञाकारी और अपराधी बराबर हो जायेंगे।
- इस में बताया गया है कि आज जो अल्लाह को सज्दा करने से इन्कार करते हैं वह परलोक में भी उसे सज्दा नहीं कर सकेंगे।
- आयत 48 से 50 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को काफ़िरों के विरोध पर सहन करने के निर्देश दिये गये हैं।
- अन्त में बताया गया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह की बात बता रहे हैं, जो सब मनुष्यों के लिये सर्वथा शिक्षा है, आप पागल नहीं हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. नूना और शपथ है लेखनी (कलम) की तथा उस^[1] की जिसे वह लिखते हैं।

ن وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ

1 अर्थात् कूर्आन की। जिसे उतरने के साथ ही नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) लेखको से लिखवाते थे। जैसे ही कोई सूरह या आयत उतरती लेखक कलम तथा चमड़ों और झिल्लियों के साथ उपस्थित हो जाते थे, ताकि पूरे संसार के मनुष्यों

2. नहीं है आप अपने पालनहार के अनुग्रह से पागल।
3. तथा निश्चय प्रतिफल (बदला) है आप के लिये अनन्त।
4. तथा निश्चय ही आप बड़े सुशील हैं।
5. तो शीघ्र आप देख लेंगे, तथा वह (काफ़िर भी) देख लेंगे।
6. कि पागल कौन है।
7. वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है उसे जो कुपथ हो गया उस की राह से। और वही अधिक जानता है उन्हें जो सीधी राह पर हैं।
8. तो आप बात न माने झुठलाने वालों की।
9. वह चाहते हैं कि आप ढीले हो जायें तो वह भी ढीले हो^[1] जायें।
10. और बात न मानें^[2] आप किसी अधिक

مَا أَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُونٍ ۝

وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مَمْنُونٍ ۝

وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ ۝

فَسَبِّحْهُ وَبُحِّصْ رُودَهُ ۝

بِأَيِّكُمُ الْمَفْتُونُ ۝

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ
وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝

فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِينَ ۝

وَدُّوا الْوَتْنَ مِنْ قَيْدِ هُنُونَ ۝

وَلَا تُطِعِ كُلَّ حَلَّادٍ مَهِينٍ ۝

को कुर्आन अपने वास्तविक रूप में पहुँच सके। और सदा के लिये सुरक्षित हो जाये। क्योंकि अब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पश्चात् कोई नबी और कोई पुस्तक नहीं आयेगी। और प्रलय तक के लिये अब पूरे संसार के नबी आप ही हैं। और उन के मार्ग दर्शन के लिये कुर्आन ही एकमात्र धर्म पुस्तक है। इसीलिये इसे सुरक्षित कर दिया गया है। और यह विशेषता किसी भी आकाशीय ग्रन्थ को प्राप्त नहीं है। इसलिये अब मोक्ष के लिये अन्तिम नबी तथा अन्तिम धर्म ग्रन्थ कुर्आन पर ईमान लाना अनिवार्य है।

- 1 जब काफ़िर, इस्लाम के प्रभाव को रोकने में असफल हो गये तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धमकी और लालच देने के पश्चात्, कुछ लो और कुछ दो की नीति पर आ गये। इसलिये कहा गया कि आप उन की बातों में न आयें। और परिणाम की प्रतीक्षा करें।
- 2 इन आयतों में किसी विशेष काफ़िर की दशा का वर्णन नहीं बल्कि काफ़िरों के

शपथ लेने वाले हीन व्यक्ति की।

11. जो व्यंग करने वाला, चुगलियाँ खाता फिरता है।
12. भलाई से रोकने वाला, अत्याचारी, बड़ा पापी है।
13. घमंडी है और इस के पश्चात् कुवंश (वर्णन संकर) है।
14. इस लिये कि वह धन तथा पुत्रों वाला है।
15. जब पढ़ी जाती है उस पर हमारी आयतें तो कहता है: यह पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं।
16. शीघ्र ही हम दाग लगा देंगे उस के सूंड^[1] पर।
17. निःसंदेह हम ने उन को परीक्षा में डाला^[2] है जिस प्रकार बाग वालों को परीक्षा में डाला था। जब उन्होंने शपथ ली कि अवश्य तोड़ लेंगे उस के फल भोर होते ही।
18. और इन्शा अल्लाह (यदि अल्लाह ने

هَذَا مَشَاءٌ يَسْمِيهِ ۝

مَتَاعٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَيْنَهُ ۝

عُتِلَ بَعْدَ ذَلِكَ زَيْبُهُ ۝

أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ۝

إِذَا تَلَىٰ عَلَيْهِ الْإِنشَاءَ قَالَ سَاطِرُ أَوَّلِينَ ۝

سَسِئَةٌ عَلَى الْعُرْطُونَ ۝

إِنَّا بَلَوْنَهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ

إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ۝

وَلَا يَسْتَنْوُونَ ۝

प्रमुखों के नैतिक पतन तथा कुविचारों और दुराचारों को बताया गया है जो लोगों को इस्लाम के विरोध उकसा रहे थे। तो फिर क्या इन की बात मानी जा सकती है?

- 1 अर्थात् नाक पर जिसे वह घमंड से ऊँची रखना चाहता है। और दाग लगाने का अर्थ अपमानित करना है।
- 2 अर्थात् मक्का वालों को। इसलिये यदि वह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर ईमान लायेंगे तो उन पर सफलता की राह खुलेगी। अन्यथा संसार और परलोक दोनों की यातना के भागी होंगे।

चाहा) नहीं कहा।

19. तो फिर गया उस (बाग़) पर एक कुचक्र आप के पालनहार की ओर से, और वह सोये हुये थे।
20. तो वह हो गया जैसे उजाड़ खेती हो।
21. अब वे एक-दूसरे को पुकारने लगे भोर होते ही:
22. कि तड़के चलो अपनी खेती पर यदि फल तोड़ने हैं।
23. फिर वह चल दिये आपस में चुपके-चुपके बातें करते हुये।
24. कि कदापि न आने पाये उस (बाग़) के भीतर आज तुम्हारे पास कोई निर्धन^[1]।
25. और प्रातः ही पहुँच गये कि वह फल तोड़ सकेंगे।
26. फिर जब उसे देखा तो कहा: निश्चय हम राह भूल गये।
27. बल्कि हम वंचित हो^[2] गये।
28. तो उन में से बिचले भाई ने कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि तुम (अल्लाह की) पवित्रता का वर्णन क्यों नहीं करते?
29. वह कहने लगे: पवित्र है हमारा

قَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿٢٩﴾

فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيرِ ﴿٣٠﴾

فَتَنَادَوُا مُصْبِحِينَ ﴿٣١﴾

أِنِ انْعَدُّوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾

فَاَنْطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخٰفَتُوْنَ ﴿٣٣﴾

اِنْ لَا يَدْخُلُهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سٰكِنٍ ﴿٣٤﴾

وَعَدَدًا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ ﴿٣٥﴾

فَلَمَّآ رَاُوْهَا قَالُوْۤا اِنَّا لَضٰلُّوْنَ ﴿٣٦﴾

بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٣٧﴾

قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ ﴿٣٨﴾

قَالُوْۤا سُبْحٰنَ رَبِّنَا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٣٩﴾

1 ताकि उन्हें कुछ दान न करना पड़े।

2 पहले तो सोचा कि राह भूल गये हैं। किन्तु फिर देखा कि बाग़ तो उन्हीं का है तो कहा कि यह तो ऐसा उजाड़ हो गया है कि अब कुछ तोड़ने के लिये रह ही नहीं गया है। वास्तव में यह हमारा दुर्भाग्य है।

पालनहार! वास्तव में हम ही
अत्याचारी थे।

30. फिर सम्मुख हो गया एक-दूसरे की
निन्दा करते हुये।
31. कहने लगे हाय अफ़सोस! हम ही
विद्रोही थे।
32. संभव है हमारा पालनहार हमें बदले
में प्रदान करे इस से उत्तम (बाग़)।
हम अपने पालनहार ही की ओर रुचि
रखते हैं।
33. ऐसे ही यातना होती है और आख़िरत
(परलोक) की यातना इस से भी बड़ी
है। काश वह जानते!
34. निःसंदेह सदाचारियों के लिये उन के
पालनहार के पास सुखों वाले स्वर्ग हैं।
35. क्या हम आज्ञाकारियों^[1] को पापियों
के समान कर देंगे?
36. तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसा
निर्णय कर रहे हो?
37. क्या तुम्हारे पास कोई पुस्तक है जिस
में तुम पढ़ते हो?
38. कि तुम्हें वही मिलेगा जो तुम चाहोगे?
39. या तुम ने हम से शपथें ले रखी हैं जो
प्रलय तक चली जायेंगी कि तुम्हें वही
मिलेगा जिस का तुम निर्णय करोगे?

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَلَآؤُونَ ۝

تَالْوَالِيَيْنِ أَتَانَا كَتَابِغِينَ ۝

عَسَىٰ رَبِّنَا أَنْ يَبْدِلَنَا خَيْرًا مِنْهَا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا
رُغَبُونَ ۝

كَذَلِكَ الْعَذَابُ وَالْعَذَابُ الْآخِرَةُ أَكْبَرُ
لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝

إِنَّ الْمُتَّقِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ حَبِّتُ التَّجِمِ ۝

أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ۝

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۝

أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ۝

إِنْ لَكُمْ فِيهِ لَمَّا تَحْزُرُونَ ۝

أَمْ لَكُمْ إِيْمَانٌ عَلَيْنَا بِالْعَذَابِ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ
إِنْ لَكُمْ لَمَّا تَحْكُمُونَ ۝

1 मक्का के प्रमुख कहते थे कि यदि प्रलय हुई तो वहाँ भी हमें यही संसारिक सुख-सुविधा प्राप्त होंगी। जिस का खण्डन इस आयत में किया जा रहा है। अभिप्राय यह है कि अल्लाह के हाँ देर है पर अंधेर नहीं है।

40. आप उन से पूछिये कि उन में कौन इस की ज़मानत लेता है?
41. क्या उन के कुछ साझी हैं? फिर तो वह अपने साझियों को लायें^[1] यदि वह सच्चे हैं।
42. जिस दिन पिंडली खोल दी जायेगी और वह बुलाये जायेंगे सज्दा करने के लिये तो (सज्दा) नहीं कर सकेंगे^[2]।
43. उन की आँखें झुकी होंगी, और उन पर अपमान छाया होगा। वह (संसार में) सज्दा करने के लिये बुलाये जाते रहे और वह स्वस्थ थे।
44. अतः आप छोड़ दें मुझे तथा उसे जो झुठला रहा है इस बात (क़र्आन) को, हम उन्हें धीरे-धीरे खींच लायेंगे^[3] इस प्रकार कि उन्हें ज्ञान भी नहीं होगा।
45. तथा हम उन्हें अवसर दे रहे हैं^[4] वस्तुतः हमारा उपाय सुदृढ़ है।
46. तो क्या आप माँग कर रहे हैं किसी परिश्रामिक^[5] की, तो वह बोझ से

سَلُّهُمْ أَيُّهُمْ بِذَلِكَ رَعِيْبٌ ۝

أَمْ لَمْ تُشْرِكُوا فَمَا أَشْرَكَابِهِمْ إِنْ كَانُوا
صٰدِقِيْنَ ۝

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى
السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ۝

خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهُفُهُمْ ذَّلَّةٌ وَقَدَّ كَانُوا
يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ سَلِيمُونَ ۝

فَدَّرَنِي وَمَنْ يَكْدِبْ بِهَذَا الْحَدِيثِ
سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَأُمْلِي لَهُمْ إِنْ كِيدِي مِتِينَ ۝

أَمْ سَأَلْتَهُمُ اجْرًا فَهُمْ مِنْ مَّعْرَمٍ مَّنْقُلُونَ ۝

1 ताकि वह उन्हें अच्छा स्थान दिला दें।

2 हदीस में है कि प्रलय के दिन अल्लाह अपनी पिंडली खोलेगा तो प्रत्येक मोमिन पुरुष तथा स्त्री सज्दे में गिर जायेंगे। हाँ वह शेष रह जायेंगे जो दिखावे और नाम के लिये (संसार में) सज्दे किया करते थे। वह सज्दा करना चाहेंगे परन्तु उन की रीढ़ की हड्डी तख्त के समान बन जायेगी जिस के कारण उन के लिये सज्दा करना असंभव हो जायेगा। (बुख़ारी: 4919)

3 अर्थात् उन के बुरे परिणाम की ओर।

4 अर्थात् संसारिक सुख-सुविधा में मग्न रखेंगे। फिर अन्ततः वह यातना में ग्रस्त हो जायेंगे।

5 अर्थात् धर्म के प्रचार पर।

दबे जा रहे हैं?

47. या उन के पास ग़ैब का ज्ञान है जिसे वह लिख^[1] रहे हैं?
48. तो आप धैर्य रखें अपने पालनहार के निर्णय तक और न हो जायें मछली वाले के समान^[2] जब उस ने पुकारा और वह शोक पूर्ण था।
49. और यदि न पा लेती उसे उस के पालनहार की दया तो वह फेंक दिया जाता बंजर में, और वह बुरी दशा में होता।
50. फिर चुन लिया उसे उस के पालनहार ने और बना दिया उसे सदाचारियों में से।
51. और ऐसा लगता है कि जो काफ़िर हो गये वह अवश्य फिसला देंगे आप को अपनी आँखों से (घूर कर) जब वह सुनते हों कुर्आन को। तथा कहते हैं कि वह अवश्य पागल है।
52. जब कि यह (कुर्आन) तो बस एक^[3] शिक्षा है पूरे संसार वासियों के लिये।

أَمْعِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُمُونَ ﴿٥٧﴾

فَأَصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ ﴿٥٨﴾

لَوْلَا أَن تَدْرِكُهُ نِعْمَةٌ مِن رَّبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ﴿٥٩﴾

فَاجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٦٠﴾

وَأَن يَكْفُرُوا الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَّا الَّذِينَ ظَنَنَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ﴿٦١﴾

وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ﴿٦٢﴾

- 1 या लौहे महफूज़ (सुरक्षित पुस्तक) उन के अधिकार में है इस लिये आप का आज्ञा पालन नहीं करते और उसी से ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं?
- 2 इस से अभिप्राय यूनस (अलैहिस्सलाम) हैं जिन को मछली ने निगल लिया था। (देखिये: सूरह साफ़ात, आयत: 139)
- 3 इस में यह बताया गया है कि कुर्आन केवल अरबों के लिये नहीं, संसार के सभी देशों और जातियों की शिक्षा के लिये उतरा है।

सूरह हाक्का - 69



सूरह हाक्का के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 52 आयतें हैं।

- इस का प्रथम शब्द ((अल हाक्का)) है जिस से यह नाम लिया गया है। और इस का अर्थ है: वह घड़ी जिस का आना सच्च है। इस में प्रलय के अवश्य आने की सूचना दी गई है।
- आयत 4 से 12 तक उन जातियों की यातना द्वारा शिक्षा दी गई है जिन्होंने प्रलय का इन्कार किया तथा रसूलों को झुठलाया। फिर आयत 13 से 18 तक प्रलय का भ्याव: दृश्य दिखाया गया है।
- आयत 19 से 37 तक सदाचारियों तथा दुराचारियों का परिणाम बताया गया है। फिर काफिरों को संबोधित कर के उन पर कुर्आन तथा रसूल की सच्चाई को उजागर किया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अल्लाह की तस्बीह (पवित्रतागान) बयान करते रहने का आदेश दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जिस का होना सच्च है।
2. वह क्या है जिस का होना सच्च है?
3. तथा आप क्या जानें कि क्या है जिस का होना सच्च है?
4. झुठलाया समूद तथा आद (जाति) ने अचानक आ पड़ने वाली (प्रलत)को।
5. फिर समूद, तो वह ध्वस्त कर दिये गये अति कड़ी ध्वनी से।
6. तथा आद, तो वह ध्वस्त कर दिये

الْحَاقَّةُ ۝

مَا الْحَاقَّةُ ۝

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحَاقَّةُ ۝

كَذَّبَتْ شَمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ۝

فَأَمَّا شَمُودُ فَاهْلِكُوا بِالطَّغْيَةِ ۝

وَأَمَّا عَادُ فَاهْلِكُوا بِرِيحٍ صَوَّارٍ عَاتِيَةٍ ۝

गये एक तेज़ शीतल आँधी से।

7. लगाये रखा उसे उन पर सात रातें तथा आठ दिन निरन्तर, तो आप देखते कि वह जाति उस में ऐसे पछाड़ी हुई है जैसे खजूर के खोकले तने।^[1]
8. तो क्या आप देखते हैं कि उन में से कोई शेष रह गया है?
9. और किया यही पाप फिरऔन ने और जो उस के पूर्व थे, तथा जिन की बस्तियाँ औधी कर दी गईं।
10. उन्होंने नहीं माना अपने पालनहार के रसूल को। अन्ततः उस ने पकड़ लिया उन्हें, कड़ी पकड़।
11. हम ने, जब सीमा पार कर गया जल, तो तुम्हें सवार कर दिया नाव^[2] में।
12. ताकि हम बना दें उसे तुम्हारे लिये एक शिक्षा प्रद यादगार। और ताकि सुरक्षित रख लें इसे सुनने वाले कान।
13. फिर जब फूँक दी जायेगी सूर नरसिंघा) में एक फूँक।
14. और उठाय़ा जायेगा धरती तथा पर्वतों को तो दोनों चूर-चूर कर दिये जायेंगे^[3] एक ही बार में।
15. तो उसी दिन होनी हो जायेगी।

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَمَنِيَةً أَيَّامًا
حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَى كَأَنَّهُمْ
أَعْجَازٌ مُنْقَلَبَةٌ خَاوِيَةٌ ۝

قَهْلٌ تَرَى لَهُمْ مِنْ بَاقِيَةٍ ۝

وَجَاءَ فُرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفِكَاتُ
بِالْحَاطِئَةِ ۝

فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخَذَةً
رَّابِيَةً ۝

إِنَّا لَنَاطِقُهَا الْمَاءَ حَمَلْنَاكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ۝

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكُرَةً وَتَعِيماً أُنزِلُ
وَأَعْيَةَ ۝

فَإذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ۝

وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً
وَاحِدَةً ۝

فِيَوْمٍ مِيَدٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝

- 1 उन के भारी और लम्बे होने की उपमा खजूर के तने से दी गई है।
- 2 इस में नूह (अलैहिससलाम) के तूफ़ान की ओर संकेत है। और सभी मनुष्य उन की संतान हैं इसलिये यह दया सब पर हुई है।
- 3 देखिये: सूरह ताहा, आयत: 20, आयत: 103, 108।

16. तथा फट जायेगा आकाश, तो वह उस दिन क्षीण निर्बल हो जायेगा।
17. और फरिश्ते उस के किनारों पर होंगे तथा उठाये होंगे आप के पालनहार के अर्श (सिंहासन) को अपने ऊपर उस दिन आठ फरिश्ते।
18. उस दिन तुम (अल्लाह के पास) उपस्थित किये जाओगे, नहीं छुपा रह जायेगा तुम में से कोई।
19. फिर जिसे दिया जायेगा उस का कर्मपत्र दायें हाथ में वह कहेगा: यह लो मेरा कर्मपत्र पढ़ो।
20. मुझे विश्वास था कि मैं मिलने वाला हूँ अपने हिसाब से।
21. तो वह अपने मन चाहे सुख में होगा।
22. उच्च श्रेणी के स्वर्ग में।
23. जिस के फलों के गुच्छे झुक रहे होंगे।
24. (उन से कहा जायेगा): खाओ तथा पियो आनन्द ले कर उस के बदले जो तुम ने किया है विगत दिनों (संसार) में।
25. और जिसे दिया जायेगा उस का कर्मपत्र उस के बायें हाथ में तो वह कहेगा: हाय! मुझे मेरा कर्मपत्र दिया ही न जाता!
26. तथा मैं न जानता कि क्या है मेरा हिसाब?!

وَأَنشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ۝

وَالْمَلَائِكَةُ عَلَىٰ أَصْفَادِهِمْ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَلَاثَةٌ ۝

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۝

فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَيَقُولُ مَا أُوْمِرْتُ إِلَّا فِعْلًا ۝

إِنِّي ظَنَنْتُ أَنِّي مُلْكٌ حَسْبَابِيَةٍ ۝

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝

فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝

تُطَوَّفُ فِيهَا دَارِيْنَةٌ ۝

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ۝

وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ فَيَقُولُ يُلَيِّنُنِي لِمَا أُرِيدُ أَن مَّا حَسْبَابِيَةٍ ۝

وَأَلَمْ أَدْرِمَا حَسْبَابِيَةٍ ۝

27. काश मेरी मौत ही निर्णायक^[1] होती!
28. नहीं काम आया मेरा धन।
29. मुझ से समाप्त हो गया मेरा प्रभुत्वा^[2]
30. (आदेश होगा कि) उसे पकड़ो और उस के गले में तौक डाल दो।
31. फिर नरक में उसे झोंक दो।
32. फिर उसे एक जंजीर, जिस की लम्बाई सत्तर गज़ है में जकड़ दो।
33. वह ईमान नहीं रखता था महिमाशाली अल्लाह पर।
34. और न प्रेरणा देता था दरिद्र को भोजन कराने की।
35. अतः नहीं है उस का आज यहाँ कोई मित्र।
36. और न कोई भोजन, पीप के सिवा।
37. जिसे पापी ही खायेंगे।
38. तो मैं शपथ लेता हूँ उस की जो तुम देखते हो।
39. तथा जो तुम नहीं देखते हो।
40. निःसंदेह यह (कुर्आन) अदरणीय रसूल का कथन^[3] है।

يَلَيْتَمَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۝

مَا أَخْفَىٰ عَنِّي مَالِيَةَ ۝

هَلَاكَ عَنِّي سُلْطَنِيَةَ ۝

خُدُوهُ فَعُلُوهُ ۝

ثُمَّ الْوَجِيمَ صَلْوَهُ ۝

ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا

فَأَسْكُرُوه ۝

إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ۝

وَلَا يَحْضُ عَلَىٰ طَعَامِ الْبِسْكَينِ ۝

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هُنَا حَمِيمٌ ۝

وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غَنِينٍ ۝

لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ ۝

فَلَا أُنْسُ لَهُمْ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ ۝

وَمَا لَا يُبْصِرُونَ ۝

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝

1 अर्थात् उस के पश्चात् मैं फिर जीवित न किया जाता।

2 इस का दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि परलोक के इन्कार पर जितने तक दिया करता था आज सब निष्फल हो गये।

3 यहाँ अदरणीय रसूल से अभिप्राय मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) है। तथा सूरह तकवीर आयत 19 में फ़रिश्ते जिब्रील (अलैहिससलाम) जो वही

41. और वह किसी कवि का कथन नहीं है।
तुम लोग कम ही विश्वास करते हो।
42. और न यह किसी ज्योतिषी का कथन है, तुम कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो।
43. सर्वलोक के पालनहार का उतारा हुआ है।
44. और यदि इस (नबी) ने हम पर कोई बात बनाई^[1] होती।
45. तो अवश्य हम पकड़ लेते उस का सीधा हाथ।
46. फिर अवश्य काट देते उस के गले की रग।
47. फिर तुम से कोई (मुझे) उस से रोकने वाला न होता।
48. निःसंदेह यह एक शिक्षा है सदाचारियों के लिये।
49. तथा वास्तव में हम जानते हैं कि तुम में कुछ झुठलाने वाले हैं।
50. और निश्चय यह पछतावे का कारण होगा काफिरों^[2] के लिये।

وَمَا هُوَ يَقُولُ شَاعِرٌ قَلِيلًا مَّا تُوْمِنُونَ ۝

وَلَا يَقُولُ كَاهِنٌ قَلِيلًا مَّا تَدَّكُرُونَ ۝

تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضُ الْأَقَاوِيلِ ۝

لَأَخَذْنَا مِمَّنْهُ بِالْيَمِينِ ۝

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ۝

فَمَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ ۝

وَإِنَّهُ لَتَذَكُّرٌ لِّلْمُتَّقِينَ ۝

وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِينَ ۝

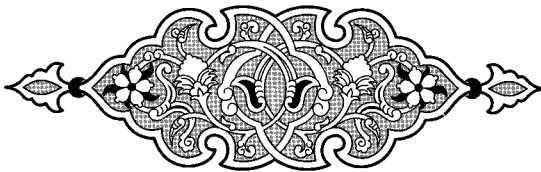
وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

लाते थे वह अभिप्राय हैं। यहाँ कुर्आन को आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन इस अर्थ में कहा गया है कि लोग उसे आप से सुन रहे थे। और इसी प्रकार आप जिबरील (अलैहिस्सलाम) से सुन रहे थे। अन्यथा वास्तव में कुर्आन अल्लाह ही का कथन है जैसा कि आगामी आयत: 43 में आ रहा है।

- 1 इस आयत का भावार्थ यह है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अपनी ओर से वही (प्रकाशना) में कुछ अधिक या कम करने का अधिकार नहीं है। यदि वह ऐसा करेंगे तो उन्हें कड़ी यातना दी जायेगी।
- 2 अर्थात् जो कुर्आन को नहीं मानते वह अन्ततः पछतायेंगे।

51. वस्तुतः यह विश्वासनीय सत्य है।
52. अतः आप पवित्रता का वर्णन करें अपने महिमावान पालनहार के नाम की।

وَأِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ﴿٥١﴾
 فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٥٢﴾



सूरह मआरिज - 70



सूरह मआरिज के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 44 आयतें हैं।

- इस की आयत 3 में ((ज़िल मआरिज)) का शब्द आया है। उसी से यह नाम लिया गया है जिस का अर्थ है: ऊँचाईयों वाला।
- इस में क़्यामत (प्रलय) की यातना की जल्दी मचाने वालों को सूचित किया गया है कि वह यातना अपने समय पर अवश्य आ कर रहेगी। फिर प्रलय की दशा को बताया गया है कि वह कितनी भीषण घड़ी होगी।
- आयत 19 से 25 तक मनुष्य की साधारण कमज़ोरी का वर्णन करते हुये यह बताया गया है कि इसे इबादत (नमाज़) के द्वारा ही दूर किया जा सकता है जिस से वह गुण पैदा होते हैं जिन से मनुष्य स्वर्ग के योग्य होता है।
- अन्तिम आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का उपहास करने वालों और कुर्आन सुनाने से आप को रोकने के लिये आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर पिल पड़ने वालों को कड़ी चेतावनी दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

1. प्रश्न किया एक प्रश्न करने^[1] वाले ने उस यातना के बारे में जो आने वाली है।
2. काफ़िरोँ पर। नहीं है जिसे कोई दूर करने वाला।
3. अल्लाह ऊँचाईयों वाले की ओर से।

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ

لِّلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ

مِّنَ اللّٰهِ ذِي الْمَعَارِجِ

1 कहा जाता है कि नज़र पुत्र हारिस अथवा अबू जहल ने यह माँग की थी, कि ((हे अल्लाह यदि यह सत्य है तेरी ओर से तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा दे))। (देखिये: सूरह अन्फाल, आयत: 32)

4. चढ़ते हैं फ़रिश्ते तथा रूह^[1] जिस की ओर, एक दिन में जिस का माप पचास हज़ार वर्ष है।
5. अतः (हे नबी!) आप सहन^[2] करें अच्छे प्रकार से।
6. वह समझते हैं उस को दूर।
7. और हम देख रहे हैं उसे समीप।
8. जिस दिन हो जायेगा आकाश पिघली हुई धात के समान।
9. तथा हो जायेंगे पर्वत रंगा-रंग धुने हुये ऊन के समान^[3]।
10. और नहीं पूछेगा कोई मित्र किसी मित्र को।
11. (जब कि) वह उन्हें दिखाये जायेंगे। कामना करेगा पापी कि दण्ड के रूप में दे दे उस दिन की यातना के अपने पुत्रों को।
12. तथा अपनी पत्नी और अपने भाई को।
13. तथा अपने समीपवर्ती परिवार को जो उसे शरण देता था।
14. और जो धरती में है सभी^[4]को फिर

تَعْرِجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ
مُقَدَّارُهُ عَشْرِينَ آَلْفَ سَنَةٍ ۝

فَأَصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا ۝

إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ۝

وَنُرَاهُ قَرِيبًا ۝

يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالذَّهَبِ
الْمُهْلِ ۝

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۝

وَلَا يَسْأَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا ۝

يُبْصِرُ وَيَصْفُرُ وَيُؤْتِي الْمُجْرِمَ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ
عَذَابِ يَوْمِئِذٍ بِبَنِيهِ ۝

وَصَاحِبِئِهِ وَأَخِيهِ ۝

وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤْوِيهِ ۝

وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا لَنُحْيِيَهُ ۝

1 रूह से अभिप्राय फ़रिश्ता जिब्रील (अलैहिस्सलाम) है।

2 अर्थात् संसार में सत्य को स्वीकार करने से।

3 देखिये: सूरह क़ारिआ।

4 हदीस में है कि जिस नारकी को सब से सरल यातना दी जायेगी, उस से अल्लाह कहेगा: क्या धरती का सब कुछ तुम्हें मिल जाये तो उसे इस के दण्ड में दे दोगे? वह कहेगा: हाँ। अल्लाह कहेगा: तुम आदम की पीठ में थे, तो मैं ने तुम से इस से सरल की माँग की थी कि मेरा किसी को साझी न बनाना तो तुम ने इन्कार

- वह उसे यातना से बचा दे।
15. कदापि (ऐसा) नहीं (होगा)।
16. वह अग्नि की ज्वाला होगी।
17. खाल उधेड़ने वाली।
18. वह पुकारेगी उसे जिस ने पीछा दिखाया^[1] तथा मुँह फेरा।
19. तथा (धन) एकत्र किया फिर सौत कर रखा।
20. वास्तव में मनुष्य अत्यंत कच्चे दिल का पैदा किया गया है।
21. जब उसे पहुँचता है दुःख तो उद्विग्न हो जाता है।
22. और जब उसे धन मिलता है तो कंजूसी करने लगता है।
23. परन्तु जो नमाज़ी हैं।
24. जो अपनी नमाज़ का सदा पालन^[2] करते हैं।
25. और जिन के धनों में निश्चित भाग है याचक (माँगने वाला), तथा वंचित^[3] का।
26. तथा जो सत्य मानते हैं प्रतिकार (प्रलय) के दिन को।

كَلَّا إِنَّهَا لَأَطْمَىٰ ۝

سَزَاءَةً لِّلشَّوْىٰ ۝

تَدْعُوَامِنْ أَدْبُرٍ وَتَوَلَّىٰ ۝

وَجَمَعَ فَأَوْعَىٰ ۝

إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ۝

إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جُرُوعًا ۝

وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ۝

إِلَّا الْمَصْلِيْنَ ۝

الَّذِيْنَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ۝

وَالَّذِيْنَ فِيْ أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ۝

لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۝

وَالَّذِيْنَ يَصِدَّقُونَ فِيْ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝

किया और शिर्क किया। (सहीह बुख़ारी: 6557, सहीह मुस्लिम: 2805)

1 अर्थात सत्य से।

2 अर्थात बड़ी पाबंदी से नमाज़ पढ़ते हों।

3 अर्थात जो न माँगने के कारण वंचित रह जाता है।

27. तथा जो अपने पालनहार की यातना से डरते हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ مِنْ عَذَابٍ رَتِيبِهِمْ مُشْفِقُونَ ﴿٢٧﴾

28. वास्तव में आप के पालनहार की यातना निर्भय रहने योग्य नहीं है।

إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَا تُوعُونَ ﴿٢٨﴾

29. तथा जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ لِعُرْوَجِهِمْ حَافِظُونَ ﴿٢٩﴾

30. सिवाये अपनी पत्नियों और अपने स्वामित्व में आई दासियों^[1] के तो वही निन्दित नहीं हैं।

إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣٠﴾

31. और जो चाहे इस के अतिरिक्त तो वही सीमा का उल्लंघन करने वाले हैं।

فَمَنْ ابْتَدَعَ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ﴿٣١﴾

32. और जो अपनी अमानतों तथा अपने वचन का पालन करते हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِنَتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رِعُونَ ﴿٣٢﴾

33. और जो अपने साक्ष्यों (गवाहियों) पर स्थित रहने वाले हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَتِهِمْ قَائِمُونَ ﴿٣٣﴾

34. तथा जो अपनी नमाजों की रक्षा करते हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٣٤﴾

35. वही स्वर्गों में सम्मानित होंगे।

أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُّكْرَمُونَ ﴿٣٥﴾

36. तो क्या हो गया है उन काफ़िरों को, कि आप की ओर दौड़े चले आ रहे हैं।

فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِكَ مَهْطِعِينَ ﴿٣٦﴾

37. दायें तथा बायें से समूहों में हो^[2] करा।

عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ﴿٣٧﴾

1 इस्लाम में उसी दासी से संभोग उचित है जिसे सेना-पति ने ग़नीमत (परिहार) के दूसरे धनों के समान किसी मुजाहिद के स्वामित्व में दे दिया हो। इस से पूर्व किसी बंदी स्त्री से संभोग पाप तथा व्यभिचार है। और उस से संभोग भी उस समय वैध है जब उसे एक बार मासिक धर्म आ जाये। अथवा गर्भवती हो तो प्रसव के पश्चात् ही संभोग किया जा सकता है। इसी प्रकार जिस के स्वामित्व में आई हो उस के सिवा और कोई उस से संभोग नहीं कर सकता।

2 अर्थात् जब आप कुर्आन सुनाते हैं तो उस का उपहास करने के समूहों में हो

38. क्या उन में से प्रत्येक व्यक्ति लोभ (लालच) रखता है कि उसे प्रवेश दे दिया जायेगा सुख के स्वर्गों में?
39. कदापि ऐसा न होगा, हम ने उन की उत्पत्ति उस चीज़ से की है जिसे वे^[1] जानते हैं।
40. तो मैं शपथ लेता हूँ पूर्वो (सूर्योदय के स्थानों) तथा पश्चिमों (सूर्यास्त के स्थानों) की, वास्तव में हम अवश्य सामर्थ्यवान हैं।
41. इस बात पर कि बदल दें उन से उत्तम (उत्पत्ति) को तथा हम विवश नहीं हैं।
42. अतः आप उन्हें झगड़ते तथा खेलते छोड़ दें यहाँ तक कि वह मिल जायें अपने उस दिन से जिस का उन्हें वचन दिया जा रहा है।
43. जिस दिन वह निकलेंगे क़ब्रों (और समाधियों) से दौड़ते हुये जैसे वह अपनी मूर्तियों की ओर दौड़ रहे हों।^[2]
44. झुकी होगी उन की आँखें, छाया होगा उन पर अपमान, यही वह दिन है जिस का वचन उन्हें दिया जा^[3] रहा था।

أَيُّظَنُّ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُدْخَلَ جَنَّةً نَعِيمًا

كَلَّا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِمَّا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

فَلَا أُسْمِرُ رَبِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ
إِنَّا الْقَادِرُونَ ﴿٤٠﴾

عَلَى أَنْ نُبَدِّلَ خَيْرًا مِنْهُمْ وَمَا نَحْنُ
بِمَسْبُوقِينَ ﴿٤١﴾

فَدَارَ لَهُمْ مَجُوسًا وَيَعْبُورًا حَتَّى يَلْقُوا يَوْمَهُمُ
الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٤٢﴾

يَوْمَ يَجْرُونَ مِنَ الْجِبَدَاتِ اسِرًا كَافَّةً إِلَى
نَصَبٍ يُوَفُّونَ ﴿٤٣﴾

خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهُفُهُمْ ذَلَّةٌ ذَلِكَ الْيَوْمُ
الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٤٤﴾

कर आ जाते हैं। और इन का दावा यह है कि स्वर्ग में जायेंगे।

- 1 अर्थात् हीन जल (वीर्य) से। फिर भी घमंड करते हैं। तथा अल्लाह और उस के रसूल को नहीं मानते।
- 2 या उन के थानों की ओर। क्योंकि संसार में वे सूर्योदय के समय बड़ी तीव्रगति से अपनी मूर्तियों की ओर दौड़ते थे।
- 3 अर्थात् रसूलों तथा धर्मशास्त्रों के माध्यम से।

सूरह नूह - 71



सूरह नूह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 28 आयतें हैं।

- इस में नूह (अलैहिस्सलाम) के उपदेश का पूरा वर्णन है जिस से इस का नाम सूरह नूह है। और इस में उन की कथा का वर्णन ऐसे किया गया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरोधी चौक जायें।
- इस में अल्लाह से नूह (अलैहिस्सलाम) की गुहार को प्रस्तुत किया गया है। और आयत 25 में उस यातना की चर्चा है जो उन की जाति पर आई थी।
- अन्त में नूह (अलैहिस्सलाम) की उस प्रार्थना का वर्णन है जो उन्होंने इस यातना के समय की थी जो उन की जाति पर आई।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. निःसंदेह हम ने भेजा नूह को उस की जाति की ओर, कि सावधान कर अपनी जाति को इस से पूर्व कि आये उन के पास दुःखदायी यातना।
2. उस ने कहा: हे मेरी जाति! वास्तव में मैं खुला सावधान करने वाला हूँ तुम्हें।
3. कि इबादत (वंदना) करो अल्लाह की तथा डरो उस से और बात मानो मेरी।
4. वह क्षमा कर देगा तुम्हारे लिये तुम्हारे पापों को, तथा अवसर देगा तुम्हें निर्धारित समय^[1] तक। वास्तव में जब अल्लाह का निर्धारित समय आ

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

قَالَ يَاقَوْمِ إِنِّي كُنْتُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝

إِنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ وَأَطِيعُوا أَمْرًا

يَغْفِرْ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسْتَعْتَبٍ ۚ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُونَ ۚ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

1 अर्थात् तुम्हारी निश्चित आयु तक।

- जायेगा तो उस में देर न होगी। काश तुम जानते।
5. नूह ने कहा: मेरे पालनहार! मैं ने बुलाया अपनी जाति को (तेरी ओर) रात और दिन।
6. तो मेरे बुलावे ने उन के भागने ही को अधिक किया।
7. और मैं ने जब-जब उन्हें बुलाया तो उन्होंने दे ली अपनी ऊँगलियाँ अपने कानों में, तथा ओढ़ लिये अपने कपड़े,^[1] तथा अड़े रह गये और बड़ा घमंड किया।
8. फिर मैं ने उन्हें उच्च स्वर से बुलाया।
9. फिर मैं ने उन से खुल कर कहा और उन से धीरे-धीरे (भी) कहा।
10. मैं ने कहा: क्षमा माँगो अपने पालनहार से, वास्तव में वह बड़ा क्षमाशील है।
11. वह वर्षा करेगा आकाश से तुम पर धाराप्रवाह वर्षा।
12. तथा अधिक देगा तुम्हें पुत्र तथा धन और बना देगा तुम्हारे लिये बाग़ तथा नहरें।
13. क्या हो गया है तुम्हें कि नहीं डरते हो अल्लाह की महिमा से?
14. जब कि उस ने पैदा किया है तुम्हें

1 ताकि मेरी बात न सुन सकें।

قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ۝

فَكَرِهْتَهُمْ دُعَاؤِي إِلَّا فِرَارًا ۝

وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَعْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصْرُوا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝

ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جَهَارًا ۝

ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۝

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۝

يُرْسِلُ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ۝

وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَيَبْنِيَنَّ وَيَجْعَلَ لَكُمْ جَنَّاتٍ وَيَجْعَلَ لَكُمْ أَنْهَارًا ۝

مَا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ۝

وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ۝

विभिन्न प्रकार^[1] से।

15. क्या तुम ने नहीं देखा कि कैसे पैदा किये हैं अल्लाह ने सात आकाश ऊपर-तले?
16. और बनाया है चन्द्रमा को उन में प्रकाश, और बनाया है सूर्य को प्रदीप।
17. और अल्लाह ही ने उगाया है तुम्हें धरती^[2] से अद्भुत रूप से।
18. फिर वह वापिस ले जायेगा तुम्हें उस में और निकालेगा तुम को उस से।
19. और अल्लाह ने बनाया है तुम्हारे लिये धरती को बिस्तर।
20. ताकि तुम चलो उस की खुली राहों में।
21. नूह ने निवेदन किया: मेरे पालनहार! उन्होंने मेरी अवैज्ञा की, और अनुसरण किया उस का^[3] जिस के धन और संतान ने उस की क्षति ही को बढ़ाया।
22. और उन्होंने बड़ी चाल चली।
23. और उन्होंने कहा: तुम कदापि न छोड़ना अपने पूज्यों को, और कदापि न छोड़ना वद्द को, न सुवाअ को और न यगूस को और यऊक् को तथा न नस्र^[4] को।

أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ
سَمَوَاتٍ طِبَاقًا ۝

وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسُ
سِرَاجًا ۝

وَاللَّهُ أَشْبَهَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ بَنَاتًا ۝

تُمْ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ۝

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ بِسَاطًا ۝

لِتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ۝

قَالَ نُوحٌ رَبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَأَتَّبِعُوا مَن كَرِهَ
يَزِيدُهُ مَالَهُ وَوَلَدَهُ إِلَّا خَسَارًا ۝

وَمَكَرُوا مَكْرًا كَبِيرًا ۝

وَقَالُوا لَا تَدْرِكُنَا إِلَهَتُكُمْ وَلَا تَدْرِكُنَا وَدًّا
وَلَا سَوَاعِدًا وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا ۝

1 अर्थात वीर्य से, फिर रक्त से, फिर माँस और हड्डियों से।

2 अर्थात तुम्हारे मूल आदम (अलैहिस्सलाम) को।

3 अर्थात अपने प्रमुखों का।

4 यह सभी नूह (अलैहिस्सलाम) की जाति के बुतों के नाम हैं। यह पाँच सदाचारी व्यक्ति थे जिन के मरने के पश्चात् शैतान ने उन्हें समझाया कि इन की मुर्तियाँ

24. और कुपथ (गुमराह) कर दिया है उन्होंने बहुतों को, और अधिक कर दे तू (भी) अत्याचारियों के कुपथ^[1] (कुमार्ग) को।
25. वह अपने पापों के कारण डुबो^[2] दिये गये फिर पहुँचा दिये गये नरक में। और नहीं पाया उन्होंने अपने लिये अल्लाह के मुक़ाबिले में कोई सहायक।
26. तथा कहा नूह ने: मेरे पालनहार! न छोड़ धरती पर काफ़िरों का कोई घराना।
27. (क्यों कि) यदि तू उन्हें छोड़ेगा तो वह कुपथ करेंगे तेरे भक्तों को, और नहीं जन्म देंगे परन्तु दुष्कर्म बड़े काफ़िर को।
28. मेरे पालनहार! क्षमा कर दे मुझ को तथा मेरे माता-पिता को और उसे जो प्रवेश करे मेरे घर में ईमान ला कर, तथा ईमान वालों और ईमान वालियों को। तथा काफ़िरों के विनाश ही को अधिक कर।

وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۗ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ۝

مِمَّا خَطَبْتَهُمْ أُعْرِفُوا ۗ فَادْعُوا نَارًا ۗ أَلَا فَكَّرَ يَجِدُ وَالْهُمُومِ ۗ دُونَ اللَّهِ أَنْصَارًا ۝

وَقَالَ نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْنِي عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دِيَارًا ۝

إِنَّكَ إِنْ تَذَرَهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فِاجِرًا كَثِيرًا ۝

رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِي مُؤْمِنًا ۗ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۗ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ۝

बना लो। जिस से तुम्हें इबादत की प्रेरणा मिलेगी। फिर कुछ युग व्यतीत होने के पश्चात् समझाया कि यही पूज्य है। और उन की पूजा अरब तक फैल गई।

- 1 नूह (अलैहिस्सलाम) ने 950 वर्ष तक उन्हें समझाया। (देखिये: सूरह अन्कबूत, आयत: 14) और जब नहीं माने तो यह निवेदन किया।
- 2 इस का संकेत नूह (अलैहिस्सलाम) के तूफ़ान की ओर है। (देखिये: सूरह हूद, आयत: 40, 44)

सूरह जिन्न - 72



सूरह जिन्न के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 28 आयतें हैं।

- इस में जिन्नों की बातें बताई गई हैं। इसलिये इस का यह नाम है। जिन्होंने कुर्आन सुना और उस के सच्च होने की गवाही दी। फिर मक्का के मुश्रिकों को सावधान किया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मुख से नबूवत के बारे में बातें उजागर की गई हैं। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को न मानने पर नरक की यातना से सूचित किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) कहो: मेरी ओर वही (प्रकाशना^[1]) की गई है कि ध्यान से सुना जिन्नों के एक समूह ने। फिर कहा कि हम ने सुना है एक विचित्र कुर्आन।
2. जो दिखाता है सीधी राह, तो हम ईमान लाये उस पर। और हम कदापि साझी नहीं बनायेंगे अपने पालनहार के साथ किसी को।
3. तथा निस्संदेह महान् है हमारे पालनहार की महिमा, नहीं बनाई है उस ने कोई संगीनी (पत्नी) और न कोई संतान।

قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْمَمَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَسَاءُوا رِئَاسًا
سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا إِنَّا جَبَلٌ

يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ وَلَنْ نُشْرَكَ بِرَبِّنَا
أَحَدًا ۝

وَأَنَّهُ تَعَلَّى جَدًّا رَبًّا مَّا اتَّخَذَ صَاحِبَةً
وَلَا وَلَدًا ۝

- 1 सूरह अहक़ाफ़ आयत: 29, में इस का वर्णन किया गया है। इस सूरह में यह बताया गया है कि जब जिन्नों ने कुर्आन सुना तो आप ने न जिन्नों को देखा और न आप को उस का ज्ञान हुआ। बल्कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को वही (प्रकाशना) द्वारा इस से सूचित किया गया।

4. तथा निश्चय हम अज्ञान में कह रहे थे अल्लाह के संबंध में झूठी बातें।
5. और यह कि हम ने समझा कि मनुष्य तथा जिब्र नहीं बोल सकते अल्लाह पर कोई झूठ बात।
6. और वास्तविकता यह है कि मनुष्य में से कुछ लोग शरण मांगते थे जिब्रों में से कुछ लोगों की तो उन्होंने ने अधिक कर दिया उन के गर्व को।
7. और यह कि मनुष्यों ने भी वही समझा जो तुम ने अनुमान लगाया कि कभी अल्लाह फिर जीवित नहीं करेगा किसी को।
8. तथा हम ने स्पर्श किया आकाश को तो पाया कि भर दिया गया है प्रहरियों तथा उल्कावों से।
9. और यह कि हम बैठते थे उस (आकाश) में सुन गुन लेने के स्थानों में, और जो अब सुनने का प्रयास करेगा वह पायेगा अपने लिये एक उल्का घात में लगा हुआ।
10. और यह कि हम नहीं समझ पाते कि क्या किसी बुराई का इरादा किया गया धरती वालों के साथ या इरादा किया है उन के साथ उन के पालनहार ने सीधी राह पर लाने का?
11. और हम में से कुछ सदाचारी हैं और हम में से कुछ इस के विपरीत हैं। हम विभिन्न प्रकारों में विभाजित हैं।

وَأَنَّهُ كَانَ يَفُولُ سَفِيهًا عَلَى اللَّهِ سَطَطًا ۝

وَأَنَّا كَلَّمْنَا أَنَّنْ نَنْ تَقُولَ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ
عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝

وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِنَ الْإِنْسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالِ
مِّنَ الْجِبْرِ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ۝

وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنْتُمْ أَنَّنْ يَبْعَثُ اللَّهُ أَحَدًا ۝

وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَا فِيهَا مِثْرًا
حَرَسًا شَدِيدًا وَشُهَبًا ۝

وَأَنَّا لَكُنَّا فَاعِلُونَ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلْسُّمْرِ فَمَنْ
يَسْتَمِعِ الْآنَ يَجِدْ لَهُ شَهَابًا رَّصَدًا ۝

وَأَنَّا لَنُرِيَّ أَسْرَارِيَدَ يَمْنَنَ فِي الْأَرْضِ
أَمْرًا آرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝

وَأَنَّا مِنَّا الصَّالِحُونَ وَمِنَّا دُونَ ذَلِكَ كُنَّا
طَرَائِفَ قِدَادًا ۝

12. तथा हमें विश्वास हो गया है कि हम कदापि विवश नहीं कर सकते अल्लाह को धरती में और न विवश कर सकते हैं उसे भाग करा।
13. तथा जब हम ने सुनी मार्ग दर्शन की बात तो उस पर ईमान ला आये, अब जो भी ईमान लायेगा अपने पालनहार पर तो नहीं भय होगा उसे अधिकार हनन का और न किसी अत्याचार का।
14. और यह कि हम में से कुछ मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं और कुछ अत्याचारी हैं। तो जो आज्ञाकारी हो गये तो उन्होंने खोज ली सीधी राह।
15. तथा जो अत्याचारी हैं तो वह नरक का ईंधन हो गये।
16. और यह कि यदि वह स्थित रहते सीधी राह (अर्थात् इस्लाम) पर तो हम सींचते उन्हें भरपूर जल से।
17. ताकि उन की परीक्षा लें इस में, और जो विमुख होगा अपने पालनहार की स्मरण (याद) से, तो उसे उस का पालनहार ग्रस्त करेगा कड़ी यातना में।
18. और यह कि मस्जिदें^[1] अल्लाह के लिये हैं। अतः मत पुकारो अल्लाह के साथ किसी को।
19. और यह कि जब खड़ा हुआ अल्लाह का

وَأَنَّا كَلَّمْنَا أَنْ كُنْ تُعْجِزَ اللَّهُ فِي الْأَرْضِ وَلَنْ
تُعْجِزَهُ هَرَبًا ۝

وَأَنَّا لَبَّاسِمِعْنَا الْهُدَىٰ أَمْثَابِهِ ۖ فَمَنْ يُؤْمِنْ
بِرَبِّهِ فَلَا يَئُودُهُ غَسَاؤُ وَلَا رَهْمًا ۝

وَأَنَّا مِمَّا السُّبُلُونَ وَمِمَّا أَلْقِطُونَ ۖ فَمَنْ أَسْلَمْ
فَأُولَٰئِكَ نَحْرُ وَارِثًا ۝

وَأَمَّا أَلْقِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝

وَأَن لَّوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقِيَهُمْ
مَاءً عَذْقًا ۝

لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۖ وَمَنْ يُعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِ
يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝

وَأَنَّ السُّجُودَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ
أَحَدًا ۝

وَأَنَّكَ لَمِنَ قَائِمِي عِبَادِ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا

1 मस्जिद का अर्थ सज्जदा करने का स्थान है। भावार्थ यह है कि अल्लाह के सिवा किसी अन्य की इबादत तथा उस के सिवा किसी से प्रार्थना तथा विनय करना अवैध है।

भक्त^[1] उसे पुकारता हुआ तो समीप
था कि वह लोग उस पर पिल पड़ते।

20. आप कह दें कि मैं तो केवल अपने
पालनहार को पुकारता हूँ। और साझी
नहीं बनाता उस का किसी अन्य को।
21. आप कह दें कि मैं अधिकार नहीं
रखता तुम्हारे लिये किसी हानि का न
सीधी राह पर लगा देने का।
22. आप कह दें कि मुझे कदापि नहीं
बचा सकेगा अल्लाह से कोई^[2] और
न मैं पा सकूँगा उस के सिवा कोई
शरणागार (बचने का स्थान)।
23. परन्तु पहुँचा सकता हूँ अल्लाह का
आदेश तथा उस का उपदेश। और
जो अवैज्ञा करेगा अल्लाह तथा उस के
रसूल की तो वास्तव में उसी के लिये
नरक की अग्नि है जिस में वह नित्य
सदावासी होगा।
24. यहाँ तक कि जब देख लेंगे जिस का
उन्हें वचन दिया जाता है तो उन्हें
विश्वास हो जायेगा कि किस के
सहायक निर्बल और किस की संख्या
कम है।
25. आप कह दें कि मैं नहीं जानता कि
समीप है जिस का वचन तुम्हें दिया
जा रहा है अथवा बनायेगा मेरा

يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِيَدًا ۝

قُلْ إِنَّمَا أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ۝

قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ۝

قُلْ إِنِّي لَنْ يُجِيبَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ وَلَنْ أَجِدَ
مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝

إِلَّا بِلَعْنَةٍ مِنَ اللَّهِ وَرِسَالَةٍ ۖ وَمَنْ يَعْصِ
اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَأَنْ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا
فِيهَا أَبَدًا ۝

حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ
أَضَعُتْ نَاصِرًا ۖ وَأَوَّلُ عَذَابِكُمْ ۝

قُلْ إِنْ أَدْرِي أَقْرَبُ مِمَّا تُوعَدُونَ
أَمْ يَجْعَلُ لَهُ رَبِّي أَمَدًا ۝

1 अल्लाह के भक्त से अभिप्राय मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं। तथा
भावार्थ यह है कि जिन्न तथा मनुष्य मिल कर कुर्आन तथा इस्लाम की राह से
रोकना चाहते हैं।

2 अर्थात् यदि मैं उस की अवैज्ञा करूँ और वह मुझे यातना देना चाहे।

पालनहार उस के लिये कोई अवधि?

26. वह ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञानी है अतः वह अवगत नहीं कराता है अपने परोक्ष पर किसी को।
27. सिवाये रसूल के जिसे उस ने प्रिय बना लिया है फिर वह लगा देता है उस वही के आगे तथा उस के पीछे रक्षक।^[1]
28. ताकि वह देख ले कि उन्होंने पहुँचा दिये हैं अपने पालनहार के उपदेश।^[2] और उस ने घेर रखा है जो कुछ उन के पास है और प्रत्येक वस्तु को गिन रखा है।

عِلْمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ أَحَدًا ۝

إِلَّا مَنِ ارْتَضَىٰ مِنْ رَسُولٍ فَإِنَّهُ
يَسْئَلُكَ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ
رَصَدًا ۝

لِيَعْلَمَ أَنْ قَدْ أَبْتَغَوْا رَسُولَكَ رَبَّهُمْ وَأَحَاطَ
بِمَالِكَ يُهْمُ وَأَحْصَىٰ كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ۝

- 1 अर्थात् ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। किन्तु यदि धर्म के विषय में कुछ परोक्ष की बातों की वही अपने किसी रसूल की ओर करता है तो फ़रिश्तों द्वारा उस की रक्षा की व्यवस्था भी करता है ताकि उस में कुछ मिलाया न जा सके। रसूल को जितना ग़ैब का ज्ञान दिया जाता है वह इस आयत से उजागर हो जाता है। फिर भी कुछ लोग आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पूरे ग़ैब का ज्ञानी मानते हैं। और आप को गुहारते और सब जगह उपस्थित कहते हैं। और तौहीद को आघात पहुँचा कर शिर्क करते हैं।
- 2 अर्थात् वह रसूलों की दशा को जानता है। उस ने प्रत्येक चीज़ को गिन रखा है ताकि रसूलों के उपदेश पहुँचाने में कोई कमी और अधिकता न हो। इसलिये लोगों को रसूलों की बातें मान लेनी चाहिये।

सूरह मुज्जिमिल - 73



सूरह मुज्जिमिल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 20 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को «अल मुज्जिमिल» (चादर ओढ़ने वाला) कह कर संबोधित किया गया है। जो इस सूरह का यह नाम रखे जाने का कारण है।
- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को रात्री में नमाज़ पढ़ने का निर्देश दिया गया है। और इस का लाभ बताया गया है। और विरोधियों की बातों को सहन करने और उन के परिणाम को बताया गया है।
- मक्का के काफिरों को सावधान किया गया है कि जैसे फिरौन की ओर हम ने रसूल भेजा वैसे ही तुम्हारी ओर रसूल भेजा है। तो उस का जो दुष्परिणाम हुआ उस से शिक्षा लो अन्यथा कुफ़ कर के परलोक की यातना से कैसे बच सकोगे?
- और इस सूरह के अन्त में, रात्री में नमाज़ का जो आदेश दिया गया था, उसे सरल कर दिया गया। इसी प्रकार लस में फ़र्ज़ (अनिवार्य) नमाज़ों के पालन तथा ज़कात देने के आदेश दिये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे चादर ओढ़ने वाले!
2. खड़े रहो (नमाज़ में) रात्री के समय परन्तु कुछ^[1] समय।

يَا أَيُّهَا الْمَرْمِلُ ۝

قُمْ آئِلًا إِلَّا قَلِيلًا ۝

- 1 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) रात में इतनी नमाज़ पढ़ते थे कि आप के पैर सूज जाते थे। आप से कहा गया: ऐसा क्यों करते हैं? जब कि अल्लाह ने आप के पहले और पिछले गुनाह क्षमा कर दिये हैं? आप ने कहा: क्या मैं उस का कृतज्ञ भक्त न बनूँ? (बुखारी: 1130, मुस्लिम: 2819)

3. (अर्थात) आधी रात अथवा उस से कुछ कम।
4. या उस से कुछ अधिक, और पढ़ो कुरआन रुक-रुक कर।
5. हम उतारेंगे (हे नबी!) आप पर एक भारी बात (कुरआन)।
6. वास्तव में रात में जो इबादत होती है वह अधिक प्रभावी है (मन को) एकाग्र करने में। तथा अधिक उचित है बात (प्रार्थना) के लिये।
7. आप के लिये दिन में बहुत से कार्य हैं।
8. और स्मरण (याद) करें अपने पालनहार के नाम की, और सब से अलग हो कर उसी के हो जायें।
9. वह पूर्व तथा पश्चिम का पालनहार है। नहीं है कोई पूज्य (वंदनीय) उस के सिवा, अतः उसी को अपना करता धरता बना लें।
10. और सहन करें उन बातों को जो वे बना रहे हैं^[1] और अलग हो जायें उन से सुशीलता के साथ।
11. तथा छोड़ दें मुझे तथा झुठलाने वाले सुखी (सम्पन्न) लोगों को। और उन्हें अवसर दें कुछ देर।
12. वस्तुतः हमारे पास (उनके लिये) बहुत सी बेड़ियाँ तथा दहकती अग्नि है।
13. और भोजन जो गले में फंस जाये

تُصَفِّةَ أَوْ أَنْقَضَ مِنْهُ قَلِيلًا ۝

أَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ۝

إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا ۝

إِنَّ تَائِسَةَ الْجِبَلِ لَمِنَ الْأَشْدَدِّ وَطَأْوَ أَقْوَمُ ۝
قِيلًا ۝

إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيلًا ۝

وَادْكُرْ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ۝

رَبُّ الشَّرْقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ ۝
وَكَيْلًا ۝

وَاصْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا ۝
جَمِيلًا ۝

وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولَى النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ ۝
قَلِيلًا ۝

إِنَّ لَدَيْنَا أَكْالًا وَجَحِيمًا ۝

وَطَعْمًا إِذْ أَعْصَى وَعَدَّ أَبًا إِلِيمًا ۝

1 अर्थात आप के तथा सत्धर्म के विरुद्ध।

और दुःखदायी यातना है।

14. जिस दिन काँपेगी धरती और पर्वत, तथा हो जायेंगे पर्वत भुरभुरी रेत के ढेर।
15. हम ने भेजा है तुम्हारी ओर एक रसूल^[1] तुम पर गवाह (साक्षी) बना कर जैसे भेजा फ़िरऔन की ओर एक रसूल (मूसा) को।
16. तो अवैज्ञा की फ़िरऔन ने उस रसूल की और हम ने पकड़ लिया उस को कड़ी पकड़।
17. तो कैसे बचोगे यदि कुफ़्र किया तुम ने उस दिन से जो बना देगा बच्चों को (शोक के कारण) बूढ़ा?
18. आकाश फट जायेगा उस दिन। उस का वचन पूरा हो कर रहेगा।
19. वास्तव में यह (आयतों) एक शिक्षा हैं। तो जो चाहे अपने पालनहार की ओर राह बना ले।^[2]
20. निःसंदेह आप का पालनहार जानता है कि आप खड़े होते हैं (तहज्जुद की नमाज़ के लिये) दो तिहाई रात्री के लग-भग, तथा आधी रात और तिहाई रात, तथा एक समूह उन लोगों का जो आप के साथ हैं और

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ﴿١٤﴾

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ﴿١٥﴾

فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْدًا وَبَيْلًا ﴿١٦﴾

فَكَيْفَ تَتَعَوَّنَ إِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ﴿١٧﴾

إِلَّا السَّمَاءَ مَنقُطِرًا ۖ وَإِنَّهَا لَمَفْعُولَةٌ ﴿١٨﴾

إِنَّ هَذِهِ تَذَكُّرَةٌ ۖ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿١٩﴾

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ ثُلُثِي اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ مِنَ الَّذِينَ مَعَكَ ۗ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۗ عَلِمَ أَنْ لَنْ تُحْصَوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۗ عَلِمَ أَنْ سَيَكُونُ

1 अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को गवाह होने के अर्थ के लिये। (देखिये: सूरह बकरा, आयत: 143, तथा सूरह हज्ज, आयत: 78) इस में चेतावनी है कि यदि तुम ने अवैज्ञा की तो तुम्हारी दशा भी फ़िरऔन जैसी होगी।

2 अर्थात इन आयतों का पालन कर के अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त कर लें।

अल्लाह ही हिसाब रखता है रात तथा दिन का। वह जानता है कि तुम पूरी रात नमाज़ के लिये खड़े नहीं हो सकोगे। अतः उस ने दया कर दी तुम पर। तो पढ़ो जितना सरल हो कुआन में से।^[1] वह जानता है कि तुम में कुछ रोगी होंगे और कुछ दूसरे यात्रा करेंगे धरती में खोज करते हुये अल्लाह के अनुग्रह (जीविका) की, और कुछ दूसरे युद्ध करेंगे अल्लाह की राह में, अतः पढ़ो जितना सरल हो उस में से। तथा स्थापना करो नमाज़ की, और ज़कात देते रहो, और ऋण दो अल्लाह को अच्छा ऋण।^[2] तथा जो भी आगे भेजोगे भलाई में से तो उसे अल्लाह के पास पाओगे। वही उत्तम और उस का बहुत बड़ा प्रतिफल होगा। और क्षमा मांगते रहो अल्लाह से, वास्तव में वह अति क्षमाशील दयावान् है।

مِنْكُمْ مَرْضَىٰ وَالْآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ
يَبْتَغُونَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَالْآخَرُونَ
يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَاَقْرَبُ
مَا تَيْسَّرَ مِنْهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ
وَاقْرَأُوا اللَّهَ قَرُوصًا حَسَنًا وَمَا تَقْرَأُوا
لِأَنْفُسِكُمْ مِنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ
هُوَ خَيْرٌ وَأَعْظَمُ أَجْرًا وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

- 1 कुआन पढ़ने से अभिप्राय तहज्जुद की नमाज़ है। और अर्थ यह है कि रात्री में जितनी नमाज़ हो सके पढ़ लो। हदीस में है कि भक्त अल्लाह के सब से समीप अन्तिम रात्री में होता है। तो तुम यदि हो सके कि उस समय अल्लाह को याद करो तो याद करो। (तिर्मिज़ी: 3579, यह हदीस सहीह है।)
- 2 अच्छे ऋण से अभिप्राय अपने उचित साधन से अर्जित किये हुये धन को अल्लाह की प्रसन्नता के लिये उस के मार्ग में खर्च करना है। इसी को अल्लाह अपने ऊपर ऋण करार देता है। जिस का बदला वह सात सौ गुना तक बल्कि उस से भी अधिक प्रदान करेगा।
(देखिये: सूरह बकरा, आयत: 261)

सूरह मुद्स्सिर - 74



सूरह मुद्स्सिर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है , इस में 56 आयतें हैं।

- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ((अल मुद्स्सिर)) कह कर संबोधित किया गया है। अर्थात् चादर ओढ़ने वाले। इस लिये इस को यह नाम दिया गया है। और आप को सावधान करने का निर्देश देते हुये अच्छे स्वभाव तथा शुभकर्म की शिक्षा दी गई है।
- आयत 11 से 31 तक कुरैश के प्रमुखों को जो इस्लाम का विरोध कर रहे थे नरक की यातना की धमकी दी गई है। तथा 32 से 48 तक परलोक के बारे में चेतावनी है।
- अन्त में कुर्आन के शिक्षा होने को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि बात दिल में उतर जाये।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे चादर ओढ़ने^[1] वाले!

يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ

2. खड़े हो जाओ, फिर सावधान करो।

فُمْرَأْنَذِرْ

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर प्रथम वही के पश्चात् कुछ दिनों तक वही नहीं आई। फिर एक बार आप जा रहे थे कि आकाश से एक आवाज़ सुनी। ऊपर देखा तो वही फ़रिश्ता जो आप के पास «हिरा» गुफ़ा में आया था आकाश तथा धरती के बीच एक कुर्सी पर विराजमान था। जिस से आप डर गये। और धरती पर गिर गये। फिर घर आये, और अपनी पत्नी से कहा: मुझे चादर ओढ़ा दो, मुझे चादर ओढ़ा दो। उस ने चादर ओढ़ा दी। और अल्लाह ने यह सूरह उतारी। फिर निरन्तर वही आने लगी। (सहीह बुखारी: 4925, 4926, सहीह मुस्लिम: 161) प्रथम वही से आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को नबी बनाया गया। और अब आप पर धर्म के प्रचार का भार रख दिया गया। इन आयतों में आप के माध्यम से मुसलमानों को पवित्र रहने के निर्देश दिये गये हैं।

3. तथा अपने पालनहार की महिमा का वर्णन करो।
4. तथा अपने कपड़ों को पवित्र रखो।
5. और मलीनता को त्याग दो।
6. तथा उपकार न करो इसलिये कि उस के द्वारा अधिक लो।
7. और अपने पालनहार ही के लिये सहन करो।
8. फिर जब फूँका जायेगा^[1] नरसिंघा में।
9. तो उस दिन अति भीषण दिन होगा।
10. काफ़िरों पर सरल न होगा।
11. आप छोड़ दें मुझे और उसे जिस को मैं ने पैदा किया अकेला।
12. फिर दे दिया उसे अत्यधिक धन।
13. और पुत्र उपस्थित रहने^[2] वाले।
14. और दिया मैं ने उसे प्रत्येक प्रकार का संसाधन।
15. फिर भी वह लोभ रखता है कि उसे और अधिक दूँ।
16. कदापि नहीं। वह हमारी आयतों का विरोधी है।
17. मैं उसे चढ़ाऊँगा कड़ी^[3] चढ़ाई।

وَرَبِّكَ فَكَبِّرُ ۝

وَتَيِّبًا لِّكَ فَطَهِّرُ ۝

وَالرُّجُزَ فَأَهْجُرُ ۝

وَلَا تَمُنْ بِسِتِّكَ بُرُ ۝

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرُ ۝

فَإِذَا نُفِرَ فِي النَّاقُورِ ۝

فَذَلِكَ يَوْمٌ عَسِيرٌ ۝

عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرٌ يَسِيْرٌ ۝

ذُرِّيٍّ وَمَنْ خَلَقْتُ وَجِيْدًا ۝

وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَّكْمُوْدًا ۝

وَبَيِّنَ شُؤُوْدًا ۝

وَمَهَّدْتُ لَهُ تَمْهِيْدًا ۝

ثُمَّ يَظْمَعُ اَنْ اَزِيْدًا ۝

كَلَّا اِنَّهٗ كَانَ لِاِلٰهِيْنَا عٰنِيْدًا ۝

سَاْرُهٗفُهُ صَعُوْدًا ۝

1 अर्थात प्रलय के दिन।

2 जो उस की सेवा में उपस्थित रहते हैं। कहा गया है कि इस से अभिप्राय वलीद पुत्र मुगीरा है जिस के दस पुत्र थे।

3 अर्थात कड़ी यातना दूँगा। (इन्ने कसीर)

18. उस ने विचार किया और अनुमान लगाया।^[1]

إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۝

19. वह मारा जाये! फिर उस ने कैसा अनुमान लगाया?

فَقَتَّلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝

20. फिर (उस पर अल्लाह की) मार! उस ने कैसा अनुमान लगाया?

ثُمَّ قِيلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝

21. फिर पुनः विचार किया।

ثُمَّ نَظَرَ ۝

22. फिर माथे पर बल दिया और मुँह बिदोरा।

ثُمَّ عَيَّنَ وَبَسَّرَ ۝

23. फिर (सत्य से) पीछे फिरा और घमंड किया।

ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ۝

24. और बोला कि यह तो पहले से चला आ रहा एक जादू है।^[2]

فَقَالَ إِنَّ هَذَا السِّحْرُ يُؤْتَرُ ۝

25. यह तो बस मनुष्य^[3] का कथन है।

إِنَّ هَذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۝

26. मैं उसे शीघ्र ही नरक में झोंक दूँगा।

سَأُصَلِّيهِ سَقَرَ ۝

27. और आप क्या जानें कि नरक क्या है।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ ۝

28. न शेष रखेगी, और न छोड़ेगी।

لَا تَبْقَىٰ وَلَا تَذَرُ ۝

29. वह खाल झुलसा देने वाली।

لَوْ أَحَاطَ لِلْبَشَرِ ۝

30. नियुक्त है उन पर उन्नीस (रक्षक फरिश्ते)।

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ۝

31. और हम ने नरक के रक्षक फरिश्ते

وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً

1 कुर्आन के संबन्ध में प्रश्न किया गया तो वह सोचने लगा कि कौन सी बात बनाये, और उस के बारे में क्या कहे? (इब्ने कसीर)

2 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह किसी से सीख लिया है। कहा जाता है कि वलीद पुत्र मुगीरा ने अबू जहल से कहा था कि लोगों में कुर्आन के जादू होने का प्रचार किया जाये।

3 अर्थात् अल्लाह की वाणी नहीं है।

ही बनाये हैं। और उन की संख्या को काफ़िरों के लिये परीक्षा बना दिया गया है। ताकि विश्वास कर लें अहले^[1] किताब, और बढ़ जायें जो ईमान लाये हैं ईमान में। और संदेह न करें जो पुस्तक दिये गये हैं और ईमान वाले। और ताकि कहें वे जिन के दिलों में (द्विधा का) रोग है तथा काफ़िर^[2] कि क्या तात्पर्य है अल्लाह का इस उदाहरण से? ऐसे ही कुपथ करता है अल्लाह जिसे चाहता है, और संमार्ग दर्शाता है जिसे चाहता है। और नहीं जानता है आप के पालनहार की सेनाओं को उस के सिवा कोई और। तथा नहीं है यह (नरक की चर्चा) किन्तु मनुष्य की शिक्षा के लिये।

وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا
لِيَسْتَيِّقُوا الَّذِينَ اتُّوا الْكِتَابَ وَيَزِدَّ الَّذِينَ
آمَنُوا إِيمَانًا وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
وَالْمُؤْمِنُونَ وَيَقُولُ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ
وَ الْكُفْرُ وَنَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا
كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن
يَشَاءُ وَمَا يَعْلَمُ جُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ
وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْبَشَرِ

32. ऐसी बात नहीं, शपथ है चाँद की!
33. तथा रात्री की जब व्यतीत होने लगे!
34. और प्रातः की जब प्रकाशित हो जाये!
35. वास्तव में (नरक) एक^[3] बहुत बड़ी चीज़ है।
36. डराने के लिये लोगों को।

كَلَّا وَالْقَمَرِ
وَ الْيَلِ إِذَا دُرِيَ
وَ الضُّبُرِ إِذَا اسْفُرَ
إِنَّهَا لِحُدَى الْكَبِيرِ
نَذِيرٌ لِلْبَشَرِ

- 1 क्योंकि यहूदियों तथा ईसाईयों की पुस्तकों में भी नरक के अधिकारियों की यही संख्या बताई गई है।
- 2 जब कुरैश ने नरक के अधिकारियों की चर्चा सुनी तो अबू जहल ने कहा: हे कुरैश के समूह! क्या तुम में से दस-दस लोग, एक-एक फरिश्ते के लिये काफ़ी नहीं हैं? और एक व्यक्ति ने जिसे अपने बल पर बड़ा गर्व था कहा कि 17 को मैं अकेला देख लूँगा। और तुम सब मिल कर दो को देख लेना। (इब्ने कसीर)
- 3 अर्थात् जैसे रात्री के पश्चात् दिन होता है उसी प्रकार कर्मों का भी परिणाम सामने आना है। और दुष्कर्मों का परिणाम नरक है।

37. उस के लिये तुम में से जो चाहे^[1]
आगे होना अथवा पीछे रहना।
38. प्रत्येक प्राणी अपने कर्मों के बदले में
बंधक है।^[2]
39. दाहिने वालों के सिवा।
40. वह स्वर्गों में होंगे, वह प्रश्न करेंगे।
41. अपराधियों से।
42. तुम्हें क्या चीज़ ले गई नरक में।
43. वह कहेंगे: हम नहीं थे नमाज़ियों में से।
44. और नहीं भोजन कराते थे निर्धन को।
45. तथा कुरेद करते थे कुरेद करने वालों
के साथ।
46. और हम झुठलाया करते थे प्रतिफल
के दिन (प्रलय) को।
47. यहाँ तक की हमारी मौत आ गई।
48. तो उन्हें लाभ नहीं देगी सिफारिशियों
(अभिस्तावकों) की सिफारिश।^[3]
49. तो उन्हें क्या हो गया है कि इस
शिक्षा (कुर्आन) से मुँह फेर रहे हैं?
50. मानो वह (जंगली) गधे हैं बिदकाये हुये।
51. जो शिकारी से भागे हैं।

لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ۗ

كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ۗ

إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ۗ

فِي جَنَّاتٍ يَتَسَاءَلُونَ ۗ

عَنِ الْمُجْرِمِينَ ۗ

مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرٍ ۗ

قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمَصَلِينَ ۗ

وَلَمْ نَكُ نَطْعُمُ الْمُسْكِينِ ۗ

وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَائِضِينَ ۗ

وَكُنَّا نَكْذِبُ يَوْمَ الدِّينِ ۗ

حَتَّىٰ آتَيْنَا الْيَقِينَ ۗ

فَمَا نَنْفَعُهُمْ شِقَاةُ الشَّفِيعِينَ ۗ

فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكَرَةِ مُعْرِضِينَ ۗ

كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُسْتَنْفِرَةٌ ۗ

فَرَّتْ مِنْ قَبْرَةٍ ۗ

1 अर्थात् आज्ञा पालन द्वारा अग्रसर हो जाये, अथवा अवैज्ञा कर के पीछे रह जाये।

2 यदि सत्कर्म किया तो मुक्त हो जायेगा।

3 अर्थात् नबियों और फ़रिशतों इत्यादि की। किन्तु जिस से अल्लाह प्रसन्न हो और उस के लिये सिफारिश की अनुमति दे।

52. बल्कि चाहता है प्रत्येक व्यक्ति उन में से कि उसे खुली^[1] पुस्तक दी जाये।
53. कदापि यह नहीं (हो सकता) बल्कि वह आखिरत (परलोक) से नहीं डरते हैं।
54. निश्चय यह (कुरआन) तो एक शिक्षा है।
55. अब जो चाहे शिक्षा ग्रहण करे।
56. और वह शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकते, परन्तु यह कि अल्लाह चाह ले। वही योग्य है कि उस से डरा जाये और योग्य है कि क्षमा कर दे।

بَلْ يُرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ اَنْ يُؤْتِيَ صُحُفًا
مُنشَرَّةً ۝

كَلَّا بَلْ لَا يَخَافُونَ الْاٰخِرَةَ ۝

كَلَّا اِنَّهٗ تَذٰكِرَةٌ ۝

فَمَنْ شَاءَ ذَكَرْهُ ۝

وَمَا يَذٰكُرُوْنَ اِلَّا اَنْ يَنْشِءَ اللّٰهُ هُوَ اَهْلُ
التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۝

1 अर्थात् वे चाहते हैं कि प्रत्येक के ऊपर वैसे ही पुस्तक उतारी जाये जैसे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतारी गई है। तब वे ईमान लायेंगे। (इब्ने कसीर)

सूरह कियामा - 75



सूरह कियामा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 40 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में क़्यामत (प्रलय) की शपथ ली गई है जिस से इस का नाम «सूरह कियामा» है।
- इस में प्रलय के निश्चित होने का वर्णन करते हुये संदेहों को दूर किया गया है। और उस की कुछ स्थितियों को प्रस्तुत किया गया है।
- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को वही ग्रहण करने के विषय में कुछ निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 20 से 25 तक विरोधियों को मायामोह पर चेतावनी देते हुये, प्रलय के दिन सदाचारियों की सफलता तथा दुराचारियों की विफलता दिखाई गई है।
- आयत 26 में मौत की दशा दिखाई गई है।
- आयत 31 से 35 तक प्रलय को न मानने वालों की निन्दा की गई है।
- अन्त में फिर जीवित किये जाने के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. मैं शपथ लेता हूँ क़्यामत (प्रलय) के दिन^[1] की!
2. तथा शपथ लेता हूँ निन्दा^[2] करने वाली अन्तरात्मा की।

لَا أَقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيَامَةِ ۖ

وَلَا أَقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ۖ

- 1 किसी चीज़ की शपथ लेने का अर्थ होता है: उस का निश्चित होना। अर्थात् प्रलय का होना निश्चित है।
- 2 मनुष्य के अन्तरात्मा की यह विशेषता है कि वह बुराई करने पर उस की निन्दा करती है।

3. क्या मनुष्य समझता है कि हम एकत्र नहीं कर सकेंगे दोबारा उस की अस्थियों को?
4. क्यों नहीं? हम सामर्थ्यवान हैं इस बात पर कि सीधी कर दें उस की ऊंगलियों की पोर-पोर।
5. बल्कि मनुष्य चाहता है कि वह कुकर्म करता रहे अपने आगे^[1] भी।
6. वह प्रश्न करता है कि कब आना है प्रलय का दिन?
7. तो जब चुंधिया जायेगी आँख।
8. और गहना जायेगा चाँद।
9. और एकत्र कर दिये^[2] जायेंगे सूर्य और चाँद।
10. कहेगा मनुष्य उस दिन कि कहाँ है भागने का स्थान?
11. कदापि नहीं, कोई शरणागार नहीं।
12. तेरे पालनहार की ओर ही उस दिन जा कर रुकना है।
13. सूचित कर दिया जायेगा मनुष्य को उस दिन उस से जो उस ने आगे भेजा, तथा जो पीछे^[3] छोड़ा।
14. बल्कि मनुष्य स्वयं अपने विरुद्ध एक

يَحْسُبُ الْإِنْسَانُ أَنْ نَجْمَعَهُ عَظْمَهُ ۝

بَلَىٰ قَدِيرِينَ عَلَىٰ أَنْ نُسَوِّيَ بَنَانَهُ ۝

بَلْ يُرِيدُ الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ۝

يَسْأَلُ أَيَّانَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۝

فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝

وَحَسَفَ الْقَمَرُ ۝

وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۝

يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفْعَرُ ۝

كَلَّا لَا وَزَرَ ۝

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُ ۝

يُنَبِّئُ الْإِنْسَانَ يَوْمَئِذٍ بِمَا كَانُوا أَعْمَارُهُ ۝

بَلِ الْإِنْسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ۝

- 1 अर्थात् वह प्रलय तथा हिसाब का इन्कार इसलिये है ताकि वह पूरी आयु कुकर्म करता रहे।
- 2 अर्थात् दोनों पश्चिम से अंधेरे हो कर निकलेंगे।
- 3 अर्थात् संसार में जो कर्म किया। और जो करना चाहिये था फिर भी नहीं किया।

खुला^[1] प्रमाण है।

15. चाहे वह कितने ही बहाने बनाये।
16. हे नबी! आप न हिलायें^[2] अपनी जुबान, ताकि शीघ्र याद कर लें इस कुर्आन को।
17. निश्चय हम पर है उसे याद कराना और उस को पढ़ाना।
18. अतः जब हम उसे पढ़ लें तो आप उस के पीछे पढ़ें।
19. फिर हमारे ही ऊपर है उस का अर्थ बताना।
20. कदापि नहीं^[3], बल्कि तुम प्रेम करते हो शीघ्र प्राप्त होने वाली चीज़ (संसार) से।
21. और छोड़ देते हो परलोक को।
22. बहुत से मुख उस दिन प्रफुल्ल होंगे।
23. अपने पालनहार की ओर देख रहे होंगे।
24. और बहुत से मुख उदास होंगे।
25. वह समझ रहे होंगे कि उन के साथ कड़ा व्यवहार किया जायेगा।

وَلَوْ أَلْقَى مَعَاذِيرَهُ ۝

لَا تُحْرِكُ بِهِ لِسَانَكَ لِتَتَّجَلَ بِهِ ۝

إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ۝

فَإِذَا قَرَأَهُ فَأَنشِدْهُ قُرْآنَهُ ۝

كُنُوزًا عَلَيْنَا يُبَيِّنُهَا ۝

كَذَلِكَ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ۝

وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ۝

وَجُجُوجٌ يَوْمَئِذٍ فَأَمْرُهُ ۝

إِلَى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۝

وَوَجُجُوجٌ يَوْمَئِذٍ بِأَسْرَةٍ ۝

تَكُنُّنُ أَنْ يُفْعَلَ بِهَا فَاقْتَرَهُ ۝

- 1 अर्थात् वह अपने अपराधों को स्वयं भी जानता है क्योंकि पापी का मन स्वयं अपने पाप की गवाही देता है।
- 2 हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रिश्ते जिब्रील से वही पूरी होने से पहले इस भय से उसे दुहराने लगते कि कुछ भूल न जायें। उसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी: 4928, 4929)
इसी विषय को सूरह ताहा तथा सूरह आला में भी दुहराया गया है।
- 3 यहाँ से बात फिर काफ़िरों की ओर फिर रही है।

26. कदापि नहीं^[1], जब पहुँचेगी प्राण हंसलियों (गलों) तक।
كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ الْمُرَاتِي ۝
27. और कहा जायेगा: कौन झाड़-फूँक करने वाला है?
وَقِيلَ مَنْ مَعْرَافِي ۝
28. और विश्वास हो जायेगा कि यह (संसार से) जुदाई का समय है।
وَوَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَافِي ۝
29. और मिल जायेगी पिंडली- पिंडली^[2] से।
وَالنَّعْتِ السَّائِي بِالسَّائِي ۝
30. तेरे पालनहार की ओर उसी दिन जाना है।
إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَافِي ۝
31. तो न उस ने सत्य को माना और न नमाज़ पढ़ी।
فَلَا صَدَقَ وَلَا وُصِّلِي ۝
32. किन्तु झुठलाया और मुँह फेर लिया।
وَالكِنِّ كَدَّابَ وَتَوَلَّىٰ ۝
33. फिर गया अपने परिजनों की ओर अकड़ता हुआ।
مُخَّرَذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَتَنَطَّلِي ۝
34. शोक है तेरे लिये, फिर शोक है।
أَوَّلِي لَكَ فَأَوَّلِي ۝
35. फिर शोक है तेरे लिये, फिर शोक है।
ثُمَّ أَوَّلِي لَكَ فَأَوَّلِي ۝
36. क्या मनुष्य समझता है कि वह छोड़ दिया जायेगा वयर्थ^[3]।
أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَن يُتْرَكَ سُدًى ۝
37. क्या वह नहीं था वीर्य की बूंद जो (गर्भाशय में) बूंद-बूंद गिराई जाती है?
أَلَمْ يَكْ نُطْفَعًا مِّنْ مَّرِيئِي يُمْنِي ۝
38. फिर वह बंधा रक्त हुआ, फिर
ثُمَّ كَانَ عَاقِبَتُهُ فَنُؤِي ۝

1 अर्थात् यह विचार सहीह नहीं कि मौत के पश्चात् सड़-गल जायेंगे और दोबारा जीवित नहीं किये जायेंगे। क्योंकि आत्मा रह जाती है जो मौत के साथ ही अपने पालनहार की ओर चली जाती है।

2 अर्थात् मौत का समय आ जायेगा जो निरन्तर दुःख का समय होगा। (इब्ने कसीर)

3 अर्थात् न उसे किसी बात का आदेश दिया जायेगा और न रोका जायेगा और न उस से कर्मा का हिसाब लिया जायेगा।

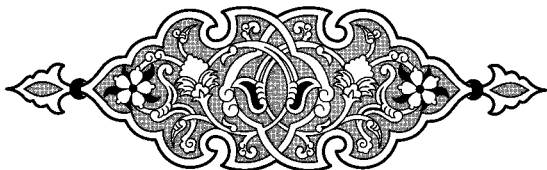
अल्लाह ने उसे पैदा किया और उसे बराबर बनाया।

39. फिर उस का जोड़ा: नर और नारी बनाया।

40. तो क्या वह सामर्थ्यवान नहीं कि मुर्दों को जीवित करे दे?

فَجَعَلَ مِنْهُ الذَّكَرَ وَالْأُنثَى ۝

أَلَيْسَ ذَلِكَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ
الْمَوْتَىٰ ۝



सूरह दहर - 76



सूरह दहर के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 31 आयतें हैं।

- इस सूरह में यह शब्द आने के कारण इस का नाम (सूरह दहर) है। इस का दूसरा नाम (सूरह इन्सान) भी है। दहर का अर्थ: ((युग)) है।
- इस में मनुष्य की उत्पत्ति का उद्देश्य बताया गया है। और काफ़ि़रों के लिये कड़ी यातना का एलान किया गया है।
- आयत 5 से 22 तक सदाचारियों के भारी प्रतिफल का वर्णन है। और 23 से 26 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धैर्य, नमाज़ तथा तस्बीह का निर्देश दिया गया है। इस के पश्चात् उन को चेतावनी दी गई है जो परलोक से अचेत हो कर मायामोह में लिप्त हैं।
- अन्त में कुर्आन की शिक्षा मान लेने की प्रेरणा दी गई है। ताकि लोग अल्लाह की दया में प्रवेश करें। और विरोधियों को दुःखदायी यातना की चेतावनी दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क्या व्यतीत हुआ है मनुष्य पर
युग का एक समय जब वह कोई
विचर्चित^[1] वस्तु न था?

هَلْ أَتَى عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ
شَيْئًا مِّنْ ذُرِّيَّتِهِ

2. हम ने ही पैदा किया मनुष्य को
मिश्रित (मिले हुये) वीर्य^[2] से, ताकि
उस की परीक्षा लें। और बनाया उसे
सुनने तथा देखने वाला।

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ
فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا

1 अर्थात् उस का कोई अस्तित्व न था।

2 अर्थात् नर-नारी के मिश्रित वीर्य से।

3. हम ने उसे राह दर्शा दी^[1] (अब) वह चाहे तो कृतज्ञ बने अथवा कृतघ्न।
4. निःसंदेह हम ने तय्यार की है काफ़िरों (कृतघ्नों) के लिये जंजीर तथा तौक और दहकती अग्नि।
5. निश्चय सदाचारी (कृतज्ञ) पियेंगे ऐसे प्याले से जिस में कपूर मिश्रित होगा।
6. यह एक स्रोत होगा जिस से अल्लाह के भक्त पियेंगे। उसे बहा ले जायेंगे (जहाँ चाहेंगे)^[2]
7. जो (संसार में) पूरी करते रहे मनौतियाँ^[3] और डरते रहे उस दिन से^[4] जिस की आपदा चारों ओर फैली हुयी होगी।
8. और भोजन कराते रहे उस (भोजन) को प्रेम करने के बावजूद, निर्धन तथा अनाथ और बंदी को।
9. (अपने मन में यह सोच कर) हम तुम्हें भोजन कराते हैं केवल अल्लाह की प्रसन्नता के लिये। तुम से नहीं चाहते हैं कोई बदला और न कोई कृतज्ञता।
10. हम डरते हैं अपने पालनहार से, उस

إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ۝

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلًا وَأَغْلَالًا وَسَعِيرًا ۝

إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ۝

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ۝

يُوفُونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ۝

وَيُطْعَمُونَ فِيهَا عَلَىٰ حَبِّهِمْ وَمِمَّا وَسَّوْغًا وَإِسْرَارًا ۝

إِنَّمَا نَطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لِأَتَرْيدُ مِنْكُمْ جِزَاءً وَلَا نَشْكُرًا ۝

إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَطَطِيرًا ۝

- 1 अर्थात् नबियों तथा आकाशीय पुस्तकों द्वारा, और दोनों का परिणाम बता दिया गया।
- 2 अर्थात् उस को जिधर चाहेंगे मोड़ ले जायेंगे। जैसे: घर, बैठक आदि।
- 3 नज़र (मनौती) का अर्थ है: अल्लाह के समिप्य के लिये कोई कर्म अपने ऊपर अनिवार्य कर लेना। और किसी देवी-देवता तथा पीर फकीर के लिये मनौती मानना शिर्क है। जिस को अल्लाह कभी भी क्षमा नहीं करेगा। अर्थात् अल्लाह के लिये जो भी मनौतियाँ मानते रहे उसे पूरी करते रहे।
- 4 अर्थात् प्रलय और हिसाब के दिन से।

दिन से जो अति भीषण तथा घोर होगा।

قَوْمُهُمُ اللَّهُ شَرَّ ذَٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقَدْ لَهُمْ نُصْرَةٌ
وَسُرُورًا ۝

11. तो बचा लिया अल्लाह ने उन्हें उस दिन की आपदा से और प्रदान कर दिया प्रफुल्लता तथा प्रसन्नता।

وَجَزَاءٌ مِّمَّا صَبَرُوا أَجْرًا وَعَجْرًا ۝

12. और उन्हें प्रतिफल दिया उन के धैर्य के बदले स्वर्ग तथा रेशमी वस्त्र।

مُنْكِبِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرْبَابِ لَا يُرَوْنَ فِيهَا
سَمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ۝

13. वह तकिये लगाये उस में तख्तों पर बैठे होंगे। न उस में धूप देखेंगे न कड़ा शीत।

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلَالُهَا وَذُلَّتْ قُطُوفُهَا نِجَالًا ۝

14. और झुके होंगे उन पर उस (स्वर्ग) के साये। और बस में किये होंगे उस के फलों के गुच्छे पूर्णतः।

وَيَطَّافُونَ عَلَيْهِمْ بِاللَّيْلِ مِنْ نِصْفَةٍ وَالْأُورِ كَانَتْ
قَوَارِيرًا ۝

15. तथा फिराये जायेंगे उन पर चाँदी के बर्तन तथा प्याले जो शीशों के होंगे।

قَوَارِيرًا مِنْ نِصْفَةٍ قَدَرُوهَا قَدِيرًا ۝

16. चाँदी के शीशों के जो एक अनुमान से भरेंगे।^[1]

وَيَسْقُونَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيلًا ۝

17. और पिलाये जायेंगे उस में ऐसे भरे प्याले जिस में सोंठ मिली होगी।

عَيْنًا فِيهَا تُسْقَى سَلْسِيلًا ۝

18. यह एक स्रोत है उस (स्वर्ग) में जिस का नाम सलसबील है।

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُغْتَدِلُونَ إِذَا رَأَيْتَهُمْ
حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَنثورًا ۝

19. और (सेवा के लिये) फिर रहे होंगे उन पर सदावासी बालक, जब तुम उन्हें देखोगे तो उन्हें समझोगे कि विखरे हुये मोती हैं।

وَإِذَا رَأَيْتَ فَتَرَكَ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلْكًا كَبِيرًا ۝

20. तथा जब तुम वहाँ देखोगे तो देखोगे बड़ा सुख तथा भारी राज्य।

1 अर्थात् सेवक उसे ऐसे अनुमान से भरेंगे कि न आवश्यकता से कम होंगे और न अधिक।

21. उन के ऊपर रेशमी हरे महीन तथा दबीज़ वस्त्र होंगे। और पहनाये जायेंगे उन्हें चाँदी के कंगन, और पिलायेगा उन्हें उन का पालनहार पवित्र पेया।
22. (तथा कहा जायेगा): यही है तुम्हारे लिये प्रतिफल और तुम्हारे प्रयास का आदर किया गया।
23. वास्तव में हम ने ही उतारा है आप पर कूर्आन थोड़ा - थोड़ा कर^[1] के।
24. अतः आप धैर्य से काम लें अपने पालनहार के आदेशानुसार और बात न मानें उन में से किसी पापी तथा कृतघ्न की।
25. तथा स्मरण करें अपने पालनहार के नाम का प्रातः तथा संध्या (के समय)।
26. तथा रात्री में सज्दा करें उस के समक्ष और उस की पवित्रता का वर्णन करें रात्री के लम्बे समय तक।
27. वास्तव में यह लोग मोह रखते हैं संसार से, और छोड़ रहे हैं अपने पीछे एक भारी दिन^[2] को।
28. हम ने ही उन्हें पैदा किया है और सुदृढ़ किये हैं उन के जोड़-बंदा तथा जब हम चाहें बदला दें उन^[3] के जैसे (दूसरों को)।

عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَإِسْتَبْرَقٌ
وَحُلُوفٌ أَسْوَدٌ مِنْ فِضَّةٍ وَسَقَمَهُمْ رَبُّهُمْ سَرَابًا
طَهُورًا ۝

إِنَّ هَذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيَكُمْ مَشْكُورًا ۝

إِنَّا نَحْنُ نُزَلِّلُ الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا ۝

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ الْبَثَاءَ أَوْ كَفُورًا ۝

وَادْكُرْ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝

وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ۝

إِنَّ هَؤُلَاءِ يُجْعِلُونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ
وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ۝

عَنْ خَلْقَتِهِمْ وَشَدَدْنَا آسْرَهُمْ وَإِذَا شِئْنَا
بَدَلْنَا مَثَلَهُمْ تَبَدُّلًا ۝

1 अर्थात् नबूवत की तेईस वर्ष की अवधि में, और ऐसा क्यों किया गया इस के लिये देखिये: सूरह बनी इस्राईल, आयत: 106।

2 इस से अभिप्राय प्रलय का दिन है।

3 अर्थात् इन का विनाश कर के इन के स्थान पर दूसरों को पैदा कर दे।

29. निश्चय यह (सूरह) एक शिक्षा है।
अतः जो चाहे अपने पालनहार की
ओर (जाने की) राह बना ले।
30. और तुम अल्लाह की इच्छा के बिना
कुछ भी नहीं चाह सकते।^[1] वास्तव
में अल्लाह सब चीज़ों और गुणों को
जानने वाला है।
31. वह प्रवेश देता है जिसे चाहे अपनी
दया में। और अत्याचारियों के लिये
उस ने तय्यार की है दुःखदायी
यातना।

إِنَّ هَذِهِ تَذَكُّرَةٌ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ
سَبِيلًا ۝

وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ كَانَ
عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

يَدْخُلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمِينَ
أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

1 अर्थात् कोई इस बात पर समर्थ नहीं कि जो चाहे कर ले। जो भलाई चाहता हो तो अल्लाह उसे भलाई की राह दिखा देता है।

सूरह मुर्सलात - 77



सूरह मुर्सलात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 50 आयतें हैं।

- इस की आयत 1 में मुर्सलात (हवाओं) की शपथ ली गई है। इसलिये इस का नाम सूरह मुर्सलात है। इस में झकड़ को प्रलय के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है। फिर प्रलय का भ्यावः चित्र दिखाया गया है।
- आयत 16 से 28 तक प्रतिफल के दिन के होने के प्रमाण प्रस्तुत करते हुये उस पर सोच-विचार का आमंत्रण दिया गया है।
- इस में क़्यामत के झुठलाने वालों को उस दिन जिस दुर्दशा का सामना होगा उस का चित्रण किया गया है। और आयत 41 से 44 तक सदाचारियों के सुफल का चित्रण किया गया है।
- अन्त में झुठलाने वालों की अपराधिक नीति पर कड़ी चेतावनी दी गई है।
- अब्दुल्लाह बिन मसूऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि हम मिना की वादी में थे। और सूरह मुर्सलात उतरी। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसे पढ़ रहे थे और हम उसे आप से सीख रहे थे। (सहीह बुख़ारी: 4930, 4931)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है भेजी हुई निरन्तर धीमी
वायुओं की!

وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًا ۝

2. फिर झकड़ वाली हवाओं की!

فَالْعَصْفَاتِ عَصْفًا ۝

3. और बादलों को फैलाने वालियों की!^[1]

وَالنُّشْرَاتِ نَشْرًا ۝

4. फिर अन्तर करने^[2] वालों की।

فَالْمُغْرَابَاتِ مُرْقَاًا ۝

1 अर्थात जो हवायें अब्दुल्लाह के आदेशानुसार बादलों को फैलाती हैं।

2 अर्थात सत्योसत्य तथा वैध और अवैध के बीच अन्तर करने के लिये आदेश लाते हैं।

5. फिर पहुँचाने वालों की वही (प्रकाशना^[1]) को! فَالْمُلْقِيَاتِ ذِكْرًا ۝
6. क्षमा के लिये अथवा चेतावनी^[2] के लिये! عَدُوًّا أَوْ وَدًّا ۝
7. निश्चय जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है वह अवश्य आनी है। إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَوَاعِدٌ ۝
8. फिर जब तारे धूमिल हो जायेंगे। فَإِذَا الْكُجُومُ طُمِسَتْ ۝
9. तथा जब आकाश खोल दिया जायेगा। وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ ۝
10. तथा जब पर्वत चूर-चूर कर के उड़ा दिये जायेंगे। وَإِذَا الْجِبَالُ سُفَّتْ ۝
11. और जब रसूलों का एक समय निर्धारित किया जायेगा^[3]। وَإِذَا الرُّسُلُ أُقِنَّتْ ۝
12. किस दिन के लिये इस को निलम्बित रखा गया है? لِأَيِّ يَوْمٍ أُحِجَّتْ ۝
13. निर्णय के दिन के लिये। لِيَوْمِ الْقُصْلِ ۝
14. आप क्या जानें कि क्या है वह निर्णय का दिन? وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الْقُصْلِ ۝
15. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये। وَيَوْمَ يُؤْمَرُ مِمَّا لِلْمُكَذِّبِينَ ۝
16. क्या हम ने विनाश नहीं कर दिया (अवैज्ञा के कारण) अगली जातियों का? أَلَمْ نُهَبِكِ الْأَوَّلِينَ ۝
17. फिर पीछे लगा^[4] दोगे उन के पिछलों को। ثُمَّ نَتَّبِعُهُمُ الْآخِرِينَ ۝

1 अर्थात् जो वही (प्रकाशना) ग्रहण कर के उसे रसूलों तक पहुँचाते हैं।

2 अर्थात् ईमान लाने वालों के लिये क्षमा का वचन तथा काफिरों के लिये यातना की सूचना लाते हैं।

3 उन के तथा उन के समुदायों के बीच निर्णय करने के लिये और रसूल गवाही देंगे।

4 अर्थात् उन्हीं के समान यातना-ग्रस्त कर देंगे।

18. इसी प्रकार हम करते हैं अपराधियों के साथ।
19. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
20. क्या हम ने पैदा नहीं किया है तुम्हें तुच्छ जल (वीर्य) से?
21. फिर हम ने रख दिया उसे एक सुदृढ़ स्थान (गर्भाशय) में।
22. एक निश्चित अवधि तक।^[1]
23. तो हम ने सामर्थ्य^[2] रखा, अतः हम अच्छा सामर्थ्य रखने वाले हैं।
24. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!
25. क्या हम ने नहीं बनाया धरती को समेट^[3] कर रखने वाली।
26. जीवित तथा मुर्दा को।
27. तथा बना दिये हम ने उस में बहुत से ऊँचे पर्वत। और पिलाया हम ने तुम्हें मीठा जल।
28. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
29. (कहा जायेगा): चलो उस (नरक) की ओर जिसे तुम झुठलाते रहे।

كَذَلِكَ نَقْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ۝

وَيَلُومُونَ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝

أَلَمْ نَخْلُقْكُمْ مِن مَّاءٍ مَّهِينٍ ۝

فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ۝

إِلَى قَدَرٍ مَّعْلُومٍ ۝

فَقَدَرْنَا نَافَةَ فَرَعَمَ الْقَدْرُونَ ۝

وَيَلُومُونَ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ۝

أَحْيَاءَ وَأَمْوَاتًا ۝

وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شَاهِقَاتٍ وَأَسْقَيْنَكُم مَّاءً فُرَاتًا ۝

وَيَلُومُونَ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝

إِنظِلُّوا إِلَى مَا كُنتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝

1 अर्थात् गर्भ की अवधि तक।

2 अर्थात् उसे पैदा करने पर।

3 अर्थात् जब तक लोग जीवित रहते हैं तो उस के ऊपर रहते तथा बस्ते हैं। और मरण के पश्चात् उसी में चले जाते हैं।

30. चलो ऐसी छाया^[1] की ओर जो तीन शाखाओं वाली है।
31. जो न छाया देगी और न ज्वाला से बचायेगी।
32. वह (अग्नि) फेंकती होगी चिंगारियाँ भवन के समान।
33. जैसे वह पीले ऊँट हों।
34. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!
35. यह वह दिन है कि वह बोल^[2] नहीं सकेंगे।
36. और न उन्हें अनुमति दी जायेगी कि वह बहाने बना सकें।
37. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!
38. यह निर्णय का दिन है, हम ने एकत्र कर लिया है तुम को तथा पूर्व के लोगों को।
39. तो यदि तुम्हारे पास कोई चाल^[3] हो तो चल लो?
40. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!
41. निःसंदेह आज्ञाकारी उस दिन छाँव तथा जल स्रोतों में होंगे।

إِنطَلِقُوا إِلَى ظِلٍّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ۝

لَا ظِلُّهُ وَلَا يُعِزُّهُ مِنَ النَّهَبِ ۝

إِنهَا تَرْمِي بِشَرِّهَا كَالْقَصْرِ ۝

كَأَنَّهُ جِمَلَتٌ صُغُرٌ ۝

وَيْلٌ لِّيَوْمِئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝

هَذَا يَوْمٌ لَا يَنْطِقُونَ ۝

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ۝

وَيْلٌ لِّيَوْمِئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝

هَذَا يَوْمُ الْقُضْلِ جَمَعْنَاكُمْ وَالْآدَاءِينَ ۝

فَإِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُوا ۝

وَيْلٌ لِّيَوْمِئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلِّ وَعُيُونٍ ۝

- 1 छाया से अभिप्रायः नरक के ध्रुवों की छाया है। जो तीन दिशाओं में फैला होगा।
- 2 अर्थात् उन के विरुद्ध ऐसे तर्क प्रस्तुत कर दिये जायेंगे कि वह अवाक रह जायेंगे।
- 3 अर्थात् मेरी पकड़ से बचने की।

42. तथा मन चाहे फलों में।
43. खाओ तथा पिओ मनमानी उन कर्मों के बदले जो तुम करते रहे।
44. हम इसी प्रकार प्रतिफल देते हैं।
45. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!
46. (हे झुठलाने वालो!) तुम खा लो तथा आनन्द ले लो कुछ^[1] दिन। वास्तव में तुम अपराधी हो।
47. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!
48. जब उन से कहा जाता है कि (अल्लाह के समक्ष) झुको तो झुकते नहीं।
49. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!
50. तो (अब) वह किस बात पर इस (क़ुर्आन) के पश्चात् ईमान^[2] लायेंगे?

- وَقَوْلِهِمْ إِنَّا كُنَّا نَعْمَلُونَ ﴿٥٠﴾
- إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٥١﴾
- وَيَوْمَ يُؤْمَدُ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٥٢﴾
- كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا لِّمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٣﴾
- وَإِنَّا لَنُؤْمِدُ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٥٤﴾
- وَيَوْمَ يُؤْمَدُ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٥٥﴾
- وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّبِّ كَعُونَ ﴿٥٦﴾
- وَيَوْمَ يُؤْمَدُ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٥٧﴾
- فَبِأَيِّ حَيْثِيًّا بَعْدَ ذَلِكَ يَوْمًا ﴿٥٨﴾

1 अर्थात् संसारिक जीवन में।

2 अर्थात् जब अल्लाह की अन्तिम पुस्तक पर ईमान नहीं लाते तो फिर कोई दूसरी पुस्तक नहीं हो सकती जिस पर वह ईमान लायें। इसलिये कि अब कोई और पुस्तक आसमान से आने वाली नहीं है।

सूरह नबा^[1] - 78



सूरह नबा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 40 आयतें हैं।

- इस सूरह का नाम ((नबा)) है जिस का अर्थ है: महत्व पूर्ण सूचना। जिस से अभिप्राय प्रलय तथा फिर से जीवित किये जाने की सूचना है।^[1]
- इस की आयत 1 से 5 तक में उन को चेतावनी दी गई है जो क़्यामत का उपहास करते हैं कि वह समय दूर नहीं जब वह आ जायेगी और वह अल्लाह के सामने उपस्थित होंगे।
- आयत 6 से 16 तक में अल्लाह की शक्ति की निशानियाँ बताई गई हैं जो मरण के पश्चात् जीवन के होने का प्रमाण हैं और गवाही देती हैं

1 इस सूरह में प्रलय (क़्यामत) तथा परलोक (आखिरत) के विश्वास पर बल दिया गया है। तथा इन पर विश्वास करने और न करने का परिणाम बताया गया है। मक्का के वासी इस की हँसी उड़ाते थे। कोई कहता कि यह हो ही नहीं सकता। किसी को संदेह था। किसी का विचार था कि यदि ऐसा हुआ तो भी हमारे देवी देवता हमारी अभिस्तावना कर देंगे, जैसा कि आगामी आयतों से विद्वित होता है।

"भारी सूचना" का अर्थ: क़ुर्आन द्वारा दी गई प्रलय और परलोक की सूचना है। प्रलय और परलोक पर विश्वास सत्य धर्म की मूल आस्था है। यदि प्रलय और परलोक पर विश्वास न हो तो धर्म का कोई महत्व नहीं रह जाता। क्योंकि जब कर्म का कोई फल ही न हो, और न कोई न्याय और प्रतिकार का दिन हो तो फिर सभी अपने स्वार्थ के लिये मनमानी करने के लिये आज़ाद होंगे, और अत्याचार तथा अन्याय के कारण पूरा मानव संसार नरक बन जायेगा।

इन प्रश्नात्मक वाक्यों में प्रकृति द्वारा मानव जाति के प्रतिपालन जीवन रक्षा और सुख सुविधा की जिस व्यवस्था की चर्चा की गई है उस पर विचार किया जाये तो इस का उत्तर यही होगा कि यह व्यवस्थापक के बिना नहीं हो सकती। और पूरी प्रकृति एक निर्धारित नियमानुसार काम कर रही है। तो जिस के लिये यह सब हो रहा है उस का भी कोई स्वाभाविक कर्तव्य अवश्य होगा जिस की पूछ होगी। जिस के लिये न्याय और प्रतिकार का दिन होना चाहिये जिस में सब को न्याय पूर्वक प्रतिकार दिया जाये। और जिस शक्ति ने यह सारी व्यवस्था की है उस दिन को निर्धारित करना भी उसी का काम है।

कि प्रतिफल का दिन अनिवार्य है।

- आयत 17 से 20 तक में बताया गया है कि प्रतिफल का दिन निश्चित समय पर होगा। उस दिन आकाश तथा धरती की व्यवस्था में भारी परिवर्तन हो जायेगा और सब मनुष्य अल्लाह के न्यायालय की ओर चल पड़ेंगे।
- आयत 21 से 36 तक में दुराचारियों के दुष्परिणाम तथा सदाचारियों के शुभपरिणाम को बताया है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के न्यायालय में उपस्थिति का चित्र दिखाया गया है और यह बताया गया है कि सिफारिश के बल पर कोई जवाबदेही से नहीं बच सकेगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

1. वे आपस में किस विषय में प्रश्न कर रहे हैं?
2. बहुत बड़ी सूचना के विषय में।
3. जिस में मतभेद कर रहे हैं।
4. निश्चय वे जान लेंगे।
5. फिर निश्चय वे जान लेंगे।^[1]
6. क्या हम ने धरती को पालना नहीं बनाया?
7. और पर्वतों को मेख?
8. तथा तुम्हें जोड़े जोड़े पैदा किया।
9. तथा तुम्हारी निद्रा को स्थिरता

عَمَّ يَسْأَلُونَ

عَنِ النَّبِیِّ الْعَظِیْمِ

الَّذِیْ هُمْ فِیْهِ مُخْتَلِفُونَ

كَلَّا سَيَعْلَمُونَ

كَلَّا سَيَعْلَمُونَ

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ مَهْدًا

وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا

وَخَلَقْنَاكُمْ أَزْوَاجًا

وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا

- 1 (1-5) इन आयतों में उन को धिक्कारा गया है, जो प्रलय की हँसी उड़ाते हैं। जैसे उन के लिये प्रलय की सूचना किसी गंभीर चिन्ता के योग्य नहीं। परन्तु वह दिन दूर नहीं जब प्रलय उन के आगे आ जायेगी और वे विश्व विधाता के सामने उत्तरदायित्व के लिये उपस्थित होंगे।

(आराम) बनाया।

10. और रात को वस्त्र बनाया।
11. और दिन को कमाने के लिये बनाया।
12. तथा हम ने तुम्हारे ऊपर सात दृढ़ आकाश बनाये।
13. और एक दमकता दीप (सूर्य) बनाया।
14. और बादलों से मूसलाधार वर्षा की।
15. ताकि उस से अब और वनस्पति उपजायें।
16. और घने घने बाग।^[1]
17. निश्चय निर्णय (फ़ैसले) का दिन निश्चित है।
18. जिस दिन सूर में फूँका जायेगा। फिर तुम दलों ही दलों में चले आओगे।
19. और आकाश खोल दिया जायेगा तो उसमें द्वार ही द्वार हो जायेंगे।
20. और पर्वत चला दिये जायेंगे तो वे मरीचिका बन जायेंगे।^[2]

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ لِبَاسًا ۝

وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۝

وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۝

وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَاجًا ۝

وَ أَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرَاتِ مَاءً ثَجَّاجًا ۝

لِنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَنَبَاتًا ۝

وَجَدْتِ الْأَقْفَا ۝

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيقَاتًا ۝

يَوْمَ يُنْفَخُ فِي السُّورِ مَقَاتُونَ أَثَوَا حَاجًا ۝

وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ۝

وُسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۝

1 (6-16) इन आयतों में अल्लाह की शक्ति प्रतिपालन (रूबूबिय्यत) और प्रज्ञा के लक्षण दर्शाये गये हैं जो यह साक्ष्य देते हैं कि प्रतिकार (बदले) का दिन आवश्यक है, क्योंकि जिस के लिये इतनी बड़ी व्यवस्था की गई हो और उसे कर्मों के अधिकार भी दिये गये हों तो उस के कर्मों का पुरस्कार या दण्ड तो मिलना ही चाहिये।

2 (17-20) इन आयतों में बताया जा रहा है कि निर्णय का दिन अपने निश्चित समय पर आकर रहेगा, उस दिन आकाश तथा धरती में एक बड़ी उथल पुथल होगी। इस के लिये सूर में एक फूँक मारने की देर है। फिर जिस की सूचना दी जा रही है तुम्हारे सामने आ जायेगी। तुम्हारे मानने या न मानने का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। और सब अपना हिसाब देने के लिये अल्लाह के न्यायालय

21. वास्तव में नरक घात में है।
22. जो दूराचारियों का स्थान है।
23. जिस में वे असंख्य वर्षों तक रहेंगे।
24. उस में ठंडी तथा पेय (पीने की चीज़) नहीं चखेंगे।
25. केवल गर्म पानी और पीप रक्त के।
26. यह पूरा पूरा प्रतिफल है।
27. निःसंदेह वे हिसाब की आशा नहीं रखते थे।
28. तथा वे हमारी आयतों को झुठलाते थे।
29. और हम ने सब विषय लिख कर सुरक्षित कर लिये हैं।
30. तो चखो, हम तुम्हारी यातना अधिक ही करते रहेंगे।^[1]
31. वास्तव में जो डरते हैं उन्हीं के लिये सफलता है।
32. बाग़ तथा अँगूर हैं।
33. और नवयुवति कुमारियाँ।
34. और छलकते प्याले।
35. उस में बकवाद और मिथ्या बातें नहीं सुनेंगे।

- إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۝
 لِلظَّالِمِينَ مَا يَأْتُونَ ۝
 لِيُثْبِتِينَ فِيهَا أَحْقَابًا ۝
 لَا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ۝
 إِلَّا صَيْمًا وَغَسَاقًا ۝
 جَزَاءً وَفَاءً ۝
 إِنَّهُمْ كَانُوا الْأَبْرَجُونَ حَسَابًا ۝
 وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَابًا ۝
 وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا ۝
 فَذُوقُوا فَلَنتُزِيدَكُمْ الْعَذَابًا ۝
 إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ۝
 حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا ۝
 وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ۝
 وَكَأْسَادَهَا قَاتًا ۝
 لَيْسَمُوعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِدَابًا ۝

की ओर चल पड़ेंगे।

- 1 (21-30) इन आयतों में बताया गया है कि जो हिसाब की आशा नहीं रखते और हमारी आयतों को नहीं मानते हम ने उन के एक एक करतूत को गिन कर अपने यहाँ लिख रखा है। और उन की खबर लेने के लिये नरक घात लगाये तैयार है, जहाँ उन के कुकर्माँ का भरपूर बदला दिया जायेगा।

36. यह तुम्हारे पालनहार की ओर से भरपूर पुरस्कार है।
37. जो आकाश, धरती तथा जो उन के बीच है का अति करुणामय पालनहार है। जिस से बात करने का वे साहस नहीं कर सकेंगे।
38. जिस दिन रूह (जिब्रिल) तथा फरिश्ते पंक्तियों में खड़े होंगे, वही बात कर सकेगा जिसे रहमान (अल्लाह) आज्ञा देगा, और सहीह बात करेगा।
39. वह दिन निःसंदेह होना ही है। अतः जो चाहे अपने पालनहार की ओर (जाने का) ठिकाना बना ले।^[1]
40. हम ने तुम को समीप यातना से सावधान कर दिया जिस दिन इन्सान अपना करतूत देखेगा, और काफिर (विश्वास हीन) कहेगा कि काश मैं मिट्टी हो जाता!^[2]

جَزَاءً مِّن رَّبِّكَ عَطَاءٌ حَسَابًا ۝

رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ
لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ۝

يَوْمَ يَقُومُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰئِكَةُ صَفًّا اِلَّا يَتَكَلَّمُوْنَ
اِلَّا مَن اٰذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ۝

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَنْ شَاءَ اَلْحَدِّ اِلَىٰ رَبِّهِ
مَا بَا ۝

اِنَّا اَنْذَرْنَاكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۝ يَوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ
مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَعْمَلُ الْكَافِرُ يَلِيْتٰنِي كُنْتُ
شُرَابًا ۝

- 1 (37-39) इन आयतों में अल्लाह के न्यायालय में उपस्थिति (हाज़िरी) का चित्र दिखाया गया है। और जो इस भ्रम में पड़े है कि उन के देवी देवता आदि अभिस्तावना करेंगे उन को सावधान किया गया है कि उस दिन कोई बिना उस की आज्ञा के मुँह नहीं खोलेगा और अल्लाह की आज्ञा से अभिस्तावना भी करेगा तो उसी के लिये जो संसार में सत्य वचन "ला इलाहा इल्लल्लाह" को मानता हो। अल्लाह के द्रोही और सत्य के विरोधी किसी अभिस्तावना के योग्य नहीं होंगे।
- 2 (40) बात को इस चेतावनी पर समाप्त किया गया है कि जिस दिन के आने की सूचना दी जा रही है, उस का आना सत्य है, उसे दूर न समझो। अब जिस का दिल चाहे इसे मान कर अपने पालनहार की ओर मार्ग बना ले। परन्तु इस चेतावनी के होते जो इन्कार करेगा उस का किया धरा सामने आयेगा तो पछता पछता कर यह कामना करेगा कि मैं संसार में पैदा ही न होता। उस समय इस संसार के बारे में उस का यह विचार होगा जिस के प्रेम में आज वह परलोक से अंधा बना हुआ है।

सूरह नाज़िआत^[1] - 79



सूरह नाज़िआत के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 46 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((अन्नाज़िआत)) शब्द से हुआ है। जिस का अर्थ है: प्राण खींचने वाले फ़रिश्ते, इसी से इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 14 तक में प्रतिफल के दिन पर गवाही प्रस्तुत की गई है। फिर क़्यामत का चित्र दिखाते हुये उस का इन्कार करने वालों की आपत्ति की चर्चा की गई है।
- आयत 15 से 26 तक में फ़िरऔन के मूसा (अलैहिस्सलाम) की बात न मानने के शिक्षाप्रद परिणाम को बताया गया है जो प्रतिफल के होने का ऐतिहासिक प्रमाण है।

1 इस सूरह का विषय प्रलय तथा दोबारा उठाये जाने का वर्णन है। और इस में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबी न मानने के दुष्परिणाम से सावधान किया गया है। और फ़रिश्तों के कार्यों की चर्चा कर के यह विश्वास दिलाया गया है कि प्रलय अवश्य आयेगी, और दूसरा जीवन हो कर रहेगा। यही फ़रिश्ते अल्लाह के आदेश से इस विश्व की व्यवस्था को ध्वस्त कर देंगे। यह कार्य जिसे असंभव समझा जा रहा है अल्लाह के लिये अति सरल है। एक क्षण में वह संसार को विलय कर देगा और दूसरे क्षण में, सहसा दूसरे संसार में स्वयं को जीवित पाओगे।

फिर फ़िरऔन की कथा का वर्णन कर के नबियों (ईश दूतों) को न मानने का दुष्परिणाम बताया गया है जिस से शिक्षा लेनी चाहिये।

27 से 33 तक परलोक तथा दोबारा उठाये जाने का वर्णन है।

34 से 41 तक बताया गया है कि परलोक के स्थायी जीवन का निर्णय इस आधार पर होगा कि किस ने आज्ञा का उल्लंघन किया है। और माया मोह को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया, तथा किस ने अपने पालनहार के सामने खड़े होने का भय किया। और मनमानी करने से बचा। यह समय अवश्य आना है। अब जिस के जो मन में आये करें। जो इसी संसार को सब कुछ समझते थे यह अनुभव करेंगे कि वह संसार में मात्र पल भर ही रहे, उस समय समझ में आयेगा कि इस पल भर के सुख के लिये उस ने सदा के लिये अपने भविष्य का विनाश कर लिया।

- आयत 34 से 41 तक में क़्यामत के दिन अवैज्ञाकारियों की दुर्दशा और आज्ञाकारियों के उत्तम परिणाम को दिखाया गया है।
- अन्त में क़्यामत के नकारने वालों का जवाब दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- | | |
|--|---|
| 1. शपथ है उन फ़रिश्तों की जो डूब कर (प्राण) निकालते हैं! | وَالْبُرْعَتِ عُورًا ۝ |
| 2. और जो सरलता से (प्राण) निकालते हैं। | وَالشَّيْطِ كَسْطًا ۝ |
| 3. और जो तैरते रहते हैं। | وَالشَّيْطِ سَبِيحًا ۝ |
| 4. फिर जो आगे निकल जाते हैं। | فَالشَّيْطِ سَبِيحًا ۝ |
| 5. फिर जो कार्य की व्यवस्था करते हैं ^[1] | فَالْمُدْبِرَاتِ أَمْرًا ۝ |
| 6. जिस दिन धरती काँपेगी। | يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۝ |
| 7. जिस के पीछे ही दूसरी कम्प आ जायेगी। | تَتَّبِعَهَا الْإِزْدَاقَةُ ۝ |
| 8. उस दिन बहुत से दिल धड़क रहे होंगे। | قُلُوبٌ يَوْمَئِذٍ وَاجِفَةٌ ۝ |
| 9. उन की आंखें झुकी होंगी। | أَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۝ |
| 10. वे कहते हैं कि क्या हम फिर पहली स्थिति में लाये जायेंगे? | يَقُولُونَ ءَأِنَّا لَمَرْدُودُونَ فِي الْحَاوِرَةِ ۝ |
| 11. जब हम (भुरभुरी) (खोखली) स्थियाँ (हड्डियाँ) हो जायेंगे। | عَرَادَاتُكُنَا عِظَامًا تَخْرُوعَةٌ ۝ |
| 12. उन्होंने ने कहा: तब तो इस वापसी में क्षति है। | قَالُوا إِنَّكَ إِذَا كُنَّا حَاسِرَةً ۝ |

1 (1-5) यहाँ से बताया गया है कि प्रलय का आरंभ भारी भूकम्प से होगा और दूसरे ही क्षण सब जीवित हो कर धरती के ऊपर होंगे।

13. बस वह एक झिड़की होगी।
14. तब वे अकस्मात धरती के ऊपर होंगे।
15. (हे नबी) क्या तुम को मूसा का समाचार पहुँचा?^[1]
16. जब पवित्र वादी "तुवा" में उसे उसके पालनहार ने पुकारा।
17. फिरऔन के पास जाओ वह विद्रोही हो गया है।
18. तथा उस से कहो कि क्या तुम पवित्र होना चाहोगे?
19. और मैं तुम्हें तुम्हारे पालनहार की सीधी राह दिखाऊँ तो तुम डरोगे?
20. फिर उस को सब से बड़ा चिन्ह (चमत्कार) दिखाया।
21. तो उस ने उसे झुठला दिया और बात न मानी।
22. फिर प्रयास करने लगा।
23. फिर लोगों को एकत्र किया फिर पुकारा।
24. और कहा: मैं तुम्हारा परम पालनहार हूँ।
25. तो अल्लाह ने उसे संसार तथा परलोक की यातना में घेर लिया।
26. वास्तव में इस में उस के लिये शिक्षा है जो डरता है।

- وَأَمَّا هِيَ زَجْرًا وَوَّاحِدًا ۝
- فَإِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ۝
- هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ۝
- إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُعَدِّسِ طُوًى ۝
- إِذْ هَبُّ إِلَى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَى ۝
- فَقُلْ هَلْ لَكَ إِلَىٰ أَنْ تَزْكَىٰ ۝
- وَأَهْدِيكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَتَخْتَبِي ۝
- فَأَرَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَىٰ ۝
- فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ۝
- ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَىٰ ۝
- فَحَشَرَ فَنَادَىٰ ۝
- فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ ۝
- فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْإِبْرَةِ وَالْأُولَىٰ ۝
- إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَخْتَبِي ۝

1 (6-15) इन आयतों में प्रलय दिवस का चित्र पेश किया गया है। और काफ़िरोँ की अवस्था बतायी गई है कि वे उस दिन किस प्रकार अपने आप को एक खुले मैदान में पायेंगे।

27. क्या तुम को पैदा करना कठिन है
अथवा आकाश को, जिसे उस ने
बनाया।^[1]
28. उस की छत उँची की और चौरस
किया।
29. और उस की रात को अंधेरी, तथा
दिन को उजाला किया।
30. और इस के बाद धरती को फैलाया।
31. और उस से पानी और चारा
निकाला।
32. और पर्वतों को गाड़ दिया।
33. तुम्हारे तथा तुम्हारे पशुओं के लाभ
के लिये।
34. तो जब प्रलय आयेगी।^[2]
35. उस दिन इन्सान अपना करतूत याद
करेगा।^[3]
36. और देखने वाले के लिये नरक सामने
कर दी जायेगी।

ءَأَنْتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ السَّمَاءُ بَنَاهَا ۖ

رَفَعَ سَمَكَهَا فَسَوَّيَهَا ۖ

وَأَعْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ۖ

وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَلِكَ دَحَاهَا ۖ

أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا ۖ

وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ۖ

مَتَاعًا لَكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ۖ

فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَةُ الْكُبْرَى ۖ

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ مَا سَعَى ۖ

وَبُورِزَتِ الْجَحِيمُ لِمَنْ يَرَى ۖ

- 1 (16 -27) यहाँ से प्रलय के होने और पुनः जीवित करने के तर्क आकाश तथा धरती की रचना से दिये जा रहे हैं कि: जिस शक्ति ने यह सब बनाया और तुम्हारे जीवन रक्षा की व्यवस्था की है, प्रलय करना और फिर सब को जीवित करना उस के लिये असंभव कैसे हो सकता है? तुम स्वयं विचार कर के निर्णय करो।
- 2 (28-34) "बड़ी आपदा" प्रलय को कहा गया है जो उस की घोर स्थिति का चित्रण है।
- 3 (35) यह प्रलय का तीसरा चरण होगा जब कि वह सामने होगी। उस दिन प्रत्येक व्यक्ति को अपने संसारिक कर्म याद आयेंगे और कर्मानुसार जिस ने सत्य धर्म की शिक्षा का पालन किया होगा उसे स्वर्ग का सुख मिलेगा और जिस ने सत्य धर्म और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नकारा और मनमानी धर्म और कर्म किया होगा वह नरक का स्थायी दुख भोगेगा।

37. तो जिस ने विद्रोह किया।
38. और सांसारिक जीवन को प्राथमिकता दी।
39. तो नरक ही उस का आवास होगी।
40. परन्तु जो अपने पालनहार की महानता से डरा तथा अपने आप को मनमानी करने से रोका।
41. तो निश्चय ही उस का आवास स्वर्ग है।
42. वे आप से प्रश्न करते हैं कि वह समय कब आयेगा?^[1]
43. तुम उस की चर्चा में क्यों पड़े हो?
44. उस के होने के समय का ज्ञान तुम्हारे पालनहार के पास है।
45. तुम तो उसे सावधान करने के लिये हो जो उस से डरता है।^[2]
46. वह जिस दिन उस का दर्शन करेंगे उन्हें ऐसा लगेगा कि वह संसार में एक संध्या या उस के सवेरे से अधिक नहीं ठहरे।

فَأَمَّا مَنْ طَغَىٰ

وَالشَّرَّالْحَيَوٰةَ الدُّنْيَا

فَأَنّ الْجَحِيْمِ هِيَ الْمَأْوٰى

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى

فَأَنّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوٰى

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسِلُهَا

فِيَعْلَمُهَا مِن دُونِكُمْ

إِلَىٰ رَبِّكَ مُنْتَهٰهَا

إِنَّمَا أَنْتَ مُنذِرٌ مَّن يُخَشِئُهَا

كَآلِهِمْ يَوْمَ يُرْوَنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَةً أَوْ صُطْحًا

1 (42) काफ़िरों का यह प्रश्न समय जानने के लिये नहीं, बल्कि हंसी उड़ाने के लिये था।

2 (45) इस आयत में कहा गया है कि (हे नबी) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप का दायित्व मात्र उस दिन से सावधान करना है। धर्म बल पूर्वक मनवाने के लिये नहीं। जो नहीं मानेगा उसे स्वयं उस दिन समझ में आ जायेगा कि उस ने क्षण भर के सांसारिक जीवन के स्वर्थ के लिये अपना स्थायी सुख खो दिया। और उस समय पछतावे का कुछ लाभ नहीं होगा।

सूरह अबस^[1] - 80



सूरह अबस के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 42 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((अबस)) शब्द से हुआ है जिस का अर्थ ((मुंह बसोरना)) है। इसी से इस सूरह का नाम रखा गया है। [1]
- इस की आयत 1 से 10 तक में एक विशेष घटना की ओर संकेत कर के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ध्यान दिलाया गया है कि आप अभिमानियों तथा दुराग्रहियों के पीछे न पड़ें। उस पर ध्यान दें जो सत्य की खोज करता और अपना सुधार चाहता है।
- आयत 11 से 16 तक में कुरआन की महिमा का वर्णन किया गया तथा बताया गया है कि जिस की ओर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बुला रहे हैं वह कितनी बड़ी चीज़ है। इस लिये जो इस का अपमान करेंगे वह स्वयं अपना ही बुरा करेंगे।
- आयत 17 से 23 तक में प्रलय के इन्कारियों को चेतावनी दी गई है। तथा फिर से जीवित किये जाने के प्रमाण अल्लाह के पालनहार होने से प्रस्तुत किये गये हैं।

1 यह सूरह मक्की है। भाष्य कारों ने इस के उतरने का कारण यह लिखा है कि एक बार ईशदूत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मक्का के प्रमुखों को इस्लाम के विषय में समझा रहे थे कि एक अनुयायी अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने आ कर धार्मिक विषय में प्रश्न किया। आप उसे बुरा मान गये और मुँह फेर लिया। इस पर आप को सावधान किया गया कि धर्म में संसारिक मान मर्यादा का कोई महत्व नहीं, आप उसी पर प्रथम ध्यान दें जो सत्य को मानता तथा उस का पालन करता है। आप का दायित्व यह भी नहीं है कि किसी को सत्य मनवा दें। फिर कुरआन ऐसी चीज़ नहीं है जिसे विनय और खुशामद से प्रस्तुत किया जाये। बल्कि जो उस पर विचार करेगा तो स्वयं ही इस सत्य को पा लेगा। और जान लेगा कि जिस निराकार शक्ति ने सब कुछ किया है तो पूजा भी मात्र उसी की करें और उसी के कृतज्ञ हों। फिर यदि वह अपनी कृतधनता पर अड़े रह गये तो एक दिन आयेगा जब यह मान मर्यादा और उन का कोई सहायक नहीं रह जायेगा और प्रत्येक के कर्मों का फल उस के सामने आ जायेगा।

- अन्त में आयत 42 तक क्यामत का भ्यावह चित्र तथा सदाचारियों और दुराचारियों के अलग-अलग परिणाम बताये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (नबी ने) त्योरी चढ़ाई तथा मुँह फेर लिया।
2. इस कारण कि उस के पास एक अँधा आया।
3. और तुम क्या जानो शायद वह पवित्रता प्राप्त करे।
4. या नसीहत ग्रहण करे जो उस को लाभ देती।
5. परन्तु जो विमुख (निश्चन्त) है।
6. तुम उन की ओर ध्यान दे रहे हो।
7. जब कि तुम पर कोई दोष नहीं यदि वह पवित्रता ग्रहण न करे।
8. तथा जो तुम्हारे पास दौड़ता आया।
9. और वह डर भी रहा है।
10. तुम उस की ओर ध्यान नहीं देते^[1]
11. कदापि यह न करो, यह (अर्थात् कूर्आन) एक स्मृति (याद दहानी) है।

عَبَسَ وَتَوَلَّى ۝

أَنْ جَاءَهُ الْأَعْمَى ۝

وَمَا يَذُرُّكَ لَعَلَّه يَرْكَى ۝

أَوْ يَذُكُرُ النَّفْعَ الَّذِي أُرَى ۝

أَمَّا مَنْ اسْتَعْصَى ۝

فَأَنْتَ لَهُ تَصَدَّى ۝

وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزُرِّي ۝

وَأَمَّا مَنْ جَاءَكَ يَسْعَى ۝

وَهُوَ يَخْشَى ۝

فَأَنْتَ عَنْهُ تَلَهَّى ۝

كَلَّا إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۝

- 1 (1-10) भावार्थ यह है कि सत्य के प्रचारक का यह कर्तव्य है कि जो सत्य की खोज में हो भले ही वह दरिद्र हो उसी के सुधार पर ध्यान दे। और जो अभीमान के कारण सत्य की परवाह नहीं करते उन के पीछे समय न गवायें। आप का यह दायित्व भी नहीं है कि उन्हें अपनी बात मनवा दें।

12. अतः जो चाहे स्मरण (याद) करे।
فَمَنْ شَاءَ ذَكَرْهُ ۝
13. माननीय शास्त्रों में है।
فِي صُحُفٍ مُّكْرَمَةٍ ۝
14. जो ऊँचे तथा पवित्र है।
مَرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۝
15. ऐसे लेखकों (फरिश्तों) के हाथों में है।
يَأْتِي سَفَرَةٍ ۝
16. जो सम्मानित और आदरणीय है।^[1]
كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۝
17. इन्सान मारा जाये वह कितना कृतघ्न (नाशुक्रा) है।
قَتِيلَ الْإِنْسَانِ مَا أَكْفَرَهُ ۝
18. उसे किस वस्तु से (अल्लाह) ने पैदा किया?
مِنْ آيٍ شَيْءٍ خَلَقَهُ ۝
19. उसे वीर्य से पैदा किया, फिर उस का भाग्य बनाया।
مِنْ نُطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَرَهُ ۝
20. फिर उस के लिये मार्ग सरल किया।
ثُمَّ السَّبِيلَ يَسَّرَهُ ۝
21. फिर मौत दी फिर समाधि में डाल दिया।
ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ۝
22. फिर जब चाहेगा उसे जीवित कर लेगा।
ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنشُرَهُ ۝
23. वस्तुतः उस ने उस की आज्ञा का पालन नहीं किया।^[2]
كَلَّا لَمَّا يُفِضُ مَا أَمَرَهُ ۝
24. इन्सान अपने भोजन की ओर ध्यान दे।
فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلَى طَعَامِهِ ۝

1 (11-16) इन में कुर्आन की महानता को बताया गया है कि यह एक स्मृति (याद दहानी) है। किसी पर थोपने के लिये नहीं आया है। बल्कि वह तो फरिश्तों के हाथों में स्वर्ग में एक पवित्र शास्त्र के अन्दर सुरक्षित है। और वहीं से वह (कुर्आन) इस संसार में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतारा जा रहा है।

2 (17-23) तक विश्वास हीनों पर धिक्कार है कि यदि वह अपने अस्तित्व पर विचार करें कि हम ने कितनी तुच्छ वीर्य की बूँद से उस की रचना की तथा अपनी दया से उसे चेतना और समझ दी परन्तु इन सब उपकारों को भूल कर कृतघ्न बना हुआ है, और पूजा उपासना अन्य की करता है।

25. हम ने मूसलाधार वर्षा की।
26. फिर धरती को चीरा फाड़ा।
27. फिर उस से अन्न उगाया।
28. तथा अंगूर और तरकारियाँ।
29. तथा जैतून एवं खजूर।
30. तथा घने बाग।
31. एवं फल तथा वनस्पतियाँ।
32. तुम्हारे तथा तुम्हारे पशुओं के लिये^[1]
33. तो जब कान फाड़ देने वाली (प्रलय) आ जायेगी।
34. उस दिन इन्सान अपने भाई से भागेगा।
35. तथा अपने माता और पिता से।
36. एवं अपनी पत्नी तथा अपने पुत्रों से।
37. प्रत्येक व्यक्ति को उस दिन अपनी पड़ी होगी।
38. उस दिन बहुत से चेहरे उज्ज्वल होंगे।
39. हंसते एवं प्रसन्न होंगे।
40. तथा बहुत से चेहरों पर धूल पड़ी होगी।

- أَنَّا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبَابًا ۝
 ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقَاقًا ۝
 فَأَنبَتْنَا فِيهَا حَبَابًا ۝
 وَعَبَبْنَا وَقُضْبًا ۝
 وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا ۝
 وَحَدَائِقَ غُلْبًا ۝
 وَغَاكِمَةً وَأَبَّاقًا ۝
 مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنعَامِكُمْ ۝
 فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاعَةُ ۝
 يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ۝
 وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ۝
 وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ۝
 لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ۝
 وَجُودَةٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ۝
 ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ۝
 وَوَجُودَةٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهِمْ غَبْرَةٌ ۝

1 (24-32) इन आयतों में इन्सान के जीवन साधनों को साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो अल्लाह की अपार दया के परिचायक हैं। अतः जब सारी व्यवस्था वही करता है तो फिर उस के इन उपकारों पर इन्सान के लिये उचित था कि उसी की बात माने और उसी के आदेशों का पालन करे जो कुरआन के माध्यम से अन्तिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है। (दावतुल कुआन)

41. उन पर कालिमा छाई होगी।
 42. वही काफिर और कुकर्मी लोग हैं।^[1]

تَرَهَّقَهَا قَارَةٌ ﴿٤١﴾
 أُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرَةُ الْفَجِرَةُ ﴿٤٢﴾

1 (33-42) इन आयतों का भावार्थ यह है कि संसार में किसी पर कोई आपदा आती है तो उस के अपने लोग उस की सहायता और रक्षा करते हैं। परन्तु प्रलय के दिन सब को अपनी अपनी पड़ी होगी और उस के कर्म ही उस की रक्षा करेंगे।

सूरह तक्वीर^[1] - 81



सूरह तक्वीर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 29 आयतें हैं।

- इस में प्रलय के दिन सूर्य के लपेट दिये जाने के लिये ((कुव्विरत)) शब्द आया है। इस लिये इस का नाम सूरह तक्वीर है। जिस का अर्थ लपेटना है।^[1]
- इस की आयत 1 से 6 तक प्रलय की प्रथम घटना और आयत 7 से 14 तक में दूसरी घटना का चित्रण किया गया है।
- आयत 15 से 25 तक में यह बताया गया है कि कुर्आन और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो सूचना दे रहे हैं वह सत्य पर आधारित है।
- आयत 26 से 29 तक में इन्कार करने वालों को चेतावनी दी गई है कि कुर्आन को न मानना सत्य का इन्कार है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब सूर्य लपेट दिया जायेगा।
2. और जब तारे धुमिल हो जायेंगे।
3. जब पर्वत चलाये जायेंगे।
4. और जब दस महीने की गाभिन ऊँटनियाँ छोड़ दी जायेंगी।
5. और जब वन् पशु एकत्र कर दिये जायेंगे।
6. और जब सागर भड़काये जायेंगे।^[2]

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝

وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ۝

وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝

وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝

وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۝

وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝

1 यह सूरह आरंभिक सूरतों में से है। इस में प्रलय तथा दूतत्व (रिसालत) का वर्णन है।

2 (1-6) इन में प्रलय के प्रथम चरण में विश्व में जो उथल पुथल होगी उस को

7. और जब प्राण जोड़ दिये जायेंगे।
8. और जब जीवित गाड़ी गई कन्या से प्रश्न किया जायेगा:
9. कि वह किस अपराध के कारण बध की गई।
10. तथा जब कर्म पत्र फैला दिये जायेंगे।
11. और जब आकाश की खाल उतार दी जायेगी।
12. और जब नरक धहकाई जायेगी।
13. और जब स्वर्ग समीप लाई जायेगी।
14. तो प्रत्येक प्राणी जान लेगा कि वह क्या लेकर आया है।^[1]
15. मैं शपथ लेता हूँ उन तारों की जो पीछे हट जाते हैं।
16. जो चलते चलते छुप जाते हैं।
17. और रात की (शपथ), जब समाप्त होने लगती है।

وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۝

وَإِذَا الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ ۝

بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ۝

وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝

وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۝

وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِرَتْ ۝

وَإِذَا الْجَنَّةُ أُرْفِلَتْ ۝

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ۝

فَلَا أُقْسِمُ بِالْخَيْسِ ۝

الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ۝

وَاللَّيْلِ إِذَا عَسَسَ ۝

दिखाया गया है कि आकाश, धरती और पर्वत, सागर तथा जीव जन्तुओं की क्या दशा होगी। और माया मोह में पड़ा इन्सान इसी संसार में अपने प्रियवर धन से कैसा बे परवाह हो जायेगा। वन् पशु भी भय के मारे एकत्र हो जायेंगे। सागरों के जल प्लावन से धरती जल थल हो जायेगी।

- 1 (7-14) इन आयतों में प्रलय के दूसरे चरण की दशा को दर्शाया गया है कि इन्सानों की आस्था और कर्मों के अनुसार श्रेणियाँ बनेंगी। नृशंसितों (मज़लूमों) के साथ न्याय किया जायेगा। कर्म पत्र खोल दिये जायेंगे। नरक भड़काई जायेगी। स्वर्ग सामने कर दी जायेगी। और उस समय सभी को वास्तविकता का ज्ञान हो जायेगा। इस्लाम के उदय के समय अरब में कुछ लोग पुत्रियों को जन्म लेते ही जीवित गाड़ दिया करते थे। इस्लाम ने नारियों को जीवन प्रदान किया। और उन्हें जीवित गाड़ देने को घोर अपराध घोषित किया। आयत नं० 8 में उन्हीं नृशंस अपराधियों को धिक्कारा गया है।

18. तथा भोर की जब उजाला होने लगता है।
19. यह (कुर्आन) एक मान्यवर स्वर्ग दूत का लाया हुआ कथन है।
20. जो शक्ति शाली है। अर्श (सिंहासन) के मालिक के पास उच्च पद वाला है।
21. जिस की बात मानी जाती है और बड़ा अमानतदार है।^[1]
22. और तुम्हारा साथी उन्मत्त नहीं है।
23. उस ने उस को आकाश में खुले रूप से देखा है।
24. वह परोक्ष (गैब) की बात बताने में प्रलोभी नहीं है।^[2]
25. यह धिक्कारी शैतान का कथन नहीं है।
26. फिर तुम कहाँ जा रहे हो?
27. यह संसार वासियों के लिये एक स्मृति (शास्त्र) है।
28. तुम में से उस के लिये जो सुधरना चाहता हो।

وَالضُّبُّ إِذَا انْتَفَسَ ۝

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝

ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ۝

مُطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ۝

وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُونٍ ۝

وَلَقَدْ رَآهُ بِالسَّمَاءِ الْعَمِيمِ ۝

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ۝

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ ۝

فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ۝

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝

لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَقِيمَ ۝

- 1 (15-21) तारों की व्यवस्था गति तथा अंधेरे के पश्चात नियमित रूप से उजाला की शपथ इस बात की गवाही है कि कुर्आन ज्योतिष की बकवास नहीं। बल्कि यह ईश वाणी है। जिस को एक शक्तिशाली तथा सम्मान वाला फ़रिश्ता ले कर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया। और अमानतदारी से इसे पहुँचाया।
- 2 (22-24) इन में यह चेतावनी दी गई है कि महा ईशदूत (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो सुना रहे हैं, और जो फ़रिश्ता वही (प्रकाशना) लाता है उन्होंने उसे देखा है। वह परोक्ष की बातें प्रस्तुत कर रहे हैं कोई ज्योतिष की बात नहीं, जो धिक्कारे शैतान ज्योतिषियों को दिया करते हैं।

29. तथा तुम विश्व के पालनहार के चाहे | وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٩﴾
 बिना कुछ नहीं कर सकते।^[1]

1 (27-29) इन साक्ष्यों के पश्चात सावधान किया गया है कि कुर्आन मात्र याद दहानी है। इस विश्व में इस के सत्य होने के सभी लक्षण सब के सामने हैं। इन का अध्ययन कर के स्वयं सत्य की राह अपना लो अन्यथा अपना ही बिगाड़ोगे।

सूरह इन्फितार^[1] - 82



सूरह इन्फितार के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 19 आयतें हैं।

- "इन्फितार" का अर्थ ((फटना)) है। इस में प्रलय के दिन आकाश के फट जाने की सूचना दी गई है। इसी कारण इस का यह नाम है।
- इस की आयत 1 से 5 तक में प्रलय का दृश्य प्रस्तुत किया गया है कि जब प्रलय आयेगी तो मनुष्य का सब किया धरा सामने आ जायेगा।
- फिर आयत 6 से 8 तक में मनुष्य को यह बताया गया है कि जिस अल्लाह ने उसे पैदा किया है क्या उसे मनमानी करने के लिये छोड़ देगा?
- आयत 9 से 12 तक में बताया गया है कि मनुष्य का प्रत्येक कर्म लिखा जा रहा है।
- आयत 13 से 19 तक में सदाचारियों और दुराचारियों के परिणाम बताते हुये सावधान किया गया है कि प्रलय के दिन किसी के बस में कुछ न होगा, उस दिन सभी अधिकार अल्लाह के हाथ में होगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब आकाश फट जायेगा।
2. तथा जब तारे झड़ जायेंगे।
3. और जब सागर उबल पड़ेंगे।
4. और जब समाधियाँ (कब्रें) खोल दी जायेंगी।
5. तब प्रत्येक प्राणी को ज्ञान हो जायेगा जो उस ने किया है और नहीं किया है^[1]

إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ۝

وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۝

وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۝

وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ۝

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَأَخَّرَتْ ۝

1 (1-5) इन में प्रलय के दिन आकाश ग्रहों तथा धरती और समाधियों पर जो

6. हे इन्सान! तुझे किस वस्तु ने तेरे उदार पालनहार से बहका दिया।
7. जिस ने तेरी रचना की फिर तुझे संतुलित बनाया।
8. जिस रूप में चाहा बना दिया।^[1]
9. वास्तव में तुम प्रतिफल (प्रलय) के दिन को नहीं मानते।
10. जब कि तुम पर निरीक्षक (पासबान) हैं।
11. जो माननीय लेखक हैं।
12. वे जो कुछ तुम करते हो जानते हैं।^[2]
13. निःसंदेह सदाचारी सुखों में होंगे।
14. और दुराचारी नरक में।
15. प्रतिकार (बदले) के दिन उस में झोंक दिये जायेंगे।
16. और वे उस से बच रहने वाले नहीं।^[3]

يَأْتِيهَا الْإِنْسَانُ مَا عَزَاكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ۝

الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوَّاكَ فَعَدَاكَ ۝

فِي أَيِّ صُورَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ۝

كَلَّا لَبَلٌ تُكَلِّمُونَ بِالذِّبَانِ ۝

وَأَنْ عَلَيْكُمْ لِعِظِينَ ۝

كِرَامًا كَتِيبِينَ ۝

يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ۝

إِنَّ الْآبِرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝

وَأِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ۝

يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ۝

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ۝

दशा गुज़रेगी उस का विचित्र किया गया है। तथा चैतावनी दी गई है कि सब के कर्तूत उस के सामने आ जायेंगे।

- 1 (6-8) भावार्थ यह है कि इन्सान की पैदाइश में अल्लाह की शक्ति, दक्षाता तथा दया के जो लक्षण हैं, उन के दर्पण में यह बताया गया है कि प्रलय को असंभव न समझो। यह सब व्यवस्था इस बात का प्रमाण है कि तुम्हारा अस्तित्व व्यर्थ नहीं है कि मनमानी करो। (देखिये: तर्जुमानुल कुरआन, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद) इस का अर्थ यह भी हो सकता है कि जब तुम्हारा अस्तित्व और रूप रेखा कुछ भी तुम्हारे बस नहीं, तो फिर जिस शक्ति ने सब किया उसी की शक्ति में प्रलय तथा प्रतिकार के होने को क्यों नहीं मानते?
- 2 (9-12) इन आयतों में इस भ्रम का खण्डन किया गया है कि सभी कर्मों और कथनों का ज्ञान कैसे हो सकता है।
- 3 (13-16) इन आयतों में सदाचारियों तथा दुराचारियों का परिणाम बताया गया है कि एक स्वर्ग के सुखों में रहेगा। और दूसरा नरक के दण्ड का भागी बनेगा।

17. और तुम क्या जानो कि बदले का दिन क्या है?
18. फिर तुम क्या जानो कि बदले का दिन क्या है?
19. जिस दिन किसी का किसी के लिये कोई अधिकार नहीं होगा, और उस दिन सब अधिकार अल्लाह का होगा।^[1]

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ۝

كُلُّمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ۝

يَوْمَ لَا تَنفَعُكَ نَفْسٌ لِنَفْسٍ شَيْئًا وَالْأَمْرُ
يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ۝

1 (17-19) इन आयतों में दो वाक्यों में प्रलय की चर्चा दोहरा कर उस की भयानकता को दर्शाते हुये बताया गया है कि निर्णय बे लाग होगा। कोई किसी की सहायता नहीं कर सकेगा। सत्य आस्था और सत्कर्म ही सहायक होंगे जिस का मार्ग कुर्आन दिखा रहा है। कुर्आन की सभी आयतों में प्रतिकार का दिन प्रलय के दिन को ही बताया गया है जिस दिन प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्मानुसार प्रतिकार मिलेगा।

सूरह मुतफ़िफ़ीन^[1] - 83



सूरह मुतफ़िफ़ीन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 36 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ में ((मुतफ़िफ़ीन)) शब्द आया है। जिस का अर्थ है: नापने-तौलने में कमी करने वाले, इसी से इस का नाम रखा गया है।^[1]
- आयत 1 से 6 तक में व्यवसायिक विषय में विश्वासघात को विनाशकारी कर्म बताया गया है।
- आयत 7 से 28 तक में बताया गया है कि कुकर्मियों के कर्म एक विशेष पंजी जिस का नाम ((सिज्जीन)) है, में लिखे हुये हैं और सदाचारियों के ((इल्लियीन)) में, जिन के अनुसार उन का निर्णय किया जायेगा और दोनों का परिणाम बताया गया है।
- आयत 29 से अन्त तक ईमान वालों को दिलासा दी गई है कि विरोधियों के व्यंग से दुःखी न हों आज वह तुम पर हँस रहे हैं कल तुम उन पर हँसोगे।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. विनाश है डंडी मारने वालों का।
2. जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा लेते हैं।
3. और जब उन को नाप या तोल कर देते हैं तो कम देते हैं।
4. क्या वे नहीं सोचते कि फिर जीवित किये जायेंगे?

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ

الَّذِينَ إِذَا الْكُتَالُوهُ عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ

وَإِذَا كَالُوهُمْ أَوَّزْتُوهُمْ يُعْجِرُونَ

أَلَا يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ أَيُّهُمْ مَبْعُوثُونَ

- 1 नाप तौल में कमी बहुत बड़ी समाजिक खराबी है। और यह रोग विगत समुदायों में भी विशेष रूप से पाया जाता था। सूरह मुतफ़िफ़ीन में इस बुराई की कड़ी निंदा की गई है। और प्रलय दिवस में उन को कठोर यातना की सूचना दी गई है।

5. एक भीषण दिन के लिये।
6. जिस दिन सभी विश्व के पालनहार के सामने खड़े होंगे।^[1]
7. कदापि ऐसा न करो, निश्चय बुरों का कर्म पत्र "सिज्जीन" में है।
8. और तुम क्या जानो कि "सिज्जीन" क्या है?
9. वह लिखित महान् पुस्तक है।
10. उस दिन झुठलाने वालों के लिये विनाश है।
11. जो प्रतिकार (बदले) के दिन को झुठलाते हैं।
12. तथा उसे वही झुठलाता है जो महा अत्याचारी और पापी है।
13. जब उन के सामने हमारी आयतों का अध्ययन किया जाता है तो कहते हैं: पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं।
14. सुनो! उन के दिलों पर कुकर्मों के कारण लोहमल लग गया है।
15. निश्चय वे उस दिन अपने पालनहार (के दर्शन) से रोक दिये जायेंगे।
16. फिर वे नरक में जायेंगे।

لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۝

يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفُجَارِ لَفِي سِجِّينٍ ۝

وَمَا أَدْرَاكَ مَا سِجِّينٌ ۝

كِتَابٌ مُرْقُومٌ ۝

وَيْلٌ لِّیَوْمٍ إِذِ الْمُكَذِّبِينَ ۝

الَّذِينَ يَكْتُمُونَ بَیْوَمَ الدِّينِ ۝

وَمَا يَكْتُمُ بِهِ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ۝

إِذِ اسْتُلِيَ عَلَيْهِ الْيُنْتَانَا قَالَ سَاءَ ظِعْرٌ

الْأُولَئِينَ ۝

كَلَّا بَلْ عَصَرَانٌ عَلَى قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

كَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَمَحْجُورُونَ ۝

ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيمِ ۝

1 (1-6) इस सूरह की प्रथम छः आयतों में इसी व्यवसायिक विश्वास घात पर पकड़ की गई है कि न्याय तो यह है कि अपने लिये अन्याय नहीं चाहते तो दूसरों के साथ न्याय करो। और इस रोग का निवारण अल्लाह के भय तथा परलोक पर विश्वास ही से हो सकता है। क्योंकि इस स्थिति में निक्षेप (अमानतदारी) एक नीति ही नहीं बल्कि धार्मिक कर्तव्य होगा और इस पर स्थित रहना लाभ तथा हानि पर निर्भर नहीं रहेगा।

17. फिर कहा जायेगा कि यही है जिसे तुम मिथ्या मानते थे।^[1]

تَوْبَعَالِ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَكَذِّبُونَ ۝

18. सच्च यह है कि सदाचारियों के कर्म पत्र "इल्लिय्यीन" में है।

كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْأَبْرَارِ لَعِنْدَ رَبِّهِمْ ۝

19. और तुम क्या जानो कि "इल्लिय्यीन" क्या है?

وَأَأْتِيكَ مَا عَلَيْوْنَ ۝

20. एक अंकित पुस्तक है।

كِتَابٌ مَّرْفُومٌ ۝

21. जिस के पास समीपवर्ती (फ़रिश्ते) उपस्थित रहते हैं।

يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ۝

22. निश्चय सदाचारी आनंद में होंगे।

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝

23. सिंहासनों के ऊपर बैठ कर सब कुछ देख रहे होंगे।

عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ ۝

24. तुम उन के मुखों से आनंद के चिह्न अनुभव करोगे।

تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ۝

25. उन्हें मुहर लगी शुद्ध मदिरा पिलायी जायेगी।

يُسْقَوْنَ مِنْ رَحِيقٍ مَخْمُومٍ ۝

26. यह मुहर कस्तूरी की होगी। तो इस की अभिलाषा करने वालों को इस की अभिलाषा करनी चाहिये।

خَمْرُهُمْ كَسْكَبٍ فِي ذَلِكَ فَمَتَلَتْهَا أَنَّسُ الْمُنْتَفِسُونَ ۝

27. उस में तसनीम मिली होगी।

وَمَزَاجُهُ مِنْ تَسْنِينٍ ۝

1 (7-17) इन आयतों में कुकर्मियों के दुष्परिणाम का विवरण दिया गया है। तथा यह बताया गया है कि उन के कुकर्म पहले ही से अपराध पत्रों में अंकित किये जा रहे हैं। तथा वे परलोक में कड़ी यातना का सामना करेंगे। और नरक में झोंक दिये जायेंगे।

"सिज्जीन" से अभिप्राय: एक जगह है जहाँ पर काफ़िरों, अत्याचारियों और मुशिरकों के कुकर्म पत्र तथा प्राण एकत्र किये जाते हैं। दिलों का लोहमल: पापों की कालिमा को कहा गया है। पाप अंतरात्मा को अन्धकार बना देते हैं तो सत्य को स्वीकार करने की स्वभाविक योग्यता खो देते हैं।

28. वह एक स्रोत है जिस से (अल्लाह के) समीप वर्ती पियेंगे।^[1]
29. पापी (संसार में) ईमान लाने वालों पर हंसते थे।
30. और जब उन के पास से गुज़रते तो आँखें मिचकाते थे।
31. और जब अपने परिवार में वापिस जाते तो आनंद लेते हुये वापिस होते थे।
32. और जब उन्हें (मुमिनों को) देखते तो कहते थे: यही भटक के हुये लोग हैं।
33. जब कि वे उन के निरीक्षक बनाकर नहीं भेजे गये थे।
34. तो जो ईमान लाये आज काफ़िरों पर हंस रहे हैं।
35. सिंहासनों के ऊपर से उन्हें देख रहे हैं।
36. क्या काफ़िरों (विश्वास हीनों) को उन का बदला दे दिया गया?^[2]

عِبْنًا يُشْرَبُ بِهَا الْمُقْرَبُونَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ ۝

وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ۝

وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ۝

وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَؤُلَاءِ لَضَالُّونَ ۝

وَمَا أُرْسِلُوا عَلَيْهِمْ حَافِظِينَ ۝

فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ۝

عَلَىٰ الْأَرْبَابِكِ يَنْظُرُونَ ۝

هَلْ تُؤْتِبُ الْكُفَّارًا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

- 1 (18-28) इन आयतों में बताया गया है कि सदाचारियों के कर्म ऊँचे पत्रों में अंकित किये जा रहे हैं जो फ़रिश्तों के पास सुरक्षित हैं और वे स्वर्ग में सुख के साथ रहेंगे। "इल्लिय्यीन" से अभिप्रायः जन्नत में एक जगह है। जहाँ पर नेक लोगों के कर्म पत्र तथा प्राण एकत्र किये जाते हैं। वहाँ पर समीपवर्ति फ़रिश्ते उपस्थित रहते हैं।
- 2 (29-36) इन आयतों में बताया गया है कि परलोक में कर्मों का फल दिया जायेगा तो संसारिक परिस्थितियाँ बदल जायेंगी। संसार में तो सब के लिये अल्लाह की दया है, परन्तु न्याय के दिन जो अपने सुख सुविधा पर गर्व करते थे और जिन निर्धन मुसलमानों को देख कर आँखें मारते थे, वहाँ पर वही उन के दुष्परिणाम को देख कर प्रसन्न होंगे। अंतिम आयत में विश्वास हीनों के दुष्परिणाम को उन का कर्म कहा गया है। जिस में यह संकेत है कि सुफल और कुफल स्वयं इन्सान के अपने कर्मों का स्वभाविक प्रभाव होगा।

सूरह इन्शिकाक^[1] - 84



सूरह इन्शिकाक के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 25 आयतें हैं।

- इन्शिकाक का अर्थ: फटना है। इस में आकाश के फटने की सूचना दी गई है, इस कारण इस का यह नाम है।^[1]
- आयत 1 से 5 तक में उस उथल पुथल का संक्षेप में वर्णन है जो प्रलय आते ही इस धरती और आकाश में होगी।
- आयत 6 से 15 तक में मनुष्य के अल्लाह के न्यायालय में पहुँचने, कर्मपत्र दिये जाने और अपने परिणाम को पहुँचने का वर्णन है।
- आयत 16 से 20 तक विश्व की निशानियों से प्रमाणित किया गया है कि मनुष्य को मौत के पश्चात् विभिन्न स्थितियों से गुज़रना होगा।
- अन्तिम आयतों में उन्हें धमकी दी गई है जो कुर्आन सुनकर अल्लाह के आगे नहीं झुकते बल्कि उसे झुठलाते हैं। और उन्हें अनन्त प्रतिफल की शुभसूचना दी गई है जो ईमान ला कर सदाचार करते हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब आकाश फट जायेगा।
2. और अपने पालनहार की सुनेगा और यही उसे करना भी चाहिये।
3. तथा जब धरती फैला दी जायेगी।
4. और जो उसके भीतर है फैंक देगी तथा खाली हो जायेगी।

إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ ۝

وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحَقَّتْ ۝

وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ۝

وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ۝

1 इस सूरह का शीर्षक भी प्रलय (क्यामत) तथा परलोक (आखिरत) है।

5. और अपने पालनहार की सुनेगी और यही उसे करना भी चाहिये^[1]
6. हे इन्सान! वस्तुतः तू अपने पालनहार से मिलने के लिये परिश्रम कर रहा है, और तू उस से अवश्य मिलेगा।
7. फिर जिस किसी को उस का कर्म पत्र दाहिने हाथ में दिया जायेगा।
8. तो उस का सरल हिसाब लिया जायेगा।
9. तथा वह अपनों में प्रसन्न होकर वापस जायेगा।
10. और जिन को उन का कर्म पत्र बायें हाथ में दिया जायेगा
11. तो वह विनाश (मृत्यु) को पुकारेगा।
12. तथा नरक में जायेगा।
13. वह अपनों में प्रसन्न रहता था।
14. उस ने सोचा था कि कभी पलट कर नहीं आयेगा।
15. क्यों नहीं? निश्चय उस का पालनहार उसे देख रहा था^[2]

وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝

يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدًّا
فَمَلِّئْهُ ۝

فَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ۝

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ۝

وَيَنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۝

وَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ۝

فَسَوْفَ يَدْعُوا ثُبُورًا ۝

وَيَصِلُ إِلَىٰ سَعِيرًا ۝

إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۝

إِنَّهُ ظَنَّ أَنْ لَنْ يَسْحُورَ ۝

بَلَىٰ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ۝

- 1 (1-5) इन आयतों में प्रलय के समय आकाश एवं धरती में जो हलचल होगी उस का चित्रण करते हुये यह बताया गया है कि इस विश्व के विधाता के आज्ञानुसार यह आकाश और धरती कार्यरत हैं और प्रलय के समय भी उसी की आज्ञा का पालन करेंगे।
धरती को फैलाने का अर्थ यह है कि पर्वत आदि खण्ड खण्ड हो कर समस्त भूमि चौरस कर दी जायेगी।
- 2 (6-15) इन आयतों में इन्सान को सावधान किया गया है कि तुझे भी अपने पालनहार से मिलना है। और धीरे धीरे उसी की ओर जा रहा है। वहाँ अपने

16. मैं सांध्य लालिमा की शपथ लेता हूँ! فَلَا أَقْسِمُ بِالشَّفَقِ ۝
17. तथा रात की, और जिसे वह ऐकत्र करे! وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقِ ۝
18. तथा चाँद की जब पूरा हो जाये। وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ۝
19. फिर तुम अवश्य एक दशा से दूसरी दशा पर सवार होगे। لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَن طَبَقٍ ۝
20. फिर क्यों वे विश्वास नहीं करते। فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝
21. और जब उन के पास कुर्आन पढ़ा जाता है तो सज्दा नहीं करते।^[1] وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ۝
22. बल्कि काफ़िर तो उसे झुठलाते हैं। بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يَكْتُمُونَ ۝
23. और अल्लाह उन के विचारों को भलि भाँति जानता है। وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ۝
24. अतः उन्हें दुख दायी यातना की शुभ सूचना सुना दो। فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابِ الْعَذَابِ ۝
25. परन्तु जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन के लिये समाप्त न होने वाला बदला है।^[2] إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝

कर्मानुसार जिसे दायें हाथ में कर्म पत्र मिलेगा वह अपनों से प्रसन्न होकर मिलेगा। और जिस को बायें हाथ में कर्म पत्र दिया जायेगा तो वह विनाश को पुकारेगा। यह वही होगा जिस ने माया मोह में कुर्आन को नकार दिया था। और सोचा कि इस संसारिक जीवन के पश्चात् कोई जीवन नहीं आयेगा।

- 1 (16-21) इन आयतों में विश्व के कुछ लक्षणों को साक्ष्य स्वरूप प्रस्तुत कर के सावधान किया गया है कि जिस प्रकार यह विश्व तीन स्थितियों से गुज़रता है इसी प्रकार तुम्हें भी तीन स्थितियों से गुज़रना है: संसारिक जीवन, फिर मरण, फिर परलोक का स्थायी जीवन जिस का सुख दुख संसारिक कर्मों के आधार पर होगा।
- 2 (22-25) इन आयतों में उन के लिये चेतावनी है जो इन स्वभाविक साक्ष्यों के होते हुये कुर्आन को न मानने पर अड़े हुये हैं। और उन के लिये शुभ सूचना है जो इसे मान कर विश्वास (ईमान) तथा सुकर्म की राह पर अग्रसर हैं।

सूरह बुरूज^[1] - 85



सूरह बुरूज के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 22 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयतों में बुर्जों (राशि चक्र) वाले आकाश की शपथ ली गई है। जिस से इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- आयत 1 से 3 तक प्रतिफल के दिन के होने का दावा किया गया है।
- आयत 4 से 11 तक उन को धमकी दी गई है जो मुसलमानों पर केवल इस लिये अत्याचार करते हैं कि वह एक अल्लाह पर ईमान लाये हैं। और जो इस अत्याचार के होते ईमान पर स्थित रहें उन्हें स्वर्ग की शुभसूचना दी गई है। फिर आयत 16 तक अत्याचारियों को सूचित किया गया है कि अल्लाह की पकड़ कड़ी है। साथ ही अल्लाह के उन गुणों का वर्णन किया गया है जिन से भय पैदा होता है और क्षमा माँगने की प्रेरणा मिलती है।
- आयत 17 से 20 तक अत्याचारियों की शिक्षाप्रद यातना की ओर संकेत है और यह चेतावनी है कि विरोधी अल्लाह के घेरे में हैं।
- अन्त में कुर्आन को एक ऊँची पुस्तक बताया है जिस का स्रोत पवित्र तथा सुरक्षित है और जिस की कोई बात असत्य नहीं हो सकती।

1 यह सूरह मक्का के उस युग में उतरी जब मुसलमानों को घोर यातनायें दे कर इस्लाम से फेरने का प्रयास ज़ोरों पर था। ऐसी परिस्थितियों में एक ओर तो मुसलमानों को दिलासा दिया जा रहा है, और दूसरी ओर काफ़िरों को सावधान किया जा रहा है। और इस के लिये "अस्हाबे उख़दूद" (खाईयों वालों) की कथा का वर्णन किया जा रहा है।

दक्षिणी अरब में नजरान, जहाँ ईसाई रहते थे, को बड़ा महत्व प्राप्त था। यह एक व्यवसायिक केन्द्र था। तथा सामाजिक कारणों से "जू-नवास" यमन के यहूदी सम्राट ने उस पर आक्रमण कर दिया। और आग से भरे गढ़ों में नर नारियों तथा बच्चों को फिकवा दिया जिस के बदले 525 ई. में हब्शा के ईसाईयों ने यमन पर अक्रमण कर के "जू-नवास" तथा उस के हिम्यरी राज्य का अन्त कर दिया। इस की पुष्टि "गुराब" के शिला लेख से होती है जो वर्तमान में अवशेषज्ञों को मिला है। (तर्जुमानुल कुर्आन)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है बुर्जों वाले आकाश की!
2. शपथ है उस दिन की जिस का वचन दिया गया!
3. शपथ है साक्षी की और जिस पर साक्षय देगा!
4. खाईयों वालों का नाश हो गया!^[1]
5. जिन में भड़कते हुये ईंधन की अग्नि थी।
6. जब कि वे उन पर बैठे हुये थे।
7. और वे ईमान वालों के साथ जो कर रहे थे उसे देख रहे थे।
8. और उन का दोष केवल यही था कि वे प्रभावी प्रशंसा किये अल्लाह के प्रति विश्वास किये हुये थे।
9. जो आकाशों तथा धरती के राज्य का

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ ۝

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ ۝

وَشَٰهِدٍ وَّمَشْهُودٍ ۝

كُلِّ الْأَصْعَابِ الْأَخْضُودِ ۝

النَّارِ ذَاتِ الْوُتُودِ ۝

إِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُودٌ ۝

وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ ۝

وَأَنقَمُوا مِنْهُمْ الْآنَ يَوْمُ مَوَابِلِهِ الْعَزِيزِ

الْحَمِيدِ ۝

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ عَلَىٰ

1 (1-4) इन में तीन चीजों की शपथ ली गई है:

(1) बुर्जों वाले आकाश की,

(2) प्रलय की, जिस का वचन दिया गया है,

(3) प्रलय के भ्यावह दृश्य की और उस पूरी उत्पत्ति की जो उसे देखेगी।

प्रथम शपथ इस बात की गवाही दे रही है कि जो शक्ति इस आकाश के ग्रहों पर राज कर रही है उस की पकड़ से यह तुच्छ इन्सान बच कर कहाँ जा सकता है?

दूसरी शपथ इस बात पर है कि संसार में इन्सान जो अत्याचार करना चाहे कर ले, परन्तु वह दिन अवश्य आना है जिस से उसे सावधान किया जा रहा है, जिस में सब के साथ न्याय किया जायेगा, और अत्याचारियों की पकड़ की जायेगी। तीसरी शपथ इस पर है कि जैसे इन अत्यचारियों ने विवश आस्तिकों के जलने का दृश्य देखा, इसी प्रकार प्रलय के दिन पूरी मानवजाति देखेगी कि उन की क्या दुर्गत है।

स्वामी है। और अल्लाह सब कुछ देख रहा है।

10. जिन्होंने ने ईमान लाने वाले नर नारियों को परिक्षा में डाला, फिर क्षमा याचना न की उन के लिये नरक का दण्ड तथा भड़कती आग की यातना है।
11. वास्तव में जो ईमान लाये और सदाचारी बने, उन के लिये ऐसे स्वर्ग हैं जिन के तले नहरें बह रही हैं और यही बड़ी सफलता है।^[1]
12. निश्चय तेरे पालनहार की पकड़ बहुत कड़ी है।
13. वही पहले पैदा करता है और फिर दूसरी बार पैदा करेगा।
14. और वह अति क्षमा तथा प्रेम करने वाला है।
15. वह सिंहासन का महान स्वामी है।
16. वह जो चाहे करता है।^[2]

كُلُّ شَيْءٍ شَاهِدٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ كَفَرُوا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ۝

إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ۝

إِنَّهُ هُوَ يُبْدِي وَيُعِيدُ ۝

وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ۝

ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ۝

فَعَالٌ لِّمَا يُرِيدُ ۝

- 1 (5-11) इन आयतों में जो आस्तिक सताये गये उन के लिये सहायता का वचन तथा यदि वे अपने विश्वास (ईमान) पर स्थित रहे तो उन के लिये स्वर्ग की शुभ सूचना और अत्यचारियों के लिये नरक की धमकी है जिन्होंने ने उन को सताया और फिर अल्लाह से क्षमा याचना आदि कर के सत्य को नहीं माना।
- 2 (12-16) इन आयतों में बताया गया है कि अल्लाह की पकड़ के साथ ही जो क्षमा याचना कर के उस पर ईमान लाये, उस के लिये क्षमा और दया का द्वार खुला हुआ है।

कुर्आन ने इस कुविचार का खण्डन किया है कि अल्लाह, पापों को क्षमा नहीं कर सकता। क्योंकि इस से संसार पापों से भर जायेगा और कोई स्वार्थी पाप कर के क्षमा याचना कर लेगा फिर पाप करेगा। यह कुविचार उस समय सहीह हो सकता है जब अल्लाह को एक इन्सान मान लिया जाये, जो यह न जानता हो कि जो व्यक्ति क्षमा माँग रहा है उस के मन में क्या है? अल्लाह तो मर्मज्ञ

17. हे नबी! क्या तुम को सेनाओ की सूचना मिली?
18. फिरऔन तथा समूद की^[1]
19. बल्कि काफिर (विश्वासहीन) झुठलाने में लगे हुये हैं।
20. और अल्लाह उन को हर ओर से घेरे हुये है^[2]
21. बल्कि वह गौरव वाला कुर्आन है।
22. जो लेख पत्र (लौहे महफूज़) में सुरक्षित है^[3]

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ۝

فِرْعَوْنَ وَشَمُودَ ۝

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ۝

وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ ۝

بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَجِيدٌ ۝

فِي لَوْحٍ مَحْفُوظٍ ۝

है, वह जानता है कि किस के मन में क्या है? फिर "तौबा" इस का नाम नहीं कि मुख से इस शब्द को बोल दिया जाये। तौबा (पश्चानुताप) मन से पाप न करने के प्रयत्न का नाम है और इसे अल्लाह तआला जानता है कि किस के मन में क्या है?

- 1 (17-18) इन में अतीत की कुछ अत्यचारी जातियों की ओर संकेत है, जिन का सविस्तार वर्णन कुर्आन की अनेक सूरतों में आया है। जिन्होंने आस्तिकों पर अत्यचार किये जैसे मक्का के कुरैश मुसलमानों पर कर रहे थे। जब कि उन को पता था कि पिछली जातियों के साथ क्या हुआ। परन्तु वे अपने परिणाम से निश्चेत थे।
- 2 (19-20) इन दो आयतों में उन के दुर्भाग्य को बताया जा रहा है जो अपने प्रभुत्व के गर्व में कुर्आन को नहीं मानते। जब कि उसे माने बिना कोई उपाय नहीं, और वह अल्लाह के अधिकार के भीतर ही है।
- 3 (21-22) इन आयतों में बताया गया है कि यह कुर्आन कविता और ज्योतिष नहीं है जैसा कि वह सोचते हैं, यह श्रेष्ठ और उच्चतम् अल्लाह का कथन है जिस का उद्गम "लौहे महफूज़" में सुरक्षित है।

सूरह तारिक^[1] - 86



सूरह तारिक के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 17 आयतें हैं।

- इस के आरंभ में ((तारिक)) शब्द आया है जिस का अर्थ ((तारा)) है। इसी लिये इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 4 तक में आकाश तथा तारों की इस बात पर गवाही प्रस्तुत की गई है कि प्रत्येक व्यक्ति की निगरानी हो रही है और एक दिन उस को हिसाब के लिये लाया जायेगा।
- आयत 5 से 8 तक मनुष्य की उत्पत्ति को उस के दोबारा पैदा किये जाने का प्रमाण बनाया गया है। और आयत 9 से 10 तक में यह वर्णन है कि उस दिन सब भेद परखे जायेंगे और मनुष्य विवश और असहाय होगा।
- आयत 11 से 14 तक में इस बात पर आकाश तथा धरती की गवाही प्रस्तुत की गई है कि कुर्आन जो प्रतिफल के दिन की सूचना दे रहा है वह अकाट्य है।
- अन्त में काफिरों को चेतावनी देते हुये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिलासा दी गई है कि उन की चालें एक दिन उन्हीं के लिये उलटी पड़ेंगी। उन्हें कुछ अवसर दे दो। उन का परिणाम सामने आने में देर नहीं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है आकाश तथा रात के
"प्रकाश प्रदान करने वाले" की!

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ۝

1. इस सूरह में दो विषयों का वर्णन किया गया है:
एक यह कि इन्सान को मौत के पश्चात अल्लाह के सामने उपस्थित होना है।
दूसरा यह कि कुर्आन एक निर्णायक वचन है। जिसे विश्वास हीनों (काफिरों) की कोई चाल और उपाय विफल नहीं कर सकती।

2. और तुम क्या जानो कि वह "रात में प्रकाश प्रदान करने वाला" क्या है?
3. वह ज्योतिमय सितारा है।
4. प्रत्येक प्राणी पर एक रक्षक है।^[1]
5. इन्सान यह तो विचार करे कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया?
6. उछलते पानी (वीर्य) से पैदा किया गया है।
7. जो पीठ तथा सीने के पंजरों के मध्य से निकलता है।
8. निश्चय वह उसे लौटाने की शक्ति रखता है।^[2]
9. जिस दिन मन के भेद परखे जायेंगे।
10. तो उसे न कोई बल होगा और न उस का कोई सहायक।^[3]
11. शपथ है आकाश की जो बरसता है!
12. तथा फटने वाली धरती की।
13. वास्तव में यह (कुर्आन) दो टुक निर्णय (फ़ैसला) करने वाला है।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ۝

النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۝

إِنَّ كُلَّ نَفْسٍ لَنَا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝

فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝

خُلِقَ مِنْ مَّاءٍ دَافِقٍ ۝

يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ۝

إِنَّهُ عَلَى رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ۝

يَوْمَ تُجْزَى السَّعِيرُ ۝

فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ۝

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝

وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۝

إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۝

- 1 (1-4) इन में आकाश के तारों को इस बात की गवाही में लाया गया है कि विश्व की कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो एक रक्षा के बिना अपने स्थान पर स्थित रह सकती है, और वह रक्षक स्वयं अल्लाह है।
- 2 (5-8) इन आयतों में इन्सान का ध्यान उस के अस्तित्व की ओर आकर्षित किया गया है कि वह विचार तो करे कि कैसे पैदा किया गया है वीर्य से? फिर उस की निरन्तर रक्षा कर रहा है। फिर वही उसे मृत्यु के पश्चात् पुनः पैदा करने की शक्ति भी रखता है।
- 3 (9-10) इन आयतों में यह बताया गया है कि फिर से पैदाइश इस लिये होगी ताकि इन्सान के सभी भेदों की जांच की जाये जिन पर संसार में पर्दा पड़ा रह गया था और सब का बदला न्याय के साथ दिया जाये।

14. हँसी की बात नहीं।^[1]
 15. वह चाल बाज़ी करते हैं।
 16. मैं भी चाल बाज़ी कर रहा हूँ।
 17. अतः काफ़िरों को कुछ थोड़ा अवसर दे दो।^[2]

وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ۗ
 إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ۗ
 وَأَكِيدُ كَيْدًا ۗ
 فَمَهْلِكُ الْكَافِرِينَ أَهْمَهُمْ زُرُوعًا ۗ

- 1 (11-14) इन आयतों में बताया गया है कि आकाश से वर्षा का होना तथा धरती से पेड़ पौधों का उपजना कोई खेल नहीं एक गंभीर कर्म है। इसी प्रकार कुर्आन में जो तथ्य बताये गये हैं वह भी हँसी उपहास नहीं है पक्की और अडिग बातें हैं। काफ़िर (विश्वास हीन) इस भ्रम में न रहें कि उन की चालें इस कुर्आन की आमंत्रण को विफल कर देंगी। अल्लाह भी एक उपाय में लगा है जिस के आगे इन की चालें धरी रह जायेंगी।
- 2 (15-17) इन आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सांत्वना तथा अधर्मियों को यह धमकी दे कर बात पूरी कर दी गई है कि, आप तनिक सहन करें और विश्वासहीन को मनमानी कर लेने दें, कुछ ही देर होगी कि इन्हें अपने दुष्परिणाम का ज्ञान हो जायेगा।
 और इक्कीस वर्ष ही बीते थे कि पूरे मक्का और अरब द्वीप में इस्लाम का ध्वजा लहराने लगा।

सूरह आँला^[1] - 87



सूरह आँला के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 19 आयतें हैं।

- इस में अल्लाह के गुण ((आला)) अर्थात् सर्वोच्च होने का वर्णन हुआ है इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस में आयत 1 से 5 तक अल्लाह के पवित्रता के गान का आदेश देते हुये उस के गुणों का वर्णन किया गया है ताकि मनुष्य अल्लाह को पहचाने।
- आयत 6 से 8 तक वही को नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की स्मरण-शक्ति में सुरक्षित किये जाने का विश्वास दिलाया गया है।
- आयत 9 से 15 तक में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को शिक्षा देने का आदेश देकर बताया गया है कि किस प्रकार के लोग शिक्षा ग्रहण करेंगे और कौन नहीं करेंगे और दोनों का परिणाम क्या होगा।
- अन्त में बताया गया है कि परलोक की अपेक्षा संसार को प्रधानता देना ग़लत है जिस के कारण मनुष्य मार्गदर्शन से वंचित हो जाता है। फिर कहा गया है कि यही बात जो इस सूरह में बताई गई है पहले के ग्रन्थों में भी बताई गई है।

1 इस सूरह में तीन महत्वपूर्ण विषयों की ओर संकेत किया गया है:

1- तौहीद (ऐकेश्वरवाद)

2- नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये कुछ निर्देश।

3- परलोक (आखिरत)।

1- प्रथम आयत में तौहीद की शिक्षा को एक ही आयत में सीमित कर दिया गया है कि अल्लाह के नाम की पवित्रता का सुमरिण करो, जिस का अर्थ यह है कि उसे किसी ऐसे नाम से याद न किया जाये जिस में किसी प्रकार का दोष अथवा किसी रचना से उसकी समानता का संशय हो। इसलिये कि संसार में जितनी भी ग़लत आस्थायें हैं सब की जड़ अल्लाह से संबन्धित कोई न कोई अशुद्ध और ग़लत विचार है जिस ने उस के लिये अवैध नाम का रूप धारण कर लिया है। आस्था का सुधार सर्व प्रथम है और अल्लाह को मात्र उन्हीं शुभनामों से याद किया जाये जो उस के लिये उचित हैं। (तर्जुमानुल कुर्आन, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद)

- सहीह हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) दोनों ईद और जुमुआ में यह सूरह और सूरह गाशिया पढ़ते थे। (सहीह मुस्लिम: 878)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

1. अपने सर्वोच्च प्रभु के नाम की पवित्रता का सुमरिण करो।
2. जिस ने पैदा किया और ठीक ठीक बनाया।
3. और जिस ने अनुमान लगाकर निर्धारित किया, फिर सीधी राह दिखाई।
4. और जिस ने चारा उपजाया।^[1]
5. फिर उसे (सुखा कर) कूड़ा बना दिया।^[2]
6. (हे नबी!) हम तुहें ऐसा पढ़ायेंगे कि भूलोगे नहीं।
7. परन्तु जिसे अल्लाह चाहे। निश्चय ही वह सभी खुली तथा छिपी बातों को जानता है।
8. और हम तुम्हें सरल मार्ग का

سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى

الَّذِي خَلَقَ قَسْوَى

وَالَّذِي تَدَارَ فَهْدَى

وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَى

فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَى

سَنُقَرِّبُكَ فَلَا تَنْسَى

إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَى

وَنُبَيِّرُكَ لِيُسْرَى

- 1 (2-4) इन आयतों में जिस पालनहार ने अपने नाम की पवित्रता का वर्णन करने का आदेश दिया है उस का परिचय दिया गया है कि वह पालनहार है जिस ने सभी को पैदा किया, फिर उन को संतुलित किया, और उन के लिये एक विशेष प्रकार का अनुमान बनाया जिस की सीमा से नहीं निकल सकते, और उन के लिये उस कार्य को पूरा करने की राह दिखाई जिस के लिये उन्हें पैदा किया है।
- 2 (4-5) इन आयतों में बताया गया है कि प्रत्येक कार्य अनुक्रम से धीरे धीरे होते हैं। धरती के पौधे धीरे धीरे गुंजान और हरे भरे होते हैं। ऐसे ही मानवी योग्यतायें भी धीरे धीरे पूरी होती हैं।

साहस देंगे।^[1]

9. तो आप धर्म की शिक्षा देते रहें। अगर शिक्षा लाभदायक हो।
10. डरने वाला ही शिक्षा ग्रहण करेगा।
11. और दुर्भाग्य उस से दूर रहेगा।
12. जो भीषण अग्नि में जायेगा।
13. फिर उस में न मरेगा न जीवित रहेगा।^[2]
14. वह सफल हो गया जिस ने अपना शुद्धिकरण किया।
15. तथा अपने पालनहार के नाम का स्मरण किया, और नमाज़ पढ़ी।^[3]
16. बल्कि तुम लोग तो सांसारिक जीवन को प्राथमिकता देते हो।
17. जबकि आखिरत (परलोक) का जीवन ही उत्तम और स्थाई है।
18. यही बात प्रथम ग्रन्थों में है।

فَذَكِّرْ إِنْ نَفَعَتِ الذِّكْرَىٰ ۝

سَيَذَكِّرُ مَنْ يَشَاءُ ۝

وَيَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ۝

الَّذِي يَصِلُ النَّارَ الْكُبْرَىٰ ۝

ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ۝

قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكَّىٰ ۝

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّىٰ ۝

بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝

وَالْآخِرَةَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۝

إِنَّ هَذَا لَبِئْسَ الضَّحِيفُ الْأُولَىٰ ۝

- 1 (6-8) इन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह निर्देश दिया गया है कि इस की चिन्ता न करें की कुर्आन मुझे कैसे याद होगा, इसे याद कराना हमारा काम है, और इसका सुरक्षित रहना हमारी दया से होगा। और यह उसकी दया और रक्षा है कि इस मानव संसार में किसी धार्मिक ग्रन्थ के संबंध में यह दावा नहीं किया जा सकता कि वह सुरक्षित है, यह गर्व केवल कुर्आन को ही प्राप्त है।
- 2 (9-13) इन में बताया गया है कि आप को मात्र इसका प्रचार प्रसार करना है। और इस की सरल राह यह है कि जो सुने और मानने को तैयार हो उसे शिक्षा दी जाये। किसी के पीछे पड़ने की आवश्यकता नहीं है। जो हत् भागे है वही नहीं सुनेंगे और नरक की यातना के रूप में अपना दुष्परिणाम देखेंगे।
- 3 (14-15) इन आयतों में कहा गया है कि, सफलता मात्र उन के लिये है जो आस्था, स्वभाव तथा कर्म की पवित्रता को अपनायें, और नमाज़ अदा करते रहें।

19. (अर्थात्) इब्राहीम तथा मूसा के ग्रन्थों में^[1]

صُفِّىٰ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ؑ

1 (16-19) इन आयतों का भावार्थ यह है कि वास्तव में रोग यह है कि काफ़िरों को सांसारिक स्वार्थ के कारण नबी की बातें अच्छी नहीं लगती। जब कि परलोक ही स्थायी है। और यही सभी आदि ग्रन्थों की शिक्षा है।

सूरह गाशियह^[1] - 88



सूरह गाशियह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 26 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में ((अल गाशियह)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। जिस का अर्थ ऐसी आपदा है जो सब पर छा जाये।^[1]
- इस की आयत 2 से 7 तक में उन का परिणाम बताया गया है जो प्रलय को नहीं मानते और 8 से 16 तक उन का परिणाम बताया गया है जो प्रलय के प्रति विश्वास रखते हैं।
- आयत 17 से 20 तक विश्व की उन निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो अल्लाह के सामर्थ्य का प्रमाण हैं। और जिन पर विचार करने से क़ुर्आन की बातों को समर्थन मिलता है कि अल्लाह प्रलय लाने तथा स्वर्ग और नरक का संसार बनाने की शक्ति रखता है और प्रतिफल का होना अनिवार्य है।
- आयत 21 से 26 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सम्बोधित किया गया है कि आप का काम मात्र शिक्षा देना है किसी को बलपूर्वक सत्य मनवाना नहीं है। अतः जो आप की शिक्षा सुनने को तय्यार नहीं है उन्हें अल्लाह के हवाले करो। क्यों कि आखिर उन्हें अल्लाह ही की ओर जाना है, उस दिन वह उन से हिसाब ले लेगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क्या तेरे पास पूरी सृष्टि पर छा जाने वाली (क्यामत) का समाचार आया?
2. उस दिन कितने मुँह सहमे होंगे।

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ ۝

وَجُودٌ يُومِئِينَ خَاشِعَةً ۝

- 1 यह सूरह मक्की है तथा आरंभिक युग की है। इस में ऐकेश्वरवाद (तौहीद) तथा परलोक (आखिरत) के विषय को दोहराया गया है, परन्तु इस की वर्णन शैली कुछ भिन्न है।

3. परिश्रम करते थके जा रहे होंगे।
4. पर वे धहकती आग में जायेंगे।
5. उन्हें खोलते सोते का जल पिलाया जायेगा।
6. उनके लिये कटीली झाड़ू के सिवा कोई भोजन सामग्री नहीं होगी।
7. जो न मोटा करेगी, और न भूख दूर करेगी।^[1]
8. कितने मुख उस दिन निर्मल होंगे।
9. अपने प्रयास से प्रसन्न होंगे।
10. ऊँचे स्वर्ग में होंगे।
11. उस में कोई बकवास नहीं सुनेंगे।
12. उस में बहता जल स्रोत होगा।
13. और उस में ऊँचे ऊँचे सिंहासन होंगे।
14. उस में बहुत सारे प्याले रखे होंगे।
15. पकितियों में गलीचे लगे होंगे।

- عَالَةً تَأْصِبُهُ ۝
 تَصْلَى نَارًا حَامِيَةً ۝
 تُسْقَى مِنْ عَيْنِ أَنْبِيَةٍ ۝
 لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ صَرِيرٍ ۝
 لَا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِنْ جُوعٍ ۝
 وَجُودًا يُؤْمِنُ تَأْعَمَهُ ۝
 لَسَعِيهَا رَاضِيَةٌ ۝
 فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝
 لَا تَسْمَعُ فِيهَا الْأَغْبِيَةَ ۝
 فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝
 فِيهَا سُرُرٌ مَرْفُوعَةٌ ۝
 وَأَكْوَابٌ مَوْضُوعَةٌ ۝
 وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ۝

1 (1-7) इन आयतों में प्रथम संसारिक स्वार्थ में मग्न इन्सानों को एक प्रश्न द्वारा सावधान किया गया है कि उसे उस समय की सूचना है जब एक आपदा समस्त विश्व पर छा जायेगा? फिर इसी के साथ यह विवरण भी दिया गया है कि उस समय इन्सानों के दो भेद हो जायेंगे, और दोनों के प्रतिफल भी भिन्न होंगे: एक नरक में तथा दूसरा स्वर्ग में जायेगा।

तीसरी आयत में (नासिबह) का शब्द आया है जिस का अर्थ है: थक कर चूर हो जाना, अर्थात् काफ़िरों को क़्यामत के दिन इतनी कड़ी यातना दी जायेगी कि उन की दशा बहुत खराब हो जायेगी। और वे थके थके से दिखाई देंगे। इस का दूसरा अर्थ यह भी है कि: उन्होंने संसार में बहुत से कर्म किये होंगे परन्तु वह सत्य धर्म के अनुसार नहीं होंगे, इस लिये वे पूजा अर्चना और कड़ी तपस्या करके भी नरक में जायेंगे, इसलिये कि सत्य आस्था के बिना कोई कर्म मान्य नहीं होगा।

16. और मख्मली कालीनें बिछी होंगी।^[1]
17. क्या वह ऊँटों को नहीं देखते कि कैसे पैदा किये गये हैं?
18. और आकाश को, कि किस प्रकार ऊँचा किया गया?
19. और पर्वतों को कि कैसे गाड़े गये?
20. तथा धरती को, कि कैसे पसारी गई? ^[2]
21. अतः आप शिक्षा (नसीहत) दें, कि आप शिक्षा देने वाले हैं।
22. आप उन पर अधिकारी नहीं हैं।
23. परन्तु जो मुँह फेरेगा और नहीं मानेगा,
24. तो अल्लाह उसे भारी यातना देगा।
25. उन्हें हमारी ओर ही वापस आना है।
26. फिर हमें ही उन का हिसाब लेना है।^[3]

وَوَدَّاعِينَ مَبْثُوثَةٍ ۝

أَفَلَا يَنْظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۝

وَالِى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۝

وَالِى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۝

وَالِى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۝

فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنْتَ مُذَكِّرٌ ۝

لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيِّرٍ ۝

إِلَّا مَنْ تَوَلَّى وَكَفَرَ ۝

يَعَذَّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ۝

إِنَّا إِلَيْنَا إِيَابُهُمْ ۝

ثُمَّ إِنَّا عَلَيْهِمُ احْسَابُهُمْ ۝

- 1 (8-16) इन आयतों में जो इस संसार में सत्य आस्था के साथ कुर्आन आदेशानुसार जीवन व्यतीत कर रहे हैं परलोक में उन के सदा के सुख का दृश्य दिखाया गया है।
- 2 (17-20) इन आयतों में फिर विषय बदल कर एक और प्रश्न किया जा रहा है कि: जो कुर्आन की शिक्षा तथा प्रलोक की सूचना को नहीं मानते अपने सामने उन चीजों को नहीं देखते जो रात दिन उन के सामने आती रहती है, ऊँटों तथा पर्वतों और आकाश एवं धरती पर विचार क्यों नहीं करते कि क्या यह सब अपने आप पैदा हो गये हैं या इन का कोई रचयिता है? यह तो असंभव है कि रचना हो और रचयिता न हो। यदि मानते हैं कि किसी शक्ति ने इन को बनाया है जिस का कोई साझी नहीं तो उस के अकेले पूज्य होने और उस के फिर से पैदा करने की शक्ति और सामर्थ्य का क्यों इन्कार करते हैं? (तर्जुमानुल कुर्आन)
- 3 (21-26) इन आयतों का भावार्थ यह है कि कुर्आन किसी को बलपूर्वक मनवाने के लिये नहीं है, और न नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह कर्तव्य है कि किसी को बलपूर्वक मनवायें। आप जिस से डरा रहे हैं यह मानें या न मानें वह खुली बात है। फिर भी जो नहीं सुनते उनको अल्लाह ही समझेगा। यह और इस जैसी कुर्आन की अनेक आयतें इस आरोप का खण्डन करती हैं कि इस्लाम ने अपने मनवाने के लिये अस्त्र शस्त्र का प्रयोग किया।

सूरह फ़ज्र^[1] - 89



सूरह फ़ज्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 30 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((वल फ़ज्र)) से होने के कारण इस को यह नाम दिया गया है।
- आयत 1 से 5 तक दिन-रात की प्राकृतिक स्थियों को प्रतिफल के दिन के प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। और आयत 6 से 14 तक कुछ बड़ी जातियों के शिक्षाप्रद परिणाम को इस के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है कि इस विश्व का शासक सब के कर्मों को देख रहा है और एक दिन वह हिसाब अवश्य लेगा।
- आयत 15 से 20 तक में मनुष्य के साथ दुर्व्यवहारों तथा निर्बलों के अधिकार हनन पर कड़ी चेतावनी दी गई और बताया गया है कि ऐसा करने का कारण परलोक का अविश्वास है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के न्यायालय का चित्र प्रस्तुत करते हुये विरोधियों तथा ईमान वालों का परिणाम बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है भोर की!
2. तथा दस रात्रियों की!
3. और जोड़े तथा अकेले की!
4. और रात्री की जब जाने लगे!
5. क्या उस में किसी मतिमान
(समझदार) के लिये कोई शपथ है?^[1]

وَالْفَجْرِ
وَاللَّيْلِ عَشْرِ
وَالشَّمْعِ وَالْوَتْرِ
وَالْأَيْلِ إِذَا يَسْرُ
هَلْ فِي ذَلِكَ مَسْمُومٌ لِّذِي حِجْرِ

1 (1-5) इन आयतों में प्रथम परलोक के सुफल विषयक चार संसारिक लक्षणों को साक्ष्य (गवाह) के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जिस का अर्थ यह है कि कर्मों

6. क्या तुम ने नहीं देखा कि तुम्हारे पालनहार ने "आद" के साथ क्या किया?
7. स्तम्भों वाले "इरम" के साथ?
8. जिन के समान देशों में लोग नहीं पैदा किये गये।
9. तथा "समूद" के साथ जिन्होंने घाटियों में चट्टानों को काट रखा था।
10. और मेखों वाले फिरऔन के साथ।
11. जिन्होंने नगरों में उपद्रव कर रखा था।
12. और नगरों में बड़ा उपद्रव फैला रखा था।
13. फिर तेरे पालनहार ने उन पर दण्ड का कोड़ा बरसा दिया।
14. वास्तव में तेरा पालनहार घात में है।^[1]
15. परन्तु जब इन्सान की उस का पालनहार परीक्षा लेता है और उसे

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۖ

إِرمَ دَاتِ الْعِمَادِ ۖ

الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ۖ

وَشَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ لِأَوَادٍ ۖ

وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ۖ

الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ۖ

فَاكْتَرُوا فِيهَا الْفِسَادَ ۖ

فَصَبَّ عَلَيْهِمُ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۖ

إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْبُرُصَادِ ۖ

فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ

का फल मिलना सत्य है। रात तथा दिन का यह अनुक्रम जिस व्यवस्था के साथ चल रहा है उस से सिद्ध होता है कि अल्लाह ही इसे चला रहा है। "दस रात्रियों" से अभिप्राय "जुल हिज्जा" मास की प्रारम्भिक दस रातें हैं। सहीह हदीसों में इन की बड़ी प्रधानता बताई गई है।

- 1 (6-14) इन आयतों में उन जातियों की चर्चा की गई है जिन्होंने माया मोह में पड़ कर परलोक और प्रतिफल का इन्कार किया, और अपने नैतिक पतन के कारण धरती में उग्रवाद किया। "आद, इरम" से अभिप्रेत वह पुरानी जाति है जिसे कुर्आन तथा अरब में "आदे उला" (प्रथम आद) कहा गया है। यह वह प्राचीन जाति है जिस के पास आद (अलैहिस्सलाम) को भेजा गया। और इन को "आदे इरम" इसलिये कहा गया कि यह सामी वंशक्रम की उस शाखा से संबंधित थे जो इरम बिन साम बिन नूह से चली आती थी। आयत नं० 11 में इस का संकेत है कि उग्रवाद का उद्गम भौतिकवाद एवं सत्य विश्वास का इन्कार है जिसे वर्तमान युग में भी प्रत्यक्ष रूप में देखा जा सकता है।

सम्मान और धन देता है तो कहता है कि मेरे पालनहार ने मेरा सम्मान किया।

16. परन्तु जब उस की परीक्षा लेने के लिये उस की जीविका संकीर्ण (कम) कर देता है तो कहता है कि मेरे पालनहार ने मेरा अपमान किया।
17. ऐसा नहीं, बल्कि तुम अनाथ का आदर नहीं करते।
18. तथा ग़रीब को खाना खिलाने के लिये एक दूसरे को नहीं उभारते।
19. और मीरास (मृतक सम्पत्ति) के धन को समेट समेट कर खा जाते हो।
20. और धन से बड़ा मोह रखते हो।^[1]
21. सावधान! जब धरती खण्ड खण्ड कर दी जायेगी।
22. और तेरा पालनहार स्वयं पदार्पण करेगा, और फ़रिश्ते पंक्तियों में होंगे।
23. और उस दिन नरक लाई जायेगी, उस दिन इन्सान सावधान हो जायेगा, किन्तु सावधानी लाभ- दायक न होगी।
24. वह कामना करेगा कि काश! अपने

وَنَعْمَهُ ۚ فَيَقُولُ رَبِّيَ الْكَرِيمُ ۝

وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ ۚ
فَيَقُولُ رَبِّيَ أَهَانٌ ۝

كَلَّا بَلْ لَأُكْرِمُونَ الْيَتِيمَ ۝

وَلَا تَحْضُونَ عَلَىٰ طَعَامِ الْيُسْكِينِ ۝

وَتَأْكُلُونَ التُّرَاثَ أَكْلًا لَمْبًا ۝

وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝

كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۝

وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝

وَجِئْنَا يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ ۚ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ
الْإِنْسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ الذِّكْرَىٰ ۝

يَقُولُ لِيَلَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ۝

- 1 (15-20) इन आयतों में समाज की साधारण नैतिक स्थिति की परीक्षा (जायज़ा) ली गई, और भौतिकवादी विचार की आलोचना की गई है जो मात्र सांसारिक धन और मान मर्यादा को सम्मान तथा अपमान का पैमाना समझता है और यह भूल गया है कि न धनी होना कोई पुरस्कार है और न निर्धन होना कोई दण्ड है। अल्लाह दोनों स्थितियों में मानव जाति (इन्सान) की परीक्षा ले रहा है। फिर यह बात किसी के बस में हो तो दूसरे का धन भी हड़प कर जाये, क्या ऐसा करना कुकर्म नहीं जिस का हिसाब लिया जाये?

- सदा के जीवन के लिये कर्म किये होते।
25. उस दिन (अल्लाह) के दण्ड के समान कोई दण्ड नहीं देगा।
26. और न उसके जैसी जकड़ कोई जकड़ेगा।^[1]
27. हे शान्त आत्मा!
28. अपने पालनहार की ओर चल, तू उस से प्रसन्न, और वह तुझ से प्रसन्न।
29. तू मेरे भक्तों में प्रवेश कर जा।
30. और मेरे स्वर्ग में प्रवेश कर जा।^[2]
- فَيَوْمَئِذٍ لَا يُعَذِّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ ۖ
- وَلَا يُؤَيِّتُ شَوْقًا أَحَدٌ ۖ
- يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۖ
- ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۖ
- فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ۖ
- وَادْخُلِي جَنَّتِي ۖ

1 (21-26) इन आयतों में बताया गया है कि धन पूजने और उस से परलोक न बनाने का दुष्परिणाम नरक की घोर यातना के रूप में सामने आयेगा तब भौतिक वादी कुकर्मियों की समझ में आयेगा कि कुर्आन को न मान कर बड़ी भूल हुई और हाथ मलेंगे।

2 (27-30) इन आयतों में उन के सुख और सफलता का वर्णन किया गया है जो कुर्आन की शिक्षा का अनुपालन करते हुये आत्मा की शांती के साथ जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

सूरह बलद^[1] - 90



सूरह बलद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 20 आयतें हैं।^[1]

- इस की प्रथम आयत में ((अल-बलद)) (अर्थात: नगर) की शपथ ली गई है। जिस से अभिप्राय मक्का है। और इसी से इस सूरह का यह नाम लिया गया है।
- इस की आयत 1 से 4 तक में जो गवाहियाँ प्रस्तुत की गई हैं उन से अभिप्राय यह है कि यह संसार सुख विलास के लिये नहीं बनाया गया है। बल्कि इस के बनाने का एक विशेष उद्देश्य है। इसी लिये मनुष्य को दुःख की स्थिति में पैदा किया गया है।
- आयत 5 से 7 तक में यह चेतावनी दी गई है कि मनुष्य यह न समझे कि उस के ऊपर उस के कर्मों की निगरानी के लिये कोई शक्ति नहीं है।
- आयत 8 से 17 तक में बताया गया है कि मनुष्य के आचरण और कर्म की ऊँचाई तथा नीचाई की राह भी खोल दी गई है। और इस ऊँचाई पर चढ़ कर जो दुर्गम है, वह आचरण और कर्म की ऊँचाई को प्राप्त कर लेता है।
- आयत 18 से 20 तक में बताया गया है कि मनुष्य ईमान के साथ आचरण की ऊँचाई द्वारा भाग्यशाली बन जाता है और कुफ़्र के कारण नरक की खाई में जा गिरता है जिस से निकलने का फिर कोई उपाय नहीं होगा।

1 इस सूरह का विषय मानव जाति (इन्सान) को यह समझाना है कि अल्लाह ने सौभाग्य तथा दुर्भाग्य की दोनों राहें खोल दी हैं। और उन्हें देखने और उन पर चलने के साधन भी सुलभ कर दिये हैं। अब इन्सान के अपने प्रयास पर निर्भर है कि वह कौन सा मार्ग अपनाता है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. मैं इस नगर (मक्का) की शपथ लेता हूँ!
2. तथा तुम इस नगर में प्रवेश करने वाले हो।
3. तथा सौगन्ध है पिता एवं उस की संतान की।
4. हम ने इन्सान को कष्ट में घिरा हुआ पैदा किया है।
5. क्या वह समझता है कि उस पर किसी का वश नहीं चलेगा?^[1]
6. वह कहता है कि मैं ने बहुत धन खर्च कर दिया।
7. क्या वह समझता है कि उसे किसी ने देखा नहीं?^[2]

لَأُقْسِمُ بِهَذَا الْبَلَدِ

وَأَنْتَ حِلٌّ بِهَذَا الْبَلَدِ

وَوَالِدٍ وَمَا وَلَدٌ

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبَدٍ

أَيَسَّبُ أَنْ كَانَ يَغْفَرُ عَلَيْهِ أَحَدٌ

يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَا لَا بَدَأَ

أَيَسَّبُ أَنْ لَمْ يَرَهُ أَحَدٌ

1 (1-5) इन आयतों में सर्व प्रथम मक्का नगर में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जो घटनायें घट रही थीं, और आप तथा आप के अनुयाईयों को सताया जा रहा था, उस को साझी के रूप में प्रस्तुत किया गया है कि: इन्सान की पैदाइश (रचना) संसार का स्वाद लेने के लिये नहीं हुई है। संसार परिश्रम तथा पीड़ायें झेलने का स्थान है। कोई इन्सान इस स्थिति से गुज़रे बिना नहीं रह सकता। "पिता" से अभिप्राय: आदम अलैहिस्सलाम, और "संतान" से अभिप्राय: समस्त मानव जाति (इन्सान) है।

फिर इन्सान के इस भ्रम को दूर किया है कि उस के ऊपर कोई शक्ति नहीं है जो उस के कर्मों को देख रही है, और समय आने पर उस की पकड़ करेगी।

2 (6-7) इन में यह बताया गया है कि संसार में बड़ाई तथा प्रधानता के गलत पैमाने बना लिये गये हैं, और जो दिखावे के लिये धन व्यय (खर्च) करता है उस की प्रशंसा की जाती है जब कि उस के ऊपर एक शक्ति है जो यह देख रही है कि उस ने किन राहों में और किस लिये धन खर्च किया है।

8. क्या हम ने उसे दो आँखें नहीं दीं।
9. और एक ज़बान तथा दो होंट नहीं दिये?
10. और उसे दोनों मार्ग दिखा दिये?
11. तो वह घाटी में घुसा ही नहीं।
12. और तुम क्या जानो कि घाटी क्या है?
13. किसी दास को मुक्त करना।
14. अथवा भूक के दिन (अकाल) में खाना खिलाना।
15. किसी अनाथ संबंधी को।
16. अथवा मिट्टी में पड़े निर्धन को।^[1]
17. फिर वह उन लोगों में होता है जो ईमान लाये, और जिन्होंने धैर्य (सहन शीलता) एवं उपकार के उपदेश दिये।
18. यही लोग सौभाग्यशाली (दायें हाथ वाले) हैं।
19. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को

أَلَمْ جَعَلْ لَهُ عَيْنَيْنِ ۝

وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ۝

وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ ۝

فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۝

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ۝

فَكَرَّرَقِبَةَ ۝

أَوْ اطْعَمَ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ۝

يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۝

أَوْ مَسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۝

ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَّصُوا بِالصَّبْرِ

وَتَوَّاصُوا بِالْمَرْحَمَةِ ۝

أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْمِيمَنَةِ ۝

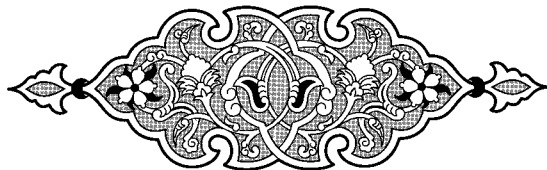
وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا هُمْ أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ۝

1 (8-16) इन आयतों में फरमाया गया है कि: इन्सान को ज्ञान और चिन्तन के साधन और योग्यतायें दे कर हम ने उस के सामने भलाई तथा बुराई के दोनों मार्ग खोल दिये हैं, एक नैतिक पतन की ओर ले जाता है और उस में मन को अति स्वाद मिलता है। दूसरा नैतिक ऊँचाइयों की राह जिस में कठिनाईयाँ हैं। और उसी को घाटी कहा गया है। जिस में प्रवेश करने वालों के कर्तव्य में है कि दासों को मुक्त करें, निर्धनों को भोजन करायें इत्यादी वही लोग स्वर्ग वासी हैं। और वे जिन्होंने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया वे नर्क वासी हैं। आयत नं० 17 का अर्थ यह है कि सत्य विश्वास (ईमान) के बिना कोई शुभकर्म मान्य नहीं है। इस में सुखी समाज की विशेषता भी बताई गई है कि: दूसरे को सहन शीलता तथा दया का उपदेश दिया जाये और अल्लाह पर सत्य विश्वास रखा जाये।

नहीं माना यही लोग दुर्भाग्य (बायें
हाथ वाले) हैं।

20. ऐसे लोग हर ओर से आग में घिरे होंगे।

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّوَصَّدَةٌ ۝٤٠



सूरह शम्स^[1] - 91



सूरह शम्स के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 15 आयतें हैं।

- इस सूरह की प्रथम आयत में “शम्स” (सूर्य) की शपथ ली गई है, इसी लिये इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 10 तक सूर्य-चाँद और रात-दिन तथा धरती और आकाश की उन बड़ी निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो इस विश्व के पैदा करने वाले की पूर्ण शक्ति तथा गुणों का ज्ञान कराती हैं। और फिर मनुष्य की आत्मा की गवाही को अच्छे तथा बुरे कर्मफल के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है।
- आयत 11 से 13 तक में इस की एतिहासिक गवाही प्रस्तुत की गई है और आद तथा समूद जाति की कथा संक्षेप में बता कर उन के कुकर्मा के शिक्षाप्रद परिणाम लोगों की शिक्षा के लिये प्रस्तुत किये गये हैं ताकि वह कुर्आन तथा इस्लाम के नबी का विरोध न करें।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सूर्य तथा उस की धूप की शपथ है!
2. और चाँद की शपथ जब उस के पीछे निकले!
3. और दिन की शपथ जब उसे (अर्थात् सूर्य को) प्रकट कर दे!
4. और रात्री की सौगन्ध जब उसे (सूर्य

وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا

وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَاهَا

وَالنَّهَارِ إِذَا جَدَّهَا

وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَاهَا

- 1 इस सूरह का विषय: पुन और पाप का अन्तर समझाना है, तथा उन्हें बुरे परिणाम की चेतावनी देना जो इस अंतर को समझने से इन्कार करते हैं, तथा बुराई की राह पर चलने का दुराग्रह करते हैं।

- को) छुपा ले!
5. और आकाश की सौगन्ध, तथा उस की जिस ने उसे बनाया! وَالسَّمَاءِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۝
6. तथा धरती की सौगन्ध और जिस ने उसे फैलाया!^[1] وَالْأَرْضِ وَمَا طَحْتَهَا ۝
7. और जीव की सौगन्ध, तथा उस की जिस ने उसे ठीक ठीक सुधारा। وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا ۝
8. फिर उसे दुराचार तथा सदाचार का विवेक दिया है!^[2] فَأَلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا ۝
9. वह सफल हो गया जिस ने अपने जीव का सुद्धिकरण किया। قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكَّاهَا ۝
10. तथा वह क्षति में पड़ गया जिस ने उसे (पाप में) धंसा दिया!^[3] وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّاهَا ۝
11. "समूद" जाति ने अपने दुराचार के कारण (ईश दूत) को झुठलाया। كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوَاهَا ۝
12. जब उन में से एक हतभागा तैयार हुआ। إِذْ أَنْبَعَثْنَا شِقْمَهَا ۝

- 1 (1-6) इन आयतों का भावार्थ यह है कि जिस प्रकार सूर्य के विपरीत चाँद, तथा दिन के विपरीत रात है, इसी प्रकार पुन और पाप तथा इस संसार का प्रति एक दूसरा संसार परलोक भी है। और इन्हीं स्वभाविक लक्ष्यों से परलोक का विश्वास होता है।
- 2 (7-8) इन आयतों में कहा गया है कि अल्लाह ने इन्सान को शारीरिक और मांसिक शक्तियाँ दे कर बस नहीं किया, बल्कि उस ने पाप और पुन का स्वभाविक ज्ञान दे कर नबियों को भी भेजा। और वही (प्रकाशना) द्वारा पाप और पुन के सभी रूप समझा दियो। जिस की अन्तिम कड़ी: कुर्आन, और अन्तिम नबी: मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है।
- 3 (9-10) इन दोनों आयतों में यह बताया जा रहा है कि अब भविष्य की सफलता और विसफलता इस बात पर निर्भर है कि कौन अपनी स्वभाविक योग्यता का प्रयोग किस के लिये कितना करता है। और इस प्रकाशना: कुर्आन के आदेशों को कितना मानता और पालन करता है।

13. (ईश दूत: सालेह ने) उन से कहा कि अल्लाह की ऊँटनी और उस के पीने की बारी की रक्षा करो।
14. किन्तु उन्होंने नहीं माना, और उसे बध कर दिया जिस के कारण उन के पालनहार ने यातना भेज दी और उन को चौरस कर दिया।
15. और वह इस के परिणाम से नहीं डरता।^[1]

فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ وَسُقْيَاهَا ۖ

فَكَذَّبُوهُ فَعَبَّرُوا فَكُودًا عَلَيْهِمْ رَبُّهُم بِذُنُوبِهِمْ
فَسَوَّاهَا ۖ

وَلَا يَخَافُ عُقْبَاهَا ۖ

1 (11-15) इन आयतों में समूद जाति का ऐतिहासिक उदाहरण दे कर दूतत्व (रिसालत) का महत्व समझाया गया है कि नबी इसलिये भेजा जाता है ताकि भलाई और बुराई का जो स्वभाविक ज्ञान अल्लाह ने इन्सान के स्वभाव में रख दिया है उसे उभारने में उस की सहायता करे। ऐसे ही एक नबी जिन का नाम सालेह था समूद जाति की ओर भेजे गये। परन्तु उन्होंने उन को नहीं माना, तो वे ध्वस्त कर दिये गये।

उस समय मक्का के मूर्ति पूजकों की स्थिति समूद जाति से मिलती जुलती थी। इसलिये उन को "सालेह" नबी की कथा सुना कर सचेत किया जा रहा है कि सावधान: कहीं तुम लोग भी समूद की तरह यातना में न घिर जाओ। वह तो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस प्रार्थना के कारण बच गये कि हे अल्लाह! इन्हें नष्ट न कर। क्योंकि इन्हीं में से ऐसे लोग उठेंगे जो तेरे धर्म का प्रचार करेंगे। इस लिये कि अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सारे संसारों के लिये दयालु बना कर भेजा था।

सूरह लैल^[1] - 92



सूरह लैल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 21 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में "लैल" अर्थात रात की शपथ ली गई है, जिस के कारण इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- आयत 1 से 4 तक में कुछ गवाहियाँ प्रस्तुत कर के इस बात का तर्क दिया गया है कि जब मनुष्य के प्रयासों तथा कर्मों में अन्तर है तो उन के प्रतिफल में भी अन्तर का होना आवश्यक है।
- आयत 5 से 11 तक में सत्कर्मों और दुष्कर्मों की कुछ विशेषताओं का वर्णन कर के बताया है कि सत्कर्म पुन् की राह पर ले जाते हैं और दुष्कर्म पाप की राह पर ले जाते हैं।
- आयत 12 से 14 तक में बताया गया है कि अल्लाह का काम सीधी राह दिखा देना है और उस ने तुम्हें उसे दिखा दिया। संसार तथा परलोक का वही मालिक है। उस ने बता दिया है कि परलोक में क्या होना है।
- अन्त में दुराचारियों के बुरे अन्त तथा सदाचारियों के अच्छे अन्त को बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. रात्री की शपथ जब छा जाये!
2. तथा दिन की शपथ जब उजाला हो जाये!

وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَىٰ

وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّىٰ

1 इस सूरह का मूल विषय यह है कि सब कुछ अल्लाह के हाथ में है। वह किसी पर अन्याय नहीं करता। इसलिये सचेत कर दिया गया है कि बुरे काम का परिणाम बुरा होता है। और अच्छे काम का परिणाम अच्छा। अब यह बात तुम पर छोड़ी जा रही है कि तुम कोनसा मार्ग ग्रहण करते हो।

3. और उस की शपथ जिस ने नर और मादा पैदा किये!
4. वास्तव में तुम्हारे प्रयास अलग अलग हैं।^[1]
5. फिर जिस ने दान दिया, और भक्ति का मार्ग अपनाया,
6. और भली बात की पुष्टि करता रहा,
7. तो हम उस के लिये सरलता पैदा कर देंगे।
8. परन्तु जिस ने कंजूसी की, और ध्यान नहीं दिया,
9. और भली बात को झुठला दिया।
10. तो हम उस के लिये कठिनाई को प्राप्त करना सरल कर देंगे।^[2]

وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ۝

إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّىٰ ۝

فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَاتَّقَىٰ ۝

وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ ۝

فَسَيَسِّرُهُ لِيُسْرَىٰ ۝

وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَىٰ ۝

وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَىٰ ۝

فَسَيَسِّرُهُ لِّلْعُسْرَىٰ ۝

- 1 (1-4) इन आयतों का भावार्थ यह है कि: जिस प्रकार रात दिन तथा नर मादा (स्त्री-पुरुष) भिन्न हैं, और उन के लक्षण और प्रभाव भी भिन्न हैं, इसी प्रकार मानव जाति (इन्सान) के विश्वास, कर्म भी दो भिन्न प्रकार के हैं। और दोनों के प्रभाव और परिणाम भी विभिन्न हैं।
- 2 (5-10) इन आयतों में दोनों भिन्न कर्मों के प्रभाव का वर्णन है कि कोई अपना धन भलाई में लगाता है तथा अल्लाह से डरता है और भलाई को मानता है। सत्य आस्था, स्वभाव और सत्कर्म का पालन करता है। जिस का प्रभाव यह होता है कि अल्लाह उस के लिये सत्कर्मों का मार्ग सरल कर देता है। और उस में पाप करने तथा स्वार्थ के लिये अवैध धन अर्जन की भावना नहीं रह जाती। ऐसे व्यक्ति के लिये दोनो लोक में सुख है। दूसरा वह होता है जो धन का लोभी, तथा अल्लाह से निश्चिन्त होता है और भलाई को नहीं मानता। जिस का प्रभाव यह होता है कि उस का स्वभाव ऐसा बन जाता है कि उसे बुराई का मार्ग सरल लगने लगता है। तथा अपने स्वार्थ और मनोकामना की पूर्ति के लिये प्रयास करता है। फिर इस बात को इस वाक्य पर समाप्त कर दिया गया है कि धन के लिये वह जान देता है परन्तु वह उसे अपने साथ लेकर नहीं जायेगा। फिर वह उस के किस काम आयेगा?

11. और जब वह गढ़े में गिरेगा तो उसका धन उसके काम नहीं आयेगा।
وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدَّى ۝
12. हमारा कर्त्तव्य इतना ही है कि हम सीधा मार्ग दिखा दें।
إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَىٰ ۝
13. जब कि आलोक परलोक हमारे ही हाथ में है।
وَأَنَّ لَنَا الْآخِرَةَ وَالْأُولَىٰ ۝
14. मैं ने तुम को भड़कती आग से सावधान कर दिया है।^[1]
فَأَذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّى ۝
15. जिस में केवल बड़ा हत्भाग ही जायेगा।
لَا يَصْلُهَا إِلَّا الشَّعَىٰ ۝
16. जिस ने झुठला दिया, तथा (सत्य से) मुँह फेर लिया।
الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝
17. परन्तु संयमी (सदाचारी) उस से बचा लिया जायेगा।
وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَىٰ ۝
18. जो अपना धन दान करता है ताकि पवित्र हो जाये।
الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ ۝
19. उस पर किसी का कोई उपकार नहीं जिसे उतारा जा रहा है।
وَمَا أَحَدٍ عِنْدَهُ مِنْ نِعْمَةٍ يَنْزُؤِي ۝
20. वह तो केवल अपने परम पालनहार की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये है।
إِلَّا التَّبَعَاءَ وَجِبَدَ رَبِّهِ الْأَعْلَىٰ ۝

1 (11-14) इन आयतों में मावन जाति (इन्सान) को सावधान किया गया है कि अल्लाह का, दया और न्याय के कारण मात्र यह दायित्व था कि सत्य मार्ग दिखा दे। और कुर्आन द्वारा उस ने अपना यह दायित्व पूरा कर दिया। किसी को सत्य मार्ग पर लगा देना उस का दायित्व नहीं है। अब इस सीधी राह को अपनाओगे तो तुम्हारा ही भला होगा। अन्यथा याद रखो कि संसार और परलोक दोनों ही अल्लाह के अधिकार में हैं। न यहाँ कोई तुम्हें बचा सकता है, और न वहाँ कोई तुम्हारा सहायक होगा।

21. निःसंदेह वह प्रसन्न हो जायेगा^[1]

وَكَسُوفَ يَرْضَى ۞

1 (15-21) इन आयतों में यह वर्णन किया गया है कि कौन से कुकर्मों नरक में पड़ेंगे और कौन सुकर्मों उस से सुरक्षित रखे जायेंगे। और उन्हें क्या फल मिलेगा। आयत नं० 10 के बारे में यह बात याद रखने की है कि अल्लाह ने सभी वस्तुओं और कर्मों का अपने नियमानुसार स्वभाविक प्रभाव रखा है। और कुर्आन इसी लिये सभी कर्मों के स्वभाविक प्रभाव और फल को अल्लाह से जोड़ता है। और यूँ कहता है कि अल्लाह ने उस के लिये बुराई की राह सरल कर दी। कभी कहता है कि उन के दिलों पर मुहर लगा दी, जिस का अर्थ यह होता है कि यह अल्लाह के बनाये हुये नियमों के विरोध का स्वभाविक फल है। (देखिये: उम्मुल किताब, मौलाना आज़ाद)

सूरह जुहा^[1] - 93



सूरह जुहा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस के आरंभ में “जुहा” (दिन के उजाले) की शपथ ग्रहण करने के कारण इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- आयत 1 से 2 तक में दिन और रात की गवाही प्रस्तुत कर के इस की ओर संकेत किया गया है कि इस संसार में अल्लाह ने जैसे उजाला और अंधेरा दोनों बनाये हैं इसी प्रकार परीक्षा के लिये दुःख और सुख भी बनाये हैं।
- आयत 3 में बताया गया है कि सत्य की राह में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिस दुःख का सामना कर रहे हैं उस से यह नहीं समझना चाहिये कि अल्लाह ने आप से खिन्न हो कर आप को छोड़ दिया है।
- आयत 4,5 में आप को सफलताओं की शुभसूचना दी गई है।
- आयत 6 से 8 तक में उन दुःखों की चर्चा की गई है जिन से आप नबी होने से पहले जूझ रहे थे तो अल्लाह के उपकारों से आप की राहें खुलीं।

1 यह सूरह आरंभिक युग की है। भाष्य कारों ने लिखा है कि कुछ दिन के लिये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर प्रकाशना (वह्नी) का उतरना रुक गया। जिस पर आप अति दुःखित और चिन्तित हो गये कि कहीं मुझ से कोई दोष तो नहीं हो गया? इस पर आप को सांत्वना देने के लिये यह सूरह अवतीर्ण हुई। इस में सर्व प्रथम प्रकाशित दिन तथा रात्री की शपथ ले कर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को विश्वास दिलाया गया है कि आप के पालनहार ने न तो आप को छोड़ा है और न ही आप से अप्रसन्न हुआ है। इसी के साथ आप को यह शुभ सूचना भी दी गई है कि आगामी समय आप के लिये प्रथम समय से उत्तम होगा। यह भविष्य वाणी उस समय की गई जब इस के दूर दूर तक कोई लक्षण नहीं दिखाई पड़ रहे थे। सम्पूर्ण मक्का आप का विरोधी हो गया था। और अल्लाह के सिवा आप का कोई सहायक नहीं था। परन्तु मात्र इक्कीस वर्षों में पूरा मक्का इस्लाम का अनुयायी बन गया। और फिर पूरे अरब द्वीप में इस्लाम का ध्वजा लहराने लगा। और कुर्आन की यह भविष्यवाणी शत प्रतिशत पूरी हुई जो कुर्आन के अल्लाह का वचन होने का पमाण बन गई।

- आयत 9 से 11 तक में यह बताया गया है कि इन उपकारों के कारण आप का व्यवहार निर्बलों तथा अनाथों की सहायता एवं अल्लाह के उपकारों का स्वीकार तथा प्रदर्शन होना चाहिये।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है दिन चढ़े की!
2. और शपथ है रात्री की जब उस का सन्नाटा छा जाये!
3. (हे नबी) तेरे पालनहार ने तुझे न तो छोड़ा और न ही विमुख हुआ।
4. और निश्चय ही आगामी युग तेरे लिये प्रथम युग से उत्तम है।
5. और तेरा पालनहार तुम्हें इतना देगा कि तू प्रसन्न हो जायेगा।
6. क्या उस ने तुम्हे अनाथ पा कर शरण नहीं दी?
7. और तुझे पथ भूला हुआ पाया तो सीधा मार्ग नहीं दिखाया?
8. और निर्धन पाया तो धनी नहीं कर दिया?
9. तो तुम अनाथ पर क्रोध न करना!^[1]

وَالضُّحَىٰ

وَإِنِّي إِذْ أَسْبَجِي

مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَىٰ

وَلَلْآخِرُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَىٰ

وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ

أَلَمْ يَجِدَكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ

وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ

وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَىٰ

فَأَنذَرْتُكَ الْيَتِيمَ فَلَا تَعْتَرُ

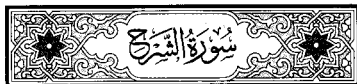
1 (1-9) इन आयतों में अल्लाह ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फरमाया है कि: तुम्हें यह चिन्ता कैसे हो गई कि हम अप्रसन्न हो गये? हम ने तो तुम्हारे जन्म के दिन से निरंतर तुम पर उपकार किये हैं। तुम अनाथ थे तो तुम्हारे पालन और रक्षा की व्यवस्था की। राह से अज्ञान थे तो राह दिखाई। निर्धन थे तो धनी बना दिया। यह बातें बता रही हैं कि तुम आरम्भ ही से हमारे प्रियवर हो और तुम पर हमारा उपकार निरंतर है।

10. और माँगने वाले को न झिड़कना।
11. और अपने पालनहार के उपकार का वर्णन करना।^[1]

وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝
وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝

1 (10-11) इन अन्तिम आयतों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बताया गया है कि: हम ने तुम पर जो उपकार किये हैं उन के बदले में तुम अल्लाह की उत्पत्ति के साथ दया और उपकार करो यही हमारे उपकारों की कृतज्ञता होगी।

सूरह शर्ह^[1] - 94



सूरह शर्ह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 8 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ में इन शब्दों के आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। जिस का अर्थ है: साहस, संतोष तथा सत्य को अपनाना है।
- इस की प्रथम आयत 1 से 3 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर अल्लाह के इसी उपकार तथा आप से बोझ उतार देने का वर्णन है।^[1]
- आयत 4 में आप की शखन और चर्चा ऊँची करने की शुभसूचना दी गई है।
- आयत 5 से 6 तक में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को संतोष दिलाया गया है कि वर्तमान कठिन स्थितियों के पश्चात् अच्छी स्थितियाँ आने ही को हैं।
- आयत 7 से 8 तक में यह निर्देश दिया गया है कि जब आप अपने संसारिक कार्य पूरे कर लें तो अपने पालनहार की वंदना (उपासना) में प्रयास करें और उसी की ओर ध्यानमग्न हो जायें।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी) क्या हम ने तुम्हारे लिये तुम्हारा वक्ष (सीना) नहीं खोल दिया?
2. और तुम्हारा बोझ नहीं उतार दिया?

أَلَمْ نُشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۖ

وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ ۖ

1 इस सूरह का विषय सूरह जुहा ही के समान है। परन्तु इस में सत्य का उपदेश देने के समय नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को जिन स्थितियों का सामना करना पड़ा कि जिस समाज में आप का बड़ा आदर मान था, वही समाज अब आप का विरोधी बन गया। कोई आप की बात सुनने को तैयार न था। यह आप के लिये बड़ी घोर स्थिति थी। अतः आप को सांत्वना दी गई कि आप हताश न हों बहुत शीघ्र ही यह अवस्था बदल जायेगी।

3. जिस ने तुम्हारी पीठ तोड़ दी थी।
4. और तुम्हारी चर्चा को ऊँचा कर दिया^[1]
5. निश्चय कठिनाई के साथ आसानी भी है।
6. निश्चय कठिनाई के साथ आसानी भी है^[2]

الَّذِي أَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۖ

وَرَفَعَا لَكَ ذِكْرَكَ ۖ

فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۖ

إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۖ

- 1 (1-4) इन का भावार्थ यह है कि हम ने आप पर तीन ऐसे उपकार किये हैं जिन के होते आप को निराश होने की आवश्यकता नहीं। एक यह कि आप के वक्ष को खोल दिया, अर्थात् आप में स्थितियों का सामना करने का साहस पैदा कर दिया। दूसरा यह कि नबी होने से पहले जो आप के दिल में अपनी जाति की मूर्ति पूजा और सामाजिक अन्याय को देख कर चिन्ता और शोक का बोझ था जिस के कारण आप दुःखित रहा करते थे। इस्लाम का सत्य मार्ग दिखा कर उस बोझ को उतार दिया। क्योंकि यही चिन्ता आप की कमर तोड़ रही थी। और तीसरा विशेष उपकार यह कि आप का नाम ऊँचा कर दिया। जिस से अधिक तो क्या आप के बराबर भी किसी का नाम इस संसार में नहीं लिया जा रहा है। यह भविष्यवाणी कुर्आन शरीफ़ ने उस समय की जब एक व्यक्ति का विरोध उस की पूरी जाति और समाज तथा उस का परिवार तक कर रहा था। और यह सोचा भी नहीं जा सकता था कि वह इतना बड़ा विश्व विख्यात व्यक्ति हो सकता है। परन्तु समस्त मानव संसार कुर्आन की इस भविष्यवाणी के सत्य होने का साक्षी है। और इस संसार का कोई क्षण ऐसा नहीं गुज़रता जब इस संसार के किसी देश और क्षेत्र में अजानों में "अशहदु अन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह" की आवाज़ न गूँज रही हो। इस के सिवा भी पूरे विश्व में जितना आप का नाम लिया जा रहा है और जितना कुर्आन का अध्ययन किया जा रहा है वह किसी व्यक्ति और किसी धर्म पुस्तक को प्राप्त नहीं, और यही अन्तिम नबी और कुर्आन के सत्य होने का साक्ष्य है, जिस पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिये।
- 2 (5-6) इन आयतों में विश्व का पालनहार अपने भक्त (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को विश्वास दिला रहा है कि उलझनों का यह समय देर तक नहीं रहेगा इसी के साथ सरलता तथा सुविधा का समय भी लगा आ रहा है। अर्थात् आप का आगामी युग व्यतीत युग से उत्तम होगा जैसा कि "सूरह जुहा" में कहा गया है।

7. अतः जब अवसर मिले तो आराधना में प्रयास करो।
8. और अपने पालनहार की ओर ध्यान मग्न हो जाओ।^[1]

فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ

وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝

1 (7-8) इन अन्तिम आयतों में आप को निर्देश दिया गया है कि जब अवसर मिले तो अल्लाह की उपासना में लग जाओ, और उसी में ध्यान मग्न हो जाओ, यही सफलता का मार्ग है।

सूरह तीन^[1] - 95



सूरह तीन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 8 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में “तीन” शब्द, जिस का अर्थ: इंजीर है, के आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक उन स्थानों को गवाही में प्रस्तुत किया गया है जिन से बड़े बड़े नबी उठे और मार्गदर्शन का प्रकाश फैला।

1 "तीन" का अर्थ है: इन्जीर। इसी शब्द से इस सुरह का नाम लिया गया है। फ़लस्तीन तथा शाम जो प्राचीन युग से नबियों के केंद्र चले आ रहे थे, जैतून तथा इंजीर की उपज का क्षेत्र था। और मक्के के लोग इन देशों में व्यापार के लिये जाया करते थे, इसलिये वे उनकी मुहब्बत से भली भाँती परिचित थे। "तूर" पर्वत सीना के मरुस्थल में है। यहीं पर मूसा (अलैहिस्सलाम) को धर्म विधान प्रदान किया गया था। "शान्ति नगर" से अभिप्राय: मक्का नगर है। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की दुआ के कारण इस का नाम शान्ति का नगर रखा गया है। जिस में अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूरे मानव विश्व के पथ प्रदर्शक बना कर भेजे गये।

इस की भूमिका यह है कि सर्व प्रथम उत्साह शील नबियों के केन्द्रों को शपथ अर्थात् साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत कर के यह बताया गया है कि अल्लाह ने इन्सान को अति उत्तम रूप रेखा में सर्वोच्च स्वभाव एवं योग्यताओं के साथ पैदा किया है। परन्तु इस उच्चता को स्थित रखने तथा इन उत्तम योग्यताओं को उभारने के लिये उस का यह नियम बनाया है कि: जो ईमान (विश्वास) तथा सत्कर्म की राह अपनायेंगे, जो कुर्आन की राह है और इस राह की कठिनाईयों से संघर्ष करने का साहस करेंगे तो उन्हें परलोक में अपने प्रयासों का भरपूर पुरस्कार मिलेगा। और जो संसारिक स्वार्थ और सुख के लिये इस राह की कठिनाईयों का सामना करने का साहस नहीं करेंगे, अल्लाह उन्हें उसी राह पर छोड़ देगा। और अन्ततः उस गढ़े में जा गिरेंगे जो इस के राहियों का भाग्य है।

भावार्थ यह है कि जब इन्सानों के दो भेद हैं तो न्यायोचित यही है कि उन के कर्मों के फल भी दो हों। फिर अल्लाह जो न्यायधीशों का न्यायधीश है वह न्याय क्यों नहीं करेगा?। (तर्जुमानुल कुर्आन)

- आयत 4 से 6 तक में बताया गया है कि अल्लाह ने इन्सान को उत्तम रूप पर पैदा किया है ताकि वह ऊँचा स्थान प्राप्त करे। किन्तु वह नीचा बन गया और बहुत नीची खाई में जा पड़ा। फिर जिस ने ईमान और सदाचार कर के ऊँचा स्थान प्राप्त कर लिया, तो वह सफल हो गया। और उस के लिये अनन्त प्रतिफल है।
- आयत 7 से 8 तक में कहा गया है कि अल्लाह सब से बड़ा न्यायधीश है। तो उस के यहाँ यह कैसे हो सकता है कि अच्छे-बुरे सब परिणाम में बराबर हो जायें? या दोनों का कोई परिणाम और प्रतिफल ही न हो? यह बात न्यायोचित नहीं है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. इंजीर तथा जैतून की शपथ!
2. एंव "तूरे सीनीन" की शपथ!
3. और इस शान्ति के नगर की शपथ!
4. हम ने इन्सान को मनोहर रूप में पैदा किया है।
5. फिर उसे सब से नीचे गिरा दिया।
6. परन्तु जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये उन के लिये ऐसा बदला है जो कभी समाप्त नहीं होगा।
7. फिर तुम (मानव जाति) प्रतिफल (बदले) के दिन को क्यों झुठलाते हो?
8. क्या अल्लाह सब अधिकारियों से बढ़ कर अधिकारी नहीं?

وَالْبَيْتِ وَالزَّيْتُونِ ۝

وَطُورِ سِينِينَ ۝

وَهَذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ ۝

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ۝

ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ ۝

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝

فَمَا يَكْفُرُكَ بَعْدَ بِالذِّمِينِ ۝

أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمَ الْحَاكِمِينَ ۝

सूरह अलक^[1]- 96



सूरह अलक के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 19 आयतें हैं।

- इस की आयत 2 में इन्सान के अलक अर्थात बंधे हुये रक्त से पैदा किये जाने की चर्चा की गई है। इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 5 तक में कुआन पढ़ने का निर्देश दिया गया है। तथा बताया गया है कि अल्लाह ने मनुष्य को कैसे पैदा किया और ज्ञान प्रदान किया है?
- इस की आयत 6 से 8 तक इन्सान को चेतावनी दी गयी है कि वह अल्लाह के इन उपकारों का आदर न कर के कैसे उल्लंघन करता है? जब कि उसे फिर अल्लाह ही के पास पहुंचना है?
- आयत 9 से 14 तक उस की निन्दा की गई है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का विरोध करता था और आप की राह में बाधायें उत्पन्न करता था।
- आयत 15 से 18 तक विरोधियों को बुरे परिणाम की चेतावनी दी गई है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और ईमान वालों को निर्देश दिया गया है कि उस की बात न मानो और अल्लाह की वंदना में लगे रहो। हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पहले सच्चा सपना देखते थे फिर जिब्रिल आये और आप को यह (पाँच) आयतें पढ़ाईं। (सहीह बुखारी: 4955)

अबू जह्ल ने कहा कि यदि मुहम्मद को काबा के पास नमाज़ पढ़ते देखा तो उस की गर्दन रौंद दूंगा। जब आप को इस की सूचना मिली तो कहा: यदि

1 यह सूरह मक्की है। और इस की प्रथम पाँच आयतें पहली वही (प्रकाशना) है जैसा कि बुखारी (हदीस नं० 4953) और मुस्लिम (हदीस नं० 160) में आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से उल्लिखित है। इस का दूसरा भाग उस समय उतरा जब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आप के मूर्ति पूजक चचा अबू जह्ल ने "काबा" के पास नमाज़ से रोक दिया। सूरह के अन्त में आप को निर्भय हो कर नमाज़ अदा करने और धमकियों पर ध्यान न देने के लिये कहा गया है।

वह ऐसा करता तो फ़रिश्ते उसे पकड़ लेते। (सहीह बुख़ारी: 4958)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अपने उस पालनहार के नाम से पढ़ जिस ने पैदा किया
2. जिस ने मनुष्य को रक्त के लोथड़े से पैदा किया।
3. पढ़, और तेरा पालनहार बड़ा दया वाला है।
4. जिस ने लेखनी के द्वारा ज्ञान सिखाया।
5. इन्सान को उस का ज्ञान दिया जिस को वह नहीं जानता था।^[1]

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ

اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ

الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ

عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمُ

1 (1-5) इन आयतों में प्रथम वही (प्रकाशना) का वर्णन है।

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मक्का से कुछ दूर "जबले नूर" (ज्योति पर्वत) की एक गुफा में जिस का नाम "हिरा" है जाकर एकान्त में अल्लाह को याद किया करते थे। और वही कई दिन तक रह जाते थे। एक दिन आप इसी गुफा में थे कि: अकस्मात आप पर प्रथम वही (प्रकाशना) लेकर फ़रिश्ता उतरा। और आप से कहा "पढ़ो"। आप ने कहा, मैं पढ़ना नहीं जानता। इस पर फ़रिश्ते ने आप को अपने सीने से लगाकर दबाया। इसी प्रकार तीन बार किया और आप को पाँच आयतें सुनाईं। यह प्रथम प्रकाशना थी। अब आप मुहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह से मुहम्मद रसूलुल्लाह हो कर डरते काँपते घर आये। इस समय आप की आयु 40 वर्ष थी। घर आकर कहा कि मुझे चादर उढ़ा दो। जब कुछ शांत हुये तो अपनी पत्नी खदीजा (रज़ियल्लाहु अन्हा) को पूरी बात सुनाई। उन्होंने ने आप को सांत्वना दी और अपने चचा के पुत्र "वरका बिन नौफल" के पास ले गई जो ईसाई विद्वान थे। उन्होंने ने आप की बात सुन कर कहा: यह वही फ़रिश्ता है जो मूसा (अलैहिस्सलाम) पर उतारा गया था। काश मैं तुम्हारी नुबुव्वत (दूतत्व) के समय शक्ति शाली युवक होता और उस समय तक जीवित रहता जब तुम्हारी जाति तुम्हें मक्के से निकाल देगी। आप ने कहा क्या लोग मुझे निकाल देंगे? वरका ने कहा, कभी ऐसा नहीं हुआ कि जो आप

6. वास्तव में इन्सान सरकशी करता है।
7. इसलिये कि वह स्वयं को निश्चन्त (धनवान) समझता है।
8. निः संदेह फिर तेरे पालनहार की ओर पलट कर जाना है।^[1]
9. क्या तुम ने उस को देखा जो रोकता है।
10. एक भक्त को जब वह नमाज़ अदा करे।
11. भला देखो तो, यदि वह सीधे मार्ग पर हो।
12. या अल्लाह से डरने का आदेश देता हो?
13. और देखो तो, यदि उस ने झुठलाया तथा मुँह फेरा हो?^[2]
14. क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह उसे

كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لِكَفْرٍ ۝

أَنْ رَّاهُ اسْتَعْتَى ۝

إِنَّا إِلَىٰ رَبِّكَ الرَّجُعِيُّ ۝

أَرَأَيْتَ الَّذِي يَنْهَىٰ ۝

عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ ۝

أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَىٰ الْهُدَىٰ ۝

أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ ۝

أَرَأَيْتَ إِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝

أَلَمْ يَعْلَم بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ۝

लाये हैं उस से शत्रुता न की गई हो। यदि मैं ने आप का वह समय पाया तो आप की भरपूर सहायता करूँगा।

परन्तु कुछ ही समय गुज़रा था कि वरका का देहान्त हो गया। और वह समय आया जब आप को 13 वर्ष बाद मक्का से निकाल दिया गया। और आप मदीना की ओर हिजरत (प्रस्थान) कर गये। (देखिये: इब्ने कसीर)

आयत नं० 1 से 5 तक निर्देश दिया गया है कि अपने पालनहार के नाम से उस के आदेश: कुर्आन का अध्ययन करो जिस ने इन्सान को रक्त के लोथड़े से बनाया। तो जिस ने अपनी शक्ति और दक्षता से जीता जागता इन्सान बना दिया वह उसे पुनः जीवित कर देने की भी शक्ति रखता है। फिर ज्ञान अर्थात् कुर्आन प्रदान किये जाने की शुभ सूचना दी गई है।

- 1 (6-8) इन आयतों में उन को धिक्कारा है जो धन के अभिमान में अल्लाह की अवज्ञा करते हैं और इस बात से निश्चन्त हैं कि: एक दिन उन्हें अपने कर्मों का जवाब देने के लिये अल्लाह के पास जाना भी है।
- 2 (9-13) इन आयतों में उन पर धिक्कार है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरोध पर तुल गये। और इस्लाम और मुसलमानों की राह में रुकावट न डालते और नमाज़ से रोकते हैं।

देख रहा है?

15. निश्चय यदि वह नहीं रुकता तो हम उसे माथे के बल घसीटेंगे।
16. झूठे और पापी माथे के बल।
17. तो वह अपनी सभा को बुला ले।
18. हम भी नरक के फरिश्तों को बुलायेंगे।^[1]
19. (हे भक्त) कदापि उस की बात न सुनो तथा सज्दा करो और मेरे समीप हो जाओ।^[2]

كَلَّا لَئِن لَّمْ يَنْتَهَ لَتَسْفَعَنَا النَّاصِيَةُ ۝

نَاصِيَةٌ كَازِبَةٌ خَاطِئَةٌ ۝

فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ۝

سَدَّ الرِّبَابِ ۝

كَلَّا لَآتُوعَهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۝

1 (14-18) इन आयतों में सत्य के विरोधी को दुष्परिणाम की चेतावनी है।

2 (19) इस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के माध्यम से साधारण मुसलमानों को निर्देश दिया गया है कि सहन शीलता के साथ किसी धमकी पर ध्यान देते हुये नमाज़ अदा करते रहो ताकि इस के द्वारा तुम अल्लाह के समीप हो जाओ।

सूरह क़द्र^[1] - 97



सूरह क़द्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं^[1]

- इस में कुर्आन के क़द्र की रात में उतारे जाने की चर्चा की गई है। इस लिये इस का यह नाम रखा गया है। क़द्र का अर्थ है: आदर और सम्मान।
- इस में सब से पहले बताया गया है कि कुर्आन कितनी महान् रात्रि में अवतरित किया गया है। फिर इस शुभ रात की प्रधानता का वर्णन किया गया है और उसे भोर तक सर्वथा शान्ति की रात कहा गया है।

इस से अभिप्राय यह बताना है कि जो ग्रन्थ इतनी शुभ रात में उतरा उस का पालन तथा आदर न करना बड़े दुर्भाग्य की बात है।

हदीस में है कि इस रात की खोज रमज़ान के महीने की दस अन्तिम रातों की विषम (ताक़) रात में करो। (सहीह बुख़ारी: 2017, तथा सहीह मुस्लिम: 1169)

दूसरी हदीस में है कि जो क़द्र की रात में ईमान के साथ पुन प्राप्त करने के लिये नमाज़ पढ़ेगा उस के पहले के पाप क्षमा कर दिये जायेंगे। (सहीह बुख़ारी: 37, तथा सहीह मुस्लिम: 759)

1 इस सूरह को अधिकांश भाष्य कारों ने मक्की लिखा है। और कुछ ने मदनी बताया है। परन्तु इस का प्रसंग मक्की होने के समर्थन में है। इसी "लैलतुल क़द्र" (सम्मानित रात्री) को सूरह दुख़ान में "लैलतुन मुबारकह" (शुभ रात्री) कहा गया है। यह शुभ रात्रि रमज़ान मुबारक ही की एक रात है। इसी कारण सूरह "बक़रः" में कहा गया है कि रमज़ान मुबारक के महीने में कुर्आन शरीफ़ उतारा गया। अर्थात् इसी रात्रि में सम्पूर्ण कुर्आन उन फ़रिश्तों को दे दिया गया जो वही (प्रकाशना) लाने के लिये नियुक्त थे। फिर 23 वर्ष में आवश्यकता के अनुसार कुर्आन उतारा जाता रहा। यदि इस का अर्थ यह लिया जाये कि इस के उतारने का आरम्भ रमज़ान मुबारक से हुआ तो यह भी सहीह है। दोनों में अर्थ यही निकलता है कि कुर्आन रमज़ान मुबारक में उतरा। और इसी शुभ रात्री में सूरह अलक़ की प्रथम पाँच आयतें उतारी गईं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. निःसंदेह हम ने उस (कुर्आन) को "लैलतुल क़द्र" (सम्मानित रात्रि) में उतारा।
2. और तुम क्या जानो कि वह "लैलतुल क़द्र" (सम्मानित रात्रि) क्या है?
3. लैलतुल क़द्र (सम्मानित रात्रि) हज़ार मास से उत्तम है।^[1]
4. उस में (हर काम को पूर्ण करने के लिये) फ़रिश्ते तथा रूह (जिबरील) अपने पालनहार की आज्ञा से उतरते हैं।^[2]
5. वह शान्ति की रात्री है, जो भोर होने तक रहती है।^[3]

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ

وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ

لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ

تَنْزِيلُ الْمَلَكِ وَالرُّوحِ فِيهَا يُأْتِي أُولَئِكَ مِنْ رَّبِّهِمْ وَمَنْ كُنَّ أُمَّرَةٌ

سَلَامٌ عَلَيْهَا حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ

- 1 हज़ार मास से उत्तम होने का अर्थ यह है कि: इस शुभ रात्रि में इबादत की बहुत बड़ी प्रधानता है। अबु हुरैरह (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत (उदघृत) है कि जो व्यक्ति इस रात में ईमान (सत्य विश्वास) के साथ तथा पुण्य की नीति से इबादत करे तो उस के सभी पहले के पाप क्षमा कर दिये जाते हैं। (देखिये: सहीह बुख़ारी, हदीस नं० 35, तथा सहीह मुस्लिम, हदीस नं० 760)
- 2 "रूह" से अभिप्राय: जिबरील अलैहिस्सलाम हैं। उन की प्रधानता के कारण सभी फ़रिश्तों से उन की अलग चर्चा की गई है। और यह भी बताया गया है कि वे स्वयं नहीं बल्कि अपने पालनहार की आज्ञा से ही उतरते हैं।
- 3 इस का अर्थ यह है कि संध्या से भोर तक यह रात्रि सर्वथा शुभ तथा शान्तिमय होती है। सहीह हदीसों से स्पष्ट होता है कि यह शुभ रात्रि रमजान की अन्तिम दस रातों में से कोई एक रात है। इसलिये हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन दस रातों को अल्लाह की उपासना में बिताते थे।

सूरह बय्यिनह^[1] - 98



सूरह बय्यिनह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 8 आयतें हैं^[1]

- इस की प्रथम आयत में बैयिनह अर्थात: प्रकाशित प्रमाण की चर्चा हुई है जिस से इस का यह नाम रखा गया है।
- इस की आयत 1 से 3 तक में यह बताया गया है कि लोगों को कुफ़र से निकालने के लिये यह आवश्यक था कि एक ग्रन्थ के साथ एक रसूल भेजा जाये ताकि वह धर्म को सहीह रूप में प्रस्तुत करे।
- आयत 4,5 में बताया गया है कि अहले किताब (अर्थात यहूदी और ईसाई) के पास प्रकाशित शिक्षा आ चुकी थी किन्तु वे विभेद में पड़ गये। और उन्होंने धर्म की वास्तविक शिक्षा भुला दी।
- आयत 6 से 8 तक रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इन्कार की दुःखद यातना को और रसूल पर ईमान ला कर अल्लाह से डरते हुये जीवन बिताने की सफलता को बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अहले किताब के काफ़िर, और मुशिरक लोग ईमान लाने वाले नहीं थे जब तक कि उन के पास खुला प्रमाण न आ जाये।
2. अर्थात: अल्लाह का एक रसूल, जो पवित्र ग्रन्थ पढ़ कर सुनाये।

لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ
وَالْمُشْرِكِينَ مُتَّقِينَ حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۗ

رَسُولٍ مِّنَ اللَّهِ يَتْلُو صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۗ

- 1 इस सूरह को साधारण भाष्यकारों ने मदनी लिखा है। परन्तु कुछ सहाबा (रजियल्लाहु अन्हुम) ने इसे मक्की कहा है। इस को इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह सूरह मक्के के अन्तिम काल तथा मदीने के प्रथम काल के बीच अवतीर्ण हुई।

3. जिस में उचित आदेश है।^[1]
4. और जिन लोगों को ग्रन्थ दिये गये उन्होंने इस खुले प्रमाण के आ जाने के पश्चात ही मतभेद किया।^[2]
5. और उन्हें केवल यही आदेश दिया गया था कि वे धर्म को शुद्ध कर रखें, और सब को तज कर केवल अल्लाह की उपासना करें, नमाज़ अदा करें, और ज़कात दें और यही शाश्वत धर्म है।^[3]
6. निःसंदेह जो लोग अहले किताब में से काफ़िर हो गये, तथा मुशिरक (मिश्रणवादी) तो वे सदा नरक की आग में रहेंगे। और वही सब से दुष्टतम जन हैं।

فِيهَا كِتَابٌ قَيِّمَةٌ ۝

وَمَا تَرْجَى الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مَنَ ۝
بَعْدَ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَةُ ۝

وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ
الْدِينَ لَا حُفَاةَ وَيُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ
وَذَلِكَ دِينُ الْقَيِّمَةِ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالشُّرَكِيِّينَ
فِي تَارِحَتِهِمْ خَالِدِينَ فِيهَا أُولَئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝

- 1 (1-3) इस सूरह में सर्वप्रथम यह बताया गया है कि इस पुस्तक के साथ एक रसूल (ईश दूत) भेजना क्यों आवश्यक था। इस का कारण यह है कि मानव संसार के आदि शास्त्र धारी (यहूद तथा ईसाई) हों या मिश्रणवादी अधर्म की ऐसी स्थिता में फंसे हुये थे कि एक नबी के बिना उन का इस स्थिति से निकलना संभव न था। इसलिये इस चीज़ की आवश्यकता आई कि एक रसूल भेजा जाये जो स्वयं अपनी रिसालत (दूतत्व) का ज्वलंत प्रमाण हो। और सब के सामने अल्लाह की किताब को उस के सहीह रूप में प्रस्तुत करे जो असत्य के मिश्रण से पवित्र हो जिस से आदि धर्म शास्त्रों को लिप्त कर दिया गया है।
- 2 इस के बाद आदि धर्म शास्त्रों के अनुयाईयों के कुटमार्ग का विवरण दिया गया है कि इस का कारण यह नहीं था कि अल्लाह ने उन को मार्गदर्शन नहीं दिया। बल्कि वे अपने धर्म ग्रन्थों में मन माना परिवर्तन कर के स्वयं कुटमार्ग का कारण बन गये।
- 3 इन में यह बताया गया है कि अल्लाह की ओर से जो भी नबी आये सब की शिक्षा यही थी कि सब रीतियों को त्याग कर मात्र एक अल्लाह की उपासना की जाये। इस में किसी देवी देवता की पूजा अर्चना का मिश्रण न किया जाये। नमाज़ की स्थापना की जाये, ज़कात दी जाये। यही सदा से सारे नबियों की शिक्षा थी।

7. जो लोग ईमान लाये, तथा सदाचार करते रहे तो वही सब से सर्वश्रेष्ठ जन हैं।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ هُم خَيْرُ
الْبَرِيَّةِ ۝

8. उन का प्रतिफल उन के पालनहार की ओर से सदा रहने वाले बाग़ हैं। जिन के नीचे नहरें बहती होंगी। वे उन में सदा निवास करेंगे। अल्लाह उन से प्रसन्न हुआ, और वे अल्लाह से प्रसन्न हुये। यह उस के लिये है जो अपने पालनहार से डरे।^[1]

جَزَاءُ وَّهُمْ جَنَّاتُ رِوَاهُمْ جَدَّتْ عَدْنٌ يَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ
ذَٰلِكَ لِمَنْ حَشِيَ رَبَّهُ ۝

1 (6-8) इन आयतों में साफ़ साफ़ कह दिया गया है कि जो अहले किताब और मूर्तियों के पुजारी इस रसूल को मानने से इन्कार करेंगे तो वे बहुत बुरे हैं। और उन का स्थान नरक है। उसी में वे सदा रहेंगे। और जो संसार में अल्लाह से डरते हुये जीवन निर्वाह करेंगे तथा विश्वास के साथ सदाचार करेंगे तो वे सदा के स्वर्ग में रहेंगे। अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया, और वे अल्लाह से प्रसन्न हो गये।

सूरह ज़िलज़ाल^[1]- 99



सूरह ज़िलज़ाल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदीनी है, इस में 8 आयतें हैं।

- इस में प्रलय के दिन के भूकम्प की चर्चा हुई है जो ((ज़िलज़ाल)) का अर्थ है। इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक में धरती की उस दशा की चर्चा है जो प्रलय के दिन होगी और जिसे देख कर मनुष्य चकित रह जायेगा।
- आयत 4 से 5 तक में यह बताया गया है कि उस दिन धरती बोलेगी और अपनी कथा सुनायेगी कि मनुष्य उस के ऊपर रह कर क्या करता रहा है। जो उस की ओर से मनुष्य के कर्मों पर गवाही होगी।
- आयत 6 से 8 तक में बताया गया है कि उस दिन लोग विभिन्न गिरोहों में हो कर अपने कर्मों को देखने के लिये निकल पड़ेंगे और प्रत्येक की छोटी बड़ी अच्छाई और बुराई उस के सामने आ जायेगी।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब धरती को पूरी तरह झंझोड़ दिया जायेगा।
2. तथा भूमी अपने बोझ बाहर निकाल देगी।
3. और इन्सान कहेगा कि इसे क्या हो गया?

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا

وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا

وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا

- 1 यह सूरह मक्की है। क्योंकि इस में वर्णित विषय इसी का समर्थन करता है। परन्तु कुछ विद्वानों का विचार है कि यह मदीने में अवतीर्ण हुई। इस सूरह के अन्दर संसार के पश्चात दूसरे जीवन तथा उस में कर्मों का पूरा हिसाब लिये जाने का वर्णन है।

4. उस दिन वह अपनी सभी सुचनायें वर्णन कर देगी।

يَوْمَئِذٍ تُخَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۝

5. क्योंकि तेरे पालनहार ने उसे यही आदेश दिया है।

بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ۝

6. उस दिन लोग तितर बितर होकर आयेंगे ताकि वह अपने कर्मों को देख लें।^[1]

يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا لَّا يَعْبُرُونَ
أَعْمَالَهُمْ ۝

7. तो जिस ने एक कण के बराबर भी पुण्य किया होगा उसे देख लेगा।

مَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۝

8. और जिस ने एक कण के बराबर भी बुरा किया होगा उसे देख लेगा।^[2]

وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۝

1 (1-6) इन आयतों में बताया गया है कि जब प्रलय (क़यामत) का भूकम्प आयेगा तो धरती के भीतर जो कुछ भी है, सब उगल कर बाहर फेंक देगी। यह सब कुछ ऐसे होगा कि जीवित होने के पश्चात् सभी को आश्चर्य होगा कि यह क्या हो रहा है? उस दिन यह निर्जीव धरती प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों की गवाही देगी कि किस ने क्या क्या कर्म किये हैं। यद्यपि अल्लाह सब के कर्मों को जानता है फिर भी उस का निर्णय गवाहियों से प्रमाणित कर के होगा।

2 (7-8) इन आयतों का अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अकेला आयेगा, परिवार और साथी सब बिखर जायेंगे। दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि इस संसार में जो किसी भी युग में मरे थे सभी दलों में चले आ रहे होंगे, और सब को अपने किये हुये कर्म दिखाये जायेंगे। और कर्मानुसार पुण्य और पाप का बदला दिया जायेगा। और किसी का पुण्य और पाप छिपा नहीं रहेगा।

सूरह आदियात^[1] - 100



सूरह आदियात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस सूरह में ((आदियात)) अर्थात् दौड़ने वाले घोड़ों की शपथ ली गई है। इस लिये इस का नाम “सूरह आदियात” रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 5 तक में घोड़ों को इस बात की गवाही के लिये प्रस्तुत किया गया है कि मनुष्य अपने पालनहार की प्रदान की हुई शक्तियों का कितना ग़लत प्रयोग करता है।
- आयत 6 से 8 तक में मनुष्य की धन के मोह में अल्लाह का उपकार न मानने पर निन्दा की गई है।
- अन्तिम दो आयतों में उसे सावधान किया गया है कि प्रलय के दिन उसे कब्रों से निकल कर अल्लाह के पास उपस्थित होना है। उस दिन उस के दिल की दशा खुल कर सामने आ जायेगी कि उस नें संसार में जो भी कर्म किये हैं वह किस भावना और विचार से किये हैं जिसे उस ने अपने दिल में छुपा रखा था।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. उन घोड़ों की शपथ जो दौड़ कर
हाँफ जाते हैं!
2. फिर पत्थरों पर टाप मार कर
चिंगारियाँ निकालने वालों की शपथ!
3. फिर प्रातः काल में धावा बोलने वालों
की शपथ!
4. जो धूल उड़ाते हैं।

وَالْعَادِيَاتِ ضَبْحًا ۝

فَالْمُورِيَاتِ قَدْحًا ۝

فَالْمُغِيرَاتِ صُبْحًا ۝

فَأَثَرْنَ بِهِ نَعْفًا ۝

1 इस सूरह में वर्णित विषय बता रहे हैं कि यह आरंभिक मक्की सूरतों में से है।

5. फिर सेना के बीच घुस जाते हैं।
6. वास्तव में इन्सान अपने पालनहार का बड़ा कृतघ्न (नाशुकरा) है।
7. निश्चय रूप से वह इस पर स्वयं साक्षी (गवाह) है।^[1]
8. वह धन का बड़ा प्रेमी है।^[2]
9. क्या वह उस समय को नहीं जानता जब क़ब्रों में जो कुछ है निकाल लिया जायेगा?
10. और सीनों के भेद प्रकाश में लाये जायेंगे।^[3]
11. निश्चय उनका पालनहार उस दिन उन से पूर्ण रूप सूचित होगा।^[4]

فَوَسَّطْنَ بِهِ جُبَعًا

إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ

وَإِنَّهُ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ

وَإِنَّهُ لِحُبِّ الْغَيْرِ لَشَدِيدٌ

أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ

وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُورِ

إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ خَبِيرٌ

- 1 (1-7) इन आरंभिक आयतों में मानव जाति (इन्सान) की कृतघ्नता का वर्णन किया गया है। जिस की भूमिका के रूप में एक पशु की कृतज्ञता को शपथ स्वरूप उदाहरण के लिये प्रस्तुत किया गया है। जिसे इन्सान पोसता है, और वह अपने स्वामी का इतना भक्त होता है कि उसे अपने ऊपर सवार कर के नीचे ऊँचे मार्गों पर रात दिन की परवाह किये बिना दोड़ता और अपनी जान जोखिम में डाल देता है। परन्तु इन्सान जिसे अल्लाह ने पैदा किया, समझ बूझ दी और उस के जीवन यापन के सभी साधन बनाये, वह उस का उपकार नहीं मानता और जान बूझ कर उस की अवज्ञा करता है, उसे इस पशु से शिक्षा लेनी चाहिये।
- 2 इस आयत में उस की कृतघ्नता का कारण बताया गया है कि जिस इन्सान को सर्वाधिक प्रेम अल्लाह से होना चाहिये वही अत्याधिक प्रेम धन से करता है।
- 3 (9-10) इन आयतों में सावधान किया गया है कि संसारिक जीवन के पश्चात एक दूसरा जीवन भी है तथा उस में अल्लाह के सामने अपने कर्मों का उत्तर देना है जो प्रत्येक के कर्मों का ही नहीं उन के सीनों के भेदों को भी प्रकाश ला कर दिखा देगा कि किस ने अपने धन तथा बल का कुप्रयोग कर कृतघ्नता की है, और किस ने कृतज्ञता की है। और प्रत्येक को उस का प्रतिकार भी देगा। अतः इन्सान को धन के मोह में अन्धा तथा अल्लाह का कृतघ्न नहीं होना चाहिये, और उस के सत्धर्म का पालन करना चाहिये।
- 4 (11) अर्थात् वह सूचित होगा कि कौन क्या है, और किस प्रतिकार का भागी है।

सूरह कारिअह^[1]- 101



सूरह कारिअह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में क्यामत को ((कारिअह)) कहा गया है। अर्थात् खड़ खड़ाने वाली आपदा। और इसी से इस का यह नाम रखा गया है।
- आयत 1 से 5 तक प्रलय के समय की स्थिति से सूचित किया गया है।
- आयत 6, 7 में जिन के कर्म न्याय के तराजू में भारी होंगे उन का अच्छा परिणाम बताया गया है।^[1]
- आयत 8 से 11 तक में उन का दुष्परिणाम बताया गया है जिन के कर्म न्याय के तराजू में हल्के होंगे। और नरक की वास्तविकता बताई गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. वह खड़खड़ा देने वाली।
2. क्या है वह खड़खड़ा देने वाली?
3. और तुम क्या जानो कि वह खड़खड़ा देने वाली क्या है?^[2]

الْقَارِعَةُ ۝

مَا الْقَارِعَةُ ۝

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝

- 1 यह सूरह भी मक्की है और इस का विषय भी प्रलय (क्यामत) तथा परलोक (आखिरत) है। इस में प्रश्न के रूप में सर्वप्रथम सावधान कर के दो वाक्यों में प्रलय का चित्रण कर दिया गया है कि उस दिन सभी घबरा कर इस प्रकार इधर उधर फिरेंगे जैसे पतितंगे प्रकाश पर बिखरे होते हैं। और पर्वतों की यह दशा होगी कि अपने स्थान से उखड़ कर धुनी हुई ऊन के समान हो जायेंगे। फिर बताया गया है कि परलोक में हिसाब इस आधार पर होगा कि किस के सदाचार का भार दुराचार से अधिक है और किस के सदाचार का भार उस के दुराचार से हल्का है। प्रथम श्रेणी के लोगों को सुख मिलेगा। और दूसरी श्रेणी के लोगों को आग से भरी गहरी खाई में फेंक दिया जायेगा।
- 2 (1-3) "कारिअह": प्रलय ही का एक नाम है जो उस के समय की घोर दशा का

4. जिस दिन लोग बिखरे पतिंगों के समान (व्याकुल) होंगे।
5. और पर्वत धुनी हुई ऊन के समान उड़ेंगे।^[1]
6. तो जिस के पलड़े भारी हुये
7. तो वह मन चाहे सुख में होगा।
8. तथा जिस के पलड़े हल्के हुये
9. तो उस का स्थान "हाविया" है।
10. और तुम क्या जानो कि वह (हाविया) क्या है?
11. वह दहक्ती आग है।^[2]

يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ۝

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوشِ ۝

فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ۝

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ۝

وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۝

فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ۝

وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَ ۝

نَارُ حَامِيَةٍ ۝

चित्रण करता है। इस का शाब्दिक अर्थ: द्वार खटखटाना है। जब कोई अतिथि अकस्मात रात में आता है तो उसे दरवाजा खटखटाने की आवश्यकता होती है। जिस से एक तो यह ज्ञात हुआ कि प्रलय अकस्मात होगी। और दूसरा यह ज्ञात हुआ कि वह कड़ी ध्वनी और भारी उथल पुथल के साथ आयेगी। इसे प्रश्नवाचक वाक्यों में दोहराना सावधान करने और उस की गंभीरता को प्रस्तुत करने के लिये है।

- 1 (4-5) इन दोनों आयतों में उस स्थिति को दर्शाया गया है जो उस समय लोगों और पर्वतों की होगी।
- 2 (6-11) इन आयतों में यह बताया गया है कि प्रलय क्यों होगी? इसलिये कि इस संसार में जिस ने भले बुरे कर्म किये हैं उन का प्रतिकार कर्मों के आधार पर दिया जाये, जिस का परिणाम यह होगा कि जिस ने सत्य विश्वास के साथ सत्कर्म किया होगा वह सुख का भागी होगा। और जिस ने निर्मल परम्परागत रीतियों को मान कर कर्म किया होगा वह नरक में झोंक दिया जायेगा।

सूरह तकासुर^[1] - 102



सूरह तकासुर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 8 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में ((तकासुर)) अर्थात: अधिक से अधिक धन प्राप्त करने की इच्छा को जीवन के मूल उद्देश्य से अचेत रहने का कारण बताया गया है। इसी लिये इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 5 तक में सावधान किया गया है कि जिस धन को तुम सब कुछ समझते हो और उसे अर्जित करने में अपने भविष्य से अचेत हो तुम्हें आँख बंद करते ही पता लग जायेगा कि मौत के उस पार क्या है।
- आयत 6 से 8 तक में बताया गया है कि नरक को तुम मानो या न मानो वह दिन आ कर रहेगा जब तुम उसे अपनी आँखों से देख लोगे। और तुम्हें उस का विश्वास हो जायेगा किन्तु वह समय कर्म का नहीं बल्कि हिसाब देने का दिन होगा। और तुम्हें अल्लाह के प्रत्येक प्रदान का जवाब देना होगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. तुम्हें अधिक (धन) के लोभ ने मग्न कर दिया।
2. यहाँ तक कि तुम कब्रिस्तान जा पहुँचे।^[2]

أَلْهَكُمُ التَّكَاثُرُ

حَتَّىٰ زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ

- 1 इस सूरह का प्रसंग भी इस के मक्की होने का संकेत करता है।
- 2 (1-2) इन दोनों आयतों में उन को सावधान किया गया है जो संसारिक धन ही को सब कुछ समझते हैं और उसे अधिकाधिक प्राप्त करने की धुन उन पर ऐसी सवार है कि: मौत के पार क्या होगा इसे सोचते ही नहीं। कुछ तो धन की देवी बना कर उसे पूजते हैं।

- | | |
|---|--|
| 3. निश्चय तुम्हें ज्ञान हो जायेगा। | كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ |
| 4. फिर निश्चय ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा। | ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ |
| 5. वास्तव में यदि तुम को विश्वास होता (तो ऐसा न करते)। ^[1] | كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ ۝ |
| 6. तुम नरक को अवश्य देखोगे। | لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ۝ |
| 7. फिर उसे विश्वास की आँख से देखोगे। | ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ۝ |
| 8. फिर उस दिन तुम से सुख सम्पदा के विषय में अवश्य पूछ गछ होगी। ^[2] | ثُمَّ لَتَسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ۝ |

1 (3-5) इन आयतों में सावधान किया गया है कि मौत के पार क्या है? उन्हें आँख बन्द करते ही इस का ज्ञान हो जायेगा। यदि आज तुम्हें इस का विश्वास होता तो अपने भविष्य की ओर से निश्चिन्त न होते। और तुम पर धन प्राप्ती की धुन इतनी सवार न होती।

2 (6-8) इन आयतों में सूचित किया गया है कि तुम नरक के होने का विश्वास करो या न करो वह दिन आ कर रहेगा जब तुम उस को अपनी आँखों से देख लोगे। उस समय तुम्हें इस का पूरा विश्वास हो जायेगा। परन्तु वह दिन कर्म का नहीं हिसाब देने का दिन होगा। और तुम्हें प्रत्येक अनुकम्पा (नेमत) के बारे में अल्लाह के सामने जवाब देनी करनी होगी। (अहसनुल बयान)

सूरह अस्र^[1] - 103



सूरह अस्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 3 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((अस्र)) अर्थात् (युग) की शपथ से होता है, इस लिये इस का नाम सूरह अस्र रखा गया है।^[1]
- इस सूरह में मात्र तीन ही आयतें हैं फिर भी इस के अर्थ में पूरे मानव जाति के उत्थान और पतन का एतिहास आ गया है। और मार्गदर्शन का मीनार बन कर व्यक्ति तथा जातियों और धार्मिक समुदायों को सीधी राह से सूचित कर रही है। ताकि वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लें, और ग़लत राह पर पड़ कर विनाश के गढ़े में गिरने से बच जायें।
- युग की गवाही इस के लिये प्रस्तुत की गई है कि यदि मनुष्य के कर्म ईमान से ख़ाली हों तो वह विनाश से नहीं बच सकता।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. निचड़ते दिन की शपथ!
2. निःसंदेह इन्सान क्षति में है।^[2]

وَالْعَصْرِ

إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكْفُورٌ

- 1 यद्वपी यह एक छोटी सी सूरह है परन्तु इस में ज्ञान का एक समुद्र समाया हुआ है। इस सूरह का विषय इस बात पर सावधान करना है कि समस्त मानव जाति (इन्सान) विनाश की ओर जा रही है। इस से केवल वही लोग बच सकते हैं जो ईमान लाये और अच्छे कर्म किये।
- 2 (1-2) "अस्र" का अर्थ: निचोड़ना है। युग तथा संध्या के समय के भाग के लिये भी इस का प्रयोग होता है। और यहाँ इस का अर्थ युग और दिन निचड़ने का समय दोनों लिया जा सकता है। इस युग की गवाही इस बात पर पेश की गई है कि: इन्सान जब तक ईमान (सत्य विश्वास) के गुणों को नहीं अपनाता विनाश से सुरक्षित नहीं रह सकता। इसलिये कि इन्सान के पास सब से मूल्यवान् पूँजी समय है जो तेज़ी से गुज़रता है। इसलिये यदि वह परलोक का सामान न करे तो अवश्य क्षति में पड़ जायेगा।

3. अतिरिक्त उन के जो ईमान लाये।
तथा सदाचार किये, एंव एक दूसरे
को सत्य का उपदेश तथा धैर्य का
उपदेश देते रहे।^[1]

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ

1 इस का अर्थ यह है कि परलोक की क्षति से बचने के लिये मात्र ईमान ही पर बस नहीं इस के लिये सदाचार भी आवश्यक है और उस में से विशेष रूप से सत्य और सहन शीलता और दूसरों को इन की शिक्षा देते रहना भी आवश्यक है। (तर्जुमानुल कुर्आन, मौलाना आज़ाद)

सूरह हुमज़ह^[1] - 104



सूरह हुमज़ह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 9 आयतें हैं।

- इस का नाम ((सूरह हुमज़ह)) है क्यों कि इस की प्रथम आयत में यह शब्द आया है जिस का अर्थ है: व्यंग करना, ताना मारना, गीबत करना आदि^[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक में धन के पूजारियों के आचरण का चित्र दिखाया गया है और उन्हें सचेत किया गया है कि यह आचरण अवश्य विनाश का कारण है।
- आयत 4 से 9 तक में धन के पूजारियों का परलोक में दुष्परिणाम बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. विनाश हो उस व्यक्ति का जो कचोके लगाता रहता है और चौंटे करता रहता है।
2. जिस ने धन एकत्र किया और उसे गिन गिन कर रखा।
3. क्या वह समझता है कि उस का धन उसे संसार में सदा रखेगा?^[2]

وَيَلِ الْكُلَّ هَمَزَةً لَمْرَةً ۝

الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ ۝

يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ ۝

- 1 यह सूरह भी मक्की युग की आरंभिक सूरतों में से है। इस का विषय धन के पूजारियों को सावधान करना है कि जिन की यह दशा होगी वह अवश्य अपने कुकर्म का दण्ड पायेंगे।
- 2 (1-3) इन आयतों में धन के पूजारियों के अपने धन के घमंड में दूसरों का अपमान करने और उन की कृपणता (कंजूसी) का चित्रण किया गया है, उन्हें चेतावनी दी गई है कि: यह आचरण विनाशकारी है, धन किसी को संसार में सदा जीवित नहीं रखेगा, एक समय आयेगा कि उसे सब कुछ छोड़ कर खाली हाथ जाना पड़ेगा।

4. कदापि ऐसा नहीं होगा। वह अवश्य ही "हुतमा" में फेंका जायेगा।
5. और तुम क्या जानो कि "हुतमा" क्या है?
6. वह अल्लाह की भड़काई हुई अग्नि है।
7. जो दिलों तक जा पहुँचेगी।
8. वह उस में बन्द कर दिये जायेंगे।
9. लँबे लँबे स्तम्भों में।^[1]

كَلَّا لَيُبَدِّلَنَّا فِي الْأَخْطَابِ ۝

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْأَخْطَابُ ۝

نَارُ اللَّهِ الْمَوْجُودَةُ ۝

الَّتِي تَنْظِلُّ عَلَى الْأَفْئِدَةِ ۝

إِنَّمَا عَلَيْهِمْ مُّوَصَّدَةٌ ۝

فِي عَمَدٍ شُمُودَةٍ ۝

1 (4-9) इन आयतों के अन्दर परलोक में धन के पुजारियों के दुष्परिणाम से अवगत कराया गया है कि उन को अपमान के साथ नरक में फेंक दिया जायेगा। जो उन्हें खण्ड कर देगी और दिलों तक जो कुविचारों का केन्द्र है पहुँच जायेगी, और उस में इन अपराधियों को फेंक कर ऊपर से बन्द कर दिया जायेगा।

सूरह फ़ील^[1] - 105



सूरह फ़ील के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं।

- इस सूरह में ((फ़ील)) शब्द आया है जिस का अर्थ हाथी है। इसी लिये इस का यह नाम है।^[1]
- इस पूरी सूरह में एक शिक्षाप्रद ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत है।
- आयत 1 में कहा गया है कि अब्रहा जिस की सेना काँबा को ढहाने आई थी उस का अल्लाह ने कैसा सत्यानाश कर दिया? उस पर विचार करो।

1 यह सूरह भी मक्की है। इस में अल्लाह की शक्ति और अपने घर "काँबा" को "अबरहा" से सुरक्षित रखने और उसे उस की सेना सहित नाश कर देने की ओर संकेत किया गया है जिस की संक्षिप्त कथा यह है कि यमन के राजा "अबरहा" ने अपनी राजधानी "सन्आ" में एक कलीसा (गिर्जा घर) बनाया। और लोगों को काँबा के हज्ज से रोकने की घोषणा कर दी। और 570 या 571 ई० में 60 हज़ार सेना के साथ जिस में 13 या 9 हाथी थे काँबा पर आक्रमण करने के इरादे से चल पड़ा। और जब मक्का से तीन कोस रह गया तो "मुहस्सर" नामी स्थान पर पड़ाव किया, और उस की सेना ने कुछ ऊँट पकड़ लिये जिन में दो सौ ऊँट रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा अब्दुल मुत्तलिब के थे जो काँबा के पुरोहित और नगर के मुख्या थे। वह अब्रहा के पास गये जिन से वह बड़ा प्रभावित हुआ और उन्होंने अपने ऊँट माँगे। अब्रहा ने कहा: तुम ऊँट माँगते हो और काँबा के बारे में जो तुम्हारा धर्म स्थल है कुछ नहीं कहते? अब्दुल मुत्तलिब ने कहा: मैं अपने ऊँटों का मालिक हूँ। रहा यह घर तो उस का स्वामी उस की रक्षा स्वयं करेगा। अब्रहा ने उन को ऊँट वापस कर दिये। और उन्होंने नागरिकों से आ कर कहा कि: अपने परिवार को लेकर (पर्वत) पर चले जायें। फिर उन्होंने कुरैश के कुछ प्र मुखों के साथ काँबा के द्वार का कड़ा पकड़ कर दुआ (प्रार्थना) की और कहा: हे अल्लाह! अपने घर और इस के सेवकों की रक्षा कर। दूसरे दिन अब्रहा ने मक्का में प्रवेश का प्रयास किया परन्तु उस का अपना हाथी बैठ गया और आँकुस पड़ने पर भी नहीं हिला। और दूसरी दशा में फेरा जाता तो दौड़ने लगता था। इतने में पक्षियों का एक झुंड चोंचों और पंजों में कंकरियाँ लिये हुये आया और इस सेना पर कंकरियों की वर्षा कर दी, जिन से उन का शरीर गलने लगा, और अब्रहा सहित उस की सेना का विनाश कर दिया गया।

- आयत 2 में बताया गया है कि कैसे उस की चाल असफल हो गई।
- आयत 3,4 में अल्लाह के अपने घर की रक्षा करने और आयत 5 में आक्रमणकारियों के बुरे अन्त की चर्चा है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क्या तुम नहीं जानते कि तेरे पालनहार ने हाथी वालों के साथ क्या किया?
2. क्या उस ने उन की चाल को विफल नहीं कर दिया?
3. और उन पर पंक्षियों के दल भेजे?
4. जो उन पर पकी कंकरी के पत्थर फेंक रहे थे।
5. तो उन को ऐसा कर दिया जैसे खाने का भूसा।^[1]

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ۝

أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ۝

وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ۝

تَرْمِيهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّن سِجِّيلٍ ۝

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ ۝

- 1 (1-5) इस सूरह का लक्ष्य यह बताना है कि कौबा को आक्रमण से बचाने के लिये तुम्हारे देवी देवता कुछ काम न आये। कुरैश के प्रमुखों ने अल्लाह ही से दुआ की थी और उन पर इस का इतना प्रभाव पड़ा था कि कई वर्षों तक साधारण नागरिकों तक ने भी अल्लाह के सिवा किसी की पूजा नहीं की थी। यह बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश से कुछ पहले की थी और वहाँ बहुत सारे लोग अभी जीवित थे जिन्होंने यह चित्र अपने नेत्रों से देखा था। अतः उन से यह कहा जा रहा है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो आमंत्रण दे रहे हैं वह यही तो है कि अल्लाह के सिवाय किसी की पूजा न की जाये, और इस को दबाने का परिणाम वही हो सकता है जो हाथी वालों का हुआ। (इब्ने कसीर)

सूरह कुरैश^[1] - 106



सूरह कुरैश के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 4 आयतें हैं।

- इस में मक्का के कबीले ((कुरैश)) की चर्चा के कारण इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक में मक्का के वासी कुरैश के अपनी व्यापारिक यात्रा से प्रेम रखने के कारण जो यात्रा वह निर्भय और शान्त रह कर किया करते थे क्योंकि काँबा के निवासी थे उन से कहा जा रहा है कि वह केवल इस घर के स्वामी अल्लाह ही की वंदना (उपासना) करें।
- आयत 4 में इस का कारण बताया गया है कि यह जीविका और शान्ति जो तुम्हें प्राप्त है वह अल्लाह ही का प्रदान है। इस लिये तुम्हें उस का आभारी होना चाहिये और मात्र उसी की इबादत (वंदना) करनी चाहिये।

1 इस सूरह के अर्थ को समझने के लिये यह जानना जरूरी है कि कुरैश जाति नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पूर्वज कुसई पुत्र किलाब के युग में "हिजाज़" में फैली हुई थी। उन्होंने सब को मक्का में एकत्र किया और अपनी सुनिती से एक राज्य की स्थापना की। और हाजियों की सेवा की ऐसी व्यवस्था की कि पूरी अरब जातियों और क्षेत्रों में उन का अच्छा प्रभाव पड़ा। कुसई के बाद उन के चार पुत्रों में राज्य पद विभाजित हो गये। परन्तु उन में अब्द मनाफ़ का नाम अधिक प्रसिद्ध हुआ। और उन के चार पुत्रों में से नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दादा अब्दुल मुत्तलिब के पिता हाशिम ने सब से पहले यह सोचा कि: अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भाग लिया जाये, जिस के कारण कुरैश का संबंध अनेक देशों और सभ्यताओं से हो गया। मक्का अरब द्वीप का व्यापारिक केंद्र बन गया। और अब्रहा की पराजय ने कुरैश की मान मर्यादा और अधिक कर दी। इसलिये सूरह के चार वाक्यों में कुरैश से मात्र इतना ही कहा गया है कि जब तुम इस घर (काँबा) को मूर्तियों का नहीं अल्लाह का घर मानते हो कि वह अल्लाह ही है जिस ने इस घर के कारण शांति प्रदान की और तुम्हारे व्यापार को यह उन्नती दी, तथा तुम्हें भुखमरी से बचाया तो तुम्हें भी मात्र उसी की पूजा उपासना करनी चाहिये।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. कुरैश के स्वभाव बनाने के कारण।
2. उन के जाड़े तथा गर्मी की यात्रा का स्वभाव बनाने के कारण।^[1]
3. उन्हें चाहिये कि इस घर (काँबा) के प्रभु की पूजा करें।^[2]
4. जिस नें उन्हें भूख में खिलाया तथा डर से निडर कर दिया।

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

الْقَوْمِ بِرِحْلَةِ الشَّاءِ وَالصَّيْفِ

فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَذَا الْبَيْتِ

الَّذِي أَطْعَمَهُمْ مِنْ جُوعٍ وَآمَنَهُمْ مِنْ خَوْفٍ

- 1 (1-2) गर्मी और जाड़े की यात्रा से अभिप्राय गर्मी के समय कुरैश की व्यापारिक यात्रा है जो शाम और फ़लस्तीन की ओर होती थी। और जाड़े के समय वे दक्षिण अरब की यात्रा करते थे जो गर्म क्षेत्र है।
- 2 इस घर से अभिप्राय: काँबा है। अर्थ यह है कि यह सुविधा उन्हें इसी घर के कारण प्राप्त हुई। और वह स्वयं यह मानते हैं कि 360 मूर्तियाँ उन की रब नहीं हैं जिन की पूजा कर रहे हैं। उन का रब (पालनहार) वही है जिस ने उन को अब्रहा के आक्रमण से बचाया। और उस युग में जब अरब की प्रत्येक दिशा में अशान्ति का राज्य था मात्र इसी घर के कारण इस नगर में शान्ति है। और तुम इसी घर के निवासी होने के कारण निश्चिन्त हो कर व्यापारिक यात्रायें कर रहे हो, और सुख सुविधा के साथ रहते हो। क्योंकि काबे के प्रबन्धक और सेवक होने के कारण ही लोग कुरैश का आदर करते थे। तो उन्हें स्मरण कराया जा रहा है कि फिर तुम्हारा कर्तव्य है कि केवल उसी की उपासना करो।

सूरह माऊन^[1] - 107



सूरह माऊन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 7 आयतें हैं।

- इस सूरह की अन्तिम आयत में ((माऊन)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। जिस का अर्थ है लोगों को देने की साधारण आवश्यकता की चीजें।^[1]
- आयत 1 में उस के आचरण पर विचार करने के लिये कहा गया है जो प्रलय के दिन के प्रतिफल को नहीं मानता।
- आयत 2,3 में यह बताया गया है कि ऐसा ही व्यक्ति समाज के अनाथों तथा निर्धनों की कोई सहायता नहीं करता। और उन के साथ बुरा व्यवहार करता है।
- आयत 4 से 6 तक में उन की निन्दा की गई है जो नमाज़ पढ़ने में आलसी होते हैं। और दिखावे के लिये नमाज़ पढ़ते हैं।
- और आयत 7 में उन की कंजूसी पर पकड़ की गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी) क्या तुम ने उसे देखा जो प्रतिकार (बदले) के दिन को झुठलाता है?
2. यही वह है जो अनाथ (यतीम) को धक्का देता है।
3. और गरीब के लिये भोजन देने पर नहीं उभारता।^[2]

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالْآيَاتِ ۚ

فَذَلِكَ الَّذِي يَدُعُّ الْيَتِيمَ ۚ

وَلَا يَحْضُرْ عَلَى طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۚ

- 1 इस सूरह का विषय यह बताना है कि परलोक पर ईमान न रखना किस प्रकार का आचरण और स्वभाव पैदा करता है।
- 2 (2-3) इन आयतों में उन काफिरों (अधर्मियों) की दशा बताई गई है जो

4. विनाश है उन नमाज़ियों के लिये^[1]
5. जो अपनी नमाज़ से अचेत हैं।
6. और जो दिखावे (आडंबर) के लिये करते हैं।
7. तथा माअन (प्रयोग में आने वाली मामूली चीज़) भी माँगने से नहीं देते^[2]

قَوْلِ الْمُصَلِّينَ

الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ

الَّذِينَ هُمْ يُرَآؤُونَ

وَيَسْأَلُونَ الْمَاعُونَ

परलोक का इन्कार करते हैं।

- 1 इन आयतों में उन मुनाफ़िकों (द्वय वादियों) की दशा का वर्णन किया गया है जो ऊपर से मुसलमान हैं परन्तु उन के दिलों में परलोक और प्रतिकार का विश्वास नहीं है।

इन दोनों प्रकारों के आचरण और स्वभाव को बयान करने से अभिप्राय यह बताना है कि: इन्सान में सदाचार की भावना परलोक पर विश्वास के बिना उत्पन्न नहीं हो सकती। और इस्लाम प्रलोक का सहीह विश्वास दे कर इन्सानों में अनाथों और गरीबों की सहायता की भावना पैदा करता है और उसे उदार तथा परोपकारी बनाता है।

- 2 आयत नं० 7 में मामूली चीज़ के लिये (माअन) शब्द का प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ है साधारण माँगने के सामान: जैसे पानी, आग, नमक, डोल आदि। और आयत का अभिप्राय यह है कि: आख़िरत का इन्कार किसी व्यक्ति को इतना तंग दिल बना देता है कि: वह साधारण उपकार के लिये भी तैयार नहीं होता।

सूरह कौसर^[1] - 108



सूरह कौसर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 3 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में "कौसर" शब्द आया है जिस का अर्थ है: बहुत सी भलाईयाँ। और जन्नत के अन्दर एक नहर का नाम भी है। इस लिये इस का नाम "सूरह कौसर" है।^[1]
- इस की आयत 1 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बहुत सी भलाईयाँ प्रदान किये जाने की शुभ सूचना दी गई है।
- और आयत 2 में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इस प्रदान पर नमाज़ पढ़ते रहने तथा कुर्बानी करने का आदेश दिया गया है।
- आयत 3 में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिलासा दी गई है कि जो आप के शत्रु हैं वह आप का कुछ बिगाड़ नहीं सकेंगे बल्कि वह स्वयं बहुत बड़ी भलाई से वंचित रह जायेंगे।
- हदीस में है कि आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा कि कौसर एक नहर है जो तुम्हारे नबी को प्रदान की गई है। जिस के दोनों किनारे मोती के और बर्तन आकाश के तारों की संख्या के समान हैं। (सहीह बुखारी: 4965)

- 1 यह सूरह मक्का में उस समय उतरी जब मक्का वासियों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इसलिये अपनी जाति से अलग कर दिया कि आप ने उन की मूर्तिपूजा की परम्परा का खण्डन किया। और नबी होने से पहले आप की जो जाति में मान मर्यादा थी वह नहीं रह गई। आप अपने थोड़े से साथियों के साथ निस्सहाय हो कर रह गये थे। इसी बीच आप के एक पुत्र का निधन हो गया था जिस पर मूर्ति पूजकों ने खुशियाँ मनाईं। और कहा कि मुहम्मद के कोई पुत्र नहीं। वह निर्मूल हो गया और उस के निधन के बाद उस का कोई नाम लेवा नहीं रह जायेगा। ऐसे हृदय विदारक क्षणों में आप को यह शुभ सूचना दी गई कि आप निराश न हों आप के शत्रु ही निर्मूल होंगे। यह शुभ सूचना और भविष्य वाणी कुर्आन ने उस समय दी जब कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि ऐसा हो जाना संभव है। परन्तु कुछ ही वर्षों बाद ऐसा परिवर्तन हुआ कि मक्का के अनेकेश्वर वादियों का कोई सहायक नहीं रह गया। और उन्हें विवश हो कर हथियार डाल देने पड़े। और फिर आप के शत्रुओं का कोई नाम लेवा नहीं रह गया। इस के विपरीत आज भी करोड़ों मुसलमान आप से संबंध पर गर्व करते हैं, और आप पर दरूद भेजते हैं।

- और इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने कहा कि कौसर वह भलाईयाँ हैं जो अल्लाह ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को प्रदान की हैं। (सहीह बुख़ारी: 4966)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) हम ने तुम को कौसर प्रदान किया है।^[1]
2. तो तुम अपने पालनहार के लिये नमाज़ पढ़ो तथा बलि दो।^[2]
3. निःसंदेह तुम्हारा शत्रु ही बे नाम निशान है।^[3]

إِنَّا أَنْعَمْنَا عَلَى الْكَوْثَرِ

فَصَلِّ لِرَبِّكِ وَأَنْصُرِي

إِنْ شَأْنُكَ هُوَ الْبَرُّ

- 1 कौसर का अर्थ है: असीम तथा अपार शुभ। और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि कौसर एक हौज़ (जलाशय) है जो मुझे परलोक में प्रदान किया जायेगा। जब प्रत्येक व्यक्ति प्यास प्यास कर रहा होगा और आप की उम्मत आप के पास आयेगी, आप पहले ही से वहाँ उपस्थित होंगे और आप उन्हें उस से पिलायेंगे जिस का जल दूध से उजला और मधु से अधिक मधुर होगा। उस की भूमी कस्तूरी होगी, उस की सीमा और बर्तनों का सविस्तार वर्णन हदीसों में आया है।
- 2 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आप के माध्यम से सभी मुसलमानों से कहा जा रहा है कि जब शुभ तुम्हारे पालनहार ही ने प्रदान किये हैं तो तुम भी मात्र उसी की पूजा करो और बली भी उसी के लिये दो। मूर्ति पूजकों की भाँति देवी देवताओं की पूजा अर्चना न करो और न उन के लिये बलि दो। वह तुम्हें कोई शुभ लाभ और हानि देने का सामर्थ्य नहीं रखते।
- 3 आयत नं० 3 में "अबतर": का शब्द प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ है: जड़ से अलग कर देना जिस के बाद कोई पेड़ सूख जाता है। और इस शब्द का प्रयोग उस के लिये भी किया जाता है जो अपनी जाति से अलग हो जाये, या जिस का कोई पुत्र जीवित न रह जाये, और उस के निधन के बाद उस का कोई नाम लेवा न हो। इस आयत में जो भविष्य वाणी की गई है वह सत्य सिद्ध हो कर पूरे मानव संसार को इस्लाम और कुर्आन पर विचार करने के लिये बाध्य कर रही है। (इब्ने कसीर)

सूरह काफिरून^[1]- 109



सूरह काफिरून के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 6 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में ((काफिरून)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- आयत 1 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को निर्देश दिया गया है कि काफिरों से कह दें कि वंदना (उपासना) के विषय में मुझ में और तुम में क्या अन्तर है?
- आयत 4 से 5 तक में यह ऐलान है कि दीन (धर्म) के विषय में कोई समझौता और उदारता असंभव है।
- आयत 6 में काफिरों के धर्म से अप्रसन्न (विमुख) होने का ऐलान है।
- हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने तवाफ की दो रक्त्त में यह सूरह और सूरह इक्लास पढ़ी थी। (सहीह मुस्लिम: 1218)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी) कह दो: हे काफिरो!
2. मैं उन (मूर्तियों) को नहीं पूजता जिन्हें

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ۝

لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ۝

1 यह सूरह भी मक्की है। इस सूरह की भूमिका यह है कि मक्का में यद्यपि इस्लाम का कड़ा विरोध हो रहा था फिर भी अभी मूर्ति पूजक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निराश नहीं हुये थे। और उन के प्रमुख किसी न किसी प्रकार आप को संधि के लिये तैयार कर रहे थे। और आप के पास समय समय से अनेक प्रस्ताव लेकर आया करते थे। अन्त में यह प्रस्ताव लेकर आये कि: एक वर्ष आप हमारे पूजितों (लात, उज्जा आदि) की पूजा करें, और एक वर्ष हम आप के पूज्य की पूजा करें। और इसी पर संधि हो जाये। उसी समय यह सूरह अवतीर्ण हुई, और सदा के लिये बता दिया गया कि दीन में कोई समझौता नहीं हो सकता है। इसीलिये हदीस में इसे शिर्क से रक्षा की सूरह कहा गया है।

- | | |
|--|--|
| तुम पूजते हो। | |
| 3. और न तुम उसे पूजते हो जिसे मैं पूजता हूँ | وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا عُبِدُ ۗ |
| 4. और न मैं उसे पूजूँगा जिसे तुम पूजते हो। | وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُمْ ۗ |
| 5. और न तुम उसे पूजोगे जिसे मैं पूजता हूँ | وَلَا أَنْتُمْ عَابِدُونَ مَا عُبِدُ ۗ |
| 6. तुम्हारे लिये तुम्हारा धर्म, तथा मेरे लिये मेरा धर्म है। ^[1] | لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ۙ |

1 (1-6) पूरी सूरह का भावार्थ यह है कि इस्लाम में वही ईमान (विश्वास) मान्य है जो पूर्ण तौहीद (एकेश्वरवाद) के साथ हो, अर्थात् अल्लाह के अस्तित्व तथा गुणों और उस के अधिकारों में किसी को साझी न बनाया जाये। कुर्आन की शिक्षानुसार जो अल्लाह को नहीं मानता, और जो मानता है परन्तु उस के साथ देवी देवताओं को भी मानता है तो दोनों में कोई अन्तर नहीं। उस के विशेष गुणों को किसी अन्य में मानना उस को न मानने के ही बराबर है और दोनों ही काफिर हैं। (देखिये: उम्मुल किताब, मौलाना आज़ाद)

सूरह नस्र^[1] - 110



सूरह नस्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 3 आयतें हैं।

- इस सूरह में ((नस्र)) शब्द आने के कारण, जिस का अर्थ सहायता है, इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 में अल्लाह की सहायता आने तथा मक्का की विजय की चर्चा है।
- आयत 2 में लोगों के समूहों में इस्लाम लाने की चर्चा है।
- आयत 3 में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अल्लाह का यह प्रदान प्राप्त होने पर उस की और अधिक प्रशंसा तथा पवित्रता गान का निर्देश दिया गया है।
- हदीस में है कि इस सूरह के उतरने के पश्चात् आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपनी नमाज़ (के रुकूअ और सज्दे) में अधिकतर ((सुब्हानका रब्बना व बिहम्दिका अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली)) पढ़ा करते थे। (सहीह बुख़ारी: 4967, 4968)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) जब अल्लाह की सहायता
एवं विजय आ जाये।

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحِ

- 1 अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि यह कुर्आन की अन्तिम सूरह है जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतरी। इस सूरह में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भविष्य वाणी के रूप में बताया गया है कि जब इस्लाम की पूर्ण विजय हो जाये, और लोग समूहों के साथ इस्लाम में प्रवेश करने लगें तो आप अल्लाह की हम्द (प्रशंसा) और तस्बीह (पवित्रता का वर्णन) करने में लग जायें और उस से क्षमा माँगते रहें।

2. और तुम लोगों को अल्लाह के धर्म में दल कें दल प्रवेश करते देख लो।^[1]
3. तो अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करो। और उस से क्षमा माँगो, निःसंदेह वह बड़ा क्षमी है।^[2]

وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ۝

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْ لَهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ۝

- 1 (1-2) इस में विजय का अर्थ वह निर्णायक विजय है जिस के बाद कोई शक्ति इस्लाम का सामना करने के योग्य नहीं रह जायेगी। और यह स्थिति सन् 8 (हिजरी) की है जब मक्का विजय हो गया। अरब के कोने कोने से प्रतिनिधि मंडल रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सेवा में उपस्थित हो कर इस्लाम लाने लगे। और सन् 10 (हिजरी) में जब आप (हज्जतुल वदाअ) (अर्थात: अन्तिम हज्ज) के लिये गये तो उस समय पूरा अरब इस्लाम के आधीन आ चुका था और देश में कोई मुशिरक (मूर्ति पूजक) नहीं रह गया था।
- 2 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से कहा गया है कि इतना बड़ा काम आप ने अल्लाह की दया से पूरा किया है, इस के लिये उस की प्रशंसा और पवित्रता का वर्णन तथा उस की कृतज्ञता व्यक्त करें। इस में सभी के लिये यह शिक्षा है कि कोई पुण्य कार्य अल्लाह की दया के बिना नहीं होता। इसलिये उस पर घमंड नहीं करना चाहिये।

सूरह तब्वत^[1]- 111



सूरह तब्वत के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं।

- इस की आयत 1 में (तब्वत) शब्द आने के कारण इस का नाम (सूरह तब्वत) है। जिस का अर्थ तबाह होना है।^[1]
- आयत 1 से 3 तक में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के शत्रु अबू लहब के बुरे परिणाम से सूचित किया गया है।
- आयत 4 और 5 में उस की पत्नी के शिक्षाप्रद परिणाम का दृश्य दिखाया गया है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से बैर रखने में अपने पति के साथ थी।
- हदीस में है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आदेश दिया गया कि आप अपने समीप के परिजनों को डरायें तो आप ने सफ़ा (पर्वत) पर चढ़ कर पुकारा। और जब सब आ गये, तो कहा: यदि मैं तुम से कहूँ कि इस पर्वत के पीछे एक सेना है जो तुम पर सवेरे या संध्या को धावा बोल देगी तो तुम मानोगे? सब ने कहा: हाँ। हम ने कभी आप को झूठ बोलते नहीं देखा। आप ने कहा: मैं तुम्हें अपने सामने की दुःखदायी

1 यह सूरह आरंभिक मक्की सूरतों में से है। इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को यह आदेश दिया गया कि आप समीप वर्ती संबंधियों को अल्लाह से डरायें, तो आप सफ़ा "पहाड़ी" पर गये, और पुकारा: "हाय भोर की आपदा!" यह सुन कर कुरैश के सभी परिवार जन एकत्र हो गये। तब आप ने कहा: यदि मैं तुम से कहूँ कि इस पर्वत के पीछे एक सेना है जो तुम पर आक्रमण करने को तैयार है तो तुम मेरी बात मानोगे? सब ने कहा: हाँ। हम ने कभी आप से झूठ नहीं आजमाया। आप ने फ़रमाया: मैं तुम्हें आग (नर्क) की बड़ी यातना से सावधान करता हूँ। इस पर किसी के कुछ बोलने से पहले आप के चचा "अबु लहब" ने कहा: तुम्हारा सत्यानास हो! क्या हमें इसी लिये एकत्र किया है?

और एक रिवायत यह भी है कि उस ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मारने के लिये पत्थर उठाया, इसी पर यह सूरह उतारी गई। (देखिये: सहीह बुखारी: 4971, और सहीह मुस्लिम: 208)

यातना से डरा रहा हूँ। इस पर अबू जहल ने कहा: तुम्हारा नाश हो! क्या इसी लिये हम को एकत्र किया है? इसी पर यह सूरह अवतरित हुई। (सहीह बुख़ारी: 4971)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अबु लहब के दोनों हाथ नाश हो गये,
और वह स्वयं भी नाश हो गया।^[1]
2. उस का धन तथा जो उस ने कमाया
उस के काम नहीं आया।
3. वह शीघ्र लावा फेंकती आग में
जायेगा।^[2]
4. तथा उस की पत्नी भी, जो ईंधन

تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ۝

مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ ۝

سَيَصِلُ نَارًا إِذْ أَتَاتْ لَهَبٍ ۝

وَأَمْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝

- 1 अबु लहब का अर्थ: ज्वाला मुखी है। वह अति सुंदर और गोरा था। उस का नाम वास्तव में "अब्दुल उज़्ज़ा" था, अर्थात: उज़्ज़ा का भक्त और दास। "उज़्ज़ा" उन की एक देवी का नाम था। परन्तु वह अबु लहब के नाम से जाना जाता था। इसलिये कुर्आन ने उस का यही नाम प्रयोग किया है और इस में उस के नर्क की ज्वाला में पड़ने का संकेत भी है।
- 2 (1-2) यह आयतें उस की इस्लाम को दवाने की योजना के विफल हो जाने की भविष्यवाणी हैं। और संसार ने देखा कि अभी इन आयतों के उतरे कुछ वर्ष ही हुये थे कि "बद्र" की लड़ाई में मक्के के बड़े बड़े वीर प्रमुख मारे गये। और "अबु लहब" को इस ख़बर से इतना दुःख हुआ कि इस के सातवें दिन मर गया। और मरा भी ऐसे कि उसे मलगिनानत पुसतुले (प्लेग जैसा कोई रोग) की बीमारी लग गई। और छूत के भय से उसे अलग फेंक दिया गया। कोई उस के पास नहीं जाता था। मृत्यु के बाद भी तीन दिन तक उस का शव पड़ा रहा। और जब उस में गंध होने लगी तो उसे दूर से लकड़ी से एक गढ़े में डाल दिया गया। और ऊपर से मिट्टी और पत्थर डाल दिये गये। और कुर्आन की यह भविष्यवाणी पूरी हुई। और जैसा कि आयत नं० 2 में कहा गया उस का धन और उस की कमाई उस के कुछ काम नहीं आई। उस की कमाई से उद्देश्य अधिकतर भाष्यकारों ने "उस की संतान" लिया है। जैसा कि सहीह हदीसों में आया है कि तुम्हारी संतान तुम्हारी उत्तम कमाई है।

लिये फिरती है।

5. उस की गर्दन में मूँज की रस्सी होगी^[1]

فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسِيٍّ ۝

1 (1-5) अबु लहब की पत्नी का नाम "अरवा" था। और उस की उपाधि (कुनियत) "उम्मे जमील" थी। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की शत्रुता में किसी प्रकार कम न थी।

लकड़ी लादने का अर्थ भाष्य कारों ने अनेक किया है। परन्तु इस का अर्थ उस को अपमानित करना है। या पापों का बोझ लाद रखने के अर्थ में है।

वह सोने का हार पहनती थी और "लात" तथा "उज्ज़ा" की शपथ ले कर -यह दोनों उन की देवियों के नाम हैं- कहा करती थी कि मुहम्मद के विरोध में यह मूल्यवान हार भी बेच कर खर्च कर दूँगी। अतः यह कहा गया है कि आज तो वह एक धन्यवान व्यक्ति की पत्नी है। उस के गले में बहुमूल्य हार पड़ा हुआ है परन्तु आखिरत में वह ईंधन ढोने वाली लौंडी की तरह होगी। गले में आभूषण के बदले बटी हुई मूँज की रस्सी पड़ी होगी। जैसी रस्सी ईंधन ढोने वाली लौंडियों के गले में पड़ी होती है। और इस्लाम का यह चमत्कार ही तो है कि जिस "अबु लहब" और उस की पत्नी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शत्रुता की उन्हीं की औलाद: "उत्बा", "मुअत्तब", तथा "दुरह" ने इस्लाम स्वीकार कर लिया।

सूरह इक्लास^[1] - 112



सूरह इक्लास के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 4 आयतें हैं।

- इक्लास का अर्थ है अल्लाह की शुद्ध इबादत (वंदना) करना। इसी का दूसरा नाम तौहीद (अद्वैत) है, इस सूरह में तौहीद का वर्णन है, इसी लिये इस का यह नाम है।^[1]

1 यह सूरह मक्की सूरतों में से है।

यद्यपि इस के उतरने से संबंधित रिवायत से लगता है कि यह सूरह मदीने में उस समय उतरी जब मदीने के यहूदियों ने आप से प्रश्न किया कि बताइये कि वह पालनहार कैसा है जिस ने आप को भेजा है? या यह कि "नजरान" के ईसाईयों ने इसी प्रकार का प्रश्न किया कि वह कैसा है, और किस धातु का बना हुआ है? तो यह सूरह उतरी। परन्तु सब से पहले यह प्रश्न स्वयं मक्का वासियों ने ही किया था। इसलिये इसे मक्का में उतरने वाली आरम्भिक सूरतों में गणना किया जाता है।

इस का नाम "सूरह इक्लास" है। इक्लास का अर्थ है: अल्लाह पर ऐसे ईमान लाना कि उस के अस्तित्व और गुणों में किसी की साझेदारी की कोई आभा (झलक) न पाई जाये। और इसी को तौहीदे खालिस (निर्मल ऐकेश्वरवाद) कहते हैं।

जहाँ तक अल्लाह को मानने की बात है तो संसार ने सदा उस को माना है परन्तु वास्तव में इस मानने में ऐसा मिश्रण भी किया है कि मानना और न मानना दोनों बराबर हो कर रह गये हैं। तौहीद को उजागर करने के लिये अल्लाह ने बराबर नबी भेजे परन्तु इन्सान बार बार इस तथ्य को खोता रहा। आदरणीय इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने तौहीद (ऐकेश्वरवाद) के लिये प्रस्थान किया, और अपने परिवार को एक बंजर वादी में बसाया कि वह मात्र एक अल्लाह की पूजा करेंगे। परन्तु उन्हीं के वंशज ने उन के बनाये तौहीद के केन्द्र अल्लाह के घर काँबा को एक देव स्थल में बदल दिया। तथा अपने बनाये हुये देवताओं का अधिकार माने बिना अल्लाह के अधिकार को स्वीकार करने के लिये तैयार न थे। यह स्थिति मात्र मक्का वासियों की न थी, ईसाई और यहूदी भी यद्यपि तौहीद के दावेदार थे फिर भी उन के यहाँ तीन पूज्यों: पिता, पुत्र और पविगात्मा के योग से तौहीद बनी थी। यहूदियों के यहाँ भी अल्लाह का पुत्र: उजैर अवश्य था। कहीं पूज्य एक तो था परन्तु बहुत से देवी देवता भी उस के साथ पूज्य थे। (देखिये: उम्मुल किताब)

- इस की आयत 1,2 में अल्लाह के सकारात्मक गुणों को और आयत 3,4 में नकारात्मक गुणों को बताया गया है ताकि धर्मों और जातियों में जिस राह से शिर्क आया है उसे रोका जा सके। हदीस में है कि अल्लाह ने कहा कि मनुष्य ने मुझे झुठला दिया। और यह उस के लिये योग्य नहीं था। ओर मुझे गाली दी, और यह उस के लिये योग्य नहीं था। उस का मुझे झुठलाना उस का यह कहना है कि अल्लाह ने जैसे मुझे प्रथम बार पैदा किया है दोबारा नहीं पैदा कर सकेगा। जब कि प्रथम बार पैदा करना मेरे लिये दोबारा पैदा करने से सरल नहीं था। और उस का मुझे गाली देना यह है कि उस ने कहा कि अल्लाह के संतान हैं। जब कि मैं अकेला निर्पेक्ष हूँ। न मेरी कोई संतान है और न मैं किसी की संतान हूँ। और न कोई मेरा समकक्ष है। (सहीह बुखारी- 4974)
- सहीह हदीस में है कि यह सूरह तिहाई कुरआन के बराबर है। (सहीह बुखारी: 5015, सहीह मुस्लिम: 811)
- एक दूसरी हदीस में है कि एक व्यक्ति ने कहा कि, हे अल्लाह के रसूल! मैं इस सूरह से प्रेम करता हूँ। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: तुम्हें इस का प्रेम स्वर्ग में प्रवेश करा देगा। (सहीह बुखारी: 774)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे ईश दूत!) कह दो: अल्लाह अकेला है।^[1]

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ

1 आयत नं० 1 में "अहद" शब्द का प्रयोग हुआ है जिस का अर्थ है: उस के अस्तित्व एवं गुणों में कोई साझी नहीं है। यहाँ "अहद" शब्द का प्रयोग यह बताने के लिये किया गया है कि वह अकेला है। वह वृक्ष के समान एक नहीं है जिस के अनेक शाखायें होती हैं।

आयत नं० 2 में "समद" शब्द का प्रयोग हुआ है जिस का अर्थ है: अब्रण होना। अर्थात् जिस में कोई छिद्र न हो जिस से कुछ निकले, या वह किसी से निकले। और आयत नं० 3 इसी अर्थ की व्याख्या करती है कि न उस की कोई संतान है और न वह किसी की संतान है।

2. अल्लाह निश्चिद्र है।
3. न उस की कोई संतान है, और न वह किसी की संतान है।
4. और न उस के बराबर कोई है।^[1]

اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝

لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُولَدْ ۝

وَلَمْ يَكُنْ لَهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

1 इस आयत में यह बताया गया है कि उस की प्रतिमा तथा उस के बराबर और सम्तुल्य कोई नहीं है। उस के कर्म, गुण, और अधिकार में कोई किसी रूप में बराबर नहीं। न उस की कोई जाति है न परिवार।

इन आयतों में कुर्आन उन विषयों को जो जातियों के तौहीद से फिसलने का कारण बने उसे अनेक रूप में वर्णित करता है। और देवियों और देवताओं के विवाहों और उन के पुत्र और पौत्रों का जो विवरण देव मालावों में मिलता है कुर्आन ने उसी का खण्डन किया है।

सूरह फ़लक़^[1] - 113



सूरह फ़लक़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में ((फ़लक़)) शब्द आने के कारण, जिस का अर्थ भोर है, इस का यह नाम रखा गया है।^[1]

1 सूरह "फ़लक़" और सूरह "नास" को मिला कर "मुअव्वज़तैन" कहा जाता है। जब यह दोनों सूरतें उतरीं तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: आज की रात्री में मुझ पर कुछ ऐसी आयतें उतरी हैं जिन के समान मैं ने कभी नहीं देखी। (मुस्लिम: 814)

इसी प्रकार इब्ने अबिस जुहनी (रजियल्लाहु अन्हु) से आप ने फ़रमाया कि: मैं तुम्हें उत्तम यंत्र न बताऊँ जिस के द्वारा शरण (पनाह) माँगी जाती है? और आप ने यह दोनों सूरतें बतायीं, और कहा कि यह "मुअव्वज़तैन" अर्थात् शरण माँगने के लिये दो सूरतें हैं। (देखिये: सहीह नसई: 5020)

जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर जादू किया गया जिस का प्रभाव यह हुआ कि आप घुलते जा रहे थे, किसी काम को सोचते कि कर लिया है, और किया नहीं होता था, किसी वस्तु को देखा है जब कि देखा नहीं होता था। परन्तु जादू का यह प्रभाव आप के व्यक्तिगत जीवन तक ही सीमित था।

एक दिन नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपनी पत्नी "आइशा" (रजियल्लाहु अन्हा) के पास थे कि सो गये, और जागे तो उन को बताया की दो व्यक्ति (फ़रिश्ते) मेरे पास आये, एक सिराहने की ओर था, और दूसरा पैताने की ओर। एक ने पूछा: इन्हें क्या हुआ है? दूसरे ने उत्तर दिया: इन पर जादू हुआ है। उस ने पूछा: किस ने किया है? उत्तर दिया: "लबीद बिन आसम" ने। पूछा: किस वस्तु में किया है? उत्तर दिया: कंधी, बाल और नर खजूर के खोशे में। पूछा: वह कहाँ है? उत्तर दिया: बनी जुरैक के कुवें की तह में पत्थर के नीचे है। इस के बाद आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अली, अम्मार और जुबैर (रजियल्लाहु अन्हुम) को भेजा, फिर आप भी वहाँ आ गये, पानी निकाला गया, फिर जादू जिस में कंधी के दाँतों और बालों के साथ एक ताँत में ग्यारह गाँठ लगी हुई थी। और मोम का एक पुतला था जिस में सुईयाँ चुभोई हुई थीं। आदर्णीय जिब्रील (अलैहिस्सलाम) ने आ कर बताया कि: आप "मुअव्वज़तैन" पढ़ें। और जैसे जैसे आप पढ़ते जा रहे थे उसी के साथ एक एक गाँठ खुलती और पुतले से एक एक सुई निकलती जा रही थी, और अन्त के साथ ही आप जादू से इस प्रकार निकल गये जैसे कोई बंधा हुआ खुल जाता है। (देखिये: सहीह

- इस की आयत 1 में यह शिक्षा दी गई है कि शरण उस से माँगो जिस के पालनहार होने की निशानी तुम रात दिन देख रहे हो।
- आयत 2 से 5 तक में यह बताया गया है कि किन चीज़ों की बुराई से शरण माँगनी चाहिये।
- हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा कि इस रात मुझ पर कुछ ऐसी आयतें अवतरित हुई हैं जिन के समान आयतें कभी नहीं देखी गईं वह यह सूरह, और इस के पश्चात् की सूरह है। (सहीह मुस्लिम: 814)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) कहो कि मैं भोर के पालनहार की शरण लेता हूँ।
2. हर उस की बुराई से जिसे उस ने पैदा किया।
3. तथा रात्री की बुराई से जब उस का अंधेरा छा जाये।^[1]

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝

وَمِنْ شَرِّ مَا نَسَفَ إِذَا وَقَبَ ۝

बुखारी: 5766, तथा सहीह मुस्लिम: 2189)

फिर आप ने "लबीद" को बुला कर पछा, और उस ने अपना दोष स्वीकार कर लिया। फिर भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस को क्षमा कर दिया और फरमाया कि: अल्लाह ने मुझे स्वस्थ कर दिया है।

हदीसों से यह सिद्ध होता है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बराबर रात्री में सोते समय इन दोनों सूरतों को पढ़ कर अपने दोनों हाथों पर फूँकते फिर अपने दोनों हाथों को अपने पूरे शरीर पर फेरते थे।

मानो अल्लाह तआला ने इन अन्तिम दो सूरतों द्वारा जादू और अन्य बुराईयों से बचाव का एक साधन भी दे दिया जो सदा मुसलमानों की जादू तंत्र आदि से रक्षा करता रहेगा।

- 1 (1-3) इन में संबोधित तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को किया गया है, परन्तु आप के माध्यम से पूरे मुसलमानों के लिये संबोधन है। शरण माँगने के लिये तीन बातें ज़रूरी हैं: (1) शरण माँगना। (2) जो शरण माँगता हो। (3)

4. तथा गांठ लगा कर उन में फूँकने
वालियों की बुराई से।
5. तथा द्वेष करने वाले की बुराई से जब
वह द्वेष करे।^[1]

وَمِنْ سَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ۝

وَمِنْ سَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝

जिस के भय से शरण माँगी जाती हो। और अपने को उस से बचाने के लिये दूसरे की सुरक्षा और शरण में जाना चाहता हो। फिर शरण वही माँगता है जो यह सोचता है कि: वह स्वयं अपनी रक्षा नहीं कर सकता, और अपनी रक्षा के लिये वह ऐसे व्यक्ति या अस्तित्व की शरण लेता है जिस के बारे में उस का यह विश्वास होता है कि वह उस की रक्षा कर सकता है। अब स्वभाविक नियमानुसार इस संसार में सुरक्षा किसी वस्तु या व्यक्ति से प्राप्त की जाती है जैसे धूप से बचने के लिये पेड़ या भवन आदि की। परन्तु एक खतरा वह भी होता है जिस से रक्षा के लिये किसी अनदेखी शक्ति से शरण माँगी जाती है जो इस विश्व पर राज करती है। और वह उस की रक्षा अवश्य कर सकती है। यही दूसरे प्रकार की शरण है जो इन दोनों सूरतों में अभिप्रेत है। और कुर्आन में जहाँ भी अल्लाह की शरण लेने की चर्चा है उस का अर्थ यही विशेष प्रकार की शरण है। और यह तौहीद पर विश्वास का अंश है। ऐसे ही शरण के लिये विश्वास हीन देवी देवताओं इत्यादि को पुकारना शिर्क और घोर पाप है।

- 1 (4-5) इन दोनों आयतों में जादू और डाह की बुराई से अल्लाह की शरण में आने की शिक्षा दी गई है। और डाह ऐसा रोग है जो किसी व्यक्ति को दूसरों को हानि पहुँचाने के लिये तैयार कर देता है। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर भी जादू डाह के कारण ही किया गया था। यहाँ ज्ञातव्य है कि इस्लाम ने जादू को अधर्म कहा है जिस से इन्सान के परलोक का विनाश हो जाता है।

सूरह नास^[1]- 114



सूरह नास के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 6 आयतें हैं।

- इस में पाँच बार ((नास)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम है। जिस का अर्थ इन्सान है।^[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक शरण देने वाले के गुण बताये गये हैं।
- आयत 4 में जिस की बुराई से पनाह (शरण) माँगी गई है उस के घातक शत्रु होने से सावधान किया गया है।
- आयत 5 में बताया गया है कि वह इन्सान के दिल पर आक्रमण करता है।
- आयत 6 में सावधान किया गया है कि यह शत्रु जिन्न तथा इन्सान दोनों में होते हैं।
- हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हर रात जब बिस्तर पर जाते तो सूरह इख्लास और यह और इस के पहले की सूरह (अर्थात: फलक) पढ़ कर अपनी दोनों हथेलियाँ मिला कर उन पर फूंकते, फिर जितना हो सके दोनों को अपने शरीर पर फेरते। सिर से आरंभ करते और फिर आगे के शरीर से गुज़ारते। ऐसा आप तीन बार करते थे। (सहीह बुख़ारी: 6319, 5748)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) कहो कि मैं इन्सानों के पालनहार की शरण में आता हूँ।
2. जो सारे इन्सानों का स्वामी है।
3. जो सारे इन्सानों का पूज्य है।^[2]

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ

مَلِكِ النَّاسِ

إِلَهِ النَّاسِ

1 यह सूरह मक्का में अवतरित हुई।

2 (1-3) यहाँ अल्लाह को उस के तीन गुणों के साथ याद कर के उस की शरण

4. भ्रम डालने वाले और छुप जाने वाले (राक्षस) की बुराई से।
5. जो लोगों के दिलों में भ्रम डालता रहता है।
6. जो जिन्नों में से है, और मनुष्यों में से भी।^[1]

مِن شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝

الَّذِي يُوسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

लेने की शिक्षा दी गई है। एक उस का सब मानव जाति पालनहार और स्वामी होना। दूसरे उस का सभी इन्सानों का अधिपति और शासक होना। तीसरे उस का इन्सानों का सत्य पूज्य होना।

भावार्थ यह है कि उस अल्लाह की शरण माँगता हूँ जो इन्सानों का पालनहार शासक और पूज्य होने के कारण उन पर पूरा नियंत्रण और अधिकार रखता है। जो वास्तव में उस बुराई से इन्सानों को बचा सकता है जिस से स्वयं बचने और दूसरों को बचाने में सक्षम है उस के सिवा कोई है भी नहीं जो शरण दे सकता हो।

- 1 (4-6) आयत नं० 4 में "वस्वास" शब्द का प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ है: दिलों में ऐसी बुरी बातें डाल देना कि जिस के दिल में डाली जा रही हों उसे उस का ज्ञान भी न हो।

और इसी प्रकार आयत नं० 4 में "खन्नास" का शब्द प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ है: सुकड़ जाना, छुप जाना, पीछे हट जाना, धीरे धीरे किसी को बुराई के लिये तैयार करना आदि।

अर्थात् दिलों में भ्रम डालने वाला, और सत्य के विरुद्ध मन में बुरी भावनायें उत्पन्न करने वाला। चाहे वह जिन्नों में से हो, अथवा मनुष्यों में से हो। इन सब की बुराइयों से हम अल्लाह की शरण लेते हैं जो हमारा स्वामी और सच्चा पूज्य है।

فَهْرَسْتُ بِأَسْمَاءِ السُّورِ सूरतों की सूची

क्रमशः	सूरह का नाम	पृष्ठ नं०	السورة
1	फ़ातिहा	1	الفاتحة
2	बक़रह	5	البقرة
3	आले इमरान	92	آل عمران
4	निसा	142	النساء
5	माइदा	197	المائدة
6	अन्आम	238	الأنعام
7	आराफ़	285	الأعراف
8	अन्फ़ाल	335	الأنفال
9	तौबा	355	التوبة
10	यूनुस	391	يونس
11	हूद	415	هود
12	यूसुफ़	442	يوسف
13	रअद	467	الرعد
14	इब्राहीम	480	إبراهيم
15	हिज़्र	492	الحجر
16	नह्ल	505	النحل
17	बनी इस्राईल	532	بني إسرائيل
18	कहफ़	557	الكهف
19	मर्यम	580	مريم
20	ता-हा	596	طه
21	अम्बिया	617	الأنبياء
22	हज्ज	637	الحج
23	मुमिनून	656	المؤمنون
24	नूर	672	النور
25	फुर्कान	692	الفرقان
26	शुअरा	706	الشعراء
27	नम्ल	730	النمل

क्रमशः	सूरह का नाम	पृष्ठ नं०	السورة
28	कसस	747	القصص
29	अन्कबूत	766	العنكبوت
30	रूम	781	الروم
31	लुकमान	794	لقمان
32	सज्दा	803	السجدة
33	अहज़ाब	809	الأحزاب
34	सबा	829	سبأ
35	फातिर	843	فاطر
36	यासीन	854	يس
37	साफ़ात	866	الصفّات
38	साद	883	ص
39	जुमर	895	الزمر
40	मुमिन	912	المؤمن
41	हा मीम सज्दा	929	حم السجدة
42	शूरा	942	الشورى
43	जुख़रुफ़	956	الزخرف
44	दुख़ान	971	الدخان
45	जासियह	979	الجاثية
46	अहकाफ़	987	الأحقاف
47	मुहम्मद	998	محمد
48	फ़त्ह	1007	الفتح
49	हुजुरात	1018	الحجرات
50	काफ़	1026	ق
51	ज़ारियात	1033	الذاريات
52	तूर	1041	الطور
53	नज्म	1048	النجم
54	क़मर	1056	القمر
55	रहमान	1063	الرحمن
56	वाक़िआ	1071	الواقعة

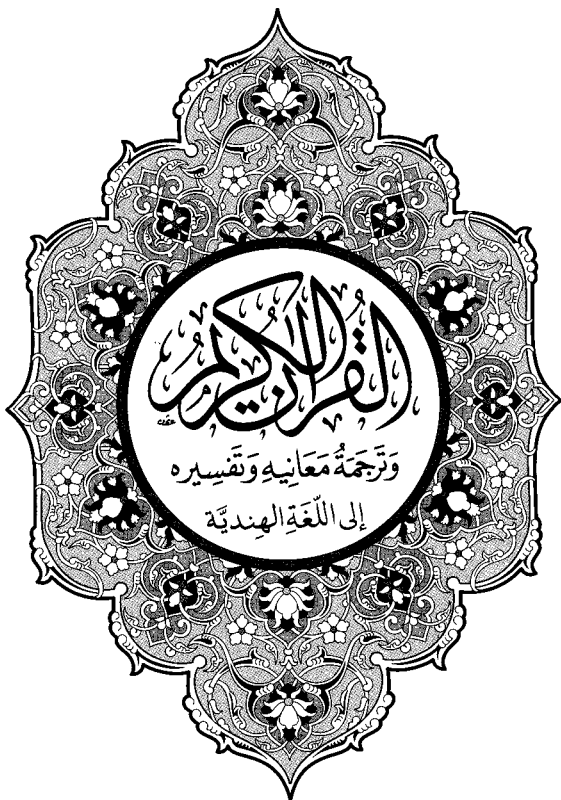
क्रमशः	सूरह का नाम	पृष्ठ नं०	السورة
57	हदीद	1079	الحديد
58	मुजादला	1088	المجادلة
59	हथ	1095	الحشر
60	मुम्तहिना	1103	المتحنة
61	सफ़	1110	الصف
62	जुमुआ	1114	الجمعة
63	मुनाफ़िक्कून	1118	المنافقون
64	तगाबुन	1122	التغابن
65	तलाक	1127	الطلاق
66	तहरीम	1132	التحريم
67	मुल्क	1137	الملك
68	कलम	1143	القلم
69	हाक्का	1150	الحاقة
70	मआरिज	1156	المعارج
71	नूह	1161	نوح
72	जिन्न	1165	الجن
73	मुज़्ज़िमिल	1170	المزمل
74	मुद्दिसिर	1174	المدثر
75	कियामा	1180	القيامة
76	दहर	1185	الدھر
77	मुसलात	1190	المرسلات
78	नबा	1195	النبا
79	नाज़िआत	1200	النازعات
80	अवस	1205	عيس
81	तक्वीर	1210	التكوير
82	इन्फ़ितार	1214	الانفطار
83	मुतफ़िफ़ीन	1217	المطففين
84	इन्शिकाक	1221	الانشقاق
85	बुरूज	1224	البروج



कुर्आन मजीद

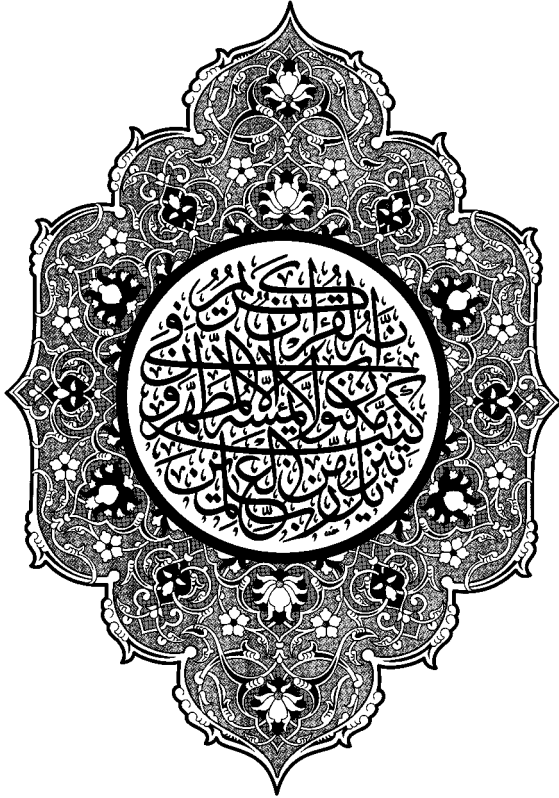
और उस के अर्थों का
हिन्दी भाषा में अनुवाद
और व्याख्या।

وَقَفَّ لِلَّهِ تَعَالَى مِنْ خَادِمِ الْحَرَمَيْنِ الشَّرِيفَيْنِ
الْمَلِكِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ آلِ سُعُودٍ
وَلَا يَجُوزُ بَعْدَهُ
يُسَوِّعُ مَجَانًا



مَجْمَعُ الْمَلِكِ وَفِيهِ طَبَايعُ الْأَصْنَافِ الشَّرِيفِيَّةِ

إِنَّا نَزَّلْنَا الْقُرْآنَ بِاللُّغَةِ الْعَرَبِيَّةِ فَذَرَاهَا حَقِيقًا



इस कुरआन मजीद और उस के अर्थों का अनुवाद तथा व्याख्या के छापने का आदेश
(सऊदी अरब के बादशाह)
हरमैन शरीफैन सेवक किंग अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अजीज़ आल सऊद ने दिया।

فَدَرَقَ الْأَمْرَ نَيْطًا سَهْوَةً هَذَا الْمُصْحَفُ التَّوْقِيفُ وَرَجْعُهُ مَعَالِيهِ
تَحْلُوفُ الْعَرَبِ وَالْمَشْرِيقِ وَالْمَغْرِبِ بِأَلْفِ بَيْتٍ فِي الْقُرْآنِ الْعَزِيزِ
مَلِكِ الْمَكْرَمِ وَالْعَرَبِ وَالْمَشْرِيقِ وَالْمَغْرِبِ

यह अनुवाद हरमैन शरीफ़ैन सेवक
किंग अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अज़ीज़ आल सऊद
की ओर से अल्लाह के वास्ते वक़फ़ है।
और उस का बेचना उचित नहीं है।
मुफ़्त में बांटा जाता है।



अनुवाद और व्याख्या मौलाना अज़ीज़ुल हक़ उमरी

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

مقدمة

بقلم معالي الشيخ: صالح بن عبدالعزيز بن محمد آل الشيخ
وزير الشؤون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد
المشرف العام على المجمع

الحمد لله رب العالمين، القائل في كتابه الكريم:
﴿... قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ﴾

والصلاة والسلام على أشرف الأنبياء والمرسلين، نبينا محمد، القائل:
«خيركم من تعلم القرآن وعلمه».

أما بعد:

فإنفاذاً لتوجيهات خدام الحرمين الشريفين، الملك عبدالله بن عبدالعزيز آل سعود، -حفظه الله-، بالعناية بكتاب الله، والعمل على تيسير نشره، وتوزيعه بين المسلمين، في مشارق الأرض ومغاربها، وتفسيره، وترجمة معانيه إلى مختلف لغات العالم.

وإيماناً من وزارة الشؤون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد بالمملكة العربية السعودية بأهمية ترجمة معاني القرآن الكريم إلى جميع لغات العالم المهمة تسهيلاً لفهمه على المسلمين الناطقين بغير العربية، وتحقيقاً للبلاغ المأمور به في قوله ﷺ: «بَلِّغُوا عَنِّي وَلَوْ آيَةً».

وخدمةً لإخواننا الناطقين باللغة الهندية يطيب لمجمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف بالمدينة المنورة أن يقدم للقارئ الكريم هذه الترجمة إلى اللغة الهندية التي أعدها الشيخ عزيز الحق عمري، وقام بالإشراف عليها

ومراجعتها من قبل المجمع الأستاذ الدكتور محمد الأعظمي، وقام بالتدقيق والمراجعة النهائية الدكتور سعيد أحمد حياة المشرفي.

ونحمد الله سبحانه وتعالى أن وفق لإنجاز هذا العمل العظيم الذي نرجو أن يكون خالصاً لوجهه الكريم، وأن ينفع به الناس.

إننا لنذكر أن ترجمة معاني القرآن الكريم - مهما بلغت دقتها - ستكون قاصرة عن أداء المعاني العظيمة التي يدل عليها النص القرآني المعجز، وأن المعاني التي تؤديها الترجمة إنما هي حصيلة ما بلغه علم المترجم في فهم كتاب الله الكريم، وأنه يعتريها ما يعتري عمل البشر كله من خطأ ونقص.

ومن ثم نرجو من كل قارئ لهذه الترجمة أن يوافي مجمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف بالمدينة النبوية بما قد يجده فيها من خطأ أو نقص أو زيادة للإفادة من الاستدراكات في الطبقات القادمة إن شاء الله.

والله الموفق، وهو الهادي إلى سواء السبيل، اللهم تقبل منا إنك أنت السميع العليم.

प्राक्कथन

लेख:- आदर्णीय शैख सलिह बिन अब्दुल अज़ीज़
बिन मुहम्मद आले शैख, इस्लामी कर्म, वक्फ
तथा दावत व इरशад मंत्री, एंव प्रधान निरीक्षक शाह फहद
कुर्आन प्रकाशन साहित्य, मदीना मुनव्वरह।

الحمد لله رب العالمين، القائل في كتابه الكريم:
﴿... قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ﴾.

والصلاة والسلام على أشرف الأنبياء والمرسلين، نبينا محمد، القائل:
«خيركم من تعلم القرآن وعلمه».

अनुवाद: सारी प्रशंसायें अल्लाह के लिये हैं जो सारे संसारों का पालनहार है। जिस का अपनी किताब में कथन है: (तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकाश तथा खुली किताब आ गई है।)

और रहमत तथा सलाम हों उस नबी पर जो सब नबियों में श्रेष्ठ और उत्तम है। अर्थात् हमारे नबी आदर्णीय मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर। जिन का कथन है: «तुम में सब से अच्छा वह व्यक्ति है जो कुर्आन सीखता और सिखाता है।»

अल्लाह की प्रशंसा और रहमत तथा सलाम के पश्चात:

हरमैन शरीफैन सेवक: शाह अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अज़ीज़ आल सऊद (अल्लाह उन की रक्षा करे) का आदेश है कि अल्लाह की पुस्तक (कुर्आन मजीद) के प्रचार, प्रसार तथा विश्व के मुसलमानों के बीच उस के वितरण तथा विभिन्न भाषाओं में उस के अनुवाद एंव व्याख्या की व्यवस्था की जाये।

हरमैन शरीफैन सेवक की आज्ञापालन करते हुये इस्लामी कर्म एंव वक्फ तथा प्रचार प्रसार मंत्रालय विश्व की सभी महत्वपूर्ण भाषाओं में कुर्आन के अर्थों के अनुवाद और व्याख्या करने का प्रयत्न कर रहा है। इन्हीं भाषाओं में हिन्दी भाषा भी है। ताकि हिन्दी भाषक कुर्आन के भावार्थ को सरलता से समझ सकें। ताकि रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के कथन: «मेरी बात लोगों तक पहुँचाओ, चाहे वह एक ही आयत क्यों न हो।» के आदेश की पूर्ति हो सके।

इसलिये हमें इस बात से अपार हर्ष हो रहा है कि हम "शाह फ़हद कुर्आन प्रकाशन साहित्य, मदीना मुनव्वरा" की ओर से पूरे कुर्आन के अर्थों का हिन्दी भाषा में अनुवाद तथा उस की संक्षेप व्याख्या प्रस्तुत कर रहे हैं।

यह अनुवाद और व्याख्या डॉक्टर प्रो० मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आजमी के संरक्षण में, मौलाना अज़ीजुल हक़ उमरी ने तैयार किया है। और कुर्आन प्रकाशन साहित्य की ओर से इस का संशोधन डॉक्टर सईद अहमद हयात मुशर्रफ़ी ने किया है।

हम अल्लाह की प्रशंसा करते हैं कि उस ने हमें यह कार्य करने का साहस दिया। और हम आशा करते हैं कि यह कार्य मात्र अल्लाह की प्रसन्नता के लिये होगा। और लोग इस से लाभान्वित होंगे।

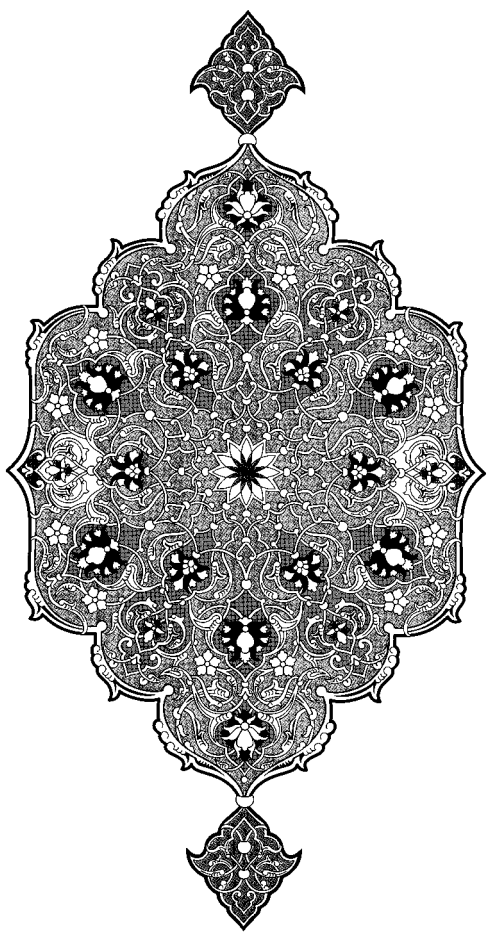
हम मानते हैं कि कुर्आन के अर्थों का कितनी ही गंभीरता से अनुवाद किया जाये पर वह उस के महान् अर्थों को वर्णित नहीं कर सकता। क्योंकि कुर्आन अपनी वर्णन शैली में भी चमत्कार है। अतः अनुवाद के द्वारा जो अर्थ दिखाई देता है वह उस का भावार्थ होता है जो अनुवादक ने कुर्आन से समझा है। जिस में हर प्रकार की त्रुटि संभव है। इसलिये प्रत्येक पाठक से अनुरोध है कि इस में वह जो भी त्रुटि पाये उस से "शाह फ़हद कुर्आन प्रकाशन साहित्य"

King Fahd Qur'an printing Complex,
Madina Munawarah, K. S. A.

को अवगत कराये ताकि आगामी प्रकाशन में उस का सुधार कर लिया जाये।

अल्लाह ही हम सब का सहायक तथा मार्गदर्शक है।

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ!



क्रमशः	सूरह का नाम	पृष्ठ नं०	السورة
86	तारिक	1228	الطارق
87	आँला	1231	الأعلى
88	गाशियह	1235	الغاشية
89	फ़ज्र	1238	الفجر
90	बलद	1242	البلد
91	शम्स	1246	الشمس
92	लैल	1249	الليل
93	जुहा	1253	الضحى
94	श्रह	1256	الشرح
95	तीन	1259	التين
96	अलक	1261	العلق
97	क़द्र	1265	القدر
98	बय्यिनह	1267	البينة
99	ज़िलज़ाल	1270	الزّلال
100	आदियात	1272	العاديات
101	कारिअह	1274	القارعة
102	तकासुर	1276	التكاثر
103	अस्र	1278	العصر
104	हुमज़ह	1280	الهمزة
105	फील	1282	الفيل
106	कुरैश	1284	قريش
107	माऊन	1286	الماعون
108	कौसर	1288	الكوثر
109	काफ़िरून	1290	الكافرون
110	नस्र	1292	النصر
111	तब्वत	1294	تبت
112	इख़्लास	1297	الإخلاص
113	फलक़	1300	الفلق
114	नास	1303	الناس

إِنَّ وِرَاثَةَ الشُّعْرَانِ الْإِسْلَامِيَّةِ وَالْأَوْاقِفِ وَالِدَعْوَةِ وَالْإِسْتِثْنَاءِ

فِي الْمَمْلَكَةِ الْعَرَبِيَّةِ السُّعُودِيَّةِ

الْمَشْرُوقَةِ عَلَى مَجْمَعِ الْمَلِكِ فَهْدٍ

لِطَبَاعَةِ الْمُصْحَفِ الشَّرِيفِ فِي الْمَدِينَةِ الْمَشْرُوقَةِ

إِذِيسَّرُهَا أَنْ يُصَدَّرَ الْمَجْمَعُ هَذِهِ الطَّبْعَةَ مِنَ الْقُرْآنِ الْكَرِيمِ

وَتَرْجَمَةَ مَعَانِيهِ وَتَفْسِيرَهُ إِلَى اللُّغَةِ الْهِنْدِيَّةِ

تَسْأَلُ اللَّهُ أَنْ يَنْفَعَ بِهَا النَّاسَ

وَأَنْ يَجْزِي

خَاتَمَ الْحَقَائِقِ الشَّرِيفِيْنَ، الْمَلِكِ عَبْدَ الْمَلِكِ بْنِ عَبْدِ الْغَنِيِّ السُّعُودِيَّ

أَحْسَنَ الْجَزَاءِ عَلَى جُهْدِهِ الْعَظِيمَةِ فِي نَشْرِ كِتَابِ اللَّهِ الْكَرِيمِ

وَاللَّهُ وَليُّ التَّوْفِيقِ

इस्लामी उमूर, औकाफ तथा दावत और इर्शाद
मंत्रालय, सऊदी अरब, जो किंग फहद कुर्आन
परिन्टिंग कम्पलेक्स, मदीना मुनव्वरा, पर निरिक्षक
है, को कुर्आन पाक और उस के अर्थों का हिन्दी
अनुवाद और व्याख्या को छापते हुऐ अति प्रसन्नता
हो रही है। वह अल्लाह तआला से दुआ करता है कि
इस से लोगों को लाभ पहुँचे। और हरमैन शरीफैन के
सेवक किंग अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अज़ीज़ आल सऊद
को कुर्आन पाक के प्रचार करने में उन के महान्
प्रयासों पर बहुत ही अच्छा प्रत्युपकार दे।



حقوق الطبع محفوظة
لمجمع الملك فهد لإطباق آية المسجد الشريف

ص.ب ٦٢٦٢ - المدينة المنورة
www.qurancomplex.gov.sa
contact@qurancomplex.gov.sa



छपाई के अधिकार किंग फहद कुर्आन परिन्टिन्ग
कम्पलेक्स, मदीना मुनव्वरा, के लिये सुरक्षित है।
पोस्ट बॉक्स नं० 6262

www.qurancomplex.gov.sa
contact@qurancomplex.gov.sa

٢ جمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف ، ١٤٣٤ هـ
فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر .

جمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف
ترجمة معاني القرآن الكريم إلى اللغة الهندية . / جمع الملك
فهد لطباعة المصحف الشريف . - المدينة المنورة، ١٤٣٤ هـ

١٣٢٠ ص ؛ ١٤ × ٢١ سم

ردمك : ٩٧٨-٦٠٣-٨٠٩٥-٣٩-٣

١- القرآن - ترجمة أ. العنوان

١٤٣٣/٤٣١

ديوي ٢٢١،٤

رقم الإيداع : ١٤٣٣/٤٣١

ردمك : ٩٧٨-٦٠٣-٨٠٩٥-٣٩-٣



9 786038 095393

القرآن الكريم

و ترجمه معانيه و تفسيره
إلى اللغة الهندية